তোরতী

, 배 적히 []

শ্রীমতী স্বৰ্ণকুমারী দেবী সম্পাদিত সচিত্র মাসিকু প্রতিকা

गर्विक मुना और । विद्वा और ।

প্ৰাণ্ড সংখ্যা

विभवी वर्गक्षाती : प्रवीत अदावनी ।

দীপ নির্মাণ ভিন্ন মুকুল	,		নাগ্য ও গমগুজ (ন মিবাররাক (নুভন সং		*)
কুৰেৰ মানুধ	***		ंडिक रमयङ्ग	**',	i i siy 🐎
রেহ্শতা (ছুট খণ্ড)	***	2	्रकोष्ट्रक माहा र विवि	व कथा	
छश्नित हेमांभवाषी		نهر⊈ نند	বসস্ক উৎসব	•••,	in k
काहां (क		>1.	গাৰ্থ		••• 🐉
निट्यांव	***	··· >1•	দেবকৌডুক কাব্য না	61	**** >
नग्राशिको	• •	··· he		* * * *	

ধিনি এই ১৮৪০ টাকা মূলোধ গ্রন্থাবলী একত্রে শইবেন, উছি'কে ১২০ টাকাম গেও বাইবে: গৃথিনী - বৈজ্ঞানিক পুস্তক ১০।

ক্ষেহলতে। সামাজিক উপভাস—ছুই গও মূলা ২, টাকা।

দিতীয় সংক্ষরণ প্রকাশিত হইয়াছে।

এই উপজাদ প্রস্থ বেদন ঘটনাত্ত্য তেমন্ত্র কৌস্তল্পিশিক ও সক্ষণ। বলসমানে ইসাস্কাল মুক্তর ও বিভিন্ন চিলে। কিনিই পাঠ করিখনে তিমিই মুগ্ন হইবেন।

্ত্ন প্রাহাসন পালি চারে এর ৪; মুল্য করা ইবাছ আনেক কালি পালি আছে।
সমস্ত থানের জবলি নি ওয়া চলতেছে। তথান ক্ট্রেড বাথারা হালে জটবেন, ওর্থ;
ক্রিজান্য পাইবান।

নবৰৰ্যে ভারতীয় গ্রাহকদিগতে উপহায়।

্মহ্মতা ১২. জৈবকৈ কি মানানাটা হাত, কমান্তৰ হাত, মিক্সেছে।ত, মানানী গ্ৰন্থজ্ঞ ২০৮ এই ৩৮ মানান পুত্ৰক একত্ৰ কঠাৰ ভিন্টাভাগ গ্ৰেবেন।

অর্ন্যলো পুরাতন ভারতী।

২০১১ হটতে ২০১৪ বালের সম্পূর্ণ পশু ভাবতী অর্জনুমো বিজ্ঞা করিয়া কেলা ১৮তেও কংগ্রেণ টা ভারতী সম্পূর্ণিত স্বাই প্রায় নিলোগ হটছা আদিছাতে, ত্বকে গ্রন্থ অসমিষ্ট আলে বাহারা বিটতে, সহেন পূর্ণন্যা নিয়াই সহতে হটবে। অভ্যানর ভাষাও আর সাইবেলনি অসম্পূর্ণ বাবে দান সিকি। একধানির মুনা ১৮৮ ছম আনা।

🎎 📖 🧸 জারতী কার্যাধাণ ৮৮, ওকু বালিগঞ্জ রোড, কলিকান্ত

मुख्या में (२६ मः४००) भिन्दी मुद्रता (मनी महनिछ।

একশত গানের স্বর্যাপ পূলা ২। ত জন্মান চটোপাধানের দোকানৈ ও ভারতীকার্যা।

্ ১৩১৬ সা লর বর্ণামুক্রমিক সূচী।

বিবয়		. লেখক		প্র
व्यवित्य (व्या (म	চিত্ৰ)	সম্পাদিকা	***	>>2
জন্তঃপুত্ৰ				200
শ্ৰদমাপ্ত	***	শ্রীসৌরীক্রনোহন মূথে।পাধ্যায়		1254
এডিগি	***	শ্রীক্রনাথ ঠাকুর	***	8 * 4
শভাংন	•••	ভী অসিভকুমার স্বাধার		63.
स्रवेक के क	444	শ্ৰীক্লঞানন্দ ভ্ৰন্মচাত্ৰী	***	용목물
অবশ্যষ্ঠী	••	প্রীমতা নিস্তারেশী দেখী		226
শভয়মন্ত্র	••	द्योभनी भवता धनती		意见者
কাঝিপরীকা	• • •	শ্ৰীপ্ৰাণকমাৰ যোগ এম, ৫	***	***
वाहरन होनहें		ভাঁ ধ্ৰন্যজ্ঞান্ধ সকুৰ	***	ø.
'આ ય ચાસિ	6 5 a	লাগেলেক বিহারী মুখোপাধারে		6.3
কাৰ্যা আদৰ্ভ গুড	বিয়	শীক্ষরবৈশ্ব যেগ্	•••	224
थाराह मका	***	केलन अवस्थ केर्न	* * *	7.0%
আহার ও শিকা না	ধের ছ একটি কথ	हीरेन्स्सर्वर मुन्दिक	J 4 4	^ #)
আক্রর ও আগা	Б यम)	लेक्षित्रक्राथ क्षास्त्रः	***	924
উৎসৰ *	***	ইট্রেব্টেস্ট্র স্থার	***	642
उनामभाग लाशक (স্চিত্র)	विद्रमन्द्रमान्कातकात्री मृत्यानाम्बाध	4,	* 1, 663
3 41	• 1	क्षेत्रको हेन्सिता (नर्द		493
একজন বহিস্কতের	रिपंतिक लिशि	विष्णा शिक्षा विकास		29
ক বিভাগ্ডেজ	**		***	4.
কবিৰ নৈৱাগ্ৰ	**	শ্ৰীম্মিতক্ষার ধালদ্যে	***	323
ক্সকা কুছী (সচিত	র) · · ·	ত্রীদালবারজন মের মত্মনার	1 4 9	कर ह
कनको जीक्रक	. 2 •	^{ले} ज़रवस्तां भ । ।		602
কাশীতে একসপ্তাহ	•••	केंगेएकपंत काम	• • •	953
ंकांडाग्रह । अ याशीन	5 { · · ·	শ্রীভার বিদ্যু গোষ	w : •	545
स्विति शान	* 5 9	खीवलीक्रामध्य वार्ती	• • •	÷8 3
क्षाहिनडौरन खम्म	હત હ	শ্রীলোট হিন্দুনাপ ঠাকুর	• • •	(Na)
		•	, 015, 44	
ধগুলিরি (দটিত্র)	< # m	শ্রীশেষেক কুমার গায়	,,,,	38c*
शंकां यम्ना	***	শ্রীষ্পরনীপ্রনাপ ঠাকুর		87-6
গোপন অঞ		बीय्धायन तात	•••	6 24
গ্ৰন্থ প্ৰ		विटमोबोक्टामान्न मृत्यालामात्र	46^	386
চ য়ন	•••	८७, ১ ०७, ১ ७৯, ३३२, २५७		
किंबगायां.	***	००,२२७ ३७७,२३०,२७	, − − − , − oo	No GOIN
চির্নবনিতা	•••	बीवरोजनाथ ठाक्व	·,· · · · ·	600
हीरमद्र कविडां		শীসভেত নাথ ১ন্ত	, •	60.
ছবি ও গান	•••	***		82.
সৰ্গ ভূমি	•••	শ্ৰীৰতীক্ৰমোহন বাগচী	**	253
		- 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.	• •	-4 14

		a∕ •		
বিষয়		८ग थक		건설
জিজানা	***	শ্রীদেবেন্দ্রনাথ মাইতি	. 4 +	9.
रेक्सारमा गर्भी	***	গ্রীঘণীক্রমোর্ন বাগগী		27
ঝড়ের রাতে	•••	শ্রীরবীন্ত্রনাথ ঠাকুর		24
টাউয়ার (সচিত্র)	4 9 4	এইন্সাধব মলিক	•••	₹ 8
ভারেরি প্রানক (সচি	্ব)			34
८७न्यार्क क्रयकत्वत		কোন আমেরিকা প্রবাদী বিভার্থী	***	20
ত ৰু	***	শ্ৰমতী ৰজাৰতী বস্ক্ৰা	***	23
ভাববিহীন টেলিফো	ন (পচিত্ৰ)	শ্ৰীলানেজনাথ চট্টোপাধ্যাৰ	•••	£\$\$
তিপুরার গল	•••	শ্ৰীমতা শূৰুকুনারা চৌধুরাণী	9 16 80	54
ভিনাট কুল্লম	***	तिहिंदय क्षक वस्	***	8
तमानो कविता		ह्य महत्रासमाथ प्रक		9.
मान	***	গ্ৰাহৰপ্ৰক্ষাৰ দক	1 2 2	•
किनिया		ইনেতা শবংকুমানী চোদুবাণী	1.	•
দিদিমার বিব্যক্তি	***		• + 5	> 3
দেশের ভারস্থ	4.5.0	শ্রমত্রাথ সরকার	20.0	4:
मददार्व	***			
सनवार्ष भूतांचन हि	দ্ বি	** ;	***	8
सर्वाद	y ** *	मिकामी म न, जन्मी		Bú
नावीय क न	***	ক্তেমেশ্রণাগ রাম		36
facer 4		উক্তোৱেলকুমার দত্ত	***	3,4
चिके	4 * W	की इयो सन्तर्भ ति कृत		
লেভিনগটাৰ ব্ৰহ কণা		भीरको मांगगुरी (एती		¥
		(हरू) लेच टान्सनाथ संदेशित	* 7 *	· .
প্রাচন শাস্ত্র জীয় কার		ইচ্যা শৈক্ষাপ গ্ৰাক্ষার	***	445,60
প্রিচয়	***	ले प्रश्वहरू श्र		199
শ্রেয়া ও হওগা	.,	की दर्शक नाथ प्रकृत	4.	ž
পাকচক		क्षिमजी वर्षद्वमानी समरी	***	\$2,
		\$85,5 5 4,54	₩ . 5 > 8	
পালিনি প্রায়		क्षीत्मरत्म कृषार निधादक दम. ज		
≠1†Si		শ্রীজ্যোতি রন্ধনাথ ঠাকুর	•••	3
পুবাতন ও নুখন		শ্রীদীনেজনাগ গ্রাকুর	***	7
भू वर्ष वर्षण व वर्षी तक	***	न्यात्रसम्बद्धाः विश्वपानात	***	81
Stickly stansatt	es restarraz e izi	(চম্বন) শ্রীপ্তবেজনাপ ভটাচার্য		6
तन्तराम् छेरम्य	** O(XC & ** - (**	हीसप्रामम भश्कावजी	***	
		· u	39 54	303,3
পোষ্যগ্ত	**	२ ५७,०००, ७५३, हर७,६०६		
	***	भिने नदीनाथ शक्त	, 407 ,	
প্রতী শা প্রতিষাত	***	व्यापानीय राष्ट्र व्यापानीय	*4.	3

वि अ		়েল থক		পৃ ঠ্য
প্ৰিষ [্] ইটো (স চিত্ৰ)	***	बीक्षात्रसमाच नवेकिया		889
भ वामीटमटमञ्ज हिळामान		श्रीकेन्याधव म लिक	* .	53
मदानी विश्वदंबर अव्यक्ति	চিত্ৰ (চয়ম)	श्रीय हो छिनिहा। दहनी	•••	or for a
करामा बाह्ने-विश्ववकाले	[त ह्डा	औरमानिजनाय गमानाय		8 . >
ধনভোজন (সচিত্ৰ)		Je ₃	414	260
বলেপ্রনাথ (সাচতা)	A . X	ইটাগ্ৰেশক কিলাসী মুৰেশগায়ায়		34
বৰ্ব বিধায়	•			1.4 3
বসস্থ বায়ু		विभागो विद्यालक इसनी	· ·	v br
হদা স্ত	6 •	कि स्वाधिक अधि	0 7 0	900
या भा	* * *	ইাপ্ৰ চজন বাহ	٠.	(FC)
देवरम'ल क सर्वान				7 47.82
पृष्टि (६वस)		शिक्तोडीकाभावन प्रचालामाण		2 640
. तरकामिक शोकानावि	F	आक्रमा अवस्थान में कर		₹•≱
telescrema Electra	अंतरकेन क्या	湖村村 祖 (大) 水原田(竹) 建一丁二	1.0	२५७, २५३
विषद्धाननारः । अर्थन्त	ध्यिव:	二四代十四十		. 02
निक् य की	• •	को १८८३ छ स्रोत् । सरह	. ,	to live
देनद्शा	* *	ইমিণিবাৰ গালাপ্যাব	4 * *	(2)
. ^{२ ह} ला	u P	क्षेत्र हो आस्माप्तिनी व्यावकाण	. ,	12 to
योजभनि हर काडीन	हेडिहाम	শ্রীবেদরারনাশ মন্ত্রপরি		364
विश्वीस -	***	শ্রীপুলীবাচন সমুসন্ত		૭৬ર
पांबर्कश्चन (हयस)	• • •	শিষত উল্লেখ্য দেশ		993
'वसनारः' नहिंगतो । ग	16m)		••	೨৮ ಕ
বৈদার পূরেং	***	लीरवादबाकिविकात्री भूटवाल्याम	4 4 6	8
त्र वस प्रतीकन गह	4.	ক্রিজ্ঞানেজন্মে চেট্যেপা য়ায়	,	१७०
ব্যবসাধে স্থ্ৰায়	4 4 7	জীব্রকেন্ডা ক্রেয়ের রাষ চৌধু রী	* 9 4	857
स्थिती		व्योगली लामसभी (नरी		ä b
ভার এনর্ষে		শ্রীলোভিরিন্তনাথ সাকুর	14.	b s
ভাগে হর অপুনিক শি	রবিজ্ঞান (চন্ন) जीयदवन्ताय ज्ह्रीताया		2.00
ভাগতে চিত্ৰকলা (স	5%)	প্রীক্ষেত্রস্থার রাধ	•	275,000
ভার এবর্ষের স্থার-রম্পা	(দয়ন 📝	धिमटी शिक्षणमा (नवी	4	អូនក្
ভোতৰাজ ও ধারবাজা	• • •	क्रीनिज्याहम मूर्यायामाय	44.5	504,000
ভূনাগ রাজার মেয়ে	•••	শ্ৰহেমেন্দ্ৰগাল ৰাছ	v	E . E
মহানিয়া ৯ নহাকবি	* u	नीकीर का कुछा ब मस	***	100
মহর্বি দেবেজ্ঞনাথ	/ * 1	श्रीत्मोदीप्रत्यास्य भृत्यानांसाय		£ > %
ম্ভন	***	শ্ৰীমতী হেম্পতা দেবী	•••	••
मामसङ्ख्याः	***	মহসদ শহীহলাহ	149	. 989
মিশর কবিতা (চয়ন)	***	শ্রীদত্যেন্দ্রনাথ দত্ত		త్మిణ
মুক্তির সংবাদ		শ্রীমতী প্রিয়খনা দেবী		9.0

:ব্ৰয়		<i>েশ</i> থক		7 हो।
মেষের প্রতি		শ্রীসতী প্রিয়খনা দেবী	•••	200
মেঘনাৰ বধ	***	জীগিতেজনাথ বৃ স্থ	•••	& 1
মেয়ে-যজির বিশৃত্যক	rd ·	শ্রীমতী শবংকুমানী চৌধুনাণী		ठ १ ३
গেকের সভ্যাস		শ্ৰমতী ভেমলতা দেনী		298-
মুগলা	• •	क्षेत्रको जीलावको उपयो	***	898
য়কোৰ নিবেদন	131	ल,गरहातः नाथ ४७	***	283
ং শস্থিতি	* * *	ই।মতা হেমলতা দেশ	• • •	9 50
श्रुशंकि (मारद्व एकः		Ψ,	+ + 1	870
শরাজনার'রণ বছা	স্টেডা 🕽 🕠	शिल्हारणाकिकशती मूर्त्वाशास्त्रक	•••	264
রাক্টোর কথা	**		- 58,2	२४,२৮७
রাথীবন্দ্রে	s * (्रम्भर्गिकः		8 • 9
ब्राटिनत गतिन्य-कर्ग		ओस्तासन्य छदे। तथा	p :" 18	6.8
লালমো হন সেগে (ফ	ৰ ড়ি ন্)	3	* * *	ロシャ
লে খনে র বিড়ম্বন।	. •	क्षरमोडीसरमाञ्च मुरशालानाम	441	497
শিল্পের তিধারা		क्षीयवस्थानान राज्य		27.3
C*/4	e u ti	बिम्डी इनिहा स्मरी	***	825
শ্ৰিপ্ৰণ্ড	r •	কি∉ামাচরণ—		20
শোক হাজ			* 1	253
শ্বানে শ্রিক	. ,	केषायकत नाम	4 7 6	559
७ ७(विदार ब्रह्मिक्टी) (图1887	_		644
	1.65	উল্লেখ্য ক্রমণ্র	w W s	0 4 8
স্থলীয় জিপ্রামাজ কা	।भाष्ट्रमाद मानि	का केवरा भवरण्याही रहेरदूराणे	* * .	٠ ٦
শগীয় কিপ্ৰাগীশ্বর।		•		*1 7
प्रशोदां दिशास्य दन्त		लेशस्त्राम भ्रेपारी अन्हि	· ·	A, 880
সপুড়িত।	w . v	हीरगोतीक्तरमांक्स मुख्यालालपुत्र		a ·
भगोरक 15न	•	ঞ্চিলায়ত শশ্বি	n w,	: 4 % ,
		৯৮৫,৯ ৪,২ ৬৮,১৮৬,৪	• 5,845,8	80,46r
मुख्य किली	P 5 G	जीदः हैक्टमाञ्च द्वाशाशाय		9.4
भागब छेप्पर		্ শ্রীনেদ্বকুষার রাজ্যনৌতুবী	***	40
সভোদ্র প্রসন্ত ***	£ 6 il	শ্ৰীস্থাতন নাথ স্থাটাৰ্য্য		20
স্থ্যালশি -	444	শ্রীমণ্ট ইন্সিরা দেশ	50	2, >86.
		2.56.70	3,680,650	
শ র্মান শি		- এনৰ এলাথ সাক্ৰ		₹ 58
স্থপ্ন	***	<u>শ্রের বিন্দ্র হোষ্ট্র</u>	***	846
and the second	***	ইনিঃখবিদ্ধ রাষ্ট্ৰ, এ	**	(4)
শানীন জিপুরায় রা	জ্যাভিধেক	. टि _व डेन्द्रम् अवस्थित भोहा क		930
াধি লগ স্তা	•••	জীকিতেন্দ্ৰনাথ ঠাকুৰ		242
, दिलांगिक सरवान वि	।খাদের পত্র (চয়	न) व्यञ्जासनाथ अद्वीहार,		23:
•		****		1 4 4 1

বিষয়		(লথক		2.5
. यामी भीगानना	•••	बीटकार्गितिवसमाथ ठेरक्त		781
হাঞু গৰিক ও ক্লতিম	এদেশ	व्योनकथमठक पश्च ठाकूरत	• • •	₹ 00
শ্ৰু কর-চালিত চাল	李有聲	खीकारमञ्जू वर अपूर्वा	*	eas
র্ত্তরেজ্বনথের একটি	क है जो।	व्याद्याचनाथ वरनग्राथाय	***	.52 4
গে হিরীমিদের ভার ও		क्षी <u>डातक हत्त</u> श्रह	***	388
गःक'द विधान		-12/440 H 2/8	* * *	98 pc
লিপাহীর বিশান		`\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\		473
% 1/1°		भागरकामनाथ मह		# G is
इटनमाथ श्रामाथ	rve / who = \	बीद्धशीवन्छ मधूमनात	• * •	6 br s
गामिक क्षप्रक	TIN (MIDOR)	नी छमाठवन माजी	***	257
माबोदक मध्येत	***		***	4 % ?
利仁沙藤	***		***	 છે છે છે
''' _। পাব সুমকেতু	**	च्यां व्यवनी च मान्य श्राकृत	82,500,5	
গায় চুৰজেতু হাইন হয়ঃ স	. • •	है। द्वाराकुमात रमस ताह		5.53
	• * * •	विशेष्ट्राम्यस्य वाज्ञातः सि.म	**	
्म गढ़िट ७१ कथा	A # 1	म अवस्थापास्य विष्णु गानाना		చిస్తున్న మాజ
·	79.45		•••	7+ 2
fs®	,	ছিলনিক চিত্ৰ-দ্ঠী।		
		ভিন্নকৰ	,	व(भ
त्वरिक १६१५ (शिव्ह	3 6 2 2 3	* (a)		ग । ग गार्क
सक्तारक जिल्हि सह		अग्रमार्थ - (अभिग्रम्		
अवशास्त्राम नातीभूद	**1	***		1573 *****
कलात्राम् साम ध्येष्ट्यी	• • •	• •		ां चन
र्भा प्रतिभागाम-कथन	••	केंद्रि भगः तलगाय खार्य		গহায়ণ
्रात् (सिन्)	1 4 9	•	Z)	
ँ । ज (मवरात्)	* 4	नीर्क कानीलना । हारू	,	्टाह । शु∗्
क्याका क्री		विपूक्त में कर्नारक्षम् (भाग मरुवन्)		i* 1-51
शक्षाणां व देशनम्बि	· • • 1	्रक्ट र संस्थाना (स.च) व वेश्वर्या		ा'भ्य
£ 5 5 50		और क सक्त ेल अन्य		िसे व
हो। इस उल्लाह रवी समाय	,	बीयुक्त नसर ेल् दश्च	(4) }	R
जिल्लाव मान्यां हरमक	***	***	মা	E i
बारोमण्य दास । कांचतर	।) स्थानापति	• •	<u>, 35%</u>	2
الأبالد لعبيرة		STATE OF THE CONTROL	Ç41	114
मदाभक्ष भागून	• •	टीर्क मनगण रह	3/4 /	有不
श्विक में जा भीव जीवान !	भागि ।	इ डिन्सनोथ गद्यां शास	267	
कार्यम्परा (भवा । सामना)		খ্যা	
এলইউমা দুেৱা	,	***	কা	
कृत्मत जीयां प्रशासिका	•••		Chu	
ंशिक्ताथ ठेक्ति	***	***	टैन=	•
- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	***	***	देवन	
			₩ * **	14

বিশ্বহিনী যক্ষপদ্ধী	***	ছাপানী চিত্রকর কাৎস্কতা	ट. 'दः
दिश्रहो यक	431	আৰুক ঘামিনীপ্ৰকাশ গঙ্গোপাধ্যায়	ella:
ব্রহ্মরূপ অগ্নিদেবতা	•••	***	EIB
वकाला है। डेग्राट्ड (म अग्रान		***	S. 114
বৃদ্ধদেশ্বের ভাগ্নাথার		• • •	ার্ডি
বিশ্ব হুন্দ্ৰ	. •	दाविका भाग वर्षाणां धाः ।	दर्शीष्ट
मन्ति त्र भटण		আয়ুক্ত অসিত্রুমার হাত্রার	শ্রাবণ
মাদ্রাজেও মহিলা-স্থিতি	***		**
মহাদেশের তাত্র বৃহ:		মুবেলুন্থ গঙ্গেলাধ্য	का छै
मक्षि एडिव्डामाइश्व त्र इतन	••	***	् कोस
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	* 1	***	.
		•••	46
	n * •	•••	
4 (121 be)		•••	-
(ৰছণ ৮৭)		• •	,
মহাবি ও উপহার পঞ্জ		• •	
महर्षि अध्यक्षमान , रहम ३५ -			મધ
म् कत ना कि विद्युक्त	.,	* * *	
मनिनास जामानास्य	•••	***	Ço.A
यानामः		लीयुक क्रिक्त्रात श्रम्भाव	कार्य १व
ग्रीनिक्षिरमञ्ज भन्दा ध्यक्षां न	***	दीपुर राजिमी शकाम १ दलाभाषाच	41198
প্ৰাধিকৰোৰ মাজকা ্ৰাষ্টী প্ৰি	পুৰ(ধান্ত্ৰ)		देवलब
প্রজিনার্ডের বস্থাত এলের পর্		43	क ्ष्य १५ १५
विधानमध्य कृतिमः ग्	•	14.4	क्षार १
朝所(如便的 有限人用的) (\$P.)*		***	कार्रिक
सम्बद्ध संस्कृतमन	**	स्टबलमध्य श्रम्पान्त्रेषाः व	4145
利其他们和其他的 CAIX	••	,	কাত্রিক
##315% or 5 50 5	• •	হীনুক কেছাল	EI
की न्देक ५६	***	नी क गरनीतामाध अकृत	অগ্রহা রণ
শুক্রাবিশার শ্রহ			टेका ह
भवरत्माता कोषुत्रानी (टीवडी)		27 29 73 * W	व्यक्षर १४।
সভোক্ত শের দিনে (এখুক)			देखाई
ম্বারশ বিখাধ (দেনাপাত)	***	•	ब्र ाशिक्
স্থান্ত্ৰাৰ ব দ্যাপাধ্যাহ (ইনিসুক্			জ্যাখন
স্করেশ্রনাথ গ্রেপাধ্যার (চিত্রক			माय
সাবিত্রী ৩ নি		मेहल रहा है वसू	क्राजी स
लो हीतः इन मृद्शालाकात्र	•	The second secon	TET (183 T)
সীতাগড়ে বনভোজন		3 (n	
र्ह्मास्टि भाराम	301	च्यासमार्थ भागांशांशांत्र	Samuel
		क्ष्मद्भाषा । (६ व्यः १ ८) हो। य	देवना भ



ইবপ্রের্ণ গ্রেশ্চ শ্রী ক কাবলন্য নাজ্যে বাংগী বছক থকি ১ জানিব চত্ত ১

নববর্ষে।

আহ্বান।

টোড়ী-একতালা।

কর, নৃতন বর্ষে তোমার ম্পর্শ দান
ওহে নাথ করুণা নিদান।
আন, অমৃত কিরণ দীপ্তি, পুণ্য মিলন তৃথি,
দাও মঙ্গল ধ্রুব সম্বল,
হোক্ তিমির রাত্রি রান ॥
অরুণ পুষ্প গন্ধে, করুণ ছন্দোবন্দে,
স্তব কলোলে প্রেম হিলোলে
হোক্ জাগরিত মন প্রাণ॥
দাও, ভেদরহিত বৃদ্ধি, প্রীতিপ্রিত শুদ্ধি,
দাও মঙ্গল ধ্রুব সম্বল,

হোক্—সব হুখ অবসান॥

। नानानभा। ना-र्नागार्भागाना I भाषाना भाराभाग मञ्जान লঞ্ব স • **স্বলহোক্তিমির রা • তি**ুঁল**ুঁ** । ঋ। সাজর্গ I জর্গ- ተ - রা। জর্গ জর্মা জর্গ। ঋণ - স ‡ ণা। স্ঠাণা - দ। I পাণা न्सा ७ म ॰ ज न क न म ॰ च न हां क् छि नि ।পা-মাপা। মজনা-া-া। রাসাসা॥াাI{সা্রামা। মা-াঙ । गमा-शमा शा। -† -† -| I সা সা मन। ना -† पन। शन -पन श গ • জে • • করণ ছ • লো ব • জে । $\left(-\uparrow -\uparrow -\uparrow \right) I$ $}$ -। शाला I लो - मी ना । गर्भा - ऋशी - मी। मी - \uparrow - । . • স্তব ক • লো লে • • • • ा ना ना ना ना ना ना । -शैना -नना -भ्या। -भा -। -। भा ना । ना ना ना ना •প্রেম হি • লোলে • • • • • তত্ত্ব ক • লো । সাঁ⁴ দাণা। দাপামা। পা^মজ্ঞা-া I মাপাণা। দাপামা। মজ্ঞা-া-া লৈপ্রেম হি॰লো শেহোক্ জাগরি তমন প্রা•ণ্ । ता जा-ो ॥ शा -। I मा - पना ना । रूना ना पा। निया - जिला ना ना ना । । "ক্র" । দাও ভে • দ : রহিত বু • क्ति • • • । पना-। भा अर्थ अर्थ । अर्थ - र्या अर्थ प्रक्रिया। - । अर्थ वर्षा (मर्थ - पनाना)} ঞী • তি পুরিত ও • দি • দাও ভে • দ । र्भा पर्ना भाग नाम्लान भाग नामा भाग नामा भाग नामा भाग भाग भाग भाग नामा भाग नामा भाग नामा भाग नामा भाग भाग भाग म • इन सक्त म • इन स्वक् भ व इन्थ अप द । म्छ्या-१ - । आ नार्छा 1 र्छा-ः ती। र्छार्छाम् र्छा। आ - र्नागा। शा•• नृतां ७ म•* ज व धः व । र्मा पन - । शिर्भामा । शिर्माशी। युक्ता - । । - द्रा मा॥ •লুহোক্সবছ **খঅব স**ে • • ন্"কর"॥

স্বরলিপির ব্যাখ্যা।

- ১। স. র. গ, ম, প, ধ, ন-সপ্তথরের এই সাভটি স্বরাকর।
- २। খ=(कांगल त्र; छ=(कांमल न ; क्र=क फ़्रि म ; प=(कांमल स ; न=(कांमल न।
- ৩। ু উচ্চ সপ্তকের স্বরের মাধার রেক্-চিহ্ন ও শাদ-সপ্তকের নীচে হসস্ত-চিহ্ন থাকে; মধ্য-সপ্তকের স্বরে কোন চিহ্ন খাকে না। যথা প্, ধ্, ন্, স, র, গ, ম, প, ধ, ন, স্, র, গ ইত্যাদিঃ
- 8। স্বরোচনারণের কাল-পুরিমাণকে মাত্রা বলে। এক, উচ্চারণ করিতে যত সমর লাগে, তাহাকে এক মাত্রা; এক, ছই, উচ্চারণ করিতে যত সমর লাগে তাকে ছই মাত্রা; এক, ছই, তিন উচ্চারণ করিতে যত *সমর লাগে তাকে তিন মাত্রা বলে; ইত্যাদি ক্রমে মাত্রা যথেচ্ছা বৃদ্ধি করা যাইতে পারে।

মাঝার চিহ্ন আকার। যথা সা, একমাঝা; সা -া ছই মাঝা; সা -া -া তিন মাঝা ইত্যাদি। ছইটি শ্বর একমাঝার মধ্যে উচ্চারিত হইলে, ছইটি শ্বরাক্ষর যুক্ত হইরা শেষ অক্ষরের গারে আকার বদে; যথা, গমা, পথা; এইরূপ স্থলে প্রতি শ্বরটি অধ্যাঝা। চারিটি শ্বর একমাঝার মধ্যে উচ্চারিত হইলে, চারিটি শ্বরাক্ষর যুক্ত হইরা শেষ অক্ষরের গারে আকার বদে; যথা, সরগমা, এই স্থলে প্রত্যেক শ্বরটি নিকিমাঝা। এইরূপ একমাঝার মধ্যে যতগুলিই শ্বর উচ্চারিত হোক্ না কেন, তাহাদের শ্বরাক্ষরগুলি যুক্ত হইরা শেষ অক্ষরের গারে আকার বদে। যথা সরগমপথা, মপ্থনসা ইত্যাদি। অর্জমাঝার বিশেষ চিহ্ন = ইবিস্প্তি

- ে। সাধারণত উপরোক্ত যুক্তশ্বরগুলি গড়ানে ভাবেই উচ্চারিত হয়; যদি কোন শ্বলে, উহার প্রত্যেক শ্বর

 পৃথক ঝোঁকে উচ্চারণ করিতে হয়, তাহা হইলে শিরোদেশে বিন্দু-চিহ্ন দেওয়া হইয়া পাকে, যথা সরগম্। কোন
 এক শ্বর ধ্পন আর এক শ্বরে বিশেষরূপে গড়াইয়া বায়, তখন শ্বরের নীচে এইরূপ চিহ্ন থাকে; যথা,
 গা্-পা।
- । বধন স্বরাক্ষরের নীচে গানের অক্ষর না ধাকে তথন দ্বরাক্ষরগুলির মধ্যে হাইফেন চিহ্ন থাকে এবং
 গানের পংক্তিতে শৃত্য () চিহ্ন দেওরা হয়।
- ণ। কোন আমুষ্টিক হয় কোন ধ্বধান হয়কে ঈষ্ং ছুই্মা গোলে প্রধান হয়ের গায়ে কুল অক্ষরে এইরূপ লিখিত হয়; যথা র_{সা সা}র ইত্যাদি।
- ৮। আছায়ীর আরত্তে,—বেধান হইতে রীতিমত তাল হক হয়—দেইধানে এইরূপ ॥ ্বুগল-ছেদ অথবা যুগল
 II স্তস্ত চিহ্ন এবং প্রত্যেক কলির শেবে বেধানে ধামিয়া আছায়ীতে আবার ফিরিতে হয়, সেইধানেও এইরূপ ॥
 যুগল-ছেদ অথবা যুগল II স্তম্ভ চিহ্ন বনে।
- ু । $\left\{\begin{array}{c} \\ \\ \end{array}\right\} =$ পৌনক্ষজ্ঞির চিহ্ন ; যথা $\left\{\begin{array}{c} \\ \end{array}\right\}$ সারা গা মা $\left\{\begin{array}{c} \\ \end{array}\right\}$ অর্থাৎ এই অংশ ছইবার আর্ত্তি করিতে
- >•। ()=পুনক্ষজি-কালে লভবনের চিহ্ন; যথা { সারা(গামা) } পাধা। অর্থাৎ সারাগা
 মা-এই অংশ বিভীয়বার আবৃত্তি করিবার সময় (গামা) এই অংশ লভবন করিয়া একেব্রে "পাধা" এই অংশ
 ধরিতে হইবে।
 - ১১। প্রতি তাল-বিভাগের পর ছেদ-চিক্ বদে; তালের এক আওদি। পূর্ণ হইলে এই I স্তম্ভ-চিক্ দেওরা হয়।

অর্ঘ্যদান।

নব বর্ষের প্রভাত আলোকে
নব উৎসাহ ঝরে !

এসেছি মা তব মন্দির হারে
নবীন অর্থ্য করে ।

তুমি হ'সিছ মা কমল-আসীনা
মৃত্য শুঞ্জনে শুঞ্জরে বীণা;
হের মা মোদের ভক্ত হৃদর
কাঁপিছে পুলক ভরে !

দুর্ব্বা ও ফুলে বিরচি অর্থ্য
এনেছি পূজার তরে ।

নাহিক মোদের কাঞ্চন মণি

নাহি মা রত্ন রাজি,
শিশির সজল প্তালতার
ভরেছি শৃস্ত সাজি!
আশা আশঙ্কা করিছে দহন
করিবে কি দীন-অর্ঘ্য গ্রহণ,
তুমি হাসিতেছ আখাসি' মাত
অসীম করুণা ভরে!
নব বর্ষের প্রভাত আলোকে
নব উৎসাহ ঝরে!

ভীউপেক্তনাথ প্রসাধায়ার

वन्तना ।

নম: বীণাপাণি, বিদ্যাদায়িনি, ভারতি, ভারত রাণি !

যুগ যুগান্তে বুধ-বন্দিত তোমারি চরণ থানি ।

বসন্ত ঢালে প্রথম অর্ঘ্য তোমারি চরণ তলে ।

শরতে, মরতে রচিত আলয়ু থচিত কমল দলে ।

ইন্দুকুন্দ হিমনিন্দিত শুল্র স্থঠাম দেহ ।

নয়নে, বয়নে, করুণা বিকাশে, উথলে, উছলে, স্নেহ ।

য়রাল-ত্রীতে সরসী-সরিতে বিহরি, বাজাও বীণা ।

ফুটে গদতলে শত-শতদল, মাতঃ শতদলাসীনা ।

কৈলাশাচল-তল প্রবাহিনী—অলকননা তটে—

তম বীণা-রব-রণিত-রাগিনী—গগনে পবনে য়টে ।

সে রাগিনী শুনি বাল্মীকি মুনি প্রথমে গাহিল গীত ।

ব্যাস, কালিদাস পাইল বিকাশ হেরি ধরা চমকিত !

কবে কোন্ নর হইল অমর কোন্ দেবতায় সেবি ?

তব পদ লভি কত কোটি কবি মরতে অমর দেবি !

শ্রীছরিপ্রসার দাসগুপ্ত ।

আইনে চীন্ই।

যোধপুরের রাওল স্থরসিং বিবাহের জ্ঞ ঔরঙ্গজেবের দরবার হইতে ছুটি কইয়া দেশে ফিরিলেনু; এই ঘটনার সঙ্গে সোনার খাঁচার পাখিটির মত মোগল অন্তঃপুরে কারুকার্য্য বিচিত্ৰ পাষাণকক্ষে প্ৰথকালিতা সমাটকুমারী জেবুরেগার মেজাজের হঠাৎ পরিবর্তনের কি সম্বন্ধ তা কে জানে ? তবে জেবুলেগা যে সে জেবুরেসা নাই, কিছু দিন হইতে সাহাজাদীর মেজাল যে বেশ একটুথানি গ্রম হইয়াছে দেটা দাসী ও বাঁদী মহলে সকলে বেশ অমুভব করিতেছিল।

বিহুষী এবং স্বভাবত: কোমলপ্রাণা জেবুল্লেদার এই আক্ষিক পরিবর্ত্তনে বাদশাও একটু চিন্তিত হইলেন ও নানা উপায়ে কন্সার মনোবিকার অপনোদনের জন্ম চেষ্টা করিতে লাগিলেন। সেই সময়ে নওরোজ আসিয়া পড়িল। বাদশার এবারকার ন ওরোজ অভাবনীয় ধৃমধামের সহিত সম্পন্ন করিতে হকুম দিয়া, জেবুলেসাকে কাছে বলিলেন—"এবার নওরোকে রাজ্যের সমস্ত রাণী ও নবাব পত্নী, কি ছোট কি বড়, নিমন্ত্রণ কর। আমি ছুকুম দিয়াছি সকলকেই এবার मौनावाबादत जानिए इटेरव, नकरनत जानत অভার্থনার ভার তোমার উপরে দিলাম।" বাদশা ব্ৰিয়াছিলেন জেবুলেসার বিনোদনের জন্ম সকালে সন্ধায় তিনি যে সকল অধিমাদ আহলাদ নাচ তামাদার ব্যবস্থা করিয়াছিলেন দেগুলা তার পক্ষে উৎপীড়ন স্বরূপ হইয়াছিল সেই জন্ম মীনাবাঞ্চারের ভার

পাড়িয়াছিলেন কিন্তু এ কার্য্যটায় বেবুরেসার বরং যেন একটু উৎদাহই দেখা গেল; স্বভরাং বাদশাহ অনেকটা প্রফুলমনে কন্সার মহল इटेट विनाम इटेटन ।

রৌশনবাদী সাহাজাদীর প্রিয় পরিচারিকা এবং বাদশাহের গুপ্তচরও বটে ;--নীনা সমস্তা কুটাল অন্ত:পুররাজ্যের গোপন সংবাদ ছজুরে পৌছিয়া দেওয়া তাহার একটা বিশেষ শাভ-জনক কায ছিল। সে জ্বল্থ মীনাবা**জা**রে উপস্থিত হইবার জন্ম মোগল অন্ত:পুর হইতে রাণী ও বেগমদিগের নামে পত্র বিলি করিবার সময় যোধপুরের নৃতন বৌরাণীর পত্রখানি নিজহন্তে লিখিয়া জেবুল্লেসা যথন রৌশনকে রওয়ানা করিবার জন্ম দিলেন তথন সে পত্র-থানি বাদশার হাতে আসিয়া পিড়িল। বাদশা**হ** সেথানি যত্নে থুলিয়া পাঠ করিলেন **এবং**° নিজের লোক দিয়া দেখানি অবিলম্বে বোধপুত্রে প্রেরণ করিলেন।

পত্র যথাসময়ে ঠিকানার পৌছিল এবং ञ्चतिरह नवभन्नीटक नहेश विल्लीभूटथ ब्रखना হইলেন। সে বারের নওরোজ যেমন হইতে **रम्र ! मिल्लो महदत्र नाह शान আমোদ আফ্লাদের** যেন ফোয়ারা ছুটিয়া গেল। অবিশ্রাস্ত আমোদের নেশায় নওরোব্দের প্রথম আট দিন रयन निरमस्यत मध्य कांग्रिया रशन । नयमिरनत দিন বৈকালে মীনাবাজার। সে দিন প্রাতঃকাল হুইতে রোশন বাঁদির বিশ্রামের আর অবসর ছিল না. সে দিন সাহাজাদীর সাজিবার সথ এমনি বাড়িয়া উঠিল যে রৌশনবাঁদি নিজে যে লইবাক্স প্রস্তাবটা বাদশা একটু ভয়ে ভয়ে , একটু সাজিয়া গুজিয়া ফিট্ফাট হইয়া লইবে

এ অবকাশটুকুও মেলা ভার। সাহালাদীর এক ছাঁদের পর অন্তর্ছাদে চুল বাঁধিতে, একটার পর আর একটা পেশোয়াজ ওডনী ও অলঙ্কার প্রভৃতি নানা খুঁটি নাট বাহির করিতে রৌশন অন্তির হইয়া পডিল। মহলের দাসী বাঁদিরা আজ সাহাজাদীর সাজ ও ভাবভঙ্গি দেখিয়া অবাক হইয়া গেল ও তাহাদের মধ্যে একটা কাণা-ঘুষা পড়িয়া গেল। সকলে বলাবলি করিতে লাগিল বড় লোকের মেজাজ খুদি হতেও যতক্ষণ আবার খারাপি হতেও ততক্ষণ। দেখ আজ কার কপালে কি আছে ? রৌশন জেবুরেসার কাছে ছুটি পাইয়া দেই সময়ে সেই দিক দিয়া যাইতেছিল, সে বলিয়া উঠিল—কার কপাল ভেঙেছে আমি জানি। এই বলিয়া রৌশন দেল্জানের কানে কানে কি ফিস্ফিস্ করিয়া মীনাবাজারের দিকে চলিয়া গেল।

মোগল ভাণ্ডারের অমূল্য মণিমাণিক্য ও
জরাজরাবতে মণ্ডিতা সাহাজানী জেবুরেসা
ব্যন মীদাবাজারে দর্শন দিলেন তথন মনে,
হইল আ্ফাশ হইতে হুর কি পরী নামিয়া
আসিয়াছে! সে রূপ যে দেখিল সেই বলিল
হাঁ বাদশার মেয়ে বটে!

আজ মীনাবাজারে কপদীর মেলা বদিয়াছে এবং দেশের স্থানরী একতা হইলে যাহা হয় অন্তকথা নাই—কেবন্ধ কপেরই চর্চ্চা চলিয়াছে। ও রাণী দেখিতে কেমন ও বেগমের রংটা কি প্রকার, কার গহনার কতা মূল্য ইহা লইয়াই তর্ক বিতর্ক চলিয়াছে। সেই সময়ে দাহাজাদা বলিয়া উঠিলেন—'ভাল কথা আমরা তো দবকরপদী এক সঙ্গে মিলিয়াছি এখন বিচার হউক না স্থামাদের মধ্যে সেরা ক্লপবতী কে? স্থামি বালশাহকে বলিয়া তাঁহাকে আল্লক

পুরষ্ঠার দেওয়াইব।" তথনি সাহাজাদীর পেয়ারের দাসী রৌশন ধাদশার ভজুরে পুরফারের প্রার্থনা জানাইতে ছুটিন । শুনিয়া বলিলেন—"থেলাটা জমিতেছে বটে! ভাল, আমি পুরন্ধার দিতে রাজি আছি কিন্তু জেবুল্লেসা যেন সাবধানে থাকেন, রূপের ছাগুণ লইয়া খেলা কাহারও গায়ে যেন আঁচ না লাগে।" রৌশন বাঁদা মীনবাজারে আমিয়া বাদসাহের মন্জুর জানাইবামাত্র স্থলরী মহলে রপের পরীক্ষা দিবার জন্ম একটা ধূম পড়িয়া সকলেই পরীক্ষা দিতে পরীক্ষা লয় কে ? সকলে মিলিয়া জেবুল্লেদাকে রূপের বিচার করিবার জন্ম ধরিয়া পডিল। সাহাজাদী বলিলেন-"वा। স্বাই পরীক্ষা দিবে আমি বুঝি ফাঁকে পড়িব, সে হইবে না ৷ এই আমেরের বুড়োরাণী আছেন ইনিই আজ বিচারপতি হউন।".

সর্কনাশ। বাদসাজাদীর সঙ্গে রূপের লড়াই ? সাপ লইয়া থেলা ! স্থ নরীরদল একে একে গাঢ়াকা হইতে লাগিলেন এবং থেলা ভাঙ্গিয়া যায় দেখিয়া জেবুল্লেসাও বিশেষ উৎকণ্ঠিতা হইয়া উঠিলেন। আমেরের বৃড়ারাণী জেবুল্লেদার মূথে অসভোষের লক্ষণ (मिथिया वृक्षित्मन वामभाकामी आक रय कान নবাৰপত্নী কি ওমরাহকন্তা অথবা হিন্দু-রাণীকে সকলের সম্মুথে কুরূপা প্রমাণ করিয়া অপদস্থ করিতে চাহেন। অজ্ঞাতনামা মহিলা কেন যে সাহাজাদীর কোপে পড়িবেন এবং কেনই বা জেবুল্লেদা ভাহার উপর ঝাডিতে চাহেন তাহা জানিবার উপায় ছিল না। বুড়া রাণী মহাবিপদে পডিলেন এবং সকলদিক বজায় থাকে এর্ন্সভাবে

সাহাজাদীকে বলিলেন—"লড়ারের পূর্ব্বেই
সকলে কর্থন রলে'ভঙ্গ দিল তথন এ ক্ষেত্রে
বিনাযুদ্ধে বাদশাজাদীরই জয় বলিতে হইবে,
তবে নেহাং যদি লড়ারের সাধ হইয়া থাকে
তো আম্বি আছি, স্বয়ং বাদশা আসিয়া বিচার
করণ আমি স্বন্দরী কি সাজাদী স্বন্দরী।"

রাণীজীর কথার স্থন্দরীমহলে একটা হাসির রোল উঠিল। সকল স্থলরী একবাক্যে বলিয়া উঠিলেন—আমরা স্বইচ্ছায় সাম্বাদীর কাছে পরাজয় স্বীকার করিতেছি, বাদণাহের পুরস্কার ইহারই পাওয়া উচিত। বুড়ারাণী এই স্থযোগে জেবুরেগাকে আরও একটু খুদি করিয়া দিবার বলিলেন—"দেখ ফুলরীগণ ভোমরা সকলেই আদামী, আর আমাদের সাহাঞাদী ফ্রিয়াদী, আমি হলেম কাঞ্চী সাহেব; তোমরা সকলে যথন ভোমাদের রূপের দোষ কবুল যাইতেছ তথনু সাহাজাদীর পক্ষে একতরফা ডিক্রী দেওয়া গেল ও তোমাদের এই ত্রুম দেওয়া যায় যে সকলে একে একে আদিয়া নিজের নিজের নাম ধাম ও পরিচয় দিয়া সাহেনসা ওরঙ্গজেব বাদশার রূপবতী গুণবতী দয়াবতী ছহিতা কুমারী জেবুলেসাকে কুণিশ করিয়া বিদায় হও।"

স্করীরদল বাদশাজাদীকে যথারীতি
সেলাম বাজাইয়া দ্রে গিয়া হাঁপে ছাড়িয়া
বাঁচিলেন। সকলের কুণিশ শেষ হইলে
বাদশাজাদী বলিয়া উঠিলেন—"কই যোধপুরের
বৌরাণীকে দেখিলাম না যে ? দেখুতো রৌশন
তিমি এসেছেন না ?" রৌশন চারিদিক
দেখিয়া আদিয়া বলিল—"কই তাঁহাকে তো
দেখিলাম না।" সাহাজাদা বলিলেন—"তুই
ভাল করিয়া দেখিয়া আয় বোধ হয় জনা লবে

আছেন।" রোশন আবার ছুটিল। আমেরের বুড়ারাণী ব্যাপারটা কতক বুঝিলেন এবং বেচারা যোধপুরণীর জন্ম একটু বেশ ভর পাইলেন; কি জানি কি ঘটে! এদিকে বৌশন এদিক ওদিক দেখিতে দেখিতে দেখিল যোধপুরের বুড়ারাণী এক ঘরে বসিয়া আছেন। দে রাণীকে চিনিত তাডাতাডি গিয়া বলিল— "রাণীমা সাহাজাদী বৌরাণীকে দেখিতে চাহেন কোথায় তিনি ?" বলিতে বলিতে বৌরাণী দেখানে উপস্থিত। অপূর্ব্ব স্থলরী ! রৌশন সে রূপ দেখিয়া অবাক হইয়া গেলু, মনে মনে বলিল এইবার, এইবার সাহাজাদীর দর্পতৃর্ব দেখ্ছি, বড় রূপের দেখাক হয়েছে, এইবার দেখা যাবে ৷ বলা বাছলা জেবুলেলা রৌশনের খাঁদা নাকের প্রশংসা তাহার সন্মুখে প্রায়ই করিতেন এবং দেজভা রোশনও সাহাজাদীর নিকটে বিশেষ বাধিত ছিল।

মানাবাজারে সকলে যথন উৎক্তিতা হইয়া ঘন ঘন ঘারের দিকে চাহিতেছিলেন, সেই সময়ে বৌরাণীকে লইরা রৌশন সাহাজাদীর সম্মুথে হাজির করিয়া দিয়া সরিয়া দাঁড়াইল। বৌরাণী সসঙ্কোচে ঘোমটায় মুখ ঢাকিয়া বাদশাজাদীকে কুণিশ করিয়া একপার্মে দাঁড়াইয়া মহিলেন। জেবুয়েসা ব্ডারাণীর দিকে চাহিয়া বলিলেন— "রাণীজি আসামী হাজিয়, এখন বিচার করিতে আজ্ঞা হউক— জেবুয়েসা রৌশনকে ইসারা করিলেন, রৌশন আসিয়া বৌরাণীর অবগুঠন উঠাইয়া ধরিল। রৌশনের মুখ অভিশয় গন্তীর কিন্তু তাহার খাঁদা নাকের নথ কেন যে অমন করিয়া ছলিয়া উঠিতেছিল তাহা কে বলিবে!

. ভাল করিয়া দেখিয়া আয়, বোধ হয় অন্ত ঘরে 😱 আমেরের বুড়ারাণী সে দিনের মীনাবাজারের

বিষম সমস্থার কিরূপ মীমাংসা করিয়াছিলেন তাহা জানা যায় না, তবে রৌণন সে রাত্রে সাহাজাদীর শর্ন কক্ষের দ্বারে অনেকক্ষণ কান পাতিয়া দাঁড়াইয়াছিল এবং দে যে অনেক দীর্ঘনিশ্বাস শুনিমাছিল সে কথা গোপন রাথে নাই। বৌশন সে রাত্রে সাহাঞ্চাদীর কক্ষে ত্রকবার, প্রবেশনাভের চেষ্টাও করিয়াছিল কিন্ত করবারই বিকল মনোরথ হইয়া ফিরিয়া আসিরাছিল। জেবুল্লেদা অতি প্রত্যুধে রৌশনকে ডাকিয়া পাঠাইলেন। ব্লোপন শীনাবাজার হইতে ফিরিবার সময় সাহাজাদীর মুখের ভাব বিশেষ লক্ষ্য করিয়াছিল এবং বৌরাণীর অবগুঠন থুলিবার কালে তাহার নথের অকারণ চাঞ্চলাটার প্রতি সাহাজাদীর বে বিলক্ষণ নজর পড়িয়াছিল দেটাও বৌশন ব্দানিত, কাষেই বেচারা একটু বিশেষ চিস্তিত ্মনে সাহা**জা**দীর মহলে উপস্থিত হইল।

র্নাশন গিয়া সাহাজাদীর মুথে হাসি
দৈখিবে 'এটা স্বপ্নেপ্ত ভাবে নাই। সেজ্ঞা,
যথন রৌশন আসিবামাত্র জেবুরেসা তাহার
থাঁদা নাকে বড় একটা মুক্তার নথ পরাইয়া
তাহার হাতে বহুমুল্য ,একটি চীনদেশীয়
আয়ুনা দিয়া বলিলেন— "দেখ দেখি নথটা তোর
নাকে মানাইয়াছে কেমন!" তখন রৌশন
হতবৃদ্ধি হইয়া দাঁড়াইয়া রহিল। সাহাজাদী
বলিলেন— "জানিষ্ এই আয়না চীনের রাজা
বাদশাকে দিয়াছে। তুই এ খানা যোধপুরের
বোরাণীকে দিয়া আসিতে পারিস্ ?" সে যেমন

স্বন্দনী এ স্বায়না তারই উপযুক্ত। বলিদ্ এখানি বাদশার পুরজার।" রৌশনের যভটুকু বৃদ্ধি ছিল এইবার লোপ পাইল এবং সাহাজাদীকে সেলাম করিয়া খোদার নাম তারণ করিতে কম্পিত চরণে অগ্রসর' হইল। রৌশনকে অধিক দুর যাইতে হইল না, মধ্য পথে হঠাৎ বহুমূল্য সেই মুকুর হস্তচ্যুত হইয়া পাষাণের উপর পড়িয়া চুরুমার হইয়া গেল। কাচের ঝণঝণার সাহাজাণী আসিয়া দেখিলেন সেই বছমূল্য আয়না ভাঙিয়া চুর হইয়াছে। যৌশন দেখিয়া কপালে সাহাজাদীকে করাঘাত করিয়া বলিল-

"অজ্কজা আইনে চীন্ই শিকস্ত.!"

সাহাজানী প্রথমে কতক্ষণ চুপ করিয়া
থাকিয়া হঠাৎ করতালি দিয়া বলিয়া উঠিলেন—

"থুব শুদ্,আস্বাব খুদ্বিনি শিকস্ত"

রৌশন এতক্ষণ মনে মনে পীরের দিরণী
মানিতেছিল সাহাজাদীর কথার অভয় পাইরা
একেবারে দরজার অভিমুখে ছুটিল। আর
সাহাজাদীর হকুমে দিস্মহলের কারিগর সেই
আয়না চূর্ণ দিয়া ছই ছত্র কবিতা জেবুলেসার
গৃহদারে লিখিতে বসিল।

"অজ কজা আইনে চীন্ই শিকস্ত। খুব শুদ্ আসাব খুদ্বিনি শিকস্ত॥"

"দর্পণ ভাঙিয়া দেখি চূর্ণ হল আ**জ।** ভাল হল, না রহিল দর্পের সে সা**জ।**" শ্রীঅবনীক্রনাথ ঠাকুর। ¹



কচ ও দেবখানী। শূলক অবনাঞ্চনাথ ঠাকুর কর্কুক,অঙ্গিত ফেসকে। চিত্র হইতে

निष्ठी।

ৰখন সিদ্ধির মৃর্ত্তি কিছু পরিমাণে দেখা দেয় তথ্ন আনন্দে আমীদের আঁপনি টেনে নিধে চলা—তথন থামায় কার সাধ্য! তথন শ্রন্থি থাকে না, হর্মপতা থাকে না।

কিন্তু সাধনার আরভেঁই : সেই সিদ্ধির মূর্ত্তি •ত নিজেকে এমন করে দূর থেকেও প্রকাশ করে না। অথচ পথটিও ত স্থাম পথ নয়। চলি কিসের জোরে ?

এই সময়ে আমাদের চালাবার ভার যিনি নেন তিনিই নিষ্ঠা। 🚉 ভক্তি যথন জাগে, হানয় যখন পূর্ণ হয় তখন ত আর ভাবনা থাকে না---তথন ত পথকে আর পথ বলেই জ্ঞান হয় মা—তথন একেবারে উড়ে চলি। কিন্তু ভক্তি বধন দূরে, হ্রবর যথন শৃতা সেই অত্যন্ত ত্ঃসময়ে আমাদের,সহায় কে ?

তখন আমাদের একমাত্র সহায় নিষ্ঠা। 😎 চিত্তের মৃতভারকে দেই বহন করতে 🔸 भारत ।

মরুভূমির পথে যাদের চল্তে হয় তাদের বাহন হচ্চে উট। অত্যস্ত শক্ত সবল বাহন—এর কিছুমাত্র সৌখিনতা নেই। খাদ্য পাচ্চে না তবু চল্চে। পানীয় রস পাচেচ না তবু চল্চে—বালি তপ্ত হয়ে উঠেছে তবু চল্চে— निः भरक हल्टि। - यथन মনে হয় সাম্নে বুঝি এ মরুভূমির অস্ত নেই, বুঝি মৃত্যু ছাড়া আর গতি নেই তখনো তার চলা বন্ধ হয় না।

ना (थरत्र किंडू ना (शरां ७ व्यामारमंत्र हालिरत নিরে যেতে পারে সে কেবল নিষ্ঠা—তার

काँगिश्वत्वत मस्या (थरक अ दम निष्मत्र थान সংগ্রহ করে নিতে পারে। যথন মরুবাযুর মৃহাময় বঞ্চা উন্তের মত ছুটে আগে—তথন সে ধূলোর উপর মাথা সম্পূর্ণ নত করে ঝড়কে মাথার উপব দিয়ে চলে যেতে দেয়। তার মত এমন ধীর সহিষ্ণু এমন অধ্যবসায়ী কে আছে ?

একঘেয়ে একটানা প্রান্তর—মাঝে মাঝে কেবল কল্পনার মরীচিকা পথ ভোলাতে আদে — সার্থকতার বিচিত্র রূপ ক্ষণে ক্ষণে দেখা দেয় না। মনে হয় যেন.কালও যেখানে ছিলুম আন্তও দেখানেই আছি। মন দিতে চাই, মন ঘুরে বেড়ায়, হাদয়কে ডাকাডাকি করি क्षम माजा (प्रमा-(क्विन मान इम वार्थ উপাসনার চেটার ক্লিষ্ট হচ্চি। কিন্তু সেই ব্যর্থ উপাদনার ভয়ানক ভার বহন করে নিষ্ঠা প্রত্যেক দিনই চল্তে পারে—দিনের পর দিন, দিনের পর দিন।

অগ্রদর হচ্চেই অগ্রদর হচ্চেই—প্রতিদিন যে গম্যখানের কিছু কিছু করে কাছে আস্চে তাতে সন্দেহমাত্র নেই। ঐ দেখ হঠাৎ এক-দিন কোণা হতে ভক্তির ওয়েসিস্ দেখা দেয় —স্বদূর প্রসারিত দগ্ধ পাণ্ডুবতার মধ্যে মধু-ফলগুছপূর্ণ থর্জুবকুঞ্বের স্থানিগ শ্রামলভা-**শেই নিভূত ছায়াতলে শীতল জলের উৎস বয়ে** যাচে। সেই জল পান করে ভাতে স্নান করে তেমনি ওছতা বিক্ততার মরুপথে কিছু ছায়ায় বিশ্রাম করে আবার পণে যাত্রা করি। কিন্তু ভক্তির সেই মধুরতা সেই শীতল সরসতা ত বরাবর সঙ্গে সঙ্গে চলে না। তখন আবার ঞুমনি শক্ত প্রাণ যে নিন্দাগ্লানির ভিতর থেকে॰ সেই কঠিন ওচ্চ অশ্রান্ত নিষ্ঠা। তার একটি শুণ আছে ভক্তির জল যদি সে কোনো স্থানো একদিন পান করতে পায় তবে সে অনেকদিন পর্যাস্ত তাকে ভিতরের গোপন আধারে জমিয়ে রাখ্তে পারে—ঘোরতর নীরসতার দিনেও সেই তার পিপাদার সম্বল।

সাধনায় বাঁকে পাওয়া য়ায় তাঁর প্রতি
তক্তিকেই আমরা তক্তি বিল—কিন্তু নিষ্ঠা হচে
সাধনারই প্রতি তক্তি। এই কঠোর কঠিন
শুক্ষ সাধনাই হচে নিষ্ঠার প্রাণের ধন। এতে
তার একটি গভীরতর আনন্দই আছে। দে
একটি অহেতুক পবিত্র আনন্দ। এই বজ্রসার
আনন্দে সে নৈরাশ্রকে দ্রে রেথে দেয়—সে
মৃত্যুকেও ভয় করেনা। এই আমাদের মকপথের একমাত্র সঙ্গিনী নিষ্ঠা ঘেদিন পথের
অস্তে এদে পৌছয় সেদিন দে ভক্তির হাতে
আমাদের সম্পূর্ণ সমর্পণ করে দিয়ে নিজেকে
তার দাসীশালায় লুকিয়ে রেথে দেয়; কোনো
অহার করে না, কোনো দাবী করে না—
সার্থকতার দিনে আপনাকে অস্তরালে প্রচ্ছয়
করেই তার স্লখ।

নিষ্ঠা যে কেবল আমাদের শুক্ক কঠিন পথের উপব দিয়ে অক্লাস্ত অধ্যবসায়ে চালনা করে নিয়ে যায় তা নয়—সে আমাদের কেবলি সতর্ক করে দেয়। রোজই একভাবে চল্তে চল্তে আমাদের শৈথিলা এবং অমনোযোগ আস্তে থাকে। নিষ্ঠা কথনো ভুল্তে চায় না—সে আমাদের ঠেলে দিয়ে বলে এ কি হচ্চে! এ কি কয়চ! সে মনে করিয়ে দেয় ঠাগুার সময় যদি এগিয়ে না থাক তবে রোজের সময় যে কষ্ট পাবে। সে দেখিয়ে দেয় তোমার জলাধারের ছিজ দিয়ে জল পড়ে যাচেচ পিপাসার সময় উপায় কি হবে! আমরা সমস্ত দিন কত রকম করে যে
শক্তির অপবায় করে চলি তার ঠিকান নেই—
কত বাজে কথায়, কত বাজে কাজে। নিষ্ঠা
হঠাৎ শ্বরণ করিয়ে দেয় এই যে জিনিষটা এমন
করে ফেলা ছড়া করচ এটার যে খুব প্রয়োজন
আছে—একটু চুপ কর, একটু স্থির হও—শ্বত
বাড়িয়ে বোলো না— অমন মাত্রা ছাড়িয়ে
চোলো না—যে জল পান করবার জন্তে যক্তে
সঞ্চিত করা দরকার দে জলে থামকা পা ভূবিয়ে
বোসো না। আমরা যথন খুব আত্মবিশ্বত
হয়ে একটা তৃচ্ছতার ভিতরে একেবারে গলা
পর্যান্ত নেবে গিয়েছি তখনো সে আমাদের
ভোলে না—বলে, ছি, এ কি কাণ্ড! বুকের
কাছেই সে বসে আছে, কিছুই তার দৃষ্টি
এড়াতে চায় না।

সিদ্ধিলাভের কাছাকাছি গেলে প্রেমের সহজ প্রাজ্ঞতা লাভ হয়—তখন মাত্রাবোধ আপনি ঘটে—সহজ্পবি যেমন সহজেই ছন্দোরকা করে চলে আমরা তেমনি সহজেই জীবনকে আগাগোড়া দৌলুর্যার মধ্যে বিশুদ্ধরূপে নিয়মিত করতে পারি—তথন খলন হওয়াই শক্ত হয়। কিন্তু রিক্ততার দিনে সেই আনন্দের সহজ শক্তি যথন থাকে না-তথন পদে পদে যতিঃপতন হয়— যেখানে থাম্বার নয় সেথানে আলস্ত করি, যেথানে থাম্বার সেথানে বেগ সামলাতে পারিনে। তথন এই কঠোর নিষ্ঠাই আমাদের একমাত্র সহায়। তার ঘুম নেই সে জেগেই আছে। সে বলে ওকি ! এযে একটা রাগের রক্ত আভা দেখা দিল! ঐষে নিজেকে একটু বেশি করে বাড়িয়ে দেখাবার জপ্তে তোমার চেষ্টা আছে! ঐ যে শক্তার ভোমার স্থৃতিতে বিংধই ইইল। • • কাটা

কেন, হঠাৎ গোপনে তোমার এত ক্ষোভ দেখি কেন! এই থে রীত্রে শুতে যাচ্চ এই পবিত্র নির্মাল নির্দার কক্ষে প্রবেশ করতে যাবার মত

সাঞ্চার দিনে নিষ্ঠার এই নিত্য সতর্কতার
স্পর্শ ই আমাদের সকলের চেয়ে প্রধান আনন্দ।
এই নিষ্ঠা যে জেগে আছেন এইটে যতই
জান্তে পাই তত্তই বক্ষের মধ্যে নির্ভর অন্তত্তব
করি। যদি কোনোদিন কোনো আত্মবিশ্বতির
ছুর্গোগে এঁর দেখা না পাই তবেই বিপদ গণি।
যখন চরম স্কুদকে না পাই তথন এই নিষ্ঠাই
আমাদের পরম স্কুদরেপে থাকেন—তাঁর
কঠোর মৃত্তিই প্রতিদিন আমাদের কাছে ভল
সৌন্দর্যো মণ্ডিত হয়ে ওঠে—এই চাঞ্চলাবর্জিত ভোগবিরত পুণালী তাপদিনী আমাদের
রিক্ততার মধ্যে শক্তি, শান্তি এবং জ্যোতি
বিকীর্ণ করে শেরিদ্রাকে রমণীয় করে তোলেন।

গম্যস্থানের প্রতি কলম্বদের বিশ্বাস এখন মৃদৃঢ় হল তথন নিষ্ঠাই তাঁকে পথচিব্লহীন অপরিচিত সমৃদ্রের পথে প্রত্যহ ভরসা দিয়েছিল। তাঁর নাবিকদের মনে দে বিশ্বাস দৃঢ় ছিলনা, তাদের সমৃদ্র যাত্রায় নিষ্ঠাও ছিল না—তারা প্রতিদিনই বাইরে থেকে একটা কিছু সফলতার মৃর্ত্তি দেখবার জন্মে ব্যস্ত ছিল—কিছু একটা না পেলে তাদের শক্তি অবসর হয়ে পড়ে—এই জন্মে দিন যতই যেতে লাগ্ল সমৃদ্র যতই শেষ হয় না, তাদের অবৈর্য্য ততই বেড়ে উঠ্তে থাকে। তারা বিদ্রোহ করবার উপক্রম করে, তারা ফিরে থেতে চায়। তবু কলম্বদের

নিষ্ঠা বাইরে থেকে কোন নিশ্চয় চিহ্ন না
দেখতে পেয়েও নিঃশদে চল্তে থাকে।
কিন্তু এমন হয়ে এসেছে নাবিকদের আর
ঠেকিয়ে রাথা যায় না—তারা জাহাজ ফেরায়
বা! এমন সময় চিহ্ন দেখা দিল—তীর যে
আছে তার আর কোনো সন্দেহ রইল না—
তথন সকলেই আনন্দিত—সকলেই উৎসাহে
এগিয়ে যেতে যায়। তথন কলম্বসকে সকলেই
বন্ধুজ্ঞান করে, সকলেই তাকে ধ্যুবাদ
দেয়।

সাধনার প্রথমাবস্থায় সহায় কে**উ নেই**— नकत्वहे मत्नह श्रकां करत्र, मकत्वहे वाशा দেয়—বাইরেও এমন কোনো স্পষ্ট চিহু দেখুতে পাইনে যাকে আমার সত্য বিশ্বাসের স্পষ্ট প্রমাণ বলে নিজের ও সকলের কাছে ধরে দেখাতে পারি—তথন সেই সমুদ্রের মাঝথানে, সন্দেহ ও বিক্লন্ধতার মধ্যে নিষ্ঠা যেন এক মুহুর্ত্ত সঙ্গ, ত্যাগ না করে। যথন তীর কাছে আদ্বে— •যথন তীরের পাথী তোমার মাস্তলেঁর উপর উড়ে বদ্বে, যথন তীরের ফুল সমুদ্রের তরঙ্গের উপর নৃত্য করবে তখন সাধুবাদ ও আরুকুদোঁর অভাব থাক্বে না কন্তিন্ত ওতকাল প্রতিদিনই কেবল নিষ্ঠা—নৈরাগ্রন্থী নিষ্ঠা, আঘাত-महिकू निष्ठी, वाहित्तव উৎमाह-निव्नत्भक्त निष्ठी, নিন্দায় অবিচলিত নিষ্ঠা—কৈানো মতে কোনো কারণেই দেই নিষ্ঠা যেন ত্যাগ না করে-দে যেন কম্পাদের দিকে চেয়েই থাকে—সে যেন হাল আঁকিড়ে বসেই থাকে।

শীরবীক্রনাথ ঠাকুর।

পাকচক্ৰ।

(প্রহসন)

[কর্ত্তা, গৃহিণী, পুত্র বিনোদ। গৃহিণীর প্রতিপালিতা দরিন্তা কল্পা শশীমুখী। কর্তাব প্রিয় কর্মচারী যুবক চন্দ্রকান্ত। কর্তার দূবসম্পর্কীয়া আত্মীয়া বরদা। ঘটকী, হারুবাব, মিপ্তান্নভন্নালী প্রভৃতি।

প্রথম দৃশ্য।

বরদা বসিয়া পান করিতেছেন, বিনোদের প্রবেশ।

বি। বরুপিদি, তুমি একটা উপায় না করলে কিছুতেই চলছে না—আমি কি চিরদিন ধরে এই রকম শরশযাায় ভ্রমে থাকেব নাকি ? আমাকে কি ভীন্ম পেয়েছ ?

ৰক। আমার কি অসাধ বাবা। ভোর মা যে কিছুতেই বোঝে না, কি করি বল না ! 'একটা কাজ যদি করতে পারিস।—

। বি। একটা কাজ! লক্ষ কাজ করতে রাজি আছি,--কি বল দেখি।

্বক। ঐ শনী আসছে এখন থাক, পরে বলব।

বি। আঃ আর পারা যায় না। কেবল শশী আর চাঁদ, চাঁদ আর শশী, তবু সন্ধ্যা না হতে হতে বাড়ীটা বেদম অন্ধকার, আছে৷ আমি বাইরের ঘরে বসছি, তুমি কাঞ্চ সেরে এদ, আমরা দরজা বন্ধ করে পরামর্শ করব---কাউকে কাউকে ঢুকতে দেব না-কি বল ?

পান করিতে উপবেশন]

শ। দাদাবাবু কি বলছিলেন? মাগো গিলি যেন আমাকে না ফাঁদান! অত করে স্থারি দিয়েছ পিসি।

বরু। শোন কথার 🕮 ! স্থপুরি দেব না ভবে ঘাস থাব নাকি! তুই স্থপুরি খেতে পারিসনে বলে কি কেউ খাবে না ?

শ। তা দাও না-কিন্তু মাসকাবারের আগে স্থপুরি কুরুলে আমার কিন্তু দায় দোব নেই, আমি বলে খালাস। তা দাদাবাবু কি বলছিলেন গ

বক্ব। হাা তোমারই কিনা সব ভাতেই **माग्न (माग्न ट्यांगाटक इत्र ! मामावाव आत्र कि** বলবে, এই হরিবাবু ভদ্রলোক-মেয়ে নিয়ে সাধাসাধি করছে, অমন হুন্দর মেয়ে, ছেলে-त्र७ चा मन, जा तीनिनित्र त्य त्कन मन উঠছে না, এইটেই আশ্চর্য্য! ওমা দারচিনি এলাচ যে সব ফুরিয়ে ফেলি।

শ। যাগো! দারচিনি এলাচ না হলে কি পান খাওয়া যায়! তা তারা বাবু—আর একটু উঠুক না, মা ত হক কথাই বলেন, আৰু কালকার দিনে ছেলে কি ছু পাঁচ হাজারে মেলে ! আর অমন পাশ করা ছেলে !"

বক্ন। আমাদের পানে একখানার বেশী তথানা স্থপুরি ধরচ করবার যো নেই, আর [বিনোদের প্রস্থান-শ্লীমুখীর প্রবেশ ও . ভোমার ডালচিনি এলাচ নইলে পান রোচে না,—ধন্তি সোয়াগিনী বাহক! দেখো শেৰে

ে । নাগোনা-লে ভন্ন নেই, ব্ৰুনী

(थए इब व्यामिरे थार। তা তারা আর একটু বাড় ক না।

वक्र। ति कथाय काक तिहे, व्यामना थाव বকুনী আর ভূমি থাবে মেঠাই মণ্ডা! কেন ্বাড়বে ! • মেয়ে কেমন ভাওত দেখতে হবে ! व्यव सम्मती भटरक এक हो स्मा नाय !

শ। (পান ধুইবার° জলপাত্রের দিকে काहिया क्रडको यहकारत) नानावावूत रय कि নজর! সুন্দর অহন টের চের আছে!

[ঘটকার গান করিতে করিতে প্রবেশ।] কে ভোরা জামাই নিবি, ওগো কনের মারা-এনেছি নতুন বর গুণে সেরা,ওগো গুণে সেরা!

বৰু। (পান সাজা বন্ধ রাখিয়া) এই যে ঘটক ঠাকরুণ, এস এস—বরের গুণ গুলো ভাল করে বল—শোনা যাক। আমাদের ঘরে যদিও মেমে নেই।

ঘ। ভূবে আর এ গান ভনে কি হবে; বানরানাং কঠে গব্দমতিবৎতরলং দাঁড়াবে বই ত নয়।

বরু। তা আমরা বাঁদরই বটে—মুখ্য সুখ্য লোক।

শ। নাগো বাঁদর কেন হতে গেলুম-তোমার ইচ্ছা হয় তুমি হও।

(জলে মুখদর্শন)

বরু। হাঁ। তুই কাষ্ট মাষ্ট কি পড়েছিস বটে। ঘ। আজ্ঞা তানর তানর-ও কেবল উপমা উপমেয়ঞ।

বঙ্গ । ঘটকঠাকরুণ, থেমে যাও। শশী জাবার মুখ্য বলে রাগ করে। তুমি বরের সহনি—ধবে না। এই দেখ না আমার ছেলে গুণ গান কর আমরা শুনি।

य। কিন্তু রসমঞ্জন স্থায়টা না জানা থাকলে গাণ্টার ভাল রস বোধ হয় না, বুঝলেন ?

বরু। তা, রাসকীর্ত্তন, মানভঞ্জন এ, স্ব পালা জানা আছে বই কি, তুমি গাও।

ঘ। (হাসিয়া) হা হা--রসমঞ্জন স্থায় আর রাদকীর্ত্তন এক নম্ব ; তবে বলছেন গাই।

কে তোরা জামাই নিবি, ওগো কনের মা-রা, এনেছি নতুন বর গুণে দেরা,ওগো গুণে সেরা।

এ নয় সাধারণ ছেলে পাশের রাশ সে বইতে নারাজ,

তাই ফেল্ বিএ, এল এ; श्वरणंत कर कि मौगा, এत नारे ख्यो क्या, এবে স্থনামধন্ত পুরুষগণ্য বিশাত ফেরা !

ওগো কনের মা-রা— কে তোদের মেয়ে এমন কপাল জোরা! লাগবে না টাকা কড়ি সোনাভরি ওলন করা; শুধু উনিশ কি বিশ, যোতুকটি দিস

কাগজ ভরা,—ওগো কাগজ ভরা: व्ययमि भवरव टोभित्र, व्याभिन तम वृत्र तम्रत्व दत्रा ব। এগো গিরি আদছেন— (प्रकरणत पार्नित मिरक मरनानिरवर्ग। शृहिनीत

> च ইনিই গিরি ?

প্রবেশ।)

গু। আর গিরি! নামে গো নামে, এ সংসারে থাটভেই আমি গিন্নি, কথার বেশা একটা किन्त थाकে ना।

য। তাইত। অপরম্বা কিং শোচনীয়া— ব্রুথাৎ এর চেয়ে হু:খ কি আছে।

গু। ঐ যা বলে । এর চেয়ে কেউ ছ:খ — হুধের ছেলে, এখনো গাল টিপলে হুধ পড়ে— এই বয়সেই হু হুটো পাশ—এমন কেউ কথমো ्राप्ति त्यां त्यारमि। जा—वरण किमा छ- शैक हाकांत्र मिरत्र नत्मा नत्मा करत्र शांत्ररव। এখানে কিন্তু কর্ত্তার ইচ্ছা কর্ম হতে দিচ্ছিনে, मणि शकादतत अकि भागा कम त्नव ना !

ছ। তা অন্তায় কথা নয়--অন্তায় কথা নয়, ও কথা বলতে পারেন-মহাজনভা য পছা স গতা।

ব। ঘটকঠাকরণ কি পণ্ডিত গা! সেই অবধি কত ছড়াই বলছেন।

ঘ। হাহা ছড়া! একট্ অপ্লাল দোষ িঘোটলো যে ! শ্লোক—বুঝলেন, ছড়া নয় আর পণ্ডিত কথাটাও ভুল—পণ্ডিতের স্ত্রীলিঙ্গ পণ্ডিতানী, যেমন মাতৃণ মাতৃলানী।

ব। উ: কি বিশ্বান ! কথা কইতে ভন্ন হয়। ঘ। ভয়ের কোন কারণ নেই, ভবে স্ত্রীলিঙ্গে বিশ্বান কথাটার প্রয়োগ হয় না। বিশ্বস শব্দে ঈ প্রত্যয় করলে হর বিষ্পী বুকলেন।

গৃ। কি যে বলছ কিছুই ত মাথামুণু বুঝতে পারিনে! বিয়ের কথা কি বলতে এনেছ তাই বলনা ছাই।

জানেন মেয়ে আছে ঘ। তাবলছি। চার এরকম-বিষ্ণী, রূপনী, ধনাবতী ও खगावजी,- महत्राहत मकत्न वरन थारक वरहे ধনবতী গুণবতী,—কিন্তু সেটা ভুল, ধন শব্দের স্ত্রীলিঞ্চ ধনা,—আর গুণ শব্দে গুণা —অতএব ধনাবতী ও গুণাবতী ;—এর মধ্যে কোনরকম মেয়ে আপনি চান বলুন, আমি তাই এনে দেব।

গান :

আমি কি যেমন তেমন ঘটকী ও গিলি। আমার পারে পড়ে আট পহরে— ভারে ভারে দিরি। রং বেরভের স্থা স্কপ এক একটি বর আন্ত তুরুপ

আমার হাত ধরা। আর ক'নে সবি হরেক বিবি -এমন কেউ কখনো পাননি।— व । সত্যি ঘটকঠাকুরণ যে রকম বিশ্বান-ঘ। নানা-বিশ্বসী---व। ছाই মনেও থাকে না-বি বি-

विनामी।

মহাভারত মহাভারত ! থ।

ব। ওটা বুঝি মন্ত ভূল হোল—বি-বি বিজ্ঞা—হাঁ৷ হাঁ৷ বিজ্ঞাগজি—এবার ভ ঠিক হয়েছে! বিভাগজি ঠাকরণ-তুমি ঘটকালী না করে পড়াও না কেন ?

ঘ। তা ও সম্বোধনটা করতে পারেন-নিতান্ত অভন্ধ হবে না। আমার স্বামীর পদবী হচ্ছে,—বিভাদিগ্গজ, সংক্ষেপে আমাকে বিহাগজি বলা যেতে পারে।

ব। আঃ বাচলুম।—তা দিগগঞ্জি মহাশয়

ঘ। মহাশয় না মহাশয়া---

গৃ। দেথ ঠাকুরঝি বঙ্গর বঙ্গর ছাড়বে ?

আমি বলছি—ভাহলে ঘটকালী না করে -- মাষ্টারি করলেই ত হয়। আমার মেয়ে-টিকে কিন্তু পড়াতেই হবে —দিগগঞ্জি ঠাকরুণ —আমার ইচ্ছা তাকে ভাল করে নেকাপড়া শেখাই, निष्क ७ मूथ्र इरम्र इहेनूम।

ব। এ ইচ্ছা স্বাভাবিণী,—কিন্ত এতে আমার ইচ্ছাও যাতে প্রবলিনী-বেগা হয়.— সেটা করা চাই।

ব। আহা কেমন মিষ্ট করে কথাটা . বল্লেন। তা আমার মেয়েকে যদি পড়ান আমি মাদে পাঁচ টাকা করে দেব।"

গৃ। তুই যে দেখছি পাগল হলি—মেন্নের ্ প্ৰড়াৰ জন্ম পাঁচ পাঁচ টাকা ধৰচ কৰবি ! 🔭 🔭 ঘ। ওকথা বলবেন না, আপনারা হলেন আনাদের মহাজনানিচয়া আদর্শিনী দাত্রী—
গু। কি বলিস্! আমরা ধাত্রী,—বের
করে দে মাগীকে বের করে দে—এমন গাল
আমাদের কেউ কথনো দেয় নি।

খ। হা: হা, গাল নর মহাজনা—এই আমাদের সহজিনী ভাষায় যাকে বলে দাতা ভাই বলছি। ত্রালিঙ্গে দাতা কথাটা অগুদ্ধ—
দাত্রীই ঠিক;

গৃ। ধাত্রীই ঠিক। মলো মাগী — দ্রহ বলছি।

ঘ। আমি ঠিক বলছি—বার বার পুনর্কার
বলছি এ ভাল কথা—গাল নয়, আপনি
শিক্ষিতানী নন বলে এর মর্য ব্রছেন না।

শ। তাই ত এ মাগী দেখছি—বুকে বদে দাড়ী ছিঁড়তে চায়!

ঘ। হার হার! এ তুলনাটা নিতান্ত ব্যাকরণ অঞ্জ হোল! ত্রালিঙ্গে দাড়ী অসম্ভব,—চুল হেঁড়ার কথা বলে সঙ্গত উপমাহর।

গৃ। ওমা একি বলে গো—ও যে চুল ধরে টানে। ও কর্ত্তা কর্ত্তা গো—শেষে কি এই দশা হোল আমার! পথের লোক এসে চুল ধরে টানে!

(উটৈঃস্বরে ক্রন্সন করিতে করিতে প্রস্থান।) শশী। থাম মা থাম,—একি হোল গো। পশ্চাৎ ধাবমান।

বন্ধ। একি করলে বল দেখি—বিভাগজি ঠাকরুণ—

[•] য। হাহা একেই বলে অশিক্ষিতাণী •
পটুতাণী। বিভৃতি দাস স্বয়ং যা বলেছেন—
তা কি মিধ্যা হয়।—

ু (নেপথ্যে— ভগো কি হলো গো আমার !) •

বক্ষ। চল — আর না — গিরি দেখছি
ভারী ক্ষাপা হয়েচেন — আর একদিন এসে
বিয়ের কথা তুলো — প্রস্থান
ঘ। একটু দাঁড়ান, একটু দাঁড়ান, গানটা
একবার শুনে যান।

(ঘটকীর তুড়ি দিয়া গান)

আমি কি যেমন তেমন ঘটকী, ও গিন্নি। আমার পান্নে পড়ে আট পহরে,

ভারে ভারে দিরি!

রং বেরঙের, স্বগুণ সুরূপ, •

এক একটি বর আন্ত তুরুপ,—

আমার হাত ধরা,—

আর কনৈ সবি, হরেক বিবি—

এমন কেউ কখনো পাননি।

চাও যদি গো গুণের মেয়ে—

তার—না ফুরবে অর দিয়ে,—

আনব—স্বয়ং দ্রোপদী—

কিম্বা পটল পারা চকু চেরা— *
চাও কি রূপের বৃদ্ধি
নয় যদি চাও টাকার থলে,
ভাহাও বলু খুলে থেলে
ওগো—বিলাত যাবে—ভোমার ছেলে,—
সবাই করে ধ্ঞি।

সবাই কবে ধান্ত েবেশী কথা কি কৰ্ম আর,

ভবে করি যাত্রী পার—

আমি কাণ্ডারী,

ছেলে মেয়ে, মা বাপেরা, পার হতে চাও বারা বারা আঁচল ধরে দাঁড়াও তারা,— আমি— নহিত সামান্তি।

(গাহিতে গাহিতে প্রস্থান।) •

वटनस्नाथ।

ৰালালা সাহিত্যে বলেন্দ্ৰনাথের স্থান অতি উচ্চে। ইহা সত্ত্বেও আজি কালিকার সাধারণ পাঠকের যে তাঁহার সহিত ঘনিষ্ঠ পরিচয় নাই তাহার কারণ, প্রথমতঃ তাঁহার সহিত ইহলোকের প্রতাক সম্ম নাই বিভীয়ত:, তাঁহার রচনাবলী এতদিন মাদিক পত্রিকার ধুলিমলিন পৃষ্ঠায় ইতন্তত: প্রক্রিপ্ত ছিল। সম্প্রতি তাঁহার গ্রন্থাবনী প্রকাশিত হওয়ায় বাঙালী পাঠকের তাঁহার সহিত হপরিচিত হইবার অবসর ঘটিয়াছে। তঃথের বিষয়, তাঁহার গ্রন্থাবদী প্রচাক্তরপে সম্পাদিত হইতে অবকাল পায় নাই। তাঁহার রচনাগুলি রচনা-কালামুক্রমে বা বিষয় পর্যায়ে শ্রেণীবদ্ধ ইইয়া প্রকাশিত হইলে অফুসদ্ধিংস্থ ও চিম্বাদীল ু পাঠকের অনেকটা সহায়তা করিতে পারিত। তথাপি মাল এই স্বরুহৎ, মহামূল্য গ্রন্থাবলী সাধারণে প্রচার করিয়া ইহার প্রকাশক মহাশয় বঙ্গসাহিত্যের একটি গুরুতর অভাব মোচন ক্রিয়াছেন। কিন্ত তাঁহার অকাল তিরোভাবে বল সাহিত্যের মর্মন্সনী দীর্মবিলাপ কোনকালে সমাপ্ত হইবে না।

বলেজনাথের রচনা তাঁহার ভাষা মাহাছ্যে এবং স্থমধুর বাক্ভলিতে সাহিত্যলগতের এক অপূর্ব সামগ্রী।

ভাষা সাহিত্যিকের প্রধান অস্ত্র, ভাষার সাহাব্যেই সহাম্ভূতির দার দিয়া তাঁহাকে পাঠকের হৃদরে প্রবেশ লাভ করিতে হয়, অম্ল্যভাব লইয়া মুক্ত হস্তে অবাচিত দান করিতে বসিলেও কোন পাঠকই বিজ্ঞ ও 'ভার্ক' লোকের নিকটছ হইতে ইচ্ছা করেন না। অথচ একজন 'ভাবহীন' লেখন্
কেবল মাত্র স্থান্তর ভাষার সাহায্যে সহজেই
পাঠকের হৃদর অধিকার করিতে পাবেন।
পাঠকের সহিত লেখকের কোন পূর্ব পরিচর
নাই, আয়ীয়তা নাই। লেখক যদি তাঁহার
মধুরচ্ছনেদ ঝলার তুলিতে না পারিয়া,
কেবলই ভাবের গুরুজ, চিন্তার ঐশ্বর্যা
দেখাইতে উৎস্ক হইরা বদেন, ভবে অপরিচিভ
পাঠকের এমন কি দার পড়িয়াছে যে ধৈর্যা
সহকারে সহায়ভূতিকে বিদার দিরা কেবল
মান্তিকের সাহায়ে তাঁহার ভাবরাশি গলাধঃকরণ
করিবে।

এখানে ভাষা অর্থে এমন বলিভেছি না, বে অভিধানের হ্রহ শব্দ সমষ্টি বাছিয়া গ্রাথিত করাই ভাষা। ভাষা অর্থে এইরূপ ব্রিতে হইবে, যাহাতে মানবহাদয়ের অব্যক্ত ভাষটি সরল ফুলরভাবে ব্যক্ত হইয়া অপর হৃদয়ে দেই প্রকারের একটা ছাপ রাখিয়া বায়।

কিন্ত ঐরপ ভাষা ব্যবহারে অভান্ত হইতে হইলে কতকটা ছন্দের অধিকারী হইতে হর। যে শব্দ চয়নে লেখকের মর্ম্ম কথাটি সমগ্রভাবে ফুটিরা পাঠকের চিত্তে একটি অব্যক্ত মধুর স্থানী ছন্দ স্পষ্ট করিতে পারে ভাহাই যথার্থ সাহিত্যিক ভাষা।

বলেজনাথ দেই ছন্দমরী ভাষার নিষ্কৃত্ত ছিলেন। তাঁহার 'কলবেদনা' পাঠ করিলে সত্য সত্যই মনে হর পরিপূর্ণ কুন্ত, বিকলিত যৌবনার পেলব বাহুলতার বন্ধনে একটা অবাক্ত ভাষাহীন বেদনার মুথের হুইরা ভ উঠিয়ছে। তাঁহার 'সন্ধ্যা' পাঠ করিলে



मस्तात सोनशस्त्रोत महिमा, তাहात এय-मिन माधूती, जाहात मम्या मस्री खक्षन, ममस्त्रीत এको। मधूत ठिक, এको। कमन इन्ह जामात्वत इनुद्व जन्मार्थ शोकिया योग।

ভাষার উদ্দেশ্ত আর একটি, বেটি বলেন্দ্রনাবের লেথনাতে চত্তুম সফলতা লাভ
করিয়াছে—সেটি স্বাধীন সৌন্দর্য্যের স্থাষ্ট।
ভাষার শুধু একটি সঙ্গীত প্রবাহ বা চিত্রাঙ্কনী
বেথাপাত অক্র থাকিলেই যথেষ্ঠ হইল না।
ছন্দের ঝকার ও চিত্রাঙ্কন, উভরের সামগ্রস্তে
বে একটি অনবত সৌন্দর্য্য স্থাষ্ট হয় তাহা অভি
উচ্চশ্রেণীর লেথকের উপযুক্ত।*

এই ভাষাগঠনে বলেন্দ্রনাথের ক্বতিত্ব ও বিশেষত্ব অসাধারণ। তাঁহার সেই প্রতিভার মূলে তাঁহার আবাল্য সংস্কৃত শিক্ষা। এ কথাট তাঁহার গ্রন্থাবলী-প্রকাশক স্থলেথক ঋতেক্রবাবু বিশেষভাবেই লক্ষ্য করিয়াছেন। যদি চিত্রের পর চিত্র আঁকিতে হয় ছন্দের পর ছন্দের ঝন্ধারে অব্যাহত ও গভীরস্থরের সৃষ্টি করিতে • হয়. তবে সংস্কৃতের শরণাপর হইতেই হইবে। তাহার কারণ আর কিছুই নয়, সংস্কৃত আমাদের অতি পূর্ব্বপুরুষগণের ভাষা। সে ভাষায় একটি পুরাহন জাতি, বংশপরম্পরায় আপনার হাদয় বাথা ব্যক্ত করিয়া আসিয়াছে, তার এক একটি শব্দের সহিত কতটা শ্বৃতি, কতটা নিবিড় অমুরাগ, কভটা গভীর ব্যথা, সুথ হ:ধ ব্রড়িভ আছে। বাঙ্লা ভাষায় একটা শ্লের বয়স হয়ত পাঁচশত বৎসর, কিন্তু সংস্কৃতে এক একটির ব্রুদ ২।৩ হাজার বৎসর। ভাষার প্রমায়ু যত

দীর্ঘ, তাহার ইতিহাদও তত দীর্ঘ ও বিচিত্র।
উদাহরণ স্বরূপ একটা শক লইরা দেখা যাউক।
'শঙ্কা'! শঙ্কা বলিলে আমাদের হৃদয়ে একটি
বিপুল ও গন্তীর ধ্বনি আঘাত করিয়া উঠে,
মনে হয় যেন কুরুক্ষেত্রে পাঞ্চলগ্রের নির্ঘোষে
দিল্মগুল প্রকম্পিত হইরা উঠিয়াছে। তাহাতে
কেমন একটি গান্তীর্ঘা, মহিমাময় অথচ পুণ্যক্রড়িত ভাব হৃদয়ে ফুটিয়া উঠে। 'শার্থ' ঐ একই
শব্দের রূপায়র, অথচ উভয়ে কত প্রভেদ!
তাহাতে দিল্মগুল প্রকম্পকারী নির্ঘোষ নাই,
আচে শুধু ক্ষণিকের একটি অল্লহায়া ধ্বনি।

বলেন্দ্রনাথ সংস্কৃতে লক্ষপ্রবেশ ছিলেন।
তাই তাঁহার রচনায় অক্স সমাসের মলিকাফুল
ফুটিয়া নির্দ্মল শোভা সম্পাদন করিয়াছে।
সমাস সংস্কৃতের আকরে শ্রেষ্ঠ রক্স। তাহা ছারা
ভাব ও সৌন্দর্য্য এত সহজে আঁকিয়া ফেলে,
যে Compound word হাজার স্থিতিস্থাপক
হউক, তাহার নিকট পরাস্ত! "বপ্রক্রীড়া
পরিণতগজঃ"—হয়ত তেমন শ্রুতিমধুর নয়,
কিন্তু কত সহজে একটা মহান চিত্র ফুটাইয়া
তুলিয়াছে! বল্লেনাথের রচনা মনোহারী
হইবার আর একটি কারণ তাঁহার ভাষা
সমাসে থচিত, কিন্তু কণ্টকিত নহে।

কিন্তু কেবল সংস্কৃত শব্দ-সম্পদে বাঙলা ভাষা পর্যাপ্তভূষিতা হইতে পারে না। মান্ত্রের মধ্যে যেমন সমাজ আছে ভাষার মধ্যেও তেমনি স্বভাবগঠিত সমাজ আছে। শব্দ শুধু ধ্বনি মাত্র নহে, তাহারা এক একটি সজীব শরীরী মূর্ন্তি! ঋষিগণ ষেরূপ মন্ত্রের মূর্ন্তির

একটি কথা বলা আবশ্যক মনে করিতেছি। সাধারণে বাহাতে বলেক্সনাথের রচনা বহল প্রচারিত হয় তত্ত্বক গ্রন্থাবলীর মূল্য বধাসম্ভব স্থলভ করা প্রায়েলন। ইহার বর্তমান মূল্য সাধারণের কিঞ্ছিৎ কোভের কারণ হইরাছে।

पर्णन केविए भान-कविश्व महिन्न भरमन মূর্ত্তি দেখিতে পান। করেক শ্রেণীর শব্দ হয়ত রাজৈখর্য্য-ভূষিত, আবার কতক অতি দীনবেশ। সংস্কৃত শব্দে অধিকাংশই সভ্য ভদ্ৰবেশী। কিন্তু ভিথারীর চিত্র আঁকিতে বাঙলা শব্দই বোধহয় অধিকতর উপযোগী। আমাদের বর্ত্তমানে দেরপ জীবনসংগ্রাম তীব্র ও কঠোর হইয়া আদিয়াছে তাহাতে বোধ হয়, একমাত্র সংস্কৃত ভাষা আমাদের মানসিক বৃত্তিগুলির যথেষ্ট প্রকাশপথ হইতে পারে না। এজগ্র বাঙ্গালা ও সংস্কৃত উভয়ের অন্তর্নিহিত শক্তির মিলনে একটি কার্য্যোপযোগী ভাষা আবিষ্কার করিয়া লইতে হইবে। বৃদ্ধিসচক্র এই আবি-ছার কার্য্যে স্বীয় অসামান্ত প্রতিভার পরিচয় দিয়াছেন। শিশু বলেক্রনাথও এ বিষয়ে যথেষ্ট ক্লতিত্ব ও উদ্ভাবনী শক্তির পরিচয় দিয়াছেন। ব্ৰেক্সনাথ বাঙ্লা ও সংস্কৃতে কেবল যান্ত্ৰিক মিলন না করিয়া আন্তরিক মিলন করিয়া সুন্দর একটি পথ আবিদার করিয়া গিয়াছেন !

বলেশ্রনাথ ভাবুক ছিলেন। 'ভাবুক' আর্থ আমি দার্শনিক বা চিস্তানীল বলিতেছি না। কার্লাইল যে অর্থে ভাবুক, বলেক্রনাথ সে অর্থে নহেন! তিনি তঙ্গণ, তাঁহার হৃদর আলো ও ফুলের গন্ধের মত লঘু। কঠিন পৃথিবী তাঁহার কোমল চরণে বাজে, ভীষণভার ক্রেমুর্ভি তাঁহার হৃদয় কফ্রায় কাতর করে।

তিনি ভাবুক—সমস্ত হৃদরের সহাস্তৃতি প্রেমমেহ দিরা তিনি ভাবিতে পারেন! তিনি কবি; দার্শনিক নন! তিনি ভিধু সৌন্দর্যোর সন্ধানে ফিরেন, আকাশ সাগর তঞ্চতা ফল-ফুলে প্রকৃতির বিশালভবনে তিনি অবলী-লার অবাধে গমন ক্রিয়াছেন। তিনি মায়ুরের

क्षारात याथा श्रांतम कतिबाह्न श्रांक्वा তাহার মর্শ্বহলে,—যেখানে স্থাকত অ বিলাপ ও দীর্ঘাস লইয়া মাত্র্যের ব্যথা বেদন স্তব্ধ হইরা আছে। তিনি মাস্থ্যের গৃহকোণে বেখানে মামুষ আপনার হাতে ধীরে ধীরে क्षिक्रि कृषिकां ि निश्च कुछ এक्षि नौक्तरन করিয়াছে—ভাহারি কুদ্রতম একটি কোণে। राशान ऋष-इः । वक्षि नाज-कन्छ कांकन, হু'একটি মৃহ নিকণ করিয়া যার, একটি শুভদীপ অধীর দখিণার কাঁপিতে থাকে. যেখানে মেছ আছে, প্ৰেম আছে আশীৰ্কাৰ ও মঙ্গলকামনায় পুণ্যসঞ্চিত হইয়া আছে ! ৰলেন্দ্ৰনাথ তাহাই ভাবিয়াছেন, স্বয়ং সে সৌন্দর্য্য উপভোগ করিয়া সাধারণকে তাহার অংশ দিয়া ধন্ত করিয়াছেন ! এ ভাবুকতা বলেন্দ্রনাথের স্বাধীন চিম্বার ফল। তাঁহার চিন্তাপ্রণালী অপুর্ব ও তাঁহার প্রতিভার শাখত কীর্ত্তি। তাঁহার ভাবুকতার মূল, দৃষ্টি বা পর্যাবেক্ষণ। বলেক্সনাথের দৃষ্টিসম্বন্ধে রামেন্দ্রবাবু গ্রন্থাবলীর ভূমিকার বলিয়াছেন, বে দৌন্দর্য্য অন্তের চোকে প্রকাশ পাইত না, তিনি তাহা বাহির করিয়া আনিয়া দেখাইয়া রামেক্রবাবু যাহা দিতেন।' স্থলকথার বলিয়াছেন তাহার উপর দীর্ঘ টীকার আবশুক করে না। বলাবাহল্য প্রতিভার লক্ষণই তাই। যে সৌন্দর্যা এতটুকু একটি ফুলের চারিধার ঘিরিয়া আছে: বে সৌন্দর্ব্য ৈশনবাচ্ছন্ন একটি 'ভারবেট'কে লোকচক্ষুর থরদৃষ্টি হইতে আধেক ঢাকিয়া রাধিয়া শুধু তার আধর্থানি প্রকাশ করিয়া আছে—সে কোমল কোমলতর সৌন্দর্য্য কেবল কবিই দেখাইতে পারেন। বসম্ভের ভাঙা-সভাই বাথাদে ঝরেপড়া একটি পাতার যে অফুট-

করুণ মর্শ্বকাতরতার গান সে গান উদার হৃদর কৰি ভিন্ন কেঁ শুনিতে পারে ! বলেক্সনাথ এমনি অতি কুঁদ্র কুদ্র দৌন্দর্যাটুকুও লক্ষ্য করিতে ছাড়েন নাই! ভগ্নকৃটিরে জীর্ণ দেওয়ালে এতটুকু একটি সেওলা! বলেক্সনাথের চকে "ক্ৰিছের মাধুরীর মত, একটুথানি ঘুমস্ত স্বপনের ছারার মত"—তাহা অপূর্ব সৌনর্যো . ফুটরা উঠিয়াছে ৷ জীর্ণপ্রাচীরগাত্তে প্রতিদিন আমরা কত না 'দেওলা' দেখিয়া যাই, কিন্তু আমরা দেখিয়া যাই কি তাহার সৌন্দর্যাটুকু ? আমরা শুনিয়া যাই কি তাহার বিলাপ-করুণ স্কাতর গান ?

আমার মনে হয় প্রথম বয়সে বলেক্রনার্থ কুদ্র কুদ্র সৌন্দর্য্য গুলি লইয়া থেলাঘরের পুতৃলের মত খেলা করিয়াছেন ! এক ঘোঁটা অশ্ৰল, এতটুকু হাসি, ভটতক, ছায়াম্পষ্ট নদীর কাণায় ভাঙা ঢেউ, তাহারি রোমাঞ্চিতগায় দশমীর চাঁদের ক্ষণিক চিকিমিকি। বলেন্দ্রনাথ **এই সমস্ত পুজ্জাণুপুজ্জরূপে নিরীক্ষণ করিয়া-**• ছেন! পরিণত বয়সে এই সমস্ত ফুল লইয়া তিনি বড় করিয়া মালা গাঁথিয়াছেন ৷ প্রথম বয়সে ফুলকুড়ানোর কাল অতীত হইলে বলেক্সনাথ তথন সৌন্দর্য্যের খনি সংস্কৃত কাব্যগুলির বৃহত্তর সৌন্দর্য্য লইয়া নাড়াচাড়া করিয়াছেন তাঁহার এ নাড়াচাড়াও নৃতন রকমের ৷ সমালোচনার একটা অধিকার সৌন্দর্যাজ্ঞান পরিণত না হইলে সম্ভব নয়। এককথায় ভিনি কালিদাসের সমগ্র ঐশ্বর্য্যের সীমা রচিয়া দিতে পারিয়াছেন। কালিদাস কেবলি আঁকিয়াছেন ছবি; মহাকাব্যে ছবির পর ছবি দিয়া একটি নিগুঢ় সভ্যের প্রতিপাদন ক্রিয়াছেন।

লাবণ্যবালার রক্তরাগরঞ্জিত চরণন্থরের ছবিটি পর্যান্ত! ভবভূতি একটি সমগ্র সংহত দৃশ্র-গান্ডীর্যো পাঠককে অভিভূত করিয়া দেন। কালিদাস খণ্ডখণ্ড সৌন্দর্য্য, ভবভূতি সমগ্র সৌন্দর্যা। কুদ্র ও থগুকে একস্তত্তে গাঁথিয়া একটি সমগ্র সৌন্দর্য্য-এমন সহল, এমন প্রাঞ্জ মধুর ভাষায় ও ভাবে বলেক্সনাথ ভির আর কেহ বলিতে সমর্থ হইয়াছেন কিনা मत्निर्!

বলেজনাথের আর একটি গুণ ছিল। তিনি ইতিহাসকে জড়বস্ত মনে করিতেন না। অতীত তাঁহার নিকট বর্তমানের মতই প্রাণময়. চঞ্চল ! তিনি বথনি অতীতকে দেখিয়াছেন তথনি বৰ্ত্তমানকে দঙ্গে শইয়া গিয়াছেন—হটিতে **থাত ধরাধরি করিয়া আঁধার ও আলোকে** কেমন স্থলর থাপ থায় তিনি তাহাই দেখাইয়া-ছেন! সমস্ত পুলকবেদনা ঢালিয়া দিগ্না তিনি অতীতকে অপূর্ব গৌরবে উজ্জ্বল করিয়া দেখাইতে পারিতেন। তাহার উদাহরণ, তাঁহার 'কণারক' বঙ্গসাহিত্যে একটি বহুমূল্য উচ্ছল রত। তিনি বর্তমানে দেখিয়াছেন কিন্তু দেখাইয়াছেন বাদণ শতাকী পূর্ব্বেকার! এই দীর্ঘ দানশ শতাকী ধরিয়া কণারক কত সহস্র নরনারীর জনমবাঁথার অবসানে পুণ্যাভিষিক্ত হুইয়াছে, তিনি দেখিয়া-ছেন সেই কণারক। তিনি দেখিয়াছেন, "কণারকে এখন কিছুই নাই, ধুধু প্রান্তর মধ্যে শুধু একটি অতীতের সমাধি মন্দির—শৈবালাচ্ছন্ন, পরিত্যক্ত জীর্ণ দেবালয় এবং তাহারই বিজন বক্ষের মধ্যে পুরাতন पित्वत्र अकृष्ठि विश्रुण काहिनी! (महे प्रतांजन पित्न यथन এই मन्मित्र चारत्र नांड़ारेश लक्ष लक्ष अञ्चकास्त्रि ব্ৰাহ্মণবাজক যজোপৰীত জড়িত कानिमात्र हवि ভानवारतन रेंश्ड अथम एर्यामन अवलाकन किन्छिन, नीन

ৰাল গুল আনন্দে ভাহাদের পদতলে উচ্ছদিত হইর। ' উঠিত, এবং নীল আকাণ অবারিত প্রীতি ভরে অকণিম আশীর্কাদ ধারা বর্ষণ করিত। তামলিপ্তির বন্দর হইতে দিংহলে, চীনে এবং অস্থান্ত দুরদেশে পণ্য ও যাত্রী লইয়া নিতা যে দকল বৃহৎ অর্থবান যাতায়াত করিত ভাছাদের নাবিকেরা এই কোণার্ক মন্দিরের মধুর ঘটারধানি গুনিয়া বছদিন সন্ধাকালে দুর হইতে দেবভাকে সমন্ত্র অভিবাদন জানাইত এবং দেবভার যশ ঘোষণার তরণীর সুবিস্তৃত চানাংগুককেতু উড্ডারমান হইত। মন্দিরের বহিঃপ্রাঞ্জনের দ্বারের সম্পুথে সিদ্ধ-গন্ধৰ্ব দেবিত প্ৰাচীন কল্পবটমূলে শত সহস্ৰ যাত্ৰী— কত ছুরারোগ্য রোগ হইতে মুক্তি লাভ করিতে আদিয়াছে। একবার যদি স্থাদেবের অনুগ্রহ হয় একবার যদি মহাগ্রাতি আপন কনক্ষিরণে সমস্ত জ্বালা বস্ত্রণা হরণ করিয়া লয়েন ।"

বলেক্রনাথের মৃত্যুর বহুদিন পরে আঁর একজন প্রতিভাশালী ফরাসী পর্যাটক 'বারাণসী' তেমনি করিয়া দেখিয়া গিয়াছেন। ছুদয় দিয়া অতীত ও বর্তুমানের এমন সামঞ্জস্ত ক্রিয়া দেখা—ক্য়জন দেখিতে পারিয়াছেন।

না। তিনি একজন নিপুণ সমাজতত্ত্ত্ত ছিলেন। আমাদের সামাজিক প্রাচ্য আদর্শের প্রতি তাঁহার শ্রহ' ও অনুরাগ প্রবীণের অপেকাও অধিক ছেল। আৰু পুপাশ্চাত্য भारह व्यामना उरमवव्यक्ष्रीत्मत मधा ६२ छ যে কল্যাণ ও দিব্য আনন্দটুকু বিসৰ্জন দিয়া তাহাকে ঐতিমত ব্যবসার সামগ্রী করিয়া ভূগিতেছি বল্জেনাথ নিপুগভাবে ভাহার প্রতি যে ইাজত निमान जाहा निमान হৃদয়বান ংভিব মর্ম্মশশ কংে! সে ছালং বছদিনের কথা! তথন নামরা আমাদিগের পূজার ফুল ধূলায় লুন্তিত দেখিয়াও বিচলিত रहे नाहे, आसारतंत्र शृद्धत नक्षीटक विनाही।

नाशिकात त्वर्ण माकारेवात क्य अंकिश আমাদের ঠাকুর্মরটিকে পড়িয়াছিলাম, গোসল্খানার পরিণত করিভেছিলাম, তখন বলেন্দ্রনাথ কাতর ইঙ্গিতে আমাদের চোক ফুটাইবার চেষ্টা করিয়াছিলেন। সেই স্থাড় অতীতে তিনি ভবিষ্যদ্বাণী করিয়াছিলেন।.

"একদিন প্রভাতে অগৎ ভড়িত ইইলা ওনিবে ভারতবধের বুকের মধ্য হইতে একখনে মায়ের নাম উঠিতেছে – সন্তানেয়া মা বৈ আর জানে না, সায়ের নামে সকলেই এক। * * * এখানে আসিয়া সকলে ষাধীনতা শিক্ষা করিবে—নরহত্যা শিশিবে না। # শিখিবে মাছের সেবা করিতে। শিখিৰে সভ্যের সন্মান রাধিতে। ভারতীর বী**ণাধ্বনি ব্রগতে ব্যাপ্ত** হইবে। * • আমাদের গৃহে সে দিন মান্তের প্রতিষ্ঠা।"

আন্ন যে কাতীয় উন্বোধনে স্বদেশবাসী আপনাকে কথা করিয়া তুলিতেছে সেই উদ্বো-ধনকলে বলেক্রনাথের চেষ্টা অল্ল ভিল না। তাহার "বেনোজল" প্রবন্ধ পাঠ করিলেই স্বদেশীর প্রতি তাঁহার মমতা স্ব্রেট্ড পরিদৃষ্ট ^{*}বলেজনাথ ভধু ভাব শইয়াই মগ্ল ছিলেন , হয়। আক্ষেপের সহিত বলে**জনাথ একদিন** বলিয়াছিলেন, "বিশাতী (বেণ্টউড়) চেয়ার কংগ্রেদের প্রভাক রেজোলাশনকে পরিহাস করিয়া বলে, দেশের টাকা বিলাভে যার বলিয়া বিদেশী গ্ৰমেণ্টকে ভোমরা বে ভিন দিবস ধরিয়া দোষ পাড়, সেই আসনের ইতিহাসটা কি !—স্নত্রাং এই পরিহাসলাঞ্নার আকর্ষণ ইংরাজের দোকান ভিন্ন দেশীর বিলাভী । विकास के यह विक्रों के कि

> আৰ ্কটি নিভাস্ত সহজ দৃঠান্তের ধারা প্রাচ্য ৬ পাশ্র তা **সামাজিক আনর্শের বিভিন্নতা** দক্ষতার সহিত্তিনি সকলের সমূধে উপু**হিত** ক গোছেন সেটি আমাদের নিমন্ত্রণ-সভা লইয়া। বলজনাথ বলেন,

"আমাদের বিষয়ণাদিতে প্রভুর আহারের পর ভতাদিগেরত' আহারাদির যথোচিত বাবস্থা করা হইবা থাকে। আলি বেঁথানে নিমন্ত্রণে যাই 'সেখানে আমার পাকীবেহারা বা গাড়োয়ানের বোরাকীর, অস্ত কবনও ভাবিতে হর না। কারণ তাহারা কুষিত থাকিলে शृह्द्य अविभा कृत हत्र। अहे, त्रम स्वामात्मत्र त्रमी ব্যবস্থা। * * * ইছার অনতিদুরেই। চৌরজীর महमात्नत्र मन्त्र्राच देश्त्रात्मत्र निम्त्रन् वर्गत्र पृत्र (वर्ष) যাত। কৃদ্ধ সাসীর মধ্যে ভাডিভালোকে বতক্ষণ নানা-বিধ উপাৰের সামগ্রী প্রভুৱ রসনা ভৃত্তি করিতেছে এবং আমে:দপ্রবাহ ডিলের উপর ভিশু ছাপাইরা পড়িতেছে, বেচারা গাড়োরান ভতক্ব ছুই সহিসু সহ নিরাশহদরে শীত রজনীর হিমভোগ করে মাত্র এবং পার্টি শেবে প্রভূকে লইরা যথাসময়ে জুড়ী **টাকাইরা** ঘরে ফিরিরা আসে। প্ৰভূৱ হ'ব, ছ'ৰ বেদনা, আনন্দ উংসৰ সমারোচ্ছের সহিত, কেবলমাত্র সজ্জার হিদাবে ভিন্ন, ভৃত্যের দেখাৰে কোন সমন্ধ নাই। চাপকান আঁটিয়া ও ভক্ষা পরিয়াই তাহাদের যাহা 🗣ছু সুধ—হাল্যতার গতির মধ্যে ভাহারা স্থান পার না। এই কারণে ইংরাজের নিমন্ত্ৰণ কলা আমাদের নিকট নিভাৱা নীরস দপ্তর রকা বলিয়া বোধ হয়। ভাষা বন্ধা আমোদমাত, সহাদয় শুভকর্ম নছে। আমাদের নিষয়ণবাপারে গৃহস্থের কত অবত্ব ও উদ্যাম, কত উদ্বেগ ও পরিত্রম, কত সংবম ও হৃদ্যতা। বাহিরের জাঁকজবকে ইহার সকলতা নহে।"

হার ! কবির এই স্থগভীর দীর্ঘনিশাসের সহিত আজ সমস্ত দেশের দীর্ঘনিশাস কি জড়িত হইবে না ?

বলেক্সনাথের রচনার ব্যঙ্গ ও হাক্সরসেরও
অভাব নাই। গান্তীর্যা ও রহক্ত এমন
গাশাপালি খাপ খাইরাছে যে গঙ্গা বমুনা
সঙ্গমের ফারই মনোহারী। বিশদ আলোচনার
প্রয়োজন নাই, একটি স্থলমাত্র উদ্বৃত করিলেই
আমাদের কথা প্রমাণিত হুইবে।

"পনিলে বিখাস করিতে দক্ষা বোধ হয়, আয়ানেয় , 'ভবভূতি', 'জয়দেব' প্রভৃতি গভীয় বিষয়গুলিজ

ৰসনান্তরালের নিভ্ত যুন্নীটি পর্যন্ত একবে অর্থনী হইতে আমবানী হইতে হাল করিরাছে। * * * * * বোধ করি এবনও অপেকা করিরা আছি, ম্যাকেটার কবে বিভিন্ন গোত্রের জনকতক রাজ্ঞগের অপ্রংশ ধরিরা লইয়া গিয়া, একেবারে বিলাতী কল হইতে স্বয়: প্রস্তুত উপরীত রপ্তানি হাল করে, এবং এবানে চৌরলীর প্রশালার, প্রেরাপটি ও হাতাপটির লোকানে চাঁদনীর পর্য প্রথান্তে আমাদের গুলবন্ধন জন্ম এই স্তুর্বপ্ত গোত্রীয় নম্বরাহ্মসারে হালতে বিক্রম হাল হা

বলেক্রনাথের আর একটি গুণের কথা বলিয়া আমরা প্রবন্ধের উপসংহার করিব। ভিনি প্রাচীন সাহিত্যে বাঁ প্রাচীন ভারতের কোন কিছুতে আপাত্যদৃষ্টিতে একেবারে ছিদ্রাথেষণ করিতেন না। যাহা সকলের চক্ষে এবং যাহা চিরকাণই মলিন, তাহাকেও তিনি কখনও উজ্জ্ব বলেন নাই। ভাম্বর্যা সম্বন্ধে তিনি বাহা বলিয়াছেন তাহা এক বৃদ্ধিমচক্র ভিন্ন আরু কাহারও নিকট পাই नारे, এবং যে মহৎ গুণ छौरात श्वनवडक छैनात्र করিয়াছিল ভাহা এই, যে তিনি সকল জিনিসের উচিত মূল্য নির্দারণ করিতেন এবং অসহোচে তাহা ব্যক্ত করিবার সাহসও তাঁহার ছিল। তিনি স্থামাভক্ত রামপ্রসাদকে রামমোহন রায়ের পার্যে বসাইতে হিধা বোঁধ करत्रन नाहे।

প্রসিদ্ধ ইংরাজ সমালোচক জনসন্ একদিন কবিবর Goldsmith সম্বন্ধে বলিয়াছিলেন "He left no species of writing untouched and unadorned" আমরাও তেমনি আজ বলেজনাথের গ্রন্থাবলী পাঠান্তে অসক্ষেটে বলিতে পারি,—'কালিদাস'

ভাষ, কুদ্র বিষয়গুলিও তাঁহার কবিহানমের সহামুভূতিলাভে ৰঞ্চিত হয় নাই এবং ইহারি ফলে আজ 'চন্দ্রপুবের হাট' 'পুলের ধার'

'शृहर्रकान' ७ 'रमारमज इविणि' भर्यास छीहाज এক্সকালিক তুলিকা**ল্পর্লে অপূর্বা এক্রীমণ্ডিত** रुरेया उठियाह !

• শ্রীগোলোকবিহারী মুখোপাধ্যার।

স্বর্গীয় ত্রিপুরারাজ রাধাকিশোর মাণিক্য।

গ্তবংসর আমাদের পক্ষে প্রকৃত ই দুর্ম্বংসর গিরাছে : প্রকাবিদ্রোহ রাজকোপ দৈবনিগ্রহ সকলে যিলির। দেশকে ক্তবিক্ষত করিয়াছে: বৃদ্ধাতার বিধ্যাতনামা যে সকল স্বস্থান গতৰুৰে অকাল যুত্যুর কবলে পতিত হইয়াু আমাদিগকে শোকনিমগ্ন করিয়া গিগাছেন, ৮ত্তিপুরারাজ ভাঁছাজের মধ্যে স্ক্রিপ্রগণা। এমন দানশীল, স্কুদর, প্রতঃশকাভর, সরলচেত। অমারিক রাজ। প্রার দেখা বার না। সেকালের রাজাদিগের সম্বন্ধে বেরুপ গলক্ষা গুনা যার ই হাতে তাহার প্রত্যক্ষ পরিচর পাওরা যাইত। ইনি স্বাধীন রাজা হইয়াও বালালীর মরের লোক ছিলেন, তিনি শুভকাগোর উৎসাহনাতা—গুণবাহী পুরুষ ছিলেন। দেশের লোক ফুবে জুংখে জাঁহার সাহামুভূতি লাভ করিছ। জাঁহার দর্শন প্রার্থনায় পিরা, কাহারও খাতার নাম নিধিরা ফিরিয়া আনিতে হইত না—তাহার সংস্পর্ণে আনিয়া কেছ বিদেশীর আনেপকারদার ভারাক্রান্ত হইত না। সকলকেই যোগ্য সমাদরে তিনি গ্রহণ করিতেন: সকলেই তাঁহার লেহ ২জু ভার **অধিকারী ছিলেন।** • পাছে কাহাকেও মনঃপীড়া প্রদান করেন এই ভরে তিনি তাঁহার সামাস্ত কর্ম্মতারীর নিকটেও বেন স্কুচিত ং ছইরা থাকিতেন। কোন কর্মচারীও ঠাহার নিকট কখনো রুড় সস্তাবণ পান নাই। অতিরিক্ত কোমগভাই বর্ঞ তাঁহার স্বভাবের তুর্বস্কা স্ক্রপ দাঁড়োইরা ছিল : 🕳

বঙ্গ, সাহিত্যের ইনি কিল্লপ পৃষ্টপোষক ছিলেন; ইহার উল্লভি সংক্ষেত্র তিনি **অকাতত্ত্ব কিল্লপ দান** করিতেন তাহা সকলেই অবগত। **আল** ভাঁহার এই শোচনীর মৃত্যুতে ভাঁছার **আন্তার অলম বন্ধু বান্ধ**ৰ যেরপ শোকাক্ল দেশও সেইরপ ক্ষতিগ্রন্ত।—আশা করি তাঁহার রাজ্যের উত্তরাধিকারী—শিকার সদ্ভণনিচরের উত্তরাধিকারী হইরা, এদের এই শোকভার কথকিৎ প্রশমন করিবেন। সহারাজের শুণাবদী সম্বন্ধে উচ্চার একজন স্পরিচিতা বহিলা যাহা লিখিরাছেন—ভাহা নিমে প্রকাশিত হইল। ভারতী সম্পাদিক।।

মহারাক আমানের কেবলমাত প্রভূ ছিলেন না পিতৃস্বরূপ ছিপেন। এই ছুর্ঘটনা বজাঘাতের মত আমাদের আহত করিয়াছে।

১৫ই হ'্ন অভভকণে মহারাজ রানা-কিশোর ম, গিড়া ত্রিপুরার গাঞ্চধানী আগরতলা পরিত্যাগ করিয়া কলিকাতা যাত্রা করেন। সোমবার প্রাতে কলিকাতা পৌছিয়া মঙ্গলবার

অনেক করণীর কার্য্য ছিল, ফিরিয়া আসিয়া সম্পূর্ণ করিবেন—আর ফিরিতে হইল না।

পূর্ণ বার বংসরকাল মহারাজ রাজ্যলাভ করিয়াছিলেন-মহারাজের বৃদ্ধি বেমন ভীক্ হৃদয় তেমনি উনার ছিল। রাজ্যের **উর**তি করিব বড় ইচ্ছা ছিল, কিন্তু নানা বিশ্ব বিপুত্তির कर महावास्मव वासक नाथ पूर्व इव नाहै। পত্তি কাশী শানা করিলেন। কলিকাতার • মহারাজের রা**জ্তকালে আগরতলার এক**টি •



113 1027 - No 4 4 4216 4

মুন্দর প্রানুধন, ইাস্পাতাল, কুল, রাজকুমার-বোর্জিংলাফিল প্রভৃতির জন্ত পাকা বাড়ী প্রস্তুত হইরাছে। নৃতন রাস্তা, দীঘি, স্থানর স্থানর বাংলা ও কর্মচারীদের আলম প্রভৃতিতে রাজধানীর সৌষ্ঠব বর্দ্ধিত হইরাছে।

महात्रात्कत क्षत्र कक्षात्र व्याधात्र, मीन দুঃখীর প্রতি তাঁহার অসীম দরা ছিল। বিকালে মহারাজ প্রতিদিন বায়ু দেবনে বাহির হইতেন-একদিন দেখিলেন একটি রোগ-কাতরা ভিথারিণী পথের ধারে পড়িরা রহিয়াছে। —মহারাজ তংকণাৎ গাড়ি **হইতে** নামিরা বোষক্ষায়িত গোচনে ডাক্তায়ের প্রতি চাহিয়া विनित्न, "हेरांक पिचिट्ह, এ किन अमन করিয়া পড়িয়া আছে—ভোমরা আছ কি করিতে।" ডাক্তারের আর সেদিন মহারাজের সহিত বায়ু সেবনে যাওয়া হইল না। অনেক বলা কহার মহারাক চলিরা গেলেন ডাক্তার উপস্থিত থাকিয়া য়োগীকে হাঁদপাতালে পাঠাইয়া তাহার ঔষধ পথ্যের ব্যবস্থা করিয়া মহারাজকে জানাইয়া তবে নিম্নৃতিলাভ করেন।

মহারাজ অতিশয় অমায়িক ও নিরহ্মার ছিলেন। কাহাকেও महास कठिन कथा বলিতেন না; নিতাম্ভ বিশ্বক হইলে কেবল ভাহার সহিত সাক্ষাৎ করিতেন না। কর্মচারীদের আদেশ করিতে চইলে বিনীত-ভাবে আদেশ করিছেন। বিশেষ দরকারে একজন কৰ্মচান্নীকে লিখিভেছেন—"চুইটি কথা ওনিয়া বেয়ো, আমি অপেকা করিয়া আছি।—কলিকাতা হইতে আসিয়া অবধি তোমার দেখি न (4A ?" তাহার থাসের কর্মচারীদের ভিনি ক্রিতেন তাহা তাহার নির্লিখিত

জানিতে পারিবেন। "তুমি ত জানই, বিনি বাড়ীর কর্তা, পূজার সমর অজন পরিজন-দিগকে এইরূপ কাপড় বা অভ্য কোন বস্ত দিয়া থাকেন। শ্রীমান শ্রীমতী সহ এইগুলি আমার আনীর্বাদ রূপে গ্রহণ করিয়ো।"

মহারাজার মৃত্যুর তিন চারি দিবস পূর্বে তাঁহার একজন কর্মচারীর কলিকাতাঁর বসস্ত রোপে মৃত্যু হর—রোগদংবাদ গুনিরাই কালী হইতে মহারাজ টেলিগ্রাফিক মনিক্ষর্ডার যোগে ২০০১ পাঠাইরা দেন—মৃত্যুসংবাদ গুনিরা বলেন—"সে গেল—তাহাল জক্ত বড় বেদনা পাইলাম, সে আমাকে ত প্রভু মনে করিত না, পিতৃত্বরূপ জ্ঞান করিত—তাহার পরিবারের ভরণপোবণের ভার, তাহার সন্তানদের শিক্ষার ভার সকলি আমার। শ্রাছের সমর শ্বরণ করাইরা দিরো ধরচ দিতে হইবে।"

মহারাজ ফুল অত্যন্ত ভালবাসিতেন। 'লিখিতেছেন, "ফুল পাইরাছি। আমি ফুলের 'অতিশন্ন পক্ষপাতী। আমার বিশাস ভগবানের স্ট্র পথার্থের মধ্যে ফুলেরই সার্থকতা প্রস্তিপাদিত হইরাছে। আমি অইপ্রহর আমার চতুস্পার্শে ফুল ছড়াইরা রাখিতে ভালবাসি!" সামান্ত উপহার পাইলে আহ্লাদে আটখানা হইতেন—লিখিতেছেন "ভোমার প্রেরিত ফুল ও মিষ্টার উপহার পাইরা অতিশর আহ্লাদ সহকারে গ্রহণ করিলাম।"

অনেক ভাল ডাক্তাবের অপেক্ষা মহারাজ চিকিৎসাবিভার দক ছিলেন। ডাক্তারি কবিয়াজি ও হোমিওপ্যাথি টোটকা প্রভৃতি নানাপ্রকার ঔবধ সর্ববনা বত্রে মহারাজ রক্ষা ও ব্যবহার করিছেন। কর্ম্মচারীদের কাহারও অর্থ হইলে ডাক্তারের উপর ডাকার

পাঠাইরা ঔষধ পথ্য দিয়া অনুসন্ধান নইতেন।
ইদানীং মহারাজের স্বাস্থ্যভঙ্গ হইরাছিল।
নিথিতেছেন "বাস্তবিক আমার ধাত্ রোগপ্রবণ হইরা স্বাস্থ্যভঙ্গের দিকে অগ্রসর
হইতেছে এবার শীতারস্তে দ্র স্বাস্থ্যকর স্থানে
যাইরা কিছুকাল বাস করিয়া দেখিব এরূপ
মনে করিয়া আছি।" বিস্থার প্রতি মহারাকের
অতিশর অনুরাগ ছিল। গ্রন্থকারগণ নৃতন
প্রকাদি পাঠাইলে অত্যন্ত আহ্লাদিত হইয়া
তাঁহাদের সসন্ধানে পুরস্কত করিতেন।

সাধারণ সভা সনিতিতেও মহারাজ কথনো দানে বিমুখ ছিলেন না। কেহ কোন বিষয়ে প্রার্থনা করিলে মহারাজ কথনো "না" বলিতে জানিতেন না। ধেয়ালখাতার মহারাজকে একবার লিখিতে অমুরোধ করার মহারাজ লেখেন "ছাত্র জীবনে কবিতা টবিতা লিখিতাম এখন মন কঠিন হইয়া গিয়াছে তোমাদের সমুরোধে তুই ছত্র লিখিয়া দিলাম—

স্থের নিশয় প্রেম স্থমধুর
কোন অবাধ্যতা তাহাতে নাই;
আত্ম ভোগ স্থ স্বার্থ অভিমান
প্রেমিক ছাদরে না পার ঠাই।
মহারাক হিন্দ্ধর্মাবলম্বী ছিলেন। এবার কাশী
যাইরা তিনি সধবা কুমারী পূজাদি করিতে
ক্রাট করেন নাই এবং ব্রাহ্মণপণ্ডিত অধ্যাপকদের সসন্মানে বিদার দান করিয়াছিলেন।
অধ্যাপকেরা প্রীত হইরা মহারাজকে ধর্মাণিব
উপাধি দিয়াছিলেন।

শভিৰিবধবিক্সদাবলীবিরাজমানমানোর তমহারাজা-বিরাজক ত্রিরকুলতিলকচক্রবঁশ বর্তগ-ত্রিপুরা পণিতিবিবম-সুমন্ত্রবিদ্ধারি **ত্রিত্রিক ত্রিক্সিক্তির্বা** বাহাত্ত্রবংগায় ক্রিক্সিক্সিক্সক্রচরণার বিন্দ্র করন্দ্রমূক রব্বু। বারাণসেরবিবৃধবৃশ্বানাং শুভাশীরাণয়ঃসমুদ্দমন্তভয়াস্।
মহারাজ, কালবশাদিদানীং ক্ষীণপ্রারেষ্ বর্ণাশ্রমধর্মের্ নইপ্রায়ের্ চ ছিত্রকুলস্থাসলিলনিধেঃ শীভঃশ্মির্বর্ণাশ্রমধর্মগরেক্লপরারণঃ পরিদৃশ্রতে। আচঃ মারহরনগরীনিবাসিনো। বরং ভবতঃ শ্রীর্শাবনচন্দ্রের শিশ্বলোল্পতাং বর্ণাশ্রমধর্মসংরক্ষণতংশরতাং চ দৃই্ব সত্তইহাদরাঃ সন্তো বিবিধন্তশগণাভিরামং ভবতঃ "ধর্মাণ্র"
ইত্রাপাধিনা ভ্ররায়ঃ।

আশান্মহে চ স্পরিজ্বত প্রীষ্ডোমহারাজত স্কুশ্রুং দীর্ঘবায়ুরিভিশ্ন। সহৎ ১৩১৫ চৈত্র কুক্ষিতীরারাব্।

যে কর্মচারীর যত্নে এই সকল ধর্মকার্য্য স্থসম্পর হইরাছিল তাঁহার প্রতি বিশেষ সম্ভষ্ট হইরা নহারাজ তাঁহাকে কলিকাতার আদিরা বিশেষক্রপে পুরস্কৃত করিবেন বলিয়া আশাদিত করিয়াছিলেন।

মহারাজের হাদয় করুণার পরিপূর্ণ ছিল,
বৃঝি তাই জন্ম মহারাজ এই শোচনীয়রূপে
অকস্মাৎ প্রাণদান করিয়া আত্মীয়, বয়ু,
কর্ম্মচারী, ভ্তাবর্ণের অস্তরে অস্তরে করুণা
ঢালিয়া দিয়া গিয়াছেন।

ত্র্ঘটনার ছইদিন পূর্ব্ব হইতেই মহারাজ কানী ত্যাগ করিবার জন্ম বিশেষ বৈয়ন্ত হইরা-ছিলেন। রিজার্ভ গাড়ীর অভাবে বিশম্ব হইরাছিল। শোচনীর ঘটনার দিন ষ্টেসনে গাড়ী প্রস্তুত—রাত দশটার মহারাজ ট্রেণে উঠিবেন, সন্ধ্যা ৬টার এই বিপত্তি—৮টার সব শেষ।

কাশীতে কর্মচারী ও ভূতাবর্গ ব্যতীত মহারাজের পুত্র বা আত্মীয় কেহ সঙ্গে ছিলেন না—রাজ্যেখর রাজ্য ছাড়িয়া কোন্ বিদেশে গিয়া প্রাণ হারাইলেন। রাধাকে বিস্কর্ দিয়ে ভগ্নস্থদরে কাঁদিতে কাঁদিতে সকলে আগরতুগা ফিরিয়া গিরাছেন।

অনেকদিন হইল কবি রবীক্রনাথ ঠাকুর
মহারাজ রাধাকিশোর মাণিক্য নহাহারকে
অরণ করিয়া যে গানটী রচনা করিয়াছিলেন
তাহা এইখানে তুলিয়া দিলাম।
"রাজ অধিরাজ তব ভালে জ্বয়মালা,
ত্রিপুর পুরণজ্মী বহু তব বরণ্ডালা।

দীনজন হংখহরণ অভয় তব বাণী,
ক্ষীণজন ভয়তারণ নিপুণ তব পাণি,
তরূণ তব মুখচন্দ্র করুণরস ঢালা।
গুণি রসিক সেবিত উদার তব দারে—
মঙ্গল বিরাজিত বিচিত্র উপচারে—
গুণ অরুণ কিরণে তব সব ভ্বন আলা।"
গানটি লিখিতে লিখিতে যেন মহারাজকে
প্রত্যক্ষ দেখিতেছি—আর অধিক কি লিখিব।
শীমতী—

নোটন ষষ্ঠীর ব্রত কথা।

প্রাচীনকালে মহিলারা পুস্তকালি পাঠ না করিয়াও বিশ্বাস ও ভাজ্মন্ত্রা সহকারে ব্রত নিরমালি ছারা নীতি ও সদাচার পালন করিতেন। স্থামী, পুত্র কল্লা ও পরিবারবর্গের কুশলার্থে তুঁছারা বারমাসই কোন না কোন ব্রতের অনুষ্ঠান করিতেন। এখনকার রমণীগণ ততদ্র ব্রতপরায়ণা না হইলেও একেবারে যে ব্রতপালন করেন না তাহাও নহে। এখনো হিন্দুমাতা মাত্রেই ষষ্ঠীব্রত করিয়া থাকেন। সম্ভানের মঙ্গল মানসেই ষষ্ঠী দেবীর অর্চনা হইয়া থাকে। প্রাবণ মাসের কৃষ্ণপক্ষীয় ষষ্ঠীতে ইহা অনুষ্ঠিত হয়। ইহার ব্রত কথা এইরূপ:—

এক সদাগর থাকেন। তিনি নি:সন্তান।
একদিন মা ষণ্ঠী ছটা পাঁজ, হুতোলা সোনা
সকলের বাড়ী নিয়ে নিয়ে বেড়াচ্চেন, কিন্তু কেউ
কেটে দিলেনা, সদাগরের বৌ পাঁজ নিয়ে কেটে
দিলেন, মা ষণ্ঠী তথন সেই সোনা তাকে
দিলেন। সদাগরের বৌ ছতোলা সোনা দিয়ে
ছটা 'নোটন' গড়ালেন, তেঁতুল দিয়ে মাজেন,
গলাজন দিয়ে ধোন, বালির নোটন, ক্লীরের

নোটন, সোনার নোটন পুজো করেন। এই দেখে না ষথ্ধী বলেন "সদাগরের বৌ আমার খুব ভক্ত হয়েছে। সোনা দিলাম গহনা না ক'রে নোটন গড়িয়ে পুজো করছে, তিনি তাকে ছয় ছেলে, বৌ,একটি মেয়ে নাতি এই সব দিলেন। সদাগরের আ অংখ ঘরকরা করছেন, এমন সমর তার বামো হল। তিনি বল্লেন আমার মেয়েকে নিয়ে এস, কোন্ দিন ময়ে বাব দেখতে গাব্না। এই বলার পর মেয়ে এল।

ছয় ছেলেকে বিষয় আবয় সমান ভাগ করে দিলেন। আর নোটন ছটি আমানির হাঁড়ির তলায় লুকিয়ে রাখলেন। এর মধ্যে গিলি সেরে উঠলেন রেখে মেরে খণ্ডর বাড়ী চলে গেল।

কিছুদিন পরে আবার গিরির ব্যারাম হোলো, মেরেকে আন্তে পাঠালেন, মেরে এল তথন তার সেবার সেবারেও সের্নে উঠলেন, মেরে আবার খণ্ডর বাড়ী ফিরে গেল।

এই রকমে কিছুদিন গেল , সম্বাগরের জীর আবার অহুথ হোলো,মেরেকে আন্তে পাঠান্তেন, কিন্ত এবার মেরের শাশুড়ি নিজের বৌকে পাঠালেনা, বল্লে "ছোটবৌরে মা নিভিয় নিতে পাঠার, এবার আর আমি বৌ পাঠাব না"।

এদিকে সদাগরের স্ত্রীর কালপূর্ণ হল, স্বর্গ থেকে রথ এলো,পুস্পর্ষ্টি হোলো, গিলি সোনার 'নোটন' ছটি ছোট বৌকে দিলেন, আর বলেন "বালির নোটন নিজে খেও, ক্ষীরের নোটন পর্নের ছেলেকে আগে ধাইরে নিজের ছেলেকে পরে ধাইও। সোনার 'নোটন' তুলে রেধা, কৃষ্ণপক্ষে নোটন ষ্টাকে পুজো করো।" এই সব বলে করে গিলি স্বর্গে গেলেন।

তারপর মা বধন মারে গেলেন, তথন মেরে তন্তে পেরে কাঁদতে কাঁদতে এলেন। এসে বলেন "মা সব জিনিব ছোট বৌকে দিরে গেছেন ?" বড় বৌ বরেন 'না ঠাকুরঝি, মা সবাইকে সমান দিরে গেছেন, ছোট বৌরের ধন কুরোরনি আমাদের ফুরিরে গেছে।

একদিন মেরে বল্লেন, 'বড়বৌ, মা গেল বাগ গেল, এখন ভাইদের গেরস্থালি হোল, কোন্দিন আর আসব; তাই ইচ্ছা করে তোমা-দের, ছয়বৌকে নিয়ে একদিন নাইতে যাই।' বড়বৌ বল্লেন 'তার আর কি ঠাকুরবি কাল সকালে যাব।' বড়বৌ ছোটবৌকে বল্লেন 'ছোটবৌ ঠাকুরবি বলেছেন কাল আমাদের ছয় যা'কে নিয়ে নাইতে যাবেন'। ছোটবৌ বল্লেন "দিদি ঠাকুরবির ত নাইতে যাওয়া নয় আমার নোটন ছটি ঐ বলে চুরি করবেন।'

ৰড়বৌ ৰল্লেন, 'এক সকে বাব একসকে আসৰ কেমন করে চুরি করবেন ? ঠাকুরঝির সাধ হরেছে আমরা বাই।' ভার পরদিন ঠাকুরঝি ছব ভারতে সকে নিরে নাইতে পেলেন।

শেধানে গিয়ে বৌরেরা মাঠে গেলেন, আর মেমে ঘাটে এসে নেমে, খোল ফেলেন, তেল ফেল্লেন, বাড়ী গিয়ে ছোটবৌধের ছেলে মেয়েকে বল্লেন."আমার খণ্ডরবাড়ী থেকে নিতে এয়েছে চলুম"—ব'লে আমানির হাঁড়ির তলা থেকে ছটি নোটন তুলে নিয়ে খণ্ডরবাড়ী চলে ভারপর বোম্বেরা ঘাটে এলে ছোটবৌরের এক ছেলে বলে, "পিসিমা বাড়ী গেছে তার খণ্ডরবাড়ী থেকে নিতে এসে-ছिলো।" এই कथा छत्न ছোটবউ বড় বৌকে বল্লেন "দেখনে দিদি ঠাকুরবির কাজ! সে আমার 'নোটন' নিশ্চর চুরি করে নিয়ে গেছে।' একথা ভনে বড়বো বল্লেন "চল বাড়ী গিছে দেখি।" পরে বোয়েরা তাড়াতাড়ি নেরে ধুরে বাড়ী এসে দেখেন,—আমানি হাঁড়ির তলায় নোটন নেই, ঘরে ঘরে স্বামী পুত্রুর অচৈত্ত হরে পড়ে আছেন। এই সকল দেখে ওনে ছোটবৌ কাতর रुष यलन, "आभात ছেলেদের কেউ নষ্ট করোনা। পাই ষ্ঠীর নাগাল আদবো ঘর, না পাইত লাগবে ন্ত্ৰীহত্যার ফল।"

এই বলে বাড়ী থেকে বেরোলেন।
বেতে বেতে সমুদ্রের ধারে গিরে পড়লেন।
সেখানে দেখেন ধর্মরাজের নৌকা বাজে,
তাতে মহাভারত, রামারণ, ভাগবতপুরাণ
কথা হচ্চে, দেখেই জলে ঝাঁপ দিরে নৌকা
ধরলেন। তখন নৌকারোহীরা জিজ্ঞাস করলে,
"কে নৌকা ধরেছ, ভূত না পেদ্রী দৈত্য না
দানব কে তুমি রমণী ?"

ছোট বউ বল্লেন "সোনা হারায় যার, প্ত নষ্ট হয় ভান্ন, ইহার বিচান্ন কর যাই মুরু, নজুবা পাবে স্ত্রীহত্যার ফল।" ধর্ম বল্লেন "আমার

নৌকা ছাড় পাছের নৌকা ধর।" তথন থৈর্মের तोका क्ष्रें किंदि शास्त्र किंत्र तोका किंद धत्रत्नन। किन व्यासन, "आंगात तोका ছেড়ে দেও, আমি মন্দর ভাল করি, ভালর মন্দ করি, স্থানার নাম কলি, আমি স্ত্রীকে মাধায় করেছি মাকে পদতলে রেখেছি; আমার কি এ কাৰু ? পাছে ষ্ঠার নৌকা যায় ধর।" তথন এদ নৌক সরে গেল ষষ্ঠীর নৌক এগিয়ে এল।

নৌকার মধ্যে মা ষষ্ঠা পরের ছেলে কোলে करत्रहर, निरमत्र हाल भारभ विमायहरून. পরের ছেলেকে ক্ষীরটুক দিয়েছেন আপনার ছেলেকে কলা দিয়েছেন।

গৃহত্বের ছোটবে মা ষ্টার নোকা ধ্রে ফেলেন। তথন ষষ্ঠী পুর্বের মত প্রশ্ন করলেন "কে নৌকা ধরে ? ভূত না পেত্রী দৈত্য না দানব কে তুমি রমণী ?" ছোটবৌ উত্তর দিলেন. "দোনা হারাম যার, পুত নষ্ট হয় তার। ইহার বিচার কর যাই খর, নতুবা পাবে ত্রী হত্যার গারে একসরা দই চেলে দিয়ে বল্লেন "এটা চেটে ভোলো"। বউ সম্ভানের মারাতে তা করলেন। তখন ষষ্ঠী জিজ্ঞাসা করলেন. "(क्यन ? कोब ना निन्?"

वर्डे विनन, कीत। उथन वश्री दिननी वद्मन "ভোর প্রাণে ব্যগ্রতা আছে; সত্যই তবে ভূই মা। কেহই তোর নোটন নেমনি; তোর नन इति करतरह, ननरमत्र वाङ्गी या, त्रथारन গিয়ে নিয়ে আয়"।

তথন বউ ননদের নিকটে গিয়ে নোটন চাইলেন, ননদ দিতে অস্বীকার করণেন। ননদ তথন কাট্না কাটছিলেন, বৌ কাট্না কাটা স্তো চুরি করলেন। মনদ ভাব্দের প্রতি স্তো চুরির দোষ দিলে বউ দিব্য করে বলে "আমি বদি নিয়ে থাকি তবে ভাগনে ভাগনীর মন্দ হোক যেহেতু আমার ত আর স্বামী পুজুর নেই।" তখন ভাগনে ভাগ্নী ঢলে পড়লো। ননদ কাঁদতে লাগলেন। তথন বউ ননদকে সাম্বনা করে বল্লেন, "কার স্বামী পুত্র না যার, কেবা না প্লায়, তুমি পাত্ কাট্তে যাও আমি ভাত বাড়ি গিয়ে।" সেই অবসরে আমানির হাঁড়ি থেকে ৬টি নোটন তুলে বালির, ক্ষীরের ও সোনার ১২টি নোটন আর খাঁড় বেরালী করে ষ্ঠীর পুলো করতে লাগলেন। তথন বৌয়ের স্বামী পুত্র ভাগনা ভাগনী ও ননদের চেতনা হোল। ट्हालता नव अरम दल्ल-मार्गा मा, किरेनव ফল"। তথন মা ষ্ঠা একটা পচা বেরালের • মলুম! এত বেলা হরেছে, ডাক নাই কেন ? বউ বল্লেন, বাছা তোমরা ঘুমোওনি; মা ষষ্ঠীর খেলা তথন বউ পৃথিবীতে প্রচার হয়েছিল। করলেন, "বে পোষাতি ভতিভারে বিপদে মানত করে তাহাকেই "নোটন ষষ্ঠা" রকা করেন।"

আমাদের ইহাদারা; স্বার্থত্যাগ, ধর্মে সম্ভানের প্রতি ভালবাদা, বিখাস, পরের শিক্ষা হয়।

শীমতী শশীমুখী দেবী। বেনারস।

একজন বহিষ্ণতের দৈনিক লিপি।

(ফরাদী হইতে)

भनिवात, २२ खून।

খুব শীত; তুষার-শীতল ফিন্-ফিনে বৃষ্টির
এরপ ঝাপ্টা আদিতেছে যে ডেকের উপর
তিষ্ঠনো ভার। কতকগুলি দীর্ঘকায় কোরীয়,
সাদা-ময়লা কাপড় পরিয়া শীতে থর্থর্ করিয়া
কাপিতে কাঁপিতে জাহাজে ময়দার বস্তা বোঝাই
দিতেছে।

ডেক হইতে তাড়িত হইয়া আমি সমস্ত দিনটা আমার ক্যাবিনেই কাটাইলাম। এইরূপ বন্দীভাবে থাকা আদৌ স্থথের নহে। পশ্চাতে পড়িয়া থাকা,— যে ভ্রমণের वत्सावछ. य তত্বামুশীলনের সংকর পূর্বে হইতেই করা হইয়াছে তাহা পরিত্যাগ করা বড়ই কষ্টকর ।... ু আমার ব্যাগের মধ্যে কতকগুলি পুস্তক ত্বাছে: পুরাতন Zola র গ্রন্থটো পুনর্কার পাঠ করিব বলিয়া মনে করিয়াছি:-"Pot" Bouilli", ("L' Assommoir"; ভারপর Anatole France-এর শেষ গ্রন্থানি; উহা আমি Kobe-এর কোন আপানী পুৰকালয় হইতে, অল্পনি হইল ক্ৰয় কৰিয়াছি। "Monsieur Bergeret a' Paris"-47 গ্রম্থানি আমার বড়ই ভাল লাগিতেছে। অ্যানাটোল ফ্রান্সের গভ-লেখা সাম্বাজনক...

আমি মনে মনে ভাবি,এখন যে পুত্তকগুলি আমি পাঠ করিতেছি, কদীয় কর্তৃপক্ষ জানিতে পারিলে উহাদিগকে কদিয়ার মধ্যে প্রবেশ করিতে দিত কিনা। "Monsieur Bergeret a' Paris" এই গ্রন্থে যেরপ চমৎকার সাম্যা-

বাদের কথা আছে, ভাহাতে ক্লস সমাটের পর্মিট কর্মচারীরা জানিতে পারিলে যে উহাকে একটা 'সর্বানেশে', গ্রন্থ বলিয়া সন্মানিত করিত ভাহাতে সন্দেহ নাই—ঐ গ্রন্থানি এইরূপ সন্মানের্ই যোগ্য বটে। উপগ্রাসগুলাও বৈপ্লবিক ভাবে পূর্ণ ; L' Assommoir কিম্বা Pot Bouilli এই ছই গ্রন্থকে নিভাস্ত নিরীহ করিয়া তুলিতে হইলে, পর্মিটের কর্ত্তপক্ষকে উহার কত পৃষ্ঠাই না জানি কাটিয়া ছাঁটিয়া দিতে হয় !—আমি সাধারণ ভাবে এই কথা জিজ্ঞানা করি:-এই গত দশ বৎসরের মধ্যে যে সকল বড বড ফরাসীগ্রন্থকারের গ্রন্থ প্রকাশিত হইয়াছে, তাহার কোন একটা গ্রন্থকে র্ফুনীয় পর্মিট্-আফিস্ বৈধরূপে ক্রিয়া-রাজ্যে প্রবেশ করিতে দিতে পারেন কি না ? আমাদের এখনকার উৎক্লষ্ট গ্রন্থমাত্রই কোন-না-কোন দিক দিয়া বৈপ্লবিক ভাব-প্রচার করিয়া থাকে। উহাদের তুলনার, ঐ একই সময়কার ব্রশ্মাণ ও ইংরাজি গ্রন্থলি অপেক্ষাকৃত নির্বিধ বলিয়া মনে হয়---স্বেচ্ছাচারতন্ত্রের পক্ষে ঐ সকল গ্রন্থ তেমন ভীতিজনক নহে। এই জৰ্মাণ জাহাজে বসিয়া ভাবিভষ্টকের সন্মুখে "Monsieur Bergeret a Paris" পাঠ করিয়া ফ্রান্সের মৌলিক রচনাশক্তি সম্বন্ধে এই সময়ে আমার যেরূপ দৃঢ় ধারণা হইয়াছে এমন আর কথনো হয় নাই। তাই, ফরাসী চিম্ভাপ্রস্ত মত-সমূহের প্রচারক বড় বড় গ্রহমাত্রেরই প্রবেশ এই কারণেই কু সরাজ্যে নিবিছ বিশ্ব निरवधरयां गा। "

Liebnecht যে কথাটি আমাকে বলিয়া-ছিলেন ভাঁহা এথন আমার মনে পড়িতেছে। তিনি আমার নিকট অনেকবার এই কথা বলিয়াছিলেন যে, জর্মাথেরা আদলে শান্ত, मामामिश्र ७ जेमात्रमणायनची, क्वन ध्रमीत्रान-রাইননিষ্ঠুর, অত্যাচারী ও যুদ্ধপ্রিয়; কেন না, গোড়া ধরিতে গেলে, উইারা জর্মাণ অপেকা বেশী কৃদ ; ৰুশ্বাণ সাম্রাজ্যে, সামাজিক সাম্য-বাদের ভাবী জয়--ক্ষন-প্রদীয়ভাবের উপর জর্মাণ-ভাবের জয়লাভ ভিন্ন আর কিছুই নহে। একদিন, একটা মান-চিত্রের উপর এল্বা নদী प्रश्नेष्ठ व्यापादक विश्वन एवं. के निष्ठ के ু ছুই বিভিন্ন ভাবের মধ্যবর্ত্তী সীমা। এই কথা বলিলেন;—"তোমাদের পরম **রোভাগ্য, তোমাদের কতকগুলি পূর্ব্যক্**ষ গ্রীক্ ছিলেন; সেইরূপ আমাদের হর্ভাগ্য, আমাদের কৃত্রকগুলি পূর্ব্যপুরুষ রুস্ ছিলেন। তোমাদের কতকগুলি ভাল-ভাল গুণ তোমরা গ্রীক হইতে পাইরাছ; আর আমাদের যে সকল থারাপ গুণ তাহা আমরা রুদ হইতে পাইয়াছি।" ঐতিহাসিক मष्टि एक ভাস্ত श्रेरन ७, देनिक श्रिनाद कथां। ठिक । Liebnecht এর নিকট রাজসরকারের ক্ষিয়া,—বৈপ্লবিক ফ্রান্সের ঠিক্ উল্টা পক্ষ বলিয়া মনে হইয়াছিল

এই ক্রমণ জাহাকের ক্রমণ ক্রমটারীরা আমার প্রতি খুব সদয়; আমাকে আমাদে রাথিবার ক্ষপ্ত তাহারা বধাসাধ্য চেষ্টা করে; আমাকে তাহাদের সহিত 'বিয়ার' পান করিতে আহ্বান করে, আমাকে কংকগুলি জ্রমণ ও ইংরাজি মাসিক প্রিকা পড়িতে দের; উহা-দের মধ্যে একজন, ডাঙ্গার নামিয়া, ক্তকগুলি

পুরাতন ফরাদী সংবাদপত্র আমার পাঠাইয়া विण ।---কখন-কখন উহারা[,] ফরাসী-ক্ষসের মৈত্রীবন্ধন শইরা বিজ্ঞাপ করিত...,আঞ রাত্রে, উহাবের আপনাদের মধ্যে Sakhaline সম্বন্ধ কথাবার্তা হইভেছিল;—এই জাহাজধানা এধানেই যাইতেছে; এধানে ক্লস-রাজ-সরকার বে ভীষণ অভ্যাচার করে ভাহাই আপনাদের মধ্যে উহারা বলাবলি করিতেছিল: ক্ষু রাজসরকার, সেরা বদুমাইস ও খোর রাষ্ট্র-বৈপ্লবিক্দিগকে এক কারাগারের মধ্যে রাখিয়া কৃস্কাতির মধ্যে যাহারা হের ও যাহারা পুঞ্ তাহাদিগকে একদকে মিশাইয়া, একটা অভুত অস্বাভাবিক সংমিশ্রণ ঘটাইয়াছেন। সকল বীরপ্রকৃতি নাবিকেরা, এই সকল অত্যাচার সম্বন্ধে কেমন সাদাসিধাভাবে, প্রশাস্ত-ভাবে কথাবার্ত্তা কহিতেছিল। আমার জনরে এখনও কড়া পড়ে নাই, মুণা ও ক্রোধে আমার আকণ্ঠ পূৰ্ণ হইয়া উঠিয়াছে।

রবিবার, ২৩ জুন।

সমন্ত প্রাতঃকাণ্টা,—আমার সম্বন্ধ পেষ নিপত্তি কি হইল জানিবার জন্ত উদ্প্রীব হইরা আছি;—একপ্রকার অভ্তপুর্ব্ব অবসাদনৌর্বল্য অন্থতন করিতেছি। ওটার সমর বন্দরের প্রধান কাপ্তেন আমার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিলেন;—উর্দ্দিপরা, পার্ষদেশে তলায়ার, বক্ষের উপর নিবিধ সন্মানভূষণ ঝুলিতেছে। লোকটি প্রিরভাষী, খুব ভদ্র,
এমনকি সন্তার । পেটের্সবর্গে আমার বহিষরণের
হুকুমটা অন্থমোদিত হইরাছে—এই সংবাদটি
তিনি হুংখের সহিত আমাকে জ্ঞাপন করিলেন।
প্রবর্ত্তী ভাহাজ ছাড়িবার আগে, ডাক্ষার

নামিয়া কিছুদিন হোটেলে আমার বাস করাও নিবেধ। খুব স্বয়ভাবে তিনি আমাকে জিজাসা করিলেন - এই হুর্ঘটনার হেতৃ কি। ভিনি विगरनन "हेश्त्राकिषशत्क, जानानीषिशत्क, क्रम्-রাজ্যে প্রবেশ করিতে অনেক সময়ে নিবেধ করিতে হইয়াছে; তাহারা দেনানারক,— আমাদের সামরিক কার্যোর সন্ধান লইবার ক্র এখানে প্রেরিড হইয়াছে এইরূপ আমরা অহুমান করিয়া . থাকি ;—কিন্তু তুমি ত সেনা-নায়ক নও, তুমি ত reserve সৈন্তের এক ধন corporal মাত্র।" তথন আমার अक्रुमानी। जन्महे क्थान তাঁহার নিকট ব্যক্ত করিলাম। বন্দরের কাপ্তেন আমার অহুমানটা সঙ্গত বলিয়া মনে করিলেন: এবং তখনি এই কথাটিও বলিলেন:-শোন বলি.' বিশ্ববিভালয়ের হাঙ্গামা সমস্তই এখন মিটিয়া গিয়াছে: সমাট, স্কল-কেই ক্ষমা করিয়াছেন, সকল দণ্ডই রহিত अतिशांद्रज्ञ, এवः ছाত্রগণ, যেখানে ইচ্ছা এখন একত্র সন্মিলিত হইতে পারে—এইরপ ' **অন্তুম**তি["] দিয়াছেন·····" রুস্কর্মাচারীগণের ष्मपूर्व मानत छाव ; छाहारमत बहे त्रां द्वेरेनिकिक **অবস্থার** ভাহারা মনে করে. যাহা ভাহারা চাছিয়াছিল ভাহাই পাইয়াছে; যথন কোন ভীষণ হন্ধৰ্ম অহুট্টিত হয় তথন তাহারা বেশ চোখ বুজিয়া থাকে; আরার যথন অপরিহার্য্য ক্ষমানীতি অবশ্বন করিতে উহারা সম্রাটেরই দ্যাকীর্তন হয়, তথন করে। কাল উহারা আপান-গামী একটা কুদ জাহাজে আমাকে উঠাইয়া থিবে। বন্দরের কাপুতেন, ঐ আহাজ प्रचारेनात क्छ गरेता शालन। जाराजत

ভাড়া দিবার মত যথেষ্ঠ টাকা আমার কালেনাই; তাই তিনি একটা ব্যাহে আমাকে কালেইরা যাইবেন; এবং আমাকে এই প্রবাদে সহরটাও দেখাইবেন।—তাছাড়া ভিনি আমার প্রতি প্রভূত সন্মান প্রদর্শন করিতেছেন; কোন স্থানে প্রবেশ করিবার সমর, আগে আমাকে পণ ছাড়িরা দেন, তিনি আমার পশ্চাতে আইসেন, এবং বারম্বার আমার হস্তপীড়ন করেন। এখন হইতে সকল প্রলিশ কন্মচারীই—এমন কি, আমার প্রিস-প্রহরীও আমাকে সন্মানের সহিত অভিবাদন করে। বস্তুত এমন ভন্মতার সহিত বহিন্ধত কেই কথন হয় নাই।

- সোমবার, ২৪ জুন।

আৰু প্ৰাতে, একজন পুলিস-কৰ্মচারী
আমাকে ডাঙ্গায় লইয়া যাইবার অন্ত আসিআছে। ডিঙ্গিখানি বন্দরের মধ্যদিরা চলিল।
বন্দরটি জীবন-উদ্ধ্যে পূর্ণ; এখানে কত আহাজটানা জাহাজ, চীন-দেশীয় জাহাজ, ক্সীয় বুছজাহাজ; ক্সীয়, জন্মাণ ও জাগানী বাণিজ্য
জাহাজ।

ভাঙ্গাতেও এইরপ সজীব ভাব: ফিট্ফাট্ উর্দিপরা রাজকর্মচারী, সেনানারক,
সৈনিক, অত্যন্ত অপরিস্থত লাল-কামিজ পরা
রুগীর চাষা, উক্তল চক্র্বিশিষ্ট রুগীর রমণী,
চানেম্যান, জাপানী প্রুয় ও রমণী, কোরীর।
এক অপূর্ব বিশ্বনাগরিক জনতা,—এসিরাথণ্ডের সর্বজাতীর বিপুল জনসঙ্গম। চারিদিকেই ঘর বাড়ী নির্মিত হইতেচে; কত
জারগার মাটী ওলট-পালট, মানী খুঁড়িরা
তোলা, মাটী চিবি-করা; কোথা স্পার

কাটা, কোথাও বা পাথরের চাক্লা, কাঠথও, বালুকা বা ইউকের ন্তুপ, লোহার রেলথওসমূহ ইতন্তত বিকীণ রহিরাছে;— মনে হর
যেন মাটার ভিতর হইতে নগরটি বাহির
হইরাছে; মনে হর যেন একটি ভাবী মহানগরীয় পত্তন হইতেছে; ইহা একটি উদীয়মান রাজধানী।

• প্লিস প্রহরীর হেপাক্তে আমি বন্দরকাপ্তেনের আফিনে উপনীত হইলাম। বন্দর
কাপ্তেন আমাকে তাঁহার গাড়ীতে লইরা,নগর
দেখাইতে বাহির হইলেন, এবং আমাকে সমস্ত
বিষরের খোঁল-খবর দিলেন। ইনি সৌম্য
ফ্রলন,জ্ঞানবান, বৃদ্ধিমান; স্পিক্ষিত রুস্দিগের
ভার ইনি পর্যায়ক্রমে ফরাসী, জর্মান ও ইংরাজি
ভারায় কথা কহেন। তাঁহার সব কথার
রাজসরকারের অমুক্ল ভাবই প্রকাশ পার।
সরকারের সব, কাজই তিনি ভাল চোধে
দেখেন।

তাঁহার মতে, ভুাাডিভষ্টকের ডকের শ্রমজীবিদের যেরপ ভাল অবস্থা এরপ আর
কোথাও দেখা যার না। রাস-রাজ্যরকার
এরপ প্রজাবংসল যে, কাজ করিতে করিতে
যদি কোন শ্রমজীবির অপঘাত মৃত্যু হয়, তাহার
পরিবার প্রভৃত অর্থ সরকার হইতে প্রাপ্ত হয়
কিন্ত এ বিষরে আমার একটু সন্দেহ আছে,
কেননা আমি অন্তের নিকট শুনিরাছি এবং আমি
বেশ জানি, যদি এই সব শ্রমজীবিরা ধর্ম্মঘট করে,
ভাহা হইলে চাবুক মারিরা উহাদিগকে কাজ
করিতে বাধ্য করা হয়; ইহাও বেশ জানি, এই
চীনে কুলিরা যদি কাজ করিতে নারাজ হয়
ভাহা হইলে তাহাদের পরস্পবের বেণীতে
বেণীতে ব্যাবিরা সেই সম্ভ কুলিকে একবোগে

জলে ড্ৰাইরা মারিতেও কর্মাধ্যক্ষেরা কিছুমাত্র ইতন্তত করে না !— সৈনিক ও পুলিসকর্মচারী-দিগের উদ্দির প্রাচুর্য্য দেখিয়াই বেশ বুঝা বার, কিরূপ অত্যাচার উৎপীড়নে এই হতভাগ্য দেশ নিম্পেষিত হইতেছে: এখানকার রাজসরকার লোকের স্কন্ধে দাসত্বের যে জোরাল চাপাইরা-ছেন তাহা এখানে যেরূপ প্রভাক্ষ দেখা বার এরূপ আরু কোধাও না; ইহা অসভ কারিক কষ্টের সীমা পর্যন্ত পৌছিরাছে।

আমরা ছবনে একসবে রুস্ চিনীর ব্যাক্তে গমন করিশাম। আমার দম্ভর মত মাতকারী-পত্ৰ (letter of credit) থাকা ব্যাক্তরালারা প্রথমেই আমার দেশভ্রমণের ছাড়পত্র দেখিতে চাহিল। ঐ ছাড়পত্র পুলিস আমাকে ফেরৎ দেয় নাই, স্থভরাং বন্দরের কাপ্তেনই আমার হইয়া তৎসম্বন্ধে কৈফিরৎ দিলেন। তিনি একটু হাসিয়া বলিলেন: "ক্সি-য়ায় বিনা ছাড়পত্তে কোথাও যাওয়া বায় না ;" ফ্লত সর্ব্বেই উহারা ছাড়পত্র দেখিতে চাহে । হোটেলে যদি থাকিতে চাহ, সেখানেও ছাড়পত্ৰ_ **मिथिए हाहित्व, द्रामार्डमान यदि हिस्कि** কিনিতে বাও, সেথানেও ছাড়পত্ৰ দেখাইতে হইবে ৷ ক্ৰিয়াৰ ইহা একটা চমৎকার পদ্ধতি।

এই সৌম্য স্থান রাশ্বকর্মচারীর নিকট
আমি বিদার লইলাম এবং অস্তরের সহিত
তাঁহাকে আমার ধন্তবাদ জানাইলাম:—তিনি
বলিলেন:—"এই ঘটনা সহছে একটা
খারাপ স্থৃতি লইরা যাইও না; আমার
যাহা সাধ্য তাহা আমি করিরাছি..."
একটা ভিন্নি করিরা আমাকে সেই জাপানগামী জাহাজে লইরা গেল। আজ এই



সাহস করিয়া জিঞ্জাদা কবিলাম,— আমার প্রতি ভুনিউভিষ্টকের শাদনকর্তা এরপ অসং ব্যবহার কেন করিলেন তাহা আমাদের দেণ্টপিটরবর্গন্থ দোতাসন্তিবকে লিখিয়া তিনি জানিবার চেষ্টা করিতে পারেন কিনা । তিনি বজিলেন, "এ বিষয় সম্বন্ধে তুমি ফ্রান্সের পর-রাষ্ট্র-সচিবকে জানাও, আমি কিছুই করিতে পারিব না।" তাহার পর, তাঁহার নিকট হইতে যথন বিদার লইয়া আদি, তিনি হারদেশে আরও এই কথা বলিলেন: "যথন হইতে ক্ষপ্ সমাটকে হত্যা করিবার চেষ্টা হর, সেই
অবধি ক্ষপিয়ার, বিপ্লবপন্থীদিগাকৈ বড়ই
ভর করে। আমি বিদার-ন্মস্কার করিয়া
তাঁহাকে বলিলাম; "দেখুন সচিবমহাশর,
আপনি নিশ্চিত জানিবেন, আমি যথন ভ্লাডিভষ্টকে পৌছিয়াছিলাম, তথন আমার পকেটেও
বোমা ছিল না, আমার ব্যাগের মধ্যেও বোমা
ছিল না।" তিনি উত্তর করিলেন "হাঁ, সে
বিষরে আমার কোন সন্দেহ নাই।"

শ্ৰীজ্যোতিরিক্সনাথ ঠাকুর।

মহানিদ্রায় মহাকবি।

বিখের বরেণ্য কবি প্রতিভার প্রদীপ্ত ভাস্কর,
হের ওই চিরুম্প্র—যোগমগ্ন তাপস মুন্দর!
প্রশাস্ত শাস্তির রেপা উদ্ভাসিত প্রদর আননে,
তৃপ্র যেন পৃত আত্মা আক্রনম সফল-সাধনে!
ভারতের বর পুত্র, জগতের অমর নন্দন,
গীতা বক্ষে বৃক্ত-করে করিছেন আত্ম-সমর্পণ!
জীবনের যত কিছু ছ:খ-দৈন্ত বেদনা-বিষাদ,
সকলি বিশ্বত যেন লভি আজি দেব-আশীর্কাদ!
মুক্ত ছ'টী আঁথি-তারা বৃঝি হেবে অদ্বে সমূধে
অভীষ্ট আরাধ্য দেবে স্থনির্ভরে অক্ষর কৌতুকে!
অর্জ-বিকশিত-আত্ম করে যেন নীরবে জ্ঞাপন
ক্রমভূমি জননীরে অক্সরের শেব-সন্তাবণ!

নামাবলী বন্ধ শিরে, চন্দনের শুভ-টীকা ভালে,
মহা 'বিজয়ার' সজ্জা উপহাস করিতেছে কালে!
নির্মান প্রস্থনপুঞ্জে সাজাইয়ে শ্রীঅঙ্গ শোভন পুশ্পরূপে অশ্র-অর্য্য করিয়াছে ভার্টের্ড নিবেছন।

বঙ্গের সস্তানবৃন্দ ! আর্তনাদ ভূলি' ক্ষণতরে; হের ওই দিব্য মূর্ত্তি একবার সারা প্রাণ ভ'রে ! নবীন 'ভারত'-স্রষ্ঠী—ক্রনার অফুরস্ত-গান— সরল উদার হৃদি, ওইথানে নিয়েছে নির্বাণ ! আবার ভাসিবে বিশ্ব কালি ওল্ল প্রভাত-

ক্বীক্রের মহানিদ্রা আর কভূ ভাঙ্গিবেনা হায়!! শ্রীক্ষীবেন্দ্র কুমার দত্ত।

পোষ্যপুত্ৰ i

ধারাবাহিক উপন্থাস।

(>)

সকাল বেলার ঠাণ্ডা বাতাস খোলা-জান-नात्र यथा मित्रा थीरत थीरत थारवण कतिन। তঙ্গৰ সূৰ্য্য আঁহার অরুণনেত্র মেলিয়া সকৌ তুকে शृंद्य माथा छैकि निश्न हाहित्नन, त्रहे थिन-মিলে রৌজ চোৰে পড়িয়া তাহার ঘুম ভাঙ্গাইয়া मिन।

শশব্যক্তে খ্যার উপর উঠিয়া বদিয়া হুই হল্ডে চোক রগড়াইতে রগড়াইতে শিবানী काननात्र यथा पित्रा हाहित्रा ८एथिन। "उ: चारनक বেশা হয়ে গ্যাছে"; এই বলিয়া ধড়মড়িয়া উঠিয়া পড়িল। তাড়াতাড়ি বিছানাটা তুলিয়া রাধিয়া কুত্র কুশের ঝাঁটা দিয়া কুদ্র বরধানি ঝাঁট দিতে আরম্ভ করিয়াছে এমন সময় নীচে হইতে ডাক পড়িল "শিবি ও শিবি বলি আৰু কি তুই উঠ্বি নি" ?

____ শিবনৌ ভাড়াভাড়ি গৃহমার্জন সমাপ্ত ক্রিরী নীচে নামিয়া গেল। উঠানে রাত্রের উচ্ছিষ্ট ৰাদন পড়িয়া আছে, গৰুগুলা এখনও 'লাব' পার নাই, বাসি ঘর গুরার 'ভ্যান ভ্যান' করিতেছে, সে লজ্জিত হইয়া 'গোলা হাঁড়ি' লইরা প্রথমে রারাম্র নিকাইতে আরম্ভ করিল।

শিবানীর মাতা সিছেখরী কন্তাকে দেখিয়াই विठानीय अं कि नामारेया विनया छेठिएनन, "হাানা, আল তোকে কুন্তুকৰ্ণ ভর করেচে • নাকি, সকাৰ বেলা উঠে যে পুৰো 'আদ্লিক' कर्स्वा जात्र रवांचि त्नरे- जात्रकान धरत रथरिंटे

ধুইতে লজ্জিত ভাবে আন্তে আন্তে খলিল, "তুনি চান্ কর্তে যাও মা, আমি এখনি সৰ সেরে ফেলচি।"

মাভা গৰুকে সর্বপথইল মিশ্রিভ বিচালী দান করিয়া তেলের বাটি ও গামছা লইয়া স্থান করিছে গেলেন।

বর্ষায় যমুনার চর ডুবাইয়া চড়া ভালিয়া ঘাটের কোলে কোলে পুরাতন পাধরের সিঁড়ি পর্যান্ত জল আনিয়াছিল। বুন্দাবনের বস্তহরণ ঘাটের প্রশান্ত সিঁড়ির উপর জনতা করিয়া ন্নাৰ্থীরা কেহ তেল মাধিতেছে, কেহ মৃত্তিকা দারা মন্তক মার্জনা করিতেছে, কেহ কচ্ছপকে <u> ৰা ওয়াইতেছে,</u> ছোলাভালা **इक**ड़ क्तिज्जा , नक्लारे निम निम कार्या वास : •ঘাটের পাণ্ডারা দস্তর মন্ত হাঁক দিতেছে, পর্না লইতেছে, ফোঁটা তিলকদান করিয়া, ঠাকুর **(** तथारेबा, अवाठिङ अध्यक्ष डा समारेबा (क्यां, মানাৰ্থী দৰ্শনাৰ্থীকে আহি মদৃহদন ডাক ছাড়াইতেছে ৷ চিরস্তন নিরমামুবায়ী সবি यथायथ हिन्दिङ्ह ।

তথাপি সিদ্ধেরী ঠাকুরাণীর আব্দ বেন মানের অর্দ্ধেকটুকু স্থ চলিয়া গিয়াছিল। বেলা হওয়াতে তাঁহার 'ভাবিসাবির' দল আজ আর কেহ এখানে উপস্থিত নাই। তিনি স্থানাদি সংক্ষেপে সারিয়া কলসী ভরিয়া বাডী ফিরিলেন। শিবানী বাসিপাট সারিয়া বানে মাজিয়া রানাঘরের দাওয়ায় সাজাইয়া র থিতেছিল, মরবো"। কলা গোমর মৃত্তিকালিথ হাত ধুইতে • মাতার পদশকে মুব ফিরাইল, তাঁহাকে এক

শীল ফিরিতে দেথিয়া ঈষং বিশ্বিত •হংরা বিজ্ঞান •কিরিল "তোমার চান হয়ে গ্যাল, এত শীল ফির্লৈ যে মা ?"

মাতা কন্তার প্রশ্নের উত্তর না দিয়া ভাণ্ডার ঘরের একণাশে ফলের কলসী নামাইয়া রাধিরা নিয়ের প্রাতন পট্ট শাড়ি ও ফুলশ্ন্ত ফুলের সাজি লইয়া বাহিরে আসিলেন, আর্দ্র বস্ত্র রোরাকের একনিকে লখিত বাঁশের উপর ফেলিয়া কল্তাকে ডাকিয়া বলিলেন—"শিবি তুই চট্ করে ছুব দিয়ে এসে রায়া চড়িয়ে দে, শেট্ মন্দিরের ঘড়িতে আট্টার ঘা পড়্লো আমি চলাম। নারোদ আনে তো ভাঁড়ারের তাকের ওপোর মুড় কি আছে তাই চাট্টি দিস্; না হয়তো পের্নাদি পাঁড়ো বৃঝি আছে একটা, তাই দিস্; বাব্র আবার মুড় কি রোচে না রোজই পড়ে থাকে দেখ্তে পাই।"

"আছো" বলিয়া শিবানী তেলের বাটি
পাড়িয়া চুল খুলিতে বসিল। সিদ্ধেশ্বরী উঠানের
এক পার্শ্বর ক্লঞ্জকলি ও টগর গাছ হইতে
পূলা সংগ্রহ করিতে করিতে "বশোলা রাখিলা
নাম বাছ বাছা ধন, শ্রীনন্দ রাখিলেন নাম
নন্দেরি নন্দন"—ইত্যাদি রূপ ক্লঞ্জমহিমা কীর্জন
করিতে লাগিলেন।

বিপ্রহরে আহারাদি সমাপ্ত হইলে রারাবরের দাওয়ার তালপাতার চেটাই পাড়িয়া
দিক্ষেরী ঠাকুরাণী টেকোর করিয়া হতরা
কাটিতেছিলেন; কাজকর্ম্ম সব সারা হইয়া
গিরাছে, এবেলার জ্বন্ত ডাল ও ব্যঞ্জন ঢাকা
দিরা রাধা হইরাছে, রারাঘরে শিকল দিয়া
শিবানী শুনকটত্ব ব্যুনার ঘাটে হাত পা ধুইতে
গিরাছে।

বৰাক্লাল হইলেও আৰু আকাণে একখণ্ড

মেঘ জ্বন্মে নাই; ভাদ্রের চড়চড়ে বৈজি বাটের
পাথর তাতিয়া উঠিয়াছে, কয়থানা বাদন লইয়া
শিবানা ধীরে ধীরে দেই রৌদ্র কপ্ত গোপান
অতিক্রম করিয়া জ্বনের ধারে গিয়া দাঁড়াইল।
আর তাহার মনটা কেমন ঘেন বিমর্থ বিমর্থ
হইয়া আছে কিছুই ভাল লাগিতেছে না।
ঘাট এখন প্রায় জ্বনশৃস্ত; ছএক জন এলবাদিনী শুধু তাঁহাদের স্প্রেটার বর্ণ নীল জ্বলে
অর্ধ বিমিত্ত করিয়া সান করিতেছিলেন, ছএকজন
বালক ক্ষেবল ক্ষ্কপক্লেব সহিত অত্যন্ত
পোহার্দ্ধ্যি প্রযুক্ত স্থান ত্যাগ করিতে
পারিতেছিল না।

বিবানী বাদন মাজিয়া জলে নামিল। বানবের ভুয়ে মার্জিভ বাদনের উপর চক্
রাথিয়া শীতল কাল জলে গলা ভুবাইয়া বিদিয়া
য়হিল। এইরূপে সময় কাটাইয়া ঘয়ে ফিরিলে
মা বলিলেন; "হাালা লিবি! তোর কেমন ধারা
আকেল বল্ দেখি ? গেলি তো আর ফির্ভেই
চাস্ না! বেখানে বাবি বেন "বালের মালি; কিছিলি কি ? রায়েদের বউটো বৃঝি এসেছিল ?"
বিবানী ভিজা কাপড় নিক্ ড়াইতে নিক্ ড়াইতে
উত্তর করিল "কেউ তো আদেনি মা, কেন
আমার কি বেলী দৈরি হ'য়ে গাচে ?

"কি জানি বাছা নীরোদ তে। চটেমটে—বেরিয়ে গ্যালো। চাবি খুঁজ্লে পেলেনা; পান চাইলে, কে এখন সাজ্তে বসে—বল্লাম, একটা লাগিরে নাও, নয়তো সে এসে দেবে একটু দাঁড়াও, এতো তাড়া কিসের—টেরেন ফেল তো হবেনা। তা শোনা হমেনা, বল্লেন "বাজার খেকে কিনে খাবো, বাড়ীর পান আর খাব না।" এমন, মানোয়ারি গোয়ার' মতন মেজাজ নিয়ে কি বাপু পরের মরে চলে।

আমি বাই ভাল মান্ত্ৰ লাতেও নেই পাঁচেও নেই তাই, আর কেউ হলে টের্টি পেতেন। চাকুরী নেই বাকুরী নেই বারমাস বরে বসে কুঁড়ো পাধর ঠাস্বেন আর পান থেকে চূপ ধস্লেই অম্নি নবাব পুজুরের গস্গসানী দেথে কে! তবু যদি না পরদোরারি হতেন"—

শিবানী আর্দ্রবস্ত্রের অঞ্চলে তাহার অসম্বননীর ছই বিন্দু অঞ্জল নিঃশব্দে মুছিরা ফেলিল।

এ প্রাক্তাহিক ব্যাপারে সে ইহার চেরে বেশী
ধরচ করিত না। কঠোথিত একট্থানি
দীর্ঘধান বুকের মধ্যে চাপিরা কেলিরা সে
মারের কাছে আদিরা ধনিল।

মা তুলার চুপ্ড়িটা কন্সার দিকে ঠেলিয়া দিয়া বলিলেন "গোটাকতক পাঁফ পাকিয়ে দেতো মা, আর গুলের কোটটা এগিয়ে দে, বকে বকে মুখটা শুকিয়ে উঠ্লো। হরিহে দরামর!

' "কৈগো শিবুর মা কি করচো ?" বলিরা শীনাঙঙ্গিনী ঠাকুরাণী উঠানে দেখা দিলেন।

"এলো দিদি এলো, এই ভাই ভোমারই কথা, মনে কছিলাম" "তবে আমি অনেকদিন বাঁচ্বো" বলিরা মাতলিনী তাঁহার তামাক পোড়ার রঞ্জিত দশন প্রকাশ করিরা সৌজভের হাদি হাদিরা শিবানীদন্ত কুশাসনে তাঁহার বিপুল দেহার্দ্ধ স্থাপন করিলেন।" আঃ রোদটার আজ ভেজ দেখ্টো, এটুক্থানি আস্তে হেন পারে ফোস্কা পড়ে গ্যাছে। হাঁগ গা শিবুর মা, আজ চান্ কত্তে যাওনি, যাত্রা করোনি কেন ?"

সিজেখনী ঠাকুনাণী লাটাইরে তৈরারী স্থতাটুকু জড়াইয়া লইরা একটু নিখাসের সহিত উত্তর করিলেন "আর দিদি ঘর সংসা- রের বাজের জালার তো ছদও ঠাকুরদেবতাকে ডাক্বার জ্বসর পাবার লো নেই, চিরজন্ম ওই কর্মো।"

মাতঙ্গিনী সে কথার মাথা নাড়িরা সার দিরা গেলেন "তাইতো, সংসারের কুথা আর বলোনা জলে পুড়ে মরেচি।

শিবৃ! তোমার আর দেখ্তেই পাই না যে মা, আহা বাছা যেন রোগা হরে গ্যাছে মুখ্টি যেন ওকিরে গ্যাছে কেনগা শিবৃর মা ?" শিবানীর মাতা একবার কন্তার দিকে অগ্রাহ্ন ভাবে চাহিরা দেখিলেন। "আর দিদি ওর কি মনের স্থে আছে বে কলারের হাতে পড়েছে চবিবশ ঘণ্টা তাড়নার তাড়নার অমন দশা হচ্চে, নইলে খাবার তো কিছু ছক্ষু নেই অমন চেহারাই বা হয় কেন, জামাই বেন দিন দিন মাধার উঠে বস্চে!"

মাতলিনী শিবানীর হাত ধরিরা ভাহাকে কাছে বসাইলেন। "আর মাসি ছগাছা পাকা চুল তুলে দে। ভা শিবুর মা, আমাই চাক্রী বাক্রী করেনা কেন গা? অক্ষর দিদির নাতি সেধিন বলছেলো ভোমার জামাই নাকি ভারি বিধান; সে শশির ছেলের ফাই বুকের মানে বলে ভার, পাঠশালার পণ্ডিভযশাই সেধিন নাকি সট্কে না নাম্ভা কি জেনে নিচ্ছিল ?"

সিদ্ধেশরী ঠাকুরাণী দীর্ঘনিশাস পরিত্যাগ করিলেন। "আমার কপাল! চাকরী কর্তে যে দোষ ধর্বার সময় কমে বার! এই আব দেখোনা মেরেটা একবার ঘাটে গিরেছে— কোথাওতো বার না—গিরেছে না হর সাক্ষকই, তা নয় রেগে টং হরে বাড়ী থেন্টে, বেরিরে গেলেন, আমাই নিরে হাড় মাস অনুস্বেলা বোন জলে গেল। কোথাকার একটা হাড়হাবাটে 'লক্ষীহাড়া এসে জুটেচে; মেরেটাকে হভিপা বেঁধে একেবারে জলে ফেলে দিয়েট।"

মাতৃদিনী শিবানীকে একটু ভাল বাদিতেন;
তাহাব কট একটু অন্নতৰ করিয়া এ প্রদক্ষ
চাপা দিয়া প্রতাব করিলেন, "আন গোবিন্দ
ক্রিয় মন্দিরে আরতি দেখতে যাবে গা
মাসি ?" শিবানী মৃহস্বরে উত্তর করিল
"না"। মা বলিলেন, "কেন যা না কোথাও কি
বেতে নেই নাকি ? এতোই কি ভয়, ভোকে
শালে দেবে না শূলে দেবে ?"

শিবানীর মূখ ঈবৎ আরক্ত হইরা উঠিল, সে একটুখানি গর্মের সহিত উত্তর করিল, "হার জত্তে আমি ভয় করি না আমার বেতে ইচ্ছা নেই!"

"এমন জেনী মেয়ে কথনও দেখিনি ! এক-শুঁরে, মনগুমুরে, মনের কথা পাবার বো নেই ! ঠাকুরদেবতা সব গেলো কেবল স্বোয়ামি ! দেবতার অপমান করে স্বামীভক্তি দেখানো ! গুই জন্তেই তো স্বোয়ামির হতচ্ছেদা ।"

শিবানী উঠিয়া দাঁড়াইল, খোলা চুল জড়াইয়া ধীরপদে রায়াঘরের ভিত্তর প্রবেশ করিল, একটিও কথা কহিল না। প্রোচায়য় অবাক হইয়া গোলেন, কিছুক্ষণ তাঁহাদের বাক্যফ্রিউই হইল না; তার পর সিজেমনী গালে হাত দিয়া স্তন্তিতম্বরে কহিলেন, "দেখলে দিদি ওইতেই তো সে এতো মাধায় চড়েচে। বলি এতোই কি ভালবালা! আমি মা—আমায় পরামশ কিরিনে? আমি ভোরি ভালর জক্ত বলি; আমার কি কর্মি তোরা, আমি কাফ পেডাামী নই।"

তা বোন এ কলিকাল ! এখন কি আর মা মাসির উপদেশ চলে; এখন নিজেরাই নিজেদের আইন কর্তা।"

"করুক্গে নিজেই ভূগবেন! বার জন্তে চুরি করি সেই বলে চোর! তোরি ভালর জন্তে বলে মরি – না গুনিদ বা খুদী কর। মেরে মান্সের একটু তেজ থাকা ভাল, ভোরি ভাত থেয়ে, তোকেই যে পায়ে থেঁত্লায় ভোর সহিই বা হয় কেমন করে? চাক্রী করুক ধরে মাল্লেও সবি। ভানর—বিষের সঙ্গে থোঁজা নেই কুলোপানা চকোর! হয়ি দয়াময়! চলগো দিদি আমরা যাই চলো।"

(२)

সমুলত, ুমন্দিরচুড়াশালিনী স্ব্রুপ্তা নগরীর পদ ধৌত করিয়া নির্মাণ যমুনা বহিয়া ৰাইতেছে। জ্যোৎসায় তাহার কাল জলে মাণিক खनिए हिन। কোণাও প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড মন্দির বা প্রাসাদের ছায়া পড়িয়া নদীবক্ষ আরও অন্ধকার করিয়া রাধিয়াছে—কোথাওু পুরাত্তম " ^{*}বটবুক্ষ পঞ্জান্তরালে জ্যোৎন্মালোক জোনাকির ্মত মিটি মিটি জলিতেছিল। নদীর কৌলীইল মুথরিত ঘাটসকল প্রায় নিস্তর ও জনশৃষ্ট। কচ্চিৎ এক একটা খাটে পান্সি বা নৌকার यां वीत्व मत्था काहारता माड़ा शांखा यात्र। কুদ্র গৃহের কুদ্র বাতায়নের নিকট শিবানী একা বসিয়া যমুনার দিকে চাহিয়া ছিল। ক্যোৎসার আলো তাহার স্থাম স্কর মুখের গান্তীর্যা স্থম্পষ্ট করিয়া তুলিয়াছিল। সাইক্লোনের পূর্বে সমুদ্রের যেমন একটা ন্তক ভাব হয় আজ তাহারো মূথে দেইকপ ভীম গন্তীর ভাব। চোথে মূথে কোথাপ একটা চাঞ্চলা বা ক্রোধের লক্ষণ ছিল না।

এক পাশে নীরদ কুমাবের আহার্য্য ঢাকা
দেওরা রহিরাছে। তব্তপোধের উপর মশারি
ঢাকা শ্যা; বর জ্যোৎসালোকে মালোকিত।
দ্রে দেবালরে বারোটা বাজিরা পেল, শেঠজীর
মালিরে বিপ্রনরের নহবৎ বাজিরা উঠল।
নিত্তক শিবানী স্থিনদৃষ্টিতে জলের উপর
চাহিরা রহিল। একটা, গুইটা, তিনটা,
শাজিরা গেল চাঁদের আলো ক্রমণই অফুজ্জল
হই শ আসিল, শিবানীর মুখের উপর হইতে
জ্যোৎসালোক সরিরা গেল, বর ক্রমেই অজ্কার হইরা আসিতে লাগিল, শিবানী তেমনি
স্থিরচক্ষে অজ্কার যমুনার দিকে চাহিরা রহিল।

ভোরের নহবৎ মধুর হুরে ভৈরবী রাগিণী আলাপ করিয়া জগতে উষার আগমন জানাইয়া मिन ; निरामीत क्रांख हकू पूर ও অবসাদে म भारत मीन बलाइ क्फांरेयां व्यांत्रितः উপর উষার গোলাপী ক্ষীণ রেশাট্রক 'हरेट पृष्टि किन्नाहेना छेठिना मांजाहेना यांज উনিতে . পাইল—কেহ ঘারে করাঘাত করিরা ক্রত কর্ষ্টে ডাকিতেছে শিবানী, শিবানী শিরানী একবার স্থির হটরা দাঁডাইল একবার তাহার স্থির চক্ষে একটা আগুণের হলা বাহির হইয়া গেল, কিন্তু তারপ্রই সে আত্মসংবৃত **হটরা মাধার কাপ**ড় টানিরা দিল ও হাব খুলিরা ধীর পদে নীচে নামিতে লাগিল কিন্ত ভাষার পূর্বেই নীচে সিদ্ধেশ্বরীর গম্ভীর কণ্ঠ বাজিয়া উঠিল।

শিবি এমন সময় কে এলো লো? নীরদ বৃঝি ?

শিবানী আর নামিল না—সে সেই সিঁড়ির উপরই একটু দাঁড়াইরা থাকিরা আবার উপরে উঠিরা আসিল। নিবেশনী বকিতে বকিতে দার খুনিং নিলেন। আগত্তক একটিও কথা 'রা কহিং প্রবেশ করিন। নিজেশনী গজিলা উঠিলেন

"কে ভোষার , সাজ্ঞী বাঁৰি সাত্তি ।

বুরে বেড়াচে বে রাত চারটের সুষর উঠে বাের খুলে ভার শুনি ! বিনরাত থেটে ,খুটে বে রাভিরটাও এফটু নিশ্চিকি আছি তাও নর। সমন্ত রাভির বেখানে ছিলে আর হুল্টা সেখানেই থেকে একেবারে সকালে একেই তাে হতাে। কোণা থেকে আমার হাড় পােড়াতে একটা বকাটে মাতাল এসে ভূটন গা—" ?

নীরদ কুমার শঞ্চর বাক্যে একটিও উত্তর করিলেন না। তিনি উপরে উঠিয়া নিজের মুক্তছার শয়ন কক্ষে প্রবেশ করিয়া ডাকিলেন "শিবানী"!

শিবানী উত্তর দিল না; সে সেই জানলার তেমনিই ক্তব্ধ তেমনিই স্থির বলিরা রহিল ফিরিলও না। নীরদ চাদর খানা ছুঁড়িয়া ফেলিয়া দিরা তাহার দিকে অগ্রসর হইলেন।

শিবানী আমার কথা গুন্তে পাচেচা ? আমি ভোমার কাছে একটা কথা গুনে বেতে চাই"—

কথার স্বরে জড়তা ছিল না—চলনেও
মত্ততা ছিল না, শিবানী এক মুহুর্জ ঈবং চঞ্চল
হইরা উঠিল, দৃষ্টি ফিরাইরা সেই আধ
আলো আধ অভকাবে স্বামীর মুপের দিকে
চাহিরা দেখিল, তাহার চিত্ত দেই থানেই
জবীভূত হইরা বাইতে উন্তত হইরা উঠিল, কিন্তু
বর্ষোত্মধ মেল বেমন পশ্চিমে হাওরা
করিরা তাহার শক্তি হাস করিরা কেলিটিত
প্রোণপণ চেটা পার, শিবানীও তাইর্ল অন্তর্ম

দৌর্কল্যের সহিত সেইরূপ নির্ভূর ভাবে বৃদ্ধ করিতে অবীগল ।

নীরদ কাছে আসিরা শিবানীর একটা হাত ধরিলেন।

"আফ্লি হুর্ভাগ্য, আমি মক্ষম,সবি সত্য তবু তোমধর কাছে এব্যবহার আশ! করিনা। আমি জানি পৃথিবী আমাকে ঘুণা করে—শুধু তুমি ছাড়া। তাই আমি পৃথিবীর সঙ্গে সম্পর্ক তুলেও দিয়েছি। শুধু তুমিই আছ, আৰু তুমিও কি আমার ঘুণা কর্চো?

٣ ١ " ١

বৃষ্টির পূর্বে মেঘে মেঘে ঠোকাঠুকি হইয়া

যেমন বিছাদিয় বর্ষণ করিয়া গর্জিয়া উঠে
শিবানীর স্তক মৌন অধর ভেদ করিয়া
আকস্মিক বজ্ঞ উত্তত হইয়া উঠিল "হাঁ"। নীরদ
তাহার ছই হাত ছই হাতে ধরিয়া ব্যাকুল ভাবে
তাহার মুখেরু দিকে চাহিলেন, পূর্ণ অবিখাসে
বলিয়া উঠিলেন.—

রাগ করে নয়, তোমার মনের কথা আমি শুন্তে চাই ঠিক বলো।

শিবানী হাত সরাইরা লইল না, সে সেই স্থির দৃষ্টি উরত করিরা স্থানীর মূথে স্থাপন করিল।

"কি ওন্তে চাও" ? "তুমি আমায় ছণা কর কি না ?" "কয়ি।"

নীরদ শিবানীর হাত ছাড়িয়া দিলেন।
পাথরের পুতুলের মুখে যেমন ভাব বদল হর না
তেমনি অপরিবর্ত্তিত ভাবে শিবানী দৃষ্টি
ফিরাইয়া জ্বারমুক্ত গোলাপী আলোকোভাসিত বমুন্র দিকে চাহিয়া রহিল।

्रिता ! जाब (शतक मत्न करता पूनि

বিধবা; আৰু থেকে তোমাদের সব জালা বর্ষণার অবসান হয়ে বাক্। আমি একবার মরেছিলেম, এ আবার আমার বিতীয় মৃত্যু ! অনেক সহ করেছি, আর না।"

নীরদ কুমার ঘর হইতে বাহির হইরা গেলেন তাহার চাদরখানা শুদ্ধ ভূমে পড়িরা রহিল, উঠাইরা লইলেন না। শিবানী পূর্কের মত বসিরা রহিল তাহার পাধরের মত কঠিন মুখে একটিও রেখা পড়িল না।

নীরদ বাটী ইইতে বাহির হইরা গেল দেখিরা সিদ্ধেশনী বকিতে বকুতে উপরে উঠিরা আসিলেন।" "শিবিঁ! ও শিবি! আবার এখনই গেল কোখা?" শিবানী উত্তর দিল না। "সকাল লকাল মুখ হাত 'ধুরে হুটো থেরে গেলেই হতো, এর দোরে ওর লোরে টোক্লা সেবে বেড়াতেই তো ভাল লাগে। বাড়ীর ভাত বেলুন তো ভাল লাগেনা। তা বারণও ত কল্লিনি?

শিবানী এবার তাহার গম্ভীর মুখ ক্রিরাইল। ফাঁসির আসামী যেমন করিয়া নিজের বিচারক করের পানে তাকায় তেমনি করিয়া মারের দিকে চাহিয়া বলিল "ন!।"

"ধন্তি মেয়ে তুমি বাছা! কেমনি বা শ্রহা ভক্তি আর কেমনি বা মারামমতা তা কিছু বৃক্তে পারিনে। তের চের মেয়ে দেখেছি বাবা এমন মেয়ে আমার বাপের জন্ম দেখিনি! মরুকর্গে বা খুসী সব করগে; আমার কি?" বলিতে বলিতে গৃহিণী নামিয়া গিয়া সংবাদটা মিতিন ও মাতলিনী ঠাকুরাণীর কর্ণগোচর করিবার লোভে সকাল সকাল অকে তৈল মর্দ্দন করিতে আরম্ভ করিয়া দিলেন।

ক্ৰমশ-

প্রতীক্ষা।

আছে ওগো আছে! ৰ৷' আছে ভা' লুকিয়ে আছে আমার হিয়ার কাছে ! रेएक करत वाहित करत' চাইতে মুখের পানে; নয়ন ছ'টি কর্তে কাৰল **নোহাগ তুলির টানে** ; खन्छनित्र मत्नत्र वार्था শোনাতে তার কাণে। পারি না যে—সে কর কেঁদে সদাই আমার প্রাণে আছে ওগো আছে ! যা' আছে তা' লুকিরে আছে আমার হিরার কাছে ! বধুরে মোর আন্তে যে চাই ভিতর হ'তে কাড়ি', শাঁক বাজিয়ে কর্বে বরণ যতেক পুরনারী"; কইৰ কত গোপন কথা মনের কথা তারই। হায় রে সে কয় করুণ হুরে मूर्छ नवन वावि, আছি ওগো ভাছি। कहेर कथा र्यम्बि दर

श्यात कांशाकाहि!" कनमृष्ठ পথে यथन বাহির হ'লেম সাঁঝে, বনের ধারে জোনাক-জানা বিঁবি ডাকার মাঝে; সাঁবের হুরটি ফুটলো যথন তারার মোহন সাবে, আমার হিয়ার ভন্তি ভখন শুশ্রে শুশ্রে বাজে আছে ওগো আছে! বিরহের গান গাচ্ছে বদে তোমার হিয়ার কাছে ! বধূ আমার লুকিয়ে আছে গোপন হৃদয়পুরে; (कमन करत्र नाम्रवा रमधा, সে যে অনেক দুরে ! খুঁৰে আমি পাইনা তারে মর্ছি মিছে ঘুরে ! ভন্ৰ কৰে বাজ্বে যৰে ৰীণা মিলন হুৱে, আছি ওগো আছি ! আমার কঠে দাও পরা'রে তোমার মালা গাছি! শীদীনেজনাথ ঠাকুর।

সঙ্কুচিতা।

না, না, সধি, স্থাধোনা কাবে ভালবাদি,
মরমে পুকানো থাক্ মরমের বংণী,
ইষ্টমন্ত্র সম তাহা স্মরি এ হাদরে,—
সে মন্ত্র বে প্রকাশিতে মানা আছে গুনি!
কামনে কুসুম কত ররেছে ফুটিরা,
কিন্ত হোথা আকাশের নক্ষত্রের পানে
চেরে, থাকে কুজ যুথি;—কেহ নাুহি বোবে

কোন্ 'তারা'টি বে তার উপাক্ত জীবনে !
'তারা'ও বোঝেনা তাহা ; ঝরে যার যৃথি ;
কুত্র হৃদরের তার কুত্র হৃথহুথ
অসীম রহস্তসম রহে চিরদিন !.
আমিও তাহারি মত খুলিব না বৃত্ত।
কেহ না জানিবে মোর অন্তরের ব্যথা
থান, থান, জার তুমি তুলোনা সে ক্থা !

তিনটি কুস্থম।

2

কাটা-বনে প্রভাত রৌদ্র হাসিতেছে। कांठा-शरिष्ट्र मार्स मार्स (शानान, कर्ना, छन-পদ্ম প্রভৃতি ফুটিভেছে, ঝরিভেছে, ওথাইভেছে। বটবুকে বহু কাক বাসরা কোন বড় লোকের বাড়ীর কোলাহলের স্থায় গোলমাল করিতেছে।

অদ্রে স্থলর সরোবর। প্রভাতবায়তে তাহার নীলজল মৃত্ মৃত্ তরক তুলিয়া নাচি-ভেছে। সেই সরসীতে একটি সম্ম প্রস্কৃতিত কমল। স্বচ্ছ অনের উপর মৃত্ ভরক তাহাকে লইয়া ক্রীড়া করিতেছে—কথন নব-লাকে রঞ্জিত নব্যুবতীর গণ্ডের মত রক্তদলে চুম্বন क्रिया भगाहेर्डिक, क्रमण সোহাগে नाहिया উঠিতেছে। কমণের সৌন্দর্য্যে প্রফুল সরোবর-হাবর [•]আলোকিত হইতেছে। দেই বিশ্বপ্রকৃতি উদ্ভাগিত আলোকে হইয়া উঠিতেছে।

কানন মধ্যে একটি উন্নত 'হুৰ্য্যমুখী'। প্রক্টিত হইরা অবধি সে স্র্য্যের দিকে চাহিরা আছে। স্থা বেমন আকাশে উঠিতেছে, স্থ্যমুখীও আপন নয়ন সঙ্গে সঙ্গে ফিরাইতেছে। তাহার স্থাই সর্বস্ব—জগতে আর কিছুর আবশ্ৰক আছে সে ৰুঝিতে চাহে না।

কুম বৃক্ষে, লোক চকুর অন্তরালে একটি 'কুন্দ' কুন্থম বৰ্দ্ধিত হইতেছে।

ক্ৰে প্ৰোধ আসিল। স্থ্য হইতে নয়ন ফিরাইরা স্বা**দ্**ধী **জগৎ অন্ধ**কার দেখিতেছে। অক্সগতঞ্মাণ[্] পতিকে দেখিয়া **খণ্ডি**ভা নারিকার ্ত সে ২ত-কল হইবাছে।

সরোবর ভীরম্ব যুথি, মল্লিকা মানভী কুটনোমুৰ হইয়া উঠিল। সেই কুন্দ কুন্তমটিও আসন্ন সম্পৃতিয়ে বালিকার প্রথম যৌবন-সঞ্চারের অব্যবহিত পূর্বের মাধুর্য্যে ও সরলতার উদ্ভাগিত হইয়া উঠিগ। নিশীথ বায়ু নক্ষত্ৰ খচিত আকাশতলে, নক্ষত্ৰ প্ৰতিফলিত সরো-বরস্থ ইন্দীবর-কোরককে ঈষনাত্র বিধৃত করিয়া কুন্দকুত্বমকে প্রশ্নুটিত করিতে মাসিল। তাহার প্রেমম্পর্শে কুন্দ শিহরিয়া উঠিল। বায়্ব অপরিমিত প্রেমপূর্ণ আহ্বানে অপরিকুট প্রেমবাণী, নবপরিণীতা বালিকাবধুর স্থায়, সেই অমল কোমল ক্ষুদ্র ও দৌরভ নির্শ্বিত কুন্দ, ঈপ্সিত স্পর্শহিল্লোলে তাহার পুষ্পভারাবনত শাখা মৃত দোলাইয়া যেন লজ্জাবনত মুখে ঘাড়ু • নাড়িয়া কেবল বলিল 'না'। তথন বায়ু সহুতঃ -•মুখে কত কথা বলিতে লাগিল, কুন্দ কেবল বালল না'। বায়ু স্থলীতল প্রুমিনী স্ক্রের ছায়া কাঁপাইয়া তাহার মধ্যে শয়ন করিল।

রাত্রি গভীর। পৃথিবী তক্ক। আকাশ-মেখাচ্ছয়। অমল-ধবল যুথিকা-রাজি কল-হাতে দিক্ আমোদিত করিতেছে। স্থু কমল এখন মুদিত-সুর্যামুখী আধারে আর্ত, কুল সবেষাত্র ফুটিয়াছে-এখনও সে অভৃপ্ত।

बाज़ डिजि। व्यथस मक, भरत धृनि भरत গাছের পাতা ছিঁড়িয়া বায়ু স্বরং আদিল। শেবে বৃষ্টি। সরোবরের কমলকে ভোলপাড় হৰ্যাসুখী সুমূৰ্। কুল এখন °ক্রিল।

বড় মুধরা—সে আপনার সমস্ত হুদর গুলিরা দিরাছে, আব বে সে সমর পাইবে না।

•

প্রতাতে আকাশ আবার পরিফার হইল। ক্ষল হাসিল। স্থাস্থীর হাদর আবার আলোকিড হইল। গভ রাজের বৃষ্টি বিপু ভাষার আননে স্নেহ অঞ্চর মত শোভা পাইতে লাগিল, কাঁটা-বন আবার সানন্দে পুরিয় উঠিল। কিন্তু তথন সেই অপরিস্ফুট কুন্দ কুম্মন, বার্তে একটু সৌরত রাধিরা অসমতে ব্রিয়া পাড়িবাছে।

अशिराखक्क वस्

श्रायक ।

((,))

মধুবার সথে কর অবধান,
আপানে করহ পান সন্ধান;
স্থসাধ্য ভাবিস্থ প্রথমে পীরিতি
এবে প্রেম বাধা উঠে নিতি নিতি।

(?)

রঞ্জনী অস্তে খসাবে বাতাস কন্তর ঘন সে কুন্তল স্থাস ; এ আশার আশে প্রেমাহত মন কি শোণিতধারা করে বিদর্জন।

(0)

প্রেমান্নিহোত্তী গুল বদি কন রঞ্জ রাগ রসে হৃদর আসন তীর্থক্তৎ তিনি বিদিত সন্ধান প্রেমতীর্থ পথে কি মত বিধান। (8)

পিয়ার এ ভূবন পাছ নিবাসে
কেমনে আরামে রহিব উনাসে
ধ্বনিছে ঘণ্টা যবে অহরহ
এল কাল এল ভার বাধি লহ।

এ ঘোর নিশায় ভীষণ তর্মক এ করাল কাল আবর্ত্ত ভঙ্গে পারগত যারা অতি লঘুভার কি কানিবে তারা কি দুলা আমার।

(,)

সমতে চলিরা হার অনুকামী চূর্ণামভালন হইলাম আমি; গুঢ় প্রেম কভূ গুপ্ত রহে আর ঘরে পরে বদি হইল প্রচার।

()

সে রাজরাজের গুভ দরশনে বাঞ্চা রাথিস বদি, রে হাক্ষেজ তবে তাঁহারে ভূলিয়া থাকিওনা ক্ষণবধি। ভেটিতে যথন বাবে ওরে মন সেই প্রিয়তম প্রভূ, দুরে পরিহার করিবে সংসার ধিধা রাথিবে না কভূ।

खैषवनीखनाव शंकूत i

নববৰ্ষে পুরাতন হিসাব।

चाक नव्दर्श्व अथव अভाতে चामता न्छन ७ পুরাতনের সন্ধিছলে আসিরা দঁড়োইয়াছি। এরপ ছলে নৃতনকে আবাহন করিবার বস্ত একটা আন্তরিক আকুলতা আৰাদের বাভাবিক। কিঙ নৃতনের প্রস্তি এ শব্দপাতিতার কারণ কি। কেবল আশ। त्र बाबारमञ्ज এवरना किছु रहत्र न'हे ? किन्तु এভদিन कृत्व इ:रव रव बात बान जामारमत नजी हिन, रव তাহার অন্তরের সর্বন্ধ বিলাইয়া দিয়া আৰু নিংখের মত শীরবে বিদায় শইল, সে নৃতন নছে, সে পুরাওন। অতএব আল এই অনম্ভকালের বও সীমার মধ্যন্থলে দাঁড়াইয়া দর্কাত্রে দেই পুরাতন বর্ষের পরিচয় গ্রহণ क्द्राहे व्यागारमद अथग कर्डना। किन्न भदिनग्र अंड्न कहा कांबाठा थूर महम नरह। शहरवद रखरक বাহির হইতে দেখিলে ভাহার যথার্থ পরিচয় পাওয়া कठिन। जाहारक व्यवस्त्रत विक वित्रा भाहेरलहे ভবে ভাহার সহিত আমাদের প্রকৃত পরিচয় প্রভিঞ্জিত হয়। এইবাক্ত বাহিরের সহিত অন্তরের এই বাত প্রতিখাতের শব্দনের মধ্য হইতে উভয়ের মিলন-স্থানটি আমাদের সন্ধান করিয়া লইতে হইবে।

बाहिरतब किक मिया मिविरम গভবর্ষকে मেশের পক্ষে মুর্বাৎসর বলা ভিন্ন উপায় নাই। দেশব্যাপী ছর্ভিক ও মহামারী ভ আমাদের চিরসকী হইয়াই দাড়াইয়াছে। ভাহার **উপর মু**ष्टिरम् প্রকার বিজোহিভাচরণের ফলে রাজপক্ষের বক্সশাসনে সমগ্র দেশ প্রশীড়িত। সবল ও হর্বল উভয়েই অশাস্ত চইয়া উঠিলে ছर्करनत अवृत्धे वाहा घित्रा थारक, आमारमञ्ज গত বংদর তাহাই ঘটিয়াছে। কত সংবাদপত্তের मन्नामक, कछ बङ्गा त्नश्रक ও গায়क, वृष, यूवा ७ वानक व्य कांत्राधाद लोशमुध्रत আবদ্ধ হইল তাহা গণনা করা কঠিন। রাজপক वर्षहरणहे बाखरणारहत्र विकीषिका पर्मन कविग्रास्टन। ^{কলে} দেশের কণ্ড নির্দোষ গৃহস্থের গৃহে বে শান্তিরক্ষক াসনাবতার লালপাগড়ির দল আসিয়া উৎখাত ∂রিল তাুহার ইরভা নাই। পোয়েন্দার অসুসরণ,

পুলিসের ফণাদর্শন হইছে নিরীহ ব্যক্তিরও পরিআণ পাওরা কেবল তাহার পক্ষে নহে তাহার পিতৃ-পুরুবেরও সৌভাগ্যের বিষর হইরা গাঁড়াইরাছে। সন্দেহ হইলেই জার কথা নাই—তৎক্ষণাৎ হাক্ত। বেদিনীপুরের নিরীহ রাজাটি হইতে সারাজ্ঞ প্রজাটী পর্যান্ত এবং ভট্টপরিনিবাসী পঞ্চানন তর্কালকার প্রমুখ নির্কিবাদী রাজ্যণ পৈতিভালিও এই অকারণ পীড়ন হইডে রক্ষা পান নাই।

বঙ্গদেশ হইতে সিন্ধুদেশ, কাশ্মীর হইতে কুৰারিকা,
পর্যন্ত এই একই ইতিহাস। রাজজোহের অপরাধে
আলিপুরে অরবিন্দ ও অক্টাক্ত প্রাব্ধ পঞ্চালিটি মুবা
আল প্রায় এক বংসর বন্দী ও বিচারাটীন।
চিদালরম পিলে নির্কাসিত, ভিলক কারাক্রছ,
অধিনীকুমার, কুকুক্মার, স্ববোধচন্দ্র ইত্যাদি নয়লন
বঙ্গবাসী বিনা অভিযোগে ও বিচারে প্রধাসের
কারাগারে অবক্রছ। দেশের নিংবার্থ সেবারত
সমিতিওলি রাজকোপে দম। একদিকে রাজপক্রে,
অবিষাস, অনুস্কান ও কঠের শাসন, অপর দিকে
প্রজাপক্ষে অগান্তি, অস্বোষ্ঠ ও আর্জনাদ ?

এই ত গেল রাজা ও প্রজার মধ্যে সম্বন্ধ । তাহার
পর নিজেন্দর মধ্যে সৃহবিবাদেরও অভাব নাই।
করবংসর পূর্বে ১৬ অক্টোবরে প্রথম পাটিসনের
দিনে হিন্দু ও মুসলমানের মধ্যে জাত্তার আগ্রভ হইয়া দেশে নবজাশা সঞ্চার করিয়াছিল্ল এ
কিন্তু সেই জাত্তার বন্ধমূল হওয়া ভূরে থাক,
ক্রমশ এখন উভরের মধ্যে একটা বিহেব ও
অবিবাসের ভাবই প্রবল হইয়া উঠিয়াছে। তাহার
উপর আবার চিত্রগুপ্তের হিসাব নিকাশ আছে।
খাধীনচেতা মহারাজ অমরসিংহ, খনেশসেরী মহারাজা
সুর্বাকান্ত আজ মৃত । নবীনচল্রের অমরবাণা আজ
চিত্রদিনের মন্ত নীরব। সাহিত্য সেবার সর্বব্যাগী
গোগেল্রনাথ এবং লক্প্রভিষ্ঠ সম্পাদক নগেল্রনাথ
ঘোব আজ পরলোকগত। সর্ব্বোগরি জামাদের

সন্তদর বদেশভক্ত স্বাধীন ত্রিপুরাধিণতি আৰ ইংলোক হ**ইতে অ**ক্তহিত।

হুৰ্ঘটনার ভালিকা আরও অনেক দীর্ঘ করা
যাইত, কিন্তু শুক্রতের হিসাবে কেবল এইওলিই
যথেষ্ট বলিয়া এইবানেই শেব করিলাম। এই ত
কেল কতির হিসাব—এবন গতবর্ধে লাভ পাইলাম
কি? প্রথম বিশ্টো ও মলির শাসন সংক্ষার
প্রথাব এবং ঘিতীর বড়লাটের মন্ত্রণাসভার
অনারেবল এস পি সিংহের নিয়োগ। কালের
প্রবাহে ছুর্দিনের ও ছুর্ঘটনার ক্রতিচিক্ত যবন
মুছিরা যাইবে, তবন ইংরাজের এই উদার ক্রীর্ত্তির
ক্রম্ম বিগত বর্ধ আমাদের সরণীর রহিবে।
এইজম্ম লর্ড ধলি এবং লর্ড মিশ্টো উভরেই
সম্প্র ভারতবাসীর কুতক্ষতা ভালেন।

আর একটি আর্বাদের মহ। লাভ,—বৃটিশ পালামেণ্টে ভারতের প্রতি সহাকুত্তি জাগরণ। আগে পালামেণ্টের ছ্একজন মেফর মাত্র ভারত-প্রসঙ্গে মনোযোগ দান করিতেন; এবার কৃষ্ণকুমার প্রমুখ নয়জন বঙ্গবাসীর অকারণ 'নির্কাসনে, পালামেণ্টের উন্নতিশীল সভাগণ স্থানেকেই এই কার্যোর প্রতিবাদ আরম্ভ করিরাছেন।

ইহাই হইল বিগত ৰৰ্ষের ৰাহ্যিক লাভ-ক্রেন্ডানের ইতিহাস। কিন্তু এতগুলি ওভাওভ ঘটনা, এত গুলি ব্যাঘাত ও বিপদ আমাদিপের মর্ম্ম মধ্যে কি চিহ্ন অন্ধিত রাখিয়া পেল ? আমাদিগের জাতির মধ্যে কোন সম্পদ দান করিয়া গেল? তিন বঁৎীসর পূর্বের ও আজিকার বাঙ্গালীতে কি কিছু প্রভেদ হয় নাই ৷ আজিও বাঙ্গালীর কি' সেই ভীকতা, সন্ধীৰ্ণতা, স্বাৰ্থপরতা পরভিক্ষাপ্রবণতা আছে? আল বেদনার আখাতে, প্রবলের সহিত भः बार्फ कि बाजानी भूकी (शक्ता माहनी, छेमात्र, আত্মত্যাগী ও আত্মনির্ভর্নীল হয় নাই? আজ ৰশ্বৰধ্যে সে शक नवकीवन ম্পান্তৰ অস্থাতৰ করিডেছে তাহা তাহার শিকা, সাহিত্য, শিক্ষ ও সাধনার মধ্যে বছমুখী চেটা ও চাকল্যে পরিকুট হইরা উঠিতেছে। আৰ ভিন

বংসর বাত এই পরমুখাণেকী জাতির মধ্যে স্বতন্ত্র জাতীর শিক্ষার স্চলা হইরাছে; যদিও এখনও ভাহাকে যথার্থভাবে জাতীর বন্ধ শামে অভিহিত করা যার না—তথাপি এই অর সমরের বধ্যে বাঙ্গালীর মধ্যে যে এক নৃতন আলোক ও আদর্শ আসিরা উপস্থিত ইইরাছে, ধনীলোকের েশাসুরাগ দেশের কর্মে দান বে কতদূর বৃদ্ধি পাইয়াহে,—বালকদিগের স্বাধীন বৃদ্ধি, চিন্তা ও কর্ম্মশন্তি যে কতদূর বিকশিত ইইয়া উঠিয়াছে আমাদের জাতীয় বিভালয়গুলিই ভাহার জনত্ত প্রমাণ।

আমাদের দেশের অর্থবানগণ পভর্ণমেণ্টের তাডনা এবং উপাধির লোভে ব্যতীত এতদিন দেশহিতকর অমুষ্ঠানে সহজে দান করিছে জানিতেন না, এমন কি কেছ নি:সন্তান হইলেও তিনি পোৰাপুত্ৰগ্ৰহণে निक्रनाम तका कतिरवन मिछ पोकाव छथानि দেশের কার্য্যে সম্পত্তি দান করিয়া আপনাকে ধ্রু মনে করিতে শিখেন নাই। আজ খদেশবংগল অমীদার শীঘুক ব্ৰেক্তকিশোর চৌধুরী জাতীয় বিদ্যালয় হাপন জন্ত ৫ লক্ষ্মা দানে বাসালীর এ কলক দুর করিয়া দেশপূল্য হইরাছেন—এবং স্বনামব্যাত ব্যারিষ্টার শ্রীমুক্ত ভারকনাথ পালিত বহোদর ৰঙ্গীৰ শিল্পবিদ্যালয় (Technical Institute) প্রতিষ্ঠা করিয়া, আমাদিপের অভরে অবর আসন অধিকার করিয়াছেন। তিনি তাঁহার কটোপা-ब्बिंड थाय मबल मन्मालिये धरे निव दिनानरवर উন্নতিকলে তাঁহার 'উইলে' দান করিরাছেন। বলাতির মঙ্গলের জন্ত এরূপ সুমহৎ বার্ধত্যাগ .কবল বাঙালী সমাজে নহে মানবসমাঞ্জের ইভিহাসেও বিরল। ইহার পর জাতীয় শিল্পমিতি। দেশকল্যাণরত क्षकाम्पन रचारिशस्मनाथ रचारवत्र यर्जू अवः नाथात्रर्भत স্থবেত সাহাব্যের উপর নির্ভন করিয়া ইহা প্রতিবংগর প্ৰায় একশন্ত সংবাক শিক্ষিত যুবাকে সভ্যকগতের শিক্ষ ও বিজ্ঞান শিকার বৈক্ত ইয়ুরোপ, আনেরিকা ও আপানে थ्यान कतिराज्य । **এই नकल बूंबा विका**रन निकानाञ् कतिहा चरनर्न थानावर्तन कहिरन स्व

এই পতিত দেশের পৈরজী আবার সমূরত হইবে
সে বিবল্পে সন্দেহ নাই। আৰু বাহারা বসিলীবা
একদিন ভাহাভিগেরই পিতৃপুরুবের শির প্রতিভা
দেখিরা যানবস্বাল মুক্ত হইত। এতদিবের পীড়নে
ও পরাধীনতাতেও তাঁহাদিগের সম্ভতির্গণ বে আবিও
সেই পুরাতন প্রতিভা সম্পূর্ণরূপে হারার বাই
এই এপ্রতিকূল অবস্থাতেও তাহার যথেই প্রমাণ
বিদানাব।

धरानत निक्रे इस्तन यथन मार्च बाबा शांव তথন তাহার অভিযান করা ভিন্ন আত্মসন্মানরকার আর অন্য উপায় নাই। এই অভিমানেই আমাদের শিরোয়তির স্চনা! কিন্তু সেই স্চনা হইতে আজ সাগরের উপকৃষ পর্যান্ত সমগ্র জাতির অন্তরকে আশ্চর্যাক্রপে অধিকার করিরাছে। আজ আর বস্ত হইতে বোভামটি পর্যান্ত নিতাবাবহার্বা বস্তার জন্ম विमिनीत निकृष्टे होठ शालिया बीननगरन हाहिया থাকিতে হয় না। একদিন শিল্প গৌরবে জগতে ভারতবর্ষ শ্রেষ্ঠভূমি ছিল। এই আগরণের ফলে আবার একদিন ভারতবাসী বে তাহার লুপ্তগোরব পুনক্ষারে সক্ষ হইবে ভাহার আশা করা বোধ हर व्यमक्र नरह। यरमनी व्यास्मानस्म करन দেশীয় শিরের যে কন্ডদ্র উন্নতি হইয়াছে তাহার नकन ध्यां मः अह कतिया वृत्ताहे छ इहेरन, कांबरे। বড়ই বৃহৎ হইনা পড়ে। নিভাব্যবহার্যা প্রান্ত সকল বস্তুই ত এখন আমাদের স্বদেশে প্রস্তুত হইতেছে। গত তিন বংসরের মধ্যে বোখাই প্রদেশের নিকট বঙ্গদেশ প্রথম বংসর ৫৬ লক্ষ্, বিভীয় বংসর ৬২ লক্ষ্, ও তৃঙীয় বংসর ১৬২ লক্ষ টাকার বন্ধ ক্লয় করিয়াছে। ভন্তির বলদেশের ভদ্মবারগণ খদেশী বল্লে ড' দেশ ছাইয়া ফেলিয়াছে। এবং এখানে এক ক্রোড় পঁচিশ লক छैकि। बूनश्रत्वत्र करमनी बरस्त कम द्याना बहेत्रारह। বিলাভি বল্লের আমদানিও সেই পরিবাণে ক্ষিয়া. গিয়াছে। গভ ৰৎসরের সাত মাসে তৎপূর্ব্বৰৎসরের ৰণেকা ভিন কোটা পঞ্চাৰ লক্ষ টাকার অধিক म्रानाक विनाको वरञ्जत कावनानि कवित्रा नित्रारक।

খদেশী শিলের উরতি অর্থে বে জাতীর সম্পদ বৃদ্ধি ভাষা বলাই বাছল্য।

भिरत्रत महिल विकासित व्यवत्र मयका । अद्वत উন্নতির উপর অক্টের উন্নতি নির্ভন না করিয়া থাকিতে পারে না। বিজ্ঞান প্রভিতার অধ্যাপক জগদীন बस् এवः ध्यक्तिहल बात्र क्वन व्यवह रिशेवव নহেন---জগৎগৌরব। कि ब অশিকিত ব্যক্তি আছে---चानक चळाठ ७ ৰাহাদিগের স্বাভাবিক শিল্প বিজ্ঞান প্রতিভা দেখিলে আশ্চৰ্য হইতে হয়। সংবাদপত্তে দেখিতে পাই শিকা ও আয়োজনের অভাবসত্ত্বেও কেহ পিন্তন, **ट्रिश्च मृत्रवीक्रन यञ्च, ट्रिश्च टिनिश्चारक्रत कन अज्ञ**न নির্দোষ ও সর্বাঙ্গ ছম্মরভাবে নির্মাণ করিতেছেন ट्य मिल्लिगन्छ डाहानिरात वृद्धित व्यन्तरमा कतियाहिन । बाडीय निर्वत उन्निक्टिहो रच क्विन शुक्रस्वत्र नर्गा সীমাবদ্ধ হইলা শেব হইয়াছে তাহা নহে। দেশের মহিলাগণও এই জাতীয় কর্ম্মে বোগ দান করিয়াছেন। বিধবা দরিদ্রকক্ষাগণ যাহাতে শিল্পশিকা করিয়া স্বাধীন बोबिका व्यर्कन कविएक मक्तम इन, अरे महर छेल्लए কলিকাতার একটি মহিলা শিলসমিতি ছাপিড় হইয়াছে। জাতীয় উন্নতি অর্থে কেবল পুরুবের উন্নতি ৰহে, রমণীরও সমোন্নতি আবশ্রক ।

ভাষার পর জাতীর চিকিৎসা বিদ্যালয় আমানের জ্ঞায় দরিত্র দেশে এই অফুষ্ঠানের উপক্ষরিত। বিশ্বভাবে বলা জনাবশুক। দেশের কৃতবিদ্য চিকিৎসক্পণ এই বিদ্যালয়টিকে উন্নত করিয়া ভূলিবার জক্ত অকাতরে স্বার্থত্যাগ করিয়া ইন্দর— দেবা করিতেছেন।

সর্বলেবে জাতীয় সাংহিত্য। সাহিত্যের অন্তর মধ্যেও এই জাতীর জাগরণের পালন আমরা বেশ স্পাইভাবে দেখিতে পাই। আজকালের সাহিত্যের মধ্যে আমরা আর সে হা হভোগি, সে কথার হেঁরালি, সে ভাবের বেরাল দেখিতে পাই না। এখন যাহা কিছু প্রকাশ হয় বেশ স্পাই, সংযত, পরিপুই ও আজসম্মানমুক্ত। সাহিত্যে বাজালীর আজ্বদর্শন ও সাধনার চেইা আরম্ভ

হইরাছে,—বিধাতার যে বাণী তাহার বক্ষে আসিয়া অতএব পুরাতন বংশরের হিদাব নিকার্ণে ক্ষতির আঘাত করিরাছে, তাহারই ক্ষীণ প্রতিধানি তাহার অপেকা লাভের পরিমাণই আমরা অধিক চতুন্দিকে আল ধানিত ইইয়া উটিতেছে। দেখিতেছি।

मगारनाह्या।

Elements of Practical and Scientific' Agriculture. Jadunath Sirkar, College of Agriculture Imperial University. Methodist Publishing House 1908. বীযুক্ত যত্নাথ সর্বকারের নাম ভারতীর পাঠকের নিকট অজ্ঞাত নহে। তিনি জাগানে থাকিয়া জাগানসম্ভীয় করেকটি প্রবন্ধ লিখিয়াছিলেন তাহা সাধারণের হান্য-वाही इरेब्राहिन। वर्डमान भूखकशानि त्रन मजन ইংরাজীতে লিখিত। এছকার ভূমি, সার, শাকসজা, শস্তাদি ও সাধারণ কৃষি প্রভৃতির সম্বন্ধে বিশদভাবে আলোচনা করিয়াছেন। যিনি এ বিবরে অভিজ্ঞ নহৈন তিনি ইহা পাঠ করিয়া বিশেষ জ্ঞান লাভ फ्रांद्वन । देवळानिक कृषिमश्रक आमानिशात माधादन शाठेरकत त्वाथ इब विस्थव कान थात्रण नाहे; আব্দেদিকার বৈজ্ঞানিক কুনি বা নবকুবির (neoagriculture) প্রবর্তনে উপরভূষে সোণা ফলাইতেছে ; তিশিরা মনসা হইতে পণ্ডমাতির জক্ত এমন ৰাব্যকর স্বাদ্য প্রস্তুত হইতেছে যে তাহা শুনিলে বিশিত হইতে হয়। ভারতবর্ধ কৃষিপ্রধান দেশ। এখানে যদি আবার লক্ষ্মীর, প্রতিষ্ঠা করিতে হয় তাহা इरेल कृषित्र উन्नांख्य पातारे इर्रा मञ्जाय वात्व अध्यानित्र উপकात्रिका मयरक आमानिरभन्न विन्यू-ৰাজ সম্বেহ ৰাই। গ্ৰন্থকার টোকিও বিশ্ববিদ্যালয়ে কুবিবিশ্যার অতিষ্ঠা লাভ করিবাছেন সূত্রাং ভারার ক্ৰাণ্ডলির সারবন্তা আছে। পরিশেবে আমাদের বক্তব্যু এছকার বলি এছবানির বঙ্গামুবাদ প্রকাশ করের ভাষা হইলে শুধু যে বালনা সাহিভ্যের উপকার

হয় এমন নহে, গ্রন্থখানি ইংগাজী অনভিজ্ঞ কুবি-অনুরাগী বাঙ্গালীয়ও বিশেষ উপকারে লাগে।

অঞ্চল (গীতিকাব্য)।—শীলীবেলকুমার দত্ত
প্রতি। কলিকাতা, ০৬নং বনমানা সরকারের ব্রীট,
কমলা প্রিণ্টিং ওরার্কস হইতে প্রকাশিত ১০১৪। মূল্য
বার আনা মাত্র। এই কবিতাগ্রন্থগানি যদিও লেখকের
প্রথম উন্যম: তথাপি অধিকাংশ কবিতাতেই কবিছের
আতাব পাইলাম। এবং "জননা জন্মত্র্নি" ও "জাতীর
লক্ষ্মী" এই কবিতা তুইটিতে কবিশ্রতিভার স্থাপটি পরিচর
পাওরা যার। তবে লেখকের হাত এখনো বেশ পাকে
নাই—হন্দের সরল সহজ প্রবাহটুকু তিনি সর্ব্যত্র রক্ষা
করিতে সক্ষম হন নাই। "স্থ-জনিবার" 'স্থ-বিশ্নিত'
'স্থ-বন্ধ্র' প্রভৃতি 'চবৈতুহি'র জানরা কোনকালেই
পক্ষপাতা নহি। ত্র'একহলে ভাবাও যেন আত্তই হইরা
পড়িরাছে। এই সকল ক্রটির দিকে লক্ষ্য রাথিরা
লিখিলে, লেখক ভবিব্যতে স্থকৰি হইবেন সন্দেহ নাই।

মাতৃলী ।—কবিভাপুত্তক। আইশগোবিক্স সেন
প্রণীত ও প্রকাশিত। কলিকাভা, ২০নং রারবাগান
প্রিট, ভারতমিহির ব্যন্তে সাজাল এও কোম্পানি দ্বারা
মুজিত। মূল্য বার আনা। গ্রন্থখানির প্রারস্তে ১৬
পৃষ্ঠাব্যাপী একটি ভূমিকা। প্রথমটা মনে হইরাছিল
এই 'ভূমিকা'ই বুঝি 'মাত্রলী' ধারণের হ্যতা। কিন্তু
বাত্তবিক ভাহা নহে! এই ভূমিকাতে লেশক আচার্য্যের
মুর্ত্তি ধরিরা বেনীতে বসিরা সিরাহেন এবং এক নিশাসে
'ক্রপ্রোধ্যানী' 'লালাবাবু' 'বৈক্রবর্ধর্ম' 'অইতবাদ'
'জিগুণান্থিকা শক্তি' ব্যোক' বেন্দ' বক্ষা 'গীভা' 'সেটে'
লঙফেলো' সকলের উপর কলম চালাইরাহেন! কিন্তু
এই সাড়ম্বর ভূমিকা পাঠান্তেও পাঠক ব্য ভিমিরে,

দে তিনিত্ব'। যিনি ১০ পৃঠার জ্ঞানের এমন বংড় বচাইতে পারেন উচাইর শক্তি অসাধারণ, সন্দেহ নাই। একণে বর্দি কেই জিজ্ঞাসা করেন পুত্তকের বাকী ৩৬ পৃঠার আছে কি । আমরা স্লসন্থোচে 'বলিতে পারি, রাবিশ! 'রাজা রামমোহন,' 'বাববীর বিদ্যাসাগর,' 'নর্দেব ভূদেব' 'রাজর্ধি সত্যেন্দ্রনাথ' প্রভৃতি প্রাতঃ অরনীর মহাজনবর্গের নামে সনেট লিখিয়া অত্যাচার করিতেও লেখক ছাড়েন নাই! এই সকল ভল্তের হন্তে পড়িলে শিগ্রহের সীমা থাকে না! যাহা হউক আমানের একটা কথা অংছে! শ্রীশগোবিশ্ববাব্র সমরের মৃল্য না থাকিতে পারে, কিন্তু সংসারী, বেচারী বাজালী পাঠকের সময়ের রীতিমত মূল্য আছে, এবং শ্রীশবাব্ কি বাঙলা সাহিত্যক্ষেট্রটা 'আন্তাকুড়' ভাবিরাছেন যে তাহাতে এইরূপ যথেছভাবে আবর্জনা নিকেপ করিবেন!

পাইওনিয়ার রোড, ইভিয়ান প্রেসে মুক্তি। এখানি কবিতা-গ্রন্থ। লেখিকা বালিকা এবং তাহার এই প্রথম উন্যম। অধিকাংশ কবিতার ভাব ও ভাষা ৰঞ্চিমচন্দ্ৰ বৰীল্ৰনাথ ও অত্যাক্ত সাম্বিক কবিব রচনা হইতে গুহীত ইইয়াছে। অবশ্ব বালিকার নিকট হইতে আমরা তাঁহার সহদয়ের শুক্তর ভাবের আশাও • করিতে পারি না তবে সেই সকল পুরাতন ভাবই যদি স্থলবিশেষে সংক্ষিপ্ত কিম্বা বৰ্দ্ধিত করিয়া ভিন্ন ছলে রচিত হইত তাহা হইলেই আমরা বিশেষ আৰম্বনাভ করিভাম। যাহা হউক বালিকার সাহিত্যচর্চার শামাদিগের সম্পূর্ণ সহাস্তৃতি আছে এবং সর্ববাস্তঃকরণে আমরা তাঁহার সাধনার সাকল্য কামনা করি। এছ-থানিতে মূল্য লিখিত নাই, স্বতরাং অফুমান করা বার ইহা বিক্রয়ের জন্ম নহে। এছের ছাপা বাধাই এভতি বেশ চিতাকৰ্ষক কুইৱাছে।

আদর্শ ভারত গৃহিণী। শ্রীষতী আনোদিনী বোৰ প্রণীত। শ্রীগোপালদাস বোৰ প্রকাশিত। চাৰা, স্ত্রাপুর রোড, ১৩১৫। ইহা একবানি প্রবন্ধ-প্রিকা। ভ্রিকার প্রকাশক মহাশয় লিখিরাছেন, বোরিকা এই প্রবন্ধ লিখিয়া বল মহিলাগণের রচনার

নিৰিত বাবু একৰোহনদভের নাৰে ছাপিত পারি-তোবিক প্রাপ্ত ইইয়াছেন।' সুধের কথা সন্দেহ নাই। লেখিকার ভাষা সুন্দর ইইয়াছে এবং তিনি জনেক প্রয়োজনীয় কথার অবভারণা করিয়াছেন। তবে উক্তিওলি আরো যুক্তিতর্কের সাহাযো প্রাবিত করিলেই প্রবৃদ্ধি সর্ববাজসুন্দর ইইত। আশা করি লেখিকা দিতীয় সংস্করণে আহাদের এ কথাটি রক্ষা

মানসী।--সচিত্র সাসিক পত্র ও সমালোচনী। অগ্রিম বার্ষিক মূল্য ছুইটাকা ছব্ন আনা। কার্যালয়, কলিৰাতা, ২ ৫ চৌরন্ধী ; ছাৰড়া আপ্রিস ১৫২ পঞ্চানৰ-ভলা রোড। মানসীর প্রধার্ন বিশেষত্ব দেখিলাম, "ইহার সম্পাদৰভার কে.ৰ একজন বিশিষ্ট সম্পাদকের উপর প্রদত্বর নাই। ইহা মাননীর (।) সভাগণের অমুমতামুসারে চারিজন বিশিষ্ট সভোর উপর স্তুত করা হইয়াছে" ইত্যাদি। তবে অনেক সন্ত্রাদীতে शासन नष्टे ना रह ! वहामन रहेंटे विद्यार्गानव स्वाह লেখকজেণীর মধ্যে রবীশ্রবাবু, ছিজেন্রবাবু প্রভৃতি মনস্বীগণের নাম নির্ঘোবিত হওয়ার সকলেই একটা কিছুর প্রত্যাশা করিয়া বদিয়াছিল। কিন্তু 'সূচনা'তে पिथा (शन द्रवीक्तवार् विलए इन-'मानत्री'त मक्त विनि किहूरे कारनन ना। जिनि चयु 'भनकवाँक" विवर তাহার 'নিকট হইতে অভাবতই কেহ কোনো দারিছের প্রত্যাশা করিতে পারেন না!' স্ভরাং তিনি শুধু 'একটি অবতরণিকার অবতারণা করিয়া'ই 'বিদারগ্রহণু' করিবেৰ ! 'মানসী' কিন্ত তথাপি রবীক্রবাবুকে ष्टािं व ना !

তাহার পর মানসীর আক্ষকথা—'ইছাথারা নৃত্র বেধকের স্টে হইবে' অর্থাৎ বিনি বাহা লিখিবেন ভাহাই হাপা হইবে, 'এবং সমগ্র পৃথিবীর মধ্যে কোথার কি ধর্ম, জ্ঞান, বিজ্ঞান, বৃদ্ধি শিল্প সাহিত্য' আছে, "ভাহার সংবাদ সহজ্ঞ ও সরলভাবে কছে ভাবার সাধারণমত করিরা দিতে মানসী বিন্দুমাত্র আলতা করিবে না।" তাহার পর 'ভাষার উন্নতি' প্রভৃতি ত আহেই! সূত্রাং দেখা বাইতেহে, কিছুরই আর জভাব রহিল না।

আমাদের একটি কুম্র নিবেদন আছে, মানসী বদি একটা Order-supply Department খুলিয়া বনেন, ভাষা হইলেও সাধারণের অনেব উপকার হয় !

এই সংখ্যার শীমুক অকরকুমার মৈতেয়ের "লক্ষণ সেনের পলায়ন-কলক" প্রবন্ধ বওশ: প্ৰকাশিত इटेब्राइ । अबह बहे अवसहे लीव नःशा 'वक्रमर्नन' ও 'প্ৰৰাসীতে' পূৰ্বে প্ৰকাশিত হইয়া গিয়াছে। এ দংবাদটুকু কি 'মানসীর সেবকগণ' রাবিবার অবসর পান নাই ? ইহার কারণ কি ? এরপ নিল্জ আচরণ কিছতেই ক্ষাৰ্হ নছে। বৰ্ত্তমাৰ সংখ্যার তিনটি কৰিতা, একটি ছোট পল, চুইটি সাহিত্যিক मन्ड बक्टि जमन्महिमी-वर्शर मिरे 'स्थाड বড়ি ৰাড়া' যাহা সাকাভার আমল হইতে সাসিক-পত্ৰিকার পূঠে হান পাইরা আসিভেছে, ভাহাই---व्यादक ! नवीन সহযোগী যদি কোন একটা বৈচিত্ত্যের অবভারণা করিতে না পারিলেন, নথীন লেখকগণের চিন্তা ও ভাবের পরিচয় না দিলেন,—সেই পাঁচ সাতটি পুৱাতন লেখককে লইয়াই টানাটানি করিলেন, তাহা হইলে তাঁহার কর্মকেত্রে নামিবার र्कानरे गार्थकठा नारे ! देशंद्र अकृष्ठि विषयत कत नायु छ স্তরন চিন্তার তরজে সামরিক সাহিত্যের প্রতি উৎপীড়ন! 'মানসী' নৃতৰ পথ আবিছার করুন, জীব সাহিত্যসমাজ? সংস্কৃত ত্রুলন, অকাল্পকতা ভ্যাগ করিয়া সাধনার পথ প্রসায়িত করুন ভবেই মঙ্গল, নচেৎ অক্তান্ত নবীন সহবোগী বেমন অলব্ৰুদের মত উঠিল, ডুবিল, 'মানসী'ও তাঁহাদিগের সহিত সমাবস্থাপরা হইবেন। এ কথা নিঠুর হহলেও বে সভা ভাহা সন্দেহ করিবার কারণ নাই।

Svaraj. Edited by Shrijut Bipin Chandra pal. A fortnightly organ of Indian Nationalism and of the General Philosophy of Nationalism as a necessary element in the Evolution of Universal Humanity. 1st March 1909. Vol. I. No. 1. Annual Subscription 9 shillings.

বিশিনবাৰু কৰ্ড্ক সম্পাদিত এই প্ৰিকাণানি বিলাভ হইতে সম্প্ৰতি আৰমা সমালোচনাৰ্থ প্ৰাপ্ত হইলাছি। আনমা এই প্ৰবাসী সহবোগীকে সাদরে আহ্বান করিতেছি। বিশিনবাবুৰ রাজনীতিক মহ সম্বৰে এখানে গ্ৰণ্থেনট ও অনেকে; আন্ত ধারণা পোবণ করিয়া থাকেন, এমন কি কেছ কেছ তাঁহার বিরুদ্ধে গুৰুত্ব অভিবোগও আনমন ক্ষেন। ভাহার ভিত্তি কিরুপ অনাৰ ভাহা এই প্রিকাণানি গাঠ করিলেই বুঝা যাইবে।

ৰিশিশ্বাবুর রাজনীতিক মডের সহিত্ত সর্ব্বত্ত আমাদিগের মডের মিল নাই। লর্ড মলির সংকার স্বক্ষে তিনি যাহা বলিরাছেন তাহার সহিত আমাদিগের কোন সহাস্তৃতি নাই;—তবে সকলেই আপনার স্বাধীন মত মুক্তকঠে ব্যক্ত করিবেন ইহাতে কাহার কি বলিবার আছে।

বিলাতপ্রবাসী ছাত্রগণের মধ্যে বাছাতে হাল্যঙা একতা প্রভৃতি বর্জিত হয়, বাহাতে তাঁহারা লাভীরতার চর্চা করিয়া বলেশের কার্য্যে তাঠা হয়েন, এ সম্বজ্ঞে বিশিনবারু বিশেষ উদ্যোগ করিতেছেল। তাঁহার কামনা সফল হউক, ইহাই আমাদিগের ঐকান্তিক প্রার্থনা। এবং তাঁহার এই উদ্যোগ অধ্যবসায়ের লক্ত তিনি বলে-শের সকলের ধক্তবাদের পাতা। ছানাভাবে আমরা উলেগবোগ্য বিবয়াদির উভ্ত করিতে পারিলাম না; ভবিবাতে উভ্তু করিবার ইচ্ছা য়হিল।

শীসভারত পর্যা।

"ফরাসী দেশের চিত্রশালা।"

বে চিত্রশালাটির কথা আজ লিখিতে
যাইতেছি সেটি "মার্সেলের", প্যারী নগরের
নহেঁ। খুব বড় না হইলেও ইহাতে বিস্তর
ফরাসী, ইতালীয় ও অস্তান্ত চিত্র, এবং প্রস্তর
•এবং অস্তান্ত নানা উপকরণে গঠিত বছরূপ
সুক্রের মূর্ত্তিও আছে।

ফেদিন মার্দেশে নামি সেই দিনই "হোটেল কণ্টিস্তাণ্টলে"র নিকট অবস্থিত এই স্থানটি দেখিতে যাই। একজন স্থইস জাতীয় প্রদর্শক আমাদের সঙ্গে ছিল। সে অনেক প্রকার ভাষা জানে। আর সে দেশের প্রদর্শকেরা ভাল করিয়া দেখাইবার ও ব্ঝাইবার জন্ত শিক্ষা এবং চাপরাস্পায়।

সমৃদ্ধিশালী ও জনতাপূর্ণ সেই সহরের
ভিতর দিয়া থানিকদূর যাইলেই একটি উচ্চ
জমীর উপর "প্যানেডি লঙ চ্যাম্প" দেখা যায়।
প্রকাশু প্রাসাদটি অতি পরিপাটিরূপে গঠিত।
ফরাসী দেশের সকল বাড়িগুলিরই এই গুণ।
এই মিউজিয়মটির সম্মুখে একটি বড় হুদ।
—বাটীটির উপর হইতে ফুপাকার জলরাশি
জলপ্রপাতের মত অনবরত তাহাতে আসিয়া
পড়িতেছে। হুদটির ধারে ধারে ফুল গাছ।
আর চান্নিদিকের মাঠ সব্রু বাস, ডেসি
ও লিলি ফুলে ভরা। ঘাসের ভিতর বিঁ বিঁ
পোকা ভাকিতেছিল, ফুলের মধ্য হইতে
গন্ধ ছুটিভেছিল, আর এদিক ওদিকে
ফল্পর ছোট প্রজাপতি উড়িতেছিল। ঠিক
আমাদের এদেশের দৃশ্রের মত।

উপরকার বে স্থানটি হইতে জল পড়িতে-. ছিল সেই উচ্চ স্থানটির দিকে চাহিয়া দেখি

সেধানে অনেকগুলি স্থন্দর স্থলর প্রস্ত প্রতিষ্ঠিত। মধ্যে অবস্থিতা একটি রমণীমূর্ত্তির হই পাশে আর হুইটি রমণী স্থীরূপে দণ্ডায়-মানা। এই রমণীটিই ফরাসী দেশের সাধারণ তন্ত্রের প্রতিমূর্ত্তি। আর তাঁহার পার্শবিত রমণীদ্বরের মধ্যে একটি "গ্রায়বিচার" ও অপরটি "দয়ার" প্রতিমৃর্ত্তি। সম্মুখে তৃইটি মাংসপেশী-বহুল নগ্নদেহ বীরপুরুষ স্ম্বস্থিত 🕈 একটির হাতে যুদ্ধের অস্ত্র শস্ত্র; অপরটির হাতে একখণ্ড কাগজ। অর্থাৎ ন্তার, সাম্য, দরা দাক্ষিণ্য, শোর্যা বীর্ঘা ও স্থানিয়ম স্থপাসনের দারা পরিবৃত হইয়া ফরাসী দেশের সাধারণ তন্ত্রের রাজালন্দ্রী সেই মন্দিরে বিরাজ করিতেছেন। তাঁহারই পদতল হইতে দেই বারিধারা সেই স্রোতের উৎস ছুটিয়াছে। ফরাসী জাতি সাধারণ তন্ত্রের বড়ই পক্ষপাতী। সাধারণ তত্ত্বৈর সমগ্র. স্থব্যবস্থা একত্তে এইরূপে দেখাইয়া জাঁহারা সেই মূর্ত্তিকে দেবীর মত পূজা করেন।

এসব দেশে সরচাচর বাড়ীর সামনের দরজা বন্ধ থাকে। দরজা ঠেলিবামা<u>ত্রই</u> একটি রমণী আসিয়া দার খুলিয়া দিল। আমরা মিউজিয়মটির ভিতর চুকিয়া নিমতলায় পৌছিলাম।

নিমতলাট কেবল প্রস্তর ও ধাতুনির্মিত স্থলর স্থলর প্রতিমৃর্তিপূর্ণ। তেমন স্থলর ছবি তার পূর্বে আর কোথাও কথনও দেখি নাই। সবগুলিই এত স্থলর বেকোনটি ছাড়িয়া কোনটি দেখিব তা স্থির করা বায় না। ছাধিকাংশই নগ্ন স্ত্রীমৃত্তি। ইতালীয় ওও ফরাসী দেশের ভান্ধর বিভার ইহাপ্রধান অঙ্গ।

দারদেশের প্রথম মৃর্ভিটি রাণী ক্লিও"পেট্রা"র। সর্পাঘাতে জর্জ্জরিত হইয়া
তাঁহার কোমল খামতমু শিথিল হইয়া
ভূতলে পড়িরাছে। তাঁহার হাতে স্বর্ণবলয়
গাছটিও ঠিক সাপের মত জ্বড়ান। আর
ভাবমাখা চেশ্ব ছটিও অলম হইয়া পড়িরাছে।
আত্মঘাতিনী রাণীর চারিদিকে স্বধীরা
শোকময়া।

ঠিক পাশেই কাঁটাগাছের সুকুট পরা এক
মহাপুরুবের জ্যোতির্মার মৃত্তক শক্তিহীন হইরা
নত হইরা পড়িরাছে। একটি স্ত্রীরূপী স্বর্গীর
দৃত আসিরা স্ত্রীস্থলভ একান্ত সহামভূতিতে
নতজাম হইরা তাঁহার শিথিল মাথাটি তুলিয়া
ধরিতেছিলেন। তলার লেখা—

"Jeasus from the cross"

় অর্থাৎ কুশবিদ্ধ হইবার পর যিণ্ড গ্রীষ্টের অবর্ম্থা।

ইহার 'পাশে এক বিষম মহামারীর ছবি।
৭৩৫ ক্রালে মার্সেল সহরে যে গ্লেগ হর এ
তাহারই হুদর বিদারক দৃশ্র। অসংখ্য লোক
নানাপ্রকার রোগযন্ত্রণার , মুখভঙ্গী-অবস্থার
মৃত, আর তাহাদের আন্মীরগণ চতুর্দিকে
আর্ত্রনাদ-প্রারণ।

পাশের ছবিথানি আবার নগ্ন রম্ণী-মূর্ত্তি। পরে পরে মারও অনেকগুলি ঐরূপ মূর্ত্তি। সবগুলিই স্থান ছবি।

একথানি "ডেফনীর" ছবি। আপেলোর সঙ্গে বনমধ্যে তাঁর জীপনে বে সকল রহস্ত ঘটিরাছিল এথানিতে তাহারই একটি ঘটনা অন্ধিত।

ইহার পরে বাইবেলে উক্ত কুমারীগণের• প্রতিক্ষতি। বর্ষের সঙ্গে বাইবেন মনস্থ করিয়াও বাঁহার। প্রদীপে তেল ভরিরা রাথেন নাই
বলিরা যাইতে পারেন নাই—বর চলিরা গেলে
তাঁহার! রোদন করিতেছেন। ভিন্ন ভিন্ন
ভাবে স্ত্রীস্থলভ মধুর ভাব ও একাস্ত মনোদষ্টের
স্পষ্ট রেখা অতি মনোহারী রূপে অন্ধিউ
ইইরাছে।

তাহার পাশে রোমরাজ নীরোর প্রতিমূর্ত্তি। তিনি সভামধ্যেই একাস্ত বশবদের
মত রাণীর আঁচল ধরিয়া বসিয়া আছেন।
এক রুফকার ভূতা রাণীর পাশে ভূতা
পরাইতেছে,—মার তিনি নিজে বিহ্নলভাবে
রাণীর মুখচুদন করিতেছেন।

পাশে একটি ভাঙ্গা মূলির ধণ্ড। গ্রীক দেশস্থ কোনও মন্দিরের অংশবিশেষ হইবে। তারপর একটি না-পাখী না-মান্ত্র— কতকটা আমাদের দেশের গরজাবতার। গেটি যে কি তা বুঝা গেল না।

আর একটি স্থন্দর ছবি দেখিলাম—
তাহাতে মাকুষ ও নিমশ্রেণীর জীবের সহিত
একান্ত সধ্যভাব সন্নিবিষ্ট। এক রমণীর স্থন্দে
বিদারা একটি ছোট পাখী তাহার হাত হইতে
থাত ভক্ষণ করিতেছে। এরপ একটি দৃগ্র আমি পুর্বেই এক জাগানী চিত্রকরের
চিত্রশালার দেখিরাছিলাম। পরস্পরের প্রতি
প্রগাঢ় বিশাস এই চিত্রে অতি স্থন্দররূপে
করিত হইরাছে।

পরবর্ত্তী প্রশন্ধচিত্রটিও অভি স্থানর ।

• একটি পুরুষ একটি রমণীকে অভি
যদ্ধে তার নিজের বাঁশিটি বাজাইতে শিখাইতেছেন। হুই দিকে ছুইটি হাত দিয়া তাঁহার
দেহ বেষ্টন করিয়া যদ্ধটি রমণীর অখনৌষ্ঠে
তিনি নিজেই ধরিয়া আছেন। রমণী ফুৎকার

দিতেছেন—তিনি পরদা টিপিয়া নানারপ মধুর স্থা বাহির করিতেছেন। যেন ছই জনের অন্তরের সঙ্গাত তাহাতে একত্রে ধ্বনিত.হইরা উঠিতেছে।

পূর্বেই বলিয়াছি ফ্রাসী দেশে ও ইতালীয়
চিত্রে নয় রমণীমৃর্তির বড়ই আদর। কিন্ত
মৃর্তিসম্বন্ধে একথা বেমন থাটে চিত্র সম্বন্ধে তেমন
নহে। ইহার বোধহর একটি কারণ এই যে—
চিত্রে আনগালের ছবি হইতেও আনল জিনিবটির
গৃঢ় ভাব প্রকটিত করা যায়—মৃর্তিতে সেটি
তত সম্ভবপর নহে। তাই ইহাতে নয় দেহের
সনাতন অন্তনিহিত সৌন্দর্য একেবারে খুলিয়া
দিতে হয়। তবে মৃর্তিতে বা চিত্রে যে নয়ভাব
তাহা ধারা হৃদয়ে কোন মালিয় স্পূর্ণ করে না।

একথানি চিত্রে স্বর্গ হইতে বিতাজিত সম্মতান, অতপ নরকে পড়িয়া উর্দ্ধৃষ্টিতে দ্রস্থ স্বর্গের আলোকের দিকে চাহিয়া—দীর্ঘনিখাস ফেলিয়া বলিতেছে—

"Farewell Bright region!"
হৈ উজ্জন স্থান ভোমার নিকট হইতে চির-বিদার।

ইহার পাশে এপলো অতি কাতরভাবে চোথের জল মুছিতেছেন। স্থ্যদেবের আবার কিনের অভাব —তিনি বে কাঁদিতেছেন কেন কেহ কি তাহা বুঝিতে পারেন ?

তার পাশের ছবিটি একটি ভিক্স্কের।
লোকটি অনাহারে হুংপে কটে অকালে বুড়া হইরা
গিরাছে। তাহার কটিদেশ ভগ্ন, হাতের শিরা
সকল বহিদ্ধৃত, মাংস লোল, চক্ষু নত। শরীর
মনের তেজ নই হইলে সকলেরই এইরূপ ভাব
হইরা থাকে। যেন নিজের কাছেই নিজে হীন
আর সকল বিষয়েই সকলের কাছে ভরের

ভাব। ষধনি আমি কোনও লোকের এক্পপ অবস্থা দেখি তথনই আমার চাকাগুরার কথা মনে আসে,—গুদ্ধ ফুলের কথা মনে হয়। যথন ভাগ্যচক্রের পরিবর্ত্তনে অবস্থা হঠাৎ নামে তথন সেজনকে যেন আর চেনা যায় না। রোগশ্যায় এই অবস্থা আমি প্রতিনিয়তই দেখিতে পাই।

একখানি ছবিতে একটি বিষম শোকবার্তা অন্ধিত। বোধহর এথানি কোনও ঐতিহাসিক विब इहेरद । কোনও হুর্ঘটনায় রাজবাটীর অনেকেই মৃত। তন্মধ্যে অন্তেষ্ট্যিক্রিয়ার আরোজন হই-রাজারাণীর য়াছে। ছটি দেহ • আলিগঁনে বাঁধা; ছোট থোকাটি তাঁহাদের দেহের উপর রক্ষিত— আর চতুর্দিকে চুল ছিঁড়িয়া মাথা কুটিয়া প্রজারা পরিতাপ করিতেছে। এটি বোধহয় আসিয়াভূমির কোনও চিত্র হইবে। এত শোকের বাহুল্য ত শীতপ্রধান (मथा यात्र ना।

তার পরের ছবিখানি ইতালী দেশের চিত্র।

যাকে মধ্যযুগের ইতালির পেণ্টিং বলে; সেগুলি

অধিকাংশ ধর্মসম্বন্ধীর। তার মধ্যে পুষ্টের জন্ম

বৃত্তান্ত একটি প্রধান। Madona অর্থাৎ

যিশুমাতা বা মাভূকোড়ে যিশুমুর্ত্তি কতভাবেই

বে অন্ধিত তার ইয়ন্তা নাই। বান্তবিক মানুম্বর

এমন পূজা করিবার সামগ্রী আর ত কিছুই

নাই। সকল দেশেই এই মাতৃকল্পনা সকলকে

স্বভাবত মুগ্ধ করে। তাই এ মুর্তিটির নানা

দেশে নানা ভাবে এত আদর। এক এক

থানির দাম এক মিলিয়ন ফ্রান্ধ।

তার পাশে আরও অনেকগুলি এই শ্রেণীর চিত্র দেখিলাম। একটি চিত্রে"সেণ্ট দিবাষ্টাইন" নামক জনৈক খুষ্ট-ভজের উপর লোকের অমানুষিক অত্যাচার অঙ্কিত। এই প্রকারে লোকের
দয়া উৎপাদন করা আজকালকার কলাবিছার
অন্থমোদিত নহে। যেমন অতি চীৎকার গানে,
অতিশয় অলঙ্কার সাহিত্যে নিষিদ্ধ তেমনি
চিত্রেও অতি অঙ্কন বিধি নিষিদ্ধ। যথার্থ
কলাবিছার মনের উপর ক্ষমতা বিস্তার
সম্পূর্ণ অলক্ষিতে হওয়া চাই।

'b' .

তার পরের ছবিথানি একটি সন্মাসীর ছবি। নত জাম জোড়হাত হইগ কুমারী মেরীর প্রতিমার তলায় বসিয়া তিনি উপাস্না করিতে-ছেন। এগুলি ঠিক আমাদের প্রতিমা পূজারই মত। ধর্মের সকল হাশ্ভাবই প্রাচ্য স্থানসমূহ হুইতে প্রতীচ্য দেশে অমুকরণ করা হইয়াছে।

একথানি ছবিতে একটি বৃদ্ধা রমণী তাঁর ছোট নাতিটিকে প্রার্থনা করিতে শিখাইতে-ছেন। শিশু তাঁহাকে কিরূপ স্থানর অমুকরণ করিতেছে। এই আদি শিক্ষার জ্বোরেই ভাল্মন্দ সমস্ত বাল্যসংস্থার আমাদের মনে এমন প্রবলভাবে রাজত্ব করে।

পাশে অনেকগুলি ছবি ভাঙ্গা ও অঙ্গহীন : যে অংশগুলি ভাল আছে সেগুলি অতি স্থন্ধ আৰু যে গুলি নাই দেগুলি কল্পনায় আৰও স্থন্ধ !

পাশে প্রাচ্য দেশের একটি রাজপুত্রের প্রতিমূর্ত্তি। রাজকুমারের দেহ নানা ভূষণে ভূষিত। মাথার জড়িবুনা ঝকমকে তাজের উপর উঠপক্ষীর পালক লাগান। গলায় গজ মুক্তার মালা। যত রমণীদের দেখিলাম জনতা সেই ছবিটির কাছে।

একখানি ছবিতে এক রমণী স্নানাস্তে দর্পণে আপাদ মস্তক নিজের ছায়া দেখিয়া রূপে এমন মুগ্ধ হইয়া পাড়য়াছেন বে আপনারই ছায়াকে চুখন করিতেছেন। প্রকৃত ছবি ও ছায়ার ছটি ঠোটের বাবধান অভি স্থানুররূপে অভিত।

ইহা ছাড়া কতকগুলি অতি স্থলর স্থলর প্রাক্তিক চিত্রও দেখিলাম। একস্থানে উচ্চ নিম জমীর উপর একটি বায়্যন্ত্র (wind mill) অঙ্কিত। সে চিত্রটি এত স্থলর এত স্থাভা-বিক যে দেখিলে ছবি বলিয়া বুঝাই যায় না।

আর একটি কুয়াশার মাঝে পুর্য্যোদয়।
সেটির দিকে ক্ষাণিকক্ষণ তাকাইয়া থাকিলে
মনে হয় যেন কুয়াশার শৈত্য অবধি অনুভব
করিভেছি।

আর একটি চিত্র একটি পুরাতন ফ্যাদানের রাজহর্গ। ভগ্নচূড় ভীষণ প্রস্তরহর্নের স্থানে স্থানে এখন গাছ উঠিয়াছে।

একটি ছবি-দেখিয়া কিন্তু অবাক হইলাম।
এটি ঠিক আমাদের দেশের মৃত্যুকালের
অন্তর্জ্জলির দৃষ্ঠা। তথন আমাদের দেশের
মত সে দেশে রোগীকে অন্তিমকালে বাড়ী
'হইতে বাহিরে লইয়া যাওয়া হইত। সেই
আসম্নকালের বিষয় দেহকে টানা হেঁচড়া
করিয়া হাঁটু গাড়িয়া বসাইয়া উপাসনা কয়ান
হইত। হায়! ধর্মের নামে সংসারে কতই
অপকর্ম্ম সংঘটিত হয়।

এই ঘটনাটি দেখিরা আমার মন বেমন অপ্রদর হইরা গেল, আদিবার পথে আর এক স্থানে একটি ভাঙ্গা মূর্ত্তি দেখিরা তেমনি কিন্তু প্রদর হইরা উঠিল। সেটি "Venus of Milo" অর্থাৎ মাইলো নামক আদিরা মাইনরের একস্থানে প্রাপ্ত স্বচনা কোথাও নাই। এমন স্কন্ধর প্রীমূর্ত্তি রচনা কোথাও নাই।

মৃর্ত্তিটির থানিক থানিক অংশ ভালা; বাকিটুকু এত অক্ষর যে, সকল দেশে সকল শিক। প্রদর্শনীতে, এই মুর্ত্তির ছাঁচে মৃর্ত্তি গড়া আছে। কি ভাস্কর কি চিত্রকর কি কবি কি বা গায়ক এই মূর্ত্তির অন্তকরণে স্ত্রীমূর্তির স্বর্গীয় সৌষ্ঠব কল্পনা করেন।

बैहेक्याधव महिक।

ठश्रन ।

রমণীর রাজনৈতিক অধিকার।—ইংলভের ইতিহাস খুলিলে দেবিতে পাই সেদেশের পুরবজাতি রাজনৈতিক অধিকার প্রাপ্তির জক্ত কায়মনোবাক্যে রাজশক্তির সহিত অবিরাম যুদ্ধ করিতেছে। অধ্যবসার ও একাগ্রচিন্তভার বলে তাহারা তিল তিল পরিমাণে রাজশক্তি হরণ করিয়া প্রজাশক্তির পৃষ্টিসাধন করিতেছে। রাষ্ট্রীয়-অধিকার লাভের জক্ত ইংরাজ সর্ব্বর্থ সমর্পণে প্রস্তুত, সকল প্রকার নির্বাহন সহ্ করিতে প্রস্তুত, এমন কি প্রফুল্ল চিত্তে প্রাণ দান করিতে পর্যান্ত প্রস্তুত। ইংলভের ইতিহাসের ইংাই প্রের্থির প্রশ্নিকা।

কিছুকাল হইল ইংলভের রমনীগণও রাপ্টায় অধিকার লাভের জন্ত প্রাণপণ সংগ্রাম করিতেছেন। তাঁহারা এখনও জন্নলাতে সমর্থ না হইলেও, তাঁহাদের দৃঢ়-প্রতিজ্ঞা, একার্যাচিত্তা, অধ্যবসায় ও আত্মোৎসর্গ দেখিলে চমৎকৃত হইতে হয়। Modern Review নামক পত্রিকার এই আন্দোলনের একটি সুন্দর ইতিহাস : অকাশিত হইয়াছে। আমরা তাহার সারাংশ উদ্ধৃত করিলান।

১৮৬१ সালে রমণীগণের রাষ্ট্রীয় অধিকার লাভের আন্দোলনের প্রথম সৃষ্টি হর। ১৮৩২ সালের পূর্বেইংলণ্ডের নরনারী সকলেই সমভাবে রাষ্ট্রীয় ব্যাপারে ভোট দিতে পারিতেন। কিন্তু ঐ বৎসর হইতে রমণীগণ উক্ত অধিকারে বঞ্চিত হন। ১৮৬৭ সালে অন ইুষার্ট মিল রমণীগণকে ভোটের অধিকার দান করিবার অন্ত পালামেন্টে এক প্রস্তাব করেন। কিন্তু তিনি কৃতকার্য্য হন নাই। ফলে এই অধিকার

প্রাপ্তির কল্প রমণীসমালে এক মহা আন্দোলন উপছিত হইল। চতুদ্দিকে সহস্র সহল্র নারীসমিতি গঠিত হইল এবং ১৮৭০ সালে একলক্ষ চৌত্রেশ হাজার নারীর সাক্ষরিত এক আবেদন পত্র প্রচারিত হইল। বাইট সাহেব পালামেটে এই বিষয়-লইয়া পুনরায় প্রস্তাব করেন। এবার সম্ভবতঃ পালামেট ইহার অনুযোদন করিতেন, কিন্ত ম্যাড্ ইান সাহেবের চেষ্টায় তাহা বার্থ হইল। ১৮৬৭ হইতে ১৮৮৪ সালের মধ্যে সাত্রবার পালামেটে এ বিষয়ে প্রস্তাব উপিত করা হইরাছে, এবং সাত বারই তাহা বার্থ হইলছে।

১৮৮৫ সাল হইতে ১৯০৮ সাল পর্যান্ত কেবল এক বংসর ভিন্ন প্রতি বংসরই পার্লামেণ্টে এ বিবল্প প্রভাব করা হইয়াছে, এবং প্রতি বংসরই সভাগণ একটা না একটা বাধা ঘারা তাহা ব্যর্থ করিয়াছেন।

কিন্ত এত ব্যর্পতা সত্ত্বেও ইংলণ্ডের রমণীরণ অপূর্বে অধ্যবসায় ও আত্মোৎসর্গের সহিত এই অধিকার লাভের ঐক্য সংগ্রাম করিতেছেন। এই কয়বৎসরের মধ্যে উহারা পাঁচ সহস্রের অধিক আবেদন প্রেরণ করিয়াছেন। উহাদের অক্সান্ত চেষ্টা ও অধ্যবসায়ের ফলে উহারা পালামেন্টের ৬৭০ জন সভ্যের মধ্যে ৪২০ জনকে স্বণক্ষ সমর্পনে স্বীকৃত করিলেও কিন্ত রাজমন্ত্রীগণ কিছুতেই তাহাদের কথায় কর্ণপাত করিতে স্বীকৃত হনু নাই। অবশেষে অস্ত কোন উপায় না দেখিয়া রম্পীগণ প্রধান মন্ত্রীর সহিত সাক্ষাৎ করিবার মানস করেন। ভাহাতেও ছই একবার বাবা পাইরা

' অবশেষে তাঁহারা সাক্ষাৎ করিবার অসুষ্ঠি পাইলেন। ১৫ লক্ষ নারীর প্রতিনিধিকক্ষপ চারি শত রমণী যাইয়। প্রধান মন্ত্রীর সহিত সাক্ষাৎ করিলেন। কিন্তু এ সাক্ষাতে সহাত্ত্তিপূৰ্ণ আখাস ভিন্ন আর কিছুই लाख इरेल ना। जिनि बनिएलन जारात महत्यागीयन সকলে এ কর্ম্মে সম্মত নহে। ইহা শুনিরা প্রতিনিধি-গণ বর্জমান প্রধান মন্ত্রীর সহিত সাক্ষাৎ করিতে शिलन। इरेनात्र जिनि माकार् विश्वीकात्र करतन। তৃতীয়বার পুলিদ আসিরা চারিজন দেত্রীকে গ্রেপ্তার করে। একজনের ছই মাস ও তিনজনের নেড্মাস করিয়া কারাদণ্ড হইল। সেইদিন ম্যাঞ্চের নগরেও जिन सन तमनीत कातान्छ इत। এই সকল तमनीत्रन মুজিলাভ কবিয়া সহস্ৰ সহস্ৰ সভাৱ লক্ষ লক্ষ নারীর নিকট তাঁহাদের উদ্দেশ্র ও কর্তব্য সম্বন্ধে বস্তৃতা क्तिएं नामिलन। अहे मरनत्र निजीभागत मर्या অনেকেই হুন্দর ও স্থমিষ্ট বক্তু তাদানে সমর্থ।

রাজমন্ত্রীগণের নিকট হইতে রাষ্ট্রীয় অধিকার আদায় कविरात कछ এই দলের রমণীগণ প্রায়ই পার্লামেণ্ট व्यवद्रांथ कद्भन এवः भूनिम व्यामिया निर्भव्याद প্রহার করিয়া ভাঁহাদিগকে রাজ্পপ হইতে দুর করিয়া দের, এবং নেত্রীগণকে গ্রেপ্তার করিয়া কারাগারে নিক্ষেপ করে। কিন্তু কর্জব্যের অন্থরোধে কারাগারে विशेष के विश्व विश्व विश्व विश्व कि वि অৰ্ণত না দিয়া তাঁহারা সহাত্যমূবে কারাগারে গমন করেন। এই আন্দোলনের বিরাটভত্ত বুঝাইবার वन मां अहिरादि वजी प्रकारन अनवार्षे इरन स अकि বিরাট সভার অধিবেশন হয় তাহাতে দশ সহত্রের ' অধিক রমণী সমবেত হইয়াছিলেন। তাঁহাদের মধ্যে व्यत्तरकरे निक्रिका, डेक्क्शनहां ७ ख्रेगाविका नाती। কিন্তু রাজপক্ষের হইয়া মাড্টোন সাহেব বলেন যে, নিজেদের দলের লোক শইয়া হলের সধ্যে সভা করা সহজ, প্রকাশ্তহলে পুরুবের ভার সাধারণের সমুবে সভা করিলে তবে বুঝা যায় দেশের লেংকের এ আন্দোলনে সহামুভূতি 'আছে কি না। তৎক্ষণাৎ ইংলতের সামাজিক ও রাজনৈতিক নারীসমিতি লগুনের সর্বাপেকা প্রকাশ্ত হল হাইড্ পার্কে এক

বিরাট সভার আরোজন করিলেন। সভারত ৪০টি বাতে বাজিতে লাগিল এবং সাভ শ্পতাকা আকাশে উপিত হইরা নারীর অধিকা বেষণা করিতে লাগিল। সভারকে চরিশটি বজ্তামন নির্মিত হইল এবং প্রায় শতাধিক বজা বজ্তুত করিতে লাগিলেন। সমগ্র দেশ হইতে সাতখানি বিশেষ টেনে করিয়া প্রতিমিধিগণ আসিয়া লওননগরে উপস্থিত হইলেন। সভায় প্রোত্সংখ্যা প্রায়, আড়াই লক্ষ লোক হইয়াছিল। এরপ বিরাট সভা ইংলতে আল পর্যান্ত কথনও হর নাই। বোধ হর পৃথিবীর ইতিহাসে এরপ সভা এই প্রথম। কিন্ত ইহাতেও প্রধান মন্ত্রীর প্রতিজ্ঞা টলিল না। তথাপি রম্পীপণ অকুর চিত্তে ও অমিততেলে তাহাদের এই জ্ঞায় মুদ্ধ আলিও সমভাবেই চালাইতেছেন।

0-)

পাশ্চাত্য-নারীর ্উপজীবিকা।—এ বাসের Modern Review পত্রিকার উক্ত বিষয়ের একটা ফুলর বিবরণ বাহির হইয়াছে। আমাদের দেশের রমণীগণের ছুরদৃষ্ট সম্বন্ধে ধাঁহারা আক্ষেপ ও অভিযোগ করেন, তাঁহাদের নিজেদের দেশের রমণীগণের অবস্থা কিরূপ তাহা কানিবার অক্ত আমাদের একটা আগ্রহ হওয়া স্বাভাবিক। আথাদের 'দেশের নীচলাতীর রমণীগণের ক্যার ইয়ুরোপেরও অনেক ছলে রমণীগণ কৃষিকার্য্য, পশুপালন, ক্রলার খনির মজুরি, এবং স্তর্থের, কর্মকার, রাজমজুর ও আবর্জনাপরিকারকের কর্ম্ম করে।

ইংলণ্ডের পশ্চিমঞ্জদেশে নারীগণ অনেকে কুযিকর্ম করে। ফিন্ল্যাও দেশে কুষিকর্ম মাত্রেই নারীগণ করিয়া থাকে। ত্রমোদশ বৎসর বরস হইলেই সে দেশের বালিকা একজন স্থানক কৃষিমজুর হইতে পারে। এই মজুরদের প্রতিদিন ৮ ঘণ্টা করিয়া ক্ষেত্রকর্ম করিতে হয়। আলুর ফসল হইলে ফিন্ল্যাঙের বিদ্যালরে বালিকা পাওয়া ছুঙ্গর হইয়া উঠে। সকলেই ক্ষেত্রে মজুরি করিতে যায়। এইয়প সহস্র সহস্র এক একজন স্ত্রীলোকর বা পুরুষ সন্দারের জাগীকে কর্ম্ম করে। ত্রীলোকের অপেকা পুরুষ সন্দারের ভাগটাই অনিক। এই

সকল স্থারের আ্ফ্রামুসারে বালিকাগণ প্রাণহীন ধন্ত্রের স্থার প্রম করে। ফলে দিন দিন তাহাদিগের দৈতিক ও দৈতিক অবনতি হয়।

আর্থানীতে রমণীগণ কৃষিকার্য ভিন্ন নগরের আবর্জনা পরিষ্কার এবং মৃটে মজুরের কাজ করে। কুলির কাজ করে। কুলির কাজ করে। কলাতে রমণীগণ নৌকার ওণ টানে। বেলজিয়মের রমণীগণের অবহা সর্কা-শেকী হীন। বেলজিয়ম দেশের অর্জেক কর্ম তথাকার জীলোকেরাই করিয়া গাকে। দশসহত্র জীলোক খনিতে কুলির কর্ম করিয়া জীবিকা অর্জন করে। এই সকল জীলোক অনিক্তি, হীন ও প্রায়ই অত্যন্ত নাভাল হয়। বেলজিয়মের কোন পুরুষের

পক্ষে মুদির বা কোন ওক জব্যের ব্যবসা করা অন্তান্ত কাপুর-বোচিত ও লজ্জাকর। এই প্রকৃতির ছোট বড় সকল কর্মাই স্ত্রীলোকেরা করিয়া থাকে।

প্রজার শিক্ষার রাজার ব্যয়—১৯০৮ সালের গবর্মেণ্টের আর বার আলোচনাকালে বড়লাটের ব্যবস্থাপদ সভার শ্রীযুক্ত গোধলে ভারত গভরেণ্টির প্রত্যেক প্রজার প্রতি শিক্ষাব্যয়ের উল্লেখ্টিপলকে ইরুরোপে ভিন্ন ভিন্ন দেশের এতংসম্বন্ধীয় যে ব্যয় তালিকা দিরাছিল তাহা নিমে উচ্ত হইল। প্রত্যেক দেশে প্রজার প্রতি প্রমেণ্টির শিক্ষা ব্যর। ক্রান্ম, কর্মানি ৩, ইতালি ১০, অফ্রিরা ১৮০, নেদারলাও ৩৮০, ভারতবর্ষ /১০।

চিত্ৰ-ব্যাখ্যা।

১। হরপার্বজী-সংবাদ। ইহা তরুণ চিত্রকর শ্রীযুক্ত সুরেক্রনাথ গঙ্গোপাধ্যার কর্তৃক অঙ্কিত মুলচিত্রের রঙ্গিন প্রতিলিপি। আমাদের দেশের পুরাণাদিতে কোনো ভবিয়-বিষয় বর্ণনা করিতে হইলে পার্বজীকে দিরা প্রশ্ন করাইয়া শিবকে দিয়া উত্তর দেওরানো একটা রীত্তি পূর্ব্বাপর চলিয়া আদিয়াছে। সেই রীতি অমুসারে বার্ষিক পঞ্জিকার ফলাফল নির্ণম্বের জন্ত

"হরপ্রতি প্রিয়ভাবে কন হৈমবতী—
বংসরের ফলাফল কহ পণ্ডপতি।"
এই বিষয়টি অবলম্বন করিয়া এই চিত্র পরিকলিত হইয়াছে। পার্বাতী প্রশ্ন করিয়াছেন,
শিব উত্তর দিতেছেন।

এই বিষয়টি ভারি কবিশ্বময়। ভবিশ্বৎ
জানিবার জন্ত শক্তি মঙ্গলের নিকট জ্ঞানপ্রার্থনা ক্রেরিডেছেন। আমাদের দেশের
নিজ্
নঙ্গলের অমুবর্তিনী সহচরী, ভাহা কথনাই উচ্চ্ গুল নহে। আমাদের মঙ্গল—ত্যাগে

স্মহান, জ্ঞানে গরীয়ান, প্রেমে পরিপূর্ণ।
শক্তির হন্তে লীলা কমল তাঁহার নির্মাণ পবিত্রতার পরিচর দিতেছে, শক্তিও আপনাকে . °
ত্যাগের দারা মহিমায়িতা বিশ্ববৃন্দিতা করিয়াছে। শিবশক্তির বাসভূমি অত্যুন্নত
কৈলাস্শিধর, তাহা অমল ধবল, তাহা আকাশচ্দী—তাহা অকল্ম উন্নতির উপর
প্রতিষ্ঠিত, তাহা মহেশ্রের ললাটশোভী
চক্তকল্যুতিতে নিত্য উন্তাসিত।

এই চিত্রথানি ভারতীয় চিত্রকলা পছতি অনুসারে অভিত। মহাদেবের খ্যানভিমিড অথচ জ্ঞানগরিষ্ঠভাব এবং পার্ব্বতীর প্রবণ্ডনারতা এবং উভরের মুথেই দেবভাব শিরী চম্ৎকার প্রকাশ করিয়াছেন। পার্ব্বতীর স্বর বেব তাঁহার ভ্যাগ ও আত্মন্থ-স্থাশূভভা জ্ঞাপন কারতেছে। ভূষণ ও পরিচ্ছদ প্রাচীন অজ্ঞাগুহালিখিত বেশভূষার মত করিবার চেষ্টা ইইয়াছে। হরপার্ব্বতীর মন্তকোপরি চক্রকলা ও পশ্চাতে কৈলাদের চূড়া স্ক্রমর হইয়াছে।

ইহা বলিতেছি-

বংসরের আরম্ভস্চনার ভারতীর এই

চিত্রধানি প্রকাশ করা উপযুক্ত হইরাছে।

মহেশ্বর করুন আমাদের শক্তি এমনি শিবসমিলিতা হউক, বংসর শুভফল দান করুক।

২। কচ ও দেববানী। শ্রীযুক্ত অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশরের ফ্রেকো চিত্রের প্রতিলিপি।

এই চিত্রের উপাধ্যান অনেকেই জানেন,
শ্রীযুক্ত রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশরের "বিদার
অভিশাপ" নামক চমংকার কাব্যকথাটি এই
উপাধ্যান লইরাই বিরচিত, তথাপিও সংক্ষেপে

দেবাস্থরে বহুকাল হইতে যুদ্ধ চলিতেছিল, দেবতার সহিত যুদ্ধে হত অস্তর্গণকে অস্তর-গণের গুরু গুক্রাচার্য্য মৃতসঞ্জীবনী মন্ত্র দারা পুনর্জীবিত করিয়া দিতেন। দেবগণ তথনো অমর হন নাই, সমুদ্র মন্থন করিয়া তথনো অমৃত পাওয়া যায় নাই, এবং স্থরগুরু বৃহস্পতি মৃতসঞ্জীবনী বিষ্যা জানিতেন না, স্থতরাঃ দেবতার বলক্ষ্ম হইতে লাগিল। সভা করিয়া রেজল্যুশন পাশ করিলেন যে অস্তরপুরে গিয়া শুক্রাচার্য্যের নিকট হইতে মুতসঞ্জীবনী বিস্থা শিখিয়া আসা হউক। কিন্তু শত্তপুরীতে সাহস করিয়া কে যাইবে, এবং अक्ताहार्याहे वा भंकरक व विश्वा निशहरवन কেন ? বৃহস্পতির পুত্র কচ এই বিভা শিকা করিয়া আসিতে স্বীকার করিলেন। শক্তপুরীতে আসিয়া নানাবিধ বিপদ উত্তীর্ণ হইয়া সহস্র বৎসরের কঠোর সাধনার সেই বিদ্যা আত্মন্ত করিলেন। এই গুরুগুরপ্রবাস-কালে শুক্রাচার্য্যছহিতা দেবযানী কচের প্রতি 'আসক্ত হইয়া পড়িয়াছিলেন। কচ বিভালাভ कतिया विषाय गरेएं ठाहित्य (प्रवसनी नाना-

বিধ প্রলোভন দেখাইয়া কচকে, স্বর্গে ফিরিভে নিষেধ করিলেন। কচ সকল স্বার্থ ত্যাগ করিয়া স্বজাতির কেল্যাণ সাধনের প্রতিজ্ঞা পালন করিতে ক্বতসঙ্কর ছিলেন, তিনি দেবধানীর সকল প্রলোভন প্রত্যাখ্যান করিন লেন। তথন কুদ্ধা দেবধানী কচকে বলিলেন—

"তোমাপরে
এই মোর অভিশাপ—বে বিভার ভরে
মোরে কর অবহেলা, সে বিভা তোমার
সম্পূর্ণ হবে না বশ; তুমি ওধু তার
ভারবাহী হরে রবে, করিবে না ভোগ,
শিখাইতে পারিবে না করিতে প্ররোগ !"

কচ দেবযানীর এই বিদার দৃষ্ঠ চিত্রে অন্ধিত হইরাছে। তপাক্ষণ স্বার্থত্যাগী প্রতিজ্ঞাপালনপরারণ কচ অভিমানিনী প্রেমা-র্থিনী দেবযানীকে সান্থনা দিয়া, সকল কথা ব্যাইয়া বিদার চাহিতেছেন। যিনি রবিবাবর "বিদার অভিশাপ" পড়িরাছেন তিনি এই চিত্রের মাধুর্যা দেখিরা মুগ্ধ হইবেন। এই চিত্রথানি অবনীক্রবাব্র একথানি শ্রেষ্ঠ স্থলর চিত্র। কয়েকটি প্রস্তর্থশু ও তক্ষগুল্ল হারা চিত্রের perspective বড় চমৎকার প্রাকৃশ পাইরাছে।

৩। কবিবর নবীনচন্দ্র সেন মৃত্যুর প্রাঞ্চালে বলিরাছিলেন "আব্দু আমার বিজয়া, আমার কুল দিরা সাবাইরা দেও।" এই ইচ্ছা অমুসারে তাঁহাকে ফুল দিরা সাবাইরা কবির মৃত্যুটকে ফুলর মধুর করিরা দেওরা হইরাছিল। ভক্ত কবির বিজয়া কবিত্মরই হইরাছে। নামাবলীর পরিচ্ছদ ও পুজাসজ্জা তাঁহার অস্তরের ভক্তি ও কবিত্ব প্রকাশ করিরাছে।

শ্রীচারচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার।

ক্লিকাতা, ২০ কৰ্ণভন্নালিস হ্লাট, কান্তিক প্ৰেসে শীহরিচরণ সারা খারা সুব্রিত ও ৪৪, ওন্ড খালিগঞ্জ হোভ হইতে শীসভাপচকু সুখোপাখ্যার খারা প্রকাশিত।



শুকশারিকার কলহ

শাসুক্ত অবনাক্তনাথ ঠাকুর কর্ত্তক অক্সিত মল চিত্র হ'বল

मन्त रापनाहे नामस्त्र शहना। यक्न প্ৰাত করাই বাছবের আস্থ উল্লেখ্য। নানা चार्चाद, माना चारव, नामावन, माना ८२८न, नामा कारण,— त्यान ना त्यान और मवरणत সাধনাই বে চিন্নকাল ক'ৰে আস্ফেন তাৰ আৰ ত্ৰ নাই। ভগৰানের ইছো বা স্টের আনন্দ वह मक्तरक, बागून मादब करवान गरक गरक সংস্থাররূপে শাভ কুরেন। এটা বিশেষভাবে মানুবেরই সংকার । মানুব ছাড়া আর কোন জীবের এ সংস্কার নেই। হোট বড়, শিক্ষিত, অশিকিড, সুকল মান্তবের মধ্যেই, এ সংখ্যার, न्।विक পরিষাণে, चङावकरे वर्षमान। এই মলল লংকারই মললপক্তি বা মহুব্যবের গোড়ার কথা বা বীৰ। এই সংস্থারই সাধনা বা চৰ্চাৰ ৰাবা সংখ্যাৰত্বপ ত্যাগ কৰে সঞ্চান শক্তিরূপ ধারণ করে এবং তার কলে মঙ্গল ব্যবহারগত হয়। 'অ'কে রক্ষা করা, পোৰণ क्रम ७ ठानना क्रमारे अत्र ठाठी वा नावना। নিজের ও অক্তের মধ্যন্থিত এই মঙ্গল সংস্থারকে খাবাত বা পীজুড় না করাই এর রক্ষা, निरमत ७ जाउम मधार्यिक धरे मकन-गरकात्रारक **एश क्यारे ध्वत ट्या**नन धनर धने छेलास गकरणक मान त्यांबर्क क्षकाहे तक अस्तिकाल निकान का काबिश

COURS AND FROM IN MANY AND AND

বঙ্গনের প্রকাশ। বঙ্গালের প্রকাশ প্রতাক্ত বাত্র আনন্দিত হওয়া বাবোগ অনুভব করা মঙ্গল সংস্তাৰের স্বভাব বা ধর্ম। এই স্বভাব বা धर्म (परक छडे रश्वारकरे काम्मन वरन। শাশন সভাবে প্ৰতিষ্ঠিত থাকাই সমর্পে রকা মক্ষ সংখ্যারই মহুধ্যের প্রকৃত ৰণৰ্ম ও এই বধৰ্মের সাধনাই মনুষ্যের সভ্য মঙ্গলের সাধনা ব্যতীত সভ্যের ধারণা হয় না; সভ্যের ধারণা ব্যতীত ভগবানকে দেখা যার না। সভ্য বোধের অভাবেই ভগবান অদৃষ্ঠ ; নৰলের সাধনা ত্যাগেই মানুষ ত্রই বা পীজিত। সভাকে বিনি ক্লেনেছেন ভিনিই^{*} ভগবানকে দেখেছেন, মঙ্গলকে যিনি পেৰেছেন ভিনিই ৰাত্ৰকে চিনেছেন। তিনি বানেন, বার নাম মহত ভারই নাম মলন, বার রাম ভগৰান ভাৰই নাম সত্য। ভিনি ভানেন সতা বা ভগৰান বা বিনি আছেন আৰু ইচ্ছা বা निक, धाषरम धारे मलन-मरकातकाल मसूर्या বৰ্ত্তমান থেকে মন্ত্ৰের বা কর্মতের স্ক্তি বা আনন্দৰে বন্ধীয় ভার গর্ডে ধারণ ক'রে রকা করেন ও নেবে নকলশক্তিতে পরিণত হ'বে শৃত্য সকলের বোগদ্ধ প্রমানন थान्य करत अज्ञराक चानिक ७ मञ्चारक क्टार्थ करवन ।

औरहमेंगेज (परी।

পুরাতন ও মৃতন।

वर्ष-८ ।

কর্ম্মন্ত বংগরের শেব রশ্মি-শিথা
অতে গেল ! উর্জে হের কা'র অনামিকাঅঙ্গলি ফিরিল আজি পূর্জাচল পানে !
আজিকার বিলারের রাত্রি অবসানে
আসিবে অভিথি বারে; তা'রি তরে হিরা
আকুল-বিশ্মর-ভরে আছে প্রভীক্ষিরা !
সারা বিশ্বে অশ্রু-বেরা গুরু আন্যোজন
শেব অর্থ্য রিচিবারে ! প্রগো প্রাতন
নিত্য নব নব রূপে ভোমার প্রকাশ !
তবু বিশ্ব মিলনের পূর্ণভার তরে
বিদারের অশ্রু ঢালে ঋতু সম্বংসরে ।
সব শৃক্ত করে' আমি রচি' দিমু স্থান,
ব্যর্থ-আশা জীবনের চর্ম সন্মান !

नववर्ष ।

কল্যাণের শুভ-ম্পূর্ণে হোকু স্থপ্রভাত;
ভগ্ন-দ্বদয়ের বাবে প্ণ্য-রাখ্য-পাত!
দীপ্ত নীলাখনে আজি পূর্ণ মহিমার
প্রাবিয়া নিধিল বিশ্ব কি আনক্ষভার!
সারা বর্ষ খেলিয়াছি স্বপনের খেলা,
বারে চাহি তারে শুধু করি' অবহেলা!
সংশর করিতে দূর জালে পড়ি ধরা,
কছ খরে ছিন্তু বলে অছকারে ভরা।
দূর কর আজি প্রভু মারা কুহেলিকা;
জালাও, জালাও চিত্তে নবদীপ-শিবা!
সব হন্দ ঘূচি' পথ হউক সরল,
মুক্ত হোক্ এ কঠিন স্বার্থের শিকল;
নবপ্রাণ সঞ্চারিত হোকু ধরাতলে,
ঝক্কক্ জমৃত-ধারা তব জলে-স্থল!

শ্ৰীদীনেজনাথ ঠাকুর।

ভিখারী ৷

বে গৃহ ভালিয়া ত্মি দিরাছ আমার,
ভীবনের বিনিমরে কর্ড কি আবার
ফিরারে পাইব, নব বর্ষের মতন ?
চাহিনা নৃতন কিছু সব প্রাতন
দেও দেব, সেই হালি চির সমুজ্জল,
সেই প্রেম আছবীর সক্ষম করোল
অনম্ভ প্রবাহে, স্লিয় পরশহিরোলে
কত যুগ্যুগান্তের জ্বলি উৎস জলে
উঠিত ভরিয়া স্থপ প্লাবন উচ্চ দেস;
ছর্মত্ সঞ্চারিয়া বর্ষে বর্ষে,
ভোরার মহিমা প্রাণে দিত ভাগাইয়া
স্থিমান করি ভোমা, প্রিবারে হিয়া!

পরিপূর্ণ জীবনের সেদিন হেলার
কাড়িরা লবেছ, আজি নাহিক হেথার
অতীতের স্থুণ চিহ্ন, গুরু স্থৃতি তার
বহিরা এমন করি কতদিন আর
রহিব তোমার বিশে তোমারে ভূলিরা;
আপনার শোক হঃথে এমনি ভূবিরা?
অসীম করুণা তব ব্রহ্মাণ্ড ব্যাপিরা
জীবে শান্তি প্ররানিছে বরব আনিরা,
সেই নব-বর্ষে আজ শান্তির ভিগারী
আনিরাহি তব কাছে, শোক ভাগহারী!

विश्वतम्बो (पंरी।

मिनिया।

नामावनीथानि शास्त्र नित्रा सामात्र विनि-শাওড়ী যথন পঞ্চামান করিরা বাড়ী ফিরিতেন তথন বেঁলা ৮টা। আমি পানের বান্ধ লইরা পান সাঞ্চিতাম ৷ ডিনি সঙ্গাললের ঘটটি ও নামাবলীথানি যথান্থানে রাথিয়া একটা বড় শিভবের ঢাকা খুলিরা আমাদের দিতেন। তাঁহার আদেশে পান সাজা রাধিয়া আমাকেও অলবোগ করিতে হইত। "আহা তাড়াতাড়ি করে আস্ছি, আহা তোদের কত কিলে পেয়েছে।" থাবার দিয়া তসর কাপড় চাডিয়া তিনি বাজারের হিসাব পত্র লইতেন ও ভাভাভাডি "ঝোলের আনাঞ" লইরা রারা-ঘরের উঠানে যেণানে বি মাছ কুটিতেছে **নে**থানে গিরা, "ও ঝি ঝোলের মাছটি আগে ধুরে হাও ত ম।" বলিরা ঝিকে ভাড়া দিভেন।

গর্লা বৌএর কাছে তথ মাপিয়া লইয়া তাহার ঘরের কুণল সংবাদ লওয়া হইলে বলিভেন, বাচ্ছাকাচ্ছার হুধটুকু ভাল দিস্ मा- একটু नकान करत जानिन ला।" इत्थत কড়া চড়াইরা দিরা "মাছের ঝোল নামলো গা?" বলিতে না বলিতে স্কুল আহ্নিসের যাত্রীরা "দিদিমা, মা, ভাত," বলিয়া কেহ গামছা লইয়া চৌৰাচ্ছায় ঝাঁপাইয়া পড়িতেন কেহ বা পি ডিতে यित्रां, निनिमात काटक एडन চाहिया नहेवा তেশ মাথিতেন ও গল করিতেন। "এই বে ভাত হয়েছে" "বামন মেয়ে ভাত বাড় মা"—"এই নাও দাদা তেল"—বলিয়া তেলের বাটা দিতেন পরে খোরার খোরায় ছধ জ্ডাইয়া আহারের স্থলে লইরা রাখিতেন।

व्याशायत हैं हि इहेग्राह - अरक अरक मकरन আহার করিতে আদিলেন। কেহ জিজাদা করি-লেন "আৰু গলার ঘাটে কার কার সঙ্গে দেখা হণ"—কেহ বিজ্ঞাস। করিবেন, "আক্ষের খবর কি দিদিমা ?" কেহবা জিজ্ঞাসা করিলেন, "ভাঁড়ারের কিছু আনাতে হবে কি ?" দিদিমা হাসিমাথা মুথে সকলের প্রশ্নের উত্তর দিতে এমনি করিয়া স্থুল আপিনের नां भरनम्। তাড়নার সঙ্গে সঙ্গেই প্রশাস্তভাবে হাসি গলের সহিত "বাবুদের" স্নানাহার সমাধা হইলে দিদিমা সকলের হাতে হাতে পান গিলে সকলে বাহির বাড়া[°] চলিয়া গেলেন। তথন একটু নিশ্চিম্ত হইয়া দিদিমা অবশিষ্ট ছুধ জাল দিতে লাগিলেন। কাহারও খন কাহারও বন্ধা বাটা বাটী রাখা হইল। তুধ জ্বাল দেওয়া লেখ হইলে নিরামিব রারার বক্ষোটী চড়াইয়া তর-কারী কুটিরা চাল ধুইরা নিরামিবের সমস্ত যোগাড় করিতে ব্যস্ত হইলেন। এক একদিন আমি 'ভরকারী কুটিব' বলিয়া ধরিয়া বসিলে 'আছা তুমি এই আৰু পটৰগুৰি ছাড়াও' বলিয়া বঁটা ছাড়িয়া দিতেন। ইতিমধ্যে বাহির বাড়ি হইতে ভৃত্যেরা বারম্বার আসিতেছে ও "বড় বাবুর জামাটা ছেঁড়া আর একটা দিন্,— মেৰবাবু ও কাপড় পরবেন না—ধোরা বার করে দিন,—ছোট বাবুর এ চাপকানের বোডাম নেই সেরে দিতে হবে,—পান কর,—জল দিরে যান;" এই প্ৰকাৰ ৰুত কি ৰাহানা লইয়া निनिमात्क वाख कतिरङ्ख् । निनिमात वित्रिक्ष नारे. बीतकाद नकन বছু বড় পিঁড়ি পাতিয়া একডলার দালানে • বীরতেছেন। তথন তিনি রন্ধনে নিযুক্ত

একর বার, পেঁড়া, ধোরা কাপড় চোপড় किन्न्हें न्थान कत्रिद्दन नां, চাবি বিয়া আমাদের বাহির করিয়া বিতে আদেশ বিতেন। আময়া জাতার উপদেশ মত কাগড চোপড় বাছির করিয়া দিতাম। ভূতাদের সমূধে আমরা বাহিন হইভাব না, ভূত্যেরা বাড়িন ভিতন প্রার আসিত নাং বধন আসিত সাড়া পাইলেই ঘরে ৰুকাইতাম। বোদটা দিরা বতর ভাতরের সমূথে कथरमा कथरमा राहेश कन कि भान विज्ञा আসিতে হইড: কিছ ভূতাদের কিছু দিতে হটলে দাসী ভারা বা ছোট মেরের ভারা পাঠাইভাম। ভূত্যেরা একতনার ভিতর বাড়ীতে আনাগোনা করিত দোত্লার কথাচিং যাইত। আমরা স্থালে আদিরা একডণার ভাঁডারে ঢ়কিতাম--রারা ও ভাঁড়ার বর পাশাপাশি প্রভরাং আমাদের গণ্ডি রারা ও ভাডার ঘরের ভার বাহিরে যাইতে হইলে দাসী • मटशा । हाँकिछ 'मदब मां दोशिक्क्न यां छन्।' সমবের কি বিচিত্র গতি আৰু আমাদেরই বাড়ী একটিও দাসী নাই ভূত্যেরাই সকল কার্য্য নির্মাহ করে। যা হোক বাবুরা কুল আপিদ চলিয়া গেলে আমরা হাঁপ ছাডিয়া গাঁচিভাম।

বাহির বাড়ীতে ভূতোরা "রাম রাজ্ব"
করিত। দাসীরা কাজ সারিয়া তেল মাথিতে
বসিত। বেমন বেমন আহার হইরা বাইত—
অমনি বাসন ধুইরা কেলিতে হইত।' "এঁটো
চণ্ডী" দেবতাটা বড়ই "বিমকারিন্দী"। বাড়ীতে
বে, বেলা ২টা পর্যান্ত "শক্তি" পড়িরা থাকিবে
ভার বো নাই—ভা হলে "এঁটো দেবী" ওরিত'
গভিতে পিরা কুল আশিসের বাজীদের কার্যো
বিমানটাইবে—মুক্তরাং বাসন কোসন পরিফার
না করিলে কার্যান্ত বাকী কেহই অবসর পাইত .

লা। ৰাড়ীর মধ্যে প্রচুর স্থান থাকা সম্বেও গাসীয়া বাসন নাজিতে ও সান করিতে বাহিম বাটীতে বাইড়ে। পে সময়টা ভাহার নানা হাড়াগাণে বাড়ীটা মুখরিড করিয়া ভূমিত।

धनित्क त्यमन ज्ञाह्यत ममृद्ध भीमाह्यत्र বাহিন হইবান নিৰম ছিল না খালীবাও ডেন্সনি বাব্দের সহিত কথাট পর্যন্ত কহিত না : এক হাত ঘোষটার সুথ চাকিরা কাজ ক্ষেত্রিত। বাবদের সন্নিকটে জল কি পানটি পর্যন্ত লইয়া যাওবার তাহাদের অধিকার ছিল না, তাই দিদি-মার অনুপহিতিতে আমরা বৌরেরা বাবুদের সমূধে বাইভাম। সেধানে কোন ভূতা উপ-হিত থাকিলে দে অমনি স্থিয়া যাইছ। ভুত্যের ममुद्ध बावअक रहेरगुष्ठ -(कान द्यो प्राप्ति। पियां प्रामीत्क वन वा शान किहरे क्रि ना। তিনি যে কোন প্রকারে তারা সংগ্রহ করিয়া ণইতেন। তথন আমাদের বাড়ীর অবিবাহিত মেরেরা সবে মাত্র বেথুন কুলে পড়িতে বাইতে আরম্ভ করিয়াছে। ভারারা ৮টার সময়-হয়ত দিদিমা প্রসামান করিয়া আসার প্রকেই ডাল, আনুভাতে, ডিম্নির মাহুভারা, মাধন, কাঁচা হুধ ও মিষ্ট দিয়া সাহার স্থাধা করিয়া কাপড় চোপড় পৰিষা সমৰ মৰ্মাৰ গাড়ীৰ অপেকার বই সেলেট হাতে করিয়া দাঁডাইয়া আছে—তাহারা ঘরের কোন ভাল ভরিতে অবসর পার না

দণ্টা সাড়েদণ্টা বাজিলেই দিছিলা নামানরে আমানের ভাত দেওরাইভেন। নামান্তটা পুর বড় হিল; একদিকে আরিব নামা ও আর এক দিকে নিমামির নামা হইড। এ সকল ছুইরাও যথেট স্থান হিল আমানা সেইখারেই প্রার আহার করিভান। "জান ইংলেনেই প্রার এইকণ , নানা হইত। মৃগ, খাড়ীযক্ত্ব—হর
পোরাক বিরা না হর টক বিরা এ কখনো
নাসকলাইএর ডাল; ইবা ছাড়া বাছের বোল
হানের ডিন নিজ বা ভালা বা ডাল্না, লাউকাক্ড়া বা লাউচিংড়ি, আলু পটলভালা, মাছ
ভালা, মাছের অখল, কখনো কখনো চিংড়ী
নাছ দিরা প্রশাক চচ্চড়ি, কুমড়ো চিংড়ী এই
শব অলল বলল করিয়া হইত। অড্হর,
ছোলা, নটর প্রভৃতি ডাল দিনিমা রাধিয়া
থানিকটা 'ওবেলার জন্ত' রাবিতেন; বাবুদের
গরম করিয়া বেওরা হইত।

शिवमात्र बाह्य थानात्र सञ्च राष्ट्रीत नकरण অতাম আগ্রহ প্রকাশ করিতেন। তাই প্রত্যহুই দিদিমা কিছু কিছু বাঞ্চন স্বতন্ত্র পাধরের পাত্রে চালিয়া রাখিতেন। বিবিমাকে অনেক বাঁধিতে হইত-ৰাডীতে বিধবা এ৪ মন ছিলেন-ছিদ্বিটি সকলের বাঁধিতেন-তাঁহারা বোগাড় দিতেও বড় একটা অবসর পাইতেন না। তাঁহাদের আছ্রিক পুৰা সাহিতে ১১/১২টা বাজিত। তাঁহারা নিজেদের খরের কাজকর্ম, পুত্র পৌত্রাধির পরিচর্ব্যা করিরা স্থান আহ্রিক করিতে বাইতেন। আর সকল সমর তাঁহারা স্বাই কলিকাভার "বাসার" থাকিতেনও না। হৰ্মন বা ছ্মান আছেন-আবার ছেলে গেলেন —সেধানে বা হুমান রহিলেন অ**স্থে**রা আসিলেন **এইরপ চলিত। বধুগ কথনো কথনো দেশে** বা পিত্রাগয়ে ঘাইত—কেবল "বাবুর।" পূজার नमद वा जो पाटन थाकिएन दकान कक मनिवाद দেশে বাইতেন। বাবুদের বা ছরমান মেশে थाकित्वत दक्ष दारम बाहेरछन मा-क्रिय श्रीहि **इत्र विरन्त कड रामक वार्व अवनि माह वर्षा**

विविधा मुठ्कि भृष्ठ्कि श्विष्टिन-शास्त्र दुक्र শজা বোধ করেন ভাই নিজে উপবাচক ছইয়া বাছার ছেলেদের দেশে পাঠাইতেন। অনেক সমর বধুরা পিত্রালয়ে থাকিলেও যদি শশুর শাশুড়ী স্বামাতাকে লইছে লোক না পাঠাই-তেন-ভবে দিদিমা গলা স্বানের ক্ষেত্রভ হয় ত কুটুম ৰাড়ী গিয়া ইঙ্গিভে আমাই শইরা বাইতে উপধেশ দিয়া আসিতেন। বলিতেন আহা এই ওদের আমোদ প্রমো-দের সময়— এর পর বধন সংসার ঘাড়ে পভবে তথন কি আর ধূলো খেলার অবসর পাবে।" কিন্তু শশুর বাড়ী শনিবার গিয়া সোমবার ভোরেই ফিরিতে হইত —অথবা কথনো কথনো রবিশার সকালেই আসিবার আদেশ দেওয়া हरे**७—विस्था आखर ना दिशाहे**ल—क्रविशात्र থাকিতে দেওয়া হইত না। ছেলেদের পরীক্ষার সময় এবিষয়ে কর্ত্তা বড় অধিক কড়াকড় করিতেন-কিন্ত দিদিমা অত ভাল বাসিতেন -না। তিনি বলিতেন "আহা বৌএর মুখখানি मस्या मस्या ना दम्यरण अरमत्र शक्षा खनाव छेरलाह इद्य (वन।" पिपिया द्य बावशा कतिर्देशन ভাহাতে কেই জিলজি করিতেন না, সকল কার্য্য তাঁহার অনুমতি ও উপদেশ শইরাই নিশার হইত। এমন কি প্রত্যেকে প্রত্যহ আপিদ কুল যাত্রার সমীয় "দিদিমা আদি---পিসিমা আসি, ৰেঠাই মা আসি, ইভ্যাদি বলিয়া তবে বাইতেন। দিছিমা হাতের কাব রাখিয়া প্রত্যেকের সমুথে আসিয়া 'এসঃ দ্বাৰা, এস 'বাৰা' বলিয়া গুড কামনা করিভেন।

থাকিলেও কেছ দেশে বাইভেন না—ক্লিছ স্ত্রীটি হিলিমা রাঁথিভেন—আমরা ভাত থাইতান।
ছম দিনের জভ গেলেও বাবুর অমনি মাছ ধরা বাড়ীর অনেক বধু তাহার লাভড়ীর সহিত কথা
বা আর বাওমার লখ, পড়িয়া ঘাইভ। গুনিরা • ইহিত না—কিছ হিনিমার সহিত কথা কহিও।

- 200, 5000

বিষিমা বলিজেন আমাৰ সহিত কথা কহিছে আছে। বৃদ্ধি কোন বগুর কাবে বা কথার কোন क्रिं इरेज-विविधा अक्रू यम श्रीपदा ৰণিভেন "ছি: ও কথা বল্ভে নাই—অথবা एमन कार बाद (कार ना।" मिमियात अहै हुकू क्यांत्र जामना स्वत्रभ भागिङ हरेजाय---অক্ত গৃহিনীদের সারাদিন বকুনির ঝড় বহিলেও সেরপ হইত ना---वत्रः वकुनित्र टहारहे কাঁদিয়া কাটিয়া অন্থির করিয়া তুলিতাম। বেচারা দিদিয়া এমন অবস্থার বড় বিপদে পড়িতেন। গৃহিণীকে বলিতেন " बाহা, ছেলে মামুব বুঝতে পারেনি, আহা আর করবে না।" বধুকে বলিভেন কাদতে নেই—আমরা না শেখালে তোমরা শিথবে কেন দিদি।" আমর। বলিভাম "আপনি বারণ করলেই ত আমরা ত্তনি—তবে উনি অত বকছেন কেন।" ছিদিমা "বুঝাতেন, "আহা ওর শোক তাপেব শরীর" কখুনো বুণিতেন "আহা ও একট্ রাগী মামুষ —সকলের কি সভাব সমান হয়—ভা বলে⁴ বে) মানুথকে কাঁদতে নেই সব সইতে হয়।" আমাদের ভাত খাওরার সমর দিদিমা নানা প্রকার পর করিতেন, যাহার যে ক্রটি সংশোধন করিতেন। যে বধু ধে নিরামিষ তরকারী ভাল-বাসে ভাড়াভাড়ি ভাহাকে সেই তরকারীট রাঁধিয়া দিতে প্রয়াস পাইতেন। খাও—এই वालित (वाल इन' व्हा"। প্ৰত্যেককে দিদিয়া সমস্ভাবে যত করিতেন প্রত্যেককেই মিষ্ট কথায় বশীভূত করিয়াছিলেন।

আনাদের আহার শেব হইলে "বামন নেম্নে" লোকজনদের ভাত দিত—সে আনাদের অলাতি,ভাই বিধিয়ার হাতের ব্যস্ত[া]দি থাইত। কিন্তু সিদ্ধ চাল বাইত বলিয়া সে তাহার ভাত '

निक् चण्य राविष्ठ। विविद्यों व भाक्त शृहिने श আডণ চাল থাইডেন—অন্ত গৃহিনীয়া হালে সুচি ७ जानूनि छाजा बाहेर्टन, क्यि विविध इदं कन ও সম্মেশ ছাড়া অন্ত কোন জিনিস বাইডেন না। বৃদ্ধি কোনদিন সূচি ধাইতে সাধ হইত ভবে ছপুৰ বেশা ভাতের সহিত থাইতেন। আহারাদি শেব হইতে বেলা প্রার ২॥•টা বাজিয়া যাইত। ইতিমধ্যে আমরা পুতুল খেলিরাছি— दिह वा এक चूम चूमाहेबाहि--- **এवर एवं एक्** একজন নজর রাখিরাছি দিদিয়া কথন আহারে বসেন। দিদিমার আহারের সমর প্রার আমি চেলির বা গরদের সাড়ী পরিয়া হধটুকু অলটুকু দিবার জন্ম প্রস্তুত থাকিতাব। আমিই বাড়ীর সর্বা কনিষ্ঠ বধু। স্থতরাং পাকা চুল ভোলার ভার আমার ছিল। আহারাক্তে प्रिविया यथन ছোভলার WINTER পাতিয়া একটু "গড়াইতেন", ভঁখন পাকা চুল তুলিতাম। দিদিমা বলিতেন, আহা নাতলোৱের হাত বে—মাধার হাত দিলেই খুম পায়। বালতে না বলিতেই দিছিলা নিজার কোলে গা ঢালিয়া বিভেন। নাতবোএর হাভের ওবে ए था नीय निजानवें स्टेंट छा किंक नव। ब्रांकि ১১।১२ টाর সমর दिविमा मर्गाळहरू ক্রিতেন: আর ২া০ টার উাছার নিত্রাভঙ্গ হইড। এক ঘুমের পর নিজ্ঞান্তর হইলে ভিনি আর শ্বার থাকিতের না। তপ জপে নিযুক্ত হইতেন। স্বতরাং নিজার বোষ কি। আবেশ ছিল বে নিজাকৰ্ষণ হইলেই বেন আমি উঠিয়া वारे। निविमा विश्वकन- "जाहा अमा (हरेग योश्य त्येणा क्यत्य, ख्या कि हुन कृत्य त्यावशी विद्य वर्ग शंकरक शांद्य ।" अक वन्हेंद्र मध्या विविधान निजालक रहेल ; विविधा अक्षाकी हुव

श्रम कतियाँ विटक्षत बीटक जामाटक बांख्या वेटकन । পৰে চুল বাঁৰিয়া দিয়া কাপড় ছাড়িতে পাঠাইয়া नकरनत्र जनरराजित सारका कतिरहन । अ नकन হইয়া গেলে নিজে কাপড় ছাড়িয়া যানা হাতে করিয়া ৰসিতেন। তথন ভাঁহাকে আমার রামারণ বা মহাভারতের কোন স্থান হইতে পডিয়া পুনাইতে হইত। কখনও বা কোন প্রভিবাসীর বা আত্মীরস্বর্ধনের বাড়ী কথকতা হইতেছে সন্ধান পাইলে তাঁহার দৈনিক নিরমের ব্যতিক্রম ঘটত। নে সময় দিদিমা চুলবাধা প্রাভৃতির ভার অপর কোন গৃহিণীর উপর দিয়া মালা হাতে করিয়া তিনটার পূর্বেই "কথা" গুনিতে বাইতেন। मधात्र मयत्र विविधा मधा वस्त्र ना मात्रित्रा न्हि কৃটি ক্রিতেন। রাধুনি তমকারী রাখিত। গৃহিণীরা নিবেরা মরদা মাধিতেন। লুচি ভাষা ও কৃটি সেঁকাৰ ভার দিদিমাই গ্রহণ করিতেন; – দাস দাসী ব্যতীত রাত্রে প্রার কেহই ভাত থাইত না।

সকলকে আহারাদি করাইরা প্রাতঃকালের ক্ষ্ম ভাঁড়ার বাহির করিয়া এরং কিছু কিছু **जनकात्रो कृषित्रा त्राधिता नित्य यश्किकिश यगत्या**श कविवात भन्न पिपिया यथन विद्यानात गाँहैटलन ब्यांत्र त्रांकि >२हें। वाक्कि। स्वांवात ०हे। উঠিয়া বিছান্যৰ বসিয়া शांत বোড়হাত করিয়া ধ্যান করিতেন। ভোর ৪টার সময় হাত মুৰ ধুইয়া গো-দেবা করিতেন। टोत गमत पंते, नामावनी, তসর কাপড় ও পুষ্পপাত্র হাতে,করিয়া "ওয়া वायन त्यदा ও पिपि नाज्यो अक्षी पिपि---(बोबा ওঠো মা বেলা হঙেছে—আমি ভবে এখন আসি," বলিয়া গলালান করিতে বাহির হই-তেন। আমারও ঘুম ভাঙ্গিরা বাইত—ভনি-তাম বৈষ্ণব ভিখারী গাহিতেছে—

হরি কোথা হে--ভূমি কোথা হে

ও বিপদের কাণ্ডারি— তুমি কোণা হে—?

ক্ষেত্রতের কথা।

পূর্ব বাঙ্গালার পলীগ্রাম সমূহে এখনও "ক্ষের ঠাকুরের" প্রতিপত্তি অকুল আছে। नववध् चंखवानात्र व्यानिया অনভ্যাস অসাবধনতা বশত: বেশুন ভালিতে ভালিতে रेमवार अक्षाना डिटमाटन क्लिका मिटन গিরি বধ্কে তিরস্কার না করিছা "ক্ষেত্তর ঠাকুরের" ভোগে লাগিরাছে বলিয়া বরং भौनिय ध्यकानहे कतिवा बादकत। ঠাকুরের এই মধাছতার খনেক অধাববানা বধু ্^{খাওড়ীর তিরকার হইতে রকা পাইরা বান। এই ুএরং থেকুরে ওড় প্রভৃতি উপকরণ বারা} ক্ষে ঠাকুনটা বে কে ভাহা ব্ৰভকারিণাগণ ঠিক

विगठ भारतन नां, जानत्क विश्ववाक्र क्ष्म्बर्शकूत्र विद्या निर्देश करतन, यात्र (क्ट (क्ट नामन स्वारामवेट क्या ठाकुत। আমার শেষেরটিই সতা বলিরা মনে হর। কেননা সূৰ্য্য হইভেই আমরা থাছাদি পাইয়া थाकि। जाब ताथान वानक्षित्रतक छेपत পুরিরা ছাতু ভক্ষণ করান এবং ক্ষেত্রস্থিত কীট পতক্ষে আহারের সংস্থান করাই ক্ষেত্রতের व्यथान जन । ज श्रदात्रन वां त्यांव बादन कपनी, গৃহের বাহিলে কুলগাছের নীচে এক করিবার

নিয়ন। অত লৈবে এতের উপকরণ ছাত্ প্রকৃতি উপরিক রাখাল বালক্ষিগকে বণ্টন ক্ষিয়া দিতে হয়। অবলিষ্ট জব্য গৃহে ফিরাইয়া শেক্সা নিবিদ্ধ, উহা পূর্বোক্ত কুল গাছের নীচেই কেলিয়া বাওয়া ঠাকুরের অভিপ্রেত।

চারি পোঁচ বা ততোধিক মহিলা একত্ত হইরা ব্রত করিলা থাকেন এবং প্রত্যেকে সাধ্যাস্থারী উপকরণ সামগ্রী সংগ্রহ করেন বলিরা ব্রতস্থানটা একটা দক্তব্যত ভাঙার ক্লপে পরিণত হইরা থাকে। বলা বাহুলা ব্রত স্পষ্ট সমরে আবুনিক মেঠাইবের চলন ছিল না, পাড়াগাঁরে এখনও নাই; স্প্তরাং পলা বালকদের নিকট ছাতু চিজেই বিশেষ উপাদের এবং এই লোভে ব্রতস্থানটি বালক বালিকার কলরবে আমোধিত হইলা পড়ে। ব্রতারস্কে সমাগতা মহিলাদের মধ্যে একজন নিম্নিধিত কাহিনীটি বলেন।

ত্ব বৈ রাড়ীর পুত মইলা * তার সংগারে, কেউ নাই কেবল এক মা। এরা তারী গরীব একদিন খাবার বোটে তো একদিন বোটে না। মা নিজের জন্ত তাবেন না, বিধবা হ্বার পর বে ছেলেটাকে বুকে ধরে মাছব করেছেন, সমর মত তার মুখে ছটো ভাত দিতে পারেন না, এ কট আর রাথবার স্থানানেই। লল্পী ঠাককণের বরে মইলার মামাদের খুব কপাল। তাই তার মা ভাবলেন, ছেলেকে লেখানে পাঠিরে দেওয়া বাকু, সেখানে কত চাকর বাকর বাট্ছে মইলা

ভো আপনার লোক, বছটা বাছরটা বাববে चात्र किन दबना दन्छे क्रंत्र द्वारक नीरव्। এইরণ তেবে বা ছেলেকে ভাইবের बाफ़ीटक भाडित्व बिटनम । मानाना व्यष्टिमाटक **दर्भ भूगो इरव बद्धा "अञ्चल भागि**ण्नि **(क्न ? कड लाक चार्यालव्र अवाद्य बाद्यह**, আর ভূই আমানের ভারে এতদিন থেকে পর্তে এত কট পেরেছিস্ ৷ ভা আখাদের এখানে থাক্, গৰু বাছুর রাখবি, আম ক্ষেতে जामात्वत कम्र गाँखां (कृषकरतत्र आस्टर्शकन) नित्र रावि। এशास्त्र (श्रष्ट भत्रुष्ड कान कडे हर्त नां, विविद्यक्ष यात्व यात्वः त्यात्राक गाठित पिव।" प्रदेशा **এখানে বেশ ছংখেই ब्रहेश**। क्खि কোন কোন মেরে মাছুবের কেমন প্রভাব, भरतत छान हर्ष महना. बहेबाब माबोरमत দে হচকের বিব হল, **ভারা নইলাকে** পাতের এটো কাঁটা দিতে লাগলো। সে পেটের मात्र किह किह (५७, जात्र नव (एँकि परंत्रत **পিছনে মাটার নাঁচে পুঁডে রাব্ডোঁ। এইরং**প কিছুদিন বার, একদিন মইলা মানাবের বছ লান্তা নিয়ে বাচ্চে, এমন সময় ভন্তে পেলে क त्वन अको काला नीत व्यक्त कारक ডেকে বলছে "বইলা ভূই বে ভোর মাধাদের জর বাবার নিয়ে বাচ্চিস্ ভা বেকে সব तकरवंत किছू किছू अवास्त स्वरंप या ; स्कांत्र ভাল হবে।" बहेना दल, "बाग्रव ভা**ও** कि হৰ ! তা হলে কি আৰু মাৰীলা আমাকে আত

^{*} অনেক নকান নই হইবার পর বে সভানটা কমিরা কীবিত থাকে ভারতে পুক্তিতে "বইলা" কলে।
যম ককানি বিশিষ্ট সভান গ্রহণ করিবেন না এই বিবাসে ইহার কালে পুর ২কু ক্রিক বেতরা হিল;
ফকনক যা নিজার ক্রমত জিনিন এই ভাবে ইহাকে পুর কাহাকেও লান কমিরা কেনিয়া আজির একটা কাবা
কড়ি নিয়া কর করা হয়। সুচ্ছ জিনিন, লাম আর কড়।

ঝাঁটাপেটা করে বাড়ী থেকে রাখবে ? ভাভিরে দেবে।" ঝোপের নীচে থেকে আবার দেইরূপ শব্দ হল—"তোঁর কোন ভয় নেই. • তুই আমার কথা শোন, তোর ভাল চহব"। মইলা তথন মাথা থেকে থাবারের ভাঁড় নামিয়ে সব রকমের কিছু কিছু থাবার সেথানে রেখে মামাদের কাছে গেল। ফিরে আস্বার ममग्र त्याप्तत नोटि (थटक वारात मक रन, "মইলা তুই বড় ভাল ছেলে, আমি তোর উপর বড় খুদী হয়েছি। তুই সন্ধাবেদা এথানে এসে मांगे थूं ज़ल এक कनमो त्मारत পावि, ভাই নিরে যাস ভা হলেই ভোদের কপান ফিরবে।" মইলা সেদিন মামার বাড়ীতে গিয়ে विकागरवना मामारमंत्र वरल, "मारक रमथवात ক্সত মন বড় ব্যস্ত হয়েছে আমি ঘরে যাবো" মামারা ভাবণে "হবেও বা, ছেলে মামুষ কত দিন ধরে মা ছেড়ে এসেছে"! তারা তাকে থেতে দিলে। মইলা সন্মাবেলা সেই ঝোপের মাটী খুঁড়তে খুঁড়তে সত্যি সত্যি এক কলসী চক্চকে মোহর পেলে, তার আর আহলাদ ধরে না। বাড়ীতে এসে মাকে কলসীটী দিলে. এবং দেদিন থেকেই তাদের কপাল ফিরে গেল। प्तरम विषय जारनव अधार्यात कथा ता है हन. মইলা নাম ঘুচে গিয়ে তথন তার নাম হল "নতুন রাজা"। দীন হঃশীর প্রতি নতুন রাজার অদীম করুণা, তাঁর স্থাতির কথা আর লোকের মুখে ধরে না। নতুন রাজার এक विन हेटक हम नीचि काठीरवन, स्मर्क বিদেশে ঢোল পিটিয়ে দিলেন "নতুন রাজা দীঘি কাটাচ্ছেন, যে বত ওড়া (ঝোড়া) মাটা কাটবে, সে উত ওড়া কড়ি পাবে।" দেশ বিদেশ থেকে দানগংখী লোক মাটা কাটতে আস্তে

লাগলো, রাজা তাদের কড়ি বুঝিয়ে দেবার জ্ঞা একজন সরকার রেথে বলে দিলেন, যত মজুর আস্বে, আগে সবাইকে একবার তাঁর কাছে হাজির কর্তে হবে, তারপর মাটী কাটবে।

এদিকে হয়েছে কি, নতুন রাজার মামাদের আর কষ্টের সীমা নেই; সব ুদিন খাওয়াও यारिना। उथन এकिन भागोता वरल "अननूम কে এক নতুন রাজা দীঘি কাটাচ্ছেন, মজুরেরা যত ওড়া মাটী কাটে তত ওড়া কড়ি পায়, একবার সেখানে গ্রিয়ে দ্যাথ না।" তারা ভাবলে "মন্দ নর করেক ওড়া মাটা কাটলে কিছুদিনের থাবার বোগাড় হবে ৷ তখন শামারা ছই ভাইয়ে নতুন রাজার ৰাড়ীতে গেল, তাদের ভাগে মইলাই বে নতুন রাজা হয়েছে তা তারা জানতো না। রাজবাড়ীতে যেতেই সরকার তাদের রাজার কাছে নিয়ে গেল, বাজা তাদের চিনতে পাল্লেন কিন্তু তারা চিন্তে পার্লে না। রাজা সরকারকে माज এখন "এদের হবে না, নতুন কাপড় এনে দাও, আর লানের যোগাড় করে দাও।" মামাদের তো একথা ওনে ভরে "আত্মাপুরুষ" উড়ে গেল। "নতুন পুকুরে ওনেছি নরবলি দিতে হয়, তবে कि आमारनत्रे, विन निरव।" ज्ञीरनत মনে মনে গালাগালি করে তারা ভয়ে ভরে সান টান কর্লে; কিছ দেখে রাজা তাদের উপর কোনই হুৰ্বিহার করেন না। অন্তর মহলে থাবার জায়গা হয়েছে সেখানে গিয়ে তারা त्राकारक (मथरन, कथां अर्थन (हमा रनारकत মত মনে হোল, ব্যাপার কি ? তারপর খেতে বলে নতুন রাজা মামীদের ত্র্বিহারের कथा लाशन करन, गर चरत राह्मन, जरा मानी

দেরও আনার বস্তু পাকী ঘোড়া পাঠিরে দিলেন।

মামীরা এলেন, কিন্তু এখন ভাগের প্রতি जारपत्र कानवामा उथान केंग्रन। ভাগেকে नित्कत्र हाट्ड (४८७ ना पिटन बात्र जांदरत यन बर्फना। , ছথের সর প্রভৃতি ভাশ জিনিয সৰই ভাষের পাতে দেন। এক দিন মামা-ভাগে থেতে বদেছেন, মামীরা পরিবেশন কচ্ছেন, আব ভাল থাবার গুলি সবই ভাগ্নের পাতে ঢেলে দিচ্ছেন। ভাগে তথন একটু হেসে বলেন— "দেই যামা দেই যামী পুকুর পাড়ে ঘর, क्रान्ता मामी नफ़ हफ़ हाटि त्रत्थ प्रव ?" ৰাষারা একথার অর্থ কি জিজেন করতে, নতুন রাজা ভবন মামীদের বাবহারের কথা বলেন। ভারা ভো রেগে স্তীদের মারধোব করতে যার কিন্তু নতুন রাজা বল্লেন "এদের কি দোষ আমার ক্পালে হু:খ ছিল বলেই ওদের ওরূপ মতি গতি হৈছেছল, আৰার অনুষ্টেব সঙ্গে সকেই মতি গতি ফিরেছে।"

এইরপে হংথী বিধবার ছেলে মইলা কেন্ত ঠাকুরের বরে রাজা হরে স্থেৃস সাব করতে সাগল।

কাহিনী শেষ হইলে সমাগতা মহিলাগ্ৰ হলু ধ্বনি কবেন, এবং ভৎপৰে উপস্থিত বালক বালিকাদিগকে থাত দ্ৰব্য সকল বণ্টন করিয়া

(एश्रव) इत्र । अथन बानकं बानिकारकत উপবোগী উপদেশপূর্ণ বহু পুঞ্চ রচিত হইতেছে, সেকালে অবশ্ৰই এত বিভালয় বা পুত্তকের বাহুণ্য ছিল না, কিন্তু এই সকল व्रज भार्त्वागव काहिनी स्मरे चर्छाव श्रुवन कत्रिक । त्य त्मव व्यथवा त्मवोत्र फेरमत्य उक्तिम কবা হয়, তিনি একটু কোপন স্বভাব হইলেও বালক বালিকা বা নিরাশ্ররা রমণীদের প্রতি তাহাব অসীম করুণার পরিচয় পাওয়া বার। পলীগ্রামের সংবাদ থাহারা রাখেন, ভাঁহারা অবশ্রই জানেন, অবস্থাপর গৃহস্থের বরেও নৰবধুদের অদৃষ্টে ভাল খাল্য সৰ সময় ৰোটেনা! সংসারে দাসী বৃত্তি করা ভিন্ন পুত্রবধুর বে আর কোনও আবশ্রকতা আছে, এখনও আনেকের এক্নপ ধারণ। নাই। সর্বপ্রেকার নিন্দা ভিম্নখারে নীরব থাকিবে, ভাত বাঞ্চন কম হয়লেও ভুট থাকিবে ইহাট আদর্শ পুত্রবধ্র । ক্র এরপ অবস্থায় আমরা বধন দেখিতে পাই, দেৰভাদেৰ ভবে ৰাণ্ডড়ী ব্ৰভপ্ৰতিষ্ঠা উপলক্ষে বধুকে পবের বাড়ীতে বাইতে দিরা বাহিন্দের মুক্ত वाजाम त्यव्या श्विता तम्, - धवर कथ्म वा ষিষ্টান প্রস্তুত করিয়া বৃধুকে উদর পুরিয়া পাইতে দেন তথনই ব্ৰতের দেব দেবীয় চয়ৰে व्यामात्वत्र व्यात्वत्र कृ ठक्कण डेबनिया डेर्फ ।

শ্ৰীমতী শতদগ্ৰাসিনী বিশাসভাষা।

আধখানি।

মিশ্ৰ ভৈন্নবী

আ'ন, আধখানি গাঁথি
তুমি, তাবে কর সার !
আমি, ফুল করি বজ্
তুমি, ডোরে বাঁথো তার !

আনি কথা বলে বাই, ভূনি হারে গাঁথ ভাই, গান গাহি ছজনার।

মেঘনাদ বধ

8

চিত্রাঙ্কনী-প্রতিভা।

্রিষ্টনাদ ৰধ' সৰক্ষে বর্ত্তমান প্রবন্ধক যে সকল মতামত প্রকাশ করিয়াছেন, তাহার সহিত্ত সর্ব্যা আমাদের মিল নাই। অনেক ছলেই লেখক মহাকবির প্রতি অথথা দোষারোপ করিয়াছেন। পাঠক পাঠিকা প্রবন্ধটি পাঠ করিলে সহজ্ঞেই ভাষা বুঝিতে পারিবেন। এ সম্বন্ধে আমন্দিগের বক্তবন্ধ ভবিষ্যতে প্রকাশ করিবার ইচ্ছা রহিল।

ভারতী সম্পাদিকা।

চিত্রাঙ্কন কবিদিগের চির-প্রিয়। কবি চিত্রান্তনী প্রতিভাকে অনেক সময় আশ্রয় করিয়া বিকাশলাভ করে। বৈচিত্রাময়ী প্রকৃতি, জগতের কবিকুলকে চিরদিন প্রলুক করিয়াতে ও করিবে। কিন্তু মনুষ্য ব্যতিরেকে প্রকৃতির শোভাও ধর্ম হয়, তাই মহুয় तोमर्गाः कविषित्व व्यव्हनौग्र ७ वर्गनौग्र। প্রকৃতির এই পরিবর্ত্তনশাল মূর্ত্তি ও তাহার দহিত প্রকৃতিল্লামভূতা মহুদ্মার্ভির স্কীৰ চিত্ৰ আঁকিবার ক্ষমতা এবং করনার বলে ঘার্ট অপ্রকৃত ভাহাকেও প্রকৃতবং চিত্রিত করিবার শক্তিকে মনীবীগণ চিত্রান্তনী প্রতিভা নাম দিয়াছেন। মেখনাদ বধে মধুস্দনের এই ক্ষতার কতদূর ফুর্ত্তি হইয়াছে, অভ:পর আমরা তাহাই দেখিতে প্রবুত্ত হইব।

বলা বাহণ্য যে, চিত্রান্ধনী-প্রতিভা আপাততঃ আমি বাহ্মপ্রকৃতির চিত্র অন্ধন
ক্ষমতাকেই বলিতেছি। মনুযাচরিত্র আঁকিবার
ক্ষমতাও এই প্রতিভারই পূর্ণতম বিকাশমাত্র।
সে বিষয়ে পরে প্রস্তাব করিবার ইচ্ছা
রহিল। কিন্তু ইহাও বলা আবশ্রক যে যথার্থ
চিত্রান্ধনী-প্রতিভা প্রকৃতির অনুবাদেই পর্যাক্ষমিত থাকে না, সে প্রকৃতির ভিতর প্রাণ

প্রতিষ্ঠা করিয়া সেই সঞ্জীব প্রকৃতির মর্মান্থল পর্যান্ত দেখিতে পায় ও দেখার। কালিদাসের সেক্ষপীয়বের মহাকবিগণের চিত্রাহনী-প্রতিভা এই প্রকারের। ৰাসের কাছে প্রকৃতির কোনও অংশই নির্কীব নহে, নিরর্থক নছে। কবে কোন আযাংচর প্রথম দিনে কালিদাস একখণ্ড মেঘ দেখিয়া-ছিলেন—বে মেখমালা আমাদিগের চক্ষের সমুপেও কত সহস্রবার পড়িয়াক্ত, -অথচ আমরা তাহার প্রতি এতটুকুও মনোযোগ করি নাই,— দেই দৃষ্টির ফলস্বরূপ অপূর্ব "মেখদুতের" সৃষ্টি হইল। শেলির চকে একটা সামান্ত লজাবতী লতাও কত গভীর ভাবময়ীরূপে প্রতিভাত হইরাছে। যে প্রতিভাবলে প্রকৃত্রির এই অন্তর্নিহিত রহস্ত নিচয়, প্রকৃতির এই অন্ত:প্রাণতা, এই অপুর্বা সন্ধীবতা আমাদের গোচরীভূত হয় তাহাই বধার্থ ও উক্তাঙ্গের চিত্রান্ধনী-প্রতিভা।

Emerson কৰিয়াছেৰ—"Shak-pere, Homer Dante, Chaucer saw the splendour of meaning that plays over the visible world; knew that a tree had another use than for apples, and corn another than for meal and the ball of the earth than for

tillage and roads: that these things bore a second and a finer harvest to the mind, being Emblems of its thought and conveying in all their natural history a certain mute commentary on human life."

প্রকৃতিকে এইরূপ ভাবে দেখিতে হইলেই **প্রতিভার অংবশ্রক হয়। যথাযথ প্রকৃতির** অমুবাদের জন্ম প্রথর দৃষ্টিশক্তি ও সহামুভূতি আবশুক হইলেও প্রতিভার আবশুক করে। Thompson প্রণীত Seasons এই দরের কাবা। যখন প্রকৃতিকে অন্ত:সারময় বলিয়া জানিতে হইবে তখন যে তাহার সমস্ত সন্থাও অমুভব করিতে হইবে তাহা বলা বাহুল্যমাত্র। মহাকবিগণ যথন প্রকৃতির কোনঁও চিত্র উদ্ঘটিন করেন তথন তাহার স্বটাই দেখান ও আঁকেন। এথানে একটু, ওথানে একটু, এরপ করিয়া চিত্র অসম্পূর্ণ রাথেন না। তাঁহাদের ঐক্তঞালিক তুলিকাম্পর্ণে সমগ্র সম্পূর্ণ সঞ্জীব একখানি চিত্র আমাদের নয়নের সমকে উপস্থিত হয়। কালিদাসের হিমালয় বর্ণন, সমুদ্রবর্ণন, ও কৈলাসে বসস্ত বর্ণন এইরূপ সম্পূর্ণ চিত্র। ইহাদের কোনও অঙ্গে হানি নাই, প্রত্যেক দ্রষ্টব্য ও বক্তব্য বিষয় কবি দেখাইয়াছেন ও বলিয়াছেন; ছোট বড় किছूই वाकी রাথেন নाই। खधू जाहाई नरह, ইহাদের স্থতঃখ, আমোদ উপভোগ সকলই তিনি দেখিয়াছেন ও বলিয়াছেন। প্রক্বতি শুধু মান্থবের উপভোগের উপযুক্ত একটা নির্জীব সামগ্রী, যেমন লোকে খরে ছবি সাজায় সেইরূপ বিশ্বসংসারের সজ্জামাত্র এই ভাবিয়া যাহারা প্রকৃতির বর্ণনার প্রবৃত্ত হন তাঁহাদের প্রক্রতি বর্ণনার প্রাণ নাই, তাহা কেবল ভালিকামাত্র। শ্রেষ্ঠ কবিকুল তাই প্রস্তুতির

দে ভাবের বর্ণনার পক্ষপাতী নহেন। প্রঞ্জতির অন্তিম্ব তাঁহাদের কাছে একটা স্বতন্ত্র অন্তিম্ব। তাই কালিদায় শক্তুলাকে পতিগৃহপ্রস্থান কালে সকল আত্মীরের কাছে বিদায় লওয়াইয়াই কান্ত হন নাই,মহর্ষি কথবারা বলাইয়াছেন:—

ভো ভো সমিহিত বনদেবতান্তপোৰনভরব:।
পাতৃংন প্রথমং ব্যবস্থতি জলং যুদ্মান্ত্রস্কর্ বা
নাদন্তে প্রিয়মঙনাপি ভবতাম্ মেহেন যা পরবম্।
আদৌ বং কুম্ম-প্রবৃত্তি সময়ে যস্তা ভবতৃংগব:
সেয়ং যাতি শকুন্তলা পতিগৃহং সর্কৈরম্ভ্রায়তাম্।
তাই তিনি শকুন্তলাকে বিদায়কালীন আশ্রমের
বৃক্ষলতার কাছ হইতে বিনায় লওয়াইয়াছেন।
তাহার কাছে লভা কেবল মামুষের নয়ন
মনোরম নিজীব পদার্থ নহে, তাহারও প্রাণ
আছে, তাহারও ভালবাদিবার ক্ষমতা আছে,
ভালবাদাইবার ক্ষমতা আছে:—

পর্যাপ্তপুশ্ তবক ত্তৰাভ্য:

ফুরৎ প্রবালোষ্ঠমনোহরাভ্য:।

লভাবধৃভ্য ভংবোপ্যবাপু:

বিনম্রশাধা ভুরবন্ধনানি।

এইরূপ তাঁহার কাছে নদ নদী বন পর্বত সমুদ্র লতা পাতা সকলই প্রাণময় স্থেত্ঃখমর, কেবল মৃত নিজীব দৃশ্যমাত্র নহে।

এইরপ চিত্রান্ধনী-প্রতিভার স্থাইর জ্বন্ত করনাশক্তির তত আবশুক না থাকিতে পারে, কিন্তু দেই বৃক্ষটীর অথবা দেই ফুলটুকুর ভিতর কতথানি জীবনীশক্তি আছে তাহা ধরিতে হইলে করনার সাহায্য চাই। যদি প্রকৃতির সমগ্র দৌলর্ঘ্য উপভোগ করিতে হয় তাহা হইলে তাহাকে কেবল জ্বড় পদার্থ ভাবিয়া তাচ্ছিলা করিনে চলিবে না। অথবা প্রকৃতির উপর সর্কান কবির নিজ ভার অর্পণ অথবা কাব্যগত চরিত্রের অবস্থাস্ক্রণ ভাব অর্পণ করিলেও তাহার প্রতি ষণেপ্ত অত্যাচার করা হয়। আমার মনে স্থ নাই অত এব আমি লিখিব যে প্রকৃতিও যেন মানম্থী হইয়া রিছুয়াছে; ইহা করিলে মনে হয় যেন প্রকৃতির স্থান্ট মামুবের মন যোগাইবার জ্বন্তই হইয়াছিল! প্রকৃতির প্রতি নিজ্ব ভাবারোপ (ইংরাজিতে বাহাকে Pathetic fallacy বলে) স্বার্থ-পরতার নিন্দান। প্রকৃতিকে নিংস্বার্থভাবে ভালবাদা, প্রকৃতিকে তাহারই জ্বন্ত ভালবাদা —ইহাই উচ্চাঙ্গের করনার কার্য্য। যথন কবির মনে এই নিংস্বার্থভাবের উদয় হয় তথন আর তিনি প্রকৃতিকে স্বীয়ভাবচালিত পদার্থমাত্র বিলয়া ভাবিতে পারেন না। ইংরাজ কবি কট সম্বন্ধে রুদ্ধিন যাহা বলিয়াছেন তাহা বাটি সত্য। তিনি বলিয়াছেন:—

And first observe Scott's habit of looking at nature neither as dead or merely material in the way that Homer regards it, nor as altered by his own feelings in the way that Keats and Tennyson regard it, but having an animation and pathos of its own, wholly irrespective of human presence and passion—an animation which Scott loves and sympathises with, as he would with a fellow creature, forgetting himself altogether and subduing his own humanity before what seems to him the power of the landscape.

Modern Painters vol. III. p. 256.

নিজের অথবা নিজস্ট চরিত্রের স্থহ:খারুসারে প্রকৃতিরও স্থ হ:খ নির্মন্ত্রিত

ইইবে এক্লপ সর্বাদা যে কবি মনে, করেন
অক্ততঃ তাঁহার প্রকৃতির সহিত সহাদর সহামুভূতি দাই তাহা ব্যাখ্যা করিরা ব্রাইবার

করিলেও তাহার প্রতি যথেষ্ট অত্যাচার করা , প্রয়োজন নাই। তাহাতে স্বার্থপরতার হয়। আমার মনে স্থ নাই অত এব আমি নিদর্শন এত অধিক পাওরা বার যে তাহার লিখিব যে প্রকৃতিও যেন মানমুখী হইয়া ভিতর কবিত্ব থাকিলেও মহত্ত্বের অভাব রহিয়াছে; ইহা করিলে মনে হয় যেন প্রকৃতির পরিক্ষুট হইয়া পড়ে। সীতা-বিরহ-বিধুর স্বৃষ্টি মামুষের মন যোগাইবার জন্তই হইয়াছিল! রামচক্র পম্পা নদীর শোভা দেখিয়া কহিয়া-

ৰাত্ত শোকাভিসন্তথমাধয়: পীড়য়ন্তি বৈ।' ভয়তন্ত চ ছঃখেন বৈদেহা হয়ণেন চ। শোকাৰ্তন্তাপি মে পম্পা শোভতে চিত্ৰকাৰা। ব্যবকীৰ্ণা বছৰিবৈ: পূম্পৈ: শীতোদকা শিবা ॥ আৰ্থ্য বামায়ণৰ, কিমিন্ধ্যাৰাণ্ডৰ, ১ম সৰ্গঃ।

তৎপরে মহর্ষি বাল্মীকি পম্পার সমগ্র শোভা রামচন্দ্রের মুথ দিয়া প্রকাশিত করিয়াছেন।

স্কট-ক্বন্ত Greta নামক স্থানের ঠিক এইরূপ একটি বর্ণনাকে লক্ষ্য করিয়া রঙ্কিন কহিয়াছেন,—

"Is Scott or are the persons of his story gay at this moment? Far from it. Norther Scott nor Risingham are happy but the Greta is; and all Scott's sympathy is ready, for the Greta on the instant.

Observe therefore this is not pathetic fallacy; for there is no passion in Scott which alters nature. It is not the lover's passion making him think the larkspurs are listening for his lady's foot &c. Modern Painters Voll. III. Pp. 256-57.

with us, only varying in depth according to the greatness of the heart that holds it; and in Scott, being more than usually intense and accompanied with infinite affection and quickness of sympathy, it enables him to conquer the pathetic

fallacy and instead of making nature, মন্দ নহে তাহাও খীকার করিতে বাধা নাই। anywise subordinate to him he makes himself subordinate to her follows her lead simply—does not venture to bring his own cares and thoughts into her pure and quiet presence-paints her in the simple and universal truth adding no result of momentary passion and fancy and appears therefore at first shallower than other poets being in reality wider and healthier.

Modern Painters vol. III. P. 257.

নি:স্বার্থ ও বিনয়নম ভাবে প্রকৃতিপ্রেমিক হওয়ার ফল স্বটের পক্ষে কি হইরাছিল তাহা রম্বিন প্রকাশ করিয়াছেন,—

"And in consequence of this unselfishness and humility, Scott's enjoyment of nature is incomparably greater than that of any other poet I know".

Modern Painters vol. III. 258.

 শ্রন্থিন যে মত লিপিবদ্ধ করিয়াছেন তাহার যাথার্থা আমাদিগের সকল মহাকবিগণের · **প্রক্র**তি-চিত্র হইতে উপলব্ধি করিতে পারা বিরহ-ক্লিষ্ট বৈক্ষের মুথে কালিদাস প্রকৃতির যেরপ চিত্র আঁকিয়াছেন, এবং রামারণ হইতে পূর্বে যে চিত্র উদ্ধৃত করিয়াছি তাহা হইতেই তাহা বেশ বুঝা যাইবে। এখানে উদাহরণ বাহুল্যের প্রয়োজন নাই। পরে আরও ত্একটা চিত্র আমাদিগকে তুলনার্থ উদ্ধৃত করিতে হইবে !

মাইকেল মধুস্দনের মেঘনাদ-বধে এই হিসাবের প্রকৃতি চিত্র কতথানি আছে তাহাই আমরা এইবার দেখিতে চেষ্টা করিব। মেখনাদৰ্যে প্রকৃতি-চিত্র অনেক আছে তাহা সুকলেই জানেন। অনেক স্থলেই চিত্রগুলি

কিন্ত তথাপি আমি যতদূর বৃঝিতে পারি তাহাতে আমার মনে হয় যেন মাইকেলের পেই সকল চিত্রগুলির সহিত মাইকেলের অথবা তৎ স্ট চরিত্রগুলির যথার্থ সহাত্মভূতি নাই। তিনি কিম্বা তাঁহার চরিত্রগুলি যেন প্রক্রতির সর্বাঙ্গান সৌন্দর্য্য বা তাহার চির-বৈচিত্র্যময় রূপ হৃদয়ে প্রতিফলিত করিতে পারেন না। তাই তাহার প্রকৃতির চিত্তেও বৈচিত্র্য আদৌ বিশ্বমান নাই। কথাটা পরিষ্কার করিবার জ্ঞা কতকগুলি উদাহরণের প্রয়োজন হইবে।

কিন্তু তাহার পূর্বে আর একটা কথা বলিয়া রাখিতে ইচ্ছা করি। প্রকৃতিচিত্রে বৈচি**ক্রে**র ধেমন বিরাটত্বেরও তেমনি সম্পূর্ণ অস্তাব। শুধু তাহাই নহে তাঁহার প্রক্লভিচিত্রেও অবিবেকের যথেষ্ট প্রমাণ পাওরা যাইবে। মাইকেল মেঘনাদ**্**ধে প্রকৃতির বিরাট মূর্ত্তির ছবি তুলিবার অবকাশ পাইয়াছিলেন কিন্তু তাহা তিনি করেন নাই। তাঁহার চিত্রগুলি সকলই থগুটিত্র। মেঘনাদ-বধে কোথাও আকাশের বিরাট মহন্ত প্রতিফলিত দেখিতে পাই না, সমুদ্রের চিত্র আছে বটে কিন্তু তাহাতে সমুদ্রের বিশালত্ব আমরা অফুভব করিতে পারি না।

তাঁহার রামদেতু-সমন্বিত সমুদ্রের চিত্র @ :-

> এইরূপে আক্ষেপিরা রাক্ষস-ঈশ্বর वायन किवारय जांबि मिबिरनन पृद्ध সাগর-মকরালয়। মেখপ্রেণী যেন অচল, ভাসিছে জলে শিলাকুল বাঁধা पुष् वैदिश । इरे शादन छत्रकनिष्ठत्र ফেনাময়, কণাৰর বখা কণিবর **छक्र नित्रकृत १७** ति निर्दाटन ।

অপূর্ব্ধ বন্ধন সেতু, রাজ-পথ-সৰ প্রশন্ত ; বহিছে জলস্রোভ: কলরবে স্রোত পথে জল যথা বরিষাত্র কালে।

এই চিত্রে সমুদ্রের ভীষণ অথচ মনোহর মহন্বের একছুমাত্র পরিচয় নাই। তাহা তো নাইই তম্ভিন চিত্র উপমার লঘুত্বে অত্যন্ত থর্কা হইয়া পড়িয়াছে। অবাস্তব হইলেও এখানে একটা বিষয়ের উত্থাপন করিয়া রাখা প্রয়োজন মনে করিতেছি। কাব্যে অলকারের প্রয়োজন হয় কেন ? কাব্যের স্বাভাবিক শোভা বর্জন করিবার জন্ত। কাব্যাদর্শে আছে ্কাব্যশোভাকর ধর্ম। অলম্বারের সমীচীন ব্যবহারে কাব্যের শোভা বর্দ্ধিত হয় ইহা কেহই অস্বীকার করিতে সাহসী হইবেন না। জগতের সকল মহাকবিই অলকারের আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছেন ৷ কিন্তু অলঙ্কাব সর্বব সময়ই শোভা-পরিপুষ্টির বস্তুই ব্যবস্তুত হওয়া উচিত, স্বাভাবিক শোভা ঢাকিবার বা থর্ব করিবাব জ্ঞ অন্তার ব্যবহৃত হওয়া কদাপি বিধেয় নহে। ইহা একটা সহজ সত্য। বে অলঙ্কা-রের ধারায় ভাব বা চিত্র বিশদ ও পরিক্ট হয় তাহা আদরের জিনিষ, যাহা তাহার বিপরীত তাহা সর্বাথা বর্জনীয়। অলঙ্কারের মধ্যে উপমা একটি শ্রেষ্ঠ অলকার ও কবিগণ অধিকাংশ স্থলেই উপমার আশ্রয় করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত হীরেন্দ্রনাথ দত্ত কহিয়া-ছেন—"উপমা কাব্যের অলম্বার; ধেমন রত্ন ভ্ৰণে হুলরীকে আরও হুলর দেখায়, সেইরূপ উপমার স্থন্দর কাব্য আরও ফুলর হয়।" তথু তাহাই নহে; উপমা সাদৃশ্য-প্রকাশক অলম্বার; ক্ষতএব উপমাধারা কবিগণ চিরদিন বর্ণনীয়ু বল্পকে স্থন্দরতর ভাবে প্রকাশিত ও পরিফুট করিবার , প্রয়াস পাইরাছেন।

একটী বিরাট বস্তর সহিত অপর একটী বিরাট-বস্তর তুলনা করিলে তবে দে তুলনা অন্দর হয়, ও ভাববাঞ্জক ও মহত্তপ্রকাশক হয়। একটী মাত্র উলাহরণে কথাটি পরিষ্ঠার বুঝা যাইবে।

রঘুবংশের ত্রয়োদশ -সর্গে কালিখাশ, রাম-সেতুবিভক্ত সমুদ্রের বর্ণনা করিয়াছেন। সেই বর্ণনার অবভারক শ্লোক এই:—

> বৈদেহি পশ্চামগনরাদ্ বিভক্তব্ মংসেত্না ফেনিলমম্রাশিব্। ছায়াপথেনেব শরৎপ্রদর মাকাশমাবিদ্ধ চাক্লভারষ্।

এই একটি উপমার সমূজের সৌন্দর্য্য, বিশালত, গভার রহস্তাত্মিকতা কেমন ফ্টিয়া উঠিয়াছে ! উপমার ইহাই আপনারা দেখিবেন যে কালিদাস সহিত কেবল তারকাময় আকাশের তুলনা করিয়াছেন –চন্দ্রমা-শোভিত আকাশের সহিত তুলীনা করেন নাই, কারণ ভাহা আকাশের গান্তীর্ঘ্য থাকিত না। মাইকেশ মধুস্দন দত্ত ঠিক এমনি স্থলে কি করিয়াছেন ? "ছায়াপথেনেৰ শরৎপ্রসরমাকাশমাবিষ্কৃত চাক্ল-তারম" ইহার পরিবর্তে রাজপথ ও তাহার পাৰ্যন্থ দীপমালা আনিয়া ফেলিয়াছেন ও সমুদ্ৰের সহিত অবিরোধে দেই স্রোভঃপথের ও সেতুর সহিত রাজ-পথের তুলনা করিয়া বসিগ্নছেন। এই উপমাধাবা দেতু-বন্ধ সমৃদ্রেব চিত্র বে কতদূর থর্ক হইথাছে, ভাহা কাহাকেও বুঝাইয়া দিবার আবশুক করে না। এই একটা চিত্রেই মধুস্দনেৰ অবিৰেকিত্ব ও বিরাট চিত্র ধারণ করিবার অক্ষতা জাজল্যমান হইয়াছে ! • পূর্বেই বলিয়াছি যে মাইকেলের চিত্র

পূর্বেই বলিয়াছি বে মাইকেলের চিত্র
অধিকাংশই খণ্ডচিত্র। শুধু খণ্ড নহে এই

চিত্রগুলি প্রারই অসম্পূর্ণ চিত্র। মধুস্বন বধন রাজিবর্ণনা করেন তথন তথু রাজিইবর্ণনা করেন, রাজিকালের আকাশের মূর্ত্তি বর্ণনা করেন না। বতটুকু বর্ণনা করেন, ততকুটু মন্দ হর না—

> "আইলা হ্বাক তার,শশী সহ হাণি শৰ্কারী, হুগদ্ধহ বহিল চৌদিকে, হুখনে স্বার কাছে কহিয়া বিলাগী কোন কোন ফুল চুাছ কি ধন পাইলা।"

কিন্ত ইহা নিশাক্রান্ত। প্রকৃতির থণ্ডচিত্র মাজ, ইহাতে রজনীর মৃত্তি বর্ণনা নাই, আকা-শের মৃত্তি বর্ণনা নাই, চক্রাগোকে প্রকৃতির কি দ্ধশান্তর হয় তাহারও কোন্ও ইাঙ্গত নাই, কোন ফুলেরও বর্ণনা নাই!

া তাঁহার উষা বা গোখুলি বর্ণনাও এই ধরণের,—ফুলর কিন্ত অসম্পূর্ণ। তাহার পঞ্চবটী-চিত্রও এইরপ। তাহাতে আমরা পঞ্চবটীর বনত দেখিতে পাই না, সেই বনের মধ্যে যে একটাও বড় গাছ আছে তাহাও ব্রিতে পারিনা, তাহা যেন একটা উপবন—বেশ সাজান গোজান একথানি বাগান, বড় বাগান বটে। রামারণে সেই

नारेनछारेनछम्।रेनक वर्ड्यूद्रः भनमक्रदेयः।

ৰীবাৰৈ তিনিশৈকৈৰ পুলাগৈকোপলোভিতা:।'
বন ও পৰ্বাওঁভূমির স'কাৎ পাইবার
কোনও সন্থাবনা এখানে নাই। মাইকেল
বধুস্থন অরণ্যানী বা মরণাাণা সমাকুল
পৰ্বভাবলীর উদ্ধান দৃশ্য কলনার বলে মনশ্চকে
ধেবিতে পাইতেন না। তাই তিনি কেবল
কৃত্রিম উন্থানবর্ণন করিরাছেন—সেবর্ণনার
মূল আছে, ফুলের পরিনল আছে, চান আছে,
মলরমাক্ষত সব সমরেই বর্তমান আছে, ভ্রমর
ভালন আছে, পাধীর ভাক 'রাভবিরেতে' ধবনই

তাঁহার প্রবোজন তথনই আসিরা পড়িরাছে, এ সকলের দক্ষে সঙ্গে একটা করির। কোরারাও, আছে, কিন্তু কোনটিতেই প্রাণ নাই; তাই বৈচিত্রাও নাই। সেই কথা এখন প্রমাণ করিবার সমর আদিরাছে।

মেথনাদৰধের প্রথম সণ্ডের ইক্সনিভের প্রমোদকানন বর্ণনা যথা — চারিদিকে রয়া বনরান্তি — নন্দন-কানন যথা: কুহরিছে ডালে কোকিল , প্রস্থাদল প্রমিছে গুলির ;

বৃহিছে ব্যস্তানিল, ব্যৱিছে ঝর্মার নির্বর। ত্তিতীয় সর্গে উমার আগ্যনে লিবের তেলো-ভূমির রূপাস্তর—

ৰিকৰিছে ফুৰকুল, মন্ত্ৰিছে পাতা;

"অমনি চৌদিকে
অফুলিস ফুলকুল, মকরন্দ লোভে
মাতি শিলামুববুন আইল থাইরা
বহিল মলয় বারু, গাইল কোকিল;
নিশার শিশিরে থোত কুসুম-আসার
আফালিল শুক্সবরে !

তৃতীয় সর্গে কানন বর্ণনা—

এতেক কহিয়া দোঁহে পশিলা কাননে

মধার সর্গীসহ খেলিছে কৌমুকী

হাসাইরা কুমুলীরে, গাইকে অবরী—

কুংরিছে শিক্বর; কুমুন কুটিছে;
শোলিছে আনন্দ্রবরী বনরাজি ভালে

মণিত সিঁখীরূপে ভোনাকের পাঁতি;
বহিছে মল্যানিল, মধ্রিছে পাতা।

তৃতীয় সূৰ্যা প্ৰমান **লয়ায় ইন্দ্ৰিং-ভংনে** আসিতে না আসিতে*:*—

ভূলি নিম হংগ পিঞ্জন-মাধে
গায় পাণী, উৎলিক উৎস কলকাল
মধাতের অংগ্র-স্প্রেমিধা অনুরাশি
বিলি বসন্তানিল মুধ্য মধ্যে ;

नक्षम् मर्ग

গাইছে জাগিয়া कक्रमार्थ मधुम्बा, त्यनिष्क चमृद्र बनवज्ञ, मभीत्र विश्व द्वीजूटक * পরিষল-ধন লুটি কুত্র-জাগারে।

এইরূপ মধুস্বনের জন্ত সর্বদাই পাথীর গান, বসন্তানিল, ফুলকুল ও অলযন্ত্র প্রস্তত .আছে। রঙ্গ-ভূমিতে দর্শক তাড়াইবার জন্ত প্রতি অঙ্কের পর যেমন ঐক্যতান বান্ত নামক একরকম গওগোল উপস্থিত হয়, সেইরূপ মেঘনাৰ বধেও "কুজনিল পাখী আর বদন্তানিল" দেখা দের। ইহার কারণ আর কিছুই নহে, কেবল প্রকৃতির সহিত মধুস্পনের যথার্থ সহামুভূতির অভাব।

মেঘনাদ বধের প্রকৃতিবর্ণনার আর একটা भारेरकन निर्वत চোথে পড়ে। মনের ভাব অংথবা নিজস্ট চরিত্রের মনের ভাব প্রায়ই প্রকৃতির উপর অর্পণ করেন। উৎপ্রেকা অথবা pathetic fallacy কাব্যালকাৰ নটে, কিন্তু প্রকৃতিবর্ণনে মহাক্রিগণ উপমার ব্যবহার ভালবাদেন, উৎপ্রেকাব আত্রর গ্রহণ করেন না। কখন কখন প্রকৃতির বর্ণনা ফুটাইবার বস্ত উৎপ্রেকার প্রয়োবন হয় বটে, কিন্ত তাহা ৰামা বৰ্ণিভ বিষয়েৰ স্বাভাকিতা নষ্ট হর না। বরং ভাহাতে ভাহাদের স্ত্রীবভা উৎवर्ष नाञ्च करत्र ; वशा —

> **শ্রুতিক্থ** ভ্রমর-খনগীতর: কুম্ম-কোমল দল্পকো বভু: **উপৰনাত্তলতা: প্ৰ**নাহতৈ:। किमलरेयः मागरेवविष भागिकिः ।

महित्कानम छिटा शका षर्गामे नरर; दर्गाशंव ब्राक्त रेम्छ माबिटल्स यह मिनीमह वाहित्र हहेरान, अमनि "छेनिन कनक-नदा, शक्तिन बर्गाध।" दाहे हेसकिएडा পতন হইল, অমনি "থর থরি কাঁপিলা বস্থা, গৰ্জিলা উথলি সিন্ধু ৷ ভৈরব আরাবে সহসা পুরিল বিখা" লক্ষার বিপদ ভাবিয়া—

> গন্তীর নির্ঘোধে দূরে ঘোষিলা সহসা घनम्म, बृष्टिक्टन गगन काँ मिना, कत्तानिन। जनभिंठ, कांभिना वश्र्या আকেপে, রে রক্ষঃপুরি ভোর এ বিপদে, ব্দগতের অলকার তুই বর্ণময়ি।

রাবণের দৈন্ত সাজিতেছে—"অমনি কলো-निना উथनिया मङ्ख कन्धि।" • व्यशेत ভृधत्र-এজ-বেই দেবদৈন্ত ও রাক্ষ্য দৈত্ত যুদ্ধে প্রবুদ্ধ হইলেন অমনি-টেলটলে টলিল কনক লঙ্কা-গাৰ্জনা জন্ধি। এইরপ মাইকেনের প্রয়োজন মত 'জলধির গার্জন' মেবনাদবধে সর্বাধাই মজুত মলয়ানিলের তো কথাই নাই। भिन्नाम वर्ष সকলকার জন্তই যথন তথন বসন্তানিল বহিতেছে। মেখনাদের কাছে • প্রমালা আদিলেন, তাঁহারা ধুব স্থী হইলেন, ব্যমাদল নাচুক গাহক; যন্ত্ৰীরা বাজনা বাজাক আপদ চুকিয়া যাক্, তা নয় পিঞ্জরের পাষীর निक इःथ जूनिया ना शाहेल निकात नाहे: তাহাও না হয় হইল, কিন্তু উৎস বেচারার উপর নিগ্রহ কেন ? কেহ যদি কল টিপিয়া দিত তাহা হইলে তাহার নাচাক দা বেশ বুঝা ঘাইত, किन्छ এথানে তা नव, रयमन ममूद्रमन कंग हाँव দেখিলে উচ্ছলিত হয়, তেম্নি উৎসও আপনা আপনি উছলিয়া উঠিল! বসস্থানিল ভো व्याद्वनहे ।

হইতে বুঝা ধাইতেছে মাইকেলের হত্তে পড়িরা প্রকৃতি হস্পনী নিতান্ত আর অবনি "গর্জিলা বারীণ বোৰে"; প্রমীলা • পঁরাধীনা হইরা পড়িয়াছেন। তাহার নির্দের

হশহংশ এমন কি অন্তিম্ব পর্যান্ত মেঘনাদবধ কাব্যের পাত্রগুলির ইচ্ছা বা স্থপহংশের অধীন। ইহাকে প্রকৃতির প্রতি অত্যাচার বা অবিচার বিলিলে বােধ হয় অত্যুক্তি হয় না। আমার বক্তব্য যে কবি প্রকৃতির নিজমূর্তি চিত্রিত কল্পন, মান্থবের স্থপ হংশের সহিত প্রকৃতির মূর্ত্তির পাল্লবর্তিন আভাবিক বা সত্য নহে; সেই আভাবিক মূর্ত্তির অস্বাভাবিক বিকৃতি দেখিলে ভাল লাগে না।

আর একটা উদাহরণ দিয়া এই কথাটা বুবাইবার প্রয়াস করিব। লঙ্কার অশোক বন—অনস্ত সৌন্দর্যাময় অশোকবন, সেই অশোকবনে রাবণ সীতাকে প্রলুক্ত করিবার মানসে রাধিয়াছিল। সেই অশোকবন কত অন্তর তাহা মহর্ষি বাল্মীকি রামায়ণের অন্তরকাণ্ডে পঞ্চদশ সর্গে সবিস্তার বর্ণন করিয়াছেন—দীর্ঘ বিলয়া তাহা এখানে উদ্ধৃত করিবার লোভ সম্বরণ করিলাম। সেই বর্ণনার আরম্ভ ও শৈর্থ এই:—

সন্ধানক লভাভিক পাদপৈরপণোভিতাম।

*বিব্যপদ্ধনোপেতাং সর্কৃতঃ সমলক্কৃতাম।

তাংস নন্দনসন্ধানাং মৃগপক্ষিভিরাক কৃষ্

ইশ্বপ্রাসাদসন্ধাধাং কোকিলাকুল নিম্বনাম।

বিতীয়মিবচা কাশং পুস্পজ্যোতির্গণাযুত্র ।
পুস্বত্বশতৈশ্চিত্রং পঞ্চমং সাগরং যথা ।
সর্বর্জ পুশুস্প নিচিতং পাদগৈমর্গজিতঃ।
নাবানিনাদৈকভাবং ব্যা, মৃগপণলিভিঃ।
অনেকগজ্পবহং পুণাগজং মনোহরম্।

এই বর্ণনার মধ্যে পশু পক্ষী বৃক্ষ লতা পুকা কেহই নিজ কার্য্য ভূলিয়া সীতার ত্বংথে কাঁদিতেছে না, সকলেই নিজ নিজ কার্য্য করিয়া গৈই বনস্থানীকে অপূর্ব্য সৌন্দর্ব্যে বিভূষিত করিয়া রাধিয়াছে। কিছ বোনার পিছনে থাকিয়াও বিহলিনী স্থাপনী হয় না তাই নেই নন্দনকানন তুল্য অশোক বনে থাকিয়াও সীতাদেবা পতিবিক্ত ব্যথায় মুহুমানা। কেই শোককর্ষিতা দেবীমূর্ত্তি মহর্ষি তদীয় প্ণাতৃলিকার স্পর্শে আমাদের নরনের সমক্ষে বেম জীবস্ত করিয়া ধরিয়াছেন। আমরা সে মুর্বি বেন স্পষ্ট প্রতাক্ষ করিতে পারি।

মেঘনাদবধের বর্ণনা সম্পূর্ণ অক্তরূপ। বে বর্ণনার সীতাদেবীর শোককবিতা মুর্ত্তি তো ফোটেই নাই, তা ছাড়া তেমন যে মনোরম অশোকবন, তাহাও যেন মেঘে ঢাকা পড়িয়াছে।

খনিছে প্ৰন দুরে রহিরা রহিরা,
উচ্ছ্বাসে বিলাপী যথা। নাড়ছে বিধাদে
বর্মবিয়া পাতাকুল! বসেছে অরবে
লাবে পাবী! রাশি রাশি কুম্ম পুড়েছে
তর্মনুলে; যেন তরু তাপি মনতাপে,
ফেলিয়াছে খুলি নাজ! দুরে প্রবাহিনী
উচ্চ বাহি-রবে কাদি, চলিছে সাগরে
কহিতে বারীশে বেন এ ছাব-ফাহিনী!
না পাল স্থাতে অতে সে বার বিশিকে।

মংধি বাঝাক যে চকে অশোকৰন দেবিবাছিলেন তাহা প্রকৃতি সক্ষাম প্রতি ভালনাসার চকে। মাইকেল বে চকে সে দুখা দেবিরাছেন তাহাতে সাতা দেবার সহিত করেই সহায়ভূতি প্রকাশ পাইরাছে, সক্ষেহ নাই; কিন্তু প্রকৃতির সহিত সহায়ভূতি ভাহাতে আনো প্রকাশ পার নাই। মাইকেলের ক্রিকেলার যে কবিত নাই, তাহা আন ব্যালার ক্রিকেলার করে এ কবিত এত উদ্ধ্যামী ক্রিক, বারাতে ক্রিকে বলিতে হয়,—

What am I? that I should trouble



লক্ষণেৰ শক্তিলেল

this sincers nature with my thoughts. I happen to be feverish and depresed and I could see a great many sad and stange things in these wave and flowers, but I have no business to see such things."

—Ruskin Modern Painters, Vol. 111. 257.

এই উচ্চ ভাব মাইকেলের প্রকৃতি চিত্রে
আনে বর্ত্তমান নাই। তাঁহার মেঘনালবধ
কাঁবো প্রকৃতি, তৎস্ট চরিত্র গুলির খেলিবার
সামগ্রী মাত্র। তাহাদের যথন প্রয়োজন হয়
তথন প্রকৃতি হাসে, তাহাদের যথন মনে মুথ
নাই তথন প্রকৃতি কাঁদে, তাহাদের বথন
আবশ্রক তথন প্রকৃতি কাঁদে, তাহাদের বথন
আবশ্রক তথন প্রকৃতি কাঁদে, তাহাদের বথন
আবশ্রক তথন প্রকৃতি কাঁদের প্রয়োজনমত প্রকৃতিকে
ভারে করিয়া রাগ করিতে হয়। বেই চিত্রয়থের চুলি চুলি লক্ষায় আলা প্রয়োজন হইল,
অমনি.

হছভারি বায়কুঁল বাহিরিল বেংগ
বথা অনুরাশি, ববে ভালে আচথিতে
আলাল, কাশিল মহা গর্জিল অলথি।
ভূসপুলধরাভাবে ভরজ-আবলা
করোলিল, বায়ু গলে মাতি।
বাইল চৌধিকে বজে জীবুত, হানিল
কণপ্রতা, কড়বড়ে বাদিল বজোলি
গলাইলা ভারানাথ ভারানল লবে,
হাইল লভার বেঘ পাবক উপরি,
রাশি রাশি বলে বুক্ত পড়িল উপড়ি
বড়বড়ে, বহারাড় বহিল আলাশে
বর্ষিল আলার বেব শুট্ট ভূবহিতে
প্রালঃ। বৃষ্টিল শিলা ভক্ত-ভড়ে।

এই বৰ্ণনাটী ভনিতে বৃৰ অম্কালো হইরাছে, বোধ হয়; কিন্ত একটু অন্ধাবন করিয়া দেখিলেই বুঝা বাইবে যে ইহার সহিত মাইকেলের সহায়ত্তি নাই, তিনি ইহাতে এক কথাই বার বার বলিলাছেন। ধাইল চৌদিকে মজে জীমৃত, কড়মড়ে নাদিল দজোলি, ছাইল লভার মেদ পাবক উগরি,' এক কথার পুনরার্ডি মাত্র।

আমি নির্ভাক চিত্তে বলিতে পারি বে, ইহা অপেকা আৰাধিগের গ্রায়াকবি কৰিকছাৰেছ 'ঝড়' বর্ণনা অধিকতর স্বাভাবিক। মাইকেলের वर्गना धानशैन इहेवांत जात अक्षा कांत्रन **এই বে এ বর্ণনা ভাঁহার নিজম নর, এই ছলে** जिन मन्प्रवाप Virgil এর निक्र वन्। পর্বতের একটা গহবরের ভিতরে বাযুক্ত ক্ত থাকে ইহা এক অতুত কলনা; কিত অভুত ও অবাভাবিক হইলেও ইহা গ্রীকরণ কৰ্ত্ব করিত ও Virgil কর্ত্ব বৃথিত: অভএৰ মাইকেলের পক্ষে সে বর্ণনার প্রতি-कारा श्रद्धांत लांड व्यवस्था । किस देहारे ইহার অখাভাবিকভার একনাত্র কারণ নহে, তাহার প্রধান কারণ, নাইকেলের প্রকৃতিক निक्ततः रेक्काशीन कत्रिवांत्र वानना। চিত্ররপের অবিধার জঞ্জ বড় বহিবার প্রয়োজন **ज्ज्ञक्नि माहेटकरमंत्र क्षेत्र विहाद, श्राप्त त्वहें** চিত্ররথ অন্তবিরা প্রস্থান করিলেন, অম্বনি-

> বাবিল ভূষ্ণ বড়, শাবিলা জলবি হেরিরা শশাকে পুনং ভারদিল সহ হাসিল কনক লভা।

ভারকান্ত্রের পূরে প্রাকৃতি ইন্দরীর বেমন হর্দনা, মেঘনাদবধ কাব্যেও ভারার ভেননই হ্রবস্থা। এবং এই অন্তই আমি মেঘনাদ বধের প্রাকৃতি চিত্রের সৌন্দর্য্য উপলব্ধি করিছে না পারার, অন্তরের সহিত প্রাণংসা করিছে প্রারিকাম না।

সাগর উদ্দেশে।

সীমাহীন ওগো পারাবার,
বহু বর্ষ পরে আজি হ'ল যদি দেখা,
,শোন তবে একবার, শুধু একবার,
পদ-প্রান্তে দাঁড়াইয়া এন্ডভক্ত একা
ক্ষীণ বিকম্পিত কঠে করে দান যেই নিবেদন,—
হে অনন্ত, হে ভ্যাল, হে ভ্রন্তর, কর্হ শ্রবণ!

০হরিতেছি উদাম উলাস,

সেই দৃপ্ত আক্ষালন তব নিরবধি !

আজো অনাহত গর্বে তুমি বারমাস
প্রমন্ত তরক্ত-তকে বহিছ জ্লেধি !
কালের প্রভাব বলে জাজো তুমি হও নাই নত ;
স্তির আদিম ক্ষণে বাহা ছিলে. আজো সেই মত !

কিন্ত, হায়—হে দেব মহাৰ,
পঞ্চদশ বৰ্ষ পূৰ্বে আমারে যথন
প্রথম দেখিয়াছিলে—লঘু, ঘচ্ছ-প্রাণ,
—ওই তব হাস্থোজ্ঞল লহরী মতন—
ভব এই উপকৃলে, কোখা মোর অহো সেইদিন!
—আজি আৰি অবসন্ন, স্থহারা, কল্ক-মলিন!

সংসারের মোরা তুচ্ছ প্রাণী
পদে পদে নির্নতির নির্মন পেবণে
দলিত, বিধ্বত হ'রে পরাব্দর নানি'
তিলে তিলে লভিতেছি সঙ্কীণ মরণে!
আর তুনি! হাহাকারে নিরন্তর মন্তবেগে ধাও,
স্থর্জন উৎসাহে কুর: কি করিবে ভাবিয়া না পাও।

কি করিবে পার না ব্ঝিতে ?

বার্থের সংবর্ধে নিতা ববে বহুজরা

—আপনার পাপ-ভার না পারে বহিতে—

হ'রেছে বিবেব-হিংসা-প্রবঞ্চনা ভরা।

পার নাকি তাহে এবে গ্রাসিবারে অবুরাশি দিয়া ?

পার নাকি একেবারে এ বাতনা দিতে ভুড়াইরা ?

আছাড়িয়া পড়ি'ছ নিরত
ধরিত্রীর প্রাস্তে তবে কেন বারম্বার ?
বোগ-শোক-ছঃখ তা'র হেরি অবিরত
অফ্কম্পা জেগেছে কি অস্তরে তোমার ?
তাই যদি,—হে বারিধি, এ জ্বালার কর অবসান,
—তোমার শীতল অক্ষে এ মহীরে দেহ তবে হ'ন !

কিম্বা তুমি প্রচণ্ড আগ্রহে,

হুরস্ত প্রণর বশে, প্রেমিক প্রধান,—

(হেরি' বেদনার বিযে বিশ্ব সদা দতে,)

কহিছ কলম্বী-ভীবে করিয়া আহ্বান—

'সমীর্ণভা পরিহরি' অসীমের লইতে সংবাদ
আর মোর উপকুলে, নিয়ে যা রে ধোর আশীর্কাদ' :

ব্যধাতুর এ বিরস হিন্না
তাই হে পাধার, আজি ভোষারি চরণে
এনেছি বহিরা আমি, দেহ জুড়াইরা
জীবনের সর্কা জালা তরক্স-প্লাবনে !
অক্স আমি ; তোমাতেই হেরিতেছি বহিমার আলো !
কুজ আমি ; তবু তোরে হে অনন্ত, বাসিয়াছি ভালো !
ব্রীদেবকুমার রারচৌধুরী ।

স্বর্গীয় ত্রিপুরাধীশ্বর।

মহারাজ রাধাকিশোর দেববর্ম ধর্মার্ণব মাণিক্য বাহাতুর।

• সম্প্রতি ভারতের পূর্কাকাশ হইতে একটা
সমুজ্জল নক্ষত্র অকালে অন্তমিত হইরাছে।
ত্রিপুরার অধীশ্বর মহারাজ রাধাকিশোর দেববর্ম
"ধর্মার্ণব" মাণিক্য বাহাছর; মোটর গাড়ীর
ছর্মটনার, বিগত ২৮শে ফাল্কন রাত্রি ৮ ঘটকার
সমর নিজের প্রজাবর্গ, কর্মচারিবর্গ এবং
পরিজনবর্গকে অকুল শোকসাগরে নিমগ্ন করিয়া
৮ কাশীধামে মানবলীলা সংবরণ করিয়াছেন।
আজ, ত্রিপুরার গৃহে গৃহে আর্ত্তনাদ—গৃহে গৃহে
হাহাকার!

স্বর্গীয় ধর্মার্গব মাণিক্য বাহাত্ত্র অনস্তগুণের আকর ছিলেন। তাঁহার অলোকসামান্ত-গুণাবলীর সিধ্যোজ্জন প্রভা যথন চারিদিক্ উদ্যাসিত করিতেছিল এবং ৮কাশীবাসী বিবৃধ-মণ্ডলীকে বিমুগ্ধ করিতেছিল, তথনই বিশেশরও বিনেশ্বরত হইয়া তাঁহাকে নিজের শরীয়ে মিলাইয়া লইলেন! স্বর্গের দেবতা পুণ্যধাম স্বর্গে চলিয়া সিয়াছেন, তাই আজ হতভাগ্য ত্রিপুরাবাসিগণ এবং মহারাজের স্কলবর্গ ও আপ্রিত কর্ম্মচারিগণ অজ্জ্ অক্রথারা বর্ষণ করিয়া হৃদয়ের তাপ শাস্ত করিতেছেন!

এমন রাজার অমুগ্রহে যাহারা বঞ্চিত হয়, তাহাদের পাপের ফল বা ত্রভাগ্যের প্রভাব কথনই কম নহে। মহারাজ রাধাকিশোর মাণিক্য বাহাত্র নিরাশ্রয়ের আশ্রয়, দরিজের বন্ধ, বিপরের উদ্ধারকর্ত্তা এবং স্নীতন আর্য্য-ধর্মের সংরক্ষক ছিলেন। বারাণসীস্থ পণ্ডিত মণ্ডনী মহারাজের ধর্মেকনিষ্ঠতাদর্শনে সন্তঃ হইয়া মৃত্যুর কয়েক দিন পূর্ব্বে তাঁহাকে ধর্মার্থব উপাধি ছারা ভূষিত করিয়াছিলেন। যাইারা এই ধর্মরক্লাকর হারাইয়াছেন, তাহাদের প্রাণের যাতনা কি বলিয়া প্রকাশ করিব জানিনা; ভূকভোগী মাত্রেই বুঝিতে পারিবেন, বর্ণনা করিয়া অন্তকে ব্ঝান অসম্ভব। আশৈশব স্থথের কোলে লালিত, রাজভোগে পরিপুট, দেবসেবায় পবিত্রীক্বত রাজদেহ অকালে বিশ্বেশরপুরীর মণিকর্ণিকার ঘাটে মহাম্মশানে ভঙ্মাবশেষ হইয়া গিয়াছে; গঙ্গাতরক্ষ সেই পবিত্রে চিতাভঙ্ম বুকে লইয়া কুলু কুলু রবে পুণ্যের প্রভাব কীর্ভন করিতে করিতে কিরপে সগর্বের চলিয়াছিল, তাহা আমরা কয়নায় অমুণ্ডব করিতে পারি।

মৃত্যু সময়ে মহারাজের বয়স ৫৩ বংসর
মাত্র ছিল। মহারাজের জীবনের প্রতিকার্য্যে,
তাঁহার অন্যসাধারণ গুণাব লীর পরিচয়
পাওয়া গিয়াছে। শৈশব হইতে তাঁহার শিক্ষা
বিষয়ে অভ্যন্ত আসক্তি ছিল। নৃতন কোন
বিষয় পাইলে তিনি বিশেষ আগ্রহের সহিত
তাহা আয়ন্ত করিতে চেষ্টা পাইতেন। রামায়ণ
মহাভারত এবং পুরাণাদি ধর্মশাস্ত্রে তাঁহার
অসাধারণ পরিদর্শিতা ছিল। সাময়িক
পত্রাদি পাঠেও তাঁহার অয়য়াবাের অভাব
লক্ষিত হয় নাই। বাঙ্গালাভাষার মহারাজের
প্রগাঢ় বাুৎপত্তি দেখিয়া অনেক লক্সপ্রতিষ্ঠ
লেথক পর্যান্ত বিশ্বিত হইতেন। সংস্কৃত,
ইংরেজি এবং উর্দ্ ভা হাতেও তাঁহার বঁবেই

অধিকার ছিল। এতদ্বাতীত সঙ্গীত ও চিত্ৰ প্রভৃতি কলাবিষ্ণায় তিনি বিশেষ নিপুর্ণতা লাভ করিয়াছিলেন। মহারাজের রচিত মধুর, প্রাঞ্জল ও ভাবপূর্ণ কবিতা পাঠ করিয়া অনেক সময়ে আমরা মুগ্ধ হইয়াছি। আমাদের ভাগ্য দোৰে আজু সমস্ত গুণের আধার সেই মহা-রাজকে হারাইয়া হঃথের সাগরে ভাসিতেছি। ১৩-৬ ত্রিপুরাব্দের ২৮শে ফাল্কন মহারাজ রাধাকিশোর মাণিক্য বাহাছর ত্রিপুরার রাজ-পদে অভিষিক্তন। তদবধি মৃত্যু সময় পর্য্যন্ত ধরিলে, তিনি বারবংসর কাল রাজত্ব তাঁহার শাদন সময়ে ক্রিয়া গিয়াছেন। जिश्रतानात्कात नर्स्तविषया छत्रिक रहेबाए । শাসন ও বিচার বিভাগে স্থশিক্ষিত, লব্ধ-প্রতিষ্ঠ লোক নিযুক্ত করিয়া তিনি উক্ত বিভাগ গুলির উৎকর্ষ সাধনে প্রভৃত পরিমাণে যত্ন করিয়াছেন। শিক্ষা ও চিকিৎসা বিষয়ে অকা-তরে নর্থন্যয় করিয়া লোকের ধন্তবাদের পাত্র হইরাছেন। আগরতলার "ভিক্টোরিয়া মেমো-রিয়েল হস্পিটাল", "উড্বর্ণ আটিজান স্কুল" "আগরতলা এণ্টাক্স স্কুল," এবং "ঠাকুর বোর্ডিং" ও "কুমার বোর্ডিং" যতকাল বর্ত্তমান থাকিবে, ততকাল মহারাজ রাধাকিশোর মাণিকোর কীর্ত্তি ঘোষ্টিত করিবে।

মহারাগ্ন রাধাকিশার মাণিক্যের দেবোপম
মূর্ত্তি, অমুপম স্বর্গীয় গুণপরম্পরায় বিভূষিত
ছিল। তাঁহার স্বভাবে এমন গান্ধীর্গা, কার্য্যে
এমন দ্রদশিতা, লোকচরিত্র জ্ঞানে এমন
অভিজ্ঞতা এবং ব্যবহারে এমন গুণপক্ষপাতিতা
ও বিনয়নম শিষ্ঠতা ছিল যে, তাহা অন্তর্ত্ত নিতান্তই হল্লি বলিলে কোনরূপে অত্যুক্তি,
হবৈ না। তাঁহার ভাষা বিশুদ্ধ, মার্জিত. সংহত এবং সর্বাধা অনুপ্রবান্তির ছিল। তাঁহার পরলোকগমনে আমরা একটা খণগ্রাহী দেবতা হারাইয়াছি।

আমরা লোকের আরুতি দেখিয়া, বিলাপ শুনিয়া এবং গতিবিধি লক্ষ্য করিয়া বৃথিতে পারিতেছি যে, এক মহারাল রাধাকিলাের মাণিক্যের অভাবে কেহবা পিতৃহীন হইয়াছে, আবার কেহবা অভিভাবকহীন হইয়াছে। পরের হংখ দেখিলে দয়য় য়াহার হৃদয় গলিয়া যাইত, হংস্থের হরবস্থা মাচনে মাহার বদাগুতা সর্বাদা উদ্দামভাব ধারণ করিত, আপ্রিতের সংরক্ষণে যাহার করুণাধারা শতমুখী হইয়া গঙ্গাম্রোতের ভায় প্রবাহিত হইত, সেই নরদেবতা আল কোথায় ? প্রজার ঘরে ঘরে আল যে ক্রন্দানর রোল উঠিয়াছে তাহা তাঁহাের প্রতিমূলে উপস্থিত হইতে সমর্থ হইবে কি ?

আমরা বেদিকে চাই—৺মহারাজ রাধাকিশার মাণিকোর কীর্ত্তিকলাপ দেখিতে পাই। আগরতলার "উজ্জন্মস্তরাজপ্রাসাদ" তাঁহার অতুলনীয় কীর্ত্তি। আগরতলার ইদানীস্তন শোভাসম্পদ দেখিয়া অনেকেই বলিরা থাকেন যে, রঘুনন্দন পর্বতের অভ্যন্তরে মহারাজ রাধাকিশোর মাণিক্য, ইন্দ্রালয় নির্মাণ করিয়াছেন। বাস্তবিক রাজপ্রাসাদের উভন্ন পার্যন্তিত দীর্ঘিকাছের, নগরের নানাস্থানে নির্মিত রমণীয় সোধাবলী, বৈত্যুতিক আলোক মালা এবং বছসংখ্য স্থপ্রশন্ত রাজপথ স্বর্গীয় মাণিক্য বাহাছ্রের রাজস্বসময়ে নির্মিত হইরা এই পার্বত্যনগরকে স্বর্গীর শোভা প্রদান করিয়াছে।

প্রত্যেক রাজকার্য্যে স্বর্গীর মনারাক অভি-

জ্ঞতা, দ্রদর্শিতা, প্রশারঞ্জনতংপরতা ও অসা-श्रात्रण वृक्षिट्टकोन्टलत श्रीतिष्ठ मिश्रा शिश्रांट्य । দিলিদরবাবের সময়ে, আগরতলার ছোটলাট ফ্রেকার মহোদরের আগমন কালে. এবং মণিপুরাধিপতির ত্রিপুরারাজধানীতে ওভাগমন উপলকৈ আমরা মাণিক্য বাহাছরের বছদূর-প্রদারিণী রাজনীতির প্রমাণ পাইয়াছি। ীমুহারাজের সহিত বে সকল মহাআয়ের সন্মিলন হুইয়াছে, তাঁহারা সকলেই মুক্তকঠে তাঁহার উদারতা ও সামাজিকতার ভূয়দী প্রশংদা করিয়াছেন। মণিপুর মহারাজের শুভাগমনে আগরতলায় নিমন্ত্রিত মহারাজের তালুকদার প্রজাগণ তাঁহার সৌজন্মের যে পরিচয় পাইয়া গিয়াছেন,—তাঁহার লোকান্তরগমনে সেই অমুপম সৌৰ্বভাই উাহাদের অপরিসীম মনো-বেদনার কারণ হইয়াছে। মহারাজ রাধা-কিশোর মাণিকৈয়ে দানের কথা বর্তমান সময়ে উপস্থাদের কাহিনী বলিয়া অনুমিত হইবে। বস্তুত: "মৃক্তহন্তে অজ্ঞ দান" বলিলে যাহা বুঝার, তাহা আমরা একমাত্র স্বর্গীয় মাণিক্য বাহাত্রের নিকটেই প্রত্যক্ষ করিয়াছি।

ব্রিটিশ গ্রন্মেণ্টের প্রতি তাঁহার প্রগাঢ

শ্রদ্ধা ছিল। তিনি সচরাচর বলিতেন,—
বিটিস গবর্ণমেণ্ট ভারতীয় ভূপতিবর্গের প্রাকৃত
বন্ধ। তাহাদের মঙ্গল ভিন্ন বিটিস গবর্ণমেণ্ট কথনও অমঙ্গল চিন্তা করেন না। সেই
জন্ম গবর্ণমেণ্টের সহিত সর্ক্ববিষয়ে সোহাদ্যা
রক্ষা তাঁহার রাজনীতির মূলমন্ত ছিল।

মহারাজ রাধাকিশোর দেববর্ম ""ধর্মার্ণব" মাণিক্য বাহাত্র সংসারের বন্ধন ছিল্ল করিয়া, পুত্রকলত্ত্রের স্নেহমমতা ত্যাগ করিয়া, প্রজা-রক্ষার গুরুভার তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র বর্ত্তমান মহারাজ পঞ্চশ্রীযুক্ত বারেক্সকিশোর দেববর্ম্ম মাণিক্য বাহাহুরের উপর গ্রন্ত করিয়া ভগবৎ-সদনে গমন করিয়াছেন। বহু পুণাফলে যাহাকে আমরা পাইয়াছিলাম সেই পুণ্যক্ষয়ে পুণ্যক্ষেত্র বারাণদীধানে তাঁহাকে হারাইয়াছি! এখন ভগবানের নিকট ক্বতাঞ্চলিপুটে প্রার্থনা,— ভগবান আমাদিগের দেই সৌভাগ্য প্রদান করুন, যেন আমরা মহারাজ পঞ্চশ্রীযুক্ত বীরেক্তকিশোর দেববর্ম মাণিক্য বাহাতুরকে দীৰ্ঘদীৰী এবং সমস্ত পিতৃগুণে বিভূষ্িত দেখিয়া বিমন আনন্দের অধিকারী হইতে পারি।

পাকচক্র প্রহসন।

দ্বিতীয় দৃশ্য।

গৃহিণীর কাঁদিতে কাঁদিতে প্রবেশ।

গৃ। উ: গেলুম বে, মলুম বে, বড়

জালা,—ও কর্ত্তা গো—বলি—

(শশিম্থীর ফ্রন্ড প্রবেশ ও করোযোড়ে)

শ। হেঁই মা ও কথা বলো না গো,—
আমরা তোমার বালাই নিয়ে মরি, তুমি
মরবে কেন, জন্ম জন্ম বেঁচে থাক—পাকা
মাধার সিঁদুর পর—এই—এই—

গৃ। শশিষ্থি, তুই কি বলিদ ! বড় থে আবা ; চুল ধরে টান্! ওরে—প্রাণের টানের চেয়ে বেশী যে ! কর্ত্তা গো—এ সমর তুমি চেয়ে দেখবে না গো! (ফুঁপাইয়া ক্রেন্দন ও শশীরও তথাকরণ)

শ। (গৃহিণীর চোথ মুছাইতে মুছাইতে)
আহা ! একি হোল গো,—বুক বে যায় ! থাম
থাম—তোমার এ চোথের জল কি জল গো,—
এক এক কোঁটা জল—যেন পাহাড় ভাঙ্গা এক
একথানা টুকরো,—বুকে পড়ে আর হাড়গুলো
ভেকে চুরমার হয়ে যায়।

গৃ। শশীর গলা অভাইরা ধরিরা) তুই ত ও কথা বল্লি—আমার হুংখে আর,কার কি বল ? বলি ও কর্তা মরবার সময়ও কি একবার দেখা দেবে না,—হার হার ! কি কপাল করেই জ্বোছিলুম গো।—

্ আবার উচ্চ ক্রন্সন—শশীর ঠাঁহাকে অমুকরণ।

ত্রকান্তের প্রবেশ।—

চ। বাইরে লোক এসেছে,—কর্তামশার্গএকটু আন্তে কথা কইতে বলছেন।

গৃ। কি বলে ! লোকে এসে গাল দেবে—
চুল ছিঁড়বে ; আর আমি আন্তে কথা কইব !
ছকুম জারি শোন ! কে এত মন্ত লোকটা
এসেছে শুনি ?

চ। হরিবার। দাদাবার্র বিষের পাকা-কথা কইতে এসেছেন।

গৃ। (সহসা শাস্ত ভাবে) তা কি দেবে ঠিক হোল ?

চ। সেকথা এখনো হয়নি,—যা বলেন . জানিয়ে বাব এখন।

প্রস্থান।

शः **छननि कथां**त हिति ! जानित्त यांक

এখন! আমি যেন হাত পেতে ভিক্তে চাচ্ছি। যাত শনি, তুই একবার দরজার আড়ালে টাড়িরে কথাবার্তা গুলো শুনে আর দেখি। উনি যে অমনি হুপাঁচ হাজারে সেরে ফেলবেন, সেটী হচ্চে না। যেন আমার ছেলে না—গুনারি ছেলে! হায়রে আমার কপাঁল!

(কপালে করাঘাত)

শ। আহা আহা কর কি মা। তার চেরে আমাকে ধরে মার না। (কপালে হাত বুলাইয়া) মরে যাই। কতই লাগলো। মরেয়াই।

গৃ। তুই ছাড়া আর ত কে**উ নেই** আমাকে দরদ করতে ! তা যা বাছা—একবার কথাগুলো শুনে আয়।

শ। তা বাজি—সৰ শুনে আসছি—কিন্ত কিন্তু হেঁই মা আর ওরকম করোনা; তাহলে নিশ্চয় আমি—আমি—গলায় দড়ি দেব—

প্রস্থান।

গৃ। ভাগ্যিস শনীকে পেন্নেছিলুম—তাই বেঁচে একটু স্থৰ আছে। নইলে কি দশাই হোত। সবই এক বোট। আমি যেন—চাল ঝাড়তে ভালা কুলো।—

কর্তার প্রবেশ।

ক। দেথ গিন্নি—আজ বিকালে হরি-বাবুরা আসবেন —একটু যেন—

গৃ। বিকালে—হরিবাবু! এই সকালে এলেন—আবার বিকালে! এত ঘন ঘন আসার মানেটা কি বলমেধি?

ক। (মাথা চুলকাইরা) মানেটা কি ? তাবলছি,—আজ বিকালটা হলেই সব একরকম চুকে যাবে,—বিকালেই পাকা দেখা হরে যাবে। গৃ। এদিকে কিছু ঠিক হবার আগেই পাকাদেশী ! আর্নি কিন্ত > টে হান্ধারের কম নেব না ; এইটি মনে রেখে বা করার কোরো। ক। হবে হবে,—অতু ক্যাপো কেন ?

(কাছে আসিরা চিবুক ধরিরা) আমার ক্ষেরি, আমার পাগলি—চিরদিনই একরকম।

গি। (নাকিস্থরে) বাঁও, আর অত ্ব্রোহাগিণনা করতে হবেনা—আমি কিন্ত হাতে দেশটি হাজার পাব—তবে বিয়ে হবে।—এই বুঝে বা হয় কোরো।

ক। (স্বগত) মন্ধানে দেখছি ! কি করে
বাগাই—এদিকে ভক্ত লোককে আসতেও
বলেছি। বা আছে অদৃষ্টে হবে,—হুর্গা বলে ত
এখন ঝুলে পড়া বাক্। (দীর্ঘ নিখাস সহকারে)
তা গিরি—

গি। বল না—আমি ত কালা হইনি— _(আমান করিয়া)

ক। বলি-

গিরি আমার সোনামণি গিরি আমার ধন গিরি নইলে কে বুঝ্বে এ হৃণর বেদন!

গি। (হাসিয়া ঠেলিয়া দিরা) গাঁও,— এখন নাকি কারা কাঁদতেও পার! আর ভোলাতে হবে না—

ক। তোমার কাছে না কাঁদলে আর কার কাছে কাঁদি বল ? হাঁসি দেখে তবু বুকটা ফুলে উঠলো—

ফুলে ফুলে চলে চলে বছেকিবা মৃত্বার;
তটিনী হিল্লোল তুলে কলোলে বহিনা বার!
গিন্নির হাসিতে বেন মতি ঝরে।—কেথ
গিন্নি, পাঁচ হাজার আদার করে নিয়েছি—বল
ত এখনি এনে দিই।

গি গাঁচ হাজার—শুধু পাঁচহাজার ! কি সর্কাশ ! দেখলে কীৰ্ডি ! আমাকে না বলে * করে পাঁচ হাজার নিরে বসে আছেন ৷ কিছুতেই আমি রাজি হব না—দেখৰ দিকি—এ বিশ্বে কে দেয় ৷

ক। (সগত—কিছুতেই ত পেরে উঠনুম না—অন্ত পথে যেতে হোল দেখছি) তার জ্ঞ ভাবনা কি—আজ্জই সে সব ঠিক হয়ে বাবে— আগে টাকা—তারপর দেখা! ব্র্মলে গিরি, অত নিখাস ফেলো না। তোমার নিখাস যে সাপের বিষের চেয়েও আমাকে জর জর করে ফেলে।

গি। অত হেঁরালি গাইতে হবে না,— কাজের কথাটা ভাল করে বুঝে নেও তাপর বাজে কথা। ১০টি হাজার নইলে—

ক। বুঝেছি বুঝেছি আর বলতে হবে না, সে সবই ঠিক হবে।— এবার হোল ত ? তা বিকালে তারা আসবে— একটু খাবার উভোগ রেখো।

গি। খাবার উচ্ছোগ! বেমন__েদেবে তেমনি রাধব।

. ক। আমি ত আগে থাকতে জীচুরণে সবই দিয়ে রেথেছি—যেমনই মাইনেটি পাই অমনি এনে দিই।

গি। শোন কথার ছিরি। কুড়ি টাকা করে হাত ধরচ কে দের የ

ক। (সগত:—পঞ্চাশ টাকা করে
মাইনে বেড়েছে সেটা যদি একবার প্রকাশ
পায় তাহলেই গেছি।) তা গিরি আমার ত
ধরচও আছে—২•টাকা আর কও বল ?

গি। তোমার খরচটা কি এত গুনি! স্বই ত আমিই যোগাচিচ। কেবল স্থামা থানা, কাপড় থানা; তেলটা সাবানটা, নাপিতটা আসটা— বইত নর! তা আক্কাল বে তুমি বেলেলা হরেছ—ভা শামি দেখতে পাচ্ছি বটে,—বখন তথন কাপড়ে খোদবাই এর গন্ধ পাই,—

ক। বটে বটে ! নিজের মাথার তেলের গন্ধটা দেখছি নাকে লেগে থাকে,—

গি। তাই ত! আর সেদিন যে দরঞ্জি এক কাঁড়ি পাঞ্জাবী দিবে গেল,—তাও কি আমার কর্ম্ভেনাকি ?

ক। তার থেকে—ছেলের জন্ম কটা দখল করলে সেটা বল দেখি ?

গি। ছেন্টেক হুট জামা দিল্লেছি— সমনি গারে লেগেছে,—ভালা বাহক ! নবাবীপনা দেখে সার বাঁচিনে ! দেদিন দেখলুম নাপতেটা চুল ছেঁটে চার চারটে পরদা নিরে যাছেছে। কখনো জন্মে কালে ত তা ভানি নি, নথ কাটলে এক পরদা চুলছাটার ত পরদা এই ত চিরদিন জানি।

ক। (স্বগত—পেরে উঠব না দেখছি,
—সেই হার মানতে হবে, আগে থাকতে সদ্ধি
করাই ভাব।) তা গিলি আমিই মিটি
আনিরে দেব এখন, তাহবেই ত হোব।

গো। কি আনবে বল দেখি ?

ক। বা বলবে। (অঙ্গুলি গুণিরা) এই নোস্তার মধ্যে কচুরি নিমকি সিঙেড়া ভালপুরি —ভাজাভূজি,—আর মিষ্টি হোল, রসগোলা, পান্তরা, সন্দেশ—মেঠাই—

গি। কি বল তুমি। অত কেন ? টাকা হাতে পেয়ে তুমি দেখছি বড় বাড় বেড়ে উঠেছ।

ক। তবে কি আনব তুমিই বল। কচুরি
সিক্ষেড়া রসগোলা পান্তমা হলেই বলি চলে যায়;
সে ও খুবই ভাল। ঘরে থানকতক লুচি
ভাজি ভনকারী আনন রাবড়িটা করে
কিও।—

(শনী আন্তে আন্তে গিরির পিছন দিকে আসিয়া কানে কানে)

মিষ্টার বেশী কিছু আসে ভালই ত;
অনেকদিন ছোট মাসীমার বাড়ী তন্ধ বার্দ্ধনি।
গি। স্থগত। বেশ বলেছে, ভাগ্যিস ঋশী
ছিল। সভিটে ত —টাকা বাঁচনে ত আর
আমার লাভ নেই।

ক। তাহলে অর স্বলই আনা যাবে কি ' বল গ

গি। হাঁা—অৱ স্বন্ধ মানা বাবে! কি
কথাই বল! পাকা দেখতে আসছে, এ সমন্ন
লোকে কভ ধুমধাম করে থাওয়ার—মার তুমি
হথানা কচুরী ও হুট রসগোলা দিন্তে সারবে
কথার ছিরি শোন!

ক। (মাধা চুলকাইরা) ভাত ঠিক। এপথও জানি—ওপথও জানি,—তবে কি বলব—মরে আছি।

গি। আমার অকল্যাণ করছ। আমি কিন্তুমাথা মুঁড় খুঁড়ে মরব।

ক। বাশাই বালাই ! বেটের বাছা ষঞ্চীর দাস,—তবে কি মাজে কর।

নি। (শনীর প্রতি আত্তে আত্তে) কি বলি ?

শনী পিছন হইতে তাঁহাকে পরামর্শ দিতে লাগিল গিলি বলিয়া যাইতে লাগিলেন।

গি। নোস্থা আনাও,—কচুরী—নিম্কি, সিকেড়া, ডাণপুরি, রাধাবল্লভি, পাপড়, ঝুরি-ভাজা, ডাণভাজা, পাঁচভাজা—নাতভাজা—

क। ও वामतः !

গি। এর মধ্যেই—বাস! কি কিপ্টেই হরে দাঁড়িরেছ! বাপরে!

क। बाह्या---वन वन।

গি থ মিষ্টি জানবে, রসোগোলা, পান্ধরা,
থাকা গলা লেডিক্যানিং লর্ডক্যানিং, কাঁচা
গোলা, আবারথাব, বরফি-সন্দেশ আম
সন্দেশ অমৃতি—

ক। আরত পারিনে!

গি। ছেলের বিয়ে—না পারলে চলবে কেন বল! মিহিদানা, বড় দানা, বঁদে— (শশির প্রতি। আর কি?) ক্ষীর দই— রাবড়ি—ছানার পায়দ—

ক। হয়েছে হয়েছে—ময়দার দোকান শুদ্ধ যে উঠে এল,—

গি। (পুনরায় শনীকে) হয়েছে ত ?

শ। তা চলবে।

গি। আছা ওতেই হবে।

ক। বাঁচা গেল।

গি। কল্পন আসবে ?

ক। বটিরে ত্জন, আর হরিবাব্র পিসতত বোন তোমার সঙ্গে দেখা করতে আসবেন। তিনজনের মত আয়োজন করলেই হবে।—

গি। কথা শোন! আর ঘরের লোকরা কি মুখে তুলো গুঁজে থাকবে। বাড়িতে একটা আয়োজন হচ্চে বাড়ীর ছেলে মেয়ে চাকর বাকর সকলকেই ত কিছু কিছু দিতে হবে। ক। বেশ বেশ, ময়রার নোকান ৃত্ত জ আমি তুলে আনব এখন, তাহলে ত তুমি তুই হবে ? তাতেই আমার প্রাণ ঠাগু।

প্রস্থান।

গি। ভাগ্যিদ মনে করিয়ে দিলি—শনি, কেবল স্কুকে না—বোদেদের বাড়ীও পাঠান চলবে—দেদিন আমাকে ওরা তত্ত্ব পাঠিয়েছিল। তা আয় এখন বাদন কোদন দব ঠিক করতে হবে। প্রস্থান।

গৃহিণী চলিয়া গেলেন কি না—শশীর উকি
মারিয়া দর্শন —তার পর দাঁড়াইয়া গান, ও
মাঝে মাঝে উকি প্রদান।

গান।

মরি কি বাহাছরি—বলিহারি বাই ! কিবা কণ্ডা গিন্নি কিবা,—মুটোতে স্বাই ;

আমার মুটোতে সবাই।

ছড়াই বেমন সরবে পড়া, মাতুষ বনে গরু ভেড়া,° কলের মত চলে তারা; বেদিকে চা<u>লাই</u>।

সাবাস তুমি বৃদ্ধি থানি, বাণীর জোরে ধন্ত মানি, রাজা নেই যেএকাই রাণী;—হঃধ কেবল তাুই! ইঃ! হঃধটা কি! বাজাই তুড়ি—কোথায় আছে

এমন জ্ড়ি!

খরের কোনে আপন মনে জয় জয় গাই, জয় জয়, জয় জয়—জয় জয় গাই!

ক্রমশঃ

वाथा।

চন্দন কাঠে ঘবিদ্বা তবে গন্ধ ছড়াতে হন্ন, কন্ত্রী-পীড়নে বাছ্য-বন্ত্রে সংগীত ধারা বন্ধ। হৃদয়-ক্রমে পেষহ করু,
ছুটিবে গন্ধ-ভার,
বক্ষ-কুহরে আঘাত কর
ঝরিবে গীতের ধার।

ভারতবর্ষে 1

মহারাষ্ট্রীয় ব্রাহ্মণ কোলাস্কর।

(Felicien challaye-র ফরাদী হইতে)°

বোদাই ৮।২৩ জামুরারী ১৯০০।

শিল্প ও ধর্মের হিসাবে, অতীত ভারত
বেরপ চিন্তাকর্যক,—রাষ্ট্রনীতি ও সমাজের
হিসাবে বর্ত্তমান ভারত সেইরূপ কৌতুহল
জনক।—ইণ্ডিয়া বলিলে, আয়ুচেতনাবান
একটি সমগ্র জাতি বুঝার না;—অবশ্র কতকগুলি হিন্দুর ইচ্ছা যে এরপ জাতিতে
পরিণত হয়। এই কথার ভিতরেই
ভারতের সমস্ত সমস্যাটি রহিয়াছে।

ইণ্ডিয়া — একটি সমগ্ৰ জাতি উহা একটি মহাদেশ।—বুহৎ আরতনের हिनादवरे महारमण ; बन नःथात हिनादवरे ্মহাদেশ। ২৭ কোটি ৮০ লক্ষ ইন্স-ভারতে; ২৮ কোট ২০ লক লোক সমস্ত ভারতে। উহার একটা প্রদেশ বাঙ্গলা. ব্রেট-ব্রিটেন অপেকা বড়; মেক্সিকো সমেত যুক্তরাজ্য অপেক। উহার জনসংখ্যা অধিক।--এই মহাদেশে কত বিভিন্ন জাতি বাস করে। উত্তরে মোগলমিশ্র কাতি;—উহাদের নাক ছোট ও চাপ্টা, চোধ্ সরু। দক্ষিণে দ্রাবিড়ীর वाि ;- उहारनत्र र्तर निर्धात यक कार्ला মুখাবরবগুলা ভারী-ভারী, নাক বড়ও চওড়া, ঠোঁট মোটা। মধ্যদেশে আর্যাগণ; উহাদের मूथ नचा ও সমপরিমাণ, तर कर्मा, नाक माका ও সক। এই সকল কাভিন মধ্যে আবার. বিভিন্ন অমুপাতে বহুণ মিশ্রণ ঘটরাছে; **এই मिल्लाकिविश्वतन तर ७ मूर्या**वत्रव বিভিন্ন। এই সকল জাতির মধ্যে, কোন

আতিরই প্রকৃতরূপে কাভীরভার জ্ঞান নাই। हेरात्रा (यन कडकछनि मखनीमांज-सारात्मत्र মধ্যে কতকগুলি বিভিন্ন ভাষা ও প্রচলিত। ইণ্ডিরার প্রায় একশত ভাষা ও অসংখ্য উপভাষা ; সংস্কৃত সুধু শিক্ষিত লোক-দিগের ভাষা:--বিজ্ঞান ও দর্শনের ভাষা। আর ধর্মের কথা যদি বল,—ধর্ম সমস্ত লোককে কোথায় এক করিবে, না ধর্ম্মই উহাদিগকে বিভক্ত করিয়া রাখিরাছে। আতার বিভিন্নতা, যুরোপীরদের পরস্পরের মধ্যে বত না বিপক্ষতা ও পরকীয়ভাব আনিয়াছে. ধর্ম্মের বিভিন্নতা, ভারতবাসীদিগের মধ্যে, তাহা অপেকা আরও অধিক পরিমাণে ঐ ভাব আনিয়াছে। প্রায় 20990000 धर्यावनश्री; ६१००००० ব্ৰাহ্মণ্য महत्राबीय धन्धावनची ; २००००० অতীব মূল ধরণের পৌত্তলিক; ৭১০০০০ বৌদ্ধ (अञ्चलभीत्र বৌদ্ধগণ ইহারই অভভু জ); २७०००० ्युष्ठीन ; , ১৯०००० निथ, ১৪०००० टेबन, २०००० **गार्नि, ५**९००० रेहि हे रेहि है रेहि है रेहि है से स्वाप्त कि स्वाप्त क সকল ধর্ম পরস্পরের প্রতি দারুণ প্রতি-কুল্ডাচরণ করিয়া থাকে; ভারত কেবল ব্রিটিশ শাসনাধীনেই শাস্তি ও ধর্মসম্বীর স্বাধীনতা উপভোগ করিতে সমর্থ হইয়াছে।— আভিতে বিভক্ত; ভাষার বিভক্ত, বিশেষত ধর্মে বিভক্ত এই হিন্দুরা কি-করিয়া প্রক্রত-রূপে একটি সমগ্র আভিছে পরিণত হইবে 🏲

জনসাধারণের মধ্যে কোনপ্রকার জাতীর ভাব चार्को नाहै। छा ছाড़ा, चिंदाजीविरगत भक्कता २६ बन এक्विवादहै नित्रकत्रः ভাহারা যে একটি পৃথক স্বাতি, এ ধারণা ভাহাদের জন্মিতে পারে না, বেহেতু ভাহারা খদেশের ইতিহাস জানে না। শ্বতি যেমন ব্যক্তিবিশেষের পক্ষে, ইতিহাস ্বাতিবিশেষের পক্ষে;—পৃথক-সন্তার ভাব উৎপাদনের উহাই এক শাত্র হেতু। ভারতবিজেতারাই (পুর্বে মোগদেরা এবং একণে ইংরাজেরা), ভারতের একতা সম্পাদন कतिहारक । উठातारे এ प्राप्त नाम विहारक । পুর্ব্বে এ দেশের কোন ভাষাতেই এ দেশের সাধারণ একটা নাম ছিল না। গ্রীক ও পারসিকেরাই সিন্ধু নদীর নামে এই দেশকে করে।—এই জাতীয় ভাবের অভিহিত অভাবেই, লটীয় শাসনের অভাবেই, জাতীয় গৰ্কের অভাবেই, এ দেশকে বিজেত্গণ এত সহজে জর করিতে সমর্থ হইয়াছে। একজন हेश्बोक त्वथक वत्वन ;- "मून-कथा. देवाद-শিকের প্রতি ইণ্ডিয়ার কোন বিষেষ্ট ছিল না, বেহেতু মূলে, ইণ্ডিয়াই ছিল না; স্বতরাং যাহাকে প্রকৃতপক্ষে বৈদেশিক বলে, সেই दिरमिक्टे छिन ना।"

অধুনা, ইণ্ডিয়া একটি সমগ্ৰ জাতি নহে বলিয়া কতকণ্ডলি হিন্দুর মনোবেদনা উপস্থিত হইরাছে। কতকটা ইউরোপীর শিক্ষালাভ করার, এখন ভাহারা ধুঝিরাছে,—কোন লোক একটি প্রবল জাতিকপে প্রভিষ্ঠিত হইলে, ভদস্তত্ত্ব প্রত্যেক ব্যক্তি কতটা বুল লাভ করে। পরিবারের মধ্যে

বিশ্বমানবের মধ্যে অধিষ্ঠিত বে জনসমাল ভারা অতীব বিশাল; অভএব এই উভরের মধ্যবন্তী একটি জনসমাজ থাকা আবশ্রক এবং সেই वनम्माकरे काजीव ममाक। বে দেশাসুমাগ যুরোপীয়ের অধিকাংশ হৃদয়ে প্রজ্ঞানিত রহিরাছে ভাহা আপনার দেশভাইদের না থাকায়, হিন্দুরা বড়ই ছ:খিওঁ। তাই তাহারা জাতিসংগঠনের জক্ত এবং রাষ্ট্রিক স্বাধীনতা,— দৰ্ব্বপ্ৰকাৰ প্রকৃত স্বাধীনতা লাভের জন্ম উৎস্ক। তা'ছাড়া, স্বকীয় ইষ্ট गांवत्व উদ্দেশেই ভাহার। दैश्त्राक-भागत्वत्र প্রতিবাদ করিতেছে। তাহারা এই বলিয়া व्याक्तिश करत्र (य, प्रभीत्र लाएकत निकंछ, गामनकार्यात्र दात धात्र क्रम विलागहे इत्र ; ইংলতে না গেলে দিভিল দার্ভিদের পরীকা দেওয়া যায় না। তাহারা, ইংলও ও ভারত উভয় স্থানেই এককালে পরীকা দিবার নিয়ম• প্রবর্ত্তিত করিবার অন্ত দাবী করে। <u>তা</u>হারা • আক্ষেপ করে,—ইংলণ্ডের কর-ভারে ভারত নিপেষিত হইতেছে। উহারা জিসাব করিয়া দেখিয়াছে, যে ভারতের লোক অভি দরিত্র তাহাদিগকে ইংল্ড অপেকা তিন্ত্ৰণ অধিক কর দিতে হয়, অথচ ভারতের রাজস্ব, ইংলগু অপেকা ১৯ গুণ কম। যে সকল ধরচ विधिन-माञांद्यात जावा थत्रह, याहा देश्नरखत्र রাজ-কোষ হইতে দেওয়া উচিত, তাহা ভারতের স্কল্পে চাপানো হইরা থাকে। অনেক সময় পর্যেশ আক্রমণের ব্যয় তার্রতকে বহন করিতে হয়—শুধু এই বাপদেশে বে ভারতের रेमछ के यूष्क नियुक्त इहेम्राह्म ! विरम्बङ ভারতের কর হইতে, মোটা-মোটা বেতনের ব্দু বে জনসমাজ তাহা অতীব সংকীৰ্ণ এবং • ইংরাজকর্মচারীকে নিযুক্ত করা হয়—ভাহার

छाहारमत्र व्यविकाश्य वर्ष, जी श्वामित वर्छ, এবং পরে অব্দর গ্রহণ করিয়া আপনাদের हेश्मा ७३ थता करता ইহার উপর यिन, है:ताब-मृत्यत्नत्र एक्न ভারত-প্রদত্ত স্থদ ও ডিভিডেণ্ট আদি ধরা যায়, তাহা इटेरन जात्रज देश्मखरक श्रीं वश्मत कि विश्रन कत्र श्रामांन करत्र छात्रा वृक्षित्छ भाता यात्र। ভারতবাদীদিগের এই দরিদ্র দারিজ্য উত্তরোম্বর বর্দ্ধিত হইতেছে। এ কথাটা বড়ই সাংঘাতিক। এই দারিদ্রা হইতেই নিত্য-নিয়ত হুর্ভিক্ষ উৎপন্ন হইয়া, দেশের কোন কোন অংশকে ছার্থার করিয়া দিতেছে। অনেকেই বলে, ভারতে থান্তের অপ্রভূল হয় না; হুর্ভিক্ষের সময় ধাক্ত চাউল আদি অপেকাকত সমূদ্ধ প্রদেশ হইতে খরিদ করিতে পারা ধায়; কিন্তু আসল কথা, যে স্থানে তুৰ্ভিক্ষ হয়, সে " স্থানের লোকেরা ধনের অভাবেই থাজসামগ্রী কি<u>নি</u>তে পারে না। প্রতি বৎসরেই শত সহস্র লোক এইরূপে মৃত্যুমুখে পতিত হয় ৷ অবশ্য শ্রমশিরের উরতি করিয়া ভারত সমৃদ্ধি লাভ করিতে পারে। অতএব নবপ্রস্থত দেশীয় শ্রমশিল্পকে উৎসাহ দেওয়া আবশুক: কিন্তু ভাহা দূরে থাকুক, ভাহাকে কোনপ্রকারে রকা না করিয়া, ইংরাজ-শ্রমশিল্পের প্রবল প্রতিযোগিতার মূথে তাহাকে নিকেপ করা হইয়াছে। এমন কি, পূর্বে বিলাডী তুলার কাপড়ের উপর যে শুল্ক ছিল তাথা রহিত করা হইরাছে এবং ল্যাকেলিয়ারের প্রভৃত শভার প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া, দেশী কাপড়ের উপর excise-তব স্থাপিত হইয়াছে। এই সমস্ভ ভাবমুশক ও স্বার্থমূলক কারণবশতই **চভবিভ হিন্দুরা চাহে** যে, এখন হইভৈই

ভাহাদের জাতীর স্বাত্ত্য জ্ঞানের উত্তেব হ:
এবং ভবিষ্যতে ভারতবাদীরা পূর্ণ স্বাধীনত
লাভ করিতে সমর্থ হয়।

এই উদ্দেশেই উহারা নবাভারত সংগঠনের করিতেছে। উত্যোগ উহারা তাহাদের যে কার্য্য আরম্ভ হইরাছে তাহা স্থানিত্র হইতে এখনও বহু শতাকী শাগিবে। এই উদ্দেশ্য সাধনের প্রকৃষ্ট উপায় কি, সেই বিষয়ে উহাদের মধ্যে দর্বনাই অংশোচনা হইরা থাকে। উহাদের মধ্যে কতকগুলি লোক কেবল ধর্মসংস্কার লইয়াই ঝাপুত। ভাহারা আশা করে,—হয় ব্রাহ্মণ্যধর্মের প্রবশ শক্তি, সমস্ত ভারতের একতা সম্পাদন করিবে—কেননা, বান্দণ্যধর্ম সর্বাপেকা পুরাতন ধর্ম, ধর্ম্মের প্রবল শক্তি মুসলমান ভারতকে একস্থত্রে বছ করিবে--কেননা, मूननमानधर्य नर्सार्यका नामाभूनक,—डेहाब মধ্যে কোন জাতিভেদ নাই। আবার কেহ কেহ ভাবে, সামাজিক সংস্কারই দেশের লোকের —বিশেষত নারীজাতির জ্ঞান ও নীতির উন্নতি সাধন পক্ষে বিশেষরূপ আবশুক। ভাহাদের মতে, শিকাই তাহার প্রকৃষ্ট উপায়। আবার কেহ কেহ কেবল আর্থিক উন্নতিরই আকাজ্ঞী। অবশু, জান ও নীতির উন্নতি হইলে, জাতীয় ভাবের উন্মেষ আপনা হইতেই হইবে। আবার কেহ কেহ রাষ্ট্রনৈতিক উন্তমের একান্ত পক্ষপাতী। এই উদ্দেশে, ভারতীয় সভা-সমিতির নির্বাচিত কতকগুলি প্রতিনিধি, প্রতি বংগরে, ভারতের কোন-না-কোন প্রাম্ভে স্থাসানাগ-কংগ্রেদে একত সমবেত হইয়া থাকে। এই জাতীয় পরিবদের সহিত ইংরাজ-गतकारतत रकान मध्यव ना थाकिरमञ्जू देशहे.

ভাবী हिन्मू-भार्मिर्याण्डेत जान वनिरम् इत्र। হিন্দুদের মধ্যে যাহারা সর্বাপেকা ক্বতবিভ ও স্নিকিত ভাহারাই এই ব্রাতীয় পরিষদে, বক্তৃতা করে; রাজ-নৈতিক সংস্কার,—এমন কি সামাজিক সংস্থারের আবশ্রকতা প্রতি-পাদন করে:—এইরূপে উহারা ভারতের নবৈদিত লোক্ষতের ব্যাখ্যা করিয়া থাকে। যাহারা এইরূপ রাষ্ট্রনৈতিক চেষ্টায় ব্যাপৃত, তাহাদের অন্তর্ভ কতকগুলি হিন্দু যুবকের স্হিত আমার সাক্ষাৎ হইয়াছে। খুব উচ্চতর যুরোপীয় শিক্ষা লাভ করিয়াছে, তাহারা ইংরাঞ্জি-ভাষায় বেশ অনর্গল কৃথিতে ও লিখিতে পারে। তাহারা, উদারমতাবলম্বী ইংরাজ ও ফরাদী তত্ত্বতোদিগের গ্রন্থ সকল থুব আগ্রহ সহুকারে পাঠ করে, ইংরাজী ও ফরাসী রাষ্ট্রবিপ্লবের ব্রতাস্ত সমস্তই জানে, এবং কথন কথন সামাবাদী সোস্তালিষ্ট সম্প্রদায়ের মত ও বিখাসের প্রতি অমুরাগ প্রদর্শন করে। কোন স্বাধীন জাতির অন্তর্ভুক্ত নহে বলিয়া তাহারা বড়ই কুল। তাহাদের মধ্যে একজন আমাকে বলিল; "আমরা খাধান মনুষ্য নহি; —আমরা মহুয়াই নহি।" তাহাদের মধ্যে অনেকেই ইংরাজ-জাতির উদারতার পক্ষপাতী रहेबां ७, हेश्बाब-बाकश्रुक्यिनिश्व विष्वती ; তাহাদের মতে ইংরাজ রাজপুরুষগণ ভারতের উপর অত্যাচার করে। ঠিক এই সময়ে, (জামুমারী ১৯০০) সপ্তাহে-সপ্তাহে ভাহারা দক্ষিণ আফ্রিকায় ইংরাজের আকস্মিক পরা-জন্মের সংবাদ প্রাপ্ত হইতেছে; বোয়ারদের জয়ে এই হিন্দু যুবকেরা আনন্দ প্রকাশ করিয়া থাকে ৮ জাপানের উপর তাহাদের খুব ভক্তি।

তাহারা মনে করে:—জাপানীরা আপনাদের
স্বাধীনতা রক্ষা করিয়াছে, শক্তিশালী হইরাছে,
—ভবিয়তে উহারাই এসিয়াকে উদ্ধার করিব।
ধর্মের কথা যদি বল, অনেকেই প্রাচীন ধর্মের
মত ও বিশ্বাস হইতে আপনাকে বিনির্ম্মুক্ত
করিয়াছে; তবে, যুবকনিগের স্বধর্মে অবিশ্বাস
মে খুব দৃঢ় তাহাও বলা যায় না। উহাদের
মধ্যে একজন, আমার একটি বল্পর নিকট
বলিয়াছিল;—আর কোন দেবতাকে সে
বিশ্বাস করে না, কেবল :বিশ্বাস করে সে
হর্গাকে; এই হুর্গা সম্বন্ধে তার কোনপ্রকার
সংশের নাই—হুর্গা মাঠ ময়লানে বিচরণ করেন;
একদিন সে য়ান্তার মোড়ে তাঁকে দেখিতে
পাইয়াছিল…

এই সকল যুবকদিগের মধ্যে,বোস্বাইনগরে, কোলাস্কর নামক একটি সৌম্য হিন্দু যুবকের সহিত আমার পরিচয় হয়। এই যুবকটি ব্যুদ্ধণ —উকীল। ইনি উৎকৃষ্ট ইংরাজী শিকা পাইয়াছেন; ইহার অনেকগুলি পত্নী, তাহার মধ্যে একটি পাঁচ বৎসরের বালিকা।

ইনি য়ুরোপীয় ধরণে কাপড় পরেন, এবং মস্তকে তাঁহার জাত্তি-স্চক উফীয ধারণ করেন।

তিনি বলেন,—তিনি সমন্ত ধর্মবিশ্বাসের বন্ধন কটিছিয়া উঠিয়াছেন। তাই আমাদের হোটেলে তাঁহাকে নিমন্ত্রণ করিতে সাহস পাইলাম। একজন ব্রাহ্মণ, ক্রিয়ানিষ্ঠ ভক্তিনান্ ব্রাহ্মণ,—অত্য বর্ণের সহিত—বিশেষত মুরোপীয়দিগের সহিত একত্র ভোজন করিতে পারে না; কিন্তু কোলান্তর অনেক সমন্ত্র আমাদের নিকট বলিয়াছেন—তিনি দেশের প্রাচীন প্রথাসমূহের বন্ধন একেবানে ছিল্ল

করিয়াছেন। কিন্তু তবু তিনি অনেকটা ইতত্তত করিতে লাগিলেন। অবশেবে স্বকীর পরিবারবর্গের মত না লইয়াও আমার নিময়ণ গ্রহণ করিলেন; কিন্তু এইটুকু আমাকে অহরোধ করিলেন, আমি বেন তাঁহাকে গো-মাংস না পাওয়াই; গরু—পবিত্র পশু; একজন অবিধানী হিন্দুর পকেও গোমাংস ভক্ষণ করাটা অতীব জমন্ত ব্যাপার। চিনিতে পারিলে স্কলাতের নিক্ট পাছে অপদস্থ হেইতে হর, এই ভয়ে তিনি মুসল্মানী টুপি পরিয়া আসিয়াছিলেন।

আমাদের বন্ধুটি আমাদের ভক্তভার শোধ

বিতে চাহিলেন; তাঁহার বাটাতে ভোকন
করিবার অক্স আমাদিগকে নিমগ্রণ করিলেন।
তাঁর এই নিমন্ত্রণ উপলক্ষে, তাঁর মার সহিত
তাঁহার একটু বচনা হইরাছিল। ভারতে,
বিধবারা পুত্রের আজ্ঞাধীন; কিন্ত গৃহের মধ্যে
মেচ্ছদের আনিয়া গৃহকে অপবিত্র করা হইবে
— এই করনাটি তাঁহার মাতার বড়ই থারাপ
লাগিল। তিনি কিছুতেই রাজি হইলেন না।
পারের এইটুকু সন্মতি বিলেন যে, তাঁহার পুত্র
সাহেবদের খানা দিন, কিন্তু তাঁহাদের সহিত
একসঙ্গে বিসরা আহার করিতে পারিবেন না।

ব্রাহ্মণ চাকরের। থাওঁ পরিবেশণ করিছে
অস্বীকৃত হইল । তাহারা বরং চাক্রী ছাড়িরা
চলিরা বাইবে তব্ এ কাল করিবে লা। তাই
পরিবেশণের লক্ত মুসলমান খান্সামা আনিতে
হইল।

व्यामवा मिनि-दन्डवा रूप, व्याञ्चान्-दन्डवा ভাত,আমের পিঠা খাইলাম —পরিশেষে পানের... বীড়া চিবাইতে লাগিলাম। আরু, কোলাসকঃ। थाकियां (क्वन অনশন मर्भन লাগিলেন। ষ্থন আহার করিয়া যাইতেছি তথন দেখিলাম, একটা সক্ষ ঢাকা-বারাণ্ডা-পৰের দূর প্রান্তে একটি বুরা রমণী,— উল্লেখন বিজ্ঞান বিহবণ ও হতাশ ভাবে এক কোণে দাঁড়াইয়া আছেন। ইনিই व्यामाद्यत वक्षत्र कननी। व्यामत्रा व्यत्नकदात्र নতশিরে তাঁহাকে নমন্তার করিলাম, কিন্তু তিনি প্রতিনমন্বার করিলেন না। মেচ্ছম্পর্লে গৃহ অপবিত্র হওয়ার সিঁড়িতে একপ্রকার হল্লেটে হুৰ্গন্ধ ভবল পদাৰ্থ ভড়ানো হুইবাছে। জিনিসটা কি আমরা বুঝিতে পারিলাম, কেননা, আমরা জানি, ভারতবর্ষে গরু অতীব পৰিত্র... শীক্ষোতিরিজনাথ ঠাকুর।

বসস্ত বায়ু।

চারিদিকে ঝরে পড়ে বসস্তের ফুল,
আকুল বকুল চাঁপা গোলাপ পারুল;
সমীরণ খেরে চলে বার!
সে কভু গাঁথেনা মালা, আনমনে সারাবেল।
পরে না গলার;
সে কভু রাখেনা শ্বতি স্বতনে নিভি নিভি
বুক্তের তলার;
সে পার্গর, চুটিয়া পলার!

বসস্থের সব স্থতি চলে উড়াইরা;
ধরণীর চারিদিকে দের ছড়াইরা—
কত গছ কত পূপা দল,
কত বিহগের গান, মধুপের মধুতান,
পরশ শীতল;
সংসা স্বার মনে জালে ত্থ অকারণে
জালে অঞ্জল;
বায়ু ধার আপনীবিহনদ।

পাওয়া ও হওয়া।

সেই পাওয়াতেই মাকুষের মন আনন্দিত বে পাওয়ার সঙ্গে না-পাওয়া জড়িত হয়ে আছে।

বে স্থ কেবলমাত্র পাওরার ঘারাই
আমাধের উদ্মন্ত করে তোলে না—অনেকথানে
না-পাওয়ার মধ্যে যার স্থিতি আছে বলেই যার
ওলন ঠিক আছে—সেই জপ্তেই যাকে আমরা
গভীর স্থথ বলি—অর্থাৎ, যে স্থেরর সকল
অংশই একেবারে স্মুম্পন্ত স্বযুক্ত নয়, যার এক
অংশ নিগৃত্তার মধ্যে অগোচর, যা প্রকাশের
মধ্যেই নিঃশেষিত নয়, তাকেই আমরা উচ্চ
প্রেণীর স্থথ বলি।

পেটভরে আহার করলে পর আহার করবার স্থাটা সম্পূর্ণ পাওয়া বায় ;— দর্শনে ম্পান্ত ভাবে সম্পূর্ণ আয়ত করা হয়। সে স্থার প্রতি বতই লোভ থাকুক্ মাত্রব ভাকে আনন্দের কোঠার ফেলে না।

কিন্তু যে সৌন্দর্য্যবোধকে আমরা কেবলমাত্র ইন্দ্রির্বাধের হারা সেরে ফেল্তে
পারিনে— যা বীণার অন্তর্ননের মত চেতনার
মধ্যে স্পন্দিত হতে থাকে, হা সমাপ্ত হতেই
চার না সে আনন্দকে আমরা আহারের
আনন্দের সঙ্গে এক শ্রেণীতে গণ্যই করিনে।
কেবলমাত্র পাওয়া তাকে অপমানিত করে না,
না পাওয়া তাকে গ্রেরব দান করে।

আমরা জগতে পাওরার মত পাওরা তাকেই বলি যে পাওরার মধ্যে জনির্কারতা আছে। বে জ্ঞান কেবলমাত্র একটি খবর, তার মূল্য অতি জ্ঞান—কেন না, দেটা একটা ক্রমণ জানার মধ্যেই ফুরিরে যায়। কিন্তু বে

জ্ঞান তথা নয়, তন্ধ, অর্থাৎ যাকে কেবল

একটি ঘটনার মধ্যে নি:শেষ করা বায় না—

যা,অসংখ্য অতীত ঘটনার মধ্যেও আছে এবং যা

অসংখ্য ভাবী ঘটনার মধ্যেও আশিনাকে

প্রকাশ করবে—যা কেবল ঘটনাবিশেষের

মধ্যে ব্যক্ত বটে কিন্তু অনস্তের মধ্যে অব্যক্ত
রূপে বিরাজমান সেই জ্ঞানেই আমাদের আনন্দ;

কেবলমাত্র বিভিন্ন তুচ্ছ ধবরে নিউত্তে জড়বুছি

অলস লোকের বিলাস।

ক্ষণিক আমোদ বা ক্ষণিক প্রয়োজনে আমরা অনেক লোকের সঙ্গে মিলি—আমাদের কাছে তারা সেইটুকুর মধ্যেই নিঃশেষিত। কিন্তু যে আমার প্রিয় কোনো এক সময়ের আলাপে আমোদে কোনো এক সময়ের প্রয়োজনে তার শেষ পাইনে। তার সঙ্গে যে মুময়ে যে আলাপে যে কর্ম্মে নিযুক্ত আছি, সে সময়কে সেই আলাপকে সেই কর্মকে বছল্রে ছাড়িরে রয়েছে। কোনো বিশেষ দেশে বিশেষ কালে বিশেষ বটনার আমরা তাকে সমাপ্ত করলুম বলে মনেই করতে পারিনে—সে আমার কাছে প্রাপ্ত অপ্রাপ্ত —এই অপ্রাপ্তি তাকৈ আমার কাছে এমন আনলম্মর করে রেপেছে।

এর থেকে বোঝা যায় আমাদের আত্মা বে পেতেই চাচেচ তা নয় সে না পেতেও চায়। এই জন্তেই সংসারের সমস্ত দৃশ্রুপ্রের মাঝখানে দাঁড়িয়ে সে বল্চে কেবলি পেয়ে পেয়ে আমি আন্ত হয়ে গেলুম—আমার না-গাওঁরার ধন কোথায় ? সেই চিরদিনের না-পাওরাকে পেলে যে আমি বাঁচি;— বভোবাচো নিবর্ত্তন্তে অপ্রাপ্য মনসা সহ
আনন্দং ব্রহ্মণো বিদ্যান ন বিভেতি ক্লাচন—
বাক্য মন বাঁকে না পেয়ে ফিরে আসে সেই
আমার না-পাওয়া ব্রহ্মের আনন্দে আমি সমস্ত
কুদ্র ভয় হতে যে রক্ষা পেতে পারি।

এই জ্বন্থেই উপনিষৎ বলেছেন "অবিজ্ঞাতম্ বিজ্ঞানতাং বিজ্ঞাতম্ অবিজ্ঞানতাম্"— যিনি বলেন আমি তাঁকে জানিনি তিনিই জানেন, যিনি বলেন আমি জেনেছি তিনি জানেন না।

আমি তাঁহাকে জান্তে পারলুম না এ
কথাটা জানবার অপেক্ষা আছে। পাখী
যেমন করে জানে আমি আকাশ পার হতে
পারলুম না তেমনি করে জানা চাই—পাখী
আকাশকে জানে বলেই সে জানে যে আকাশ
পার হওয়া গেল না। আকাশ পার হওয়া
গেল না জানে বলেই তার আনন্দ—এই জন্তেই
সে আকাশে উড়ে বেড়ায়—কোনো প্রাপ্তি
নয়, কোনো সমাপ্তি নয়, কোনো প্রয়েজন নয়,
কিন্তু উড়েই তার আনন্দ।

শাখী আকাশকে জানে বলেই সে জানে আমি আকাশকে শেষ করে জানলুম না এবং এই জেনে না জানাতেই তার আমন্দ—ব্রহ্মকে জানার কথাতেও এই কথাটাই খাটে। সেই জন্মেই উপনিষ্ধ বলেন:—"নাহং মন্তে স্থানেতি নো ন বেংদতি বেদ চ"—আমি যে ব্রহ্মকে বেশ জিনেছি এও নয় আমি বে একেবারে জানিনে এও নয়।

কেউ কেউ বলেন আমরা ত্রন্ধকে একে-বারেই জান্তে চাই—যেমন করে এই সমস্ত জিনিষপত্র জানি নইলে আমার কিছুই হ'ল না।

আমি বলচি আমরা তা চাইনে। ° যদ্দি চাইতুম তাহলে সংসারই আমাদের পক্ষে

আমার মনে আছে. যাঁরা ব্রহ্মকে চান তাঁদের প্রতি বিজ্ঞপ প্রকাশ করে একজন পণ্ডিত অনেকদিন হ'ল বলেছিলেন— একদশ গাঁজাখোর রাত্রে গাঁজা খাবার সভা করেছিল। টীকা ধরাবার আগুন ফুরিয়ে যাওয়াতে ভারা সৃক্টে পড়েছিল। তথ্ন রক্তবর্ণ হয়ে আকাশে উঠ্ছিল। একজন বলে, ঐ যে, ঐ আলোতে টীকা ধরাব। ব'লে টীকা নিয়ে জানলার কাছে দাঁড়িয়ে চাঁদের অভিমূথে বাডিয়ে ধ'রলে। টীকা ধ'রল না। তথন আর একজন বল্লে, দূর চাঁদ বুঝি অত কাছে! দে আমাকে দে! বলে সে আরো কিছু দুরে গিয়ে টীকা বাড়িয়ে ধরলে—এমনি করে সমস্ত গাঁজাখোরের শক্তি পরাস্ত হল-টীকা ধ'রলনা। এই গল্পের ভাবখানা হচ্চে এই, যে, যে ব্ৰহ্মের সীমা পাভয়া যায় না তাঁর সঙ্গে কোনো সম্বন্ধ স্থাপনের চেষ্টা এই রক্ম বিডম্বনা।

এর থেকে দেখা যাচেচ কারো কারো
মতে সাংসারিক প্রার্থনা ছাড়া আমাদের মনে
আর কোনো প্রার্থনা নেই। আমরা কেবল
প্রয়োজন সিদ্ধিই চাই—টীকের আমাদের
আগুন ধরাতে হবে।

এ কথাটা যে কত অমৃশক তা ঐ চাঁদের
কথা ভাব লেই বোঝা যাবে। আমরা
দেশলাইকে যে ভাবে চাই চাঁদকে সে ভাবে
চাইনে—চাঁদকে চাঁদ বলেই চাই—চাঁদ
আমাদের বিশেষ কোনো সন্ধীর্ণ প্রবােজনের
অতীত বলেই তাকে চাই। সেই চির সভ্থ

অসমাপ্ত পাওরার /চাওরাটাই সব চেরে বড়
চাওরা। সেই অত্যেই পূর্ণচক্র আকাশে
উঠ্লেই নদীতে নৌকার, ঘাটে, গ্রামে, পথে,
নগরের হর্মাতলে গাছের নীড়ে চারিদিক
থেকে গান ক্রেগে ওঠে—কারো টাকের আগুন
ধরে না বলে কোথাও কোনো ক্রোভ

বৃদ্ধ ত তাল বেতাল নন যে তাঁকে আমরা
বৃদ্ধ করে নিয়ে প্রয়োজন দিদ্ধি করব।
কেবল প্রয়োজন দিদ্ধিতেই পাওয়ার দরকার—
আনন্দের পাওয়াতে ঠিক তার উপ্টো। তাতে
না-পাওয়াটাই হচ্চে দকলের চেয়ে বড়
জিনিষ। যে জিনিষ আমরা পাই তাতে
আমাদের যে হৃপ সে অহয়ারের হৃপ। আমার
আয়ত্তের জিনিব আমার ভৃত্য আমার অধীন—
আমি তার চেয়ে বড়।

কিন্তু এই ইথই নামুষের সব চেয়ে বড় হথ নর। আমার চেয়ে যে বড় তার কাছে আত্মসমর্পন করার হথই হচ্চে আনল। আমার যিনি অতীত আমি তারই, এইটি জানাতেই অভর, এইটি অনুভব করাতেই আনল। যেখানে ভূমানল সেখানে আমি বলি, আমি আর পারলুম না, আমি হাল ছেড়ে দিলুম, আমি গেলুম! গেল আমার অহন্ধার, গেল আমার শক্তির ঔদ্ধত্য। এই না পেরে ওঠার মধ্যে এই না পাওয়ার মধ্যে নিজেকে একান্ত ছেড়ে দেওয়াই মুক্তি।

মানুষ ত সমাপ্ত নয়—সেত হয়ে বয়ে

যায়নি—সে যেটুকু হয়েছে সেত অতি অল্পই।
ভার না-হওয়াই যে অনস্ত। মানুষ যথন
আপনার এই হওয়া-ক্ষপী জীবের বর্ত্তমান
প্রয়োজন সাধন করতে চার তথন প্রয়োজনের

नामग्रीत्क नित्वव अञादित मत्त्र এक्ट्रवादव সম্পূর্ণ করে চারিদিকে মিলিয়ে নিতে হয়-তাব বর্ত্তমানটি একেবারে সম্পূর্ণ বর্ত্তমানকেই চাচ্চে। কিন্তু সে ত কেবলি বর্ত্তমান নয়--দেত কেবলি হওয়া-রূপী নয়, তার ना-इ ७ ब्राज़ भी व्यवस्थ यनि किंडू है পায় তবে তার আনন্দ নেই। •পাওয়ার দঙ্গে অনম্ভ না-পাওয়া তার দেই অনস্ভ না-হওয়াকে আশ্রম দিক্তে খান্ত দিকে। এই बर्ख्य सार्य दक्षिन वर्ण अत्नक दम्य नुम, অনেক শুন্লুম, অনেক বুঝ্লুম-কিন্তু আমার ना-दिश्वात धन, ना द्यानात धन, ना द्वाचात धन काथाय ? या अनानि वरनहे अनुस्त्र वा হয় না বলেই বায় না—যাকে পাইনে বলেই হারাইনে, যা আমাকে পেয়েছে বলেই আমি আছি, সেই অশেষের মধ্যে নিজেকে নিংশেষ জন্তেই আত্মা कॅान्ट। त्नहे. অশেষকে সশেষ করতে চায় এমন ভয়ন্তর নির্বোধ দে নয়। যাকে আশ্রয় করবে তাকে আশ্রম দিতে চায় এমন সমূলে আত্মহাতী नय ।

পাওয়া মানেই আংশিকভাবে পাওয়া।
প্রয়োজনের জয়ে আমরা যাকে পাই তাকে
ত কেবল প্রয়োজনের মতই পাই তার বেশি
ত পাইনে। অর কেবল থাওয়ার সঙ্গে মেলে,
বস্ত্র কেবল পরার সঙ্গেই মেলে, বাড়ি কেবল
বাসের সঙ্গে মেলে। এদের সঙ্গে আমাদের
সম্বন্ধ ঐ সকল ক্ষুদ্র প্রয়োজনের সীমাতে এদে
ঠেকে, সেটাকে আর লঙ্ঘন করা যায় না।
এই রকম বিশেষ প্রয়োজনের সঙ্গার্ণ
পাওয়াকেই আমরা লাভ বলি। সেই জয়ে
ক্রিমারকৈ লাভের কথা যথন ওঠে তথনও ভাষা •

स्वर व्यवस्थात स्थापन क्षेत्र वास्त्र व्यवस्थात स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्

কিন্তু পাওয়া বল্তে ৰদি আমরা এই, বুঝি তবে ঈশস্তকে পাওয়া হতেই পারে না। আমরা বা কিছুকে পেলুম বলে মনে করি সে আমাদের ঈশর নয়—তিনি আমাদের পাওয়ার সম্পূর্ণ অতীত—তিনি আমাদের বিষয় সম্পতি ননু!

ও জারগার আমাদের কেবল হওরা—
গাওরা নর। তাঁকে আমরা পাব না, তাঁর
মধ্যে আমরা হব। আমার সমস্ত শরীর মন
ক্লর নিয়ে আমি কেবলি হরে উঠ্তে থাকব।
ছাড়তে ছাড়তে বাড়তে বাড়তে মরতে মরতে
বাঁচতে বাঁচতে আমি কেবলি হব। গাওরাটা
কেবল এক অংশে গাওরা, হওরাটা বে
একেবারে সমগ্রভাবে হওরা—েনে ত লাভ নয়
সে বিকাশ।

ভীক লোকে বল্বে, বল কি ! তুমি ব্রহ্ম হবে ! এমন কথা তুমি মুখে আন কি করে ! ইা, আমি ব্রহ্মই হব । এ কথা ছাষ্ট্রা অন্তকথা আমি মুখে আন্তে পারিনে—আমি অসকোচেই বল্ব, আমি ব্রহ্ম হব । কিন্তু আমি ব্রহ্মকে পাব এতবড় ম্পর্জার কথা বল্তে পারিনে ।

তবে কি ব্ৰেক্ষতে আমাতে তফাৎ নেই ?
মন্ত তফাৎ আছে। তিনি ব্ৰন্থ হয়েই আছেন,
আমাকে ব্ৰন্থ হতে হতে। ক্লিনি হয়ে গ্ৰেছেন,
আমি হবে উঠছি আমাদের ক্লনের মধ্যে
এই নীনা ক্লিচে । হবে থাকার সলে হবে

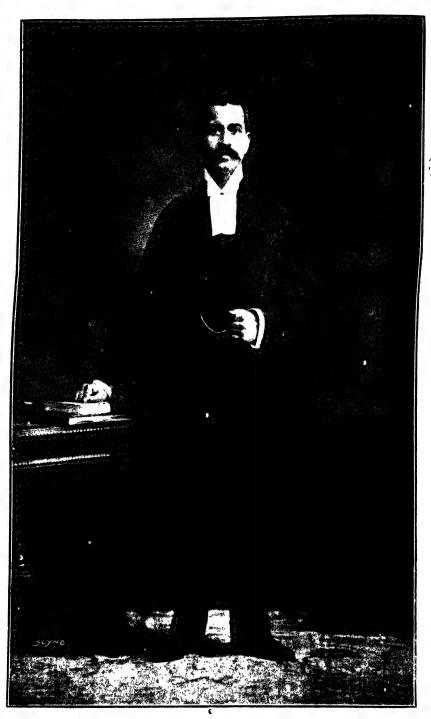
নাৰী কেবলি বশ্চে আৰি নাৰ্থে ব্যাধা নে ভার লাৰ্থা নৰ—নে বে বজ কৰা, ছাইনাং নেই ভার বিনব। ভাই সে সমুদ্রের নালে মিলিভ হবে ক্রমাগভই সমুদ্র হবে বাচ্চে—ভার আর সমুদ্র হওরা শেব হল না।

বস্তুত চরমে সমুদ্র হতে থাকা ছাড়া তার
আর গতিই নেই। তার ছই দীর্ঘ উপক্লে
কত কেত কত সহর কত গ্রাম কত বন আর্দে
তার ঠিক নেই—নদী তাদের তৃষ্ট করতে
গারে পৃষ্ট করতে পারে, কিন্তু তাদের সঙ্গে
মিলে বেতে পারেনা। এই সমস্ত সহর গ্রাম
বনের সঙ্গে তার কেবল আংশিক সম্পর্ক।
নদী হাজার ইচ্ছা করলেও সহর গ্রাম বন হরে
উঠ্তে পারেনা।

সে কেবল সমুদ্রই হতে পারে। তার ছোট সচল জল সেই বড় অচল জলের একই জাত। এই জল্পে তার সমস্ত^ক উপকৃল পার হরে বিশ্বের মধ্যে সে কেবল ঐ বড় জলের সঙ্গেই এক হতে পারে।

. সে সমুদ্র হতে পারে কিন্তু সে সমুদ্রকে পেতে পারে না। সমুদ্রকে **সংগ্ৰহ** করে 🗸 এনে নিৰের কোনো **ৰিশে**ষ প্রয়োজনে তাকে কোনো বিশেষ গুহা গহররে লুকিয়ে রাখ্তে পারে না—যদি কোনো ছোট জনকে দেখিয়ে সে মুড়ের মত বলে, হাঁ সমুদ্রকে এইখানে আমি নিজের স্ম্পত্তি করে রেখেছি ভাকে উত্তর দেব, ও ভোমার সম্পত্তি হতে পারে কিন্তু ও তোমার সমূদ্র নর। তোমার চিরত্তন অপধারা এই অলাটাকে চার না, সে नबूजरकरे हात्र। देकसे मा तन नबूज रूख **हांट्क रम ममुख्यक रमाय हांटक मा ।**

আমরাও কেবল ব্রহাই হতে পারি আর



শীগুক্ত সত্যেক্ত প্ৰসন্ন সিংহ

७ भागता गण्गृर्ग इंड्रेट्सी धनी इंख्या मानी इंदर्श विद्यान इंदर्श किइएडर सामना हि एक থাকিনে-সমন্তই আমরা পেরিয়ে যাই; পেরতে পারিনে ব্রশ্নকে। ছোট দেখানে বড় হয়। কিন্তু তার সেই বড় হওরা শেষ হক্ল। — এই তার আনন্দ।

আমরা এই আনন্দেরই সাধনা করব। আমরা ব্রন্ধে মিলিড হয়ে অহরহ কেবল ব্রন্ধই হতে থাক্ব। যেখানে বাধা পাব দেখানে, হয় ভেঙে নয় এড়িয়ে যাব। অহঙ্কার, স্বার্থ এবং अष्ठा राशान निक्न वानित्र छ भ रख প্রতিমুহূর্তে পথ রোধ করে দাঁড়াবে দেখানে তাকে ক্ষয় করে ফেলব।

নয় ৷ সমস্ত দিন সমস্ত চিন্তার সমস্ত কাৰে একেবারে সমগ্র নিজেকে ত্রন্দের অভিমুখে **ठानना कत्र-- উ**ल्टिक्टिक नग्न, निर्वत्र निरक नग्न क्वनहे त्नहे ज्ञात विक, त्यात्र विक, অমৃতের দিকে। সমুদ্রে নদীর মত তাঁর সঙ্গে মিলিত হও-তাহলে তোমার সমস্ত সঁতার ধারা কেবলি তিনিময় হতে থাকবে, কেবলি তুমি ব্রন্ধ হয়ে উঠ্বে। তাহলে তুমি ভোমার ममञ्जीवन निष्य ममञ्ज अखिष निष्य कान्छ পারবে ব্রহ্মই তোমার পরমা গভি, পরমা সম্পৎ, পরম আশ্রয়, পরম আনন্দ, কেননা তাঁতেই তোমার পরম হওয়া।

শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর।

সত্যেন্দ্রপ্রসন্ন সিংহ।

ভারত শাসনে প্রথম ভারতবাসী।

গত ১৯শে এপ্রিল অনারেবল এস পি সিংহ মহোদর বড়লাটের মন্ত্রণা সভার সভাপদের কর্ম্ম ভার গ্রহণ করিয়াছেন। ভারতে ব্রিটিশ সামাজ্যের শাসন কর্ত্তগণের গুপ্তমন্ত্রণাসভার গণ্ডির মধ্যে ভারতবাসীর এই প্রথম প্রবেশ। এরপ উচ্চ সন্মান ও পদ লাভ করিয়া সিংহ মহোদয় কেবল বে বাঙ্গালীর মুখোজ্জল করিয়াছেন, তাহা নহে, তিনি আৰু সমগ্ৰ ভারতের গৌরবস্বরূপ। তাঁহার জীবনী দেশের প্রায় সকল পত্রেই প্রকাশিত হইয়াছে, তথাপি আমরা তাঁহার জীবনের একটা সংক্ষিপ্ত ইতিহাস প্রকাশ করিবার লোভ সম্বরণ করিতে পারিলাম না।

গ্রামে ১৮৬০ সালের ২৪শে মার্চ্চ সভ্যেন্ত্র-প্রসন্ন জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতা সিতিকণ্ঠ সিংহের তিনি কনিষ্ঠ পুত্র ছিলেন। বশতঃ তুই বৎসর বয়সের পুর্বেই তিনি পিতৃ-হীন হন। কিন্তু তাঁধার মাতা ও শিক্ষকের তাঁহার বাল্যশিকার কোন অভাব হয় নাই। দেই অল বয়স হইতেই তিনি অক্লান্ত শ্রম ও অচল অধ্যবসায়ের শিক্ষা করিয়াছিলেন। এথানে_ই বিশ্ববিভালয় হইতে কোন উপাধি গ্রহণ করিবার পূর্বেই তিনি ও তাঁহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা শিকা সমাধির क्य हेश्ना अभन करतन । ভথার সভ্যেক্ত ্বীরভূম জেলার রারপুর নামে এক কুত্র • প্রসর আইন বিভাগে প্রবেশ করিয়া অরকালের

মধ্যেই আপন প্রতিভার পরিচয় দান করেন। তাঁহার অসাধারণ বুদ্ধি দেখিয়া তথা্কার कर्जुनक এछमूत मूक्ष रहेशाहित्नन, रा छिनि শেষ পরীক্ষায় উত্তীৰ্ণ হইবার পূৰ্ব্বেই তাঁহারা তাঁহাকে ব্যারিষ্টার করেন। সালের নভেম্বর মাসে তিনি কলিকাতা হাই-কোর্টে প্রবৈশ করেন। এবং অসাধারণ बीमक्तित्र পরিচরদানে ১৯•৪ খুষ্টাব্দে ह्योखिः কাউন্সিলের পদে এবং ১৯০৮ খুষ্টাব্দে এড-ভোকেড জেনারেলের পদে নিযুক্ত হন। ইতি পূর্বে কোন ভারতবাসীই এড্ভোকেট জেনারেল ভাহার পর আব তিনি যে रुन नारे। উচ্চপদে আরোহণ করিয়াছেন, তা্হা ভারতের ইভিহাসে এক যুগাস্তরের প্রবর্ত্তক বলিলে অত্যুক্তি হয় না।

সাধারণ ইংরাজের কুদ্ধ প্রতিবাদ সন্থেও
তাঁহাকে এই অভ্তপূর্ব সন্ধান ও শক্তি প্রদান
করিয়া লর্ড মিণ্টো এবং লর্ড মাল বেরপ সহ্বদয়তা ও মানসিক বলের পরিচর দিয়াছেন—
তাহাতে ভারতবাসী মাত্রেই মুগ্ধ ও ক্বতজ্ঞ।
অনেক মাত্রবর ইংরাজই নানা তর্ক যুক্তিছারা এইরপ প্রমাণ করিতে চাহেন যে ভারতবাসীকে এই পদ দান করিয়া গভর্ণমেণ্ট
নিতাস্তই নীভিবিগর্হিত কার্য্য করিয়াছেন—
এ সম্বন্ধে পার্লামেণ্ট সভার আল্ পার্দির
সহিত প্রধান মন্ত্রী অ্যাস্কুইথের যে বাদামুবাদ
চলিয়াছে আমরা দৃষ্টাস্ত-স্বরূপ ভাহাই মাত্র
উদ্ধ ত করিলাম।

আর্ল পার্দির কথা—"বড়লাটের মন্ত্রণাগভার ভারতবাসীকে প্রবেশাধিকার দানের বিক্লছে প্রতিবাদ করিবার পূর্বে আমি তিনটা প্রশ্ন করিতে চাই; প্রথমতঃ বিভাগ বিশেবৈর কর্মে শভিক্ত ও দক্ষ ভারতবাসী বেল। সম্ভব হইলেও ভাহার আপন পণ্ডির বাহিরের বিবরে অভিজ্ঞ ও দক্ষ ভারতবাদী পাওয়া কি সভব ? বিভিন্ন আভি, ধর্ম ও ফার্থের সংগ্রিপ্ত বিবরে অপক্ষপাত ও সমদর্শী কোন ভারতবাদী পাওয়া কি সভব ? এই সকল গুণে কি কোন ভারতবাদী পাওয়া কি সভব ? এই সকল গুণে কি কোন ভারতবাদী ইংরাজের সমুকক্ষ হইতে পারিবেন ? তৃতীয়ত:, ছই একজন এয়প উপ্রুক্ত ব্যক্তি পাওয়া সম্ভব হইলেও দেশে কি এয়প লোকের সংখ্যা এত অধিক যে আমরা কোন জাতি বা সম্প্রদায় বিশেষের প্রতি পক্ষপাতিতা প্রদর্শনের অপ্নার হইতে আগ্রহকা করিয়া, সকল প্রদেশ ও সম্প্রদায় ইইতে সভ্য নির্কাচনে সমর্থ হইব ?"

সাধারণ ইংরাল আমাদিগকে কিরূপ হীন দৃষ্টিতে দেখেন এই উব্লিই তাহার পরিচয় প্রদান করিতেছে। প্রধান মন্ত্রী এসকুইথু উত্তর দিতেছেন—

"তাঁহার প্রথম প্রশ্নের উত্তরে আমি এইবাত্র বলিতে চাই বে; কোন দেশেই দেশের শাসন কর্ম্মে নিযুক্ত হইবার পূর্বে কোন ব্যক্তির সর্কা বিষরে অভিজ্ঞ হওয়া সম্ভব নহে। 'আমাদের দেশে 'যিনি সর্কাশ্রথম মন্ত্রিমে নিযুক্ত হন ভিনি কি তৎপূর্বের এরপ কর্মে অভিজ্ঞতালাভের স্থযোগ পান! কিন্তু মন্ত্রিপদার্ক্ত হইবামাত্র তিনি রাজ্যের নানারপ শুপ্তবিষয়ে হতক্ষেপ ও ব্যবস্থা করিতে বাধ্য ইইরা ক্রমশঃ অভিজ্ঞতালাভ সহকারে দক্ষতার সহিত রাজকর্মা পরিচালনা করিয়া থাকেন।

হিন্দু বা মৃসলমান যে কোন ভারতবাসী তাঁহার
অসাধারণ বিভা বৃদ্ধি ও অভিজ্ঞতার অক্সান্ত ইয়ুরোপবাসী ও ইংরাজের সহিত প্রতিযোগিতার জরী
হইলেও কেবলমাত্র ভারতবর্ষে জন্মগ্রহণের অপরাধেই
তিনি চিরদিনের জন্ম এরপ দারীছপূর্ণ কর্মে নিযুক্ত
হইবার অযোগ্য, আল পার্দি যদি এ কথা না বলেন
তাহা হইলে এরপ পদ হইতে ভারতবাসীকে
দ্রে রাখিবার অন্ত কোন কারণ আনি দেখিতে পাই
না! পূর্বে অভিজ্ঞতার বিষয় বলিলে আমি জিল্ঞানা
করি, আমরা যে সকল ইংরাজকে ভারত্বের শাসনকর্মে এতদিব ধরিয়া প্রেমণ করিয়া আসিতেহি, এবং
বাহারা ভাঁহাদের বক্ষতা এ উচ্চ গুণপানার বর্দে

আবাদের নির্বাণ্টনের সার্থকত। প্রমাণ করিয়া
আসিতেছেন তাঁহাদের মধ্যে কর জন পূর্ব হইতে
ভারত সম্বন্ধে অভিজ্ঞা? অন্তিকাংশ হলেই আমরা
ভারতের আইন ও অর্থ সচিব এখান হুইতে পাঠাইরা
থাকি,এবং তাঁহারা তৎপূর্বে ভারতবর্ধে কথনও পদার্পন
হরেন নাই এবং ভারতের জটিল সমস্তা সকল সম্বন্ধে
কখন চিন্তামাত্র করেন নাই। এরপ ছলে মিপ্তার
ক্রিংহের ক্রার সম্ভান্ত, উচ্চ শিক্ষিত, আইন ব্যবসায়ের
স্বিব্রাচ্চ পদে অধিন্তিত এবং আইনের বিভিন্ন বিভাগে
ব্রুৎপার, যে ব্যক্তি ভারতে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন ও
ভারতেই প্রতিপালিত, এরপ লোকের সম্বন্ধ কি
প্রকারে বলা সম্ভব যে ভিনি বড়লাটের আইন সচিবের
গদ প্রাপ্তির উপযুক্ত নহেন। আমি জোর করিয়া

বলিতে পারি যে এই পদের অন্য এই হিন্দুর অপেক্ষা উপযুক্তর কোন ব্যক্তি ইংলকে পর্যন্ত পাওয়া সন্তব নহে। আমার জিজ্ঞাস্ত এই যে, মহারাণী ভিক্টোরিয়া হইতে রাজার ঘোষণা সন্তেও, আপনারা চাহেন যে, কি ব্রিটিশ সাঞ্রাজ্যে এই সন্থান নীতির সমর্থন করিতে সিংহের স্থায় অসাধারণ গুণাবিত ব্যক্তিকেও কেবলমাত্র তিনি ভারতবাসী ও আনাদিগের মজাতি নহেন বলিয়া, এরূপ অধিকার হইতে বঞ্চিত রাধাই আমাদের কর্তব্য "

প্রধান মন্ত্রার এই উদার উক্তিতে ভারতবাসী মাত্রেরই অন্তর কৃতজ্ঞতার অভিভূত সন্দেহ নাই এবং বঙ্গবাসী যদি ইহাতে একটু বিশেব গৌরব অসুভব করেন,তাহা হইলে ভাঁহাকে বিশেব দোবী করা যার না।

পোষ্যপুত্র।

(0)

র্টি ধৌত গাছ পালার উপর দিয়া ফুরফুরে হারা বাতাস ধীরে ধীরে বহিয়া:গেল। রজনীনাথের বৃহৎ উভানে যুঁই কুঁড়িগুলি ফুটিয়া উঠিল ও লান ফুলগুলি ঝরিয়া পড়িল। প্রাচীরের ধারে ধারে আম গাছে সবৃজ আম, লাল লিচুর ঝাড় আর প্রশন্ত উভান ব্যাপিয়া নানাবিধ প্রেফুটিত অর্দ্ধস্ট্ট পুলের শোভা; মধ্যে মধ্যে লাল কঙ্করমর পথ, তুই ধারে ক্ষেজাতীর পুলের পাড় ও মধ্যে মধ্যে স্নির্শ্বিত লভাকুঞ্জ এবং স্থানে স্থানে কোথাও লৌহাসন কোথাও বা স্থানর মর্শ্বরাসন।

এই মনোহর উত্থানের মধ্যে একটি খেত স্থলর ঘটালিকা নিজ সৌন্দর্য্যে ও ঐশ্বর্য্যে বেন গর্ব্বিত ও ক্ষীত হইয়া দাড়াইরা আছে।

সম্পের থামগুলা লভাজড়িত এবং , তাহাদের উপরিস্থিত পরীশিশুবাহন পক্ষীরাজগণ

অতাস্ত স্থলররপে গঠিত হইয়াছিল। বাস্ত
•বিকই রজনীনাথের বাড়ীধানি একধানি

স্থাচিত্রিত ছবির মতন দেথাইতেছিল।

· উন্থানের লৌহ বেঞ্চে গৃহস্বামী ও তাঁহার একজন মক্তেল বসিয়া কথোপকথন করিতে-ছিলেন।

অর দ্বে লোহ বেইল্ বেষ্টিত শ্রামল
তুণাবৃত স্থানে তুইটি সুদ্দ ক্ষুদ্র, চঞ্চলনেত্র
হরিণশাবক লাফাইয়া লাফাইয়া থেলিয়া
বেড়াইতেছিল আর তাহাদেরি মত ক্লফোজ্জল
নয়না একটি বালিকা তাহার চঞ্চলগতি
ভাইটির সহিত তাহাদের ক্রীড়া দেখিতেছিল।
বালক দিদির হাত হইতে কোমল হরিৎ দ্ব্রা
লইয়া তাহাদের মুখের নিকট ধরিতেছে,
থ্রবং তাহাদের সহিত তাহাদেরি মত উল্লাসে
লাফাইতেছে, ছুটিতেছে, আবার আসিয়া

দিদির কাছে চুপটি করিরা দাঁড়াইরা দাঁড়াইরা তাহাদের থেলা দেখিতেছে। অনেকক্ষণ পরে বালকের আর ভাল লাগিল না সে দিদির হাত ধরিয়া টানিল। "দিদি পারবাগুলোকে বুঝি থেতে দিতে হবে না ?

ভাই ভেগিনী হুইটি তথন তাহাদের কুশের ডাণা ছুথানি উঠাইয়া লইয়া পায়রার থোপের নিকটে গিয়া তাহাদের আহার্য্য প্রদান করিতে লাগিল।

শশু কণিকার লোভে দলে দণে যুজ্যুর পরা সালা কালো পাটল বিবিধ বর্ণে চিত্রিত স্থন্দর স্থন্দর পারাবতগুলি তাহাদেব থোপ ছাজিয়া উড়িয়া আসিয়া চারিদিক হইতে ভাই বোন ছটিকে যেন বিরিয়া ফেলিল।

"দিদি দিদি নতুন লকাটা তোমার কাঁথে গিয়ে বসলো দেখো; ঐ ষা উড়ে গেল ! দিদি তোমার হাত থেকে গ্রাবাঞ্চা কেমন থার! আমি ধরতে গেলে ও পালিয়ে যায়, আসেনা! বাঃ বাঃ বেশ মজা হয়েছে মৃক্ষিটা বাবার কাছে

বালক স্থপ্রকাশ এই রূপে পক্ষীদের আনন্দ ভোজের আনন্দ আরও বাড়াইয়া তুলিতেছিল। তাহার দিদি মধ্যে মধ্যে হাসি-মাধা কালো চ'থের মিগ্ধ ছায়া-ঢাকা দৃষ্টি তাহার দিকে ফিরাইয়া তাহার উৎসাহোৎফুল্ল মুথের মিষ্ট হাসি দেখিতেছিল, আবার কর্ত্তব্য পরায়ণা জননীর মত গন্তীরমুথে নিবিষ্টচিত্তে তাহার পালিত সন্তানগুলিকে আহার্য্য প্রদান করিতেছিল।

রশ্বনীনাথ ও তাঁহার অতিথি তাঁহাদের আলোচনায় গাড় নিমগ্রচিত হইরা পড়িয়া-ছিলেন। অনেককণ কথা বার্তার পর আলোচ্য বিষয়ের মীমাংসা হইরা গেলে প্রবীণ অভ্যাগত নবীন গৃহবামীকে বলিলেন— "তাহলে এই মাসং থেকেই ওট্য আরম্ভ করা যাকৃ—কি বলো ?"

"হাঁ বুথা সময় নষ্ট করে লাভ কি—এবার বেদিন আস্বেনসে ডকুমেণ্টথানা সঙ্গে করে আন্বেন, একবার দেখে শুনে দেওয়া বাবে! রক্ষনীনাথ কলিকাতা হাইকোর্টের এক প্রধান-তম উকিল এবং এই প্রবীণ লোকটি তাঁহার একজন পুরাতন ধনী মকেল লক্ষ্মীপ্রের জমীনার শ্রামাকান্ত চৌধুরী।

কিছুক্ষণ নীরবে থাকিয়া রজনীনাথ সহসা ঈবৎ সঙ্কোচের সহিত ধীরে ধীরে কিজাসা করিবেন "তারপর বিনোদের কোন ধবর পেলেন ?"

খ্যামাকান্ত অন্তমনস্ক ভাবে গোধুনীর গোলাপী ও ধৃসর মিশ্রিত বর্ণ পূর্বাকালের দিকে চাহিয়া কি ভাবিতেছিলেন রন্ধনীনাথের প্রশ্নে অক্সাৎ যেন চমকিরা উঠিলেন। তাঁহার অকাল বার্দ্ধক্য রেথান্তিত ললাট আরও কৃষ্ণিত হইয়া আদিল। দৃষ্টি কিরাইয়া একটা দার্ঘনিশ্বাস পরিভাগে করিয়া অস্ট্রুবরে উত্তর দিলেন "কিছু না।" সঙ্গীর মুথের লোচনীর ভাব পর্যাবেক্ষণ করিয়া রন্ধনীনাথ আর কোন কথা বলিতে সাহসী হইলেন না।

সন্ধার নির্মণ আকাশে ছএকটি মিট্মিটে তারা নববধ্ব সরম রাগলড়িত অর্দ্ধ নিমীণিত চাহনির মত নীল খোমটার মাঝখান হইতে ধীরে ধীরে চাহিয়া দেখিতে আরম্ভ করিয়াছে, মর্ম্মর আসনের উপর বসিয়া ভাই বোনে, উর্দ্ধে চাহিয়া তারা গণিতেছে। "আমি হুটো দেখতে পেরেছি।" "আমি, তো একটা 'বই

দেখতে পালি না ?" ঐ যে ঠিক ঝাউ গাছের মাথার ঐ ছোট্!" "কই দিদি আমি ত দেখতে পালিছ না।"

রজনীনাথের কাণে হঠাৎ তাহাদের কণ্ঠবর
ও হাসির তবল শব্দ বাজিয়া উঠিল; তিনি
শব্দার্শবন করিয়া মৃথ ক্লিরাইলেন — ডাকিলেন
"শা্স্তিঃ"

"কি বাবা ?" বলিয়া শাস্তি ও স্থপ্রকাশ পিতার নিকট ধীরে ধীরে আসিয়া দাঁড়াইল।

রন্ধনীনাথ শাস্তির দিকে চাহিয়া আজ্ঞা করিলেন—"তোমার জ্যেঠা মহাশ্বকে প্রণাম করো। স্কু তুমি কর্লে না ?" প্রণাম করিয়া দাঁড়াইলে শ্রামাকাস্ত বালকবালিকার ললাটে চুম্বন করিয়া আণীর্বাদ কবিলেন। ঠাহার ক্লান্ত হুদর সেই স্নেহের পুতুল হুটীকে স্পর্শ করিয়। বেন সনেকটা সকল হইয়া উঠিল। রক্ষনীনাণও ভাহা ব্রিলেন।

শ্রামাকান্ত মিগ্নলৃষ্টিতে তাহাদের দেখিতে দেখিতে রজনীনাথকে বলিলেন "কই এদের তো আর বারে এসে দেখিনি?" "বোধহয় এখানেছিল না; শান্তির মারের অহ্নথের জন্ম তখন ওদের দার্জ্জিলিং পাঠিয়েছিলাম। শান্তি যথন গৃব ছোট্ট তখন আপনি ওকে দেখেছিলেন; মনে নেই আপনার ? সেই যথন জয়নারাণের কেস্টার জন্ম আস্তেন ?"

শ্রামাকান্ত পূর্বক্থা সরণ করিবার জন্ত কিছুক্ষণ স্তব্ধ হইয়া রহিলেন; তার পর ধীরে নীরে নিখাস ফেলিয়া বলিলেন—"হাঁ' মনে গড়্চে। সেইবারে তুমি বলেছিলে বলি শান্তিকে দ্লে আপনার ছেলেটা আমায় দেন ভা হলে ংকে ভাল করে পড়িয়ে শুনিয়ে বিলেতে পাঠাই। ই শুনেই ১৬া কেদ ধরলে।" শ্রামাকান্ত আবার গভীর দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ করিলেন।
রঙ্গনীনাথ ক্ষোভের সহিত নিরুত্তর হুইয়া
রহিলেন; পুত্রহারা পিতার নিকট নিজেকে
অপরাধী বলিয়া মনে হুইতে লাগিল।

পরক্ষণেই শ্রামাকাস্ত সহস। আত্মসম্বরণ করিয়া লইলেন। নিজের গভীর তৃঃধের ঘন ছায়া অপরের মুথের আলো নষ্ট করিতেছে দেখিয়া ঈবৎ যেন লজ্জিত হইলেন। শাস্তি ও প্রপ্রকাশ পিতার গায়ে ঘেঁদিয়া দাঁড়াইয়া বিত্ম-রের সহিত অপরিচিত বৃদ্ধ ব্যক্তিটীকে পর্য্যানকেণ করিতেছিল। তাঁহার প্রচুর শুত্র কেশ, কুঞ্চিত লগাট, বিশাল দেহ,শুত্র স্থগৌরব বর্ণ শাস্তির মনে তাঁহার জ্যেঠামহাশয়ত্বে বিন্দুন্মাত্র সংশয় উপস্থিত করে নাই; কিন্তু স্প্রকাশ কিছু গোল্যোগে পড়িয়াছিল কারণ বাক্লার জ্যেঠামহাশয়ের যে মস্ত সাদা দাড়ি আছে ইনি যদি জ্যেঠামহাশয় তাহলে এঁর দাুড়ি কোথা গেল?

খ্যানাকান্ত সমেহে শান্তির হাত ধরিরা তাহাকে নিজের কাছে বসাইলেন — জিজ্ঞাসী করিলেন "তোমার পুরো নাম কি মা— শান্তিস্থধা ?"

শাস্তি তাহার কাল চোধের তারা ভূমিলগ্ন করিয়া ধারে ধীরে উত্তর করিল "না শাস্তিশতা"।

"পত্য পতাই তুমি শান্তিগতা। তোমার
নামটি কি বাবা ?" স্থ প্রকাশ পিতার জামুর
উপর ক্ষুইএ'র ভর রাধিয়া তাঁহার কোলের
উপর শুইয়া পড়িয়াছিল কিন্তু তাহার চঞ্চল
চোথের বিশ্বিত দৃষ্টি বরাবরই অপরিচিতের
উপর সংবদ্ধ ছিল; এখন নাম জিজ্ঞাসিত হইয়া
সি পিতার জামুর উপর হইতে উঠিয়া গোজা

হটয়া দাঁড়াইল; গম্ভীর মুখে উত্তর দিল "শ্রীম্মপ্রকাশচক্র মৈত্র।"

"স্থাকাশ, বেশ নাম। আমার কাছে এনো; শান্তিশতা, তুমি পড়তে জানো?"

শান্তি নীরবে পিতার দিকে চাহিল। রক্ষনীনাধ তাহার মৌন আবেদন ব্রিয়া তাহা মঞ্ব করিলেন "ও মহাকালী পাঠশানার পড়ে, শান্তি দেদিন যে স্তবটা শিথেছো দেটা তোমার ক্ষোঠামশাইকে শোনাও না ?"

শান্তি ঈষৎ সন্ধৃচিত হইরা স্থপ্রকাশের
দিকে চাহিল, লারপব আবার পিতার দিকে
ফিরিয়া আন্তে আন্তে বলিল, "স্কুও জানে
বাবা ও বলবে?" শ্রামাকান্ত বলিলেন
"তজনেই বল।"

সুপ্রকাশ সমধিক গান্তীর হইরা দিনির
পাশটিতে আদিয়া দাঁড়াইল; শান্তির সহিত
কণ্ঠ মিলাইরা শোক আবৃত্তি করিল। পাঠ
সমাপ্ত হইলেও বহুক্ষণ মুগ্ধ শোতা ভাববিভোর হইরা রহিলেন, তারপর তাঁহাব
দিল্লল নেত্রন্থর তুলিয়া রক্ষনীনাথের মুথে
স্থাপন করিয়া বলিলেন "পরের স্থাথ হিংসা
করা উচিত নয়, আমি হিংসা বরি নাই, কিন্তু
বাস্তবিক তুমিই স্থী; আমার যদি এমন
একটি মেরেও থাকতো।"

শ্রামাকান্ত মাবার বলিতে লাগিলেন "সেই একজন হতেই আমি সব পেতে পার্ত্তেম, ওঃ অক্কতজ্ঞ আমার দিকে একবার চাইলে না! বৃদ্ধ বয়সে মামার একা কেলে চলে গ্যালো! যাক্ আমার যতদিন কর্মান্তাগ মাছে বক্ষের ধন আগ্লাই তার পর যেদিন ডাক আস্বে সেদিন চলে যাব।" গভীর হইতে গভীরত্র বেদনার তাঁহার ক্ষীণস্বর অপ্রাই হুইয়া আসিল;

নারবে বছক্ষণ শৃষ্চক্ষে চাহিরা বহিলেন তারপর শুক ওঠে একটু ক্ষীণ হাসি আনি: তাহার ন্তন বস্তুকে কহিলেক, "শান্তিগত তুমি গল বল্তে পার মা ? স্বাঞ্চার গং জানো ? না, শিরালের গল ছানো ?"

গলের কথার স্থ প্রকাশের উৎসাহ সমন্ত বাধা বিপত্তি কাটাইর। উক্তৃসিত হইরা উঠ্নল সে তাড়াতাড়ি তাহার কাছে আসিয়া সাগ্রহে বলিয়া উঠিল "দিদি রাজা—আর 'দো' 'সো' তুই মাণীর—আব শেয়ালের গল্প সবই জ্ঞানে, জ্যেঠামশাই! আব আমিও টেকি চিংড়ির পিঠে খাওয়ার গল্প শিথেছি।"

উভয়েই হাদিলেন। শ্রামাকাত বালকের স্থগোল বাহু ছুইটা ধারণ করিয়া ভাহাকে কোলের উপরে টানিয়া বসাইলেন।

বে কয়দিন মোকদমার জন্ত ভামাকান্ত চৌধুরীব কলিকাতায় থাকিতে হইল সে কয়দিন তাঁহার ভাঁটা পড়া জীবন নদীতে যেন একটা বর্ধার বন্তা একটা উচ্ছাদের জোয়ার আদিয়াছিল।

বৈকালে কোর্ট হইতে ফিরিয়াই প্রলুক্তাবে দ্বারের দিকে চাহিরা থাকিতেন।
কতক্ষণে হুগাছি প্লেন বালাপরা ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
হস্ত সাবধানে একথানি প্রস্তর বেকাব বহন
করিয়া আনিবে! মনে পড়িত সেই ছেলে বেলা
কল হইতে ফিরিয়া এমনি আগ্রহে থাবারের
অপেক্ষা করিতেন! সেও এক স্লেহময়ী রমণী
ক্ষ্বিত বালকের নিমিত্ত আহার্যা আনিয়া এমনি
য়েহে কাছে বিসরা তাঁহাকে আহার করাইতেন;
এমনি স্লেহে নিজের আঁচল দিয়া ললাটের দাম
মুহাইয়া দিতেন; এমনিই আগ্রহে দিবসের
পরিশ্রমের সংবাদ কইতে্ন। ভারপর বালক

খামাকান্ত বড় হইনেন, নৃতন লোক আসিল,
নৃতন জীবনে নৃতনতর স্রোভ বহিল, প্রভাত
মধ্যাক্রে পরিণত হইবার সঙ্গে সঙ্গে প্রকৃতির
মতনই অন্তর্গে বাহিরে সমস্ত পরিবর্তন
ঘটিয়া গেল।

কিন্তু আবার এই শ্রামা দ্যায় জীবনের এই অপরাত্নে একি মায়ামস্ত্রে অতীত তাহার স্থাপী স্থাতি লইয়া ধারে ধীরে মৃদ্রিত প্রায় হলয় প্রান্তে দোণালী আলোক জালাইয়া তুলিতেছে। দারা মধ্যাত্নের ধূলিরোদ্রমাথা আশা নিরাশার অবিরত সংঘর্ষে ক্ষত বিক্ষত শ্রাস্ত হলয়ে একি নৃতন মোহ। নৃতন দাধ। অন্ত গমনোল্থ রবি যেমন আর একবার তাহার দাহাকারী শক্তি সম্বরণ করিয়া প্রভাত কিরণের মতই স্লিয়্রকর ও নির্মাল আলোক প্রদান করিয়া যায় তাহার ভাগ্যন্ত কি সেইরূপ আর একবার এই মরণ নদীর কুলে আনিয়া তাঁহাকে তাঁহার সেই শৈশবের স্বপ্ন দেথাইতেছে! একি শুধু নিবিবার পূর্মক্ষণে দীপ-শিথার ক্ষণিক হাদি, বিত্যতের চপল ধেলা।

বৃদ্ধ শ্রামাকান্ত এই ক্ষুদ্র বালিকার মধ্যে তাঁহার বহুদিন গত প্রোচা জননীর স্নেহম্যা মৃত্তি দেখিতে পাইতেন। বালিকার স্নেহপূর্ণ কালো চোথে, স্ক্র্যু গোলাপী অধ্যে, কোনল বাহুলভার অপূর্ব মাতৃস্নেহ অন্তর্ভব করিতেন। মনে মনে তাঁহার এই ক্ষুদ্র সননীটিকে একটু একটু শ্রদ্ধা করিতেন প্রকাশ্যে ভাহাকে একটুকু ভরও করিতেন। খন সে গন্তীর হইরা তাঁহাদের ধাওয়াইতে দিত এবং ঈষৎ ভৎসনার দহিত সুবোগ করিত ক্ষেত্তিমশাই তৃমি কিছু কিছু না'—অমনি শ্রামাকান্তকে তাঁহার ক্ষুদ্র

মান্ত্রের মনোরঞ্জন ক্রিবার জন্ম আবার মাছের ঝোল বা অম্বলের বাটি টানিয়া হুটি ভাত ভাঙ্গিতেই হইত, অস্ততঃ হুধের বাটিতে ভাত না তুলিলে রক্ষা থাকিত না।

সন্ধ্যায় যথন রজনীনাথ তাঁহার মকেল বেষ্টিত হইয়া আইন চর্চ্চা করিতে ব্যস্ত থাকি-তেন তথন এই তিনটি প্রাণী মিলিয়া তাঁহাদের সবটুকু অভিজ্ঞতা খরচ করিয়া সন্ধাটিকে মধুরতর করিয়া তুলিত। বাঘের গল্পে শিয়ালের গল্পে রাধালের গল্পে তাহাদের আসরটি গম গম করিতে থাকিত; প্রাণের অনবরত উৎসারিত কলহাস্ত্র, পোষা পাথীর বুলির মত মিষ্ট কথাগুলি সংগারতাপ-জর্জরিত বুদ্ধের মসিমলিন চিত্তের সমস্ত কালীর রেখা যেন মুছাইয়া ফেলিত। তাহাদের সহিত তিনিও যে হাসি হাসিতেন তাহা সভ্য সভাই তাঁহার দেই শুক্ষ হানয় হইতেই উৎ**দারিত হই**য়া উঠিত; তাহার মধ্যে কোথায়ও একটু বিষাদের 🕏র ঝন্ধার দিয়া উঠিত না; বাস্তবিকই বুদ্ধ খ্রামাকান্ত তাঁহার মোকর্দ্মার দিন কয়টা বড়ই আনন্দে যাপন করিতেছিলেন।

মেঘমুক্ত ফুট্ফুটে জ্যোৎস্নায় পাটি পাড়া বিছানায় বিদিয়া তিনটি সঙ্গিতে গল চলিতেছিল। তথন তাহাদের রাথালের গল শেষ হইয়া আদিয়াছে। রাথাল তথন রাক্ষণীবধ্ব কাপড় গহনা পরিয়া ঘোমটা টানিয়া বধ্ সাজিয়াছে এবং নিমন্ত্রিতদের প্রতারণাদ্বারা পরিবেশণ করিতেছিল। স্থপ্রকাশ বন্ বার শ্রুত গল রুদ্ধ নিশাসে শুনিতেছিল। গল শেষ হইলে আনন্দে করতালি দিয়া হাসিয়া উঠিল। কেমন মজা হলো; বুড়ী খুব জব্দ হয়ে গ্যাছে।"

• শাস্তি হাসিয়া বলিল "জানো জ্যেঠাসশায়।

স্থকু ভাবে গর গুলো বেন সত্যি হয় তাই রাথালের মত পিটে-গাছ কর্বার বন্ত ও মাটতে একটা পিটে পুঁতে দিয়ে রোজ জল দিত।"

> .

ভামাকান্ত হাসিলেন। স্থ-প্রকাশ ঈষৎ অপ্রতিভ হইল কিন্তু হাস্তাম্পদ হওয়ায় একটু বাগিয়াও গেল, বড় বড় চোৰ বিস্থৃত कत्रिया विनम-

"হাঁ৷ তুমি বুঝি সত্যি ভাব না ় হরিশ্চন্দ্র রাজার ছেলে মরে গেল তুমি কাঁদোনি ? মা বল্লেন গল শুনে কাঁদ্তে নেই তবু তুমি বৃঝি চুপ করে ছিলে ?"

শান্তি তাড়াতাড়ি বলিয়া উঠিল "আহা কৃহিদাস যে মরে গেছলো, মানুষ মরে গেলে কান্না পাবেনা ভ্রোঠামশাই ? তথন তো জানিনা যে আবার সে বাঁচবে।"

ভামাকাম্ব বালিদের উপর ভরদিয়া উঠিয়া বসিলেন; প্রস্ফুট জ্যোৎসায় শান্তির মুখের দিকে চাহিলেন। মৃত্স্বরে কহিলেন "মা পরের জন্ম কাঁদতে শেখো, সংসারে পরের কথা ~ভাব্তে সবাই শেখেনা।

তিনি একটা গভীর নিখাদ পরিত্যাগ শান্তি নিঞ্জের মনেই বলিয়া করিলেন। যাইতে লাগিল, "প্লুকু—জানো জ্যেঠামশাই ছোট বেলায় क्रांप धत्रवात अन्त्र कांप्रत्ता ; চাঁদকে আয় আয় বলে হাত নেড়ে ডাক্তো; আর চাঁদ বেই আসভো না আর অমনি কেঁদে রেগে ভূঁরে গুয়ে পড়তো। ছোট বেলার স্বকু বড়ড বোকা ছিল; মাটির হাতীর মুণু ভেঙ্গে থেয়েছিল ভাই বাবা ওকে যাটির পুতুল দিতে বারণ করে দিয়েছিলেন। কানাই কম্বল মুড়ি দিয়ে জুজুবুড়ি সেজে ওকে ভয় ভরেতে চুপ করে দেখাতো স্থার ও

इर (श्रा निष्डा, এक्ট्रेड कांत्र्र्डा मा ; जामि কিন্তু একটুও ভন্ন পেতাম না। ইটা জোঠ মশাই জুজুবুড়ি বাুঝু আবার থাকে ?"

হুপ্রকাশ অবিশ্বাদে মাথা নাড়িয়া উঠিয়া ৰলিল। "আছে আছে জুজুবুড়ি আছে; কল্কাতার নেই—কিন্ত भाक्तमात्र (मटन পুকুরে জুরুর্ড়ি আছে"—

শাস্তি তাহার নির্বোধ ভাইটির ভূল 🔆-ক্ষণাৎ সংশোধন করিয়া বলিল "আ: সেঁতো জুজুবুড়ি নয় সেতো অটে বুড়ি। হাঁ। জাঠা মশাই তুমি জটে বৃজি দেখেছ ? তাদের পায় কি শেকল বাঁধা থাকে? তারা ছেলেদের ধরে সেই শেকলে বেঁধে পুকুরের মধ্যে টেনে নিয়ে যায় ?

খ্যামাকান্ত হাসিয়া বলিলেন "নামা আমি কেবল আকাশবুড়ি দেখেছি; আর আমাদের বাড়া একজন গয়লা বুড়ি ঝি আছে তাকে দেখেছি তা ছাড়া অন্ত কোন বুড়ির সংক আমার জানা শোনা নাই। আর এই একটি ∙ছোট বুড়িকে এখন দেখছি।"

"আকাশবৃড়ি যে চাদের মধ্যে বসে হতে৷ কাটে? আমিও দেখেছি আবার এক একদিন তুলো পিজে আকাশময় -ছড়িয়ে ভায়। সাচ্ছা ওযে রোজই স্তো তৈরি করে তা দে স্তগুলো কি হয় ?

খ্যামাকান্ত একটু ভাবিয়া বলিলেন "কাপড় **₹**₮ १"

"কাপড় কারা পরে-? দেবতারা বুঝি ? व्याद्धां नक्तवश्राता कि ठाँतित एक्त स्मात ? তবে হুৰ্য্যির কেন নক্ষত্র থাকে না ?

বাবা বলেন নক্ষত্ৰ গুলো নাকি এক একটা পৃথিবী হাঁ৷ জোঠা মশাই ? ভাহলে

গরুড় চাঁদ থেকে কি করে স্থা চুরি করতে? সেই জন্তেই ত ইন্দ্র সঙ্গে তার যুদ্ধ হয়। আচ্চো জ্যোঠা মশায় অখ্থামা হত্নমান আর বিভীষণ এখন কোথায় আছে বলোনা?"

ুখামাকাস্ত কি উত্তর দিবেন ভাবিয়া আকুল, কিন্তু তাহার উত্তরের অপেকা না করিয়াই আবার প্রশ্ন উঠিল: আচ্চা ৈজাঠা মশাই মহাভারতে সাত সমুদ্রের কথা আছে সাত স্থ্যুদ্র কোথায় ? আছা ক্ষীর সাগরটা কি সভ্যিকাৎের ভূধের ক্ষীর ? সে জলে তাহলে জাহাজ চলে কি করে? দেখানকার লোকেরা বুঝি ভাত রাধে না থালি ক্ষীর খায় 💡 হপ্রকাশ মুখ গন্তীর করিয়া মত প্রকাশ করিল "আর হয়তো পায়েদ খায়, কীর দিয়ে ভাত রাঁধলেই তো পায়েস হয়ে यार्व! व्यामि वर् इटल मिटे प्लिम ठाकती कर्ल्ड याता; निमि जूरें जारे मत्त्र याति কেমন ?" এমন সময় সহাস্ত মুখে রজনীনাথ সাসিয়া সেইথানে দাঁড়াইলেন। হাসিয়া • জিজাসা করিলেন "কি হচেচ ?"

শাস্তি ও স্থপ্রকাশ সমস্বরে প্রশ্ন করিয়া উঠিল, "হাঁগ বাবা ক্ষীর স্থম্দুর কোন দেশে ? আমরা দেখবো বাবা ?" রজনীনাথ হাসিয়া বলিলেন "সে দেশে তোর খণ্ডর থাকে লতি ?"

শান্তি খণ্ডরের কথার ঈষৎ লজ্জিত হইয়া ভাইটির দিকে চাহিয়া বলিল—"আয় স্বকৃ খাবার ঠিক করিগে—বাবা এসেছেন। উহারা চলিয়া গেলে শ্রামাকান্ত একটা কুদ্র নিখাস ফেলিয়া বলিলেন—

"ভাই অনেক করছো স্থার একটা উপকার করো। শান্তির এখন বিয়ে দিওনা।"

রঞ্জনীনাথনিস্তব্ধ হইয়া রহিলেন। শ্রামান কান্ত আবার মৃত্যরে কহিলেন "দে আমার কাছে ফিরে আসবে এ আশা এখনও আমার ধায় নি। যদি আদে যদি তাকে ফিরে পাই তা হলে তথন তোমার শান্তিকে আমায় দিতে হবে।"

রজনীনাথ স্বভাবতই কোমল প্রকৃতির লোক! আহতকে এই প্রার্থনার অসঙ্গতি দেখাইয়া পুনরাহত করিতে তাঁহার ক্লেণ ও লজ্জাবোধ হইতে লাগিল। তিনি কেবল বলিলেন—

"যদি ঈশ্বর সে দিন দেন তাহলে শান্তি আপনার বে হবে সেত সোভাগ্যেরই কথা; এখনও আমি তার বিবাহের জন্ম কিছুই দ্বির করিনি; শান্তি এখনও তেমন বড় হয়নিতো!"

ভামাকান্ত ক্বতজ্ঞদৃষ্টিতে তাহার দিকে চাহিলেন কিন্তু পরমূহর্কেই একটা গভীর হতাশার তাহার হাদর পূর্ণ হইরা উঠিল। হার! তাহার হারাণ রতন আর কি খুঁজিয়া পাইবেন ? যদিই বা বনবাসী রামচন্দ্র চৌদ্দবৎসর পরে ফিরিয়া আদেন হুর্ভাণ্য দশরথ তাহাকে কি আর দেখিতে পাইবে?

(ক্ৰমশ)

ভারতের আধুনিক শিম্পবিজ্ঞান।

পাকাত্য জাতির মধ্যে নুত্তন সভ্য আবিফারের সভত একটা সৰ্ব্যান্তঃক্রীণ চেষ্টা দেখিলা আমরা নিৰেদের প্ৰতি চাহিয়া আক্ষেপ না করিয়া থাকিতে পারি না। জগতের ভাঙারে নুতন জ্ঞান সঞ্ছের अन्य जाँदाता मर्वाताह आग्यान मरहहे। कायात्र দক্ষিণমেকতে পৃথিবীর অবস্থা কিরূপ, কোখায় সূর্য্যের মধ্যে উত্তাপের অবস্থা কিরূপ; কোথায় জ্যোতিক युक्तोत याचा नुकन श्रह आमिया (नवा निन, शृथिवात কোনু দেশে কি নুতন রোগ আসিয়া উপস্থিত, ভাহার প্রতিকার কি. বিভিন্ন গ্রহে জল ও স্থলের পরিমাণ কিরূপ ও জীবের অবস্থা ও ভাষা কিরূপ ইত্যাদি অসংখ্য বিষয় লইয়া ওঁংহারা সর্বদাই বাস্ত। এরপ সত্য আবিদারের জন্ম তাঁহারা যে কত বিপদ ও কষ্টকে অসকোচে বরণ করেন, তাহা দেখিলে আশ্চর্য হইতে হয়। পৃথিবীর মেরুন্থলে উপস্থিত হইবার জ্ঞ তাঁহার৷ যেক্লপ অশ্রতপূর্ব্ব কষ্ট খীকার করিতেছেন, তাহা পাঠ কহিলে আমা-দিগের নিকট তাহা উপস্থাস ভিন্ন আর কিছুই মনে হয় না। এই এক মেত্রহল আবিদার উদ্দেশ্যে কত লোক প্রাণ দিশেছে, কত আয়োজন ব্যর্থ ইইতেছে, খাবার তৎক্ষণাৎ নবোৎসাহে এক নুতন দল এই কার্য্যে অ স্থোৎসর্গ করিতেছে। এইরূপ সকল বিষয়েই তাঁহাদের মধ্যে একটা আলোচনা, অনুসন্ধান ও অধ্যবদার আমরা দেখিতে পাই। বিজ্ঞানে তাহা নহে, ক্রাড়া হইতে শিল্প ইতিহাদ ও রাজনৈতিকাদি যিনি যে বিষয়ে লিপ্ত আছেন, তিনিই সর্ব্ব'স্তঃকরণে তাহার উন্নতি সাধনে প্রাণপণে সচেষ্ট। সিদ্ধিলাভের প্রতি এইরূপ সজীব অন্তরাগ না थाकिता कान बाजित्र छेन्न छ इस्त्र। मस्त्र नार । আর সকল দিদ্ধির মূলেই আন্তরিক আকুনতা আবশ্রক। অবশ্য জাতীয় স্বাধীনতা ইরোরোপে এইরূপ কর্মের म्पान्त्र बार्धा विकानगर्ध. প্ৰধান সহায়ক। পরীক্ষামন্দির, অসুশীলনের স্ববোগ ও গ্রাসাজ্ঞাদনের विकित्वका देखानि अक्रिकेट ना दहेता है हारादारभन

জ্ঞার আমাদের মংখ্য দে আকুলত র পূর্ব আগরণ
সন্তব নহে। ইহা সংস্তপ্ত শিল বিজ্ঞানে অধুনা ভারতবর্গ যে প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছে এমন কি আশিক্ষিতগণের মধ্যেও আমরা মারে মাঝে যেরপ বিজ্ঞান
প্রতিভা দেখিতে পাই, তাহা নিতান্তই বিশ্বরক্ষক ও
আশাপ্রদ।ইয়োরোপের বৈজ্ঞানিক অন্ত্রসক্ষান ও আবিদ্ধার
সমূহের সহিত সাধারণের যদি অনবরত পরিচর ঘটান দ্
বার—তাহা হইলে এই অন্তর্গা যে ক্রমশ প্রজ্ঞানত
হইনা উঠিবে তাহাতে সন্দেহ কি। এবং কে বলিতে
পারে এই অন্তর্গাই একদিন সমন্ত প্রতিক্ল অবহা
সংস্থেও আপনার পথ বাহির করিয়া লাইবে না ?

ক্তেজগারি মাসের ডন্ পত্রিকার ভারতবাদীর নিমলিখিত আবিজ্ঞিগ গুলি প্রকাশিত হইয়াছে—

বন্দে নগরের অধ্যাপক এস, এ, ভিসে মুদ্রাযদ্ধের
অক্ষর নির্মাণের একটি কল আবিদ্ধার করিয়াছেন।
আজ পর্যান্ত যত কল বাহির হইয়াছে তাহাতে
মিনিটে এক সহস্রের অধিক অক্ষর নির্মাণ করা যায়
না। অধ্যাপক ভিসের কলের সাহায্যে মিনিটে
১৪০০ অক্ষর নির্মিত হইতে পারিবে।

নুষিয়ানার মিষ্টার আকবার আলি নামে একব্যক্তি একটি অতি সহজ ও হৃন্দর তাঁত আবিকার করিয়াছেন। তাঁতটি সামাস্ত চেষ্টায় আপনি চলে। একটি বালকও সারাদিন ধরিয়া তাঁতটি চালাইলে ক্লান্তি বোধ করেনা।

অয়তসহরের শিখানাথ নামে একজন পাঞ্চারী আসল ও নকল সোনা নিরূপক একটি তুলাদও আবিকার করিয়াছেন। জিনিবটি এত স্থন্দর হইয়াছে বে শুনিতেছি গোয়ালিয়ারের মহারাজা নয়-সহত্র মুন্তা দিলা কলটি কিনিয়া লইয়াছেন।

ৰহ্মতীতে প্ৰকাশ নলডাক্সার রাক্ষা নাকি একটি মোটর গাড়ী নির্মাণ করিয়া যশোহরের শিল্পপ্রদর্শনীতে প্রেরণ করিয়াছেন। তীমারের যন্ত্রানি তিনি নিজেই নির্মাণ করিয়া থাকেন।

ভারতে চিত্রবিস্থা—কোঞ্চা নামক জাগানী

পত্রে কলিকাতার ভূতপূর্ব বাদ উভ্রক্ সাহেব ভারতীয় চিত্রকলা সম্বন্ধে একটি ফলর প্রবন্ধ বাহির করিরাছেন: বিদেশীর নিক্ট আমাদের অজ্ঞাত ও অনাদৃত চিত্র সকল কত গৌরবাহিত, ভারতীর পাঠক পাঠিকাকে ভাষার আভাব দিবার জন্ম আমরা তাঁহার প্রবন্ধের সারাংশ উদ্ধৃত করিয়া দিলাম।

শিল্পকলা মানবচিত্তের ভাবপ্রকাশের একটি •ভাষা মাত্র। স্তরাং শিল্প মাত্রই জাভিবিশেষের শৃকাও ভাবের অসুষায়ী হওয়া আবশ্চক। হুভাগ্য-বশত: ভারতে আধুনিক শিল্পিগণ নিকৃষ্ট পাশ্চাত্য শিলের অসম্পূর্ণ অনুকরণ করিছা আপন জাতীয় শিল্পমাধ্ব্যকে নষ্ট করিতেছেন এবং বিকৃত ক্ষৃতির ফলে উভোরা তাঁছাদের প্রাচীন শিল্পমাহাত্মা ও গৌরব প্র্যাপ্ত উপলব্ধি করিতে অক্ষম। এই কারণেই শ্ৰীযুক্ত অৰনীক্ৰনাথ ঠাকুরের চিত্র সকল ভারতের শিল্লিগণ অপেক্ষা পাশ্চান্ত্য শিল্লিগণের নিকট অধিক-তর আদৃত। ভারতের মৌলিক শিল্পান্দর্য্য সহক্ষে দেশবাসীর অঞ্গরণ অনেকটা পাশ্চাত্য শিলিগণের উৎসাহ ও আন্দোলনের ফল। এ সম্বন্ধে কলিকাভার শিল্পবিদ্যালয়ের অধ্যক্ষ হাভেল সাহেবের চেষ্টাতেই ভারতে বদেশী শিরের প্রতি দৃষ্টি ও অনুরাগ জাগ্রত হইয়া উঠিয়াছে।

শ্রীযুক্ত অবনীক্রনাথ ঠাকুরের মৌলক চিত্রগুলিই এই নব জাগরণের সর্ব্বপ্রথম ও শ্রেষ্ঠ ফল। ভারত-বাসী ভাহার আপন শক্তিও সৌন্দর্য্য বোধের ক্ষমতা উপলাক করিলে পৃথিবীকে কি অমূল্য বস্তু দান করিতে পারে অবনাজের চিত্র সৌন্দর্য্য তাহারই প্রমাণ মাত্র। তাহার চিত্রের নিপুণ্ড, কবিছ এবং মৌলিকড সম্বজ্ঞে ১৯০২ সালে প্রথম আমাদের দৃষ্টি আকুট হয়। ১৯০৩ সালে দিলী প্রদর্শনীতে তিনি যে সকল চিত্র প্রেরণ করিয়াছিলেন তাহা সকলেরই মনোযোগ ও প্রশংসা আকর্ষণ করিয়াছিল। তাহার মেঘদুত, বুদী ও প্রীকৃঞ্জের চিত্র সম্বজ্ঞ প্রসিদ্ধ করিয়াছিল। তাহার ক্মার বংমী যথার্থ ই বলিয়াছেন—

"এই সকল চিত্তের কোমলতা, মাধুর্য্য ও অনমু-করণীর ১েলকত ভাষায় অবর্ণনীয়। চিত্রগুলি দার্ক-জনীন ভাষায় ভারত-চিত্তের পরিপূর্ণ প্রকাশ। যাঁহা-দের দেখিবার ও শুনিবার শক্তি আছে তাঁহাদের নিকট ইহারা ভারতের আধাগণের আত্মাকে জবাধে ও অসংকাচে প্রকাশ করে। এরপ চিত্র যে **কে**বল ভারতের আধুনিক জাতীয়তার ভাবটি ক ষ্থার্থভাবে প্রকাশ করিয়াছে ভাষা নহে ইহারা ভারতের পুরাতন ভাৰটিকেও পুপের ভায় পরিক্ষৃট করিয়া তুলি-য়াছে; এ পুষ্প যে কেৰল অতীত দৌন্দৰ্যা ও মাধুরী খোষণা করিতেছে তাহা নহে ভবিষাতে ফললাভেরও যথেষ্ট আশা দান করিতেছে। যদি সাধনায় সকল বিভাগেই ভারতবিধ একংগ্র পবিবর্ত্তিত ও পুনর্জীবিত হইতে পারিত তাহা হইলে ভারতের গৌরব অচিরেই জগতের মধ্যে শীর্ষস্থান অধিকার করিত।"

চয়ন।

ভারতবর্ষ ও ফিলিপাইন—প্রায় দেড্শত বংসর

হইল ভারতবর্ষ ইংরাজের অধীন হইরাছে। এ দেশে

ইংরাজ আসিবার পূর্বেও বে ভাণ্ডবাসী শিক্ষিত,
সভ্য ও স্বায়ন্তশাসনে স্থানিপুর ছিল্ ভারতবাসী

দেড্শত বংসর ধরিয়া পাশ্চাত্য শিক্ষা, সভ্যতা ও

স্পাসন লাভ করিয়া আজিও স্বায়ন্তশাসন লাভের

অস্পযুক্ত ইহাই সাধারণ ইংরাজের ধারণা। জলে না

পড়িয়া সন্তর্গপটু হইতে উপদেশ দেওয়া যেরপ বৃক্তিযুক্ত, ইংরাজের ভারতবাসীকে স্বদেশ শাসনের সকল ক্ষমতা হইতে বঞ্চিত করিয়া স্বায়ন্তশাসনের যোগ্যতা লাভ করিতে উপদেশ দেওরাও সেইরপ। এতদিনে লর্ড মিণ্টো ও লর্ড মলির প্রসাদে ভারতবাসী শাসনক্ষেত্রে যংকিঞিং অধিকার লাভ করিয়াছেন কিন্তু আজু কয় বংসর মাত্র কিলিপাইন শীপপঞ্জ আমেরিকার অধীন হইয়াছে,—ফিলিপাইনবাসীরা

ভারতবাসীর স্থায় উচ্চ শিক্ষিত বা সভাজাতি নহে; তথাপি উক্ত দ্বীপ অধিকার কথার অব্যবহিত পরেই আমেরিকা ফিলিপাইনবাসীকে বেচ্ছার বায়ত্তশাসন দান করিয়াছেন। উচ্চ ও নির হুই প্রতিনিধি সভা ৰারা দীপপুঞ্জ শাদিত হয়। নিম্ন প্রতিনিধিসভা ফিলিপাইনবাসীদিগের স্বারা নির্কাচিত ৮০ জন সভ্যের ছারা গঠিত। প্রধান বিচারপতি একজন ফিলিপাইন वात्री এवः श्वादमानक मात्रनकर्खानित्वत्र मत्या व्यथि-কাংশই ফিলিপাইনবাসী। আমেরিকার এই উদারনীতি অবলম্বনে ভবিষ্যত সুফল সম্বন্ধে অনেকেই ভীত ও निक्क ३ हेश हिल्लन। আজ बाहात्रा अनु धतिया যুদ্ধ করিতেছে, কাল তাহারা স্বায়ত্তশাসন পাইলে কি অনিষ্টই না ঘটাইবে, এইরূপ আশক্ষাই অনেকের মনে প্ৰবল হইয়াছিল। কিন্তু ফলে দেখা গেল ঙাহাদের সে আশক্ষা নিতান্তই অমূলক। স্বায়ত্তশাসন পাইবাৰাত্ৰ বিজোধীরা অন্তত্যাগ করিল, দেশে শাস্তি স্থাপিত হইল ও সুশুখলায় শাসনকাৰ্য্য পেরিমালিত হইতে লাগিল। এবং ক্ষমতা লাভ করিয়া আমেরিকার বিরুদ্ধে যড়যন্ত্র করা অন্ত্রহণের -বাবস্থা কণা দুরে থাকু দ্বীপবাসীগণ শাবেরিকার নিকট ভাহাদের বখতা ও কৃতজ্ঞতা 🛶 🔫 কার্য়া খোষণাপত্র প্রচার করিল।

প্রেমের হারা, দানের হারা, মহছের হারা জয়ই প্রকৃত জয়। অন্তের হারা নষ্ট করা সহজ, ভয়ে বশীভূত করিয়া রাধাও সভব, কিছু তাহারায়া বেচ্ছাকৃত আত্মদান লাভ করা অসম্ভব।

সিংহলে আল্ফুপোপ—এসিয়াটিক টার্লি' নামক সংবাদপত্তে সিংহলবাসীগণকে বলপূর্বাক শ্রমঞ্জীবী হওয়ার বাধ্য করার ব্যবস্থা সম্বন্ধে কিছুদিন व्हेन अक्षे थावन वाहित व्हेशाहिल।

निश्वन **जी**रिशंद शवर्शद नार्ट्य स्थाकांद्र हा-कन দিগের সহায়তা করিবার জন্ম ছীপবাদিগণকে বল-পূর্বক তাহাদের বাগানে ক্ষেত্রে প্রমন্ত্রীবির কর্ম্ম করাই-वात रेष्हां । धनारके स्थात कतिता थाटकन। अहे উপারে খীপৰাসিপণের অবস্থার উন্নতি করিবার ⁶ও ুসম্ভব নহে। তুমি ডাহাকে বিদ্যা শিক্ষা' রাজনৈতিক তাহাদিপকে আলভে জীবন বাপন করার কলছের হস্ত

হইতে উদ্ধার করিবার শভিপ্রায় তিনি ছুইবার প্রকাশ্র ভাবে বাক্ত করিয়াছেন। উপস্থিত সময়ে দ্বীপবাদীগণ চা-করণণের উদ্যানে বাধ্য হইরা আম করার মাহাত্ম এত অল বুৰে যে প্ৰায়ই ত'হারা তাহাদের অল্পাভার সদয় আশ্রয় ত্যাগ .করিয়া পলায়ন করে। ভাতাদের এই हुर्स्त कि मृत कतियात अन्छ शवर्गत मारहरवत हैन्छ। যে যাহাতে পলাতক বাক্তিকে শীঘ্ৰই ৰাহির করা যায় এরপ একটা ব্যবস্থা করা হয়। তাঁহার মতে। চা वांशात निषुक नकन अमसीवित्रहे अकृष्टि कतिया বৃদ্ধাকুঠের ছাপ লওরা আবশুক ! বোধহয় এ অভি অতাটুকু তিনি দক্ষিণ আফ্রিকার পাইয়। থাকিবেন। তাঁহার এই সহনরতার উৎসাহিত रहेशा अकलन अधान हा-कत्र नांकि अंत्रकीित महत्त्राह করিবার একটা আড়ত খুলিবার ব্যবস্থা করিয়াছেন। প্রত্যেক প্রামের মোড়লের উপর আজা বাহির হই-बाष्ट य काशंत्र अलाकाद मध्य कछ शुक्रव, जीलाक ও বালক কর্মহীন জীবন যাপন করে তাহার এক ভালিকা প্রস্তুত করিয়া যেন দে দাড়তে প্রেরণ করে। তাঁহাদিগকে মাসিক কড়ারে কর্মে নিযুক্ত করা হইবে, এবং বাৎসবিক "কৃটির টেক্স" দিয়া ভাহা-দিগকে সাহেৰ গণের কর্ম্মে নিযুক্ত হইতে উৎসাহিত क्ता रहेरत । चीभवाभिभव এक्रभ बावचात्र विकृत्य छीज প্রতিবাদ করিতেছেন।

আর্থিক অধীনতা ও জাতীয় স্বাধীনতা---আমেরিকার এরিনাগতে জাতীয় স্বাধীনতার ভিজি मचरक अकृष्टि अवक वाहित हहेबारह ! अ मचरक খাণীন জাতির মতটা আমাদের চিস্তার অনেক সহায়তা করিবে ৰলিয়া আমরা নিমে তাহার মর্মা দিলাম।

त्रानंत्र अनुमाशातरमञ्ज व्यथीनकार यासकाहात-শাসনের ভিত্তি। বতদিন দেশের জন শাধারণ আর্থা-গ্ৰের জন্ম ৰপরের নিকট অধীন' ততদিন সে জাতির वाधीनका कामा इतामा वा हःवधनाता। त्य वाक्ति छाहात आंत्राक्तानरनत सह स्वन्दतत हैक्तात व्यरीन, त्म वाकि कान २ एवर वाबीन नाइ । इन्द्रा অধিকার ও অক্তাপ্ত गांवजीय उन्ह मान कतिताल त

অধীন, শক্তিহীন ও শ্রমনাস তির আর কিছুই নহে।
দাসত্ব করিয়া এক টাকা পাইল কি লক্ষ্য টাকা পাইল,
তাহাতে কোনও প্রভেদই নাই । বা তাহার জীবিকানির্বাহের জন্ম দে একজনের দাসত্ব করিল কি দশজনের দাসত্ব করিল, তাহাতেও বিশেষ আসিয়া যায়
না। তাহার দাসত্টা অলবিত্তর আত্মসম্মানের আবরণে
আবৃত মাত্র। জাতীয় স্বাধীনতার যথার্থ ও প্রকৃত
ভিত্তি আর্থিক স্বাধীনতা। মকুধ্যপদবাচ্য সকল
জাতিরই মুখ্য উদ্দেশ্য ব্যাধীনতা লাভ। সেই জন্মই
গ্রপ্নিক্টের প্রতিটা। আধীন জাতির স্বাধীনতা
রক্ষা বা চেষ্টাবান্ জাতিকে স্বাধীনতা লাভে সহায়তা
করিবার জন্মই গ্রমেণ্টের আবশ্যক।

ভারতে স্বদেশী শিল্পের উন্নতি — ম্যাঞ্চারের বিণিক সমিতির বাৎসরিক অধিবেশনে সভাপতি আাশওয়ার্থ সাহেব বলিয়াছেন — ১৯০৭ সালের তুলনার "১৯০৮ সালের ছয় মাসের মধ্যে ভারতে তিন ক্রোড় নক্ষই লক্ষ টাকার কম বিলাতি বন্ধ রপ্তানি হইয়াছে। কিন্তু ঐ সালের শেষ ছয় মাসে আরও সর্ব্বনাশ হইয়াছে। এই কয়মাসে মাঞ্চেটার প্রায় ১৯ ক্রোড় দশ লক্ষ টাকার ক্ষতি স্বীকার করিয়াছে। এ বৎসরের অবস্থা আরও শোচনীয়।

ন্তন গ্রহের আবিষ্ণার—এতদিন স্ব্যোতিবিবংগণের ধারণা ছিল শনিগ্রহের পর আমাদের
ক্র্যানওলে আর কোন বৃহৎ গ্রহ নাই। কিন্তু এক্ষণে
অধ্যাপক পিকারিং আবিদ্ধার করিয়াছেন যে শনির
পরে আরও একটি বৃহৎ গ্রহ আছে। অধ্যাপক
কর্ব্ (Forbes) বছদিন হইতেই এ বিষয়ে
এইক্রপ অনুমান করিতেছিলেন।

স্র্য্যের প্রকৃতি—সম্প্রতি বিলাতের ররেল ফটোগ্রাফিক্ সোসাইটিতে কোনল্ সাহেব বলিয়াছেন যে; স্থ্যের যে দাগটি সর্বাপেক্ষা ক্ষুদ্ধ, সেটিও পরিবিতে পৃথিবী অপেক্ষা ছই তিন শত গুণ বৃহত্তর। স্র্যোর মধ্যে যে সকল উচ্চছান আছে, সে নকল পঞ্চাশ হইতে ক্লাট হাজাব মাইল উচ্চ। এই সকল উচ্চছান অতি অল্প সময়ের মধ্যেই বাড়িয়া উঠিতে দেখা যায়। একটি উচ্চছান প্রত্যেক সেকেণ্ডে তিন শত মাইল লইয়া বৃদ্ধি পাইস্কেট দেখা গিয়াছে।

আমুক্তানের উপকারিতা—অমুক্তন বাপা বে মাত্যকে কত শক্তি প্রধান করে তাহার পরীকা করিয়া বিলাভের একজন ভাক্তার তাঁহার অভিজ্ঞতার বিষয় প্রকাশ করিয়াছেন। কোনও ব্যায়ামের পূর্ব্বে কিছুক্ষণ অমুক্তানের নিঃখাস লইলে মাত্যুষ আর সহজে রাভ হইয়া হাঁপাইয়া পড়েন। অধিকন্তু বক্ষে অসাধারণ বল লাভ করে দি

চাউল ও দৈহিক বল—বিলাতের এক সংবাদপত্তে একজন লিখিয়াছেন যে চাউলের স্থায় উপকারক ও স্থবিধাজনক খাদ্য আর নাই। অস্থাস্থ খাদ্যমাতেই জার্ণ ইইতে আড়াই ঘণ্টা ইইতে সাড়ে চার ঘণ্টা সময় লাগে। কিন্তু চাউল এক ঘণ্টার মধ্যেই জার্ণ ইইলা যার। বাজারে যে মাজা চিকণ চাউল বিক্রয় হয়, তাহাতে চাউলের পৃষ্টিকর ভাগ অত্যক্ত কমিয়া যার। চাউল কলে মাজিরা চিকণ করিতে প্রায় শতাংশের নকাই ভাগ সারাংশ নষ্ট ইইয়া যায়। তিনি বলেন জাপানীরা যে এত বলিষ্ঠ ও কইসহিছ্ ভাহার এক প্রধান কারণ এই যে, তাহারা মাজা চাল খায় না।

ইহা হইতে দেখা যাইতেছে যে ভেতো বাঙ্গালীর অপরাধটা ঠিক ভাতের নহে।

তৃত্ব ও মেদ — আমরা চিরদিন হুর্ম পুল, মুম্পিকারক বলিয়াই জানি। কিন্তু সম্প্রতি ডাক্টার এক,
মরিজকু বলিয়াছেন যে, ছন্ধ অতিরিক্ত মেদ নষ্ট
করিবার প্রধান ঔষধ। ছন্ধের বাবহারে রোগী ক্ষুধা
ও তৃষ্ণা হইতে কষ্ট পায় না এবং অনাহারে রাখিবার
বিপদের সন্তাবনাও ইছাতে নাই। ডাক্টারের
এক রোগীর মেদ এতাদৃশ বন্ধিত হইয়াছিল যে
ওজনে সেপ্রায় সাড়ে তিন মন দাঁড়াইয়াছিল।
তাঁহার দেহের যাভাবিক ওজন প্রায় হুই মন হওয়া
উচিত ছিল। ডাক্টার রোগীর পণ্যস্কর্প প্রতাহ প্রায়
ছুই সের করিয়া হন্ধের ব্যবহা করিলেন। ৮১ দিন
এই পথ্যে থাকিবার পর তাহার প্রায় ২৩ সের
ওজন কমিয়া গেল। ডাক্টার হিসাব করিয়া
দিখিলেন এই কয়দিনে তাহার প্রায় ৬৪০৬
গ্রাম (gram) মেদ কমিয়া গিয়াছিল।

জাপানে রম্বী-প্রেম-একজন পদস্থা ও

শিক্ষিতা জাপানী নারী ইংলণ্ডের ও জাপানের রমণী-গণের প্রেম সম্বাক্ষেত্রনা করিয়া বলিরাছেন—

এখানকার মত জাপানে যুবতীগণের জাপনার প্রেমের কথা স্পষ্টভাবে প্রকাশ করিয়া বলিবার জাধিকার নাই। এইজন্ম ভাহারা ভাহাদের অন্তরের প্রেম গোপন রাখিয়া কষ্টভোগ করে। সাধারণতঃ জাপানী রমনা প্রেম প্রকাশ করা অপেকা মৃত্যুকে বরণ করা সহজ মনে করে। এ ভারটা এখানে খুব আশ্চর্যা বলিয়া বোধ হইতে পারে, কিন্তু দেখানে পুরুষ ও স্ত্রীলোকের মধ্যে এরূপ স্বাধীনভাবে মেশা-মেশি নাই বলিয়াই রম্ণীগণের প্রকৃতি ঐরূপ হইয়া দাঁড়ায়।

ল্পাপানে রমণীগণ পুরুষের সম্মুখে উপবেশন করি-বার অধিকারটুকু হইতেও বঞ্চিত। বালক বালিকা সাত বংগ্র বয়স অভিক্রম করিলেই, এই নির্বেচনিতে বাধ্য।

জাপানে রমণীগণের-প্রেম উন্নৃত, গভার ও পৰিত্র।

জাপানে ভ্ইজনে পরস্পারকে একবার ভাল বাসিলে
কোটী মুদ্রাতেও আর ভাহাদের মনকে পরিবর্ত্তিভ করা
সন্তব নহে। তাহাদের মন্তকের উপর ঘাতকের অসি
লখমান থাকিলেও তাহারা প্রেমপ্রতিজ্ঞাবিশ্বত হয় না।

জাপানে রমণীগণের প্রেম যথার্থভাবে আন্তরিক।
ভাহারা অর্থ বা পদের মোহে প্রেমার্থিনী হর না।

জাপানে রমণীগণ সাধারণ সময়ে বদিও অত্যন্ত
শান্ত ও কোমল কিন্তু যুদ্ধের সমরে তাহারা তাহাদের
রাজাদেশ বা স্বামীর জাল প্রাণাদান করিতে সর্ব্বদাই
প্রস্তুত। সাধারণতঃ জাপানী স্তীলোকগণ বেরুপ পরি-

শ্রম করে সেরূপ পরিশ্রমে পুরুষগণও ক্লান্ত হইরা পড়ে I

मगादनाहरा।

• ইংরাজ-বজ্জিত ভারতবর্ষ।—পিয়ের লোটির ফরাসী হইতে শ্রীজ্যোভিরিজ্ঞনাথ ঠাকুর কর্তৃক ভাষান্তরিত। প্রকাশক, শ্রীচারচন্দ্র বন্দ্যোপাথায়, , ইপ্রিয়ান পাব্লিশিং হাউস, কলিকাতা। কান্তিক

পাশ্চাত্য ভ্ৰণণ্ডের একশ্রেণীর জ্বনণবৃত্তান্ত লেখক আছেন, যাঁহারা বিজ্ঞতার একটা কঠিন বর্মে জাপনাদিগকে আবৃত করিয়া, চক্ষে কালো চশমা, হাতে নােটবুক ও হ্রনরে বিরাট অবজ্ঞা লইয়া দেশজ্মণে বহির্গত হন এবং যাহা দেখেন তাহাতেই একটা বর্ষরহার কৃষ্ণ চিক্ন দেখিতে পান। দেশ দেখিতে হইলে যে সার্ব্যক্ষনীন উদারতা, সহাস্তৃত্তি ও স্ক্রদৃষ্টির প্রয়োজন সেগুলির একাল্ত অভাবে তাঁহাদের গ্রন্থাবালী বিষের সাহিত্যভাগ্যারের কোণকদেশও পূর্ণ করে না, কেবল আবর্জনা বৃদ্ধি করে মাত্র। পিরের লােটি এ ভােণীর অন্তর্গত নহেন! তিনি এই প্রাচীন দেশ ও তাহার অধিবাস্যাগণের প্রতি অনৈক্ষানি শ্রদ্ধা, সহাস্তৃতি ও সহদরহা লাইয়াই জ্বাণে আসিয়াছিলেন এবং তাহার ফলে যে গ্রন্থ তিনি

রচনা করিয়াছেন তাহা লোকসাহিত্যে চিরদিন একটি বিশিষ্ট আসন অধিকার করিয়া থাকিবে। ওাঁহার গ্রন্থ সাড়ম্বর আত্মকথার পূর্ণ নছে; তিনি যাহা দেখিরাছেন, সাতিশর দক্ষতার সহিত তাহারি নিখুঁৎ পাঠকের সন্মুৰে উপস্থিত করিয়াছেন! লেখকের যেমনি স্থা অন্তর্তী, তেমনি সরল সহামুভতি! কেমন করিয়া দেশ দেখিতে ২ছ, গ্রন্থখানি পাঠ করিলে ভাহার একটা ধারণা হয়! লেখকের ঐল্রজালিক তুলিকাম্পর্শে অনেক গুপ্ত সৌন্দর্য্য প্রকাশ পাইরাছে, এইজকাই গ্রন্থানি উপকাস অপেকাও উপভোগ্য! জ্যোতিরিন্দ্রবৃত্ অমুবাদে त्रिकृत्स, এकथा नृष्ठम कतिता विनवात धाराजन নাই, সংক্ষত সাহিত্যে যতগুলি উল্লেখযোগ্য কাব্য নাটক আছে তাহার সবগুলিই আল জ্যোতিবাবুর অত্থাহে ৰক্ষাবাম অমুবাদিত হইয়া বক্সাহিত্যের গৌরববর্ত্বণ করিতেছে। অসুবাদে এমন অক্লান্ত অধাৰদায় ও একাগ্ৰভা জগতের ইতিহাদে বিরল বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। প্ৰতিৰৎসর সুপাঠ্য অফুৰাদ গ্ৰন্থে ভিনি বঙ্গনাহিত্যের যে এবুদ্ধি করিতেছেন তাঁহাতে তিনি সাহিত্যামূরাগী বাজিসাতেরই বিশেষ কৃতজ্ঞতা ভাজন। বারান্তরে তাঁহার অমুবাদ সম্বন্ধে স্বিতার অংলোচনা করিবার ইচ্ছা রহিল।

তাঁহার বর্ত্তমান স্থানিপুণ অপুরাদে পিয়েরলোটির মৌলিক সৌন্দর্য্য সম্পূর্ণ অকুর আছে, একথা আমরা অদকোটে বলিতে পারি। এই অত্বাবের ভাষায় এমন একটি মধুরতা আছে, একটা আকর্ষণী প্রভাব আছে, যে তাহা চুম্বকের স্থায় নিমেষেই পাঠকের চিওঁকে আফুষ্ট করে! জ্যোভিবাবু বর্ত্তমান অমুবাদে বাঙলার দাহিত্য ভাণ্ডারে যে শুধুরত্ব সংগ্রহ করিয়া দিলেন তাহা नदृश, বাঙগার অমণবুরান্ত-লেখক গণের সম্মুখে একটি আদর্শও উপস্থিত করিলেন। লেখকের স্কাদৃষ্টি ও অমুবাদকের নিপুণ অস্থবাদের দৃষ্টাপ্তস্বরূপ প্রস্থের একটি স্থল উদ্ধৃত করিবার প্রলোভন সম্বর্ধ করিতে পারিলাম না। লেখক ছভিকের চিত্র আঁকিয়াছেন.—

"গ্রামের প্রবেশপথে রাস্তার চৌমাথার কতকগুলি শিশু—কতক্পুলি ক্ষুদ্র নরকল্পাল বলিলেও
হয়—ছই হাতে আপনাদের উদর ধরিয়া একটা-কি
গান গাহিতেছে, অথবা চীৎকার করিয়া কি
বলিতেছে। উহাদের উদর ভিতরদিকে ভয়ানক
চূকিয়া গিয়াছে; চামড়ার থালি বোতলের মত
কূচিকয়া চূপিয়য়া গিয়াছে; বড় বড় চক্ষু;—কেন
এত ডঃখ যস্ত্রণা সহিতে হইতেছে ভাবিয়াই যেন বিয়য়বিক্লারিত।" কি মর্মন্দেশী জীবস্ত চিত্র! পরিশেবে
বক্তবা, গ্রন্থের বছিরবয়বও ফুক্লর হইয়াছে।

সিদ্ধিতত্ব বা কর্মপথ।— শ্রীকুমুদিনীকান্ত গকোপাধ্যার প্রণীত। কলিকাতা, ৬৫ নং কলেজ খ্রীট হইতে ভট্টাচার্য্য এণ্ড সন্স্ প্রকাশিত। কমণা প্রিণ্টিং ওয়ার্কদে মুদ্রিত। মুল্য এক টাকা।

গ্রন্থানি শ্রীযুক্ত আশুতোব মুখোপাধ্যার সংস্থতী মহোদরের গৌরবাধিত নামে 'উৎদর্গী-কৃত'। গ্রন্থের নাম শুনিয়া যদি কেহ ভাবিয়া থাকেন, ইহা একটা রীভিমত গবেষণাত্মক দার্শনিক গ্রন্থ, তবে ভাষা ভুল। গবেষণার সহিত ইহার কোন সম্পর্ক নাই। "প্রকৃত মানবন্ধকামীর জীবন কোন্

পথ অবলম্বন করিবে, জীবন-সংগ্রামের ভীম ঝঞায়---দৈক্তে, নৈরাখে কোন্ আলোকের দিকে চাহিয়া মানৰ বল পাইবে—ভাহার চিত্র দেখাইভে" লেখক "যথাশক্তি প্রয়াদ পাইয়াছেন।" ইংরাজা ুসাহিত্যে আইল্দের Self-Help বা ব্লাকির Self-Culture গ্রন্থের অমুকরণে বর্ত্তমান গ্রন্থ লিখিত। ক্ষুদ্র গ্রন্থে লেখক অনেক সভ্যের অবভারণা করিয়াছেন, তকে বিশেষ যুক্তিতর্কের সাহায্যে সেগুলি পল্লবিত করেন নাই। ভাষা-ভাষা ভাবে তিনি কতকগুলি জীবন সমস্থার রহস্ত ট্রন্মাটনে প্রয়াস পাইয়াছেন তাহার ফলে গ্রন্থথানি মুখপাঠ্য হইয়াছে কিন্তু উদ্দেশ্যের সক্ষরতার পক্ষে তাহা পর্যাপ্ত নহে। লেখকের মতের সহিত সর্বর আমাদিগের মতের মিল নাই। 'বলঙ্গাক' 'ইউঞ্জিনির' আদর্শ দেশকালপাত্রভেদে আমাদের দেশের ঠিক উপযোগী नटर ! रैलबक यमि এक টু कष्टेश्वीकांत्र कतिया আমাদের দেশের বর্ত্তমান মহৎ চরিত্তের আদর্শও পাঠকের সমুখে উপস্থিত করিতেন তাহা হইলে তাহার অবতারণা অধিকতর দার্থক হইত। গ্রন্থের আর একটি ক্রটি, মধ্যে মধ্যে ভাষার গ্রাম্যতা দোষ। এ সকল ক্রটিদত্ত্বেও লেথকের উদ্যুদ ও প্রশ্নাস প্রশংসনীয়। গ্রন্থের উপকারিতা সম্বন্ধেও সন্দেহ নাই। ঠিক এ শ্রেণীর শিশুপাঠ্য এই মতু অধিক রচিত্র হয়, ততই মঙ্গল !

(नथा।-- वीगठोलस्माइन ৰাগচী প্ৰণীত। উইলকিন্স্ প্রেসে মৃদ্রিত। ম্ল্য এক টাকা। এথানি কবিভাগ্রন্থ এবং 'কবিশুরু শীযুক্ত রবীক্রনাথ ঠাকুর মহোদয়ে'র নামে উৎসগীকৃত। ;ভারতী'র পাঠক-বর্গের নিকট যতীক্রবাবুর পরিচয় নুতন নছে। তাঁহার 'লেধা'র অন্তভুক্তি অধিকাংশ কবিতাই ইতিপূৰ্বে 'ভারতী'তে প্ৰকাশিত হইয়াছিল। এই কবিতার হুর্ভিক্ষের দিনে যতীক্রবাবুর 'লেখা' পাঠ করিলে আনন্দলাভ হয়, ইহা অল সোভাগ্যের কথা নহে! ভাবের স্কিঞ্গতা, ছন্দের সহজপ্রবাহ এবং শব্দের মাধুর্য্যে 'লেখা'র কবিভাগুলি শিশিরস্থাত পুষ্পের স্থায় ঝলমল করিতেছে! গ্রন্থের न्त्रिभाष्टि हाभा, ও গরদের বাধাই সহজেই দৃষ্টি আকর্ষণ

করে। আমরা যতীক্সবাবুর সাধনার সাক্ষ্য কামনা করি।

রাখী-কঙ্কণ।—(খনেণী উপক্তাস) প্রথম খণ্ড। শ্রীগঙ্গাচরণ নাগ প্রণীত। বরিশাল হইতে গ্রন্থকার কর্ত্তক প্রকাশিত। উইলকিন্স মিসন প্রেংস মুদ্রিত। ন্লা দশ আনা মাত্র। ছ:ধের সহিত স্বীকরি করিতে হইতেছে, যে গ্রন্থবানি পাঠ করিলা আমরা স্থা হইতে পারিলাম না। স্বদেশী প্রচার করে এই উপস্তাদের স্কৃত্তি; কিন্তু নিপিকৌশলের অভাবে গ্রন্থবানি স্থপাঠ্য হয় নাই—অথচ মাধানভাগটুকু মন্দ ছিল না।

শীসভ্যবতশৰ্মা

হাফেজ

ওগো মনোহর চক্রের চক্রিমা, চির প্রভাস্কর ও মুখ মহিমা, শোভন স্থবর্ত্ত চিবুকে তোমার লালিত্যে করিল লাবণ্য সঞ্চার! দরশনে তব করিবে প্রয়াণ, প্রভ ওঠাগত হল তাই প্রাণ, চলিবে কি গৃহ করিবে প্রতীক্ষা কেবল ভোমারি আদেশ অপেকা। তুমি যদি আস, এসো সন্তৰ্গণে,— শোণিত কৰ্দ্দম না ছোঁয় বসনে, (कननां ७ পথে र'न वनिमान, তোমারি উদ্দেশে বহু শত প্রাণ! জ্বলে গেল প্রাণ দেখি দিনে দিনে সে প্রেমময়ের কুপাবারি বিনে; দোহাই কে আছ মরমী এমন প্রাণেশে ও দশা কর নিবেদন ! কটাকে তোমারি সদা সচঞ্চল হেরি যে নিখিল বিশ্ব শতদল ! বিকায়ে সরম তবে হত মন প্রেমহাটে তব ল'ক দাসীপণ। স্থি নিষ্ণ অদৃষ্ট আমার, প্রসন্ন নয়নে চাহিবে আবার, — আঁথিপাতে তার যবে স্থধা বিন্দু সিঞ্চিল তোমার প্রেমমুথ ইন্দু।

মধ্যাকতে পাঠাও তোমার কপোনাধত রক্ত পুষ্পভার, তোমারি নিকুঞ্জ ফুল রেণু মাঝে যদিবা তোমার পরিমল রাজে। অনরাবতীর অমৃত ভাগোরী অমর রহিও কামনা আমারি, অমৃত উৎসবে যদিও তোমার শূক্ত থাকিল মোর পানাধার। প্রন আজিকে করহাবনে, স্থরলোকে মোর এই নিবেদন,— সতেরি চরণে অধম অসৎ দি'ক নিজ তুও কন্দুকবং। শুধু এই দেহ পড়ে আছে দুরে, মন নিত্য তব কাছে কাছে ঘুরে; জগত নিধান ! সেবক সস্তান সদা করি মোরা তব গুণগান। ওহে মহাভাগ ৷ ওগো রাজ রাজ ৷ মহান আশ্বাস দেহ মোরে আজ ;— আকাশের মত রহিব নিয়ত তব গৃহান্ত্ৰণ ধূলিতে বিভত। হাফেজের শুন প্রার্থনা বচন, এবমস্ত কহ স্বস্তি বচন, -- মধুত্রয় হোক্ জীবনে আধার মধুর অধর অমৃত তোমার ! শ্ৰীঅবনীক্ৰনাথ ঠাকুর

श्वर्रानिश।

বাউলের স্থর-একতালা।

আমি কি যেমন তেমন ঘটকী, ও গিরি।
আমার পারে পড়ে আট পহরে,
ভারে ভারে ভারে সিরি!
রং বেরঙের, স্কগুণ স্থরূপ,
এক একটি বর আন্ত তুরুপ,—
আমার হাত ধরা,—
আর কনে সবি, হরেক বিবি—
এমন কেউ কখনো পাননি!
চাও যদি গো গুণের মেয়ে—
তার না ফুরবে অন্ন দিয়ে,—
আনব—স্বয়ং দ্রৌপদী;—
কিল্বা পটল পারা চকু চেরা—

চাও কি রূপের বহি ?
নয় যদি চাও টাকার থলে,
তাহাও বল খুলে থেলে
ওগো—বিলাত যাবে—তোমার ছেলে,—
স্বাই কবে ধন্মি।
বেশী কথা কি কব আর,
ভবে করি যাত্রী পার—
আমি কাণ্ডারী,
ছেলে মেয়ে, মা বাপেরা,
পার ইতে চাও যারা যারা
আঁচল ধরে দাঁড়াও তারা,—
আমি—নহিত সামান্মি!
শীমতী স্বর্ণকুমারী দেবী।

[जा-1 जा । जां जा-मा । मा जा-। धा भा भा । मा - धा था । जां ना - धा था । চাওৰ দিগো • ও ণের মেরে তার না • ফুর বে • ।মা-গাপা। মামামপা I গা-গামগা। রা-পামা। পুা-া-। -ানানা I च • व्र निष्यं चानव च यः • एतो • श नौ • • कि पा I{नार्मा-!। र्नार्मा-!। र्ना-नार्बा। र्नाना-!!} {नार्मा-!। र्नार्मा-ना। পারা• চ • কু চেরা• চাও কি র পে র্ । धना - 1 পা। (-1 ना ना) I । -1 মমা গা॥ (সা - 1 গ'। রা গা - 1 । সা সারা। ব ৽ ক্লি • ওগো • "আমিকি" ন য় য দিচাও টাকার্ ' । माना-1 I माना-मा। शाजा-। ताजा-शा(माशा-1) I} माशाभशा I থলে তাহাও বল ত খুলে ত খেলে তথেল I পা পা -।। धा धा -।। ना र्मा -।। र्ता मा -। ना धा -।। ना ना -। र्मा -। -।। বিলাত যাবে ৷ তোমার ছেলে ৷ স্বাই কবে ৷ ধ . . গ্রি মার হায় ০ ০ ০ ০ ০ হায় ০ রে ০ ০ ০ বিশাত ০ ा धा था ना ना ना नी । र्ज़ार्भा न I ना था न । ना ना न । र्जा न र्जा । र्नी न न I যাবে • তোমার ছেলে • স্বাই • ক্বে • ধ • ভি • I र्मार्ग-।। নানা-। ধাধা-।' পাপা-II মামা-ধা। পাপাধপা। কথা• কিবল্৽ ব আঁর ভবে • করি • ه اوا مهري ।মাগাপা। মা-।পমা I গাগা- মগা। রা-পামা।পা-†- † - † - † - † । যা এী পা ব আমি • কা • গুরী • • • • • I সাগা-1। গাগা-মা। মাপা -1। धाপা -1 I মা-1 পা। धाधा-र्जा। ছেলে॰ ফেলে॰ মাবা• পেরা• পারহ তেচাও । ना शाना। शाशास I कि र्मानी। र्मानीना। । र्मानमीन्ती। যারা • আঁচল • ধরে • দাঁ ড়া তারাআমি নহি॰ ত সা• মা• ঞি তারা ৽ । (- 1 ना ना) I} - 1 ममा গা॥

• "আমি কি"

ग्रामि

শ্ৰীমতী ইনিয়ো দেবী।

চিত্ৰ-ব্যাখ্যা।

শুক-শারিকার কলহ।—এই চিত্রথানি

শ্রীযুক্ত অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর কর্তৃক বেতাল
পঞ্চবিঞ্গতি গ্রন্থের চতুর্থ উপাধ্যান অবলম্বনে
লিখিত। সংক্ষেপে গল্পাংশটুকু এইরূপ:—

ভোগবতী নগরীর অধীশ্বর প্রসিদ্ধ অনঙ্গ পালের চড়ামণি নামে এক ত্রিকালজ্ঞ শুকপক্ষী ছিল: মগ্ধাধিপতি রাজা বীরসেনের ক্যা চলাবতীরও মদনমঞ্জরী নামে এক ত্রিকালজ্ঞা শারিকা ছিল। অনকপালের সহিত চক্রাবতীর বিবাহের পূর্বের উভয়েই স্ব স্ব শুকশারিকার নিকট হইতে জানিতে পারেন যে তাঁহাদের পরম্পরে বিবাহ হটবে। বিবাহ হটলে চন্দ্রাবতী অনঙ্গপালকে একদিন কথাপ্রসঙ্গে বলিলেন—"আমাদের ত বিবাহ হইয়া গেল, পক্ষী চুটা একা থাকে কেন ?" তখন সহিত শারিকার বিবাহ দেওয়া শুকের হইল। বিবাহ হইল বটে; কিন্তু উভয়ের মিলন কিছুতেই হইল না। তথন রাজা একদিন শারিকাকে তাহার অপ্রণয়ের জন্ত করিলেন। শারিকা কহিল--অনুযোগ "পুরুষের সহিত প্রণয় সঙ্গত নয়, পুরুষ বড় শঠ, কপট ইত্যাদি। শুকও নীরবে সহি বার পাত্র নহে, সেও উত্তর দিল "নারী চপলা কুটিলা, বিশ্বাসঘাতিনী।" শারিকা রাজা ও রাণীর উদ্দেশে পুরুষের শঠতা সম্বন্ধে এক গল বলিতে বসিল।

ইহাই চিত্রের বর্ণনীয় বিষয়। চিত্রাথানিতে অবনীক্রবাব্র লিপিকুশলতা বিশেষ প্রকাশ পাইয়াছে। 'রাজা ও রাণীর মুখে-চোখে— বিশার কৌতৃহলের ভাবটুকু এবং তাহার সহিত পক্ষী হুটির শ্রুতি প্রগাঢ় সেহ এমন স্থলর ফুটিরাছে বে তাহা আর ব্যাখ্যা করিয়া বৃঝাইবার বোধ হয় প্রয়োজন হইবে না। চোথছটি যে পুতৃলের 'চিত্রকরা' চোখ নয় তাহা দেখিলেই বুঝা ফায় এবং পাখী ছটিও শুধু চিত্রের সোষ্ঠব বর্দ্ধনার্থ অঙ্কিত শোলার পাখী নহে। তাহাদের যে প্রাণ আছে তাহা চিত্রকর অতি নিপুণভাবেই অঙ্কিত করিয়াছেন।

আর একটি প্রধান বিশেষত্ব, রাজারাণীর পরিচ্ছতে স্বরের মধ্যেও ঐশ্বর্যের যে আড়ত্বর আছে,—রাণীর ওড়না গালিচা প্রভৃতিতেও— এবং চতুপ্পার্শের যে দৃশ্যটুকু তাহা ভারতবর্ষের সম্পূর্ণ নিজস্ব! তাহার 'মডেল' বিদেশের আমদানী নহে।

শীয়ক ক্রেন্দ্রনাথ গঙ্গোপাধ্যায় অভিত "লক্ষণের শক্তিশেলের" উপাথান বাঙালী পাঠক কাহারো অজ্ঞাত নহে। চারিদিকে গন্তীরভাব—সমুদ্রের উচ্ছল বারিরাশিও আজ নীরবে বেলাভূমিতে আদিয়া প্রতিহত হইতেছে, কোথায়ও আর জনপ্রাণী নাই---সাড়া শব্দ নাই ! এই নিৰ্জ্জন ছায়াচ্ছন সমুদ্ৰ-তীরে লক্ষণের দেহ,---সন্মুণে রামের শোক-কাতর মূর্ত্তি, নয়নে বিষাদ ও হতাশার করুণ ভাব চিত্রকর দক্ষতার সহিত চিত্রিত করিয়াছেন। চারিধারে মৌনভাব রামের অসহায় হৃদয়ের মৌন কাতরতার সহিত কি স্থন্দর থাপ খাই-য়াছে। রামের বীরভাব এ অবস্থার চিত্রাঙ্কণে সঙ্গত নহে এ কৰা কাহাকেও আশা করি विषयः पिटि बहेरव ना ।

बीतोत्रीक्रासाहन म्र्थानाधात्र।

অরবিন্দ ঘোষ।

এতদিন পরে গত ৬ই মে তারিখে আলিপুরে বোষার সক্ষমা শেষ হইল। ৩৬ জন বিচারাধীনের মধ্যে ১৭ জনকে মুক্তিদান করিয়া বিচারপতি बिह्कक् है (मर्भंब व्यावानवृक्ष मकलाव व वज्रवारमव পাত্র হইয়াছেন। অনেক বালককেই যে পুলিশ এই মকদমার বুথা জড়িত করিয়াছে ;—বৈশেষতঃ অরবিন্দ ষে সম্পূর্ণ নিরপরাধ এই বিশ্বাসে এতদিন দেশের সকলেই ভগবানকে আকুলভাবে ডাৰিয়া, এই বিচার নিপাত্তির দিকে উদ্গ্রীবভাবে চাহিয়া ছিলেন। আকুল প্রার্থনা গ্রাহ र हेम. বিধাতা অরবিন্দকে व्यामारमञ्ज व्यानरमञ्ज मिन ! অগ্নি পরীক্ষার উত্তীর্ণ করিয়াছেন। তিনি যাহাকে ভালবাদেন তাহাকে কট্ট দিয়া নিজের কাছেই होनियां लन। अवित्मत विमावृद्धि अभिविभीय; তিনি ইচ্ছা করিলে, স্থগে স্বচ্ছন্দে মহাসম্মানে সংসার-যাত্রা নির্বাহ করিতে পারিতেন। সকলেই জানেন তিনি সিভিল সাভিশে পাশ হইয়াছিলেন কেবল অশ-পরিচালনে ফেল হওয়াতে সে কর্ম লাভ করেন নাই। क्ति हैश मर्च अर्थ अर्थ देश हैश कि कि कि कि করিতে চাহেন। অর্থিন তাহা গ্রহণ না করিয়া প্রথমে বরদারাজ-কর্মচারী হইয়া পরে দেশের কাজে পূৰ্ণভাবে জীবনদান বাদনায় সে কৰ্ম্মণ ত্যাগ করিয়া কলিকাভায় আগমন করেন। এথানে শত কষ্টকে তৃচ্ছজ্ঞান করিয়া মাতৃপূজার আব্যোৎসর্গ করিয়া তাঁহার আদর্শ তাঁহার শিক্ষা কৈবল বঙ্গদেশের মধ্যে নছে-ভারতবর্ষে নবধর্ম নবযুগ, नवधीवन मध्येत कत्रिवारक |--- छै!शांत खीवन छात्ररङ অতুলकोर्छि। মাতৃভূমি ইহাঁর নিকট এড়পদার্থ নতে, আত্মাবন্ত পদার্থ। তিনি তাঁধার পত্নীকে একথানি পত্তে এসম্বন্ধে যাহা লিখিয়াছেন ভাষা অতি স্বন্ধর। স্থানাভাবে আমরা তাহার কিরদংশ মাত্র উদ্ধৃত কৰিয়া দেখাইড়েছি :---অস্ত লোকে খদেশকে একটা জড় পদার্থ, অভ্যতনা मार्ट, क्या, शर्काड, निषी बिलद्दा कारन, व्यामि खलनक

मा बिना सानि, एक्टि कति, शुक्ता कति। मात कृत উপর বসিয়া যদি একটা রাক্ষ্স রক্ষপানে উদাত তাহা হইলে ছেলে কি করে ! নিশ্চিত্ত ভারে আ করিতে বদে, স্ত্রী পুত্রের সঙ্গে আমোৰ করিতে হ না মাকে উদ্ধার করিতে দৌড়িয়া যায় ? আমি জ এই পতিত জাতিকে উদ্ধার- করিবার বল আ আছে, শারীরিক বল নাই, তরবারি বা বন্দুক 🕹 আমি যুদ্ধ করিতে যাইতেছি না, একমাত্র তেম নহে, ব্রহ্মতেমণ্ড মাছে, সেই তে জ্ঞানের উপর প্রতিষ্ঠিত, এই ভাব নৃতন মহে, আঃ কালকার নহে, এই ভাব নিয়া আমি ক্রিয়াছিলা এই ভাব আমার মজ্জাগত, ভগবান এই মহাত্রত সাধ করিতে আমাকে পৃথিবীতে পাঠাইয়ছিলেন, চৌ বংশর বয়সে ধীকটা অন্থরিত হইতে লাগি দৃঢ়-প্রতিষ্ঠ ও অচঃ বয়সে বৎসর হ**ই**য়াছিল। * **

তাঁহার মুক্তির পর্যদিন কলিকাতার অরবিন্দের সহিত সাক্ষাৎ করিতে পিয়াছিলেন। বিহু তাঁহার দেহ মনের অবসন্নতাবশতঃ তিনি বিতলে বারাণ্ডা হইতে ক্ষম। ভিক্ষা করিয়া বলিয়াছিলেন থে "তাঁহার বিপদ ও হুর্গতির:দিনে তাঁহার মদেশবাসীঃ স্থেহ ও সহাত্ত্তি হইতে যে তিনি মুহুর্তের জ্বাও বঞ্চিত হন নাই, ইহাই তিনি পরম সৌভাগা বলিয়া জ্ঞান করেন এবং ইহাতেই তিনি সকল কষ্ট ও লাগুনার ৰবে। অপূৰ্ব্ব আনন্দ ও শান্তি অমুভব করিয়াছেন।" আমরাও তাঁহাকে দেখিতে পিরাছিলাম। ইহার সৌমা-मृर्खि मर्गरन श्रम वानन्म पूर्व इया এक वर्मन ध्रिन्नी বেলে কত না কষ্ট ভোগ করিয়াছেন, তজ্জনিত দেহ ক্লান্ত মন অবসন্ন তথাপি মুখে প্ৰফুল ভাব—অধ্যে বালকের স্থায় সরল হাস্ত বিরাজিত বেখিলাম।-विচারে याँश्रा नक्ष्मीय स्टेग्नाह्म साहत्कार्ट टाँशामित्र व्याणिन इटेर्टिट । व्यानी कति बहिन । महापत्र এरे अर्वाहीन वानकपिरशत अछि प्रताशक धारा প্রকৃত গ্রারনীভিরই প্রভিষ্ঠা করিবেল।

[,]কলিকাতা, ২০ কৰ্ণভনালিস ফ্লীট, কান্তিক প্ৰেনে শ্ৰীছলিচরণ মানা যানা মুজিত ও ৪০, ওন্ড বালিগল বোচ হইতে শ্ৰীসভালচক্ৰ মুখোণাখ্যান যানা প্ৰকাশিত।



শ্রীযুক্ত অরবিন্দ গোষ ও তাঁহার পত্নী



বিরহী যক্ষ শিহ্য যামিনী**প্রকাশ গঙ্গো**পাধানের মূল চিড ভইতে

শিশের ত্রিধারা।

এক নিশাসে সাত কাণ্ড রামারণ বুলিতে বাণ্ডরতি বা আর ক্ত প্রবন্ধে বৌদ্ধ শিরসম্বন্ধে বলাও কতকটা সেইদ্ধপ; কেননা সেটার ইতিহাস এত জটিল ও বৃহৎ বে প্রাচ্য জগতের সমস্ত শির ইতিহাস তাহার ভিতরে আসিরা পড়ে। অতএব এই ক্ত প্রবন্ধে সেই শিরের একটা ছারাচিত্র মাত্র দিবার চেটা করিব। জগৎ শিরে আমাদের ভারত বা বৌদ্ধশিরটা কোন স্থান অধিকার করে, আশা করি, সেটা আমাদের হৃদরে মুদ্রিত হইবে।

रिम्पूक्भ रहेरा निश्रम, जेमब्रागिति रहेराज গিণার পর্বত: এই বিশাল ভারতখণ্ডের সমত্ত অগরের প্রেমরসে সিঞ্চিত হইরা বোধি-ধর্মজন-পূর্বাযুখে প্রশান্তমহাসাগরের পরপার. উত্তরমূবে চীন ভাতারের শেষসীমা, পশ্চিমে তুরক স্থানের মরুপ্রাস্তর, দক্ষিণে ভারতসমুদ্রের দীপপুঞ্জের উপরে ছারা বিস্তার করিয়া দুখায়-মান আছে; আর সেই ধর্মকরতরুকে পরি-বেষ্টন করিয়া আমাদের শিল্পতিকা মর্ক্তো পারিজাত স্থমা বিস্তার করিয়া পাইতেছে! ভারতের জাতীর জীবনের এই প্রকাণ্ড; প্রশান্ত, প্রকৃত্ন ছবি যে পুণ্যচরিত্র সাধু মহাত্মাগণ স্বচকে দর্শন করিয়া গিয়াছেন তাঁহারা ধক্ত; আর আব্দ সহস্র সহস্র বংসর পরে সেই পবিত্র চিত্র যদি আমাদের মনশ্চকে প্ৰতিভাত হয় তবে আময়াও বন্ত হইব া

তথাগত ভগবান বৃদ্ধের জন্মণাভ, বৃদ্ধু লাভ, বহাপরিনির্বাণ লাভ, সেইাতে বে কেবল তিনিই লাভবান হইনা গিরাছেন তাহা নর,
তিনি নিজের লাভ আমাদের মধ্যে বন্টন করিয়া
গিরাছেন। তিনি যে ধনের যে শার্শমিশির
অধিকার পাইরাছিলেন, তাহা তিনি একা না
রাখিয়া আমাদেরও তাহার ভাগ, তাহার
অধিকার দিরাছেন; সেইজস্ত তিনি জগতের
নমস্ত, আর সেই কারণে সহস্র সহস্র বংসরের
কালাক্ষার ছিন্ন করিয়া সেই নিক্সক্ব পূর্ণচন্দ্র
জগৎ-জনের ক্রন্সাকাশ আলোকিত করিয়া
চির্নিন অক্সর্ম শোভায় বিরাজিত আছেন।

জগতে ধর্মবীরগণ ধর্মকক্র অনেক প্রকারে পরিবর্তিত করিরা গিরাছেন, কিন্তু এমনটি করিরা কেহ নর। উচ্চ নীচে, বিখাগী অবিখাগীতে একান্ত সমতা ও প্রীতি তাঁহার প্রধান অন্ত। বুদ্ধবে তাঁহার প্রচারক শিব্যগণের নাম দিয়াছিলেন ভিক্ল; ভগবানের চিছ্লিত নর, জগতের শিক্ষাগুরুও নর।

তাঁহার শিষাগণ যথন দেশে বিদেশে তাঁহারই অমৃত বাণী বহন করিয়াছিলেন তথন সেই অর্ণ-কাষার-বাস মহাত্মাগণের পুণ্যকর্মের ছলাম্বর্জী হইরা ধর্ম্মযুদ্ধের বিকট কবছ নৃত্য করিতে করিতে চলে নাই; চলিরাছিল জ্ঞানের থরকরজাল, শিরসৌলর্যের আনন্দ হুদ্ভি, আর করণার অপ্রতিহত শক্তি! জ্ঞান ও করণার মন্ত্রে কেশ ভূজসকে জাঁহারা আমাদের ইজ্লাধীন করিয়া দিরাছেন, পার শিরসৌলর্যের পূর্কবাতারনপথে জাঁহারা আমাদের গৃহে পারিজাত স্থর্জি আনিয়া দিরাছেন। পরিষ্কা

বিশুদ্ধ বৌদ্ধ শিল্পকে জগতে আর সমস্ত শিল্প হইতে উর্দ্ধে বহন করিয়া লইয়াছে।

সেই সময়ের সামাপ্তমাত্র শিল্প চর্চ্চা করিলে দেখিতে পাই যে সে বুগের শিল্পীরা শুধু যে নিপুণ কারিগর ছিলেন তাহা নর, তাঁহারা সাধক ছিলেন, কবিও ছিলেন। সেদিনও নেপালের ধর্মরাজগণ যে হাতে আশীর্কাদ করিয়া গেছেন সেই হাতেই তুলিও ধরিয়া গেছেন। এই সকল সাধক শিল্পীর করস্পর্শে গিরিত্ল্য বজ্রকঠিন প্রস্তর্থশুসকল দেব ছল্ল ভ বুদ্ধমূর্ত্তিতে, স্কুক্মার পদ্মগুচ্ছে প্রমূল্লিত হইয়া উঠিবে তাহা আর আশ্রুষ্টা কি ?

আমরা আজকাল যে সকল মন্দিরে উপাসনা করি, যে সকল সভাগৃহে সম্মিলিত হই সেইগুলার সঙ্গে গিরিগুহা-থোদিত ষে কোন-একটি কুদ্রায়তন বৌদ্ধবিহারের সহিত তুলনা করিয়া দেখুন। আমাদের বুহৎ বুহৎ অট্টালিকাগুলা প্রস্তুত করিতে যে অর্থবায় হইয়াছে, গিরিপ্তহাটি ভিক্লগণের বাসোপবোগী করিতে যে তাহার অধিক ব্যয় হইয়াছিল এমন মনে হয় না। তবে কেন একটা সহস্র বৎসরের পরে ভগ্নশাতেও সুন্দর, আর কেনইবা অঞ্চা সম্ম নৃতন অবস্থাতেও তাহার একটুকরা প্রস্তারেরও সমতুল্য নয় ? যে শিল্পীগণ গিরিগুহাগুলা কাটিয়া মন্দির বিহার নিশাণ করিয়াছিল ভাহারা আনন্দের থাতার হিসাব চুকাইয়াছিল বলিয়াই বোধ হয়,—ব্যাক্ষের খাতার নয়।

অনেক ইউরোপীর পণ্ডিত বৌদ্ধ-শির্মাকে ভারতে গ্রীকসন্থাতা ও গ্রীক-প্রভাবের কল বলিরা নির্দেশ করিতে চাহেন, কিছু বে সভাতা বা যে মনোভাবের উপরে থ্রীক পার্থিনানের ভিন্তি, আর যাহার উপরে অশোক-স্তন্তের ভিন্তি তাহার পার্থক্য অনুধাবন করিলেই সকল সন্দেহ দ্র হয়। আমরা দেখিতে পাই, থ্রীক শিল্প, মানব-সৌন্দর্য্য, মানব ঐশ্বর্য্যের চিহ্নস্থরুপ, ভাহার কীর্ত্তিভাশিখরে, হয় কোন গ্রীক দেবতা বা থ্রীক বীরের, নয়তো কোন উর্বাশী মূর্ত্তি লইরা দণ্ডায়মান; আর অশোকস্তভ্তশুলা মন্তকে অশোকমূর্ত্তির পরিবর্ত্তে শুক্তজ্বনে ভক্তি, সর্বভূতে দয়া ইত্যাদি শাসনবাণী, আনন্দের অক্সর বা ধর্মচক্র লইয়া শোভা পাইতেছে। এই জন্তই আমি বলিয়াছি বৌদ্ধ শিল্প ধর্মকল্পতক্রকে আশ্রম্ম করিয়া বাড়িয়া উঠিয়াছে, গ্রীসের ঐহিক সৌন্দর্যাধ্বজাকে বেষ্টন করিয়া নয়।

কথাটা আর একটু পরিষার করিয়া দেখা কর্ত্তব্য; কেননা এই ব্যবধানটুকু পরিষার করিয়া না বুঝিলে পাশ্চাত্য শিল্পের সঙ্গে প্রাচ্য শিরের প্রভেদটা আমরা ধরিতে भाविना : সেইজক্তই এবং ইউরোপীর শিরের তুলনার প্রাচ্য শিল্পটা পাশ্চাত্য-রোগগ্রস্ত আমাদের চক্ষে ভ্রমপ্রমাদ পরিপূর্ণ ও অপরিণত বয়স্কের ছেলেখেলা বলিয়া ঠেকে। মানব জীবনে আমরা তিন অবস্থা দেখিতে পहि,--वाना, योवन ७ वश्रष्ट। भिरम्रत्र ७ তেমনি তিনটা জর,—আদিষ, মধ্য ও চরম। অবশ্র এথানে মানব জীবন বলিতে আদর্শ মানব বলিয়া বুঝিতে হইবে। শিশুকালে মানব সরল, আনন্দমর; যৌবনে সে ভোগত্বথে, ঐশ্বর্য্যে মণ্ডিত; আর বরস্থকালে জ্ঞানগভীর জীবনের আনল নিবিড়তর হইয়া মামুষ ক্রমে বেন পুনর্বাল্যে উপনীত হয়। সে সময় লোকটির हांगरहांग, धत्रवधात्रव मधा वत्ररमत्र मछ मिर्त्साय,

ঠিকঠাক থাকেনা; হয়তো বা লোকটা কাশীর তৈলক স্বামীর মত অশোভন আহল গায়ে ধলাকাদা মাথিয়া প্রচলিক্ত সভ্যতার সমস্ত नियमविक्ष व्यवशाय ठिक औठवरमदात निश्चत থেলা সদানন্দমনে থেলিতেছে দেখি। শিৱও তেমনি আদিম অবস্থাটায় বাঁধানিয়ম দস্তব বেদস্কর, শোভন কি অশোভন, এসকলের ধার ধারে না,-- ছই চারিটি কালির আঁচড় কি. এক পোঁচ রং লইয়াই তাহার আনন্দ বালকচেষ্টিতের মত মনোহর। মধ্য অবস্থার শির বাঁধানিম্বমে টেরী বাগাইয়া, প্রচলিত দম্ভরমত সাজগোজে ফিট্ফাট হইয়া, স্থনিয়মিত ভिन्निटंड, स्वश्वक्ष दिर्ग (नथा (नग्न । आंत्र दग्नन्थ বা চরম শিল্পটা, ভোশা-মূর্ত্তি নিরমবন্ধনমুক্ত गरानत्म मध मिशवत मुख्न श्रूक्ष । এই চत्रम অবস্থায় মধন কোন শিল্প উপনীত হয় তখন তাহার নিশ্ব ণত্তই গুণ হইয়া দাঁড়ায়। তথন যাহারা দে অবস্থার মর্ম্ম বোঝে না, তাহারা উপহাস করিয়া পাগলাটে বলিয়া মুথ ফিরায়: আর যাহারা বোঝে তাহারা শিরের সেই ভোলানাথ মূর্ত্তি দেখিয়া ক্রতার্থ হয়।

আমার একথাটা শুনিরা হঠাৎ এরপ মনে হইতে পারে, দেশীর শিরটার দোষগুলা সমর্থন করিবার জন্ম নিপ্ত গত্তই-গুণ-গোছের একটা বেশ ন্থারের ফাঁকি বাহির করিরাছি। কিন্ত ভাহা নর। শিশুর বাল্যভাবে যে অক্ষমতার লক্ষণ, মহাজ্ঞানী প্রাতঃশারণীর মহর্ষিগণের বাল্যভাবে কি সেই অক্ষমতার লেশমাত্র দেখিতে পাই? তেমনি আফ্রিকার আদিম শিল্পে যে অক্ষমতা ভারতবর্ধের আর্য্যগণের শিল্পে কি সেই অক্ষমতা ? আমাদের শিল্পে যে বালকত্ব দেখা ধাঁর তাহা শিরীগণের নিপুশতার অভাবে

নন্ধ, কলালন্ধীর একান্ত সাধনার ফলেই সেরপটা ঘটিরাছে। ক্ষচিভেদে, জ্বাভিভেদে শিরের এই ভোলারূপ নয়ন ভৃত্তিকর না হইতে পারে, কিন্তু যে শিরু যথনই শিরের উর্ক্তম লোকে উন্নীত হইবে তাহারই এই দশা ঘটিবে। Art seems to reach its highest and to go deepest when all that is small and common is excluded. হাভেল সাহেব বলিতেছেন,—"শির তথনই চরম অবস্থায় উন্নীত হয় এবং তথনই তাহাতে গভীরতা আসে যথন তাহা হইতে যা কিছু সাধারণ প্রচলিত ও সন্ধীণ তাহা দূর হয়।"

মান্ধিন্ 'সাহেব বলিয়াছেন,—'Men who have no imagination, but have learned merely to produce a spurious resemblance of its results by the recipes of composition, are apt to value themselves mightily on their concoctive science; but the man whose mind a thousond living imaginations haunt, every hour, is apt to care too little for them; and to long for the perfect truth which he finds is not to be come at so easily.'

"যাহাদের কয়নাশক্তির অভাব কিছ

যাহারা কতকগুলা প্রচলিত নিয়মের প্রক্রিয়া

ছারায় কয়নাপ্রস্ত পদার্থের একটা মেকি

যানাইতে শিকা করিয়াছে, তাহায়া নিজেদের

সেই মেকি প্রস্তুত প্রকরণ ও প্রণালীগুলাকে

মূল্যবান জানিয়া গর্ম্ম অমুভব করে; আর

যাহাদের মন কয়নার লীলাভূমি, প্রকরণপ্রণালীর উপরে তাহাদের আহা থাকে না;

তাহাদের মন ছর্লভ সত্যের দিকেই ধাবিত হর এবং তাহারা জানে প্রকরণপ্রণালীর সহজ উপারে সেটাকে ধরিবার উপায় নাই।"

সত্য শিল্পে বে নিম্নমের বন্ধন, দম্বরের সঙ্কীর্ণতা না থাকাই শ্রেম্ন একথা কি রাম্বিন্, কি হাভেল, কি আর কেহ সকলেই এক-বাক্যে স্বীকার করিয়াছেন। কেবল আমরাই হাম্ম রে Perspective, হাম্ম রে Anatomy, কোথায় Reality করিয়া মরিতেছি!

বৌদ্ধগ্রের পূর্বে ভারতশিল্পটা কোন অবস্থার ছিল তাহা জানিবার উপার নাই কেননা ভাহার পূর্বেকার কোন মন্দির, মৃর্তি কিম্বা চিত্র এপর্যাস্ত আবিষ্কৃত ইইয়াছে বনিয়া মনে পড়ে না; কিন্তু সে শিল্প যে আদিম, মধ্য, ও বৌদ্ধগ্রেণ চরম অবস্থার ক্রমোল্লতি লাভ করিয়াছে, এটা অস্বীকার করিবার কোন কারণ দেখি না।

चानरक बान करत्रन य वोक्षयूरशत भिद्र প্রাচীন ভারতশিল্প হইতে একটা পূথক বস্তু; কিন্তু আমি তাহা বলি না। একই মাহ্র বেমন প্রথমে শিশু পরে রাজা শেষে निखत छात्र गतन, मूक, भागनन, निगयत, ভোলানাপ, ঋষি মুর্ত্তিতে রূপাস্তরিত হইতেছে দেখিতেছি, তেমনি একই ভারতশিল্প ক্রমো-লতির নিয়মে শিয়ের এই চরম অবস্থায় না আসিয়াছে তাহাই বা কে বলিবে? তা ছাড়া কি ইউরোপীয়, কৈ ভাস্ত্রাধী, যিনিই ভারত-শিলের স্বিশেষ ৬৩% করিয়াছেন ভিনিই একবাক্যে স্বীকার করিয়াছেন বে হল্তের নিপুণতার ভারতশিল্পী জগতের কোন শিলীরই काट्ड अंत्र मात्न ना ! एटवरे दाशा वारेटिक्ट् বে আমাদের শিল্পে কিট্ফাট্ গঠনের অভাবের

কারণ অনৈপুণা নয়, অন্ত কিছু। সেই অন্ত কিছুটা কি ? ইউরোপীয় জাভিতস্বিদ্গণ वरनन, व्याग्रकाणि मार्कत्रहे रकमन अकृत মানসিক বৈকল্য আছে, বাহাতে করিরা সৌন্দর্যোর যে স্তরে একজন **এীক্ বা পা**ণ্চাভা শিলীর মন পৌছিতে পারে দে ভরে প্রাচ্য भिन्नोत . यन উन्नोज्हे हहेर्ड भारत ना। **এ**हे যুক্তিটার যেমন এ-পিঠ আছে তেমনি ও-পিঠও আছে। পশ্চিমের দিক দিরা দেখিলে আমরা দেখি, গ্রীকৃ শিরের কাছে আর্য্যশির বেঁবিডে পারিতেছে না; আবার পূবের দিক দিয়া मिथल पिर्म, औक नित्र कार्यानितात्र ত্রিদীমানায়ও আসিতে अक्रम। এখন বিচারের বিষয় দাঁড়াইতেছে, শিলের কোন জরটা উৰ্দ্ধতন বা লোভনীয়। অবশ্র পশ্চিমের লোকেরা এীক শিরটাকে শিরোর চরম বলিরা निर्फल करतन ; किंद आवात देशक लिथ, জগতের বারো আনারও অধিক লোক এই প্রাচ্য শির্টার দিকে ! দলে ভারি খে তাহার সম্ভে নাই। লোকেরা বলিবেন,—'একশুস্ত ন্তমোহন্তি, ন চ তারাগণৈরপি', এবং পুর্বের এীকুগ্রস্ত লোকেরাও ঐ এক বৃক্তিতেই আমা-দের মুথ বন্ধ করিতে প্রশ্নাস পাইবেন। তিত্ব তারাগণ কি এরপ বলিতে পারে না? — দেখ চক্রটা ভোমাদের নিকট **আত্মী**র, ভাষার আলোকটাও ভোষাদের কাছে অধিক পৌছিতেছে; আর আমরা, ভূমি বে লোকের कीव रमधान रहेरछ काजी काजी खावन मूरत, অবস্থিত; আমরা আলোকও বিভেছি লোকা-खरत ; कारवेरे (काबारमत करक काबानरनत জ্যোতি কীণবোধ হওৱা অসম্ভব নয় ? কিছ

বল দেখি, আৰু বদি সমস্ত তারা মুছিয়া গিরা আকাশ চক্ৰমৰ হইয়া যায়, ভবে বিশ্বশিলীয় শির্বচনার সৌন্দর্ব্য ও বিচিত্রতার ব্যাঘাত ঘটে না কি ? ভোমার ক্লচি অনুসারে তুমি চক্রমর দ্যুলোকের মত শিল্লাকাশটা এটক্ মুর্বিময় দেখিলে খুসি হইতে পার, কিন্ত লোকা: যে ভিন্ন ক্ষৃতি শিল্পও যে বিচিত্ৰতামূলক, তাহার কি করিলে ? অতএব ভারতশিল্প জীকশিলের স্হিত বা প্রাচ্য শিলীর মনের পাশ্চাত্য শিল্পীর মনের গতির সহিত তুলনা করিয়া ছোটবড় বিকল অবিকলের হিসাব করিতে যাওয়াও যা, আর রাজদর্শনের পর সর্যাসী মহাপুরুষের দর্শনে তাঁহার গারে রাজবেশের পরিবর্তে বাবছাল, চন্দনের পরিবর্ত্তে খাশান-ভন্ম, রম্বমালার স্থানে হাড়-মাল এবং ভোগপুষ্ট নধর গঠন, কেতা-দোরস্ক চালচোল ভাবভন্নীর পরিবর্ত্তে কার্চবৎ দেহ-গঠন, অশোভন ভাবভন্নী দেখিয়া মহাপুরুষকে ধিকার দিরা ফিরিরা যাওয়াও তা। ইহাতে আর কাহারও কিছু ক্ষতি হইল না তুমিই मिवहर्स्ड मर्नान विकड बहेरत।

রজান্তণ আর সন্বন্ধণে বে প্রভেদ গাশ্চাত্য ও প্রাচ্যশিরে ঠিক সেই প্রভেদ। সেইজন্ত রজোন্তণ প্রধান পাশ্চাত্যশির অবরবের বাধন, কেতাদোরত চালচোলের নিরম মানিরা চলে। আর সন্বন্ধণ প্রধান ভারত বা বৌদ্ধ শিরের ও সকল নিরম মানিরা চলার দিকে দৃক্পাত্ত নাই। লক্ষ্য হিসাবে দেখিতে গেলে বৌদ্ধশির, শিরের উচ্চতর লোকে অবস্থিত বলিরাই বোধ হর; কেননা কি কাব্যে, কি শিরে, কি মানবের চরিত্রে সান্ধিকভাবেরই প্রাধান্ত চিম্নদিন পশ্ভিতগণ

স্বীকার করিরা আসিতেছেন। স্প্রিসংস্থাপনের জন্ত যেমন সত্ত রজঃ তমঃ তিন গুণই
আত্যাবশ্রক, শিরের পক্ষেও ঐ গুণত্ররের তেমনি
প্রয়েজন। কিন্তু জগতে কোন এক শিল্লে
এই ত্রিগুণের একত্র সমাবেশ এ পর্যান্ত দেখা
বার নাই। হর-গৌরী, হরি-হর এইরার্গ হইগুণে
একত্র সমাবেশ শিরে ঘটিয়াছে, কিন্তু হরি-হরক্রেন্থ শিরে এরাপটা আমার চক্ষে এপর্যান্ত
পড়ে নাই; তবে জগতের সমস্ত বিদ্ধির শিরোর
একত্র চর্চ্চা করিতে করিতে শিরের ঐ বিরাট
মূর্ত্তির ছারা মনে উপলব্ধি করা সন্তব হইতে
পারে।

আমাদের শিল্পকারগণ প্রতিমা সকলের তিন লক্ষণ নির্দেশ করেন,—"সাত্তিকী রাজসী দেবপ্রতিমা তামসী তিধা।" সাত্তিকী প্রতিমা হচ্চেন, 'বোগমুদ্রাবিডা'; রাজসী 'নানাভরণ-ভূবিতা' আর উগ্রন্ধপধরা হচ্চেন তামসীপ্রতিমা।

এই তিন গুণ বেমন পৃথক পৃথক প্রতিমার ধেখা বার, তেমনি দেখি জগতের প্রাচীনতম তিনটা শির,—ইন্ধিপ্ত, ভারত, আর গ্রীক এই তিন গুণের স্মৃত্যা তিনটা মূদ্রা প্রকাশ করিয়া আমাদের সমূধে বিশ্বমান রহিয়াছে।

প্রাচীন ইজিপ্তের যে সভ্যতা সর্ব্ঞাসী কালের সন্মুখে দস্কভরে রাজদণ্ড উদ্ভোলন করিয়া মৃতদেহকে অবিনশ্বরতা প্রদানের ব্যবস্থা করিয়া, কালের প্রতাপকে রাজ-প্রতাপের কবলে আনিয়া মর্ত্তাকে অনরত্ব দিবার প্রস্তাব করিতেও কৃষ্টিত হয় নাই, সেই প্রভূত্বতামস প্রাচীন সভ্যতার শিল্পনিদর্শন নীলনদাতীরে নির্মাণিত ইজিপ্ত রাজ্ঞীর ময়শ্রশানে কাল্বিজ্ঞানী বিভীষণা বিষয়করী নাল্লিসংহের তামসী মূর্ত্তি!

আর বে গ্রীক সভ্যতা কুন্তিগিরের খেলাকে (olympic games) অমর লোকের ক্রীড়া নাম দিত; ভোগানন্দে বে গ্রীক্ জাতি নরদেহে ইল্রের ঐশ্বর্য ভোগ করিরাছে ভাহাদের শিল্প ইক্রাণীডুলা, ভল্র মর্শ্বরে রাজসী মূর্ভিডে বিরাজিতা।

আর যে ভারত বৌদ্ধ বা প্রাচ্য সভ্যতা মায়ার মূল, হু:থের মূল, আসক্তির বন্ধন ছিল করিয়া পরমানন্দ সাগরে নির্বাণ-লাভ করিতে বাস্ত: যে যুদ্ধ করিয়া ইতিহাস লিখিবার বেলায় তারিখ, দৈগুসংখ্যা, হতাহতের তালিকা ঠিক না রাখিয়া অভিরাম দেবচরিত্র বর্ণন করিয়া যায়: যে একছত্ত্রী সম্রাটের প্রতিমূর্ত্তি না রাখিয়া, করুণার অমুশাসন ধর্ম্মের অসংখ্য কীর্ত্তিন্তে জগতের বৃহত্তর সামাজ্যথতকে নিরবচ্ছিন্ন মণ্ডিত করিয়া তোলে তাহার আর্য্য শিল্পের সকল প্রকার বন্ধনমুক্ত ভাবঘন ধ্যানন্তিমিত সান্ধিক মূর্ত্তি পার্থিব সৌন্দর্য্য ও ঐশ্বর্যোর পদ্মাসনে চরণ স্থাপন প্রকাশিত আছেন। তিন প্রাচীন শিল্পের ঐ তিধারা যে আবহমানকাল বিভদ্ধতা রকা করিয়া চলিয়াছে এমন নয়; দেশকালভেদে সেটাতে অল্পবিস্তর সংমিশ্রণ খটিয়াছে দেখা যার,—যেমন রাজসিক এীক্ শিল্পে প্রথমে তামিদক শোমান, পরে সাত্তিক খুষ্টীয়, শেষে জড়প্রধান ইউরোপীয় শিল: সম্বর্গপ্রধান আর্য্যাশিল্পে জনসী তাল্লিক ও রাজসিক মোগল শিল্প আনিয়া মিলিয়াছে।

এই ত্রিগুণের ক্টিপাথরে তাবং শিল্পকে ক্ষিয়া দেখিলে মোটামুটি দ্রের হিসাবটা থেইরূপ দাঁড়ায়!—

ইজিপ্ত শিল্প=বিশুদ্ধ তামসিক, দুর ১৬

টাকা। বে ধনিতে এ দোনা ব্যক্তিত তাহা এখন বর্ত্তমান নাই, নীল নদীর চড়ার ঢাকা পড়িয়াছে, তবে ভারতের বিশুদ্ধ তাত্তিক দোনাটা ইহার সমতুল্য।

গ্রীক শিল্প = বিশুদ্ধ রাজসিক দর °১৬ ।
টাকা। রোম্যান আমলে উক্ত সোনা
তমাপ্রিত রাজসিক দর ১২ টাকা। খৃষ্টীর
শতাকীতে উহা রজাপ্রিত সাত্মিক ও সান্ধিক
দর ১৬॥ ও ১৮॥ • টাকা। অধুনাতন উহা
রজতামসী, কেমিকেল বা নিকেল, দর

আর্যাশির:—পহিলা থানের সোনা
অপ্রাপ্ত। বৌদ্ধযুগে অতিবিশুদ্ধ সান্ধিক,
দর ২০। ব্রহ্মণ্য যুগে শুদ্ধ সাত্তিক ও
তামস সাত্তিক দর ১৮৯০ টাকা। মোগন
আমলে রক্ষাপ্রিত সান্ধিক ও তমাপ্রিত
রাজসিক দর ১৬৪০ ও ১২২ টাকা।

অধুনাতন, এদেশের লোক ইউরোপ হইতে কেমিকেল আনাইর। ব্যবহার করিতে শিখিয়া আর নিজের খনিতে কাব করিতে চাহে না,—বিশেষ যাহারা সভ্য হইরাছে; কেননা তাহাদের জ্ঞান সেরপ করিলে সভ্যতা রক্ষা হয় না। অভএব সোনা এখন এদেশে হস্পাপা।

বৌদ্শিরটা কোনভাবে অনুপ্রাণিত তাহা
আমরা দেশিয়াআসিয়াছি এবং সেটাকে কোন
দিক দিয়া বুঝিতে হইবে তাহাও বুঝিতে বাকি
নাই। এখন ভারতবর্ষে এই বৌদ্ধ শিরের
মন্দিরাদির একটা চুক্ক তালিকা ও তাহাদের
স্থানকাল নির্দেশ করিরা প্রবন্ধ শেষ করিব।

প্রথমে স্বস্থ বা লাঠ। বৌদ্ধপ্রভাবের সময়ে এগুলির উপরে অনুশাসন লিপি; —শিধর দেশে চারি সিংহমূর্ত্তি,—বেন পশুস্থভাব ছাড়িরা ভাহারাও করণার মহিমা কীর্ত্তন করিতে শিবিরাছে। জৈন ধর্মো এইগুলি দীপদানস্বরূপ করিত; ভাবটা ধর্মের জ্যোতি মর্ত্তালোক আলোকিত করিবা বেন দেবতাগণকেও আলোক প্রদান করিতেছে। বৈষ্ণবের। এই লাঠস্তন্তের শিধরে গরুড়মূর্ত্তি স্থাপন করিবা এটাকে গরুড়স্তন্ত বা ভগবৎ প্রেমে দাস্ত ভাবের আদর্শ মূর্ত্তিরূপে করিত করিবা মন্দির সমুধে স্থাপন করিবা গিরাছেন। অতএব দেখিতেছি, তিন কালে উক্ত তিন ধর্মই লাঠস্তন্তের লক্ষ্য বজার রাধিবাছে।

धर्मात्मारकंत्र वोक्रधर्म গ্রহণের ৩১ বংসরে এই লাঠন্তস্কদকল ভারতের নানা স্থানে প্রথম প্রোথিত रव। मिल्लीट ফিরোজ সাহের° কবর সম্মুখে একটি নিৰ্শ্বিত ২৩ কিট উচ্চ স্তম্ভ আছে. সেট খুষ্টীয় ৩০০-৪০০ শতান্ধিতে রচিত। नार्फ (थानिक निभि इहेरक काना वाद मिछ। একটা গরুড়ন্তম্ভ: ইহার গঠন পারিপাট্য চমৎকার। ইউরোপ ধাতু নির্ম্মিত এতবড় স্তম্ভ অতি অর দিনই হইল গড়িতে সক্ষম হইরাছে। প্রয়াগের দুর্সমধ্যে বে ৩০ ফিট উচ্চ প্রস্থাঠিত অশোকন্তম্ভ আছে সেইটাই

সর্কাপেকা অভয় অবস্থার বিভ্যমান। তাহার উপরে ৩৮০-৪০০ খু অকে সমুদ্র শুপ্তের এবং ১৬০৫ খু অকে জাহালীর বাদসাহের ক্ষরগাণা ধর্মাপোকের অভয় বাণীকে আছের করিয়াছে । এবং গান্ধার বেশের প্রেকো-রোম্যান বা তমাশ্রিত রাজসিক-শিল্প Honey Suckle মধুশতিকার মাল্যদান ইহার শিরোভ্যবেশ জড়াইরী গিরাছে।

কাব্দের অরুথ মিনার প্রীর গরুড়স্তভ, হিমানরের পার্কাত্যপ্রদেশে ভূটিরাদের পতাকা ও মন্ত্রপত্রিকা পরিশোভিত বংশদগুভানি এই লাট অভ্যেরই পরিবার।

তাহার পরে চৈত্য ও বিহার। চৈত্য গুলা উপাসনা বা সভাগৃহ; আর বিহার এনী ভিকু-গণের আবাসস্থানরূপে কল্পিত। ক্রীক্রিয়ান-দিপের চার্চ্চগুলির যে কাজ চৈত্যেরও সেই কাজ এবং খৃষ্টার convent বা monastery গুলির যে কাজ বিহারগুলিরও সেই কাজ এই চৈত্য ও বিহারগুলি নিশ্মাণ সাদৃশ্রে খুষ্টার গির্জা ও convent গুলার সহিত হবছ মেলে। यमिष्ठ शृष्टीनमिटशृष গিৰ্জা হইতে সেগুলা নকল করা হয় নাই। এইরূপ চৈতা ও বিহার ভারতবর্ষে অসংখা। উদয়গিরির রাজরাণী গুন্দা প্রাচীনতম, ও অন্তর্ভা, ইলোরা, কারলী প্রভৃতি অঞ্চলের বিছারপ্তলি শিল্পহিসাবে শ্রেষ্ঠতম বলা চলে। এইগুলির রচনাকাল শৃষ্ঠীর ৫ হইতে ৭ শতাব্দির মধ্যে ধরা বার। এই অজ্ঞা বিহারের চিতাঙ্কন প্রথা, আর বৃদ্ধের ধর্ম-সীমা वादकाव শেষ জাপানের 'নারা' মন্দিরের ভিত্তি চিত্রণ প্রণালী এবং व्यानाम c. १९मत शूर्स भेगाँ व्यामात्मत वन्दान भूषि-चाक्षानत्तत्र कछ त्र कार्छ भाग বা ফলক সকল ব্যবহৃত হইত তাহার রঞ্জন ও চিত্রণ একই। সহস্র বৎসর অতীভ হট্যা বাৰালী সেই অৰম্ভা গেছে ज्य ह त्यमिन छ প্রথামত ছবি লিখিয়াছে, আজিও নেপাল তাহার শিক্ষা মানিতেছে, জগতে কোন চিত্র-শিলের ध कोवनी मकि तन्या बाब ना। तो इ-कना-লক্ষ্মী অনেক্দিন আমাদের প্রীকৃটীরে বাস করিয়া থেছেন ; তাঁর সহত্র দল পরাসনের স্থ-বর্ণ দলটে আনাদের পিতাসহের। লম্মীর বাঁপিতে অনেকদিন বন্ধে রাধিয়াছিলেন ;— বতদিন না আমরা লম্মীপূজার কড়ি বন্ধ করিতে এবং বাঁপিটাকে waste paper basket ক্ষণে ব্যবহার করিতে শিধিরাছিলাম।

বৌদ্ধুগের ত্বপ ও মন্দির স্কল ভগবান
বুদ্ধের দেহ অন্থি রক্ষণের ও তাঁহার চরণথূলিতে পবিত্র তীর্থহান স্কলকে স্মরণীয়
রাখিবার জন্ত নির্মিত হয়। তাহার মধ্যে
বুদ্ধগন্থার মন্দির, বরহাট ত্বপ গৃইপূর্বে ২০০২০০ বৎসরে নির্মিত হইরাছিল। এই ছই
মন্দিরে গ্রীক্ বা রোমক্ শিরের গন্ধমাত্র
নাই। তাহার পরে প্রথম খৃঃ অন্দে সাঞ্চি
ত্বপ, তাহার ৫০০ বংসরের মধ্যে গান্ধার, এবং
৪০০ হইতে ৫০০ খৃঃ অন্দে অমরাবতী ত্বপ
নির্মিত হয়।

এই বরহাট ও সাঞ্চি অপের কাক্ষকার্য্য হইতে বেশ বুঝা বার বে, বৌদ্ধেরা তথনও বুজমূর্ত্তির হাপনা করেন নাই। সে সমরের শিল্পীরা বুজচরণ, ধর্মচক্রা, এমন কি নানা হিন্দু দেবদেবীর মূর্ত্তি দিরা অপররের শোভাবর্জন করিরাছেন, কুমার সিজার্থের জীবনের ঘটনাও খোদিত করিরা গৈছেন কিছ কোথাও উপাসিত বুজমূর্ত্তি হাপন করেন নাই। সাঞ্চিত্তপে বুজলাতক সকল চিত্তিত করিরা প্রাচীরগাত্তে জীবজর পশুপক্ষী এমন হাল্পর করিরা খোদিত আছে বে ইউরোপীর পতিত্তগণও একবাক্যে বীকার করেন বে অগতের কোন দেশের বাজর-উৎকীর্ণ প্রপক্ষীতা ইহার সমতুল নর।

শৃঃ অস চারি কি পাঁচলত বংগরের মধ্যে অনুৱারতীয় র্ডাপ গঠিত হয়। এই

তুৰ্ণে আৰম্ভ বৃদ্ধবৃত্তি সক্ষমন্ত্ৰ আধ্য ব্যক্তি-লাভ করি। শিল্প হিলাবে ভারতে বল্প তথ আছে ভাহার মধ্যে অসরাবভী ভাই শ্রেষ্ঠ चाटकरभव विवत क्यानरीकीरव और सम्ब বেমন ভরদশা প্রাপ্ত হইরাছে এমন আর (कानिए नहा ৰাজাত ও ইউৰোপের শিরশালাসমূহে ইহার বে ৭ও প্রাক্তর সকল রক্ষিত আছে তাহা কি অপূর্ব ক্ষম্ম ! মনে হয়, বরহাট ও সাঞ্চি স্তপে শিল্প, আনন্দের काकनी मांज छन्न कतिशास्त्र, अहेशास्त्र त्न একেবারে শৃত্যুক্তীয়বে মহা ব্যুক্তরা দিয়াছে! এতদিন ভাষার উপর বিয়া স্বর্পের পরিষল বহিরা বাইতেছিল এইবার বেন দেৰতা আসিয়া ভাহাতে অধিষ্ঠান করিলেন। ভারতশিলের এই শরবানব্দের বিরাট উচ্ছাস সাগরামরা ববরীপের সপ্তত্ন-মরভূধর ভাগের স্বনার প্রাচাশিরের কেন্তব্দ স্পর্ণ করি-রাছে। চিত্রশিরে অম্বরাওহা আর ভাতর্ব্য **এই বরভূধর ভপ, বৌদ্ধশিল বা আচ্যালিল বা** আর্যাশিরের চন্দ্রব্যাপ্রভ বুকুটব্দি, নরনের ছই তারা পথবা হরপৌরী শুগল সাঞ্চিত্রীয়র্ভি।

এই সপ্তল প্রকাশ্ত ব্যক্তর স্থানের
তলদেশ হইতে শিশর পর্যন্ত প্রক্রেক প্রস্তুর
থতে ভগবান ব্রের সবত জাতক, জন্ম
বিবরণ স্থানিপুণ ভাষরগণ শতালীর পর শতালী
ধরিরা তীর্থবাজীগণের শিক্ষালাতের জন্
উৎকীণ করিরা সিয়াছেন। ইহার এক
একণানি প্রান্তরথত পরে পরে সাজাইরা
গেলে, সেওলি মুখে হেড়ালালা স্থান অধিকার
করিরা থাকে। সবজ্ঞ পান্তর্ভার ভারত্তি
শিরের ক্রেক্তেল বেহার জীক্ত পার্তিকারনর
গার্থিবরণ, বিরাট প্রান্ত শিরের মুক্তে ব্যর্



অংশ দিবতে তিনিত প্রদীপে শতুক অরক্তনাথ গ্রেপাধাতে কর্তৃক অক্তিও মূল চিত্র ভইতে

ভূধবের বর্রণ সেইপ্রকার প্রবেকর ভার দ্ধার্মান। ইহার বর্ণনে বাক্য হার মানে, দর্শনে চকু সার্থক হর।

ভারতবর্ধের বাহিরে তিব্বত, ব্রহ্মবেশ,
চীন, জাপান ও দক্ষিণ আমেরিকার মেরিকো
পর্যান্ত বৌদ্ধ শির কি প্রভাব বিস্তার করিয়াছিল তাহার ইতিহাস একটা অস্টাদশ পর্ব্ব
মহাভারত! এই ক্ষুদ্র প্রবন্ধে ভাহার
আলোচনা অসম্ভব; কেবল ভারত চীন ও
লাপান এই তিন দেশের ধর্ম্ম, সভ্যতা ও
শিল্পের কি নিকট সম্বন্ধ তাহা আপানের
আবালর্দ্ধবনিতার মুখে প্রচলিত একটি ক্ষু
গল্প হইতে বেশ বুঝা ঘাইবে।

"লোরাং নামক স্থানে তিন তীর্থবাঞীর
দেখা। তাঁহাদের মধ্যে প্রথম মহাত্মা ভারতসন্তান, বিতীর জাপানবাদী আর তৃতীর চীন
হইতে আগত। তিন মহাস্থার যথন দেখা
তখন চীনদেশীর মহাপুরুষ বলিরা উঠিলেন,—
"দেখ এই বে আমাদের মিলন এটি দেখিতে
হইয়াছে ঠিক বেন জাপানী বন্ধুর হাতের
পাথাধানি! চীনটা বেন পাথার কাগজ,
ভারতবর্ষ হইয়াছে যেন পাথানির ঠাট
বা পঞ্জরের কাঠিগুলি, আর ছোট দেখিতেছ
এই বে জাপান উনি হচ্ছেন এই পাথার
থিল বা ক্ষুদ্র বাধন;—দেখিতে ছোট কিস্ক
কাঞ্চে থাট নন।

বিনা কাগৰে তথু কাঠি পঞ্জর বাতাস দের না, বিনা কাঠিতে তথু কাগজ উড়িয়া ছিঁড়িয়া যার, আর বিনা থিলে পাথা থানা এলাইয়া পড়েও কাজেই আসে না।"

চীনের এই লোরাং সহরে এককালে তিন সহল্র বৌদ্ধ ভিন্দু এবং দশ সহল্র ভারতীর গৃহস্থ বাস করিতেন। ইহাদেরই প্রভাবে শক্তব্দ চীন ভাষার প্রথম প্রচলিত হয় এবং ভারারই ফলে ৪০০ খঃ অবে আধুনিক জাপানী ভাষার স্কৃষ্টি। এই ত্ররোদশ সহল্র ভারতবাসী সে সমরের চীন শিল্পে বে কিপ্রভাব বিস্তার করিয়াছিল ভাহা জাপানের প্রসিধ শিল্পাচার্য্য শ্রীমৎ ওকাকুরা স্থালর করিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

নালন্দা বিক্রমপুর প্রভৃতি স্থানে বে সকল বৌদ্ধ শিরবিষ্ঠালর ছিল সেধানে বেমন শাস্ত্রের চর্চা, ডেমনি শিরেরও চর্চা চলিত। সেধানকার আচার্য্যগণ শিল্প সম্বন্ধে যে সকল শীস্ত্র ও ব্যবহা প্রচলন করিতেন তাহা প্রাচ্য জগতে সেই বিশ্ববিষ্ঠালরের ছাত্রগণের বারাই প্রসার লাভ করিত। সেকালের বিশ্ববিষ্ঠালর বিশ্বের জ্ঞান চর্চার স্থান ছিল; সে সময়ের art facultyতে artটা এখনকার মত একটা optional বা ধামধেরালী জন্থারী পদ অধিকার করিরা ছিল না।

ত্ৰীঅবনীজনাথ ঠাকুর।

কবির নৈরাশ্য।

শব-কর তর হ'তে করি আহরণ
ক্রিবে চয়ন,
ক্রিবেগে রচি ভার, জানাই ভোষার

এ মোর হানবাবেগ বঁড় ইচ্ছা হার ! কিন্তু নারি প্রকাশিতে বিন্দুমাত্র ভার, শব্দগুলি ডেলে পড়ে শভচূর্ব ধার !

প্রতিঘাত।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

वानाकीवरनत हेिंहाम একট নলিনের অমুসন্ধানু করিতে হয়।

নলিন তখন স্কুলের বিতীয় শ্রেণীতে পড়ে। স্কুলের পাঠ্যপুস্তকগুলার সহিত তাহার পরিচয় किक्रभ हिन तम कथा धूनिया ना वनितन अ তবে পাঠ্য ও অপাঠ্য বাঙ্লা কবিতাপুস্তকগুলা তাংার হাতে পরিত্রাণ পাইত না। সেই সকল পুস্তকের ভাবরস যেটুকু পাওয়া যাইত, তাহার •সবটুকুই সে একেবারে মজ্জাগত করিয়া ফেলিত। ইহার ফলে প্রথম শ্রেণীতে উত্তীর্ণ হইবার সময় গণিতে কোনমতে পাশ নম্বর পাইলেও, সে ক্লাশে সহপাঠিবর্গের মধ্যে কবি বলিয়া রীতিমত খ্যাতিলাভ করিল।

ক্লাশে টিফিনের ছুটির সময় যথন অপর ছাত্রেরা 'কুলের আচার' 'চিনাবাদাম' 'লাটিম' প্রভৃতি লইয়া বিশ্বসংসার ভূলিবার উপক্রম করিত, নলিন তথন সেই সমায় কোলাহল হইতে আপনাকে সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র রাখিয়া গণিতের থাতা থুলিয়া স্থানির্দিষ্টা নায়িকার উদ্দেশ্রে কবিতা লিখিতে বদিত, "কোপা আছ, মনহরণি. কবে আসি মোর জীবনের কূলে ভিড়িবে তোমার তরণী।" কথনো বা একধারে দাঁড়াইয়া গুণগুণ স্বরে সাপনার মনে গাহিত, "দিবস রজনী আমি যেন কার আশার আশার থাকি !"

এডটা কবিছ ও প্রেমের স্বপ্নবিহর্গতার বিশ্ববিভালয়ের সরস্বতী যথন তাহাকে প্রবেশ-

কথাটা ভাল করিরা বুঝিতে হইলে বারে ছাত্পতা দিতে অসমত হইলেন, তথন তাহার অভিভাবকগণের কল শাসন ভাহার বিক্তে বজের ভার উত্তত হইরা উঠিল। বাড়ীতে রীতিমত পাহারা লাগিল। মাষ্টার মহাশয়টি অতিরিক্ত তাহার কবিষ্কুঞ্চে হরস্ত প্রনম্মরপ উঠিলেন। व्यवस्थाय छीवादि क्रिक्टोव निवन তুই বংসরকাল সকল সাধ-আশার জলাঞ্চল **मित्रा अदि**श्विकांत्र व्यर्गन धूनित्रा कलाक-कौरान व्यधिकात्र शाहेल !

> সঙ্গে কাব্যচর্চটো না কমিয়া বাডিয়াই উঠিতেছিল. ভিতরে ভিতরে অভিভাবকগণের পক্ষে সে সংবাদটুকু রাখিবার স্থবিধা ঘটিয়া উঠে নাই! মন্তকে দীর্ঘকেশ কুঞ্চিত করিয়া রাথিয়া, পৌবের দাৰুণ শীতেও হন্দ্ৰ পাঞ্চাৰীমাত্ৰ গাবে দিয়া, ৰুটের পরিবর্ত্তে লপেটা ব্যবহার করিয়া এবং গোপনে "স্থাংশু-দীপিকা" পত্তিকার সম্পাদকী করিয়া, অর্থাৎ এমনি নানাবিধ প্রচলিত উপায়ে বন্ধবর্গের মধ্যে সে আপনার কবিখ্যাতি-টুকু সমধিক প্রসারিত করিয়া ফেলিল!

এ কর বংসরে তাহার চিত্তে আর একটু পরিবর্ত্তন ঘটরাছিল ! "স্থধাংশু-দীপিকা" প্রিকার 'লিরিক' প্রকাশ করিয়া প্রায়ই সে কোন আকুলা নায়িকার স্থরঞ্জিত পত্তের প্রতীকা করিত! এবং বে দিন পত্রিকা-পৃষ্ঠার তাহার क'টো প্রকাশিত হয়, সেইদিন হইতে পথে চলিবার সময় ভাছার মনে হইত, বুঝি কোন বাতায়ন হইতে কোন ৰক্ষাণীল

নারিকার করচ্যত পুশাধালা ভাহার কবিকঠ ভূষিত করে! কিন্তু বাঙ্গা খেশের কাব্য-রসানভিজা সভুচিতা নারিকাগণ একদিনও তাহার প্রতি কিরিয়া চাহে নাই, ইহা দেশের পক্ষেও আর তুর্ভাগ্যের বিষয় নছে! এই সময় আবার^{*}তাহার অকবি বন্ধুগণের একে একে বিবাহ হইতে লাগিল: কিন্তু তাহার হইল না। কারণ, নলিনের নিষ্ঠুর পিতা দুচ্পণ করিয়া-ছিলেন যে এফ, এ, পালের পুর্বে কিছুতেই পুজের বিবাহ দিবেন না ৷ নণিনের মাতার অভিযান ও অশ্রসিক্ত কাতর অমুরোধ, ক্যা-দায়গ্রস্ত পিতৃগণের নির্বন্ধাতিশ্যা, বন্ধুবর্ণের लाज अनर्गन-कानिष्टे निल्ला अनवशैन পিতাকে টলাইতে পারে নাই। অবশেষে তিন চারিবার ফেল হইয়া নলিন যথন রীতিমত প্রমাণ করিল, যে সে এফ, এ, পাশ করিবে না, তথন একদিন আলো, বাজনা ও পুশাস্থরভির সমারোহের মধ্যে বিবাহ করিয়৷ সে নববধু গৃহে আনিল। এবং ইছার ঠিক এক বংসর তিন মাস সতের দিন পরে নলিনের পিতা ইহলোক ভাগে করিয়া নলিনকে কাব্যচর্চায় অথও অবসর দান করিলেন।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

ত্রীকে লইয়া নলিন একটু বিপদে পড়িয়াছিল। মানসরাজ্যের শ্রেষ্ঠতম অর্থ্যস্বরূপ
প্রণয়-গদ্গদ ভাষা লইয়া সে যথন প্রভাকে

সম্ভাষণ করিত, তথন প্রভা এমনি সহজ্ব

সরল হাস্তের ফুৎকারে সেগুলি উড়াইয়া
দিত যে নলিনের পক্ষে গান্তীর্ব্য ও ক্রোধ
কানটাই সম্বরণ করা হংসাধ্য হইয়া

ডিড়ত। এক একবার তাহার মনে ইইত—

ত্রী ও সংসার সব ফেলিয়া কোথাও চলিয়া बाब। कांशांक छ कांन मरवान नित्व ना. গৈরিকবসনে দেশ পর্যাটন করিবে, মস্তকে বিপুল স্বটাভার ধারণ করিবে। অবশেষে কোন এক ছদিনে স্বমধুর গীতোচ্ছাদে প্রভার ভগ্নহদয় স্পর্ণ করিবে ৷ প্রভা তথন তাহার পারে ধরিয়া ক্ষমা চাহিবে—তবু সে আপনার मक्त अठेन त्रांथित ! धमनि धक्रों উद्धि উপারে দে প্রভার নিষ্ঠুরতা ও তাচ্ছল্যের প্রতিশোধ महेर्द। किन्न छेभाग्न-व्यवस्थान অনেক্থানি বিম্ন ছিল! প্রভার স্থলর নলিনকে সম্পূর্ণভাবে আবিষ্ট করিয়াছিল। প্রভাকে ছাড়িয়া নলিন কোথায়ও থাকিতে পারিত না! স্থতরাং ইচ্ছা সত্ত্বেও বেচারা নিতান্ত নিকপায় চিত্তে আপনার উপর এই সকল ক্রু অভ্যাচার সহ্ করিত।

সেদিন বন্ধুগৃহে সান্ধাভোজে গানের
মঞ্জলিস বেশ'জমিয়া উঠিয়াছিল। ললিতকঠে
মধুর সঙ্গীতালাপ, আতর গোলাপের মিশ্ব স্থাভি
সমস্ত মিলিয়া নলিনের মনে একটা মাদকতার
সঞ্চার করিয়া তুলিয়াছিল! বিবিধ প্রণয়-সঙ্গীতে
তাহার কবিহাদয় মুগ্ধ ও আর্ডি হইয়া পড়িয়াছিল, তাই সে আজ গৃহে ফিরিয়াই প্রিয়ার
ভূজবন্ধনের আশায় উদ্গ্রীব হইয়া উঠিল!

বদন্তের নিশ্ব 'দখিণা' বহিতেছে ! চাঁদের জ্যোৎসায় চারিধার ভরিয়া গিয়াছে ! নলিনের গৃহের সন্মুখে বায়াণ্ডার টবে একরাশ বেলফুল ফুটিয়া উঠিয়াছে ! পথে আসিবার সময় সে ফুটটা ছোট ফুলের ভোড়াও সংগ্রহ করিতে ভূলে নাই! নলিন কক্ষে আসিতেই প্রভা আসিয়া
কহিল—"জেঠাইমার বড় অস্থু করেছে!"
কথাটা কাণে না তুলিয়াই নলিন প্রভাকে
বুকের মধ্যে টানিয়া মৃছকণ্ঠে ডাকিল "প্রভা!"
"আঃ, ছাড়ো—কি কর! জেঠাইমার অস্থু ;
আমি তাঁর কাছে রাত্রে থাক্ব, তাই বল্ডে
এলুম। ভূমি গুরে পড়, আমি মশারিটা
কেলে দিয়ে ঘাই!" নলিন প্রভাকে বুকে
টানিয়া চুম্বন করিয়া কহিল, "হোক্গে অস্থু!
এমন জ্যোৎসারাত্রি রোগীর সেবার জন্ত নয়।
প্রভা! এসো, এই জ্যোৎসায় খানিক বসি
হজনে! তুমি ঐ বকুল ফুলগুলো নিয়ে একটা
মালা গাঁথো, আমি তোমার কোলে মাথা
রেখে গুয়ে থাকি! কি স্কর আজ দেখাচ্ছে
তোমাকে, প্রভা!"

প্রভা স্বামীর স্পালিক্সন হইতে আপনাকে
মুক্ত করিয়া কহিল, "না, ছি:, আমি
স্বোঠাইমার কাছে না থাক্লে চল্বে না!
তুমিও একবার তাঁকে দেখ্বে চল! এসে,
লক্ষীট!"

নলিন বিরক্ত হইয়া গন্তীরকঠে ডাকিল, "প্রভা!"

প্ৰভা কহিল, "কি ?"

নলিন কহিল, *তুমি এখন যেতে পাবে না ! এসো এই কুলটি তোমার থোঁপাম পরিষে দি ! সে গানটা বনে আছে,—

"অলবে কুন্তম না দিয়ো,

निधिन कवत्रो वा िक्र ।"

প্রভা এক দৃষ্টে স্বামীল প্রতি চাহিয়াছিল ! এমন সময়ে ঝি ডাকিল, "বৌদিদি"! "ছাড়, আমি ধাই" বলিয়া প্রভা তাড়াতাড়ি চলিয়া গেল! ডাড়াতাড়িতে ল'লিনের স্বর্ত্ব-দৃত্ প্রণরোপহার হুলটি তাহার শিথিল কবরীচ্যুত হইরা ধুলার দুটাইল!

निम किय़ क्ष च च च क रहेबा बहिन। **डाहांत्र 5टक (क्)ांश्या मान हरेगा चानिन!** সে একটি দীর্ঘনিশ্বাস ত্যাগ করিরা বারাপার আসিহা দাঁড়াইল ! রাগে, অভিমানে ভাঁছার সর্বাদরীর জলিতেছিল! সে একবার ভাবিল, ঐ বড় ফুলের টবটা তুলিয়া আপনার মন্তকে প্রচণ্ড আঘাত করে! রক্তশ্রোতে একটা বিপর্যায় কাণ্ড বাধাইয়া দেয়! প্রভা আদিয়া **(मृह्य)** जाहात छित्रिक **क्ष**मत्रवान शामीत्र অন্তিমকাল উপস্থিত! আবার মনে হইল. বারাণ্ডা হইতে নীচে লাফাইয়া পড়িয়া এখনি আত্মহত্যাধারা প্রভার এই নিষ্ঠুর উপেক্ষার চুড়ান্ত প্রতিশোধ লয়! সমস্ত প্রকৃতিটা তাহার নিকট আগুনের মত তপ্ত বোধ হইতেছিল! তথু সে ভাবিতেছিল, কি করিয়া প্ৰতিশোধ লওয়া বায়।

অনেককণ ধরিয়া সেই স্থানেই সে দীড়াইয়া
রহিল। ভাবিল, প্রভা নিক্তর আসিবে!
সে কি এতটা ভাছেল্য করিতে পারে?
নলিনের হাদয়ের বেদনাটা সে কি একটুও
ব্ঝিবেনা? সতাই কি এমন অরসিকার হত্তে
সে আয়সমর্পণ করিয়াছে?

কিন্তু, হার, সব বৃথা হইল। প্রভা ফিরিল না। নলিনের মাখাটা দপ্দপ্ করিভেছিল। দেবারাভার মেজেভেই ভইয়া পড়িল।

সনেক ভাবিয়া-চিন্তিয়া প্রতিশোধ গ্রহণের একটা উপায় দে আবিদ্বার করিয়া কেণিল। ভাবিল, তাহার প্রেম একনিঠ, প্রভাকে এতটা দে ভালবাদে, এই জন্তই প্রভা তাহাকে সবজা করে। এবার হইতে দে-ও প্রভার প্রতি তাচ্ছলা প্রকাশ করিবে ! সে কোন নামিকার উদ্দেশ্তে বাহির হইবে, এবং প্রভা যথন তাহারি প্রতীক্ষার বাতায়নপার্ধে বিসরা বিনিক্ত বিভাবরী যাপন করিয়াও তাহার সাক্ষাৎ পাইবে না, তথনি এই সকল অবজ্ঞা ও অপমানের কড়ায়-গণ্ডায় প্রতিশোধ হইবে !

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

পরদিন প্রভাবে রাগটা একটু নরম
পড়িলে নলিন পা টিপিরা তাহার জ্যেঠাইমার
কক্ষের সম্বাধে আসিরা দেখে, কক্ষমধ্যে তাহার
জ্যেঠাইমা নিজিতা এবং তাঁহারি বুকের কাছে
প্রভা জড়সড় ভাবে ওইয়া ঘুমাইয়া পড়িরাছে!
রাগে তাহার শরীর আবার অলিয়া উঠিল!
বটে! এইরপেই প্রভা রোগীর ওল্লবা
করিতেছে! কেন, জ্যেঠাইমা বধন নিজিতা
হইলেন, তথন আর কাহাকেও তাঁহার
কাছে রাধিয়া, সে কি স্বামীর নিকট আসিতে
পারিত না! কেবল বাহাছরি লইবার জ্ঞাই
প্রভার এতটা আগ্রহ! নলিনের প্রতি তাহার
কি বিন্দুমাত্রও কর্ত্বব্য নাই! হার!

প্রভার হাতটা ধরিয়া প্রবশভাবে নাড়িয়া নলিন ভীত্রস্বরে কহিল, "এই বুঝি সেবা হচ্ছে! বেশ!" কথাটার সহিত হার্ব্রের সমস্ত বিব ঢালিয়া দিয়া নলিন প্রভার উত্তরের স্পেক্ষামাত্র না করিয়া একেবারে নীচে নামিয়া আসিল! সেথানে ইজিচেয়ারে পড়িয়া, কপালে হাত দিয়া, চক্ত্টা মুজিত করিয়া সে কি ভাবিতে লাগিল!

এমন সমরে বন্ধু অক্ষর আসিরা কহিল, "পজ্যের বিরের ত সব কাল ঠিক হরে গেল ফে!" অজয় অক্ষয়ের প্রাতা! নলিন চকু খুলিভেই অক্ষম কহিল, "কিহে, চোধছটো যে লাল হয়ে রয়েছে! ঘুমোওনি কাল রাজে!"

্রুত্রকটা দীর্ঘনিখাস ফেলিরা নলিন কহিল, "আমার মত লক্ষীছাড়ার আবার ঘুম !"

অক্স হাদিরা কহিল, "ইস, • মাথাওছ ধারাপ দেখছি যে ! চা-টা ফ্রমাস ক্র ! স্বু সাফ্ হয়ে যাবে !"

"नाः, চা थाव ना !"

অক্ষ কাছে আদিয়া মৃত্কঠে কহিল, "তাইত, বাপার কি ? প্রভার সঙ্গে ঝগড়া হয়েছে বৃঝি !"

নলিন গতরাত্রের বৃত্তান্ত বিবৃত করিয়া কহিল, "আর পারি না আমি! এবার তাকে রীতিমত শিক্ষা দোব!"

চকু বিফারিত করিয়া অক্ষয় কহিল,. "অর্থাৎ?"

নলিন কহিল, "অর্থাৎ, তাকে বোঝাব আমিও তাকে অবহেলা করতে জানি! সে আমাকে ভালো না বাদলে আমারো তাতে কিছু আদে-বার না!"

অকর কহিল, "এ:, তুমি একবারে আন্ত একটি নায়ক হয়ে উঠলে! মাথা ঠাণ্ডা কর হে, মাথা ঠাণ্ডা কর !"

নলিন কহিল, "মাথা ঠাণ্ডা :বেশ আছে! আমি কি করব, তা তোমাকে বরং বলে রাধি! বাঁ হাতে একধানি প্রেমপত্র আমি লিখবো—বেন কোন জীলোক আমাকে লিখছে! তারপর সেই চিঠিখানা যাতে প্রভার হাতে কোনমতে পড়ে, তার বন্দোবস্ত করব! সে পড়ে জলতে থাকবে, আর নিশ্চর আমাক পান্নে সূটিৰে পড়বে, তখন একবার তাকে আমিও দেখে নোৰ !"

অক্ষ হাসিয়া কহিল, "মতলবটা মন্দ্রনর! বেশ একথানা কমেডি লিথে ফেলী যায়! আঃ, যদি একটুও লেথবার ক্ষমতা থাকত! মোদা, অমন কাফটি করোনা দাদা! আমাদের বাঙালীর মেয়েওলো, ঠাট্টাই বল আর গাঁট্টাই বল, সব বেমালুম হজম করতে পারে, কেবল এইটি ছাড়া! এইটিতে তার বুদ্ধিভদ্ধি লোপ পাওয়াটা ভারি স্বাভাবিক! এটা তাদের মন্দ্রান্তিক লাগে!"

অক্ষয় অনেক ব্ঝাইল ! কিন্তু ভীলের ভার আৰু নলিনের সহল অটল, স্থির !

সেদিন রাত্রে জক্ষর যথন আপনার পত্নীর কাছে নলিনের সঙ্করের কথা জ্ঞাপন করিল, তথন সরয় কহিল, "কি বৃদ্ধি! আর তোমরা পুরুষজাতটা এমনি! আমরা তোমাদের একটা আদরের কথার জন্ম প্রাণ দিতে পারি, আর তোমরা আমাদের সঙ্গে এমনি নিষ্ঠুর কৌতুক কর!"

অক্ষর সরবৃর নাসিকাটি ঈবৎ নাজিরা কহিল, "ও কথা বলোনা, সর! নালিনটা বন্ধ পাগল! পাগলের কথা কি ধরে!"

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

অজ্ঞরের বিবাহের গোল চুকিলে সর্যূ একদিন স্বামীকে কহিন, "কেনে, নলিনবাবুর সে চিঠির ধবর কি ়"

অক্ষ হাসিরা কছিল, "তুমিও বেমন! সে ঐ মুখের কথা ভাষু! নলিন ভূলে বসে আছে, আর কি!" সরষু মৃত্ হাসিরা কহিল, "তুমি মনে পাড়িরে দিয়োনা, একবার! মজাটা দেখা যার বেশ!"

অক্ষম কহিল, "বটে, তুমি মঞ্জা দেও! কারো পৌষমাস, কারো সর্বনাশ!"

মধ্যাহে প্রভা নাইব্রেরী হইতে আনীত উপস্থাসথানি খুলিবামাত্র তাহার মধ্য হইতে নারী-হন্তলিখিত এক পত্র পাইল! পত্রধানি এইরপ—

"প্রিয়তমেযু,

নলিনবাব, সেদিন আসিব বলিয়া চলিয়া
গেলেন, কিন্তু আসিলেন না। এ তিনদিন
আপনার অদর্শনে আমি চাতকিনীয় মত পথ
চাহিয়া বিসরা আছি, কিন্তু প্রত্যহই নিরাশ
হইতেছি! অত ভালবাসা, মতে সোহাগ
আদর, সে কি শুধু ছলনা? না, নলিনবারু,
আপনি আনেন না—আপনাকে না দেখিতে
পাইলে আমার চিন্তু কত আশাস্ত হয়। তা
যদি আপনি বুঝিতেন! আমার বদি পাথীর
মত ডানা থাকিত, ত উড়িয়া গিয়া দেখিয়া
আসিতাম! প্রভা দেবী বুঝি পথ আশুলিয়া
রাধিলাছেন!

"আপনাকে আসিতেই হইবে, আৰ—
নিশ্চর । নহিলে আৰু রাত্রে বিষের জালার
হলমের জালার নিবৃত্তি করিব। তখন
লোম সিতে পারিবেন না যে আপনার শৈ
আপনাকে না বলিয়া মরিয়াছে!

আমার প্রাণ ফাটিয়া বাইতেছে! আজ আসিবেন,—নহিলে এই শেষ!

कि कतिव, निमनवेतु, जाननाटक लिबल

যে আবার মরিতেও ইচ্ছা হর না, নহিলে এ কম্বদিন কি না মরিয়া থাকি ?

> আপনারি পদাশ্রিতা দাসী শৈ—"

পুত্রধানি প্রভা একবার, ছইবার, তিনবার পাঠ করিল! সহসা বাহিরে নলিনের পদশন্দ ভানিরা চিঠিধানা তাড়াতাড়ি প্রকের মধ্যে রাধিরা দিল!

নলিন কক্ষে প্রবেশ করিরাই জামার পকেট, বালিস প্রভৃতি নাড়াচাড়া করিতে লাগিল; বেন কি একটা প্ররোজনীয় সামগ্রীর অমুসন্ধান করিতেছে!

প্ৰভা থাকিতে পারিল না, কহিল, "কি খুঁজছ় ?"

মুণটা যথাসম্ভব বিবৰ্ণ করিয়া নলিন কহিল, "কিছু না—এই—এই—"

প্ৰভা কাঁছে আসিয়া কহিল, "কি, বল না৷ বলবে না ?"

"এ-একটা চিঠি!" "খুব দরকারী চিঠি
নাকি!" "আঁ।—হাঁা দরকারী।" "এটা নর
তো!" বলিরা পুস্তকের মধ্য হইতে 'লৈ'মাক্ষরিত পত্রধানা প্রভা বাহির করিরা দিল।
নলিন ক্ষিপ্র হল্তে পত্রধানা লইরা কহিল,
"এইটেই বটে! তুমি দেখনি ত!"

প্রভা উত্তর না দিরা একপার্শে দাঁড়াইরা বহিল। "প্রভা" বলিরা নলিন ভাহার হাত ধরিল। "যাঃও—আমি সব জানি! ছাড়" বলিরা প্রভা ক্রভপদে কক্ষ হইতে প্রস্থান করিল।

নলিনের মনে অভাস্ত আনক হইল ! সে ভাবিল, এবার পুব শান্তি দিয়াছে সে ! করের আনকে একেবারে সে নীচে নামিয়া গেল!

পঞ্ম পরিচ্ছেদ।

কবিতার প্রফ সংশোধন করিবে বলিরা সবে-মাত্র তাড়াটি পুলিরা বসিরাছে, এমন সমর চাঁপা ঝি শশব্যন্তে আসিরা কহিল, "দাদাবাবু গো, সর্মনাশ হরেছে!"

নলিনের বুকটা ধড়াস করিরী উঠিল, "কেন রে, কি হয়েছে ?"

"বৌদিদি কেমন করছে! শীগগির এসো গো, দাদাবাব্" বলিয়াই চাঁপা উর্ছবাসে অস্তঃ-প্রাভিমুধে ছুটিন!

অন্ত চরণে কক্ষে প্রবেশ করিরাই নলিন দেখে, প্রভা উইরা রহিরাছে, মাথার চুলগুলি এলাইরা পড়িরাছে, চকুছটি মুদ্রিত, মুথ বিবর্ণ! কম্পিতকঠে নলিন ডাকিল, "প্রভা!"

প্রভা চোপ চাহিতে চেষ্টা করিল। নিলন তাড়াতাড়ি পাশে বদিরা ঝুঁকিয়া পড়িরা ডাকিল, "প্রভা, এমন কছে কেন ?"

• চাঁপা কছম্বরে ফোঁপাইতে ফোঁপাইতে কহিল, "বৌদিদি বিষ পেরেছে। কি হবে, দাদাবার ?" নলিন চমকিয়া উঠিল। "এঁয়া, সে কি।" বলিয়া তাড়াতাড়ি সৈ দোয়াত কলম লইয়া বন্ধু পরেশ ডাক্তারকে পত্র লিখিল, "এখনি এস। বিশেষ বিপদ।"

বাহিরে আসিয়া ভ্তাকে ডাকিয়া কহিল,
"শীঘ পরেশবাব্র বাড়ী ঘা—এখনি তাঁকে
নিয়ে আসবি—ছুটিয়া যা,—গাড়ী ভাড়া
করেই যা"—

ভূত্য পত্র দইরা ডাক্টারের উদ্দেশ্রে ছুটিন।
ক্রিরা আসিরা প্রভার মন্তক আপনার
ক্রোড়ে তুলিরা নলিন ডাকিন, "প্রভা!"
প্রভার মুধ আরো বিবর্ণ হইরা আসিতেছিল!

অৰ্দ্ধোন্মীলিত নেত্ৰে মৃত্কঠে প্ৰভা কহিল, "ডাকছ ? কেন ?"

নলিন কহিল, "এ কি করেছ, প্রভা? একেবারে এমন শাস্তি দিতে হয় ?"

প্ৰভাকহিল, "বেঁচে কি স্থ! আমি সব জানি!"

ক্ষ কম্পিতববে নলিন কহিল, কি জান, প্রভা?" নলিনের চকু হইতে ছই বিন্দু অঞ্ গড়াইয়া প্রভার গণ্ডে পড়িল। প্রভা কহিল, "না, কেঁলোনা! আমি তোমাকে একটুও স্বথী করতে পারিনি, ক্ষমা করো!"

নলিন প্রভার অধরে চুম্বন করিয়া কহিল, "তোমাকে পেয়ে যে আমি বর্গ পেয়েছি, প্রভা! ভোমার কত ভালোবাসি, তা কি জান না ?"

প্রভা কহিল, "বাকে পেরে মুখী হরেছ"—
নলিন কাঁদিতে কাঁদিতে কহিল, ''কমা
কর, প্রভা, ক্ষমা কর আমাকে! সে সব
মিথ্যা! সে চিঠি আমি নিজে ই: হাতে লিখেছিল্ম শুধু একটু তামাসা করবার জন্ত।
ক্ষেত্র জানে—উঃ, ক্ষামি কি করেছি!"

প্রভা কহিল, "না, ছি: কেঁদোনা— ভাবনা কি ? এক প্রভা গেলে লক্ষ প্রভা হবে।" নলিন কহিল "না, না, আমার প্রভার তুলনা নেই!"

প্রভা কহিল, ''যদি বাঁচি ত আর কথনো অনাদর করবে নং 🕫

নিদন কহিল, আবার যাদ পাই ভোমাকে
—তা হলে মাথার করে রাথবো !"

প্ৰভা কহিল, "না, ছিঃ, ও কথা বলতে নাই! তবে আমি বাঁচলে যদি তুমি স্থী হও ও আবার আমার বাঁচতে ইচ্ছা হয়!" কথাটা বলিয়াই প্রভা উঠিয়া বসিল। নলিন কহিল, "ওকি ? না, না, শোও ; কট্ট হবে বে তোমার !"

প্রভা কহিল, "কট্ট কিসের ? তুমি ঠিক বলছ, চিঠিখানা মিথ্যা ?"

নলিন কহিল, "আগাগোড়া মিথ্যা! এই তোমার গাছুরে বলছি!"

প্রভা সামীর পারে মাথা রাধিরা কহিল, "ক্ষম কর আমাকে! তোমাকে অনর্থক কট্ট দিলুম! আমার এ বিষ-ধাওরাও মিথাা!"

নলিন কহিল, "সে কি ?" "হাঁ! অশ্বয়বাবুদের বাড়ী বিরেতে সেদিন যথন
নিমন্ত্রণে যাই, সরয় তথন আমাকে সব কথা
বলে! তাই আমিও একটু রঙ্গ করলুম!
আর তোমার এমনি ধারা কাব্য ভালোও
লাগে ত! চাঁপাও এর কতক-কতক জানে!
আমি বিষ ধাইনি, এবং কধনো ধাৰনা—এ
তুমি ঠিক জেনো!"

নলিন কহিল, "আঃ, তাই বল! আমার এমন ভর হরেছিল! তবে তোমার বে অর্মসকা বলে জানতুম, আমার সে ভ্লটা বে ভাঙ্ল, তাতেই সব হঃধ দুরে গেছে, প্রভা!

এমন সময় ভূতা আসিয়া সংবাদ দিল, "ডাক্তারবাবু এসেছেন।"

নলিন কছিল, "দেখ দেখি এখন উপায়! ছি, ছি, রীতিমত কেলেছারি! কি সনে করবে ?"

প্রভা কহিল, "আঃ, কিছু ভাবনা নেই! বলগে 'একটু রঙ্গ করে ডাকা গেছে। অনেক দিন আগোনি' তার পর সন্ধ্যারেলা খাবার নিমরণ করো—"

নলিন বাহিরে আদিতেই পরেশ কহিল,

"কি হে ব্যাপার কি ? ভোষার চাকর বে ক'রে গিরে পড়ল, ভাবসুষ না জানি কি বিপদ—তা—"

নলিন হাসিতে হাসিতে কহিল, "আৰু ১লা এপ্ৰিল, না? তাই তোমাকে এপ্ৰিল ফুল' করা গেল! তা ওবেলা এখানে খেরো হে—আমার ত্রীর নিমত্রণ!"

পরেশ। (হাসিরা) "তা হলে 'ফুল'টা

হোল কে? স্থানইড 'ডিনার' দের কারা, আর ধার কারা?

সেদিন রাত্রে অস্থান্ত কথার পর নলিন জীকে বলিরাছিল, "বাহোক বিবপানের অভিনরটা তুমি বে রকম দক্ষতার সঙ্গে সম্পন্ন করেছিলে, তেমন আমাদের বিয়েটারের ষ্টেক্তেও কথনো দেখিনি!"

बितोतीक्टाबाइन मूट्यालाधात्र।

জন্মভূমি।

(পল্লি-ছবি)

ঐ বে গাঁটি বাচে দেখা আইরি ক্ষেতের আড়ে.— প্রান্তটি যার আঁধার করা সব্ধ কেয়া বাড়ে, পূবের দিকে আম কাঁঠালের বাগান দিয়ে খেরা, জটুলা করে যাঞ্চর তলে পাড়ার বালকেরা;—

ঐটি আষার দেশ—আমার কাষ্য ধর্গপুরী,—
ঐথানেতে ফ্রন্ম আষার স্বটা গেছে চুরি।
বাঁণবাগানের পাশটি দিবে পাড়ার প্রদটি বাঁকা,
প্রের ধারে গলাগলি সল্নে গাছের শাধা,
গোলর গাড়ীর চাকার প্রে শুকার না ক কাদা,
কোণাও বা তার বেড়ার পাশে খুটে ছারের পাদা।

ঐটি আমার ক্ষত্মি—সাধের খর্গপ্রী,—
বিধনোভা ঐথানেতে বত গেছে চুরি।
বত দেশের বত পাখী ঐ গাঁরে কি আছে!
ঝাণে ঝাড়ে বেড়ার উড়ে বাসার কাছে কাছে;
গাঁধর পালে গাছের ভগা সুইয়ে পড়ে গারে,
চল্তে গেলেই শুক্রো পাতা শুভার পারে পারে;

বনে ভরা এবনি ধারা আমার বর্গপুরী :—
তবু আমার কাবর চিন্ত সেধার গেছে চুরি।
গয়নীবি কোবার পাব—পল্প নাইক নোটে;
চৈৎ বোগেবে তবিরে ওঠে, কলচুকু বা লোটে;
গানার-মরা ভোবার ভরা নিদ্ধি গাছে ছাওয়া,
ভাট-বিটিনির ক্ষমেতে ইংগিরে ওঠে হাওয়া;

এখনি আৰার বর্গছাড়া বর্গসেরাপুনী,—
দ্বন্ধ থেকে দেধায় আৰার হনর সেছে চুরি।
পাঠশালাটি নাইক গাঁরে, নাইক ডাকের ঘর,
বিদ্যা নেথায় বড়ই কব্তি,—নাইক তবু অর!
রাজার বাড়ী নাইক গাঁরে ধনীর দেবালয়,
সক্ষাহীনের বক্ষা নাইক, দারিস্ত্যে নাই ভয়;—

বিভব সম্পদ্ধীন এখনি আমার খর্গপুরী,
স্কল অভাব দৈশ্য তবু সেধায় পেছে চুরি।
তবু ওঠে কুষোরপাড়ায় কদমতলার ধারে
সংকীর্জনের বিগন ধানি সাধ্য অক্ষারে;
স্বাই বেন খাধীন স্থী বাধা বাধনহারণ,
আবাদ করে, স্বাদ করে বিবাদ করে ভারা;—

এবৰি আৰার সাদাসিথে সাধের বর্গপুরী,— ভাইত সেধার চিন্ধ আৰার সভ্য গেছে চুরি। শোভা বল বাছা বল আছে বা না আছে, বুক্টি তবু বেচে ওঠে এলে গাঁরের কাছে; ঐবানেডে সকল শান্তি, আৰার সকল হবে, বাপের সেং, মারের আরর, প্রিয়ার হাসিমুব ;

ভাইত আমার কয়ভূমি বর্গসেরাপুরী— বেধার আমার ক্ষরবাদি সবটা গেছে চুরি।

व्यविकासाहन वागि ।

শনি ব্রত

বা

চট্টগ্রামের সান্ধ্য-সন্মিলন।

কেছ কেছ ৰনে করিতে পারেন ইভনিং পার্ট ৰা সাদ্ধ্য সন্মিলন প্ৰথা ভারতে ইংরেজের অফুকরণে স্টু নুতৰ জিনিব; বস্তত: ইহা ভারতের অনেক প্রাচীন সম্পত্তি। এদেশে যত উৎসব, যত ব্ৰত, যত আমোদ প্রয়োদ প্রচলিত সাধারণতঃ সাদ্ধ্য সন্মিলনেই ভাষার প্র্যাপ্ত। কোন কোন ছলে যদিও এইরূপ মিলন-উৎসব দিবসেও হইয়া থাকে কিন্তু চট্টগ্রামের শ্লিব্রত একটি প্রকৃত সান্ধ্য-সন্মিলন। এই ব্রত জাদি যুগ হইতে এই অঞ্চল প্রচলিত। ইংরেজ রাজতে শ্বি-বাসরীয় ছুটার প্রথা থাকাতে ইহাতে মণিকাঞ্নের যোগ শনিবারে আফিসাদির বন্ধ হয়-এই হইয়াছে। সময় ৰাড়ী গিয়া বন্ধু বান্ধবদিগকে লইয়া সান্ধ্য সন্মিলনে জলযোগ করা কত আমোদের তাহা ব্যক্তিমাত্রেই অমুভব করিতে পারেন। অনেক ঘরেই প্রতি শনিবারে এই পুরুর অনুষ্ঠান হয়।

শীবংস রাজার উপর শনির কোপ মহাভারতের এক বিশেষ বর্ণনীয় বিষয়। পুজারতে এই সম্বনীয় যে পুত্তিকাধানি পাঠ করা হয় তাহার ভিন্ন ভিন্ন অংশ উচ্ত,করিয়া শনিব্রতের প্রণালী ব্যাইয়া দিব। গ্রন্থারতে লিখিত হইতেছে—

"সরস্বতী পাদর্গে করি নম্কার,
ত্মিগত হরে বৃন্ধন জগত সংসার।
সিংহ বাহনে বন্দন উমা মহেবর,
গরুড় বাহনে বন্দন গোলোক ঈশর।
উক্তরুশ বন্দনার পর বর্ণন করা হইছেছে:—
"পূর্ব্বে এক হরিনামে হৈ নিক চাক্ষণ;
স্থান্দা নাবেতে হৈল গাহার নন্দন।
দেশ দেশান্তর পঠি বিদ্যা হৈল ভার,
তাহার রাশিতে শনি হৈল জ্যিকার।
দশা মোগে হৈল ভার পিতার মরণ,
দেশে দেশে ভিক্লা করি মাগর রাক্ষণ।

আৰ দিন গেল বিপ্ৰ ৰাজার গোচর, স্থানবান রাজা সেই চম্পক ঈবর। দরা ধর্মে দান কর্মে সদা অকাতর, ভার সম রাজা নাহি পৃথিবী ভিতর।

তংপর দরিজ আহ্মণকে দেশিয়া রাজা তার পরিচয় লইলেন। এ.ক্ষণ রাজার দরা প্রান্তির আশায় অঞ্পূর্ণ কাতর বচনে বলিলেন—

> "বিদ্যা উপাৰ্জ্জিক আমি স্থের কারণ, ললাটে লিখন ছঃখ না বার বওন। পঞ্জি দেখিয়া দরা অন্মিল রাজার, পাঠশালা করাই দিল শিশু পড়াইবার। এক বেলার ভঙ্ল রাখি শনৈশ্চরে হরে, জারে বড় ছঃখ পার স্থার্মা বিধবরে।"

এইরপে ত্রাহ্মণকে কট দিয়া শনিদের বে
বিশেষ সম্ভষ্ট ছিলেন তাহাও ময়,—জগতে কাহাকেও
কট দিয়া কেহ স্থাঁ হইতে পারে না, বিশেষতঃ এ
কেত্রে শনির একটা বিশেষ মতলবও ছিল। কবিত
আছে অবশেষে শনিদের উক্ত দরিক্র ও কট নিপোরিত
রাহ্মণ সলিধানে উপনীত হইয়া বলিলেন "তুরি আমা
হইতে অভীট বর গ্রহণ করিয়া পৃথিবীতে আমার প্রা
প্রচার কর'। এই কথার উত্তরে ব্রাহ্মণ বলিলেন
"যদি বর দান করিবেন তবে এই বর দিন বেন
আগনার দশা আমার উপর না থাকে।"

শনিদের উত্তর করিবেন, আপনার রাশিতে দশ বংসর আবার ভোগদল ছিল, এখন বাত্র আট বংসর পূর্ব হইরাছে, আরও ছুই বংসর কাল আপনার উপর আনার দশার ছিভিকাল, কিন্তু আপনি বহি আমার প্রভাবে সম্প্রত হন ভবে এই ছুই বংসরের ভোগকাল দশবণ্ডের সধ্যে হরণ করিব ৷ শনিবার সারংকালে ভাগীরথী শৈকতে স্বাসীন হুইরাউক্ত স্পুদ্ধকাল বিশ্বপাতা বিধাতা নারায়ণের থান করিলে উক্ত দশা খণ্ডিত হইবে।

কিন্ত ব্যক্ষণ গলাতীরে গিরা আট দণ্ড জপ করিয়া
লগ হইতে বিরত হইল। তথন—
"পনি বলে সাক্ষী হও প্রভু নারায়ণ
বৈধ হংগ পার বিজ বিফল কারণ।
স্ট রক্ষে দিতে পারি কুঠার গাঁধিয়া,
চলিলেন শনৈশ্চর আনন্দিত হৈয়া।
মিলিলেক গিয়া প্রভু চম্পক নগর,
পথেতে বিলিল হুই রাজার কুমার।"

ভৎপরে শনিদেৰ প্রাক্ষণের উক্ততে রাজপুত্রবয়ের মুক্ত ছাপন করিয়া রাখে, লোক জন রাজাকে গিয়া বলে,—

> "তুমি যে রেবেছ রাজা ভিকুক আকাণ, মন দিলা শুন কহি তার বিবরণ, তব হুই পুত্র বিঞা গেয়েছে সহর, ছুই মুগু রাধিয়াছে উল্ল উপর।"

রান্ধার পাইয়া আন্ধা কোতোয়াল ধায়, বিকেরে বাঁধিয়া আনে রান্ধার সভায়। "কাঁদে রান্ধা নরেশ্বর— কোথা গেল পুত্র মোর— কিন্ধণে বঞ্চিব আনি খরে!

ললাট লিখন ছিল, ছই পুত্ৰে বিজে খে'ল বৃদ্ধকালে কে চাবে সংসারে !"

এদিকে কারাগারে ত্রাহ্মণ নানাক্ষণ কট ভোগ করিয়া শনিদেবকে ডাকিতে লাগিলেন, শনি দর্শন দিয়া তাঁহার কারাত্বর বিমোচন করিলেন ও পুত্রশোকাকুল রাজাকে দর্শন দিয়া নবনীত ক্রকোমল পুত্রম সমর্পন করিলেন।

> "অন্তে নাহি দেখে সাত্র দেখিলা রাজন, হন্ত কোর করি রাজা করিলা অবন।" "ননোনীলাপ্তন বরপ্রকাং রবিস্থতো বহা গ্রহং হামনা গর্ভ সন্তৃতং বন্দো ভক্ত্যা দনৈশন্তরম্।" শনৈশন্তর দেশি রাজা হৈলা হর্বিভ, গুণাস করিশা রাজা সুটাইয়া ভূষিত। শনি বলে বাক্য মোর শুনহ রাজন,

ভাষার সমুপে ছংখ পাইল আক্ ।
বর্ম জানি বেবা মোর নাহি করে পূজা,
সর্বানাশ করি ভারে দিয়া নানা সাজা।
রাজা বলে কহ প্রভূ কিরপে নেবন ?
কোন জব্যে ভূই হও, দয়ার নন্দন।
শনি বলে শুন রাজা প্রার বিধান
বিচারিয়া বলিলাম ভোমার সদন।"
(পুজা প্রগানী)

"শিলাচক আনি তথা করিবে ছাপন, বিবিধ নৈবেদ্য আদি করিবে বরণ। চক্রাভাবে ঘট তথা করি নিরপণ আমাকে আনিবে তথা করি আবাহন।— "ইকু তিল আদি রস্তা মিষ্ট নারিকেল, • আম, কটেকী আর মধুদল বেল," সোয়া সের আটা আর সোরা সের গুড়, দধি হয় ঘৃত চিনি তাযুল কপ্র প্রমাণের যত জব্য আনিতে না পারে,

তথাপি করিবে সেবা ভক্তি অনুসারে"।

আধুনিক সাদ্ধা সমিভিতে খেতাকদলের অনুকরণে চ্বা ও বিসক্ট্ মাত্র দেওৱা হয় আমাদের খনেশীর সাদ্ধা সমিভিতে—তাহা অপেকা কত উৎকৃত্ত থাদা ক্রয় দেওবার ব্যবহা করা হইয়াছে তাহা পড়িয়া দেগুন। আটা খুব পুষ্টকর খাদা, তা ছাড়া, দৰি, হৃদ্দ ভূত, চিনি, আত্র, কণ্টকী, নারিকেল বেল সকলই উপাদের জব্য। কলা ও নারিকেল এই হুইটা ফল এই সিমির এক বিশেষ অক্সভূত উপাদান। জৈঠ ও আমাঢ় মাসে প্রচুর আত্র ও কাঠালের রস দিয়া এবং শীতকালে ধর্কর রসের সহিত দবি হৃদ্দ আটা এবং পক্ত কলা ধর্কর রসের সহিত দবি হৃদ্দ আটা এবং পক্ত কলা হয়। অল্যোগের এই স্করে ব্যবহা আমার মতে আল সমন্ত বঙ্গদেশে বিস্তৃত হওৱা উচিত।

পুৰা ক্ৰব্য নিবেদিবে আমা উচ্ছেশিয়া।
শনিবাৱে সন্ধ্যাবেলা পূৰা নিৰুপণ,
ইটমিত্ৰ বন্ধু জ্ঞাতি আইসে যতক্ৰন
অনাহত যেই আসে কৱিবে হাপন,
পূজার প্রসাদ থেৱে যাবে লোকজন।

•
এইরূপে ভক্তি করি পূবে যেই বাজি,
এহ দোবে তারে আমি করি অবাাহতি।
এইব্য অপার করি বাড়াই সম্পদ,
চিরকাল সুধে রাখি করি নিরাপদ।

শনিবার ধনে জনে বৃদ্ধি হয় তার

এই মতে ধরণীতে পূজার প্রচার।"
বিতীর প্রবন্ধে এক সদাগরের কথা—

"বিজয় বগরে সাধু নামে শুদ্ধ-মতি—

বাণিজ্যেতে লভ্য নাহি হুঃখ পায় অতি।

সপ্ত পঞ্চ নোকা লৈয়া বাণিজ্যেতে যার—

থাকুক বাণিজ্য কার্য্য মূলেতে হারায়" ॥

তৎপর এক বিপ্রকে শনিগ্রহের পূজা করিতে দেখিরা—তাহা হইতে পূজাপ্রণালী সংগ্রহপূর্বক সাধু নিজে যথন পূজা আহন্ত করিল,—তথন শনি প্রভাবে চতুন্তবি লাভ হইল। তৎপরে একদিন ভ্রমবশতঃ পূজা করিল না, দেইদিন আবার শনির কোপদৃষ্টিতে নিশ্তিত হইল।

"মতহতী প্রায় হৈল বহুলাত পাইয়া;
না প্জেন শনিদেবে মনে পাশরিয়া।
শনি বলে "সদাগর, দর্প হৈল মনে,
কিছু শান্তি দিয়া দর্প ভালিমু একবে।
পূর্বাদিন রাজবাড়ী দেরে কৈল চুরি,
পারদিন সাধু ছানে খিক্র কৈল বাড়ি।
শনি জোধে বাধু ছঃ গনে অভিশন্ন
ছঃধ হেতু স্বাগর ঝাড় কিনি লয়।"

নিদারণ কোডোয়াল রাজ-আজ্ঞা পাইরা[®] হতপদ লৌহ দিয়া রাখিল বাঁথিয়া।" ভংগরে শনিবেবকে উজ সভদাপর স্থানারূপ ছভি করিল।

"নিবেদন করি গুৰ এই শ্ৰিবর,—
নিগড় বন্ধন হৈতে যোরে রক্ষা কর।

থনে প্রাণে প্রভু মোরে নেও নিজ বর,
সহস্র মুলা জাতি পুরা করিব ভোমার। '
"তবন গুনিরা দেবে দরা উপজিল,
নিল্রাতে রাজারে দিরা বগ দেখাইল।
গুন গুন মহারাজ আমার বচন,
ঝাড়ি কিনি চোর হইল সাধ্র নন্ধন,
কল্কা প্রভাতে পুত্র না ছাড় আমার—
ছার ধার হবে তব সমস্ত সংসার।

আমার স্বপ্লেতে রাজা যদি না দেও মন স্থাদিন মধ্যে মাজা হইবে নির্থন।

তৎপরে স্বপ্নেতে নরনাথ চৈতক্ত লাভ করিছা নিগৃহীত সেই সভদাগরকে কারামূক্ত করত: তাঁহার সহিত বিজ্ঞা পাশে আবদ্ধ হইলেন এবং তাঁহা হইতে পুশার বিধি লইরা পনিদেবের পুলা করিলেন ও পুলা প্রভাবে অভুল বিভবের অধিকারী হইলেন।

এই পূজা একদিকে বল বার সাপেক অক্রদিকে
সমাজের নিয়তর শ্রেণীর লোক হইতে উচ্চত্তর
শ্রেণার লোক পর্যান্ত এই শুভ বিলনকেকে যোগ
দিতে পারেন।

এই ব্রত হানে দেশের আপামর সর্বাদারণ মিলিয়া একত্রে উপবেশন করে। যখন, ব্রাহ্মণ নৈবেল্ল ও সিল্লি তৈরার করিতে থাকেন সেই অবসরে সমাগত লোকগণ নানারূপ আলাদের হথে নিমত হন। তংগরে পূজার পূঁ বিপাঠ, ধ্প প্নার হংগর, শব্দ ঘণ্টার ধ্বনি সমাগত ব্যক্তিদের প্রাণে একটা প্রত্তীরগন্ধীর ধর্মভাব ন্ধারিত করিতে থাকে।

সচরাচর গরিজ লোকের। বেরপে শনি-সেবা নির্মাহ করে ভাহাতে ৩।৪টাকার অধিক থরচ পড়েনা। অধচ ১০০ী১৫০ লোক-কান কোন হলে ৩০০।৪০০ লোকও — ভৃথির সহিত প্রসাদ উপভোগ করে। এইরপ সরল হলরের অক্তরেম প্রীতি প্রবাহিত উৎসবে একদিকে সমাজের উচ্চশ্রেণীর লোকের করের ভাবের আদান প্রদানের স্থবিধা হয় অন্ত দিকে বাড়ীতে বাড়ীতে মহিলাদের জন্তও সিরিপ্রেণে প্রত্যেক পরিবারের প্রীতিবন্ধন দৃঢ়ী-ভূত হয়। শনিপৃজাতে কোন কোন সম্ভান্থ ধনী লোক ৫০।৬০ টাকা হইতে ১০০।১৫০ টাকা পর্যন্ত বায় করেন।

দিরি প্রধানের প্রণালীও অতীব সরল ফলর। গৃহস্থ দিনের বেলা কটোরার আকৃতি বিশিষ্ট পদ্মপত্র রাশি অথবা কদলী পত্রসমূহ সংগ্রহ করিয়া রাখেন। পদ্মপত্রের বাটী গুলি আর শিলাই করিতে হয় না। কদলী পত্রের বাটী ভৈরার করিতে হইলে উহার চারি কোণার শরিকা বিদ্ধ করিয়া দেওয়াহয়।

পূজার পরে উপস্থিত প্রত্যেক ধনী নির্ধন, বিহান মূর্থ সকলের হাতে এইরূপ এক একটা পত্রকটোরা প্রদন্ত হর এবং তাহাতে প্রথমত: কাটা আধ, নারিকেল কোরা, ছোলা বা মূগ ভিজা, তিলের লাড়, চিনি আম কাটাল প্রভৃতি ফল প্রদন্ত হয়।

· সেই সমস্ত নিঃশেষিত হইলে সমুদ্রমথনে উথিত অমৃতের মত সিন্নি কাহাকেও কেড় পোয়া কাহাকেও অর্ধসের করিয়া দেওরা হয়।

দিমি প্রস্তুত প্রণালী।

প্রথমত: ৩০০।৪০০ কলনী ফলকে চালুনী দারা তালের মাজের মত সংগ্রহ করা হয়। উক্ত কদলী মণ্ডে অতি হক্ষ তথুল চূর্ণ মিপ্রিত করিয়া তাহাতে নারিকেল কোরা ও আত্র কাঁটালের রস, হগু, দধি ধর্জুর রস, গুড় কিয়া চিনি মিশান হয়।

পূর্বেই বিশরাছি, বাজারের মিটার কিখা
চা বিস্কুটের ব্যবস্থা অপেকা ইহা অনেক
গরিমাণে উৎকৃষ্ট,—একদিকে সহর্দ্ধ লভ্য,
অন্তদিকে ভৃত্তিকর খাভ। এই প্রসাদ
ভক্তিভাবেই খাইতে হয়। ইহাতে আবার
আরও এক ফুল্লর ব্যবস্থা আছে,—

"সভার থাইবে প্রসাদ, গৃহে নাহি নিবে"।

এই প্রদাস হিন্দু মুসলমানের এই মিলন দিনে সতাপীরের সিলির কথা কিছু অলোচনা कत्रा अथानिक हरेत ना। हिन्सू कविवत ভারতচন্দ্র সত্যপীরের বর্ণনায় লিখিয়াছেন — ৰিন্দ কৈত্ৰ বৈশ্ব শূদ্ৰ কলি যুগে ক্ৰমে কুদ্ৰ ' যবনে করিতে বলবান. •ফকির শরীর ধরি, হরি হৈলা অবভরি, একবৃক্ষ ভলে কৈলা স্থান। নম্মান দাড়ি গোঁপ, গায়ে কাৰা শিরে টোপ হাতে আসা কাঁধে ঝোলে ঝুলি, তেজ্ঞ:পঞ্জ যেন রবি. মুখেবাক্য পীরনবি নমাঞে দগার চুনে ধূলি। বাহির কিরূপে হবে কারে বা কিরূপে কবে ভাবেন বুক্ষের তলে বসি,— ঈশ্বর ইচ্ছায় কিন্তু বিপ্র এক নামে বিষ্ণু সেইখানে উত্তরিলা আসি। विक वर्तन इति वितन शुक्ति नाहि अन करन কি বলে ফকিন ছুরাচারি! ফ্রিরের অঙ্গে চায় অভ্ত দেখিতে পার

শথ্য হক্ত গদাপ ঘণারী।

সন্ত্রমে প্রণত্তি করি উঠি দেখে নাহি হরি

শৃন্তে শুনে সিন্নি ইভিহান!

কীর চিনি আটা কলা পানত্রা—প্রশানা,

মোকানে পীরের পার বাস।

কিল আসি নিজালরে— আনি দ্রব্য সম্পরে

নিবেদন কৈল সত্যনামে;
পূজার প্রসাদ গুণে ধন্ত হৈলা ক্রিভূবনে

অক্তে পেলা শ্রীনিবাস:ধামে।

এখন আমরা বলিতে চাহি এই চির-

প্রচলিত পূজায় ভিতর কি কোন অর্থ নাই! অবশুই আছে। ঐরপে সত্যপীরের পূজা হিন্দুমূসলমানের মিলন উপার মাত্র! এই পূজাপদ্ধতি অবলম্বিত সাদ্ধাতোকে হিন্দুমূসলমানের মধ্যে সম্প্রীতি বর্দ্ধিত হুইত। আমি বলি, যাহা আমাদের পূর্বপুরুবগণ হিন্দুমূসলমানের মিলনের কেন্দ্রীভূত উপায় ভাবিয়া স্থাপন করিয়াছিলেন তাহা এখন পরিত্যাগ করা কোনরূপেই কর্ম্বব্য নয়।

মোক্ষের আভাস।

মন্থ্য মাত্রেই আমরা জানি বুঝি ও
থীকার করি যে ধার মন্থ্যুত্ত আছে সেই

শান্ধ। মান্থবের বিশেষত্বের নামই মন্থ্যুত্ত।
এখন মান্থবের বিশেষত্ব কি? না আত্মা।
অতএব আত্মার বোগ বা মন্থ্যুত্ব একই কথা ।
ইহাও আমরা জানি বুঝি ও খীকার করি
কিন্তু এই যোগ বা একা বে কি জিনিষ ও
তাহা কি ভাবে বর্তুমান সেটা স্বাই পরিষ্কার
জানি না।

শারীরিক, মানসিক, আধ্যাত্মিক তিন অবস্থার যোগে মহন্ত। যার নাম শরীর তারই নাম স্থল, তারই নাম কার্য্য, যার নাম মন তারই নাম ক্ষল তারই নাম ভাব, যার নাম আন্মা তারই নাম কারণ তারই নাম প্রজ্ঞা বা জ্ঞান। যার করীর নাই তার মহন্ত্র নাম নাই, যার মন নাই তার আনন্দের বোধ নাই, যার প্রস্তা বা জ্ঞান নাই তার সম্মাক দৃষ্টি পূর্ণধারণা বা জাত্মান বোধ নাই। আমাদের বে অবস্থার এই তিন ভাবের ক্রিরা একষোগে ঘটে বা প্রকাশিত থাকে সেই অবস্থাতেই মধুগুর বা আত্মা আমাদিগেতে প্রত্যক্ষ হন। যাহাতে এক অবস্থা আছে অপর অবস্থা নাই তাহা প্রক্রত আত্মার ভাব বা মধুগুর নয় তাহা বিক্রতি বা বিকার।

ভাব কাৰ্য্য বৰ্জ্জিত কারণ সম্বন্ধীর বোধ বা জ্ঞান প্রকৃত জ্ঞান নহে— অজ্ঞানতা বা অহঙ্কার; জ্ঞান কার্য্য বর্জ্জিত ভাব মারা বা কল্লনা, জ্ঞান ভাব বর্জ্জিত কার্য্য বে মৃচ্তা বা পশুত্ব এটা আমরা সকলেই জ্ঞানি বুরি ও স্থাবার করি কিন্তু ভাব কার্য্য বর্জ্জিত জ্ঞান ও জ্ঞান কার্য্য বর্জ্জিত ভাব বে কি বস্তু ভাহা যে কে হুর্গতি সেটা স্বাই পরিষ্ণার জ্ঞানি না। যে জ্ঞানে নরা নাই ও বে দ্বার হুংথ মোচন-রূপ ইচ্ছা, শক্তি, চেইা যা উল্লম নাই সেই শক্তিশ্স্ত দ্বার ভাব ও জ্ঞানের বোধ বস্তুটা কি ? শক্তি নাই অধ্য শক্তির ভাব অক্লেত্ব-কেই সহস্বার বলে কি না ? এই অহন্বাররণ মোহ বা মৃত্তা হইতে মৃক্ত
না হইলে মহয়দরশী-শক্তি বা আন্ধা বা ডগবান লাভের কোন উপার নাই এবং মহয়দরূপী-শক্তি বা আন্ধা বা ভগবান লাভ ব্যতীত
যধন শান্তি আনন্দ ও কল্যাণের কোন সন্তাবনা নাই তথন এই হুর্গতি হইতে উদ্ধারের
জন্ম আমাদের সকলেরই বিশেষ যত্নবান হওয়া
কর্ত্ব্য—নতুবা হুঃথ অমন্থলের সীমা কোথার ?

এই মহয়ছের বিকাশ বা আছার প্রকাশই বৃদ্ধের নির্বাণ, যীও প্রীষ্টের পরিত্রাণ, সাংখ্যের কৈবল্য, বেদান্তের মৃক্তি, ত্রাক্ষণের ব্রক্ষঞ্জান, বৈষ্ণবের বৈকুঠপুরী। এই মহয়ছের উদ্বোধনই ইতিহাসের মূল তম্ব। এই মহয়ছের বিকাশ বা আছার প্রকাশচেষ্টাই জগতের চিরস্তন সাধনা। এই মহয়ছের বিকাশেই সকল তাৎপর্যোর মীমাংসা সকল ধর্ম্মের সময়য়। এই মহয়ছের বিকাশ বা আছার প্রকাশেই ভগবান প্রত্যক্ষ।

যিনি বা বাহা আছেন তিনি বা তাহা
সর্বাবহার, সর্ব্বরপে, সর্ব্বভাবে বর্ত্তমান
আছেন, সূল অর্থাৎ কার্য্যরূপেও আছেন,
কারণ অর্থাৎ বস্ত বা কর্ত্তারূপেও আছেন।
যাহা নাই তাহা কোনভাবেই নাই। যাহা সূল
অর্থাৎ কার্য্যে নাই তাহা কুল অর্থাৎ শক্তিতে,
কারণ অর্থাৎ বস্ত বা কর্তাতেও নাই,
তাহা মিথাা বা ক্রনা মারা বা ব্রাম্ভি।

্যিনি বা বাহা জ্ঞানের বারা আত্মারূপে অহত্ত তিনি বা তাহাই মনের বারা ভাব-রূপে ও ইক্রিয়ের বারা সুলরূপে অহত্ত। যে শক্তিতে এই সমষ্টি একীভূত তিনি বা তাহাই আকাশে তেলোরপে প্রকাশিত নহয়ে চৈতন্তরণে অহুভূত।

যাবতীয় স্থাষ্ট এই তেবস্তুত্তে যাবতীর বোধ এই চৈতক্তমত্ত্রে গাঁথা, চৈতক্ত विना त्वाध नारे, एक विना स्टि नारे, स्टि विना मञ्च नारे, मञ्च विना मञ्चा क्लावात्र ? এই তেন্দের প্রকাশ বা অভিব্যক্তি বা আবি-র্ভাবের নামই জ্ঞান বা বোধ বা চৈতন্তের আন্ধ-চৈত্ততকে এই তেলোরপে প্রত্যক করিয়া জগতের বা মমুদ্যকাতির আদিগুরু ঋষিগণ ইহাকে বরণ বা পূজা করিয়াছেন, ভারতের বা ভারতীয় সভ্যতার আদিম আচাৰ্য্য ব্ৰাহ্মণগণ ইহাকে ধারণা বা করিপ্নাছেন। ঋষিগণের বরণীয়. ব্রাহ্মণগণের ধারণীয় এই প্রভাক্ষ প্রকাশমান তেজই জীবমাত্রের মন্তিকে ও হৃদরে শক্তিরূপে বিরাজমান। এই যোগ বা বোধ চেতনাভেই মমুখ্যের মমুখ্যৰ ও সমষ্টির একৰ বা ভগবানের পূর্ণৰ মহয়েতে অহুভূত। ইহাতেই ভগবান বাঁ আত্মা বা বস্ত প্রত্যক। এই অমুভূতিই পরমপদ বা মোক।

এই মোক্ষই ভারতবর্ষের অক্ষর সৌক্র্য্য,
এই মোক্ষই ভারতবাদীর অক্ষর ঐবর্য়।
জানিরা না ভানিরা জগৎ ইহারই অপেক্ষা
করিয়া আছে, ব্ঝিরা না ব্ঝিরা মন্থ্য ইহারই
প্রতীকা করিতেছে, ইহারই অভাবে জগতে
এত ত্ঃও মন্থ্যের এত যাতনা। ইহার
ফলে ভারত মুক্ত, জীব আনন্ধিত, জগৎ
শাস্থিমর।

औरश्मणा (मरी।

পরলোকগত দেনাপতি সুরেশ বিশাস্থ

দক্ষিণ আমেরিকার রারও ডি কেনেইরো নগরে ব্রেকিল সাধারণ ভরের প্রসিদ্ধ সেলাপতি কর্ণেল স্করেশচন্দ্র বিখাসের মৃত্যুসংবাদ আবরা একদিন পরে পাইলাম। ১৯০৫ সালের ২২বে সেপ্টেবরে ৪৫ বংসর বর্মেস তাঁহার মৃত্যু হর।

नदीया क्लांब कुक्शक्ष बानांब चक्कर्यं नार्युव आरमज अनिक वियानवरत्न ১৮৬১ वृष्टीत्म जिनि অস্ত্রত্তর করেন। ভাঁহার পিতা গিরীণচন্দ্র কলিকাতায় জাগ্ৰন করিয়া, গ্ৰৰ্ণৰেণ্টেং অধীনে একটি কৰ্ম্ম পাইয়া **এडेबान्डे** वाम कविरक चात्रच करवन । भित्रीमध्य একৰে প্রলোকগত। ভ্ৰানীপুরের এল, এম, এম, करनत्वत्र द्योक्षिः अप्रतम् अप्तिम भूगासः भाव कतिश अध्याम्भ वश्मत वयुरम्हे विमानय जान करवन। **এই সময়ে উাহার জীবনে যে একটি মহান ঘটনা ঘটে—** क्षांत्रांत करणहे वक्रांत्रण विविधित्व वक्र सरवर्गवस्य क श्वाहिल এवः मूर्त्रनहरस्त्र खीवनश्च विविध छ वीत्रय-পূর্ব ইয়া উঠিল। বিশনরি কলেনে পাঠারভ করিয়া ভাঁহার মনে খুইধর্ম ও পাশ্চাত্য জীবনের প্রতি একটা প্রবল অনুরাগ জানিতে আরত হয়। পিতা ইহা জানিতে পারিয়া পুত্রকে সংশোধন করিবার জন্ত প্রহার করিয়া বলেন "তুমি যদি বংশ ভ্যাপ করু ড' আমিও ডোর'কে ত্যাগ ক'র**ন। কি**ছ উহাতে হিতে বিপরীত হইন। স্বরেশচন্দ্রের পিতা সেহের ছারা পুত্রকে বনীভূত করিবার চেষ্টা না क्रिया এक महा जुन क्रियान। "बागका दिछा সিপাইকা ৰোড়া, কুছ নেই ত ধোরা ঝোরা।" बाड़ी स्टेट बहे बावशंत शाहेशं बानक सुरवन्तक কলেকে আসিয়া শুটবর্ষ গ্রহণ করিকেন। ভাছার গমেও যদি ভাঁহার পিতা ভাঁহাকে এছণ করিতেন, ভাষা হইলেও হয়ত সুরেশচন্ত্রকে খদেশ হইতে ছিবদিনের অন্ত নির্বাদিত হইতে হইত না। কিন্ত বিশ্বছের অভিসম্পাৎই এই বে—একবার এ ধর্ম ত্যাগ सक्तिम सात देशाच कातम कहा यात ना म धरे व्यवंदरान कामप्रदीन श्रवदात, जुरद्वपालारक निर्वाद

बोविका डेगार्कन कविराव क्या क्या क्या बारक क्रोड वर देवि क्लिकाचार अस दक्तिया একট সামাত কর্ম লাভ করিলেন। এই সমূতে উল্লেখ बाजा जांशांक त्वांतर बाह्य कविरक्त मिक **এই**करण जडहेिएक कीयमगानम कहा करवे करावार छात्र राक्तित्र गर्म ज्ञान नरह । किहुबिन गर्द কলিকাডার কর্ম ডাাগ করিয়া ডিবি ভারতের বানা श्राप्त अथन कविता हेश्मरकृत अकृति बाहारबह এবাৰ বাৰ্মাৰাৰ (Steward) कर्य गरेश रेशक गांवा कृतिका তিনি করমান আহাতে কর্ম করিয়া বাহা কিছু উপার্জন क्रिग्राहित्वन वर्धन नामित्रा अक बाद्यारे क्रमालव কুহঁকে পড়িরা সমভ মই করিয়া কেলিলেন। ভারণর-দিন হইতেই তিনি আবার তিবারী। কিন্তু সেখানে ভিকা ভার:তঃ ভার সহবল্ভা নহে। किइनिन छै।बारक मुटि, किविश्वाद! देशानि वातक थकात कर्त्र कतिया सीरनशावन कविएक वरेबाहिन। অবশ্বে তাঁহার দীকাঞ্জ ল্যাশটৰ माहार्या नश्रमंत्र शक्ष्मानात्र अक्षे मानास कर्य লাভ করিয়া কিছুকালের মধ্যেই অসাধারণ বুদ্ধি ও অধাৰসায়ের ফলে তিনি ভগাকার প্রধান **ज्यारशादरकत भरा जेवीज इंहरनत। अहे कर्या** নিযুক্ত থাকিয়া তিনি বনাপত বনীকরণ বিদ্যার এমন পারদর্শিতা লাভ করেন বে, করেক মাস পরেই ডিনি সে কর্ম ভাগে করিয়া এক সার্কাদের নেতা হটরা ইরুরোপ অবণে নির্গত হইলেন। তিনি ইয়ুরোপের সর্কাঞ্চকার প্রচলিত ভাষায় অবর্গন কথোপকথৰ ক্ষাতে ও পত্ৰ লিখিতে পারিতেন। ইযুরোণ ভ্রমণের পর ভিনি ভারার সার্কানের দল गरेश प्रक्रिय बाद्धिका बाळा करहर । श्रवित्रश **डीहात वळण्डभरमा अविकारणहे अविदा गाँ**त, बाबन कि ब्यामहेरता नगरत क्रेमांक्क दहेशा केलाव গওলীড়ার বর্ণ উপাধ্যনের বাদাকরনা कतिएक प्रदेश ।



ানাপতি ফ্রেশ বিখাস ও তাতার পুলগণ

त्वरे नवरत ध्विमा त्रांच्या करकत विध्यांक क्ष्मिक स्वेत्रोहिन। बाबनक ७ गांवादन कञ्जीग्रानद মধ্যে ভীৰণ মুদ্ধ চলিভেছিল। মুবা ক্লেশের পক্ষে এরণ হ্যোগ অপরিহার্। তিনি ভংকণাং नाबाख रेनियरक कर्च चौकांत कविता नांवातन-ভন্নীগণের সহিত মুদ্ধে যোগদান করিলেন এবং জাহার জ্যাধারণ প্রতিভা ও আন্মোৎসর্গের ফলে তিনি দাৰাভ দৈনিকের পদ হইতে ক্রনে সেনাপতির পদে উন্নীত হইলেন। ইহার পর তথার এক ভত্ত বহিলার পাণিগ্রহণ করিয়া সন্মান ও হথের সহিত্ত কালাতি-পাত করিছে লাগিলেন।

তাঁহার অসাধারণ বারবের কথা তাঁহার প্রাদিতে जिनि नित्य कि हेद्रिय क्रावन नारे। कि छ छै। इति **এक्सन द्विमरांगी रख्न कृद्धनहत्स्वत्र निर्छाटक** स्य পত্ৰ লিখিয়াছিলেন, ভাষাতে আৰৱা ভাষার পরিচয় পাই। তাঁহার বন্ধু লিখিতেছেন-

"আপনার পুত্র—অবস্থ আপনি লানেন যে ত্রেজিল गराप चित्र अशील अक्कन देनिक किरतन। छिनि একটি পদাতিক দলের দেবাপতি পদে উরীত হইরা-हिलन बर बनन एनरे भार अलिक बाहन। সম্রতি নিধেরমের মুদ্ধে তিনি অসাধারণ সাংস, व्यारवादमर्भ ७ बीवय ध्वर्गन कतिया रनवी इटेबार्टन । নিধেরয়ের মুদ্ধের সেই ভীবণ রাত্রে যথন নগর শক্ৰগণ খাৰা অবস্থ এবং অসংখ্য কাৰানের অগ্নি-বৰ্বণে পীড়িভ, সেই সময়ে আপনায় পুত্ৰকে পঞ্চালটি প্ৰাতিক লইরা সেই প্রবল পক্রর প্রতিরোধ করিবার जन (थावन कता हरेन। भक्तनन व्यक्तित्वरे कांश्रादक লকা করিল এবং ভংকণাৎ এক এগ্রহর আসিয়া তাহার কর্বরে আঘাত করিল—"কে ওধানে !" মূহর্ডমাত্র বিশব না করিবা হরেশচক্র উত্তর বিলেন--"দাধারণ ডান্তের বীর দেনা।" শত্রুর উত্তর আদিল— "আত্মসংগণ কর, নচেৎ মৃতা।" অসংব্য শক্তর সমূৰে মুটিনের সৈভ লইরা মণ্ডারবান হইরাও स्र्विणहरुष बीतस्वत है जिल ना । जिनि बीवजारव উত্তৰ ক্ষিলেন—"গাৰ্ণান্ধ-ডাক্ৰেৰ বীৰ্ণালনা আত্ম-नमर्भन करब ना ।"

७९कमा९ मन्ता९ किविया आगमात्र भूव वरतमन्त्र डाहाड गकामाँड गहाडिकटक महत्रदेन गढ़ाड वाडि शांविछ हरेएक चाका धारान कविरानम। किस नेव्ह-**१क छाहारमञ व्यक्ति भोगावर्षं कतिरक्त गाणिग।** সেই অক্কার ও বিপদের নধ্যে মৃত্যুর সম্বাধে দাঁডা-ইয়া নিৰ্ভীক হয়েশচন্দ্ৰ ৰলিলেন—"ৰদ্মণণ, শক্ৰয় कामान बाबारमत्र निकटिरे तरिवारम, अ कामारनत গোলার আবাদের কোন কভিই করিতে পারিবে না। श्रित्र द्विलामत्र मञ्जानशर्भत्र बीत्रक्षमत्र बोदनगरन কুঠিত নহে, এবং আল তোমরা দেখিৰে—পবিত্র हिन्दुरात्वत्र मञ्चान किज्ञार्थ भाँत विनिष्ठित्र माथा শক্রর কাষান সকল অনায়াসে অধিকার করিয়া नव--- थक्क रु। " क्या क्वांत्र जानक्क्षानि कड़िया তিনি বলিলেন—"आयाक अञ्चलत् कत्र".—এবং প্রবদবেগে শক্রব কামানের উপর পিরা পড়িবেন। সেধানে উপস্থিত হইবাষাত্র তিনি কামানগুলি অধিকার করিয়া লইলেন। ভাহার পর রক্তল্রোভ विक्रं केवर नित्वत्वत पूर्व अत्वर्गाञ्च क्यी व्हेरनन ।" এই বীরৰ ও আত্মোৎসর্গ ছারা তিনি সমগ্র সানৰ সমাব্যের মধ্যে স্বকীর পৌরব প্রতিষ্ঠিত করিরা গিলাছেৰ, কিন্ত হায়। কেবল ভাঁহার অক্সভূবি-**এहै इ**ङ्डाशा दक्रप्रत्य छाहाब द्वान हहेन ना । এই যুদ্ধ সকলে তিনি নিজে যে পত্ৰ লিবিয়ছিলেন, ভাষাতে তাঁহার পর্বহীন বিনরের আবরা যথেষ্ট পরিচর পাই। তিনি লিখিতেছেন—

"बापनात पत्र पारेश कानिनाय बायात मायतिक সাহদ ও বীরতে আমার খনেশবাসী আনন্দিত হইয়া-ছেব। আবার পক্ষে বলিতে হইলে আবি বাহা ক্ষিয়াছি তাহাতে অসাধান্ত কিছুই দেখিতে পাই না, কারণ আযার তদানীত্তন অবস্থায় ওরূপ আচরণ এতই স্বাভাবিক। আমি গত ৮ বংসর সাম্বিক বিভাগে প্ৰবেশ করিয়াছি এবং এতাবংকাল সামাল रेनित्वत कर्षरे कशिक्षिणाम। अत्मक मेन्द्रिकरे আমার উরভির প্রভাব শুনিতে পাইতাম, কিন্তু বিদেশী বলিয়া আমায় নাৰ কাটিয়া দেওৱা হইড়। বিধেরয়ের 🔒 ৰুছে খাঁথি বে সেৰাপতির খণীৰে কর্ম করিয়াহিলান

তিনি অতি উদার ও ঋণপ্রাহী। যুদ্ধকালে তিনি আমার যুদ্ধনীতি ও শক্রর গোলার সমূপে নির্ভীক চিতে অপ্রসর হওয়ার কথা প্রধান সেনাপতিকে লেখন ও আমি লেফ্টেনান্ট পদে উল্লীত হই। কিন্তু আপনারা যেন বনে করিবেন যে এ পদ আমি সহজে লাভ করিয়াছি।" এখান হইতে অনেক যুবা তাঁহার সৈম্ভ দলভুক্ত হইবার আকাজ্জার তাঁহাকে পত্র লিখিতেন। উভরে তিনি নিজের দৃষ্টান্ত দেখাইয়া ভাহাদিগকে নিরত্ত ও নিবেধ করিতেন। তাঁহার জীবনে যে তিনি কভ ছংখ ও ছর্দ্দশা ভোগ করিয়াছিলেন তাহা তাঁহার একথানি পত্র হইতে আমরা বেশ বুবিতে পারি। তিনি লিখিতেছেন—

"ৰালাকালের অনভিজ্ঞতা বশত: আমার কঠোর সংসারের কোন ধারণাই ছিল না। তখন মনে করিতাম এ সংসারে বুঝি সবই সহজ লভ্য। আজ এই পৃথিবীর এক প্রান্ত হইতে অণর প্রান্ত পর্যান্ত ভ্ৰমণ করিয়া, এই বেদনাপীড়িত অস্তর এবং অভিজ্ঞতা পূর্ব মন্তিক্ষ লইয়া, আমি আর কাহাকেও আমার পথের অফুসরণ করিতে বলি না। কিন্তু অস্তরে যার বাসনার দাবাগ্নি জ্লিরা উঠে, তাহার পক্ষে নিশ্চেষ্ট থাকা অসম্ভব। আমার নিজের স্থক্তে এই পर्यास विनाल यात्रहे इहेरद त्य अ**जीवान जानक**-দিন আমি অপরিসীন ছঃখে অতিবাহিত করিয়াছি। বছদিন বিদেশে কুণাতৃষ্ণা ও শীতে কাতর হইয়া নিরাশ্রর ও নিঃসম্বল অবস্থায় পথে পথে ঘুরিয়াছি। অনেকবার আত্মহত্যা করিবার করন। করিয়াছি। মনের এইরূপ শোচনীয় অবস্থা হইলে সমুদ্রতীরে বা পৰ্বত চূড়ায় ভ্ৰমণ করিতে যাইতাম। সেবান হইতে षिश्र**स्त्र थ**ि চাरिया आमि সর্কসমরেই आकारनत পাত্রে ধবল রেখা দেখিতে পাইতাম এবং অস্তরে সাহস ও আশা লাভ করিভাম।"

স্থারশচন্ত্রের মাতৃভক্তি কিরপ প্রবল ছিল তাহ। আমরা তাঁহার পত্র হইতে ্নিতে পারি। তিনি ভাঁহার খুলতাতকে লিখিলাছিলেন—

"বানি কপৰ্ককহীন অবছার বাটা হৈইতে বাহির হইরাছিলাম। প্রার উলঙ্গ অবস্থার বাটা ভ্যাপ করিবা-ছিলাম। আবার মনে প্রবল ইচ্ছা ছিল বে আধার জননীর শিরোদেশ হীরকহারে বভিড করিয়া বিব। যদি তিনি জীবিত থাকিতেন, আবি একদিনে নে সাধ পূর্ণ করিতাব। কিন্ত বিধাতার ইচ্ছা অক্তরণ হইল— আমি একীবনে আর আমার জননীর স্বেহ মুধ দেখিতে পাইব না।"

আর এক পরে তিনি লিখিতেছেন-

"আমি এ সংসারে চিরদিন একাই হিলাম এবং আজিও একাই দাঁড়াইরা আছি। আমার ভবিব্যৎ স্থকে আমি চিরদিনই উদাসীন। হার বিধাতার অনন্ত রাজ্য মধ্যে সেহময়ী জননী প্রকৃতির শোতা সন্দর্শন করিয়া একাকী স্থাধীনভাবে ভ্রমণ করাই আমার জীবনের চরম সূব। বথার্থ ব্যুত্ত ও ব্যেষ এ জগতে নাই; সেইজ্যুই ক্ষবিগ্রণ বলেন এ সংসারে জীবন্যাপন করা অর্থে অপর 'লোকে ন্যজীবন পঠন করা যাত্র। আমি আমার নেই ন্যজীবন স্টিকরিতেছি, এবং একদিন সেই ছানে বাইরা উপছিত হইব, যেখানে আমার সেই চিরপ্রির জননীর স্লেহমুখ দেখিতে পাইব। এ সংসারে এক্ষাত্র জননীই আমাকে আজরিক সেই করিঙেন।"

কননীর মৃত্যু সংবাদ পাইরা ভিনি লিখিরাছিলেন—
"পিত্দেব আমাকে কলিকাতার ঘাইরা সকলের
সহিত সাক্ষাৎ করিতে অসুরোধ করিরাছেন। হুংবের
বিবর আমি তাহা করিতে অক্সন—কারণ নাত্হীন
কলিকাতার আমার আর কোন আকর্ষণই নাই।
বাঁহাকে আনি চিরদিন ভাল বাসিতার এবং বাসি
এবং যিনি আমাকে চিরদিন শ্রেহ করিছেন ও
করিবেন—তিনি আর তথায় নাই। এখন আনি
বর্গের হারে আমার জননীর সহিত মুক্ত হইবার কছ
অপেকা করিরা দিনপাত করিব। মাতা সেধানে
অংবার ক্ষম্ত অপেকা করিরা আছেন।"

তিনি তাঁহার নিজের একটি জীবনী নিশিয়া
বাইবেন বলিয়া প্রতিক্রত হইরাছিলেন। কিছ
আবাদের ছুর্ভাগ্যবশৃতঃ ছিন্দি ভাষা সম্পন্ন করিতে
সক্ষম হন নাই। এরপ প্রতিভাবান ব্যক্তির বিচিত্র
জীবনী কেবল বে আবাদের আবরের ও পৌরবের
সাবত্রী হইত তাহা বহে, ভাহাতে আবাদের অনেক
চিন্তার ও শিক্ষার বিষয়ও প্রতিত সন্দেহ নাই।

शाक्षा।

(ফেলিসিয়া শ্যালের ফরাসী হইতে। বোন্ধাই, ৮-২৩ জামুয়ারী ১৯০০)

ভারতবর্ধের পার্দিরাই রুরোপ ও এদিরার প্রকৃত মধ্যস্থপদের একমাত্র অধিকারী। আদলে উহারা প্রাচ্যদেশীর—কেননা, বিজেতা মুদলমানকর্তৃক যে দকল পারদীক পারস্তদেশ হইতে দ্রীভৃত হর উহারা তাহাদেরই বংশোড়্ত,—কিন্তু এখন উহারা অন্ত ভারতবাদী অপেকা দমধিক যুরোপীর ভাবাপর।

শিল্পবাণিজ্যে, বৃদ্ধিবিভাগ, সামাজিক অবহাগ্ন, উহারা খুব উচ্চ আসন অধিকার করিয়া
আছে। বোশ্বাই নগরের প্রধান প্রধান
কাপড়ের কলকারখানা উহাদেরই। তত্রত্য
প্রধান প্রধান ব্যাঙ্গের উহারাই কর্তা।
উহাদের মধ্যে অনেকেই 'ন্যাধীন' ব্যবসায়ে
নিষ্ক্ত। আবার অনেকগুলি লোক রাষ্ট্রনৈতিক কার্য্যে উন্তন্মের সহিত ব্যাপ্ত।

পার্সিদিগের মধ্যে, শতকরা ২২ জন
পুরুষ ও শতকরা ৫০ জন রমণী অনকর,
পকান্তরে হিন্দুদের মধ্যে শতকরা ৯০ জন
পুরুষ, ও শতকরা ১০০ জন রমণী অনকর;
এবং মুসলমানদিগের মধ্যে শতকরা ৯০ জন
পুরুষ ও শতকরা ১০০ জন রমণী অনকর।
একটা লক্ষ্য করা যার,—পাসিদের মধ্যে
প্রায় অদ্ধাংশ রমণী কিছু না কিছু শিক্ষালাভ
করিয়া থাকে। যুবকদিগের মধ্যে অনেকেই
তথু ইংরাজি শিক্ষা নহে—প্রভূত পরিমাণে
যুরোপীয় শিক্ষাও লাভ করিয়া থাকে।
অনেকেই ক্রাসী ভাষায় কথা কহিতে
পারে; বোষাই-নগরে, "Cercle litteraire

franco-parsi'' নামে একটা ফ্রাসী-পার্নি সাহিত্যিক মণ্ডলী আছে।

সদরাচর, পুরুষেরা যুরোপীর ধরণে পোষাক পরে; কিন্তু প্রায় সকলেই উহাদের পুরাতন শিরোবেষ্টন—একপ্রকার ধুচ্নী-টুপী—বজার রাথিয়াছে। রমণীরা তাহা-দের পুরাতন পরিচ্ছদ পরিধান করে;— পরিচ্ছদটি বড়ই শোভন। একটা দীর্ঘ স্বচ্ছ রেশ্মি অবগুঠন খোঁপা হইতে কাঁধ পর্যান্ত আসিয়া পড়ে, উহার ঘারা সমস্ত শরীর আরুত হয়, ও ঘাগ্রার আকার ধারণ করে। উহাদের ঘর-বাড়ী একেবারেই পাশ্চাত্য ধরণের এবং উহারা পাশ্চাতাধরণেই জীবনযাতা নির্বাহ করে। উহারা বেশ অন্তরের সহিত যুরোপীদিগকে গৃহে আহ্বান করে। বোখাই নগরে পার্দিরে এইরপ কতকগুলি জাঁকাল নিমন্ত্রণ-মজ্লিদে আমি উপস্থিত ছিলাম:--বড় বড় বৈঠকখানা, স্থরভিত ও আলোকিত উদ্থান, উৎকৃষ্ট সঙ্গীত, বুহৎ ভোজের আয়ো-জন, বিচিত্র লোকের সমাগম! সচরাচর কোঠা-পরা কিংবা উদ্দি-পরা ইংরাজ রাজ-পুক্ৰ: স্বচ্ছ সাজসজ্জায় ভূষিত পাৰ্দি মহিলা; হীরক-ভৃষিত-অঙ্গুলি হিন্দুমহিলা; পাগ্ড়ो-পরা সকল ধর্মাবলম্বী দেশীয় লোক; যুরোপীয় ধরণে অর্নবক্ষ অনাবৃত,স্বগুত্র-গাউন-পরা, স্বশ্রামল-স্কন্ধ পার্দি নবযুবতীদিগের বাছ ধারণ করিয়া, জেম্ইট্ বাবাজিয়া পাষ্চীলি করিতেছেন...তাহাদের কথাবার্তা অতি আধুনিক ধরণের; একটি রূপদী পার্সি-

মহিলা আমাকে বলিলেন, তিনি নর্ওয়ে হইতে সম্প্রতি প্রভাগত হইরাছেন; তিনি নিশীপস্থ্য দেখিবার জন্ত দেখানে গিয়াছিলেন। আর একটি মহিলা আমাকে বলিলেন, তিনি সঙ্গীত লইয়া খুব ব্যাপ্ত থাকেন; সর্ব্বাপেকা (Gounod) শুনোর সাঙ্গীতিক রচনা তাঁহার ভাল লাগে। একটি রূপসী পার্নি ললনা ঘিনি ছই বৎসর ধরিয়া প্যারিসে চিত্রবিস্থা শিক্ষা করিয়াছেন, তিনি আমাকে একটা কোণে টানিয়া লইয়া খুব মৃহস্বরে বলিলেন! "Jaures ও Dreyfus-এর সমস্ত ব্যাপার আমাকে বলুন দেখি!"…

পাসিদের মধ্যে অনেকেই ধর্মসম্বন্ধে উদাদীন হইলেও, তাহাদের প্রাচীন অস্ত্রোষ্ট অহুষ্ঠানটা তাহারা ঠিক বজায় রাখিয়াছে; উহাদের মৃতদিগকে উহারা গোরও দের না, मार्ध करत ना ;-- मकूनी ७ कारकत्र मृत्थ নিক্ষেপ করে। বোদ্বায়ের যেটি সর্ব্বাপেক। ञ्चलत ज्ञान त्मरे भगनावात-हिल्लत महिकतहै. একটি স্থন্দর উন্থানের মধ্যে কতকগুলি উচ্চ উঠিয়াছে,—সেইগুলিই "নিস্তৰ্ভার স্তৃপ"; দূর হইতে দেখা যায়, ভহার উপরে প্ৰকাণ্ড প্ৰকাণ্ড শকুনী বসিয়া আছে ; ঐ থানেই পার্দিরা উহাদের শবদিগকে ফেলিয়া রাখে: শक्नोत्रा नीयहे जाहारमत कांक रमध करत, বোধ হয়, পোয়া ঘণ্টারও কম সময়ের মধ্যে, উহাদের কলাল ছাড়া আর কিছুই অবশিষ্ঠ থাকে না। একটি পানিযুবক আমাকে একদিন আমাকে বলিয়াছিলেন :--তোমাদের মৃতদিগকে তোমরা যে কুমিদিগের উদর্সাং করাও—এ পদ্ধতিটা আমাদের নিকট ক্ষতীব **जर्ञ विश्वां मत्न इद्य**।..."

এই বোদাই-পাদিদিগের মধ্যে একটি লোক আমি আবিক্ষার করিয়াছি; ইনি বেমন বৃদ্ধিনান, তেমনি সন্তদর;—মানবজাতির একটি উংক্লাই আদর্শ; ইহার নাম পাদৃশা।

ইনি জাতিতে পার্নি; ইনি ইংরাজিধরণে শিক্ষিত। ইনি ইংলও ও ফ্রান্সে ভ্রমণ করিয়াছেন। ইংরাজ উদারনৈতিক দলের মধ্যে ইহার অনেকগুলি বন্ধু আছে। বোম্বাই নগরে স্থাশিকিত দেশীয় যুবকদিগের একটি অতীব মনোরম সন্মিলনী আছে, ধেই সন্মিলনী-সভায় তিনি সর্বদাই যাতায়াত করেন। তাহার বাড়ীতে, কতকগুলি হিন্দুর সহিত. কতকগুলি পার্দির সহিত, এবং হুই জন উচ্চশ্ৰোীয় মুসলমান-মহিলার সহিত আমার সাক্ষাৎ হইরাছিল। এই এই মুসলমান মহিলা সর্বপ্রথমে লোক-সমাজে পরপুরুষের সমকে অনবগুঞ্জিত হইয়া বাহির হইয়াছেন। উহাদের মধ্যে একজন স্বাকার করিলেন, তাহাদের এই প্রাচীন প্রথা ভঙ্গ করিতে কেমন একপ্রকার কট হয়, কেবল তাঁহার খামীর অমুনরক্রমেই এই কাজে প্রবৃত্ত হইরাছেন, নচেৎ পুরুষ-সমাজে তাঁহারা এখনও সহজভাবে বিচরণ করিতে পারেন না. কেমন বাধো-বাধো cάτφ; I do not feel at home. ..

বোষায়ের একজন প্রধান শ্রমণিরনায়ক, বড় বড় তুলার কলকারথানার
মালিক,—তাতা, তাঁহারই সেক্রেটারি—
পাদ্শা। ইনি এই নবজাত শ্রমণিরের কাজ
পূব উন্তমের সহিত ও বুদ্ধির সহিত চালাইতেছেন। এমন কি, নির্মিতরূপে কাজ ক্রিতে
মজুরদিগকে বাধ্য করিয়া, উল্লের খাটুনীর
দিনের দীর্ঘতা ক্মাইয়া দিয়াছেন।
• কির

বজুরেরা ধর্মবট করিয়াছে; ভারা সমস্ত हित्तत्र मर्था चर्मक्क्ग थतिशे; कांक कतिर्छ চাহে, কিন্তু অৱ সময়ের মুধ্যে বেশী খাটতে চাহে ना !

পাদ্শার কার্যোক্তম শুধু তাঁহার নিজের বাবসাতেই সীমাৰ্জ নহে। তিনিও একটি নবাভারত গঠন করিবার জম্ভ সচেই। कांशांत्र माल, अकां। धर्मविशायत बाता (बाहा ভতটা সম্ভব নহে) কিংবা রাষ্ট্রনৈতিক আন্দোলনের বারা (যাহা ততটা গভীর নহে) **এই সমস্তার সমাধান হইবে না, পরস্ক বি**তা-শিকা ও জ্ঞানোপদেশের ছারা সম্ভ লোকের মন যথন রূপান্তরিত হইবে তথনই এই সমস্ভার সমাধান হইবে। স্থানিকার বারাই জাতীয় ভাব উদ্বোধিত হইবে। বিম্লাশিক্ষায় ৰারাই কতক গুলি বাছাবাছা পণ্ডিত, বাছাবাছা শ্ৰমণিরনায়ক, বাছাবাছা রাজ্যশাসনকর্ত্তা ठित्रात्री हहेरव ; ज्वन हेश्मक वाधा हहेना তাহাদিপকে কাজে নিযুক্ত করিবে। পাদ্শা একটা দেশীর বিশ্ববিদ্যালয় স্থাপনের উল্লোগে বাপত আছেন-সেই বিশ্ববিশ্বালয়ে হিন্দ-দিগকে সর্ব্ধ প্রকার উচ্চশিক্ষা দেওরা হইবে।

শাদৃশার কার্য্যকরী বৃদ্ধি অপেকাও আর একটা জিনিসের জন্ত পাদ্শার উপর আমার ভক্তি হয়—তাঁহার দ্যার জন্ত। সে मंत्री निष्ठहास्त्रमत्री, व्यश्चत्रमात्रिनी, नश्माहम बाधनी-एन मन्ना वाखिकहे नर्साननचूर्व। পতপ্জা তাঁহার ধর্মের অল নহে; কিছ निक धर्मात्र बाता वांधा ना इटेरन्थ, পশুদিগের অতি তিনি নৈতিকভাবে শ্রদ্ধা প্রদর্শন कतिता शास्त्रम-एम अहा कडको। हिन्सू

প্ত नित्र कहे निवांत्र क्लान अधिकांत्र माष्ट्रदंत मारे,--निट्यत काट्य थाछ। देवात्र छ কোন অধিকার নাই। পাদ্শা একজন थाँछि नित्रामियांभी ; छाहात मनछ পतिष्कृत উদ্ভিদ পদার্থে নির্শ্বিত; তাঁহার জুতা রবারের, —জ্তার তলাটা কাঠের। তাঁহার ভগিনী— সৌম্যদর্শন ও স্থশীলা; বোদ্বায়ের উচ্চতম শ্মাজে তিনি যাতায়াত করেন; পাদ্শার মতে দীক্ষিত হইয়া তিনিও পাদশার স্থায় হাক্তজনক ভারী জুতা—ধর্মবৃদ্ধির খাতিরে— প্রতিদিন পরিয়া থাকেন। দৈনিক জীবনের এই বীরত্বের দৃষ্টাস্ত কি অতীব বিরল নহে ? গাড়ী টানাইৰার জন্ম কিংবা বহনের জন্তও তিনি পশুদিগকে খাটাইতে চাছেন না। যম্ভচালিত কোন যান না পাইলে তিনি পদব্ৰকেই যাতায়াত করেন। তিনি হাসিতে হাসিতে আমাকে বলিলেন, প্যারিসে ঘোড়ার ছকর গাড়ী কিংবা অম্নিবাদ্ গাড়ী ব্যবহার ^{*}করিতেন না বলিয়া, বাধ্য হইয়া তাঁছাকে পাষে হাঁটিয়া অনেক দূর বাতায়াত করিতে रहेख।

व्यामि भार्गाटक विकामा कतिनाम, মাহুষের ছ: ধ যন্ত্রণা লাখব করিবার কাজ যখন এত পড়িয়া আছে তথন প**ত**র **ছঃখ** লাঘৰ করিবার কাজে ব্যাপৃত থাকিবার काहात्र अधिकात आहर कि ना ? माशूरवत्र ছঃখ নাশ করাই মামুবের প্রধান কর্ত্তব্য কর্ম-যুরোপের সোঞালিই ও আানাকিই-সম্প্রণায়ের এই যে মত, এই মতের তিনি কি অনুমোদন करतन ना ? भागभा উত্তর করিলেন,---"রিভিন্ন অবস্থার মধ্যে থাকিয়া লোকের .. ও বিদিদিগের পশুকার কাছাকাছি। কর্ত্তব্য বিভিন্ন হইবা থাকে; ভারতে আমাদের

রাষ্ট্রনৈতিক স্বাধীনতা না থাকার, মানব-ছঃখ নিবারণের অমোদ উপার আমাদের হাতে নাই; ভাই, পশুদিগের হঃধ নিবারণে ব্যাপৃত থাকাই আমাদের পক্ষে শ্রের। তা ছাড়া, মান্ত্র অপেকা পশুরাই বেশী দরার পাত্র। কই পাইলে মান্ত্র তাহা কথার প্রকাশ করিতে পারে; বেশী কঠ পাইলে আত্মহত্যাও করিতে পারে। পশুরা আত্মহত্যাও করিতে পারে না—মুথ ফুটরা কিছু বলিতেও পারে না। এইজন্তই মাহুষের চেরে পশুর উপরেই আমার বেশী দরা হয়।"……

ত্রীজ্যোতিরিজনাথ ঠাকুর।

পাকচক্র।

তৃতীয় দৃশ্য।

গৃহের এক দিকে একথানি আসন পাতা;
তাহার নিকট একটি কাঁসাঁর মাস ও

হই তিন থানি মাটির খুরি সজ্জিত। অন্তদিকে

তিন ধানা কাঁসার ধালা ও মিষ্টানের ঝুড়ি
ইত্যাদি লইয়া শনী ও বরদা থালার মিষ্টান্ন
সাজাইতে বসিয়াছেন।

বরু। থালে অত ক'রে ক'রে মিষ্টি দিচ্ছিদ্, গিরি নিশ্চর আমাকে হববে—

শনী। মাগো—পাকা দেখতে আস্বে—
একটু পাত সাজিয়ে না দিলে চলবে কেন ?
বাড়ীর যাতে নিন্দে হবে—এমন কাজ আম।
বারা হবে না—তা যাই বল।

বৰু। তবে চপপট হাত চালিয়ে নে— এ আস্ছে রে।

শ। সভিচ নাকি ?
(শশীর ভাড়াতাড়ি ভাহার থালা হইতে
কতকভলো মিটার ঝুড়িতে নিকেপণ।
গিরির প্রবেশ ও মিটারের থালার প্রতি
নিরীক্ষণ করিয়া)

গি। বলিওঠাকুর বি ? করেছ কি ? ছ হটো করে সন্দেশ—ছ হটো পান্তরা—ছ ছটো মেঠাই,—মামুবে কি অত থেতে পারে ? বন্ধ। পারুক না পারুক আলকের দিনে একটু পাত সালাতে হয়।

গি। তা শশী কি সাঞ্চার নি—দেখ দেখি, ও কেমন দিরেছে।

ব। আছো আমিও কিছু কিছু তুলে নিচ্ছি। তুমি বাও—তাঁকে একলা ফেলে আসাটা ভাল দেখায় না। পাত সাজান হলেই আময়া ডাকব।—

গি। তা ধেন ডাৰুবে! কিন্তু আগে ধদি একবার না আগতুম তাহলে বে সর্বানাশ হোরেছিল! তাকে এধানে আনলে ত আর মিষ্টি ওঠাতে পারতুম না।

ব। তা বাও বাও—এই দেও তুলে রাথছি—এবার হোণ ড—এখন তাকে গিরে নিরে এব।

গি। তা যাজিছ। দেখ বাছা শশি— বক্ষ ঠাকুরবি যেন আর বেশী করে নিটি নাদের।

শ। সে কথা বন্তে হবে সা: আমার বেহে বতকণ প্রাণ আছে তোমার কোন ন্ত্ৰিয় অপচৰ হবে না; ভূমি বাও না আমি আছি--একটুও ভাৰনা কোৱো না।

গি। তোকে পেরেই ত আমি নিশ্চিত্ত আছি, শীঘ্ৰ গোছ করে ফেল—

শ। এই একণি আমি সব ঠিক করে ফেলেই তোমাকে থবর পাঠাচ্ছি,—তুমি বাও মা,—ঠাক রুণটি একলা আছেন।

গি। তা যাছিত। পাণড় কিন্তু অভ করে দিসনে—বুঝলি ত ? (প্রস্থান)

বক্ব। আছো মেরে বাহোক। ভূই সব পারিস?

শ। এ রকম না হলে কি চলে পিসি ?

বে বাতে বোঝে তাকে সেই রকম করে
বোঝাতে হয়। এখন চটপট সব ঠিক করে

কেলা যাক,—কথার বড় সময় নেই।

হয়েছে—এইবার থালা ছথানা আমার হাতে
ভূলে লাও আমি বাইরে দিরে আসি।

(थाना नरेश व्यक्षान)

(বরদা হাসিতে হাসিতে অন্ত থালাথানি সান্ধাইতে আরম্ভ করিয়া)

ভালা মেরে বাহক ! বৌকে এক হাতে কেনে এক হাতে বেচে ! তা বেষন কুকুর— তেমনি মুখ্যর না হলে চলেও না বটে ! এমন না হলে কি এ বাড়ীতে টি কতে পারত !

(शिवित्र क्षार्यम ।)

"कहे (शां अवरता ह'न ना ।"— वक् । अवात कन मिरनहें हत ।

(भारत कनकामान)

গি। পাঁপড় ভেকে ভূবে রেখেছ ত ? কই তেমনিই ত আছে কেখছি,—আমি মনে জানতুম—ভাসবে না,—ভাস ভাস,—পাঁপড় কি কেউ কথনো সত করে দের ৷ শনী গেল কোথার ৷

বন্ধ। বাইরের থালা শুলো দিতে গেছে। তা পাঁপড় ত সেই দিবে গেছে—বেশী আর কি? আধধানা বইত না।—

গি। সে দিবে গেছে, বলেই হোল !—
বাহক এখন তাজন ভলনের সময় নর—
অর্থেকটা ভেকে রাখ।

(আধধানা পাঁপড় ভাঙ্গিবামাত্র তাহার নীচে ছই রকম সন্দেশ দেখিয়া)

গি। "করেছ কি ? রসগোলা পান্তরা আবার ছত্রকম সন্দেশ ? জত্রকম নেঠাই ? একটা করে রাথ দেখি;—এই বে শশি—শশি তুই একদণ্ড কোণাও গেলে আমার চলে না। দেখিছিল; ঠাকুর ঝি কি কাও করে বসেছে—আবার বলে কিনা শশি করেছে!

শ। (হাসিরা) সত্যি নাকি ? বন্ধ পিসি
—তোমরা দেখছি আন্ত মানুষকে ভেড়া
বানাতে পার ? মাগো ধঞ্চি ? তা বলুকগে
মা,—তুমি বাও, তাঁকে আনগে আমি সব
ঠিক করে দিছি।

গি। দেখ — অত রক্ষ মিষ্টি আছে— সব এক একটা করে দেবার দরকার নেই— ছট চারটে কমিরে দিস্—বুৰণি ত ?

শ। ঠিক বলেছ। মাছ্য ত আর সভিত রাক্ষস নর যে অভ ধাবে। ভূমি নিয়ে এসগো।—

(গিরির প্রস্থান।)

বক। ধন্তি তুমি !! (কনের পিসিঠাকুরাণীকে নইরা

গৃহিণীর প্রবেশ।)

नैकरन । वस्त्र वस्त्र- এই जामरन वस्त्र ।

करमञ्जानि। (केशकिं। इंदेश) व कि! वाक जब रकन १

গৃ। (বগতঃ) তাইত ! তব্ও শনী ঢের দিরেছে— বটে, আমি থাকলে আরো কমিরে দিকুম—ছেলেমাছর ব্রতে পারেনি !

व। आांज जांत्र कि मिलाहि ? ও तक्य वरक्ष हमार्थ नां, थान।—

পিসি। এ রক্ম সময় ত থাওৱা অভ্যাস নেই!

বৰু। খান খান—ও কথা বল্লে শুনৰ না।
গু। দেখ ঠাকুরবিং—অত পীড়াপীড়ি
করোনা। বাস্তবিক অসমরে খেলে বদি
সক্ষা হয়—

বন্ধ। ভূমি বৌ থাম-

গি। থামব কেন বল দেখি! ভোর বেমন কথা! লোকের থেলে অস্থ হবে— তবু তাকে ধরে বেঁধে থাওয়াতে হবে। অবলের জালা যে কি রকম তা আমিই জানি।

পিসি। তা অবল টবল আমার হয় না, —তবে এত খালো—

বন্ধ। এত গুলো আর কি ন্য। এক একটার বেশী করে কিছুই দিই নি—

গি। তানা হর হএকটা করে তোষরা । উঠিয়েই নাওনা বাপু—কিছুতেই বখন থেতে চাচ্ছেন মা।

বন্ধ। না—খাবেন না কেন ? এমন কি বেশী দিয়েছি ? না হয় পাতে কিছু পড়ে থাকবে।

গি। আছা বনছেন বাপু তুলেই নাওনা, পি অভ ভক্তাভক্তি—নাই করণে। আঞ্জ্বাল উপত্রব্ বেলেয়া বে কি হরেছে, বড়লোকের সংস্কৃতি উঠছে।

ক্ষেত্ৰি কৰা। বেশ্ছ আজি কোনাৰ নাৰ
বৰ্গি ? আছা আৰি কুলে নিজি।

(সন্দেশ মেঠাই ও ৰসগোৱা জুলিবা)

এবার ত হোল—এবার পাও।

পিসি। না অমৃতিধানা নাৰ আবারধাবটাও তুলে নেও।—

গৃহিণীর তথাকরণ।
বরু। (রাগ করিরা) কি আর রইণ।
পিসি। সুচি খানকতক উঠিবে নেও
অত পারবনা।

গৃ। আছো তা নিচ্ছি—রাবড়িও দেখছি বেশী দিরেছে—বেরান আবাদের বে রক্ষ নিধাকী—এও না হর থানিকটা ছেলে নিচ্ছি।—ছানার পারস টুকু থেরে কেল।

পিসি। না না রাৰজি **অভটা আছে** আবার ছানার পাষ্য কেন !

গু। সভিড়া ওমা ওটাও বাবে না ? (খুরি সরাইয়া লইয়া)

• এইবার তবে বস।---

নেপথ্য হইতে—ওগো বাবুরা ভাড়াভাড়ি করচেন—ঠাকরণকে থাইরে শীঘ্র পাঠিরে দাও।

গি। এত কি ভাড়াভাড়ি বাপু! ভোৱা কি লোককে খেতেও দিকিনে ছাই !

পিনি। না আমি উঠি—বাড়ীতে একটা কাজ আছে,—তা ছাড়া আমার আজ বোটেই কিলে নেই; একটু অখনের ভাবও বেবছি। বৰু। কক্ষণো অখন হয় না বল্লেন— আজ বে হঠাং অখনও হোল বেবছি!

পি। (বৃহ হাজে) সময় বুৰে সৰ উপত্ৰবই বোটে,—সজ্ঞি-বৃহ্ন্টা পুঁচিমে উঠছে।

গু: ভাইড়া ভবে আৰু কি বলব---वत्र। छोष्ठे रूटव ना अक्ट्रे विदिश्ध कत्राङ्हे स्टब-

नि। त्यत्रान मार्थरे आन मिष्टि राव গেছে - মুখের দেবার আর দরকার কি ?

গি। তাহলে কিছ আর একদিন এসে থেতে হবে। ঠাকুরবি একটা পান দাও ত। নিতাম অহধ করেছে—আর থেতে विनरे वा कि करता!

ৰক। (রাগিরা) তুমি পান দাও না, আমি পারব না। (প্রস্থান)

গি। ও ঐ রক্ম রাগী মারুষ! বিধবা হয়ে পর্যান্ত ছোট বেলা থেকেই এথানে আছে—আমি অনেক সহ্ করে চলি—

পি। তাত দেখতেই পাচ্ছি। তবে ভাই আৰু আসি-

গি। খাঁ চল ষাই—পাৰীতে তুলে আসি। কত সাধ্যসাধনা কর্বুম-কিছুতেই ত ধহুর্ভক্পণ খদলোনা,-একটু কিছু মূথে . কান্ত প্রাণ থাকতে প্রকাশ করতে পারে! দিলে না। এত সাধলে শিবের মাথার कृत्व পড়তো। विदय यनि इत्र उथन (बन्नाहे बन कारक व इः च गाहेव। ষাহক কত ক্রটি হোল কিছু মনে কর না।

রাম: ৷ এমন অমারিক লোক আমিত ছটি দেখিনি। (ছক্তনের প্রস্থান।) . (শশীর হাসিতে হাসিতে) "আছে৷ কাণ্ড হোল! বেচারীকে কিছু খেতে দিলে না: আহা লোকটা খেতে বসে থালি হাতে উঠলো গো। মারা করছে। একটা সন্দেশ থেরে ছঃশটা নিবৃত্তি করি ! (সন্দেশটা শেব করিয়া) মার একটা_৴নিলে বোধ হয় ধরা পড়ব ! রসগোলা পাত্রা ওলোও লোভনীর মনে ুলাগিয়েছিস!

राष्ट्र,—धू अवेष । हाका शंक ना ! (शहिए ধাইতে)—হিহি—তা বেশ হোল—এখন **टक्ड ना अटम शरफ! (डेंकि मित्रा नित्रोक्रण** করিতে করিতে ও এক একটি মিষ্টার মুখে দিতে দিতে হিহি করিয়া হাস্ত।—সহসা भग्ठाक्तिक **ठळकारख**त्र श्राटम्।)

চ। এত হাসি কেন **আৰ**় এত কিসের উল্লাস ! মিষ্টির ঝুড়ি সামনে করে কি কেবল হাসিই ছড়াবে-মিটি কিছু পাব না? (সামনে আসিয়া) একি গাল বে ভরা দেখছি—হাহা **—হাহা** —তা বেশ করেছ—খাই না খাই (मरथं खान ठांखा !

শনী। (চটপট গিলিয়া ফেলিয়া) দেখলে দেখলে—এত মিখ্যা বলতে পার ছিছি! আর ঠাট্রায় কাজ নেই--কি থাবে বল (मिथि?

চ। এত ভয় পাছ কেন শশিমুখি-তোমার যাতে অনিষ্ট হয় – সে কথা কি চক্স-থাও থাও আর একটি সন্দেশ থাও,---

শ। এত রক্ত জান তুমি। তুমি রস-গোলা থেতে ভালবাস—এই নেও ধর,— চটপট থেয়ে সরে পড়-এখনি কেউ এসে পড়বে--

চ। আগে তুমি সন্দেশট খাও—আহা মুখের গ্রাস নষ্ট করেছি বুকটা কেটে যাচছে। - माथा बाड, यम ना बाड-

শ। আছা বাৰু থাচ্ছি—ভাহলে ভূমি याद छ ? এই नाख, धत्र-

(উভয়ের মিষ্টান্ন ভক্ষণ---বরদার প্রবেশ !)

व। এक रह्हा इक्टन व बाह्य खांक

আবাঢ়, ১৩১৬

শ। আমি না—আমি না—এই চাঁদা ছাই টা--

Б। इं इं — ७क्शे वरत हनरव ना— কার ৰূপ নড়ছে দেখাই বাজে-

বঙ্গ। তোমরা যা খুসী কর আমি এসব অনাচার দেখতে পারিনে। (এক দিক দিয়া थान ;- का मिक मिन्ना शृहिवीन थारवन)

গ। এই य চক্রকাস্ত,-কি খাওয়া इटक् १

চ। কিছুনা—এই একটা পান পড়ে ছিল—ভাই ভাই—

[বলিতে বলিতে ক্রতগমনে গ্রাস ফেলিয়া —মিষ্টারের ঝুড়ি উন্টাইয়া পলায়ন্।]

छ। पिथल पिथल मत जांकल १ मत ছড়ালে। এমন লন্ধীছাড়া হতভাগা লোকও **एशिनि ? क**ढी इध पिख कानगर्भ शूखिइन গো! শশি মিষ্টি গুলো তুলে থালা সাজাও বাবা—ছবাড়ী তত্ত্ব পাঠাই।—

গুণিতে লাগিলেন।)

গৃ। একি আর সব কোথা গেল। এত

कम (व । हक्षणे वृति (अरत शन । छाई वर्ष মুধ নড়ছিল! বলে কিনা পান থাছি! হাড মাস জালিয়ে পুড়িয়ে খেলে ! আমি ক্রান্ত काटक हरतम-७ शास्त्र कि जानि शास्त्र মানুষ আর কত সহু করতে পারে ! (প্রস্থান।) मना। हिहिहिहि मना!-গান।

তোম তোম তানা নানা! মজাদার ছনিরাখানা। উ:-আন্ত মটর বড়ই কঠোর

চাই-চানাচুর নকলদানা। চাই,-এক नज्ञत मधुत्र शांति

এক নয়নে কারা? চাই—আধো পাতে পাস্তা ৰাড়া

অাধো পাতে রানা ?—

চাই—হহাত ভরা মুটো মুটো—

निन्धि कत्रा त्रक्रिम बूटिंग ?

চাই—আসল थाँ हि— এक हो इटहाँ १— नानाना। (মাঝে মাঝে হি হি করিরা হাসি,--মাঝে

(শশী মিষ্টার তুলিতে লাগিল-গৃহিণী মাঝে কেহ আসিতেছে কিনা উঁকি দিরা দেখিতে দেখিতে হাততালি দিয়া গান।)

ব্বনিকা পতন।

স্বরলিপি।

मिन श्रीकाक-नानवा।

शा त्रांशा -स् ॥ शा नं सा। -शा साना शा शा ना शा शाशा-स्था र তো মৃতোম্ তা• না ৽ না • * না • ** I मां भा। - ४ भा - मां - I शां-ा शा। - ता मा-न्॥ t। ५ द्रां-ा भा I ০ নিয়া • খা • "ভো মৃ ভোম"

I(र्जा-) मी। मी नी -र्जा । मी शी -1 । थी भी -1 . 1} नी -1 नी আন অ ম ট র ব ড়ই • ক ঠোর • চাই • চা । जी माना । माने भा। - **४भा माने ।** भाने भा। - ताजाना॥ । । { - † भाने । ন • ক • শ্ৰা • না • তোম্ তোম্ • চাই । नमा नामा मा ना शाला नालाला नामाना नामाना ना व दन • मधुव • हा ति • এक • न I शा - † शा | - | शा शा | पर्मार्मा - | - मी - मी - नी | मी - | ना । কা • লা • চাই আংগা • পাতে • পা • স্থা । श्राप्ता ना ना ना भाषाना श्राप्ता ना भाषाना श्राप्ता भाषाना । বাড়া • আম ধো • পাতে • রা • লা • চাই II गिथा गिथा - । । था था - ना I ना र्मा - । ती र्मा - । में - र्मता। र्मा र्मा - र्न्ना। হ'হাত • ভরা • মুঠো • মুঠো • গি • লিট করা I नार्मा-ना। धा भा - I I {-1 -1 र्मा। र्मार्मा र्जा I र्मा-1 था। র জীন • ঝুটো • • • আন সল খাঁটি এক • धाशा - I] मा - 1 - 1 । शा - धा - शा । मा - 1 शा - ना ॥ ছ'টো∘ না••না∘∘ না•"ভো মৃতো মৃ"॥ শ্ৰীমতী ইন্দিরা দেবী।

यदक्तत्र निद्वन्त।

(মন্দাক্রান্তা ছন্দের অনুকরণে)

পিঙ্গল বিহরণ ব্যথিত নভতল, কই গো কই মেঘ উদর হও, সন্ধার তন্ত্রার সূরতি ধরি' আজ মন্ত্র-মন্থর বচন কও ; স্বর্থোর রক্তিম নরনে তুমি মেঘ! দাও হে কজ্জল পাড়াও ঘুম, বৃষ্টির চুম্বন বিধারি' চলে যাও অঙ্গে হর্বের পড়কু ধুম।

বিক্ষের গর্ভেই ররেছে আজো যেই,—আজ নিবাস যার গোপন-লোক,— সেই সব পল্লব সহসা কৃটিবার ছাই চৈটার কুস্কম হে:কু; গ্রীত্মের হোক্ শেষ, ভরিয়া সাহদেশ ন্নিগ্ধ গন্তীর উঠুক্ ভান, যক্ষের হু:থের কর হে অবসান, যক্ষ-কাস্তার ফুড়াও প্রাণ।

শৈলের পইঠার দাঁড়ায়ে আজি হায় প্রাণ উধাও ধার প্রিয়ার পাশ, মুর্চ্ছার মস্তর ভরিছে চরাচর, ছায় নিধিল কার আকুল খাস! ভরপুর অশ্রুর বেদনা-ভারাতুর মৌন কোন্ স্থর বাজায় মন, বক্ষের পঞ্লর কাঁপিছে কলেবর, চক্ষে হৃংথের নীলাঞ্জন!

রাত্রির উৎসব জাগালে দিবদেই, তাইতো তন্ত্রার ভ্বন ছার, রাত্রির গুণ সব দিনেরে দিলে দান, তাইতো বিচ্ছেদ ছিগুণ, হার; ইন্দ্রের দক্ষিণ বাছ সে তুমি দেব! পূজা! লও মোর পূজার ছুণ, পুষর বংশের চূড়া যে তুমি মেঘ! বন্ধু! দৈবের খুচাও ভূল!

নির্চুর যক্ষেশ, নাহিক ক্নপালেশ, রাজ্যে আর তাঁর বিচার নেই, আজ্ঞার লজ্যন করিল একে, আর শান্তি ভূঞান্ হজনকেই! হায় মোর কাস্তার না ছিল অপরাধ, মিথ্যা সন্ন সেই কতই ক্লেশ, ছর্ভর বিচ্ছেদ অবলা বুকে বন্ধ, পাংশু কুম্বল, মলিন বেশ।

বন্ধুর মুখ চাও, সথা হে দেথা যাও, ছঃথ ছগুর তরাও ভাই, কল্যাণ-সংবাদ কহিয়ো কাণে তার, হার, বিলম্বের সময় নাই; বজের বন্ধন আশাতে বাচে মন, হায় গো, বল্ তার কতই আর ? বিচ্ছেদ-গ্রীম্মের তাপেতে দে শুকায়, যাও হে দাও তার সলিল্-ধার।

নির্ম্মণ হোক্ পথ,- ৫৩ ও নিরাপদ, দূর-স্বর্জম নিকট হোক্, হ্রদ, নদ, নির্মার, নগরী মনোহর, সৌধ স্থান্দর ফুড়াক্ চোক্; চঞ্চল থঞ্জন্-নয়না নারীগণ বর্ধা-মঙ্গল করুক্ গান, বর্ধার মৌরভ,--- বলাকা-কলরব, নিত্য উৎসব ভরুক্ প্রাণ!

পুল্পের তৃষ্ণাৰ কর হে অবসান, হে।ক্ বিনিঃশেষ যুথীর ক্লেশ,
বর্ষায় হায় মেঘ প্রবাসে নাই স্থ,— হায় গো নাই নাই স্থেম লেশ;
যাও ভাই একবার মুছাতে আঁথি তার, প্রাণ বাঁচাও ষেষ! সময় হও,
"বিহাৎ-বিচেছদ জীবনে না ঘটুক্" বন্ধু বন্ধুর আশিষ লও।

শীসভোজনাথ দুরু।

কারাগৃহ ও স্বাধীনতা।

মুখ্যমাত্রেই প্রায় বাহু অবস্থার দাস, হুলবাতের অমুভূতির মধ্যেই আৰম। মান-দিক ক্রিয়াসকল সেই বাহিক অমুভূতিকেই আশ্রর করে, বৃদ্ধিও স্থলের সংকীর্ণ সীমা লজ্বন ক্রিতে অক্ষম; প্রাণের স্থত্যধ বাহ্ ঘটনার প্রতিধ্বনি মাত্র। এই দাসত্ব শরীরের আধি-পত্যজনিত। •উপনিষদে বলা হইয়াছে, "জগৎশ্রষ্টা স্বয়স্কু শরীরের ছারসকল বহিন্মুখীন করিয়া গড়িয়াছেন বলিয়া সকলের দৃষ্টি বহিৰ্জগতে আবদ্ধ, অস্তবান্থাকে কেহও দেখে না। দেই ধীরপ্রকৃতি মহাত্মা বিরল বিনি ভ্যুতের-বাসনার ভিতরে চকু ফিরাইয়া আত্মাকে প্রত্যক্ষ দর্শন করিরাছেন।" আমরা সাধারণতঃ যে বহিশা থীন সুবদৃষ্টিতে মহুষ্য-জাতির জীবন দেখি, সেই দৃষ্টিতে শরীরই আমাদের মুধ্য সংল। যুরোপকে বতই না ভড়বাদী বলি, কিছ প্রকৃতপকে মহুযামাত্রই क्ष्रवानो । भत्रीत धर्ममाधन्तत्र छेलाव, व्यामात्तत्र বছ অখ-যুক্ত রখ, যে দেহ রখে আরোহণ করিয়া আমরা সংসার পথে ধাবিত হই। কিছ দেহের অবধার্থ প্রাধান্ত ঝামরা খীকার করিয়া দেহাত্মকবৃদ্ধিকে এলম দিই যে বাহিক কর্ম ও বাহিক ^{্বতাণ্ডভ} ৰারা সম্পূর্ণরূপে আব**ৰ** হইয়া থাকি। वहे अकारनत कल कीवनवांशी मामच ७ রাধীনতা। স্বহংধ গুভাগুভ সম্পদ্বিপদ াদাদের মানসিক অবস্থাকে নিজের অসুযায়ী রিতে সচেষ্ট ত হয়ই, আমরাও কামনার ানে সেই চুক্ত ভাসিয়া বাই। স্থ্ৰণালসায় ংখভছে⁻¹পরের জাশ্রিত হট, পরের দত্ত

মুখ, পরের বস্ত ছ:খ গ্রহণ করিয়া জাশেষ করি ও পাঞ্চনা ভোগ করি। কেন না, প্রাকৃতি হৌক বা মহায় হৌক, যে আমাদের শরীরের উপর কিঞ্চিনাত্র আধিপত্য করিতে পারে কিয়া নিজশক্তির অধিকারক্ষেত্রে আনিতে পারে, তাহারই প্রভাবের অধীন হইতে হয়। ইহার চরম দৃষ্টাস্ত শত্রুপ্রস্থ বা কারাবদ্ধের অবস্থা। কিন্তু যিনি বন্ধুবান্ধব-বেষ্টিত হইয়া স্বাধীনভাবে মৃক্ত আকাশে বিচরণ করেন, কারাবদ্ধের ভায় তাহারও এই হর্দশা। শরীরই কারাগৃহ, দেহাত্মক-বৃদ্ধিরূপ অঞ্চানতা কারাক্রপ শত্রু।

এই কারাবাদ মহুযাজাতির অবস্থা। অপরপক্ষে সাহিত্য ও ইতিহাসের প্রত্যেক পৃষ্ঠায় মহুযাজাতির স্বাধীনতালাভার্থ অদমনীয় উচ্ছাস ও প্রয়াস দেখিতে পাই। যেমন রাজনীতিক বা সামাজিকক্ষেত্রে, তেমনি ব্যক্তিপত জীবনে যুগে যুগে এই চেষ্টা। আত্মসংযম, আত্মনিগ্রহ, সুথত্ব:খবর্জন, Stoicism, Epicureanism, asceticism, दिनास, दोष्क्ष्यं, अटेबज्वान, भाषावान, রাজযোগ, হঠযোগ, গীতা, জ্ঞানমার্গ, ভক্তি-মার্গ, কর্মমার্গ,-নানা পছা একই গমাস্থান। উদ্দেশ मतीत कत्र, त्रूलित वाधिभेठा वर्ष्कन, আন্তরিক জীবনের স্বাধীনতা। পাশ্চাতা বিজ্ঞানবিদ্গণ এই সিদ্ধান্ত করিয়াছেন বে সুৰজগৎ ভিন্ন অন্ত জগৎ নাই, সুলের উপর হন্দ প্রতিষ্ঠিত, হন্দ অমুভব সুণ অমুভবের প্রতিক্রতি মাত্র, মহুয়ের স্বাধীনতা-প্ররাস बार्थ ; धर्षपर्मन (वनांख जनोक कन्नना, मन्पूर्व

ভৃতপ্রকৃত্তি-আবদ্ধ আমাদের সেই বন্ধনমোচনে বা ভূতপ্রকৃতির সীমা উল্লজ্জ্বনে মিধ্যা চেষ্টা। কিন্ত মানবহুদয়ের এমন গৃঢ়তর স্তরে এই আকাজ্জা নিহিত বে সহস্র যুক্তিও তাহা উন্মূলন করিতে অসমর্থ। মহুয় বিজ্ঞানের সিদ্ধান্তে কথনও সম্ভষ্ট থাকিতে পারে না। চিরকাল মনুষ্য অস্পষ্ট ক্লপে অফুভৰ করিয়া আসিতেছেন যে সূল-জ্বে সমর্থ স্ক্রবস্ত তাহার অভ্যস্তরে দৃঢ়ভাবে বর্ত্তমান, স্ক্রময় অধিষ্ঠাতা নিত্যমুক্ত আনন্দ-মন্ন পুরুষ আছেন। সেই নিত্যমুক্তি ও নির্ম্মণ আনন্দলাভ করা ধর্মের উদ্দেশ্ত। এই উদ্দেশ্য, সেই বিজ্ঞানকরিত যে ধর্ম্মের evolution এরও উদ্দেশ্ত। বিচারশক্তি ও তাহার অভাব পশু মন্থব্যের প্রকৃত ভেদ নহে। পশুর বিচারশক্তি আছে, কিন্তু পশুদেহে তাহার উৎকর্ষ হয় না। পশু মনুষ্যের প্রকৃত ভেদ এই যে শরীরের নিকট সম্পূর্ণ দাগত্ব স্বীকার পাশবিক অবস্থা, শরীর জয় ও আন্তরিক স্বাধীনতার চেষ্টাই মহুযাত্মবিকাশ ! এই স্বাধীনতাই ধর্ম্মের প্রধান উদ্দেশ্য, ইহাকেই মুক্তি বলে। এই মুক্তার্গে আমরা প্রাণশরীরনেতাকে অন্তঃকরণস্থ মনোময় জ্ঞানহারা চিনিতে কিম্বা কর্মভক্তিহারা প্রাণ মন শরীর অর্পণ করিতে সচেষ্ট হই। "যোগন্তঃ কুকু কর্ম্মণি" বলিয়া গীতার যে প্রধান উপদেশ এই স্বাধীনভাই সেই গীভোক্ত যোগ। আম্বরিক স্থগ্নের যথন ব্যাহক ওভাওভ সম্পদ্বিপদকে আশ্রয় না করিয়া স্বয়ংজাত, স্বয়ং প্রেরিত, স্বসীমাব্দ্ধ হয়, তথন মহয়ের সাধারণ অবস্থার বিপরীত অবস্থা হয়, বাহিক জীবন আন্তরিক জীবনের অনুযায়ী করা যায়, কর্মবন্ধন শিধিল হর। গীতার আদর্শ পুরুষ

কর্মফলে আসন্তি ত্যাগ করিয়া প্রধান্তমে কর্মসন্নাস করেন। তিনি "হংবদম্বিয়মনাঃ স্থের্ বিগতস্থায়" আন্তরিক স্বাতন্ত্র্য লাভ করিয়া আত্মরতি ও আত্মসন্তই হইয়া থাকেন। তিনি প্রাক্ষত লোকের স্পান্ন স্থেবালসায় হংবভরে কাহারও আপ্রিত হন না, পরের দত্ত স্থত্থার করেন না। বরং মহাসংযমী মহাপ্রভাপান্তিত দেবাস্থর্ম্বের রাগভর ক্রোধাতীত মহারথী হইয়া ভগবংপ্রেরিত বে কর্মধোগী রাইবিপ্লব ধর্মবিপ্লব অথবা প্রতিষ্ঠিত রাল্য ধর্ম সমাজ রক্ষা করিয়া নিক্ষাম ভাবে ভগবংকর্ম স্বসম্পর করেন, তিনিই গীতার শ্রেষ্ঠ পুরুব।

আধুনিক যুগে আমরা নৃতন পুরাতনের স্দ্ধিস্থলে উপস্থিত। মাত্রুৰ বরাবরই তাঁহার গন্তব্যস্থানে অগ্রসর হইতেছেন, সময়ে সময়ে সমতল ভূমি ত্যাগ করিয়া উচ্চে আরোহণ ক্রিতে হয়, এবং দেইরূপ আরোহণ সময়ে त्रांटका नमाटक धर्म्य कारन विक्षव रहा। বর্ত্তমানকালে সূল হইতে সংস্থে আরোহণ করিবার উদ্যোগ **हिन्दिल्ल** । বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতগণ স্থূ**নম্বগতের পৃথাস্**পৃথ পরীকা ও নিয়ম নি**দ্ধারণ** করার আরোহণ-মার্গের চতুঃপার্মস্থ সমতল ভূমি পরিষার विनाम द्रांका **পুশ্বলগতের** হইয়াছে। भाका**छा खानीमिरात्र अथम भरक्**ष रहे-তেছে, অনেকের মন সেই রাজ্য করের আশায় প্রাপুর। ইহা ভিন্ন অন্ত অক্ত লকণ प्तिथा इटेट्डिस्-ट्रिम्**न अझ फिर्न थियुव**ित्र বিস্তার, আমেরিকার বেদাব্যের **७ व्हिंग्य**नानीए পাশ্চাত্য দর্শনশাল্পে ভারতবর্ষের পরোক্ষভাবে কিঞ্চিৎ আধিপত্য

ইত্যাদি। কিন্তু সর্বশ্রেষ্ঠ লক্ষণ ভারতের আকস্মিক ও আশাতীত উখান। ভারতবাসী জগতের শুরুহান অধিকার করিয়া নৃতন যুগ প্রবর্ত্তন করিতে উঠিতেছেন। তাঁহার সাহাব্যে বঞ্চিত হইলে পাশ্চাত্যগৰ উন্নতি-চেপ্তার সিত্তকাম হইতে পারিবেন না। বেমন আন্তরিক জীবনবিকাশের সর্বাপ্রধান উপায়-দুরুপ ব্রহ্মজান তত্ত্বান ও বোগাভাবে ভারত ভিন্ন অন্ত কোন দেশ উৎকর্বনাম্ভ করে নাই, তেমনই সম্যাজাতির প্রয়োজনীয় চিত্তভূতি ইপ্রিয়সংখ্য ব্রন্ধতের তপ:ক্ষমতা ও নিছাম কর্মবোগশিকা ভারতেরই সম্পত্তি। বাহা সুধতুঃথকে তাচ্ছিলা করিয়া আন্তরিক খাধীনতা অৰ্জন করা ভারতবাসীরই সাধা, নিছাম কর্ম্মে ভারতবাসীই সমর্থ, অহলার-বৰ্জন ও কৰ্মে নিৰ্ণিপ্ততা তাঁহারই শিকা ও সভাতার চরম উদ্দেশ্ত বলিয়া জাতীয় চরিত্রে বীজরূপে নিছিত।

এই কথার যাথার্থ্য প্রথম আলিপুর জেলে
অম্ভব করিলাম। এই জেলে প্রায়ই চোর
ডাকাত হত্যাকারী থাকে। যদিও করেলীর
সঙ্গে আমাদের কথা কহা নিষিত্ব, তথাপি
কার্য্যতঃ এই নিরম সম্পূর্ণ পালন করা
হইত না, তাহা ছাড়া রাঁধুনি পানিওয়ালা
ঝাড়্দার মেহতর প্রভৃতি, যাহাদের সংস্রবে
না আসিলে নর, তাহাদের সঙ্গে অনেক সময়
এক অপরাধে অপরাধী বলিরা ধৃত, তাঁহারাও
নৃশংস হত্যাকারীর দল প্রভৃতি ছঃপ্রার্
বিশেষণে কলভিত ও নিন্দিত। বদি কোনও
স্থানে ভারতবার্মীর চরিত্র ছুপার চক্ষে দেখিতে
হয়, যদি কোন স্ববছার তাহার নিক্স

অধম ও জবন্ত ভাবের পরিচয় পাওয়া সম্ভব हब. তবে আলিপুর জেলই সেই স্থান. আলিপুরে কারাবাসই সেই নিক্ট হীন অবস্থা। আমি এই স্থানে এই অবস্থায় কটিাইলাম। এই বারমাদ অমুভবের ফলে, ভারতবাদীর শ্রেষ্ঠতা সম্বন্ধে দৃঢ় ধারণা, মহুষ্য চরিত্রের উপর বিশুণ ভক্তি এবং সদেশের ও মহুব্যক্ষাতির ভবিষাৎ উন্নতি ও কলাণের দশগুণ আশা লইয়া কর্মকেত্রে ফিরিয়া আসিয়াছি। ইহা আমার সভাবজাত optemism অথবা অতিরিক্ত বিশাসের ফল নহে। শ্রীবৃক্ত বিপিনচন্দ্র পাল বক্সার জেলে ইহা অমুভব করিয়া আসিয়া-ছিলেন, আলিপুর জেলে ভৃতপূর্ব ডাকার ডেলি সাহেবও ইহা সমর্থন করিতেন। ডেলি সাহেব মহুবাচরিত্রে অভিজ্ঞ সম্বদর ও বিচক্ষণ লোক, মনুষ্য চরিত্রের নিকৃষ্ট ও জৰৱা বৃত্তি সকল প্রতাহ সন্মধে বিশ্বমান, অধচ তিনি আমাকে বলিতেন "ভারতের ভদ্রলোক বা ছোটলোক, সমাজের সন্তান্ত বাক্তি বা জেলের করেদী एउहे (मधि ७ ७नि, आमात्र এই धात्रणा দুচ় হর যে চরিত্রে ও গুণে তোমরা আমাদের टिट्ड टिंड डेंड्र। थेरे म्हा करहती ও বুরোপের করেণীতে আকাশ পাতাল তফাং। এই ছেলেদের দেখে আমার वह शातना चात्रक वृत् रदब्द । व्यत्नत्र আচরণ চরিত্র ও নানা সদ্পুণ দেখে কে কল্পনা করতে পারে বে এরা Anarchist বা হত্যাকারী। ভাদের মধ্যে ক্রতা উদাম-ভাব অধীরতা বা ধৃইতা কিছুমাত্র না দেখে नव छेन्ट्रेश्वनहे स्ववि।" व्यवश्रहे स्वरन कात

ডাকাত সাধুসর্যাসী হর না। ইংরাজের সাধারণ করেদীর পক্ষে চরিত্রহানি ও মহুযাত্ব-নাশের উপার্যাত্ত। তাহারা যে চোর ডাকাত খুনী ছিল, সেই চোর ডাকাত খুনীই থাকে, জেলে চুরি করে, শক্ত নিয়মের মধ্যেও নেশা করে, জুয়োচুরি করে। তাহা হইলে কি হইবে, ভারতবাসীর মহয়ত্ব গিরাও যায় না। সামাজিক অবনতিতে পতিত, মহুষ্মত্ব নাশের ফলে নিম্পেষিত, বাহিরে কালিমা কর্নব্যভাব কলম বিকৃতি, তথাপি ভিতরে সেই লুপ্তপ্রার মশ্ব্যাত্ব ভারতবাসীর মজ্জাগত সদ্ভণে লুকা-ইয়া আত্মরকা করে, পুন:খুন: কথায় ও আচরণে তাহা প্রকাশ পার। যাহারা উপরের काना हेकू प्रविद्या घृणात्र मूथ फित्राहेत्रा नन, তাঁহারাই বলিতে পারেন বে ইহাদের মধ্যে মহুব্যন্থের লেশমাত্র দেখিতে পাই নাই। কিন্তু যিনি সাধুতার অহন্বার ত্যাগ করিরা নিজ সহজ্পাধ্য স্থিরদৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করেন, তিনি এই মতে কথনও মত দিবেন না। ছর মাস কারাবাসের পরে প্রীযুত বিপিনচক্র পাল বৰুসার জেলের চোর ডাকাতের মধ্যেই সর্বাঘটে নারারণকে দর্শন করিয়া উত্তর পাড়ার সভার মুক্তকণ্ঠে এই কথা স্বীকার করিয়াছিলেন। আমিও আলিপুর জেলেই হিন্দু ধর্মের এই মূলতত্ত্ব হৃদর্জম করিতে পারিলাম, চোর ডাকাত খুনীর মধ্যে সর্বপ্রথম মহুব্য দেহে নারারণকে উপলক্ষি করিলাম।

এই দেশে কত শত নিরপরাধ ব্যক্তি দীর্ঘকাল জেলরপ নরকবাস ভোগ ছারা পূর্বজন্মার্কিত ছফর্মকল লাঘৰ করিয়া ভাঁহাদের স্বর্গপর্য পরিকার করিতেছেন। কিছ সাধারণ পাশ্চাত্য বাসীগৃণ বাঁহারা ধর্মজাব বারা পৃত ও দেবভাবাপর নহেন তাহারা এইরপ পরীক্ষার কতদ্র উত্তীর্ণ হয়, বাঁহারা পাশ্চাত্য দেশে রহিরাছেন বা পাশ্চাত্য চরিত্র-প্রকাশক সাহিত্য পজিয়াছেন, তাঁহারাই সহজে অমুমান করিতে পারেন। এরপ স্থলে হয়ত তাহাদের নিরাশাপীড়িত, ক্রোধ ও হঃবের অমুজলপ্লত হাদর পার্থিব নরকের বাের অর্করনপ্রেত হাদর পার্থিব নরকের বাের অর্করনপ্রেত হাদর পার্থিব নরকের বাের অর্করনপ্রত হাদর পার্থিব নরকের বাের অর্করনপ্রত হাদর পার্থিব নরকের বাের অর্করনপ্রত হালর ও নীচবৃত্তি আল্রর করে;—নরত হর্মলতার নিরতিশয় নিশ্বেণে বল বৃত্তি হান হইরা তাহাতে মহয়ের নাইবিশেব মাত্র অবশিষ্ট থাকে।

আলিপুরের একজন নিরপরাধীর কথা এব্যক্তি ডাকাতীতে লিপ্ত ৰলিয়া দশ বংসর সশ্রম কারাবাসে দণ্ডিত। আতে গেরালা, অশিক্ষিত, লেথাপড়ার ধার ধারে না, ধর্ম-সম্বলের মধ্যে ভগবানে আন্ধা ও আর্ব্যশিকা-ञ्चल देश्या ७ अञ्चान मन् अन हेशांक विश्वमान। এই বৃদ্ধের ভাব দেখিরা আমার বিস্তা ও সহিষ্ণুঙার অহম্বার চূর্ণ হইরা গেল। বুদ্ধের नग्रत गर्समा अभारत्मवन देवजीकार विदासिक. মুথে সর্বাদা অমারিক প্রীতিপূর্ণ আলাপ। সমর সময় নিরপরাধে কটভোগের কথা পাড়েন, जीरहरनरमञ्ज कथा वरमन, करव छन्नवान कांत्रापृष्टि निवा बीट्यट्टलट्ट पूर्व मर्नन क्त्रोहेर्दन, এই छादे अकान करतन, কিন্ত কথনও ভাঁহাকে নিরাশ বা অধীর पिथ नाहे। **खनवात्मव कुनारनकात्र** शीव-ভাবে খেলের কর্ম সম্পন্ন করিয়া দিন্ বাপন করিতেছেন। বৃদ্ধের বত হৈ। ও ভাবনা निक्ति कर्छ नरह, शरत्र सूच सूचिया मध्यां छ।

দয়া ও হঃশীর প্রতি সহামুভূতি তাঁহার কথায় কথায় প্রকাশ পায়, পরসেবা তাঁহার খভাব-ধর্ম। নমতায় এই সকল সদ্পুণ আরও ফুটিরা উঠিরাছে। আমা হইতে সহস্রগুণ উচ্চ হৃদয় ব্ৰথিয়া এই নম্ৰতায় আমি সৰ্বাদা লজ্জিত হইতাম, বুদ্ধের সেবা গ্রহণ করিতে সংকোচ হইত, কিছ তিনি ছাড়েন না, তিনি সর্বাদা আমার স্থপোয়ান্তির জন্তে চিন্তিত। যেমন আমার উপর তেমনই সকলের উপর—বিশেষ নিরপরাধ ও হ: বীজনের প্রতি তাঁহার দয়াদৃষ্টি বিনীত সেবাসমান আরো অধিক। অথচ মধে ও আচরণে কেমন একটি স্বাভাবিক প্রশাস্ত গান্তীর্যা ও মহিম। প্রকাশিত। দেশের প্রতিও ইহার যথেষ্ট অমুরাগ ছিল। এই বৃদ্ধ করেদীর দয়াদাকিণা পূর্ণ খেতশ্রশ্র-মণ্ডিত সৌমামুর্জি চিরকাল আমার স্বৃতিপটে অঙ্কিত থাকিবে। এই অবনতির দিনেও ভারতবর্ষের চাষার মধ্যে—আমরা যাহাদের অশিকিত ছোটলোক বলি.—তাহাদের মধ্যে এইরূপ হিন্দু সস্তান পাওয়া যায়, ইহাতেই হিন্দু ধন্মের গৌরব, আর্যাশিক্ষার অতুল গুণ প্রকাশ এবং ইহাতেই ভারতের ভবিষ্যৎ শিকিত আশাজনক। যুবক মণ্ডলী অশিক্ষিত কৃষক সম্প্রদায় এই ছইটা শ্রেণীতেই ভারতের ভবিষ্যৎ নিহিত, ইহাদের মিলনেই ভবিষ্যৎ আর্যাক্সাতি গঠিত হুইবে।

উপরে একটি অশিক্ষিত চাষার কথা বলিলাম, এখন হুইজন শিক্ষিত যুবকের কথা বলি। ইহারা ছারিসন রোডের কবিরাজ দ্বর, নগেন্দ্রনাপ ও ধরণী। ইহারা সাত বৎসর সম্রায়-কারাবাস দতে দণ্ডিত হুইরা-ছেন। ইহারাও যেরও শাস্তভাবে, বেরুপ সম্ভেমনে এই আকম্মিক বিপত্তি, এই অক্সায় রাজদণ্ড সহু করিতেন, তাহা দেখিয়া আশ্চর্যানিত হইতে হইত। কথনও তাঁহাদের মুখে ক্রোধ হুষ্ট বা অসহিষ্ণুতা-প্রকাশক এক-টীও কথা শুনি নাই। যাঁহাদের দোষে ट्यनक्रि नव्रक योगनकान काठा हेर्ड इहन. তাঁহাদের প্রতি যে লেশমাত্র ক্রোধ তিরস্কার ভাব বা বিরক্তি পর্যান্ত আছে, তাহার কোন লকণ কথনও দেখিতে পাই নাই। তাঁহারা গৌরবম্বল পাশ্চাত্য-আধ্নিক শিক্ষার ভাষায় ও পাশ্চাত্য-বিদ্যায় অভিজ্ঞতা-বঞ্চিত, মাতৃভাষাই ইহাদের সম্বল, কিন্ত ইংরাজী-শিক্ষালন্ধ সম্প্রদায়ের মধ্যে তাহাদের তুল্য কম লোক দেখিরাছি। ছজনেই মাপ্রবের নিকট আক্ষেপ কিছা বিধাতার নিকট নালিস না করিয়া সহাস্য মুখে নতমন্তকে দণ্ড গ্রহণ করিয়াছেন। হুটী ভাইই সাধক কিন্ধ প্রক্রতি বিভিন্ন। নগেন্দ্র ধীর প্রকৃতি, গম্ভীর বৃদ্ধিমান। হরিকথা ও ধর্মবিষয়ে আলাপ অত্যন্ত ভাল বাসিতেন। যথন আমাদিগকে নির্জন কারাবাদে রাধা চুটল তখন জেলের কর্ত্তপক্ষ জেলের থাটুনি সমাপ্তে আমাদিগকে वरे পড়িবার অমুমতি দিলেন। নগেজ ভগবদগীতা পড়িতে চাহিয়া বাইবেল পাইয়া-বাইবেল পডিয়া তাঁহার মনে কি किलन । कि ভাবের উদর হয়, কাঠগড়ার বসিরা আমার নিকট ভাছার বর্ণনা করিতেন। গীতা পড়েন নাই, তথাপি আক্রেয়ের সহিত দেখিলাম বাইবেলের কথা না বলিয়া গীতার লোকার্থ বলিভেছেন।—এমন কি এক একৰার মনে হইত যে ভগবদ্ধণাত্মক মহৎ উক্তি সকল কুককেত্রে শ্রীকৃষ্ণ-মূখ-নি:স্ভ

ভাকাত সাধুসর্যাসী হয় না**।** ইংরাজের জেল চরিত্র অধরাইবার স্থান নহে, বরং সাধারণ করেদীর পকে চরিত্রহানি ও মহযাত্ব-নাশের উপায়মাত্র। তাহারা যে চোর ডাকাত খুনী ছিল, সেই চোর ডাকাত খুনীই থাকে, জেলে চুরি করে, শক্ত নিরমের মধ্যেও নেশা করে, জুয়োচুরি করে। তাহা হইলে কি হইবে, ভারতবাসীর মহয়ত্ব গিরাও যায় না। সামাজিক অবনতিতে পতিত, মহুবাৰ নাশের ফলে নিম্পেষিত, বাহিরে কালিমা কর্দর্যভাব কলম বিকৃতি, তথাপি ভিতরে সেই লুগুপ্রার মকুষ্যত্ব ভারতবাসীর মজ্জাগত সদ্প্রণে লুকা-ইয়া আত্মরকা করে, পুন:খুন: কথায় ও আচরণে ভাহা প্রকাশ পায়। যাঁহারা উপরের काना हेकू प्रविद्या घुनात्र मूथ फित्रारेश नन, ভাঁহারাই বলিতে পারেন বে ইহাদের মধ্যে মমুদ্মদের লেশমাত্র দেখিতে পাই নাই। কিছ যিনি সাধুতার অহন্বার ত্যাগ করিয়া निक मञ्चमांश श्रितृष्टिः नित्रोक्त करवन, তিনি এই মতে কথনও মত দিবেন না। ছম মাস কারাবাসের পরে শ্রীযুত বিপিনচন্ত্র পাল বৰ্সার জেলের চোর ডাকাতের মধ্যেই সর্বাঘটে নারায়ণকে দর্শন করিয়া উত্তর পাড়ার সভার মুক্তকণ্ঠে এই কথা স্বীকার করিয়াছিলেন। আমিও আলিপুর জেলেই হিন্দু ধর্মের এই মূলতত্ত্ব জ্বদর্জম করিতে পারিলাম, চোর ডাকাত খুনীর মধ্যে সর্বপ্রথম সমুব্য দেহে নারারণকে উপলব্ধি করিলাম।

এই দেশে কড শত নিরপরাধ ব্যক্তি দীর্ঘকাল জেলরপ নরকবাস ভোগ ছারা পূর্বজনার্জিত গৃহর্মকল লাখন করিয়া ভাঁহাদের স্বর্গপর্ণ পরিকার করিতেছেন। বিশ্ব সাধারণ পাশ্চাত্য বাসীগৃণ বাঁহারা ধর্মজ্ঞাব বারা পৃত ও দেবভাবাপন নহেন তাহারা এইরপ পরীক্ষার কতদ্র উত্তীর্ণ হয়, বাঁহারা পাশ্চাত্য দেশে রহিয়াছেন বা পাশ্চাত্য চরিত্র-প্রকাশক সাহিত্য পঞ্চিয়াছেন, তাঁহারাই সহজে অহ্মান করিতে পারেন। এরূপ স্থলে হয়ত তাহাদের নিরাশাপীড়িত, কোধ ও হঃবের অশ্রজগপ্পত হৃদর পার্থিব নরকের ঘোর অক্ষকারে এবং সহবাসীদের সংশ্রবে পড়িয়া তাহাদেরই ক্রতা ওনীচর্ছি আশ্রর করে;— নরত হর্মগতার নিরতিশর নিম্পেরণে বল বৃদ্ধি হীন হইরা তাহাতে মহয়ের নাইবিশেষ মাত্র অবশিষ্ট থাকে।

আলিপুরের একজন নিরপরাধীয় কথা এবাক্তি ডাকাতীতে লিপ্ত ৰলিয়া দশ বংসর সম্রম কারাবাসে দণ্ডিত। আতে গেরালা, অশিকিত, লেখাপড়ার ধার ধারে না, ধর্ম-সম্বলের মধ্যে ভগবানে আন্থা ও আর্যাশকা-স্থলভ ধৈৰ্যা ও অক্সান্ত সদ্প্ৰণ ইহাতে বিশ্বমান। এই বুদ্ধের ভাব দেখিয়া আমার বিভা ও সহিষ্টার অহমার চূর্ব ইরা গেল। বুদ্ধের नगरन गर्समा अभावभवन देवजीकांव विवासिक. মূৰে সৰ্বাদা অমারিক প্রীতিপূর্ণ আলাপ। সমর সময় নিরপরাধে কইভোগের কথা পাড়েন, ন্ত্ৰীছেলেম্বের কথা বলেন, কবে ভগবান कातावृक्ति निवा बीरक्रकरमञ्जू वृथ पर्नन कड़ाहित्व. এहे छांबल क्षत्राम करत्व, **क्यि कथन छ छोहाटक नित्राम वा अ**थीत ণেখি নাই। ভগবানের কুপাপেকার ধীর-ভাবে জেলের কর্ম সম্পন্ন করিয়া দিন বাগন করিতেছেন। বৃদ্ধের বত কিটা ও ভাবনা निरमत मर्ड नर्ड, भरतम मूच स्थित मरकार।

দরা ও হঃশীর প্রতি সহামুভূতি তাঁহার কথায় কথার প্রকাশ পার, পরসেবা তাঁহার স্বভাব-ধর্ম। নমতায় এই সকল সদ্প্রণ আরও ফুটিয়া উঠিয়াছে। আমা হইতে সহস্রগুণ উচ্চ হৃদ্য ব্ৰথিয়া এই নম্ৰতায় আমি সৰ্বাদা লজ্জিত হইতাম, বুদ্ধের সেবা গ্রহণ করিতে সংকোচ হইত, কিছ তিনি ছাড়েন না, তিনি সর্বাদা আমার স্থাসোয়ান্তির জন্মে চিন্তিত। যেমন আমার উপর তেমনই সকলের উপর---বিশেষ নিরপরাধ ও ছ: বীজনের প্রতি তাঁহার দরাদৃষ্টি বিনীত দেবাসম্মান আরো অধিক। অথচ মুখে ও আচরণে কেমন একটি স্বান্তাবিক প্রশাস্ত গান্তীর্যা ও মহিমা প্রকাশিত। দেশের প্রতিও ইহার যথেষ্ট অমুরাগ ছিল। এই বৃদ্ধ কয়েদীর দয়াদাকিণা পূর্ণ খেতশ্রশ্র-মণ্ডিত সৌমামুর্জি চিরকাল আমার স্বৃতিপটে অন্ধিত থাকিবে। এই অবনতির দিনেও ভারতবর্ষের চাষার মধ্যে-আমরা যাহাদের অশিকিত ছোটলোক বলি,—ভাহাদের মধ্যে এইরপ হিন্দু সস্তান পাওয়া যায়, ইহাতেই হিন্দু ধর্মের গৌরব, আর্যাশিক্ষার অতুল গুণ প্রকাশ এবং ইহাতেই ভারতের ভবিষ্যৎ পাশাজনক। শিকিত যুবকমগুলী অশিক্ষিত কৃষক সম্প্রদার এই হুইটা শ্রেণীতেই ভারতের ভবিষ্যৎ নিহিত, ইহাদের মিলনেই ভবিষ্যৎ আর্যাক্সতি গঠিত হইবে।

উপরে একটি অশিক্ষিত চাষার কথা বলিলান, এখন ছইজন শিক্ষিত যুবকের কথা বলি। ইহারা ছারিসন রোডের কবিরাজ ঘর, নগেন্দ্রনাথ ও ধরণী। ইহারা সাত বংসর সশ্রম কারাবাস দতে দণ্ডিত হইয়া-ছেন। ইহারাও যেরও শাস্কভাবে, বেরপ সম্ভেমনে এই আক্ষিক বিপত্তি, এই অক্সায় রাজ্বদণ্ড সহু করিতেন, তাহা দেখিয়া আশ্চর্যান্তিত হইতে হইত। কথনও তাঁহাদের মুখে ক্রোধ হুষ্ট বা অসহিষ্ণুতা-প্রকাশক এক-টীও কথা ভূনি নাই। বাঁহাদের দোষে জেলরপ নরকে যৌবনকাল কাটাইতে হইল. তাঁহাদের প্রতি যে লেশমাত্র ক্রোধ তিরস্কার ভাব বা বিরক্তি পর্যাস্ত আছে, তাহার কোন লক্ষণ কথনও দেখিতে পাই নাই। তাঁহারা আধনিক শিক্ষার গৌরবম্বল পাশ্চাত্য-ভাষায় ও পাশ্চাত্য-বিদ্যায় অভিজ্ঞতা-বঞ্চিত. माञ्जाबार देशामत मधन, किंद रेश्त्राकी-শিকালৰ সম্প্ৰদায়ের মধ্যে তাহাদের তুল্য কম লোক দেখিয়াছি। ছজনেই মাপুষের নিকট আক্ষেপ কিম্বা বিধাতার নিকট নালিস না করিয়া সহাস্য মুখে নতমস্তকে দণ্ড গ্রহণ করিয়াছেন। হটী ভাইই সাধক কিন্তু প্রকৃতি বিভিন্ন। নগেব্রু ধীর প্রকৃতি, গন্তীর বন্ধিমান। হরিকথা ও ধর্মবিষয়ে আলাপ অত্যন্ত ভাল বাসিতেন। যথন আমাদিগকে নির্জন কারাবাদে রাখা হইল তখন জেলের কর্ত্তপক জেলের খাটুনি সমাপ্তে আমাদিগকে वरे পড়িবার অমুমতি দিলেন। ভগবদুগীতা পড়িতে চাহিন্ন বাইবেল পাইন্না-বাইবেল পডিয়া তাঁহার মনে কি ছিলেন। কি ভাবের উদর হয়, কাঠগড়ার বসিরা আমার নিকট তাহার বর্ণনা করিতেন। গীতা পড়েন নাই, তথাপি শাশ্চর্য্যের সহিত দেখিলাম বাইবেলের কথা না বলিয়া গীতার क्षांकार्थ विलाउ हम। — धमन कि धक একৰার মনে হইত বে ভগবদ্ধণাত্মক মহৎ উক্তি সকল কুরুকেত্রে জীরুঞ্-মুখ-নি:স্ত উজিগুলি সেই বাহ্নদেব মুখপন্ন হইতে এই আলিপুরের কাঠগড়ার আবার নিঃস্ত হইতেছে। গীতা না পড়িরা বাইবেল গীতার সমতাবাদ, কর্ম্মদল ত্যাগ, সর্ব্ব ঈর্মর দর্শন ইত্যাদি ভাব উপলব্ধি করা সামান্ত সাধনার লক্ষণ নত্তে। ধরণী নগেক্সের তার বৃদ্ধিমান নন, কিন্তু বিনীত ও কোমল প্রকৃতি, স্বভাবত:ই ভক্ত। তিনি সর্বদা মাতৃখ্যানে বিভোর, তাঁহার মুখের প্রসন্মতা, সরল হাত্ত ও কোমল ভক্তিভাব দেখিয়া জেলের জেলম্ব উপলব্ধি করা কঠিন হইরা প্রভিত। ইহাদের দেখিয়া কে বলিতে পারে বাঙ্গালী হীন অধম ? এই শক্তি এই মহুবান্ধ এই পবিত্র আর্থি ভন্মরাশিতে লুকারিত আছে মাত্র।

ই হারা উভয়েই নিরপরাধ। বিনা দোষে কারাবদ্ধ হইয়াও নিজ্পুণে বা শিক্ষাবলে বাহ্ হুথ ছঃখের আধিপত্য অস্বীকার করিয়া আন্তরিক জীবনের স্বাধীনতা বক্ষা করিতে नक्रम रहेबार्ह्न। किन्त यांशांत्रा व्यवताधी, তাঁহাদের মধ্যেও জাতীয় চরিত্রের সদ্গুণ বিকাশ পাইত। বার মাস আলিপুরে ছিলাম, হ্ৰেকজন ভিন্ন ৰত কয়েনী, ৰত চো: ডাকান্ত খুনীর সঙ্গে আমাদের সংশ্রব ঘটিয়াছিল, সক-লের নিকটেই আমরা সদ্যবহার ও অমুকূলতা পাইতাম। আধুনিক শিক্ষা-দূবিত আমাদের মধ্যে বর্ঞ এসকল গুণের অভাব দেখা ষার। আধুনিক শিক্ষায় অনেত গুণ থাকিতে পারে কিন্তু সৌজন্ত ও নি:হার্থ পরসেবা সেই গুণের মধ্যগত নহে। যে দয়া সহায়ভূতি আর্যাশিকার মৃল্যবান অক, তাহা এই চোর मधा ७ (मिथ्याम ! ডাকাতের নেহতর बाष्ट्रमात्र शानि अवागारक विना त्मारव आमात्मत्र

সঙ্গে সঙ্গে নির্জন কারাবাদের ছ: থ কষ্ট কতকপরিমাণে অমুভব করিতে হইত, কিছ তাহাতে একজনও আমাদের উপর অসভষ্টি বা ক্রোধ প্রকাশ করে নাই। জেলবক্ষকদের নিক্ট তাহারা মাঝে মাঝে ত্ৰ:খ প্ৰকাশ করিত বটে কিন্তু প্ৰসরমূখে আমাদের কার্য্য করিয়া যাইত, এবং ভগবানের নিকট আমাদের কারামুক্তি প্রার্থনা করিত। একজন মুসলমান কয়েদী অভিযুক্তদিগকে নিজের ছেলেদের স্থায় ভালবাসিতেন, বিদায় লইবার সময় তিনি অঞ্জল সম্বরণ করিতে পারেন নাই। দেশের অস্তে এই লাছনা ও কইভোগ বলিয়া অন্ত সকলকে দেখাইয়া তু: ব করিতেন, "দেখ, ইহারা ভদ্রণোক, ধনী লোকের সম্ভান, গরীবছংখীকে পরিত্রাণ করিতে গিয়া ইঁহাদের এই চুর্দ্রশা।" বাঁহার। পাশ্চাত্য সভাতার বড়াই করেন, তাঁহাদের জিজাসা করি, ইংলণ্ডের জেলে নিম্নশ্রেণীর করেদী চোর ডাকাত ধুনীর এইরূপ আত্ম-সংবম দয়াদাকিণা কুতজ্ঞতা পরার্থে ভগবংছক্তি কি দেখা যায়! প্রকৃতপকে যুরোপ ভোকৃ-ভূমি, ভারত দাতৃভূমি। দেব ও অহর বলিয়া গীতার ছই শ্রেণীর জীব বর্ণিত আছে। ভারতবাদী সভাবতঃ দেবপ্রকৃতি, পাশ্চাত্যগণ স্বভাবত অসুর প্রকৃতি। কিছু এই ছোর ক্লিতে পড়িয়া ত্ৰোভাবেৰ প্ৰাধান্তবৰত আৰ্য্য-শिकांत्र व्यवलार्थ (मर्भत्र व्यवन्छि, नशास्त्रत অবনতি, ও ব্যক্তিগত অবন্তিতে, আমরা নিশ্বষ্ট আমুরিকবৃত্তি স্কন্ধ করিতেছি আর পাশ্চাত্যগণ অক্তদিকে লাড়ীয় উন্নতি ও मञ्चारकत कमविकारनंत्र श्राप किन्छांव व्यक्तन क्तिराह्म । हेरा माचल जारामित्र तम्य-

ভাবে কতকটা আহ্বরত্ব এবং আমাদের আহ্বরিক ভাবের মধ্যেও দেবভাব অস্পষ্টভাবে প্রতীরমান। তাঁহাদের মধ্যে যে শ্রেষ্ঠ, সেও অহ্বরত্ব সম্পূর্ণ হারার না। নিক্কষ্টে নিক্কষ্টে যথন তুলনা করি, ইহার যথার্থতা তথন অতি স্পাইনীপে বোঝা যায়। এই সম্বন্ধে অনেক কথা শিখিবার আছে, প্রবন্ধের অভিদীর্ঘতার ভয়ে শিখিলাম না। ভবে জেলে বাঁহাদের আচরণে এই আন্তরিক স্বাধীনতা দর্শন করিয়াছি, তাঁহারা এই দেব-ভাবের চরম দৃষ্টাস্ত। এই সম্বন্ধে পরবর্ত্তী প্রবন্ধে শিখিবার ইচ্ছা রহিল।

শ্রীঅরবিন্দ ঘোষ।

হাফেজ।

আজি প্রেমরসরাগে হৃদ্-পানাধার, কর রাগোজ্জল কর, এ সথে আমার; व्रवेश स्कर्ष ये स्ववे स्वन, সংসারের কাষ হল স্থে সমাপন। পানপাত পূর্ণ হ'লে বিমল স্থায় প্রিয় মুথছবি মোরা হেরিয়াছি তায়। मधुश्राम, ভাগাহীন, यम नाहि निद्य, পানের আনন্দ তবে কেমনে বুঝিবে! ঋজু তহুলতাথানি তত দিন রবে, হানিয়া কটাক্ষ বাণ রূপের গরবে. —বেন চারু দেবদারু প্রেম-তরুবর— থতদিন নহে পিয়া নম্বন গোচর। প্রেমেতে সজীব যার इहेन छात्र তার কাছে কোথা আছে, বল মৃত্তু ? —প্রেমিক বলিয়া ধবে লিখন পড়িল, জগতে অমর খ্যাতি বিদিত রহিল। সদা মধুপায়ী আমি প্রেমী নির্বিচার; হবিষ্যানভোজী তুমি সাধু ওদাচার; ধর্মরাজের স্থির তুলাদণ্ড পরে কি প্রেমিক, কি ধার্ম্মিক, তুলা মূলা ধরে। হে বাভাস, জুমি যদি বহু কোন দিন পিয়ার নিক্ষবন, করি প্রদক্ষিণ;

কহিও, কহিও তুমি, করিয়া যতন, **এচরণে অধীনের প্রেম আবেদন।** এখনি কেন হে তুমি স্মরণ হইতে যতন করিছ মোর এ নাম মুছিতে? নির্মাণ আসিবে যবে চিরদিন পরে, আপনি মুছিবে শ্বতি জগত ভিতরে। বাধিল এ প্রাণ যেবা নিজ প্রেমপাশে. মন্ততা হেরিতে সে যে বড় ভালবাসে; তাই মোর ভভাদৃষ্ট প্রদন্ম হইয়া প্রমত্তের দলে মোর ধিয়াছে ছাড়িয়া। অসীম স্থূনীল এই গগন বিস্তার, ভাসমান তরিসম শশীকলা আর, নিখিল সে, নিমজ্জিত গুরু কুপাবলে শ্বচ্ছ স্থবিমল এই পানপাত্র তলে! শিশির বাতাদে যথা কমল মুদিল, প্রাণ যদি প্রেমাবেশে তেমনি হইল, मानम-मत्राम, इन् भण्यवत्न करव, প্রণয়-মূণাল-পাশে ধরা দিবে তবে! हारक्क, त्थमां अधारा कत वित्रवन, -- व्याध यथा अञ्चलना कत्त्र विकीतन ; সে প্রেম বিহঙ্গরাজ হয়তো দেখিবে, তোমার এ প্রেমপাশে আসি ধরা দিবে।

৺রাজনারায়ণ বস্থ।

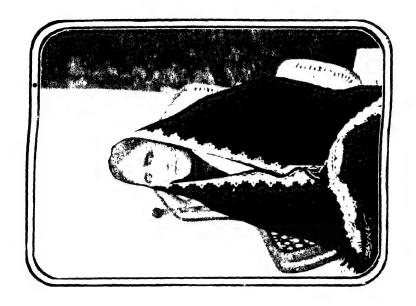
স্থাধের বিষয়, বঙ্গসাহিত্যে জীবনচরিতের অভাব ক্রমশ: দুরীভূত হইতেছে। এমন কি ছুএকথানি উল্লেখযোগ্য 'আত্ম-চরিত'ও প্রকা-**হটয়া বঙ্গ**সাহিত্যের গৌরব বুদ্ধি তন্মধ্যে মহর্ষি দেবেক্সনাথের করিতেছে। 'আত্মচরিত' সর্বাগ্রগণা। সম্প্রতি রাজনারায়ণ ৰস্থ মহাশয়ের আত্মচরিত প্রকাশিত হইয়াছে। ত্র প্রবন্ধে উহাই আমাদের সমালোচ্য বিষয়। 'রাজনারায়ণ' বহুর নাম জানেনা লোক অরই আছে। 'একাল সেকালের' রাজানারায়ণ,—কবিবর মধুস্থদনের 'প্রিয়রাঞ্চ,' ব্রাহ্মসমাজের উজ্জ্বরত্ব রাজনারায়ণ বহুকে বাঙালীকে আর চিনাইয়া দিতে হইবে না। অরবিন্দ ও বারীক্র তাঁহারই দৌহিত্র এবং স্থপ্রভাত মাসিক পত্রের সম্পাদিকা কুমারীরত্ন क्रमूमिनी मिख छाँशत्रहे मोहिखी।

সংক্ষেপে তাহার জীবনী নিয়ে প্রদত্ত हहेत। ১५৪৮ मत्क (हेःत्राक्षी ১৮२७ वृष्टीत्क ২৪ পরগণার অন্তর্গত বোড়াল গ্রামে তাঁহার জন্ম হয়। তাঁহার পূর্বপুরুষগণ বেশ বর্দ্ধিযু লোক ছিলেন। হেয়ার ফুলে তাঁহা: হংরাজি পাঠাভ্যাস আরম্ভ হয়—পরে তিনি হিন্দু স্কুলে প্রবেশ করেন। সকলেই জ্বানেন তিনি একজন মেধাৰী ছাত্ৰ ছিলেন। তাঁহার বাল্য সঙ্গীগণ পরে এক এক দিকপাল হইয়াছিলেন। महित्व मधुरुपन पछ, जृत्व द्राशीशाम, জ্ঞানেক্রমোহন ঠাকুর, প্যারিচরণ সুরুকার প্রভৃতি এই সময়কার ইতিহাসধানি অতি স্কর ভাবে প্রাফুট করিয়াছেন! জন ইুয়ার্ট মিল ভাঁহার আত্মচরিতে লিখিয়াছেন; তাঁহার **জীবনীতে** তাহার বাল্যকালের ইতি--

হাস্টা বর্ণনা করা প্রয়োজন, কারণ ঐ সময়-কার শিক্ষাপ্রণালী চিন্তার বিষয়! বাস্তবিক রাজনারায়ণ বহু মহাশল্পের শৈশবে শিক্ষাপ্রণালী প্রচলিত ছিল—ভাহার ফলাফুলই বা কিরূপ হইয়াছিল, তাহা বঙ্গের আতীয় ইতিহাসের বিষয়। সেই সময় ইংরাজি শিক্ষা-স্রোতে ষেমন নুতন জ্ঞান আসিয়াছিল-তেমনি সঙ্গে সঙ্গে সেই স্রোতের উপর অনেক আবৰ্জনা আসিরা বঙ্গদেশ কলুবিত করিয়া কেলিয়াছিল। মন্ত্রপান ও আমুসঙ্গিক বৈদেশিক ক্রচি, আচার ব্যবহার তথনকার সভ্যতার একটা অঙ্গ ছিল। কিছ তথনকার দিনে যেরূপ জ্ঞানপিপাসা ছিল এখন সেরূপ দেখা যায় না। তথন ছাত্রাবস্থায় **অনে**কে অতি স্থকঠিন দর্শনগ্রন্থ পাঠ করিয়া ফেলিতেন এবং তাহা লইয়া আলোচনা করিতেন।

ছাত্রাবস্থায় রাজনারায়ণ "পবলিক্
স্পিরিটের" পরিচর দিয়াছিলেন। হেয়ার সুলে
পড়িবার সময় তিনি স্বয়ং হস্তবন্ধে মুক্তিত
একটি সংবাদ পত্ত প্রতি সোমবায় বাহির
করিতেন। ছাত্রজীবনে তিনি যে সকল
মনস্বী শিক্ষকের অধীনে বিস্থাভ্যাস করিয়াছিলেন। শিক্ষকের প্রভাব ছাত্রগণের উপর
যথেষ্ট কার্য্য করিয়াছিল। তাঁহার সহধ্যারী
জ্ঞানেক্রমোহন ও মধুস্দন খ্রীইণ্র্য অবলম্বন
করেন। রাজনারায়ণও প্রচলিত হিন্দুধর্ণ্যে
ভক্তিবান্ ছিলেন না।

আমরা ভনিরাছি লালাবাবু দিনাত্তে একদিন সামান্ত এক স্কৃতিরের সাম ভূনিরা সহসা
সন্ত্যাসধর্ম অবলয়ন করেন। মহর্ষি দৈকেরনাথ





ঘটনাক্রনে উপনিবলের একথানা ছেঁড়া পাড়া शिष्ता वर्षकीयम थारवण गांख करवम। রাজনারারণও Cyruse's Travel by Chevalier Ramsay পাঠ ব্রিয়া পৌত্তলিক ধর্ম্মের উপর অবিখাসী হইরা উঠেন। তৎপরে মহাত্মা রামমোহম রারের appeals to the Christian Public in favour of the Precepts of the Jeasus; an Channing এর গ্রন্থ পাঠ করিয়া তিনি মনে মনে Unitarian ভাবাপন্ন গ্রীষ্টান হন। তৎপত্নে সেণ সাহেবের কোরাণ ও গিবনের রোম রাজ্যের ইতিহাসের করেক অধ্যার পাঠ করিয়া মুসলমান ধন্মের অমুকূলে আকৃষ্ট হইয়াছিলেন। তিনি লিথিয়াছেন তিনি প্রথমে মুসলমানধর্মের ভান করিয়াছিলেন কিন্তু পরে যথার্থই মুসলমানধর্মের পক্ষপাতী হন। ইনি কলেজ ছাড়িবার প্রাকাবে হিউম পাঠ করিয়া 'সংশয়বাদী' হন এবং সর্বাশেষে কলেজ পরি-তাগি করিয়া ত্রাহ্মধর্মের প্রথম প্রচারক, লালা হাজারিলালের সংসর্গে আসিরা ১৮৪৬ সালের যথারীতি প্রতিজ্ঞাপত্তে প্রাবজ্ঞ ত্বাক্র করিয়া ব্রাক্ষধর্ম গ্রহণ করেন। সময় হইতে তিনি মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথের সহিত ঘনিষ্ঠরণে পরিচিত হইয়া ব্রাক্ষণভার কার্য্যে যোগদান করিতে আরম্ভ করেন।

১৮৪৮ সালের প্রথমে সমাজের কার্যালরের সহিত—কার্ব্যের সহিত নহে—সম্পর্ক
পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হন। তৎপরে ১৮৪৯
সালের মে মাসে সংস্কৃত কলেজের থিতীর
ইংরাজি শিক্ষকের পদে নিযুক্ত হন। ১৮৫১
সালে ক্ষেন্দ্রারী, মাসে সংস্কৃত কলেজ হইতে
মেদিনীপুর জেলা স্কুলের প্রধান শিক্ষকের

পদে প্রতিষ্ঠিত হইরা দীর্ঘ ১৫ বংসর ধরিরা বশের সহিত ঐ কার্ব্যে নিযুক্ত ছিলেন। পরে শিরঃপীড়া রোগে আক্রান্ত হওরার তাঁহাকে ঐ কার্য্য পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইতে হর। ঐ সমরে জিনি বে বে কার্য্য করেন তাহা সংক্ষেপে নিম্নে লিখিত হইল।

- (>) মেদিনীপুর ব্রাক্ষসমাজের পুনঃ সংশোধন ও উন্নতি সাধন।
- (২) **জা**তীয় গৌরব সম্পাদনী সভা-সংস্থাপন।
 - (৩) হ্রাপান নিবারণী সভা স্থাপন।
 - (৪) বালিকা বিখ্যালয় প্রতিষ্ঠা।
- (৫) বক্তৃতা প্রদান, ধর্ম্মতত্ত্বদীপিকা ও ব্রাক্ষধর্মাধন গ্রন্থ প্রচার।
- ' (৭) Defence of Brahmoism and The Brahmo Samaj নামক বকুতা প্রায়ন।

মেদিনীপুরে থাকিয়া তিনি যেরূপ পরিশ্রম করিতেন তাহার বিস্তৃত কাহিনী তাঁহার গ্রন্থে বর্ণিত আছে। বলা বাছলা, শুধু ধর্ম কেন, তিনি এদেশের সামাজিক ও শারীরিক উর্নতি করেও যথেষ্ট সচেষ্ট ছিলেন। মেদিনীপুরে থাকিতেই তিনি রাক্ষধর্মাবলমীগণের মধ্যে একটি নৃত্ন প্রথা প্রবর্জিত করেন—সেটি নৈসর্গিক শোভার মধ্যে কথনো কথনো উপাসনা! বসস্তকালে গো গিরিতে তাঁহাদের বসস্তোৎসব হইত। এই উপলক্ষে তিনি প্রতি বৎসর বে সকল বক্তৃতা করিয়াছিলেন, তাহা "বসন্তক্ত্রন" নামে পরে প্রকালারে প্রকাশিত হয়। মেদিনীপুর পরিত্যাগ করিয়া তিনি বে সকল কার্যা করিয়াছিলেন তাহার প্রধান করেকটা নিয়ে উলিখিত হইল।

- (>) जाञ्चिमिरशत्र मञ्जूषां निवात्र ।
- (২) হিন্দুধর্মের শ্রেষ্ঠতা বিষয়ে বক্তৃতা।
- (৩) ব**ঙ্গভা**ষা ও সাহিত্য বিষয়ক বক্তভা।
- (৩) ^{*}বৃদ্ধ হিন্দুর আশা' নানক পুত্তক প্রেণয়ন।
 - (er) সেকাল ও একাল বিষয়ক বক্তৃতা।

১৮৫৬ সালে বিধবা-বিবাহের আন্দোলন উঠে। তৃতীয় ও চতুর্থ বিধবাবিবাহ তাঁহার জাঠতুতো ভাই ছগানারায়ণ বস্তু ও তাঁহার সহোদর মদনমোহন বস্তু করেন। সংস্থার সম্বন্ধে তাঁহার কার্য্যতঃ সহাস্তভূতি ইহাপেক্ষা আর অধিক কি হইতে পারে ? বলা বাছল্য এইজগু তাঁহাকে বথেই নির্যাতন সহু করিতে হইয়ছিল—কিন্তু কিছুতেই তিনি বিচলিত হন নাই।

পরে স্বাস্থ্য উরতির আশার উত্তর পশ্চিম প্রদেশে ব্রমণ করিতে গিয়া এলাহাবাদ লক্ষে), কানপুর প্রভৃতি স্থানে তিনি ব্রাক্ষধর্মের কল্যাণকরে বথেষ্ট কার্য্য করেন। তিনি রাক্ষণরের অবস্থিতি করিতেছিলেন,— তাহার কিছু পূর্বের মহাক্ষা কেশবনক্ত আদি ব্রাক্ষসমাজ হইতে বিচ্ছিন্ন হইরা পড়েন। এ সমর আদি ব্রাক্ষসমাজ ও ভারতবর্ষীর ব্রাক্ষসমাজ উভয়ের মধ্যে বিলক্ষণ বিরোধ চলিতেছিল। ঐ বিরোধের কারণ এখন ঐতিহাসিক তথ্য হইরা পড়িরাছে এ বিষরে আলোচনা অনাবশ্রক। ইহার পর আলোচ্যা প্রন্থে তাহার জীবনী ধারাবাছিক বর্ণিত হং নাই। প্রসঙ্গতঃ

হু একটা কাৰ্য্যের **উলেপ পাছে।** এবং প্রমুখানিও অসম্পূর্ণ।

बोकनोबोबन वांतू दर नमरब क्या शहन করিয়াছিলেন তাহা যেন সভাৰুগ বলিয়া মনে হয়। রামগোপাল ঘোষ, রামভছ লাহিড়ি. "রাজেন্দ্র মিডির" বারিক মিত্র, বিষ্ণাশাগর. कृष्णमान भाग, महर्षि (मन्द्रमाध, द्रम्भवहत्त्र हैशत्राहे त्र यूर्णत मनत्रो । এখन এ यूर्ण चात्र এক্লপ বিশাল প্রকৃতি ও বৃদ্ধিমান লোক জন্মিতেছে না ' শৈশৰ হইতে রাজনারারণ চিম্বানীল। কালসহকারে সেই বুজি পরিপুষ্ট হইরা তাঁহাকে গভীর চিস্তাশীল করিয়াছিল। তিনি চিরদিনই স্বজাতি ও স্বদেশী ভাবের পক্ষপাতী-তথনকার দিনে যথন মাতৃভাষা ব্যবহার ঘূণার কথা ছিল তখন তিনি খাটি বাংলা ভাষা ব্যৰহার শিক্ষক রূপে কত ছাত্রকে স্বদেশী ভাবাপর করিয়াছেন কে জানে! তাঁহার নীরৰ প্রভাব পমাজের উপর কতদিকে কত ভাবে কা**জ** করিয়াছে আমরা তাহা সম্পূর্ণ ভাবে আনিতে বা ব্ঝিতেও পারি না। সত্যের প্রতি তাঁহার স্থগভার অনুরাগ অনেক সময় তাঁহাকে লোক গঞ্জন-ভাগী করিয়াছে তথাপি তিনি সত্যের পথ হইতে কথনও বিচলিত হন নাই। এ বিষয়ে তিনি বন্ধুবান্ধবের মুখাপেকী ছিলেন না: সত্যের অন্ধরোধে অনেক সময় বন্ধদের নিকটও তাঁহাকে অপ্রির হুইতে হইয়াছে। তাঁহার আত্মচরিত আমরা দেশের আবালবৃদ্ধবনিভাকে পড়িতে অমুরোধ করি।

পোষ্যপুত্ৰ।

পূর্ব্বে বে শোকসম্বর্থ অকালযুদ্ধ শীতল
প্রকৃতি শ্রামাকান্ত চৌধুনীর সহিত আমাদের
সাক্ষাৎ হইরাছে তিনি চিরদিন এমন ছিলেন না।
এমন একদিন গিরাছে যেদিন এই জমীদার
চৌধুরীর নামে তাহার অধীনস্থ সাতধানা
ভালুকের লোকে ধরহরি কম্পিত হইত।
"ঠাহারনামে বাবে গরুতে এক বাটে জল থাইত
বলিয়া" এখনও একটা অবিখাস্ত প্রবাদ কথা
দেশে চলিত আছে। শ্রামাকান্তের অনেকগুলি পুত্র কস্তার মধ্যে অবশিষ্ট একমাত্র পুত্র বিনোদের মা যথন তাহার সাধ্রের সংসার
পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া যান তথন সে দশ
বৎসরের বালক মাত্র।

জনীদারের একমাত্র পুত্র ভাহাতে আবার নাতৃহীন হইল—মাসী পিসি ও পাড়াপড়সী সকলকার অপর্যাপ্ত আদরে সে একেবারে নাথার চড়িয়া বসিল। প্রথমে বেলি আদর দিয়া ফেলিয়া পিতাও অবশেষে অমৃতপ্ত হইরা উঠিলেন।

তাঁহার ইচ্ছা পুদ্র কলেকের ছেলেদের
মধ্যে প্রথম শ্রেণীর আসন গ্রহণ করে। কিন্তু
পূল লেখাপড়ার প্রতি উদাসিস্ত প্রদর্শন
করিয়া পরীব প্রজাদের ঘরে, তাঁতিজোলার
সংক্ষ সক্ষে ঘ্রিতে ভালবাদে। কেমন করিয়া
স্তাস' ও যোগ' করিতে হর আচার্য্য মহাশরের নিকট তাহারি ভন্থামুসন্ধান করিতে
যায়। সমস্ত মোহমুদারটা মুক্ত করিয়া
আর্তি করিয়া বৈড়ার কিন্তু স্থলের পড়ার
বেলার মান্তার একটু পীড়াপিড়ি করিলেই
তাঁহার সহিত ভক্ক করিয়া বলে, ওসব ছাই

ভন্দ পড়ে কি হবে। দেখিয়া শুনিরা ক্র পিতা রাগিরা একদিন পুত্রকে অত্যস্ত ভর্ৎ দনা করিলেন বলিলেন "বদি কেল হোস্ তো আমি কাশী চলে যাবো"। বিনোদ পিতার ভরে পাঠাভ্যাস করিতে লাগিল। তাহার বৃদ্ধির অভাব ছিল না, কর মাস পরে সম্মানের সহিত সে পরীক্ষোত্তীর্ণ হইল। স্থামাকাস্ত পরীক্ষার ফল জানিতে শ্বয়ং কলিকাতার আসিরাছিলেন। পিতা পুত্র উভরেই এসমর নিমন্ত্রিত হইরা রজনীনাধের বাড়ী বাস করিতেছিলেন,।

আজি কালিকার দিন ব্যবসা বাণিজ্য শিক্ষার জন্ম বিলাত যাত্রা উচিত কিনা একদিন সন্ধ্যায় এই বিষয়ে তাঁহাদের মধ্যে একটা তর্ক উঠিল। স্থামাকাম্ব এই অনার্য্য মতের বিরুদ্ধে তীব্রকণ্ঠে প্রতিবাদ করিয়া উঠিলেন। উভয় পক্ষে বেশ একটি বাক্য রজনীনাথ ধারভাবে যুদ্ধ বাধিয়া গেল। कहिलन "आभनामित्र मध्य त्क्हे द्वाध হয় অস্বীকার করিবেন না যে আমাদের (मर्भ मधाक्तरं विकान ठकीं प्रशासन দাড়াইয়াছে। इहेग्र আমাদের इहेट वृद्धिमान यूनक निर्काठिङ इहेन्रा ইউরোপ ও আমেরিকার বিজ্ঞানশিকা করিতে যাওয়া কৰ্দ্তব্য।

"কিছ বিজ্ঞান শিক্ষার আবশুকতার জন্তু দেশত্যাগ করিবার আবশুক কি ? দেশে থাকিরাও কি বিজ্ঞান চর্চা করা চলে না ? কেন ইউরোপ হইডে শিক্ষিত লোক আনিরা বিদ বড়লোকেরা কল কারথানা স্থাপন করিয়া শিক্ষার উপায় করিয়া দেন তাহা হইলে তো চলিতে পারে। তবে শিক্ষার ছল করিয়া শান্ত বিগহিত পথাবলম্বনে প্রয়োজন কি ?" রন্ধনীনাথ অভিশয় উত্তেজিত ভাবে ইহার প্রতিবাদ আরম্ভ করিলেন।

এইরূপে উভয় পক্ষে বাদামুবাদ চলিতে লাগিল, বিনোদকুমার একপাশে বসিয়া অত্যস্ত আগ্রহের সহিত সমস্ত ভনিতে লাগিল এবং প্রস্তবে যেমন চিরস্থায়ী চিহ্র অন্ধিত হইয়া যায় তেমনি করিয়া রজনীনাথের সভ্যকথা গুলা তাহার মল্ভিক্ষের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া বসিতেছিল। यथान्यात्व जाँहारमञ्ज वामाञ्चवान (भव इट्टेन) त्रजनौनार्थत्र कथारे यूक्तिपूर्व, किन्न यूक्ति শ্রামাকান্তের মর্ম্মপর্শ করিল না, তিনি হার মানিতে চাহিলেন না, অসার তর্কে স্বপক সমর্থনে প্রবৃত্ত হইলেন, রজনীনাথ গতিক বুঝিয়া ক্রমণ অন্ত কথা পাড়িলেন। শ্রামাকান্ত ভাবিলেন--তাঁহারই জয়। কিন্তু বালক বিনোদের বিচারে পিতা সম্পূর্ণ পরাজিত হইলেন। বিনোদ রজনীনাথের সমস্ত কথা ভলি একান্ত সভা বলিয়া গ্রহণ কবিল। সে ভাবিল সতাই শিল্পবিজ্ঞানশিক্ষাই আমাদের পতিত জাতির উদ্ধারের একমাত্র পথ-- ইংরাজ-বণিকগণ বিদেশীয় দ্রব্য আনিয়া আমাদের মুখের গ্রাস কাড়িয়া লইতেছে তার আমরা ভাহার প্রতিকার চেষ্টা না করিয়া কেবলি হাহাকার করিতেছি অথচ ইহার প্রতিকার কত সহজ।

পরদিন কলেটের ক্রেট্কু সারিয়া স্থামাকান্ত চৌধুরী রক্তনীনাথের সহিত তাঁহার গৃহে ফিরিয়া যখন জলবোগে বসিয়াছেন এমন সময় গৃহস্থামীর পাঁচ ছয় বংসরের ক্তা শান্তিলতা তাহার ক্তা নীলাম্বী সাডির অঞ্চলে

মাধার কালোচ্ল ঢাকিরা মোটা যোটা শুভ্রহন্তে পানের ডিবে লইরা শীর্টানের স্থ্নীন হইল।

বালিকার অমান কচি মুখধানিতে অর্থের জ্যোতি, পুলপুট তুল্য অধর প্রাক্তে মধুর व्रवनीनाथ (TICA বসাইলেন, সে পিতার আৰু ইইতে আতে বাত্তে নামিরা দাঁড়াইরা চুপি চুপি পিভাকে একটু ধমক দিল "আমি এখন বড় মেয়ে হয়েছি কোলে বস্বো কি, কাৰ কৰ্মো না ?" ওনিয়া স্থামাকাম্ব शमिया डिफिलन "সভািই তো মস্ত মেৰে হয়েছে বে. বা: আবার ঘোমটা দেওয়া হয়েছে ! এস তো বুড়ি কেমন বউ হয়েছ দৈখি"—সপ্রতিভ বালিকা সচ্চন্দে অপরিচিতের নিকট গিয়া দাঁড়াইল: খ্রামাকান্ত সম্বেহে হাসিয়া বলিলেন "বাপের উপব্রু মেরে বটে ! রজনীবাবু আপনার মেরে ত বড় क्रमती। यात्मत्र (वो हत्व छात्मत्र चत्र व्यात्मा কর্বে। হাঁগা শন্ত্রী তুমি আমার বউমা হবে ? পার্শ্বোপ্রিষ্ট বিনোদ কুমারের মুখ লজ্জায় লাল হইয়া উঠিল সে এতক্ৰ নিঃসম্ভোচে কুদ্ৰ বালিকাকে দেখিতেছিল কিছ এখন বাধ্য হইরা ভাহাকে মাথা নীচু করিতে হইল। বদিও সে জানিত তাহার পিতার এ তামপার মধ্যে একবিন্দুও সত্যের আলোক नारे किनन! त्म अहीयन वरमदात्र बुवक विवः त्रकनीनारभन्न कञ्चा छत्र वश्यत्र वन्नत्रा बाणिका

রজনীনাথ সকৌভূকে হাসিয়া বলিলেন "বেশ তো আপনি আমাৰ মেয়েটা নিরে আপনার ছেলেট আমার দিম না, আমি ওকে মেকানিকাাল ইঞ্জিনিয়ারিং শিখতে বিলেড

মাত্র।

পাঠাই। এমন বৃদ্ধিমান উর্বভিশীল ছেলেই তো আমালের ভবিষ্যৎ ভরনা।"

এ ভাষাসা প্রোচ ক্ষরীনারের ভাল লাগিল না ভিনি ইহাতে ক্ষান না দিবার ভাল করিরা শান্তির অংগাল নরৰ হাতথানি ধরিরা ভাহাতে কাছে টানিয়া লইলেন। "কেমন বৃড়ি আমার বৌমা হবে ভো? আমার বাড়ী গিবে আমার পান সেজে দিতে পারবে?"

নির্নজ্ঞা বালিকা পিতার সমুথেই অপরিচিতের প্রস্তাব অহুমোদন করিয়া খুদী হইয়া বলিল "হবো, আমি পান দাজতে পারি, কমলানের ছাড়াতে পারি, কলাই হুঁটী ছাড়াতে পারি, দব পারি।"

উভরে হাদিরা উঠিলেন। বিনাদ ঈবৎ হাদিল কিন্তু তাহার মন তথন চক্ষণ হইরা উঠিয়ছিল; সে ভারি অন্যমনা হইয়া ভাবিতে ছিল "রজনী বাবু যা বল্লেন বাবাতো তা কানেও তুলেন না, বোধ হয় তামাসা বলে গ্রাহই কল্লেন না। কিন্তু আমি এই প্রভিজ্ঞা কল্লেম আমি বিলেড বাবই যাবো; আর এদে রজনী বাবু যেমন বলচেন তেমনি করে দেশের উপকার করবো, এতে আমার যতো বাধা বিল্ল ঠেলতে হয় সব তাতেই আমি প্রস্তুত আছি। সভ্যা, আমরা কি মাসুষ! নিক্তম নিকৎসাহ শেকলবাধা কুকুরের মত জীবন—এ কি মাসুষের জীবন!"

শ্রামাকাস্ক বলিলেন "রজনীবাবু বিনোদের উপযুক্ত একটা পাত্রী স্থির করে দিতে পারেন? বিনোদের বিমের জন্য আমি বড় ভাবনার পেড়েছি; বটক ব্যাটারাও জালাচেচ, একটা স্ক্রমী মেরে পোলে শীগ্রই विद्य मित्र स्कृति, श्रामात्र एक श्रीत्वत १३ मित्र नव भूता—त्वीमा ना करन श्रात्र मानाव ना। नश्रीकोन नश्मात स्वत श्रामान क्टब श्राह्म।

রজনীবার একটু হতাশভাবে বলিয়া উঠিলেন "বিষে! এখন কেন? এত অন্ধ বয়নে বিষে দেওয়া উচিত নয়। বিনোদের মত ছেলের এখন অনেক উন্নতির আশা আছে; অসমন্ধে বিবাহ দিলে সমস্তই ধুলিসাং হয়ে বাবে।"

"না হে না তোমরা নব্য ভদ্রের লোক তোমরা এখন সাহেবদের মতন বুড় করে हिल स्मरवद रव रम ख्वा जानवारमा ; स्मृहो মহৎ অনিষ্টকারক; আমাদের সেই সাবেক চালই ভাল। আমার যথন বিবাহ হয় তথন আমার বয়স বার বৎসর আর বিনোদের গর্ভধারিণী তথন সাত বংসরের। আমি যদিও নিতান্ত বালিকা পছন্দ করি না; দশ এগারো বৎসরের একটা ভদ্র ঘরের মেয়ে চাই। কিন্তু মেয়েটী খুব স্থলরী হওয়া চাই"---বলিয়া ক্রোড়স্থা শান্তিকে চুম্বন করিলেন, "এই এমনি বউটী আমি চাই, পাবোনা? আহা বুড়ি যদি হ বছর আগে আসভিদ ?" ब्रुक्रनीनाथ क्रेयर स्वरुशस्त्र कनाव पित्क একবার নেত্রপাত করিয়া মৃত্ হাসিলেন; "কেন পাবে না আছো আমি দেধবো, জ্বগংপুরের ভাহড়ীরা আমার মকেল তাদের বাডি একটা মেয়ে আমি একবার দেখেছিলাম সেটি আমার লতির চেম্বেও স্থন্দর।"

"এর চেমে স্থার কি আছে রন্ধনীব। বু!"
বিনোদ পিতার এই অসমরোপবোগী
প্রস্তাবে মনে মনে একটু বিরক্ত হইরা
উঠিতেছিল। কিন্ত তাঁহার বাণিকার

প্রতি অত্যধিক আকর্ষণের উক্ত কথার দ্বীয় কেন্ত্রিক সহিত গোপন কটাক্ষে একবার তাহার দিকে চাহিল। বালিকা তাহার পিতার ক্রোড়ে বসিয়া তাঁহার চেইন ধরিয়া নাড়া চাড়া করিতেছে, তাহার মাথার কাপড় খসিয়া পড়িয়াছে; শুচ্ছ শুচ্ছ কালো চুলের মধ্যে প্রফুল ফুলর মুখটা সবুজ পাতার মাঝানে গোলাপের মত বেন ফুটিয়া রহিয়াছে। বিনোদের মনে একটা মেহের ভাব উদর হইল।

বাড়ী গিয়াই বিনোদ বিলাত যাইবার কথা পাড়িল। একপক্ষে অস্থনর উপরোধ অন্যপক্ষে তিরস্কার তাড়না চলিল। ইহার শেষ ফল ফলিল বিনোদ দৃঢ়ভাবে বলিল, "সে বিলাত' যাইবেই; পিতা হইয়া পুত্রের উরতিতে বাধা দেওয়া তাঁহার উচিত নয়।"

পুত্রের ধহুর্ভক পণ দেখিরা পিতা রাগিরা তাহাকে বথেচ্ছ কটু ভাষা প্রয়োগ করিলেন; "যদি তুই এমন বেলিক-মত না ছাড়িস তো व्यामात्र वाष्ट्रि (श्टार पृत्र रात्र या, व्याक (श्टार আমি তোর মুখ দেধবো না; ভুই আমার তাজা পুত্ৰ! ভোর জন্য আমি জাত হারাবো? তার চেরে অপুত্রক হওয়াও ভাল।" বিনোদও দুঢ়দংকর। সে দেইদিনই পিছুগৃহ ভাাগ ক্রিয়া চলিয়া গেল। নবীন জীবনে লোকে স্থুদুর অন্ধকার কল্পনা করিতে পারে না-আশার স্থালোকে তাহার প্রাণমন এমনি আলোকিত করিয়া রাখে! বিনোদ ভাবিল দে যেমন করিয়াই হোক বিশাভ ষাইবে। এবং যথন ক্লুতকার্য্য হইয়া দেশে ফিরিবে তথনই পিতার সহিত দেখা করিবে, ভাহার পূর্বে নহে।

मगादनाह्ना।

चरमन-कूर्म। बन्नन्ती मन्नामक बैद्रुक সুধাকৃষ ৰাপচি প্ৰণীত। . কলিকাতা, ইণ্ডিয়ান পাব-निनिर राष्ट्रम कर्डक धकानिछ। मुना हुरे আনা মাত্র। গ্রম্থানি বদেশী ছ্রার সমষ্টি! নেধকের উদ্দেশ্য সাধু এবং অভিনব তজ্ঞ্ঞ তিনি मकरमब ध्यवीरमञ् शादा। ভবে গ্ৰহানিতে লেবকের অক্ষমতা প্রতিপত্তে লাজ্যনান হইয়া উট্টিরাছে। ছন্দের সরলতা ও সরস্তাই ছড়ার প্রাণ, কিন্তু খণেশ-কুস্থধের ছড়াওলিতে না আছে ছন্দ, ৰা আছে সরসভা। 'বদেশীর ধুলা-ধরা রচনাবাত্রই रि माहित्या शान भाहेर्त, अमन क्या नाहे। बह ट्यंभीत लिथकश्र त्र कथांकि यत्न त्रांश्यन ना विश्वाहे 'বদেশীর' নামে বাঙলা সাহিত্যে আজ হালি-রালি উঠিতেছে। देश श्रामती बा व्यारक्ता करिया সাহিত্য কাহারো পক্ষে গৌরবের কথা বলিয়া মনে

হয় না! "জন্মভূমির সেবা থোক। করবে সব সময়। আর করিবে দেশের যাতে মহান্ উপকার হয়!" "ছিলেন রাগীগঞ্জে রমাকান্ত রার বহাশার; সব আাগে বাঙলাদেশে তিনিই কলন করে গ্যাছেন লাভীর বিদ্যালয়!" প্রভৃতি হড়া বে শুধু 'দংট্রচুর্বকারী' ভাহা নহে, ভাষা ও সাহিত্যের প্রভিও রীভিমত

বিবাহ-মঙ্গল। শ্রীমুক্ত বিশ্বেশন শানী। ব্রহ্মচর্যাক্রম, বোলপুর। প্রকাশক, শ্রীমুক্ত মণিলাল গলোপায়ার। ২০ কর্ণভরালিস ব্লীট কান্তিক প্রেসে মূলিত। মূল্য ১/০ হর জারা বারা। ব্রেরসংহিতা, ব্যাসসংহিতা, অথকাবেদ, মুম্ন প্রকৃতি হইতে বিবাহের মন্ত্র, বরবধুর আক্রিবাদ, প্রার্থনা, পার্তপারীর লম্পর্ক ইত্যাদির নিপুণ অন্ত্রাম্ব সরল ও প্রান্তল ভাষায় প্রস্থানিতে সংস্কৃতীত ও লিপিবছ হইরাছে। পরি-

শেবে কৰিবর রবীশ্রেনাথ রচিত বিষয়োপঘোগী তিনটি
সঙ্গীতও সরিবিট হইয়াছে। সংস্কৃতের অসুবাৰগুলি
বালিকানববধ্রও স্ববোধা। গোলাপী নলাটে লাল
শিক্রের বাধাই, ও লালকালিতে পরিধার ছাপাটুর্
উৎসবের মঞ্চল আলোকচ্ছটার ক্যার বিবাহিত জীবনের
হায়ী মঞ্লেনের ওভগ্তনা করিভেছে। বজুবাজব বা
আন্ত্রীয় মঞ্জনের ওভগ্রিপরে উপহার প্রাণনের
নিমিন্ত জনেকে বনোক্ত গ্রন্থের অধ্যেবৰ করিবা গাকেন,
এই গ্রহ্বানি সেই সমর উপহার দিবার পক্ষে বে সম্পূর্ণ
উপ্যোগী, তাহা আমরা জসভোচে বলিতে পারি।

সারস্বতকুঞ্জ। গদাসাহিতা। এীবৃক্ত কেদার-नाथ मञ्जूमनात, अम, आत, अम ! क्खनीन अधरम মুদ্রিত। মূলা আট আনা। রাজসংক্ষরণ এক টাকা। लिथक অভিসংক্ষেপে এই এছে बांडाना भना সাহিত্যের পরিচয় দিয়াছেন। গ্রন্থের প্রথমাংশে গুদা সাহিত্যের ইতিহাস-বর্ণনালার সৃষ্টি হইতে আরম্ভ ক্রিয়া আধুনিক সাহিত্য প্র্যাত্ত-২৭ পুষ্ঠার বর্ণিত इट्याहि ७ (भवाराम २) शृक्षांत्र व्यक्त्रकृमात्र, त्रेचदित्त, विकारम शाबीहान, भीनवजू, जूरनव, विस्तानाव, छ काली अगरब्रब कांछ मः किस बीबनी अ अञ्च निविद्य ! এরপ 'চুট্কি' রচনার বিশেষ সার্থকতা না शकिल् इंश दाता अधान अधान माहि जिन्तिगरक আমরা জানিতে পারি:-ভাহাও কম কথা নতে। তবে লেখকের ভাষা খানে ছাবে নিভাস্তই ইউট। দুটাত্ত্বরূপ ছ একটির উল্লেখ করা বাইতে পারে— "জীবনগাতা নির্মাহের কোলাছলের ভিতরে কবিত ভাষার জন। ইহা ব্যস্তভার সময় মূখ হইতে বহির্গত হইয়া একের মনের ভাব অস্ত্রের নিকট ব্যক্ত করে।" ভাৰীয় প্ৰতি আজিকালিকার লেৰক সম্প্ৰদায়ের বড়ই উদাসীভ শক্ষিত হইছেছে,—ইহার কারণ কি ?

দেবলৈয়। মাসিকপত্র ও সমালোচন। প্রথম ভাগ বৈশাধ, জ্যৈষ্ঠ, ১৩১৬। অগ্রিম বার্থিক মূল্য ১০ মাত্র। কার্থানার ২১ ১০০২ কর্পন্তমালিস ফ্রীট, কলিকাভা। 'ক্সোডে' বী মুক্ত রামানন্দ চট্টোপাধ্যার বলিতে, হন, "ধর্মেও সকল মাস্থাধের একত্রে দীঘ্টাইবার

সাধারণ ভূমি আছে। ইহাতেও সহযোগিতা সক্তব। এই সভাের উপর দেবালয় সমিতি প্রতিষ্টিত। 'দেবা-লর' নামক মাসিকপত্র দেবালয় সমিভিরই মুখপত্র। সকল সম্প্রদারের লোকে দেবালরের উদ্দেশ্য সর্ব রাখিরা ইহাতে ধর্ম বিষয়ক নানা প্রসক্ষের আলোচনা করিতে পারিবেন। এরূপ একখানি পতিকার প্রয়োজনীয়তা বিশেষরূপে অমুভূত হইতেছিল। ৰ্শ্মকথা বলিতে হইলে প্ৰচাৰক বা শিক্ষক এমনি গভীর হইরা বদেন যে সাধারণের পক্ষে ভাহার মুদ্মগ্ৰহণ করা ছংগাধা ব্যাপার হইয়া দীড়ায়। 'দেবালয়ে' বেশ সহজ কথার সরলভাবে নানাবিধ ধর্মের আলোচনা ভবিবাৎ শুভফলের সুচনা করিতেছে। পূর্বে যাত্রা কথকতা প্রস্তৃতির মধ্য निश्रा श्वीत्नांत्रना जाबाब्रानेव शक्क द्यमन स्वादा ডেমনি ফুলডও ছিল। আল ভাহা লার নাই--বাহারা কথকতা প্রভৃতি করিতে বনেন ভাঁহাদের मस्य जात्वक है हां नाड़िया बाद्य क्यांबर बंड উড়াইয়া বান, ইহার ফলও তেমনি হইতেছে। সুভয়াং 'দেবালয়ের' প্রতিষ্ঠায় বিশেষ উপকারের সম্ভাবনাই মনে করি। তবে একটি বিনীত बिरवमन, रमवालरदेव रलबक्यन धर्मारलावना कारल সকল প্ৰকার সম্প্রদায়িক বিষেষ যেন পরিত্যাগ করেন। বাঁহারা লোকশিকা কার্যে ব্রতা হইবেন জাঁহা-দিপের হৃদ্যে উদারতার অভাব ঘটলে সকল কার্যাই বিভ্ৰমা হইরা পড়ে। বিষেষ সমাজের নিমন্তরের লোকের মধ্যে আবদ্ধ থাকিলে সেরূপ ক্ষতির সম্ভাবনা নাই, কিন্তু উদ্বন্ধরে উঠিলেই আশহার কারণ ঘনীভূত इहेब्रा डेळे।

একটি কথা, শান্তিমনীর পরিচয় প্রদানের জপ্ত লোকের নিকট আমরা কৃতক্ত। শান্তিমরীর কবিতার উদ্ধৃত অংশসমূহ বিশেব উপভোগ্য। আশা কিং শান্তিময়ীর কবিতাগুলি শীঅ প্রকাশিত হইয়া কাব্য! মোধীর চিন্তরঞ্জন করিবে ও কাব্য সাহিত্যেও আপনার উপযুক্ত স্থান সংগ্রহ করিয়া লইবে।

শ্বিসভারত শর্মা।

চিত্ৰ-ব্যাখ্যা।

বিরহী বক্ষ-শ্রীযুক্ত যামিনী প্রকাশ গঙ্গোপাধ্যার কর্তৃক অন্ধিত চিত্র হইতে। মেঘদূতের বিরহী যক্ষের বিষর সকলেরই স্থপরিস্কৃতি। নির্কাগিত হক্ষ "তাযাচ্ন্ত প্রথম দিবসে" মেঘ দেখিয়া উদ্ভান্ত চিত্তে অচেতন মেঘকে প্রিয়ার নিকট দৌত্যে প্রেরণ করিতেছেন।

"প্রভ্যাসয়ে নভসি দয়িত।জীবিতালখনাখী জীমুভেন স্কুশলময়ীং হারয়িয়ান্ প্রবৃত্তিম্। স প্রভাগেঃ কুটজকুস্টমঃ কলিতাখার ওগৈ প্রীভঃ প্রীতিপ্রমুখ্যচনং খাগতং ব্যাজহার।"

সন্ত প্রাকৃতিত কুটজকুসুমধারা অর্থ্য রচনা করিরা পর্বতি সাহসংলগ্ন মেঘকে ফক সম্বোধন করিতেছেন। ইহাই শিল্পীর পরিকল্পনা।

অথার্দ্ধরাত্রে স্থিমিত প্রদীপে— এই স্থারক্রনাথ গঙ্গোপাধ্যায় কর্তৃক অভিত চিত্র ইইতে। প্রীরামচক্র স্বর্গ-প্রস্থিত ইইলে

তদীয় পুত্ৰ কুশ উত্তৰাধিকায়ী মনোনীত হন। তিনি তৎকালে অবোধ্যা হইতে কুশাৰ্ঠী নগরে অবস্থিতি করিতেছিলেন। একদিন অর্দ্ধরাত্তে ভিষিত-প্রদীপে শ্ব্যাগ্রহ কুশ জাগ্ৰত হইয়া দেখিলেন এক অদৃষ্টপূৰ্বা রমণী প্রোষিত ভর্কার বেশে কুভাঞ্চলি হইয়া তাঁহাকে সম্বর্জনা করিতেছেন। কুশ (পুর্বার্দ্ধ-বিস্টতন্তঃ) উর্দ্ধীর উন্নত করিয়া শ্যার উঠিয়া বদিয়া তাঁহার পরিচয় বিজ্ঞানা করিলে त्रमणी विनातन "आमि अयोधा नगतीत অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। আমার শোচনীয় দশা উপস্থিত। আপনি অযোধ্যাতে প্রভ্যাবর্তন করিয়া আমাকে স্নাথা করুন।" রঘুবংশের বোড়শ সর্গে বণিত উপাখ্যান হইয়াছে। তদমুদারে এই চিত্র পরিকরিত। অযোধ্যাধিষ্ঠাত্রী দেবতার অস্পইতা ও কুশের বিমন্তাব সহজেই অমুমের।

রাজ্যের কথা।

আমাদের নৃত্ন বিচারপ্তি।—আমাদের দেশে কথার বলে যে, পাপের নৌকা যথন ভরিয়া উঠে ভখন বিধাতা ভাহার দপঁচুর্ণ করিবার জন্ত পৃথিবীতে একজন বিশেষ ব্যক্তিকে পাঁঠাইয়া দেন। আমাদের দেশের বর্তমান সকট সমায় প্রধান বিচারপতি জেজিল সাহেবকে সেইরপ বিধাতাপ্রেরিত বলিয়াই মনে হয়। তিনি তাঁহার কুর্মুভার প্রহণ করিয়াই মেরপ কাঁশীনতা, অপক্ষণাতিতা, ভায়পরায়ণতা ও কর্তব্যনিষ্ঠা দেখাইয়াছেন, তাহা আজ্ব কাল এ দেশে নিভাতই ছপ্রাণ্য হইয়া দাঁভাইয়াছিল।

তাঁহার স্থবিচারে বহু ভাকাতির বাসলা হইতে মেদিনীপুর বোসার বাসলার পর্যান্ত বেরুপ পুলিস কলক ও অভ্যাচার কাহিনী প্রকাশ পাইথাতে, তাহাতে আমরা আশা করিতে পারি যে এতদিনে গ্রমেণ্টের চন্দু ফুটিরে। পুলিসের প্রতি উজ্জেপ অভ্যাবিদানে যে কেবল প্রজারই অবলল হইতেছিল তাহা নতে, প্রবেশ্টি নিজ্মেন্ড অমলল ভাকিয়া আনিতেছিলেন বালা। জেছিল আহেব আসিয়ারালা প্রজাউভয়কেই ক্লমা করিতেছেব।

ডাকাতি ও মেদিনীপুর আপিন।

चानिशृदा द्यामात्र नामनात शत श्रेट्ट चामता দেশের বালকগণের নাবে অনেক অভিযোগ श्रुनिनाम । अध् श्रुनिनाम धमन मा, अरनक अखिरगारन जाना का बातक धाकांत कित पथ हरेगा जाता। किस এ श्रिट्स अखिर्यात ७ मध्यिषि य कि अहमन ভাহা আমরা মনে মনে বুঝিলেও, এডদিনে ভাহা व्यामारमञ्ज अधानविष्ठात्रभक्ति (अक्टिन, नारहरवत्र অণক্ষপাত বিচারে জগতের সম্মুখে প্রমাণিত চ্টল। পরে পরে ভিন্টি মামলায় আমরা দেখি-লাৰ, দেশের নিরপরাধ বালকগণ পুলিদের বড়যন্ত্রে অভিৰুক্ত ও বিচারকের বিচারজ্ঞবে দণ্ডিত। বহা ডাকাতির পর পুলিশ কয়েকটি বালককে গ্রেপ্তার क्रिया जांकाल विलया हानान द्वार अख्टियांश শুধু ডাকাতি নহে, ডাকাতেরা আত্মরকা করিবার **চারি পাঁচজন আমবাসীকে হত্যা পর্যান্ত** করিয়াছিল। সুভরাং আইন অনুসারে ইংারা প্রাণদতে দওনীয় ৷ জেকিল সাহেব বিচার করিয়া যে রায় দিরাছেন, তাহা পাঠ করিলে আশ্চর্যা হইয়া ভাৰিতে হয় যে আমাদের পুলিদ যে কেবল পীড়ণ করিতেই প্রস্তুত তাহা নহে, তাহারা নিরপরাধ ব্যক্তিগণের প্রাণৰধেও কৃষ্ঠিত নহে। জেকিল সাহেব অভিযুক্তগণকে মুক্তি দিয়া স্পষ্টই বলিয়াছেন ; পুলিস যে সকল সাক্ষী ও প্ৰমাণ উপস্থিত করিয়াছে ভাহা অবিখাসবোগ্য এবং এই ব্যাপারের মধ্যে পুলিসের নেরপ সংস্রব ও কার্যানীতি প্রকাশ পাইয়াছে তাহা নিতাম্ভ অসক্ত ও অক্তার। অবচ এইরূপ অক্তার নীতি অবস্থন ও কতকওলি অবিখাস্যোগ্য প্রমাণ ও সাকী मध्यह कतिता श्रुनिम करत्रकृष्ठि वानकरक आनम् वा मी शांखरवद कक शांश है वाकित ।

তাহার পর নাটোনের বেল ভাণাতির নামলা।
ইহাও কেবল ডাকাতি নহে, ডাকাতি ও নরহত্যা।
পুলিস বে করেকজনকে অপরাধী বলিয়া উপস্থিত
করিয়াচিলেন, ফ্রায়পরায়ণ জেকিল সাহেব তাহাদিগকে
নির্দোহ্য বলিয়া দুঞ্জিদান করিয়াহেন।

সর্কলেবে বেদিনীপুরের বোরার সামলা। এ
বাাপারের ইতিহাস দেশের আবালর্ভবনিতা

नकरनरे बारनन । देशंत्र त्रांत्र अनिवात बन्छ निव्छिणत উৎসুক্যের সহিত দেশের লোক क्रिया हिल्ला । अ मामलात विश्निष अहे, अक्राख य दक्तन भूनिप्रहे प्रस्तुष, सूद्रब्र ७ यांगजीवनत्क व्यथबारी विषया हालान पित्राहित्तन छाहा नहह (यपिनोश्रद्धद्र ८म्मन स्रज ভাহাদিগকে অপরাধী সাব্যস্ত করিয়া একজনকে দশ বংসর ও ছই জনকে সাত বংসর করিয়া সভাম কারাদতে দ্বিত করিয়াছিলেন। জেকিল সাহেব আপিলে তাহাদিগকে মুক্তি দিয়া তাঁহার রায়ে বলিরাছেন যে: সন্তোষ ও সুরেক্র যে তাহাবের অপরাধ স্বীকার করিয়াছিল ভাহা কেবল পুলিসের ভাত্তনার ও माब्रिष्टेरहेव श्राहनाव। माबिरहें अत्वर्धन अ নেলসন সাহেবেরও অনেক অসকত ও আটন বহিভুত কৰ্ম প্ৰকাশ হইন! পডিরাছে। এ প্রহসন ও অত্যাচারের প্রধান অভিনেতা স্বামধন্ত মৌল্রী **७ मर हेन्ट्र** हेत्र नाल (बाह्न।

বালালী বালক ৷---বলচ্ছেদের পর হইতে দেশের বালকদিগের বিরুদ্ধে আমরা আমাদের অনেক প্রকার অভিযোগ শুনিয়া আসিতেছি। ডাকাতি হইতে বালজোহিতা পৰ্যান্ত সকলপ্ৰকার অপরাধেই ভাষারা অভিযুক্ত হইয়া আসিতেছে। সকল অভিযোগ কতদুর সত্য ও সঙ্গত তাহা বিচার-गार्थक, किन्न छारावा (मर्भव क्रम य नकल बर्द কর্ম ও আত্মোৎসর্গ করিয়াছে তাহা আমরা এবং প্ৰৰে' ট উভয়েই শীকার করিতে বাধ্য। কলিকাভায় अक्षिप्र (यार्गत नम्या आमता आमार्गत वालकान्त দেশসেৰা ও আত্মোৎসর্বের পরিচর পাইয়াছিলাম -এবং প্ৰমেণ্টিও মৃক্তকণ্ঠে ভাহাদিপের প্ৰশংসা করিয়াছিলেন। সেদিন বাজিতপুরের य এक ि मह९ पृष्ठी स्व मिशा देवार स्वात व व्यमाश्रात्र । श्रीरम व्यमक है निवादर्शन नित्मता बाहि भूँ फ़ित्रा, नांक जूनित्रा এकि इहर পুষ্ধবিশীর সংকার করিয়াছে। বলের গ্রামে গ্রামে ৰালক্ষ্মৰ বাজিতপুরের পদাত্মরণ করিলে দেশের क्रम् अवर कृष्णा चिटित पृत रहेरव ।

त्नहे नमबहे अहे राष्ट्रिक निर्माणक **छे**नरवानी समब। তিনি বলেন পুথিবীয় মেরুদঞ্চের অবস্থিত সমাভরাল একটি রেধার তিনি বছসংখ্যক আয়না বোজনা कब्रियन। आहमा श्रीत मकला कलात माहारा २८ षण्टीय अकवात कतिया वश्रतित ह्यूर्किटक मन्पूर्व-कार्य अमक्ति कतिर्व । सह आयमा मनन हरेए अक्ष छेम्बन जालाक अधिकतिल हरेशा मान अरह श्रिमा পर्डिटन । मार्गवाभीगन व्यवस्थ महत्व हरक जाहा লক্ষ্য ক্রিভে পারিবে না সভ্য, কিন্ত পুরবীক্র ষল্পের সাহায্যে ভাহারা সহজেই তাহা লক্ষ্য করিতে সক্ষ इहेरन अवर यनि जाहाता वृक्तिमान इत. जाहा इहेरन अहे স্কেত বুবিয়া তাহারা আনাদিগকে সংক্ত প্রেরণের চেষ্টা করিবে। এবং এইরূপে ক্রমে সঙ্কেতের সাহ:যো পুথিবী ও মার্সের মধ্যে সংবাদের আদাৰ প্রদান চলিতে পারিবে। একবার আমরা মাস এহ হইতে এইরূপ উত্তর পাইরাছিলাম। ্হতরাং ভবিবাতেও বে উত্তর পাওয়া বাইবে সে বিষয়ে সন্দেহ নাই।

প্রাচীন গ্রীকন্তন্তের আবিষ্কার।-- সম্প্রতি গোয়ালিয়র রাজ্যের দক্ষিণে ভিল্সা নগরের নিকটে বেশনগর নামক স্থানে একটি বিচিত্র আবিক্সিয়া नमीड क्रेबाट्ड । বেতোয়া তীরে একটি পুরাতন हिल। ३४११ **5**3 সালে কানিংহামু সাহেৰ ইহা লক্ষ্য করেন, ভস্তটির धनाम बहे कान विनिष्टे अवः मधाप्रात अकाँ थरात्र-মালার ঘারা ভত্তটি ছইভাগে বিভক্ত। সর্বেরাপরি ভালপত্ৰের আকারবিশিষ্ট একটি বোণিত শিলাখণ্ড খারা আছাদিত। বহুকাল হইতে তত্ততা হিন্দুগণ এই छछिरिक शृक्षा कहिरछहिन वदा छाहाँ प्रस्तिक নিন্দুর লেপন করিয়া আসিতেছেন। সিন্দুর প্রবেপের কলে তাহার গাত্রে কিছু খোদিত ছিল কি না ভাহা নির্দেশ করিবার উপার ছিল না। সম্প্রতি পোরালিয়র রাজ্যের এপ্রিনিয়ার লেক সাহেব লক্ষ্য করেন বে ভভটির তলদেশে কি খোদিত বহিয়াছে। সিন্ধুর অলেণ মৃছিয়া ফেলিবামাত্র দেখা গেল যে সেই

পুডিভজট বিশ্ব ক্যাবার্থে ভিরবের পুড বিক্সেবক হেলিরভরাস রাজা র্যাণ্ডিরাল্কিভাসের রাজ্যকালে নির্মাণ করেন। হেলিয়ভরাস প্রীস বেশের টাজিলা বেশে ক্যাপ্তরণ করেন। হ্যাণ্ডিরাল্-কিডাসের নাম হইতে আমরা ভভটির নির্মাণসময় নিরূপণ করিতে পারি; ভিনি প্রীর্মুর্ম ১৫০ সালে রাএল করিতেন। ইহা হইতে আমরা ভারতে গ্রীক্ প্রভাব ও প্রীক্সপের হিন্দুদেবের প্রায় পরিচর পাই।

मौर्च कीवन गाल्डित जेशाहा- गणन नगरतत ডাক্তার সলিচির যতে নিমলিখিত নির্মণ্ডলি পালম कतिल नकलावरे भंडवर्व भवमात्र क्षत्रा जलाव । আপন আহার বিহারের জন্ত প্রতিদিন হয় আনা করিছা বায় করিবে, এবং তাহা নিজে উপাৰ্জন করিবে। নিতাত দরিত্র ভিন্ন প্রার সকলেই আমরা আবশ্যকের অধিক আহার করিয়া থাকি। আনন্দ পানাহারে সংব্য ও বিপ্রায় এই ভিন্ট লাভ করিছে পারিলে অধিকাংশ রোগের হল হইতে পরিতাণ পাওয়া যায়। বাৰসিক অবসাদই আমাদের মৃত্যুর কারণ। প্রত্যেক আনন্দ আমাদের প্রমারকে বুদ্ধি করে। পরিশ্রম করিলে মনুবোর যৌবন সহজে नहे रव ना। वयस्त्रव कर्मरीयछारे बाह्यस्य नीज জরাগ্রন্ত করিয়া ফেলে ৷ বালকভিপের সভিত আলাগ ७ राम कतिरव। निःमकाविष्यंत व्यापका मरमारत वनकवननीत भन्नमात्रु अधिक रहेवा शास्त्र । वालक-দের দেবিলে, ভাঁহাদিলের সহিত সহামুভূতি কৃত্রে व्यावक शांकित्न अवर नवदत्र नवद्व छाहानित्वत সহিত বালকোচিত জ্রীড়ার যোগদান করিলে বসুবোর योदन अधिकविन हांदी इत। क्यूब आणा अ উৎসাহ ভাগে করা কর্তব্য বহে। অভীক বা মৃতের विवय लहेया बनाक छात्राक्षाक कता कर्खवा नहर। व्यानता व्यापन वातनाञ्चनात्री तुष हरेता शिष् ৰনের বাৰ্ক্কা উপস্থিত হইতো দেহেরও বাৰ্ককা আসিয়া উপস্থিত হয় ৷ বতান্ত্ৰিৰ সম্ভাৰ বালক থাকিবার क्ट्री कहा कर्तवा ।

ক্লিকাডা, ২০ ক্ৰিয়ালিস উট, কান্তিক প্ৰেসে শীহরিচরণ বারা হারা স্থিত ও ৪৪, ৩৩ বালিগঞ্জ রোড হইতে শীসভীশচন্দ্র সুবোপাখ্যার হারা প্রকাশিত।



বিবহিন্দ্রী সক্ষান্ত হয় আন্ত্রিকার কাবত ভারি নাড় ১ চরত হ

সাধনের সত্য॥

ভগবদগীতার আছে:-সহবেষু কশ্চিৎ ষত্তি "মহ্য্যাণাং বিদ্ধরে^{*} মহুষাসহত্তের মধ্যে এক আধ জন निकित कछ यम करतन। मस्रात्र मरधार यथन সাধন এইরূপ বিরুষ তথন পর্বাদি জন্ধনিগের তো কথাই নাই। এটাও কিছ पिथि छि एवं, माधन ना करत अमन औरहे नाह ;-- कीवशाबहे माध्यन त्रछ। क्कूत्रपत्र কর্ত্তব্য কুরুরেরা সাধন করে; বায়সদের कर्त्वरा वायरमञ्जा नाधन करत ; निश्रीनिकारमञ्ज कर्त्व शिशीलकात्रा नाधन करत ; सोमाहिएनत কর্ত্তব্য মৌমাছিরা সাধন করে; পশু পক্ষী কীট পতক সকলেই স্ব স্ব জাতির প্রকৃতি অমুযারী কর্ত্তব্য সাধন করে; শুধু যে সাধন করে তাহা নহে—সর্বাপ্রবত্তে সাধন করে— প্রাণপণে সাধন করে। এমন কি কুন্ত মৌমাছিরাও ভবিষাৎ বংশের মঙ্গলার্থে প্রত্যেকে আপনার সমস্ত জীবন, সমস্ত পরিশ্রম, এবং সমস্ত ধন সম্পত্তি অকাভরে উৎদৰ্গ করিয়া ভাষ। মহুষ্য-প্ৰহুরী রাত্রি-কালে বাবে পাহারা দিতে দিতে ঘুমাইরা পড়িতে পারে; কিন্তু কর্ত্তব্যসাধনের মাঝ-পথে ঘুমাইরা পড়া কুকুর-প্রহরীর শাস্তে আদৌ লেখে না। কর্ত্তব্য-সাধনে কুর্ব-প্রহরী যেমন স্কাপ, কোনও পুলিদের চৌকিদার তেমন নছে। ভবে কেন আমরা কুর্দিগের ক্বত কর্তব্য-অনুষ্ঠানকে সাধন विन ना ? विन वन' त्व कूक्त्वता अक्षणकार जितिहा विहात्रभूसंक कार्या करत ना धोरा

বখন স্থির, তখন তাহাতেই প্রমাণ হইতেছে বে, তাহাদের ব্রতামূলন অন্নসংস্থার দ্লক জাতিধর্ম বই আর কিছুই নহে ;—তাহা তুমি বলিতে পার না; কেন না, এটা সকলেরই দেখা কথা যে, পণ্ড পক্ষীরাও ন্যনাধিক পরিমাণে বিচারপূর্বক কার্য্য करत। वानरत्रवां व या ठा छक्रन करत्र ना, পরস্ত পাতাপাত্ম বিচারপূর্বক বাহাতে তাহা-দের শরীর ভাল থাকে তাহাই ভক্ষণ করে। পক্ষীরাও স্থানাস্থান এবং কালাকাল বিচার-পূৰ্ব্বক নীড় নিৰ্দ্বাণ করে; বিশেষতঃ বাজহংসেরা সময় বুঝিয়া ঝাঁকে ঝাঁকে মানসদরোকরে যাত্রা করে, এবং সময় বুঝিয়া সেধান হইতে প্রত্যাগমন করে। কুরুরেরাও পাত্রাপাত্র বিচার করিয়া অভ্যাগত অতিধিগণের কান্তকে দেখিয়া ক্রোধে গোঙ্রাইতে থাকে, কান্তকে দেখিরা আহ্লাদে লাজ নাড়িতে থাকে। কুকুরাদি জ্বগণ পাত্রাপাত্র কালাকাল এবং স্থানাস্থান বিচার করে তা' ভো জানি, কিছ এ কথা ভো তুমি মানো বে তাহারা মৃঢ় জীব ? তা বদি তুমি মানো, তবে তাহাতেই তোমার প্রকারান্তরে वना श्हेटलट्ह त्य, क्क्त्रांवि अवविद्यात विठात-কাৰ্য্যও অন্ধনংখাৰের প্রবর্তনা বই আর কিছুই নহে। বড় শক্ত সমস্তা। মস্ত একটা গোলের কথা এথানে এই যে, পশাদি জভদিগের জ্ঞান যে খুলেই নাই এ কথা ভূমি বলিভে পার না; বেহেডু তাহারা সচেতন জীব। উহাদের অরই হো'ক্ আর অধিকই হো'ক্ —कान वथन चारह, जथन উशांतिगरक

मृष्णीय ना विनम्ना कानवान् कीव वना'हे উচিত। তুমি তো বলিলে "উচিত" ! কিন্ধ আমার ম্বন্ন যে তাহা বলে না ! মন তো বলেই ना, छ। हांड़ा, वृद्धिवित्वहनां ७ ७-कथांहा श्रास्त्र मधारे जात्न ना। ऋविथां उत्रावन-বেক্তা স্থার হম্ফ্রে ডেবী বরফের গুণাগুণ বিধি-মতে পরীকা করিয়া দেখিয়া এইরূপ সিদ্ধান্তে উপনীত হইমাছিলেন যে, বরফের ভিতরেও উত্তাপ আছে। কিছ তাহা সত্তেও সকলেই আমরা বলি ৰে বরফ শীতল পদার্থ: কেহই আমরা বলি না যে বরফ উষ্ণ পদার্থ। যে কারণে আমরা বরফের ভিতরে উত্তাপ আছে জানিয়াও বরফ'কে উষ্ণ পদার্থ না বলিরা শীতল পদার্থ বলি. সেই কারণে আমরা পশাদি শ্রেণীর জীবদিগের মনোমধ্যে চেত্রন জাগিতেছে জানিয়াও উহাদিগকে জ্ঞানবান कौर ना रिलम् भूएकौर रिल। एन कांत्र এই বে, বুরফের ভিতরে উত্তাপ আছে সত্য, কিন্তু বরফের অন্তর্নিগৃঢ় সে যে উত্তাপ তাহা উফতা বলিয়া নির্দিষ্ট হইতে পারিবার মতো উত্তাপ নহে: তেমি, পথাদি জন্তদিগের মধ্যে চেতন জাগিতেছে সত্য, কিন্তু পখাদি জন্তদিগের অন্তর্নিগৃঢ় সে যে চেতন তাহা জ্ঞান বলিয়া নির্দিষ্ট হইতে পারিবার মতো চেতন নহে। তাহা জ্ঞান বলিয়া নিৰ্দিষ্ট হইতে না-পারিবার প্রধান কারণ এই যে, এটা ষে, প**শাদি জন্ত**রা यमिष्ठ भूवरे সত্য **স্বাস্থ্যোপ**যোগী থাতাথাত বিচার বাসোপবোগী স্থানাস্থান বিচার করে, অমু-ষ্ঠিতবা কার্যোর কালাকাল বিচার করে. দাম্পত্য বন্ধনের পাত্রাপাত্র বিচার করে; কিছ ভণাপি প্রকৃত বিচার যাহাকে বলে,—কি ?

না সত্যাসত্যের বিচার, তাহা তাহাদের মনের

ক্রিসীমার মধ্যেও স্থান পাইতে দেখা বার না,
আর, সেই জন্ম পথাদি জন্তরা জ্ঞানবান্ জীবের
কোটার কোনো "ক্রমেই অধিকার পাইতে
পারে না। অতএব এটা হির বে, পৃথিবীতে
বিদি এমন কোনো শ্রেণীর জীব থাকে বাহার
নাম দেওরা বাইতে পারে জ্ঞানবান্ জীব,
তবে তাহা মহাবা।

মন্থ্য মাতৃগর্ত হইতে জ্ঞানবিন্দু হইগ্রা ভূমিঠ হয়। তাহার পরে জ্ঞানবিন্দু বেমন জ্ঞান আকর্ষণ করে, জ্ঞানবিন্দু তেয়ি জ্ঞান আকর্ষণ করিয়া ক্রমণ বাড়িয়া উঠিতে থাকে। মন্থ্য বদি গোড়ায় জ্ঞানবিন্দু হইয়া না জ্মি'ত, তবে শেষে ক্রিন্কালেও জ্ঞান উপার্জন করিতে পারিত না। শুকপক্ষী সহস্র শাস্ত্রবচন কণ্ঠস্থ করিলেও তাহার জ্ঞান একভিন্ত বাড়ে না কেন ় তাহার জ্ঞান না বাড়িবার কারণ আর কিছু না—শুকপক্ষী মহ্য্য-শিশুর মতো জ্ঞান-বিন্দু হইয়া জ্মগ্রহণ করে না, আর সেই জ্ঞানে পারে না।

মানবচৈতক্তের এ-পারে হওরা-জ্ঞান বা জন্মগত জ্ঞান; ওপারে পাওরা-জ্ঞান বা উপার্জিত জ্ঞান; মাঝে সাধনের সেতৃ। হওরা-জ্ঞান সাধনের বীজ; পাওরা-জ্ঞান সাধনের ফল। এখন জিঞ্জান্ত এই বে নীজ অগ্রে না ফল অগ্রে! ইহার উত্তর এই যে, হুইই সত্য—(১) একবারকার আমের বাঁজ আরবারকার আমের বীজ, এটাও সত্য; আবার (২) একবারকার জামের বাঁজ আরবারকার আমের আঁটি, এটাও সত্য।

थकि कि बागरकत्र मरनामरश **छा**वा-

स्त्रांन क्षेत्रम वोक्रजाल माण्डिला शांदक ; व्येष তাहात अन्तर्गठ कान, वा नहकां कान वा সহজ জ্ঞান; আর, তাহাকেই আমি বলিতেছি इ अयो - छाराज भरत स्पर्ध वागक কণ্চাইতে কণ্চাইতে মাতৃভাবা উপাৰ্জন এবারকার এ জান সাধনের করে; মধ্যদিয়া পাওয়া বলিয়া ইহাকে আমি বলিতেছি পাওয়া-জ্ঞান। তাহার পরে বালকটি বিভালরে ভর্তি হইয়া ব্যাকরণ অল্কার এবং সাহিত্যাদির যোগে পুনরার যথন নৃতন করিয়া ভাষা শেখে, তথন, প্রথম-বারের সেই যে ভাহার অবলীলাক্রমে হাত বাড়াইয়া পাওয়া একমেটে ভাষাজ্ঞান, সেই পুর্বাব্দিত একমেটে ভাষাজ্ঞানই তাহার এবারকার (অর্থাৎ দিতীরবারের) হওয়া-জান; আর, অপেকাক্ত কঠিন সাধনের मधानिया भाष्ट्रया-इटेबा-शांटक त्य लाटमटे ভাষাজ্ঞান, ডাহাই পড়ুয়া বালক্দিগের বিতীয় উপমাঞ্চলে বলা বারের পাওয়া-জ্ঞান। যাইতে পারে বে, প্রথমবারের হওয়া-জ্ঞান कारनत्र वीकः; अध्यवादत्रत्र भाजवा-कान জ্ঞানের নবোম্মেষিত পত্রচূড়া; প্রথমবারের শাধন —বীঞ্চ হইতে পত্রচূড়ার বৃস্তাপ্ত পর্যান্ত স্ক্রের প্রদারণ। দ্বিতীরবারের হওরা-জ্ঞান কি ? না পূর্বোন্মেষিত সেই যে জ্ঞানের প্রচ্ডা (একমেটে ভাষাজ্ঞান), তাহাই দিতীয়বারের **হওয়া-জ্ঞান** ; **দিতীয়বা**রের পাওয়া জ্ঞান-জ্ঞানের পুষ্প-বিকাশ (ব্যাকরণাদি-পরিপুষ্ট দোমেটে ভাষাঞ্চান); विভীরবারের শাধন--পূৰ্কোন্মেষিত পত্ত্ভার বৃত্যুল হইতে নবোলের্ম্বিত পুশামঞ্জরীর বৃত্তমূল পর্যান্ত শাখাপলবের বিস্তার।

পাৰীদেরও ভাষা আছে কিন্তু তাহা একপ্রকার অ-শেখা ভাষা। পাখীদের ভাষা বেমন তাহাদের অভিল্যিত ভাবজাপনের व्यथम উष्टरमहे कर्श्वकृश्त श्रहेराज ग्रमाहेन्रा अर्छ, *ম*মুখ্যের কণ্ঠ<u>কু</u>হর হইতে মাতৃভাষা তেমন সহজে গজাইরা ওঠে না। মহুয়ের ভাষা প্রকৃতপ্রস্তাবেই সাধনের ধন। মন্থর্টার ভাষা অথমে যথন অন্তঃপুরের লালন-ক্ষেত্রে व्यक्तिक इत्र, ज्थन जाश माध्यात मधानित्राहे ष्यक्ष्त्रिष्ठ रुष्ठ; ভारात्र পत्र यथन त्मरे অঙ্রিত ভাৰাজ্ঞান অন্তঃপুরের লালন-ক্ষেত্র হইতে উন্লিত হইয়া বিভালয়ের অমুশাসন-কেত্রে রোপিত হয়, আর, কিয়ৎ পরে বধন তাহা শাথাপ্রশাথা বিস্তার করিয়া পরিবর্দ্ধিত হর, তথন তাহা সাধনের মধ্যদিরাই পরি-বৰ্দ্ধিত হয়; স্থাবার, আর কিছুকাল পরে यथन कविषद्रारात्र वादिनिक्षात्न राहे भाषा-প্রশাধার ফুল ধরে, এবং জ্ঞানালোকের রশ্মি পতনের গুণে তাহাতে ফল ফলে, তথন, তাহা সাধনের সোপান মাড়াইয়াই সিদ্ধিমঞ্চে আরুঢ় र्घ।

মন্ত্র বধন বে কার্য্যের সাধনে উত্যোগী

হর, তিথন সাধিতব্য কার্যাটি কিরপ কার্য্য

এবং কিসের উদ্দেশে তাহাতে প্রবৃত্ত হওয়া

হইতেছে, তাহা এক মহাপুরুষ আড়ালে
থাকিয়া দর্শন করেন। স্থলদর্শী লোকেয়া

মনকেই জানে সাক্ষী পুরুষ, তাই বলে যে

মনের অগোচর পাপ নাই। কিন্তু প্রেরুত

সত্য এই বে, ঐ মহাপুরুষটি ভাবনাচিস্তারও—

মনেরও—সাক্ষী। স্ক্রদর্শী বৈদান্তিক
পণ্ডিতেরা তাই মহাপুরুষটির নাম দিয়াছেন

সাক্ষী-তৈত্ত্ব। সাক্ষীটিতত্ত্ব বে অংশে ক্লান-

ক্রিরা এবং ক্রের বিষরের সাক্ষী, সেই অংশে দর্শনশান্ত্রে তাঁহার নাম দেওরা হর সন্থিং, অর্থাং ইংরাজিভাষার বাহাকে বলে consciousness; আর, সাক্ষীচৈতত্ত যে অংশে প্ণাপাপ-দর্শী, সেই অংশে ধর্মশান্ত্রে তাঁহার নাম দেওরা হয় অন্তরাত্মা অর্থাং ইংরাজিতে বাহাকে বলে conscience; তার সাক্ষী:—

শ্বংকর্ম কুর্বজোহস্রস্থাৎ
পরিভোষোহস্তরাত্মনঃ।
তৎপ্রস্বম্পেন কুর্ব্বীত বিপরীতস্ত বর্জ্জনেৎ॥

যেরপ কর্মের সাধনে অন্তরাত্মা(eonscience) প্রসন্ন হ'ন সেইরূপ কর্ম্ম করিবে, তাহার বিপরীত কর্ম্মের পথ বর্জন করিবে।" এটাও কিন্তু দেখিতে পাওয়া যায় যে, সাক্ষী-চৈতন্ত সকলের মনে সকল সময়ে জাগ্রত থাকেন না; প্রভ্যুত, অনেকের মনে অনেক সময়ে প্রস্থু থাকেন। আবার, এটাও দেখিতে পাই যে, সাক্ষী-চৈত্ত নিদ্রিতই থাকুন্ আর জাগ্ৰতই থাকুন্—কাজ ভোলেন না। নিদ্রা-কালে তাঁহার অদ্ধোন্মীলিত চক্ষুগোল ক দ্রষ্টব্য বিষয়-সকলের ছবি পড়ে: তাহার পরে তিনি যথন জাগিয়া ওঠেন, তথন সেই ছবিদৃষ্টে অতীত কালের হইয়া-যাওয়া ব্যাপারগুলা অবগত হ'ন ৷ তার সাক্ষী— কোনো ক্ষমতাপন্ন কর্মাধ্যক্ষ যথন লাগের মাথার কোনো নিরপরাধী অধীন কর্মচারীর প্রতি কঠিন দণ্ড সমর্পণ করিয়া ফ্যালেন, তথন তিনি কি যে কুকার্য্য করিলেন তাহা জানিতে পারেন না---বেহেতু তথন তাঁহার অন্তরাত্মা মোহনিস্কার অভিভূত; কিয়ৎপরে তাঁহার

ক্রোধ নরম প রা **আসিলে উহার অন্তরান্তা** বথন কাগিরা ওঠেন, তথন তিনি "কি কুকার্যাই করিলাম" বলিয়া **আকেপ করিতে** থাকেন।

তুমি বলিভেছ যে, সাক্ষীচৈভক্ত थाकियां मांधरकत्र यस्त्र जांव এवः কাজ গুইই (मर्थन । ইহাতে দাড়াইভেছে যে, সাধন বেন একটা ভাউলে. আরু সেই ভাউলের নাবিক যেন তিন ভাই---বড ভাই সাক্ষীচৈতন্ত বা দ্ৰষ্টা পুৰুষ, ইনি কর্ণধার: মেজো ভাই ভাবনা-চিন্তা মানসিক জ্ঞানক্রিয়া: আর ছোটো ভাই হাতের কার্য্য বা শারীরিক বলক্রিয়া: এ হুই ভাই ভাউলের দাঁড়ি। স্থার, তা ছাড়া, মেজো ছোটো'র উপরে বড়র চকু রহিরাছে সর্বাদা সজাগ। তা যদি হয় তবে সাধককে এক থাক্তি না বলিয়া তিন বাজি ৰলাই তো ভাল! ইহার উত্তরে আমি বলি এই যে, সতা যদি বলিতে হয় তবে সাক্ষী চৈত্ত আপনারই আপনি ত্রন্তা—দোসুরা কোনো বাজির নহে। দাঁডি-মাঝির উপমা ঐ যাহা তুমি দেখাইলে, উহার একটি জুড়ি-উপমা আমার কাছে আছে ; সেইটিই বর্তমান স্থলের স্বিশেষ উপযোগী: তাহা এই:-মনের ভাব আর হাতের কাজ হুই রুক্ষের হুইটা দর্পণ; মনের ভাষ জলের মতো তরল দর্পণ, হাতের কাজ আয়নার মতো শ্বির দর্পণ। এই ছই দৰ্পণ সন্মুখে স্থাপন ক্রিয়া সাক্ষী চৈত্য তাহার মধ্যে আপনাকে দর্শন করেন; चात, त्मरे चन्न, के छूरे मर्गन वसन कन्द्र আক্রান্ত হয় তথন সাক্ষীচৈতভ আপনাবে कन्विक मार्थन, आत, ज्ञान-पर्श्नाती, किनी

মনটা, বধন ইতন্তত কিচলিত হর, তথন
সাক্ষীটেডক্ত আপনাকে ইতন্তত বিচলিত
দেখেন । অতএব এটা স্থির বে সাক্ষীটেডক্ত
দেখেন—দর্পণ ছটা'কে নহে পরস্ক আপনাকে;
দর্পণ ছটা উপলক্ষ মাত্র। অতএব এটা
স্থির যে, দর্পণধারী সাক্ষীটেডক্ত, গুইও নহেন,
তিনও নহেন। সাক্ষীটেডক্ত একই অভিন্ন
পুরুষ। সাক্ষীটেডক্ত সাধক নিজে। প্রকৃত
কণাটা তবে তোমাকে বলি—প্রাণিধান
কর:—

সত্য এক বই হুই নহে। কিছু তথাপি আমাদের ব্যবহারকার্য্যের স্থবিধার জ্বভ আমরা বেমন টাকা ভাঙাইয়া চৌষটি প্রদা করিয়া লই, তেমি, বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতেরা তত্নিদ্বারণ-কার্য্যের স্থবিধার জন্ত এক সভাকে নানাশ্রেণীতে বিভক্ত করেন; আর, তাহা যথন করেন তথন সেই সঙ্গে তাঁহাদের জানের প্রকরণ-পদ্ধতিও নানা শাথায় বিভক্ত হইরা যায়। একট সভা একদিকে যেমন ষম্ববিভার যান্ত্রিকী সভ্য, জ্যোতিবিভার জ্যোতিধী সভ্য, রসায়ণ-বিভার রাসায়নী সত্য; এইক্লপ নানা বিভাব নানা সত্য; আর এক দিকে তেমি বেদোপনিষদের এক অদিতীয় সত্য। একই ষোলো আনা একদিকে বেমন একটাকা, আৰু এক দিকে তেন্নি চৌষ্টি প্রুমা; প্রভেদ কেবল এই ষে, এক টাকা মোট বোলো আনা, চৌষ্টি পন্সা ভাঙা বোলো জানা। মনে কর একজন জহরী মন্ত এক শহাজনের নিকট হুইতে একটি বহুসূল্য হীরা ভাঙাইয়া আনিয়া রাশীক্বত মোহরের তোড়া গৃংহর এক অভিনদ্ধি-প্রদেশে গর্ভ খুড়িয়া প্তিয়া রাধিল; এক ঝুড়ি টাকার ভোড়া

লোহার সিন্দুকে চাবি দিয়া পুরিয়া রাখিল; আর, চণ্ডিগোচের ধরচপত্র নির্কাহের জন্ম ছই চারি মুঠা আছলি সিকি দো-আনি পর্মা कााय्वारक्षत्र (थार्पिथार्प माकारेबा त्राथिन। মণিমুক্তার জহরীর এ যেমন विधिवावञ्चा मिथा श्रिन, व्यविकन , स्महेन्नभ প্রণালীতে বিভারত্বের জহরীরা ভগাবশিষ্ট পুরাতন চণ্ডীমণ্ডণে গর্ব খুঁড়িয়া রাশি রাশি দার্শনিক সত্য পুঁতিয়া রাখেন; বাশি বাশি জ্যোতিষী সতা জ্যোতির্বিস্থার मानमन्तित श्रुँ कि कतिया त्राध्यन ; त्रामि त्रामि যান্ত্রিকী সত্য যন্ত্রবিস্থার যন্ত্রাগারে পুঁজি করিয়া রাথেন; রাশি রাশি রাসায়নী সত্য রসায়ন বিভার সাধনাগারে (Laboratoryতে) পুঁজি করিয়া রাখেন। আবার আটপছরিয়া ব্যবহারের জন্ম হুই চারি মুঠা জ্যোতিধী সত্য নৃতন পঞ্জিকার, হুই চারি মুঠা বান্ত্রিকী সভা যম্ভদীপিকায়, তুই চারি মুঠা রাসায়নী সতা ক্রবাঞ্চণদীপিকায়-এইরূপ রক্মওয়ারি ভাঙা সত্য, আবশুক হইলেই হাতবাড়াইয়া পাওয়া যাইতে পারিবার মতো করিয়া. আশপাশের কুলম্বাতে সাজাইয়া রাখেন। আবার, সময়ে সময়ে পৃথিবীমগুলে আশ্চর্য্য প্রভাবান্বিত ক্ষণজন্ম ধনী মহাজনের আবিষ্ঠাব হয়। ইহাদের এক এক মহাপুরুষ এক এক বিশেষভাবের সাধন দ্বারা এক এক দেবতুর্লভ মহারত্ব হাতের মুঠার নধ্যে প্রাপ্ত হ'ন; আর, বাহা তাঁহারা হাতের মুঠার মধ্যে প্রাপ্ত হ'ন তাহা লোহার সিন্দুকে চাবি দিয়া রাথেন না। তাঁহারা বড় বড় দুঢ়ভিত্তি সাধারণ ধনাগার বা 'ব্যাছ ছাপন করিয়া তাঁছাদের महामूना नांधरनत थन मिट बार्फ शहाहेगा

রাজ্যের লোহা তাঁবা এবং শীবার মধ্য হইতে সোণা ফলাইরা তোলেন। তাঁহাদের ব্যাক্ষের হিরশ্বর-কোষের অর্থাৎ সোণার সিন্দুকের টাকা এক ছার দিয়া বেমন জনসমাজে ष्ट्रिकेबा वाश्त्रि रहा, भात्र এक बात তেমি স্দের উপর স্বদে স্ফীত হইরা প্রভাগমন করে। বাছের টাকা তো আর ব্যাহাধ্যক্ষের শুধু কেবল নিজের টাকা নয়—তাহা পৃথিবী হৃদ্ধ লোকের টাকা; আর, বে অংশে তাহা পৃথিবীহৃদ্ধ লোকের টাকা সেই অংশে তাহা হ্রাসবুদ্ধিবিহীন। কিঙ যে সকল মহাজনের কথার উল্লেখ করিলাম তাঁহাদের হির্থায় কোষের টাকা নিথিল বিশ্বভূবনের খোট সত্য,—সত্যং জ্ঞানমনস্তং; ठाँशत झामल नारे वृक्तिल नारे, छेनमल नारे অন্তও নাই, তিনি যাহা আছেন তাহাই আছেন।

বাইবেলের কোনো কোনো স্থানে মোট
সত্যের নাম দেওয়া হইয়াছে আল্ফা এবং
ওমেগা। ইহার কারণ এই বে, গ্রীকভাষার
আদি অক্ষর আল্ফা কিনা অকার এবং
শেষাক্ষর ওমেগা কিনা ওকাণ সমস্ত
বিশ্বভ্রনের আদি অস্ত জুড়িয়া বে এক অথও
মোট সত্য সর্বাত্ত বিশ্বভাষার, আল্ফা এবং
ওমেগা বলিলে সেই মোট সত্যের প্রতি
সাধকের দৃষ্টি পড়ে। আমাদের দেশের
সাধনের প্রধান মন্ত্র ওলার। এই মন্ত্রাট
সর্বাসাধারণ মহাযাজাতির ভাষার থনি হইতে
উদ্বৃত হইয়াছে, তা বই, কোনো বিশেষ জাতির
বিশেষ ভাষার বর্ণমালা হইতে নছে। মহাযান
মাত্রেরই বাক্যাক্ বির আরক্ত স্থান কঠকুহর
এবং স্মাপ্রিয়ান ওঠাতা। অ কঠ হইতে

वाहित हत, के मधानरप ध्यवाहिक हत, म ওঠাকো পর্বাবদিত হয়। আ পোৰুৰীর विक्षुस्त, উ शक्कांत्र ध्येवार, म माभटत भर्ग्यवमान। সাধকের কণ্ঠবদন হইতে ওছার শব্দ বধন উচ্চারিত হয় তথন তাহা উচ্চারণ-পথের আদি व्यक्त वर मधा वाशिया वर शूत्रन कतिया ধ্বনিত হয়। অভএব, সৃষ্টির জাদি অস্ত এবং মধ্য বাঁহাতে একীভূত সেই এক অদিতীয় অথও সত্যের নাম যদিচ সাধকের বাকামনের অতীত, আর, সেইকম্ম সাধক শ্রদ্ধা ভক্তি এবং প্রীতিপূর্বক ব্য নামে তাঁহাকে সন্বোধন করেন তাহাই যদিচ ভাঁহার নাম; কিছু তথাপি ওঙ্কারের মতো অমন আর একটি পরিপাটী ध्वरः विक्र व्यर्थग्राह्मक नेत्रत्रवाहक नेक পৃথিবীতে ছুন্ভ। পাতঞ্জল দর্শনের সমাধি-शामित्र २१ एक (मध ;- त्म एक वहे त्य. তশু বাচক: প্রণব:, ঈখরের বাচক ওকার।

আমাদের দেশের সাধনের প্রধানমন্ত্র বেমন
ওকার; সাধনের প্রধান লক্ষ্য তেমনি সভাং
জ্ঞানমনন্তং ব্রন্ধ, অর্থাৎ নোট সভা ।
মন্থব্যের অন্তরে এক প্রকার মোট জ্ঞান
আছে; সেই মোট জ্ঞানেই মোট সভাের
উপলির হর । অর্থাৎ জ্যোভির্বিভার বেমন
জ্যোতিষী সভাের উপলির হর, ব্রন্তিভানে
বেমন যান্তিষী সভাের উপলির হর, রনারন
বিভার বেমন রাসারনী সভাের উপলির হর,
মোট জ্ঞানে ভেরি মোট সভাের উপলির হর ।
একটু ভাবিরা দেখিলেই বুঝিতে পারা
যাইবে বে, মোটজ্ঞান এবং মোট সভা বস্তু
একই । অন্তাভঃ এটা আমরা বুঝিতে পারি
বে, সভাঞানই জ্ঞান, এবং জ্ঞানগর্ভ সভাই

সভা; তৰেই হইডেছে বে, সভা এবং আন একেরই এপিট-ওপিট।

शृद्ध विवाहि (व, वश्वानि कानविक् इहेबा क्या शहन करत। त्य खानविम् भनार्य है। কি ? তাহা আর কিছু না-সম্বিৎ, অর্থাৎ हेश्त्रांकिए बाहारक बत्न Consciousness। मिश्हे मश्रुरवात सां**डेकारनत वोक,** जनवा ৰাহা আরো ঠিকু—বাজভাবের মোটজান; আরু বিশুদ্ধ সম্ভা—খাঁট সত্তা—সার সত্তা, अर्थार हेरत्राणि काबाब याहादक वरन Pure Being. তাহাই সেই বীজ্ঞানের বীজ্পতা। খব পাৎলা কাগজের এক পিঠের অক্ষর যথন আর এক পিঠে ফুটিয়া বাহির হয়, তথন ছই পিঠের অক্ষর কিছু আর ছই অক্ষর নতে; অকর তা-দে এপিঠেও বা ওপিঠেও তা: প্রভেদ কেবল এই ষে, এপিঠে তাহা সোকা ভাবে বসানো, ওপিঠে পাশ ফিরাইয়া বসানো। তেমি সেই যে বীজ্ঞান দমিৎ, আর. সেই যে ৰীজ সত্য বিশুদ্ধ সন্তা, ভাহা একেরই ছুই পিঠ; তা বই, তাহা প্রকৃত পক্ষে ছই নহে। क्नकथा এই दर, वीक्रकान वा मिष्ट विश्व সভার প্রকাশ; বিভদ্ধ সভা বীজ্ঞানের প্রকাশ বন্ধ। বন্ধ এবং বন্ধর পূর্ব-প্রকাশের मर्पा वावधान काथात ?

व्यय प्रविष्ठ हरेरव वहे त्व, वोक्कान বা সাধিং আর কিছু না-পূর্বে বাহাকে আমি বলিয়াছি আদিম হওয়া-জ্ঞান তাহা সেই इ अहा-कान। जाहा नर्स थ्रथरम माधरनत मृत्न वीक्षक्रत्भ व्यवनिशृष् थात्क, धवः मर्क শেৰে সাধনের মধ্য দিরা ফলরপে আলোকে বিনিগত হয়; আর ভাহা বধন হয় তথন তাহার নাম হর প্রজা। + তেমি যে-সত্য সাধনের পূর্বে সমিতের ক্রোড়ে বিশুদ্ধ সন্তারণে অত্তর্ণীন থাকেন, সেই একই সত্য সাধনের मधा निवा मुश्रमान विश्वज्वदनव वाखविक স্ভারণে প্রজাতে (অর্থাৎ প্রবৃদ্ধ জ্ঞানে) ভাসমান হইরা ওঠেন। পূর্বে বলিরাছি বে, নবপ্রস্ত শিশু এক রম্ভি জ্ঞানবিশু। कि ब विन्तू तम एका मामाञ्च विन्तू नव-विन्तूव মধ্যে সিন্ধু রহিরাছে চাপা দেওরা! সিন্ধু সে অন্ধকারময় অদৃশ্র জগতের অতলম্পর্শ এবং অপার সভাসিদ্ধ; তাহা বিশুদ্ধ সভা--থাটি সত্তা—সত্তাই কেবল। সেই অদুশু জগতের বিভদ্ধ সন্তাই বে, দুখ্যমান বিশ্বভূবনের বান্তবিক সন্তা, তাহার প্রমাণ এই বে. বাহাকে আমরা বস্তুসকলের বাস্তবিক সন্তা বলিয়া প্রবৃদ্ধ জ্ঞানে উপলব্ধি করি তাহার ব্যাবি এবং তন্ময়তা দৃশ্রাদৃশ্র সমস্ত বস্তুতেই

"তত্ৰ ৰতস্থৱা প্ৰজ্ঞা"

শ্রদ্ধাব্দ শ্রীযুক্ত কালীবর বেদান্ত বাগীশ উহার টাকা এবং ভাব্যের তাৎপর্য রীতিমত অমুধাবন করিয়া উহার ব্যাখ্যা করিয়াছেন এটক্রপ ঃ—

^{*} কেহ মনে করিতে পারেন যে, প্রস্তা শব্দ Reason শব্দের অমুবাদ; তাহা বদি কেহ মনে করেন, তবে পাঠঞ্জল দর্শনের সমাধিপাদের ৪৮ হত্ত দেখিলেই তাহার ভুল ভাতিরা বাইবে; সে হত্ত এই:—

[&]quot;তৎকালে বে উৎকৃষ্ট ও নির্মান প্রজা অর্থাৎ জ্ঞানালোক আবিভূতি হর, তাহার নাম·····ঝত স্তরা প্রজা। এ প্রজা কেবল খর্ত অর্থাৎ সত্যকেই প্রকাশ করে। তৎকালে ক্রমের ও প্রমাদের লেশও থাকে না। যোগিগণ এই খত স্থার বারা সমুদার বস্তু, যথাবৎ সাক্ষাংকার করিব। থাকেন এবং উৎকৃষ্টতম চরমবোগ লাভ করিব। মুক্ত হ'ন।

স্থান। বণিচ নবপ্রস্ত শিশুর মানেক ছ্মান পরে চকু ফুটলে সে দুশ্রমান বস্তু সকলেরই বান্তবিক সভা উপলব্ধি করে; কিন্তু একটু ভাবিদ্বা দেখিলেই বুঝিতে পারা বাইবে यে, বাস্তবিক সন্তা শুধুই কেবল দুখ্যমান বস্তুতে আবদ্ধ নহে ; পরস্ক দুঞাদুখ সমস্ত বস্তুই বাস্তবিক সন্তার মুঠার মধ্যে কবলিত রহিয়াছে। আমি একণে কলিকাতা নগরীর বক্ষোপরি দপ্তায়-মান একটা কোটাবাড়ির দোভালার বৈঠক ঘরে বদিয়া ওধু কেবল দেয়াল কড়িকাট টেবিল চৌকি দেখিতেছি বলিয়া পৃথিবীর मधा खेखनाई य क्वन वास्त्रिक भागि, আর, আমি বড়বাজার দেখিতেছি না, চৌরঙ্গী দেখিতেছি না, বাগবাঞ্চার দেখিতেছি না বলিয়া শেষোক্ত প্রদেশগুলা যে অবান্তবিক পদার্থ, তাহা তো আর নহে। म्यान किक्निं छिविन् छोकि समन, আর, অদৃশ্র বড়বাজার চৌরঙ্গী বাগবাজারও তেমি, সবই সমান বাস্তবিক; তা ছাড়া, অদুভা গঙ্গাসাগর, মহাসমুত্র, চীন জাপান इंडेट्रांश व्याप्मतिका, श्रद्ध नक्का, मददे ममान বাস্তবিক। দেয়াল কড়িকাট প্রভৃতি বে-করেকটা বস্তু এক্ষণে আমার চক্ষে দেখা দিতেছে, দেগুলার প্রত্যেকেই একভানার মধ্যদিয়া বাড়ির ভিত্তিমূলের সহিত বাঁধা রহিয়াছে: একতালার ঘরদর্জা ভিত্তিমূলের मधानिया ताखाचाटित महिल वैधा तिस्त्राटकः রাস্ভাঘাট গঙ্গার মধ্যদিয়া পূর্বসমূজের সহিত वैश्रां दिशां हि ; शकांनमी शृस्म्यू प्रवाद দিয়া বর্মা প্রভৃতি দেশবিদেশের সহিত বাঁধা রহিয়াছে; পূর্ব সমুদ্র বর্মা প্রভৃতি দেশ-বিদেশের মধ্য দিয়া পালিফিক মহাস্থিরের

সহিত বাঁধা বহিবাছে; বৰ্ষা চীৰ কাপান-সংলিভ আসিরাধণ্ডের পূর্বকিনারা পাসিকিক মহাসাগরের মধ্যদিরা আমেরিকার সহিত রহিরাছে.' পাসিফিক আমেরিকার মধ্যদিয়া আট্লাটিক মহাসাগরের महिल वांधा त्रश्तिहारक, आस्मित्रका आहेनाहिक মহাসাগরের মধ্য দিরা ইউরোপ আফ্রিকার महिङ वीधा बहिबाह्य ; ममाग्रवा शृथिवीय छन বায়মগুলের মধা দিয়া ঈপরের সহিত বাঁধা बहिशाट ; नवायुगांगवां शृथिवी श्रेशदाब मध्य দিয়া গ্রহ উপগ্রহ এবং স্থ্যস্তলের সহিত বাধা বহিয়াছে: নিখিল বিশ্বভ্ৰনের বাস্তবিক সতা সমস্তের মধ্য দিয়া সমস্তের সহিত বাঁধা রহিয়াছে; আকাশের মধ্য দিয়া মহাকাশের সহিত বাঁধা রহিয়াছে; অণুর মধ্য দিয়া পরমাণুর সহিত বাঁধা রহিরাছে। প্রজাতে व्यर्थाः अवृद्ध कात्न এই य এक क्व বান্তবিক সতা দুখাদুখ সমস্ত বিশ্বহন্ধাণ্ড একীভূত করিয়া প্রকাশমান, ইহার গোড়ার কথাটি সন্বিতের গারে পূর্ব্ব হইতেই স্পষ্টাক্ষরে লেখা রহিয়াছে; সে কথা এই বে "আমি আছি"। সাধনের মূলাধিষ্ঠিত এই বে সাকী-टिज्ज मिष्. हेनि जाभनात ममस्र हिसा धरः কাৰ্য্যদৰ্পণে "আমি আছি" এই বিশ্বন্ধ সভাট **मिश्कार कार्य कार्य कार्य कार्य विश्व**िष् স্বিতের স্বেমাত্র ধন বিশুদ্ধ স্তা ভাষা আর কিছু না-দেই আমি আছি'র আছিए। সাধন হারা সন্থিত্তপী বীঞ্জান ফলে পরিণত हरेशा वथन श्रकामूर्ति शांत्रण करत, ज्यन, দাাড়মবৃক্ষের মূলাধিষ্ঠিত বাঁজ বেমন দাড়িম ফলের অন্তর্ভুত সম্ভ ৰীজ্কোষের সম্ভ श्रीतरक भठशा व्यविष्ठे इत्, त्मरेक्रभ शाकात

সেই "বাৰি আছি" বা বিভৰ্ক সন্তা নিধিক বিৰভ্বনের মৰ্শ্বে মৰ্শ্বে প্থাম্পুথারপে প্রবিষ্ট হইয়া সর্ব্যালগতের ক্ষব বাত্তবিক সভারপে প্রজাতে ভাসমান হইয়া 'ওঠে; আর, তাহা বুধন হর, তথন অভাবাহিত ক্ষ্ম্য আমি-আছিটি প্রভাবাহিত বৃহৎ আমি-আছিকে পাইয়া সেই ধন প্রাপ্ত হয়—
"যং লক্ষা চাপরং লাভং মন্ততে নাধিকং ততঃ। যিমন হিতো ন ছংখেন শুক্লণাহিপি

গাঁহাকে লাভ করিলে অপর কোনো লাভকেই
ভাগপেক্ষা অধিক বলিয়া মনে হয় না, গাঁহাতে
স্থিত হইলে শুক্লভর বিপদেও সাধক বিচলিত
হয় না!

বিচালাতে ॥"

গোড়ার সেই বে "আমি আছি" বা বিশুদ্ধ দত্তা, যাহা সন্থিতের সবেমাত্র ধন, তাহা শিশুর লার সবল এবং নির্মাণ। মাতা যেমন শিশুর একমাত্র বল, তা ছাড়া, তাহার আর কোনও বল নাই, তেমি, সেই গোড়ার আমি-আছি'র একমাত্র বল সত্যের বল, তা ছাড়া আর কোনো বল নাই। আবার, মাতার বলকে শিও বেষন মাতার বল বলিয়া জানে না পরত তাহা বেন তাহার আপনারই বল धरेक्रभ मरन कतिका निर्देश विष्ठत्र करत ; তেমি, সন্বিতের আমি গাছি-বালকটি সত্যের বল'কে সত্যের বল বলিয়া জানে না, পরস্ক · তাহা বেন তাহার আপনারই বল এইক্লপ মনে করিয়া সাধনে প্রবৃত্ত হয়। তাহার পরে সাধনের চরম সীমার সন্ধিৎ বধন জাগ্রত रहेश डिजिश श्रास्त्र मुर्खि भावन करव, उथन সাধক ব্ৰিতে পাৰে যে সিদ্ধুর বলই বিন্দুর বল; তথন জানিতে পারে যে, সমস্ত বল-

ক্রিয়া এবং জানক্রিয়া সেই অন্বিতীয় অব্ধণ্ড পরিপূর্ণ সভ্যে কেন্দ্রীভূত; আর, সাধক তথন বলে এই যে, "পূর্ব্বে আমি মনে করিয়া हिनाम (य. माथत्नत्र वन वाष्टि हिज्यक्रत्रहे वन ! কি আশ্চর্যা। এই সোজা সত্যাট তথন স্বামি দেখিয়াও দেখি নাই বে, এই সমষ্টি চৈতন্তের বলই এই ব্যষ্টিচৈতত্তের বল; এই সমষ্টিটৈতত্তের জ্ঞানই এই বাষ্টিচৈততের জ্ঞান; এই সমষ্টি-হৈতভাই এই ব্যষ্টিহৈতভা! সাধকের সন্ধিৎ-क्रे रोक्कान यथन माध्यात मधा निवा জাগিয়া উঠিয়া প্রজামূর্তি ধারণ করে, তথন মোটজ্ঞান মোটস্তাকে পাইয়া আশ্বর্যারসে জ্বীভূত হয় এবং স্থানন্দে ভাসিতে থাকে। এই মোট সভাই সাধনের সভা। আমাদের দেশের ভক্তিভাজন আদিম মহর্ষি-গণের একটি সার উপদেশ এই যে, একভাবে মোট্যত্য নামরূপের অতীত, আরএক-ভাবে নিখিল বিশ্বচরাচর মোটসতোর নামরূপ। মনুব্যের স্বরোচ্চারণ-পথের আদি মধাপথের মধা দিয়া অন্তপর্যান্ত, অ হইতে উএর মধ্য দিয়া ম পর্যাস্ত, ষত প্রকার ধ্বনি উচ্চারিত হইতে পারে সমস্তের ঐকতানিক সমষ্টিসার দেমন ওঙ্কারধ্বনি, ভূলোক হইতে ভূৰলোকের মধ্য দিয়া স্বলোক পর্যাস্ত যতপ্রকার লোক-লোকান্তর আছে সমস্তের তেজপুৰ সমষ্টিসার তেমি ভর্গো দেবত, ৰগং প্রদ্বিতা পরম দেবতার বরণীয় ভর্গ, অর্থাৎ তেলোমর জ্যোতি অথবা যাহা একই কথা मक्तिमत्र कान । मक्तिमत्र कानरे वित, चात्र, মৰলময় সতাই বলি, অর্থ একই; কেননা मनन्किरे मिक वदः मछाकानरे कान। আমাদের দেশের প্রাচীন তব্জান-শারের

মোট সিদ্ধান্ত এই বে, (১) বাচক ধ্বনি ওন্ধার, (২) ধ্যের রূপ ভূর্ভ্ব: ম্বঃ বর্ণীর ভর্গ:, (৩) ওন্ধার্কনি যে-এক নিস্তব্ধতা-সাগরে বিলীন, (৪) বরণীয় তেজাময় জ্যোতি বে এক অরপনাগরে বিশীন, সমস্ত লইরা বে এক অধ্ধ পরিপূর্ণ সমগ্র সত্য— সতাং জ্ঞানমনস্তং বন্ধ—তিনিই সাধনের সতা।

विदिक्त नाथ ठीकूत।

ফরাসী বিপ্লবের একটি চিত্র।

মারকুইস ডি ল্যান্সির পত্নী এডেল অত্যস্ত ব্যস্তভাবে গৃহমধ্যে পাদচারণা করিতেছিলেন, এবং মধ্যে মধ্যে গবাক্ষের নিকট গমন করিয়া ইতস্তত: দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতেছিলেন। ভাঁহাকে দেখিয়া মনে হইতেছিল যেন তিনি কাহারও আগমন প্রতীক্ষায় অত্যস্ত উদ্বিশ্বভাবে সময় কাটাইতেছেন।

ফ্রান্সে তথন ঘোরতর রাষ্ট্রবিপ্লব চলি-তেছে, সাধারণতন্ত্রীদিগের তথন পরিপূর্ণ প্রভাব। তাহারা দলে দলে সর্বত যাতায়াত করিতেছে ও সাঙ্গীন হত্তে নগরের ছারে ছারে পাহারার থাকিয়া অভিজাতদিগের ইচ্ছামত গমনাগমনে বাধা দিতেছে। "সাম্য, স্বাধীনতা মৈত্রী—অথবা মৃত্যু" তথন তাহাদের মূলমন্ত্র। তাহারাই তথন ফ্রান্সের শাসনকর্তা। অভিজাতদিগের প্রতি প্রতিহিংসাপরারণ হইরা তাহার। পশুর ভার হিংল্র হইরা উঠিবাছে। রাজতন্ত্রীদিগের উচ্ছেদ সাধনই তখন ভাছাদের একমাত্র লক্ষ্য। তাহাদের সন্ধান পাইলেই বন্দী করিয়া আনিয়া হত্যা করিতেছে। निर्फायी शूक्रय, अमहात्रा जीलाक, हाउँ हाउँ বালকবালিক। কাহাকেও রক্ষা করিতেছে না। পিতার অপরাধে পুত্রকে; স্বামীর অপরাধে ন্ত্ৰীকে; ভ্ৰাতার অপরাধে নিৰ্দোৱী ভ্ৰাতাকে

এবং অন্ত লোকের অভাবে ছোট ছোট বালকবালিকাকে হত্যা করিতেছে। বহুকাল ধরিরা আঘাতের উপর আঘাত পাইরা, আজ তাহারা অন্তুশাহত মাতক্ষের ন্তার, পদাহত সর্পের ন্তার উন্মন্ত হইরা উঠিরাছে। সম্রাট এবং জনীদারগণের বিশাল ব্যসন বোগাইবার জন্ত, আজ হই শত বৎসর ধরিরা তাহারা অনশনে, অন্ধান্ত পরিশ্রমে শরীরের রক্ত জল করিরা তাহারে কি পাইরাছে। তাহার প্রভিদানে তাহারা কি পাইরাছে? অপমান! অত্যাচার! নিষ্ঠুরতা!

আৰু তাহাদের দিন ফিরিরাছে। প্রার
তিন লক্ষ প্রকা ফ্রান্সের বিভিন্ন প্রদেশ হইতে
বিজ্ঞাই হইরা উঠিয়াছে। আৰু তাহারাই
ফ্রান্সের রাজা; তাহাদের প্রতিহিংসা প্রবৃত্তি
তাহারা চরিতার্থ করিবে না ? কে তাহাদিগকে বাধা দিবে ? তাহাদের ভীষণ হত্যাকাপ্ত অবিশ্রাস্কভাবে চলিতেছে। তাহার
ভিতর দরা নাই, মারা নাই, বিশ্রাম নাই,
শ্রান্তি নাই, শান্তি নাই, সমরের হিসাব নাই।
দিনের পর রাত্রি, রাত্রির পর দিন আসিতেছে;
ইহা ভিন্ন সমরের কোন হিসাব নাই। শ্রমং
স্ক্রাট হইতে আরম্ভ করিরা সামান্ত মারক্রইস
পর্যান্ত কেই রক্ষা পাইতেছে না। বেধানে

তাঁহাদের সন্ধান পাইতেছে বন্দী করিরা, কাহাকেও বিনা বিচারে, কাহাকেও বিচারের ভাণমাত্র করিয়া করিয়া কারাগারে প্রেরণ করিতেছে, এবং পরিশেষে "মাডাম গিলোটনের" • করালকুবলে প্রেরণ করিয়া তাহাদের সকল স্থ সকল সাধ জন্মের মত নির্ম্মূল করিয়া দিতেছে। এইরূপে প্রত্যহ কত নরনারী পিতৃপিতামহের অত্যাচারের ঋণ আপন আপন জীবন ধারা শোধ করিতেছে।

সমাট সপ্তদশ সুইএর বিচার এবং প্রাণ-দণ্ড হইয়া গিরাছে। স্থলরী শ্রেষ্ঠা সাম্রাজ্ঞী মারী এন্টর্নেটও আর ইহজগতে নাই। এখনও প্রত্যহ ৪।৫টি "টাম্ব্রিল" পূর্ণ (শক্ট-বিশেষ) বন্দী বধ্যভূমিতে নীত হইয়া ঘাতকহন্তে প্রাণদান করিতেছে। এই হত্যাকাণ্ডে পুরুষ স্ত্ৰীলোকগণ অধিক উৎসাহী। তাহারাও ভিন্ন ভিন্ন দলগঠন করিয়া অভিজ্ঞাত ও রাজতন্ত্রীদিগের সন্ধান করিতেছে। বধ্য-ভূমিতে এই ভীষণ দুখা দেথিবার জন্ত তাহারাই বেশী উৎস্ক! সমাটের ছিল্পস্তক দেখিয়া তাহারাই ঘন ঘন করতালি দিয়াছে; আবার দীর্ঘকাল কারারুদ্ধা, বৈধব্যক্লিষ্টা সাম্রাজ্ঞীর ভ্ৰমন্তক ঘাতক হল্তে দেখিয়া আনন্দে নৃত্য ক্রিয়াছে। তবু তাহাদের শোণিত পিপাসা ^{মিটে} নাই। তবু "মার মার" "কাট কাট" শন্দ ভিন্ন তাহাদের মুখে অন্ত কোন কথা নাই। এডেলের স্বামী মারকুইস ডি ল্যান্সি একজন অভিজাত এবং **রাজতন্ত্রী। এই উন্মন্ত** জনতার নিকট তাঁহার পরিত্রাণ নাই জানিয়া তাঁহারা অন্থ রাত্তেই সামাক্ত ক্রবকের বেশে

প্যারিস পরিত্যাগ করিয়া ইংলণ্ডযাত্রা করি-বেন ঠিক করিয়াছেন; এবং এডেলের ধাত্রী ম্যাডাম গেবেলের গৃহে একদিনের জ্ঞ আশ্রম গ্রহণ করিয়াছেন। ম্যাডাম যদিও সাধারণতন্ত্রী কিন্ত একজন ন্ত প্ৰত্যু হারা পালিতা কম্ভার ক্রন্মন উপেক্ষা ক্রিতে পারেন নাই। এডেলের স্বামী তাঁহাদের নির্কিয়ে করিবার যাত্রার পাশ সংগ্ৰহ क्छ महत्त्र शिश्राष्ट्रन; এডেল তাঁহারই আগমন প্রতীকায় অত্যস্ত ব্যস্তভাবে সময় কাটাইতেছেন।

ম্যাডাম গেবেল এই সময়ে গৃহ প্রবেশ করিলেন। আঁহার বয়:ক্রম অন্থমান পঞ্চাশৎ বংসর; কিন্তু শারীরিক প্রমে ও মানসিক ক্রেশে তাঁহাকে বয়স অপেকা বন্ধা বোধ হয়। তিনি এডেলের ব্যস্তভাব দেখিয়া ক্রকস্বরে বলিলেন,—"ব্যস্ত হইয়া লাভ কি ? বিপদের সময় অবৈর্ঘ্য হওয়া মৃর্থের লক্ষণ।"

এডেল ঈষৎ হাস্ত করিয়া কহিলেন,—
"মা, আমার স্থামীর পদে পদে এমন বিপদ আমি কি করিয়া ধৈব্য ধারণ করিব ?"

ম্যাডাম কহিলেন,—"তোমার স্বামীর কোন বিপদ ঘটিলে তাহা তার উপযুক্ত শান্তিই হইবে। একমাত্র তোমার ক্ষমুই আমি তোমাদের আশ্রম দিয়াছি তাহা না হইলে তোমার স্বামীকে এক্ষণি ধরাইয়া দিতাম।" এডেল শিহরিয়া উঠিয়া কহিলেন,— "মা, কেন এমন নিষ্ঠুর কথা বলিতেছ? তোমাদের কি দয়া মায়া নাই ?" ম্যাডাম গর্জন করিয়া উঠিয়া কহিলেন,—

"का गांवा ! তোমवा कावाव रवा बांबाव अक्रकांव शोक्क रहेवा जानिया। न्याना त्यामात तथा गारे । जापात प्राणित प्राणित प्राणित वस्त होता हो *छैपत्र वस्त बर्बाश्चिक बजाठांत्र कति*ताह ভখন ভোৰৱা কি ৰৱা মারা দেখাইয়াছ? কি অত্যাচার না করিয়াছ ? আমাদের স্বামী প্রদের পশুর স্থান্ন গাড়ীতে জুড়িন্না সারাদিন খুরাইয়াছ; রাত্রে তোমাদের নিদ্রার বাাঘাত হইবে বলিয়া ব্যাঙ্ তাড়াইবার জন্ম সারারাত ভাহাদের পাহারায় নিযুক্ত করিয়াছ; বিনা বেতনে কুতদাসের স্থায় খাটাইয়াছ; আমাদের শস্তে নিজেদের পালিত সধের পশু পক্ষীর আহার যোগাইয়াছ—নিজেদের জন্ত একটি শশু রাখিতে পারি নাই। ফদি কোন দিন निष्क्रामत क्छ मूकारेश मामाच किছू ताथि-য়াছি, তোমরা দেখিলে তাহাও কাড়িয়া লইবে বলিয়া ছার ক্রছ করিয়া আহার করিয়াছি। আমাদের বয়স্থা কন্তাদের বল-পূর্বক ধরিয়া লইয়া গিয়া তোমাদের স্বামী পুত্রেরা তাহাদের বিলাদের দামগ্রী করিয়াছে —ভাহাতে কেহ বাধা দিতে গেলে ভাহাকে হত্যা করিতে পর্যাস্ত কুন্তিত হয় নাই। কেন ? ना উহাদের অধিকার বলিয়া। জাজ কোন

এডেল এই সময়ে ভীতম্বরে বলিয়া উঠিলেন,—

লজ্জার মাথা থাইয়া দয়া মায়ার কথা বলিতে

আসিয়াছ ? এডেল—এডেল"—

"ক্মা কর—ক্মা কর, আমার অপরাধ रुरेशांट्य ।"

ম্যাডাম একটু শাস্ত হইলেন। .উল ও কাঁটা বাহির করিয়া মোজা বুনিতে লাগিলেন। এডেল গৰাক্ষের নিকট দাঁড়াইরা বাহিরের দুর্গ্র দেখিতে লাগিলেন। ক্ৰমে সন্ধার

मात्रकृरेन वयन बानिएएएम ना। वर्षण সমর কাটাইবার জন্ত একথানা টানিয়া ম্যাডামের নিক্ট বসিয়া গর মারস্ত कत्रित्नम,-

"আছা! माांधाम शित्वन, छूमि कि मत्न কর আমরা নির্ব্বিয়ে ইংলঙে পৌছিতে পারিব ১* ম্যাডাম বলিলেন,---

"মত্যম্ভ কঠিন ব্যাপার—পুব সাবধান পাহারা ক্রমেই বেশী হওয়া প্রশ্নেজন। হইতেছে।"

আচ্ছা ম্যাডাম, আমার সমবর্কা তোমার যে একটি মেয়ে ছিল তাহার কি বিবাহ হইয়া গিয়াছে ?"

ম্যাডাম গন্তীরন্তরে বলিলেন,—"আমার কলা নাই।"

এডেল অত্যম্ভ ছ:খিতম্বরে বলিলেন,---তোমার সে মেয়েট বড়ই "আহা! স্থলর ছিল। কবে তাহার মৃত্যু হইল ?"

मााषाम शूर्ववर श्रद्ध वनितनम,-- "जाराव মৃত্যু হয় নাই ?"

এডেল একটু আশ্চর্য্য হইরা জিজাসা করিল,—

"তাহার মৃত্যু হয় নাই ? কোথায় ?"

मााछाष এবার গর্জিয়া উঠিলেন,—"^{(স}, কোথার? মারী কোথার? তাহা আমাকে জিজ্ঞাসা না করিয়া **ভোষাদের স্থাণি**ত অভি-জাতদিগকে জিজ্ঞাসা কর। তাহার মূর্য रहेरन आमात्र इः **हिनं** ना, — किंदं हेरी मुञ्जात अधिक।"

ভারপর এডেলের সোৎস্বদৃষ্টি দেখিরা মাডাম বলিতে লাগিলেন,—"তাহার কি চটৱাছে সে কথা ভনিতে চাও ভবে (भान:—मात्री वष्टे स्वलत हिन। छाहात्र যথন বোড়শ বৎসর বরস তথন তাহার দিকে চাহিলে কেহ চকু কিরাইতে পারিত না। গোলাপ ফুলের মত রং; বড় বড় টানা টানা চোক ছটি; जूक शंधे (बन जूनि निश्रा जाँका; বাশীর মত নাকটি; লাল টুকটুকে পাতলা ঠোট ছুখানি; কোঁকড়া কোঁকড়া এক ঝাঁক চল কতক পিঠে, কতক কপালে, কতক কাধের উপর আসিয়া পড়িয়াছে; উজ্জ্ব চকুগুট সর্বদাই হাসিতেছে,—সে এক অপুর্ব তাহার এই দৌন্দর্য্যই তাহার কাল হইল। আমি তাহাকে রক্ষা করার চিস্তায় সর্মদাই বিত্রত থাকিছাম। নিজের শত পরিশ্রম হইলেও তাহাকে কোথাও কাজে পাঠাইতাম না। কিছ আমার অদৃষ্ট বাদ সাধিল; মারীর পিতা কথা শ্যার পড়িলেন; আমি তাঁহার সেবা করিয়া অন্ত কোনও কাজ করিবার সময় পাইতাম না। কে তথন তাঁহাব ঔষধ পথা ও আমাদের আহার যোগায় ? মারী বেশ স্থন্দর সেলাই করিতে পারিত—আমাদের এই গুহের নিকটেই এक है नतिबत्र कात्रशाना हिन, मात्री त्रशान কর্মে নিষ্ক্ত হইল। হায়! কেন তাহাকে ^{সেথানে} পাঠাইলাম ^१ কেন নিজে উপবাস ক্রিয়া, ভিক্ষা ক্রিয়া স্বামীর ঔবধ পথোর যোগাড় করিলাম না ?" ম্যাভাম চুপ করি-लन। এডেন উৎস্কভাবে विनातन-"তারপর ৽".

"একদিন এক ক্ষীলার পুত্র সেই

দোকানে কাপড় করমাইস দিতে আসিল।
তাহার দৃষ্টি মারীর উপর পড়িল। সেদিন
ছুটি হইলে মারী বাহিরে আসিরা দেখিল
সেই যুবকটি দাঁড়াইয়া আছে। সে মারীকে
ছ একটি প্রেল্ন জিজ্ঞাসা করিল,—মারীও উত্তর
দিরা চলিয়া আসিল। এইরপে প্রত্যাহ
ছুটির পর মারীর সহিত সাক্ষাণ করিয়া
ছরাত্মা ক্রমে ক্রমে মারীর উপর তাহার
মোহজাল বিস্তার করিল। মারীও তাহার
ফলর চেহারা দেখিয়া ভূলিয়া গেল। আমি
হতভাগিনী রুগ্র স্থানিলাম না। একদিন সে
মারীর নিক্ট বিবাহের প্রস্তাব করিল।"

ম্যাডাম চুপ করিলেন—কিছুক্ষণ নীরব থাকিয়া আবার বলিতে লাগিলেন,—

"মারী যথন হাসিতে হাসিতে আসিয়া
আমাকে সেই বিবাহের প্রস্তাবের কথা
বলিল, আমার মাধার আকাশ ভাঙ্গিরা
পড়িল। আমি ত এই প্রস্তাবের অসভাবিদ্ধ সম্বন্ধে অনেক করিয়া ব্রাইলাম—
বোধ হইল যেন সে আমার কথা ব্রিল।
সে নেই ব্বকের সহিত আর বাক্যালাপ
করিবে না এইরূপে প্রান্ধ ছই মাস কাল গত
হইলে আমি তাহার সম্বন্ধে একটু নিশ্বিস্তন্ধ
হইলাম। সহসা একদিন বজ্রাঘাত হইল—
মারী রাত্রে গৃহত্যাগ করিল।"

ম্যাডাম শাবার নীরব হইলেন। তাঁহার দৃষ্টি উদাস; তিনি বেন বর্ত্তমান ভূলিরা সেই শতীতের সব ঘটনা প্রত্যক্ষ করিতে-ছেন। এইরূপ কিছুকাল নীরব, নিশাক্ষ থাকিয়া ডিমি হঠাৎ চমকিরা উঠিলেন,

"দয়া মায়া ? তোমরা আবার দয়া মায়ার কথা বল ? তোমাদের লজ্জা নাই ? আমাদের উপর যথন অমাসুষিক অত্যাচার করিয়াছ তথন তোমরা কি দরা মারা দেখাইরাছ? কি অত্যাচার না করিয়াছ ? আমাদের স্বামী প্রদের পশুর স্থায় গাড়ীতে জুড়িয়া সারাদিন খুরাইয়াছ; রাত্রে তোমাদের নিজার ব্যাঘাত হইবে বলিয়া ব্যাও তাড়াইবার জন্ম সারারাত ভাহাদের পাহারায় নিযুক্ত করিয়াছ; বিনা বেতনে কুতদাসের স্থায় খাটাইয়াছ; আমাদের শস্তে নিজেদের পালিত সধের পশু পকীর আহার যোগাইয়াছ—নিজেদের জন্ত একটি শশু রাখিতে পারি নাই। ফদি কোন দিন निष्कामत्र कन नुकारेया मामान किছू ताथि-য়াছি, তোমরা দেখিলে তাহাও কাড়িয়া লইবে বলিয়া হার রুদ্ধ করিয়া আহার করিয়াছি। আমাদের বয়স্থা ক্যাদের বল-পূর্বক ধরিয়া লইয়া গিয়া তোমাদের স্বামী পুত্রেরা তাহাদের বিলাদের সামগ্রী করিয়াছে —ভাহাতে কেহ বাধা দিতে গেলে ভাহাকে হত্যা করিতে পর্যাস্ত কুন্তিত হয় নাই। কেন ? ना উহাদের অধিকার বলিয়া। অ' 🕫 কোন লজ্জার মাথা থাইয়া দয়া মায়ার কথা বলিতে আসিয়াছ ? এডেল—এডেল"—

এডেল এই সময়ে ভী**তস্ব**রে বলিয়া উঠিলেন,—

"ক্মা কর—ক্মা কর, আনার অপরাধ হইরাছে।"

ম্যাডাম একটু শাস্ত হইলেন। তল ও কাঁটা বাহির করিয়া মোজা বুনিতে লাগিলেন। এডেল গবাক্ষের নিকট দাঁড়াইয়া বাহিরের দুশ্র দেখিতে লাগিলেন। ক্রমে সন্ধার অন্ধকার গাঢ়তম হইরা আদিন। উজ্জ্বল আকাশে হ'একটা নক্ষত্র ফুটিরা উঠিন। মারকুইন এখনও আসিতেছেন না। এডেন সমর কাটাইবার জন্ত একথানা চেয়ার টানিয়া ম্যাডামের নিকট বদিয়া গর মারস্থ করিবেন,—

শ্বাচ্ছা! ম্যাডাম গেবেল, তুমি কি মনে কর আমরা নির্বিদ্ধে ইংলঙে পৌছিতে পারিব ?" ম্যাডাম বলিলেন,—

"শৃত্যন্ত কঠিন ব্যাপার—পুব সাবধান হওয়া প্রয়োজন। সাহারা ক্রমেই বেশী হইতেছে।"

আচ্ছা ম্যাডাম, আমার সমবরস্কা ভোমার যে একটি মেয়ে ছিল ভাহার কি বিবাহ হইয়া গিয়াছে ?"

ম্যাডাম গন্তীরন্বরে বলিলেন,—"আমার কন্তা নাই।"

এডেল অত্যন্ত হঃৰিতন্বরে বলিলেন,—

"আহা ! তোমার সে মেরেট বড়ই

ফুলর ছিল। কবে তাহার মৃত্যু হইল ?"

ম্যাডাম পূর্ববং স্বরে বলিলেন,—"তাহার মৃত্যু হয় নাই ?"

এডেল একটু আশ্চর্যা হইরা জিজ্ঞানা . করিল,—

"তাহার মৃত্যু হয় নাই ? ভবে সে কোথায় ?"

ম্যাডাম এবার গর্জিরা উঠিলেন,—"সে কোথার? মারী কোথার? তাহা আমকৈ জিজ্ঞাসা না করিয়া তোমাদের স্থাণিত অভি-জাতদিগকে জিজ্ঞাসা কর। তাহার মূর্য হইলে আমার ছ:থ ছিল না,—কিন্ত ইংা মূত্যুর অধিক।"

ভারপর এডেলের সোৎস্কদৃষ্টি দেখিয়া ম্যাডাম বলিতে লাগিলেন,—"তাহার কি হইরাছে সে কথা ভনিতে চাও ? তবে শোन:—मात्री वष्टे युक्तत्र हिल। जाहात्र যথন যোড়শ ৰৎসর বয়স তথন তাহার দিকে চাহিলে কেহ চকু কিরাইতে পারিত না। গোলাপ ফুলের মত রং; বড় বড় টানা টানা চোক ছটি; ভুকু ছটি বেন তুলি দিয়া আঁকা; বাশীর মত নাকটি; লাল টুকটুকে পাতলা ঠোট হুথানি; কোঁকড়া কোঁকড়া এক ঝাঁক চুল কতক পিঠে, কতক কপালে, কতক কাধের উপর আসিয়া পড়িয়াছে; উজ্জ্ব চকুহটি দর্মদাই হাসিতেছে,—দে এক অপুর্ব ঞী! তাহার এই সৌন্দর্য্যই তাহার কাল হইল। আমি তাহাকে রকা করার চিন্তায় সর্বদাই বিব্রত থাকিতাম। নিজের শত পরিশ্রম হইলেও তাহাকে কোথাও কাজে পাঠাইতাম না। কিছ আমার অদৃষ্ট বাদ সাধিল; মারীর পিতা রুগ্ন শ্যার পড়িলেন; আমি তাঁহার সেবা করিয়া অক্ত কোনও কাজ করিবার সময় পাইতাম না। কে তথন তাঁহার ঔষধ পথ্য ও আমাদের আহার যোগায় ? মারী বেশ স্থব্দর দেলাই করিতে পারিত—আমাদের এই গৃহের নিকটেই একটি দরজির কারখানা ছিল, মারী সেখানে কর্মে নিষ্ক হইল। হায়। কেন তাহাকে সেখানে পাঠাইলাম ? কেন নিজে উপবাস ক্রিয়া, ভিক্লা ক্রিয়া স্বামীর ঔষধ পথোর যোগাড় করিলাম না ?" ম্যাভাম চুপ করি-লেন। এডেন উৎস্কভাবে বলিলেন,— "তারপর •ৃ". '

"একদিন এক ক্ষীদার পুত্র সেই

দোকানে কাপড় করমাইস দিতে আসিল।
তাহার দৃষ্টি মারীর উপর পড়িল। সেদিন
ছুটি হইলে মারী বাহিরে আসিয়া দেখিল
সেই যুবকটি দাঁড়াইয়া আছে। সে মারীকে
ত একটি প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিল,—মারীও উত্তর
দিরা চলিয়া আসিল। এইরূপে প্রত্যাহ
ছুটির পর মারীর সহিত সাক্ষাৎ করিয়া
ত্রাত্মা ক্রমে করিল। মারীও তাহার
মোহজাল বিস্তার করিল। মারীও তাহার
ক্ষমর চেহারা দেখিয়া ভূলিয়া গেল। আমি
হতভাগিনী ক্রম্ম স্থামী লইয়া ব্যস্ত থাকায়
ইহার কিছুই জানিলাম না। একদিন সে
মারীর নিকট বিবাহের প্রস্তাব করিল।"

ম্যাডাম চুপ করিলেন—কিছুক্ষণ নীরব থাকিয়া আবার বলিতে লাগিলেন,—

"মারী যথন হাসিতে হাসিতে আসিয়া
আমাকে সেই বিবাহের প্রস্তাবের কথা
বলিল, আমার মাথার আকাশ ভাঙ্গিয়া
পড়িল। আমি ত এই প্রস্তাবের অসন্তাবিদ্ব সম্বন্ধে অনেক করিয়া ব্ঝাইলাম—
বোধ হইল 'যেন সে আমার কথা ব্ঝিল।
সে সেই যুবকের সহিত আর বাক্যালাপ
করিবে না এইরূপে প্রতিজ্ঞাও আমার নিকট
করিল। এইরূপে প্রান্থ ছই মাস কাল গত
হইলে আমি তাহার সম্বন্ধে একটু নিশ্চিস্ত
হইলাম। সহসা একদিন বজ্রাম্বাত হইল—
মারী রাত্রে গৃহত্যাগ করিল।"

ম্যাডাম আবার নীরব হইলেন। তাঁহার দৃষ্টি উদাস; তিনি বেন বর্ত্তমান ভূলিরা সেই অতীতের সব ঘটনা প্রত্যক্ষ করিতে-ছেন। এইরূপ কিছুকাল নীরব, নিম্পান্দ থাঁকিয়া তিনি হঠাৎ চমকিয়া উঠিলেন, চারিদিকে চাহিরা আবার বলিতে আল্লাভা প্রতি চাহিলেন। ক্রিলেন,— প্রকৃত্ কোষণ হইণ

با ياء

"এক বৎসর পরে একদিন সন্ধার সময় মারী ফিরিয়া আসিল। পাপিঠ তাহাকে ছিন্ন বল্লের ভার তাগে করিয়াছে। হতভাগিনী তখন আসরপ্রসবা। আমার স্বামীর তাহার किছ्ना शृद्ध मृजा इरेग्नाहिन। অমৃতাপে, লজ্জায় থ্রিয়মান হইয়া বালিব। মাতার বক্ষে শান্তি পাইবার জন্ত আদিয়া-ছিল. কিন্তু পাপীয়দী মাতা তাহাকে তীএ ভংগনা করিল। অভিমানে ছ:খিনী সেই রাত্রেই আবার আমার গৃহ ত্যাগ করিয়া গেল। সেই অবধি, আজ দশ বৎসর, অনেক অনুসন্ধান করিয়া কোথাও তাহার সন্ধান পাই নাই। এডেল,—এডেল ! কেন তুমি আমার সেই স্মৃতি আবার জাগরিত করিলে ? ধাহা কড বদ্ধে, কত কষ্টে হাদয় হইতে নিৰ্মা-ণিত করিবার চেষ্টা করিতেছি কেন পুনরায় তাহাতে অমি সংযোগ করিলে? এডেল। গ্রমি বুঝিতেছ না—নিজের কি সর্কনাশ র্বিতেছ। আমার প্রতিহিংসা প্রবৃত্তি ্রকবার জাগিয়া উঠিলে তোমাদের আর का नाई!"

এডেশ ম্যাডামের গলদেশ হুই হন্তে বেষ্টন বিরা ধরিরা তাঁহার মুথ চুখন করিরা কহি-লন,—"ম্যাডাম তুমি এত সম্থ করিয়াও গামাদের বে আশ্রর দিরাছ আমি ইহাতে ভূই আশ্চর্য্য হুইতেছি, আর ক্লডক্সভাভারে নিমার হাদর অবনত হুইরা পড়িতেছে। নিমা আনিরা ভোমার মনে কত ক্ষ্ট লাম—আমাকে ক্ষমা কর।"

শাভাম গেবেল পালিতাক্সার মুখের

প্রতি চাহিলেন। তাঁহার কঠোর দৃষ্টি একটু কোমল হইল। তিনি সমেহে এতেলের মুখখানি ধরিরা তাহার প্রতি চাহিল। বলিলেন,—

"আমি এই কোমল অগরপানি জানি বলিয়াই নিচুর হইতে পারি নাই।"

₹

এই সময়ে ক্বৰুবেশী নারকুইস ডি
ল্যান্সি গৃহপ্রবেশ করিলেন। তাঁহার দীর্ঘগঠন
আরত চক্ষ্, স্থগঠিত নাসিকা, উরত লগাট
সকলই স্থলর; কিন্ত গে চক্ষ্তে গভীর
ভাবের একান্তই অভাব। তাঁহাকে দেখিরা
ম্যাডাম ক্র কৃঞ্চিত করিলেন। এডেল দৌড়িরা
গিরা জিজ্ঞাসা করিলেন,—

"কি হইল হেনরী ?" হেনরী উত্তর করিলেন.—

"সব প্রস্তত—স্থামরা আর এক ঘণ্টার মধ্যেই এই গৃহ ত্যাগ করিব,—তৃমি প্রস্তত হইরা এস।"

ম্যাডাম গেবেল এডেলকে ক্রবকপত্নীর বেশে সজ্জিত করিরা দিলেন। এডেল তখনই প্রস্থান করিবার জন্ম ব্যস্ত হইল। কিন্ত কিছু আহার করিরা লওরা যুক্তি সঙ্গত বোধে ম্যাডাম কিছু আহার্য্য আনিরা দিলেন।

আহার করিতে করিতে হেনরী কি
করিয়া পাশ সংগ্রহ করিয়াছেন, কত কই
কত প্রবঞ্চনা করিতে হইয়াছে, একবার
প্রায় ধরা পড়িতে পড়িতে বাঁচিয়া
গিরাছেন, ইত্যাদি সব গল করিতেছিলেন।
এমন সমর পথে অত্যস্ত কোলাহল শ্রুত
হইল। তাঁহারা সকলে গবাঁক্লের নিকটি
গিরা এক ভীষণ দুখা দেখিলেন। ছইটি বনী

भूव "होमजिन" चित्रित्र। क्यांत धार्मक क्य শোক অভ্যন্ত কোলাহল করিতে করিতে চলিতেছে। সেই "টাশ্বিলে" প্রায় পঞ্চাশৎ वली कांत्रांशांदत्र नीख इटेटल्डा कह वा মন্তক অবনত করিয়া বদিরা আছে—কেহ বা একটু সহাত্মভূতির জন্ত কাতরনয়নে চারি দিকে চাহিডেছে; কেহ কেহ বা কিছু মাত্র জ্রকেপ না করিয়া পরম্পর বাক্যালাপ করিতেছে: আবার কেহ বা বছাঞ্জনী হইয়া প্রার্থনা ,করিতেছে। সকলের অগ্রে, অগ্রে, বৈই জনতাকে উৎপাহিত করিতে মশাল হত্তে এক বিকটমূর্ত্তি রমণী চলিতেছিল। তাহার পরিধানে ছিল্লবন্ত্র, রুক্ষকেশ বাতাপে উড়িতেছে; অঙ্গ ধূলিময়—কিন্ত তাহার ক্রকেপ নাই। বিকট শব্দে জনতাকে উৎসাহিত করিয়া **हिन्दांटि**। উত্তেজনার সকলে উন্মত্তপ্রার হইরা পৈশাচিক নৃত্য করিতেছে। এই দুখা দেখিয়া এডেল শিহরিয়া ফিরিলেন। স্যাডাম বলিলেন,—

"ঐ যে সমণীমূর্ত্তি দেখিতেছ উহাকে
সকলে "প্রতিহিংসা" বলে। প্রান্থ ছই মাস
হইল এই প্যারিস সহরে উহার আবির্ভাব
হইয়াছে—ও যে কে, কোথা হইতে
আসিয়াছে কেহ জানে না। শিকারী কুকুর
যেমন শিকার খুঁজিরা বাহির করে, ঐ রমণী
অভিজাত ও রাজতদ্বীদিগকে সেই মতই
। খুঁজিয়া বাহির করে। উহার হাত এড়ান
বড়ই কঠিন।"

জনে সেই জনতা দৃষ্টিপথের অতীত ইইয়া গেল। মারকুইন পুনরার আহারে প্রবৃত ইইলেম। এডেল আর আহার করিতে পারিলেন না। কি বেন অমকল সাশকার ভাঁহার অনর থাকিরা থাকিরা কাঁপিরা উঠিতেছিল।

সহসা বাহিরে পদশব্দ শ্রুত হইল, এবং অনতিবিলম্বে কে ছারে করাঘাত করিল।
ম্যাডাম গেবেল কিংকর্ত্তব্যবিমৃদ্ হইরা
দাঁড়াইরা রহিলেন। এডেল দৌড়িরা তাঁহাকে
বাহু বারা বেইন করিরা অক্টু ভীত্ত্বরে
কহিল.—

"রক্ষা কর, ম্যাডাম গেবেল, রক্ষা কর।" বাহির হইতে পুনরায় শব্দ হইল,—

"রিপাবলিকের নামে আজ্ঞা করিতেছি দার খোল।"

এই আজা লঙ্ঘন করিবার শক্তি ম্যাডাম গেবেলের ছিল না। তিনি কঠোরভাবে এডেলকে সরাইয়া দিয়া बादबादगाहन করিলেন। দেখিলেন সেই প্রতিহিংসা ছারে দণ্ডাগমান। সে কহিল,—"আভিজাত্যের পদ্ধ পাইয়া আসিয়াছি—তাহারা কোথায় ?" মাডাম কোন উত্তর করিলেন না। বোধ হইল সে কথা তাঁহার কর্ণে প্রবেশ করিল তিনি স্থির দৃষ্টিতে দেই রমণীর মুখের প্রতি চাহিয়া ছিলেন। কিছুক্ষণ পরে তিনি "মারী" "মারী" বলিয়া ক্রন্দন করিয়া উঠিয়া তাহাকে বুকে লইলেন। মারীও অঞ্ বিসর্জন করিতে মাতা কন্তার মিলনের দুখ দেৰিয়া কোমলপ্ৰাণা এডেলের চক্ষেত্ত অঞ্ **क्**षित्रा छेडिन। कि<u>ष</u>्टकन नोत्रन शांकित्रा गाणाय वित्तन,-

"মারী! এতদিন কোথার ছিলে? তোমার জন্ত কত ক্লেশ পাইরাছি ভূমি কল্লনাও করিতে পার না। মাগো! তোমার এ বেশ এ চেহারা কেন ? মাতা অপরাধ করিলে কি তাহাকে এ রক্ম করিরাই শাতি দিতে হয় ?"

भात्री विनन,-

"মা সে অনেক কথা—পরে বলিব।

এখন যে কাঁজের জন্ত দল ছাড়িরা ফিরিরা

আসিরাছি তাহা সম্পন্ন না করিয়া অন্ত

কিছুতে এক মূহর্ত্তও নষ্ট করিতে পারি না।

সংবাদ পাইলাম হইজন রাজতন্ত্রী এই গৃহে

লুকারিত আছে—তাহাদের সন্ধানে আসি
রাছি।" তার পর হেনরী ও এডেলের প্রতি
অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া জিজ্ঞাসা করিল,—

"ইহারা কাহারা?"

ম্যাডামের উত্তরের অপেক্ষা না করিয়াই
মারী হেন্রীর দিকে অগ্রদর হইতে হইতে
কিজ্ঞাসা করিতে লাগিল,—"মহাশয় সেই
ছব্ত করেকজন কোথায় আপনি জানেন কি ?
যদি আপনি তাহাদের সন্ধান,"—

মারী কথা শেষ না করিবাই হঠাৎ চীৎকার করিরা উঠিল,—

"মা—মা—এডেল ক্ষক নয়! এই হ্রায়াই বিবাহের প্রলোভন দেখাইনা আমার সর্কনাশ করিয়াছিল।"

ম্যাডাম দর্পদংট্রের স্থার চমকিরা উঠিলেন,— 🔻

"কি বলিলে ? এই পাষ্ঠেই তোমার এই অবস্থার কারণ ?" তারপর অভ্যন্ত উত্তেজিত হইরা শলিতে লাগিলেন,— "হার ! হার ! সেহ মোহে ভূলিরা এই ছরাম্মাকেই রক্ষা করিতে যাইতেছিলাম ! কিছ আর নর—বাও দুরে মারা,—যাও স্নেহ মোহ, যাও ভালবাসা—সব বাও ! আজ তথু প্রতিহিংসা সার !" এডেন মারীকে বেশিরা অথি তরে
আড়েই হইরা সিরাছিল। এডকলে একটু
সাহস সংগ্রহ করিরা কহিছে লাসিল,—
"রক্ষা কর—রক্ষা কর — চিরঞ্জীবন ভোমাদের
দাসত্ব করিরা এই ঝণ শোধ করিব। জ্ঞামার
প্রতি দরা করিরা আমার স্থামীকে ক্ষমা কর।"
এডেলের হুই গশু বাহিরা অঞ্চ উছলিরা
পড়িতেছিল। মারী সেই অঞ্চরাশি দেখিরা
আনলে করতালি দিরা উঠিল,—

"হাঃ হাঃ হাঃ চোথে জল ! প্রবল পরাক্রাক্ত মহামান্য মারকুইল ডি ল্যান্দির পত্নীর চোথে জল ! সে একজন ত্বণিত শ্রম-জীবির কন্তার নিকট কুপাভিপারী! এত আনন্দ আমার অদৃষ্টে ছিল ! আজ আমার সব কট সার্থক হইল ! হাঃ হাঃ হাঃ—মা তুমি শীঘ্র যাও লোকজন লইয়া এল—আমি ইহাদের পাহারা দিতেছি।"

ম্যাডাম প্রস্থান করিলেন। এডেল মারীর নিকট নতকাম হইয়া পুন: পুন: ক্রমা প্রার্থনা করিতে লাগিলেন। মারী বিরক্তভাবে তাঁহাকে সরাইয়া দিতে গেল। হঠাৎ তাহার হস্ত এডেলের বন্ধ বিশ্বিত একটি রৌপ্য নির্মিত কুশের উপর পড়িল। তাহা ভূলিয়া ধরিয়া দেখিবামাত্র সে চমকিয়া জিজ্ঞানা করিল,—

"ইহা কোথার পাইলে? এডেল বলিলেন,—

"একটি ছঃখিনী ৰালিকাকে একবার মহাপাপ হইতে নিরক্ত করিয়াছিলাম—সে ইহা আমার দিয়াছিল।"

মারী পুনরার জিজানা করিল ,—

"কত দিন হইল ইহা পাইরাছ ?" এডেন

वित्र नाशितन, -- वात वभ वर्गत हरेन। আমার তথনও বিবাহ হয় নাই। আমি সভাবে সময় নদীতীরে ভ্রমণ করিতে বড ভাল বাসিতাম ৷ পিতার একমাত্র সম্ভান চিলাম-কেহবদে তিনি আমার কোন हेळाई वांधा पिएडन नां। এकपिन मक्तात সময় আমার সন্ধিনীগণ ও ভূত্যগণ সহ নদীতীরে বেডাইতে গিয়াছিলাম। সেধানে একজন গণকের সহিত সাক্ষাৎ হইল। আমার সম্বের লোকজন তাহাকে বিরিয়া দাড়াইয়া নানা রকম প্রান্ন করিতে লাগিল। षामि वकाको हाँगिए हाँगिए चानक पृत গিয়া পড়িলাম। তথন সন্ধ্যা গাঢ় হইরা · আসিয়াছে—-ফিরিব ফিরিব মনে করিতেছি এমন সময় দেখিলাম একটি রমণীমূর্ত্তি ধীরে ধীরে অগ্রসর হইরা নদীতে নামিতেছে। এই সন্ধার সময় কে স্থান করিতে আসিল গ আমি একটু কুতূহনী হইয়া দেখিতে গেলাম। কাছে গিয়া দেখিলাম স্থান নৰ--বমণী আত্মহত্যা করিবার চেষ্টা করিতেছে। আমি পশ্চাৎ হইতে তাহার ক্ষমে হস্তার্পণ করিলাম। সে চমকিরা কিরিয়া দাঁড়াইলে पिथिनाम এकि **अशूर्स सम्बद्धी** रानिका।"

মানী এই সমলে ব্যগ্রভাবে বলিয়া উঠিল,—

"विनित्रा वांश-विनित्रा वांश।"

অভেল বলিতে লাগিলেন,—"আমি ভাষাকে জিজ্ঞাসা কয়িলাম সে কেন এই মহাপাপে প্রবৃত্ত হইতেছে। সে উত্তর করিল "হাদরের আলা জুড়াইতে।"

আমি তথন ধীরে ধীরে তাহাকে আত্ম-ইত্যা বে মহাপাপ—তাহা করিবার অধিকার ৰে আমাদের নাই ভাহা ব্ৰাইভে নাগিলায।
কিছুক্ষণ পরে সে বেন ব্ৰিভে পারিল।
এখন সে——"

নারী এই সমৰে বাধা দিরা জিজ্ঞাসা করিল,—

"তাহার পরিধানে ধ্সর বর্ণের পোষাক ছিল ?" "ইনা"

"তাহার বক্ষে একটি রৌপ্যনির্শ্বিত কুশ ছিল • "হাা"

"ভাহার কোলে একটি ছোট শিও ছিল ?"
এডেল ক্রমেই আশ্চর্যা হইতেছিলেন।
এবার বলিলেন,—"হাা—কিন্তু ভূমি কি
করিয়া জানিলে ?"

"দে কথার প্রয়োজন নাই তারপর কি ছইল বলিয়া বাও।"

"তার পর সে আমাকে তাহার জীবনের কাহিনী বলিল। সে সব কথা ভনিয়া আর কি করিবে? এই টুকু মাত্র বলি সে এক জনের কুহকে ভূলিয়া বিবাহের আশার গৃহ-ত্যাগ করিয়াছিল। তার পর প্রতারিত হইরা আত্মহতাার প্রবৃত্ত হইরাছিল। সে আমার নিকট আর সব কথাই বলিল কিছ ভাহার পিতার নাম কিছুতেই বলিল না। জিজ্ঞাসা করাতে বলিল "সে পবিত্র নামে কলঙ্ক জারোপ করিয়াছি, তাহা আর উচ্চারণ করিব না।" আমার সঙ্গে কিছু মু**রা** ছিল—তাহার শিশুটির জন্ত ভাহা তাহার रुष मिनाम এवः প্রয়োজন হইলে আবার আমাকে জানাইতে বলিয়া আমি সে স্থান ভাগে করিলাম। এক মাস পরে সে এক খানা পত্ৰ লিখিয়া তাহার শিশুর শ্বরণ চিত্র यक्षे वह क्षि चामात्र शांशहता दिन।

পত্তে শিশুর মৃত্যু সংবাদ ছিল। আমি সেই অবধি আল পর্যান্ত এই জুশটি এক মৃত্ত্তির জন্মও ত্যাগ করি নাই।"

মারী এতকণ উৎকর্ণ হইরা এডেলের কাহিনী ভনিতেছিল। তাঁহার বাক্য শেষ হইলে ধীরে ধীরে কহিল,—

"আমিই সেই রমণী।"

এডেল চমকিয়া উঠিলেন। সেই ফুলর
বালিকা মূর্জি আর এই ভীষণ রমণী মূর্জি! কি
পরিবর্জন! মারী অবনত মন্তকে কিছুক্ষণ
কি চিন্তা করিল। তার পর ক্রতপদে গিয়া
গৃহ গাত্রের এক স্থান টিপিয়া ধরিল—একটী
শুপ্ত বার খুলিয়া গেল। সেই দিকে অঙ্গুলি
নির্দেশ করিয়া মারী কহিল,— '

"এই শুপ্ত বার সম্বন্ধে আমার মাও কিছু
জানেন না। আমি একবার দৈবাৎ টের
পাইরা ছিলাম। রাত্রে সকলে নিদ্রিত হইলে
ঐ পাপিঠের প্রবেশের জন্ত এই বারই প্রত্যর
খ্লিরা দিতাম। যাও—তোমার পাবও
স্থামীর হস্ত ধারণ করিরা ঐ বার দিরা পলায়ন
কর। একবার তুমি একটি অসহায়া বালিকাকে মহাপাপ হইতে রক্ষা করিয়াছিলে—

তাহার সহিত সমেহ ব্যবহার করিয়াছিলে— সে আফ সেই গ্লগ শোৰ করিল। বাও— আমার প্রতিহিংসা প্রবৃত্তি কিরিয়া আসিবার পূর্কে প্রায়ন কর"।

এডেল ক্বভন্তভাভরে মারীকে আলিজন করিরা তাহার মুধ চুখন করিল। হৈনরী এতক্ষণ নীবরে গবাক্ষের নিকট দাঁড়াইরা সব দেখিতে ছিলেন। একটি কথা বলিতেও সাহস কুলার নাই। বিদায়ের সময় মারীর দিকে অগ্রসর হইরা ক্বভন্তভা জানাইতে উন্থত হইলে, মারী ঘুণাভরে তাহা প্রত্যাধ্যান করিয়া কহিল,—

"পত্নীর পুণ্য ফলে রক্ষা পাইলে ক্বভজ্ঞতা তাহাকে জানাও"।

প্রস্থান করিবার সমর এডেল আবার ক্লুতজ্ঞতাপূর্ণ দৃষ্টিতে মারীর মুখের প্রতি চাহিল। মারী নীরব নিশ্চল প্রতিমার মত দাঁডাইরা রহিল।

ম্যাডাম গেবেল দলবল সহ ফিরিরা আসিরা দেখিলেন "শিকার পলাইরাছে। আর মারী নতজামু ও বছাঞ্জি হইরা প্রার্থনা করিভেছে।

नाती मझन।

কি ৰোহ মদিরা, কি অয়ত অরি ত্রণি, দিলে তুমি দিলে বিশ্ব নিথিলে বিথারি। পুলকাঞ্চিত পলে পলে সার' ধ্রনী, স্থান নাহি আজি, স্থান নাহি কোন বিধা-রি।

কি সহাতীত্র অনল উগ্র থালিছে; রাশি রাশি তব লীলা চঞ্চল নয়নে; লক্ষ মদন পুলকে পালকে অলিছে, বর্ণ সবিভা উক্ষল চিতা শয়নে। নিবিৰে আবার সম্ভাগ জলদ বরবে
ন্যভার ধার,—বার বার ওকি ঢালকি ?
কোটি জীবন জাগিছে ও কোন প্রশে ?
গুলিছে কর্ণ নরের মুর্ত্তা আলোকি !

কি ৰোহ বদিরা, কি অযুক্ত অরি বৰণী, বিলে তুমি নিকে বিশ্ব নিখিলে বিখারি । পুলকাকিত পলে পলে সারা বৰনী ; স্থান নাহি আজি, স্থান নাহি কোন বিধারি । ন্তান নাহি আন্তি, স্থান নাহি কোন বিধা-রি।

ক্রদয়ে পূব্দ উঠিরাছে হের মুঞ্জরি,
নিভ্ত বর্গ আসিরাছে ছুট বাহিরে।
শত চুখন অধরের মূলে গুঞ্জরি'
শিহরি উঠিছে মর্গ্রের গাথা গাহিরে।
অক্টের পরে নিধিল বিশ্ব বিকাশে;
দীও দামিনী অধর ছ্বারে সঞ্চলে,

বৰ কেশ পাশ উডিছে উদার আকাশে मूक गरन উছिनिছে नीन अक्ला। শোহ মদিরা, কি অযুত অয়ি রমণি. बिटन क्रिय बिटन विश्व निश्रित विश्राति । পুनकांकिछ भरन भरन मात्रा ध्यनी, ছান নাহি আজি, ছান নাহি কোন ছিধা-বি। ললিত করণা পলিত কি ধরা উর্দে,-वूरक लाग्न कित्र नन्मन मधु शतिमा ? কাহার বর্ণ জীৱন কাঠির পরশে দুরে চলে গেছে মৃত্যুর জড় জড়িমা ? মাতা হয়ে আছ শিশুটিরে কোলে দাপটি, বধু হ'য়ে আছ স্তম্ভিত হৃদি নিলয়ে, ক্সার বেশে পড়িতেছ বুকে ঝাপটি, মুডিরা বঁসেছ মানবের দিক বলরে। কি মোহ মদিরা, কি অয়ত অবি বন্ধি, क्रिल जुनि फिल्म विवनिविदन विवाति। পুলকাঞ্চিত পলে পলে সারা ধমনী, जान बाहि व्यक्ति, जान नाहि दकान विधा-ति। श्रीरहरमञ्जनान त्रात्र।

ডায়িরি প্রসঙ্গ।

The English Diary of an Indian Student. By Rakhal Das Halder with an Introductin by Harinath De M. A. of the Indian Educational Service, Dacca, Ashutosh Library.—
নিতাপ্ত অসহায় অবস্থার পড়িয়া একজন বসসন্তান কিরপ অসীম ধৈর্যাও অধ্যবসায়বলে সদূর পাশ্চাভাত্ত্বে বিদ্যালাভ করিলাছিলেন এবং দৈন্তের মধ্যেও পড়িয়া কিরপে আপনার ইনভিক চরিত্র অবিচলিত রাখিয়া ছিলেন, ভায়িরিখানি পাঠ করিলে আমরা ভাষার পবিচয় পাই। প্রায় অর্ধ্ধ শভানী পূর্বের্ধ ভারতবাসী

বৈদেশিক সমাজে কিরপ সমাদৃত হইতেন, মহাপ্রাণ পাশ্চাত্য ননীবীপণ প্রাচ্যজাতির প্রতি কিরপ শ্রহ্মাবান ছিলেন তাহারও নিগুঁত চিত্র ইহাতে দেখিতে পাওয়া যায়। ততির জনেক বিশ্বত সামাজিক ও ঐতিহাসিক তথ্য কোতৃহলী পাঠকের চিত্ত আকৃষ্ট করে। গ্রহ্মানি উপস্থাসের ক্ষারই স্থপাঠ্য হইয়াছে।

উক্ত ভারিরি প্রস্থানি ভিন্ন উঁহার রচিত
"জীরাষচরিত" গ্রন্থও আমাদিগের হন্তপত হইরাছে।
কাব্যাংশের আড়ম্বর আলোচনা না করিয়া লেধক
ইভিহাসের দিক দিয়া রামচরিত্রের আলোচনা
করিয়াছেন। আলোচনা সংক্রিও হইলেও মনোজ।
সিগাহি বিজ্ঞান্তের পূর্কে এই প্রস্থ প্রথম প্রকাশিত

इत्र। शक्षांन वश्मत्र शूर्व्स बोडांनी स्वयन विश्वक ভাষার বাওলা লিখিভেন ও তাঁহার ভাবের গাভীব্যও किञ्चल हिन वहें कुछ अध्यानि लाई क्रिंटन छाहाँत সমাক शाहना हता विहासम्बद्धित निर्माणका ও উদারতা, লক্ষণের সৌভাত্ত, ভরতের ধর্মবিষ্ঠা, সীতা-দেবীর অভুলনীয়, 'ৰামিণরায়তা' ও তাহারি সহিত রাষচন্দ্রের অসমসাময়িক ভারতবর্ষ ও সন্নিহিত অবেশ-সমূহের সভাতার একটা সংক্রিপ্ত আভাব এত্ত্বে স্পরিফ্ট। এই কুজ এছে লেবক রামচক্রের কালনিরপণ করিতে ঘাইয়া বছবিশেবজ্ঞের মডের আলোচনা বরিয়া নিজেন মত স্থপ্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। लिथरकत्र मछ "हार्याधरनत्र १२० वर्मत्र भूर्व्स রামচক্র প্রাহুত্ত হইয়াছিলেন। পুরাণের মতে ছর্ব্যোধন বিক্রমাদিত্যের প্রায় ১৮৫৯ বংগর পর্বের বর্তমান ছিলেন। তাহার সহিত ৭২° যোগ করিলে रुव । **সেং**হল পুরাব্তামুসারে विक्रमोमिछात्र २७७० वरमत्र भूटर्स त्रावरणत्र मृङ्ग र ।" বংসর পূর্বে লেবক এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইরা-ছিলেন। উাছার পক্ষে আলোচনার সৌক্র্যার্থে বে সকল প্রমাণ দুল্লাপ্য ছিল, আজ তাহা সুলভ হইরাছে সন্দেহ নাই। পরবর্ত্তী মতাফুক্রমে তাঁহার ধারণা আন্ত হইতে পারে, তাহা বিশেষজ্ঞের বিচার্য: সে সম্বন্ধে আমাদিপের বিশেষ বক্তব্য না থাকিলেও, তাঁহার পক্তে ষেটুকু প্ৰমাণ সম্ভৰণর হইয়াছিল তিনি যে তাহার সন্থাৰহার ক্ষিত্রাছিলেন, ইহাই আনন্দের বৈবর।

এই প্রসঙ্গে রাধালদাসবাব্র জীবনী স্বক্ষে
সংক্ষেপে একটু আলোচনা ক্রিলে নিভান্ত অস্ত্রত ভ ইবৈ না বলিয়া মনে করি।

ইংরাজী ১৮৩২ খ্রীষ্টান্দের ডিসেম্বর মাসে ভাটপাড়ার নিকটবর্তী জগদল প্রামে রাখালদাসের জন্ম হর। রাধালদাসের পিড়া নিষ্ঠাবান হিন্দু ছিলেন। রাখাল-লাস মহর্বির জমুবর্তী সংস্কারক দলে বোগ দেন ও সমাজে ধর্মবিবয়ক বক্তৃতা করিতেন। বাঙলা ভাষার প্রতি বাল্যকাল হইডেই ভাষার জমুরাগ ছিল। সংবাদপ্রভাকর, স্বাচার্যজ্ঞাকা, সোদ্প্রকাশ প্রভৃতিতে ভাষার রচনাদি প্রকাশিত হইত। ল্যাবের লিখিড

त्मनिवदवड करवक्षे छेगांचारम् ७ वांबा बाबरमाहन ত্ৰাৰ বৃচিত Precepts of Jesus আছেৰ ভিত্তি বলাতুবাৰ করেব। উপরিতৰ কর্মচারীর সভিত সভাতর হওরার ভিনি কটকের ভুল ইবলেপ্টরের কর্ম ত্যাগ করিয়া ১৮৩১ গ্রীষ্টাব্দে বিলাভবাতা করেন। बाराज अनिक वार्किन भाषत्री एक नार्ट्स्व केनिक जानां रव । विनारक मध्य रेकेनिकांवनिक इरल **अवदानकाल उन नांद्य छाहाटक देखेनिहा**तिहान গ্ৰীষ্টানধৰ্ষে বীক্ষিত করিবার প্রহাস পাওৱার ভালত সহিত তাঁহার বিরোধ ঘটে। বিলাতে নৃতৰ বিখ-বিদ্যালয়ে বাঙলা ও হিন্দুস্থানী ভাষায় ভিনি কিছুকাল শিক্তা করেন। এই সময়ে চাল'স ডিকেল All the year Round Marte ভারতবর্ধ সম্বন্ধে ভিনি প্রবন্ধানিও লিখিতেন। লওন विश्वविद्यालय वर्षेट्ड Turis produces व्यमः मान्छ লাভ করিয়া তিনি কিছুকালের বস্তু আরল্ভ ও ক্রান ত্ৰমণে বহিৰ্মত হন। ১৮৬২ প্ৰীষ্টাব্দে তিনি মদেশে প্রভাগমন করেন।

খনেশে ফিরিয়া তিনি হাইকোটে কিছুকাল ওকালতি করেন পরে ওকালতি হাড়িয়া চাকুরি গ্রহণে বাধ্য হন। তদানীস্তন ছোট লাট সার সিসিন বীডন টাহাকে ডেপুট ম্যালিট্রেটের পদ প্রদান করেন। জীবনের শেষ ছয় বংসর তিনি ছোটনাগপুরে কোট ওয়র্ডাস এটেটের ম্যানেজার ছিলেন। রাজকাধ্যে টাহার দক্ষতা সবজে চীফ সেক্রেটারি এডগার সাহেবের পত্র নিমে উদ্ধৃত হইল।

"The Lieutenant Governor also acknowledge the valuable assistance given to you by Rakhaldas Halder, who was the manager of the Chota Nagpur Estate and takes this opportunity of placing on record his sense of the loss which the Government has sustained by the death of this excellent officer"—Extract from a letter to Commissioner Chota Nagpur Division, No. 51 J dated the 9th January, 1881.

১৮৮৭ সালের নবেশর সাসে রাখানধানের সৃত্য হর। রাখানদানের অবেকগুলি পুরু কল্পা। ভরংগ লোচ ভেপুটনাজিট্রেট শীবুজ অকুনার বাননার অনেকেরই কপরিচিত।

রাণালদানের জীরানচরিত্রের রচনা সববে জীর্জু রামেল্রক্ষর জিবেলী বলেল "প্রস্তের ভাষা ভৎকালিক সাধুভাষার উৎকৃষ্ট উদাহরণ ু * ক্ষেক্ষ বৎসর পূর্বে আমাদের শিক্ষিত সমাজের চিভাঞ্গালীর আদর্শ এই গ্রন্থ হইতে জনেকটা পাওয়া যায়।"

গণ্যরচনাগুলি ভিন্ন তাঁহার রচিত অধ্যকাশিত একথানি নাতিবৃহৎ কবিভাগ্রন্থও আমাদিগের হত্তগত হইরাছে। ইহা হইতেও তাঁহার চিত্তাশীলতা ও দদেশের প্রতি গভীর অসুরাগের সুস্পষ্ট পরিচয় পাওরা বায়।

বিলাত ধ্বাসী দিগের মধ্যে অনেকেরই মুখে গুনিয়াছি "বিলাত দেশটা" এক অপুর্বে ছান সেছান হইতে ফিরিতে মন ত চাহেই না। কিন্তু রাধাল হালগারের বিলাতে অবছান কালে মন খনেশের অন্ত কি পরিমাণে আকুল হইত তাহা নিয়োজ্ত রচনাংশ হইতেই সকলে বুকিতে পারিবেন। ইহা অবশ্র 'খনেশী'-আন্দোলনের বহু পূর্বেকার কথা।

"কিনা বিতে পারি ভাই! বলি একবার
হৈরি বলেপের মূব ?
স্কবের শুভভৃতি কিভিস্থসার
পোলে পাশরি অস্থ !

* * *
জবনীর কোলে জন্মভূমি কোলে জার
নহে অধিক বিশেষ :

জননার কোলে জগ্নভূষে কোলে জা নহে জ্ঞাইল বিশেষ ; কো বর্গ ছাড়ি আইলাম সিন্ধুপার তাই ছব একদেব।

গৃহ ৷ গৃহ ৷ গৃহ ৷ ধানি সদা শ্রুতি গেহে
আর নাহিক বিরাম ;
আর কি পাইব গৃহস্থ এই দেহে
মোর গৃহ অভিরাম !

উক্ত উদ্ত অংশে বাকোর শপুর্ব বিক্রাস বা ছলের তেখন সলিল সহজ্ব প্রকৃতি না থাকিলেও কথাগুলি অন্তরের নিভ্ততম প্রদেশ হইতে উঠিয়াছে।

नखन, २१ काञ्चन, ১१৮० भकामा।

আৰকাল তাই 'সালা' কবির 'মালাগনা' কৃত্রিম উচ্ছাস হইতে মধুর।

তাঁহার রচিত 'সতী' কবিতাটি আৰ্ল উদ্ভ

করিয়া আষাদিগের বক্তব্যসমাপ্ত করিলাম।

সতী।

কর্যোনা, কর্যোনা সবে নোরে নিবারণ আমি পাগলিনী নহি বটি অভাগিনী, কীণ দেহ হীন বন্ত দক্ষিত লক্ষণ, বাক্ষণ মরেছে কর্যো মোরে অনাথিনী।

চিতায় উঠিব এই শ্রীর ছাড়িব, কারে বলে সুধ কড় নাহি জানি আমি, ইংকাল গেল ছুখে, পরেতে:ভুঞ্জিব যাব অমরের পুর ক্থা গেল স্থানী।

নিধান নিৰ্দোষ ছিল জনক আসার, স্নেহেন্ড দেখিত সোরে পরম সুক্ষরী, তাই দেখি তনি বড় মরে মাবহার বাধিয়া দিলেন কলা সম্পূৰ্ণ করি। পতি হল অক্তমন ছবিনীর প্রতি, না জানি দেখিল যোরে কি অন্তভক্ষণে, মুগ, এব, হর্ষ, শোক, অদুটের গতি। পাঠাইয়া দিল যোরে পিতার ভবনে।

শিভার কৃটিরে আদি করিলাম বাস
(ক'দিন ছিসাম আমি খণ্ডরের ঘরে ?)
যত শড়দিনীগণ করে উপহাস,
কতরূপ অপুষাদ উঠাইল পরে।

জনক আমার ছিল বিগত বৌধন স্তত ব্যাধির কোপ তাঁহার শরীতে, নেবিলাম বড়ে. হ'লে বিগত জীবন, ভাসাইত্ব তাঁর ভক্ষ ব্রাহ্মণীর নীরে। বিবাভা হইলে বাম কেবা রাবে আর, পৃথিবী হইল শক্র, আমি অকিঞ্ন, চাহিলে না দেয় ভিকা করে "মার! মার!" কল মূল থেয়ে কাটি ঘূণিত জীবন।

মোরে তাজি স্থামী অক্স করিল গৃহিণী;
তনর তনরা তার হল অতঃপর,
কিছুদিন সুখভোগে বাহিল সতিনী,

অভাগ্যবতী রাখি পতি গেল লোকান্তর।

আমি পুৰ দাঁড়াইত্বাগৰাৰ পাৰে,
করিত্ব বিবন্ধ স্তাত করিতে গ্রহণ
পারে বরি মাধাখুড়ি; স্বামী মোর হাসে,
ক্রেংলো প্রেডিনী যাও ব্যের সদৰ।

এবে, পূর্ণ বয়স পাইয়া প্রাণনাথ ধন পূত্র রাখি পাছে পেছে ঘর্ণপূর; আমি ভার আদি ভাগ্যা, যাব পতি সাথ, দেহ মোরে ভৈল, নব বসন, সিন্ধুর।'

শুনি মহিলার বাণী বিমিত সকলে আনি দিল জব্য সব বধা প্রয়োজন; আত্ম অভিবেক সতী করি নদী জলে, করে অঙ্গরাগ নব বরিকা বেষন।

উঠিল চিতায় ধনী সহাস্ত বদনে জড়াইল বাছপালে নিরদর শব, অধরে অধর দিল; অনল দহনে হ'ল ভম্মে একীভূত ধক্ত লোকে রব।

शक्ति। हरूर्व मृश्र।

কর্ত্তা ও চক্রকান্তের প্রবেশ।
কর্ত্তা। দেখ চক্রকান্ত,—কি উপার
বল দেখি? আমি হলুম উন্নতিবিধারিনী
সভার প্রেসিডেণ্ট, কাগজকলমে লিখে
প্রতিজ্ঞা করেছি বিরেতে টাকা নেবওনা
দেবওনা; এখন—

ह। कांकि। जांन करत्रनि।

ক। তাত এখন বুঝছি। তখন ত জানতুম না বিনোদের বড় ছটি বোন শিশু-কালে মারা যাবে। যাহ'ক বুঝে না বুঝে একটা প্রতিজ্ঞা যখন করেই ফেলেছি—তখন ছেলের বিষের বেলা সেটা ভেক্সে ১ • হাজার টাকা কি ক'রে চেয়ে বসি বল দেখি ? তাও কি হর চক্তকান্ত,—তুমিই বল ?

চ। আজে তা আর কি করে হবে— ক। ভূমি ত বলে কি করে হবে—কিন্তু গিরি বে বেঁকে বসেছেন,—আর সব পারা বায়—গিরিকেত পারার বো নেই। তুমি বদি কোন উপার করতে পার চক্রকান্ত তবেই রেহাই পাই!

চ। দাঁড়ান একটু ভাবতে দিন।

ক। আঃ ভাব ভাব,—বেশ করে ভাব—তৃমি ভাবতে ভাবতে ভাবতে ভাবতে ভাবতে বাণ ডাকাতে পারবে—তা আমি বেশ জানি! দোহাই তোমার—তৃমিই আমার ভারসা—আমি তোমাকেই এই ভবসাগরের কাপারী বলে জানি।—

চ। আমিত একটা **ধ্**ব সহজ উ^{পায়} দেখতে পাছি—

ক। বল বল চশ্ৰকাত → তোমার ছটি পার পড়ি—বল—বাঁচাও। . চ। আপনি কি যে বলেন !—আমি বলি বিশ্বেটা ভেকেই দিন না—আপনি হলেন বরের বাপ—কঞাদায় ত আপনার না,— কনে অমন ঢের জুটবে।—

ক। হার হার! তা যদি পারতেম!
কিন্তু বঁলব কি ছঃথের কথা—তুমি বেটা
ভাবছ সহজ—দেইটেই ঘব চেরে কঠিন—
(কাছে মুখ আনিয়া মৃত্ত্বরে) তোমাকে
খুলে বল্লে ত আর প্রকাশ হবে না—
জান চক্রকান্ত বেজার জড়িরে পড়েছি,
হরিবাবুর কাছে পাঁচ হাজার ধার নিয়েছিলুম
—যদি বিয়েটা না দিই এক্ষণি তাহলে সে
টাকাটা দিতে হয়।

চ। আর বিষেটা হলে ?

ক। তাহলে ধারটাও শোধ যাবে— নগদ হোজারও ঘরে আসবে।—

চ। বটে ! তাহলে যেমন করেই হোক বিয়েটা হওয়া চাই-ই।

ক। এই বা বলে! কিন্তু গিলি রাজি নাহলে ড কিছুই হচেচ না।

চ। এটা আর এত মৃদ্ধিল কি ? গিরি ত

> হাজার চাচেন—তারা ত আসলে ভাই

দিচ্ছে—সেইটে আর গিরিকে বোঝাতে
পারবেন না।

ক। তা পারি কই ? নগদ ত পাঁচ হাজারের বেনী তাঁকে দিতে পারছি না,— তিনি চান—প্রোদশ।

চ। এতক্ষণে সৰ ব্ৰল্ম। তা আছে
-- আছে, একটা উপায় আছে,—শনীকে

যদি হাত করতে পারা যায়—ভাহলে আর

ভাবনা নেই। •

क। मन्न वन्नि - ठिक ठिक। जांस कि

বলি এত কাঁচা বয়স ও এত পাকা মাথা— আর ছটি মেলে না! কিছ তাকে হাত করাও ত সহজ না,— তবে তোমায় অসাধ্য কিছুই নেই—এই যা!

চ। আপনিও একবার চেষ্টা করুন না ?
শেষে আমি ত আছিই।

ক। আমার চেষ্টা করতে হবে ?
মলালে দেখছি। তাকি করতে হবে বল।

চ। এই পাঁচরকম মিষ্টি বোল চাল ঝাড়বেন—আর গহনা গাঁটির লোভও দেখাবেন।

ক। তুমি ভাবছ সেটা ভারী সহজ—
কিন্তু আমার ভাকে দেখলেই ঠোটের মিষ্টিগুলো সব টক হরে পড়ে। বা'হক যা
করতে হবে তা শীঘ্রই করাই ভাল একবার
তাকে ডেকে আন, দেখি কতদূর
কৃতকার্য্য হই।

(চন্দ্ৰ প্ৰস্থানোগত)

ক। দেখ গিন্নি বেন টের না পান; যদি দেখ গিন্নি রান্না খনে কাজে আছেন তবেই আজে আজে শনীকে ডেকে এন বুঝলে?

5। दि कोट्डा—

(প্রস্থান)

ক। আঃ ভাগ্যিস চক্সকান্ত ছিল!
নইলে কি দশাই হোত! কত পুণ্যির যে
ফল! সে আমার সমুজের তরী—ডাঙার
গাড়ী—শীতের আগুণ—বর্ষার বাড়ী!

গৃহিণীর প্রবেশ।

গৃ। বলি তুমি আমাকে চাও না চক্র-কারকে ? এইটে স্পষ্ট করে পুলে বল দেখি ?

-

ক্ষা প্ৰথম ভাষাৰ একথা ভনতে পেৰেছেন না কি ?

প্রকাঞ্জে—কি হরেছে—কি হরেছে— কেন কেন ?

গৃ। বা হরেছে তা আর বলার না—
এত খ্রচপত্ত করে মিষ্টার সব আন্লে,
সেওলো সব চাঁদাটা ছ'ড়িরে খেরে এঁটো
করে এক সা করে এসেছে।

ক। এই! (হাসিরা) সেজন্ত আর ভাবনা কি! আবার আমি তোমাকে মিষ্টি আনিরে দিচ্ছি।

পি। বটে! ভারী যে দাতা দেখছি!
চক্রকান্ত থাবে বলে বুঝি? ,আমাদের জন্ত
বল্লে ত এক কাণাকড়ির মিষ্টি আসে না!
আমার শশী যদি এ রক্ষটা করত তাহলে
কি হোত বল দেখি?

ক। আমার কিন্ত সন্দেহ জন্মাছে। শনী নিজে থেয়ে ত চক্রকান্তের নামে দোব দিচ্চে না ৪

গৃ। দেখলে দেখলে! আমি আর কিছুতেই এবাড়ীতে থাকব না। তুমি চক্রকে নিম্নে রাজ্য কর আর আমি শশীকে নিমে চলে বাই।

(প্রস্থানোন্তম)

ক। না গিরি না না,—আমি চন্দ্রকান্তকে এখনি খুব সাজা দিরে দিছি। (কর্তার হাত ছাড়াইরা গৃহিণীর প্রায়ন চেষ্টা:

কর্তার তাঁহাকে ধরিষা আনিরা)

ক। আমার সাধের পূর্ণিমার চাঁদ

ছিছিঃ —এত কেন মান!

রান দেশলে ছদর আমার—

ভেঙে শত ধান।

हा र्वाण, जात काला रहर स्टर मा।

ক। আৰি ঠিক বদছি নিম্নি—ভোৰার সাক্ষাতে আৰু চক্রকান্তের নাক কাণ কাট্ব— তবে তাকে ছাড়ব। এখন দলীবনি চাদ-বদনী প্রসন্ন ছও—আষার তাপিতপ্রাণে বরক জন সিঞ্চন কর।

গি। আর আদরে কাজ নেই—বেদিন থেকে চক্রকাস্ত এসেছে—সেদিন থেকে আমার আদর গেছে।

ক। তিন সভিয় করে বলছি—ভা না গিরি—ভূমি আমার চাঁদবদনী

> জীবন মরণ কাটি কেণেক ভোমার অদর্শনে

> > मतिरना पम कांहै।

গি। তা না ত আরো কত! সে সব দিন অনেক দিন চলে গেছে—এখন আমার আর কেউ নেই গো!—কেউ নেই!

উচৈ: यदा कमन---

ক। আহা আহা কর কি গিরি—বুক বে বার! গেল গেল,—বিদীর্ণ হরে গেল! একবার হাত দিরে দেখ!—

(হাত ছাড়াইরা লইরা গৃহিনীর প্রস্থান।)

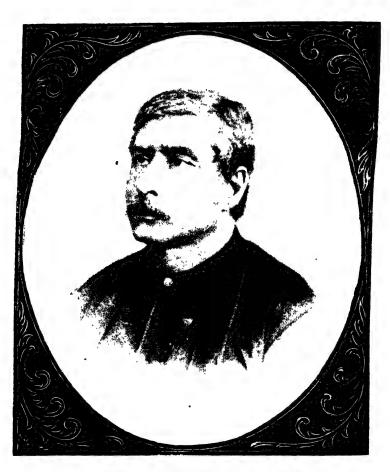
ক। বেরোনা বেরোনা—রাগ করে যেরোনা। নিশ্চর বলছি আমি এখনি চন্দ্র-কান্তের গর্দ্ধান নিরে ভোষার হাতে দেব.।

जङ्गंबन।

কিছু পরে হাত ধরাধরি করিরা উভয়ের পুনঃ প্রবেশ। ক। কোধার বে সেল চক্রকার!

विन ७ ह्वकांच ?

ति। द्वा त करमहे नत्रम भएएह।



রংথাল্দাম ভাল্দাব

আমি বেশ বুৰুছি কোথাকার কল কোথা গড়াবে। ভাবে বেশলে আর একটা কথা ফুটবে না।

ক। কি বে বল—পাগৰ নাকি ? গ্যি। আছো দেখতেই ত পাব ?

ক। এখন তাকে বে দেখতে পেলে হয় ? (না পেলেই ভাল!) বেটার ছেলেকে একবার মজাটা দেখিরে দিই। নিশ্চর জানে কিনা রেগে কেটে ছ আধ খানা করে ফেলব,—তাই বেদম কোথার ডুব মেরেছে!

গি। ঐ যে কোনের বারান্ধায় কারা কথা কচ্ছে না?

ক। (উ'কি মারিরা) একি ব্যাপার।
শনী ও বিনোদ বে। কি বলছে তানি ?

(নেপথ্যে) "তুমি যদি রক্ষা কর শশিম্থি, তবেই বাঁচি! তোমার উপরই আমার একান্ত আশা একান্ত ভরসা—তোমার হাতেই আমার জীবন মরণ! একি মা বাবা যে! (নেপথ্যে শশী।) তাইত আমাদের দেখেননি ত! এখন পালান যাক!

ক। শুনলে ত । এর পরেও তুমি
শনীকে ঘরে রাধবে !— এখনি বিদায় কর—
এখনি ; নইলে আমি ছেলে নিয়ে বিবাগী হব।
গু। স্বগত—ভাইত ? কি ব্যাপার !
হঠাং যে উল্ট উৎপত্তি হোল !

ক। চুপ করে রইলে বে। অস্ত সময়

মুখে বে গভার কোড়ং কোটে। এখন

একেবারে চুপ। আমি কিন্ত আর চুপ করে

থাকতে পারছিনে। হয় শশীকে ভাড়াও নয়
আমি এই চয়ুম। জীবন থাকতে ওয় সঙ্গে

ছেলের বিরে দিতে পারব না। (প্রস্থানোদ্যত।)

গি। ও কর্তা শোন শোন মাঁথা ধাও দাঁড়াও।

ক। যতক্ষণ শশী আছে ততক্ষণ আমি দাঁড়াব? এ শৰ্মাকে তেমন পাওনি।

গি। ওগো কথা শোন—একটু খানি দাঁড়াও; মাথায় একটু ঠাণ্ডা জল দিই—রাগটা পড়ে যাক। . (প্রস্থান।)

শশীর গান করিতে করিতে প্রবেশ। গান।

প্রাণের উচ্ছ্বাস বাঁধতে নারি হায় কি করি হোল একি! হাসির তুফান অধর পুটে আকুল বেগে আপনি ছুটে, নয়ন কোনে বাঙ্গ লুটে;

অংশ রক্ষ মাধামাথি!

যতন করে যতই চাপি,

হাদর বাপী, ততই যেন উঠে ফাঁপি,

একুল ওকুল হুকুল ছাপি;

কেমন করে ধরে রাখি!

গ্ৰন্থ লেখা।

গ্ৰহ লেখা—সেটা এমৰ কঠিন কিছু নয়,
(৩৭) থাতাথানি বেঁথে পাতা ভ'রিবে বেভে হয় ।
ভরাবে বে, চাইত কিছু ? ভাবনা করোনাক :
আবোল-তাবোল বনে এলেই অমনি লিখে রাখো !
তেপে বাহির করো, দাদা, কিছু নাইক ভর ।
হাপাথানাই গ্রহণারের জন্মক্রে জেনো ।
সমালোচকেরেই 'হর্ডা'-'ক্র্ডা' বলে মেনো ।

(এখন) কেই বিজ্ব সময় গেছে, শীতলারি জয় !
অর্থ যদি থাকে তা'লে চলে যাবে সাফ্
প্রথমশ্রেণীর লেখক, তা ছাই লেখ ছু চো-সাপ
এসে যাবেনাক; অর্থেই লেখার পরিচয় !
বাঙলা দেশে যভই আকাল হোক না কেন, তর্
প্রন্থকারের অভাব, দাদা, ঘটছে নাক কভু !
ছাণা, কাগজ শন্তা যদন, নগজে কি হয় !

क्रीतोज्ञेद्धरमार्न मूर्यांनायात् ।

ভারতে চিত্র-কলা।

জনসন চিত্রের সংজ্ঞা-নিরূপণ করিয়াছেন।
"Painting is an art, which could illustrate, but could not inform." "তাহাকেই চিত্র বলে বাহা আঁকিতে পারে, কিন্তু ব্যাথা করিতে অসমর্থ।"—

এরপ সংজ্ঞায় শিল্পের স্বরূপ উদ্ঘাটিত হয় না। রুষীয় স্থপশুত কাউণ্ট টলইয় বলেন,—

"বে শিল্প আপনাকে সব-চেয়ে বেশী মাত্রার প্রকাশ করিতে পারে, তাহা আধুনিক। যে শিল্প পারে না, তাহা গতকালিক। তাহা পরিবর্জনীয়।"

কথাটা অপেক্ষাকৃত পরিষ্কার হইল বটে, কিন্তু আরও বিশদ হওয়া চাই। বিলাতের প্রথাত চিত্রকর শুরু জম্মা রেণল্ড বলেন,—

"বাহা প্রকৃতির অপেকা উচ্চ বর্ণবিশিষ্ট, বাহা নিতা দৃষ্ট হয় না, তাহাই চিত্রকরের অঙ্কনীয়।"

মিঃ হারিসন বলেন,—

"স্মহান সভা এবং কুৎসিৎ বিবরের অস্থবর্তী হইরা, অভাবের নগ্ন দৃষ্ট দেখান'ই চিত্রকরের উদ্দেশ্য।"

আর একজন বিখ্যাত চিত্ত-সমালোচক বলেন,—

"But art is not nature, on it would not be art."

বঙ্গাহিত্য-সম্রাট বৃদ্ধিমচন্দ্র বলেন,—

"যাহা প্রকৃতির প্রতিকৃতিমাত্র, সে স্কৃতিতে ভাদৃশ গৌরব নাই। তাহার কারণ, সে কেবল প্রতিকৃতি— অস্থানিপি মাত্র—ভাহাকে স্কৃতি বক্ত'থার না। যাহা সত্যের প্রতিকৃতিমাত্র নহে—ভাহাই স্কৃতি।"

দেখা ষাইতেছে, অনেকেই প্রকৃতির হবহ নকল করাকে প্রশংসনীয় বিবেচনা করেন না। এই আদর্শ ধরিয়া, বিচার করিতে বুসিলে, বলিতে হয়, আর্যা-চিত্রশির প্রব-আদর্শাসুদারী। বাস্তবিক, প্রকৃতির লীলাবিচিত্র রম্য ।
আমরা ত রোজই দেখিতেছি। তাহার
নিমিত্ত আবার কৃত্রিম চিত্রের দরকার কি ?
এস্থলে ফটোগ্রাফের উপযোগিতা অস্বীকার্য্য
নয়,—কিন্তু চিত্রের সাফল্য বিভিন্ন মার্গে।

মিঃ বেনস্ বলেন,—

"ভারতীয় চিত্র-কলার বিশেষত্ব আছে।"

সে বিশেষত্ব আর কিছুই নয়, ভাহা আর্য্যান্ধিত চিত্রের প্রক্রতি-বিমুধতা।

শ্বরণাতীতকাল হইতেই, ভারতের চিত্রবিভা বিখ্যাত। কিন্তু অনেকেই পৃতভূমির
এই শাখত অমৃত-ভাণ্ডারের অন্তিম্ব সম্বন্ধে
সন্দিহান। আলোচনা না করিয়া, কোন
বিষয়ে বিজ্ঞোচিত মত প্রকাশ করা বৃদ্ধিমানের
কাল বলিয়া মনে করি না।

প্রথমেই, আমাদের দৃষ্টি, "উত্তর রামচরিতের" প্রতি আকৃষ্ট হয়। শ্রীরামচন্দ্র ও
সীতাদেবী লক্ষণ আনীত বিষয়বছল চিত্র
সকল দেখিতেছেন। স্বামীর চিত্র দেখিয়া
বস্থাকসা বলিতেছেন,—

"আহা আর্যপুত্রের কি সুন্দর চিত্র ! প্রফুর-প্রায়
ন ননীলোৎপলবৎ ভামলপ্রিক কোষললোভাবিশিষ্ট কি
দেহ সৌন্দর্য ৷ কেমন অবলীলাক্রমে হরধমু ভালিতেহেন, সুব্দগুল কেমন শিখণ্ডে শোভিত ৷ পিতা বি্ত্রিত
হইরা, এই স্থন্দর শোভা দেখিতেছেন। আহা কি
স্থন্দর !" (বিছ্নসচন্দ্রের উত্তররায়চরিভের স্বালোচনা
দেখ।)

আর একথানি চিতা দেখিরা শ্রীরাম্চন্ত্র বলিতেছেন,—

"প্ৰিয়ে, এই সেই সকল গিরিতম্বলিণী তীরবর্তী তপোৰন। গৃহত্বপুণ বাণপ্রত্থশ্ব অবল্বনপূর্বাক, সেই সেই তপোবনের তরুতলে কেমন বিশ্রাম হথসেবার সমরাতিপাত করিতেছেন।" লক্ষ্মণ
বলিলেন; "আর্য্য, এই সেই জনস্থান মধ্যবর্তী
প্রস্তবন সিরি। এই গিরির শিধরদেশ, আকাশপথে
সতত সঞ্চরমান জলধরমণ্ডলীর থোগে নিরন্তর নিবিড়
নীলিমার অলঙ্কত; অধিত্যকাপ্রদেশ ঘন সরিবিষ্ট
বিবিধ বনপ্রদেশ সমূহে আচ্ছ্র ধাকাতে সত্ত সিঞ্জ দীতল ও রম্পীর; পাদদেশে প্রসর্মলিলা গোলাবরী
তর্কবিন্তার করিয়া প্রবলবেণে গমন করিতেছে।"

চিত্রের এরূপ স্থন্দর বর্ণনাপাঠ করিলে, আর্যাচিত্র কিরূপ উন্নত ছিল, তাহা চিস্তা করিয়া মানস চমৎক্বত হয়।

কালিদানের প্রথম রচনা, "মালবিকাগ্নি মিত্র" পাঠ করিলেও, তাৎকালিক চিত্রশিল্পের কথা জানা যায়।

রাজা অধিমিত্র আর্য্য গণদাস অন্ধিত
নবযৌবন ভারাক্রান্তা সর্ক্রেনান্দর্যাশালিনী তরপ্রী
নালবিকার চিত্র দর্শন করিয়া তৎপ্রতি
অম্বরক হইয়াছিলেন। সমুদ্রগৃহে রাজা
অগ্রিমিত্রের আলেখ্যদর্শন করিয়া, মালবিকা
চিত্রলিখিত রাজাকে চিনিতে পারিয়াছিলেন।

কালিদাসের "শকুস্তলা" নাটকে আলোক-ছায়া সমাবেশিত চিত্রের কথা উল্লিখিত আছে। 'রবুবংশ' প্রভৃতিও চিত্রকথা শৃক্ত নয়।

প্রাচীনকালের "পঞ্চদশী" নামধের পুত্তকেও চিত্রপ্রাস্থ্য পাওরা যার। বধাঃ

"यथा চিত্ৰপটে দৃষ্টমৰস্থানাং চতুইয়ং।

াধা ধৌতঘট্টিতশ্চ লাম্বিতোরঞ্জিতঃ পটঃ" প্রভৃতি। বান্মিকী-প্রাণ্ধিক রামারণে, হমুমান, লঙ্কাপুরে "কোধাও বিচিত্র লভাগৃহ * কোথাও চিত্রশালা"এবং "কৃষ্টিমতলে স্থবিতীর্ণ চিত্রক্ষল আতীর্ণ"— দেখিয়াছিলেন।

বহু প্রাচীন পুস্তকেও চিত্র-প্রসঙ্গের অভাব নাই। এবিষয়ে বহু পুস্তক আছে, সকল শুলির পরিচয় দেওয়া আমার সাধ্যাতীত,— তবে কতকগুলির উক্তি উদ্ধৃত করিয়া দিতেছি।

- >। চিত্রং সংক্রীড়মানান্তা ক্রীড়ানৈবিবিধৈ তথা।—(রামায়ণ)
 - <। "শিল্পী চিত্ৰবিনিৰ্ম'নং বৰ্দ্ধ কিন্ত"
 (ক্ৰীড়াশীলায়াং)
 - ''অলকাবত্রিয়ারক্তং সর্ব্বচিত্রাদিসমূত্র ।" (বিশ্বকর্মীয়)
 - ৩। "অভূনুহর্তং তিমিতং সর্বং তক্রাজ্মওলম—
 তুঞ্জীংভূতে ততভ্বিন পটে চিত্রমিবাপিত্য।"
 (ভারত)

"উৎকলের কটকজেলাত্থ কপিলেশ্বর মন্দিরপাত্তে অন্ধিত মঙোদক চিত্র অতি সামাক্তভাবে, প্রাচীন হিম্পুচিত্রের নিদর্শন প্রকাশ করিতেছে।" (বিশ্বকোষ)

কপিলেশ্বর মন্দিরের ভিত্তিচিত্র সম্বন্ধে রাজা রাজেক্সণাল মিত্রও ব্লিয়াছেন,—

"* * The last has some fresco pain tings of a modern dates, and very questionable character.

মথুরা ও কান্তকুজনগরে অনেক প্রাচীন
দেবালর দণ্ডায়মান থাকিয়া উক্ত স্থানদ্বরের
শোভা বৃদ্ধি করিত। পররাজ্যপিপাস্থ মামুদ
উক্ত হুই স্থানে, ছাবিবশ হাজার দেবালয়
ধ্বংস করেন। ঐ সকল দেবালয়ের গাত্রে
হিন্দুগণের উপাস্ত দেব দেবীর প্রতিমৃর্তি,
বৈজয়ন্ত দেবসভা (Pantheon) প্রভৃতি
আছিত ছিল। মন্দির বিধবংসন্তপে পরিপত

হওরাতে, সেওলিও মানবচকুর অন্তরালে গমন করিরাছে।

সিংহলেও আর্য্য চিত্রশিরের বছ নিদর্শন বর্ত্তমান ছিল। অধুনা ঐ সকল চিত্রের অধিকাংশই বিলুপ্ত হইয়াছে। কারণ, পর্চ্চ গীজগণের প্রবল আক্রমণের মুখ হইতে সেগুলি রক্ষা করে, এমন ক্ষমতাবান লোক তখন ছিলেন না। ক্ষ্পিত আক্রমণকারীরা চিত্র-গুলিকে প্রায় নষ্ট করিয়াফেলেন। ধ্বংসাবশিষ্ট যাহা,—অভাপি বর্ত্তমান আছে,—সেগুলিকে নবীকৃত করিতে পারেন এমন সৌন্দর্য্যাভিজ্ঞ কারিকরেরও এখন একান্ত অভাব।

সিংহলছীপান্তৰ্গত শিগিবি নামধ্যে গুহাভ্যম্ভরে অঙ্কিত চিত্রসকল দর্শনপূর্বক, দর্শক-মাত্রেই শতমুথে প্রশংসাবাদ করিয়া থাকেন। সিংহলদ্বীপাবস্থিত বৌদ্ধ মঠদমূহের মধ্যেও নানাবিধ প্রাচীনচিত্র অক্সাপি নয়নগোচর হয়। প্রবল আক্রমণ ও অত্যাচারের পরেও, আজ তাহারা ভারতের প্রাচীনগৌরবের কাহিনী বক্ষে লইয়া বিরাজ করিতেছে। সর্বধ্বংদী কালের ক্ষতে, যদিও আজ তাহারা জীর্ণ—যদিও সেই ক্ষতে এপর্য্যস্ত কের উপযক্ত প্রলেপ দান করেন নাই,—তথাপি তাহাদের প্রত্যেক অংশে, আর্য্যের খাশত ধ্যানধারণার . বে অন্তমুখী ভাব, যে অপার্থিব কল্পনারম্য সৌন্দর্য্য সগৌরবে ফুটিয়া আছে. ভাহার मञ्जूष, मकनकहे मञ्जूलात खन इहेबा পাকিতে হয়! মিঃ বেল ব্লিয়াছেন:-

"A procession of the queens and princess of Cassyapa's court, with their attendants on their way to worship of the Buddhist viharat 'Pinchura-gala' the hill lying about a mile to the north of Sigireya."

শিগিরির ছবিগুলি আ-নাভি। তাহার
পর মেঘপ্রতিম রেধা-পাতে চিত্রের প্রাস্তভাগ রঞ্জিত। এই এক দোষ ছাড়া, ঐ
সকল চিত্রের অঙ্কনকর্মীগণ অক্সন্তাগুহাচিত্রের
শিল্লির্ন্দের অপেক্ষা কোন অংশে নিরুষ্ট
ছিলেন না। ছবিগুলির আঙুল, দেহ ও
মূথের ভঙ্গিমা উপভোগ্য। প্রত্যেক চিত্রের
রেগু পরিমাণ অংশেও, প্রাচ্য আদর্শের নবভাব
যেন সানন্দে ক্রীড়া করিভেছে। (আমাদের
চোধে নব! আমরা চকুসন্তেও অন্ধ!)

তিকতের একটি মন্দিরের পতাকার উপরে, একটি অতি স্থন্দর চিত্র আছে। সে চিত্রে যে কিরপ নিপুণতা, কিরপ স্থা-সৌন্দর্য্যপ্রেক্ষিতা প্রকটিত, তাহা মুথে অকথ-নীয় এবং ভাষায় অবর্ণনীয়। হাভেল সাহেব তাঁহার নব প্রকাশিত পৃস্তকে উক্ত চিত্রের একখানি প্রতিশিপি প্রকাশ করিয়াছেন। সকলকেই তাহা দেখিতে অমুরোধ করি।

প্রাচীন চৈনিক লমণকারী হ' এনথ্ সং তাঁহার ভারত লমণ কাহিনীতে তদানীস্তন চিত্রশিলীগণের বিষয়ে কয়েকটা কথা লিপিবছ করিয়াছেন।পাদটীকায় তাহা উদ্ভহইল। * সার একজন প্রসিদ্ধ চীন দেশীর লমণ-

Indian Sculptures and Paintings. By E. B. Havell. P. P. 155.

^{* &}quot;Huen Thsang, the Bhuddist pilgrim from China who visited India in the Seventh Century, says that artists from Baktria were employed to paint the Bhudda monastries during the time of Kaniska, king of Gandhara about the first century of over era and that the comment of Serika was famous for its mural paintings."

কারী,—কা হিরান ভারতজ্ঞবণে আগমন করিয়া, কপিলবন্ত দর্শন করিতে গিরাছিলেন। সেধানে তিনি একধানি চিত্র দর্শন করিয়া, তাহার বিবরণ আপনার বিধ্যাত ভ্রমণ-কাহিনীর মধ্যে সন্নিবেশিত করিয়াছিলেন। ঐ চিত্রধানি মহারাজ তদ্ধোদনের ভয় প্রাসাদাভাস্তরে রক্ষিত ছিল। বুদ্দেবের মাতা দণ্ডারমানা। খেত ঐরাবতে আরোহণ করিয়া, বুদ্দেব মাতার গর্ভ হইতে বাহির হইতেছেন!

স্থাসিদ্ধ অজস্বা (Ajanta) শুহার অনেক ভিতিচিত্র (wall-painting) আছে। ছবিগুলি স্বপ্লিত। এ সম্বন্ধে পুরাতত্ত্ত্তগণ আনেক আলোচনা করিয়াছেন। ভারতের প্রাচীন চিত্রাবলী অধিকাংশ স্থলে বিনষ্ট হইয়া গিয়াছে। তাহার প্রথম কারণ, কালমাহাত্ম; বিতীর কারণ, অষত্ম; এবং ভৃতীর কারণ, অনভিজ্ঞ মুর্থ দর্শকগণের অভ্যাচার। যে ছই এক স্থানে এই সকল পুরাকীর্ত্তি অভাপি বিভ্যমান আছে, তাহাদের মধ্যে অজস্তাই প্রধানতম।

প্রসিদ্ধ কাচের প্রসাদে (Crystal Palace) দ্বাবিংশগানিরও অধিক চিত্র,—
অজন্তা হইতে সংগৃহীত হইয়া, রক্ষিত হইয়াছিল। হুর্ভাগ্যবশতঃ অয়িকাণ্ডে সেই সমস্ত
চিত্র ভন্মীভূত হইয়া গিয়াছে। বিনষ্ট
চিত্রাবলীর প্রতিলিপির অভাব ছিল; অয়ির
লেলিহান জিহ্বায় নিংশেষে ভন্মসাৎ হওয়াতে এখন আর তাহা দেখিবার মুখোগ নাই। তবে
তনা যায় ছবিশুলি বন্ধ চমংকার ছিল।

শুহার চিত্রপোদনের পূর্বে পর্বতের ব্দুরপৃষ্ঠ আর্থে সরল করিরা লওয়া হইত। তাহার পর চিক্কণ করিবার জক্ত একরূপ প্রালেপ (Paster) ব্যবস্থাত হইত। ঐ প্রালেপে
পাতি ক্লা রেগ্কণা ও ইইকচুর্ণ প্রভৃতি
মিশানো থাকিত। তাহার পর ভিত্তিগাত্র
চিত্রান্ধনের উপযুক্ত হইরাছে বলিরা
বিবেচিত হইত।

শুহাবাসী বাহুড়েরা চিত্র সম্পারের উপরে নথরপাতে নানারপ চমৎকার কার্ত্র-কার্য্য করিয়াছে। তাহাদের আরক্রার্য্য সম্পূর্ণ করিবার নিমিন্ত ভিত্তিরন্ধু গাত সলিল রাশি আপনার শক্তি প্রয়োগ করিয়াছে। এক এক স্থানের চিত্র ঘোর রুক্ষবর্ণের হইয়া পড়িরাছে। ধ্বংদের জন্য এত অপূর্ক যত্রসম্ভেও চিত্রশুলি আজ পর্যান্ত যে টিকিয়া আছে, তাহাই আশ্রুষ্য এবং আমাদের পরমুদ্যোভাগ্য বলিতে হইবে। মেজর আর্গিল ঐ স্কল চিত্রব্রক্ষণ সম্বন্ধে বলিতেছেনঃ

"আর করেক বংসর পরে, এই মূলছবি গুলি একেবারে ধ্বংসপ্রাপ্ত হইবে। ভবে, এখনো বদি ইহাদের প্রতি মনোযোগ দেওয়া যায়, তবেই ছবিগুলি টি কিয়া যাইবে। * * * এই সকল চিত্রকর, শোতন কলাবিদ্যার চরম জ্ঞান, সম্পূর্ণরূপে অন্তরক্ষম করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন।" Indian Antiquary—By James Burgess 1874.

অন্ধন্তা গুৰার অর্দাংশে কোনরপ চিত্র নাই।
তিন্তির, এক এক স্থানে অসম্পূর্ণ চিত্রাবলীও
সামান্ত নয়। কিন্তু অপর সপ্ত গুরা বার, তাহা
সাতিশর চিত্তাকর্ষক। প্রথম, দিতীর, নব্ম.
দশম, ষঠদশ ও সপ্তদশ-সংখ্যক গুরার চিত্র
সমুদরই সমধিক উল্লেখ বোগ্য।

ঐ চিত্র সক্ল যে, কতদিন চিত্রকর-গণের তুলিকা-রেথাপাতে গিরিপৃঠে কুটিয়া

क्रीजेब्रोहिन, कार्स स्थ्यस्थीन रहेब्रा वना एकत् । কারণ চিত্রগুলি এক সময়ে অভিত হয় নাই। करत, नवम अश्राकिखिल, बांब्रमीर्थ य इवि আছে তাহা দেখিয়া বলা যায়, সেটা অপরাপর শুহাচিত্রের আগে আঁকা হইরাছে। প্রথম শ্বহার সমুধে দেওয়ালে যে ছবি-ছটা আছে, ভাছাই" সর্বশেষে অন্ধিত হইয়াছে। প্রথম. विछीत्र, बर्छम्म ७ मश्रम्म खशांत्र ठिकावनी ষষ্ঠ শতাকীতে আঁকা হইয়াছে বলিয়াই স্থির হইয়াছে। এই সকল ছবিতে বেরূপ ধাঁজের বর্ণমালা দেখা যায়, তাহা ঘারাই চেষ্টা করিলে কাল নির্ণয় করা যায়। অভাত ছবি नश्चम थुः অব্দে অঙ্কিত হইয়াছে। নবম ও দশন ওহার ছবিগুলি বৌদ্ধর্মের পৃষ্ঠ-পোৰক আন্ধাদিত্যের আবির্ভাবকালে, তৃতীয় খৃঃ অব্দের কিছু পূর্বে বা মধ্যে চিত্রিত रहेबाट ।

(Cave Temples of India. By J. Furgusson. p. p. 234)

অজন্তার গুহা সমুদায়ের মধ্যে নবমগুহা প্রাচীনতম। ইহার চৈত্য ৪৬ ফিট গভীর, ২৩ ফিট ছই ইঞ্চ লম্বে এবং ২২ ফিট নম্ব ইঞ্চ চওড়ার।

প্রথম শুহার যে সব ছবি আছে তাহার এক একটা মূর্ত্তি (Figure) সাধারণ দৃষ্ট মালুনের অপেকা রহং। অধুনা,—ঐ সকল মূর্ত্তি যদিও প্রথম অস্কনকালীন মূর্ত্তির ছারাধারী মাত্র,—তাহা হইলেও এখনো উহা সাভিশর চিন্তাক্রক।

অন্নতাচিত্র, কি অন্নকৌশলে, কি মাল মশলার, কি আনর্শে—সর্কবিষয়েই ইউরোপীর আনর্শ হুইতে বিভিন্ন। প্রতীচাদেশে পেনী

বছ (muscular) মূর্ত্তি সকলের যথেই : কিন্তু প্রাচ্য শিলী সে আহর্শের ছারাও মাডান নাই। অজন্ত গুহার চিত্রলিখিত পুরুষদিগের কি উর্দ্ধতন, কি নিমতন পদবীর লোক নির্কিশেষ,—সকলেরই হাঁটুর উপরে কাপড়। এই সকল ঋহা চিত্রে অনেক नाग-नागिनीत मृर्खि चट्टा हेराता, माद्यस्वहे মত দেখিতে। নাগিনীরা অনেক বারগায় মাসুষের মত, আবার অক্তন্তল,—যেখানে যেখানে তাহারা সলিল্বিহারিণী-সেখানে তাহাদের নিমার্দ্ধ সর্পবৎ এবং উপরাদ্ধ মানবাস্থকারী। অজস্তার এই শ্রেণীর অনেক ছবি দেখা যায়। নাগের মাধার একাধিক সর্প এবং নাগিনীদের শিরে একটার বেশী সাপ নাই। মানুষের চোপগুলি একট সভাবাতিরিজরূপে দীর্ঘতর। হাতগুলি স্থন্দর ভঙ্গিমাবিশিষ্ট। আঙুল শুলিরই বা কত রকম ভন্নী! কেবল পান্ধের বেলাই ষত গোল! ক'এক বাৰগাৰ বেশ ভাগ পা দেখা কিছ সর্বান্তলে नद्ध । ন্তনগুলি অভিরিক্ত উরত। পরিচারিকাদের हिट्य मिथा यात्र.—कि अकिन्नश রমণীগণের অঙ্গ-ধৃত বসন এতই কৃষ্ম যে ছবিতে তাহা নৰৱেই পড়ে না। বিস্থাস নানাশ্রেণীর পাছে। वानत्त्रं वानत् नाहै। পুরুবের কাপড় ডোরা কাটা। পুরুষ ও রমণী,— সকলেরই কর্ণালম্বার আছে। কাণের সেই গহনাগুলি এতই ভান্নি ৰলিয়া বোধ হয়, যে আজকালকার কোন ভাষিনী,বদি সেই শ্রেণীর গহনা দিয়া, কানের লোভা ৰাড়াইতে যান তবে তাঁহাকে কাপের মারা জ্ঞাগ করি^{তে}

ं वीतर ३००६



মন্দিরপণে ^মুসুজ অসিতকুমার হালদার কতৃক সুক্ষিত চিত্র *হইতে*

হটবে। কোন কোন কণালকার একই বড়, বে তাহা ক্লমে আলিয়া ঠেকিয়াছে!

(Bhuddha Rock-cut Temples of Ajanta their paintings and Sculptures &c.)
অজস্তার চিত্রাবদীতে কতরকম প্রাচীন অস্ত্র
শক্ত্র, কতরকম পাত্র, পরিচ্ছদ, এবং কতরকম
বিচিত্র গঠনের অশ্বার দেখা বার,—ভাহার
ইয়তা নাই। অক্তাচিত্রের পোবাক পরিচ্ছদ

রন্ধান্তরণ শুলি দর্শন করিলে, সাঞ্চীর আদ-র্শের কথা মনে পড়িরা বার। কারলির বারান্ধা এবং নাসিক ও মধুরার আবিষ্কৃত্ত মূর্জিঞ্জালর পরিচ্ছদ ও অলম্বার ঐ একই শ্রেণীর। ইহা বারাও অনেকটা কাল নির্ণয় করা বার।

আগামী বাবে অল্ডার চিত্র সম্বন্ধে বিশ্বরূপে ব্যাখ্যা করিবার ইচ্ছা রহিল। শুহেমেক্সমার রাম।

পোষ্যপুত্ৰ।

(6)

বেদিন কলিকাতার উকিল বাড়ি হইতে গ্রামাকান্ত লক্ষীপ্রের ফিরিরা আসিলেন সেদিন আবার নৃতন করিরা তিনি যেন প্রেলোক অমুভব করিতে লাগিলেন। দেওরানের সহিত বৈদ্যিক কার্যলোচনার পর যথন তিনি তাঁহার জাজিম পাতা বিছানা ছাড়িরা বাহিরের বাতাসে আসিরা দাড়াইলেন তথন সবে মাত্র সম্মার খ্সর আকালে কলিকাভা বাজারের কুমড়ার কালির মত কীণ অর্দ্ধন্তর উঠিতেছিলেন। একটা গন্ধরাজ মূলের গাছ হইতে অপ্র্যাপ্ত পূপান্ধ উপ্তিত হইরা বাতাস ম্যান্ধিমর করিরা তুলিরাছে, ফুটস্ত ফুলের মত আকাশ ভরা নক্ষত্রভালা ঝিকিমিকি জ্লিতেছিল।

ভাষাকান্ত ধীরে ধীরে সোপানের উপর
আসিরা দাঁড়াইলেন। ফুলের গদ্ধ ভরা সদ্ধার
বাতাস তাঁহার চিন্তারেথান্তিত বর্মাক্ত
ললাট শীতল ক্রিরা দিরা গেল, সোপান
পার্মত সেফালি গাছ হইতে টুপটাঁপ ক্রিরা
গোটাকতক ফুল বুক্তলে থসিরা পড়িল,

ক্ষীণ চন্দ্র একটুখানি উজ্জন হইরা উঠিলেন।
ভামাকান্তের মনে হইল বেন সেই লিও
ক্ষাক্র বেন সেই মিষ্ট গদ্ধ শান্তির হন্তের, শান্তির
অঙ্গের; তাই সেই মৃহ মৃহ নিওক্ষার্প তাঁহার
সমস্ত শরীরটাকে কণ্টকিত করিরা তুলিল।
সে আনন্দ মনে মনে বছক্ষণ অমুভব করিবার
লোভে তিনি সেইখানে বসিয়া চক্ষু মুদ্ধিত
করিলেন।

তাঁহারই দেবালয়ে সন্ধ্যারতির কাঁসর ঘণ্টা বাজিতে লাগিল। অদুরস্থিত নদী আপমার সেই একবেরে কলকলধ্বনিতে বাইতে লাগিল, কল্পনা-বিহবল বুদ্ধের কর্ণে চিরপরিচিত **अंद** অন্তপ্রকার শুনাইভেছিল। জাগ্ৰভ স্বপ্ন-বিষোরচিতে যেন হুইটি প্রীতিকোমল বাহস্পর্শ সর্বাঙ্গে অমুভব করিতে করিতে ভাহার মধুর কণ্ঠের অক্ট কলধ্বনিই তিনি শুনিতেছিলেন। সেই আগড়ম বাগড়ম ছাইপাঁশ বাহা তাহার মুখচিত্তে বেদবেদায় শ্রুতির চেয়েও মূল্যবান বলিয়া মনে হইত সেই সকল ভনিতে ভনিতে ভাহার সর্বশরীর পুনঃ পুনঃ

রোমাঞ্চিত হইরা উঠিতে লাগিল। বৃদ্ধ বছক্ষণ করনা অর্পে ভেক্ষত্তির হইরা বদিয়া রহিলেন। একবার হস্তবারা বৃকটা চাপিয়া ধরিলেন, বেমন সেই বুকের উপর শান্তির ক্ষুদ্র মুথখানা পূর্বের মত চাপিয়া ধরিতে গেলেন অমনি তাঁহার সব স্থপ্ন টুটিয়া গেল, করনার ইক্রজাল ফুরাইল।

স্থামাকান্ত চমকিয়া চারিদিকে চাহিলেন, কই কে কোধায় ? কেহ নাই ; কেহ নাই ; বাতাসে মাধা ছলাইয়া গাছগুলা যেন বিজ্ঞপচ্ছলে হাসিয়া উঠিল, প্রতারক বাতাসটা যেন তীত্র ব্যক্তমের হাসিয়া হাসিয়া বলিতে লাগিল কেহ নাই, কেহ নাই।' ব্যাকুল হইয়া তিনি আকান্দের চাঁদের দিকে চাহিয়া দেখিলেন, কিরপপ্রানীপ্ত পূর্ণচন্ত্রপ্ত যেন সে কথার পোষকতা করিয়া বলিল,—

"क्ट नारे क्ट नारे"।

গভীর দীর্ঘনিখাস ফেলিয়া শ্রামাকান্ত উভন্ন জাহর মধ্যে অবসর মস্তক রক্ষা করিলেন। সত্যা, এতো বড় পৃথিবীটার মধ্যে তাঁহার কেহই নাই; এতো বড় জগৎটার মধ্যে তিনি একেবারে একা অসহার।

কি লজা! এই স্থবিস্থত অসীম নীলাকাশ, এই স্বর্ণোজ্জল পূর্ণচন্দ্র, এই অগন্ত নক্ষত্র, এই সম্মত শীর্ষ বৃক্ষশ্রেণী, ওই ক্লে ভরা গন্ধামাদিত তক্ষলতা, এই ইতন্তত ভ্রমণকারী গর্বিত পবন সকলেই তাঁহার দিকে দয়ার্দ্রনিক্রে চাহিয়া দেখিতেছে, সকলেই যেন তাঁহার নিঃসঙ্গ অসহার অবস্থায় সঙ্গদান করিতে বাবা হইরা তাঁহাকে অমৃগৃহীত করিতে চাহিতেছে, সকলেই যেন তাঁহার অস্তরের দৈত্য বৃষিশ্বা ব্যথিত হইরা সাস্থনা বর্ষণ করিতেছে।

अरत निष्टेत वित्नाम ! स्मर्थ वा जुई छा বাপের কি শোচনীয়অবস্থা করে গেছিস্ দে-যা। তথু তোরি জন্ত সে আজ জড়প্রকৃতি: निकटि कज्यानि महाई इटेब्रा माँजाईबाइ দেখে যা তথু তোরি জন্ম রে তথু তোরি জন্ম আজ তার বুকের মধ্যে কি হাহাকার। সে রাত্রে স্থামাকান্ত একবারও নিজা বাইতে পারিলেন না; যেমনি একটুথানি ঘুষ আসে অমনি কোথা হইতে যেন কাণের মধ্যে সঙ্গীতস্থরে বাজিয়া উঠে "জোঠা মশাই ৷" অনেকবার তিনি চমকিয়া "কেন মা গ" বলিয়া শ্যার উপর উঠিয়া বসিয়াছেন. অনেকবার ব্যাকুলনেত্রে চারিদিকে চাহিরা দেখিয়াছেন, অবশেষে বিছানার মধ্যে থাকা অসহ হওয়াতে উঠিয়া জানলার নিকট আসিয়া কৌচথানার উপর বসিয়া পড়িলেন। জানলার নীচে পুশোখ্যান তারপর জ্যোৎমানোক উজ্জানত নদীর কল। জ্যোৎসারাত্রে ঘুমন্ত নদীবক্ষ আলোড়িত ক্ষিয়া জেলেডিক্সি বাহিয়া ধীবরেরা মাছ ধরিতে ধরিতে চলিয়াছে। তীরে হুএকখানা বালী চুণ বোঝাই করা महाबनी तोका 'वांभा बहिबाटक, छाहात्मब মধ্যে একথানা নৌকা হইতে একটা বিনিম্র মাঝি ভইয়া ভইয়াই চটুগ্রামিম্বরে গান ধরিয়া দিয়াছিল, তাহা ভিন্ন অন্ত কোণাও মায়ুৰের সাডা নাই।

তামাকান্ত বসিয়া ভাবিতে লাগিলেন। .
বিনোদকুমার পলাইবার পরে ভাহার অমুসন্ধানের ক্রটি হয় নাই, ক্লিকাভার সমত্ত ছাত্রাবাস, ইংল্যাণ্ড, আমেরিকা এবং জাপান পর্যান্ত রজনীনাথ সন্ধান লইনাছিলেন; কিন্তু কোনই সন্ধান পাওলা বার নাই। পিতা গভীর মর্থবেদনার আকুল হইরা ভাবিতে লাগিলেন

—কেন ভাহার বিলাতগমনে আপত্তি করিয়াছিলেন। জীবনে কি এ পাপের প্রায়শ্ভিত্ত
করিবার আর অবসর পাইবেন ? তিনি সকল
প্রাণে সেই প্রায়শ্ভিত্ত কামনা করিয়া ভগবানকে ,ডাকিয়াছেন আজও ডাকিতে
লাগিলেন। কিন্তু সে ডাকে তাঁহার সাড়া
পাইলেন না। আবার তাঁহার মনে শান্তি
ভাগিয়া উঠিল।

শ্রামাকাস্ত জোর করিয়া উঠিয়া বসিলেন। যথন তাকে ছেড়ে এতোদিন বেঁচে আছি তথন আর কেন? আর কিসের মায়া!

শ্রামাকান্ত শ্যার উপর পড়িয়া প্রাণপণে চোথ মৃদিয়া রহিলেন, বুঝি চাহিলেই তাঁহার প্রতিজ্ঞা রক্ষা করা ভার হইরা উঠিবে। কিন্তু একি ! আবার যে সেই হুর সেই কণ্ঠ কাণে বাজিয়া উঠে "ক্যেঠা মশাই!"

শ্রামাকান্তের মুদিত চক্ষের সন্মুধে সেই
মারামূর্ত্তি ভাসিরা উঠিল। মারা বিনী যেন তাঁহার
ছই কোমল বাছবারা, তাঁহার কঠ বেষ্টন
করিয়া তাঁহার মুখের কাছে প্রফুল পদ্মের মত
মুখটি আনিরা বীণাধ্বনির মত করে ডাকিল
"জ্যোঠামশাই ?" আর তাঁহার প্রতিজ্ঞা রক্ষা
হইল না। ছরিৎবেগে উঠিয়া বিছানার
উপর বসিলেন। রুদ্ধকঠে বলিলেন "হরি
থিকি মায়ায় আমায় বদ্ধ করলে দ্রামন,
মালো জগদ্ধে আমায় নিরে তুই কি খেলা
খেলছিদ্ মাখু"

তথন প্রভাষ হইতে বিশ্ব ছিল না।
পাণ্ডুবর্গ চাঁদ ভার বাইতেছেন, নদীর অর
ছারাদ্ধকার বিক্ষে জেলেডিলিগুলার মধ্য
হইতে একথানা থেয়া নৌকা আরোহী

লইরা পারে যাইভেছিল, জোরারের মুখে মহাজনী নৌকা করখানা ভাসিরা চলিয়াছে।

শ্রামস্থলরের প্রোহিত হরিনারায়ণ ভট্টা-চার্য্য প্রাতঃসান করিয়া নামাবলী অঙ্গে সাজি হত্তে পৃষ্পচয়ন করিতে করিতে গাহিতে-ছিলেন,—

> "সকলি তোমারি ইচ্ছাইছাময়ী তারা তুমি, তোমার কর্ম তুমিই করো মা লোকে বলে করি আমি।"

মোহমুগ্ধবৎ ভক্ত শ্রামাকান্ত হির কর্ণে দৈববাণীর মত দেই প্রভাত সঙ্গীত প্রবণ করিতে করিতে উচ্ছ্বিতস্বরে গদ্গদ্ কঠে বলিয়া উঠিলেন "ঠিক কথা মা, আমি কে? আমি কি কর্ত্তে পারি? আমার সাধ্য কি তারা! তোর থেলা তুইই থেলাচ্চিস আমি তাই থেলে বাচিচ। সেদিন ভট্টাচার্য্য মশাই গেয়েছিলেন "পুতুল নাচের পুতুল মোরা বেমন নাচাস তেমনি নাচি। যথন মারিস তথন মরি, 'ওমা বাঁচাস যথন তথন বাঁচি।' তবে তোর মনে যা আছে তাই আমার করা, তাই আমার করা।"

(9)

সন্ধার ধ্সর ছারা আশে পাশে লুকাইয়া
ফিরিতেছিল। বৃহৎ পাষাণ চত্বর ও প্রশস্ত
দালান আলোকাকীর্ণ। দেওরালগিরি ও
ঝাড়ের আলোকে পুস্পমাল্যে স্থরভিত ধুপধুনার গন্ধে এবং স্থমধুর নহবতের ইমনকল্যাণ
রাগিণীতে, দেবভূমি স্বর্গভূমির মত প্রতীরমান
হইতেছিল। দালানের প্রত্যেক থিলানে
থিলানে, প্রতি প্রস্তর তত্তের গাত্তে গাত্তে
মন্দিরের ছারে ছারে বিবিধ বর্ণের পুস্মাল্য

আর আর বাভাসে হলিভেছে। স্থার গন্ধের সহিত খুনা শুগ্রুল মিশ্রিত একটা সিশ্ব পবিত্র গন্ধ উঠিয়া তাহা চারিদিকের জন-সমূহের মনে প্রাণে যেন কি একটা অপূর্বা আনন্দ জন্মাইয়া দিতেছিল।

শত শত দর্শনার্থী মন্দিরের যবনিকা-শৃত্য-মুক্তহারের উপর ঝুঁকিয়া পড়িল। প্রতিদিন যাহারা দর্শন করিতে আইসে তাহারাও নৃতন দর্শনার্থীগণের মত আগ্রহারিত; **क्टिंट (मवमर्गात विवय क्रिंड श्रीकंड नार्ट)** সেইজন্ম দেবছারের জনতার মধ্যে একটা ধাকাধাকি ও সোর গোল পডিয়া গেল। ভারের একপার্শ্বে একজন প্রোচার হাত ধরিয়া একটি রমণী দাঁড়াইয়া ছিল। জনতা বাড়িতেছে দেথিয়া তাহারা বারদায়িধা ছাড়িয়া একটু সরিয়া গেল। প্রোঢ়া সন্ধিনীর বামহস্ত দৃঢ় कतिया निकर्गहरस धतिया त्राथियाहित्नन, উভয়ে জনতারত ভেদ করিয়া প্রকাণ্ড দালা-নের এক প্রান্তে গিয়া দাঁড়াইলেন। তাঁহাদের ইচ্ছা ভিড কমিলে দেবদর্শন করিবেন। আরতি আরম্ভ হইল; রাধাক্ষকের মহিমাময় যুগলমূর্ত্তি যেন ভক্তের আরাধনায় সজীব হইয়া উঠিয়া ভক্তর্নের প্রতি চাহিয়া মধুর হাবি হাসিতে ছিলেন। লোকের ভিড় কমিয়া আসিলে রমণী ছয় আবার মন্দিরছারে আসিয়া দাঁড়াইলেন। প্রোচা সঙ্গিনীর হাত ছাডিয়া দিয়া গললগ্ন बख्य टोकाटिंद्र छेनत माथा ८४कारेबा स्नीध প্রণাম করিলেন। কিন্তু তাঁহার অরবহয়। সঙ্গিনী সহসা প্রণাম না করিয়া বছকণ পলকহীন নেত্রে মন্দিরাভাস্তরত্ব দেবপ্রতি-মার দিকে চাহিয়া দেবপ্রতিমারই মতন স্থিয় হইয়া গাঁড়াইয়া গহিলেন। তথন আরতি শেষ

হইরা গিরাছে। আর্ডি প্রদীপ নির্কাণি ও শঝ বণ্টার মঙ্গণবাস্ত থামিয়াছে। সেবকগণ ব্যক্তভাবে মন্দির পরিষার পূর্ব প্রস্থানোম্বম করিভেছিল। অপর্যাপ্ত পুদ मानाविज्वरावत मधा श्रेटिक स्वतका शामिशा कक्र गटाएथ ठारिबाहिएनन, आब छारांत्र वाट-মলিনবসনা গম্ভীরবদনা রমণী একজন স্থির নেত্র তাঁহার মুথের উপর স্থাপিত করিয়া নীরবে দাঁড়াইয়াছিল। চারিদিকের অর জয় ধ্বনি ও বন্দনা গানের মধ্যে তাহার ভাষা-হীন নীরব প্রার্থনা কোথার যেন ডুবিয়া পড়িয়াছিল, তাহার দৃঢ়বদ্ধ ওষ্ঠাধর একবারও किलाज इब्र नारे। नीवर कामना नीवरवर्ष কি স্কান্তর্যামীর পদতলে পৌছাইল না এ জগতে এই বয়সেই তাহার সকল সাধ হুরা-हेन (क कारन!

একে একে মন্দির দালানের আলোক নির্বাপিত হইতে লাগিল। দর্শনার্থীগণ **চ** निया याहेर्ड नाशिन। দেখিয়া প্রোচা উঠিয়া দাড়াইলেন। রমণী তবু নড়িল না, তেমনি অঞ্জলীবদ্ধ করে স্থির চক্ষে চাহিয়া রহিল। দেখিয়া ভাহার সঙ্গিনী বলিলেন "রাত হলো শিবু পেরণাম করে ধানম্যা শিবানীর যেন ধান ভাঙ্গিয়া গেল, একবার পূর্ণদৃষ্টিতে যুগলমূর্ভির দিকে চাহিয়া সে গলায় অঞ্চল দিয়া দেবোদেশে নেতা হইল। পুজারি ঠাকুর ছথানি চন্দন-চৰ্চিত তুলদী পত্ৰ ও হুইখণ্ড ব্ৰুফি প্ৰদাদ তাহাদের হতে দিয়া প্রণামী কুঞ্চীয়া বইলেন। মাৰ্কেলমণ্ডিত বহিচ হৈছে 💆 খনও বড় ধৃম! সেখানে তথনও আলোক অনির্কাপিত, পুল অয়ান ও কোলাহল **অপ্র**তিহত ।

ওন্তাদগণ বাঁষাত্বলার চাঁটি দিয়া মিঠে কড়া আওরাজ বাহির করিয়াছেন, বেহালা তান-প্রায় স্থমধুর বহার তুলিরাছেন এবং স্পিকিত কঠ হইতে "নন্দকি নন্দন বশোদা কুরাঁর, বংশীবটভটচারী" গান উঠিয়াছে। রুমণীছর পাশ কাটাইয়া বাহিরে আদিলেন।

পথে ৰাইতে ৰাইতে কেহ কোন কথা কহিল
না। বুলাবনের রাজপথ তথনও জনাকীণ।
উভন্ন পার্শ্বরু ঠাকুরবাড়ির মধ্যে কোন
কোনটিতে আরতির বাছ্য তথনও থামে নাই।
কোণাও সংকীর্তনের করতালধ্বনির সহিত
বছক্ঠ মিলিত গান, দ্র হইতে বায়ুস্রোতের
মধ্য দিয়া অস্পষ্টভাবে ভাদিয়া আদিতেছে।
কোণাও পানোল্লোসিত মাতালের চীৎকার
প্থিক্দিগকে সহসাচমকিত করিয়া ভূদিতেছে।

বড় রাস্তা ছাড়াইয়া একটি গলির মধ্যে
মাতলিনী ও শিবানীর কাছাকাছি বাসা।
ক্ষীণ জ্যোৎসালোকে গলির থানিকল্র পর্যাস্ত একধারের বাড়িগুলির ছায়া পড়িয়াছিল।
ক্ষনার ক্ষবর্ণ পুরাতন বাড়িগুলা অপরিক্ষুট্ ক্ষীণালোকে যেন পর্বতে শ্রেণীর মতন ছই পার্ধে বিস্তৃত হইয়া রহিয়াছে। কোথায়ও যেন মহ্য্য বাসের চিহ্ন পাওয়া যায় না সব নিজন! মাতলিনী শিবানীকে তাহার বাড়ী পৌছিয়া দিয়া গোলেন।

নীচের ঘরে মার কাছে থোকা খুমাইরা
•িছল। সিজেখরী নিকটে বসিয়া গরমের জন্ত
পাথার বাতাস দিতেছিলেন। শিবানী গৃহে

ফিরিয়া সন্তর্পণে তাহাক কোলে করিরা উপরে

লইয়া গেল। তাহাকে শ্যার শুরাইরা
পুনরার নীচে আসিলে—সিজেখরী বলিলেন

"হটো মুড়ি নিয়ে খানা, গাছের বেশ

ঝাল ঝাল লছা আছে।" শিবানী মায়ের
মসায়িটা বাতাস দিয়া ফেলিতে ফেলিতে
অত্যন্ত সংক্ষেপে কহিল 'না, মা।'
"ঐতো তোর রোগ, ঐ জন্মইতো রাগ
ধরে! ছটো মুড়ি তেল মূন মেথে নে,
জালাসনি বাপু কথা শোন।" শিবানী কুথা
কহিল না, কেবল ঘাড় নাড়িল, "না"।
সিদ্ধেশ্বরী কন্সার অবাধ্যতায় রাগিয়া গেলেন,
কিন্তু এখন রাগ হইলেও সময় বিশেষে তিনি
একটু আধটু আত্মসংযম করিয়া চলিবার
চেষ্টা করিতেন। বলিলেন "নিত্যি নিত্যি
রাতউপোসি থাকিস নি; কচি ছেলের মা
এতে ছেলের অকল্যাণ হয়। লক্ষী মা আমার
কথা শোন।"

শিবানী এরূপ বিষয়ে সাধারণতঃ মাতার আজ্ঞা পালন করে না। কিন্তু আজ দে তাঁহার অমুরোধ অবজ্ঞা করিল না। অনিচ্ছা-সন্ত্বেও অগত্যা কুদ্র কুলের থালায় আহার্য্য লইয়া বলিল "ওপোরে যাই থোকা যদি উঠে কাঁদে!" সিদ্ধেশ্বরী কহিলেন "তা যা, কিন্তু মুড়ি কটা থেয়ে ফেলিস্, ফেলে রাথিসনে।"

কুদ্র কক্ষের একপার্ষে সেই পূর্ব পরিচিত
কুদ্র বিছানায় আজ একটি কুদ্র শিশু
অকাতরে নিদ্রা যাইতেছে। একপাশে মূল্রয়
প্রাণীণ তৈল ও সলিতাভাবে নির্বাণালুথ।
শিবানী খরে ঢুকিয়াই প্রথমে শিশুর নিকটে
গেল! কিছুক্ষণ তাহার স্বয়্প্ত স্থির মূথের
দিকে উৎস্কলনত্রে চাহিয়া রহিল। তারপর
ছোটরক্ষ একটা নির্যাদ ফেলিয়া আস্তে
আত্তে সুরিয়া আদিল!

নিৰ্বাপিত প্ৰায় দীপশিখার ক্ষীণ প্ৰাণটুকু

বারকরেক শেব ঔজ্জন্য দেখাইয়া ধীরে ধীরে ্অনস্তকালের মত অন্ধকারে ডুবিয়া গেল। শিবানী দাঁড়াইয়া দাঁড়াইয়া শেষমুহূর্ত্ত পর্যান্ত मीर्शाया अकाम मृज्य मन्मर्ग कतिम. বাধা দিল না, রক্ষা করিল না। যতক্ষণ পর্য্যস্ত না তাহার শেষ অগ্নিকণিকাটি পর্যান্ত লয় হইয়া গেল তভাক্ষণ দে আপনার তীক্ষোজ্জ্বল পলকহীন দৃষ্টি তাহার উপর স্থাপিত করিয়া রাথিল। কুদ্র জানলাটা থোলাই ছিল, তাহার মধ্য দিয়া অন্ধ অন্ন একটু মিট্মিটে জ্যোৎসা ও মৃত্ মৃত্ বাতাদ ঘরের মধ্যে করিতেছিল। জানলার নিকটে আসিতেই নদীতীরস্থ অশোক গাছের •মধ্যে পুষ্প-খটিত শাখা নাডা দিয়া একটা মন্ততা-পূর্ণ স্থরভি ছড়াইয়া বাতাস ছুটিয়া আদিল, বাতাদে আনোলিত শাখা হইতে গোটাকতক 😘 🛪 পত্র সর করিয়া থসিয়া পড়িল। যমুনার স্থির জলে নক্ষত্রের ছায়াগুলা একটু কাঁপিয়া ভালিয়া তরলায়িত হইয়া উঠিল।

মুড়ির ডালাখানা ঘরের মেজের একপার্শের রাথিয়া দিয়া অঞ্চলে ফেলাক্তলত মুছিয়া শিবানী সেই জানলার নিকট বসিল, এমনিই সে প্রতিদিন বসিত। ঘরে অন্ধকাব, বাহিরে অন্ধকার, নদীর বক্ষ অন্ধকার, ওপারে অন্ধকার আরো নিবিড়তর। ঘন বিহুত বৃক্ষপ্রেণী সেই নিবিড় অন্ধকারের মধ্যে অভেণ্ট তুর্গপ্রকারের মত অনুর পর্যান্ত বিস্তৃত। তএকটা তালগাছ সেই বৃক্ষপ্রাকারের উপর দিয়া তাহাদের অন্ধকারময় মন্ট মনীর্থ মন্তক উর্দ্ধে উল্লোলনপূর্বক দাঁড়াইয়া আছে। সহসা তাহাদের দিকে চাহিলেই মনে হয় তাহারা বৃদ্ধি কোন প্রেত-

লোকের প্রাণী, বৃঝি **ও অভকার রাজ্যে** অস্ত্রতম্পার্ত হর্গের অজের প্রহরী ।

প্রথম গ্রীমতাণে ইংরাজ রাজ্যের থালের কুপায় চঞ্চ গতিশালিনী নিৰ্মালস্লিলা ব্যুনা ভথাইয়া গিয়াছেন। তাঁহায় যৌবনুমাধুরী, পূর্ণ ললিত দেহলতা যেন বার্দ্ধক্যের অবসাদময় জরার ভাঙ্গিরা পড়িরা**ছিল। আর সে অছে শী**তল কুলে কুলে ভরা উছলিত উপলিত হাস্তম্মী को कृषमश्री नवीनामृष्डि नाहे। स्वीवतनत्र तम চাপলাময় লীলা চঞ্চল গতি অবিরাম কল কল হাস্তল্রেত, সে অকারণে হাসিয়া হাসিয়া ছলাৎ ছলাৎ করিয়া বৃন্দাবনের ভটে সুটাপুট থাওয়া সে সব এথন গিয়াছে। এখন জীর্ণাঙ্গা সশঙ্কিতা চিস্তামগা প্রবীণা উভয় বাত্রকাতীরের মধ্য দিয়া নি:শক্তে বহিয়া চলিয়াছিল। অন্ধকাররাত্তে দূরের জলরেখা স্থানে স্থানে নক্ষত্র ছায়ালোকপাতে ঈষৎমাত্র উচ্ছল, মুহুমন প্রনে ঈষ্ণাত্র স্পন্দিত, নতুবা নদীর বালুতীর হইতে. প্রপারে লভাগুলা সমাকীর্ণ ঘন শাখা-পলবে সমাবৃত বনাকীণ ভটপ্রাস্ত পর্যাস্ত যেন একখানা মিদ কালো কাপড বিছানো বলিয়া মনে হইতেছে। শিবানী সেই অন্ধকারের দিকে চাহিয়া বহিল।

ক্ষ-স্থায়ী শুক্লা চতুৰীর ক্ষীণজ্যোৎমা তুবিয়া গিয়াছে। যে মেঘথানা এতক্ষণ স্থানের একটা কোণে পড়িয়াছিল, সে এবার তাড়াতাড়ি অগ্রসর হইরা আসিয়া প্রায় অর্জেকটা আকাশ চাকিরা কেলিল। জরীর কাজকরা আলিয়া ও নির্ভিত্তী সাড়ি পরিলে ক্ষালিনীকে যেনন মানীর প্রকৃতি ঠাকুরাণীকেও তেমনি দেখাইতে লাগিল। গ্রীংমর মৃহ স্থিয় বাতাসটুকু এতক্ষণ রহিয়া রহিয়া

থামিয়া, থামিয়া, বেন মুম্ব্র শেষ নিখাসের মত অত্যন্ত ধীরে ধীরে, নথে মধ্যে বহিতে-ছিল। এখন সহসা সেটুকু পর্যান্ত থামিয়া প্রিয়া দারুণ শুমোট করিয়া উঠিল।

শ্বিনী বসিন্না রহিল। এই বে চারিদিকে বিরাট বিশ্বব্যাপ্ত অন্ধকার, এর কি
কোথাও গেলে শেষ পাওয়া বায় না ? ঐ
যে আকাশে বাতাসে, অবেস্থলে ছালোকে
ভূলোকে ভাষা হীন, শক্ষীন অনস্ত নীরবতা
স্তব্ধ হইয়া রহিয়াছে, এর কি সমাপ্তি
নাই!

निवानी छक रहेश ভाবিতে नाशिन। যে দিন সহসা অপ্রত্যাশিতভাবে নীরদ-কুমার তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গিয়াছেন. তারপর প্রায় দেড় **इ**हेर्ड हिन्न। সেই রাত্রের পর এ পর্যান্ত আর তাঁহার কোন সংবাদই নাই। সংবাদ পাইবার উপায়ও নাই। তাহার নিফ্দিষ্ট স্বামীর জন্মভূমি কোথায় বা তাহার কেহ আছে কিনা দে কিছুই জানে না। দেই গাঢ় অন্ধকারে ডুবিয়া সে কেবল ভাবিতে ছিল, — "চলে গেলে, কেমন করে মনে করলে স্ত্য সতাই আমি তোমার ত্বণা করি ? যখন একথা বিশ্বাস করতে পারলে তথন কেন রাক্ষনীর বুকে একথানা ছুরি বদিয়ে দিয়ে গেলে না। সকলে তোমার কুৎসা করে ^{সেই} প্রাণের জালায় যে আমি রাগ করে ওকথা বলেছিলেম কেন তুমি তা বুঝলে না। ওগো তুমি ফিঠে এসো একবার মাত্র এসে তনে যাও আমি তোমার দ্বণা করি নাই। একবার এসে দেখে যাও আমার কি দুশা করে গেছ।

সহসা কড়সড়নাদে বজ ডাকিয়া উঠিল।
নিবিড় কৃষ্ণ মেঘে সমাজ্য আকাশধানাকে
ছই অংশে বিভক্ত বিজ্ঞিয় করিয়া ফেলিয়া পুন:
পুন: বিছাৎ থেলিয়া ঘাইতে লাগিল। দেখিতে
দেখিতে ঝড় উঠিল। শিবানা সহসা স্থপভীয়
চিন্তা হইতে বেন ধ্যান ভলে চমকিয়া
উঠিল।

ঘরে ছছ্ শব্দে বাতাস প্রবেশ করিতেছিল, বালি উড়িয়া আসিয়া শিবানীর
নাথামুথ ভরাইয়া দিল, তথাপি তাহার বেন
উঠিবার শক্তি ছিল না। এইরূপ একটি
অব্ধকার গভীর হর্যোগ রাত্রিতেই তাহাদের
সাক্ষাৎ হইয়াছিল—আজও কি সেদিনের মত
তাহাদের ঐ জীর্ণ ক্ষুদ্র বারটিতে তেমনিতর
একটি বাগ্র আহ্বান সে শুনিতেপাইবে না ? ঐ
না কে ডাকিতেছে "শিবানী বার থোল" ঐ না
তাহারি বাগ্র করের আঘাত শুনা যাইতেছে ?
চমকিয়া শিবানী উঠিয়া পড়িল, বাগ্রকঠে
আরুল ব্বরে বলিয়া উঠিল "যাই", বলিয়াই
সে আপনার কর্পষ্করে আপনিই শিহরিয়া
জাগিয়া উঠিল। কই, কোথার আহ্বান,
কেহ তো ডাকে নাই!

সমস্ত রাত্রি ধরিয়া ভরানক ছুর্যোগ চলিল। বৃষ্টি কিছা ঝড় একেবারে থামিল না। সমস্ত রাত শিবানী ভাহার উৎক্তিত কর্ণ ছির করিয়া সেই নির্জ্জন ঘরের মধ্যে একা জাগিয়া বিসিয়া রহিল। যেমনি ঝড়ের বেগে জীর্ণ ছার নড়িতে থাকে জমনি সে চমকিয়া উঠে। বাতাস থাকিয়া থাকিয়া আর্ত্ত অরে কাঁদিয়া উঠে জমনি সে শিহরিয়া উঠিয়া দাঁড়ায়। এমনি করিয়াই তাহার এ দার্থ দিবসের প্রতীক্ষাপূর্ণ দিন কাটিতেছিল,

এমনি করিয়াই সমস্ত রাজি গত হইল। नुटारमा পড়িল। উপর अखिटाथ শেষরাত্তে বৃষ্টির শব্দ কমিয়া আসিলে যমুনার অফ্রাতসারে কোন তাহার मूनिया जानिन বিলাপ গান ও বাতাদের বিজয় সঙ্গীত শুনিতে তাহা সে পারিল না। ণ্ডনিতে অবসর শরীরে মেজের

হাফেজ।

ওহে নিষ্ঠাবান, এস হে ভৃষ্ণিত, আছে পানাধার অতি পরিকৃত; অমুরাগ স্থরা ক্ষটিক তলে মণিরাগে দেখ কেমন জলে!

সে যে বারস্ক ধারণা অতীত, সে কি কারো জালে পড়ে কদাচিৎ! রহিলি অবোধ কি লাগি বসিয়া বাতাসের ফাঁদ আকাশে কসিয়।!

পুণ্য বশেতে স্বরগ যেমন,
করগত স্থ ভূঞ্জ তেমন;
— নন্দনধারা শুখাবে যেমনি
ছ দিনেরি বাসা উঠাবে তেমনি।

মধু মহোৎসবে মানব জীবনে পাত্র ছই মধু লও বঁধু সনে; তদক্তে চলরে অনন্ত পথে ক্লিক মিলন-রজনী গতে। গেল যৌবন জীবনে ও মন,
না করিলি প্রীতি কুত্বম চয়ন!
—বয়সে মাথা যে হইল পক,
নামার্জনে কি হবিনা দক্ষ!

মন অসংষত, মত্ত উল্লাসে
গুঢ় বহন্ত জান তারি পাশে।
—নিত্য সংষত বিজ্ঞ যাহারা
মনেরি মর্ম থোলে কি তাহারা।

হুয়ারে তোমার অসম্পন্ন দেবাত্রত মোর আছে অগক্ত; তাই বারেবার, মাগি পরিহার, দাসে ও চরণে রাথ অনিবার।

আমি দেই হ'তে ভরসা ছাড়িরা হবে জলাঞ্জলি বদিরাছি দিরা, সাধ করে প্রাণ যে হ'তে আমার গড়েছে প্রেমের করেতে তোমার।

অমবাবতীর অমৃত আধার হাফেজ লইল দীকা তাহার। দাসের প্রণাম বছক পবনে অমৃতাম্পদ নায়ক সদনে।

শ্রীব্দবনীক্রনাথ ঠাকুর।

বেহরামজি ম্যালাবারি

(ফেলিসিয়া শালের ফরাসী হইতে)

আগ্রা ৫-৭ ফেব্রুয়ারি ১৯০০। ভারতে যাত্রা করিবার পূর্বের, আমার ফরাদী ও ইংরাজ বন্ধুদিপের নিকট হইতে, বেহরামজি মালাবারির নামে ৫।৬ থানা পরিচয়পত্র পাইয়াছিলাম। প্রাচ্যদিগের মধ্যে বাঁহারা মুরোপে স্থবিদিত,-এই সংবাদ পত্র পরিচালক-পাসি ম্যালাবারি তাঁহাদের একজন ৷—মালাবারি বোদ্বাই নগরেই বাদ করেন; কিন্তু আমি যখন বোম্বায়ে ছিলাম, তথন তিনি ভারতের উত্তরাঞ্চলে বেড়াইতে গিয়াছিলেন; আমি তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে ইচ্ছুক —এই কথা জানিতে পারিষা তিনি সদাশয়তার পরিচয় দিয়া আমার উদ্দেশে আগ্রাতে থামি-লেন। সেইখানে আমি তাঁহার সহিত হুই দিন স্থাপ অতিবাহিত করিয়াছি।

কুডকার, প্রায় সেমেটিক-জাতীর ধরণের
মুধ, বৃত্তিবাঞ্জক অগজনে চোধ্—এই
পার্সিকে দেখিরা আমার একজন পরিচিত
জর্মনদেশীর ইন্থানিকে মনে পড়িল;—
সেই সাম্যবাদী Edward Bernstein,
বাহাকে লণ্ডনে অনেকবার বেশিয়াছি।
একই প্রকার কার্যাকরী বৃদ্ধি উভয়েরই মুধমণ্ডলেও আচরণে প্রকাশ পার।

মালাবারির বিশাস,—রাষ্ট্রনৈতিক সংশ্বার হওরা বের পূর্বে সামাজিত অবস্থার সংস্থার হওরা আবশুক। তাঁহার বিবেচনার,— বর্ত্তমানে এবং আরও বছকাল পর্যন্ত, মুরোপের সহযোগিতা, আশ্রম ও পরিচালনা ভারতের পক্ষে নিতান্তই আবশ্রক, তাহা ছাড়িয়া চলা ভারতের পক্ষে অসন্তব। যুরোপের কেবল একটি মাত্র রাজশক্তি, ভারতের শান্ত্রি—বিশেষতঃ ধর্মঘটিত শান্তি রক্ষা করিতে সমর্থ।ইংলণ্ডের রক্ষণশীলতা ও উদারতা একসঙ্গে থাকার—যুরোপের সম্বন্ত রাজশক্তির মধ্যেইংলণ্ডই এই কার্য্য সাধন করিবার উপবৃক্ত পাত্র। মালাবারি তাঁহার প্রসিদ্ধ কথাটি আবার আমাকে বলিলেন;—"বদি ইংরাজেরা ভারতবর্ষ ছাড়িয়া যাওয়া স্থির করেন,—তাঁহারা দেখিবেন, ফিরিবার জন্ম অস্থনয় করিবে।"

মালাবারির মতে,—প্রথমত শ্রমশিরের পরিপ্রষ্টি করিয়া, দেশের ধন বাড়াইতে হইবে। দেশীর যুবকদিগকে ব্যবহারিক ও ব্যবহারিক শিল্প সম্বন্ধে এরূপ সারবান্ শিক্ষা দিতে হইবে যে দেশের লোকেরা তাহাদের হস্তে মূলধন অর্পণ করিতে একটুও ইতন্ততঃ করিবে না। এইরূপে ভারত-সমস্থার সমাধান হইবে।

কিছ সমস্ত সামাজিক সমস্তার মধ্যে নারী জাতির অবস্থা সম্বনীয় সমস্তাই সর্বাপেকা গুরুতর। মালাবারি আমাকে বলিলেন, "দাস-রমণী হইতে কোন বীরপুরুষ কথনই প্রস্তুত হইতে পারে না; আর, ভারতবর্ষে নারীই দাসের অধম।

জন্মাবধি কভাসস্তান অনাদরের পাতা।
পিত ভূষিষ্ঠ হইবার পূর্বে, পিতা আত্মীয়দিগকে
আহ্নান করেন; যদি পুত্র সন্তান হয় ভবে

ভোজ-উৎস্বাদির বারা তাহাদিগকে আপ্যারিত करतन, आंत्र यनि कञानकान इय, তাহাদিগকে বলা হয়, "এ কিছুই না"; তথন আত্মীয় স্থৰন অবগৃহে প্রস্থান করে। ভূমিষ্ঠ হইবামাত্র বে কল্পাসন্তানের প্রতি এইরূপ অনাদর, সে চির্মীবন হঃথভোগ করিয়া থাকে । হিন্দুদের মধ্যে সাধারণতঃ এইরূপ একটা সংস্কার আছে যে, করা অবিবাহিতা থাকিলে তাহার পিতা অবমানিত হয় এবং জনান্তরে হীন যোনীতে জন্মগ্রহণ করে: অতএব যত শীল্র পারা ষায় কল্লার বিবাহ দেওয়া আবশ্রক। কিন্ত আপনার বর্ণের বাহিরে ও গোত্রের ভিতরে— কি স্ত্রী কি পুরুষ—কোন হিন্দুর বিবাহ হইতে পারে না। কাঞেই, বিবাহের ক্ষেত্র অতীব সংকীৰ্ণ ও সীমাবদ্ধ। কন্তা ভূমিষ্ঠ হইবা মাত্রই, তাহার পিতা, তাহার জন্ম একটি বরের সন্ধান করিতে থাকেন, এবং সেই বর নির্বাচনে রূপ গুণ বয়স সম্বন্ধে কিছুমাত্র বিচার क्तां रह ना। क्यांत वहन ११७ वरमत इंडेल्डे. যত শীঘ্র সম্ভব তাহার বিবাহ দেওয়া হয়। বিবাহ হইয়া গেলে বালিকা পিতৃগুহেই বাস করে। কিন্তু বিবাহিতা ব্রিয়া সে আর থেলাধূলা করিতে পায় না,— ভখন দে ঘর-করার কাজেই ব্যাপ্ত থাকে। তাহার পর, 'বয়:প্রাপ্তা' হইলে পিতা তাহাকে তাহার স্বামীর হস্তে সমর্পণ করেন। স্বামীর প্রায়ই অনেক-ৰ্ভাল স্ত্রী থাকে, এবং সেই স্থীদিগের উপর তাঁহার সর্বাময় কর্তৃত্ব।

বিধবার অবস্থা আরও শোচনীর। পূর্বে, বিধবাকে স্থানীর চিডার দগ্ধ হইতে হইত। আজিকার দিনে বিধবা সম্ভাসিনী ভাবে অবস্থিতি করে, চিরজীবন শোকবন্ত্র পরিধান করে, এবং

এই ह्यू छोहोटक नकरन 'व्यनकरन' विनः मत्न करत,-कान डिश्मर तम सांग मिर পারে না। অনেক সমরে, পতিগুছে ভাহা: मात्रीत का**ब कतिए इब धरः एवं त्रकत** काह খুব কণ্টকর, সেই সব কাজই ভাহার জ্ঞ নিৰ্দিষ্ট হইয়া থাকে। কখন কখন ভাহাৰ অবস্থা এরূপ অসহ হইয়া উঠে যে সে জীবি-কার জন্ম বেখাবৃত্তি অবলম্বন করিতে বাধ্য সচরাচর বিধবারা প্রনর্কিবাহ করিতে পায় না। এইরূপ শোনা যায়, একজন উদার-চেতা হিন্দু অঙ্গীকার করিয়াছিলেন, তাঁহার **(म**म-ভाইদিগের মধ্যে যে সর্ব্ধপ্রথমে বিধবা বিবাহ করিবে তাহাকে তিনি বারে৷ হাজার টাকা দান করিবেন; কিন্তু ধনলাভের এমন অবসর পাইয়াও কেছ বিধবাবিবাছ করিতে সাহস পাইল না। আরও ভয়ানক কথা,---যে সকল বালিকা বিবাহ-অহুষ্ঠানকালে ভগু একবার ভাহাদের স্বামীর মুখদর্শন করিয়াছে, হিন্দুবা স্বামীর মৃত্যুর পর সেই সকল বালিকাকেও বিধবার মধ্যে পরিগণিত করে: অন্য বিধবার ক্যার বালবিধবারাও অবজ্ঞার পাত্র , ভাহাদেরও প্রতি একইরূপ কঠোর বাবহার করা হয়।

বিগত লোকগণনার তথ্যতালিকার প্রকাশ
—ভারতবর্ধে, পাঁচ বৎসর বরুসের নীচে,
১০০০০ বালক ও ২৫৮০০০ বালিকা
বিবাহিত; ৫ হইতে ১০ বৎসরের মধ্যে,
৮৯০০০০ বালক ও ২২০১০ বালিকা বিবাহিত; ৫ বৎসরের নীচ্ছে ১০০০০ জনেরও
অধিক এবং ৫ ইইতে ১ বৎসর বরুসের মধ্যে
৬৪০০০ জনেরও অধিক বিধনা।

এই বিষম ছোগের প্রভীকারার্থ

মালাবারি কিন্তুপ ঔবৰ প্রারোগের প্রান্তার করেন ?

প্রথমে তিনি চাহিয়াছিলেন,—বিবাহের বৈধ বয়স ১৪ বৎসর নিদ্ধারিত হয়-যাহা হুউক, এক্ষণে বিবাহের বৈধ বয়স ১২ বৎসর নিৰ্মাচিত হইয়াছে। বংসরের বালিকা বিবাহযোগ্য বয়সপ্রাপ্ত হয় এবং তাহার বৃদ্ধিবৃত্তিও যথেষ্ট পরিণতিলাভ করে; তখন সে কিয়ৎ পরিমাণে স্বয়ং পতি নির্মাচনে সমর্থ হয়। এই সংস্থারটি প্রবর্ত্তিত করিবার জন্ম, ভারতে ও ইংলপ্তে স্বমত প্রচার করিয়া তাঁহাকে প্রাণপণে যুঝিতে হইয়াছিল: মালাবারি বলেন, বিশেষত ত্রাহ্মণদিগের জাতিভেদের বিরুদ্ধে তাঁহাকে অজ্ঞ সংগ্রাম করিতে হইয়াছিল। এই ব্রাহ্মণ পুরোহিতেরা ত্রীলোকদিগের অজ্ঞতার হুযোগ পাইরা, অতিসহজে তাহাদিগের বারা নিজ হরভিসন্ধি ও উচ্চাভিলাষ পূর্ণ করিবা লব। তাছাড়া, বাঁহারা বিবাহের বৈধ বয়স ১৬ বৎসর হইবার জন্ম প্রার্থনা করিতেছিলেন, সেই বাল-বিবাহের উৎকট শক্রদিগের বিরুদ্ধেও ভাঁহাকে যুদ্ধ করিতে হইরাছিল। তাঁহার স্থানক সংস্থার-কুশলতার হারা তিনি-কি রক্ষণশীল, কি বিপ্লবশীল—উভয় পক্ষেরই উপর জয়লাভ করিয়াছেন ; তিনি সেইরূপ উন্নতিরই পক্ষ-পাতী, যাহা ক্রমশঃ বিভৃত হইরা স্থায়িত লাভ .করে। আজকাল এই মূলতত্ত্বটি স্থাপন করিতে দেখা বায়, ধৰ্মীসৰ্দীয় বে সকল প্ৰথা অভীব হনীতিমূলক ভাষা, বৈহিত করিবার অক্স, বিশ্বমানবের হিতক্তনা, রাজসরকারের হস্ত-কেপ করা উচিত। **এই মৃশতস্কটিকে বদি** বিহুতভাবে কাৰ্যো প্ৰায়েগ করা বার ভাহা

হুইলেই হিন্দুসমাজ কিন্তৎপরিমাণে রূপাস্তরিত হুইতে পারে।

অধুনা ম্যালাবারি "বৈবাহিক অধিকারের পুনঃস্থাপন" নামক যে আইন প্রচলিত আছে—যাহার বলে, স্থীর ইচ্ছার বিরুদ্ধেও স্ত্রী, স্থামীর সহিত সহবাস করিতে বাধ্য হয়,—সেই আইনটি রহিত করিবার জক্ত প্রার্থনা করিতেছেন। ম্যালাবারি বলেন, এই আইনটির উৎপত্তি রোমীর ব্যবস্থাবলী হইতে—হিন্দু ব্যবস্থাবলী হইতে নহে। ইংরাজেরাই এই আইন ভারতে প্রবর্তিত করিয়াছেন বটে, কিন্তু উহা কার্য্যে প্রয়োগ করিতে তাঁহারা এখন সাহস পান না।

ব্যক্তিগত চরিত্রের হিসাবে, ম্যালাবারি বিধবা বিবাহের অমুমোদন করেন না। কিছ তিনি ইহাও স্বীকার করেন না বে, বিধবা বিবাহ নিষেধ করা সমাজের কর্ত্তবা। তিনি বিশেষরূপে ইহাই চাহেন বে,—স্বামীর মৃত্যুর পূর্বে পরিবারের মধ্যে স্ত্রীর বে পদমর্য্যাদা ছিল, মৃত্যুর পরেও দেই পদমর্য্যাদা হলার থাকে। তাঁহার ইচ্ছা,—বিধবারা শিক্ষা লাভ করে, স্বাধীনভাবে কাজ করিতে পারে, আত্মবিনাদন করিতে পারে। তিনি এখন এই মতটি প্রচার করিতেছেন যে, বালবিধবাদিগের প্রতি মহাপরাধীর স্তার ব্যবহার করা অতীব গর্হিত কার্য্য; রথন বাল্যবিবাহ উঠিয়া বাইবে, তথন বাল্যবিধ্যা আর থাকিবে না।

পরিশেষে, মালাবারি সাধারণত ইহাই
চাহেন যে স্ত্রীশিক্ষার উত্তরোক্তর উন্নতি হয়।
এই উদ্দেশ্য সাধনার্থ ইংরাজদিগের ওদাসীয়া
এবং হিন্দুও মুসলমানদিগের বিপক্ষতার বিরুদ্ধে
তাঁহাকে নিয়ত সংগ্রাম করিতে হইতেছে।

সর্ব্ব বালিকা-বিত্থালয় স্থাপন করিবার জন্ত তিনি এখন তাঁহার সমস্ত চেষ্টা উত্তম নিয়োগ করিতেছেন। কয়েক বংসরের মধ্যে, এই সম্বন্ধে প্রভৃত উন্নতি—বিশেষত পার্দিনিগৈর মধ্যে প্রভৃত উন্নতি সংসাধিত হইয়াছে। ম্যালাবারির মতে, সর্বদেশে শিক্ষাই, সমস্ত রাষ্ট্রনৈতিক এবং সামাজিক সমস্তা সমা-ধানের মুখ্য উপায়।

শ্রীজ্যোতিরিজ্বনাথ ঠাকুর।

ममादनाहना ।

সিন্ধু গৌরব। (ইতিহাদ অবলম্বনে) উপস্থাস। . श्रीयुक क्मूमिनोकान्छ गरकाशाधाव, वि, এ अशीछ। রাজসিংহ, মুণালিনী প্রভৃতি ভাঙ্গিয়া-চুরিয়া সিশ্ধ-গোরবের স্ষ্টি! তবে জেবুল্লিসার নব সংকরণ 'निकार्गांद्रत'त कारवनी "विधिमशी मृष्टिराण" मतिया-ছায়া "মঞ্জিনাকে হিড়হিড় করিয়া টানিয়া লইয়া" বার। এইটুকুই নূতৰ বিশেষত ! ইহার শাহলাদী তাপ্রামে চডিয়া অভিসার যাত্রা করেন; দৌবারিকের প্রতীক্ষায় কালিফ, কাশেম ও মহম্মদ প্রভৃতি "নিংখাস বন্ধ করিয়া চকু যথাদাধ্য বিক্ষারিত করিয়া প্রবেশ হারের দিকে চাহিয়া" থাকেন (কি ভীবণ !) : আরো ইহাতে আছে.—ভবানী মন্দির,কহলন ঠাকুর, দীর্ঘিকা— তাহাতে "রাজহংস দলে দলে সাঁতার কাটে"—কিশোরী শ্রেমিকার ভূত্যবেশে প্রেমাস্পদের পরিচর্য্যা, উদিপুরীর অমুরপ সুলতানা বেগমের 'সরাব পান', হিন্দু মুদল-মানের ভীষণ যুদ্ধ, বিখাসয'তকতা, শি? : রাজসভা, বিষপান, নিরাশ প্রণর, অস্ত্রাথাত, 'ললে ড্বি' স্বদেশ প্ৰেমের দীৰ্ষ বক্ততা, 'ছি ছি' 'হা হা হা হি ছি হি'-অট্ট-হাসি, দীর্ঘ নিখাস ইত্যাদি। এত উপাদান সত্তেও যদি উপক্রাস রচনা না হয় গ্রন্থকার নাচার! ইহার উপর "পশ্চাদ্দিকে মত্তকটি নিকেপ করিয়া" "ছে কড়া" "জে, ু (কোর) করে" প্রভৃতিতে ভাষারও সশিওক: আছে! অর্থাৎ যাহা কিছু উণ্ডট অস্বাভাবিক, সামগুতাহীন, গ্ৰন্থকার ভাঁহার 'ঐল্ঞালিক' তুলিকাপর্শে সকলগুলিকেই একত করিয়া প্রসংধা স্থান দিয়াছেন! এই খোরতর बोरनमः वास्त्र मिर्न विनि अमन छेशकाम अहना করিতে পারেন, তাঁহার রীতিমত 'বাহাছরি' ও প্রচুর অবসর আছে, স্বীকার করি: তবে বেচারা আমাদিগের বিনীত নিবেদন, তাঁহার অথও অবসর তিনি স্থনিদ্রার অতিবাহিত করুন, কিন্তু দোহাই, এমনভাবে উপন্যাস লিখিয়া আমাদিগের প্রতি তিনি আর নিষ্ঠুরতা করিবেন না, করিবেন না!

হরিবল্লভের স্লেহ। (সামাজিক উপ্যাস) প্রীযুক্ত অমরচন্দ্র দন্ত প্রণীত। 'সিস্কু-গৌরবের' রৌরব ছাডিয়া 'হরিবলভের ক্লেহের' মধ্যে আসিলে মন चर्चना-नमार्यरण रलशरकत्र অনেকটা স্থিত্ত হয়। কৌশল না थाकित्वछ बहनाञ्चनानीहि **তেম**ন अन्तत्र, अनद्यारो ! **ভा**षां**টि** अन्तत्र स्ट्रेबाल्ह । এशानिएंक क्रिक উপস্থাস न। विनद्धा 'हिज' बनिलिहे বোধ হয় নামকরণটু কু সার্থক হয় ! গ্রন্থানি পাঠ করিবার সময় শ্রীযুক্ত শিবনাথ শান্ত্রী রচিত 'নরনভারা' উপক্রাদের কথা আমাদিপের মনে পডিয়াছে। হরিবল্লভ 'নয়নভারার' পিতা রার মহাশয়ের, ও গ্রন্থের নারিকা পাখী অর্থাৎ 'বাসনা' নয়নতারার অফুরূপ হইলেও রায় মহাশয় ও নর্নতারার ফ্রন্যের যে উদারত। ও বিশাসতা দেখিয়াছি,হরিবল্লভ ও পাখীতে প্রভার মাতা ও ভাতার সহিত ভাহার অভাৰ : প্রামর্শান্তে, তাহার পিতার সম্পূর্ণ অজ্ঞাতে, প্রভাকে नरेश बाक्तशर्य-नवमीकिछ नुर्द्धकारिशत अवातरकत শহিত কলিকাভায় পলায়নের সহিত গ্রন্থকারের স্হাত্ ভৃতি থাকিলেও ভাহার সহিত্ব আমাদিগের কোন সহাত্মভৃতি নাই। এরপ আচরণ নিতাত ঘুণার্হ ও नमारकत्र अनिष्टेकत्, अवर देश निष्ठां निकृष्टे गृरस्त

िता। श्रेष्ठात च्रिशन्यवर्षत माहारे निया चारेटनत তাত এডালো মরেন্দ্রের পক্ষে কঠিন না হইলেও সামা-জিকের কশা তাঁহার পূর্ছে পড়িবার অক্ত সর্বদা উত্তত ও কিবে এ কথা প্রবীণ গ্রন্থকারও বেন শ্বরণ রাখেন। প্রেমিক অমৃতলালের সন্নাসীবেশে দার্জ্জিলিতে পাধীর 'বালিশ' 'গোলাশ' প্রভৃতি চুরি করা নিতান্তই হাভো-দ্বীপক! লোকচরিত্রান্ধনে লেখকের অক্ষমতা অনেক প্রলেই লক্ষ্য হইল। আর একটা বিষম ত্রুটি, লেখকের অতিরিক্ত ত্রান্দ গোঁড়ামি। "ওরা যে হি'ছ" এভতি কথা অনেকবার অবজ্ঞার সহিত উল্লিখিত হইয়াছে। ব্রান্ধ ভ হিন্দুকে এম্বকার দম্ভরমতভাবে পুথক করিতে চাহেন কি ? গোঁড়ামি মাফুষকে অন্ধ করে তাই বলিয়া উপত্যাসের মধ্যে এরূপ গোঁডামি একেবারেই অস্ফ। আরো একটি কথা, পাধীর মৃত্যুর সহিত গ্রন্থ স্বাপ্ত হইলেই ঠিক হইত, কারণ তাহার পরবর্তী অংশটক নিতান্তই যেন জ্বোর করিয়া গ্রন্থের নামের সহিত সাম-ম্বভ রাখিবার জন্তই অবতারিত হইয়াছে; সেটুকুতে বর্ণ-নার ভরিমা পাকিলেও তাহা নিতান্ত একখেয়ে হইয়াছে। যাহা হউক, গ্রন্থকারের লিখিবার শক্তি আছে এবং এই অসার উপস্থাসের তাওব নুভ্যের দিনে তাঁহার নিকট হইতে সাম্প্রদায়িক বিষেধবর্জিত প্রকৃত উপত্যাদের আশাকরি বলিয়াই ত্রুটিগুলি এমন বিশদ ভारে प्रशाहेश मिनाम। अवीन शहकात आसा कति. क्षांश्वनि এकवात्र वृत्तिका त्विरिदन।

অঞা। (গীতিকাব্য)। শ্রীবন্ধরকৃষ্ণ ঘোষ
প্রণীত। শ্রীস্থরেশচন্দ্র নন্দী সম্পাদিত। শ্রীপ্রমধনাথ
নিত্র প্রকাশিত। এথানি বে গীতিকাব্য সে
কথা বলা বাছল্যমাত্র। 'চাহিনা' 'স্বপ্নে' 'আশার
কুইক' 'নীরবে' 'যাও' প্রভৃতি শীর্ষক ৪৪টি কবিতার
'অঞ্র' পৃষ্ঠা পূর্ব! লেখক 'চাহিনা' শীর্ষক কবিতার
বলিতেছেন, "রবি উঠে খেটে খুটে, ডুবে যার পুন: উঠে
* * বলে যায়—ীত্রয়মান পরার্থে আপন প্রাণ দিতে
দা বলিদান।" কিছ 'অঞ্জ'র কবি শ্রান্ত রবির সে
মন্ত্র উপদেশটুকু শিশিবদ্ধ করিয়াই কান্ত হইরাছেন,
ডদহুষায়ী কার্য্য করিলে, 'পরার্থে' অন্ততঃ গ্রন্থশুচার
১ইতেও তিনি নিযুত্ত হইতেন। আসল কথা, কতকণ্ডলি

কবিতা অনিআক্ষর ছন্দে রচিত হই.লও 'অশ্রু'র কবি অনেকগুলি কবিতার ছন্দ মিলাইয়ছেন, 'অতএব গ্রন্থ ছাপিতে হইবে! কিন্তু গুধু ছন্দ মিলাইলেই ত' কবিতা হয় না। এদিকে বেচারা ভাব—নাথার লাঠি মারিলেও যে 'সাড়া দেয় না'! ১৩৮ পৃষ্ঠা ব্যাপিয়া ভিনি যে এই হাহাকার করিয়া গিয়াছেন, তাহা অরণ্যে রোদনমাত্র! আমাদিগের অন্ত্রোধ, ভিনি আর এমন করিয়া কাঁদিয়া হৃদয় শ্রুশান করিবেশ না, অতিরিক্ত ক্রন্দনে স্বাস্থাহানির বিশেষ সন্তাবনা; তাহা ছাড়া সাহিত্যের পথ তাঁহার 'অশ্রুতে' রীতিমত পিছিল হইয়া পড়িলে ভবিষ্ণ কবিগণ এ পথে আদিলে 'কদলীবৃক্ষ যেন চৈত্র মাসের ঝড়ে' ভত্বৎ পণাতে আঘাত পাইবেন!

রাজকাহিনী।—(মেবার) প্রথম খণ্ড। শ্রীযুক্ত व्यवनीत्रानाथ श्रेक्त । श्रेकानक, श्रीमानाद्रक्षन वान्ना-পাধ্যায়, হিতবাদী লাইত্রেয়ী, ৭০, কলুটোলা খ্রীট, কলিকাতা। কান্তিক প্রেসে মুদ্রিত। মূল্য বার আনা। 'শিলাদিতা', 'গোহ', 'বাপ্লাদিত্য' 'পদ্মিনী' এই চারিট কাহিনী বর্ত্তমান গ্রন্থে সল্লিবিষ্ট হইয়াছে। কাহিনীগুলি বছকাল পুর্বের 'ভারতী'তে প্রকাশিত হইয়াছিল—বছ পাঠক গলগুলি স্বতন্ত্র পুত্তকাকারে পাইবার জন্ম উদ্গ্রীব ছিলেন—আজ তাঁহাদের সে সাধ পূর্ণ করিয়া অস্থকার ও প্রকাশক সকলেরই ধক্তবাদের পাত। বিচিত্ত শব্দ-চিত্ত-কুশলী অবনীশ্র-ৰাব্র ভাষার মধুরতা উাহার নিজম্ব-এ বিষয়ে তিनि প্রতিষ্দীহীন বলেও অত্যুক্তি হয় না। এম্বণাঠকালে কাহিনীগুলি আগাগোড়া কৌতৃহল জাগাইয়া রাখে—রাজপুতের ঐখ্যা, সম্পদ, শৌর্যা বীৰ্যোৱ ছায়া হৃদয়ে বীতিমত প্ৰফুট উঠে। তাহার উপর লেখকের অসাধারণ ক্ষমতা কথায়-ছোট-একটু ইন্সিতে বিপুল मार्थात रुष्टि । **याहाउँ**कीन शृतानीत पर्ननाकाळा করিলে "রাণা ভীম * * প্রকাণ্ড একথানা আয়নার সমুখ থেকে একটি পর্দা সরিয়ে নিলেন; কাকচকু জলের মত নির্মাল সেই আয়নার ভিতর পদ্মিনীর ক্লপের ছটা, হাজার হাজার বাতির আলো যেন আলো-

মৃণালের ৰভ কেমন ছুবানি হাড! বাঁকা मन्तर्भा कि क्ष्मत्र ছোট ছুখাनि রাঙা পা। धानी রংএর পেশোয়াব্দে মুক্তোর ফুল, গোলাপী ওড়নায় সোৰার পাড়, পালার চুড়ী, নীলার আংটি, হীরের চিক। ৰাদশা আশ্চৰ্য্য হয়ে ভাবলেন,—'এ কি মাসুষ না পরী' !"

नत्र करत क्षकांग हन ! वारमा स्वथरिक नागरनन ;— काहिनीक्षनित बारता विरमवष वीत, कस्न क्षक्रिक नाना সে কি কালো চোৰ! সে কি সুটানা ভুকু! পল্লের হস ইহাতে বেল ফল্মর বাণ বাইরাছে। গ্রন্থবানি ভুগুই ষে উপভাগের ভার উপভোগ্য, ভাহা নহে, কল্লনা-विकारनंत शास्त्र सम्म महत्त्र वटि ! शांहवानि छे कुरे চিত্ৰ, সুন্দর শিক্ষে বাঁধাই ও এণ্টিক কাগতে হাগা. ममखरे এই अरम्ब विरमवष्ट्रेक् बकाग्र बाचित्राहर !

अत्रनिथि।

टेख्रवी--माम्बा।

७ य मान ना माना ! जांशि किबाहेल "वल—ना ! ना ! ना !" ये वि "नारे ब्रांजि, भीनेन रखिष्ट वार्जि" मूथ शांत एठएव वरन "ना, ना, ना!" विधूत विकल इस्त्र कार्मा भवत्न ফাগুন করিছে হাহা ফুলের বনে! আমি যত বলি—"তবে এবার যে যেতে হবে" হয়ারে দাঁড়ায়ে বলে-"না! না! না!" জীরবীক্রনাথ ঠাকুর।

দ্ৰিণ্1 II ণ্ৰা-ঝা। মমা-জ্ঞ জাঝা I সা-া-া-া-া-া-া-া-া-া সা। জ্ঞারাজ্ঞা I মানে ৽ না • • শ না না • • • • • আঁথি ফি রা । রাজ্ঞা-1। রামমা-জ্ঞ জ্ঞা I দ্া-1-1। দ্ণ্†-1-সা I স্থা-জ্ঞা-জ্ঞা I-সা দ্াণ্ III II-1-1 케 | দা দা পা I 위 -1 -1 I প! পা -1 I - দা -1 পা | মা মা মা I মপা মপমা ••য ত,বলি না•ই রাতি**৽ • ন লিন,** ুর্দ্ধে•ছে॰ - জঙ্গা ভারাজা-ঋসা I - 1 - 1 সা। জ্ঞারাজ্ঞা। রাজ্ঞা- 1। 💘 মমা-জঙ্গা 🗓

C5 (\$ •

বা • ডি • • • মুখ পানে

। मृं - 1 - 1 । मृग् - 1 - मा I मश्रा - छ्डा - छ्डशा। - मा मृं ग् II र्-ा मा। मा मा श्रा I না৽৽ লা৽৽৽ লা৽৽ ৽৽ ৽ "ওবে" ৽৽বি ধুর বি । ভরামা-া। মামভরা-দাা-া-াপা। পমাভরাভররা Iভরা-ঋসাসা। ভরারাভরা I क न • हात्र • • • क्या भा • भ व • न • का १७ न क । ब्राब्बा-।। व्यभाव्यभा-[I-ना-^{† न}ब्बा। ब्बाबब्बाकाशा ना-† -† -† -† -† }I রিছে • হাহা • • ফুলেরব নে • • ा-1-1 ना। नानाभा I भाभा-1। भाभा-ना I -1-1 भा। मा-1 मा I • ০ আন মিযত বলি • তবে • • এ বার্বে 5 ।মপামপমা-জনজন। জন্নাজনা-ঋসাI -া-াসা। জনারাজনা রাজনা-।। ষে তে • • • হ৹ বে • • ৽ ৽ হ য়ারে দাঁ ভারে • **3** । ताममा-छब्छा I मानाना मुन्तानामा मिश्रान्छ। - ज्ञानामाना । II II

তবু।

ফুরালে বসস্ত শুষ্ক বন মাঝে তব্ও কুহরে পাথী; ৰবে গেলে ফুল, তবুও বোঁটাটি 'শাখার থাকে ত লাগি। ভথালে ভাটনী দৈকত চরণে उत्भ द्रशां त्रह, _

থেমে গেলে ঝড় তবুও মেদিনী निष्ठक भौत्रव नरह। জীৰ্ণ বাণা ধৰে তবুও ভূলেনা গাহিতে মধুর গান ; ভগ প্রাসাদে বেড়ে থাকে তবু বিগত গোহব-মান ! শ্ৰীমতী লজ্জাবতী বস্থকন্তা।

বিভিন্ন দেশের ইতিহাসে ভারতের কথা।

ভারিখ সালসিলাটুট। সদাগর স্থলেমান এই পুস্তকের প্রথম খণ্ডের প্রণেতা। ৮৫> शृहोत्स वानिकावाशास्त्रण देनि व्यथम ভात्रज-বর্ষে আইসেন। ভারত সম্বন্ধে ইতিপূর্বে আর কোন বৈদেশিক কোন গ্রন্থ রচনা করেন নাই। ১৭১৮ খৃষ্ঠান্ধে মসিয়ো রেনড্ কর্তৃ ফরাসীভাষায় এই গ্রন্থ অমুবাদিত হয়। রেনড সাহেব এই পুস্তককে "Anciennes Relations des Indes et de la china de deux voyageurs Mahometans quiy allerent dans leix siecle de notre era" নামে অভিহিত করেন। সিরাফ নগরীর আবু-জায়গুল হোদেন নামক এক গুণজ্ঞ ব্যক্তি কর্তৃক এই গ্রন্থের দিতীয় খণ্ড পরে লিখিত হয়। আবু-জায়ত্বল হোদেন নিজে কোন দেশ পরিভ্রমণ করেন নাই কিছ তিনি অনেক পর্যাটনকারী এবং সদাগরের নিকট হইতে সমস্ত বিষয় জ্ঞাত হইয়া লিপি-বদ্ধ করিয়া গিয়াছেন।

এই পুস্তক হইতে আমরা ভারতবর্ষ
সম্বন্ধে নিমলিথিত বৃত্তান্ত অবগত হই।
ভারতবর্ষে বহলরাজগণ প্রবলপরাক্রান্ত রাজা;
এবং ভারতবাদীরা তাঁহার আধিপত্য স্বীকার

করেন । মানকির নগরীতে ইহাদের রাজ্ধানী এবং ইহারা ক্রের। কনোজের সহিত ইহারা ঘনিষ্ঠসমূদে আবদ্ধ এবং রাজা প্রবভট্ট শিলাদিত্যের জামাতা। দীক্ষিণে তাপ্তি ও উত্তরে আরাবলী পর্বতশ্রেণী পর্যান্ত ইহাদের রাজ্ব বিভূত।

ভারতবর্ষের নৃপতিবর্গ স্ব প্রধান কিছ প্রত্যেকেই বল্লভীকে শ্রেষ্ঠাসন প্রদান করেন। বল্লভীরাজ প্রেরিত দ্তেরা সর্বব্রেই সম্মানত হয়। বল্লভীরাজ তাঁহার সৈঞ্চদিগকে নিয়মিত বেতন প্রদান করেন এবং ইহার অনেক অশ্ব ও হন্তী আছে। ইহার অর্থও যথেষ্ট।

এই রাজ্যের নিকটেই জুর্জু রাজ্য †।
ইহারও অপরিমিত সৈন্তসংখ্যা এবং ভারতবর্ষের অন্ত কোন রাজার এক্সপ অখারোগী
সৈন্ত নাই। ইনিও অনেক ধনশালী এবং
ইহার অনেক উট্র ও অশ্ব আছে। এই
প্রদেশে কাহারো চৌর্য্য বা দহ্যভার অপবাদ
নাই এবং শুনা যায় এখানে অনেকগুলি থনি
আছে। রৌপ্য ও শ্বর্ণ (Gold dust)
বিনিময়য়রূপ ব্যবহৃত হয়।

তাফাক রাজা এই রাজ্যেরই নিকট ‡।

^{*} This is identified with the dynasty at Ballabhi-pura, the princes of which were the founders of the Ballabhi era and were probably known as the Ballabhi or Ballabh Rajas." সপ্তম শতানীতে হয়েনহা, বলুভীতে আগমন করিয়াছিলেন। টড সাহেবের মজে পার্থিয়ান ও হালের। পঞ্চম শতানীতে এই রাজা কর্মান করে।

^{† &}quot;Jurz resembles Guzerat and the horses of kattiwar are still famous" Eliot. হরেনসাংয়ের ভ্রমণ্যুতাতে এই শুর্জর দেশের কথা পাঙ্য়া যায়।

[্]র এই রাজ্য ছারোবলী পর্বতভোগীর নিকটবর্তী ছিল। রাজ্যের অন্তর্গত ভাইকা ছুর্গ ১০২৩ প্রাক্ষে সহমদ গল্পনী অধিকার করেন।

এই রাজ্য অতি ক্ষা। একানের জীলোকের।
আত্যন্ত ক্লারী; ভারতবর্বের মধ্যে এরপ সৌলর্ব্য দেখা বার না। রাজার সৈন্যসংখ্যা
অতিশর অল এবং সেই জন্মই রাজ্যে শান্তির
কথনো বিল্ল হর না।

উপরোক্ত তিনটী রাজ্যের নিকটে ক্লমি রাজার রাজ্য। হঃধের বিষর রাজা সেরূপ জনপ্রিয় নহেন। বল্লভী এবং ভুর্জু উভরের সহিতই তাঁহার বিবাদ। ইঁহার সৈক্তসংখ্যা অভ্যধিক এবং ইঁহার পাঁচ লক্ষ হন্তী আছে। কথিত আছে যে দশ সহস্র হইতে পঞ্চনশ সহস্র লোকা রাজসৈক্লের ক্রম্র ধৌত করণেই ব্যাপৃত থাকে। এই বন্ধ এত সক্ষ যে একটী অঙ্গুরীর মধ্যদিয়া অনায়াসেইহাকে গলানো যাইতে পারে। কড়িই এদেশের মুদ্রা। ক্

এই রাজ্যের পরেই কসবিন দেশ। এ
দেশের অধিবাসীবর্গ খেতবর্ণের এবং ইহারা
কর্ণ বিদ্ধ করে। জ্রীলোকেরা স্থন্দরী এবং
পর্মতকন্দরই ইহাদিগের বাসস্থান। †

ইহাদের পর গ্রন্থকার স্বর্ণনীপের কথা লিথিয়াছেন। এ দ্বীপের প্রথা এই বে, রাজার দেহত্যাগ হইলে একখানি শকটে করিয়া তাঁহার মৃতদেহ শাশানে আনীত হয়। শকটখানি এমনি ভাবে প্রস্তুত বে, মৃত যাজিকে এই গাড়ীতে রাখিলে তাঁহার মন্তক ভূমি স্পর্শ করে। শকটের পশ্চাতে একটা জীলোক সম্মার্জনী হন্তে মৃতদেহের অমুসরণ করে এবং উক্ত সমার্জনী বারা মৃতের মুখে অনবরত ধূলা দিতে থাকে। মধ্যে মধ্যে সে চাৎকার করিয়া বলে, "হে মন্তুম্বগণ! দেখ! কাল এই ব্যক্তি তোমাদের রাজাছিল; এ তোমাদের উপর প্রভূষ করিত এবং তোমরা ইহার আজ্ঞা প্রতিপালন করিতে। দেখ, আজ ইহার কি দশা! ইনি তোমাদের নিকট বিদায় লইরাছেন এবং যম ইহার আজ্ঞাকে অধিকার করিয়াছে। সাবধান! কেবল স্থেবর আশাতেই কালাতিপাত করিও না। সাবধান!" মৃতের দাহই এদেশের প্রথা।

ভারতবর্ষে একপ্রকার লোক আছে

যাহারা কেবলমাত্র বনে এবং পর্বতেই ভ্রমণ

করিয়া বেড়ায়। ইহাদিগের অপর কোন
কার্য্য নাই। অনেক সময় ইহারা কেবলমাত্র

বনজ ফলমুলেই জীবন ধারণ করে। কেহ
বা নয় অবস্থাতেও থাকে। যোড়শ বংসর
পূর্ব্বে একটা লোককে ব্যাঘ্রচর্ম্ম পরিধান করিয়া
সুর্য্যের দিকে চাহিয়া থাকিতে দেখিয়াছিলাম।
আলও ভাহাকে ঠিক সেই ভাবেই দেখিলাম।

এই সকল রাজ্যে সম্ভাস্ত বংশীয়েরবাই

^{*} যতনুৰ বোৰা যায় গ্ৰন্থৰাৰ কামৰূপ বা আসাম বাজ্যেৰ কথা উলেধ কৰিতেছেন, "The accounts of this Kingdom and of Kamrup were probably gathered by the Arab-writers from mariners who had visited the ports in the Bay of Bengal and their ignorance of the interior of the Country, led them to infer that the territories of the Ballabha on the western Coast were conterminous with those of Rahma or Ruhmi on the eastern side"......Elliot.

[†] টড সাহেব এই রাজ্ঞাকে কচ দেশ বলেব। করাসী গ্রন্থকার রেন্ড ইহাকে মহীশুর বলেন।

(nobility) পদ্মাক্রান্ত। নৃপতিগণ নিজেরাই উন্তরাধিকারী নির্কাচিত করেন। পণ্ডিত
এবং চিকিৎসকসম্প্রদারের মধ্যেও এইরূপ
ব্যবস্থা। এই সকল ব্যবসারগুলি বংশ-পরস্পারগত।

ভারতবাসীরা মতা স্পর্শ করে লা। যে রাজা
মত্যপান করেন তিনি রাজ্য শাসনের উপযোগী নহেন বলিয়াই তাহাদিগের ধারণা।
ভারতবাসীরা তেমন যুদ্ধপ্রিয় নহে। অনিবার্য্য কারণে যদি কোন রাজা নিকটবর্ত্তী
অপর রাজাকে বুদ্ধে পরাজিত করেন, তবে
জয়ী রাজাকে পরাজিত রাজবংশীর কাহারও
হল্তে রাজ্যভার প্রদান করিতে হয়। ইহার
বিপরীত ব্যবস্থার প্রজাবর্গের অসন্তোবের
কারণ হইয়া উঠে।

সাধারণতঃ ভারতবর্ষের রাজারা সৈন্সদিগকে বেতন দেন না। ধর্ম্মযুদ্ধ হইলে ধর্ম্মের নামে তিনি তাহাদিগকে আবাহন করেন। অমনি সৈন্সেরা যুদ্ধার্থ প্রস্তুত হইরা আইসে।

দ্বিতীয় খণ্ড। এই গ্রন্থের দিতীর খণ্ড সিরাক নগরবাসী আবু জারহুল হাসেনের লিখিত।

ইনি কুমারদেশের নৃপতির কথা লিখিয়া-

ছেন। এই দেশের ক্ষমংখ্যা স্বভাবিক দেশের লোকেরা মন্ত স্পর্শ করে না। অলী-লভার প্রতি ইহাদিগের বিশেষ বিষেধ। নদীর জল সাভিশর স্বস্থাহ।

এই দেশের রাজার সম্বন্ধে প্রস্থকার একটা গল বলিয়াছেন। त्रांका धकरिन कार्य দেশের রাজার মুপ্ত দেখিতে চান। লোকমুখে এই সংবাদ সেই দেশের নুপতির কর্ণে পৌছিলে, তিনি কুমার দেশের রাজার বিরুদ্ধে এক সহস্র রণভরীসহ † যুদ্ধবারা মহাবাজা এবং তাঁহার নাবিকগণ সকলেই 'मञ्चावनी' (Tooth brush) वावहांत्र করিত এবং প্রভাহ কয়েকবার করিয়া দম্ভ প্রকালন করিত। কুমার দেশের রাজা এই অভিজানের জন্ম আদৌ প্রস্তুত ছিলেন না স্বতরাং সহজেই পরাজিত হইলেন। তাঁহার মুও মহারাজ সমীপে আনীত হইল। মহারাজ কুমার দেশের মন্ত্রীকে বলিলেন যে, তুমি যথার্থই এরাজ্যের মঙ্গলাকাজ্ঞী স্থতরাং উপযুক্ত লোককে এই সিংহাসন প্রদান কর। পরে মহারাজ দৈক্তদামস্ত সমভিব্যাহারে খদেশে প্রভাগিত হইলেন। কুমার দেশের কোন দ্রব্য স্পর্শ ও করিলেন না।

^{* &}quot;How can a man who inebrates himself conduct the business of a kingdom."
বন্ধত: মদ্যপান ভারতবর্ষে বরাবরই নিষিদ্ধ ছিল। প্রবন্ধান্তরে এ বিষয়ের আলোচনা করিবার আমাদিন্যের
ইচ্ছা আছে।

[†] অতি প্রাচীনকাল হইতেই যে ভার চবংর রপপোতের বাবহার ছিল ভাহার মধেই প্রমাণ পাওরা যার। বস্ততঃ কি আয়োরাত্র কি রণতরা কোন বিষয়েই প্রমিশে পশ্চিমদেশ অপেকা নাব ছিল না।

^{*} এই কলেক ছলেই দেখা যাইভেছে যে রাজা অর্থলিপা, হইগা মুদ্ধারী হইভেন না; বর্দ্ধবৃদ্ধ ব্যতীত সাধারণত: অন্ত বৃদ্ধ ছিল না! কুমার দেশের রাজার হিলছে অভিজান অপ্যানের প্রভিশোধ লইবার করেই হইরাছিল। শাইতই দেখা যাইভেছে যে মহাবৃদ্ধা রাজ্যবৃদ্ধির করে বৃদ্ধানা করেন নাই। কুমার দেশই পরে কুমারীকা অন্তরীপ নাবে ব্যাভঃ।

ভারতবর্ষের কোন কোন রাজা রাজত্বে

অধিকারী হইলেই প্রচুর অর বিতরণ করেন।

কদলী পত্রে এই অর সংরক্ষিত হয়। রাজা

সামান্তই ভোজন করিয়া আপনার ভিনচারি
শত পার্ম্বর্চরকে ভোজনে আদেশ করেন।

যাহারা এই অর ভোজন করে, রাজা মৃত

বা মৃদ্ধে হত হইলে ভাহাদিগকে ভাহার সহিত

সহমরণে যাইতে হয়। এ নিয়মের ব্যত্যয়
হয়না।

কোন পুরুষ বা দ্রীশোক বৃদ্ধ হইলে
অথবা চলচ্ছক্তি বহিত হইলে তাহার পরিবারস্থ
যে কেহ তাহাকে অগ্নিতে অথবা জলে নিক্ষেপ
করে। তাহাদের বিশাস এরূপ করিলে
তাহারা পুনরাশ্ন "ফিরিরা" আদিতে পারিবে।

বৰ্ণীপে মৃশ্যবান প্ৰস্তর ও বছতর মুক্তা পাওয়া বার; এখানে অনেক ইছণী এবং মুসলমানের বাস।

ভারতবর্ষে একশ্রেণীর লোক আছে
যাহারা কেবল মাত্র ধর্মকার্য্যেই জীবন
অতিবাহিত করে। এতহাতীত কবি, নৈয়াবিক, দার্শনিক, জ্যোতির্বিদও বিস্তর।

ভারতবর্ষীর রাজারা কর্ণে মণিমর কুণ্ডল পরিধান করেন। তাঁহারা মূল্যবান মণিমুক্তা থচিত কঠহারও ব্যবহার করিয়া থাকেন।

ভারতবর্ষে স্ত্রীলোকদিগের মধ্যে অবরোধ-প্রথা প্রচলিত নাই।

> (ক্রমশঃ) শ্রিযোগীক্রনাথ সমাদার।

সেনাপতি স্থরেশ বিশ্বাদের পত্র।

সহযোগী বেললী পত্রে কর্ণেল বিশাসের একথানি পত্র প্রকাশিত হইয়াছে—এ পত্রধানি তিনি তাঁহার প্রিয়বদ্ধু বেতিয়া-রাজ-এপ্রিনিয়ার শ্রীযুক্ত পূর্ণচক্র মুবোপাধ্যার মহাশরকে লিখিয়াছিলেন। ইহাই তাঁহার শেব পত্র। এই পত্র হইতে স্পষ্টরূপে বুঝা যায় যে, তিনি পরিণত বয়সে ভারত ধর্মকেই শ্রেষ্ঠবর্ম জ্ঞান করিয়াছিলেন এবং বছদিন স্বদেশ হইতে নির্বাসিত ইইয়াও মাত্ভুমিকে ভুলিতে পারেন নাই।

"প্রিয় পূর্ণ, তোমার ১ই অংকুয়ারি ১৯০৫ গারিবের পত্র পাইয়া কি পর্যন্ত আহলাদিত ইলাম বলিতে পারি না। এই দূর প্রবাসে দেশী বালারজুর স্নেহসন্তায়ণে মনে যে কি তৃতপূর্ব আনলেক সঞ্চার হয় তাহা তুমি বুরিতে গারিবে না—তুমি ত কথনো আত্মীয় অজন হইতে যুক্ত হও নাই। লুঞ্জনে আসিয়া পৌছর্মাই আমি নাকে পত্র লিখিয়াছিলাম, কোন উত্তর পাই বিরুখার লিখিয়াও কোন কল হয় নাই।

আমার জীবনধারা তাপ্যয়ের পারদের স্থার কেবলি উঠিয়াছে নামিয়াছে, তাই বলিয়া আমি কধনো পরাভব মানি নাই—পরাভবের জস্তু আমার জন্ম হয় নাই। * * *

কীবনের অতীত সময়ে এমন দিনও গিরাছে—
যেদিন সমুদ্র উন্মানের স্থার ভক্তন করিয়াছে—প্রচণ্ড
কটিকা ছহলার করিয়া ছুটিয়াছে, উন্মুক্ত প্রান্তরে
কুৎপিপাসার কাতর, আহত, মৃতজ্পের মধ্যে
পরিত্যক্ত—আমি পড়িয়া রহিয়াছি; কখনো বা
প্রক্রেক্তের লয়লাভ করিয়া সন্মান ও অপূর্বে মধ্য
মুদ্ধক্তেরে লয়লাভ করিয়া সন্মান ও অপূর্বে মধ্য
মুদ্ধক্তেরে লয়লাভ করিয়া সন্মান ও অপূর্বে মধ্য
মতোগ করিয়াছি কিন্তু বধনই আমার প্রিয়লনদিগকে
ভূলিতে পারিনাই। অতীতের শ্বভিই আমার বর্ত্তমান জীবনকে গঠন করিয়া ভূলিয়াছে, ভবিষ্যৎ
চিরক্তানই অপ্রের রাজ্য ছিল, এখনো তাহাই আছে।
এ পৃথিবী বড় কটিন ছান, তবুও ইছার উপর চলিবার
প্রধ্বরিয়া ইহাকে আয়ন্ত করিতে হয়—কিছুতেই

হার মানিও না, কিছুতেই নিজের অধিকার ত্যাপ করিও না—মরিবার সময়ও মৃত্যুর তয়ে কাতর হইয়া তাহার পায়ে গড়াইয়া পড়িও না, নিজের একটু বল দেখাইও—পারতো অস্ততঃ একটা গান গাহিয়া লইও। অবিরত অধ্যবসায় কথনই বিফল হয় না, একদিন না একদিন কাম্যধন লাভ হয়।

লভবে আসিয়া পৌছিয়া কিছুকাল অসহ কষ্টে पिन कोडोरे-भारत এकि मार्कारमत मरम मिश्हिमरम আহার দিবার ভার আমার উপর পড়ে, অলদিনের মধ্যেই আমি ইহাদিগকে বশ করিতে শিবি। পশুরাজ সিংহকে সম্পূর্ণ ক্ষাবার ক্ষমতা লাভ ক্রিয়া আমি প্রভুত অর্থ উপার্জন করি এবং ইউরোপের সর্বতেই আমার খ্যাতি বিস্তার হয়—কতবার রাজা, মহারাজা, সম্রাটের সহিত একত্র ভোজন করিবার সৌভাগা আমার ইইয়াছিল-এক কথায় বলিতে গোলে আমারট কথা তথন সাধারণ ও অভিজাতবর্গের একমাত্র আলোচ্য বিষয় হইয়া দাঁড়াইয়াছিল। আমার ভাগ্যের এবং অবস্থার এমন আক্মিক উন্নতিসত্তেও আমার মনের প্রবাস-ছঃখ কিছুমাত্র দূর হয় নাই। কথনো কখনো এমনই মনে হইত যেন আমি পাগল হইয়া যাইব। ইহার কিছু দিন পরে আমি দক্ষিণ আমেরিকার আসি এবং সৈত্য দলভুক্ত হইব বলিয়া मनश्चित्र कति। यनिष्ठ अञ्जीवत्तत्र कष्टे, नियम ७ मानन কত কঠিৰ তাহা আমি জানিতাম তবুও কিছুকালের মধ্যেই আৰি সুয়শ ও উচ্চপদ অৰ্জন কৰিতে সমৰ্থ হইলাম। এই দেশেই বিবাহ করিয়াছি-এখন আমার চারিটি পুত্র এবং একটি কলা। অবিশ্রাম জীবনসংগ্রামে আৰু আমার মাধার সব চুলগুলি শাদা হইয়া গিয়াছে কিন্তু দৈহিত বলের কিছুমাত্র হাস হয় নাই।

আবার মনের যথন উক্তরণ শেচনীয় অবস্থা সেই সময় একদিন রাত্রে আমি ঘোড়ার চড়িয়া কিছুদ্রে একটি সৈম্ম নিবাস পর্যবেক্ষণ করিছে যাইডেছিলাম। পথের একটি বাড়ী হইতে মৃক্তগ্রুত রুমণীর আর্ডকঠমর শুনিয়া সেইখানে ঘোড়া থামাইলা, নাবিয়া বাড়ীয় ভিত্র পোলা। শেপানে

विद्या (पवि शृहमञ्जा मयस विश्वीस, इंडिनिट जीत्नाक बाक्निकार अमिरक अमिरक शिकारमोक क्रिएकर । আমাকে দেখিয়া তাহারা ৰণিণ "গৃহস্বাৰী অসুপন্থিত, তাঁহার কল্পা কিছুদিন হইল অতাত পীড়িত। তিনি সমন্ত দিন কিছুই খান নাই-বিছানার উপর একভাবে একদৃষ্টে পড়িয়া আছেন, কিছুক্ষণ হইল হঠাৎ এখন অন্তির হইরা পড়িগাছেন যে তাঁহাকে কোনমডে বিচানার ধরিয়া রাখা যাইতেছে না।" আমি ভাঁছাকে দেখিবার অসুষতি প্রার্থনা করিলাম। তাঁহার ঘরে প্রবেশ করিয়া দেখিলাম তিনি মাটাতে পডিয়াই গডাগডি দিতেছেন। আৰাকে দেখিবাৰাত্ৰ বলিয়া উঠিলেন, "সভাই কি আপৰি আসিয়াছেন! আমি আপনার প্রতীক্ষার ছিলাম"। অক্স স্ত্রীলোক কয়টি এই কথার আশ্র্যা হইয়া আমাকে দেখিতে লাগিলেন। আমি তাঁহাদের প্রতি কোন মনোযোগ না করিয়া একেবারে সেই ভত্তমহিলাটির বিছানার পালে গিয়া দৃঢ়ভাবে তাঁহার চুখানি হাত ধরিলান, এবং তাঁহাকে মাটা হইতে উঠিতে ৰলিলাম—তিনি ভৎকণাৎ উঠিয়া "আপনি আমাকে, যেখাৰে बिलादन সেইখানেই আপনার সহিত बाँदेव।" পূর্ব তুমি ৰোধ হয় জাৰনা আমি সম্মোহন বিদ্যায় বিশেষ পারদর্শী : বহকাল ইহা ২ত্তের সহিত অভ্যাস করিখা-ছিলাম। আমি তাঁহার বাধার উপর আমার দক্ষিব হত্ত রাশিয়া বলিলাম "এখন একটু নিজা বাও ভাহার পর আমি তোমার লইরা বাইব।" কিছুক্সণের মধ্যেই তিনি মাটার উপর শুইয়া গভীর নিদ্রাময় হইলেন। তথন ওাঁহাকে বিছানায় তুলিয়া শোয়াইতে ৬ তাঁহাকে স্বেচ্ছামত সুমাইতে দিতে বলিয়া আমি চলিয়া আদিলাম। ভাছার পর আর সেদিকে राहे नाहे।

ভূই নাদ পরে একশন প্রোচ প্র্রী ভরগোক আনার বাসায় আসিরা ভাষার কলাকে আবোগা করার কল অনেক ধলাক হিলা বলিলেন "বলিও ভূমি বাহিক স্থমজনে আছ জুরুও বে মানসিক কটে নিতাত পীড়িত হইডেছ ভাষা নিবারণের অনোঘ উপায় বলিয়া দিতে পারি দি আমি এই কথায় ক্ই

आकर्षा रहेनाम किन्न मूट्न किन्न बनिनाम ना । बुलिनाम আমি সম্মোহিত করিবার সময় তাঁহার করা আমার যে মানসিক অবস্থা ছবির স্তার স্থশপ্রভাবে দেখিয়া-ছিলেন ভাছাই পরে পিভাকে জানাইয়াছেন। আমি তাঁহাকে ধক্তবাদ দিয়া বলিলাম, এ উপক্ষে করেন তবে চিরকৃতত থাকিব। আমার কথার ভাঁহার মুখের ভাবের সম্পূর্ণ পরিবর্তন হ্হন-ভাহার মুখ পাওুর হইল। ভিনি গঞ্জীরম্বরে ৰ্লিলেন "তুমি যেদেশে অন্মগ্ৰহণ করিয়াছ—সেই প্রাচীন আধাবংশের আভিজাত্য-চিহ্নে ভোষার উন্নত প্ৰশন্ত ললাট শোভিত। তুমি জাৰ মৃত্যু বলিয়া কিছুই নাই; ভাছা দেহান্তরগ্রহণ, পরিবর্ত্তন যাত্র। ভোষার গদীর কৃষ্ণভার চকু দেবিয়া বুঝিতে পারিতেছি থাত্মা কত উদার কত দরাশীল। নিজে কুধার কাতর থাকিয়া অঞ্চের কুণা তৃকা দূর করিয়া থাক---দুঃৰ দূর করিয়া ক্ষান্ত হওনা—আবার গোপনে ভাহাদের ছঙ্গ ভোমার চোৰে জল পড়িভে থাকে। কেমন গ্রামি টিক বলি নাই ?" আসি কোন উত্তর করিলাম না। তিনি অৰ্থান কৰি সিনাৱের একটি কৰিতা আবৃত্তি ারিয়া তাহার ভাবার্থ বুঝাইয়া দিলেন। বলিলেন মজানতাই জীবন, জানই মৃত্যু—যদি সেই **জানের** স্তরালে বিপদ লুকাইয়া থাকে। বদি তুমি অপরের গু বঙ অধিক ভাবনাচিন্তা কর ভাহা হইলে একদিন ৰি জীবন কিম্বা জ্ঞান হারাইবে—কেননা ইহাতে ামার জীবনীশক্তি ভোষার শরীর মনকে ভ্যাগ त्रमा जाशास्त्र भित्कहे व्यवाहिक हहेटल्डाह, हेहाटल शेष्पत्र गांड इटेएएए किंद्ध ভোষার সমূহ ক্ষৃতি।" ম বলিলাম,আৰি আপনার কথা বুবিতে পারিরাছি। া ইহার কোন উপার নাই আপনি যদি আমার ^{→ উচ্ছেদ} করিতে পারেৰ তবে**ই আ**মার মনের ালাভ হয় ;—ফিন্ত স্নেহ প্ৰীতি ভিন্ন কি জীবনধারণ া সভব হয় ? স্বী ভিন্ন এই সোন লগৎ বেমন যাত্ৰ জীৰিত থাকে না প্ৰেম ভিন্ন যানৰজীৰনত । মুমূৰ্ হইয়া পঞ্জে।" ভিনি বলিলেন তুৰি ই মহৎ স্বাতির বোগ্য কথাই বলিয়াছ-नहः वर्णाः वानिहे नक्यं अपन । अवृष्टित निवन

ভাষার মূর্বে অরপান বোগাইরা তবে অপরের কথা ভাবিতে হইবে। প্রকৃতির নিরম লজন করিলে সে কর্বনো মার্ক্সনা করে না। স্থতির উচ্ছেদ তুমি না করিলে আর কাহারও করিয়া দিবার সাধ্য নাই— তবে সর্বাদাই ছঃবের কথা তুলিয়া থাকিতে সচেই থাকিবে। ভোমার অবসর কালে আরাম করিয়া বসিয়া অতি অর সময়ের অত্য মন একেবারে শৃত্য চিন্তাচেইাইন করিবে; এই উপারে তুমি মানসিক শক্তি সঞ্চয় করিতে পারিবে—এই উপায়েই ভোমাদের গুরু এবং সন্ন্যাসীরা নির্বাণ লাভ করিয়া থাকেন।" এই বলিয়া তিনি বিদার গ্রহণ করিলেন।

আন্ত অনেক লিখিয়াছি আর অধিক লিখিব না।
এবার পত্তে আমার ও তোমার আত্মীয় বন্ধু সকলের
কথা লিখিও—তোমার মাকে আমার পদ মানের
কথা বলিও, তিনি সুঁখী হইবেন।

তাঁহাকে বলিও, আমি আর গৃহহীন নিরাশ্রম পর্যাচক নহি;—আমার গৃহ হার সবই হইরাছে—সে গৃহ স্থানর, প্রিলগরিজনে পূর্ণ—এই ছ্রনেলে প্রবাসী হইয়াও আর আমি প্রকলন সন্মানিত সক্তিপর গৃহহ। আনি সৈক্ষদলের নেতা, আমার পরিচছদ রাজকীর বেশের স্থার সন্দর ও কার-কার্য্য গচিত, আমার বাহন দৃপ্ত যুদ্ধের অব ;—কামানের গোলা যখন চতু-দিকে মৃত্যুবর্ষণ করে তথনও আমি তাহার সন্মুখে অগ্রসর হইতে ভীত নহি। তোমার মা আমার স্থান্তাগ্য ও পদগোরবের কথা ওনিলে স্থাই ইবেন ভাই এত করিরা লিখিলাম—গুধু তোমার মা কেন আমার বিশ্বাস এমন ভারতবাসী কেহ নাই যাহার মন স্থানশী ভাতার এই প্রগোরবের কথা ওনিরা উৎফুল হইবেন।

অতীতের কথা কতবার ভাবি—কেবল আমার মাথের
কথা ভাবিতে বুক ফাটিরা যায়, বেদিন প্রথম সংবাদপত্তে
তাহার মৃত্যুর কথা জানি সেদিন আর মনে করি নাই,
আমি বাঁচিব। তিন দিন, তিন রাত প্য্যাভ্যাগ
করি নাই কিমা অল্ল জল স্পর্ল নাই। আমার
মুধে এক বিন্দু জল দিতে তখন কেহই ছিল না, তরু
মরি নাই, বাঁচিরা আছি।

তুমি বিজ্ঞাসা করিয়াছ আমি ভারতবর্ধে ফিরিয়া ষাইব কি না? নিশ্চছই বাইব—আমাকে বাইতেই হইবে। ভারতভূমি, মাতৃভূমির মুখ না দেখিলে আমার মরা হইবে না। আমার শরীর ও মনের আর্দ্ধেক আংশ যেব সেবাবে ছাড়িয়া আসিয়াছি— সেবানে কিরিয়া না গেলে আমার সম্পূর্ণতা লাভ ছইবে না।"

হায়। এ আশা তাঁহার পূর্ণ হইল না !!!

চয়ন।

শারীরবিজ্ঞান।

স্বাস্থ্য-চিক্ন ।—আধুনিক চিকিৎসকগণের মতে চকু বা দেহের বর্ণ অপেকা নথের ছারা মন্ত্রে।র ছাছোর অবস্থা আরো সহজে বুঝা যায়। বাছাদের নথ অতি শীঘ্র বৃদ্ধি পায় এবং বেশ চিকণ, ভাষাদের সাধারণ ছাছোর অবস্থা ভাল বলিয়া বৃথিতে হইবে।

উপবাস ও স্বাস্থ্য।— আধুনিক পাশাতা চিকিৎসকণণ বলিতেছেন যে উপবাসে অনেক রোগের উপশন হয়। সায়বীয় রোগের পক্ষে উপবাস বিশেষ ফলপ্রদ। বালিন নগরে একটি স্ত্রীলোক বছ বৎসর হুইতে সায়বিক পীড়ায় কট্ট পাইতেছিলেন, অবশেষ উপবাস করিয়া তিনি আরোগ্য লাভ করিয়াছেন। একজন বিজ্ঞ চিকিৎসক বলেন, ম্বল্ল আমানের উদরের অবস্থা-বিশেষ হুইতে উৎপক্ল হয়়। সহত্র সহস্র ব্যক্তিক মুম্বর দেখিয়া কট্ট পান ও তাহাতে তাঁহাদের সায়বিক শক্তির হাস হয়। উপবাসই এ সকল রোগের শ্রেষ্ঠ উবধ। ভারতের ব্যবস্থাপকগণ সহা বছপ্র্কেই ব্রিতেন।

দধি ও রোগের বীজাণু।—অধ্যাপক মেচনিকফ (Professor Mechnikoff) আমাদের দেহের
বার্দ্ধকা নাশ করিবার এক উপার আবিদার করিয়াছেন। তিনি বলেন প্রত্যাহ দধিভক্ষণ করিলে দেহের
যাবতীর রোগের বীজাণু নই হইয়, যাহ এবং দেহ স্বস্থ
ও সবল থাকে। যে সকল কারণে বার্দ্ধকো দেহে
জরা আসিয়া উপস্থিত হয়, নিয়মিত দ্ধিভক্ষণে দে
সকল কারণ দুরীভূত হয়তে পারে।

এত সহজ উপাল্পে বদি সৃষ্ট দেহ ও দীৰ্বজীবন লাভ করা সন্তব হয়, তাহা হইলে আর ভাবনা কি! সকলেই এখন নিয়মিতরূপে প্রত্যাহ ছুই তিন্বার করিয়া দধি ভক্ষণ করিতে পাকুন।

তিনি আরও বলেন যে, ছম্মকে বিশুদ্ধ ভাবে পাইতে হইলে গাভীর মুখ, দাঁত ও দেহ বিশেষভাবে পরিষ্ঠার পরিচ্ছন্ন রাখা কর্ত্তবা। পাশ্চাভ্য পণ্ডিভগণ ৰিখনৰ রোগের ৰাজাণু দেৰিয়া যেরূপ আতক প্রকাশ আরম্ভ করিয়াছেন, ভাহাতে অনেক সময়ে আমানের হাস্ত সম্বরণ করা কঠিন হইরা উঠে। শুনিতে পাওয়া যায় আমাদের স্বর্গীয় মহেক্রলাল সরকার একবার তাঁহার একটি রোগীর সন্দির অন্ত কোনরূপ কারণ না পাইয়া এইরূপ काরণ নির্দেশ করেন যে, ছুর্মদোহন-कांत्री गंत्रना चार्क वमत्न इक्ष लाइन कत्रियाहिन (मह इक गान्हे बाशीब मिक हहेबाए । নানাপ্রকার হাস্তকর ভ'বে আমাদের মধ্যে প্রচলিত কিন্তু মেচনিকফের উক্ত সিদ্ধান্তের পর আর মহেল্রলালের এ কথার হাসিবার ত বিশেষ কোৰ কারণ দেখিতে পাই না। কে বলিতে পারে যে গরলার সেই আর্দ্র বস্তু হইতে সন্দির বীঞাণু বাহির হইয়া চুঞ্চের সহিত রোগীর দেহে প্রবেশ করে নাই!

চর্বাণ ও স্বাস্থ্য।—শাহারে নহে, পরিপাকের উপরই যথার্থভাবে আমাদের আহা নির্ভর করে। চর্বাণ আমাদের আবাদের আবিশক্তির সহারক। ভাল করিয়া থাদ্য এবা চর্বাণ করিলে, মুখের মধ্যেই ভাহা অর্থেক জীব হইরা বার, এবং উদারে গিয়া অতি সহজেই পরিপাক হইয়া দেহে রক্ত উল্লোদন করে। আধুনিক চিকিৎসকগণের মতে কোন খাদ্য এবা চর্বাণ বারা মুখের মধ্যে একেবাহে মাধ্যের মত করিয়া ফেলিয়া

ভবে গলাধ:করণ করা উচিত। তাঁহারা আরও বলেন বে, জল ছব ইত্যাদি তরল পদার্থও চক চক করিয়া পান করা ঠিক নহে। জলীয় দ্রবাদিও একটু করিয়া মূবে লইয়া ধীরে ধীরে চর্ক্রণ করিয়া অর্থাং উভদরণে মূধের নালা মাথাইয়া পান করা কর্ত্তব্য। আমাজ্যে দেশে এক নিমাদে এক ঘট জল পানের যে প্রধা প্রচলিত আছে, তাহা অতি অহাছ্যকর।

মন্থ্যের আকার বৃদ্ধি ৷—আমেরিকার হারভার্ড ও ইয়েল বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রগণের মধ্যে আকার বৃদ্ধির চেষ্টা করিয়া দেখা গিয়াছে যে তাহারা তাহাদিগের পিতা ও পিতামহের অপেকা অধিক দীর্ঘকায় কইয়াছে। ছাত্রগণের মধ্যে সাধারণতঃ সকলেই পাঁচ বৎসরের মধ্যে প্রার দেড় ইফি দৈর্ঘে ও ১০ সের ওজনে বাড়িয়াছে। জাতিগত ভাবে এরপ চেষ্টা করিতে থাকিলে এক সময়ে সমগ্র জাতির আকার ও বল বৃদ্ধি পাইবে বলিয়া তাঁহাদিগের বিশাস। জাপানিগণ ত আপনাদের আকার বৃদ্ধি করিবে বলিয়া হিরসকল।

অন্তঃপুর।

Бन्न |—थागारमत्र ८मर्गत्र कार्या श्रन्मत्री রমণীর গমলের নানাক্ষপ বর্ণনা পাঠ করি, যেমন মরাল-গমন, গ**লগমন ইতাদি। কালিদাস বস্তু পুষ্পাভ**রণ**।** উমাকে সঞ্চারিণী পল্লবিনী লভার সহিত তুলনা করিয়া ছেন। এই প্রভােকটি গভির সহিত এক একটি সুন্দর हरि यत्न आरम, यत्रामशयन विनरमञ्जेष ठक्क চ্কিতগতি কিশোরীকে মনে পড়ে, আবার গ্রগমন ত্নিলে, সাম্রাজ্ঞীর স্থায় মহিমারিতা পূর্ণযৌবনা নারীকে যেন দেখিতে পাই। স্থন্দর গতি দৌন্দয়কে যে অধিকতর মনোহর করে তাহাতে আর সন্দেহ মাত্র নাই, একটু অভ্যাস ও যত্ন ক্রিকে আমরা স্ক্রেই স্ক্র ক্রিয়া হাঁটতে পারি। হাঁটিবার সমর মাথা একটু পিছনে হেলাইয়া শরীরের ভার নিক্ষিপ্ত পদে রাবিয়া হাঁটিলে গতি সুত্রী হয়। মাথার উপর একণানি বই রাশিয়া একেবারে সোজা হইয়া হাটিতে অভ্যাস করিলে গ্রন সহল ও সুন্দর হর। হিন্দুখানী মেয়েরা মাধার উপর কলসী রাখিয়া কেমন रमात्र छन्नछ ७ मेय९ चाटमामिछ शक्टिछ व्यवनीना-জনে হাঁটিলা যায়। ভাল করিয়া হাঁটিভে শিথিলে অনেক পরিশ্রুমের কা**জও বেশ সংজে** সাধিত হয়।

কণ্ঠসর। ইচ্ছা এবং অভ্যাসের বারা আমরা যেখন
আমাদের গতি স্থী করিতে পারি, কণ্ঠখরও তেমনি
স্মগুর করিতে/পারি। কোমল মধুর কণ্ঠখর
নারী সৌলব্যের একটি প্রধান অল, কর্কশ কণ্ঠ তেমনি
অন্তরায়। আমরা বদি প্রত্যেক কথাটি শাই করিবা

এবং ধীরে ধীরে বলি তাহা হইলে কঠখর কর্কশ ছইবার অবসর পার না। সকল কবি, তাঁহার কাব্যের নায়িকার বর্ণনায় তাহাকে মধুরকণ্ঠী বলিয়াছেন।

প্রসাধন। - ইংরাজেরা বলেন; ভূবি ভিজান ললে বাদাম বাঁটা গুলিয়া ভাহাতে মুথ ধুইলে রং तिम ठक्ठिक इत्र। आमारमञ्जलमा वर्ग ठाकि ठिकाञ्च জ্ঞ ক্লপটান অসিদ্ধ। স্নানের সময় ও বিকালে मूथ अकानत्नत नगर जायोन माथित मूर्यत वर्ष क्षात লাবণাযুক্ত হইতে দেখা যায়। বাদাম ও কমলালেবুর বোসা একতা বাঁটিয়া তাহাতে সর ও ময়দা মিশাইলেই ज्ञभोन श्रेष्ठा रह। पित्नत्र याथा इहेवात्र ना भारि-লেও অন্তভঃপক্ষে প্লত্যহ স্নানের সময় একবার করিয়া ক্লপটান মাখা ভাল। তবে যাঁহাদের গুভিদিন ক্লপটান প্রস্তুত করিয়া লওয়া অসুবিধা ভাঁহারা অভাবপক্ষে সর মাখিতে পারেন। রূপটান বা সর মাধার পর মিহি বেশন বা বাদামের সাবালে মুখ ধুইয়া টর্কিস তোমাল বা কোন নরম কাপড় দিয়া বেশ ভাল করিরা মুখ মুছিরা ফেলিতে হইবে। মুখে যেন একটুও অল না থাকে। সকালে উঠিয়া তথু ঠাতা জলে মুধ ধুইয়া ফেলাই ভাল। রূপটান বা সর মূধে माबिट एशिन श्विश ना इहेरव मिहि विनंतन, একটু बानाम वाँछ। मिनारेशा मूप धूरेला हला।

ব্যায়াম।—সৰ দেশেই বিশেষতঃ আমাদের দেশে অবস্থাপদ্ন ঘটের মেয়েরা একটা বরসের পর মোটা হইয়া পড়েব। ইহার প্রতিকার নিয়মিত কান্ত্ৰিক পরিশ্রম। ইাটীরা বেড়ান বেশ একটি সহজ্ব ব্যায়ান। কিন্তু এদেশে ভব্রদরের মেরেদের ইাটীরা বেড়াইবার স্থবিধা নাই। তাই প্রতিদিন প্রাতে উঠিয়া কিন্তা রাত্রে শুইতে বাইবার পূর্বে তাঁহারা কিছুক্ষণ বদি ঘরের মধ্যে নিয়লিখিতরূপ লঘু ব্যায়ান করেন তো যথেই উপকার পাইবেন।

প্রথম। ছইবানি বাহ একই সমরে শরীরের উভয়
পার্বে বৃদ্ধানরে দশবার ঘুরাইবে। হাত ছবানি
সন্মুবে বৃদ্ধানে ক্ষের সহিত সমান রাবিরা ংশবার
বাড়াইয়া দিবে—দশবার মাথার উপর উটু করিয়া
ছুলিয়া আবার সমান ভাবে হাঁটু পর্যান্ত নামাইবে,
দশবার সোলা সন্মুখে ছ্বানি হাত লোড় করিয়া খুলিয়া
উভয় পার্বে বহদুর পার বিতার করিবে।

ছিতীয়। এক একখানি পা যতদূর সন্তব শরীরের সহিত সমকোণে (rigth angles) রাখিয়া সোজাভাবে দশবার বাডাইয়া দিবে ও নোয়াইবে।

তৃতীয়। এক একখানি পা দশবার বাড়াইরা দিবে ও দশবার নোরাইবে। প্রতিহাঁটু ফ্রন্ডভাবে ১৫ বার নোয়াইবে।

চতুর্থ। করাত দিয়া কাঠ কাটিবার সময় শরীর বেমন ভাবে চালনা করিতে হয় সেইরূপ ভাবে ১৫ বার চালনা করিবে। তরবারি খাপ হইতে থুলিয়া লইতে হইলে বেমন ভাবে ২ন্ত চালনা করিতে হয়, ১৫ বার সেই ভাবে উভয় হন্ত চালনা করিবে।

পঞ্চন। একেবারে তীরের মত সোজা হইরা দাঁ ।ইরা হাত ছ্থানি মাধার উপর তুলিয়া আবার বাটীতে ছাঁয়াইবে, হাঁটু যেন না নোর।

বঠ। কোষরের ছই দিকে ছুখানি হাত রাধির।
কই স্থানে ফ্রন্ডভাবে এক শত কিল্পা এই শত বার পা
ঠাইবে এবং নামাইবে।

সপ্তম। শরীরটি সোজা রাখিরা কে'মরের ছুই কে ছ্পানি হাত রাখিরা সমান ও হ'ক; ভাবে ২০ তৈ ৫০ বার পর্যন্ত লাফাইবে।

প্রাতে কিমা রাজিতে শুইতে বাইবার পূর্বে এই রাম অভ্যাস করিবে। যে ঘর কিমা বারান্দার ইবিক হইতে বিশুদ্ধ বাভাস চলাচল করিতে পারে সেইখানে ব্যায়াৰ কৰিবে । পৰের কিখা কিশ বিকিটের
অধিক পরিশ্রম করিবে না । এই সময় কোনরপ জাট
কাপড় পরিবে না এবং বধনই প্রান্ত বোধ হইবে ভধনি
ইহা বন্ধ করিবে, এই সময় বাহাতে ঠাঙা বাভাস
না লাগে ভাহাই করিবে—ব্যায়াম হইরা গেলে ভিনা
গামোছা দিরা গা মুছিরা ফেলিবে এবং অরক্ষণ বিশ্রাম
করিবে।

নারীসমিতি।—ৰঙ্গের পুরুষগণ মান্ত্ৰাঞ ভারতের বিভিন্ন এনেশের মধ্যে বেরূপ সহদয়ত। ও স্বজাতীয়তা সৃষ্টি চেষ্টায় অগ্রসণ্য হইয়াছেন, বঙ্গয়স্থী-গণও সেইরূপ বিভিন্ন প্রদেশের নারীসমাজে একটা नवजीवन मकात्रित जड व्यानशन हाही कतिएलहरू দেৰিয়া আমরা যারপরনাই আনন্দ ৰোধ করিতেছি। পঞ্চাবে শ্ৰীমতী সরলা দেবা ও হারদ্রাবাদে শ্ৰীমতী সরোজিনীর এইরপ কর্মোল্যমের কথা সকলেই জানেন। মাক্রাজের নরসাপুর নগরে ভথাকার ম্যাজিট্রেট বভীক্রনাথ রারের পত্নী শ্রীমতী বিভাবতী একটি নারী সমিতি প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। ইনি কাশ্মীরের ডাক্তার আগুতোষ মিত্রের কক্ষা। সেদেশের নারীগণের মধ্যে শিক্ষা, জ্ঞান ও সন্তাবের প্রচার করাই এই সমিভির উদ্দেশ্য। আজ এক বংসর হইল এই সমিতি গঠিত इरेग्नारह। अरे अल नमरवद मर्यारे छवाकात नाती সমাজ এই সমিতিতে যোগদান করিয়া মিদেস যায়ের **७७** छिटेशिक मार्थक क्रियाछन। এই সমিতির একখানি ছবি ভারতীতে একাশিত হইল।

জাপান রাজপ্রাসাদে রমণী।—জাপান
সমাটের প্রাসাদে প্রায় ভিন: শত রমণী সহচরী আছে।
তাহারা পাঁচ প্রেণীতে বিভক্ত। তাহাদের মধ্যে যাহারা
প্রধান তাহাদের "দানা-সান" (প্রাস্তু) বলে এবং
তাহাদের অধীনত্ব সফলকে 'শিবিও' বা সহচরী বলে।
দানাদের প্রত্যেকের পাঁচটি হইতে আইটি গৃহ আছে,
এবং প্রত্যেকের চারিজন ক্রিয়া 'ক্লিবিও' বা অধীনা
সহচরী আছে।

কতকণ্ডলি 'দানা'কে এভাত দ্বী হইতে রাজি > । টা পর্যান্ত সমাট ও সমাজীর কর্মে নিযুক্ত বাকিতে। হয় এবং তাঁহাদের নিকট উপস্থিত বাকিতে হয়। এই



সকল 'লাৰা'লিবেৰ নিজ্য জীবৰ এত কঠোল নিয়ম ও শাসনের অধীন যে ভাছারা বন্দিনীর অংশকাও পরাধীন।

'পিমিও'গণ অতি প্রভাবে শ্ব্যাভ্যাগ করিলা গুৰ-সকল পরিছের করিয়া, সানের ও বেশ পরিবর্তনের সম্বত আরোজন টক করিলা রাখে। 'দানা'গণ প্র্যাভ্যাগ করিলা এক ফ্টাকালের ব্যে সানাদি সম্পর করিয়া আহার করিতে ব্যেব। রাজ্পানাদের রুম্পিণ বর্গেছ সকল বস্তুই আহার করিতে পারেন, ক্ষেত্ৰ পদাত ভক্ নিৰে। পদাত ব গছটা তাঁহাদের নিকট বড়ই অপ্রীতিকর। পবিত্রতা ও পরিক্ষেতার প্রতি ইহাদের বিশেব ঘৃষ্টি। রাজপ্রাসাদে নিযুক্ত হইবার পকে ছইটি বিশেব ৩৭ থাকা আবস্তক—অধাবসাহ ও আত্মহণ ত্যাগ। নীচ বংশে ক্ষমহণ করিলে কোনও কতি হয় না। দেলাই করা, গাঠ করা, রভন করা, পুসাঞ্জ্য প্রভাত করা এবং রাজোল্যানে প্রবণ করা তাহাদের নিত্য বিজ্ঞান ও আ্রাহান।

রাজ্যের কথা।

ভারতের কলক্ক।—ইংলতে সে দিব মধনদান ধিঙরা নামে একটি পাঞ্চাবী বালক সার কর্জন-উইলিকে ভারতসভার অধিবেশন মূলে গুলি করিয়া হতা করিয়াছে। সার উইলিকে क्रमा করিতে গিয়া লালকাকা নাৰে একটি ৰখের পাসী ডান্ডারও इठ इडेब्राइन । इन बान नाम नियम वार्थ ধর্ম নতে। বুদ্ধের সমরেও ভারতবাসী চিরদিনই ধর্মমুদ্ধ করিয়াছেন। হিংসার সমূখেও ধর্মকে আদর্শ রাথিয়া কতবার ভারতবাদী ভাষার রাজ্য, ধন ও জীবন পৰ্যান্ত অকাততে দাৰ করিয়াছেন। হায়। সেই ধর্মপ্রাণ ভারতসন্তান আৰু কিনা চিরন্তন আদর্শ ধর্ম বিশ্বত হইয়া এক্সপ কাপুরুবোচিত অধর্মাচরণে ভারতের গুলোক্ষল যুগোরাশিকে কলভিত করিল। वात्रा प्रश्यत विषय-व्यानार्किष्टे वानक्ष्म बहेक्रण হত্যাকে অধর্ম ৰলিরাই মনে করে না। বিচারছলে ধিংলা বলিয়াছে এই হতা। খুৰনাৰে অভিহিত হইতে পারে না। ধিংরার পকেটেও নাকি এই মর্মের একথানি কাগৰ পাওয়া পিয়াছে বে ইংরাজ স্তারপরায়ণ রাজা ^{নহেন,}—অভঞৰ যে কোন উপায়ে হউক ভারতহিতৈৰী মাত্রেরই তাহাদের দেশ তাড়িত করিতে চেষ্টা করা উচিত। এরপ বছমূল অন্ধ বিশ্বাসের নিকট ধর্মনীতি रान भारेत्छ भारत ना। अहे अन्तरम अक्कि नत বলিবার লোভ স্থরণ করিতে পারিতেছি না। একবার শাক্ত-বৈকৃৰে ৰাছ মাংস ভক্ৰ সমুদ্ধে একটি বিবন ভৰ্ক ৰাধিয়া বায়। বৈক্ৰ ৰলিল, ৰাছ ৰাংগ ভক্ৰ অভ্যন্ত মৰু।

শাক্ত। আৰৱা বলি খুৰ ভাল।
বৈকৰ। শাত্তে ইহা নিবিছ।
শাক্ত। আমাদের শাত্তে ইহা বিহিত।
বৈকৰ। মাহ মাংস ভক্ৰে প্রলোকে ভোষার
নিক্ত অধোগতি হইবে।

শাক। আৰ্থা বেশ জানি ইহাতেই আ্নানের সুগতি হইবে।

এইরপ কথা কাটাকাটির পর শাক্ত বলিলেন
"বেথ তোষার পাল্লে যাহা নিবিদ্ধ, আবার পাল্লে
ভাষাই প্রসিদ্ধ, তোষার পাল্লে যাহা পাণ আবার
লাল্লে ভাষাই পুণ্য—অভএব ঐ ভর্কে পরলোক আবাদের
উভরের পক্ষেই সমান আপালনক, ভবে অধিকর নাহ
মাসে ভক্ষণে ইহলোকের স্থেও আমি বক্ষিত নহি, ইহা
প্রভাক স্থে—ইহাতে মততেদ নাই।

আনরাও বলি, উজরুণ হতার প্রোক্ষ কর বাহাই হউক প্রতাক্ষ কর আমরা কি দেখিতেছি।, দেখিতেছি তাহা দেশের গক্ষে অভিনার অবলবজনক। সেই হত্যার সময় বখন সকলে লও উইলির জন্ত হাহতাশ করিতেছিলেন, সেই সময় একটি ভারতবাসী ছাত্র বলিয়া উটীয়াহিল,—উ হার জন্ত হাহতাশ করিতেছ বেন। বিদিতে হয় ভারতবাসীর জন্ত কার। ক্যান্টা অভ্যন্ত টিক। এইরুণ এক একটি কার্ব্যে

ভাষাদের বেশবজন ভারও সূত্রপরাহত হইরা পরিতেতে

লওঁ রিপনের পরলোক গমন।—ভারতবর্বের
লক কোটি নরনারীর হদয় শোকাভিভূত করিয়া
গত ১১ই জুলাই ভারতের ভূতপুর্বে রাজপ্রতিনিধি
লওঁ রিপন পরলোক গমন করিয়াহেন। পৃথিবী
ইইতে আল আমর। তাঁহাকে হারাইয়াছি বটে,
কিছ ভারতবাসীর লভর মধ্যে তাঁহার আমন
লমর অক্সরূপে চির্ছাপিত। তাঁহার গুভ ইচ্ছা
সার্থক না হইলেও তাঁহার উদারতা, ল্যায়পরায়ণতা
ও কর্তবানিগ্রার গুণে, তাঁহার শাসনকাল ভারতবর্বের

ইভিহাসে বর্ণাক্ষমে লিখিক। বেন্টির ও
ক্যানিংএর পর তাঁহার ভার উচ্চপ্রাণ রাজপ্রতিনিধি
আর কেহ ভারতে পদার্পণ করেন নাই বলিলেও
অত্যুক্তি হর না। ভারতশাসন হইতে অবসরপ্রহণ
করার পর হইতে বৃত্যুকাল পর্যান্ত তিনি সকল সময়েই
ভারতের ত্রিশকোটী নিঃসহার প্রমার বর্ধার্থ মজলচেষ্টার রভ ছিলেন। তাঁহার ভার তেজবা ও বর্গুপ্রাণ
বন্ধ্র স্বৃত্তি ভারতবাসী কখনও বিশ্বত হইবে না।
এক্ষ্পে তাঁহাকে হারাইরা আনরা তাঁহার সেই প্রিত্র
স্বৃতিকে হৃদয়ের ভক্তি ও ভালবাসার অর্থ্য-প্রদান
করিব।

চিত্ৰ-ব্যাখ্যা।

বিরহিণী যক্ষ-পত্নী। জাপানী চিত্রকর শ্রীযুক্ত কাৎস্থতা কর্ত্তক অভিত চিত্রের প্রতিদিপি।

"দুর বাডায়নে ৰথা বিষহিণী ছিল শুয়ে ভূঙল-শয়নে মুক্তকেশে, স্লানবেশে, সঞ্জল নয়নে"— এবং তাঁহার

"रखगुखः मूथममकनवाकि नयानकष्।

অবস্থা চিত্রকর চিত্রিত করিরাছেন। হত্তগুত্ত ,মুথের উপর আগগুলম্ ,কক অলক ঝুলিয়া পড়িয়াছে; যদি স্বপ্নেও কোনো প্রকারে প্রিয়মিলন হয় এই আশায় নিমীলিতাকী বিরহিণী নিজা আকাজ্ঞা করিতেছেন।

এই চিত্রে একটি বিরহজাগরক্বল ভাব-ভন্মর সৌন্দর্যা ফুটিয়া উঠিয়াছে। রূপদী যক্ষ-নারী "জাতাং মঞ্জে শিশিরমণিতাং পদ্মিনীং বাস্তরপান্।" যক্ষনারীর পশ্চাতে স্ক্র ভিরস্করিণীর ভিতর দিয়া মুক্ত লাভায়ন দেখা বাইভেছে। বিরহী-যক্ষ এই বাতায়ন পথেই—

"বন্ধন-বিহীন
নৰমেখ-পঞ্চ-পন্ধে করিয়া আসীন
পাঠাতে চাহিয়াছিল প্রেমের বারতা
অঞ্জ-বাস্পতরা।"

যক্ষনারীর অষম্ববিক্ষিপ্ত বসনের কুঞ্চিত স্তরনির্দ্দেশ (drapery) চিত্রপানিকে একটি বিচিত্র সৌন্দর্য্য দান করিয়াছে।

"ৰ্বা এলায়েছে ভার বেষমর বেণী"—

এমনি দিনে কত ব্র্ধ পূর্ব্বে একজন কবি
বিধার বিরহ্ ব্যথাকে ভাব-মূর্ত্তি দিবার চেষ্টা
করিয়াছিলেন আর আজ কতকাল পরে
একজন শিল্পী সেই কবির পদান্ধ অমুসরণ
করিয়া সেই ভাবকে রূপ দিবার চেষ্টা
করিয়াছেন।

মন্দির-পথে—শ্রীযুক্ত অসিতকুমার হালদার কর্তৃক অন্ধিত চিত্রের প্রতিলিপি। একটি ওচিমাতা ভক্ষী ভক্তিগদাদম্থে পূজাসভার দইয়া মন্দিরসোপানে উঠিতেছেন—ব্রেদিকচক্রবাবে প্রভাতের মেবতর তেদ করিয়া অরুণ উদিত হইতেছে। আকাশে বিশেষরের আরতি-প্রদীপ অলিয়া উঠিয়াছে, আলোকে প্রক জাগিয়াছে, বাতাসে বেণু বীণা বাজিয়া উঠিয়াছে, নিথিল অগতের ভক্তি মৃর্ভিপরিগ্রহ করিয়া বিশ্বমন্দিরে প্রবেশ করিতেছেন, ইহাই শিরীর বর্ণনীয় বিশ্বম।

क्षीताका बद्यांभाशांत्र।

ক্লিকাড়া, ২০ ক্পিয়ালিস ট্রাট, কাত্তিক প্রেসে শীহরিচরণ নামা বারা ব্রিক্ত ও ৪০,ওক্ত বালিগল বোড ইইটে শ্রীসতীশচল মুবোগাবার হারা প্রকাশিত।



ৈচিত্ত শ ুন্দ্রাল বস করক হলিতে চিব চইচে

আর্য্য আদর্শ ও গুণত্রয়।

আষাঢ় মাদের ভারতীতে কারাগৃহ ও আমি স্বাধীনতা-শীৰ্ষক প্ৰবন্ধে নিবপরাধী করেদীর মানসিক ভাব বর্ণনা করিয়া ইহাই প্রতিপন্ন করিবার চেষ্টা করি-য়াছি যে, আর্য্যশিক্ষার গুণে কারাবাদেও ভারতবাসীর আন্তরিক স্বাধীনতারপ মহামূল্য পৈতৃকসম্পত্তি বিনষ্ট হয় না—উপরস্ক ঘোর অপরাধীর মধ্যেও সেই সহস্রবর্ষ সঞ্চিত আর্য্য-চরিত্রগত দেবভাবও ভগ্নাবশিষ্টরূপে বর্ত্তমান থাকে। আর্ব্যশিকার মূলমন্ত্র সান্থিক ভাব। যে সান্ত্ৰিক, সে বিশুদ্ধ। সাধারণতঃ মহুয়ামাত্রেই অশুদ্ধ। রজোগুণের প্রাবল্যে, তমেপ্রণের ঘোর নিবিড়ভার এই অগুদ্ধি পরিপুষ্ট ও বৰ্দ্ধিত হয়। মনের মালিন্ত ছই প্রকার,— ৰড়তা, বা অপ্ৰবৃত্তিজনিত মালিভা; ইহা তমোগুণপ্রস্ত। ২য়;—উত্তেজনা,বা কুপ্রবৃত্তি-জনিত মালিয়া; ইহা রক্ষোগুণপ্রস্ত। তমো-লকণ অজ্ঞানমোহ, বৃদ্ধির সুলতা, চিম্বার অসংলগ্নতা, আলস্ত, অতিনিদ্রা, কর্ম্মে আলম্ভজনিত বিরক্তি, নিরাশা, বিষাদ, ভয়, এক কথার যাহা কিছু নিশ্চেষ্টভার পরি-পাৰক ভাছাই। অপ্রবৃত্তি ৰড়তা অজ্ঞানের ফল. উত্তেজনা কুপ্রবৃত্তি 8 প্রাপ্ত ক্রানসভূত। কিন্ত তমোমালিক্স অপনোদন করিতে **ब्हे**रन রজোপ্তণের উদ্ৰেক্ষারাই ভাহা দূর করিতে হয়। খণই প্রবৃত্তির কারণ এবং প্রবৃত্তিই নিবৃত্তির প্রথম সোপান। যে জড়, সে নিবৃত্ত নর,— জড়ভাব জ্ঞানশৃত; আর জ্ঞানই নিবৃত্তির মার্গ।

কামনাশৃন্ত হইরা যে কর্ম্মে প্রবৃদ্ধ হর, সে
নির্ভ ; কর্ম্মত্যাগ নির্ভি নর। সেই জন্ত
ভারতের বোর তামসিক অবস্থা দেখিরা স্বামী
বিবেকানন্দ বলিতেন, "রজোগুণ চাই,
দেশে কর্ম্মবীর চাই, প্রার্ভির প্রচণ্ড প্রোত
বছক। তাহাতে যদি পাণও আসিরা পড়ে,
তাহাও এই তামসিক নিশ্চেষ্টতা অপেকা
সহস্রগ্রণে ভাল।"

সতাই আমরা ঘোর তমোমধ্যে নিমগ্ন হইয়া সম্বতণের দোহাই দিয়া মহাসাত্তিক সাজিয়া বড়াই করিতেছি। অনেকের এই মত দেখিতে পাই বে, আমরা সাত্তিক বলিয়াই রাজসিক জাতি সকলহারা পরাজিত, সান্ধিক বলিয়া এইরূপ অবনত ও অধঃপতিত। তাঁহারা এই বৃক্তি দেখাইয়া খুষ্টধর্ম হইতে হিন্দুধর্মের প্রতিপন্ন করিতে শ্রেষ্ঠতা मटाडे। ক্লাতি প্রত্যক্ষলবাদী. তাঁহারা ঐহিক ফল দেখাইয়া ধর্ম্মের শ্রেষ্ঠতা প্রতিপাদন করিতে চেষ্টা করেন: তাঁহারা বলেন-খুষ্টান জাতিই জগতে প্ৰবল অতএব খুষ্টান ধর্ম্ম শ্রেষ্ঠ ধর্ম। আর আমাদের মধ্যে অনেকে বলেন—ইহা ভ্ৰম ; এছিক ফল দেখিয়া ধৰ্মের শ্রেষ্ঠতা নির্ণয় করা যায় না, পারলৌকিক ফল দেখিতে হয়; হিন্দুরা অধিক ধার্ম্মিক বলিয়া, পাশ্চাত্যকাতি অসুরপ্রকৃতি বলবান अधीन हरेबार्छ। किन्द्र अरे युक्तिव मध्य আর্যাক্তানবিরোধী খোর এম নিহিত। সম্বর্থণ কখনই অবন্তির কারণ হইতে পারে না, এমন কি সম্বঞ্জান জাতি দাসম্-শৃথ্যলিত

হইয়া থাকিতে পারে না। ব্রহ্মতেজই সম্ব-গুণের মুখ্য ফল, ক্ষত্রভেন্ধ ব্রহ্মতেন্দের ভিত্তি। আঘাত পাইলে শাস্ত ব্ৰহ্মতেজ নিৰ্গত হয়, চারি কত্রতেজের স্ফুলিক **षिक खिला डिर्फ ।** यथात्न क्रवालक नार्डे, সেখানে ব্রহ্মতেজ টি কিতে পারে না। যদি একজন প্রকৃত ব্রাহ্মণ থাকে সে একশ ক্ষত্রিয় সৃষ্টি করে। দেশের অবনতির কারণ সত্বগুণের আতিশ্য্য নয়, রজোগুণের অভাব, তমোগুণের প্রাধান্য। রক্ষোগুণের অভাবে আমাদের অন্তনির্হিত সম্ব দ্লান হইয়া তমোমধ্যে গুপ্ত হইয়া পড়িল। আলস্ত, মোহ, অজ্ঞান, অপ্রবৃত্তি, নিরাশা বিষাদ নিশ্চেষ্টার সঙ্গে সঙ্গে হুৰ্দ্দশা অবনতিও বৰ্দ্ধিত হইতে লাগিল। এই মেঘ প্রথমে লঘু ও বিরল ছিল. কালের গতিতে ক্রমশ এতদূর নিবিড়তর হইয়া পড়িল, অজ্ঞান অন্ধকারে আমরা এমন নিশ্চেষ্ট ও মহতাকাজ্ঞা-বর্জিত হইয়া পড়িলাম যে ভগবংপ্রেরিত মহাপুরুষগণের উদয়েও সেই অন্ধকার পূর্ণ তিরোহিত হইল না। তখন সূর্যা ভগবান জনিত প্রবৃতিহার৷ কেশরকার রজোগুণ সংকল্প করিলেন।

জাগ্রত রজঃশক্তি প্রচণ্ডভাবে কার্য্যকরী হইলে তমঃ পলারনোগ্রত হর নটে কিন্তু অন্যদিকে স্বেচ্ছাচার, কুপ্রবৃত্তি ও উদ্দাম উচ্চ্ছালতা প্রভৃতি আমুরিক ভাব আদিবার আশকা। রজঃশক্তি যদি স্ব স্থ প্রেরণায় উন্মন্তবার বিশাল প্রবৃত্তির উদরপূরণকেই লক্ষ্য করিয়া কার্য্য করে, তাহা হইলে এই আশকার যথেষ্ট কারণও আছে। রজোগুণ উচ্চ্ছাল ভাবে স্বপ্রামী হইলে অধিকঁকাল

টি কিতে পারে না, ক্লান্তি আসে, তম: আসে, প্রচণ্ড ঝটিকার পরে আকাশ নির্মান পরিষ্কার হইয়া মেখাছর বায়ুস্পন্দন হইয়া পড়ে। রাষ্ট্রবিপ্লবের পরে ফ্রান্সের এই-পরিণাম হইয়াছে। সেই त्रा है बिश्लद রজোগুণের ভীষণ প্রাহর্ভাব, বিপ্লবাস্থে তামসি-কতার অল্লাধিক পুনরুখান, আবার রাষ্ট্রবিপ্লব, আবার ক্লান্তি, শক্তিহীনতা, নৈতিক অবনতি, ইহাই গত শতবর্ষে ফ্রান্সের ইতিহাস। যভবার স্বাধীনতা সাম্য মৈত্রীরূপ আদর্শজনিত সাত্তিক প্রেরণা ফ্রান্সের প্রাণে জাগিয়াছে, ভতবারই ক্রমশ রজোগুণ প্রবল হইয়া সন্ধ্রেবাবিমুধ আহুরিক ভাবে পরিণতিলাভ স্বপ্রবৃত্তিপুরণে যত্নবান হইয়াছে। তমোগুণের পুনরাবির্ভাবে ফ্রান্স ভাহার পূর্ব্ব সঞ্চিত মহাশক্তি হারাইয়া মুয়মাণ বিষম অবস্থায় হরিশ্চন্দ্রের মত না স্বর্গে না মর্ত্যে দাঁড়াইয়া রহিয়াছে। এইরূপ এড়াইবার একমাত্র উপায় প্রবল রজ:-শক্তিকে সন্থসেবায় নিযুক্ত করা। সাত্তিক ভাব জাগ্রত হইয়া রজ:শক্তির চালক হয়, তাহা হইলে তম:গুণের পুন: প্রাত্মভাবের ভয়ও নাই, উদ্দামশক্তিও শৃঙ্খলিত নিয়ন্ত্ৰিত উচ্চ আদর্শের বশে দেশের জগতের হিতসাধন করে। সম্ভোদ্রেকের উপায় ধর্মছাব;—স্বার্থকে ডুবাইয়া পরার্থে সমস্ত শক্তি অর্পণ,—ভগবানকে আত্মসমর্পণ করিয়া সমস্ত জীবনকে এক মহা ও পবিত্র যজ্ঞে পরিণত করা। গীতায় কথিত আছে সম্বরক্ষ: উভয়ে তমো নাশ করে; একা সম্ব কখন তমংকে পরাজয় করিতে পারে না। ^{সেই} জন্ম ভগবান অধুনা ধর্মের পুনুরুত্থান করাইয়া

আমাদের অন্তর্নিহিত সত্তকে জাগাইরা পরে রজ:শক্তিকে দেশময় ছড়াইয়া দিয়াছেন। রামমোহন রায় প্রভৃতি ধর্মোপদেশক মহাত্মা-গণ সত্তকে পুনরুদ্দীপিত করিয়া নবষ্গ প্রবর্ত্তন করিয়া গিয়াছেন। উনবিং**শ শ**তাব্দিতে ধ**শ্মজ**গতে যেমন জাগরণ হইয়াছিল, রাজনীতি বা সমাজে তেমন হয় নাই। কারণ ক্ষেত্র প্রস্তুত ছিল না, দেই জন্ম প্রচুর বীজ বপিত হইয়াও শস্ত দেখা দেয় নাই। ইহাতেও ভারতবর্ষের উপর ভগবানের দয়া ও প্রাসম্বতা বুঝা যায়। রাজসিক ভাব প্রস্ত জাগরণ কথনও স্থায়ী বা পূর্ণকল্যাণ-প্রদ হইতে পারে না। তৎপুর্বে জাতির অস্তবে কতকাংশে ব্রহ্মতেজ উদ্দীপিত হওয়া আবশ্রক। দেইজন্ম এতদিন রঞ্জঃশক্তির স্রোত ক্র ছিল। ১৬·৫ খৃষ্টাকে রজ:শক্তির যে বিকাশ হইয়াছে তাহা সাত্ত্বিক ভাব পূর্ব। এই নিমিত্ত ইহাতে বে উদ্দামভাব দেখা গিয়াছে তাহাতেও আশঙ্কার বিশেষ কারণ নাই, रेश त्रकः नाचित्कत्र (थला ; কেননা थिलात्र याश किছू উन्नाम वा উচ্চৃ ज्वल ভাব তাহা অচিয়ে নিয়মিত ও শৃদ্ধালত श्रुरवर्डे । বাহণক্তি দারা নহে ভিওরে ষে ব্ৰন্ধতেজ, যে সাত্তিকভাব, তাহাদ্বারাই ইহা বশীভূত ও নিয়মিত হইবে। ধর্ম্মভাব প্রচার করিয়া আনরা দেই ব্রহ্মতেজ ও সাত্ত্বিকভাবের পোষকতা করিতে পারি মাতা।

পূর্ব্বেই বলিয়াছি পরার্থে সর্ব্বশক্তি নিয়োগ করা

সম্বোজেকের এক উপায়। আর আমাদের

রাজনীতিক জাগরণে এই ভাবের যথেষ্ট প্রমাণ

পাওয়া যায়। কিন্তু এই ভাব রক্ষা করা

কঠিন। যেমন ব্যক্তির পক্ষে কঠিন জাতির

পক্ষে আরও কঠিন। পরার্থের মধ্যে স্বার্থ

অলক্ষিতভাবে ছুটিরা আসে এবং বদি আমাদের বৃতি বিভদ্ধ না হয়, এমন ল্রমে পতিত হইতে পারি যে আমরা পরার্থের দোহাই দিয়া স্বার্থকে আশ্রর করিয়া পরহিত, দেশহিত, মমুক্সজাতির হিত ডুবাইব অথচ নিজের ভ্রম বুঝিতে পারিব না। ভগবংদেবা সন্তোজেকের অন্ত উপায়। কিন্ধ সেই পথেও হিতে বিপরীত হইতে পারে, ভগবৎসারিধ্যরূপ আনন্দ পাইরা আমাদের সান্ত্রিক-নিশ্চেষ্টতা জমিতে পারে,সেই আনন্দের আস্বাদ ভোগ করিতে করিতে হঃথকাতর দেশের প্রতি ও মানবজাতির দেবার পশ্চাংমুখহইতে পারি। ইহাই সাত্তিকভাবের বন্ধন। বেমন রাজিদক অহংকার আছে, তেমনি দাত্তিক অহঙ্কারও আছে। যেমন পাপ মুয্যুকে তেমনই পুণাও বদ্ধ করে। বদ্ধ করে, সম্পূর্ণ বাসনা শৃত্ত হইয়া অহঙ্কার ত্যাগ পুর্বক ′ভগবানকে আত্মসমর্পণ না করিলে **পূ**ণ স্বাধীনতা নাই। এই হটী অনিষ্ট ত্যাগ করিতে হইলে প্রথম বিশুদ্ধ বৃদ্ধির দরকার। দেহাত্মক বুদ্ধি বৰ্জন করিয়া মানসিক স্বাধীনতা অর্জন করাই বৃদ্ধি শোধনের পূর্ববর্তী অবস্থা। মন याधीन इहेल জীবের আয়ত্ত হয়, পরে মনকে জয় করিয়া বুদ্ধির আশ্রয়ে মাত্র্য স্বার্থের হাত হইতে অনেকটা পরিত্রাণ লাভ করে। ইহাতেও স্বার্থ সম্পূর্ণভাবে আমাদিগকে ত্যাগ করে না। শেষ স্বার্থ মুমুকুত্ব,পরত্ঃথকে ভুলিয়া নিজের আনন্দে ভোর হইয়া থাকিবার ইচ্ছা। ইহাও ত্যাগ করিতে হয়। সর্বভূতে নারায়ণকে উপলব্ধি করিয়া সেই দর্বভৃতস্থ নারায়ণের দেবা ইহার ঔষধ; ইহাই সম্বশুণের পরাক্ষাঠা। ইহা হইতেও উচ্চতর অরস্থা আছে, তাহা সম্বগুণকেও অতি-

ক্রম করিয়া গুণাতীত হইয়া সম্পূর্ণভাবে ভগ-বানকে আশ্রয় করা। গুণাতীত্যের বর্ণনা গীতায় কথিত আছে, যেমন

নান্তং গুণেভ্যঃ কর্ত্তারং যদা স্রস্তীক্রণশুতি।
গুণেভ্যুক্ত পরং বেন্ডি মন্তাবং সোহবিগক্ষতি।
গুণানতানতীত্য ত্রীন দেহী দেহসমূত্তবান্।
জন্মমৃত্যু জরাহুংগৈবিমুক্তোহমূতমন্ম তে।
প্রকাশক প্রবৃত্তিক মোহমেব চ পাশুব।
ন বেন্তি সংপ্রবৃত্তানি ন নি বৃত্তানি কাক্ষতি।
উদাসীনবদাসীনো গুণৈর্ঘো ম বিচাল্যতে।
গুণা বর্তন্ত ইত্যেবং যোহবতিষ্ঠতি ক্লেক্সতে।
সমন্ত্রংশস্থাং স্বহং সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চনং।
তুল্যপ্রিরাপ্রিরো ধীরস্তল্যনিন্দাশ্ম শংস্কৃতিঃ।
মানাপমানরোগ্রল্যন্তল্যো মিত্রারিপক্ষয়োঃ।
সর্বারম্ভ পরিত্যাগী গুণাতীতঃ স উচ্যুতে।
মাঞ্চ যোহব্যভিচারেণ ভক্তিযোগেন সেবতে।
স গুণান্ সমতীত্যৈতান্ ব্রহ্মভূরায় কল্পতে।

"ষধন জীব সাক্ষী হইয়া গুণত্রয় অর্থাৎ গবানের তৈগুণ্যময়ী শক্তিকেই একমাত্র ভা বলিয়া দেখে এবং এই গুণত্তয়েরও পর শক্তির প্রেরক ঈশ্বরকে জানিতে পারে. খন সে-ই ভগবৎসাধৰ্ম্য লাভ করে। তখন হৈছ জীব স্থূল ও স্ক্ষ এই হুই প্রকার দেহসম্ভূত ∮ণত্রয়কে অতিক্রম করিয়া জন্য মৃত্যু জরা**র:**খ ইতে বিমুক্ত হইয়া অমরত্ব ভোগ করে। ত্বব্দনিত জ্ঞান, রজোজনিত প্রবৃত্তি বা তমো-নিত নিদ্রা নিশ্চেষ্ঠা ভ্রমস্বরূপ মোহ আসিলে ব্যক্ত হয় না, এই গুণত্তয়ের আগমন নির্গমনে মান ভাব রাধিয়া উদাসীনের ভার স্থিত্র ইয়া থাকে, গুণগ্রাম তাহাকে বিচলিত রিতে পারে না, এই মবই গুণের স্বধর্মজাত ভি বলিয়া দৃঢ় থাকে। যাহার পক্ষে খেছাথ সমান, প্রিয়াপ্রিয় সমান, নিন্দান্ততি नान, काकन लोड्डे উভরई প্রস্তরের তুলা, যে

शैव्यक्ति निष्कत मधा करेंग, यांशत निक्रे मान व्यथमान এकरे, मिखशक ७ भेक्कशक সমান প্রিয়, যে স্বয়ং প্রেরিত হইয়া কোনও কার্য্যারম্ভ করে না, সকল কর্ম্ম ভগবানকে সমর্পণ করিয়া তাঁহারই প্রেরণার কর্ম করে, তাহাকেই গুণাতীত বলে। যে আমাকে সেবা করে, সেই निर्प्लाय ভক্তিযোগে এই তিন গুণকে অতিক্রম করিয়া ব্রহ্মপ্রাপ্তির উপযুক্ত হয়।" এই গুণাতীত অবস্থা শাভ সকলের সাধ্য না হইলেও তাহার পূর্ববর্ত্তী লাভ সত্তপ্রধান পুরুষের অসাধ্য সান্ত্রিক অহংকারকে ত্যাগ করিয়া জগতের সকল কার্যো ভগবানের ত্রৈগুণাময়ী শক্তির লীলা দেখা ইহার সর্বপ্রথম উপক্রম। ইহা বুৰিয়া সাত্মিক কণ্ডা কণ্ডত্ব-অভিমান ত্যাগে ভগবানে সম্পূর্ণ আত্মসমর্পণ পূর্ব্বক কর্ম करत्रन ।

গুণত্রম ও গুণাতীতা সম্বন্ধে যাহা বলি-লাম, তাহা গীভার মূল কথা। কিন্তু এই শিক্ষা সাধারণতঃ গৃহীত হয় নাই, আজ পর্যান্ত যাহাকে আমরা আর্যাশিক্ষা বলি, তাহা প্রায় সাধিক গুণের অফুশীলন। রজোগুণের আদর এই দেশে ক্ষতিয়জাতির লোপে লুপ্ত হইয়াছে। অথচ জাতীয় জীবনে রুজঃশক্তিরও নিরতিশয় সেইজন্মে গীতার দিকে প্ৰয়োজন আছে। লেকের মন আজকাল আকৃষ্ট হইয়াছে। গাঙার শিক্ষা পুরাতন আর্য্যশিক্ষাকে ভিত্তি করিয়াও অতিক্রম করিয়াছে। গীতোক্ত ধর্ম র্লোগুণকে ভয় করে না, তাহাতে রজ:-শক্তিকে সত্তসেবায় নিযুক্ত করিবার পছা আছে, প্রবৃত্তিমার্গে মুক্তির উপায় প্রদর্শিত আছে। এই ধর্ম অহুশীলনের জন্মে জাতির মন

কিরপে প্রস্তুত হইতেছে, তাহা জেলেই
প্রথম হাদয়ক্স করিতে পারিলাম। এথনও
প্রোত নির্মাণ হয় নাই, এখনও কলুবিত ও
ব্যুবিল, কিন্তু অতিরিক্ত বেগ বথন অল
প্রমানত হইবে, তখন তাহার মধ্যে যে বিশুদ্ধ
শক্তি পুকায়িত, তাহার নিখুত কার্য্য
হইবে।

যাহারা আমার সঙ্গে বন্দী ও এক অভিযোগে অভিযুক্ত, তাঁহাদের মধ্যে অনেকে নির্দোষী বলিয়া মুক্তি পাইয়াছেন, আর সকলে বড়বঞ্জে লিপ্ত বলিয়া দণ্ডিত, কিছ মোকদমা আপীলে বিচারাধীন। **তাঁ**হাদের দেবের कान विहात कता এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য নহে। মানবসমাজে হত্যা হইতে শুক্তর অপরাধ হইতে পারে না। জাতীয় স্বার্থপ্রণোদিত হইয়া যে হত্যা করে, ভাহার ব্যক্তিগত চরিত্র কৰুষিত না হইভে পারে 4িছ তাহাতে দামাজিক হিসাবে অপরাধের শুরুর লাঘব হইল না। ইহাও স্বীকার করিতে হয় যে হত্যার ছায়া অওরাস্থায় পড়িলে মনে যেন রক্তের দাগ বসিয়া থাকে, ক্রুরতার সঞ্চার হয়। ক্রুরতা বর্বরোচিত গুণ, মুখ্য উন্নতির ক্রম-বিকাশে যে সকল গুণ হইতে অল্লে অল্লে বৰ্জিত হইতেছে, সেই সকলের মধ্যে ক্রুরতা প্রধান। ইহা সম্পূর্ণ বর্জন করিতে পারিলে মানবজাতির উন্নতির পথে একটা বিশ্বকর কণ্টক উন্মূলিত ^{इहेब्रा} याहेरत। विठान्नाधीन व्यानामीन रनाय ধরিয়া লওয়া অন্তায় সেইজন্তে এইমাত্র বলিয়া ক্ষাস্ত হইলাম বে যদি এই নোষ প্রমাণিত হয়, তাহা হইলেও ইহা বুঝিতে ^{হটবে যে}, ইহা রজঃশক্তির ক্ষণিক উদাম উচ্ছ খলতা মাতা। **डांशां** मत्या अमन

সাধিক শক্তি নিহিত যে এই ক্ষণিক উচ্ছু অলতার দারা দেশের স্থায়ী অমঙ্গল সাধিত হইবার কোনও আশকা নাই।

অম্বরের যে স্বাধীনতার কথা পূর্ব্বে বলিয়াছি, আমার সঙ্গাগণের সে স্বাধীনতা স্বভাবসিদ্ধ গুণ। যে কয়েকদিন আমরা এক সঙ্গে এক বৃহৎ দালানে রক্ষিত ছিলাম, আমি তাহাঁদের পাচরণ ও মনের ভাব বিশেষ মনোযোগের সহিত লক্ষ্য করিয়াছি। হুইজন ভিন্ন কাহারও মুথে বা কথায় ভয়ের ছায়া পর্য্যন্ত দেখিতে পাই নাই। প্রায় সকলেই তরুণ বয়স্ক, ञ्चात्रक ञन्न वश्र वानक, य ञ्र श्राह्म भुज-সাবাস্ত হইলে তাহার দণ্ড যেরূপ ভীষণ তাহাতে দৃঢ়মতি পুরুষেরও বিচলিত হইবার কথা। আর ইহারা বিচারে খালাস হইবার আশাও বড় রাথিতেন না। বিশেষতঃ ম্যাজিট্রেটের কোর্টে সাক্ষা ও লেখাসাক্ষার যেরূপ ভীষণ আয়োকন জমিতে লাগিল, তাহা দেখিয়া আইন অনভিজ্ঞ ব্যক্তির মনে সহজেই ধারণা হয় যে নির্দোষীরও এই फाँप रहेरा निर्गमत्न १४ नाहे। अपह তাঁহাদের মুখে ভীতি বা বিষয়তার পরিবর্ত্তে কেবল প্রফুলতা, সরল হাস্য, নিজের विश्रमाक जूनिया धार्यत्र ७ म्हानत्र कथा। আমাদের ওয়ার্ডে প্রত্যেকের নিকটে হুই চারিখানি বই থাকায় একটী কুজ লাইত্রেরী এই লাইত্রেরীর অধিকাংশই জমিয়াছিল। धर्म्यत्र वहे, शीठा, উপনিষদ, विदवकानत्मत्र পুস্তকাবলী, রামক্বফের কথামৃত ও জীবন-চরিত, পুরাণ, স্তবমালা, ব্রহ্মসঙ্গীত ইন্ত্যাদি। অন্ত পুস্তকের মধ্যে বৃদ্ধিমের গ্রন্থাবলী, স্বদেশী গানের অনেক বই, আর য়ুরোপীয় দর্শন, ইভিহাস ও সাহিত্য বিষয়ক অ**রম্বর পৃত্তক।**

সকালে কেহ কেহ সাধনা করিতে বসিত, কেহ কেহ বই পড়িত, কেহ কেহ আন্তে গল্প করিত। সকালের এই শাস্তিময় নীরবতায় মাঝে মাঝে হাসির লহরীও উঠিত। "কাচেরী" না থাকিলে কেহ কেহ খুমাইত, কেহ কেহ (थना कविक-एव मिन एव (थना रवार्छ) আসক্তি কাহারও নাই। কোন দিন মণ্ডলে বসিয়া কোন শাস্ত খেলা;—কোন দিন বা **मिज़ामिज़ि नाकानाकि।** मिनक उक कृष्टेवन চলিল, ফুটবলটা অবশ্য অপূর্ব্ব উপকরণে গঠিত।—দিন কতক কানামাছিই চলিল। এক এক দিন ভিন্ন ভিন্ন দল গঠন করিয়া একদিকে জুৎজিৎযুশিকা, অন্ত দিকে উচ্চ লম্ফ ও भीर्च लफ्क आत अक्षिटक drafts वा नम-পঁচিশ। ছই চারি জন গন্তীর প্রোঢ়লোক ভিন্ন সকলেই প্রায় বালকদের অমুরোধে এই সকল খেলায় যোগ দিতেন। দেখিলাম ইহাদের মধ্যে বয়স্ক লোকেরও বাল-স্বভাব। সন্মাবেলায় গানের মজলিস জমিত। উল্লাস, শচীন্দ্র, হেমদাস, যাহারা গানে সিদ্ধ, ভাহাদের চারিদিকে আমরা সকলে বাসয়া গান শুনি-তাম। স্বদেশী বা ধর্মের গংন, ব্যতীত অগ্র কোনরপ গান হইত না। এক এক দিন क्विन पार्याम क्रियात हेक्श्र উल्लामकत গান অভিনয়, Ventriloquism, অমুকরণ বা গেঁজেলের গল্প করিয়া সন্ধ্যা কাটাইত। উল্লাসকরের স্থায় অডুত ক্ষমতা-শালী ও অপূর্বে চরিত্র লোক আমি कथाना पार्वि नारे। अनिशाहिनाम वर्षे এমন লোক মাঝে মাঝে জন্মায় যাহার রাম্বায় মারার প্রভাব এত শিথিল যে সামান্ত দেহের ধর্ম ব্যতীত তাহার অন্ত কোম বন্ধন

নাই। "লিপ্যতে ন স পাপেন পদ্মপত্ৰমিৰান্ডসা"। এই উক্তির যাথার্থ্য ও প্রকৃত মর্ম্ম এবার উল্লাসকরের আচরণে প্রত্যক উপলব্ধি করিলাম। সামাক্ত ৰাত্ত্বের করেন, হাসেন, **ग**झ करत्रन, त्थलन, ভুল করেন, ভাষ় করেন, অভায় করেন, ভিতরে দেই নির্মাণ দেবভাব। গায়ে হালার কালা পড়িলেও ভাহা গায়ে লাগিয়া থাকে না। আমাদের রাগ স্থুথ হুঃখ ভয় স্বার্থ হিংসা ধেষ তাঁহার জন্তে স্ট হয় নাই। তাহাঁর আছে প্রেম আনন্দ, হাস্য, পরোপকার, পরদেবা, ফুলের স্বভাবসিদ্ধ সহতা ও প্রফুলতা। উলাসকর এই প্রকৃতি বিশিষ্ট লোক। তাহার মধ্যে আমি কখনও লেশমাত্র ক্রোধ, হঃথ, দৈন্ত, বিকার, বিষণ্ণতা দেখি নাই। কিছুতেই আদক্তি নাই। তাঁহার নিকট যে যাহা চাহিত ভাহা তাহাকে বিলাইয়া দিতেন, নিজের যেন কিছুই নহে। কোনও ভাবেও ডিনি বদ্ধ নন। এইমাত্র সকলের মনোরঞ্জনার্থ হাসি তামাসা করিতেছিলেন, পরমুহুর্ত্তে দেখিলাম হঠাৎ হইয়া সব ভুলিয়া গিয়াছেন। কেহ ধ্যানভঙ্গ করিলেও তাহার আদে যায় না। হাসি মুখে তাহার আব্দার সহ করিতেন। সবই তাহার পকে गौला, रायम मात्रात्र, राज्यमहे किल, ষেমন নিবৃত্তি তেমনই প্রবৃত্তি। ভেদু নাই, বিকার নাই। এতদুর সাত্ত্বিক স্বাধীন ভাব অগ্ সকলের মধ্যে না থাকিলেও প্রায় সক[্] लित्र क्रे क्रिविखत हिल। त्मिकक्रमात्र क्रि মন দিত না, সকলেই ধর্মে বা আনম্পে দিন কাটাইত। এই নি**শ্চিস্তভাব** কঠিন কুক্ৰিয়া^{ভান্ত}ৰ হৃদরের পক্ষে অসম্ভব; তাহাদের মধ্যে কার্টিন্য,

ক্রতা, কুক্রিয়াসন্তি, কুটিলতা লেশমাত্র ছিল না। কি হাস্য কি কথা কি খেলা তাহাদের সকলই আনন্দময়, পার্পহীন, প্রেমময়।

🛰 ই মানসিক স্বাধীনতার ফল অভিরে বিকাশপ্রাপ্ত হইতে লাগিল। এইরূপ ক্ষেত্রেই ধর্মাবীজ বপন হইলে সর্বাঙ্গস্থলর ফল সম্ভবে। যীও কয়েকজ্ঞন বালককে দেখাইয়া শিষ্য-দিগকে বলিয়াছিলেন "ষাহারা এই বালকদের ত্ল্য, তাঁহারাই বন্ধলোক প্রাপ্ত হন।" জ্ঞান ও আনন সৰ্ভণের লক্ষণ। বাঁহারা ছ:থকে তুঃখ জ্ঞান করেন না, থাঁহারা সকল অবস্থায় আনন্দিত ও প্রফুল্লিত, তাঁহাদেরই যোগে জেলে রাজসিক ভাব অধিকার। পার না. আর নির্জ্জন কারাগারে প্রবৃত্তির পরিপোষক কিছুই নাই। এই অবস্থায় অম্বরের মন চিরাভ্যস্ত রজঃশক্তির উপকরণের অভাবে আহত ব্যাঘ্রের ন্যায় নিজেকে নাশ করে। পাশ্চাত্য কবিগণ যাহাকে Eating one's own heart বলেন,সেই অবস্থা ঘটে। ভারতবাগীর মন সেই নির্জ্জনতায়, সেই বাহিক কষ্টের মধ্যে চিরস্তন টানে আকৃষ্ট হইয়া ভগবানের নিকট ছুটিয়া যায়। আমা-(४३ ইहाई घंढिबाट्छ। खानि ना दकाथा হইতে একটি স্রোভ আসিয়া সকলকে ভাসা-ইয়া নিয়া গেল। বে কথনও ভগবানের নাম করে নাই, দেও সাধনা করিতে শিথিল।

সেই পরমদয়ালুর দরা অহভব আর করিয়া আনন্দমগ্র হইয়া পড়িব। আনেক দিনের অভ্যাদে যোগীর বাহা হয়, এই বালকদের হ চারি মাসের সাধনায় ভাহা হইয়া গেল। রামক্রফ পরমহংস একবার বলিয়াছিলেন, "এখন তোমরা কি দেখছ-ইহা কিছুই নয়, দেশে এমন স্রোত আসছে ষে, অর বয়সের ছেলে তিন দিন সাধন করে সিদ্ধি পাবে।" এই বালকদিগকে দেখিলে তাঁহার ভবিষ্যদাণীর সফলতা সম্বন্ধে সন্দেহ-মাত্র পাকে না। ইহারা যেন সেই প্রত্যা-শিত ধর্ম প্রবাহের মূর্ত্তিমস্ত পূর্ব্বপরিচয়; এইসাবিকভাবের তরঙ্গ কাঠগড়া বহিয়া চার পাঁচজন ভিন্ন অন্য সকলের হাদর মহানন্দে আপ্লুত করিয়া তুলিত। ইহার আন্বাদ যে একবার পাইয়াছে দে কথনও তাহা ভূলিতে পারে না এবং কখনও অন্য আনন্দকে ইছার তুল্য বলিয়া স্বীকার করিতে পারে না। এই সান্ত্রিক ভাবই দেশের উন্নতির আশা। ভ্রাত-ভাব, আত্মজান, ভগবংপ্রেম বেমন সহজে ভারতবাসীর মনকে অধিকার করিয়া কার্য্যে প্রকাশ পায়; আর কোনও জাতির তেমন সহজে হওয়া সম্ভব নয়। চাই তমোবর্জন, রজোদমন, সত্থকাশ। ভারতবর্ষের জন্যে ভগবানের গৃঢ় অভিসন্ধিতে তাহাই প্রস্তুত হইতেছে।

প্রীঅরবিন্দ খোব।

श्रामी नीलानम।

(ফেলিসিয়াঁ শালের ফরাসী হইতে)

কান্দি, সিংহল, ১০ই মার্চ ১৯০০।

একটি রমণীর ক্ষ হল; এই হলের গঠন
অক্সরণ করিরা, তাল-তরুছারাচ্ছর একটি
ক্ষর লাল-বালির রাস্তা চলিরাছে। স্বামী
শীলাক্ষনের সহিত সাক্ষাৎ করিরার জন্ত,
এই রাস্তা দিরা আমি বৌদ্দমঠে উপনীত
হইলাম। আমার কার্ড ও একথানি পরিচরপত্র তাঁহার নিকট পাঠাইরা দিলাম।
লোকটির এখনও যুবা বরুদ, মস্তক সম্পূর্ণরূপে
মৃত্তিত, বিপুল পীতবত্ত্বে দেহ আচ্ছাদিত।

আমার প্রাদন্ত সাক্ষাৎকারের নাম-পত্রথানি হন্তে ধারণ করিয়া এইভাবে কথার
স্ত্রপাত করিলেন:—"আপনি দর্শনের অধ্যাপক, পুনর্জন্মের সমস্ঠাটা কি আপনি ভাল
করিয়া আলোচনা করিয়াছেন ?" এই প্রশ্রে
আমি একটু বিশ্বিত হইলাম এবং স্বীকার
করিলাম, এই শুরুতর সমস্ঠাট আমাদের
আলোচ্য তালিকার বহিন্ত্ত। এই কথায়
শীলানন্দও বিশ্বিত হইলেন এই বিষয় সম্বদ্ধে
তাঁহার মতামত আমার নিকট ব্যাখ্যা করিতে
আমি তাঁকে অমুরোধ করিলাম। তিনি
প্রচলিত বৌদ্ধমত আমার নিকট বিবৃত
করিলেন।

আমরা পূর্বেও জন্মগ্রহণ করিরাছি, আরও আমাদের অসংখ্যবার জন্মগ্রহণ করিতে হইবে। আমাদের জন্মিবার বাসনা, আমাদের জন্মের সহিত অসুস্থাত; মরিরা আমরা পুনর্বার জন্মগ্রহণ করি, এবং পুনর্জন্মগ্রহণের জন্মই আবার আমরা মরি। কিক্সপ যোনীতে আমরা জন্মগ্রহণ ক্রিব তাহা আমাদের কর্ম্মের ছানুট্ই
নির্দ্ধারিত হয়। এই ভূলোকে কিংবা অর্গলোকে, আমরা উৎক্রপ্ত যোনীতে কিংবা
নিক্রপ্ত যোনীতে জন্মগ্রহণ করিতে পারি।
কি স্বর্গ, কি নরক—উভর্বই কিরৎকালের
জন্ম ; উহাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আবার
আমাদের নৃতন জন্মগ্রহণ করিতে হইবে।

কিন্ত জন্মমাত্রেই হঃখভোগ অনিবার্য। জিমলেই রোগগ্রস্ত হইতে হইবে, জ্বাগ্রস্ত रहेट रहेट्न, मित्र हहेट्न। অনিত্যতাবশতঃ আমাদিগকে দারুণ ভোগ করিতে এই रुष्र । কিরূপে এড়াইতে পারা বার ? হত্যার वाता নহে ;—আত্মহত্যার পুনর্জন্ম নিবারিত হয় না; তপশ্চর্য্যার দারা এবং कीवत्नत्र जुका विमर्कत्नत्र बात्राहे भूनर्जन নিবারিত হইতে পারে। অনাসক্তি বৈরাগাই মুক্তির প্রকৃত পদ্বা। যে ব্যক্তি সম্পূর্ণরূপে বাদনাশৃভ তাহারই বিনষ্ট হয় এবং সেই সঙ্গে তাহার হংথনাশও হইরা থাকে; সে পূর্ণভার মধ্যে বিলীন रहेब्रा निर्काण खाश रुव।…

এইরপে স্বামী শীলানন্দ, বৌদ্ধাঠের তাগতরুতলে বসিয়া আমাকে উপদেশ দিলেন। আমি ভক্তিসহকারে তাঁহার কথা ভানিলাম। আমার মৌন অহুমোদনে, সরলজ্বর বৌদ্ধসর্যাসী পরিতৃষ্ট হইয়াছেন বলিয়া মনে হইল। তথন তাঁহার একটা মহৎ সহরের কথা আমার নিকট তিনি

প্রকাশ করিলেন। কি ছঃখের বিষয়, এরূপ

উচ্চ মতবাদ অধিকাংশ যুরোপীয়ের নিকট

এখনও অজ্ঞাত। যুরোপকে বৌদ্ধমতে দীক্ষিত

কুরা আবশুক ! শীলানন্দ একটি বিস্থালয়

ন্ত্রীপন করিতে চাহেন—সেধানে বৌদ্ধধর্ম এবং ইংরাজি, ফরাসী ও জর্মানভাষা ছাত্র-দিগকে শিকা দেওরা হইবে; তাহা হইলে তিনি পাশ্চাত্য বিষয়ের ক্স. তাঁহার পীত-বসনপরিহিত প্রচারকদিগকে যুরোপে পাঠাইতে পারিবেন। আমার নৃতন বন্ধুটি আমাকে জ্বিজ্ঞাসা করিলেন, এই প্রচেষ্টা সন্বন্ধে আমার কি অভিপ্রার। ভদ্ৰতা ও অকপটতা-এই তুই দিকই রক্ষা করিয়া-আমি তাঁকে বলিলাম, "আপনার এই সম্বন্ধ, যুরোপে নিশ্চয়ই আগ্রহের সহিত গৃহীত হইবে; কিছ একথাও বলি, বৌছধর্ম্মে দীক্ষিত হইতে যুরোপ বোধহয় একটু ইতস্তত कतिरत। यनि युरताश कथन निक धर्म পরিত্যাগ করে,—সে অন্ত ধর্ম গ্রহণ করিবে ব্লিয়া নছে...। আমার মনে হইল, এই সংশয়-वारमंत्र कथा अनिया निःश्म-नद्यानी अकहे অসম্ভষ্ট হইলেন। ইহা সত্ত্বেও তিনি কালেজ স্থাপনের জন্ম একটা চাদার খাতা আমার নিকট অর্পণ করিলেন। পাশ্চাত্যথণ্ডের অितशामी मिरगंत मरशा वोष्क्षमा श्राहित कना কিছু টাকা আমি স্বেচ্ছাক্রমে দান করিলাম· ।। ভাই শীলানন্দ স্বামী! ভোমার সঙ্করের কথা শুনিয়া আমার একটু আমোদ বোধ ^{रहेटलट्}ह! जूनि जूनिकाः, याँहेटल्ह, यूद्राटन আমরা সবাই উ**ত্তরোত্তর বেশী মা**ত্রায় প্রতাক্ষবাদী (positivist) হইয়া পড়িয়াছি। ^{এখন} আর আমরা সেই স্কল সমস্থার কথা

আলোচনা করিতে চাহি না—যাহা বিজ্ঞানের অতীত, যাহা অহংজ্ঞানের অতীত, যাহা প্রকৃতির শৃঙ্খলাবদ্ধ পর্যাবেক্ষণের অতীত, যাহা অন্ত দৃষ্টির অতীত।

গ্রীষ্টধর্মের শ্রষ্টাসম্বন্ধীর মতের স্থার, অনস্ত ভবিষ্যং-জীবন সম্বন্ধীয় মতের স্থায়—বৌদ্ধ-ধর্ম্মের এই জনাম্ভরবাদ ও যোনিভ্রমণবাদও অভিভৌতিক, অযৌক্তিক, 9 তাহা হইলেও, শাক্যমূনির উচ্চ নীতিবাদ যুরোপের নিকট প্রকাশ করিলে সেখানে খুব কৌতৃহল উদ্ৰেক্ করিবে সন্দেহ নাই। যেমন প্রীষ্টধর্ম্মের মতগুলিতে বিশ্বাসস্থাপন করিয়াও খ্রীষ্টকে ভালবাসা যাইতে পারে. সেইরূপ বৌদ্ধমত বিশ্বাস না করিয়াও বুদ্ধকে ভালবাসা ষাইতে পারে।

মামুষের তাত্ত্বিক জীবনকে বিজ্ঞান উত্তরোক্তর অধিকার করিয়া লইভেছে: সেই তাত্ত্বিক জীবনের মধ্যে ধর্ম বদিও না স্থান পায়, মামুষের ভাব-জীবনের মধ্যে ধর্ম এখনও অনেককাল পর্যাস্ত-হয়ত চিরকাল-অবস্থান করিবে। ধর্ম এখন আর জ্ঞানের রূপ ধারণ করিতে পারিবে না, এখন ধর্ম, প্রীতিরূপেই প্রকাশ পাইবে; কতকগুলি লোক, বোধ হয়, কোন মহর্ষি কিংবা মহা-মুনির প্রতিই প্রীতি স্থাপন করিবে। জাতির মধ্যেই কতকগুলি উচ্চাধিকারসম্পন্ন মহাপুরুষ আছেন,— বাঁহারা স্বধু প্রেমের বলে, জগতের গুঢ়রহস্ত হাদয়ক্ষম করিতে পারিয়া-ছেন। **তাঁহারা** আবিষ্ণার করি**য়া**ছেন.— সমগ্র বিশ্বপ্রকৃতির সহিত মানব-প্রকৃতির যে স্বাভাবিক সম্বন্ধ, অসীম বিশ্বব্রুমাণ্ডের সহিত मनीय वास्तित य श्राजाविक मश्य-जाहारे

ধর্মনীতি। এই নৈতিক প্রচেষ্টার ফলে, তাঁহারা আমাদের আধাদ্মিক ভয় হইতে, সংশর হইতে, নৈরাশু হইতে, বাস্তবিকই আমাদিগকে উদ্ধার করিয়াছেন; তাই তাঁহাদের নামে আমরা এক একটি ধর্মকে উৎসর্গ করিয়া থাকি—এবং বাস্তবিকই তাঁহারা সে সম্মানের বোগ্য। কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে শুধু একজনের নামেই কেন আমরা ধর্মবিশেষকে উৎসর্গ করি? মানবধর্মনীতির বাঁহারা উচ্চ আদর্শ—সেই সমস্ত মহাপুরুষের নামেই কেন আমরা ধর্মকে উৎসর্গ করি না ? পরস্পর সকল ধর্মের মধ্যেই বিরোধ ও অনৈক্য; প্রত্যেক ধর্মই দাবী করে বে, সেই ধর্মই সমগ্র সত্তোর একমাত্র প্রকাশক; পক্ষান্তরে এই সমস্ত

ধর্ম প্রেমের সমষ্টিরূপে, সদ্ভাবের সমষ্টিরূপে,
মানব-চৈতত্তে মিশিরা যাইতে পারে। কতকগুলি অতিপ্রাচাদেশীর লোক, যাহারা সকল
ধর্মকেই সমদৃষ্টিতে দেখে,—এমন একদিন্দ,
আসিবে যথন তাহাদের এই সমসৃষ্টি ও
উদারতা, যুরোপীয়দের ও হিন্দুদের রুদ্ধারিতা
ও সংকীর্ণতা অপেকা বিশ্বমানবের অধিকতর
হদরগ্রাহী হইবে। তথন স্ক্রেদর্শী দার্শনিক,
দর্শনের ইতিহাস হইতে, সবিশেষ-ঈশ্বরের
বিশ্বাসকে বাদ দিয়া, দেবোপম মহাপুরুষদিগের
জীবনীর সদ্ব্যাখ্যা করিবেন এবং সেই সমস্ত
জীবনী হইতে ধর্মজীবনের একটা বিপুল
সারসংগ্রহ প্রস্তুত করিয়া শুবিশ্ব মানবমগুলীর
নিকট অর্পণ করিবেন।

শ্রীজ্যোতিরিজ্ঞনাথ ঠাকুর।

निद्वन्न।

कननि ! অথিল মাঝে বিফল-কাজে ছড়িয়ে পড়া আমারে এনেছি আৰু কুড়ায়ে.— नम्ब-कटन চরণ ভবে: সঁপিব বলে তাহারে অমর-করা ধূলায়-এ! সকল বুকে ভরেছে হথে সর্বেছি বহু যাতনা তোমারে ভধু ভূলিয়া ;---ডেকেছ তুমি জনম ভূমি, করেছ কত সাধনা. দেখিনি আঁখি তুলিয়া!

রোষ' নি তবু আমারে কভু দোষ' নি চিব-অধ্যে कक्रगामत्री जननि ! জেলেছ আলো বেসেছ ভালো. আমার সারা জনমে যেথানে গেছি যথনি। আজিকে তোমা চিনেছি ওমা. যাব না আর ছাডিয়া, উরসে ওই সুটাব! পরাণ থানি **ठद्राण मानि,** ভাবনা রাশি নাশিয়া অধরে হাসি ফুটাব ! শ্রীজীবেক্সকুমার দত।

দিদিমার বিরক্তি।

(জ্যৈষ্ঠ সংখ্যার অমুবৃদ্ধি।)

নে লিদিমা আমার শাওড়ীঠাকুরাণীর মাতাও নহেন শাওড়ীও নহেন শাওড়ীঠাকুরাণীর মাসী ছিলেন। দিদিমা বাল-বিধবা চিরদিন পিত্রালয়ে বাস করিতেন। তাঁহার অল কিছু জমী জমা ছিল—তাহার আয় হইতেই তাঁহার ধর্ম-কর্ম, ব্রত-নিয়ম প্রভৃতির খরচ পত্র চলিত—হাতথরচের জন্ম কথনো দিদিমাকে কাহারও কাছে হাত পাতিতে হইত না। এমন তীর্থ ছিল না যাহা দিদিমা উদ্যাপন করেন নাই। আজিও সকলে একবাক্যে বলেন যে দিদিমার পুনর্জ্জন্ম কথনই হইবে না।

আমি যথন তাঁহাকে দেখিলাম, তথন তিনি ইহলোকের সকল কার্য্য সমাধা করিয়া পরলোকের দিকে চাহিয়া আছেন-কিন্তু তা ব্লিয়া তিনি নিক্সা হইয়া বসিয়া থাকিতেন না। আমাদের শাশুড়ীঠাকুরাণী অনেকগুলি অপোগও শিশুসন্তান লইয়া অলবয়দে বিধবা रहेब्रा काब्रदक्रम यथन मञ्जानम्बद मायुव ক্রিয়া তুলিয়াছেন-ক্সা ও পুত্রদের বিবাহ দিয়াছেন-মনে করিতেছেন এইবার আমি একটু নিশ্চিত হইয়া বসিব—এমন সময় অক্সাৎ তাঁহার ডাক পড়িল তিনি চলিয়া , ^{গেলেন}। পুত্রেরা একমাত্র মাতাকেই পিতা মাতা উভয়ঁই জানিতেন—বধ্রা নিতান্ত বালিকা-অকন্মাৎ এই তুর্ঘটনায় নাবিকহীন ত্যীর মত সকলে অকুল সমুদ্রে ভাসিতেছেন— ভনিয়া কৰুণাময়ী দিদিমা আসিয়া তাঁহাদিগকে মেহবকে তুলিয়া লইলেন। আমাদের শাশুড়ী

ছিলেন না কিন্তু জাঠশান্তড়ী খুড়শান্তরী ছিলেন এবং যথেষ্ট যত্ত আদর করিতেন-किंख ज्रु अञ्जादक इरेलन मिम्मा:--তাঁহাকে নহিলে চলিত না—দিদিমাও আন-ন্দের সহিত আত্মদান করিলেন। পিতালয়ে তিনিই গৃহিণী ছিলেন—এখানেও তিনি গৃহিণী। ঘরে গাড়ী ছিল, দিদিমা কোন দিন গাড়ী করিয়া গঙ্গাম্বানে যাইতেন না। অমাবস্তা পূর্ণিমা একাদশী প্রভৃতি বিশেষ পর্বের অন্ত গৃহিণীরা গঙ্গামানে বা কালীঘাটে গাড়ীতে ঘাইতেন—কিন্ত দিদিমার সেই নিরমিত ব্যবস্থা। প্রতি অমা-বস্তা ও পূর্ণিমায় কালীদর্শন করিতেনই-প্রভাবে উঠিয়া পদব্রঞ্জে কালীবাটে যাইয়া व्यापिशकांत्र ज्ञान कतिया कालीपर्यन, मक्ता-বন্দনা সমাপন করিয়া বেলা ১১টা য় গাড়ীভে বলিভেন "বৰ্ষা বা ফিবিয়া আসিতেন। শীতের দিনে আমি অনায়াদে পারে হেঁটে কালীঘাট থেকে আসতে পারি—কিন্ত অনেক বেলা হয়ে যাবে—অনেক থাবার করা আছে — ওরা কথন করবে, আহা পেরে উঠ্বে না—তাই তাড়াতাড়ি করে আস্ছি।" অমা-বস্তা পূর্ণিমায় বিধবারা কেহই ত ভাত থান ना, कार्यरे धेमिन विखन करी मूहि रेजमानि হইত।

গৃহিণীরা কালীঘাটে গলামানে সর্বাদা বাইতেন—আর কাঠের পুতুল, পুঁথির মালা পিতলের থেলেনা, কাঠের থেলেনা—সংসারের কাষের উপযোগী হাতা বেড়ি খুস্তি বেলন

নোড়া বোক্নো হাঁড়ী চাটু কড়াই কত কি কিনিয়া আনিতেন—দেখিয়া দেখিয়া আমাদের কালীঘাট ও গঙ্গান্ধানে যাওয়ার জন্ম প্রেবল ইচ্ছা হইত-কিন্ত কিছুতেই বাবুদের মত হইত না। ৰাবুরা তখন সবে এম এ বি এ পাশ করিয়াছেন। আমাদের বাহির হইবার ত্কুম ছিল না। আবার সাবেক নিয়মে তখন কাশীপুর বরানগর যাইতেও পারিতে অথবা নৌকায় যাইতে হইত—গাড়ী চড়িতে পাইতাম না। ভাড়াটে গাড়ী ত নয়ই— নিতান্ত কোনদিন পান্ধি-বিভ্রাট ঘটলে ঘরের গাড়ীতে চড়িয়া যাওয়া চলিত। এই-রূপ পান্ধি-বিভাট একদিন আমার অদৃষ্টে ঘটার দিদিমা আমার উপর বিরক্ত হইরা-ছিলেন।

আমার পিতামহাশর বিদেশে কায় করি-তেন—মাতাও পিতার নিকট বিদেশে,স্থতরাং আমাকে পিত্রালয়ে পাঠাইবার আবশুক ছिल ना। ब्लार्टा थुड़ा यमि लहेश यहित्वन-এক বেলার জন্ত পাঠান হইত। একদিন গলামান হইতে ফিরিয়া আসিয়া দিদিমা বলিলেন—"নাতবৌ ভোমাকে এতদিন বলি নাই দিদি,—আহা ছেলে মানুষ ভাবনা চিন্তা করবে—তোমার জাঠতুত ভাইটির. বড অস্থ—আহা বাঁচবার কিছু ছিল না—অনেক চিকিৎসায় হরির রূপায় প্রাণ পেয়েছে তুমি একদিন যাও তাকে দেখে এগ। আমি প্রতিদিম গঙ্গামানের ফেরত তাকে দেখে আসি—এখন প্রাণের আশা হয়েছে তাই ভোমায় বল্ছি। তাঁদের এখন ভোমায় নিয়ে যাবার সময় নয়-তুমি আপনি যাও।

আমি তথন নিতান্ত বালিকা এগার

বংসর মাত্র বয়স--দিদিমা আমাকে তাই জঞ বিশেষ ষত্র করিতেন। আমার বেশ মনে পড়ে আমাদের ননদদিগকে কেহ আনিতে না গেলেও তাঁহারা মধ্যে মধ্যে নিজেরাই আমাদের এখালে অর্থাৎ পিত্রালয়ে আসিতেন। আমি ভাবিতাম আমি কবে অমনি ইচ্ছা করিলেই পিত্রালয়ে যাইতে পাইব। তাই আজ দিদিমা ষেই বলিলেন "তুমি আপনি যাও"—আমি ভাবিদাম আমিও তবে একজন। ২।৪ দিন পরে দিদিমা একদিন বলিলেন বে "আজ তুমি ভাত থেয়ে ষাও-অন্থথের বাড়ী না খেরে গিয়ে বাস্ত কোরে কায নাই।" আর কোপায় আনন্দ রাধি—অহুথ দেখতে যাওয়ার ত ভারি ভয় ভাবনা—অকস্মাৎ যে গিয়ে পড়ে সকলকে বিশ্বিত করে দিব এই আনন্দ। সম-বয়স্বা এক ভাশুরঝি ও একটা ছোট ভাগি-নেয়া ধরিল আমরাও বাইব। সেত আরও ভাল। নিজেরাই সব পরামর্শ আটিলাম,নিজেরাই ঠিকঠাক হইলাম—দিদিমার অনুমতি নেওয়াও तिहै, किहूरे ना। विविधा विविधा विश्वहितन পান্ধি ডাকাইরা লইরো। পিত্রালর হইতে नहें जांत्रिल वर्षां शूर्विमिन विमि किश আসিয়া বলিয়া যাইত "কাল দিন ভাল আছে অমুককে পাঠাইয়া দিতে হবে"—তবে অনেক সময় দিদিমা বলিতেন "ভোমাদের আর কাকেও আসতে হবে না—আমি এথান থেকেই পাঠাইয়া দিব।" আর ইহাও বলিয়া ু দিতেন যে "এত দিন রাখিয়ো[ঁ]" তাই ^{থে} वश् यथन या**हेड, श्रास्ट इहेग्रा शांकि आ**नाहेड, যাবার সময় সকলকে প্রণামাদি করিয়া বিদায় লইয়া যাইত। আৰু আমি যথন প্ৰস্তুত হইয়া^ৰ পাৰি আনাইতে পাঠাইলাম—তথ্ন গৃহি^{নীরা}

সকলে আহারে বসিয়াছেন—আমি আনন্দে এমনি বিহবণ যে তাঁহাদের আহার শেষ इख्यांत्र विगय मटर ना :-- महिटवरे वा कि **&ব্রিয়া—২টা বাজে—কথন** যাইব ;—সন্ধ্যায় ফিরিতে হবে—কভটুকু সময় আর আছে ? কাজেই খুব তাড়া দিয়া ঝিকে পাঠাইয়াছি। এখন ঝি মহাশয়া বাহিরে চাকরদের কিছু না বলিয়া নিজেই গজেন্দ্রগমনে গিয়া এক ভাড়াটে গাড়ী ডাকিয়া আনিয়াছেন। আনরা যাত্রীদল প্রস্ত্র-একজন পিত্রালয়ের ঝি-একজন খণ্ডরালয়ের: -তারপর আমি ও ভাগিনেয়ী ও ভাশুরঝি চলিয়াছি:--রারাঘরের দরজায় গিয়া "দিদিমা আমরা যাচ্ছি" বলিতেই দিদিমা উলুথ হইয়া বলিলেন "পান্ধি এসেছে ?" আমি"পান্ধি নয় গাড়ী" বলিতে বলিতে অন্তঃপুরের দার ছাড়াইয়াছি:--দিদিমা আর কি করিবেন"ও মা ও ঝি সাবধানে নে যাস আর রাত করিদনে; বেলাবেলি এস মা"-এইরূপ বলিতে লাগিলেন—আমরা শুনিতে শুনিতে গেলাম। গাডীতে উঠিয়া বলিলাম "কই চাকর নিলিনে"—ঝিয়েরা বলিল আমরা হন্তন আছি আর চাকর কেন। আমি বলিলাম "গাড়ী আন্লি কেন ?" ঝি বলিল "আড়ায় পাকি हिन ना, प्रिति इस्त यास्त्र छाई गाफ़ी व्यान-লুম-দেখ দেখি কেমন মজা-বেশ স্বাই গাড়ীতে যাচ্ছি-পান্ধি হলে তোমরা ত স্থথে ^{বেতে} আমাদের ভাত খেয়ে ছুট্তে ছুট্তে প্রাণ বেত।" তারপর বেশ স্থাবেই করেক ঘণ্টা কাটান গেল! কোথায় বা বেলাবেলি আসা—যার নাম রাত নটা। সকলেই প্রফুল-মনে—আবার এক ভাড়া গাড়ী চড়িয়া আসিয়া হাজীর। ঝম্ ঝম্ মলের শব্দে, হিহি রবে—বাড়ী জাগাইয়া আমরা আদিলাম— আমি বধু,—দিদিমাকে প্রণাম করিতে গেলাম। मिनिमा जथन नाजिएमत्र পরিবেষণ করিতে-ছেন-বাত্রে দোতালার একটা ঘরে থাওয়া **इहेज—घत्र इहेटल मिनिया वाहिरत आमिरन** প্রণাম করিলাম—তথন দিদিমাকে স্পর্শ করিব না--গাড়ীর কাপড়-পদ্ধূলি লইলাম ना। निनिभा किছू वनित्नन ना तिथिश विश्विष्ठ रहेश मूर्यत्र निरक ठाहिया (निथ निनिमात्र मूथ অসম্ভব গন্তীর। ঘর হইতে কর্ত্তা বলিলেন "দিদিমা কার ছকুমে গাড়ী চড়ে যাওয়া হয়েছিল।" কোথায় গেল সে আনন্দ্রোত— বুকটা ধড়াস্ করিয়া উঠিল—ওদিকে অন্ত গৃহিণীরা ঝিয়েদের উপর ঝকার দিতেছেন— গাড়ী চড়ে নিমন্ত্রণ থেতে গেছলি—কায কর্ম্ম সব পড়ে আছে—রঙ্গ করে সব এলেন।"

कर्डी यारे विनातन "मिमिमा कांत्र ह्कूरम যাওয়া হয়েছিল," অমনি দিদিমা তটস্থ হইয়া বলিলেন "থাক্ থাক্ ছেলে মাতুষ বুঝতে পারেনি ও কথা পরে হবে"—দিদিমার সেই বিরক্তির ভাব দূরে গেল, মুখছেবি করুণায় ভরিয়া উঠিল।" কর্ত্তা বলিতে লাগিলেন "কনে বৌ না বলা না কওয়া গাড়ী ডাকিয়ে বেড়াতে যায় এ কি রকম !" দিদিমা চুপ করিয়া রহিলেন—তথন কর্তাতে ও অভ গৃহিণীগণে ঝিয়ের আত্মশাদ্ধ করিতে লাগিলেন। ঝি বলিল-- "আড়াতে পান্ধি ছিল না—তাই গাড়ী এনেছি।" বলিলেন "তবে বাত্রে কেন গাড়ীতে আসা হল ?" আর উত্তর নাই। "দরওয়ান বা চাকর নেওয়া হয়নি কেন ?'' উত্তর নাই— "এত রাত কেন" উত্তর নাই। "অস্থথের

বাড়ী তা ত বৌমা জানেন তিনি মেয়েদের
কেন নিয়ে গেলেন, কার ছকুমে নিয়ে গেলেন
—কাকে বলে নিয়ে গিয়েছেন। উনি
যাচ্ছেন ওঁর বাপের বাড়ী এ বাড়ীয় মেয়েরা
কেন গেল।" আমি কাঁদিতে কাঁদিতে
বিছানায় গিয়া শুইলাম—খাওয়ার দরকার
ছিল না; পিত্রালয় হইতে খাইয়া আসিয়াছিলাম
—নচেৎ সে রাত্রে আর খাওয়া হইত না।
এই একটি দিন মাত্র এক মুহুর্জের জন্ত
দিদিমার মুখে আমার প্রতি বিরক্তির ভাব
প্রকাশিত হইতে দেখিয়া ছিলাম।

দিদিমা সদাপ্রস্ম, বর্ণ গৌর, পরিপাটী গঠন, দীর্ঘাঙ্গী, মাথার চুলছাঁটা। আঁধা কাঁচা আধা পাকা ছোট ছোট কোঁকড়া কোঁকড়া চুলে দিদিমাকে অনেকটা পুরুষ মামুষের মত দেথাইত। অত্যন্ত বিরক্ত হইলে দিদিমাটেপা ঠোঁট আরও দৃঢ়ভাবে টিপিয়া থাকিতেন—পাছে কোন কঠিন কথা বাহির হইয়াপডে তাই যেন অত্যন্ত সাবধান হইতেন।

একদিন রাঁধুনির অহ্নথ। বাড়ীতে পরিবার সে সময় বেশি ছিল না—আমিষ রায়া দিদিমাকেই রাঁধিতে হইবে। দিদিমা সকল কার্য্য করিতেন—কি আমিষ রায়া রাঁধিতেন না—রাঁধুনির অহ্নথ হইলে বধ্দের মধ্যে কেই একজন মাছের ঝোলভাত রাঁধিত। সেদিন আমি ছাড়া আর কোন বধ্ ঘরে ছিল না—আমি ছেলে মাহ্ন্য দিদিমাই রাঁধিবনে। দিদিমা গঙ্গালানে গিয়াছেন—ঠিক ফিরিয়া আসার সমত ভয়ানক বৃষ্টি আরম্ভ হওয়াতে তাঁহার আসিতে বিলম্ব হইতে লাগিল। রায়া ঘরে উত্থন জলিয়া যাইতেছে। দাসীরা চাল ধুইয়া বাঁটনা বাটয়া মাছ কুটয়া

থরে থরে সমস্ত শুছাইরা ঘর বার করিতেছে কতক্ষণে দিদিমা আসেন—বড় বাবুর আবার সেদিন ভাডাভাডি বাহির হইতে হবে।

আমার পান সাজা হইরা গেল-তথাপি, मिनिया **आंत्रिलन ना मिश्रा व्**र्ड़ा वि আসিয়া বলিল "বৌমা-রালা ঘরে চল আমি দেখিয়ে দেব এখন, তুমি ভাতের হাঁড়ীটা বসিয়ে ভাতটা চড়িয়ে দাও, ভাত হতে হতে মাঠাকরুণ এসে পডবেন।" আমি ভাতের হাঁড়ী নামাইতে গিয়া প্রথমেই একখানা সরা ভাঙ্গিয়া ফেলিলাম্—ঝি বলিল—"তা যাক গে, :তুমি হাঁড়ীটা বসিয়ে দাও, বড় বাবুর আজ বড় তাড়া।" ঝি অক্স কাষে গেল, আমি ভীতের হাড়ী চড়াইয়া হাড়ী পূরিয়া জল দিয়া সরা চাপা দিয়া উপরে চলিয়া একটা বিড়ালের শাদা ধ্বধ্বে মোটা সোটা একটা বাচ্ছা হইয়াছিল-থেলিতে সেটাকে লইয়া লাগিলাম। অনেকক্ষণ পরে চৈতন্ত হইল যে হাঁড়ীতে ত চাল দেওয়া হয় নাই অতএব এইবার याक । পুরুষেরা অন্মর মহলে কেহ নাই, গৃহিণীরা দেশে গিয়াছেন একা দিদিমা আছেন—তাঁর অত আঁটা আটি ছিল না--আমি ঝমঝম হুড় হুড় করিতে করিতে বেরালছানা নাচাইতে নাচাইতে বলিতে বলিতে চলিয়াছি—"চল' ভোমাকে ভাতে দিই গে যাই, চল তোমাকে ভাতে निष्टे ता याहे।" मिं फि इहेरा मानात्न পড়িতেই দেখি ভাগুরমহাশয় ও দিদিমা। অমনি লজ্জাশীলা বধু একহাত ঘোমটা টানিয়া এক দৌড়ে ছুটিয়া রান্না ঘরে প্রবেশ করিলাম। দিদিমা হাসিরা বলিলেন "মরি

মরি কি লজ্জা দেখ। ভাতর মহাশর বলি-লেন "দিদিমা আৰু নাকি বৌমা রাঁধছেন" **क्रिया विवासन, "हाँ थे या विदासहाना** ভাতে দিতে আস্ছে। ভাতর হো হো क्तिश्रा शामिशा विनित्न "वृत्षा वि वत्न-আমার তাড়াতাড়ি তাই সে বৌমাকে দিয়ে ভাত চড়িয়েছে। আমি ভাবিলাম—ছেলেমাত্র্য कि करतरह रमर्थ यात्र।" मिनिया विनरनम —"তা হলেই আজ ভাত থেয়েছিলে আর कि, এक दाँड़ी बन ठिड़रत्र मत्रा ठाका निरम উপরে বদে আছে। আমি এদে গুনি ভাত চড়ান হয়েছে, তা বলি বেশ হয়েছে আর আর সব গুছিয়ে গাছিয়ে আদি-নাত বৌকে থাবার দিয়ে আসি—তা ঝি বলে মা ভাত হয় ত হয়ে এসেছে দেখুন দেখি—ওমা সরা খুলে দেখি টগ বগ করে জল ফুটছে যেখান-কার চাল সেইথানে মজুত আছে। তখন হাঁড়ীর জল কতকটা ফেলে চাল দিই—দিয়ে এই উপরে যাচিছ। আহা কতথানি বেলা হয়েছে খাবার পান্ধনি—কত পেরেছে। তা যাও দাদা স্থান করে এস' বেরাল ভাতে ভাত কখনো খাওনি—আজ ভাদ্র বৌ থাওয়াবে।" আমি ত রালাঘর থেকে সব শুনিতেছি—ভাশুর মহাশন্ন বাহিরে গেলে দিদিমাকে বলিলাম "জল না গ্রম হলে কি করে চাল দিব ভাই জ্বল গরম করতে ্দিয়ে গিয়েছিলাম। দিদিমা মুচকি হাসিয়া বলিলেন "এক হাঁড়ী জল দিয়েছ চাল ধরত কোথায়—আজ যে পুড়ে খুন হও নাই এই তারপর আমাকে থাবার দিয়া অবদর মত আন্তে আন্তে বলিলেন "শাশুর ভাণ্ডরের কারো সাম্নে পড়লে ঘোমটা দিয়ে

ঘাড়টী হেঁট করে আন্তে আন্তে চলে प्रिक्त स्थान प्रति । व्यक्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स করে ছুটে বেতে নেই। তোমার খণ্ডর বাড়ীর বড় আঁটাআঁটি—তোমার দাদাখন্তর গোষ্ঠী-পতি ছিলেন—খণ্ডর খাভড়ী ত চিন্লে না দিদি কত বড় ঘরের বৌ তুমি কিছুই জান না! সেদিন ধে বকুনি খেলে তা ঐ ভাড়াটে গাড়ী চড়েছিলে বলে। এ বাড়ীর বৌরা কখনো গাড়ী চড়ে নাই ভোমার শভরের এমনি রাসভারী ছিল-আর এমন নিয়ম ছিল যে ৫ বছরের মেয়েটি পর্যাম্ভ বাহির বাড়ীতে যেতে পেত না। -- এখন এই দেখ : •।>> বছরের মেয়েরাও কুলে যাচ্ছে। তবু তোমরা বৌ মাতুষ তোমা-**८** मत मावधान करत मिहे। आत तथना धुना যা করবে ঘরে কোরো—ছাতে উঠো না জানলা খুলে রেখো না-পাড়াপ্রতিবাসী না দেখ্তে পায়।" দিদিমা ভর্পনা করিতেন না। মিষ্ট ভাষায় হাসি मूर्थ अमन कतिया विशाखन य कहे इरेख ना. কিন্তু শিকা হইত। দিদিমার ছই চারি দিনের কথা তাই আমার বিশেষ করিয়া মনে আছে। আর একদিন দেশ হইতে (धाना जानिवारक यथन, ज्थन ट्रॅंटनन जेठिवारक, রাঁধুনি বেড়াইতে বাহির হইয়াছে—দিদিমা मत्व এक টু चुमारेब्राष्ट्रन-नृत्का वि विनन "বৌমা হাঁড়িতে ভাত তরকারি সব আছে এস ধোপাকে চারটি বেড়ে দিবে"—কায করিতে বলিলে আমার মহা উৎসাহ—অমনি চলিলাম--গিয়াই বেমন সরাথানা ধরিয়া টানা — অমনি থানিকটা ঝোল গায়ে ফেলা। বেশ মনে আছে সেদিন একথানি নৃতন ধোয়া বাল ভামরাপেড়ে শাদা থড়কে ডুরে পরিয়া-

ছিলাম ভাই গায়ে কাপড়ে ঝোলের প্রবাহ বহিয়া যাওয়ায় বড়ই কুল হইলাম—স্বাধ ঘণ্টা মাত্র পরিয়াই কাপড়খানা ধোপাকে भूरेट मिट रहेट कम इ: थ ! ত ভাত দিলাম-এমন সময় দিদিমা আসিয়া আমার সৃত্তি দেখিয়া অবাক্। মুচ্কি হাসিয়া বুড়ো ঝিকে বলিলেন—"আমায় ডাক্তে হয় মা-ওকি কিছু পারে, দেখ দেখি এই গা ধুরে এসেছে আবার গা ধুতে চল্লো—অস্থ না হলে হয়।" বুড়ো ঝি বলিল "তা মা तोबि अनव ना अन्तरल कि इस।" मिमिशा विनातन "वन्नम इन्टान मव निथ्रव, नाजरवी আমার আদরের মেয়ে কিনা তাই একটু **ठक्कन** — जन गड़ांटा शिता घर मन जन होता, বেগুন কুটতে হাতে ফালা দের,—ও সব সেরে যাবে—বন্ধদ হলেই ঘরকরা ঘাড়ে পড়লেই সব ৩ধরে যাবে। নাতবৌএর সকল কাষে মন আছে, সময়ে সব শিথুবে।" আমার মনে আছে এই দিন হইতে আমি শিথিলাম যে স্বামি সকল কার্য্যে অপারক কেন.—কেন আমাকে কোন কাব দিয়া দিদিমা নিশ্চিত্ত হইতে পারেন না-না আমি ভারী চঞ্চল :--আমি সাবধান হইতে শিক্ষালাভ করিলাম। আমি যেরপ অভিমানী ছিলাম তাহাতে দিদিমা যদি এই ভাবে আমাকে শিক্ষা না দিয়া তিরস্কার করিতেন; তা শ্ইলে উল্টাফল হইত। আমি বোধ হয় তিরম্বত হইয়া প্রতিবাদের পর প্রতিবাদ করিতাম — নিজের দোষ দেখিয়া লজ্জিত হইতাম ন'।

তথন দিবসে সামীর সহিত দেখা সাক্ষাৎ হওরা বড় লজ্জার বিষর ছিল। দিদিমা কিন্ত জামাদের এই নিলক্জতার বিশেষ প্রশ্রম

मिटा । **कू**ंगित मिटन "नांडित्रा" चटत थांकिता. নানা অছিলায় নাতবৌদের ঘরে পাঠাইতেন। "वां खन बिरम धर'-- भान बिरम धर' ঘর গুছিয়ে এদ'।" প্রথম প্রথম আমি এক হাত रचामठा मित्रा चरत "श्रादम ও প্রস্থান" করি-তাম—ক্রমে ক্রমে বেশ অভ্যাস হইয়া গৈল— পান জল দিতে গিয়া ঘণ্টা থানেক কাটিভ-ঘর গুছাইতে সারা ছপুর লাগিত। পরে জানিতে পারিয়াছিলাম অন্ত গৃহিণীরা এজন দিদিমাকে তিরস্তার করিতেন-আমার সহজ বালিকাভাব দেখে ত তাঁরা "অবাক" হইতেনই। কেননা তাঁহাদের নিকট উহাই "বেহায়াপনা"। দিদিমা বলিতেন "আহা ওৱা ছটীতে হাদে খেলে আমি দেখে বড় ভৃগু হই।" অনেক সমন্ন দিদিমা নি:শব্দে আসিয়া বরে প্রবেশ করিভেন ও মুচ্কি মুচকি হাসিতেন—আমি অমনি এক হাত ঘোষটা টানিয়া বাহির হইয়া যাইতাম। দিদিমা ও নাতিতে হাসিতেন ও বলিতেন "ওঃ! কি ৰজা !" অনেক সময় দরজা থোলা আছে— আমার মাথায় কাপড়ও নাই—স্বামী ঘরে আছেন-দিদিমা ছধের বাটী হাতে করিয়া দাঁড়াইয়া আছেন, তাঁহার দিকে আমার দৃষ্টি পড়িলেই ইঙ্গিতে ডাকিবেন:-স্বামী দিদিমাকে দেখিতেছেন ও হাসিতেছেন,—আমি वक् ठा कतिबारे वारेटिक, अक्बार पिपिमाव मिटक मुष्टि পড़िन-- नर्सनाम **এकि** ! मिनिमात मूर्य हामि, माथा नाष्ट्रिया डाकिस्तन । এक मिन -- विनाम मिनिया ७ वक्य कवल हत्व ना-আপনি কেন সাভা দিয়ে আসেন না।" দিদিমা বলিলেন"ভোমরা হাস' কথা কও আমু যে বড় দেখুতে ভালবাসি। আহা ছোট নাতি,

আমার বোনঝির কোলের ছেলে ;—মা-হারা হয়ে পর্যান্ত বাছা আমার হাসেনি, কথা ক্য়নি। ভোমার সঙ্গে হাসে কথা কয় দেখে প্রাণ ঠাতা হয়।" কিন্তু ক্রমে ক্রমে এমন হইল বৈ আমি বরে প্রবেশ করিলেই বাড়ীর কেহ না কেহ "আড়ি" পাতিতেন-এবং আমার ছেলেমানবী সরলতার আলোচনা করিতেন। • একদিন গন্তীর मृत्थ मिनिमा विमानन, "नाजरवी যথন घत यात्व मत्रका वक्ष करत मि७°—वित्रा আমার ঘরের সমস্ত জানালা দরজার ছিদ্রগুলি প্রাস্ত বন্ধ করিয়া দিলেন। এই দিন দিদিমার মুখ অসম্ভব গম্ভীর দেখিয়াছিলাম। বিরক্ত হইলে দিদিমার মুখের প্রসন্ন ভাব টুকু চলিয়া যাইত। তাহা ব্যতীত কথায় বা ব্যবহারে বিরক্তি প্র হাশ পাইত না। দিদিমা কখনো কাহারও ঘরে আড়ি পাতিতেন ন। নিঃশব্দে আমার ঘরে যে আসিতেন—কেবল এক নম্বরে দেখিতেন আমরা আনন্দে আছি কিনা। অন্ত কেহ আড়ি পাতিলে তাঁহার ভাল লাগিত না।

এখন আমি বেশ বুঝিতে পারি বে বদিও
দিদিমা সকলকেই সমভাবে দেখিতেন—তবুও
যে কারণেই হোক্ আমার প্রতি যেন ঈবৎ
পক্ষপাতী ছিলেন। আমি ছেলেমান্ত্র বলিরা
বোধ হর আমাকে বেশি আদর দিতেন।

আমি পিতা মাতার একমাত্র সস্তান্ ছিলাম—এজ্ঞ সাধারণ ভাবে প্রতিপালিত হট নাই। অনেক বয়স পর্যান্ত প্রচুর ছুধের বরাদ্দ ছিল। "খণ্ডর বাড়ী যাইয়া মেয়ে আমার ছধ পাবে না;"—মাতা ঠাকুয়াণী এই চিস্তার কাতর হইয়াছেন শুনিয়া দিদিমা वित्रा शांशिहरणनः; मारक वर्तारा, त्म छावनाः रयन ना करतन।

দিদিমা নিঃশব্দে নিয়মিত সময়ে ঠিক আমার মাতার মত হুধের বাটীটা আনিয়া আমার মুথে ধরিতেন। এবং সমস্ত নিঃশেষ করাইয়া তবে ছাড়িতেন। তিনি বুঝিয়া লইয়াছিলেন. তা না হইলে বিডালবাচ্ছা অর্দ্ধেক ভাগ পাইরে। জলপানী পয়সা আমার হাতে প্রচুর থাকিত, कान कित्रिश्रामा है। किलारे ভাষীরা তাহাকে ডাকিত; বাড়ীর মহিলারা আমি পয়সা দিতাম। विरंगर প্রাচীনারা নিন্দা করিতেন—দিদিয়া বলিতেন "আমার নাত বৌ যে "দো-চোখোর" ব্রত করিয়াছে, তাই যা দেখে তাই কেনে;" বলিয়া একটু হাসিতেন। এই সকল সরল বালিকা স্থলভ ব্যবহারে দিদিমা কথনই বাধা प्रिट्डन ना ।

মিণ্যা কথা প্রবঞ্চনাকে দিদিমা অতিশয় घुगा कदिएक। मनामर्खना मकलद निक्छे বলিতেন" নাতবৌ আমার মিথ্যা কথা কাকে বলে তা জ্বানে না,—নাতবৌএর আমার পেটে একখানা মুখে একখানা নেই।" বলিয়াছি আমার পিড়া মাতা বিদেশে থাকি-তেন—এবং আমিই একমাত্র সম্ভান। স্থতরাং আমি একা একা মাত্রুষ হইয়াছিলাম--সংসারের কোন সংবাদ রাখিতাম না। নিজের পুতৃল, ঘুড়ি, ফুলপাতা লইয়া একা একা থেলা করিতাম। দশ বৎসর বয়সে বিবাহ হইল। এগার বংসর বয়সে খণ্ডরবাড়ী গিয়া বংসরেক কাল রহিলাম-এই নিতাম্ভ বালিকা অন্ত বালিকা বধুদের মত খণ্ডরবাড়ীর কঠোরভার

মধ্যে পড়িতে হইড,—ভবে আমার জীবন বোধ হয় আর এক ধারায় প্রবাহিত হইত। সভ্যপ্রিয়তা সরলভা চঞ্চলভা মুধরতা আমার স্বভাবে বিলক্ষণ প্রকাশ হইয়া পড়িত। मिमिया श्वरणंत्र श्रामंत्र अ त्मारमंत्र मः त्मारम ক্রিতেন। কিন্তু কখনই তিরস্বার করিতেন ना। जाहे निनिमात कथात विश्वय कन हरेज। ় এগার বংসরের বালিকার পক্ষে একাদিক্রমে বংসরেক কাল শশুরালয়ে কাল্যাপন করা কতথানি কষ্টকর তাহা বোধ হয় প্রত্যেক মহিলাই বুঝিতে পারিবেন। বিশেষতঃ আমাদের পশ্চিমাঞ্চলে বাস ছিল বলিয়া বেড়াইবার খুব স্থবিধা ছিল। প্রতিদিন সকাল বিকাল মাঠে ও বাগানে বেড়াইতাম: মিউজিয়াম চিডিয়াখানা সার্কাস দেখা সদা সর্বনাই ঘটিত। বিবাহের পর একেবারে দশ বৎসরের বালিকাকে সে সব বন্ধ। একেবারে অবগুঞ্জিতা বধু হইতে হইল। এই পরিবর্ত্তনে পিত্রালয়েই বিষম কট্ট হইত-তার পর স্থদীর্ঘ এক বৎসরকাল খণ্ডরালয়ে একদিন বিকাল বেলা অক্সাৎ তিন চারজন দাস দাসী সন্দেশ ফুলকপি বাঁধা-কপি কমলা লেবু বাদাম পেন্ত: আঙ্গুর প্রভৃতি नहेश आंत्रियां मःवीन निन,—आंभात्र मा आंत्रियां-ছেন,—কাল প্রাতে পান্ধি আসিবে আমি পিত্রা-লয়ে বাইব;—দে কি আনেন্দ ৷ ঝিয়েদের ধরিয়া विशास व .-- (कन ' এখন नित्र योवितन —কেন কালকের কঞ্চ বল্লি ;—মারের উপর धुव बांश कतिनांच,-कांनिया निनियादक বলিলাম আমাকে এখনি পাঠাইরা দিন! र्षिमिया वृदक छोनिया नहेवा मक्त नयदन विशासन, - आहा वादव वहेकि- आक अहवता-

দিন ভাল নয়—পুক্ৰেরা কেউ বাড়া নেই—

একবার তাদের বিল;—কাল ভোরেই পাঠিরে

দেব—কেঁলো না দিদি চুপ কর। একটা
রাত বইত—নয়—আর কি এই ত চলে—

আবার কডদিনে আসবে।" আমি শিত্ত

হইলে মুচকি হাসিয়া বলিলেন "আমার নাতিকে

যে কেলে যাবে—তোমার মন কেমন
করবে না ?" আমি হাসিতে লাগিলাম—
ভাবটি এই যে,—এ কথার কোনই মূল্য নাই।
পরদিন তাড়াতাড়ি শয়্যা ত্যাগ করিতে চাহি

—দিদিমার নাতি তাহাতে বাথা দিলেন।
বিদার গ্রহণের সময় দেখিলাম তাঁহার চোথে
কল পড়িতেছে—মনে একটা বিষাদের ছায়া
আসিয়া পড়িল।

পাৰি আসিয়াছে, আমি "জলখাবার" থাইয়া প্রস্তুত হইয়া আছি—দিদিমা গঙ্গাসান করিয়া ফিরিলেই পাঞ্চিতে উঠিব। নিয়মিত যে সময়ে তিনি আসেন তাহার অপেকা তাড়াতাড়ি আসিবেন বলিয়া গিয়াছেন---আমার আর বিশ্ব সহে না-বলিতে লাগি-লাম "দিদিমা ত এখনও আসিলেন না-আমি তবে বাই। একটা ভাগিনেয়া বাইয়া বাহির বাটতে প্রচার করিল—ছোট মামিমা এখনি চলে যেতে চাচ্ছে-ঝি-মা (বিদিমা) এখন কত বেলায় আসবেন কে জানে। শুনিয়া ভাতর মশার বাড়ীর মধ্যে আসিরা এক ধমক দিয়া विनान- " ছোট বৌমা कि वनहरून- मिनिया না এলে যাওয়া হবে না-এ বেলা পান্ধি ফিরিয়া वाक्।" नर्सनान, व्याप्ति काँ मित्रा किनिनांग। - त्रहे मुद्रार्ख मुर्खिमबी कक्ना चन्ना मिनियां বলিতে বলিতে আসিতেছেন, "আসি তাড়া তাড়ি করে আসছি, বেলা হরে গেলে

নাত -বৌ আমার বাস্ত হরে পড়বৈ—তোরা
ওকে আরু কি বলে বক্লি—আহা কভলিন
মাকে দেখেনি—বাস্ত হবে না—আহা
কাঁদুছে। দেখ দেখি আরু কি না কাঁদালি।"
ভাশুর মহাশয় অপ্রভিভ হইয়া বলিলেন "কেন
বৌ-মা কাঁদুছেন কেন—আমি বেশি ও কিছু
বলি নাই"—বলিতে বলিতে তিনি সরিয়া
পড়িলেন। দিদিমা আমাকে শাস্ত করিয়া
পারিতে তুলিয়া দিতে দিতে—বলিলেন "আমার
নাতি একলা রইল—শীঘ্র করে এস,—এই
তোমার ঘর বাড়ী। জন্ম এরোত্ত্রী হরে জন্ম জন্ম
এই বর কর।" দিদিমার চোখে জল পড়িতেছিল।

र्दिवियान भून खनत्व कार्य खन ठींछि হাসি লইয়া পিত্রালয়ে উপস্থিত হুইলার। মাকে প্রণাম করিয়া মুখ ভূলিতেই মা বলিলেন "ভুই কেঁদেছিদ্ ভোর বুঝি আসতে ইচ্ছা ছিল না।" অবক্লদ্ধ স্রোত যেমন বাঁধ ভাঙ্গিরা হুটিরা বাহির হর—আনি মারের কোলে বসিয়া তেমনি করিয়া খুব কাঁদিলাম, মা কেবল বলিতেছেন—"আরে একি কাঁদিস क्न ?" विगाउँ भारि ना दक्न काँ पिछि কাঁদিতেছি—অশ্রস্রোত কাহার জপ্ত কিছুতেই রোধ করিতে পারিতেছি না যে।

ডেনমার্কে ক্বকদের উচ্চশিক্ষা।

ইয়েরেপে জনশিকার স্বন্দোবস্ত পুর বেশীদিনের ব্যাপার নহে। এমন অনেক লোক আছে, বিশেষতঃ ক্লমকশ্রেণীর মধ্যে, বাহারা বাল্যকালে শিক্ষালাভে স্থযোগ পায় নাই। কিন্তু এখন ইয়েরোপের সর্ব্জেই এই শ্রেণীর পোকের শিক্ষার নানাপ্রকার চেষ্টা চলিতেছে ও অনেকস্থলে তাহা আশ্রুর্যা কলপ্রসব করিয়াছে। এবিষয়ে ডেনমার্কের কার্যাকলাপ অত্যন্ত শিক্ষাপ্রদ এবং বর্ত্তমান প্রবন্ধে আমরা তাহারই আলোচনা করিব। সম্প্রতি ইংলণ্ডে প্রকাশিত Cornhill Magazineএ এবিষয়ে একটা মনোজ্ঞ প্রবন্ধ বাহির হইয়াছে, তাহা ইইতে কিছু সঙ্গলন করিলাম।

শীতের এক প্রাতঃকালে টেষ্ট্রাপ (Testrup) উচ্চবিভালয়ের হলষরে প্রায় নকাই জ্বন লোক বসিয়াছিল। দিনটা বড়ই কন্কনে

ঠাণ্ডা; বাহিরে সমগ্র গ্রাম্যপ্রদেশটা সমুদ্রতীর পর্যান্ত বরফে ঢাকা। বাহুপ্রকৃতিতে
বেন কেমন একটা শৃষ্ঠতা ও প্রাণহীনতা
প্রকাশ পাইতেছিল। কিন্ত স্থলম্বরে চারিদিকে, তেমনই সজীবতা ও আনন্দতরক
প্রবাহিত। ব্যঞ্জ কথা, সাদর অভিবাদন,
উপহাস ও হাস্থালাপে ঘরটা মুখরিত। একটা
জীবন্ত ভ্রাতৃভাব ক্ষেত্রের মালিক ও চারীকে
এক করিয়াছিল।

বক্তার ষরটা বেশ বড়, বায় ও আলোক-পূর্ণ। দেয়ালে করেকথানা স্থলর ছবি ঝুলান রহিয়াছে। ছই একটা ছোট প্রস্তর-মৃর্ত্তি, সুলের ও চারা গাছের টবগুলি ষরটাকে একটা মার্জ্জিত ভাব প্রদান করিয়াছে। লোকগুলি দেখিতে ঠিক খাঁটা ক্লবকেরই মত। প্রার দ্ব অংশ ছাত্র ক্লবক বা ক্লেতের মজুর.

তাহাদের পরিচ্ছদও তদমুরূপ,—দেখিলে মনে হয়, তাহারা এইমাত্র যেন লাঙ্গল আসিয়াছে। ছয়জন ছাত্র ছোট ছাড়িয়া জমিদার আর ছয়জন শাকশজীর মাণী,— কয়েকজন ফেরিওয়ালা, কয়েকটী মংশুজীবি, তুইজন নাবিক, একটা গ্রাম্য পুরোহিতপুত্র, আর একজন গ্রাম্য পণ্ডিত, ইহারাই বিভালয়ের অধিকাংশ ছাত্রের বয়স ২০ হইতে ७०. करत्रकलन ४०, ७ এकलन ७० वर्शस्त्रत्र উদ্ধি বয়স্ক। অতুত দৃশ্য! এই দাড়ীগোঁফ-ওয়ালা, ক্লুক বদন, প্রকাশুকায় লোকগুলি জীবনের মধ্য সময়ে পাঠশালার বেঞ্চে বসিয়া বিখ্যাভ্যাস করিতেছে ! তাহাদের আস্থল-গুলি পেন্সিল বা কলম ধরিবার পক্ষে অসম্ভব মোটা, যেন একাজের জন্ম তাহাদের সৃষ্টি হয় নাই। তাহাদের চেহারা রৌদ্র ঝটকা-হত ও কঠোর পরিশ্রমের চিহ্নযুক্ত। কয়েকজনের চক্ষে দারিদ্রাক্ষাম্বাত চিহ্ন मीश्रामान ।

তাহারা যথন বিভালয় গৃহে আসিতেছিল,
তাহাদের শারীরিক গঠন মনোরম বলিয়া
বোধ হইল। দেখিতে চট্পটে এবং অনেকের
চক্ষু বেশ উজ্জ্বল, কিন্তু সাারগতঃ কাহাকেই
বিশেষ বৃদ্ধিমান বলিয়া মনে হয় না, এমন
কি কেহ কেহ যেন একবারে ভারশৃষ্ঠ ও
নিদ্রাবিষ্ট। কিন্তু যেমন বক্তৃতা আরম্ভ
হইল, দেখিলাম আমার ধারণা সম্পূর্ণ ভূল।

সেদিন ডেনমার্কের একজন বিখ্যাত বক্তা
সেধানে বক্তৃতা করিতেছিলেন। বিষয়,
আলেকজাণ্ডার ও তাঁহার প্রাচ্য-বিজয়।
তিনি উজ্জল বর্ণে আলেকজাণ্ডারের বিজয়কাহিনী বর্ণনা করিতেছিলেন আর সেই

লোকগুলি মন্ত্রমুগ্ধবৎ ভাহা শুনিতেছিল।—
বক্তৃতান্তে কথাপ্রসঙ্গে বক্তা আমাকে বলিলেন
যে, ইহারা ইতিহাস সম্বন্ধীর কথার অন্ধভাবে
বিশ্বাস স্থাপন করিবে কিন্তু ইহাদের রাজ্যনৈতিক মতামত লইরা আলোচনা করিতে
আমি সাহদী নহি।

"আর একদিন নরওরের "গ্রাম্য কথা"
বিষয়ে বক্তৃতা হইতেছিল এবং এ বিষয়ে ইহাদের অধিকতর উৎসাহ দৃষ্ট হইল। কেননা ইহা
তাহাদের পরিচিত বিষয় ; ইহার অনেক 'কথাই'
তাহারা মাতৃস্তন্যের সহিত পান করিয়াছে।
তাহাদের সহিত সাহিত্য বিষয়ে আলাপ করিয়াছ
কিছু বিশ্বিত হইলাম। দেখিলাম যে তাহাদের
কর্মকঠোর জীবনের বিরল অবসরে তাহারা
অনেক পড়িয়াছে ও নানা বিষয়ে য়থেই
চিস্তা করিয়াছে! তাহারা র্বৈ কেবল তাহাদের জাতীয় সাহিত্যের রত্বরাজির সহিত
পরিচিত এখন নহে—তাহারা প্রীতিপূর্ণ
যত্বের সহিত সেক্বপীয়র অধ্যয়ন করিয়াছে
এবং Ibsen, Bjornson, Goethe ও
Schillerও তাহাদের অপরিচিত নহে।

বস্তুত: ইতিহাস ও সাহিত্যই ইহাদের প্রিয় বিষয়—বিশেষতঃ ডেনমার্কের ইতিহাস ও সাহিত্য। কারণ ইহারা জাতীয় ভাবে পূর্ণ। তব্ও তাহারা ভূগোল, অঙ্ক ও হস্তাক্ষর শিক্ষায় ববেপ্ট সময় দান করে। তাহাদের শাসন ও যত্ত-সম্ভীয় আইনও কিছু কিছু শিক্ষা দেওয়া হয়। সরলবিজ্ঞান ও স্বাস্থ্য বিষয়ে যে বক্তৃতা হয় তাহা এবং ক্ষ্যিবিষয়ক সহজ্ঞ বৈজ্ঞানিক তথ্য সকল তাহারা অত্যন্ত মনোযোগের সহিত্ত প্রবণ করে। কয়েক বংসর পূর্বে একটী ও সমিতি হারা কতকগুলি স্বর্ম্বা সরলবিজ্ঞান

পাঠ প্রকাশিত হইরাছিল। ক্রমকগণ তাহা অত্যস্ত আগ্রহের সহিত ক্রের করিরাছিল !

প্রাতে ৮২ টার সময় বক্তৃতা আরম্ভ হয় আর সন্ধ্যা ৬টার স্থলের কাব্ধ একরকম শেষ হই রী যার। তাহার পর সকলে ব্যায়ামাগারে যাই রা ব্যায়াম করে। এই ব্যায়াম বৈজ্ঞানিক প্রণালীসমত ও ইহাতে শরীরের সর্বাদীন উন্নতি সাধিত হয়। প্রায় সকলেই অত্যম্ভ আনন্দের সহিত ইহাতে যোগদান করে। তাহারা বলে এই একঘণ্টা ব্যায়াম না করিলে আমরা কথনই আমাদের মন্তিক্ষ চালনা করিতে পারিতাম না।

সন্ধ্যার সময় আবার সকলে একত্র ममर्दिक हम्र ७ कान निक्रक काहाराज निक्र কবিতা পড়েন—কোন কোন দিন কবিতার বদলে সন্ধীত হয়। তাহাদের মধ্যেই ওস্তাদ বাদক বা গায়ক আছে। তারপর ধৃমপান ও গরগুজব—ইহা অত্যস্ত আনন্দের সময় —কারণ ইহারা যেন একটা বৃহৎ পরিবার-বিশেষ,—এই সময় শিক্ষক ছাত্তে একত বসিয়া নানাপ্রকার রহস্থালাপে তাহাদের ভাতৃ-ভাবের পরিচয় দিয়া থাকে। রাত্রি দশটার সময় তাহারা শন্নন করিতে যায় এবং সুর্য্যো-দরের পূর্বেই শব্যাত্যাগ করে। গ্রীম্মকালে ইহা মেরেদের স্কুলে পরিণত হয় এবং তাহারাও সংখ্যায় ও আগ্ৰহে পুৰুষদিগকে পশ্চাতে ফেলিতে সক্ষম হয়।

এই সুলে ছাত্রগণ কঠোর পরিশ্রম করে,
কারণ ইহা পাঁচ মাস মাত্র স্থায়ী—আর এই
পাঁচ মাসের মধ্যে সমগ্র শ্রীবনের শিক্ষা
আয়ন্ত করিয়া লইতে হয়। বিতীয়বার সুলে
আয়া অনেকের ভাগ্যেই হইয়া উঠে না।

একবার আসিতে পারিবেই ভাহারা পরম ভাগ্য মনে করে—কারণ ভাহাদের কেতের কার্য্য অন্তের হাতে ফেলিয়া আদিতে হয় এবং বিস্থালয়ে আসা তাহাদের পক্ষে यथिष्ठ কাৰ্য্য। ব্যম্বসাধ্য 3488 হইতে ১৮৯৬ সালের মধ্যে ১২০,০০০ ছাত্র-ছাত্রী ডেনমার্কের এইরূপ উচ্চ বিস্থা-লর সমূহে শিক্ষালাভ করিতেছে এবং বর্ত্তমান সময়ে ডেনমার্কের প্রায় এক চতুর্থাংশ কৃষি-জীবি পাকে প্রকারে এই সব বিস্থালয়ে একবার করিয়া প্রবেশ করে।

স্লের গৃহস্থালী বন্দোবস্ত অত্যস্ত সাদা-সিধা। পাত স্থপাচ্য, পুষ্টিকর ও প্রচুর হইলেও আড়ম্বরহীন। কারণ খরচ কম না হইলে এম্বানে কৃষকদের শিক্ষাণাভ করা অসম্ভব। এই বিভালয়টীতে সকলেই নিজ নিজ ব্যয় বহন করে। ডেনমার্কে একজন ক্বুষকের বাৎসরিক আয় প্রায় ৪৫•১ টাকা। क्रूलित्र वांग्र क्रनक्षिठ >৫० होका। গ্ৰণ-মেণ্ট হইতে ৩০ টাকা করিয়া দেওয়া হয় স্থতরাং প্রত্যেকের ১২০১ টাকা করিয়া খরচ করিতে হয় এবং তাহারা मानत्म এই थव्रह वहन करव्र। কিন্ত ইহার জন্ম তাহাদিগকে অসম্ভব পরিশ্রম করিতে হয়। হয়ত বছবৎসর ধরিয়া সামাক্ত সামাক্ত স্থাবাছন্য হইতে নিৰেকে বঞ্চিত করিয়া অর্থ জমাইয়া প্রোঢ়বা বৃদ্ধ বন্ধসে স্থূলে আসিতে সক্ষ হয় ! এই সকল ছাত্র ৰখন গৃহে প্রত্যাগমন করে তাহারা নৃতন চিন্তা, নৃতন ভাব লইয়া আসে এবং শীঘ্ৰই তাহা চারিদিকে বিস্তৃত হইরা পড়ে 🖡

ভেনমার্ক এই প্রকার বিভালবের জঞ ভাহার একজন বিখ্যাত কবি-ধর্মবাজকের निक्रे भाषा। এই महाचा (Nicolai Grundtrig) বিগত শতাব্দির মধ্য ভাগে এই জাতীয় কার্যোর স্থচনা করেন। ডেন-মার্ক তথন মৃতপ্রায়, দারিদ্র্য-পীড়িত ও এই इः नमस्य এই होनवृद्धि। স্বজাতিপ্রেমিক অসাধারণ युवक जानमा डिल्माह नहेब्रा कार्यात्कत्व অবতীর্ণ হইলেন। দেশের সর্বস্থান তাঁহার উদ্দীপনাপূর্ণ বক্তায়, জাতীয় সঙ্গীতে ও পূर्व्वभूक्रस्यत्र भोत्रदकाहिनौट्ड नवक्रोवन गांड করিতে লাগিল।

আশ্চর্য্যের বিষয় ইহালারা দেশের ক্রষকগণই অধিক অমু প্রাণিত সর্কাপেকা উঠিল। তাহারা একবাক্যে প্রশ্ন করিল, রক্ষা করিতে হইলে আমাদের হইবে?" সেই মহাত্মা কি করিতে উত্তর করিলেন, "শিক্ষালাভ কর"। তিনি নিজেই বিস্থানয়ের নিয়মাবলী লিপিবছ করিয়া कृषकरमञ्ज अञ् স্থানে বিস্থালয় স্থানে স্থাপন করিলেন। মৌথিক শিক্ষার নিয়ম তিনিই প্রচলন করিলেন। কিছুদিনের मत्था कृषकरमञ्ज एउड्डीब नाना ज्ञारन छाडाव আদর্শামুবারী স্কুল সমূহ স্থাপিত হইল। যুদ্ধ বিগ্রহাদির দক্ষণ কিছুদিন শিক্ষাকার্য্য স্থগিত রহিল। কিন্তু এই যুদ্ধে ডেনমার্কের কতকাংশ জার্মেণীর করায়ন্ত হওয়াতে তাহারা এক-বারে নিরুৎসাহ কট্টা পড়িল, তাহাদের সমস্ত আশা ভরসা নির্মূল হইবার উপক্রম হইল। धरे ममरत्र Dr. Norregaard नामक धकरी উচ্চশিক্তি, ধনী যুবক ভাহার উচ্চ পদ-

सर्गामाकाष्का পরিহার করিবা আক সীমাহীন
विজন গ্রাম্য প্রদেশে রুষকদের মধ্যে জীবন
উৎসর্গ করিলেন। তিনিই প্রথমে এই
Testrup বিভাগর স্থাপন করেন ও
বহু বৎসর পর্যন্ত নিজে ইহার সমস্ত ব্যর্কার
বহন করেন। ক্রমে তাহার দৃষ্টান্তে অণ্প্রাণিত হইরা রুষকগণ জাবার জাগিরা
উঠিল। সর্বা হানেই কুল সমূহ হাপিত
হইল। বর্ত্তমান সমরে ডেনমার্কে ৭০টা
উচ্চ বিভাগর কুষকদের শিক্ষার হার উন্মৃক্ত
করিরা রহিরাছে।

প্রথমে অনেকে আশহা করিয়াছিলেন যে এইরূপ বিষ্যালয়ে বুঝি সব ক্লমক পণ্ডিত रुरेया जारात्मत्र हायवारमत्र काळ क्रांडिया मिटव । কিন্তু কৃষকগণ ইহার মে উত্তর দিয়াছিল ভাহা অত্যন্ত শিক্ষাপ্রদ। "তাহারা ইহা বুঝিতে চায় যে শরীরের সহিত তাহাদের মন ও আত্মা বলিয়া আরও ছুইটী জিনিব আছে। তাহানের ক্ষেতের বাহিরের বিষয়ও ভাহারা জানিতে চায়। তাহারা একবার তাহাদের मछक हानना করিতে শিখিলে নিজে-রাই হস্ত চালাইতে শিশিবে। প্রকৃত ভাবে চিস্তা ও বিচার করিতে শিথিলে, ভাল করিয়া চাষ করিতেও শিধিবে।" তাহাদের কথার বাথার্থ্য কার্য্যতই তাহার। সপ্রমাণ করিয়াছে। এই শিক্ষার ফলে তাহারা ক্ববি বিষয়ে নানা প্রকার উরতি লাভ ক্রিয়া ইয়োরোপের ক্লবক্রুণের মধ্যে वद्रवीत्र रहेबाटा ।

এ স্থানে প্রসঙ্গ ক্রমে ডেনমার্কের কৃষি বিষয়ক অস্তান্ত অষ্টোনের কথা কিছু বলিতে এ ইচ্ছা করি। ১৮৬০ সালে কার্মেণীর সহিত युटक ट्यनमाटर्कत गर्साटलका छस्तत । भूगावान তুইটা প্রদেশ ভাহাদের হস্তচ্যুত হয়। বাকি যে ক্ষুদ্ৰ অংশ তাহাদের হস্তে রহিল তাহার অধি-কাংশই জলাভূমি ও বালুকাপ্রদেশ। আর সেই স্থানে উত্তর সমূজের প্রচণ্ড ঝটিকা ও প্রথম বাত্যা সর্বাদা মনুষাশক্তির সহিত সংগ্রাম ক্রবির অবস্থাও তখন অত্যস্ত শোচনীয়। তথন আমেরিকার শস্য ইয়ো-রোপের শস্য-বাৰসায়কে প্রার নির্ম্মূল করি-য়াছে। এই সময় আবার জার্ম্মেণী অকস্মাৎ विक्रिमी भना सरवात्र यात्र क्ष कतिया जिल। এই তুর্দিনে ডেনমার্ক তাহার জাতীয় অভিত লোপের আশকায় ত্রস্ত হইয়া উঠিল। কিন্ধ যে অমামুষিক উৎসাহ ও চেষ্টা হারা উক্ত অবস্থা অতিক্রম পূর্বক ক্রমশ তাহারা আজ অনেক শক্তিশালী জাতির সমকক হইয়া উঠিয়াছে--কেবল ভাহাই নহে ব্যবসায় ক্ষেত্ৰে তাহাদিগকে পশ্চাতে কেলিয়াছে তাহা আমাদের এই হ: সমরে অত্যন্ত শিক্ষাপ্রদ।

১৮৬৬ সালে Colonal Dalgas নামক
এক অন্ধাতিবংসল মহান্মা ডেনমার্কের পতিত
ও জলাভূমি সকলের উন্নতি বিধান করিতে
বন্ধপরিকর হইলেন। তাঁহার স্থাপিত
সমিতির চেষ্টার রাস্তা ঘাট ও রেলপথ
সকল নির্মিত হইতে লাগিগ, জলপ্রবাহের
বন্দোবৃত্ত হইল, ১০০, ০০০ বিদ্যা বালুকামর
ভূমি উর্বার ভূমিতে পরিণত হইল, এবং
ঘুইটী কৃষি-বিধ্রক পরীক্ষাপার ও চারি শত
পরীক্ষা ক্ষেত্র ছাপিত হইল।

চতৃম্পার্শস্থিত দেশের প্রতিবোগিতার ভাগদের ব্যবসাসমূহ ক্ষতিগ্রন্ত হইরাছিল। মাধনের ব্যবসারে অভান্ত ক্ষতিগ্রন্ত হইলে তাহারা এক ন্তন উপায় উদ্ভাবন স্থানে স্থান কৃষ্কগণ একল হইয়া স্বন্ধ গৃহোৎপন্ন নবনীত একস্থানে মাখনে পরিণত করিতে লাগিল। ইহাতে ধরচ ও সমর উভরই অনেক সংক্ষেপ হইল। এই সমবেত চেষ্টার উরত প্রণালীর বার সাধ্য মাখন প্রস্তুতের বূর্ণন যন্ত্র ক্রের করিয়া একই স্থানে তাহারা অনেক মাথন প্রস্তুত করিতে জাতীয় শিক্ষা, কুবিশিকা অধ্যাপকগণের বৈজ্ঞানিক গবেষণা ভাহাদের महात्र हहेगा এই ममरत्र (১৮৮২) कृषकर्मा স্থানে স্থানে Co-operative Dairy স্কল স্থাপন করিতে আরম্ভ করিল। হয়ত ১৫০ কৃষক মিলিয়া প্রত্যেকে ১২০, টাকা করিয়া চাঁদা উঠাইয়া dairy স্থাপন করিল। এই dairyতে তাহাদের ৮৫০, হইতে ১০০০ গাভীর হগ্ধ আনীত ও মাধনে পরিণত হইতে লাগিল। মধ্যবর্তী মহাজনদের হস্ত হইতে রকা পাইবার নিমিন্ত তাহারা মাথন বিক্ররের সমিতি স্থাপন করিল। এই সমিতি হইতে নিযুক্ত লোকেরা মাখনের গুণাগুণ বিচার, হুগ্নের তারতম্য বিচার, অসাধু ক্লুষককে শান্তি দান, কথ গাভীকুলের চিকিৎসা ও হথ দোহন নিবারণ এবং দেশ বিদেশে মাধন প্রেরণ প্রভৃতির স্থবন্দোবস্ত করিতে লাগিল। এই এখন ফলে সমগ্ৰ त्य : • ६ • जी dairy স্থাপিত হইয়াছে, ইহার কুষক স্ভ্যেশ **मः**था। ১৪৮,০০০, এবং দেশের মোট ১,০৬৭,০০০ গাভীর মধ্যে ৭৫০.০০০ গাভীর ছগ্ধ এই স্থান সমূহে সংগৃহীত হয় ! ১৯০২ সালে এই দেশ হইভে रेश्नट बात > 8 कांगे मुखात मायन तकानि

হইরাছে ! এবং ইহা কেবল ক্ষকদের সমবেত চেষ্টার ফল !

এই সমবেত চেষ্টায় কৃষকগণ অক্তান্ত অনেক ব্যবসায়েও বিশেষ লাভবান হইতেছে। বীজ, পশুর আহার, সার, যন্ত্রাদি ও অন্তান্ত আবশ্রকীয় বস্তু সকলই তাহারা একত্ত হইয়া ক্রের করিয়া থাকে. ও এই প্রকারে অনেক বার সংক্ষেপ করে। ক্রমি সম্পর্কীর সর্বপ্রকার ব্যবসাম্বই তাহারা সমবেত যত্ন ও চেষ্টার এমন উন্নত ও লাভবান করিয়া তুলিয়াছে যে ইরো-রোপের নানা স্থানে তাহাদের এই প্রণালী অনুসত হইতেছে। এই বিষয়ে আরও বিশেষ করিয়া কেছ জানিতে ইচ্ছা করিলে Report on Co-operative Agricul-Rural Condition in ture and Denmark নামক পুস্তকে জানিতে পুৰু -- Secretary উক্ত পারিবেন। Department of Agriculture and Technical Instruction for Ireland. Dublin. ঠিকানার প্রাপ্তবা।

এই প্রসঙ্গে আমাদের দেশ সম্বন্ধে করেকটা কথা বলিরা আনার বক্তব্য শেষ করিব। কিছুদিন পূর্ব্বে রবি বাবু তাঁহার "স্বদেশী সমাজে" ও পাবনা বক্তৃতার আমাদের প্রাম্য বিভাগের কার্য্য প্রণালীর বিষয় কতকটা আলোচনা করিয়াছিলেন। 'বন্দে মাতরম্' পত্রিকাতেও করেকটা প্রবন্ধে ইহার ইঞ্চিত ছিল। এ বিষয়ে আমাদের দেশে বিস্তৃত আলোচনার বিশেষ প্রয়োজন। আমরা অনেক সমরে ভূলিরা যাই বে দেশের ক্রষকগণ জাতীর শরীরের মজ্জা স্বরূপ। তাহাদের অবস্থার উন্নতির বিষয়ে যথেষ্ট রূপে আমাদের দৃষ্টি

আরুষ্ট হয় নাই। গবর্ণমেক্টের সাহার্য ব্যতিরেকেও,—নানা বাধাবিত্ব সন্ত্রেও আমাদের এ বিষয়ে অনেক কাজ করিবার আছে। আঞ্ কালকার গ্রাম্য জীবন শুক্ত ও প্রাণহীন। সেই খনিষ্ঠ ও কোমলতা পূর্ণ জীবন , জীব নাই। সহরগুলি অনেক পরিষাণে গ্রামের শক্তি হরণ করিয়াছে, কিন্তু গ্রামের সে সহজ্ব সারল্য কোথায় পাইবে ? প্রামের গৃহ পরিত্যাগ করিরা আমরা গৃহশুক্ত ভিখারী সাজিয়াছি। জাতীয় জীবনকে শক্তিশালী করিতে হইলে দর্ব্ব প্রথমে আমাদিগকে গৃহ খুঁ জিয়া লইতে হইবে। ভারতের প্রতি পল্লির প্রত্যেক পর্ণকূটীর আমাদিগকে আহ্বান করিতেছে—একই গৃহের সহস্র দ্বারপথ হইতে যে কাতরতাপূর্ণ অনাহারক্লিষ্ট ক্ষীণ আহ্বান আসিতেছে আমরা তাহা কবে শুনিব ? সেই দ্বারপথে প্রবেশ করিয়া নিজের গৃহকে আবার বরণ করিয়া লইব কবে 🤊

আমরা 'বদেশ' 'বদেশ' বলি। কিন্তু
এই খদেশকি কেবল খামল শহ্যক্ষেত্র, প্রান্তর,
পর্বত, নদনদী ও কতিপর শিক্ষিত (?)
লোক লইরা? না আমাদের ক্ষমা মাতৃষরপা
জন্মভূমির স্তন্তপারী কোলের ছেলে, তাঁহার
ক্ষমবের অতি সন্ধিকটবর্তী অতিপ্রির, তাঁহার
জীবস্ত প্রতিমৃত্তি বাহারা সেই কোটী কোটী
কৃষক লইরা? আমরা শিক্ষিত সমাজ দূর
হইতে এই জননীর ভরণপোষণের ব্যবস্থা
করি কিন্তু বুগ্যুগান্তরের উপেক্ষিতা
এই জননীর দারিজ্ঞা ও হাদর বেদনা ইহাতে
নিবারিত হয় না। আমরা ত আহার বিহারে
এক প্রকারে জীবন কাটাই, কিন্তু এই দ

তাঁহার প্রাণস্থরণ সহস্র সহস্র প্র করা প্রতিদিন এক সৃষ্টি অরাভাবে প্রাণত্যাগ করি-তেছে, তাঁহার হুঃখ ঘূচিবে কি করিরা ?

बायां निगरक खारमत्र धामन धत्री वत्क -केनुनोत्र कनत्र महिक्टेवर्डी त्यरत्कारफ ফিরিয়া যাইতে হইবে—সেধানে মান সম্ভ্রম প্রতিপত্তি নাই কিছ শ্বেহ ও ভালবাসার উৎস সেখানে খুলিরা বাইবে। ক্ববকের পর্ণকূটীরকে আমাদের গৃহ করিয়া লইতে হইবে, প্রাণের প্রত্যেক অণুতে অণুতে তাহাদিগকে ভাই বলিয়া অমুভব করিয়া তাহাদের শিক্ষা ও উन्नजित खन्न सीवन डेप्पर्ग कतिए इहेरव। প্রী জাবনেই ভারতের সভ্যতা ও জীবনী শক্তি বিকাশ পাইয়াছিল, আবার এই পরিই আমাদের অধঃপাতের কারণ হইয়াছিল। যে দিন হইতে আমরা ভারতের জাতীয় জীবন হইতে পল্লীগুলিকে বিচ্ছির করিয়া—বাহু জগ-তের সহিত সম্পর্ক শৃত্ত হইরা পল্লীর রুদ্ধ ও অস্বাস্থ্যকর কুদ্র গণ্ডীর মধ্যে আমাদের कौरनरक व्यापक कतिया, जनमाधात्ररभत्र শিকা ও উন্নতির হার সম্বীর্ণ করিলাম সে দিন হইতে আমাদের অধঃপতন আরম্ভ হইল। সমগ্র ভারতের জাতিধর্ম ভূলিয়া গিয়া এক মহান ও বিশাল জাতীয় জীবনের অংশ স্বরূপ আমাদের পল্লীগুলিকে আবার গঠিত ও অমৃ-প্রাণিত করিয়া তুলিতে হইবে। স্থামরা উচ্চ সমাজের গোক নিয় সমাজের প্রতি আমাদের কর্ত্তব্য সম্পূর্ণক্রপে পালন করি নাই তাই **আল বুগবুগাস্তবের অবহেলা** ও অপমানের প্রায়শ্চিত বরুণ আমাদের মেহ ভালবাসা বারা সেই কর্ত্তব্য পালন করিতে হইবে। চিম্বা করিলে আমরা ব্রিতে পারিব ইহাই ভারতীর সভ্যতার আদর্শ। আমাদের পূর্বপুরুষণণ সমগ্র ভারতবাসীকে এই সভ্যতা দানে প্ররাসী হইরাছিলেন। আজ সমর আসিরাছে, তাঁহাদের আরক্ষ কার্য্য আমাদিগকে সম্পূর্ণ করিতে হইবে।

শিক্ষার এক প্রধান উদ্দেশ্য মাহুবের ভাব গ্ৰহণ ক্ষমতা ফুটাইয়া ভোলা। কেবল পুস্তক বারাই বিভাশিকা হয় না। ধর্মপ্রচারের মত সাধারণ জ্ঞানও সহজ ও সরল কথায় জন-সমাজে বিস্তৃতি লাভ করে। বর্ত্তমান অবস্থায় জনসাধারণের জন্ম সম্পূর্ণ স্থপরিচালিত বিস্থালয় হওয়া অসম্ভব,--কিন্ত তাই বলিয়া সাধারণ জ্ঞান লাভের পথ ক্ল থাকিবে কেন ? গ্রীগ্নের ছুটিভে পলীগ্রামে অনেক অবসরবছল ছাত্র ও শিক্ষিত লোকের সমাগম হয়। প্রতি বৎসর এই কয় মাসের জন্য আমরা যদি সন্ধ্যাকালে গ্রামের কুষক-গণকে একতা করিয়া খদেশের ও বিদেশের ভূগোল ইতিহাস ও বর্তমান অবস্থা সমুদ্ধে সহজ্ঞ ও সরল কথায় আলোচনা করি তবে ভবিশ্বৎ শিক্ষার ভিত্তি স্থাপন হইতে পারে; আমাদের পরস্পারের মধ্যে ব্যবধান দূর হইয়া জাতীয় জীবনকে শক্তিশীল করিয়া তুলিতে পারে। ক্রমে ক্রমে এই কুন্ত কুন্ত মিলন ক্ষেত্র গুলিকে আমরা বিস্থালয়, কৃষি সমিতি বা Co-operative society তে পরিণত করিয়া পল্লিজীবনকে গড়িয়া ভূলিতে পারি। বিষয়ক উন্নতিচেপ্তার কুদ্র কুদ্র কৃষি ব্যবসার উন্নতির সমবেত চেষ্টাও চলিতে পারে। কৃষি বিভার পারদর্শী বিদেশ প্রত্যাগত ছাত্রগণ এবং জাপানে

শিক্ষিত শীযুক্ত যহনাথ সরকার মহাশয় ও আমেরিকা প্রত্যাগত শ্রীযুক্ত দিজদাস দত্ত মহাশন্ন প্রভৃতি মহোদরগণ সমর ও স্থযোগ মত নিমন্ত্ৰিত হইলে যে তাঁহারা সানন্দ চিত্তে এইরূপ পল্লীসন্মিলনে যোগদান করিয়া ইহার মঙ্গল উদ্যোগের সহায়ক হইবেন

তাহাতে সন্দেহ নাই। দুরদেশ হইতে কার্য্য-প্রণালীর বিষয় অধিক লেখা অসঙ্গত হইবে। কিন্তু আমার বিনীত প্রার্থনা এই দেশের সাময়িক পত্ৰিকা সকল এ বিষয়ে বিস্তৃত আলোচনা করুন।

কোন আমেরিকা প্রবাসী—বিষ্ণার্থী।

বিধবাবিবাহ ও হিন্দুপত্রিকা।

বিধবার বিবাহ লইয়া আমাদের কায়স্থ সমাজে সম্প্রতি মহা আন্দোলন উপস্থিত। কি উপলক্ষ্য লইয়া এই আন্দোলন সংবাদপত্তের পাঠকমাত্তেই জানেন।

তুই তিন বৎসর পূর্বে এক সম্রাস্ত কায়স্থ গুহে একটি বালবিধবা কন্সার বিবাহ হইয়া গিয়াছে। তখন কায়স্থসমাজ এসম্বন্ধে নীরব ছিলেন,—সমাজের মান্যগণ্য অনেকেই বরঞ্চ বিবাহ সভায় উপস্থিত থাকিয়া সহামুভূতি জ্ঞাপন করিয়াছেন। আজ সেই ঘরেরই একটি কুমারী কন্তার বিবাহের সময় তাঁহাদের সহসা এমন কৰ্মবাজ্ঞান সর্কনাশতৎপর উন্মন্ত ভাবে কেন যে জাগরিত হইয়া উঠিল— তাহা সহজবুদ্ধিতে বুঝিয়া উঠা হুম্ম।

পরহঃথকাতর স্বাধীনচেতা বিভাসাগর মহাশয় যথন দেশের লক্ষ লক্ষ লাঞ্ভিতা ष्मराञ्चा वानविधवात्र निष्ण यञ्चना निवातन সংকরে শাল্কের প্রমাণাত্রসারে সমাজে বিধবা-বিবাহ প্রচলিত ক্রিবার প্রশ্নাস পান-তখন কিছুদিন বলসমাজে এইরূপ শোচনীয় দুখোর তাপ্তৰ অভিনয় হইয়াছিল। কিন্তু সে আজ অনেক দিনের কথা। ইতিমধ্যে আমাদের

সমাজে অনেক ভ্রান্ত সংস্থারের সন্ধীর্ণ গঞা ভাঙ্গিয়া গিয়াছে, অনেক প্রচলিত কুরীতি অজ্ঞাতসারে ধীরে ধীরে দুপ্তপ্রায় হইয়াছে. অনেক বিষয়ে আমরা সমধিক উদার ও বিবেচক হইতে শিখিয়াছি। অন্ততঃ ইহা বলিয়া আমরা গর্ব করিয়া থাকি। কিছ আজ পরীক্ষান্থলে আমাদের সে গর্ব বে শতচুর্ণ হইয়া গেল ৷ আর যে বিষয়েই সমাজ উন্নতি পথে অগ্রসর হউক না, রমণীগণের মমুয্যো-চিত স্থুপ শিক্ষা ও সৰ্ব্বান্ধীন বিকাশ বিধানে তাহার স্বার্থ খড়গ এখনো বন্ধরূপে উন্থত। অবশ্য সমাজে কোন নৃতন প্ৰথা প্ৰবৰ্ত্তিত করিবার পূর্ব্বে তাহার গুভাগুভ ফল সম্বন্ধে বিচার করিয়া দেখিবার অধিকার সকলেরই আছে। কিন্তু সেজন্ত বিচারকের সর্বভোভাবে নিংমার্থ ও নিরপেক হওয়া আবশ্রক। বিধবাবিবাহের বিপক্ষীরগণ সেরপ উদার ও উন্নত বিচারের পরিবর্ত্তে যেরূপ ছাদয়হীন খন্দকুশলতার পরিচয় দিয়াছেন এ ক্ষেত্রে তাহাই সর্বাপেকা কোভের কারণ। মারাভার আমল হইতে প্রচলিত যে কয়েকটি অতি পুরাতন প্রতিবাদ- । শর তাঁহাদের ঝুলিতে জীর্ণ হইরা পড়িরা ছিল

নেইগুলিকে ষ্থাসাধ্য শাণ দিয়া প্রবলবেগে শক্রদন্ধান করিয়াই তাঁহারা ক্ষান্ত হন নাই, কলির ধর্মে শক্রম্পর্শে তাহাদিগকে থণ্ড বিখণ্ড হইতে দেখিয়া অবশেষে "জাতঃপাত"রূপ ভয়-প্রদীন্ধ ব্রন্ধান্তে বিপক্ষ পক্ষকে সমূলে নিপাতোত্তত হইয়াছেন।

এই বিবাহে যিনি ইঙ্গিতেও সহায়ুভূতি বাক্ত করিয়াছেন—কেবল তিনি নহেন,—তাঁহার সুদূর সম্ভাবিত অজাত বংশধরটি পর্যাম্ভ উক্ত লক্ষ্যভূত হইয়াছেন। ভবনাথকে "একঘরে" করিবার জন্ম কিরূপ अगरप्रात्यां । जियां हिन नकरनहे स्नातन । সভাসমিতিতে বক্তৃতা করিয়া, resolution পাশ করিয়া.সকলের বাড়ী বাড়ী গিয়া নিষেধ করিয়াও हैशत्रा मुब्दे रून नाहे; ट्याय आद्वत मिटन নিমন্ত্রিতগণের বাড়ীতে হাওবিল ফেলিয়া তাঁহা-দিগকে নিরস্ত করিতে চেষ্টা করিয়াছেন। দেন মহাশয়ের এই মাত্র অপরাধ, তিনি তাঁহার উদারচরিত্রা সর্বজনসম্মানীয়া সাধবী পত্নীর শ্রাদ্ধ উপলক্ষে—বিধবা বিবাহের স্বপক্ষ বিপক্ষ নির্বিচারে বন্ধবান্ধব, পরিচিত অহ্বান করিয়াছিলেন। তাঁহাদের বিরোধ কীর্ত্তির ইহাই চরম দৃষ্টাক্ত নহে। শুনিতে পাওয়া যায় বিবাহ ভাঙ্গাইবার উদ্দেশ্তে কেছ কেই নাকি বরকর্তার নিকট ধ্যা দিতেও ছাড়েন নাই। নিরপরাধ অবলা বালিকার চির অ্থশান্তি হরণ করিয়া কি. ইঁহারা পরম পুরুষার্থ লাও করিতেন। উপস্থাদেও এরূপ নির্য্যাতনের কথা পড়িলে বৈ অতিরঞ্জিত মনে হইত। আর ইহাও আব্দ আমাদের শিক্ষিতাভিমানী হিন্দুসমাজের পক্ষে নিন্দনীয় কার্য্য নছে! কোন ভাল কাঞ্চের জন্ম

এএতটা যত্ন পরিশ্রম করিলে যে বঙ্গজননীর
মুথোজ্জন হইত। এই ত হিন্দু বিধবাদিগের
জন্ত হিন্দু ধর্মান্তুমোদিত একটি আশ্রম স্থাপিত
হইরাছে, তাহার সাহায্যে ইহারা কয়জন
অগ্রসর ? পশুদিগের হঃশ কটে—লোকের
যে বেদনাটুকু আছে—ল্রীলোকের হঃথে
ইহাদের প্রাণ তত্তুকু কাতর নহে। হার
হার,—মার ইহারাই ইংরাজের জাতিগত
অসমদর্শিতা ও পক্ষপাতিতা দর্শনে ক্রোধার
হইরা উঠেন!

আমাদের সমাজের শীর্ষস্থানীর লোকদিগের এইরূপ শোচনীর আচরণ দেখিয়া যখন
হাদর ক্ষোভে হঃখে মৃহ্মান সেই সমর হিন্দু
পত্রিকার বিধবাবিবাহ শীর্ষক প্রবন্ধটি পড়িয়া
ক্ষত স্থানে যেন প্রলেপ সিঞ্চিত হইল।
এ সম্বন্ধে এমন যুক্তিপূর্ণ অথচ নিরপেক্ষ প্রবন্ধ
আনেক দিন পড়ি নাই। এই খানেই আর্য্য
হাদয়ের প্রকৃত উদারতা পরিব্যক্ত। প্রবন্ধটির
কতক কতক আমরা নিম্নে উদ্ধৃত করিয়া
দিলাম।—

বিধবাবিবাহের বিপক্ষীয়দিগের প্রথম অন্ত্র এই যে হিন্দুসমাজে বিধবাবিবাহ প্রচলিত হইলে, হিন্দুসমাজ অচিরে ধ্বংস হইয়া যাইবে। ইহার উত্তরে হিন্দু পত্রিকা লিপিয়াছেন—"এহলে শরণ রাপা কর্ত্তব্য যে, এক বঙ্গদেশ ব্যতীত, ভারতবর্ষে হিন্দুসমাজের মধ্যে বিধবাবিবাহ আবহমান কাল চলিয়া আসিতেছে। যুক্তপ্রদেশ অর্থাৎ, কানী, প্রয়াগ, লক্ষ্ণৌ, দিল্লী প্রভৃতি স্থানে কতিপয় উচ্চবর্ণ ব্যতীত প্রায়্ব সকল আচমনীয় ও অনাচমনীয় বর্ণের মধ্যে বিধবাবিবাহ প্রচলিত আছে। কুমারীদিগের বিবাহে যেরূপ মন্ত্রাদি

পঠিত হয়, উহাতে ভাহা হয় না বটে, কিছ এইরূপ বিবাহ সমাজের অমুমোদিত। বোখে, মাজাজ, উড়িয়া, বিহার, ছোট নাগপুর, পঞ্চাব, আদাম প্রভৃতি স্থানেও ঐরপ কভিপর উচ্চবর্ণ ব্যতীত অন্তান্ত বর্ণের মধ্যে বিধবা-विवार প্রচলিত থাকার, हिन्तूসমাব্দের কিছু चारम योत्र नारे। जाहा इरेटन, वन्नरहरूम विश्वा-विवाह প্রচলিত হইলে हिन्सू मभाष्मित्र कि বিশেষ অনিষ্ঠপাত হইতে পারে, তাহা সক-অধুনা মাদ্রাজ বোমে, लंबरे विदवहा। পাঞ্চাব, **বুক্তপ্রদেশেও** উচ্চবর্ণের মধ্যে विधवाविवार रहेरळह ।" वञ्च हिन्तूममान ৰলিতে যে কেবল বাঙ্গালী সমাজকে বুঝায় ना, मिछ। বোধ হम्न विधवाविवाद्यत्र विशक्ती-রেরাও অস্বীকার করিবেন না। বিধবাবিবাহ প্রচলিত থাকিয়া ভারতের বিভিন্ন हिम्मुमभाक यपि ध्वःमधाश ना इहेन्रा थात्क, তাহা হইলে অভাগা বাঙ্গালীরই অদৃষ্টে ষে কি কারণে তাহার ধ্বংসপ্রাপ্তি ঘটবে, ভাহা আমাদের সহজ বৃদ্ধির অতীত।

বিপক্ষীরগণের দ্বিতীয়ত্বস্ত্র—বিধবাবিবাহ শাস্ত্রসম্মত নহে। এ স্থলে শাস্ত্র অর্থে তাঁহার। কি বুঝেন তাহা আমরা জানি না, তবে আমাদের বিখাস বে, কোন সমাজের সাম-দ্বিক অবস্থা ও সভ্যতা অমুসারে তদানীস্তন সমাজ রক্ষার যে গকল নিয়ম প্রবর্ত্তিত হয়. তাহাই সমাজের সময়োচিত বিধি বা শাস্ত্র। শাস্ত্র বলিতে চিরস্তন অপরিবর্ত্তনীয় কোনও সমাজ-বিধি व्याप्त ना। আঞ বে সকল রীতিকে আমরা শাস্ত্র বিকৃদ্ধ ৰলিতেছি, একদিন এই হিন্দুসমাজেই তাহা শাল্রদম্মত ছিল। আবার আজ আমাদের

मध्य गारा नमायनचा श्रेत्राट्य, धक्षित তাহাই শান্ত ও সমাজ বিক্ত ছিল। বিভিন্ন वर्णित मर्था विवार, नमूज बाजा, यूवजी कुमाती वा विश्वात विवाह अकृषिन अहे जात्रज्वात्वह শান্ত্ৰাহুগত সমাজ প্ৰচলিত ক্ৰিয়া ছিল। কিন্তু মধ্যে রীতির অভাবে তাহা বন্ধ হইরা যাওয়ায় আজ এরপ কোন কথা তনিবামাত্র আমরা ধর্মহানি বা "জাতঃপাতের" আশহার আরক্ত নয়নে চাঁৎকার করিতে ও শাস্ত্রকে সাক্ষা মানিয়া আত্মসমর্থনের চেষ্টা করিতে কিঞ-ন্মাত্রও লজ্জাবোধ করি না। বিধবাবিবাহ যে একদিন ভারতে শাস্ত্র সমত ভাবে প্রচলিত ছिল, তাহা বোধ হয় বিপক্ষীয়দিগের কেহই অস্বীকার করিতে অগ্রসর হইবেন না। তবে আজ শাস্ত্রের দোহাই দিয়া পথে পথে এ চীৎকার কেন ? বস্তুতঃ নিজেদের নিত্য-জীবনে থাঁহারা প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ ভাবে সাময়িক আত্মহুখের জন্ত স্নাত্ন শাস্ত্র বেচারার দৈনিক শ্রাদ্ধক্রিয়া সম্পন্ন করিতে কিছুমাত্র কুঠাবোধ করেন না, অনাথিনী বালবিধৰার বিবাহ প্রস্তাব ভনিলেই তাঁহারা শাস্ত্রের দোহাই দিয়া রক্তচকু হইয়া চীৎকার করিতে থাকেন, তথন আমাদের শজ্জা ও ক্ষোভ সম্বরণ করা কঠিন হইরাউঠে।

তাঁহাদের তৃতীর অন্ত্র এই বে—শান্ত্রসমত হউক আর না হউক, বিধবা বিবাহ আমাদের দেশে প্রচলিত হওরা কল্যাণকর কি না? কথাটা বিশেষ ভাবিরা দেখিবার বিষয় সন্দেহ নাই। এ সম্বন্ধে কোন মীমাংসায় উপনীত হইবার পূর্ব্বে পৃথিবীর অক্সান্ত সমাজের অবস্থার বিষয় একটু পরিচয় লওরা আবশ্রক। অ বিষরে হিন্দু পত্রিকা লিখিতেহেন—"সমগ্র

পুথিবীতে তিন শত কোট মানৰ বাস করিভেছে। তন্মধ্যে ভারতবর্বে ত্রিশ কোট, তাহার মধ্যে শিপ, বৌদ্ধ ও নিম শ্রেণীস্থ हिन्दुत्र मःथा वान नितन, व्यक्ति मृष्टितम् वाखि-मिर्गित्र मरथा विश्वा-विवाह व्यथ्यहान्छ रम्था যায়। বান্ধণাদি যে কতিপর উচ্চবর্ণের মধ্যে বিধবা-বিবাহ প্রচলিত তাহাদের সংখ্যা অতার। এটান, বৌদ্ধ, মুসলমান, দিছদি, পারসিক প্রভৃতি সকল ধর্মসম্প্রদারের মধ্যেই প্রচলিত দেখা বিধবা-বিবাহ এতগুলি বিভিন্ন সমাজের পক্ষে যাহা ক্ষতিকর व्य नारे, निम्रत्यपीय विमुनिरगत मरधा व याता ক্ষতিকর হয় নাই, বঙ্গের উচ্চবর্ণের মধ্যে व्यव्यविक हरेलारे य जारा ममास्क्र मर्सनाम সাধন করিবে, এ কথার কোনও অর্থ নাই। আর তাহা ছাড়া দেশে বিধবা-বিবাহ প্রচলিত व्हेल्वे य विश्वामाखा विवादक क्रम অগ্রসর হইবেন ভাহাও নহে। হিন্দু পত্রিকা हेश डेमार्बनधात्रा त्वम न्माडे कतिवा त्वाहेवा দিয়াছেন। "যে সমস্ত সম্প্রদার বা জাতির मर्पा विधवाविवार व्यव्याविक चार्ह, ठारामत्र মধ্যে সমস্ত বিধৰারাই যে পতাস্তর গ্রহণ करतन, छाहा नरह। कञ्चा विधवा इहेरनहे रव তাহার বিবাহ দিতেই হইবে, এমন নহে। সকল সমাজেই বিধবার পত্যস্তর গ্রহণ নানা-বিধ ব্যবস্থার উপর নির্ভর করে। স্বরণ রাখা উচিত যে ভারতবর্ষে হিন্দুদিগের মধ্যে যেরূপ বালিকাদিগের বিবাহ হয়, অক্সান্ত দেশে তাহা হর না। ইহাও শারণ রাখিতে হইবে যে আমাদের মধ্যে কন্তার বিবাহ না দিলে বেক্সপ মানি হয়, অক্ত দেশে তাহা হয় না। . স্থতরাং अञ्चात्र मध्यमारवत्र मरशा चरनक बौलाक

চিরজীবন অনুচাও থাকিরা যান, এবং অনেক বিধবারও বিবাহ হর। তবে ইহা দেখা যার যে যাঁহারা বরস্থা কিমা যাঁহাদিগের সন্তানাদি থাকে, কিমা যাঁহারা অত্যন্ত উচ্চপদস্থা কিমা যাঁহারা পূর্ব পতির প্রতি অত্যন্ত অমূরক্তা তাঁহারা পুনর্বার পতি গ্রহণ করেনু না। * কেবল আমাদের মধ্যে পুরুষের বিবাহ সম্বন্ধে যে অধিকার, অন্তান্ত সম্প্রদারের মধ্যে ঐ অধিকারটি ল্লী ও পুরুষ উভরেরই আছে।"

"বাঁহারা ব্রহ্মচর্য্যের দোহাই দেন, তাঁহা-দের মতে থেন ব্রহ্মচর্য্য কেবল স্ত্রীলোকের পক্ষেই, আর পুরুষের পক্ষে স্বেচ্ছাচারিতা। शुक्रय দশবার স্ত্রী মরিলে দশবারই বিবাহ করিতে পারিবে, সন্তান থাকিলেও পারিবে। কিন্ত স্ত্রীলোকে একবার স্বামী মরিলে বিবাহ করিতে পারিবে না, সম্ভান না থাকিলেও পারিবে না। এরপ বিধান ভারসঙ্গত বলিয়া প্রতিপালন করা কঠিন। (नाना-প্রকার গুপ্তপাপ) হইতে বিধবাবিবাহ কি निक्नीय ?" উপদংহারে হিন্দু-পত্রিকা যাহা বলিয়াছেন তাহা প্রতি ছত্তে ছত্তে এরূপ সতেজ সত্য ও সহজ জ্ঞানে পরিপূর্ণ এবং তাঁহার কথাগুলি আমাদের অন্তরের কথার সহিত এতই একভাবাপর বে আমরা তাঁহারই কথার এ প্রবন্ধের শেষ করিলাম।

শ্বামাদের মতে বর্ত্তমানে বিধবাবিবাহে সমাজের কোন বাধা দেওরা উচিত
নহে। কিম্বা খুব প্রশংসার কার্য্য বলিরাও
লোষণা করা উচিত নয়। অর বয়য় কয়াদিগের বিবাহপ্রথা উঠাইরা দেওয়া উচিত।
উহা হইলে সমাজ অনেক কটকর দুশ্র হইতে

পরিত্রাণ পাইবে। বয়ন্তা বিধবারা স্বীয় স্বীর কর্ত্তব্য, অস্মর্মগ্রাদা বুঝিতে পারিবেন। এবং তাঁহারা বদি পুনর্কার বিবাহ করিতেই ইচ্ছুক হন তাহাতেও বাধা দেওয়া উচিত নহে। শত শত বিধবা আজীবন ব্ৰহ্মচৰ্য্য অববছন করিয়া,জীবন যাপন করিতে সমর্থ হইতেছেন, তাহা আমরা স্বচক্ষে দেখিতেছি। কিন্ত তাই বলিয়া, সকলেই সমান হইতে পারে না। कि श्रुक्य कि जो उच्छात्रत श्रुक्ट उपकृष्ट अ निकृष्ठे अधिकारत्रत्र वावश्रा थाका कर्खवा। পুरुष (बज़भ नकत्नहें बच्चहर्य) क्त्रिष्ठ शास्त्र ना, ज्वौत्नादकत्रां अत्रहेन्नश । সমাজে তাহার ববাড়া না করিলে স্থন্দরভাবে চলিতে পারে না। পুরুষের চক্ষে যেরূপ এক পত্নী গ্রহণ উচ্চাধিকারের কথা, সেইরূপ ন্ত্রীলোকের পক্ষেও এক পতি গ্রহণ উচ্চাধিকারের কথা। পুরুষের চক্ষে যেরপ কেবল উচ্চাধিকার প্রথা প্রবর্ত্তিত থাকিলে নিম্ন অধিকারীদিগের নানারূপ পাপে পতিত হইতে হয়, স্ত্রীলোকের পক্ষেও তদ্ধপ।

(वित्मवंकः व्यामास्मत्र स्मानवं का जीत्माक्नात्व कीविका উপार्कातन प्रथ नारे विवाहरे अशाल ज्ज जीरगारकत्र कोविका। स्त्रहे क्क अस्तरम বিধবাদিগের কষ্ট এত অধিক ৷) এই সমুদ্র বিবেচনা করিয়া থাঁছারা স্বীয় জুজীয়া দিগের ছ:ধ দেখিতে না পারিয়া, তাহা-मिरांत भूनवीत विवाह एमन, जोहामिरांत প্রতি কোনরূপ কঠোর ব্যবহার করা উচিত नहर। य शृह्य क्षो वा श्रुक्तरवत्र मरशा वा किहान আছে জানিয়াও আমরা স্বচ্ছন্দে সেই গৃহে পান ভোজন করিয়া থাকি, তথন কেহ স্বীয় বিধবা কন্তার বিবাহ দিয়াছেন বলিয়া তাহাকে সমাজচ্যত করা কতদূর সঙ্গত, তাহা সমাৰের চিন্তা করা উচিত। ত্রন্সচর্য্য **वित्रमिन हे हिन्तू शृद्ध आपने थाकित्व। किन्र** याहाता এই উচ্চ আদর্শ পালন না করিয়া কোন মধ্যম পন্থা অবলম্বন করিতে চাহেন, একেবারে পরিভাগে করিলে. তাহাদিগকে সমাজে অতাম্ব নিকৃষ্ট পদ্বা অবনমনেরই প্রশ্রম দেওয়া হইবে।"

ত্রিপুরার গণ্প।

পার্কত্য ত্রিপ্রার পর্কতে পর্কতে অনেক শুল কুকি রাজা আছে। তাহারা সকলেই ত্রিপ্রার রাজার অধীন। পূর্ককালে মধ্যে মধ্যে তাহারা বিজ্ঞার্ছী হইয়া উঠিয়া মহা-রাজের সীমার মধ্যে আসিয়া লুটপাট করিয়া প্রবাসীদের উত্যক্ত করিয়া যাইত। তথন ত্রিপ্রা-রাজকে বিজ্ঞােহ দমনের জন্ম যুদ্ধ বাতা করিতে হইত।

একবার একজন রাজা কুকিদিগের এক সহস্র প্রধান ব্যক্তিকে বিদ্রোহ অপরাধে, বন্দী করিয়া আনেন। "পরদিন প্রাতে বন্দী-গণের প্রাণদণ্ড হইবে" – এই সংবাদ রাজ-অন্তঃপুর পর্যান্ত বাইয়া পৌছিল।

মহারাণী অত্যস্ত করুণামরী ছিলেন—এক সহস্র ব্যক্তি এককালে প্রদিন প্রাতে প্রাণৰ হারাইবে তনিয়া তিনি বিহুবল হইরা পড়িলেন। যথা সময়ে রাজা অন্তঃপুরে আহার
করিতে আসিলে, রাণী রাজার ছই চরণ
জড়াইয়া ধরিয়া কাঁদিয়া বলিলেন "রকা কর
মহারাজ রক্ষা কর।" রাজা বিশ্বিত হইয়া
"কি মীহারাণী কি হইয়াছে" বলিয়া রাণীর
হাত ধরিয়া তুলিয়া বসাইয়া শাস্ত করিলেন।

রাণী। মহারাজ কাল প্রাতে নাকি সহস্র মান্তবের জীবন বধ করিবে ?

রাজা। বিচারে বিজোহীদের প্রাণদণ্ড বিধান করিয়াছি।

রাণী। দয়া কর মহারাজ, তাহাদের ক্ষমা কর। তাহারা আমার সস্তান।

রাজা। মহারাণি, তাহারা বিদ্রোহী তাহারা রাজ্যের ঘোরতর অনিষ্ট করিয়াছে।

রাণী। তাহারা আমার প্রজা তাহার।
আমার সন্তান। আমি জামিন রহিলাম,
আর তাহারা তোমার রাজ্যে কোন প্রকার
উৎপাত উপত্তব করিবে না। 'রণে বনে'
তাহারা তোমার সহায় হইবে—ক্ষমা কর।

রাজা। ক্ষমা করিলাম। কিন্তু আজ হইতে ত্তিপুরা রাজ্যের শুভাশুভের দারী মহা-রাণী শবং।

রাণী সহর্ষে কহিলেন "ভোমার জয় হৌক্
মহারাজ। একটা ভিক্লা,—রাত্রি বিপ্রহরের
মধ্যে এক সহস্র সোণার কৃত্র কৃত্র পাত্র
আমাকে প্রস্তুত করিয়া দিতে আজ্ঞা হোক্।
রাজা সাদরে কহিলেন—তাহাও পাইবে।
তোমাকে আমার অদের কি আছে
মহারাণি।

দিপ্রহর রাত্তি—চারিদিক নিতক; রাজ-

মহিবী ছইটি মাত্র দাসীর সহিত রাজপুরী হইতে বাহির হইলেন। একজন দাসীর হাতে একটী ডালায় সহস্র স্থবর্ণ পাত্র, আর এক-জনের হাতে প্রস্তুলিত মুশাল।

মহারাণী ধীরে ধীরে ঘাইরা বন্দীশালার ধার মুক্ত করিলেন প্রাহরীরা বিশ্বিত হইরা সসকোচে ঘারের পার্শ্বে সরিরা দাঁড়াইল।

রাণী কারাগারে প্রবেশ করিলে বন্দীগণ সচকিত হইরা উঠিরা বসিল—তাহাদের শৃত্যল ঝণঝণ শব্দে রজনীর নিস্তব্ধতা ভক্ষ করিল।

নহিবী নিজহত্তে এক একজনের শৃত্যক মোচন করিয়া দিয়া বলিলেন "বাছারা, আমি ভোদের মা—এই নে আমার স্তন্ত, ভোরা পান কর।" বলিয়া প্রত্যেক স্থবর্ণ পাত্তে ছই চারি বিন্দু স্তনছগ্র দিয়া এক একটী পাত্র এক একজন বন্দীর হাতে দিতে লাগিলেন।

ষার মৃক্ত পাইয়াও তাহারা পলায়ন করিল না—বিশ্বরে অভিভূত হইয়া একে একে সকলে মহারাণীকে সাষ্টাঙ্গে প্রনিপাত করিতে লাগিল; পরে সহস্র কঠে বলিয়া উঠিল "মহা-রাণী মায়ের জয় জয়কার হোক্"।

শুনা যার এখনও রাজমহিষী প্রদন্ত স্বর্ণ পাত্র সেই বিদ্রোহী কুকিদের বংশধরদিগের গৃহে দেখিতে পাওরা যার। তাহারা সেই পাত্রকে গৃহপ্রতিষ্ঠিত বিগ্রহের ন্যার এখনও পূজা করে এবং বিজ্রোহী বন্দীরা বা তাহা-দের বংশধরেরা কোন প্রকার উৎপাত করিয়া ত্রিপুরার কোন রাজাকে বিরক্ত করে নাই। তাহারাই ত্রিপুরা রাজের বিশ্বস্ত অধীন; "রণে বনে" তাহারাই তাঁহাদের প্রধান সহার।

পাকচক্র।

शक्य मृश्रा

(গৃহিণী পদচারণা করিতে করিতে)
"তাই ত! একি কাণ্ড দাঁড়াল! আমি
কোণা ভাবছি ৰেশ চেপে ধরেছি—ওমা
আমাকেই কিনা হঠাৎ পেড়ে ফেল্লে! কি
করা বার! বিধবা—এইটেই হরেছে মুস্কিল!
কিন্ত ছেলে আবার তাকেই পণ করেছে?
কি করি! তা আরু কাল, অমন ঢের
হচ্ছেও! ব্রুল ম্যাজিষ্টরের ঘরেও ত বিধবা
বিরে চলেছে—আর আমাদের দিলেই কি
দোব! আমি ত দোব দেখিনে, হলে ত
ভালই। শশিমুণীর মত মেরে আর কোণার
পাব,—আর তাকে নইলে আমার ঘরই বা
চলে কি করে?

বরদার প্রবেশ।

ব। বৌদিদি আর এক শুঁরেমি ক'রোনা। টাকাই তোমার এত বড় হোল ? ছেলের স্থুখটা দেখবে না ?

গৃ। (স্বগত:—ঠাকুরবিরও দেশছি মত আছে—ভাশই হোল!) তা বোন তোমরা সকলে যথন বলছ আমি আর রাজিনা হরে কি করি বল!

व। वोनिनि वामात्र नक्ती!

গি। কিন্ত একটা ভাবছি লোকে কি বলবে ?

ব। লোকে ভালই বলবে ! দাদা হলেন উন্নতি-বিধানিশীন সভাপতি—তাঁর কাজে কথান এক হলে লোকে ত বাহবাই দেবে।

গি। তাহলে তোর মনে হচ্ছে—বিরেটা হলে ভাল ? ব। খুব ভাল। তা শার একবার করে বলতে। আমি একণি বিনোদকে বলে আসি। আহা কতদিন ধরে যে বাছা তোমাকে তার হয়ে বলার জন্ত আমাকে সাধছে।

বরদার প্রস্থান। কর্ত্তার প্রবেশ।

গি। স্বগতঃ, (আমার আর বেতে হোলনা—আপনিই দুরে কিন্তে এনে পড়েছেন দেখছি!) আহা! এখনো কি মাণাটা ধরে আছে? একটু অভিকলম দিয়ে দেব? (কোলঙ্গার কুঁজা হইতে একটা গ্লাসে জল ঢালন) ক। নানা আমার একটুও মাণা ধরেনি।

(এক গ্লাসজলে এক ফোঁটা অভিকলম ঢালিয়া)
গি। আহা দিই না একটু অভিকলম,—
নিশ্চর মাথা ধরেছে তুমি বলছ না,—মুখখানা
ষেরকম বিমর্ব দেখছি! আমার কাছে কি
কিছু লুকোবার যো আছে!

(মাথায় মুখে জলের ছিটা প্রদান)

ক। দোহাই ভোমার! আর না,
আর না,—আমি বেশ সেরে উঠেছি—বেশ
তাজা মনে হচ্ছে—নিশ্চর করে বলছি—আর
একটুও বিমর্ধ নেই।

গি। ঠিক বলছ ত ? ভা দেখলে অভিকলম দিতেই কেমন নাণাটা সেরে গেল,—আর একটু দিয়ে দিই—তাতে ত আর দোব নেই—

(গ্লানের জ্বলটা মাধার ঢালিতে ঢালিতে) আর গরম মনে হচ্চে না ? বেশ আর্ম করছে ? ক। কর কি কর কি ? গরম—! শীতে কাঁপছি—

র্গি। সে আবার কি? কুইনিনের শিশিটা আনব নাকি! ভয় করে যে,—জ্বরুর ত হবেজা—

ক। নাগো না—রক্ষা কর—আমি বেশ আছি—আন্ত মাত্র্বটাকে তুমি দেখছি গঙ্গা-যাত্রা করাবে!

গি। ভনলে কথার ছিরি! ওরকম করে গালাগালি দিওনা বলছি। তাহলে একাদশী কে করবে ভনি! তুমি না আমি? গারের গহনা মাথার সিঁহুর থসবে কার? তোমার না আমার? ভাল কথা বল্লেও আদকাল দোষ! হারুরে—এত হঃধও অদুষ্টে ছিল?

কপালে করাখাত করিয়া ক্রন্সন।

ক : ঘাট হয়েছে—ঘাট হয়েছে—এমন

কথা আর বলব না—থাম থাম—

(চক্ষু মুছাইতে মুছাইতে)

তুমি আমার তালুক মূলুক তুমি টাকার তোড়া!
তুমি চেলি বারাণনী তুমি শালের জোড়া।
হেদে হেদে কাছে এদে—সকল হঃথ ঘূচো,
অধীন তোমার দাসামূদাস—শ্রীচরণের ছুঁচো।

গি। (হাসিয়া হাত ঠেলিয়া) সঁর' কথা ভনলে লোকে ভাববে যেন কতই ভালবাস; .কিন্তু—

ক। ভাল বাদিনে ?

কি বলব গো চাঁদবদনী কত ভালবাদি !

তোমার ঐ একনয়নে মধুর ধারা—

এক নয়নে হাসি ! গি। দেখ ভূমি একশবার চাঁদবদনী— চাঁদবদনী ক'র না, চাঁদ নামটা শুনলেও আমার গা জলে যায়।

ক। আছো এবার থেকে আমি তোমাকে ক্ষণবদনা বলতেও রাজি আছি— তোমারও কিন্তু শশীকে বিদায় করতে হবে।

গি। আমি ভেবে দেখছি সে কাজটা ঠিক হবে না। ছেলের যখন অত মন পড়েছে— তখন আমাদের নারাজ হওয়াটা কি ভাল? ভাতে নিশ্চয়ই উণ্ট উৎপত্তি হবে।

ক। কি সর্বাশ তুমি ওর সঙ্গে ছেলের বিয়ে দিতেও রাজি! তুমি দেখছি সব পার সব পার!

গৃ। তা কেন দেব না ? অমন মেয়ে আর কোথায় পাব বলদেখি ? আর তুমি বে সভার প্রতিজ্ঞা করেছ বিয়েতে টাকা নেবে না,—সেদিকেও এতে পণ বজার থাকবে,—সভাপতির উপযুক্ত কাজ করা হবে।

ক। কিন্তু ও যে বিধবা ?

গি। কেন আজ কাল ত বিধবার বিদ্নে শাস্ত্রর সম্মত হয়েছে, কত বড় বড় লোকে মেয়ের আবার বিয়ে দিচ্ছে।

ক। ওগোদে ত নিজের মেয়ের। বিধবা মেয়েকে ত কেউ ঘরে আনছেনা।

গি। তা না হয় তুমিই আনবে—তুমিই পথ দেথাবে; তাতে তোমার কত নাম হবে বল দেখি ? স্বাই ধন্যি সভাপতি বলবে।

ক। এটা যে কলিযুগ গো গিন্নি ? তুমি

একে সত্যমুগ বলে বিশ্বাস করলে ত চলবেনা।

এখনি ঠেলা খেন্নে জেগে উঠতে হবে।

খবরের কাগজ পড় না—তাইত হরেছেগোল!

গি। জানিগো জানি সব জানি—থবরের কাগজ না পড়েও জানি। এখন আরে এক- ষরের ভর নেই—ঠেলা থেরে না হয় লোকে একঘর থেকে আর একঘরে গিয়ে দাঁড়াবে। এখন গুনৌকয় পা দিয়েও বেশ চলে যাওয়া যায়, কেবল যদি মনের বলচুকু থাকে।

क। तथ-

গি। আমি বেশ দেখছি। তোমরাই আমাদের বেলা চোধ থাকতেও কানা, আর প্রাণ
থাকতেও মড়া; ১০।১২ বছরের ছোট ছোট
মেরেগুলো বদি বিয়ের প্রদিনই বিধবা
হোল তব্ তার আবার বিয়ের নাম মুধে
আনলেও জাত যায়—আর আমি যদি আজ
মরি—তাহলে তুমি—

ক। (কর্ণে অঙ্গুলি দিয়া) রাম রাম!
ওকথা বলতে আছে। নিশ্চর বলছি আমি
ভাহলে সহমরণে যাব!

গি। দেখ মড়ার উপর থাঁড়ার ঘা
দিওনা বলছি। এ পোড়া দেশে মেয়ের
জন্ম কেন যে ভগবান দেন তা ব্রুতে
পারিনে। এমনি অদৃষ্ট—একজন ধি তাদের
ছঃখে চোখের জল ফেল্লে-ত অমনি দশজনে
হাঁ হাঁ করে তাকে মারতে ছুটবে!

ক। তোমার ছটি চরণে ধরি—দোহাই তোমার থামবে!

গি। থামব কেন ? দেখে শুনে সব্ধশরীর জলে শেল! যে জাত মেরেদের এত
হুঃথ দেশ—তার মঙ্গল নেই—নেই—এই
আমি তোম:কে বাল দিলুম।

ক। আচঃ আমি তোমাকে অনুমতি দিয়ে বাব;—আমি মরলে তুমি আবার বিয়ে করতে পার এমনতর উইল করেও বাব,—তাহলেই ত সব ছঃখ ঘুচবে ?

গি। দেখ হুংখের সমর ঠাটার আরো

প্রাণ জলে ? তুমি কি ভাব, বিধবাদের বিরে
চলিত হলেই সব বিধবারা জননি বিরে করতে
যাবে! মেরেদের পুরুবের মত পাওনি গো—
কুমারীরাই বিরে করতে চার না—তা বিধবা!
তবে কেবল একটা পথ খুলে রাধা;—শেরেরা
অসহার জাত—তেমন কইকর অবস্থার কেউ
বিদি চার—ত বিরে করাই ভাল। কিন্তু
তাদের কটে রেখেই ভোমাদের বত ধর্ম
বত পুণিা,—হার হার! বিলহারী হাই!
আর এদিকে সব উরতিবিধায়িনীর সভাগতি,
সম্পাদক,—সহকারী এই সব!

ক। দেখ অনেকক্ষণ ধরে তোমার গাঁজাখুরী বেলেলাগিরি কথা শুনেছি—আর পারিনে। তোমার মাথা দেখছি একেবারে গেছে। যতক্ষণ শশী এ বাড়ীতে আছে—ততক্ষণ তুমি দেখছি কবন্ধ হরেই থাকবে। ওকে না তাড়িয়ে আমি জ্বলগ্রহণ করছি নে।

গি। কি ! তোমার দেখছি যত বড় মুধ না তত বড় কথা ! আগে তোমার চক্রকে তাড়াও দেখি।

ক। আমার চক্র ত কোন দোষ করেনি। সেত আর তোমার শশীকে বিরে করতে চারনি ?—

গি। ও: তুমি বুবি তাই চাও ? বুকেছি তোমার মংলবধানা,—আর বলতে হবে না! সেইজন্তই দেখছি যত হেলাম! কিছ প্রাণ থাকতে আমি তা হতে দিছিনে।, হতভাগা, লক্ষীছাড়া সে আমার শশীকে বিমে

ক। দেখ অমন করে গাল দিওনা বলছি! জান সে আমার সম্পর্কীর লোক^{ত্র} আমার—আমার আপনার অন্তর্ম আত্মীর! গি। হি হি হি — তোমার স্থাপনার অন্তরন্ত — আস্মীয় !

ক। কি হাসিরই ছিরি। আমার আত্মীর নাত কি ? আমার ভগিনীপোতের শানার শেক্ষ্মপুত্র—

গি। আর শশী বে আমার তার চেয়েও আপনার,—আমার বোনের সইএর পাতান মেরে। তোমার সম্পর্ক বড় না আমার ?

ক। আছো বাজি?

গি। কত?

क। मन छोका।

গি। বেশ দাও,—আমার জিৎ—আমি ঠিক বলছি।

ক। তুমি বল্লেই ত হবে না---

গি। আছা সালিসি মান-

ক। কাকে?

(वत्रमात्र व्यत्वम)

আছা বেশ, বরুকেই সালিসি মানা ধাক।
গি। আছো ঠাকুরঝি তুমিই বল,
চন্দ্রকাস্ত হোল ওঁর ভগিনীপতির শালার
পোষ্মপুত্র—আর শশী হোল আমার বোনের
খাণ্ডড়ির সইএর পাতান মেয়ে; কে বেশি
আপনার বল দেখি ?

ব। তাইত—আমি ঠিক বলতে পারছিনে— সমস্যা বটে ! টোলের মত নেও।—

.ক। তবু 'কমন সেম্পে'—এই সহজ্ঞ বৃদ্ধিতে কি বলে—তাই বল্না ছাই!

ব। দাদারই যেন বেশী আপনার মনে হচ্ছে। চশ্রকান্ত হোল গুপুরুষে আর শশী হচ্ছে—তিন পুরুষে তফাং।

গি। পক্ষপাতিনী ! চন্দ্রর সঙ্গে ভগিনী-পতের সম্পর্ক ধরে সম্পর্ক, আর শনীর সম্পর্ক হচ্ছে বোন থেকে। চক্সকান্ত কর্ত্তার ভগিনীপতির শালার প্রি। আর শশী হোল আমার বোনের শাণ্ডভির সইএর পুরা! ভগিনপত আগনার না বোন আপনার? সব বুঝেছি সব বুঝেছি, সবাই মিলে আমাকে ভগবান ভূত করে চক্সকান্তের সঙ্গে ওর বিয়ে দেবেন এই চেন্তা। তা আমি প্রাণ ধরে কথনই দেব না। ও আমার শশিম্থীরে—সোনারমণি দধির থনি, প্রাণ জুড়ান ধনরে,—তোকে আমি প্রাণ থাকতে আর কাউকে দিতে পারব না।

ক্রন্দন করিতে করিতে প্রায়ন। ব। দাদা ব্যাপারখানা কি ?

ক। কি বলব—সর্বনাশ উপস্থিত।
বিনোদটা দেখি শশীর হাত ধরে বলছে তুমি
আমাকে রক্ষা কর—তুমি আমার জীবনমরণ
এই সব।

ব। ওঃ বুঝেছি! তাই ভন্ন পেন্নেছ?
ঠাপা হও। সে আমিই শিবিরে দিয়েছিলুম।
বলুম শশীকে গিন্নে ধরে পড়—সে যদি মনে
করে হরিবাবুর মেন্নের সঙ্গে এখনি বিল্নে
হয়ে যাবে।

ক। তাই বটে! আঃ বাঁচলুম। মাথা থেকে ধেন পাছাড় নামল! সকল মুনিরই তাহলে দেথছি একরকম যুক্তি। চক্রকাস্তও আমাকে ঐ পরামর্শ দিয়েছে। আমার ইচ্ছা কিন্তু শশেটাকে দেশছাড়া করি।

ব। তার হচ্ছে দোবলা উপায়—

क। कि कि-वन वन-आः शहास-

व। চन्क्रकारश्चत्र महन्न मनीत्र विरत्ने। नित्त्र नांश्व मव नार्गात्रा हृदक याद्य।

ক। কি সোজা উপায়ই বল্লে মরে

যাই !—চক্রটা শুদ্ধ তাহলে হাতছাড়া হয়ে যাবে। সে আমি কিছুতেই পারছিনে— তার চেয়ে গিন্নি ছেলের সঙ্গে তার বিয়ে দিতে চান তা দিন।

ব। কি যে দাদা বল! চক্রর সঙ্গে বিষে হলে শনী এমন মুটোর মধ্যে হবে— যে তথন তার টুঁশকটিও থাকবে না।

ক। বটে ? স্বামি ত চিরদিন উল্টোটাই দেখছি। বিয়ে হলে চক্ররই ভেড়া বনার বেশী সম্ভাবনা।

ব। তোমার মতন কিনা সবাই! তাহলে আমার সংসার এমন হোত না।

ক। দেখি চক্রকে বলে। কিন্তু গিন্নি রাজি হবেন না— (নাথা মাড়িতে নাড়িতে) সে আমি বেশ বুঝেছি।

ব। রাজি হবেন না? আছো দাদা দেখে নিও।

ক। (দীর্ঘনিশাস সহকারে) তবে তাই হোক্; যা ভাল বোঝ তাই কর।

প্রস্থানোগ্যত।

ব। দেখ দাদা, একটু শক্ত হৌয়ো! অত নরম হলে সংসার চলে না।

ক। (ফিরিয়া দাঁড়াইয়া) নরম ! বা থেয়ে থেয়ে মনটার আগাগোড়া ঘাঁটা পড়ে গেছে। যাহক, দেখি কোথাকার জল কেুশ্বায় গড়ায়!

উভয়ের প্রস্থান এবং গান গাহিতে গাহিতে

কর্ত্তার পুনঃ প্রবেশ।
কোথা তুমি প্রাণেশবি !
ঘোর—বিরহ তুফান—গরজে কামান—
অভয় কর দান—কর্ণে ধরি !
দোষ করে থাকি রোষ ভূলে যাও,
গজেন্দ্র চরণে স্থান তবু দাও,—
দীন অভাজনে বারেক ফিরে চাও,
অস্তিমে কাতরে শ্মরি ।
এস—ক্রকুটি লোচনে—প্রাণ চমকিয়া
এস—প্রথর বচনে কান মুখ্রিয়া
এস—নিম-অধ্রে—ভীম হাদিয়া
দেখি তুনয়ন ভরি !
গাহিতে গাহিতে প্রস্থান।

ঝড়ের রাতে।

ঝড়ের রাতে তোমার অভিসার, পরাণ সথা বন্ধু হে আমার !

আকাশ কাঁদে হতাশ সম,
নাই যে পুন নয়নে মম,
ছয়ার থুলি, হে প্রিয়তম,
চাই যে বারেবার!
পরাণ স্থা বন্ধু হে আমার!

বাহিরে কিছু দেখিতে নাহি পাই,
তোমার পথ কোথায়, ভাবি তাই !
স্থদ্র কোন্ নদীর পারে,
গহন কোন্ বনের ধারে,
গভীর কোন্ অন্ধকারে
হতেছ তুমি পার—
পরাণ সথা বন্ধ হে আমার !

গ্রীরবীক্ষনাথ ঠাকুর

র্ষিট।

(চীন গল্পের ইংরাজী হইতে)

কুর্বরের পুত্র ! তাঁর নামের জয় বিশ্বময় ব্যাপ্ত হোক্ ! সম্রাট লি-ও-এ মর্ম্মর প্রাসাদের বাতায়নে দাঁড়াইয়া ছিলেন।

বর্দ তাঁর অর, মনটা কাজেই করুণার ভরা! চারিদিকে অতুল ঐশ্বর্যা প্রমোদ বিলাদ, তবু তার মধ্যেও তাঁর মন থেকে দীনছঃখীর কথাটুকু কথনো দরে যেত না!

র্ষ্টি পড়িতেছিল! মুষলধারে অবিশ্রাস্ত রুষ্টি! আকাশ যেন কাঁদিতেছিল, চারিধারে গাছপালা স্কুলপল্লবও যেন তারি সঙ্গে চোথের জল ফেলিতেছিল!

সমাটের হাদয় করণায় আর্দ্র হইয়া
আসিল। পথের দিকে চাহিয়াই তিনি
কহিলেন, "আহা, ঐ লোকটির কি কট্ট। এই
আবিপ্রান্ত বৃষ্টিতে পথে চলেছে, মাথায় একটা
টুপিও নাই!" পশ্চাতে ফিরিয়া বয়শুকে
সমোধন করিয়া কহিলেন, "আমি জানিতে
চাই আমার পিকিনে এমন হতভাগা ক'জন
আছে—মাথায় একটা টুপি দিবারও যাদের
সামর্থ্য নাই ৪০

জাম নত করিয়া অবনত শিরে মুঙ্-হি-সাঙ্ উত্তর দিল,—"স্থ্যের স্থায় ভাষর, স্ক্শক্তিমান, রাজরাজেশ্বর, আপনার আজ্ঞা শিরোধার্যা! স্ম্যান্তের মধ্যেই, হে চরাচরের ভাগ্য বিধাতা, এ সংবাদ রাজগোচরে আসিবে!"

স্থাটের মূথে মৃত হাসি দেখা দিল; ^{এবং} স্ত[্]হি-সাত্ নিমেষে প্রধান মন্ত্রী সান-চি-সানের সমূথে উপস্থিত হইল, তথনো তাঁহার কথা কহিবার শক্তি ছিল না—ব্যস্ততা নিবন্ধন খাস কন্ধ হইবার উপক্রম হইরাছিল —প্রধান মন্ত্রীর প্রাপ্য ভাষ্য সম্মান্টুকুও তাঁহাকে প্রদান করিতে রাজ্বরম্ম ভূলিয়া গিয়াছিল!

অতিকটে নিশ্বাস ফেলিয়া স্থঙ্-হি-সাঙ্
কহিল—"বিশ্বের আনন্দ, আমাদিগের সর্কময়
প্রভু বিরক্ত হইয়াছেন! এত বড় বেয়াদব
এই লোকগুলা, মাথায় টুপি না দিয়া পথে
চলে! সম্রাট তাদের ব্যবহারে বিরক্ত হইয়াছেন! তিনি জানিতে চান, এমন লোক
পিকিনে কতগুলা আছে ?"

"এতদুর স্বাম্পর্কা তাদের ?" সান্-চি-সান্ ক্রোধে কাঁপিয়া উঠিলেন; সেনাপতি পি-হি-ভো'র তথনি তলব পঞ্জি।

পি-হি-ভো নতশিরে মন্ত্রীকে অভিবাদন করিয়া, সমুথে দাঁড়াইলে মন্ত্রী কহিলেন, "প্রাসাদে হঃসংবাদ! প্রভু রাজ্যে বিশৃঙ্খলা লক্ষ্য করিয়াছেন!"

বিশায়-স্তম্ভিত পি-ছি-ভো উত্তর করিল, "সে কি ? এমন একটা ছায়া-নিবিড় কানন নাই যা' পিকিনের পথ ও প্রাসাদের মধ্যে একটা আবরণের স্পৃষ্টি করে ?"

সান-চি-সান্ কহিলেন, "কেমন করিয়া এ ব্যাপার ঘটল আমি ঠিক বলিভে পারি না। কিন্ত এই যে লোকগুলা মাথায় টুপি না দিয়া পথে চলে, ইহাদিগের জন্মই আমা-দিগের সমাট আজ বিরক্ত হইয়া উঠিয়াছেন। পিকিনে এমন বদমারেশ লোক কভগুলা আছে, তিনি আজই জানিতে চাহেন। ব্যবস্থা কর।"

সূহুর্ত্তে স্বস্থানে কিরিরা পি-হি-ভো ক্স্নুচর বুন্দকে আদেশ করিল, "ডাকো সেই বুড়া কুকুর জুর-সাঙ্টাকে! এখনি!"

নগর-রক্ষক বৃদ্ধ ভ্র-সাঙ্কম্পিত দেহে
শক্ষিত মনে সেনাপতির সমুথে আসিয়া যথন
ভাহার পদপ্রাস্তে আশ্রম প্রার্থনা করিয়া
দাঁড়াইল তথন পি-হি-ভো তাহাকে তিরস্কার
বাণে রীতিমত কর্জরিত করিয়া তুলিল।

"বেয়াদপ্, পাজী, বিশ্বাস্থাতক, তোমার জন্ম কি আজ আমরা সকলে রাজ্বোযানলে দগ্ম হব ?"

কাঁপিতে কাঁপিতে জুর-সাঙ্ কহিল, "হুজুরের ক্রোংগর কারণ জানিলে সমস্ত নিবেদন করিতে পারি। নচেৎ আপনার কথার মশ্ম ঠিক গ্রহণ করিতে পারিতেছি না ত'!"

"বৃড়া কুকুর, এত বড় নগররকা কি তোমার কাজ? কতকগুলা শুকরের পাল চরাও গিয়া! চীল-সমাট শ্বয়ং নগরে বিশৃত্বলা প্রত্যক্ষ করিয়াছেল! পথে কতকগুলা বেয়াদপ ঘ্রিয়া বেড়ায়—মাথার টুপিও জোটে না! সন্ধ্যার পূর্বা অবধি সময় দিলাম—এমন বেয়াদপ পিকিনে কডগুলা আছে, সংবাদ আনো!"

ভূমিতে তিনবার শিরস্পর্শ করিয়া ভূর সাঙ্কিলে, শুনেশন প্রভূর সাজ্ঞ। পালিত হবে।" বলিয়া ভূর-সাঙ্নিমেবেই সে হান ত্যাগ করিল এবং অবিলম্বে রুহৎ ঘণ্টায় চৌকিলারদিগের তলব পড়িল। "হতভাগা ভূতের বল, তোনাদিগতে বীরতে পূড়াইরা মারিলেও রাগ মেটে না এমন করিরা তোমরা সহর চৌকি দাও বৃষ্টিতে লোকওলা মাধার টুপি না দিরাপ চলে? যাও, যাদের মাধার টুপি নাই, এখা এক ঘণ্টার মধ্যে ভাদের ধরিরা আমার সামতে হাজির কর।"

চৌকিধারের ধল গালি থাইরা বাহি

হইয়া পড়িল এবং চকিতে পিকিনের পা

পথে টুপি-হান লোক ধরিবার জন্ম রীতিম্ভ

হলস্থল পড়িরা গেল।

"ধর! পাকড়াও" শব্দে সকলে শশব্যন্ত হইয়া উঠিল। বিড়ালে ষেমন করিয়া ইল্বর ধরে, তেমন করিয়াই এই চৌকিলারগুলা লোক ধরিতে লাগিল! বাড়ীর প্রাচীরের পার্ম, বাগানের বেড়ার পশ্চাৎ, নলীর ধার, রক্ষের শাখা যেখানে বেচারারা পুকাইয়াছিল সেকল স্থানও চৌকিলারদিগের তীত্র দৃষ্টি অতিক্রম করিতে পারিল না। আধ ঘণ্টার মধ্যে পিকিনের কারাপ্রাক্ষণ এই সকল টুপিইন অভাগাদের কঙ্কণ আর্জনাদে পূর্ণ হইয়াগেল!

জুর-সাঙ্ সগর্বে জিজ্ঞাসা করিল, "গুণ্তিতে কত হবে ?" চৌকিদারেরা কহিল, "বিশহাজার আট শ একান্তর জন !" জুরসাঙ্
ছকুম দিল, "সবার মাথা কাটো!" আধ-ঘণ্টার মধ্যে কারাপ্রাজণে বিশহাজার আট শ' একান্তরাট হতভাগ্য চীননাসীর শিরহীন" দেহ গড়াগড়ি যাইতে লাগিল। সংবাদ লইরা জুর-সাঙ্ পি হি-ভোর সমুখে উপস্থিত হইল। পি হি-ভো আদিয়া সান-চি-সান্কে, ও সানু-চি-সান স্থঙ্-হি-সাঙ্কে সংবাদ-জ্ঞাপন করিল।

তথ্ন স্থা নামিরা আসিতেছিল। নত্র লাস্ত সন্ধা। রৃষ্টি থামিরা গিরাছিল। বারুম্পর্শে বৃক্ষপত্র বির বির করিরা কাঁপিতেছিল এবং পল্লব ইতে হারার টুকরার মত বৃষ্টি বিন্দু ভূমিতে গড়াইরা পড়িতেছিল। স্লিয় স্থোর আলোকে, পাধীর গানে ও মধুর পুশাস্তরভিতে সারা আকাশ ভরিনা গিরাছিল।

সমস্ত বাগানখানি যেন শ্বান করিয়া উঠিয়াছিল! কেমন-একটা ঔব্বল্য, কেমন-একটা ঔব্বল্য, কেমন-একটা আনন্দ যেন ঠিকরিয়া পড়িতেছিল! ঈবরের পুত্র ও প্রতিনিধি শ্বরং সম্রাট লি-ও-এ বাতায়নে দাঁড়াইয়া এই অপূর্ব্ব শোভা দেখিতেছিলেন। চারিধারে এত শোভা, এত দৌন্দর্য্য দেখিয়াও তিনি সেই হতভাগ্যদের কথা ভূলিতে পারেন নাই!

হুঙ্-হি-দাঙের দিকে ফিরিয়া তিনি বলিলেন,"ভাল কথা! সেই অভাগাদের সংবাদ নিয়াছিলে—আহা, বেচারারা একটা টুপি অবধি মাধার দিতে পার না?"

মন্তক নত করিয়া স্ত_্হি-সাঙ**্কহিল,** "ভ্তাগণ প্রভুর আজা তথনি পালন করিয়াছে!"

"এমন অভাগা ক'জন আছে? সত্য করিয়া বল, মিথ্যা বলিয়ো না।" "সারা পিকিনে একটিও এমন হতভাগা নাই, বার একটী টুপি মাথার দিবার সাম্ধ্র নাই! বরং প্রভুষ সমুধে শপথ করিরা এ কথা বলিতে পারি!" স্লঙ্-হি-সাঙ্ এক হাত আপনার বক্ষে রাথিয়া অপর হাত আকাশের দিকে তুলিয়া অকম্পিত কণ্ঠে স্পষ্ট স্বরে এই কথাগুলি বলিনেন।

অপূর্ব উল্লাসে, অপূর্ব পুলকহান্তে সমাটের প্রশাস্ত বদন সমূজ্জল হইরা উঠিল! তিনি মুগ্ধকঠে কহিলেন,—

"হ্রথের রাজ্য! সোনার দেশ! আর কি হ্রথী আমি যে আমার রাজ্যে দৈন্ত নাই, দারিজ্য নাই, হঃধ নাই! প্রজার হঃধ-ক্লেশ ইঙ্গিতে দুর হয়!"

স্থ - হি-সাঙ্ বারবার আভূমি প্রণত হইরা সমাটকে সন্ধান প্রদর্শন করিল।

সমাটের মুখে হাসি দেখিরা প্রাসাদের সকলে আজ আনন্দ লাভ করিয়াছে !

প্রস্থার-স্বরূপ সান-চি-সান, পি-হি-ভো ও জুর
সাঙ্ বিশিষ্ট রাজোপাধিতে ভ্ষিত হইলেন।
সমগ্র নগঙ্গে বিরাট আনন্দোৎসব পড়িয়া
গেল! বিংশসহস্রাধিক নরকন্ধালে সারা
পিকিনের আনন্দ কোলাহল এতটুকু রোধ
করিতে পারিল না।

बी भोतीस्प्राहन मूर्थाभाषात ।

স্বরলিপি। মিশ্র বাগেশ্রী—খেমটা।

মনের উচ্ছাস বাঁধতে নারি,
হার কি করি হোল একি !
হাসির তুকাণ অধর পুটে,
আকুল বেপে আপনি চুটে
নয়ন কোণে ব্যক্ত লুটে—

অলে রজ ৰাধামাধি।
বন্তন করে বন্তই চাপি, হৃদর ৰাপী—
তন্তই যেন ওঠে কাপি
একুল গুকুল ছাপি,
কেমন করে ধরে রাধি!

 $\|$ সা সা-মা $\|$ মা মা - $\|$ । মা - $\|$ ধা $\|$ ধা পা- $\|$ মা -छड़। छड़। छड़। उट्टा उट्टा - मा $\|$ উচ্চাদ • বাঁধু • তে নারি • হায় • কি ক রি • म त्न त् । जो जो ने। नो नो ने। शिमाने। धो धो ना। नो नी -र्ज़नी। नो नी ने I একি ৽ হাসির তুফান্• অধর্ इन • श्रु एवं 🎾 । र्मार्मा-ना। र्मार्मा-र्जा। 4 र्मा-ागा। धाशा-। I} $\{-1-1$ ्या। गाधागा। আপনি ছোটে• আ কু ল্ • • ন মুন কোণে বে গে • । ধার্সাণা। ধাপা-1I} মা-1ধা। পা-1পা। মাম্ভরা-1। রাসা-ন্॥ বা • ঙ্গ লোটে • অ • ঙ্গের • ঙ্গ মা ধা • মাখি • । मो मो - मो । मो मो - । । मो शो - । । शो शो - । । शो शो - गा । गो मी - ।। য তন ৽ করে ৽ য তই ৽ চাপি ৽ হা দয় • বাপী • ত তই • ও ০ঠে ফাঁপি০ ০০০ •০০ •০ এ কুল ও কুল । **ধাर्সাণা। ধা**পা-। I}- †- † মা। ধাপাপা। মা^{ন্}জ्ঞा-।। রাসান্।॥ ছ ॰ কুল ছাপি ॰ ॰ কে মন করে ধরে ॰ রাখি • ॥

সমালোচনা।

তাঁহাদের দেই প্রচেষ্টা ধৃষ্টত। বলিয়া বিকৃত হইত লা।
বতদিন ভারতবর্ধ জ্ঞানগরিষ্ঠ বলিয়া পৃঞ্জিত ততদিন
পর্যান্ত দেখা যার ভারতীয় নারীসমাজও সেই অর্থার
অংশ লইয়াছেন। এবং যখনই নারীসমাজ অবরুদ্ধ
উপেক্ষিত ও শিক্ষাহীন তখনই ভারতও হীন হইয়া
শুধু প্রাচীন কালের দোহাই দিয়া কোনোমতে
টি কিয়া থাকিবার চেষ্টা করিতেছে।" আলকাল
'ত্রীশিক্ষা' বলিলেই ভাহার সহিত যেনু অনেকথানি
তর্ক, অনেকথানি সমস্তা মিল্লিত আছে বলিয়া মনে
হয় কিন্তু পুরাকালে সেরুপ ছিল লা। "ক্ল্যাণোব
পালনীয়া শিক্ষণীয়াতিয়ন্তঃ !" অনেকে যে আপনাদিগের জননী, জ্য়ী, পত্নী প্রভৃতিকে তেমন প্রদার ব

অন্যতম কারণ! কণাটা শুনিতে রুঢ় হইলেও যে সত্য সে সম্বন্ধে সংশয় করিবার কারণ নাই। বে শিকা জনমের সমন্ত সন্ধার্ণত। দূর করে, জ্ঞানে যে হারয়কে উল্লভ कत्त्र मिर्श निका-कान ध्यवर्षिक न। इरेन धामाहिरगत নারীসমাল শ্রদ্ধা হারাইরা নিজের অন্তিত্ব অবধি हातारेत्रा स्कृतित्वन ; এवः देशद्रवन्त्र शुक्रवरे मस्तार्शका দারী। সুমাতা না হইলে সুসন্তানের আশা বাতুলতা মাত্র, এ কথা জগতের সকল জাতিই একবাক্যে খীকার করিয়া থাকেন। শিক্ষার প্রণালী সম্বন্ধে মতভেদ शांकित्वछ निका ए नर्सशा श्राह्मकारीय, ता नयरक শিক্ষিত সমাজের মতহৈধ হইতেই পারে না! সেই মুদুর অতীত যুগ হইতে আরম্ভ করিয়া বর্তমান যুগের প্রারম্ভ কাল অবধি ভারতীয় নারী বিদ্যা ওজানে আপনাকে কিরূপ মহীরসী করিয়া তুলিয়াছিলেন, আপনার গৃহধর্শের গণ্ডী অতিক্রম না করিয়াও জ্ঞানে কিরূপে পুরুষের সমকক্ষতা করিয়াছিলেন, বর্জমান গ্রন্থে তাহার বিশদ আভাষ পাওয়া যায়।

प्रिंग कारण नात्रीशंग विषये व्यविष त्राच्या করিতেন। বিশ্ববারা, ইন্সমাতৃগণ বাক্, অপালা, অদিতি প্রভৃতির কাহিনী ভাহার প্রকৃষ্ট প্রমাণ। গ্রন্থানির আরো কয়েকটি বিশেষত্ব আমরা লক্ষ্য করিরাছি; প্রথম, গ্রন্থকার কল্পনার তুলি লইয়া বক্তবাটুকু অতি-রঞিত করেন নাই—যাঁহার সম্বন্ধে ষেটুকু পরিচয় পাইয়াছেন অবিষ্ণুতভাবে পাঠককে তাহাই ভিনি উপহার দিয়াছেন—কল্পনাবিকাশের লোভ সম্বরণের ফলে গ্রন্থণানি প্রামাণাম্বরূপ গ্রহণ করা যাইতে পারে: দিতীয়তঃ, কাহিনীগুলি এমনই হাদরগ্রাহী হইয়াছে যে পাঠ করিবার সময় প্রাচ্যজ্ঞানের প্রতি গভীরতন अकात, अवः छेरमार्ड ७ जानत्म क्रमत्र पूर्व इहेना छर्छ, অবসল্লৰ সঞ্জীবিত হয়, ভবিষ্যতের আশা ছ্রাশা • মনে হয় না৷ হায়, কবে আবার আমাদিগের বাঙ্গালার যাতা ভগ্নী পদ্ধীগৰ এই সকল মহিমাহিতা দেবীগণের অংশদস্তৃতা বলিয়া জগতের শ্রদ্ধা আকর্ষণ করিবেন ৷ পরিশেষে ব**ক্ত**ব্য, গ্রন্থের ছাপা কাগ**ল** वश्तिवत्रवर्भ स्वन्तत्र स्टेन्नोट्सः। এই গ্ৰন্থ বাজালার ^{গৃহে} গৃহে বিরাজ করুক, ইহাই আমাদিগের প্রার্থনা।

কেশব-জ্যোতি। নিভারিণী দেবী বনোজনা রচয়িঞী। কুন্তলীন প্রেসে জ্ঞীপূর্বচন্দ্র দাস-কর্তৃক মুজিত ও প্রকাশিত। গ্রন্থখনি শোক-কাব্য। 'জ্যোতিল্রপ্রসাদ সাক্রালে'র অকালমূত্যুতে শোক-বিহরলা আত্মীয়ার আক্ষেপ। অর্গীয় আত্মা জগবানের চরণে বিরামলাভ করুক, শোকার্ড গৃহ শান্ত হউক, ইহা ভিন্ন আমাদিসের আর কি বজুব্য থাকিতে পারে? গ্রন্থখনি বিক্রমের জন্তু কি না, তাহা জানি না, তবে বিষয়বোধে সমালোচনার সাব্রী;নহে।

সাজি। প্রথম তবক। জীহিমাণ্ডেপ্রকাশ রায়। বারগঙা, গিরিডি! কুন্তলীন প্রেসে জীপুর্ণচন্দ্র দাস হারা মুক্তিত ও প্রকাশিত। সন ১৩১৫ সাল। মূল্য ছই আনা। লেখক 'নিবেদনে' বলিভেছেন, "কবি রবীন্দ্রনাথ তাঁহার 'কণিকা' পুন্তকে যে পথ আবিন্ধার করেন সেই পথ ধরিয়া পদ্যে সামান্ত কিছু লিখিবার চেটা করিলাম।" কিন্তু ভূভাগ্যক্রমে তাঁহার চেটা ব্যর্থ হইয়াছে।

সহধৰ্মিণী। পণ্ডিত এীযুক্ত ভোলানাথ কবি-রত্ব ভট্টাচার্য্য সম্পাদিত। প্রকাশক জীহরিপ্রসন্ন মুখোপাধ্যায় ও ৰীম্বরেন্দ্রনাথ সিংহ। ৺কাশীধান, ১৩১ शाम। महामञ्जी (अपन अवक्यक्मात म्या-পাধ্যায় ধারা মুদ্রিত। মূল্য আট আনা মাত্র। গ্রন্থানির বিভ্ত সমালোচনার আবশ্রক দেখি না-ইহার ভূমিকা হইতেই পাঠক পুতকের পরিচয় পাইবেন। "'সহধর্মিণী'র ভূমিকা বিষয়ে পাঠক-পাঠিকাবর্গের কিছু জানিবার থাকিলেও সম্পাদকের যুক্তিযুক্ত উদাসীশ্রপ্রযুক্ত তাহা একেবারেই না হইবার कथा (वर्ष कि ।)। कांत्र वह महधर्षिणीटक वाख-विक याँहाता महधर्षिणी छात्न आहत এवः यष्ट्र করিবেন তাঁহারা ইহার ভূমিকা বা গৌরচন্দ্রিকার কোনক্লপ প্রয়োজন মনে করিবেন বলিয়া বোধ হয় ৰা। ধর্মপ্রাণ মানববুন্দের সহধর্মিণীই জল্পে জন্মে প্রতিকর্মে ধর্মের একষাত্র সহার এবং সম্পৎ। विटम्बछ: मृह्धर्मिणी अवाणिजिक्तिक वर्षाक्रिनी হইয়া প্রতি প্রণয়ীশীবনকে আন্মোন্নতিরণ অত্যুচ্চ হিমগিরির তুজ্ভাজে আরোহণের সরল সোপানা-

বলীভে সমারোহী করিয়া প্রমানকপূর্ণ পরন লক্ষ্য বস্তকে পর্যন্ত প্রদান করিছে পারে। * * * এই-কণ, সহধর্ষিণীর এই প্রথম প্রকাশ বদি কোন জাবনের বিন্দুমান্তও উন্নতির সাধন হর তাহা হইলে জামি আমার এই কুন্ত জীবনকে কৃতকুতার্থ জ্ঞান করিব। যেহেতু বিশ্বনিয়ন্তা প্রম্মক্রলম্বরূপ ইচ্ছাম্ম সর্ম্বান্তিমান ভগ্বান মাদৃশ নিরক্ষর অঞ্জনকে

এতার্শ শুরুতর কার্ব্য নিয়াজিত করিরাহেন।
আমারারা কোটিক্সকালেও সহধর্মিনীর সর্বালসুন্দর প্রকাশ কর্থনই সম্ভবপর হর না। তথাপি
যে আমার ইহাতে অভদুর আগ্রহ তাহার
কারণ—সেই করুণাখরের অপার করুণা ৬, **
এমন স্পট্রাদিতা একালে বিরল। গ্রন্থকার গ্রন্থি নাম
প্রকাশ না করিয়া ভালই করিরাহেন।
শ্রীসভ্যব্রত শর্মা।

মেঘের প্রতি।

ওপোকালো মেব। বাতাসের বেগে যেরোনা, যেরোনা, যেরোনা ভেনে;

নরন জুড়ানো মুরতি ভোমার, আরতি ভোমার সকল দেশে,

আকাশের পথে ক্ষণেক দাঁড়ারে শিপাসা বাড়ায়ে বেয়োনা চ'লে,

গদ গদ ভাবে কি কহ ?—আভাবে পাব্নি না ব্ৰিভে, যাওগো ব'লে।

কি বেদনা মরি গুমরি' গুমরি' উঠিছে তোমার হৃদর-দেশে ?

ত্বি**ত ফুলের তৃষ্ণা** জুড়াও দাঁড়াও ভুবৰ-ভুলানো বেশে !

করুণ তোমার কালো আঁখি হ'তে ছটি কোঁটা বল গড়িল ঝ'রে !—

ব্যথা পাও বদি, ভবে, কেন গাওঃ দাওগো মোদের পরাণ ভ'রে।

আঙুর-দোলানে অলকে তোমার লেগেছে খপন-বুলানো হাওরা, হে চির-শরণ ! জীবন-মরণ ৷ তোমার পানে ষে যায় না চাওয়া !

হের পাণ্ড্র বনভূমি আৰু, পাণীদের সুরে কত কাকৃতি,

ৰজ্ঞের ভয় রাধেনা কেবল কামিনী, কদম, কেতকী, যৃথি ৷

ওগো কালো মেব দাঁড়াও, দাঁড়াও,—বারেক দাঁড়াও বেয়োনা ভেসে,—

ধূলার মলিন, পিপাসায় ক্ষাণ দক্ষ-জীবন-দিনের শেবে।

কদম আবার উঠুক্ পুলকি', কেতকী উঠুক্ কটকিয়া,—

কামিনীর শাবে বে অপন আগে তাহারে সফল কর গো পিরা !

গভীর তোমার কালল নয়নে ছলছলি' লল পড়িছে এসে,

তথ বনানী ডাকিছে ভোমায়,—দাঁড়াও কণেৰ ফুলের দেশে।

শ্ৰীসভ্যেক্সৰাথ দত।

বিভিন্ন দেশের ইতিহাসে ভারতের কথা।

কিতাব উল মাসালিক ওয়াল
মামালিক। এই পৃত্তকের রচরিতার নাম
ইনন কালিফদিগের অধীনে উচ্চ রাজকার্য্যে নিযুক্ত ছিলেন এবং অবসর মত নানা
স্থানের ভৌগোলিক এবং ঐতিহাসিক বিবরণ
সংগ্রহ করিতেন। ইনি হিজিরা ৩০০ বংসরে
(৯১২ খুটান্কে) এই বিবরণী লিপিবদ্ধ করেন।
পৃত্তকের নাম দিয়াছিলেন "পথ ও রাজত্বের
বহি।" "(Book of Roads and Kingdoms).

পরস্ত্রীগমন ও মন্তপান প্রভৃতি হিন্দুস্থানের রাজাপ্রজা সকলেরই নিকট নিতান্ত দ্যনীয়। হস্তী রাজাদিগের অত্যন্ত প্রিয় এবং স্বর্ণের বিনিময়ে হস্তীর ক্রন্থ বিক্রন্থ চলে। হস্তীরা সাধারণতঃ নম্নহাত উচ্চ। তবে আনাব (সিংহল) দেশের হস্তী ১০।১১ হাত পর্যাস্থ উচ্চ হয়।

বৰরা দেশের রাজারাই বিশেষ পরাক্রমশালী। রাজার হত্তে একটী অসুরী আছে তাহাতে লেখা আছে "দৃঢ় প্রতিজ্ঞ হইয়া যে কার্য্য আরম্ভ করা যায়, তাহাতে নিশ্চয়ই সফলতা লাভ হয়।" (what is began with resolution ends with Success)

হিন্দু জাতির মধ্যে সাতটি শ্রেণিবিভাগ আছে। প্রথম সবকুষ্করিয়া। ইহাদের মধ্য হইতে রাজা মনোনীত হন্। বিতীয় ব্রহ্ণ,—ইহারা মন্ত বা উত্তেজনাকারী কোন

দ্রবাই স্পর্ল করেন না। তৃতীর কটারিয়া—
ইহারা তিন পেরালার অতিরিক্ত মন্ত পান
করেন না। দ্বিতীয় শ্রেণীর হিন্দুরা তৃতীয়
শ্রেণীর কন্তাগ্রহণ করেন কিন্ত তৃতীর শ্রেণীর
হিন্দুরা দ্বিতীয় শ্রেণীর কন্তাগ্রহণে অধিকারহান। চতুর্থ শুদ্র ইহারা ক্রমিজীবী। প্রক্রম
বৈহ্বরা ইহারা কারিকর ও শিল্পী। মন্ত
চণ্ডাল।—ইহারা নীচ কার্য্য করে। সপ্তম
লাহাং ইহারা বাজাকর ও প্রক্রমালিক;
ইহারা দেশ দেশাস্তরে ভ্রমণ করিয়াও
বেড়ায়।

•

ভারতবর্ষে বিয়ালিশ রকমের জাতি আছে। কতক হিন্দু, কতক মুসলমান এবং কতক বা নাস্তিক।

মারুজল জাহাব। বর্ণক্ষেত্র
(Meadows of Gold) প্রণেতা আলমণোদি
তাঁহার সমগ্র জীবন প্রায় ভ্রমণেই অতিবাহিত করেন। তিনি স্পোন, মরজো,
চীনদেশ অবধি পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন।
হিজিরা ৩০০ (১৪০ খুষ্টাব্দে) এই বৃত্তান্ত
তিনি লিপিবত্ব করেন। †

লগুনে ১৮৪১ খৃষ্টাব্দে ডাক্তার শ্রেনজার এই পুস্তকের কিয়দংশ ইংরাজীতে ভাষাস্তরিত করেন। ১৮৫১ খৃষ্টাব্দে ফরাসী দেশে ইহার সমগ্র অনুবাদ প্রকাশিত হয়।

ভারতবর্ষে বন্ধ নামে এক রাজা ছিলেন।

^{*} কাটারিয়া—ক্ষত্রির। বৈসুরা বৈশ্ব।

[†] ঐতিহাসিক হিসাবে এ পুতকের মূল্য কত তাহা পাঠজগণই বিবেচনা করিবেন।

তিনি ৩৬৬ বংসর রাজত্ব করেন। তাঁহারই সময়ে সিদ্ধান্ত রচিত হয়। তাঁহার সন্তান সন্ততিগণ অম্বাপি ব্রাহ্মণ নামে অভিহিত। তাঁহারা ব্রাহ্মণেরা নিরা-সকলেরই সন্মানভাজন। মিষাশী এবং স্ত্রীপুরুষ উভয়েই গলদেশে পীত-বর্ণ ষজ্ঞস্ত্র ধারণ করেন। ব্রহ্মের পরে তাঁহার পুত্র বাবুদ একশত বংসর রাজত্ব করেন। তৎপরে জাসন প্রায় পঞ্চাশ বৎসর রাজত্ব রিয়া পঞ্ছ প্রাপ্ত ইলে পোর বা পোরণ রাজা হন। তিনি ১৪• বৎসর রাজত্ব করেন এবং পরিশেষে গ্রীস দেশীয় আলেক-জাতারের সহিত যুদ্ধে হত হন। তাহার পর কলিয়াদমন প্রণেতা দাবাসহিল ১১০ বৎসর কাল রাজত্ব করেন। ইহার পরে যিনি রাজা হন তিনি ৮০০ বৎসর সিংহাসনাধিকারী ছिल्न। ७९भत्र हर्ष त्राका। हेनि नुष्न ধর্ম প্রবর্ত্তন করেন। ইনি ১২ বংসর রাজা ছিলেন ভাঁহার মৃত্যুর পর, তাঁহার রাজ্য সিন্ধু, কনোজ ও কাশীরে প্রসারিত হইয়া পড়ে এবং মানকীর নগর ও তৎসহ সমস্ত রাজ্যই বল্ববের হত্তে পতিত হয়। অস্তাবধি তিনিই রাজত্ব করিতেছেন।

ভারতবর্ষ এক বিভৃত দেশ। এথানে ৪০ বংসর বরস না হইলে কেহই রাজা হইতে পারেন না। রাজা সকল সমরেই প্রজার সম্মুথে বাহির হন না। সমর বিশেষে সাধারণের সম্মুথে বাহির হন এবং রাজ কার্য্য পরিদর্শন করেন। রাজ্যাধিকারের প্রথা বংশ পরম্পরাগত।

হিন্দুরা মন্তুপায়ী নন্। যাহারা মন্তু পান করে ভাহারা অত্যস্ত স্থুণার্হ। ইহাতে বুদ্ধি হানি হয় বলিয়া ভাহারা মদ্য 'স্পুর্শুও করে না। যদি কোন রাজা মন্ত পান করেন, তবে তিনি সিংহাসনচ্যত হন। কারণ মন ছির না হইলে রাজ্য পরিচালনা সম্ভব হইতে পারে না।

মূলতান মুসলমান অধিকার কৈ ।
মূলতানের নিকট ছাদশ সহত্র নগরী আছে।
এইখানে একটা দেবমূর্ত্তি বা প্রতিমা আছেন।
সিন্ধু এবং হিন্দু ছানের অনেক লোক এখানে
তার্থ করিতে আসেন। তাহারা মূল্যবান
প্রস্তর, মুসকরের প্রভৃতি আনমন করিয়া থাকে।
এক মণ মুসকরের (aloe-wood) মূল্য ২০০
দিনার। যথনই হিন্দুরা মূলতান অধিকার
করিতে আইসে তথনই মুসলমানেরা প্রতিমা
চূর্ণ করিয়া দিবে বলিয়া ভয় প্রদর্শন করে।
স্কতরাং বাধ্য হইয়া হিন্দুকে পশ্চাৎপদ
হইতে হয়।

কিতাবুল আকালিম। Book of climates প্রণেতা আবু ইসাক, ইস্তাফার (পার্সিপোলিস) নিবাসী। ইনি দশম শতানীর মধ্য ভাগে এই পুস্তক লেথেন। ইনি অনেক দেশ ভ্রমণ করেন এবং ভারতবর্ধ হইতে আটলাণ্টিক সমূদ্র ও পারস্যোপসাগর হইতে কাম্পিয়ান সমূদ্র পর্যন্ত বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন।

বহলরে অনেক মুসলমান আছে। মন স্থরের অধিবাদীরা সকলেই মুসলমান। এথানে অনেক থর্জুর বৃক্ষ জন্ম। এই ভারতবর্ষেই আম হয়। মূল্য অত্যস্ত স্থলভ এবং ফলও প্রচুর পরিমাণে জন্ম।

মূলতানে হিন্দুদিগের একটা মন্দির আছে। মন্দিরটী নগরের মধ্যে স্থাপিত। প্রতিমা মন্ধুয়াকার এবং ইট ও সুরকীর

প্রস্তুত বেদীর উপর স্বাসীন। (The idol has a human shape and is seated with its legs bent in a quadrangular posture on a throne made of brick and mortar). এই প্রতিমার সকল শরীরই আরুত কেবল মাত্র চকু দেখা যায়। মূর্ত্তি কিসের প্রস্তুত তাহা জানা যায় না। ইহার গাত্রাবরণ খোলা নিষেধ স্থতরাং জানিবার কোন উপায়ও নাই। চকু তুইটা বহু মূল্যবান প্রস্তর ছারা নির্মিত এবং মস্তকে একটা দোণার মুকুট আছে। মুলতান থলিফার অধিক্বত। অধিবাদীরা পাজামা পরিধান করে এবং পারস্ত ও সিন্ধু দেৰের ভাষায় কথোপকথন করে।

আসাকুল বিলাদ। এই পুস্তক বোগদাদ নিবাসী মহম্মদ আবুল কাসিম রচিত। হিজিরা ৩৬৬ (৯৭৬ খৃষ্টাব্দে) এই পুস্তক রচিত হইয়াছিল।

সম্দ্র হইতে তিবত তিন মাসের পথ।

শিল্প দেশের মুক্তা কান্দাহারে প্রস্তুত হয়।

এক একটা মুদ্রা ৫ দারহামের সমান। এথানে

দিনারও প্রচলিত।

গ্রন্থকার তৎপর মূলতান ও তাহার মন্দির ও প্রতিমার বৃত্তাস্ত লিপিবদ্ধ করিয়াছেন।

মুজাহাটল মুস্টক্। "Delight of those who seek to wander through the regions of the world" নামক পৃত্তক প্রণেতা আলইন্দিসি একাদশ শতাকীর শেষ ভাগে মরকো প্রদেশের কেউটা গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। ইদ্রিসি ইউরোপে শ্রমণ করিয়াছিলেন

এবং সিসিলির রাজা বিতীয় রোজারের আদেশে তাঁহার পুস্তক প্রণয়ন করেন। ১৫৯২ খুষ্টাব্দে পুস্তক তরজমা হয়। ইন্তিসি একজন সংগ্রহকারক মাত্র।

ভারতবাদীরা দপ্ত জাতিতে বিভক্ত। প্রথম শাক্রিম ইহারা উচ্চ বংশ সম্ভূত এবং ইহাদের মধ্য হইতেই রাজাদিগকে মনোনীত করা হয়। বিতীয় ব্ৰাহ্মণ (Religious class) ইহারা ব্যাদ্র চর্ম্ম পরিধান করে। কোন সময়ে তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ হত্তে যষ্টি শইয়া উপস্থিত জনমগুলীর নিকট ভগবানের নাম কীর্ত্তন করে। ইহার। কথনও मश्र म्थर्भ करत्र ना। ইहात्रा (भोखनिक। তৃতীয় ক্ষতিয়। ইহারা মাত্র তিন পাত্র মন্ত পান করিতে পারে। ইহারা ব্রাহ্মণদের কন্তা বিবাহ করিতে পারে কিন্তু ব্রাহ্মণেরা ইহাদের কন্তা বিবাহ করিতে পারে না। পরে শৌক্ত ইহারা ক্র্যিজীবি। বৈশ্রেরা শিল্পী এবং চণ্ডালগণ গায়ক। চণ্ডালদের স্ত্রীলোকেরা অত্যম্ভ স্থলরী।

ভারতবর্ষে ৪২ রকমের জাতি আছে। কেহ পৌতালক। কেহ পাথর পূজা করে; এই প্রস্তরের উপর মাধন ও ম্বত দেওয়া হর। ইহাদের মধ্যে অগ্নি উপাসকও আছে। কেহ স্র্য্যের উপাসনা করে; কেহ বৃক্ষ পূজা করে। এথানে নাস্তিকেরও অভাব নাই।

বাণিজ্য সম্বন্ধে গ্রন্থকার বলিভেছেন যে আনেক রকম দ্রব্য আমদানি ও রপ্তানি হয়। ভারতবর্ষ হইতে সম্ভার পরিপূর্ণ জাহাজ দেবল নগরীতে যাতায়াত করে।

মনসুরা নগরী সম্বন্ধে বলিয়াছেন যে

^{*} এটা কভছর সভ্য ভাহা **লেখা নি**ভায়োজন।

এখানে বাণিজ্যের বিশেষ প্রভাব দেখা বার।
বাজার লোক পরিপূর্ণ। রৌপ্য ও তাম
মূদ্রা ব্যবস্থত হয়। মংফ্র প্রচুর, মাংস
অত্যক্ত স্থলভ এবং দেশী ও বিদেশী অনেক
রক্ম ফল প্রচুর পরিমাণে বাজারে
পাওরা বার।

মুশতান সম্বন্ধে বলিতেছেন যে এথানে থাছ দ্রব্য অত্যস্ত সম্ভা। এথানে রাজকর (tax) অত্যস্ত কম এবং সেই জন্ম নগর-বাসীরা অত্যস্ত হথে কালাতিপাত করে।

প্রস্থকার কামবয়া নামক আর একটা নগরীর উল্লেখ করিয়াছেন। ইহা সমুদ্র হইতে ৩ মাইল দ্বে এবং দেখিতে অত্যস্ত স্থলর। ইহা একটা Naval Station; সকল দেশ হইতেই এখানে পণ্যাদি আমদানা হয় এবং এখান হইতে অভ্যত্ত প্রেরিত হয়।

স্বভাবত:ই ভারতবাসীরা ন্তায়-প্রিয় (Lover of Justice) এবং কোন প্রকারেই সত্য হইতে বিচলিত হয় না। তাহাদের সত্য লিপ্সা, সাধুতা এবং কথামত কার্য্য করা সকলেই বিশ্বরূপে পরিজ্ঞাত আছেন এবং मिं क्र नकलारे देशालत ज़ाल वानिकार्थ গমনাগমন করে। এই সমস্ত কারণে দেশেরও এত উন্নতি। পাপের প্রতি তাহাদের ক্রিপ ঘুণা তাহা নিম্নলিখিত ঘটনা হইতে বেশ বোধগম্য হইবে। যথন একের অন্তের নিকট কিছু পাওনা থাকে, তখন পাওনাদার মাটীতে কেবল মাত্র একটা বুত্ত অঙ্কিত করিয়া তাহার মধ্যে দেনদারকে প্রবেশ করিতে বলে। দেনদার পাওনাদারকে সম্ভষ্ট না করিয়া কিছুতেই এ স্থান পরিত্যাগ করে না।

हेरात्रा कोवहिःमा करत्र ना। यथ्यःक

ইহারা অত্যন্ত ভক্তি করে এবং তাহাদের মৃত্যু হইলে মাটিতে পুঁতিয়া রাখে। এই সমস্ত বাঁড় বৃদ্ধ হইয়া কার্য্যে অকর্মণা হইলে হিন্দুরা আমৃত্যু পর্যাস্ত তাহাদিগকে খাইতে দের।

বহুলার দেশে বিবাহিতা স্ত্রীলোক স্ঠিতীত সকলেরই সহিত সহবাসের অ**ন্থুম**তি আছে।

আরম্লবিলাদ। Monuments of Countries and Memories of Men নামক গ্রন্থপ্রেলতা পারস্থ সহরের কাজওয়ালী গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। গ্রন্থ-কারের নাম ঝাকারিয়া। ইনি "wonders of things created and Marvels of things existed" নামক পুস্তকও প্রণয়ন করিয়াছেন।

ইনি কুলাম নামক নগরীর বৃত্তান্তে
লিধিয়াছেন;—ভারতবর্ষে কেবলমাত্র এই
নগরীতেই চিকিৎসক আছেন। এখানকার বাড়ীগুলি কিছু নৃতন রকমের। মংস্থের
আইস হইতে বাড়ীগুলির স্তম্ভনির্মিত।
এই নগরবাসীরা মংস্থ ধার না কিংবা জীবহত্যাও করে না কিন্তু মুত্তপশুর মাংস ধার।

সোমনাথ ও তথাকার মন্দিরের কথা ইনি এইরূপ লিখিয়া গিয়াছেন। মন্দিরস্থ মূর্ত্তি মন্দিরের মধ্যে দোলায়মান অবস্থায় আছে এবং দেখিলেই আশ্চর্য্য ছইতে হয়। গ্রহণের সময় কোটা কোটা লোক এখানে সমবেত হয়। এই প্রতিমাপুলার জন্ত দশসহত্র গ্রামের আয় বয় হয়। ৽গঙ্গা হইতে জল আনিয়া প্রত্যহ এই প্রতিমাও মন্দির ধৌত করা হয়। সহত্রাধিক ব্রাহ্মণ দেবতার পূজা করেন এবং পাঁচশত মুবতী মন্দিরের ব্রারে দেবতার তুষ্টির জ্ল্ঞ নৃত্যগীত করে।

এই পূজক পরিচারক ও পরিচারিকাগণ মন্দিরের আমেই জীবনাভিপাত করে। ৫৬টা স্তন্তের উপর মন্দির স্থাপিত ও মণিমুক্তা-বচিত ঝাড়লগঠনে মন্দির স্থাণোভিত •

আবুরিহান তারিকুল হিন্দ। অলবেকণি কর্ত্তক এই পুস্তক বিরচিত। আন্বেরুণি স্বনামখ্যাত ব্যক্তি। তিনি একা-ধারে জ্যোতির্বিদ, জ্যামিতিক, ঐতিহাসিক এবং নৈয়ায়িক। কথিত আছে "He never had a pen out of his hand, nor his eve off a book, and his thoughts were always directed to his studies. with the exception of two days in the year, namely Nawraz and Mihijan, when he was occupied with the command of the Prophet. in procuring the necessaries of life on such a moderate scale as to afford him bare sustenance and clothing''। অলবেকণী ভারতবর্ষের অনেক-গুলি দেশব্রমণ করিয়াছিলেন এবং সেই সেই দেশের অনেক লোকের সহিত তাঁহার স্থাতা ছিল। রসিচন্দিন নামা তৎসাময়িক একজন গ্রন্থকার বলিয়াছেন যে আলবেরুণি ভারত-বর্ষের ধর্ম ও ভায়শাক্তেও বিশেষ পারদর্শিতা লাভ . করিয়াছিলেন। আলবেরুণীর পুস্তক , অত্যন্ত মূল্যবান।

কনোজের রাজা কাবুলের অধিপতি অপমান করাতে কাবু-কনককে অত্যস্ত লাধিপতি কনোজাধিপতিকে শাসন করি-বার জন্ম দদৈন্তে অগ্রসর হইতে থাকেন। শেষোক্ত ভূপতি এ সংবাদ অবগত হইয়া অত্যন্ত ব্যতিব্যন্ত হন এবং তদীয় মন্ত্ৰীর পরামর্শ চাহেন। মন্ত্রী উত্তর দেন যে আপনি বিনাকারণে এক প্রবল পরাক্রাম্ম নরপতিকে অপমান করিয়াছেন: এইক্ষণ এক উপায় ব্যতীত আমি আর অন্ত উপার দেখিতেছি না। সেটী এই; আপনি আমার নাগাকর্ণ ছেদন করিয়া দেন: আমি একবার চেষ্টা করিয়া দেথি কিছু করিতে পারি কিনা। অগত্যা কনোজাধিপতি মন্ত্রীর নাসাকর্ণ ছেদন করিয়া দিলে মন্ত্রী কাবুলাধিপতির সহিত সাক্ষাৎ করিয়া বলিলেন যে, তিনি সহস্র চেষ্টাতেও কনোজের পাপমতি রাজাকে কাবুলাধিপতিকে অপমান হইতে বিরত করাইতে পারেন নাই এবং সেই জন্মই তাঁহার প্রভু তাঁহার নাসাকর্ণ ছেদন করিয়া দিয়াছেন। এইক্ষণ সেই অপুর্মানের প্রতিশোধ কামনায় আপনার সাহায়ার্থে অগ্রসর হইয়াছি। আমি যে পথে আপনাকে ৰাইতে বলি, আপনি আমার সহিত সেই পথে অগ্রসর হউন। মন্ত্ৰী এই বলিয়া কাবুলাধিপতিকে मक्जिमित्र मधा विद्या गहेशा गहेरा गारिएनन। কনকের সহিত যে জল ছিল তাহা শীঘ্র

^{*} ক্ষিত আছে মহম্মদ গজনী প্রথমত: এই প্রতিমার দোলায়মান অবস্থা দেখিরা অত্যন্ত আশ্চর্গাহিত হন।
তাঁহার অন্তরগণ কেইই ইহার কারণ অন্ত্থাবন করিতে পারে না। অবশেষে একজন চুম্মক ও লোহের
আক্র্ণী শক্তিযারা এরপ ইইরাছে প্রভাবে করাতে প্রতিমার উপরিস্থ করেকথানি টালি সরান হয়। তথন দেখা
নায় যে উপরে চুম্বকের টালি এরপ্রভাবে দেখ্যা হইয়াছে যে লোহনির্স্মিত প্রতিমাটি মধ্যহলে ঠিক
ভাবে ও কে।

সুরাইয়া · গেল এবং আর কত দিনে তিনি কনৌজ পৌছিতে পারিবেন মন্ত্রীকে জিজাসা করিলে মন্ত্রী উত্তর করিলেন যে আমি আমার প্রভুকে রক্ষা করিবার এরপ প্রবঞ্চনা করিয়াছি। এইক্ষণ আপনার যাহা ইচ্চা তাহাই করিতে পারেন কিছ এ মরুভূমিতে আপনার জল পাইবার কোনই সম্ভাবনা নাই। এই কথা শুনিবামাত্র রাজার পার্শ্বচরগণ মন্ত্রীকে আক্রমণ করিতে উন্মত তাহাদের নিষেধ করিয়া इहेटन कनक নিকটবর্ত্তী নিম্নভূমিতে হস্তস্থিত বল্লম প্রোথিত করায় সেই স্থান হইতে জ্বল নির্গত হইতে লাগিল। মন্ত্ৰী তথন বলিলেন যে আমি মহয়ের সহিতই প্রতারণা করিতে আসিরা-ছিলাম, দেবতার সহিত আসি নাই। আপনি দেবতা: স্থতরাং আপনি আমার অপরাধ মার্ক্তনা করুন। দেবতার লোভ বা ক্রোধ থাকাও উচিত নয় স্থতরাং আপনি আমার প্রভূকেও মার্জনা করুন। কাবুলাধিপতি প্রত্যন্তরে বলিলেন যে আমি মার্জ্জনা করিলাম কিন্ত তোমার প্রভু তাহার কার্য্যোচিত শান্তি পাইয়াছেন। कनक (मार्म করিলেন; মন্ত্রীও স্বদেশে ফিরিয়া আসিয়া पिथिलन (स, (र भूटूर्ल कनक मृद्धिकांत्र তাহার বল্লমপ্রোথিত করিয়াছিলেন তন্মুহুর্ত্ত হইতেই কনোজাধিপতির হন্তপদ জড়ত্ব প্রাপ্ত रुरेशांट ।

অলবেরুণী অক্ত ঘটনার মধ্যে আনন্দ-পাল রাজার কথা উল্লেখ করিয়াছেন। আনন্দপাল কাব্লের অধিপতি আবির
মহম্মদকে পরাজিত করেন কিন্তু ষ্থন তুর্কীরা
আমির মহম্মদের রাজত্ব আক্রমণে উন্তত হয়
তথন আনন্দপাল কাব্লাধিপতিকে লিখিয়া
পাঠান যে যদি প্রয়োজন হয় তবে শ্রীমি
পাঁচ হাজার অত্থারোহী, দশসহত্র পদাতিক ও
একশত হস্তা লইয়া সাহায্য করিতে পারি
অথবা যদি তুমি পছল কয়, তবে আমার
প্রত্রের সহিত ইহার দ্বিশুণ সৈম্ভ পাঠাইতে
পারি। যদিও আমি তোমাকে পরাজিত
করিয়াছি তথাপি আমার ইচ্ছা না যে
আমা ব্যতীত অন্ত কাহারও নিকট তুমি
পরাজিত হও।*

তারিফ ইয়ামানি বা কিতাবুল ইয়ামুনি। ইহা আল উৎবি অথবা আবুনছর মহম্মদ ইবন আল জব্দকল উৎবি প্রণীত। এই গ্রন্থে মহম্মদ গজনী ও জরপাল ইত্যাদির বর্ণনা আছে। এ বৃত্তাস্ত সকলেই অবগত আছেন স্থতরাং ইহার প্রক্লেথ নিপ্রধাজন।

তারিবস্ সবক্তজীন। ইহা আব্ল-ফলল আলবৈহাকীর প্রণীত এবং ৩০ খণ্ডে লিখিত।

আমির মহবের সেনাপতি আমদ নিরাল টোগিন ১০৩০ খৃষ্টাব্দে মুলতানে সেনাপতি নিযুক্ত হইয়া আইসেন। তিনি ভাগ়ীরথী উত্তীর্ণ হইয়া বারাণদীক্ষেত্রে উপস্থিত হন। ইতিপুর্ব্বে আর কোন মুদলমীন দৈনিক এখানে উপস্থিত হরেন নাই। সৈঞ্জেরা ইচ্ছা-

এই বর্ণনা হইতে ভারতবর্ণের ভদানীত্তন রাজাদের পরাক্রমের বৃদ্ধান্ত বেশ পরিকাররূপে অবগত ।
 হওয়া যায়।

মত স্বর্ণ, রৌপ্য, মণিমুক্তা অনেক সূঠ করিয়াছিল।

নিয়ালটগিনের ব্যবহারে অসম্ভুষ্ট হইয়া
আমির মার্দ হিন্দুস্থানবাসী তিলককে সেনাপতি কৈরিয়া মূলতানে প্রেরণ করেন। এই
তিলক পরামাণিক জাতীর কিন্তু দেখিতে অতি
ক্ষমী ও বিশেষ বিধান ছিলেন। হিন্দু ও
পার্শী ভাষায় তাঁহার অত্যন্ত দখলছিল। তিলক
নিজ বৃদ্ধিবলে মাসুদের মন্ত্রী থাজা আহম্মদহোসেনের প্রিরপাত্র হইয়া তাঁহার "সেক্রেটারী"য় পদ লাভ করিয়া ক্রমে হিন্দু
সৈন্তের সেনাপতি হয়েন। তাঁহার কার্য্যে
প্রীত হইয়া আমীর তাঁহাকে পোষাক, মুক্রার
মালা তাত্ব ও ছত্র উপহার প্রদান কবেন।

তিলক আহামদ নিয়ালটগিনকে যুদ্ধে পরাজিত করেন; নিয়াল টগিন এই যুদ্ধে হত এবং তাঁহার পুত্র বন্দী হন। বলা বাত্ল্য আমীর তিলককে তাঁহার এই বীরত্বের জন্ম বিশেষ রূপে পুরস্কৃত করেন।

ইহার কিছুদিন পরে আমির মামুদ
নিজেই ভারতবর্ষ আক্রমণে অগ্রসর হরেন।
প্রথম বংসর তিনি কাশ্মীরের অন্তর্গত সারস্থতীর হুর্গ অধিকারান্তে নিজ্প রাজ্যের অশান্তি
নিবারণের জন্ত স্থদেশে প্রভ্যাগমন করেন।
পর বংসর, ফিরিয়া আসিয়া তিনি হালসিয়
হুর্গ অধিকার করেন। এবাবং অন্ত কেহই এ হুর্গ অধিকার করিতে পারেন
নাই এবং সেই জন্ত পূর্বাপর ইহা কুমারী
(Virgin) নামে অভিহিতা ছিল। পরে
তিনি গজনী প্রভ্যাবর্ত্তন করেন।

জামিয়াল হিকায়ৎ। মহমদ

আফি এই গ্রন্থ রচয়িতা। তিনি ভারতবর্ষের সাধুতা সম্বন্ধে একটা স্থলর দৃষ্টাস্ক দিয়াছেন। একদা এক ব্যক্তি তাঁহার গৃহ ও তৎসংলগ্ন জমী অপর ব্যক্তিকে বিক্রন্ন করে। ঐ জমী খননে অনেক ভার্থ বিক্রেতাকে সেই মুদ্রা প্রত্যর্পণ করিতে যান। ক্রেডা বলেন যে তিনি কেবল বাড়ী ও জমী কিনিয়াছেন কিন্তু জমির মধ্যন্থিত ধন ত আর তিনি ক্রয় করেন নাই। বিক্রেতা বলেন যে তিনি যখন বাড়ী ও তৎসহ জমী বিক্রী করিয়াছেন তথন গুপ্ত ধনও অবশ্র বিক্রেয় করিয়াছেন। উভরের কেহই এই ধন গ্রহণে অস্বীকৃত হইয়া তাঁহারা তদ্দেশীয় অধিপতিকে ইহা গ্রহণে অমুরোধ করিলেন। তিনিও ইহা তাঁহার নছে বলিয়া গ্রহণ করিলেন না। অবশেষে ক্রেডার পুত্র ও বিক্রেডার কন্তার বিবাহ স্থির হইয়া বৌতুকশ্বরূপ বরক্সাকে এই ধনরাশি উপহার দেওয়া रुहेम ।

রাজা প্রজাকে আদৌ উৎপীড়ন করিভেন না। "The King from an innate sence of Justice would not suffer the skirt of his robes of equity and righteousness to be soiled by the dirt of oppression and dishonesty."

তাবাক্ত নছরী। মিনহাজ্দিরাজ প্রণীত এই গ্রন্থ তেইশ থণ্ডে বিভক্ত এবং ১২৫৯ খ্রীষ্টান্দ পর্যান্ত ইহাতে ঘটনা বিবৃত হইতেছে। এ পুত্তকের বিষয় প্রায় সকলেই অবগত আছেন স্মৃতরাং এসম্বন্ধে আর কিছু বলা নিপ্রবাজন।

শ্রীবোগীন্ত সমান্দার।

পোষ্যপুত্ৰ।

পরদিন প্রভাতে শিশুর ক্রন্ধনে শিবানীর
বধন ব্য ভাজিয়া গেল, তখন বেলা হইয়াছে
বড় বাপটা কাটিয়া প্র প্র সাদা মেবের
ভর ভেদ করিয়া চৈত্রের স্থ্য তখন প্রনাক্রোলিত তালগাছগুলার মাথার চড়িয়া
বসিয়াছেন। অশোক গাছের ফুলেভরা
ভালগুলা বড়ের আক্রমণে ভাজিয়া পড়িয়া
তাহাকে বেন সম্ভ বিধবার অলক্রারহীন হস্তের
মত দেথাইতেছে। বৃষ্টির জল তখনও অশ্রজলের মত বাভাসের দোলার সঙ্গে সঙ্গে
বর্ষর করিয়া পাতা হইতে বরিয়া পড়িতেছিল। শিবানী উঠিয়া প্রত্রেক কোলে
তুলিয়া লইল। সারারাত্রি সে তাহাকে বিশ্বত
হইয়া গিয়াছিল।

দিপ্রহরে আহারান্তে সিদ্ধেশ্বরী ভাঁহার বাতবুক্ত পদৰ্বে ধুতুরা প্রলেপ লাগাইয়া দাওরার বসিরা চরকার স্থতা কাটিতেছিলেন। নিকটে দৌহিত বসিয়া একটা কাঠের লাল ব্মৰুমি ছই হল্তে মুখের মধ্যে পুরিরা অপুর্ব ভোজাজানে ব্যগ্রচিতে আয়ত্ত করিরা ফেলি-বার চেপ্তা করিতেছিল। নাপারিয়া এক একবার চীৎকার করিয়া কাঁদিয়া উঠিয়া অনায়ত্ত দ্রবাটা মাটিতে চুকিতেছিল আবার কিছুক্ষণ পরে বিশুণ অধ্যবসায়ের সহিত সেই লালাসিক্ত কাঠখণ্ডটা ভোজনের मत्नानित्यमं कतिरुक्ति । निष्कृती मरशा ৰব্যে মূব ভূলিরা শিশুর দিকে চাহিরা ভাহাকে আদর ক্রিডেহিলেন, অমনি ভোলনবাপার ইসিত মাৰিয়া সে বিল বিল করিরা হাসিরা উঠিয়া কড কি অঞ্চপূর্ব পল উচ্চারণ

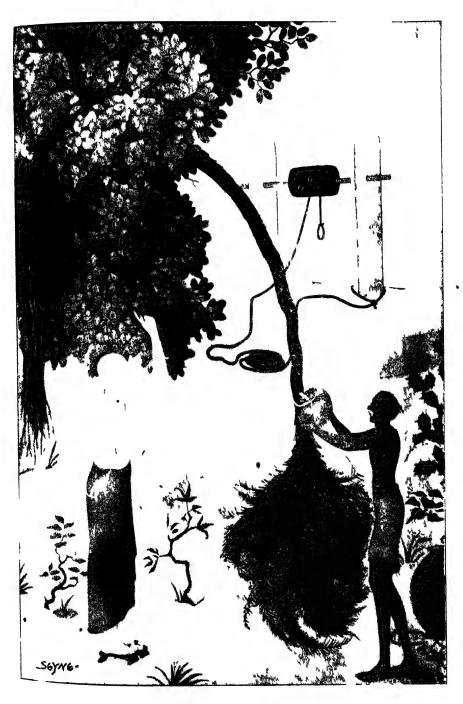
করিতেছিল। শিবানী রারাঘরের উনানে পুত্রের জন্ত হুগ গরম করিতেছিল। হুগের বাটি ও ঝিতুকথানা হাতে করিরা হু-পা অগ্রসর হুইতেই বাহির দিক হুইতে একটা অপূর্ক্ত শক্ত তাহার কর্ণে প্রবেশ করিল "চিঠুঠি।"

শিবানীর সর্ব্ধ শরীর ধরধর করিরা কাঁপিরা উঠিল, হাত হইতে গরম ছধের বাটিটা পারের উপর পড়িরা গেল। সে সেদিকে লক্ষামাত্র না করিরা একপ্রকার ছুটিরাই বাহিরে আসিল। সিছেখরী শব্দ পাইরা জিজ্ঞাসা করিলেন "পড়ে গেলি। হাত পা একটু স্থির করে তো কাজ কর্ম্ম করতে জানিসনে, ফেল্লি কি? ছখটা নাকি? এখন ছেলেটাই বা খার কি?" সে কথা শিবানীর কানেও প্রবেশ করিল না। সে উত্তেজিত আবেগে ছুটিরা আসিরা "ক্ষপ্র্পার নিখাসে পিরনকে জিজ্ঞাসা করিল "কার চিঠি?" পিরন বলিল "মারি শিবানী কেবী কাহার নাম? রেজিন্ত্রী চিঠি আছে।"

শিবানীর সর্ব্ধ শরীরের রক্ত**টা টগব**গ করিয়া ফুটিরা উঠিল, সে কম্পিত হতে চিঠিথানা লইরা উত্তর করিল "আমিই শিবানী দেবী।"

"মারিজি, এ রেজিন্টরি চিঠি এইখানে সহি করে দিতে হবে।"

শিবানী পিরনের প্রান্ত পেলিলটা লইরা তিনানরপে রসিদটা সই করিরা উঠানের ভিতর প্রবেশ করিল একং একপ্রান্তে প্রাচীরের ধারে বসিরা ধানটা খুলিয়া চিঠিধানা টানিয়া বাহির করিল। ভাষার মধ্যে একটুকরা চিঠিও করেকখানা নোট ছিল, মেথিয়া



শঙ্করাচার্যোর দর্পচূর্ণ শীযুক্ত ভেঙ্কটাগ্লা কর্ত্তক অক্ষিত চিত্র হুইতে



निरामीत शारपुर्व नाम रहेका केठिया जा

"भिवामि। বিধাড়ার অলজ্যা লিপি মাছবের সাধ্য কি বে খঙ্গন করে। সেদিন আসিবার সময় বলিয়া আসিয়াছিলাম, আর্জ থেকে মনে করো ভূমি বিধবা, আৰু বুঝি সেই অভিশাপ ফলিতে চলিল। মৃত্যুশব্যার শুটরা এ পত্ত লেখাইডেছি। ভীষণ কলেরা রোগে পড়িয়া আছি। বুঝিতেছি বাঁচিবার আর আশা নাই। আমার মৃত্যুর পর যথন এ পত্ত পাইবে তথন ঘুণা করিয়া এপত্ত পড়িবে কিনা জানি না: কিন্তু তথন আমি কাহারো নিকট স্থণ্য জীবন বহন করিতেছি না, এই শাস্তি। টাকা করটা ভোমার মাকে দিও, তাঁহার অনেক প্লণী আছি কিছু শোৰ कतिया वारे।" "बीनीतमकुमात्र कोधूती।" শিবানীর শিথিল অঙ্গুলিমধ্য হইতে খালিত হইয়া সেই ভয়ানক সংবাদবহ পত্ৰখানা মাটিতে পড়িয়া গেল।

সিদ্ধেশ্বরী বৃত্তকণ ধরিরা অনেক ডাকা-ডাকিতেও কন্তার সাড়াশন্দ না পাইরা বাতগ্রস্ত পা টানিরা টানিরা বিকৃতমূথে বন্ত্রপা-স্চক ধ্বনি করিতে করিতে বিরক্তমনে ভাহার থোঁজ লইতে আসিলেন।

প্রান্ধনের একপার্থে কুলশৃন্ত করবী গাছের কাছে প্রাচীরে ঠেনদিরা শিবানী বসিরা আছে দেখিরাই ভাঁছার রাগ বাড়িরা উঠিন। বলিলেন "ওথানে বসে কি ধ্যান কছিল? এতো বে ডাকছি তাকি কানেও বার না? ধন্তি মেরে বাহক"—বলিতে বলিতে কন্তার নিকটে গিরা চমকিরা ধামিরা গেলেন—চিঠি নাকি? কে লিখেছে

নীয়ন বৃশ্বি ? ভমা কথা কোন্নে কেন গো ? ভমা আমার কি হলো গো ! ভমা আমি কোথা বাই গো ! ভরে নীরদ বাবারে ! ভরে আমার মাণিক রে, ভরে আমি গোড়া কপালি ভোকে কেন বকেছিল্ম রে, ভরে একবার আর রে, ইত্যাদি শব্দে কাঁদিতে কাঁদিতে তিনি সেইথানে বসিয়া পড়িলেন ।

তৎক্ষণাৎ পাড়া ঝাঁটাইয়া স্কলে ভাঁহার বাড়িতে আসিয়া উপস্থিত হইল। সকলেই বাাপার কি জানিবার প্রয়োজন না দেখিরা তাঁহার কারার বিনানি শুনিরা নীরদকুমারের মৃত্যুর সহজে নিঃসংশন্ন হইরাছিল। কেই তাঁহার সহিত সহাত্ত্ততি প্রকাশ করিল, অনেকেই অক্লুত্তিম চোধের জল ফেলিভে ফেলিভে তাঁহাকে সান্ধনা প্রদান করিতে লাগিল—আহা কি কপাল গো জামাইতো নর যেন সাকাৎ ময়্র ছাড়া कार्तिक, अलाविष्टे वा कि मिट्टे हिन अमन জামাই বে তপজার পার না গা। আহা বাছা রাগ করে কোথার গেল, কেই বা বদ্ধ আর্ত্তি कत्रता. विष्यादत श्रांगी महे कत्रता गा। আহাহা!" আবার কেহবা বলিলেন "ভা আর কেঁদে কি কর্কে বলো শিবুর মা; সেতো তোমার গিয়েইছিল, পিডোশ তো কিছুই ছিল না. তবে মেরেটার মাছ ভাতটাই বা বন্ধ হলো; তা এমন কাণ্ড কোণায় হলো ?" এমনি কিছকণ কালা কটিনার পর কোথা হইতে হঠাৎ একটা প্রশ্ন উঠিল "খপর্টা দিলে কে ? কোথা হইতে ৰপর পেলে ?" ভবন **फेक्क** हो श्कार के जिल्ला के जिल्ल "ওমা তাইতো, তাতো জানি না, চিঠিখানা एर ७ निवित्र त्रकत्य मन्छ। रक्षम रख

গেল।" ওনিরা সকলকারই দুষ্টি সেই ভূমে পতিত পত্ৰধানার প্রতি আরুষ্ট হইল, একজন পাঠক্ষম যুবতী সেধানা তুলিয়া লইয়া পঠि कत्रिण, এবং वना वाह्ना य हेशंत्र शत হইতে দিলেখনীর রোদন প্রায় গগনভেদ করিবার উপক্রম করিয়া তুলিল, কিন্তু ছঁষিয়ার মাল্লুষ নোট কয়খানা অঞ্চলে বাঁধিতে ভূলি-লেন না। এমন সময় মাত্রিকনী আসিয়া তাড়াতাড়ি শিবানীর নিকট ছুটিয়া গেলেন। ভাহার স্পল্নহীন দেহ স্পর্ণ করিয়াই তিনি সিদ্ধেশ্বরীর কাছে আসিয়া তাঁহাকে ভংসনা করিয়া কহিলেন "পোড়ারমূখী পরের ছেলের জন্ম টেচিয়ে মচেচা তোমার নিজের মেয়ে যে এ দিকে যায়, মেয়ে বাঁচাতে চাওতো চুপ করো।" পরের ছেলের যে কতথানি দরদ তাহা সিদ্ধেশ্বরী এখন হাড়ে হাড়ে বুঝিয়া-्र हिटनन जिनि मथीटक प्रिथिया 'अरगा मिनि, নীরদ যে আমার রাগ করে চলে গেছলোগো! ওগো বাছা আমার সেই রাগ নিয়েই চলে (शन मिमि"। वनिया काँ निया डिजितन।

পাড়া পড়নীতে দিনের বেলায় এমন বিপদের দিনে যথেষ্ট অংজীরতা দেখাইরা আপ্যায়িত করিতে পারেন, কিন্তু তাঁহারা রাত্রের প্রয়োজনে কেহই অগ্রসর হইতে চাহেন না। একা মাতদিনী হুইটি শোকার্ত্তা রমণীকে লইরা বিপ্রত হইরা পড়িলেন। তাহার উপর আবার একটি কচি ছেলে আছে। বোসেদের বাড়ির মেজ বধু শিবানীর সই ছেলেটিকে সমস্ত দিন কোলে লইরা হুধ খাওরাইরাছে, ভূলাইরা রাধিরাছে, কিন্তু এখন বাঞ্জির আক্রার ভাহাকেও তো গৃহে ক্রিতেই হুইবে, তুমস্ত শিশুকে মাতদিনীর

কাছে দিয়া সে অনিচ্ছুক্ত পদে চলিয়া গেল।

শিবানী যথন রাত্রে চোথ চাহিল তথন ঘরের মধ্যে সিদ্ধেশরী শাটিতে विहारेश छरेश পড़िश अश्रक चत्र कांनिएक-ছিলেন। চীৎকার করিবার শক্তি ব্রাস হইয়া-ছিল বলিয়া নয়, নাতির খুম ভালিবে এই ভয়েট তাঁহাকে সাবধানতা অবলম্বন হইরাছিল। মাতলিনী ভূমিলুটিতা শিবানীর मार्थां कार्य ज्वाम नहें में दि भीरत তাহার গায়ে মাথায় হাত বুলাইয়া দিতেছিলেন. মধ্যে মধ্যে চোথের জল মুছিতে মুছিতে ডাকিতেছিলেন 'শিবু, শিবু ওমা, কথা কনা মা'---সংজ্ঞাপ্রাপ্ত শিবানী একবারমাত চাহিয়া দেখিল। তখনও সে কথা কহিবার শক্তি ফিরিয়া পায় নাই। একটা অনিশ্বসিত যন্ত্রণার রুদ্ধ বাষ্পে তাহার বৃক্টা ফুলিয়া সুলিয়া প্রাণটা বে কণ্ঠের কাছ পর্যাস্ত ঠেলিয়া আনিতেছিল। त्म अकवात वक काणिया काँनिया काँनिया উঠিয়া হৃদয়ভার লঘু করিতে চাহিল, কারা वाहित्र रहेन ना अञ्चलन श्रवाह हुई हार्थित প্রান্তে আসিয়া আটকাইয়া গেল। মাতলিনী স্পেহ কোমল স্পর্শে তাহার কপালে চোধে জলসিক্ত ঠাণ্ডাহস্ত বুলাইয়া দিয়া কানের कार्ष्ट नठ इहेब्रा छाकित्नन "मिवानी, मा" निवानी मर्खादा এक है। निवान है। निवा नहेंवा ক্লান্ত ভাবে বলিয়া উঠিল "মাগো ;—" ^{সেই}ু নিখাসের সহিত তাহার বুকের উপরকার পাষাণথানাও যেন কতোকটা নড়িয়া উঠিল।

মাতঙ্গিনী থোকার ঝিপুকে করিয়া একটু জল লইরা তাহার ওছ ওঠে প্রদান করিলেন, সেই জলবিন্দু পান করিয়া নে আবার দীর্ঘ নিশাস পরিত্যাগ করিরা চোথ চাহিল, রাত্রি
বাড়িয়া যাইতে লাগিল। চাঁদ ডুবিরা চারিদিক অন্ধকার হইয়া আসিল, অদুরে নদীর
চরে শৃগাল ও রাস্তায় কুক্রগুলা ডাকিয়া
উঠিল, এবং অন্ধকার স্তব্ধরাত্রি কেবলমাত্র
বিল্লির একঘেরে বিঁঝিরবে জাগ্রত হইয়া
রহিল, ঘরের মধ্যে সিন্ধের্থরীর নিজাতুর ক্লাস্ত
কণ্ঠ মৃত্র হইতে মৃত্তর হইতে হইতে, অলকণ
মাত্র থামিয়া গিয়াছে। শিবানী ডাকিল
"মাসিমা"।

মাতঙ্গিনী একটা নিশাদ ফেলিয়া উত্তর
করিলেন "কি মা" ? "মাদিমা, আমি বিধবা ?
তিনি যা বলে গিয়েছিলেন দেই শাপই ফলো !
এতো ব্যাকুল প্রার্থনা মদনমোহন কেমন করে
অগ্রাহ্য করলে মাদিমা ?—"

মাতলিনী কাঁদিয়া ফেলিলেন "কলিকাল যে মা"! তারপর তিনি ক্ষীণজ্যোৎসায় তাহার মুখের পানে চাহিয়া আশ্চর্য্য হইয়া চুপ করি লেন, সভয়ে ডাকিলেন "শিৰু!"

ধীরভাবে শিবানী উত্তর দিল "কি
মাসিমা?" মাতলিনী দেখিতে শুনিতে চালচলনে সকল দিকেই নিতাস্ত সাধারণ প্রেক্তির
লোক হইলেও তাঁহার নিরপত্য শুক্তবুকটার
যে স্থানটা দিয়া তিনি এই ধীর স্থভাব ধ্যানপরারণা বালিকাকে অমুভব করিতেন সেইথান হইতেই তিনি তাহার এই অভুত থৈর্যের
মর্ম্মও বৃদ্ধিলেন। এতোটুকু আশা থাকিতে
মাম্ব এমন পাষাণে পরিণত হইয়া ঘাইতে
পারে না। তাই একটু ভাত হইয়া তাহাকে
বক্ষে টানিয়া লইয়া কাতর কঠে বলিয়া
উঠিলেন "একবার প্রাণ খুলে কাঁদনা মা,
নীয়দ যে আমাদের জ্বমের মতন ছেড়ে

গেছেন তাঁর মুখখানা মনে করে একবার কাঁদনা মা"! গতরাত্তে ঝড়বৃষ্টি বন্ত্রপাতের মধ্যে বিহাতের হাসি বেমন ভয়ক্ষর দেখাইয়া ছিল, ঠিক তেমনি হাসি হাসিয়া সে প্রবলবেগে মাথা নাড়িয়া বলিল "আর কাঁদবো কেন মাসিমা ? যতোদিন আমার মনে একবিন্দুও আশা ছিল কাৰুকে কি বলতে হয়েছে মানুষে যতো কাঁদতে পারে তা আমি কেঁদেছি, শুধু প্রার্থনা করেছি এই অভিশাপ যেন পূর্ণ না হয়। আর কেন ? আর কারজন্ত কাঁদবো মাদিমা ? থোকা আমার মায়ের থাক; আমি আর কারুকে চাই না মাসিমা, আমার সব ফুরিয়েছে"। বলিতে বলিতে শিবানীর যে অশ্রু এতাক্ষণ পড়িতে পারে নাই সহসা তাহা বন্তার প্রবাহের মত শত ধারে উচ্ছ₄দিত হইয়া উঠিল। মাতঙ্গিনী বুঝিলেন তাহার যন্ত্রণা এতোক্ষণে मीमात्र मर्था (शीहिबारह। जाहारक वांधा না দিয়া চুপ করিয়া রহিলেন। দেখানে আলোকের কিছুমাত্র রেখা পড়িলে দেখা যাইত তাঁহারও চকু ওফ ছিল না।

কৈন্ত শিবানী জানিত না সে বধন
মনে করিতে ছিল তাহার সব ক্রাইরাছে
ঠিক সেই মুহুর্তেই অলক্ষ্যে আবার তাহার
জন্ত নৃতন চিন্তা নৃতন কার্য্য সঞ্চয় হইতে
ছিল। সে জানে না যে এখানে কিছুই
ক্রাইবার নয়, কিছুই ফ্রায় না।

()

ষেদিন শ্রাবণের অবিশ্রান্ত ব্র্ণের মধ্যে ঘনঘটার বাের আবির্ভাবের ভিতরে একজন গৃহহারা শ্রান্ত পথিক আসিয়া তাঁহাদের রুদ্ধ বারে আঘাত করিয়া ডাকিয়া বলিল "কে আছগো আমার এরাত্রের মত আশ্রয় দাও"

मित्र मिर्द्भवेती वाष्ट्रिक्तन ना। अनन দেখিতে মাতঙ্গিনীর সঙ্গে মথুরায় গিয়াছিলেন। বালিকা শিবানী প্রতিবেশিনী কৈবর্ত্তর মেয়ে হারানের মার সহিত বাড়ির ভিতর একা। সে দেখিল পথিকের জামা কাপড় সমস্ত ভিজিয়া একেবারে স্থপ স্থপ করিতেছে। निः छोटेल कन भए । त्र छाटाक मार्यत একখানা থান আনিয়া দিল এবং হারানের মা নীচের ঘরের তক্তোপোষে উপর হইতে কর্ত্রীর বিছানাটা আনিয়া পাতিয়া দিল, ঘরের গঙ্গর হুধ আনিয়া খাওয়াইল, ক্লান্ত অতিথি **দেরাত্তে নৃতন আশ্ররে নিশ্চিন্ত মনে** ঘুমাইয়া পডিলেন। পরদিন অনেক বেলা হইলেও অতিথি শধ্যাত্যাগ করিয়া উঠিল না। প্রতীকা করিতে করিতে শেঠ মন্দিরের ঘড়িতে দশটা বাজিয়া গেল। শিবানী বলিগ "হারানের या प्रतिथापनिथ मानूयठीत ज्ञाय! मा यनि এখুনি এদে পড়েন তো বকুনি খেয়ে আমার প্রাণ যাবে। সকাল বেলা উঠেই ও কেন চলে গেল না ?"

হারাণের মা, অতিথিকে বিদায় করিতে বাইতে উম্বত হইলে সে গঠাৎ তাড়াতাড়ি বলিয়া উঠিল "নানা একটু থানি দাঁড়াও হারাণের মা, লোককে কি অমনি যেতে বলতে আছে একবাট হথ আর হথানা বাতাসা নিয়ে বাও, আহা হাট ভাত দিতে পারিলেই বেশ হতো কিছু কি করি মা বদি এসে পড়েন কাজ নাই।"

হারাণের মা গিরা নেথিল তাহাদের অভিথি বিহানার উঠিরা বসিরা আছে। তাহার মুখ ভারি স্থীত ও আরক্ত হইরা উঠিয়াছে, সে বেন বিহানা হাড়িরা উঠিতে পারিতেছে না। হারাণের মা তাহার নিকটে ছথের বাটিটা নামাইরা দিরা তাহার দিকে চাহিরা বলিল "এই বে তুমি উঠেছো" তা দেখো বাপু মুখ হাত ধুয়ে ছধটুকু থেরে নাও, তারপর যদি ইচ্ছে করে। তাহলে এখন তো আপনি এসতে পারো"।

অতিথি কম্পিত কঠে কহিল "অনেককণ হইতেই যাইবার চেষ্টা করিতেছি কিছ আজ আর আমার দাঁড়াইবার সাধ্য নাই, আমি যেন চোথে কিছুই দেখিতে পাইতেছি না, যদি আজও আমার অনুগ্রহ করিয়া একটু হান দেন—"

হারাণের মা রাগিয়া বলিল, তুমি তো ভাল লোক বাপু। 'থেতে পেলে যে ভতে চাও' নানা সে-সব হবে টবে না, গিলি যদি এসে পড়ে তাহলে মেরেটাকে আন্ত রাধবে না, নিজেও অপমানিত হবে, তার চেম্বে এই বেলা পথ দেখে নাও।" অতিথি মুহুর্ত্ত মধ্যে উঠিয়া দাঁড়াইল, কম্পিত অধরে কি একটা বলিতে গিয়া হঠাৎ মুধ ফিরাইয়া লইল। এমন সময়ে হঠাৎ দার খুলিয়া ক্রন্তপদে শিবানী সেই খরের মধ্যে প্রবেশ করিয়া ভিরন্ধার পূর্ণ বলিয়া খবে হারাণের মাকে "ছিছি হারাণের মা ক্র্মলোককে কি বিদায় করে দিতে আছে ?" তারপর প্রস্থানোখত অতিথিকে মিনতি পূর্ণ ক্ষরে কহিল "নানা আপনি বাবেন না ওর কথার কিছু মনে कद्रादन ना ; युष् मानूब अद्र माथात किंक नारे"।

অতিথি চমৎকৃত হইরা অন্থরোধকারিণী বালিকার দিকে এক দৃষ্টে কিছুক্ষণ চাহিরা রহিল, মৃহ কঠে কি বেন একটা কৃতজ্ঞতার ^অ কথা বলিতে গিয়া বিছানার শুইরা পড়িল। দিনরাভের মধ্যে আর একেবারো চোধ চাহিল না।

শিবানার মা আসিরা বথন তাঁহার পঞ্চমে বাধা কণ্ঠ সপ্তমে চড়াইরা কন্তাকে বা খুসী বিলরা তিরস্কার করিতে লাগিলেন, তথন শিবানীর সজলচক্ষু মুহুমুহু ভাহার অচেতন অভিথির রোগ্যাতনা প্রকটিত মুথের উপর ফিরিতে লাগিল। আহা বদি সে শুনিতে পার! যদি ব্ঝিতে পারে? তাহা হইলে এ অবস্থার তাহার কভোথানি আঘাত লাগিবে! আহা মা কেন ওর অসহার অবস্থার কথা একটু ভাবিরা দেখিতেছেন না!"

কিন্তু তথন আরু দেই জ্ঞানশৃষ্ঠ বিকারের রোগীকে বিদার করিবার উপার নাই। অগত্যা সিজেখরী রাগে গরগর করিতে করিতে বোদেদের নৃতন জামাইকে ডাকিয়া আনিতে গেলেন—যদি হাসপাতালে পাঠাই-বার কোন ব্যবস্থা করিতে পারেন। শরৎ লাহা মেডিকেল কলেজে কোর্থ ইয়ারে পড়ে স্ত্রীর অহথের সংবাদ পাইরা এখানে আসিয়াছে। শরৎ বিশেষ যত্ন করিয়া রোগীর চিকিৎসা করিতে লাগিল। সে এখনও ব্যবসাদার হইয়া দাঁড়ায় নাই ; শিক্ষার্থীয় আগ্রহ ও মানব খভাব স্চক কোমলতা তাহার হৃদরে এখনো প্রবল। শিবানী আহার নিদ্রা ত্যাগ করিয়া বিপন্ন রোগীর সেবা করিতে লাগিল। সিঙ্কেশ্বরী • প্রথমে তাহাকে হাসপাতালে পাঠাইতে চাহি-লেও শেষটা আর ভাহা পাঠাইলেন না। রোগী জীবন মৃত্যুর মহাসমরে জায়ী হইয়া উঠিল। সিদ্ধেশ্বরী তাহাকে বে গৃহে স্থান দিলেন তাহার প্রধান কারণ, তিনি শরতের কাছে গুনিবেন, তাঁহাদের রোগী **প্রলাপের মধ্যে বড় বড়**

ইংরেজি কোটেশন বলিতেছে, সে নিঃসন্দেহ বি এ এমে ক্লাশের ছাত্র। এবং সে বে অসামান্ত ঘরের সস্তান তাহার প্রমাণ তাহার অঙ্গুলিন্থিত একটি অঞ্গুরী।

একদিন সন্ধার অন্ধকারে দিবসের শেষ
আলোটুকু প্রাস্ত হইরা মিলাইরা পড়িলে রোগী
তাহার রোগশয়া ছাড়িয়া বাহিরের অঙ্গনে
শিবানী দক্ত পিঁড়ির উপর বসিয়াছিল। শুরু
চতুর্দ্দশীর চাঁদ এরি মধ্যে দেখা দিয়াছেন,
শুত্র জ্যোৎমাজাল রোগীর রক্তহীন পাণ্ডুমুখকে
পাণ্ডুরতর করিয়া দিয়াছিল। মৃত্র বাতাসে
নিমপাছের শাখা অর অর ছলিতেছে;
সিদ্ধেশ্বরী পায়ের কাপড় একটু গুটাইয়া শুচিতা
রক্ষা করিয়া মালা ফিরাইতে ফিরাইতে আসিয়া
অনতিদ্রে দাঁড়াইলেন; "আজ কেমন
আছ গা?"

"ভাল আছি" বলিয়া অতিথি অন্তমনস্কভাব হইতে মন ফিয়াইয়া লইয়া তাঁহার দিকে চাহিল। সিদ্ধেশ্বরী সাবধানে সেইখানে বসিলেন, একটু থামিয়া এ চটি ছোট রকম নিশ্বাস ফেলিয়া কহিলেন "ভাল হয়েছ তাই ভাল বাছা। যে দায়ে ফেলেছিলে—ভয়ে আর বাঁচিনে! বলি কোথাথেকে আমার এ গোরো' ভুটলো! যদি কিছু ভালমন্দ হয় তাহলে আমি কার সাহায্য নিয়ে কি করবো! যাহোক গে টাকার ঘণ্ট করে, গতরের শ্রাদ্ধ করে এখন যে ভোমায় বাঁচিয়ে তুলেছি তাই আমার ভাগ্যি। তা ভোমার বাড়ি কোথা গা! একলা এমন করে পথে পথে ঘুরছিলে কেন ? ভোমায় কে আছে?

অতিথি গভীর দীর্ঘ নিখাস কেলিলেন "আমার বাবা আছেন। আমি পশ্চিম বেড়াতে

व्यवस्थित ।" को चरण कि बार्ज की की করেই ক্ষিত্ত হয় ৷ ভোনরা কি কাত গা ? জোনাম নামটা কি ?" "আমি নাম নীক্ষকুৰার চৌধুরী" "চৌধুরী ! ভোমরা बाही मा बारबद्ध !" वारबद्ध छनिया चानत्म সিজেখরীর চোধ উচ্চল হটরা উঠিল। সাগ্রহে ৰলিলেন "তা বাছা তুমি কেন আমার বাডি থাক না। আমারোতো আর ঐ একটি মেরে বই আর কেউ নেই। আর তুমি তো শিবুকেও দেখছো সে কিছু আর অপচ্চন কর্বার মতন মেরে নর। তো ভধু ভধু তোমার কি সেবাটাই না করলে ! এমন লক্ষী মেয়ে বাছা আর তৃষি কোথাও পাবে না, ভা আমি জাঁক করে 'বলতে পারি। বিদেশ বিভূঁই তিন পুরুবে আমরা দেশ ছাড়া; কে খোঁজে দেখে, তাই একটি ঘর कामारे हारेছि। नित्न बामार त्मरत्र अमन किছू ফেলনা নম্ন যে যাকে তাকে ধরে দিই। সেদিন পেসর দিদি দেশ থেকে এসেছিল সে বল্লে. চাঁদপাড়ার বাৰুরা শিবুকে দেখে গিয়েছিল তাদের ভারি সাধ ওকে বউ করে, আমি বাবু তাতে রাজি হলাম না। বাপরে। আমার ঐ একটি মেরে, ওখানে হলেতো আমি তাকে আর দেখতে পাবো না, কাজনেই আমার অমন রাজ্যভোগে।" নীরদকুমার হাঁ না ভাगमन किहुरे विगालन नां।

পরদিন সিঙ্কেশরী ক্লাশৃত সাজি হাতে
নামাবলি গায়ে মাণার জড়াইয়৷ অহচে কঠে
"জর জর গোপাল গোবিন্দ গলাধর, রুফ্চতন্ত্র
করো ক্লণা করণা সাগর' ইত্যাদি শ্লোক
আওড়াইতে আওড়াইতে বাড়ি চুকিয়া ডাকিশেব শিনি সাজিটা নে আমি একবার

त्वकत कृत्वत कांटकत कांवतांव स्टब्स्ट छाटक त्ररथ चानि।" भिरानी ब्राह्मपत्र स्वेटक वाक्रिय रहेवात शृट्सीरे ह्याबाटकत्र छेशन स्टेट्ड मीत्रन-क्रमात्र मामिया चामित्मम, शेरव शैरव कारक আসিরা বিনীত ভাবে বলিলেন "ৰা আপনাদের चातक करे विताहि चात विराख देखा कि না। আজ আমার আপনারা বিদার দিন।" নীরদ বাড়ী হইতে পলাইবার সময় পাথেয় সামান্তই বাহা আনিয়া ছিলেন প্রার কুরাইয়া व्यानिताहिन; -- भरकरि (क्वन छ्थानि ३० টাকার নোট ছিল—তাহারি একথানি এবং হাতের আংটিটা দিয়া বলিলেন,---"এই আংটিটা পূর্বে বছমূল্য ছিল, এখনও ইহার বোধ হয় কিছু মূল্য আছে। ডাক্তারের ডিজিট ও ওব্ৰপতের দামটা বিক্রি করিরা চুকাইরা দিবেন।" আংটিটি ভাঁহার মাতার; অগ্রকে দিতে কষ্ট হইতে লাগিল.—কিন্ত উপায়ান্তর ছিল না।

সিদ্ধেরী আংটিটার ঔজ্জন্য দেখিয়া তাহাব মৃল্য সম্বন্ধে কোন প্রকার সন্দিহান হইলেন না। তিনি এই পৃহহীন বুবাকে পূর্ব হইতেই কোন ছল্লবেশী রাজপুত্র বলিরা সন্দেহ করিতেছিলেন। এখন সন্তাদরে এমন জিনিব খরিদ করিবার হ্বযোগ সহজে ছাড়িতে ইচ্ছা হর না। মনটা চটিরা উঠিল, মুখভার করির। বলিলেন "আমরা কি বাছা তোমার আংটির লোভেই এতোটা সেবা যত্ন, করলাম? না হর ল ছই টাকাই আমার গেল তাতে আমার ক্ষতি হবে না, ছরিছে তোমারি ইচ্ছা! এ কলিকাল কিনা হাজার কর কেউ বোবে না"! নীয়দ বাত্ত হুইরা বলিলেন "সেকি আমার জন্ধ জাপনার। কেন এতো ধ্রচ



ন্সকপ অগ্রিদেবতা

করবেন, আমি আপনাদের কে ?" "তাইতো বলছি বাছা আপনার কেন হওনা ? শিব্ও তো তোমার অযুগ্যি নর"। নীরদের পাঙুম্থ হঠাং লাল হইরা উঠিল, সে রাগ করিয়া কি বলিতে গেল কিন্তু বলা হইরা উঠিল না। এই সমরে শিবানী একটা মিরাচারের শিশি ও একটা রেকাবে চারিটি ভিজাছোলা হন ও আদার কৃচি আনিয়া ধীরে ধীরে তাহার সমুধে দাঁড়াইল। ছোট একটা পাধর বাটিতে একদাগ ঔষধ ঢালিয়া তাহার অচঞল চোধের ছটি কালোতারা তাহার মুধে স্থাপিত করিয়া মৃত্ স্বরে বলিল "এটা থেয়ে নিন"। নীরদকুমার একটু অপ্রতিভ হইয়া তাহার মুধের দিকে একবার চাহিলেন, সে মুধধানা সকল সময়েই একরকম, পাধরের মূর্ত্তির মতন, তাহাতে কোন সমরেই বড় একটা ভাবের রেখা পরিবর্ত্তিত হর না। নীরদক্ষারের ওর্ধ থাওরা হইলে পাত্র হস্তে সে আবার আন্তে আন্তে চলিয়া গেল। নীরদক্ষার একটা ক্ষুদ্র নিখাস ফেলিলেন। প্রকাশ্রে সিদ্ধেশরীর দিকে ফিরিয়া কহিলেন, আমি ওবেলা আপনাকে ঠিক করে বলবো।

অপরাত্নে নদীর ঘাটে সিছেশরীর মকর, মিতিন ও বেগুনসূদ জানিলেন অগ্রহারণ মাসেই শিবানীর বিবাহ।

রাজ্যের কথা।

ন্তন প্লিদ আইন। বছদিন হইতেই আমর। গবর্মেণ্টকে আমাদের অভাব ও আকাজনা জ্ঞাপন করিয়া আসিতেছি। দেশে এইরূপ নৈরাশ্যপ্রসূত অশান্তি ছায়ী হইলে যে বিপৎপাতের সন্তাবনা তাহা নির্দেশ করিয়া দিতেও আমরা অবহেলা করি নাই। কিন্ত ছভাগ্যবশত: প্ৰবেণ্ট 'নে কথায় কোন দিন क्रिशेष क्रांचन नाहे। एतम आयात्मत्र त्मान्त्र इहे চারিটি অপরিণত বৃদ্ধি যুবকের মধ্যে পাশ্চাত্য দেশের ক্ৰায় রাজপুরুষ হত্যা প্রবৃত্তি আসিয়াও দেখা দিল। ইহাতে-শান্তির সহজ উপার পরিভ্যাগ করিয়া গবর্মেণ্ট একের দোবে সহত্রের প্রতি কঠোর নীতি অবলম্বন ক্রিলেন। সংস্থাহের স্থানে তাঁহার। সবলে প্রস্থাশাসন পারম্ভ করিলেন ফলে সংবাদপজের স্বাধীনতা ধৰ্ক করা হইল, সম্পাদকগণকে কারাগারে প্রেরণ করা হইল, সাধারণের সভাপঠনের অধিকারের প্রতি ^{ইস্তকেণ} করা হ**ইল, বালক ও সুবকগণ কর্ভ্**পক্ষের विवष्ष्ठित्व शिक्षा निशीष्टिक हरेटक वाशिनः चरनन

সেৰক সমিতিগুলির चिख्रां इहेन अवर পরিশেষে এমন কি দেশের বৃদ্ধ রাজভক্ত নেতৃপণকে পर्यास विना অভিযোগে ও विना विচারে कांत्रोक्रफ कता देहेल। बांक्य्क्रवर्गणातक मस्त्रहे कतिबात सस् পুলিদ ৰে প্ৰজাৱ প্ৰতি কিন্তুপ অভ্যাচার করিয়াছে, **ठाहा काहाबर्फ व्यविभित्र नाहै। वक्का, नाटीव फ** प्यमिनी पूत्र मायलात पूलिएमत बछाहात काहिनी প্রকাশ পাওরার পর আমরা আশা করিরাছিলাম যে রাজপুরুষগণ অন্ততঃ তাঁহাদের নিজেদের সুনাম রক্ষার অস্তুও এইবার বঙ্গে পুলিদসংখারে প্রবৃত্ত হইবেন। কিন্তু কলে দেখিতেছি ঠিক তাহার বিপরীত गावदांत्ररे चारबाजन स्ट्रेर्डिश (बकाब मारहरवन অন্থ্যোগৰে পুলিদের হন্তে ষেক্লপ অভূতপূৰ্ব অসীৰ क्रमण गानव वानचा श्रेटकाल, जाशांक अलाग नैजरे ত্রিটিশরাজের ছানে পুলিসরাজ প্রবর্তি হইবে বলিয়া আশা করা বার। এই নুভন পুলিস আইনের স্ত্ৰপ্ৰলি স্কলেই পাঠ কৰিবাছেৰ সংক্ৰহ নাই।

ইহার বলে ভবিবাতে বে কোন প্রিন কর্মচারী আমাদের সকল কর্মেরই সর্বানর প্রভূ হইরা দাঁড়াইবে। প্রকাশ্য ছলে কোন উচ্চধানি বা সঙ্গীত করিবার পর্যান্ত অধিকার হইতে আমরা বঞ্চিত হইব। শান্তিভক্ষের আশস্কা অর্থাৎ কর্মনা করিবামাত্র ভাষারা আমাদের সকল কর্মের উপর হন্তক্ষেপ করিতে পারিবে। এতদিন প্রনিস বে এরপ পীড়ন করিতেন না ভাহা বলিতেছি না, তবে এইবার তাঁহাদের পীড়নটাকে আইনসক্ষত করা হইল, আমাদের প্রতিবাদ করিবার শক্তিটুকু পর্যান্ত রহিল না।

বেকার সাহেবের শাসন। বিলাতে সার कर्छन উडेनिक इंडा अमरक मिन तकांत्र मार्टिक বলিরাছেন যে এরপ কর্ম যাহাতে ভবিষ্যতে আর না হয়, তাহার জব্য সকলেরই এক্ষণে গবর্ষেটের সহিত যোগদান করা কর্ত্তব্য, নচেৎ গবমে ট ৰখন শাসনক্ষেত্ৰে অবতীৰ্ণ হইবেন তখন দেশবাসীর নিষ্ট তাহা প্রীতিকর না হওয়াই সম্ভব, এবং শাসনকালে তাঁহাদের পক্ষে দোঘী ও নির্দ্ধোষীর মধ্যে সৃন্দ্র ভেদবিচার রক্ষা করিয়া কার্য্য করা অসম্ভব হইয়া উঠিবে। বেকার সাহেবের স্থায় সন্বিবেচক শাসনকর্তার নিকট এরপ কথা শুনিয়া আমরা বথার্থ ই বিশ্বিত হইরাছি। পাঞ্জাবের এক ষুবা বিলাতের একজন ইংরাজকে স্বজাতকারণে হত্যা করিরাছে বলিরা বঙ্গবাসীর যে অপরাধ কোথায় তাহা আমরা বুবিরা উঠিতে অক্ষম। আর এরপ চুই একটি বিকৃতবন্তিক উন্মাদের তৃত্তর্মের জন্ত তাহার স্বদেশী সমাজ যে कि প্রকারে দারী হইতে পারে: তাহাও আমরা ব্ৰিয়া উঠিতে পালি না! যাহাই হউক विमिनी त्रांक्ष शुक्ररात मूर्य अत्र १ कथा खना कहेकर হইলেও বিশায়জনক নতে। কিন্তু এই উপলক্ষে গোবেলের স্থার বদেশীর মুখে বখন গুনিতে পাই যে আমানের পক্ষে ঝাধীনভাব প্রচার করা অক্যায় এবং দাসাম্বদাস হইরা থাকাই আমাদের একমাত্র বাঞ্নীর অবস্থা, তখন যে কেবল বিশ্বিত হই ভাহা নহে, আমাদের মর্ম্মণীড়া অস্থ হইরা উঠে।

ইংদের প্রতিবাদে সেদিন কলিকাভার কলেজ

উদ্যানে শীষুক্ত অরবিন্দ খোব বে কথাঙালি বলিরাছেন তাহা সমগ্র দেশের শিক্ষিত ব্যক্তির মর্ম্মবাণী বলিলে অত্যক্তি হর না। তিনি বলিয়াছেন—

বঙ্গদেশে যে হত্যাপরাধগুলি সাধিত হইরাচে তাহা যে বিচ্ছিন্ন ব্যক্তিগত ব্যাপার তাহা বিচারালয়ে বার বার প্রমাণিত হইয়াছে। কেবল একটি যাত্র ক্ষেত্রে গুটিকয়েক ব্যক্তির মধ্যে ষড়বল্লের অভিযোগ চলিতেছে। এক্লপ অৰম্বায় বেকার সাহেব আয়াদের নিকট কি প্রকার সহায়তা প্রাপ্তির প্রার্থনা করেন ? এ সৰল অপরাধীকে ধিকার দিরা আমরা ভারাদিগের নিকট হইতে যথাসম্ভব দূরে থাকিলে ভিনি সম্ভষ্ট হওয়া সম্ভব নহে। এক্সপ ছলে তাঁহার অভীপিত সহায়তার নাম ও প্রকৃতি কি তাহা প্রকাশ করিয়া বলা আবশ্যক। আজ কাল অনেকছলেই আমাদের দিক হইতে গ্ৰমে টিকে সহায়তা করার কথা গুনিতে পাই। একপক্ষে আমাদের সমগ্র জাতি স্বায়ন্তশাসন লাভের জন্ম দাবী করিতেছে, অপর পক্ষে দেশের বর্ত্তমান গ্রমে প্টের কর্মের সহিত আমাদের কোন সহযোগিতাই নাই এবং তাহার কর্মচারীগণের উপরও আমাদের কোন প্রকার শাসনাধিকারই নাই। * * অতএব ছোটলাট সাহেব যে বিষয় উল্লেখ করিয়াছেন, আমাদের স্থায় অবস্থাপন্ন জাতির পক্ষে সেরূপ বিষয়েও সহায়তা করা যে কি প্রকারে সম্ভব তাহা আমরা ভাৰিয়া উঠিতে পান্ধি না। তৎসত্ত্বেও আমি একটি প্ৰস্তাব নিবেদন করিতে চাহি। * * পুৰায় শ্ৰীযুক্ত গোখেলে সেদিন যে ৰক্তৃতা করিয়াছেন বলের শাসনকর্তা তাহার উল্লেখ করিয়া যথেষ্ট সুখ্যাতি করিয়াছেন। এই বস্তুতার শ্রীবৃক্ত গোখেলে বলিয়াছেন যে বিকৃতমন্তিক ভিন্ন ভারতে স্বাধীনতার আদর্শ অন্তরে পোষণ করা সম্ভব নহে। মতে বিনা বস্তপাতে **ভাধীনতা লাভ** অসম্ভব এবং যে সকল ব্যক্তি সহনশীল প্রতিরোধের (Passive resistance) সমর্থন করেন, তাঁহারা কেবল ভীক্ষতা বশত: তাঁহাদের অস্তরের যথার্থ কথ প্ৰকাশ করিয়া ৰলিতে সক্ষৃতিত হন মাত্ৰ। বাধী-नछात्र आपर्भवागीभागद्ध थिछ भवद्य छ द्य कर्छाव

ও নিশ্বৰ নীতি অবলম্বন করিয়াছেন, গোখেলে তাহার সমর্থন করিয়া বলিয়াছেন যে গবরে তির পক্ষে এরপ পদ্ধা অবলম্বন ভিন্ন গভাতর ন'ই। এ সম্বন্ধে একটি ইংরাজ সংবাদপত্র পর্যান্ত বলিতে বাধ্য হইয়া-ছেন যে এরপ নীতি অবলম্বন করা বুথা, কারণ কোন জাতির ভাব বা আনুর্শকে শাসিত করা অসম্ভব। শাস্তির পথে স্বায়ত্তশাসন লাভ করা সন্তব নহে, শীমুক্ত গোখেলের পক্ষে এরপ নীতি প্রচার করা নিত। স্ত বিপজনক হইয়াছে সন্দেহ ন।ই। তিনি জানেন যে ভারতে সহস্র সহস্র ব্যক্তির অপ্তরে এই স্বায়ত্রশাসনের আদর্শ বদ্ধমূল হইয়া প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এই সকল আবেগপূর্ণ অন্তরের নিকট তিনি বলিতে-ছেন যে রঞ্জপাত ভিন্ন স্বাধীনতালাভ সম্ভব নহে। যদি কোনও বক্তা কথনও বস্ততঃ ভারতের পক্ষে বিপজ্জনক কথা প্রচার ক্ষিয়া পাকেন, তাহা হইলে ঐাযুক্ত গোৰেলে নিজেই তাহা করিয়াছেন। আমরা দেশবাসীর নিকট প্রচার করিয়াছি যে শান্তির পথ অবলম্বন করিয়া ভোমরা যে কোন প্রকারের স্বাধীনতা লাভ করিতে সক্ষম। আমরা দেশের যুবকদিগকে गर्रवनारे विषयाहि—"नि**ष्या**पत्र शिरम् छेन्नछि कत् निष्मपत्र कुन ७ कलाम अिंछ। कत्र এवः निष्मपत्र কলহ নিজেরাই নিষ্পত্তি কর। তোমরা সর্বাদাই শুনিতে পাও বে তোমরা স্বায়ত্তশাসন লাভের উপযুক্ত নহ। অপরের উপর নির্ভর না করিয়া আতানির্ভর দারা আত্মোন্তি করিয়া দেখাও যে ভোষরা স্বায়ত্ত-শাসন লাভে উপযুক্ত।" তাহার পর সহনশীল প্রতি-রোধ (Passive resistance)। ইহার ছই অর্থ। এক यে, राडका ना भवतम के आभानिभाक आभारतत्र স্থান্য অধিকার দান করেন, ততক্ষণ কতকগুলি ^{বিষয়ে} আমরা গবর্মেণ্টের সহিত যোগদান করিব না। থিবং অপর অর্থ. এই যে যদি আমরা পীড়িত হই, যদি শাসনবজ্ঞ আমাদের শিরে আসিয়া পতিত হয়, তাহা হইলে আমরা যে ধড়াহন্তে তাহার সমূধীন হ**ইব তাহা নহে, আমর। আইন সঞ্চত উপা**য়ে তাহা সহ্য করিব ও ভোগ করিব। আমিরা আমাদের যুবকগণকে এমন কথা বলি নাই বে ভোমরা রাজ-

পক্ষের নিষ্ট হইতে কঠোর ব্যবহার পাইলেই ভাহার ⊄তিশোধ লইবে,—আমরা ভাহাদিগকে নীরবে সহ করিবার উপদেশই দান করিয়াছি। অনেকে বলেন যে এই শিক্ষা ছাৰাই আমরা তাহাদিগকে আইনের অসম্মান করিতে ও রাজশক্তির বিজ্ঞোহী হইতে উৎ-সাহিত করিতেছি। যথার্থপকে আমরা তাহার ঠিক বিপরীত কর্মই করিয়া আসিতেছি। প্রতিরোগ (Passive resistance) প্রচার করিয়া আমরা দেশবাদীকে আইন। সত শাস্ত উপায়ে তাহা-দিগের অভিপীত স্থাষ্য আকাক্ষা পুরণ করিবার পথ প্রদর্শন করিতেছি মাত্র। দেশে শান্তি ও শৃথালা রক্ষা করিবার জন্ম আমরা গ্রমেণ্টের সহিত কেবল এই উপায়েই সহযোগিতা করিতে দক্ষম। তাহার পরিবর্ত্তে আমরা ছোটলাট সাহেব ও গবর্মেণ্টের নিকট এই সহায়ত। প্রাপ্তির আশা করি যে তাঁহারা এদেশবাসীর স্বাভাবিক অধিকারগুলির প্রতি সম্মান-अमर्गन कतिया চলিবেন, অর্থাৎ তাঁহারা দেশবাদীর সাধারণ সভা আহ্বানের ক্ষমতা, সংবাদপত্তের স্বাধী-নতা ও সমবেত কর্মের অধিকার অকুণ্ণ রাধিবেন। ৰদি তাঁহারা এই দকল কর্মে প্রজার সহায়তা করেন, তাহা হইলে আমরা নিঃসন্দেহে বলিতে পারি বে **(मर्ट्स माश्विकक इट्टेवांत मञ्जावना आंत्र शिकिटन ना.** এবং वर्खगात्वत्र विशेष जकन वित्रिष्टिनत्र अन्त्र मूर् इहेब्रा वाहेत्व।

* * আজকাল আমাদিগকে শিক্ষা দেওরা
ইইতেছে যে রাজপুরুষগণ দৈবশক্তিসম্পার ও অভ্রান্ত
এবং প্রস্তাগণ জড়ভাবে তাঁহাদের সকল নীতির সমর্থনে
ৰাধ্য। এরূপ নীতি আধুনিক কোন জাতিই
থীকার করিতে জক্ষম। আধুনিক কোন জাতিই
তাহার ক্সায় ও 'আভাবিক আকাজ্জা ভ্যাপ করিতে
সম্মত হওরা সম্ভব নহে। যেদিন বিদেশী গবমে'ট
থাদেশী হইবে, অর্থাৎ গবমে'ট এরূপ নীতি অবলঘন
করিবেন যে ভাহা বারা কালে দেশের গবমে'ট
দেশবাশীর গবমে'টে পরিণভ হইবে, সেই দিন
হইতে আমাদিগের প্রান্ত্রুইতে গবমে'টকে সহযোগিতাঁ দান করা সভব। ইহার জভাবে সহ-

বোগিতা অর্থে উপহাস বা আকাশকুস্থ ভিন্ন আর কিছুই বুরায় না। বর্ত্তমান সহযোগিতা অর্থে এক পক্ষ কর্মিক ও অপর পক্ষ কেবল 'হাঁ' বলিবে। এক্ষণ সহযোগিতা প্রদর্শন করিতে আমরা অক্ষম।

৭ই আগষ্ট। কেন এ বিজ্যনা। গোধলে ত
নন্দ কথা বলেন নাই। আনাদের রাজনৈতিক
উচ্চাকাজনা সমন্ত বিসর্জন দেওরাই শ্রেয়! অক্ত দেশে
রাজাই প্রজার ঝাধানভাব—খাধান চিন্তা ফ্রির
সহায়ক; আনাদের ছুর্ভাগ্য এমনি যে—আমরা
যদি লাঠি লইয়৷ উচ্চরবে একটা শৃগাল কুরুর
তাড়না করি তাহাও সিডিসন্—আর পাঁচজনে
মিলিয়া কোন নির্দোব আলোচনা করি তাহাও
সিডিসন।

ণ্ট আগষ্ট গভর্ণনেন্ট ছকুম জারি করিলেন—যেন ছেলেরা মিটিংএ না যার,—বেন তাহা হইলেই ব্রিটিশ রাজ্য রসাতলে যাইবে—হার হার! এ অবস্থার সভাপতি মহাশয়ের অপুরাহ্য ছয়ট। পুর্যন্ত অর্থাৎ সন্ধারত পর্যন্ত বজ্তা না করিলেই বা চলে কই।
নহিলে অরবিন্দ বাবু বজ্তানকে উঠিলে যে রক্ষা
থাকিবে না! তিনি যত নির্দোব কথাই বলুন না কেন
—তাহা দোবের কথা দাঁড়াইবে! এত সাবধানত।
সত্ত্বেও ষ্টেট্স্ম্যান বলিতে ছাড়ে নাই—"সর্কানাল
উপস্থিত —ছেলের। মিটিংএ উপস্থিত ছিল।" সইকব
মিথা৷ হইলেও—এ কথা ধ্রুব সত্য। হয়ত ইহার
ফলে কাহারো ডিপোর্টেসন হয় বা!

এমন মিটিংএ কাজ কি তবে ! জামি বলি—এদ জামরা সকলে কথাবার্তা,—মিলন মিটিং ছাড়িয়া ঘরে বসিয়া নীরবে ধ্যান করি।—ইহাতে জড় হইয়া পড়ি—ভাল—বিনায়াসে নির্বাণ মুক্তি:—জাঘাতের ছঃখ কট্ট সকলি চলিয়া ঘাইৰে। আর ধ্যানে বদি বৃদ্ধিবৃত্তি পরিকার হয়—কার্য্য প্রবৃত্তি যদি নীরবে বাড়িয়া ওঠে,—তবে এইরপেই আমাদের মকুষ্য জাগরুক হইয়া উঠুক—বৃত্তিব ইহাই বিধাতার মকল আলীর্বাদ !!!

চয়ন।

বুদ্ধদেবের ভন্মাবশেষ। প্ৰত্নতন্ত্ৰবিভাগ সম্প্রতি একটি আশ্বর্যা আবিক্রিয়া করিয়াছেন। পেশোরারের নিকট একটি পুরাতন বৌদ্ধন্ত,প বাহির হইয়াছে, ভন্মধ্যে একটি প্রস্তর পাত্রের ভিতরে বুদ্দদেৰের চিতাভন্ম রক্ষিত রহিরাছে। প্রায় ছই সহত্র বংসর পূর্বের যীশুপ্টের জীবন ममरत्र পেশোরারের নিকটবর্তী স্থানে কণিক নামে এক বৌদ্ধ রাজা ছিলেন। প্রস্তরপাত্রটির উপর नीनयाश्त्र हिल् वाक्षित प्रशह। মূৰ্ত্তিখোদিত वृक्षामव ७ कर्गिक्कत्र টিন মিপ্রিত ধাতুর (Bronze) একটি কোটার মধ্যে উক্ত পাত্রটি সুরক্ষিত। চীনপরিব্রাজক হয়েন ভাঙ ঠিক এই স্থানটিতেই বৃদ্ধদেবের ভস্ম রক্ষার বিষয় উল্লেখ করিয়া বিষাচেন।

এই আশ্চর্য আবিজিন্যার ইভিহাসটি বিশেষ

কৌতৃহলোদ্দীপক। যীশুগৃষ্টের মৃত্যুর পরেই যে সকল চীন পরিব্রাক্তক ভারতভ্রমণে আগমন করিয়া-ছিলেন, छाँदात्रा मकरलई এই विद्राि दोक्सिनित ও মঠের বিষয় উলেখ कत्रियाहित्नन । গলনীর মামুদের ভারত আক্রমণের কাল হইতে আৰু পৰ্য্যন্ত তাহার আর কোনও সন্ধান পাওয়া যায় নাই। হরেন স্থাঙ এই বৌদ্ধৰন্দির ও মঠকে তং-कानीन दोक जांद्र मर्खारणका दृहर ७ वां महर्गा ব্যাপার বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। ভিনি লিখিয়া-ছিলেন সম্রাট কণিক্ষের বৌদ্ধ সাম্রাজ্যের রাজধানী পুরুষপুরের পূর্বেদিকে এই বিরাট মন্দির ও মঠ অবস্থিত, এবং এই মঠেই বুদ্ধদেবের শুস্মাবশেষ রক্ষিত হইরাছিল। व्याग्र औं तरमन भूर्य काउँहान (fowcher) नारम একজন कतात्री दिख्छानिक त्रीमा**स अ**रमण खन्नवार्ग বর্ডবান পেশোয়ার নগরের অর্ক সাইল দূরে এক

মাঠের মধ্যে ছুইটি অভুত মৃত্তিকাত পা কক্ষা করেন। ধনন করিবার উপযুক্ত যন্ত্রাদির অভাববশতঃ ফাউচার সাহেব জার তাহার বিশেষ অন্সক্ষান করিতে পারেন নাই। কিন্তু প্রতুত্তব্বিভাগের অধ্যক্ষ মার্শাল (marshall) সাবেবের মন্ন ও চেষ্টার ফলে এতদিনে দেই লুগু সন্দির ও বঠ আবিষ্কৃত হইয়াছে।

ছুইটি স্তুপের মধ্যে বড়টিই প্রথম খনন করা হয়। কিন্তু তাহার অভ্যন্তরে প্রকাণ্ড ইট্টকন্তন্তের ভগ্নাবশেষ ভিন্ন আর কিছুই পাওরা যায় নাই। এককালে সেই ছাবে এক বিরাট অট্টালিকা ছিল সন্দেহ ৰাই। ছোট ভূপটি খনন করিয়া দেখা গেল ষে তাহার অভ্যন্তরে একটি বৌদ্ধমন্দিরের ভগ্নাবশেষ থোপিত রহিয়াছে। সন্দির্টি থাছে ১৯০ হাতের কম নহে। ভাহার অভগুলি এত উচ্চ যে দেখিলে ভত্তিত হইতে হয়। আরও নিমে খনন করায় শত শত প্রকাও মৃৎপাত বাহির হইল। সেওলি সব নাল বর্গে কলাই করা এবং ভাহাদের গাত্রে পুরাতন বৌদ্ধকালের প্রচলিত ভাষায় এক একটি অক্ষর খোদিত। আরও নিমে খনন করায় একটি বিরাট চতু ছোণ প্রস্তর চত্তর বাহির হইল। তাহার নিয়ে প্রস্তরনির্মিত সমাধিগৃহ। গৃহের ছাদটি পড়িয়াছে কিন্তু তাহার এক কোণে ছই দহস্ৰ ৰংসর পূৰ্বে রক্ষিত সেই ভক্ষাধারটি ^{ঠিক সেইভাবেই প্রস্ত}ুপের মধ্যে বিরাজিত।

অথম একটি মরিচা পড়া সর্শ রঙের ধাতৃনির্মিত ভালা কোটা বাহির হইল। পরে সেটিকে পরিষ্ণার করিয়া দেখা গেল তাহার গাত্রে নানারপ মুর্ভি বোদিত রহিয়াছে। ভাহার উপরিভাগে যোগাদীন বৃদ্ধ মুর্ভি এবং ভাঁহার ছই পার্থে ভ্রাবস্থায় প্লার্নত ছইটি বোনিসন্ধ মুর্ভি রহিয়াছে। বোধ ইয়া ইয়ার ব্রহ্মাও ইক্র হইবেন। পূর্ণ প্রস্কৃতি একটি খোদিত পল্লের মধাস্থলে এই তিন মুর্ভি প্রতিন্তিত। ইহা ভিন্ন তাহার ভিতরেও অনেক মুর্ভি ও কথা খোদিত রহিয়াছে। এই কৌটাটি শ্রীক শিল্পার বারা নির্মিঙ বলিয়াই বোধ হয়, ভাহার একস্থলে খোদিত রহিয়াছে—

আজিশালায়োস্ (Agisalaos) মহাদেনার স্থারবে (Sugarama) কণিক রাজার বিহারের অর্থাৎ বৌদ্ধমন্দিরের প্রধান এঞ্জিনিরার।

এই কৌটাটির মধ্যে বচ্ছ মর্ম্মর নির্মিত একটি ক্রা ।
ক্রিলের মুখটি মুক্তিকা দারা বন্ধ এবং তাহার
উপর একটি হস্তি মুর্জিক। বোধহয় হস্তীই
কণিক্রের রাজচিক ছিল। মর্মার পাত্রটির মধ্যেই
কণিক্রের এত স্থত্ন রক্ষিত ধনটি নিহিত রহিলাছে।
ইহার অভ্যন্তরে বৃদ্ধদেবের চারিধানি দক্ষ অন্থিওও
পাওরা গিয়াছে।

গভর্ণমেণ্ট এই ভক্ম ও চারিখানি অন্থিও—সিলন্ বর্মা, জাপান ও চীন এই চারিটি বৌদ্ধরাজ্যকে উপহার দিবেন—এইরপ মানস প্রকাশ ক্রিয়াছেন।

কিন্তু—ডাক্তার সতীশচক্র বিদ্যাভ্বণের নিকট কলম্বোর ধ্ববান বৌদ্ধ পুরোহিত এইরূপ মন্তব্য প্রকাশ করিয়াছেন যে, দেশবিদেশে বিতরণের পরিবর্তে সারনাথ বা বুদ্ধগয়ায় একটি স্বৃতিমন্দির স্থাপনা করিয়া তন্মধ্যে এই ভন্মাবশেষ রক্ষিত করাই বিধেয়।

जूर्क त्रभनी कौवन !-- कनमाबाद्यवद बादना त्य তুর্ক রমণীগণের জীবন বড়ই ছঃখমর ; তাঁহারা অভ্যা-চার পীড়িভ, পদদলিত, সাধারণতঃ নারীকাতি প্রার সকল দেশেই যে সুথ ৰচ্ছনতা সম্ভোগ করেন, তাঁহাদের ভাগ্যে তাহাও ছল ভ। প্রকৃত পক্ষে এ ধারণা সম্পূর্ণ ভ্রমাত্মক। হারেম (অন্তঃপুর) বিবাদের व्यानात रुख्या मृद्यत्र कथा, मिटे व्यान हेक्टे कुर्व नृद्धत्र শোভা, তাহা স্থ্যজ্জিত আরামের স্থান। আরব ভাষায় হারেম শব্দের অর্থ পবিত্র স্থান, ধর্মমন্দির, আশ্রম প্রভৃতিও এই নামে অভিহিত হয়। জননী-पियी এवः गृहनन्त्रीपिरात्र वामहान, व्यवःश्व ভवनरक "পুণ্য-স্থান," ধর্মাশ্রয় বলাই যে তাহার যথার্থ নামকরণ टम विषय कोन हिन्दूत यदन विश्व थाकिए शास्त्र नां, এবং এই नाम इट्रेटिट বোঝা याग्न, जूर्कशन जांशास्त्र নারীগণকে কি পরিমাণে এছা করেন। তুর্ক অন্ত:-পুরের জীবন অনেকাংশে আষাদের হিন্দুছানেরি মত, মাভাই গৃহক্রী এবং সর্বাণেক্ষা একার পাতী।

(सूर्मः निनो वरः বিশেষ করিয়া পুত্র সস্তানের প্রতি অধিক মমভাময়ী। পুত্ৰগণও ৰয়োপ্ৰাপ্ত হইয়া মাডার এই স্নেহ্ঋণ বিশ্বত হয়েন না, এবং সর্ববিষয়ে অসুগত ভূত্যের ক্যায় তাঁহার আজাকারী হইয়া থাকেন। সহস্মদের একটি প্রবচন আছে; স্বৰ্গরাজ্য স্বাভার পদতলে স্থাপিত, তুর্কগণ এই মহৎ वाका मर्राक्षा यदन बार्यन। मायां खिक नियम वगणः তাঁহারা পরিবারের বাহিরে কোন দ্রীলোকের সহিত ঘনিষ্ঠভাবে মিশিতে পারেন না, ডাই তাঁহাদের পারিবারিক বন্ধন স্থায়, ভাতা ভগিনী, মাতাপুত্রের মধ্যে গভীর বন্ধুতা দেখিতে পাওয়া যায়। স্ত্রীশোক দিগেরও বাহির সংসানের সহিত কোনও সম্বন্ধ না থাকায় গৃহ খানিকে সর্ব্ব হুখের আকর করাই তাঁহা-**(एव कीयत्वे अक्यांज उड इहेबा एर्ट्र)** मूमल्यान ধর্মের অফুশাসন অমুসারে বুদ্ধ পিতামাতাকে, বিশেষ করিয়া, মাতা, মাতামহী এবং পিতামহীকে ভরণপোষণের ভার প্রত্যেক পুত্রকেই গ্রহণ করিতে হয়। নিভাস্ত নিকট আগ্রীয়দিগের মধ্যেও ভদ্রতার নিয়ম সকল অভি যত্নের সহিত রক্ষিত হয়—বয়ো-किन्छे अप नर्वविषया विकास विका নম্রতার সহিত ব্যবহার করেন—আসন, পান, ভোজনে তাঁহাদিগকে প্রথম সম্মানিত করা হয়—বাড়ীর ছোট ছেলেটি ষতই কেন আদরের হন না, বড় ভাই কিম্বা ভগিনীর বিশেষ আজাবহ হইয়া থাকিতে হয় এবং তাহারা সর্ববিষয়ে তাহাদের সন্মান রক্ষা কারতে ৰাধ্য। তুৰ্ক সম্বন্ধে যে সমুদায় পুস্তক প্ৰকাশিত হইয়াছে, তাহা পাঠ করিবা খডই ধারণা হয় যে সেধানকার রমণীগণ অতি আলম্ভপ্রিয় এবং দিবদের অধিকাংশই তাঁহাদের আহত, উজ্জ্ল, কৃষ্ণ-তার চকু কজ্জ্ল লেখার শোভিত করিতে এবং বেশবিক্যাসে কাটিয়া যায়। কিন্তু বস্তুত: তাহা নহে। তুর্করম্পাপণ সুগৃহিণী, তাঁহারা অতি ফুলর স্চীকার্য্য করিতে পারেন। গৃহসজ্জা, আপৰ আপন পরিধের বক্তাদি নিজের হাতে অতি স্ত্র স্টিকার্য্যে পোছিত করেন। শিশুকাল হইতে ভাঁহারা এই কালকার্য্য শিক্ষা করেন এবং শিবাহ

হইলে স্কৃত চাক্লালে আপন আপন গৃহশোভিত করেন। উত্তৰরূপে স্চিশিল্প করিছে পারা সংপাত্রীর একটি বিশেষ লক্ষণ। আমাদের দেশের গৃ**হল-**নীদের মতই ওন্মানি গৃহিণীগণ অতি প্রত্যুবে শ্ব্যাত্যাগ करतन, এक পেরালা কফি . এবং একটি সিগারেটের ধুমপান করিয়া স্বামীর স্থাসচ্চন্দের ব্যবস্থা করেন. বিছানার কাছে তাঁহার চটিকুতা এবং প্রাতে পরিধের আমাটি সাজাইয়া রাখেন। গুহস্বামী শ্যাভ্যাগের পুর মুখ হাত ধুইয়া দিনের প্রথম নমাজ সমাধা করিলে কফি প্রস্তুত করিয়া তাঁহার হাতে দেন—ভিনি যদি আধুনিক সিগারেটের পরিবর্ত্তে সেকালের বরণের লখা পাইপ ধাইতে ইচ্ছা করেন তাহা হইলে তাহাও সহস্তে সাজিয়া দেন-এবং তাঁহার পায়ের কাছে একধানি আসনে বসিয়া থাকেন, তখন দাসীরা আসিয়া বিছানা ইত্যাদি উঠাইয়া ফেলে। শ্যাত্যাগ করিরা রাত্রিবাস পরিবর্ত্তন করিবার পুর্ব্বেই ছেলেমেয়ের৷ পিতামাতার কাছে আসে। তাঁহাদিগকে দেলাম করিরা তাঁহাদের আশীকাদ ও আদরলাভ তাহাদের প্রথম দৈনিক কৰ্ত্তব্য। খবে তাহাদের জন্ম সকালের কোন থাবার প্রস্তুত রাখিবার নিয়ম নাই—তাহারা তাই পয়দার আবদার ধরে, পরসা পাইলেই দাসীদের সত্তে যাইয়া 'দোকান হইডে ইচ্ছামত কিছু কিনিয়া খায়। তাহার পর সাত আট বৎসরেয় ছেলে খেয়েদের মুধহাত ধোয়াইয়া পরিফার পোষক পরাইয়া একজন পরিচারক দঙ্গে বেভাইতে পাঠান হয়। ছোট ছোট ছেলেমেরেরা বাড়ীভেই খেলিয়া বেড়ায়। এইত গেল সকাল বেলার कांच। এইটি इट्या शिल, गृहवासी बाहित्त राहेवात পরিচছদ পরিয়া কাজে চলিয়া যান, তথন গৃহিণী আপন দৈনিক কাজ আরম্ভ করেন। প্রথমে কাফ্রি পাচিবাকে সঙ্গে করিয়া সরকার যে বাজার আনাইয়া বাড়ীর ভিতর পাঠাইলা দেয়, ভাহা দেখিয়া হিসাব বুঝিয়া দাম " মিটাইরা দেন। এই সময় ছোটখাট একটি অভিনয় হইয়া যায়-গৃহিণী পদার ভিতর হইতে জিনিশ ভাল नम्, नाम (वनी, ठाकत्र मव व्यविश्वामी देखानि वलनः সরকার বাহির হইতে আলার শপ্ত করে, আর ভাহার মত নিমক-সহি গোলাম নাই ইত্যাদি প্ৰতি^{পন্ন}

করিবার চেষ্টা করে। উভয় পক্ষেরি কণ্ঠখর তীত্র, উচ্চ, অলস্র বাক্যমেতি,—কিছুক্ষণ এখনি চলিয়া হিসাব মিটে। এটুকু না হইলে কাল্প বেশ চলিয়া বাইতে পারে কিন্তু গৃহিণীদের চলে না। যদি সেদিন কোন বিশেষ ব্যপ্তন কিন্তা মিষ্টার শুলুত করিতে হয় তাহা হইলে হামুম অর্থাৎ গৃহিণী এবং তাহার কল্পাও ব্যুগণ রক্ষনশালার উপস্থিত থাকিয়া নিজ্ঞখতে সাহায্য এবং তত্ত্বাবধান করেন। রাজ্ঞধানী এবং প্রধান নগর গুলিতে নারীগণ আর প্রের্বর মন্ত গৃহকার্য্যে যোগদেন না; আলোকাল তাহারা বিদেশী ভাষা, কার্যুকার্য্য সঙ্গীতাদি শিক্ষায় অধিক বত্ত্ব করিতে আরম্ভ করিয়েছেন।

তৃঠ্বমণীগণ ইচ্ছামত স্ব্ৰেও স্ব্সময়ে যাইতে পারেন তবে গৃহস্বামীকে একবার জানাইতে হয়-তিনি নিতান্ত বদুমেঞ্চাঞ্চী কিমা সন্দিয় মভাবের না হইলে এ বিষয়ে কোনরূপ বাধা হয় না। গাড়ীতে কিমা হাটিয়া বেড়াইতে ঘাইবার প্রস্তাব হইলেই বাড়ীর ছেলে মেরেরা এমন কি দাসীরা পর্যান্ত গৃহিণীর স্কে বাইবার জক্ত নাচিয়া উঠে, অনেককণ ধরিরা বাক্ৰিভণা, অঞ্পাত সাধ্যসাধনা চলে, যাহারা যাইতে পায় ভাহাদের তো কথাই নাই যাহারা পড়িয়া থাকে তাহাদের পয়সা খেলনা মিষ্টান্ন ইত্যাদি দিয়া শান্ত করিরা গৃহিণী সাক্ষসক্ষা করেন। তুর্করমণী চক্ষে, জাযুগলে ক্র্মা, কপোলে এবং ওঠে রং দিরা থাকেন, বেশবিক্তাস করিয়া একখানি পুলা ওড়না मिशे मूथ ७ नर्काक **ঢाकि**शा वा**हित्व यांन। दियां**न ণে উদ্দেশ্যেই বাহিরে যাওয়া হউক সন্ধ্যার পূর্বেই बांड़ी कितिया आंत्रिएक विरमेव हाड़ी करवन। कनना, সেই সময়ে বাড়ীর পুরুষেরা কর্মন্থান হইতে ফিরিয়া আসেন।

ছপর বেলা অনেক সময় বাড়ীর গৃহিণী আগ্নীরা এবং স্ত্রীবন্ধুদিগকে নিমন্ত্রণ করিয়া মধ্যাক ভোজ দিরা থাকেন। মহিলাগণ নীচু নরম চৌকোণা বালি-শের উপর জোড়াসন হইরা একথানি অনভিউচ্চ গোল টৌবলের চারিদিকে খিরিয়া বদেন, চাটনি, কটি শান-কাটা, জলপাই, ধরমুকার গোল গোল টুকরা, বিলাতি মূলা—ছোট কাচের রেকারী করিয়া টেবিলের উপর সাজ্ঞান থাকে এবং প্রত্যেক অভিথির সমূর্বে একখানি করিয়া মাঝারি আকারের কাচের থালা ও একখানি চাষ্চ দেওয়া হয়। পদম্য্যাদা অনুসারে একজন পরিচারিকা প্রথমে অতিথির সম্মুখে হাত ধুইৰার পাত্র ধরে, একজন হাতে সুবাসিত জল ঢালিয়া দেয়, অক্স একজন হাত মুছিবার জন্য অভি সৃক্ষ কাক্ষকার্যো সুন্দর এক একখানি রূমাল দিয়া খায়। তাহার পর গৃহস্বামিনী সর্বাপেক্ষা মাননীরা অতিথিকে অথম গ্রাস মুখে তুলিয়া দিবার জন্ম অভুরোধ করেন, তখন ভোজ আরস্ত হয়। অতিথি রমণীগণ গৃহস্বামিনীর অপেকা পদম্যাদায় হীন হইলে তিনিই আহার আরম্ভ করেন। মেদিরঞ্জিত প্রথম তিনটি অঙ্গুলির অগ্ৰভাগ ্দিয়া অতি সৌধীন ভাবে মুৰে আহাৰ্য্য তুলিয়া দেন। তুর্কদিগের প্রধান জাভীয় খাদ্য পোলাও, থাইবার সময় কখন কখন গুধু জল কখনো ৰা ফলের সরবৎ পান করেন-বরফে শীতল কোন-রূপ সুষাত্র সিদ্ধ ফল খাইয়া ভোজন সমাধা করেন। তৰৰ আবার মুখ হাত ধুইবার জল দেওয়া হয়, আহারান্তে তাঁহারা দেওয়ানখানায় বাইরা ফরাসে এবং কোঁচে আরাৰ করিয়া বসেন, এখানেও পদ-গৌরব একা করিয়া আসন গ্রহণ করিতে হয়। তখন একজৰ প্ৰধান পরিচারিকা উজ্জল গোলাপী রেশমী ক্রমাল দিয়া ঢাকা একধানি থালার উপর করিয়া ছোট ছোট চীন পেয়ালায় ক্ফি লইয়া আসে, আগে इडेर्ड व्यक्तिशित अनुभक्ताना जानिया नव এवः সেই অনুসারে ভাঁছাদের হাতে পেয়ালা উঠাইয়া দেয়---সর্বশেষ সিগারেট আনিয়া দিয়া দাসীরা বরের এক কোণে দেওয়ালের পাশে বুকের উপর হাত রাধিয়া নতচক্ষে নত্রভাবে, গৃহক্তীর আজা প্রতীকা করিয়া সারি বাঁধিয়া দাঁডাইয়া থাকে।

তুর্কনারীগণ কথনই প্রায় অধিক বয়স অবধি আবিবাহিত থাকেন না—সকলেরই অদৃষ্টে বর লাভ হয়। যিনি সুন্দরী তাঁহার অভ তো ভাবিতেই হর না কিন্ত বিধাতা যাহাকে রূপ দেন নাই, সম্লাম্ভ বংশে জন্ম হইলে ভাঁহারও বর খুঁজিবার অভ কট

করিতে হয় না। তবিব্যতে সাংসারিক উর্ভিয় আশায় অনেকেই এরপ কলা বিবাহ করিবার জল্প উৎসূক হন।

অধুনা দেকালের কটন সামাজিক নিরন সকল
অনেক পরিবাণে শিথিল হইরা গিরাছে—গৃহের মধ্যে
এবং রাজনৈতিক ক্ষেত্রে বর্তমান মুগের রমণীর
আবির্ভাব হইরাহে এবং চারিদিকের অবস্থা দেখিল।
মনে হইডেছে ইংলঙের মত তুর্কস্থানেও অর দিনের
মধ্যেই রম্পীগণ পুরুষদিসের সহিত সমান অধিকার
লাভের ক্ষন্ত বিপ্লব উপস্থিত করিবেন। ক্রাধুনিক রাজ-

নৈতিক পরিবর্তননকলই নারীক্ষেত্র এবন ক্রন্ত ভাষীনতা লাভ প্রসাদের ধাবান কারণ। হলতান যেদিন প্রথম তুর্কপালা বেক্টপুলিতে বাল, সেনিন পথে অসংব্য অবগুঠিতা রমনী তাঁহার সেই শুভ্যাত্রা দেখিবার অন্ত সন্বেভ ইইরাছিলেন। বাঁহারা গৃহ বাতায়ন হইতে এই বাত্রা বেখিতেছিলেন তাঁহাদের মধ্যে অনেকেই গুধু যে বাতায়নের সন্মুখের পর্দা। সরাইয়া কেলিয়াছিলেন এবন নহে মুখের ঘোষটাও খুলিয়া কেলিয়াছিলেন।

চিত্ৰ-ব্যাখ্যা।

শীনিতক্ত। বিষ্ণুক্ত নন্দলাল বস্ কর্তৃক

আহিত। পুরীর জগরাথ দর্শনের গক্ড্ডভের তলে
বিসরা চৈতক্ত জগরাথ দর্শন করিতেহেন, ইহাই

চিত্রের বিষর। চৈতক্তের ভাব-গদগদ নিধিল অস,
ভগবৎপ্রেমে ভন্মরজা, আলুথালু অথচ শাস্তভাব নিরী

অভি পারদর্শিতার সহিত অন্ধিও করিরাহেন;
ব্ধবানি দেখিলে মনে হর চৈতক্ত বাহ্যক্তান শৃত্য—
জগতের কোনো-কিছু তাঁহার চিতকে অধিকার
করিতে পারিতেহে না, জগৎখামীর ধ্যাবে তিনি
বিভার হইরা উঠিরাহেন; চোধছটির প্রান্তে যেন
ভাহার সমন্ত প্রাণটা আসিয়া ঠেকিয়াহে, সেই প্রাণ

দিলা তিনি আরাধ্য দেবহাকে একাগ্রভাবে দেখিতেহেন। নিরী এই ভাবটি চোধে অভি স্কোশলে
কুটাইরা ভুলিয়াহেন। মুখবানিও একটি বর্গার

শীতে ভরিরা উঠিয়াহে।

শঙ্কাচার্যোর দর্শচূর্ণ। প্রীযুক্ত ভেকটার।
কর্ত্বক অভিত চিত্র হইতে। চিত্রকর একজন মাল্রাজী
যুবক, ইনি এখন কলিকাতা গভর্গমেণ্ট আর্ট স্কুলে
ভারতীর পছতি অনুসারে চিত্রাছন শিক্ষা করিতেছেন: ইহাই ভাঁহার প্রথম চিত্র।

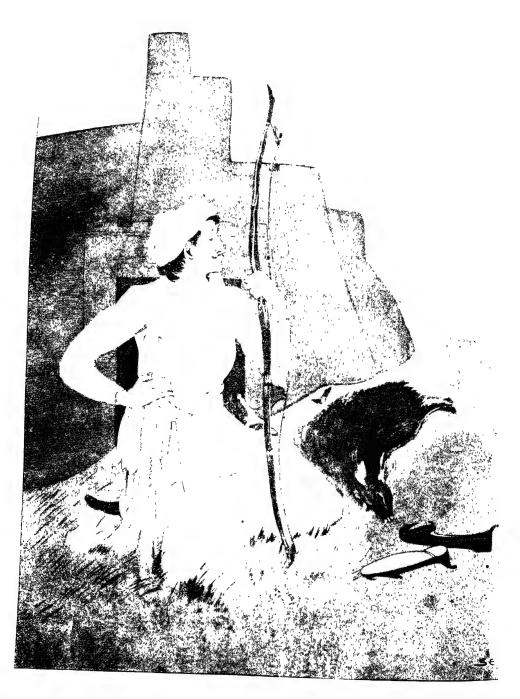
শকরাচার্য্য সবজে একটি প্রবাদ প্রচলিত আছে। প্রক্রসময় তাঁহার বনে পর্ব্য হয় বে সকল বিষয়েই তিনি পাভিত্য লাভ করিয়াছেন—কাহারো কাছে তাঁহার কিছু শিখিবার নাই। সেইসময় একমিন পথে মাইতে ঘাইতে তিনি হঠাৎ দেখিতে পান যে এক পানি গাছে না চড়িরাই তাড়ি পাড়িতেছে— একটা প্রকাশ ধেকুর গাছ সুইয়া পড়িয়াছে, তাহার মাখাটা সেই পানির হাতে আদিয়া ঠেকিয়াছে।

শক্ষরাচার্য্য এই ব্যাপার দেখিয়া অভ্যন্ত বিশ্বয়ায়িত হইরা পাসিকে প্রশ্ন করেন যে কেমন করিয়া সে এই অঘটন ঘটাইরাছে। পাসি উত্তর করে মন্ত্রটি শিক্ষা করেন। তথনই তাহার মনে হয়, "এখনও আমার অনেকের কাছে অনেক শিথিবার বাকি;—একজন সামান্ত, অশিক্ষিত শুলুও আমাকে মন্ত্র শিখাইতে পারে দেখিতেছি! আজ আমার কর্প চূর্ণ হইল!" কথিত আছে ম্বয়ং শিব পাসি বেশে শক্ষরাচার্য্যের দর্প-চূর্ণ করিরাছিলেন।

পূর্ব্বাক্ত কাহিনীটাই এই চিত্রের বর্ণনীর বিষয়।
ব্রহ্মক্রপ অগ্নিদেবতা। এই চিত্রেখানি উদয়পুর
রাজপ্রাসাদে রক্তি একথানি প্রাচীন তৈলচিত্র হইতে
গৃহিত। গ্লক্বেদ ও অন্তক, ৮ অধ্যার ১০ বর্গ, এবং
যজুর্বেদ ১৭ অধ্যায় ৯১ মন্তে বর্ণিত শব্দ ব্রহ্মক্রপ
অগ্নিদেবভার প্রভিমূর্ত্তি।

"ওঁ চয়ারি:শৃষ্ণা এরে। অন্ত পাদারে শীর্বে সং হছামেশ বস্ত । ত্রিধাবছো-বুবিভো রোরবীতি মহোমেবো মত্যাংহ আবিবেশ" কর্মের ও অষ্ট্রক ৮ অধ্যার ১০ বর্গ।

নাম, অখ্যাত, উপসর্গ এবং নিপাত এই চারিটি বাঁহার শৃঙ্গ, তৃত, ভবিষাৎ এবং বর্তমান, এই তিনকাল বাঁহার চরণ নিত্যশন্দ, এবং ফ্রার্থ্য শন্দ, এই ছুইটি বাঁহার মন্তক; প্রথমাদি সাত বিভক্ত বাঁহার মন্ত হও; ক্ষমর, কঠ এবং মন্তক এই তিন ছানে বিনি বদ্ধ; বিনি সাধকদিগের মনোরথ সম্পূর্ণ করেন দেই শন্দ প্রক্ষরণ মহান্দেব শ্বরবর্ণান্তক শন্দাদির আবিত্যিব করিতে করিতে বসুবালোকে ব্যাপ্ত হউন।"



"নকল গড়" ^{হি} হত নকলাল বহু কভুক অক্টিড চিত্ৰ ছইছে

ভারতী।

৩২ বর্ষ]

আশ্বিন ১৩১৬

[৬ষ্ঠ সংখ্যা

আষাঢ় সন্ধ্যা।

আবাঢ় সন্ধ্যা খনিয়ে এল
গোলরে দিন বরে।
বাঁধনহারা বৃষ্টিধারা
কাচে ররে ররে।
একলা বলে ঘরের কোণে
কি ভাবি বে আপন মনে,
সজল হাওয়া বিজন বনে
কি কথা যায় করে!

ষ্পন্নে আৰু ঢেউ দিয়েছে
থুঁকে না পাই কৃন,
সৌরভে প্রাণ কাঁদিয়ে তোলে
ভিক্তে বনের ফুন।
আঁধার রাতে প্রহরগুলি
কোন্ স্থরে আজ ভরিয়ে তুলি,
কোন্ ভূলে আজ সকল ভূলি
আছি আকুল হয়ে॥
শ্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর।

देवज्ञाना ।

(জাপানী গল্প)

(2)

সমস্ত দিন বনে বনে ঘুরিয়া এক ব্যাধ হতাশ মনে বাড়ি ফিরিতেছে—সে দিন সে একটিও শিকার পায় নাই।

শীতকাল—চারিদিকে কন্কনে বাতাস।
পরিশ্রমে কাতর, কুধার পীড়িত, তাহার উপর
শীতের বাতাস গারে ছুঁচ ফুটাইতেছে! ব্যাধ
অবসর শরীরটাকে কোন রকমে বহন করিয়া

দরে ফিরিতেছিল।

পথে নদী। ভাহার খোলা জলের ভোতে

সাহা মেবের মত এক কোড়া হাঁস ভাসিরা যাইতেছে। ভাহাদের কঠের কল্ কল্ শব্দ নদীশ্রোতের ছল ছল শব্দে মিশিতেছিল!

হাঁদ বধ করা বড় নিষ্ঠুর কাজ। কিন্তু দে কথা বিবেচনা করা চলিল না—ব্যাধের কুধা প্রবল হইরা উঠিয়াছিল।

বিপদ দেখিয়া ছইটা হাঁসই পালাইতে গেল, কিন্তু একটা হাঁস ব্যাধের শরে মরিল;— সেধানকার জলটা একেবারে লাল ছইয়া উঠিক! শ্রোভমুথে টক্টকে রক্তের একটা রেথা ব্যাধের পদ স্পর্শ করিল! ব্যাথ শিহরিরা চোধ বুজিরা ফেলিল!

(२)

হাঁসের নাংসে কোন রক্মে কুধা নিটাইরা
ব্যাধ সে রাত্রে ব্যাইতেছে, কপ্রে দেখিল
এক পরমাস্থলরী বালিকা তাহার শিররে।
পল্লের মত তাহার স্থলর মুখ খানি মান,—
চোধে জল—বুকে দীর্ঘখাস! দেখিরা ব্যাধের
কর্মণা হইল।

বাণিকা উচ্চ_{নু}সিত হইরা কাঁদিতেছিল। তাহার সে কারার ব্যাধেরও চোথে স্বশ্নে জল দেখা দিল।

বালিকা কাঁদিরা কাঁদিরা বলিতে লাগিল—
"নিষ্ঠুর তুমি কি করলে—আমার কি সর্বনাশ
করলে! সে তোমার কি করেছিল—তুমি
তার প্রাণ নিলে? নদীর বুকে আমরা কি
স্থাবেই ছিলাম—নির্দ্ধরের মত সে স্থবস্থ তুমি
আমাদের কেন ভাঙলে! তোমার তীর
আমার বুক থাকতে, আহা! তার কোঁমল
বুকে কেন বাজল!"

ব্যাধের মনে হইল যেন এক একটি কথা এক একটি বিষধর সর্প হইরা ভাহাকে দংশন করিভেছে। সে যাতনার চীৎকার করিরা উঠিল—"ধামো থামো আর বোলোনা।"

বালিকা তথন গুন্ গুন্ করিয়া বলিতে
লাগিল — শুআমিই তাকে নদীতে ডেকে এনেছিলুম—হার হার কেন আন্লুম ৷ কথনো
বে তাকে ছেড়ে থাকিনি ;—আৰু কতক্ষণ সে
আমার কাছে নেই ;—আমি একলা—নিভাস্তই
অকলা—গুহোঃ একথা মনেও বে আনভে
গারি না !"

তাহার পর আবার উক্তয়রে বলিল—
"নির্দির ব্যাধ! কিছু ব্রুডে পারছ না তুলি
কি অবস্থা আমার করেছ—তুমি কর
নারও তা আমতে পার না!—লেখো কাল
সকালে দেখো নদীতীরে—আমার কি
দ্যা।"

বালিকা ধীরে ধীরে চলিয়া গেল।

ব্যাধের স্বপ্নও টুটিরা গেল। সে আপিরা উঠিরা দেখিল—চোধের জলে বিছালা ভিলিরা গিরাছে। তাহার চোধে তো কথন লল আসে না—সে ভাবিল এ সেই বালিকারই চোধের জল। তাহার মন অন্থলোচনার আগুনে যেন দগ্ধ হইতে লাগিল। তাহার কানে কেবলই বাজিতে লাগিল—কোন সকালে দেখো নদীতীরে আমার কি দশা।" ব্যাধ সে কথা ভূলিতে পারিল না।

আৰু তাহার অস্তরে এ কিসের প্লাবন!
সে ক্থনো তো কাহারো জন্ত জ্বং বােধ করে
নাই—কাহারো ১:খে সে কথনো জাে কাতর
হয় নাই!—সপ্লে দেখা একটা বালিকার জ্বং
কন তবে তাহার প্রাণ কাঁদিতেছে ?

(e)

ব্যাধ সকালে নদীতীরে গেল—আজ তাহার হাতে ধহুর্কাণ নাই !

নদীর ঘোলা জলে ধ্লাকাদা মাথা একটি
মাত্র হাঁদ ভাদিয়া আসিতেছে। কাল সভ্যাবেলা সে বে হুটি হাঁদ এক সঙ্গে দেখিরাছিল।
সেই কথা, ভাহার দেহের রুজ্তের সহিত
কংশিও হইতে বাহির হইয়া সমস্ত শিরার
মধ্যে ছুটাছুটি করিতে লাগিল। ভাহারই
উত্তেজনার সে পাগলের মত হইয়া উঠিল।
হাঁদটি ভাদিয়া ভাদিয়া ভাদিয়া ভাদিয়া

আনিতে নাগিব। ক্লেকের মত তাহার কঠে আৰু সে ক্লেরৰ নাই—নদীর জলে সে চল্চল্ শক্ষ নাই—ব্যাধেরও সে কুথা নাই!

ব্যাধ দেখিলেই হাঁস পালার কিন্ত এখন সে নির্ভয়ে ভাহার দিকে সমান অগ্রসর হই-ভেছে। ব্যাধ অবাক হইরা গেল!

হাঁদটি বাধের পাষের কাছে আসিয়া

ছির হইরা দাঁড়াইল। তাহার পর ব্যাধের চোথের সামনে নিজের চঞু দারা নিজের বক্ষ একেবারে বিদীর্থ করিয়া ফেলিল! ব্যাধ তাহা দেখিরা চকু মুদিল!

ধন্থৰ্বাণ সে ঘরে ফেলিয়া আসিয়াছিল— সে ঘরে আর সে ফিরিল না—সেধান হইতেই উদাসী হইয়া চলিয়া গেল!

এমিণিলাল গঙ্গোপাধ্যায়।

স্বাভাবিক ও ক্বত্রিম এদেন্স।

অগতের ইতিহাস আলোচনা করিলে দেখিতে পাওয়া যার যে স্থগদ্ধ দ্রব্য অতি প্রাচীন কাল হইতেই সমত্ত সভ্য দেশে ব্যবহৃত হইরা আসিতেছিল। পূর্বকালে সভ্য জাতিগণ গাছগাছড়া হইতে স্থগদ্ধ দ্রব্য বহিন্ধত করিবার নিয়ন অবগত ছিলেন বলিয়া মনে হয় না, কিন্ত তাঁহারা চন্দন, ধৃপ, ধৃনা, ভঙ্ক পৃষ্প ও গাছগাছড়া প্রভৃতি স্থগদ্ধের জন্ম ব্যবহার করিবেন। মধ্য বুগে গাছ-গাছড়া হইতে গদ্ধ-দ্রব্য বাহির করিবার প্রণালী আবিষ্কৃত হয়; অ্যাপিও সমত্ত সভ্যাদেশে সেই প্রণালীই যৎকিঞ্চিৎ উন্নত হইরা পৃষ্পানার প্রস্তুতের জন্ম ব্যবহৃত হইতেছে।

মধ্য যুগে স্থগদ ব্যবহার প্রথা অভ্যন্ত উচ্চ্ খাল অবস্থার পরিণত হইরাছিল; প্রাচ্য দেশই সেই সমরে পৃষ্ণাসার প্রস্তুতের প্রধান নিকেতন ছিল। মুসলমানদের আমলে ভারত-বর্ষেও ইহার প্রাসার অভ্যন্ত বৃদ্ধি হইরাছিল। তৎসমরে গ্রীসে ইহা অধিক মাত্রার প্রস্তুত ইইত; তথা হইতে ইহা ইটালিতে (Italy) গৃহীত হইরাছিল। এক সময়ে ইটালি হুগদ্ধ প্রস্তুতের জন্ত জগৎবিখ্যাত হইরাছিল। এখন বদিও ইহার খ্যাতি অনেক থর্ক হই-রাছে, তত্রাচ কোন কোন বিষয়ে স্বাভাবিক হুগদ্ধ প্রস্তুতের জন্ত ইটালির এখনো বিশেষ প্রতিপতি।

অধুনা ফ্রান্সই স্বাভাবিক প্রশার
প্রস্তুতের কেন্দ্রভূমি। সমন্ত পৃথিবীর স্বাভাবিক্ প্রশার একমাত্র ফ্রান্স হইতে আমদানী হইরা থাকে বলিলেও অত্যক্তি হর না।
আর রসায়ন-বিজ্ঞানের কেন্দ্রভূমি জর্মানীই
একমাত্র কৃত্রিম প্রপার প্রস্তুতের প্রধান স্থল।
এখনো অপর কোন দেশে কৃত্রিম গন্ধ প্রস্তুতের বিজ্ঞান সম্পূর্ণরূপে আয়তীক্বত হয় নাই।
বারলিন্ (Berlin) বিশ্ববিস্থালয়ের রসায়নবিজ্ঞানাচার্য্য স্বর্গীয় ফারছিনেন্দ চীমেন
(Ferdinand Teimann) অনেক গবেবণা দ্বারা বহু কৃত্রিম স্থগন্ধ প্রস্তুত করিতে
সমর্থ হইরাছিলেন। জ্বর্মাণগণ অত্যস্তু
কর্ম্মোংসাহী উন্থানী লোক, শীঘ্রই ইহারা

ভাহা বাণিজ্যাকারে প্রহণ করিতে সমর্থ হইরাছে।

অগতের যতপ্রকার পুষ্প লক্ষিত হইয়া থাকে, তাহার অধিকাংশ প্রকারই ভারতবর্ষে वित्रास्त प्रथा यात्र, এवः हेन्हा थाकित्न এवः একটু আলম্ভ ত্যাগ করিয়া কার্য্যে অগ্রসর हहेल, दोध इस, छात्रख्य ई वर्ष वर्ष वर्ष জন্ত প্রধান স্থান অধিকার করিবে। এখন যত-প্রকার স্বদেশী এসেন্স আমরা বাজারে দেখিতে পাই. তাহার একটাকেও খদেশী আখ্যা প্রদান করা যাইতে পারে না; কারণ তাহার মাল-মসলা কিছুই ভারতের নহে, সমস্তই জর্মণ দেশ অথবা ইউরোপীয় অক্ত কোন দেশ হইতে আমদানি হইরা থাকে। ভারতে উহা কেবল মাত্র মিশ্রিত হইয়া বাজারে বিক্রীত হয়। এসেন্স প্রস্তুত করিতে হইলে ভারতে পুপেরও চাষ করিতে হইবে। পুষ্প সম্বন্ধে বারাস্তরে আলোচনা করিবার ইচ্ছা রহিল।

যদি আমরা পৃষ্ঠার প্রস্তুতের মৃণপ্রণালী আলোচনা করি তবে ইহা অত্যন্ত সহজ্প বিশ্বা বোধ হইবে। সমস্ত গৃহিণীই বোধ হয় আনেন দে ঘত এবং রহ্মন অথবা পলাপ্ত্ এক্তে রাখিলে, উহা রহ্মন পোঁরাজের গন্ধ লাভ করে। এই প্রকারে পরিষ্ণৃত চর্বির অথবা তৈল হারা পৃষ্ঠা এবং অন্তান্ত গাছণাছড়ার স্থান্ধ শোষিত হইরা থাকে। যদি কোন পুলা, তৈল কিলা চর্বিতে ড্বান যার, এবং প্রতিদিন সেই তৈলে পুরাতন প্রশার স্থান করা যার, তাহা হইলে ঐ তৈল কিলা চর্বির পুলারার যুক্ত হইরা উহার গন্ধ লাভ করে। প্রতিদিন নৃতন পুলা বাদ্ধত মুমারের

ন্ানাৰিক্য অনুবাদী গৰেরও ভারতম্য হইনা থাকে। এই গৰু সর্বাদাই বিশুদ্ধ ও স্বাভাবিক অবস্থার পাওয়া যার।

এই প্রণাণীই একটু উন্নত হইনা আধুনিক সমরে পৃথিবীর সর্বস্থানে ব্যবস্থাত। পশ্চিম ফ্রান্সে এই প্রণালী বারাই পূজাসার সংগৃহীত হইতেছে। ভারলেট, টুবারোজ, জ্বেস্মিন্ প্রভৃতির স্থায় স্থকোমল গদ্ধ পুজ্পের সার এই প্রণালী ব্যতীত সংগ্রহ করা স্ক্রঠন।

এইরূপে স্বাভাবিক গন্ধ বিশুদ্ধ অবস্থায় পাওয়া যায়, তত্তাচ ইহা সমস্ত কার্য্যো-পবোগী বলিয়া জন সমাজে বিবেচিত হয় না; कात्रण हेहा क्यांग, मछाना, ७ (शांवाक প্রভৃতিতে ব্যবহার করা স্থবিধা জনক নহে। করিলে পোষাঁক প্রভৃতি ইহা ব্যবহার তৈলের দাগে নষ্ট হইয়া যায়, এই জ্ঞা স্থরাসারযুক্ত বাষ্পদস্থল এদেন্সই মহিলা সমাজে অভ্যস্ত আগ্রহের সহিত ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ইহাকে প্রস্তুত কারকের ভাষায় extract অথবা spirit বলা যায়। স্বাভাবিক পুষ্পানার-তৈলের সহিত বিশুদ্ধ স্থরাসার (alcohol) সংযোগে ইহা প্রস্তুত হইয়া থাকে। স্থরাসারে এই তৈল প্রদান করিয়া অত্যন্ত নাড়িতে হয়, ইহার ফলে স্থাসার কর্তৃক গন্ধগুলি শোষিত হইয়া যায়। অবশেষে বল প্ররোগ দারা স্থরাসার হইতে সামান্ত গদ্মযুক্ত তৈল অথবা চৰ্কি পূথক করা হইরা থাকে। এই চর্কি পুনরার পুশাসার প্রস্তার জন্ম ব্যবহাত হয়।

পূৰ্ববৰ্ণিত তৈল কিমা চৰ্কির মধ্যে পূজা ভূবাইয়া রাখিয়া পূজাসার প্রস্তুত প্রণালীকে পাশ্চাত্য ভাষায় maceration বলা হইয়া গাবে। এই প্রণাণী অভ্যক্ত পুরাতন ভ অসুবিধালদক। ইহাতে পুস্পের সঙ্গে লাগিয়া অনেক ভৈল লোকসান হয়। বছদিন যাবংই ইহার স্থানে একটি উন্নত প্রণাশী আবিফারের চেষ্টা হইতেছিল, তাহার ফলে enfleurage নামীয় একটি প্রণাণী আবিষ্কৃত হইয়াছে, ইহা উক্ত প্রণালীরই একটু উরত সংস্করণ। এই প্রণালীতে পুষ্পগুলি তৈলের সম্পূর্ণ সংম্পর্লে আসে না। লোহার ভালে মোড়া কাঠের ফ্রেম (Frames coverd with gauze) কাপ বোর্ডের (cup boards) ভিতরে একটা আর একটার উপর সজ্জিত থাকে; ইহার একটার উপর পরিষ্কৃত চর্কি ও অপর্টীর উপর প্রতিদিন টাট্কা भूत्र मश्त्रकिष्ठ कत्रा इत्र, এवः ইहात मर्सा বাতাস প্রবাহিত করিয়া প্রস্পের গন্ধ চর্বিতে স্থানাস্তরিত করা হইরা থাকে, এইরূপ অনেক-বার পুষ্প পরিবর্ত্তন ও বাতাদ প্রবাহের পর ঐ চর্কি স্থান্ধযুক্ত হইরা যার। ইহাই অবশেবে অবাদারের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া extractএ পরিণত হইরা থাকে।

এই প্রণালী কেবল মাত্র বাণিজ্য কার্য্যের
জন্তই হবিধাজনক নহে; ইহাতে সম্পূর্ণরূপে
উদ্ভিদের গছটুকু পাওরা বার; কারণ প্রশাসকল
তৈলের সম্পূর্ণ সংস্পর্শে না আসাতে, ইহারা
ইহাদের জীবনীশক্তির শেষ পর্যান্ত গজ
উদগীরণ করিরা থাকে। বিশ্লেষণ ঘারা দেখা
গিরাছে যে meceration প্রণালী অপেকা
ইহাতে সাতগুণ অধিক গদ্ধ পাওরা যার;
কারণ Meceration প্রণালীতে প্রশাসকল
চর্মির সম্পূর্ণ সংস্পর্শে আসিরা অভি সম্বরই
জীবনীশক্তি হারাইরা ফেলে।

শহাতি গদ্ধ নিকাষণের আর একটা প্রণালী আবিষ্ণত হইয়াছে তাহা সম্পূৰ্ণ নৃত্ৰ। উপরোক্ত প্রণাশীর সঙ্গে তাহার কোনই সম্পর্ক নাই। ইহা গাছ গাছড়ার শুক অংশ, শিকড় ও বীজ প্রভৃতি হইতে গদ্ধ বাহির করার জন্ম বিশেষ উপযোগী। Petroleum ither ও benzin প্রভৃতি অতি সহজে বাষ্পীভূত হয় ও ইহাদের গন্ধ গলাইবার ক্ষমতা আছে, সেইজন্ত এই সকলদ্রব্য এই কার্য্যের অতান্ত উপযোগী। কোন প্রকার নির্যাস প্রস্তুত পাত্তে (extracting apparatus) উপরোক পদার্থ দ্বারা গাছ গাছড়ার গদ্ধ গলাইয়া লইরা অবশেষে উহাকে উপযুক্ত পাত্রে বাশীভূত করা হইয়া থাকে। ইহা বাপ্ণীভূত হইয়া, স্বচ্ছ, বর্ণশৃত্য, মোমের তার পদার্থ রূপে পরিণত হয়। ইহাই ঐ সমস্ত গাছ গাছড়ার সার। কখনও কখনও ইহা ঈবৎ তরণ ও সামান্ত বর্ণযুক্তও হইরা থাকে। আমাদের দেশে গোলাপদ্ধল ও গোলাপী আতর প্রস্তুতের জন্ম যে প্রণালী অবলম্বিত দেখা যায় তাহা অত্যন্ত পুরাতন ও সকল প্রকার গাছ গাছডার সার প্রস্তুতের সমাক উপবোগী নহে। ইহা গোলাপ চম্পক প্ৰভৃতি প্ৰবল গন্ধবিশিষ্ট পুম্পের সার প্রস্তুতের মাত্র উপধোগী; পারভাও বৃদরেরিয়া প্রদেশের সমন্ত গোলাপী আতর এই প্রণাশীতে প্রস্তুত হইরা থাকে। ইহাকে ইংরেজিতে distillation ও ভারতীয় ভাষার চাবণ বলে। ইহা বক্ষদ্রের সাহায্যে हरेबा बाटक। এই প্রণালী পৃথিবীর অনেক স্থানেই প্রচলিত। ফ্রান্স প্রভৃতি স্থানে ইহার অতাত্ত উন্নতি হইয়াছে। কিছ কোন কোন স্থানে ইহা অতি পুরাতন ভাবেই ব্যবস্থত হই-

ক্ষেত্র Cananga ordorate নানীর হুগছ
পূৰ্ব, কাঝ, ফিলি ও পাইন ছীপপ্ঞে এই
প্রাণীতেই হইতেছে। ফ্রান্সের ওডিকলন
নানীর হুগছের প্রধান মদলা Nerote তৈল
ক্ষকা মুকুল হইতে এই প্রণানীতেই প্রস্তুত
হয়।

এক প্রণাদীতে প্রস্তুত গছের সহিত্ত অপর প্রণাদীর একটু ইতর বিশেব এই বে, কোন কোন প্রণাদীতে অধিক মাত্রার কোন-টীতে বা তদপেকা অর মাত্রার গছ শোষণ করে। বহুদর্শী এসেল প্রস্তুত কারক কেবল আত্রাণ ছারাই কোন গদ্ধনার কোন প্রণাদীতে প্রস্তুত তাহা অনুমান করিতে পারেন।

আধুনিক সময়ে ক্বত্তিম এসেন্স প্রস্তুত প্রণালী একটা প্রধান শিক্ষের মধ্যে পরিগণিত। **এই শিলের অন্ত অর্থাণ দেশ**ই দিন দিন প্রাসিত্তি-লাভ করিতেছে। অর্থন রসায়ানাচার্যাগণ ভিন্ন ভিন্ন গছ দ্রব্যের যৌগিক নিরাকরণের বস্তু কঠোর পরিশ্রম করিতেছেন; এবং রসারন শাস্ত্র এ বিষয়ে কিরুপ অপুর্বা ফললাভ করিয়াছে লিপজিগের প্রধান এসেন্স প্রস্তুত্তকারক গিমেল কোম্পানি (Schimmel &Co) তাহার व्यथान पृष्ठीख द्वा। रेशामत्र अधिकाःम छेरशत वस्तरे त्रमात्रनिदकत ख्याञ्ज्ञात्वत्र क्या । र्टेशालत्र भदीकां मसिद्र दिन दिन नाना रखन भन्नेका इटेटलाइ. धरः এইক্রণে ইহারা অনেক মিশ্র ও অস্পষ্ট যৌগি-কের আভাস পাইতেছে। খনেক প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ त्रगाक्ष्मविष्यं के बारमाप्यनक कार्या भीवन অভিবাহিত করিয়াছেন ও করিতেছেন। এই विद्यास व्यथान १९-निद्धातक वात्रणिन विच-विश्वानदक्षक त्रमात्रनविकानावांचा पूर्वीय सातरि-

त्नम ग्रेटमन । रेशांत्र अवाधात्रम श्रीमक्ति নিপার ফলে অভ আমরা নেই স্ক্রির আদ वह मृगावान खांबरगढे ७ ट्विना स्रा প্রস্তুতের ক্রতিম উপার বানিতে পারিরাছি ইনি অগন রালো যুগান্তর আনম্বন করিয়াছেন : আমরা এখন আলোচনা ছারা দেখিব যে, খাভাবিক গদ্ধের কুত্রিম প্রেক্ত করা কোন প্রকার অসাধারণ বিষয় লিবিগ (Libig) এবং ওলার (Wohler)পরি-শ্ৰম ও অসুসম্ভানের ছারা ডিক্ত বাদাম তৈলকে বেনপোইক অমের আলডিহাইড (aldehyde of benzoic acid) बनिया জানিতে পারিরাছিলেন: তৎপরে রসায়নমন্দিরে মূল পদাৰ্থ সকল বোগে প্ৰস্তুত হইৱা ইহা কার্য্যের অক্তও উপবোগী হইয়া উঠে। সিনামিক অমের গ্রাণডিহাইড (aldehyde of cinnamic acid) শীঘ্ট লয়ার দাক্তিনি ও কেসিয়া তৈলের প্রধান উপাদান ৰলিয়া প্ৰমাণিত হইয়া গেল, এবং সেলিসিলিক व्यासन मिथिन-इंडोन (Methyl-ester of salecylic acid) আমেরিকার উইণ্টার গ্ৰীন (Winter green) নামীয় স্থাৰ ঘাস তৈলের প্রধান উপাদান বলিয়া গৃহীত হইল। এবং ইহার ফলে ক্লেম উপায়ে উক সকল পদাৰ্থ প্ৰস্তুত হইতে লাগিল সঙ্গে সঙ্গে

বছসংখ্যক ফলের গদ্ধ বছকাল ইইভেই ফুত্রিম প্রস্তুত ইইরা আসিছেছে, ইহা fruit ether নামে কথিত হইরা থাকে। এই সমস্ত গদ্ধ পানীর ও মিঠাই প্রস্তুতের জন্ম বহু পরিমাণে ব্যবস্তুত হইরা থাকে।. বাজারে যত্ত্ব কলের সিরাপ দেখিতে পাওরা যার, তাহার

উহাদের মৃন্যও স্থলভ হইরা পড়িন।

অধিকাংশই এই সমস্ত কৃত্ৰিৰ পৰ বারী প্রস্তুত।

আমাদের পূর্ববর্তীগণ বহুকাল অব্ধিই এই সমস্ত সরল বস্তর বিবর জ্ঞাত ছিলেন। অরকাল যাবংই মিশ্রিত বস্তু সমূহের অহুসন্ধান করিতে সমর্থ হইরাছেন। পূর্বে হাইড্রো কার্বণকে (Hydro carbon C10 H16) অধিকাংশ গল্পের মূল বলিরা জানা ছিল; কিন্তু পরে প্রমাণিত হইলে বে উক্ত পদার্থ বিগাইত অনেক গন্ধসারও ঠিক ঐ প্রকার আকার ও গন্ধবিশিষ্ট; এবং এই দিকে রাসারণবিদের লক্ষ আকর্ষণের সঙ্গে সঙ্গে গন্ধ-বিজ্ঞান উরতির পথে অগ্রসর হইতে লাগিল।

অমুসন্ধিৎস্থ বাজিগণ সাধারণতঃ গদ্ধের সাদৃখ্য অমুযায়ী ভিন্ন ভিন্ন তৈলকে একত্র করিয়া তাহাদের সাধারণ উপাদান গুলি জানিতে চেষ্টা করেন। বেমন ভারতীয় একপ্রকার খাস (Audropogon Scholnanthus) তৈবের এবং Geranium তৈলের সঙ্গে বহু মুল্যবান গোলাপী গদের সায়ত্ত আছে, বছ-আতরের কালাবধিই প্রাচ্য আতর ব্যবসারীপণ এই বিষয় অবগত ছিল, কিন্তু উহারা বৈজ্ঞানিক ভাবে এই তৈলের কার্যাকারিতা লক্ষ্য না ক্রিয়া, অসৎ অভিপ্রায়ে মহামূল্যবান গোলাপী আতরের সহিত ইহার ভাঁক দিত।

্বস্থত আধুনিক সমরে এই সমস্ত তৈল ইইতে একপ্রকার ক্লিম গোলাপী আতর প্রস্তুত ইইতেছে। বলিও ইহা প্রকৃত গোলাপী আতর হইতে গল্পে সামান্ত একটু প্রক্রের ভ্রাচ গোলাপী তৈলের পরিবর্তে ইহার ব্যবহার চলিতে পারে। সাধারণ লোকে ইহার প্রভেদ সহজে উপশব্ধি করিছে পারিবে না। ভির ভির আবিকারকের দারা ইহার ভির ভির নাম প্রদন্ত হইরাছে। একটু সামান্ত মিশ্রন দারা ইহাকে ঠিক গোলাপী আতরে পরিণত করিতে পারিবেম বলিরা রসারনবিদেরা আশা করিতেতেন।

কেসমিন পূপোর কৃত্রিম গদ্ধ প্রস্তুত করার ইহা অপেকাও উৎকৃষ্টতর আর একটা কল পাওয়া গিয়াছে। অনেকদিন পূর্বে প্রতিপর হইরাছিল বে জেসমিন পুষ্প হইতে যে তৈল পাওরা বার তাহা অত্যক্ত অর এবং ভাহার সঙ্গে অধিক মাতার সর্বাক্তন পরিচিত বেজিল সুরাশার (Benzil alcohol) এবং এাদি-টেট অব বেঞ্জিল (acetate of benzyl) ভাষমান অবস্থায় সংযুক্ত থাকে এবং ইহাতে অধিক মাত্রার উক্ত পুষ্পাগদ বর্ত্তমান দেখিতে পাওয়া যায়; আরো কোন কোন পদার্থ অভি সামাক মাতাৰ ইহার সঙ্গে সংযুক্ত দেখা যাৰ, কিন্ত তাহাতে ইহার গান্ধের কোন সহারতা करत विनद्य विरविष्ठ इस मा । त्यारांक भार्ष यांश 'कष्ट्रानिनिक (anthranilic) व्यवता অর্থো-আমিডো-বেঞ্জেইফ্ (orthoamido benzoic) অল্লে সহিত মিধিল (methiyl) স্থ্যাসার যোগে স্থলর সাদা কটকাকারে (crystals) প্ৰস্তুত করা বাইতে পারে-ইহার মধ্যে কমলা পুলোর গন্ধ এমন স্পষ্ট বে ইহার সাহায়ে বাজারে বহু পরিমাণ নকল কমলা ফুলের গদ্ধ প্রস্তুত হইরা বিক্রের ररेएएड ।

পূর্বের বর্ণনা হইতে আমরা জানিতে গারিয়াছি যে কডকগুলি পদার্বের একত্র মিশ্রনে কমলা পূলা, গোলাপ ও অসমিনের शृक्ष श्रीश रक्षा यात्र, हेरांद्य कृतिय वा ৰক্ষ গছ বলা হাইতে পারে।

मृष्पूर्ण त्रगावनिक मःभिर्धालन बाना कात्रपि-টামেন ক্লত্ৰিম ভেনিলা প্ৰস্তুত ক্রিছে ব্যর্থ ইইয়াছেন। প্রকৃত ভেনিলা, ভেনিলানিয क्षात्र খোগা নামক হইতে প্রস্তুত হইরা থাকে। এথন বহু পরিমাণে देशात कृष्यिम প्राष्ट्रण हरेएछह । अथरम हेश আমেরিকান পাইন নামক বুকের কতিপর षाःम हरेड अञ्चल हरेग्राहिन, এখন हेहा বাখাৰে বিজ্ঞাৰ্থ লবল তৈল স্থিত ইউজি-নোল নামীয় পদার্থ হইতে প্রচুর পরিমাণে প্রস্তুত হইতেছে। রসায়ন আরো অনেক

थकात शरकत नकन कतिएक जमर्ब हरेडारहः এই ক্ষুদ্র প্রবন্ধে তাহার বর্ণনা করা অসম্ভব।

এখন ছই একটা আবশ্ৰকীয় গৰেষ বিষয় বলিয়াই প্রবন্ধ শেব করিব। কুতিৰ গৰ, গৰবাণিকো যুগান্তর আনরন कत्रिवादम्। विकानागर्या विद्यनमे अने श्रद्धव व्यविकात्रकः অসাধারণ আত্মাণ শক্তির গুণেই তিনি ইহা প্রস্তুত করিতে পারি-ৱাছেন। পণ্ডিতবন্ধ বুর (baur) অতি एক-তার সহিত মুগনাভি নকল করিয়াছেন, অনেক মৃল্যবান এসেন্সে ইহা এখন ব্যবহার হইভেছে। সমরাস্তরে এই সমস্ত বিষয়ের প্রস্তুত প্রশালীসহ রাসায়নিক বিবরণ প্রকাশ করিবার ইচ্ছা রহিল। वीनिक्षेत्रका **धर ठा** क्रा ।

জ্যোৎসা-লক্ষী।

ভূমি, লুকিয়ে বেড়াও যে মুখখানি দেখেছি কাল রাতে . আমার, পদ্মাচরের ভাঙা বরের শৃক্ত আভিনাতে ;— তুৰি, কত রাতের বিফল জাগা সফল করে দিয়ে— भिरय,--कांगरक चार्यात्र कार्रायत्र केंद्रिम शक्रम धत्र शिरत्र !

षायात, मुक्त नवन द्रात हिन द्रश्व त्र क्रम्यानि ! ভোষার, এভকালের গোপন পোডা পড়ল বরা বাতে, কাল, রাভ ছুপুরে প্যাচরে শন্ত পুর্বিশাতে।

ख्यन, निव्न त्रांजि-श्रुश नवारे तथ इत्रांत गरत, ভিজে, শেওলা नीए पूर्याय बतान हथा पूर्याय हरत ; **८क्वल, बूट्या वाश्वरक्षत्र बट्य विश्वत्र वाश्व वाक्**ल वाश्व, আর, আমি ছিলাম জেগে আমার ঘরের জানালার।

তুমি, শিশির ভেষা কাশের ববে এলিরে দিয়ে আঁচল, নিভ, জ্যোৎসামাধা হাঁদের পাথায় বিছিরে দিয়ে কাঁচল.

আমি, ৰলৰ আরো চিহ্ন কি কি ভোষার পায়ে আছে, আৰি, বল্ভে পারি—ভাবছি কেবল রাগ কর বা পাছে! তোমার, গত রাতের যত কথা প্রকাশ করে দিরে, পাতে, ৰঞ্চিত হই চিরজনম প্রসাদ হ'তে প্রিরে। তৰু, এটুক আমি বল্ব—তুৰি রাপ করোনা তা'তে - » ভোষার, লুকিয়ে রাখা মুধ্বানিকে দেখেছি কাল রাতে। ৰীয়তীক্ৰমোছন বাগচী।

সাদা, বিত্ৰুক পাতা বালির তটে খুনিরে ছিলে রাণী;

কোচিন্-চীনে ভ্রমণ।

অ্যানাম-প্রদেশ।

(Felicien Challaye-র ফরাদী হইতে)

৩ ফেব্রুয়ারী ৯০১।

Tourane-এ আমার এক বৃদ্ধিমান বন্ধু আমাকে বলিরাছিলেন:--"যাহা এখনও যুরো-পীয়দিগের অপরিজ্ঞাত সেই সব উচ্চ পার্বত্য প্রদেশগুলি না দেখিয়া তুমি Annam হইতে প্রস্থান করিও না। দেখানে তুমি ইন্দচিনীয় প্রাকৃতিক দুশু দেপিয়া, দেশের বিরাট সমুদ্ধ ক্ষেত্রসকল দেখিয়া, পরমাশ্চর্য্য অরণ্য (पथिया, निग्ठयहे मूक्ष इहेरव। তুমি আনামবাসীদিগকে দেখিতে পাইবে; Saigon ও Hueর আনাম্বাদীদিগের অপেক্ষা উহারা কম য়ুরোপীয়ভাবাপন্ন এবং Hanoi-র আানাম্বাদীদিগের অপেক্ষা বেশী প্রাচীন প্রথার ভক্ত । ভ্রমণ-পথের শেষ-সীমায় পৌছিলে কতকগুলা বুনা লোককে দেখিতে পাইবে। তাহাদের নাম মোই (Moys); তাহাদের অপূর্ব্ব আচার ব্যবহার। উপনিবেশ রাজ্যের অভ্যন্তর প্রাদেশে ভাহারা এখনও ষাধীনভাবে অবন্ধিতি করিতেছে।"

এই কথা শুনিয়া, আমি ও আমার বন্ধু
Charles Garnier আমরা আানাম-প্রদেশ
পুঝামপুঝরপে পর্যাবেক্ষণ করিব বলিয়া
সক্ষর করিলাম। অনেক পথের বাধা অতিক্রম করিতে হইবে—সেটাও একটা ভ্রমণের
আকর্ষণ; এখানে না আছে রেলপথ, না
আছে ঘোড়ার গাড়ীর বন্দোবস্ত। পর্যারক্রমে 'সাম্পান্'-নৌকার, ডাগুীতে, পান্ধীতে,
অম্পুঠেও পদব্রজে যাইতে হইবে। বোধহর

"মোই"-গ্রাম Tou nac পর্যন্ত দশজন য়ুরো-পীরও যায় নাই। এখন আমরা সেই গ্রামান্তি-মুখে চলিতেছি।

Tourane-র 'বৃহৎ হোটেলের' সন্মুথে, আমরা একটা সাম্পানে উঠিলাম; পূর্ব্ব হইতেই ইহার জন্ম আমরা বলিয়া রাখিরাছিলাম। এই কুদ্র নৌকার মধ্যে একটি কাম্রা, নৌকাটা দীর্ঘ ও নীচু, মাথার উপর একটা মপ্তলাকার খড়ের ছাউনি; একটা ফাঁদের মত রদ্পথ দিয়া কটেস্টে ভিতরে প্রবেশ করিতে হয়; ভিতরে গিয়া উবু হইয়া মাছরের উপর বসিতে হয়, কিংবা শুইতে হয়। স্কীর্ণ স্থানে সাম্পান্ত্রালা স্পরিবারে বাস করে:-তাহার স্ত্রী, তাহার হুইটি বুদ্ধ আত্মীর, ও তিনটী শিশুসস্থান। তাহার মধ্যেই, সঞ্জীব মুগী, খাম্মামগ্রী ও অন্তান্ত পণ্যক্রবা;--সমন্তই Tourane এ থরিদ করা হইয়াছে। একটা কোণ থাণী ছিল, সেই কোণে আমাদের আনামবাসী ভূত্য আমাদের জন্ত শব্যা বিছা-ইয়া রাথিয়াছে; সেইথানে আমরা শুইয়া পড়িরা ঘুমাইবার চেষ্টা করিলাম।

অনুকৃশ বায়ুর সাহায্যে আমাদের সাম্পান রমণীয় বিলের উপর দিয়া, Fai foo-র অভি-মুখে বেগে চলিতে লাগিল।

৪ ফেব্ৰুৱারী।

আৰু প্ৰাতে খুব শীত। বৃষ্টি হইতেছে। সাম্পান-নৌকার খড়ের ছাউনির উপর মোটা-

মোটা ফোঁটা পড়িয়া ছটাছটু শব্দ হইতেছে। মাজিমালারা কোণালু ধরণের তালপাতার বড় বড় টোপা মাথায় পরিয়াছে; অপূর্ব্ব থড়ের আচ্ছাদনবল্লে তাহাদের আচ্ছাদিত। সমস্ত অতিপ্রাচ্যদেশে, বর্ষার সময়, মাঠ ময়দানে এই প্রকার আচ্চাদনবস্ত্র ব্যবহৃত হইয়া বৃষ্টি থাকে। কোথাও আমাদের বাহির হইবার কো নাই। কাজেই জিপ্দীদের ভার ঘ্যাঁসাঘেদি করিয়া এই নৌকার কাম্রার মধ্যেই বদ্ধ থাকিতে হইয়াছে। লোকজন, ছেলেপুলে, জীবজন্ত, জিনিসপত্র সব এক সঙ্গে এই সংকীর্ণ স্থানের মধ্যে রহিয়াছে। নানাপ্রকার বিচিত্র ও অপ্রীতিকর গন্ধ পাওয়া যাইতেচে। কেবল একটা অতীব কুদ্র বেদিকার সমুখে একটা ধূপ-কাঠী জলিতেছে,—তাহা হইতে অল্ল অল্ল ধুম উথিত হইতেছে—কিন্তু বায়ু শোধনের জন্ত তাহা যথেষ্ট নহে। একটু পরেই, নৌকা-७शांनी तकात्र क्य जाखन जांनारेन:-একটা উৎকট ধোঁয়ার ঘর ভরিয়া গেল। **मोका** अशे नो नाम हात्मत्र चांच त्रां थिए हिन, দেখিয়া আমাদের লোভ হটল: আমরা তাহার निक्छे इटेंट अक्ट्रे ठाहिया नहेनाम ;-- ऋदित বদলে, চাট্নী প্রভৃতি দিয়া ঐ ভাত আমরা খাইলাম। সেই সঙ্গে কয়েক পেয়ালা আনা-মের উৎক্রষ্ট চাও পান করিলাম। আমরা তাহাদের ভাত থাইভেছি, তাহাদের চা পান করিতেছি দেখিয়া--নৌকার বুনো ছেলেগুলা আমাদের একটু পোষ মানিল। সার্ভিন মাছের একটা খালী বাক্স দেওয়ায় তাহারা আরও আমাদের প্রতি আরুষ্ট হইন।

মধাহে আমরা Fai-Foots গিরা থানি-

লাম। ফাইফু একটা বড় চীনে সহর। ডাল

চিনি ব্যবসারের কেন্দ্রন্থল। ডাল চিনি—চীনে

রারার, চীনে পিষ্টকাদির, চীনে ঔষধাদির

একটা প্রধান উপকরণ। অ্যানাম্বাসীরা

মোইদের নিকট হইতে উহা ধরিদ করিরা

ফাইফুতে আনরন করে। চীনেরা প্রধানে

আসিরা, তাহাদের দেশীর আহাজে কিয়া

ষ্ঠীমারে করিয়া উহা হং কং কিংবা সাজ্যাইতে

চালান দের।

এই অপরাক্তে এখনও বৃষ্টি হইতেছে;
পাল তুলিয়া যাইবার জো নাই—আবার দাঁড়
টানিয়া টানিয়া দাঁড়ীরাও ক্লান্ত হইরাছে।
স্থতরাং আমাদের এই কুদ্র কাম্রাটির ভিতর
আরও এক রাত্রি যাপন করিতে হইবে।

c ফেব্রুয়ারী।

পূর্বাহ্ন ১১টার সময় আমরা সাম্পান্ ত্যাগ করিলাম; এখন আমরা Tam-ky নগরে পৌছিয়াছি। ইহা অ্যানামের একটি গণ্ডগ্রাম—Ha-Dong প্রদেশের একটি মুখ্য-স্থান। এখানকার Huyen (সহকারী গ্রামাধ্যক) আমাদের নিমিত্ত অৰ ও ডাণ্ডী প্রস্তুত রাখি-বার জন্ম Resident এর নিকট হইতে আদেশ পাইয়াছেন; কিন্তু ওনিলাম, সেই ব্যক্তি অমুপস্থিত, তিনি তাঁহার কোন পীড়িত আত্মীয়কে দেখিতে গিয়াছেন...এই ত্ৰেচ্ছাক্ত অমুপন্থিতির কারণ আমরা স্হজেই অমুমান করিলাম। অত্যন্ত দাবীদার ও নির্ভুর মুরো-পীয়দিগের নিকটে আসিতে বেচারার ভয় হই-য়াছে; আমরা অনেক সমর দেশিয়াছি কোচিন চীনের স্বরাসীরা দেশীর্দিগের প্রতি বড়ই কঠোর ব্যৱহার ও অভ্যাচার করিয়া

থাকে। বেশ বুঝা যার, তাহারা আত্মসন্মান বক্ষার জন্তই যুরোপীয়দের নিকটে সহজে আসিতে চাহে না,—তাহাদের এইরূপ ভর হওরা আভাবিক।

তাহার অমুপস্থিতিতে, গ্রামের তিন জন
প্রধান আমাদের অভ্যর্থনা করিলেন; ভূতল
পর্যান্ত মন্তক নত করিয়া তাঁহারা আমাদিগকে
নমস্কার করিলেন। তাঁহারা ভর্ তঃথিত হইরা
আমাদিগকে জানাইলেন বে, এই গ্রামে না
আছে অব, না আছে ডাণ্ডী; আগামী কল্যা,
আমাদের জন্ত ও আমাদের ভূত্যের জন্ত তিন
থানা পালী প্রস্তুত থাকিবে; পার্ম্ববর্ত্তী গ্রামে
হইথানা পালী ভাড়া করিবার জন্ত লোক পাঠান
হইয়াছে
ক্রিক্ত থাকে একদিন থাকিতে
আমরা বাধ্য হইলাম। আমরা আজ রাত্রে
এধানকার পাছশালার শয়ন করিব; ইহা
একটা গুলাম-ঘর বলিলেও হয়;—মাত্র ও
মশারি হারা সজ্জিত: এইটি Huyenএর
প্রদাচিত বাস-গৃহ।

যথন আমরা এই ঘরে প্রবেশ করিতে ছিলাম, অ্যানামবাদী ছইটি যুবক দ্র হইতে আমাদিগকে দেখিতেছিল। তাহারা কৌতৃহলের বশবর্তী হইরা ধীরপদক্ষেপে ভরে ভরে আমাদের নিকটবর্তী হইল। আমরা বে এখানকার যুরোপীয়দিগের স্থায় তাহাদিগকে যুদি ও লাথি মারিয়া তাড়াইয়া দিলাম না ইহাতেই তাহারা বিশায়ন্তভিত হইল। পরক্ষণেই তাহারা সাহল পাইয়া সন্মিত মুঝে আমাদের সমুধে আসিল। আমাদের ভ্তাটি দোডায়ার কাল করে; তাহাকে দিয়া আমরা তাহাদিগকে কতকগুলি প্রেল্ন দিলাম, তাহানাধি স্বেক্টাজনে ভাহার উত্তর দিল।

ইহারা Huyen-এর পুত্রম ; একজনের नाम Guien, आंत्र अक्ट्यरनत नाम Dan; क्ष्मान्त वर्षे १७, यात क्ष्मान्त प्रमा ইহারা রাজবংশীর,—সমাটু Gia Long এর व्यवावहिक वश्मधन । हेरापन स्मामनी धनात्र मूथ, त्नदूत मछ त्रः, এवः ইहात्तत मूथावहव বেশ স্থলর ও স্থা ছাঁদের; সমস্ত আনাম-বাসীদের ভায় —ইহাদেরও কালো চুলের খোঁপা। গোলাপী ক্রেপ্-কাপড় পাগ্ড়ীর মত মাথায় জড়ানো;-এইরূপ পাগ্ড়ী শিক্ষিত লোকে-बाहे वावहाब कदब। ज्यानामवानी निर्वात छात्र ইহারাও লম্বা কালো জামা ও রেশ্মী পাজামা পরিয়াছে; এই পাত্লা কাপড় পরিয়া, মনে হইল যেন উহারা শীতে কাঁপিতেছে। তাহারের ন্ধ্ ৩,৪ Centimetre (এক ইঞ্রে ১০০ ভাগের এক ভাগ=> centimetre) ব্যা; विहे नचा नथ् छेक्रशास्त्र हिल्। छेक्रटानीत অ্যানামবাদীরা বলে যে, তাহারা অভিজাত বলিয়া তাহাদের হাতের কোন কাজ করিতে হয় না, এবং এই জন্মই তাহাদের নধু বাড়িয়া উঠে'।

দোভাষীর মধ্যবর্ত্তিতার, তাহাদের সহিত্ত
আমরা কথা চালাইলাম; আমরা বিভির
পদার্থের নাম করিতে লাগিলাম—তাহারা
আানামী ভাষার ও আমরা ফরাসী ভাষার
বলিতে লাগিলাম; আমরা আানামী শব্দসমূহের
উচ্চারণের অন্তকরণ করিবার চেষ্টা করিতে
লাগিলাম, কিন্তু তেমন ক্রতকার্য্য হইতে
পারিলাম না; আমাদের নিক্ষল চেষ্টা দেখিরা
তাহাদের খুব আমোদ হইল। তাহারা বলিল,
আমরা বে সকল পদার্থের কথা বলিতেছি,
তাহারাণ চীনে অক্সরে লিখিরা আমাদিগকে

দেশাইতে পারে। এখন উহারা আমাদের বেশ পোব মানিরাছে, গ্রাম পরিদর্শনে তাহাদের সঙ্গে যাইবার জন্ত প্রস্তাব করিল। এমন
কি, আমাদিগকে লইরা বাইবার জন্ত আমাদের
হত ধারণ করিল।—এই অ্যানামবাসীরা খুব
ভক্ত ও ইহাদের ব্যবহার অতীব মধুর; ইন্দচিনীর ফরাদীরা ইহাদের প্রতি তুর্ব্যবহার না
ক্রিরা যদি বৃদ্ধিপূর্বাক ইহাদের প্রতি একটু
সহামুভূতি প্রকাশ করে, তাহা হইলে সহজেই
উহাদের প্রীতি আকর্ষণ করিতে পারে।

Huyenর পুত্রদিগের সহিত আমরা গ্রামের দোকানগুলি দেখিতে গেলাম। लाकानमारतता, এक अकात तुहर कानान-देशि মাধার দিয়া, জিনিসপত্তের সমুখে ধরিদার-দিগের প্রত্যাশায় উবু হইয়া বসিয়া আছে; কথন কখন পরিচিত ভঙ্গীগহকারে, ডান হাত দিয়া বাঁ পা ধরিতেছে ; খুব উৎফুলভাবে অজস্র ৰকিয়া যাইতেছে; অথবা নগ্ন শিশুদিগকে चारत कतिराज्य ;— छाटारात शारण नाक যসিয়া দিতেছে, তাহাদের কপোল-গন্ধ আত্মাণ করিতেছে; অ্যানামবাসীরা চুম্বনের পরিবর্ত্তে কপোল আদ্রাণ করিয়া থাকে। দীর্ঘ সন্মা বেতাদণ্ডের ছই প্রান্তে ছইটা ঝুড়ি ঝুলাইয়া ध्वर के मुख्ठा काँट्य कतिया, त्रमनी-थात्रमा-রেরা ক্রমে আসিরা উপস্থিত হইল;—উহা মাটির উপর দেখিতে গাড়িপালার মত। কিংৰা একটা মঞ্চের উপর পণাদ্রব্য সজ্জিত प्रशिवाद्य। हक्तरक हिन्दरें नानाविध मध्य, मिटियां कि किर्ज़, कांक्ज़, शांकिश्त किरवा ছোটছোট পুরোবের কাবাব, আচার-মোরব্বা, गंबब-बन्ना, भूगा, श्रीका, कना, म्राक्ति, ৰাভাবি-নেৰু, পিষ্টক ও মিষ্টান, তামাক', চুন,

পানস্থারি, কাপড়, ক্বত্তিম চুলের মাহর, মোটামোটা অলঙার, চীনে-বাসন, ধূপ কাঠি, দেবালয়ে পোড়াইবার জন্ত সোনালী কাগজ।

অপরাহের শেষভাগে, গ্রামের প্রথানের।
আসিয়া আমাদিগকে নমস্কার করিল ও নানাপ্রকার উপহার দিল। একজন,—একটা
ছোট গোল খাঁচায় বন্ধ ছুইটা মুর্গি এবং
কতকগুল ডিম দিল; একজন—কতকগুলা
নারিকেল, আর একজন দেশী চিনি দিল।

Huyen-এর ভ্রান্তা ও পুত্রগণ রাত্রে ভোজনের জন্ত আমাদিগকে নিমন্ত্রণ করিল। চমৎকার আনামী ভোজ:-কটির বদলে ভাত, তরকারীর ঝোল, মাছ, চিংড়ী, মুর্গির ছোটছোট টুক্রো, এক বাসন পেঁরাজ। একটা বাটীতে Nioc name ছিল,—এই পচামাছের আচার এখানকার লোকেরা খুব ইহার আশ্বাদ একটু অপূর্বা ভাগবাসে। ধরণের—কিন্ত রসনার অপ্রিয় নহে। দেশীয় প্রথার সম্মানরকার্থে আমরা আনামবাসীদিগের ধরণেই আহার করিলাম ;—ছইটা কাঠি ডান হাতে ধরিয়া পর্যাক্রমে চিংড়ী কিংবা একটুকরা মাছ উঠাইয়া niocnam আচারে একটু ভিজাইয়া শইয়া এক এক গ্রাদ ভাতের সহিত গিলিতে লাগিলাম। তারপর কদলী ভকণ कतिया ध्वरः উৎकृष्टे रन्त हा भान कतिया পরিতৃপ্ত হইলাম। ভোজনের সময়, স্ব^{রং} গৃহকর্ত্তী Huyenএর পত্নী আসিরা আমাদিগকে নমস্কার করিলেন। এ সম্মান বড় महर ।...

ভোজনের পর, আমাদের বিনোদনার্থ, বাড়ীর ছেলেরা উপস্থিতমত একটা নাটকী-ভিনরের বন্দোবৃত্ত করিল। বরের সমূর্বে

একটা মাহর, ভার ছই পালে ছইটা বাঙী। हेराहे ब्रम्मीर्छ। छाक-छाटन वन्तन कछोर ; —हेन्त-होन ब्र**वान**दब, — त्यथादन নাটকের ভাৰ ভাৰ কথা অভিনয়ের সময় উপস্থিত হয়--সেই সেই স্থানে এই কটাছের উপর আঘাত করা হয়। Huyenএর পুত্রদিগের অল্লবয়স্ক তল্পন স্থচন ইহার অভিনেতা। ইহারা একটা প্রহসন অভিনয় করিল —কিন্তু ইহার হাক্তরস উপলব্ধি করা সব সময়ে আমাদের পক্ষে সহজ নহে। উহাবের মধ্যে একজন বুনো মোই সাজিয়া আসিল; কপালের সন্মুখে চুল ঝুলিয়া পড়ি-য়াছে; ক্বত্রিম ক্ষীত উধর, নগ্নপ্রায় গাত্র; গাৰে ভুধু একটা স্থাক্ডা বড়ানো। একটা ছড়ি.-এক প্রকার ঝাঁটার বাঁটু,- মোইদের বল্লম মনে করাইরা দের। মোইদের অমুকরণে উহারা হেলিয়া ছলিরা চলিতেলাগিল, হাজ্ঞজনক ঘোঁং ঘোঁৎ শব্দ করিতেলাগিল। এই অমুকরণের অভিনরে দর্শকমণ্ডলীর খুব আমোদ হইল; আ্যানামাবাদীদিগের প্রাচীন সভ্যতা এবং উহারা অপেক্ষাক্ষত মার্জ্জিভক্ষচি; তাই উহারা মোই-জাভিকে ঘুণাও অবজ্ঞা করে; উহাদিগকে স্থলক্ষচিও অভ্যত বলিরা মনে করে। আমার বোধ হর, তাড়াভাড়ি এরূপ দোষারোপ করিলে উহাদের প্রতি অক্সার করা হয়। প্রতিবেশী অ্যানামবাদী অপেক্ষা আমরা এই সকল বুনো লোকদিগকে ভাল করিরা বুঝিবার চেষ্টা করিব এবং আমরা অবশ্র উহাদের স্বাধীন জীবনের আদিম সৌন্ধর্যের মর্ম্মগ্রহ করিতে পারিব।

শ্রীজ্যোতিরিন্দ্রনাথ ঠাকুর।

পৌষ্যপুত্র। পূর্বের অনুর্তি।

(>)

অপরাহে যোগেক্রবাব্র ক্ষুদ্র বাগানটিতে
শাস্তি স্প্রকাশ ও যোগেক্রর পুত্র অনিল
তিন জনে বেড়াইতে ছিল, বোগেক্রবাব্ বখন
লমণে বাহির হইলেন স্প্রকাশকে তিনি
ডাকিরা লইরা গেলেন। অনিল অনেক
কাঁদাকাটা করিলেও ভাহাকে সঙ্গে লইলেন
না—সে নেহাৎ ছেলে মামুষ বেশিদ্র
হাঁটিতে পারিবে না; আর শাস্তি ভো
এখন বড় হইরা গিরাছে, সে বোগেক্রের
সঙ্গিনী হইতে রাজি নয়। স্প্রকাশ চলিয়া
গোলে শাস্তি একটু নিরুৎসাহ হইরা পড়িল—
স্কু নাথাকিলে ভাহার কিছুই ভাল লাগে না।

কিছ অনিল তাহাকে বিশ্রাম দিতে রাজি নর,
সে ফ্লের ভারে ঝুঁ কিয়া পড়িয়াও নৃতন ফুলের
জ্ঞ আকার করিতে ছাড়িতেছিল না। একটা
কাঞ্চনগাছের চারিদিকে প্রজাপতি উড়িতেছিল
দেখিরা সে আকার ধরিল "মাসিমা
পেন্তাপতি দাও। হাসিয়া শান্তি ধমক দিল—
"প্রজাপতি ধরলে বিয়ে হবে না; এই নে
কেমন ফুল!" অনিল সমস্ত ফুল চারিদিকে ছড়াইরা ফেলিয়া কাঁদিরা উঠিল "আমার
পেন্তাপতি দাও।" সহসা উন্তানপথে গাড়ির
শব্দ শুনিয়া শান্তি পশ্চাতে ফিরিয়া দেখিল—
যে টমটমখানা সে ক্রদিনই এই সময়ে দেখিতে

পান্ন, সেইধানাই ভাহার একমাত্র আরোহীকে
লইরা অগ্রসর হইভেছে। শাস্তি অনিলের
হাত ছাড়িরা দিয়া একটু পাশ কাটাইরা
দাঁড়াইল; অনিল তভোক্ষণে ছুটিল
আগন্তক গাড়ি হইতে নামিবামাত্র তাহাকে
জড়াইরা ধরিরা কহিল "এতো দেলি কেন
কাকাবারু!"

আগন্তক ভাহাকে কোলে তুলিয়া লইয়া তাহার কোমল গণ্ড চুম্বন করিলেন। প্রকৃতির অঙ্গে বৃষ্টি যেমন বর্ষণ চিহ্ন রাথিয়া যায় সভ্য ক্রন্ধনও ডেমনি ভাহার গণ্ডে অঞ্চিন্ন রাথিয়া গিয়াছিল। আগন্তক পকেট হইতে ক্রমাল বাহির করিয়া শিশুর মুথ মুছাইয়া দিয়া সম্রেহে ক্রিজ্ঞানা করিলেন :কেঁদেছ কেন ? অনিলের পূর্বশোক আবার উথলিয়া উঠিল, সে রাঙ্গা ঠোঁট ফুলাইয়া চোথে জল আনিয়া নালিস রুজু করিল "আমার পেত্তাপতি দিয়ে না!"

"এইজন্ত! আছা আমি তোমায় একটা প্রজাপতির ছবি দেবো এখন।" বলিতে বলিতে যুবক অদ্ববর্তিনী শাস্তির দিকে চাহিয়া দেখিলেন, অনবস্থান্তীতা কিশোরী তাঁহার প্রতি কৌতুকপূর্ণ সহাস্ত চকু মেলিরা চাহিরা আছে। দেখিয়া তিনি বিমিত হইলেন। তিনিতো বোগেল্রের বাড়ি সর্বাদাই আসিয়া থাকেন; এই অয়দিনের মধ্যেই ছইবার গৃহকর্ত্তী বদল হইল। অনিলের নার মৃত্যুর পরেই অনিলের পিতা বিতার-বার বিবাহ করিয়া আনিয়াছেন, —সেও তো কয় মাদের কথা। কিন্তু এ পর্যন্ত নববধু গৈহার চোধে পড়ে নাই— ইনিই কি সে নববধু গুণোলামাধার এমন সপ্রতিক্ত ভাবে একজন অজানা পুরুষের সাকাতে ভাহাকে গাঁড়াইয়া থাকিতে দেখিয়া

অত্যন্ত আশ্চর্য্যামুম্ভব করিলেন। কিন্ত থোকা শাস্তির কাছে আসিয়া ডাকিল "ও মাছিমা" আগত্তক তথন বুঝিলেন দে অনিলের বিমাতা নয়। তবুও তাঁহার বিশ্বয় ঘুটিল না। তিনি জানেন, সহুরে বাঙ্গালীর মেয়ে এই বয়সে আধহাত ঘোমটা টানিয়া গালের মধ্যে পান দোক্তা ভরিয়া রারা ভাঁডার ঘরের এলাকায় पूतिया त्वज़ाहरनहे नव ८ छ्या त्वनि मानाय, বড় বেশি স্বাধীন হইল তো না হয় সধী সঙ্গিনী শইয়া রুদ্ধ ছারের মধ্যে বসিয়া তাস খেলুক বা টপ্পা গান করুক অথবা বি, এ ক্লাশের স্বামীকে দীর্ঘ পত্র লিখিতেও পারে। দে যে বাগানে ফুলের রাশি আঁচলে, থোলা-মাথায় একজন অপরিচিতের সমুথে লন্ধী প্রতিমার মতন দাঁড়াইতে পারে এমন ধারণাই তাঁহার ছিল না। মনে মনে চমৎক্তত হইলেন। অনিল মাসিমার নিকট উত্তর না পাইয়া

রাগিয়া মাটিতে আছাড পাইয়া পড়িতেছিল. শান্তি ব্যস্ত হইয়া ভাহাকে ধরিয়া ফেলিল, বলিল-ভোমার মার কার্চে চলো-বলিয়া অনিলের হাত ধরিয়া চলিয়া যাইতে উন্তত হইল। আগন্তক একটু কুঞ্জিত করিয়া ভাবে হঠাং জিজ্ঞাসা "আপনারা কি এখন মাছুরায় থাকবেন?" শাস্তি দাঁড়াইয়া বলিল, তাতো বলতে পারি না, বোধ হয় থাকা হবে। কলকেতায় এখন খুব প্লেগ হচ্চে কিনা, বাবা তাই এখন আমাদের যাবেন না, ভিনি . সেইথানেই নিয়ে আছেন।" মনের হঃখটা হঠাৎ অনিচ্ছাসত্তেও সে প্রকাশ করিয়া ফেলিল। আগদ্ধক দেখিলেন বালিকার চোথ ছটি ছল ছল করিতেছে माचना विशा कहिरणन 'रहांचे ट्राटलात अंगरे

প্লেগে ভর বেশি কিনা, তাঁর জন্ত কিছু ভর নাই। আপনাদের বাড়ি বুঝি কলকাভার ? আপনার বাবা বুঝি দেখানে চাকরি করেন তাই আদতে পারেন নি ?" "বাবাতো চাকরি করেন না, তিনি তো উকিল ইচ্ছা করিলেই আসতে পারতেন। বাবাকে ছেড়ে আমরা থাকতে পারি না, বড্ড कष्टे इम्र।"

"উকিল! ওঃ, তাঁর নাম কি 🕈 "শ্রীযুক্ত वाव त्रवनीनाथ देमज" "कि, कि वरहान ?" শাস্তি তাহার নব পরিচিতের অত্তত আগ্রহের স্থরে বিশ্বিত না হইয়া থাকিতে পারিল না। भूनर्तात विनन "औयुक ब्रम्मीनाथ रेमछ।" আগন্তক একটা ক্ষুদ্র নিখাস ফেলিয়া মৃত্স্বরে অহিলেন "আপনি রশ্বনী বাবুর মেয়ে! কোন রজনী বাবু-হাইকোর্টের উকিল তো ?"

শান্তির ভারি কৌতৃহল অন্মিল, আনন্দও হইল, সে বিশ্বয়ে নেত্রত্বয় বিস্তার করিয়া প্রশ্ন করিল 'আপনি বাবাকে চেনেন নাকি? আপনার বাড়িও বুঝি কলকাভার ?' "হাঁ, না তানয় চিনি, নাম শুনেছি মাত্র, তেমন কিছু চিনি না" একটু দমিয়া গিয়া সে সংক্ষেপে তথু বলিল, "ও:।" আগস্তক আবার একটা চাপা নিশ্বাস ফেলিলেন "রজনী বাবুর বড় মেরে ব্ৰি যোগেনের স্ত্রী ?"

শান্তির কর্ণমূল পর্যান্ত লাল হইয়া উঠিল, ন্দ আঁচলধানা মুধের কাছ পর্যাস্ত তুলিয়া কি ভাবিয়া আবার সেই শক্তিত ভাবটা সামলাইয়া লইল, মৃত্পুরে উত্তর করিল 'আমিই তাঁর বড় মেরে! যোগেন বাবুর স্ত্রী আমার মামাতো বোন! আমার হুধু একটি ভাই আছে বোন নাই' ৰশিয়া এবার দে

অনিলের হাত ধরিয়া বাড়ির দিকে অগ্রসর হইল, আগন্তক আর কোন প্রশ্ন করিলেন না।

(>>)

বৈশাখী পূর্ণিমায় মাছরার বসস্তমগুপ-মন্দিরে ভারি উৎসব হয়। সেদিন মান্তরায় वि धूम। ऋन्तर्राणक महामित्र वनस्थार-সবের আৰু শেষ দিন, সেই জন্ত ভিড়ও অস্বাভাবিক হইয়াছিল। মণ্ডপমধ্যে পর:-প্রণাণী সকল গদবারিতে পরিপূর্ণ। প্রস্তর-ন্তন্তে তিরুমল ও তৎপূর্বে নয় পুরুষের সন্ত্ৰীক খোদিত মূৰ্ত্তির উপরে স্থন্দর আকারে গ্রথিত পুষ্পমাল্য দোহলামান, দেবালয়ের প্রসিদ্ধ মহামূল্য আসবাবপত্র সকল সংস্কৃত ও পরিষ্ণত হইয়াছে। সৌন্দর্য্যে ও ঐশ্বর্যা বসস্ত মগুপ কয়দিন অমরাবতীর শোভা ধরিয়াছিল। কয়দিন শান্তির মাতা বস্থমতীর অম্বলের ব্যথা ধরায় তাঁহারা বসস্কউৎসব দেখিতে আসিতে পারেন নাই, কিন্তু চিরপ্রসিদ্ধ এমন উংসবটা দেখিবার লোভ ছাড়িতে না পারিয়া একটুথানি সারিতে না সারিতে তিনি কাহারো নিষেধ না মানিয়া বাহির হইয়া পড়িয়াছেন। শিবতীর্থের জল স্পর্শ করিয়া দেবদর্শনে যাইতে হয়, পুছরিণীর নিকটে আসিয়া যোগেক্তের স্ত্রী মণিমালা ও শাস্তি হজনে ধরিরা বসিল তাহারা এইখানে স্নান করিবে। দেখাদেখি অনিশ্ব আবার ধরিল। যোগেন্তৰ নাথ এক একটা ধমক দিলেন "এমন করে যদি জালাতন করো তাহলে এইখান থেকেই বাড়িতে ফিরিয়ে নিয়ে যাবো বলে রাখছি। দেখন দেখি পিসিমা এদের অন্তান্ন আবার !"

পিনিমা মৃত্ হানিয়া আভুকামাভার অভি-

বোগের বিশ্বত্বে কেবলমাত্র বলিলেন "ওরা পাগল ওলের কথা শোন কেন।"

মীনাক্ষিদেবী দর্শন ও স্থলর লিক্সের উৎসব
সমারোহ দর্শনাস্তর পূজাদি সারিয়া ললাটে
খেত চলন ও বিভৃতি চিত্র ধারণ করিয়া অনেক
কটে ভিড় ঠেলিয়া যোগেক্স যথন মেয়েদের
কাঁকা জায়গায় আনিয়া লাঁড় করাইতে পারিল,
তথন হঠাৎ মৈত্রগৃহিণীর বুকৈর বেদনাটা
অত্যন্ত বাড়িয়া উঠিয়াছে। কিন্ত হিলুর
মেয়েয়া এতোটুকু শক্তি থাকিতে পূণ্যের
লোভ দমন করিতে পারে না তিনি সে
যন্ত্রগাটা চাপিয়া লইয়া সহস্র স্তন্ত মগুপ দেখিতে
চলিলেন।

আর্য্য নায়কের অপূর্ব্ব কীর্ত্তি সহস্র স্তম্ভ মণ্ডপের এখনও ১৯৭টি স্তম্ভ প্রার অক্ষত আছে। ইহার নির্মাণকৌশন চিত্রচাতৃর্য্য অসাধারণ বলিলে অত্যক্তি হয় না। ভারতের সর্ব্বিত প্রকাশ্য মহান কীর্ত্তি এখনও তাহার বিগত গরিমার সাক্ষ্য দিতেছে।

ভেরমকুলম্ বা টেপ্লা ট্যাক একটি বৃহৎ
পুক্রিনী, ইহার প্রভাক দিক ১২০০ গজ
লবা—চারিদিকে উত্তম গ্রেনাইট প্রস্তরের
সোপান এবং সর্ব্বোপরি এক গ্রেনাইট প্রস্তরের কলস। স্থানে স্থানে দেব ঘোটক, ময়ুর
এবং অভাভ পশুমুর্ত্তি স্থানাভিত। কলসের
মধ্যদিকে বেড়াইবার একটি প্রশস্ত রাজা
আছে তথার সন্ধাকালে অনেক লোক বায়্
সেবনার্থ গমন করে। পুক্রিনীর মধ্যস্থলে
একটি উপবীপ আছে সেই উপবীপের চতুর্দিক
প্রস্তর হারা বাধানো, ইহার মধ্যস্থলে বিমহল
দেবালর ও চারিদিকে কার্ক্রার্য বিশিষ্ট কুরে
কুরু দেবর্যনির। মধ্যস্থলে পথ এবং পথের

হুই ধার নানাবর্ণের লভাশুন্স পত্ত পূপ ছা
ন্ত্রণোভিত। কর্মদিন পূর্বের দেবালয়ে
চারিদিক এক লক্ষ বাতি ছারা সাক্ষান হইয়
ছিল এবং সেদিন মীনাক্ষিদেবীর সহিত স্থল
লিক্ষ মহাদেব এখানে আনীত হইয়া সন্ধ্যাকারে
মহাসমারোহের সহিত তেপ্পনে চড়িয়া ছীপে
চারিদিক ভ্রমণ করিয়াছিলেন। যোগেল্রে
সহিত ছেলেমেরেরা সেদিন উৎসব দেখিতে
আসিরাছিল, বস্ত্মতা অস্কৃত্তার জন্ত আসিতে
পারেন নাই।

অম্ব মার্কেল ও কটি পাথরে মিলাইরা গাঁও প্রাচীরের ধারে বেড়াইতে বেড়াইতে বস্থমতী হঠাৎ বসিয়া পড়িলেন। শাস্তি ভাড়াভাড়ি মার কাছে ছুটিয়া আসিল অসুথ করেছে বুঞি মা ?' স্বকু, স্বকু শিগ্গির বোগেন বাবুকে ডাক। বলাই শিগ্গির গাড়ি আনতে বলো।" যোগেন্দ্রনাথ একটু দূরে দাঁড়াইয়া একটি সহসাদৃষ্ট বন্ধুর সহিত গল করিতেছিল। পিস্খাশুড়ির অহুথের সংবাদে ভারি ব্যস্ত হইয়া ছুটিবার উপক্রম করিল। বন্ধু তাহার হাত ধরিয়া বাধা দিলেন "শোন, শোন ভোমার পিসখাশুড়ির অত্ব তাঁকে এ রোদে আবার এতোটা পথ না নিয়ে গিয়ে এখন কেন আমার বাসাতেই নিয়ে চলো না ? তোমার বাড়ি তো আর এ মুলুকে নর ৷ গরমে অমুধ আরো বেডে থেতে পারে।"

বোগেন্দ্র কহিল 'তা মন্দ্র কথা কি, কিজ তিনি কি রাজি হবেন? আমার বাসাতেই বেশীদিন থাকতে সন্মত হন না, আছো বলে দেখি কি বলেন।"

"তবে আমি গাড়িটা এধানে আনাই, তুমি একটু বুঝিয়ে বলোগে।" "বস্ত্মতী প্রথমে কিছুতেই সম্মত হইলেন না, শাস্তি জ্বেদ করিতে লাগিল, "বিপদের সমন্ত্র কারু কাছে সাহায্য নিতে অপমান নাই মা, বাবা বলেন সকলকেই আপনার মতন করে নিতে হয়। চলো আমরা ঐথানেই একটু জিরিয়ে নিই।"

কিন্ত ধনীর গৃহিণী বস্তমতী নিজের মানমর্যাদার প্রতি যথেইই প্রথর দৃষ্টি রাধিয়া
চলেন। জামাই বাড়ি উঠিয়াই তিনি কতকটা
ছোট হইয়া পড়িয়াছেন ভাবিতেছিলেন, তাহার
উপর আমার জামাতা যদি তাঁহাকে এমন
করিয়া রামী শ্রামী পাঁচজনের বাড়ি বাড়ি
ঘুরাইয়া লইয়া ফিরে তাহা হইলে তো তাঁহার
এখানে তিঠানো দার হইয়া উঠে। যোগেক্স
বন্ধকে গিয়া বলিল "না ভাই, তিনি সম্মত
হলেন না। গাড়িটা এনেছে, ওরে বলাই
উদ্বের সঙ্গে করে এনে গাড়িতে তুলে দে।

বলাই ফিরিয়া আসিয়া বলিল "মার ব্যথাটা বড্ড বেড়ে উঠেছে, দিদি বল্লে একটু ঠাণ্ডা জল কোথাণ্ড থেকে আনিয়ে দিন, একটু ঠাণ্ডা হয়ে তথন আসবেন।"

"দেখোদেখি অন্তার! নেরেরা সব কট সহ করবে তবু নিজেদের জেদ ছাড়তে পারবে না।" যোগেল্ড জলের বোগাড়ে চলিরা গেলে যোগেল্ডের বন্ধু বস্তমতীর দাসীকে ডাকাইরা তাহার হারা তাঁহাকে বলাইলেন "মানি সন্তান তুল্য আমার বাড়িতে হদি মা একবার গারের গ্লা না দেন তাহা হইলে আমি অতান্ত ছংখিত হইব।" ইহার পর বস্তমতী আর আপত্তি করিতে পারিলেন না; বিশেষ শরীরও আর শ্রান্তি সহু করিতে সক্ষম ইইতে ছিল না। ক্যা ও প্রাতুক্সাকে বলিলেন—"তবে বলো। বিজেশে যখন বেরিয়েছি তথন মামসম্রম আর রইলো না!"
মোক্ষণা বলিল "অদিদিমনি দাঁড়াও আগে
ভামাই বাব্কে ডেকে নে আদি। ওমা, ঐগো,
ঐবাবৃটি, ঐযে নারকেল গাছগুলোর কাছে
দাঁড়িরে আছে। ঐযে দেখতে পাতেল না, ছাতা মাধার গরদের ভামা গারে ক্ষমর হেন লোকটি। চেহারা খানি যেন রাজার
ভামারের মতন দিব্যি বাবু।"

মোক্ষার নির্দিষ্ট লোকটকে দেখিরা শাস্তি ঈবং আনন্দধননি করিরা উঠিল "ওরা ওয়ে মি: রার! সেদিন যোগেনবাবৃকে ওঁরি কথা জিজ্ঞেদ করছিলেম, উনি বাবাকে জানেন। বহুমতী বার বার করিরা অপরিচিতকে দেখিতে লাগিলেন। তাহাকে বেন কোথার দেখিরাছেন বদিয়া মনে হইতে লাগিল, কিছু মনে পড়িল না।

মি: রায়ের বাসাটি বেশ একটু উচ্চজনীর
উপরে এবং নির্জন স্থানে। একটি স্থার
ছোট রকম বাগানের মধ্যে বেশ একটি
পরিচ্চ্র ক্ষ্ম বাংলা। বাড়িতে তিনি একা
— অর করট ঘরেই বেশ সঙ্গান হইরা
গিরাছে। মাজের ডুইং ক্রমটি বেশ পরিপাটিরপে
সাজান। ছই পাশে ছইটি বর, একটি শরন
গৃহ ও অগুটি বসিবার বর রূপে ব্যবস্কৃত ছইত।
সব বরগুলিতেই গৃহস্থানীর সৌধিনত্ব ও স্থানেশ
অক্ষরাগের চিত্র বিভ্যান। টেবিল্রকণ, পর্দা,
বিছানা হইতে ফটোগ্রাফের ফ্রেমটি ও দোরাত
কলম নিবটি পর্যান্ত সমন্ত দেশী। নিতান্ত
আবশ্রকীয় ভিন্ন কোন জিনিব তিনি বিদেশী
ব্যবহার করিতেন না।

মিঃ রামের গৃহে আদিরা কোন বিষয়েই উাহাদের সমান আভিখ্যের ক্রটি হইল না। বিপ্রহরে হোদ্রের সমর বস্থমতীর সেই বেদনাটা আরো বাড়িয়া গেল। বোগেল্ডনাথ মহা চিস্তাগ্রন্ত হইরা পড়িলেন। নিকটে ডাক্তার পাওরা যার না। মিষ্টার রার একজন হোমিপ্রপ্রাথ ডাক্তার; অগত্যা তাঁহার চিকিৎসাই আরম্ভ হইল।

শরন ককে বস্থাতী গারে চাদর ঢাকা
দিরা শরন করিয়ছিলেন। শান্তি পাথা লইয়া
মাথার আন্তে আন্তে বাতাস দিতেছে, এবং
মোক্ষাদাসী বুকে তেল মালিস করা বন্ধ
করিয়া তৈলশিক হাতে বসিরা আছে। গৃহস্বামী ভূতা খুলিয়া ধীরে ধীরে গৃহে প্রবেশ
করিয়া ভূমে মাথা ঠেকাইয়া মৈত্র গৃহিণীকে
সসম্ভমে প্রণাম করিলেন, বলিলেন "আমি
আপনার সন্তান, আমার দেখে আপনি এমন
ব্যস্ত হচ্চেন কেন মা ?"

অবশুঠনের মধ্য হইতে বস্ত্রমতী তাঁহার
মিষ্টভাষী আতিথ্যকারীর প্রতি চাহিয়া
দেখিলেন, কি স্থলর মুখধানি! কথাগুলিতেও
যেন কান জুড়াইয়া যায়! তাঁহার বাড়ি বাধ্য
হইয়া আদিয়া পড়ায় যে বিরক্তি জানিয়াছিল,
ভাহা সেই মুহুর্ত্তে অনেক কমিয়া গেল।

ডাক্তার রোগীকে দেখিরা বলিলেন,
"হুটো ওষুধ দিরে বাচিচ এক ঘণ্টা অন্তর বদলে
বদলে দিতে হবে। মালিসের ওষুধ একটা
আনতে পাঠাই, এলে পরে বুকে মালিস
করাবেন।" বস্থমতী বাস্ত হইরা শান্তিকে দিয়া
বলাইলেন "নানা, ওষুধ আর আনাতে হবে
না, সে সব বাড়ি গিরে করলেই হবে। বেলা
হরে গিরেছে আপনি আমাদের গাড়ির বন্দোবস্ত
করে দিন।" মিঃ রার একটু হাসিয়া কহিলেন,
"মা হেলের কাছু থেকে জামারের" কাছে

বেতে এতো উৎস্থক হচ্চেন কেন? দাবিটা তো আমারি বেশি! রৌজটা পড়ে গেলে আমি নিজেই আপনাকে পৌছে দিয়া আসব; এখন একটু বিশ্রাম করে নিন। স্থপ্রকাশ বাবু! আমার সঙ্গে এগোডো।"

স্প্রকাশ ঔষধ আনিয়া দিয়া আবাদ মি: রারের কাছে ফিরিরা গেল। বন্দুকের বাক্সটা ও ব্যাটগুলার উপর অনেককণ ধরিরাই তাহার লুকদৃষ্টি ঘুরিতেছিল। ঘণ্টা থানেকের মধ্যেই তাঁহাদের পরস্পরের ভিছরে (तम भतिहत रहेशा (शन। ध विषद दक्रे অসমকক ছিল না, বিশেষতঃ যথন উড্ডীয়মান পাখীট তাঁহার একটি অবার্থ গুলি ভক্ষণ করিয়া নি:শব্দে মাটিতে শুইয়া পড়িল, তথন স্থকুর আর কৌতুকের সীমা রহিল না। সে লুন্টিড মন্তক বিন্তারিতপক গতপ্রাণ জীবটিকে ছটি ডানা ধরিয়া উঠাইল, সাগ্রহে তাহাকে দেখিতে দেখিতে তাহার হস্তাকে ভিজ্ঞাসা করিন. "আচ্চানামেরে ফেলে কি পাথা বেঁধা যার না ? তাহলে দিদি পুষতো !" তারপর হঠাৎ পাৰীটা ফেলিয়া সাগ্ৰহে তাঁহার বন্দুকটা ধরিয়া টানাটানি আরম্ভ করিয়া দিল "আমার বন্দুক ছুঁড়তে শিখিৰে দিন না, আমি একটা পাথী মারবো" মিষ্টার রার শশব্যক্তে বন্দুকটা তাহার হাত হইতে কাজিয়া লইলেন "তুমি যে ছেলে মামুষ, তুমি তো এ বপুক ধরতে পার্কো না, ভোমার একটা মাল্রাজ থেকে এরার গান্ আনিয়ে দেওয়া যাবে, কি বলোঁ ? সরে এসো, ঠিক আমার পাশে থেকো, ঐ দেখো একটা পাৰী উড়ে বাচে, ঐটের উপরে তাক্ করতে হবে, ঐ পড়েছে।" সুপ্রকাশ ছুটরা শিক্ষি क्रा भाषीं कूज़्रेश जानिए भाग वमन

ক্রিয়া অনেকগুলি নিরীহ প্রাণীর প্রাণ হরণ ক্রিতে ক্রিতে চুইটি অসমবগ্রস্ক ব্যক্তির মধ্যে বন্ধুছের বন্ধন স্থাতিত হইল।

ঘণী হুই পরে উভরে যথন বাংলা ঘরের
মধ্যে ফিরিয়া আসিবেন, তথন যোগেক্সের দিবা
নিজা ভালিরাছে, সে গৃহস্বামীর পাঠাগারে ছোট
টেবিলের সমুখন্ত কেলারাথানা দথল করিয়া
বসিরা অপ্রসর মুথে চা পান করিতে করিতে
গভ কল্যকার বেঙ্গলী কাগন্ধথানা উন্টাইয়া
পান্টাইয়া দেখিতেছিল। তাহারা প্রবেশ
করিতে মুথ ফিরাইয়া একটু হাসিন "কিহে
ন্তন বন্ধু পেয়েছ বলে কি প্রাতনের প্রতি
এমনই নির্দির হতে হর ? কুতক্ত বটে।"

মিষ্টার রার হাদিতে হাদিতে বলিলেন "নুত্তন পেলে কে আর পুরাতনের স্থৃতি জাগিয়ে বদে থাকে ?

তোমার পিসিমা এখন আছেন কেমন ?"

"ভাল। বলছেন তোমার খাঁট জল নাকি খাঁটি ছবের চেয়েও উপকারী। এ ভৃষ্ণার দিনে যে জলটা উপাদের তাতে বদিও সন্দেহ নাই, তবে ভোজটা যদি একটু বড় হতো।"

স্থ কাশ তাড়াতাড়ি বলিয়া উঠিল, হোমি ৭প্যাথি ওয়ুং তো আমরা সেথানে ধাই। চুণিবাবু বিধু বাবু আমাদের বেশ মিষ্টি মিটি ওবুধ দেন, কৰিবাজ মহাশৱের ওবুধ কিন্তু একটুও ভাল না। মি: বার চা থাইরা লইরা উঠিরা বলিলেন "এসো স্প্রকাশ নাকে একবার দেখে আদি।" অভ্যাস নাই বলিরা স্প্রকাশ চা পান করিল না।

বাহিরে আদিতেই শুনিতে পাওয়া গেল
মোক্ষদা দাসী বলিতেছে "ওমা, এ যে ভোমার
অন্তায় কারা দিদিমণি! এদের বাড়ীর বার্
পাথী মেরেছেন, তাতে তুমি যে কেঁদে একেবারে হাট বাধালে! ছি চুপ করো, তিনি
জানতে পারলে কি মনে করবেন বলো
দেখি?"

ৰস্ত্ৰমতী বলিলেন "তোরই বা বাছা ও মরা পাথীগুলো আমাদের সামনে আনবারই বা কি দরকার ছিল ? আহা কি স্থল্পর পাথী-গুলি, কারাই তো পার।"

সহসা বিজয়ীর বিজয় আনন্দ গভীর অহতাগের লজ্জায় পর্যাবসিত হইয়া গেল। একথানা অস্তরালবর্তী বেদনাক্লিষ্ট মুথের ছায়া
কল্পনানেত্রে ভাসিয়া উঠিয়া বুকের মধ্যে চলস্ত্রী
রক্তন্রোতে ত্ম্ করিয়া একটা ধাকা লাগিল।
হঠাৎ স্প্রকাশের সহিত মিং য়ায়কে প্রবেশ
করিতে দেখিয়া শাস্তি চোথ মুছিতে মুছিতে
পলাইয়া গেল।

ভারতে চিত্র-কথা।

অবস্তার গুহাগুলি রাস্তার ধারে সাকানো বাড়ীর মত দেখিতে। ভারতের অন্তান্ত গুহাগুলি অনেক স্থলে অসম্পূর্ণ; কিন্ত অবস্তা সেরপু নয়। অবস্তা বেশ স্থসম্পাদিত। ছবিগুলি, অনেক বারগার দেওরালের উপরে যতদ্র হাত বায়, ততদ্র পর্যান্ত আঁকা হইয়াছে।

এসিরাটীক সোদাইটীর মাদিক পত্রে (1836. p.p.561) একবার আক্ষেপ করিরা লিখিত হইরাছিল,

শীহা বড়ই স্থানের বিষয়, বে, আমানের উরপীর ক্ষমকারীস্থ, অঞ্চলার ছবিগুলি নানাবিধ অভ্যানার ক অবজে বিকালে ও বিলুগু হইবার আগে, একবার এবাবে আগবন করেব বা।"

আৰু বৃষ্টিবংসরাধিক কাল গত হইন, এই
নিবেদন বা কাডফুক্তি প্রকাশিত হইরাছিল।
লেখকের প্রার্থনা আংশিকভাবে পূর্ণ হইরাছে।
কারণ, মিঃ গ্রীফিথ সদলবলে গবর্ণমেন্ট কর্তৃক্
নিরোজিত হইরা, অজস্তার গমনপূর্বাক,
অনেক উৎক্লই চিত্রকে ধ্বংসমুথ হইতে রক্ষা
করিরাছেন।

শজস্তার অনেক চিত্র আছে। আমর। তাহার মধ্য হইতে কতকগুলির পরিচয় প্রদান করিব।

অব্বস্তাচিত্রাবলী নানাশ্রেণীর। কোথাও
গগনবিহারী বৃহদ্দস্ত রাক্ষ্য রাক্ষ্যী, গল্পভ;
তাহাদের নিয়ার্দ্ধ পক্ষীবং। কোথাও কিয়য়;
তাহাদের অধোভাগ মাহবের মত, কিন্তু মুথ
অববং। কোথাও চঞ্চলদৃষ্টি মুগমুথ দ্রুতবাবমান, কোথাও আত্র-আনারস প্রভৃতি
ফলাদি অভিত এবং কোথাও বা হস্তা, মহিষ
ও পারাবত প্রভৃতি জন্ত ও পাথীর ছবি
আঁকা। *

প্রথম গছবরে, এক জারগার একটা শাশ্র-বছল পুরুষ একথানি জাসনের উপরে বদিরা, জাহার করিতেছেন। তাঁহার মাথার একটা টুপী। জামার হাতা জাঞ্চকালকার চুড়ি-দারের মত। ছবির ছই পাশে ছইটা রমণী,— বোধ হর পরিচারিকা। তাহারা দাঁডাইরা রহিরাছে। ভারাদের একজনের হাতে পানীর স্থিনস্থ পাত্র এবং অপরের হাতে অনেকটা হলার মত একটা পাত্র। সমূলে, ককতলে, আর ছইজন শাশ্রুগুক্ষধারী পুরুষ উপরিষ্ট। তাহাবের একজনের করে আহার্য্যপূর্ণ পাত্র। আননোপরি উপবিষ্ট, প্রধান মূর্ত্তির দক্ষিণ পাণে আর একজন কোরিত লোক ব্দিরার রহিরাছে। তাহার ডান হাতথানি প্রধান মূর্ত্তিটির কাঁধের উপরে রক্ষিত। গোকটী বামহাতের অকুলীসংকেতে কি ব্লিতেছে।

অন্ত একথানি ছবিতে হুইটী রমণীর মূর্ত্তি আঁকা। বামদিকের মূর্ত্তিটার মূর্বের ভাব,— কি চমংকার! কত আকুলিবিকুলি মাথা এবং কত ভাববৈচিত্রাময় ! কানে ভারি কুণ্ডল, স্থাঠিত ললাটের উপরে একটা চুড়াক্বতি রত্নালকার। রচিভবেণী কবরীতে পুষ্প বা অলম্বার অর্পিত। অলকরাশির কতকাংশ কবরীমুক্ত হইয়া, প্রবণের হুই পাশ দিয়া গ্রীবার উপরে লুটাইতেছে। উভন্ন-কর-ধৃত একটা কুমুমনির্শ্মিত দ্রব্য। পার্ষে ঈষ্দানত্ত্থাননা, শিধিলকেশী, তর্মলত-রত্বহারা, নানালভারেখচিতা অপর এক তম্বসী! রমণীর পরোধরহয় বড়ই অস্বাভাবিকরণে আঁকা হইরাছে। (Vide Journal of Indian Art. No 61,-1900.)

একস্থানে একজন নাগরাজা, ভান-দিকে একটু হেলিরা দাঁড়াইরা রহিরাছেন। দিকিণ বাহু মনোহর ভঙ্গীতে লম্বান এবং বামবাহ দ কোমরের উপরে স্থাপিত। কাপড়ধানি

^{*} অবস্থাওহাচিত্রাবলীর ভিতরে অনেকগুলিই বুছজীবন সংক্রাস্ত। এই সমস্ত ছবির ভলার আবার অনেক ক্লোক লিখিত আছে। সপ্তদশ গুহার একটি চিত্রে "MAITRIBAIAJTKA" - ৪৪ সোকটি উভ্ ত ইইয়াছে।



গলস্বা ওহাব চিত্র

ভোরাবাটা,—হাঁটুর উপরে উঠিরাছে ও
মালকোঁচা মারিরা পরা। গলার মালা।
হাতে অনেকগুলি গহলা আছে। তাঁহার
রাজমহিমা প্রকাশক মহামূল্য বেশ নাই,—
কিন্ত শিরোপরি একটি মুকুটা পিছনে
আটটি সাপ ফণা তুলিরা রহিরাছে। দীর্ঘ
কেশ-পাশ। বামদিকে মুখ ফিরানো,—
দৃষ্টি অর্জনিনীলিত। দৈহিক অক্সাক্ত হান
বেশ নিপুণতার সহিত অন্ধিত। কেবল
দক্ষিণ চরণটি ঠিক আঁকা হর নাই।

সপ্তদশ গুহাৰ হইটা গৰুড় মূৰ্ত্তি আছে। একটীর আক্রতি কতক পারাবত ও কতক কুক্টের মত। হাত ছটি একেবারে মাসুবের মত দেখিতে। এক হাতে করিরা লভার মত কি একটা श्रिनिम शाहरতছে। মাধার একটা बूँ है। अर्छत्र शास्त ह्यू । अञ्च वृर्छिहित कज्ञना राष्ट्रे व्याहुख ! तूक, शांख, शां ठिक মাহবের মত। উদরের স্থানে একটা চাকা म्थ। एर्यात टार्च मूथ नांक कतिया निर्तन, বেমন দেখিতে হয়,—তেমনি ! তাহায় নীচে বর্ত্তুল উদর। পিছনে লাঙ্গুল। কাঁধের ^{উপরে} একটা ঢাকনা-চাপা পাত্র। একহাতে গাত্রটী ধরিরা আছে। অন্ত হাতে শতার मण अक्ती विनिष। (Buddhist Art in India, By James Burgess.) আর এক বারগার একটা পুরুষ ও করেকটা রুষণী গান বাজনা করিতেছেন। পুরুষটী ° ঢোল এবং সুন্দরীরা চাঁপা-কলির মত ছোট ছোট আঙ্গুলে ধঞ্চনী লইয়া বাকাইতেছেন। ধন্ধনীর মৃহ বিশ্বিনি যেন শ্রবণে আসিরা शाम ! कवत्रीश्वनि এলাইয়া পড়িয়াছে। শিথিল্বসনাঞ্চল বহুখাপুঠে পুঞ্জি।

धक्यांत धक्रम हांडी ७ धक्रम ৰাহ্য বাইভেছে। একটি হাতীর ও ড়েও পায়ে শক্ত করিয়া দড়ী বাঁধা—দেটি বুঝি কিছু হুরস্ত! একটা লোক হস্তী-গুণ্ডে বলমাগ্রভাগ দিয়া আঘাত করিভেছে। তাহার আগে পিছে তুইজন বোড়-সভয়ার। সওয়ারটীর গাত্রবন্ত্র অনেকটা **পিছনের** মেরলাইএর মত ও হাতা অবিকল চুড়িদারের স্থায় ৷ চিত্রের পশ্চাৎ-দৃশ্যে একটা প্রাচীর অন্ধিত হইয়াছে। সর্বাশেষে একটা অণেকা-ক্বত সন্ধিত অখের উপরে একজন রাজকুমার উপবিষ্ট। তাঁহার সঙ্গে শস্ত্রধারী সৈনিক। একলন তাঁহার মাথার উপরে একটা লখা ছাতা তুলিয়া ধরিয়াছে।

অন্ত একথানি ছবিতে, একজন কুঠার বল্লনধারী ঘোড়-সওয়ার। মাড়ওয়াড়ি ত্রীলোকেরা যে রকম আলিয়া এবং মুসলমান রমণীরা, 'নিমা' বলিয়া বেরূপ ছোট জামাপরেন,—ভাহার অলে অনেকটা সেই-রকম একটা অলছদ। ঘোড়াটার সাল,—
লৈনেরা উৎসবের সময়ে অখের বেরূপ সজ্জাদেন,—সেইরূপ। (Dr. J. Muires account of a journey from Agra to Bombay in 1854.)

অপর একস্থানে ছইটি মহিষ ও ছইটি
বানর রহিয়াছে। একটি মহিষের সম্মুখে
ভূতলে একটা বানর ভয়কাভরভাবে বনিরা
রহিয়াছে। আর একটা বানর অঞ্চ মহিষটীর
পিঠের উপরে চড়িয়া, ছই হাতে তাহার
ছই চোধ ঢাকিয়া আছে। সেই অবস্থার,
মহিষটীর ক্রোধস্চক অক্সভন্নী বড় চমৎকার
হইরাছে।

ছিতীর গহবরের একটি ছবিতে, একজন লোক, ছই হাতে এক শাঁথ ধরিরা, থাল কুলাইরা বালাইতেছে। হাত ছটী খুবই উঁচু হইরাছে;—কিন্ত ভাহাতে হুই গাছি লথবলর রহিরাছে,—নামিরা পড়ে নাই। এক্লপ অবস্থার, বলর ছটী, হল্ডের নিরাংশে থাকা উচিত,—কিন্ত শিনীর সে ধেরাল হর নাই।

এক বারগার হুটী নেকড়ে বাধ আঁকা।
একটি মৃত্তিকা হইতে ইেটমুণ্ডে আত্রাণ
লইভেছে এবং আর একটি পিছনদিকে মৃথ
ফিরাইরা কি দেখিতেছে।

অক্স একস্থানে, একটি দ্রংষ্টাকরাল ভর্ক, একটি শুদ্দধারী যুবককে হই জারু ও উপরের হই পা দিয়া চাপিয়া বদিয়া আছে !

দক্ষিণ দিকের দেওরাল হস্তী ও মহুব্যের চিত্রে পূর্ণ। তাহার ভিতরে একটা হাতির ছরটি দাঁত আছে! (Speine's life in Ancient India p. p. 266.)

দক্ষিণে একটা দেওরাল আঁকা। তাহার উপরে ময়ুরের দল। নিমে রাজা ও রাণী বসিরা আছেন।

একস্থানে ভিনটি লোক অন্ত শস্ত্র শস্ত্র কইয়া,
দানারূপ ভঙ্গীতে ছুটিভেছে। তাহাদের
ভিতরে, ছইজনের দীর্ঘ কেশ আছে।
পরিধানে কৌপীনবং একথণ্ড কাপড়।
ছুতীর লোকটির মাধার লখা চুল নাই,—
গারে জামা আছে।

বে সকল চিত্র পরিচর দিলাম,—বদিও,
অজন্তার বহুসংখ্যক চিত্রের মধ্যে সংখ্যার
ভাহা সামান্ত—তথাপি ইহা হইভেই, সম্ভবতঃ
সকলেই অজন্তাচিত্রের দোব ও গুণের বিবর
বিবেচনা করিতে পারিবেন।

অন্তন্তাচিত্রের বিশালতা ও সৌন্দর্য্যের সম্যক পরিচর প্রদান করা, এই সামান্ত প্রবন্ধে সম্ভবে না। অন্তন্তাচিত্র যে সৌন্দর্য্যাভিব্যক্তির শ্রেষ্ঠ নিদর্শন, তাহা, তত্ত্বজমাত্রেই একমতে স্থাকার করিতে বাধ্য হইরাছেন।

পণ্ডিত ফারগুসন বলেন:---

শ্বত্যক বৌদ্ধগুহাই বে এককালে চিত্ৰবিভ্বিত ছিল, ভাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু অধিকাংশ ছলেই ধ্বংসধৰ্মী কালকৰ্ত্তক ঐ সকল চিত্ৰ নিঃশেবে বিনষ্ট।"

লাহোরের চিত্রালরেও অনেকগুলি হিন্দুলিখিত আলেখ্য রক্ষিত আছে। ঐ সকল
চিত্রে,—কোনধানিতে, শ্রীরাধিকা স্থলরী
একাস্তে উপবিষ্টা এবং শ্রীকৃষ্ণ গ্রাক্ষপথ
দিরা, প্রাণতমার পূর্ণযৌবনের শোভনশ্রী
অতৃপ্র নয়নে দর্শন করিতেছেন।

কোনখানিতে ধ্বলতুবারমগ্ন কৈলান;
তথার বিখমাতা শিবরমা গণপতির সহিত
দণ্ডারমানা; একদিকে পত্রশ্রাম কুস্থমিত
বনস্পতি-বিরাশিত উপবন এবং অপর দিকে
হরজটাচাতা জাহুবী প্রবহ্মানা।

আবার কোনধানিতে, বধারণ স্বভাবারু-কারী পুলিতা বল্লরীর ছবি।

লাহোরের সেন্টাল মিউলিরমের একটি
কক্ষে মহারাল রণজিত সিংহের সমকালবর্ত্তী
উচ্চপদন্থ মাননীর ব্যক্তিগণের এবং রাজকুমারীদের প্রতিমূর্ত্তি রক্ষিত আছে। এ সকল
চিত্র, হিন্দু-শিরী কর্তৃক অন্ধিত। মীউজীরমের
অপর একটি কক্ষে, কাণ্টীরের রঞ্জিত
চিত্রান্ধিত কলমদান প্রভৃতি নানাবিধ কার্চক্ষার রক্ষিত আছে। জলীর রং দিয়া আঁকা
ও স্থনির্ম্মিত—এ সকল কান্ঠন্রব্যাদি দর্মকগণের সাপ্রহ দৃষ্টি আকর্ষণ করে।

(Lahore: Its History, Architectural Remains and Antiquities. By Syad Muhammad Latif. p.p. 356 and 358.)

ব্রহ্মদেশে, প্যাগানের (pagan) উত্তর দিকে,
ইরাবতী নদীর তটে, কৈকরোক্ ওনমীন
(Kyankuionmin) নামধের একটা স্থপ্রতিষ্ঠ
বৌদ্ধগুহা দেখিতে পাওরা যার। উচ্চভূমির
উপরে একটা তীর্থস্থান আছে। তাহার নাম
ভাতদৌক (Yatsuk) মন্দির। ঐ মন্দিরের
বামদিকের দেওরালে, একটা ভিত্তিতির অভিত
আছে। ঐ চিত্রে কেবলমাত্র সাদা ও কালো
রং ব্যবহার করা হইরাছে। চিত্রগুলি চতুকোণ রেখা বারা ভাগ করা হইরাছে।

যতদূর বোঝা যার তাহাতে বোধ ছয়—
ছবিগুলি জাতকের গল্প অবলম্বনে অন্ধিত।
চিত্রসমূদ্রের নিমে কতকগুলি করিয়া অক্ষর
আছে। আলোচনার বারা জানা গিয়াছে,
এই ছবিগুলি ১২২০খুঃ অন্ধেরও আগে অন্ধিত
হইয়াছিল।

ছবিগুলি ক্রমে অস্পষ্ট হইরা আসিতেছে। বিশেষজ্ঞের দৃষ্টি এদিকে পতিত হওরা আব-শুক। এই সমরে, চিত্রগুলির উদ্ধার সাধনে অমনোযোগী হইলে, ইহা চিরকালের জন্ত কাল গর্ভে বিসর্জ্জিত হইবে। (Antiquarion Notes in Burma and Ceylon Indian Antiquary—p. 2903.—196.)

গশ্চিম তিব্বভের একস্থানে সাসপোশা (saspola নামক একটা স্থানের পূর্ব্বপশ্চিম দিকে, একটা বৌদ্ধগুহা দেখা বার। ঐ গুহার অনেকগুলি ভিত্তিচিত্র অঞ্চিত আছে। সেগুলি দেখিবার জন্ত অমুসন্ধিৎস্থ ব্যক্তিগণের তৃথায় গমন করা উচিত।

ঐ সকল ভিত্তিচিত্র প্রাচীন Lamaistআদর্শে অভিত। গুহার চিত্রকর্মাও জনৈক
লামা। তাঁহার সম্বন্ধে একটা কোতৃহলজনক
প্রাতন গর প্রচলিত আছে। আমরা তাহা
নিমে প্রকটিত করিয়া দিলাম।

"এক থ্রাবে একটি অপ্র্র সুন্দরী কুবাণ রমণী বাদ করিত। উক্ত সন্ত্রাসী (Lama) মহালর কালে গুল্লে মুবভীর বাদরামে গবন করিতেন। আমাদের কাব্য-প্রদিদ্ধ কুস্থনার্থ ঠাকুরটি ইতিবধ্যে কোন পুত্রে, ভাহার কুস্থকার্ম্ক কটি উদ্যত করিয়া বদিলেন। চারি চোথে বিলন হইল। ঠাকুরটি বেশ হাদিয়াই ভীর হাড়েন, কিন্তু সামাক্ত সামাক্ত মানুহ কাঁদিয়াই সারা হয়। সর্গাসীর কাছে বৈরাগ্য ভবন একটা বিঠুর আবরণ বলিয়া বোধ হইল, শুক্ত সন্ত্রাসগর্কা মুচিয়া গেল—কেবলই মনে হইতে লাগিল:

> "যদি তারে পাই তবে গুধু চাই একখানি গৃহ কোণ।"

সন্নাদী গুহার ফিরিলেন। বাহিরে তখন, চল্রালোকচূর্নিত গিরিঅকে শত করণা কর্ম হরে করিয়া
পড়িতেছিল;—আকাশে সনাথ তারকা মধুর হাজ
করিতেছিল। কিন্ত প্রকৃতির জ্যোতি মনের অক্ষনার
দুর' করিতে পারে না। সন্নাদী সারারাভ 'তাহারই'
চিন্তার, 'তাহার'ই থানে কাটাইলেন।

প্রদিন আবার দেখা হইল। খণ্ডশৈলদলোপরি শিখিলকুম্বলা তথী মোহনতলিখার বাঁড়াইরাছিল। আগে 'নরনে নয়নে' হইরাছিল, আল 'বচনে ৰচনে' যিলন হইল। সন্ন্যাসী বলিলেনঃ

> "তবে লুকাবো না আমি আর এই বাধিত হৃদয় ভার।"

কিছুদিন বায়। বিশ্বিত গ্রামবাসীরা দেখিল, লামাবর অকারণে এই গ্রামে রোজ রোজ আসিভেছেন। অস্পুন্ধানের ফলে, সন্ন্যাসীর প্রেমম্বর্গ যৃষ্টির আবাতে মুচিরা গেল। আপনার গুহাচিত্রালয়ে কিরিয়া আদিয়া স্ব্যাসী ভাবিলেন: "কেন তুমি মূর্বি হরে এলে রহিলে বা খ্যান-খারণার ।

সন্ন্যাসী বৰৰ বুৰিলেন, তাঁহার "নিশার খপন হয়েছে ভোর"—ভখন, ঋপমান ও নিরাশায় অর্জনিত হইনা, আপনার চিত্রালয়ের মধ্যেই স্বহন্তে আপনাকে মৃত্যু মুখে তুলিয়া দিলেন।

এখনও এই প্রেমকাহিনীপৃতঃ গুহাচিত্রের সকল কথা ভালো করিয়া জানা যার নাই। তবে চিত্রগুলি বুরুদেবের জীবনী সম্বনীর। একখানি ছবিতে ধ্যানময় বুরুদেবের একটা স্বৃহৎ প্রতিমূর্ত্তি একটা মগুলাকর বেষ্টনের মধ্যে আছে। (Indian Antiquary)

আমাদের চিত্রপরিচর সমাপ্ত হইল। কিন্তু কেবলমাত্র চিত্রপরিচর প্রদানই আমাদের উদ্দেশ্র নয়—আমুসঙ্গিক অস্তাক্ত বিষয়ও আমরা কিছু কিছু আলোচনা করিতে চেষ্টা করিব।

হিন্দুরাজাগণের প্রতিমূর্ত্তি স্থপ্রাচীনকালে
কতকটা কালনিক হইত। কিন্তু ক্রমেই
মূর্ত্তি সকলপ্রণালী স্থমার্ত্তিত হইরা আগিরাছিল।
Antiquities of Alwar নামক পৃত্তকে
—আলোরারের রাজাগণের অনেকগুলি অভিত
মূর্ত্তির রঞ্জিত ও স্থানর প্রতিনিপি আছে।
তাহার অনেকগুলিই প্রাচীন হিন্দুচিত্রকরকর্ত্তক অভিত। স্থাভেল সাহেব বলেন—

"কালিদানের পূর্ব্ব হইতেই ভারতীয়গণ ক্যান-ভাসের উপরে চিত্রান্থনপ্রথা অবগত ছিলেন।"

আর্থাগণ যদিও অনেকাংশে অথাভাবিক ভাবে চিত্র বা থোদনকার্য্য সমাপন করিরা ছিলেন, তথাপি, ইহা অবশু স্বীকার্য্য, বে তাঁহারা স্বেছ্ছাচারী ছিলেন না। তাঁহাদেরও কাব্রের ভিতরে একটা বাঁধাবাঁধি নিরম ছিল।

্ এখন বেমন, মাণিবার জন্ত, 'সেড

কোরার",—"টকোরার," "কম্পাদ্" প্রভৃতি বন্ধ প্রচলিত আছে আগে ভাহা ছিল না। তথন ভিন্ন উপারে মাপিতে হইত। যথা, ৮ পর-মাণুতে ১ রথরেণু—৮ রথরেণুতে এক উৎ-কুন—৮ উৎকুনে এক যব, ইত্যাদি।

निज्ञीशलात खनित्रिन्थ चाह्य।

"বিনি ছপতি হইবেন, তিনি একান্ত চিন্ত, স্ক্চরিত্র, অমল অনয় এবং বিজ্ঞানাভিক্ত হইবেন।

শিরীগণকে উপযুক্ত গুরুর অধীনে থাকিয়া শিক্ষালাভ করিতে হইত। এবং "মাস্গার", "সকলধিকার,"—মমুয়ালয় চন্দ্রিকা," "কাশুণ" প্রভৃতি পুস্তক পাঠ করিতে হইত।

মমুখ্যালয় চন্দ্রিকার কতকগুলি উক্তি রামরাজ ইংরাজীতে অমুবাদ করিয়াছেন। এখানে স্থানাভাবশত ছুইটী মাত্র দেওয়া হুইবে।

"Of nearly qualifications with him should be the Sistragrahi; he may be either the son of disciple of the sthapati; he should be particularly skilled in mathematics, and he strictly obedient to the will of the sthapati."

"A tacshaca who is thus called from part of his avocation being to pare the rough wood, should be of a cheerful temper, and well versed in all mechanical art."

এতন্তির মারামাতা (?) বিশ্বকর্মা, সনত- র কুমার প্রভৃতি নামধের শিল্প-সম্বনীর প্রকেরও অভাব ছিল না।

(Ram-Raj Essay on the Architecture of the Hindus pp. 14.)

नित्रीशलत मान नरेवात व्यनानी विव्दत्र

কত নিকাৰিধান ছিল! আদৎ কথা, সেকালের নির্মাত্ত বড় ছেলেখেলা ছিল না। এই
কারণেই, ভূতপূর্ব সরকারি চিত্রবিভালরের
অধ্যক হাবেল সাহেব এবং ঐ স্থলের বর্তমান
অধ্যক বরেণা অবনীক্ত বাবু পাশ্চাত্য পদ্ম
ছাড়িরা নির বিষয়ে প্রাচীন পদ্ম অবলখন
করিতে উন্থত হইরাছেন।

এখন, প্রাচ্য ও প্রতীচ্য শিরের আকার এবং ভাবগত প্রভেষটা কিরুপ, একটা দৃষ্টাস্ত ধারা বৃঝাইরা দিয়া, অভ বিধার গ্রহণ করিব।

গুইজন শিল্পী, চিত্রান্ধন করিবার জন্ত, বনপূমে গমন করিল। একজন, দুখামান প্রকৃতির প্রত্যেক অঙ্গটী 'পারসপেকটিভ' মতে মিলাইরা, আপনার চিত্র-ফলকে তুলিল। তিনি আঁকিয়াছেন;

উরতশির ধ্বরকার গিরিমালা। গিরি-বক্ষচাতা অলবেণীরম্যা একটা নির্বারিণী বরিরা পড়িতেছে। তৃণখচিত-ভাম-কুলে একথানি ছোট কুটীর। দ্রে,—ধরণী অম্বের মিলনরেথার ভামকার কানন।

বা: ! প্রকৃতির যেধানে যাহা দেখিতেছি, ছবিতেও ঠিক সেই গুলি দেখিতে পাই-তেছি যে !

তোমার মনে বিশ্বর অবিবে, কিন্তু ঠিক আনল হইবে কি ? কারণ, বাহা জীবন্ত ধেথিতেছ, বাহার বাণী মর্ম্মে মর্ম্মে অমুন্তব করিতেছ, বাহার ছলে জ্বন্য তোমার নাচি-তেছে, বাহার পুতঃস্থার মন তোমার পরিপূর্ণ, বে তরু মর্ম্মর ও সলীতনীলা নির্মারিক মিশ্রিত ভৈরবীতে শ্রবণ তোমার পরিভৃত্ত, শাধাসীন বিহগের বে বৈভালিক গীভিতে প্রাণ ভোমার উদ্লান্ত,—চিত্তে ভাহার কিছুই ভূমি দেখিতে

পাইবে না। তদতিরিক্ত যাহা তুমি পাইবে,
নীনারম্যা প্রকৃতির তুলনার ভাহা একাক্তনিক্জীব। এমন অবস্থার, ভোমার ঠিকআনন্দ হইবে না,—কিন্ত তুমি বিশ্বিত হইবে,
নীমাশৃঞা এই শোভনা প্রকৃতিকে চিত্রকারী
কি কৌশলে, এই ছোট পট থানির ভিতরেধরিরা রাখিল, তাহাই ভাবিরা তুমি অবাক
হইবে। নতুবা, গৃহভিত্তিলম্বিত landscape
ক্ষেরে অমুভব করিতে পারিরাছে ? আলেথ্যের সহিত মিলাইরা কোন কবি স্বভাব
বর্ণনার চেষ্টা করেন।

ছবির সাগরে আর জগতের সাগরে অনেক তফাং। অফুকারীর তুলিকা রূপার কাটি, প্রকৃতির অঙ্গে স্পর্শ করিলেই প্রকৃতি ঘুমাইরা পড়িবে। একেতে অফুকরণ ব্যর্থ।

দিতীর চিত্রকর্মার আলেখা দেখ। সেও ঐ এক বিষয় শইয়া, একই সময়ে ৰসিয়া, ছবি আঁকিয়াছে। দেখ,—ঐ জলবনালৰভিত শৃক, উচ্চ পর্বাত, ধবলবরণ তুষারাবরণের উপরে বালভামু-ত্যক্ত কর-লেখা জলিতেছে। এক-পার্ষে ব্যাঘ্রচর্মাসীন হরপার্বতী বিশ্রাম লাভ ক্রিতেছেন। ঐ ত্কুল প্লাবিয়া গ্লা ভরক্তকে স্থশাররঙ্গে বছিরা বাইতেছেন। তটে,—পবিত্র তপোৰন। হোমধ্যে গগন আছল। পিৰুশ-জ্ঞা, মুদিভাকি ঋত্বিকগণ কুশাসনোপরি के निःमक मृत्रयूथ लामामान। (कह (त्रामध्नभतांत्रन), (कह छे९वर्न इहेत्रा চঞ্চল প্রেক্ষণে কি দেখিতেছে, কেই শান্তিত, গঙ্গা ভরকধো তম্ব কেহ তৃণভক্ষণশীল। এক দেবালয় ঐ স্থানের গভীরতা বৃদ্ধি করিতেছে।

वरे हरे हित्य कर श्राप्त । श्राप्त বুরোপীর, বিভার ভারতীর। প্রথম, ফটো-প্রাফার, বিভীয় আলেখালেখক। একজন अञ्चली, जात अक्बन मोनिक भवताती। একজন বাস্তবভক্ত এবং আর একজন, বাহা আছে, ভাহাই **কল্পনা**প্রিয় আংশিকভাবে দেখাইতে চেষ্টা করেন এবং चात्र अक्टम गहा नाहे, छाहाहे आमारमत হাতে আনিরা দিতে চাহেন। একজন স্বাভা-ৰিক দৃষ্টিতে বাহা দেখিতে পান, তদতিরিক্ত किष्ट् **८५८**चन नां. আর আর একজন অস্ত্র দৃষ্টিতে ত্রিজগতের বিচিত্র ও মহান সৌন্দৰ্য্য দেখিতে পাইরা, তাহাকে যবনিকার অন্তরাশ হইতে টানিয়া আনিয়া. সর্বসাধারণের দৃষ্টির গোচরীভূত করিরা দেন। কোটীপতি সহস্রথপ্ত রৌপামন্তালাভের জন্ত ততদুর শালায়িত হন না। কিন্ত জীর্ণকছাধারী নিঃসম্বল কুটীরবাসী তাহা লাভের জন্ত কত না উৎস্থক।

এতক্ষণে, বোধ হয় সকলেই বুঝিতে পারিরাছেন, আর্বাচিত্রের আদর্শ ই হইতেছে,
প্রকৃতির উপরে ধানিকটা রং চড়াইরা দিরা
ভাহা ফলকে প্রকাশ করা। এই কন্তই তাঁহাদের শিরে, আমরা অপ্রাকৃতিকতার কতকটা
প্রাধান্ত দেখিতে পাই। আর্য্য-শির কথনও
সাল্ডের মধ্যে আবদ্ধ থাকে নাই, ভাহা
বুক্ত বিহলপ্রভিম অনিকৃদ্ধ পথে স্বাধীনভাবে ছুটিরাছিল। ভাহা সনীমের স্বলপরিধি

क्कि मध्य यक् मा शंकिता, ध्यक्षशंद्य चनीत বাও হইরা পড়িরাছিল। বেখানে গৌরবর্ণ সেধানে নীল রং লেপিয়া, যেখানে ছুইহাত সেধানে দশ হাত **লাগাইয়া এবং বেখা**নে একটা মাধা, সেধানে দশটা মাধা বসাইয়া এই অস্বাভাবিকতার উপরেষ্ট আর্ঘাশিল প্রতিষ্ঠিত, এইখানেই ভাহার প্রি-ণতি এবং এই**ধানেই তাহার বিশেবত ৷** তাঁহারা ছবি আঁকিয়াছিলেন—কিন্তু ক'টো ভোলেন नारे। এই বিশেষ धतिशारे चार्यानिहास কনকভাগুরের সন্মুখে গিরা দাঁড়াইতে হুইনে। নতুবা পাশ্চাভ্য অগতের ফ'টোক্যামেরা হাতে করিয়া অগ্রসর হইলে, আমরা এই বিপুল ভাগুরের চাবী খুঁজিয়া পাইব না. - অধিক্ত নিরাশ হৃদরে ফিরিয়া আসিতে হইবে। দুরের দৃশ্য দেখিতে হইলে, দূরবীক্ষণ চাই, কারণ ভাহা দূরদৃষ্টির পক্ষে উপযোগী; সাদা চোধে অতদূর নজর চলে না। জলপথে যাত্রা করিতে হইলে, নৌকা চাই;—একথণ্ড লোহা ভাসাইয়া যাওয়া বায় না। আর্যাশিল বথার্থক্রণে বঝিতে তাহার শাখতপরিকরনা হুদরক্ষ করিতে হইলে, তাহার দৌন্দর্যাভিব্যক্তি প্রাণে প্রাপে অমুভব করিতে হইলে যথার্থ খাঁটি দেশী জনর চাই: অভবা পাশ্চাতা সভাতার রদিগ চৰমা নাকে লাগাইরা প্রতীচোর ভাষসিকভার হাট মাধার চড়াইরা মুখে বিজ্ঞতার ভাগ ক্ষিতে পারি কিন্ত চোধে সব খোঁগা (मथिव।

শ্রীহেমেন্দ্র কুমার রার।

সূর্য্যকর-চালিত চালক যন্ত্র।

(Solor Motor.)

আমাদের নানাপ্রকার প্রয়োজন সিদ্ধির बना माधात्रगे या मकन या वावक्य हरेया ধাকে তাহাদের অধিকাংশই হর জলীয় বাষ্প না হয় তাড়িভের সাহায্যে চালিত रुप्र । কোনো কোনো যন্ত্ৰ নদনদীর স্রোতের শক্তি লইরাই চালানো হইয়া থাকে। কিন্ত তাহাদের সংখ্যা অব্লই। জলীয় বাষ্ণের সাহায্যেই আবার চালক বল্লের (motor) ৰন্ত তাড়িং প্ৰস্তত হইয়া থাকে। কাৰ্যেই बनीय वाष्ट्र-চাनिত চাनक यखन्र वावशन मर्सार्थका व्यक्षिक। यथारन नमनमी इटेर्ड শক্তি সংগ্ৰহের স্থবিধা নাই, সেথানে ত কথাই নাই-সেথানে ত মন্ত্রাদি চালাইতে ল্লণীয় বাষ্পের সাহায্য গ্রহণ করিতেই হইবে। অন্ত স্থানেও, রেলগাড়ীর এঞ্জিন্ প্রভৃতি যন্ত্র পরিচালনে জ্বনীর বাষ্পের সাহায্য গ্রহণ ভিন্ন অক্ত উপান্ন নাই।

উক্ত অভিপ্রায়ে পাথুরিয়া কয়লা পোড়াইয়া
তাহার উত্তাপে জলকে বাম্পাকারে পরিণত
করিতে হয় তাহা সকলেই জানেন। জলীয়
বাম্পানালিত য়য় সকলেয় জয় পাথুরিয়া কয়লা
আজকাল সকল দেশেই প্রভুত পরিমাণে
ব্যবহৃত, হইভেছে। এখন কয়লা মুপ্রাপ্য;
ইইলে আনাদিগকে কি বিপদে পড়িতে হইবে
তাহা চিস্তার বিষয়। অনেক দিন ধরিয়া এই
চিস্তা সমগ্র বৈজ্ঞানিক জ্বগৎকে তোলপাড়
করিয়া তুলিয়াছিল। কিন্তু আজকাল সকলে
বলিতেছেন যে, বদি কয়লা ফুরাইয়াও যায়

তাহা হইলেও রেলগাড়ী জাহাল প্রভৃতি থামিয়া ঘাইবার কোনো সন্তাবনা নাই। বৈজ্ঞানিকেরা এই সকল কার্য্যের জন্ম আরো ছই একটি শক্তির আধার দ্বির করিয়া রাধিয়াছেন; তাহাদের মধ্যে কোনোটি অস্থবিধাজনক হইলে অপরটি লইয়া কাষ্ চালানো ঘাইবে।

তরল বায়ু বৈজ্ঞানিক জগতে বে নৃতন পথের সম্বাদ আনিয়াছে তাহাতে আমরা এ বিবয়ে অনেকটা নিশ্চিন্ত হইতে পারিয়াছি। আবদ্ধ বায়তে চাপ দিয়া এবং তাহার উষ্ণতা হরণ করিয়া তাহাকে তরলাকার প্রদান করা যায়। এই ভরণবায়ু প্রচুর চাপের সহিত আপনার বাস্পীয় অবস্থা পুন:প্রাপ্ত হইতে চেষ্টা করে। জলীয় বাষ্প আকারে বর্দ্ধিত চুটবার জন্ম যে চাপ প্রদান করে ভাহাতেই এঞ্জিনাদি চলে। তরলবায়ুর চাপ জলীর চাপ অপেকা বছগুণ অধিক। তরল বায়ৰ চাপ অধিক বলিয়াই এখনে৷ তাহাকে এঞ্জিন্ চালানো প্রভৃতি কার্য্যে আনার স্থবিধা হই-তেছে না ; যন্ত্রের আরো উরতি হইলে হইবে— मकरणहे এहेक्स भारत करतन। याहा रहीक, একদিন অত্যস্ত অপরিষ্ঠান, কয়লার শুঁড়াময় ধুমোলাারী এঞ্জিনের পরিবর্ত্তে তরণ বাযু চালিত, পরিকার পরিচ্ছর, শক্ববজ্জিত এঞ্জিন দেখিতে পাওয়া যাইবে এক্লপ আশা করা আর নিভান্ত হরাশা নহে। পৃথীদেবীর কয়শার ভাণ্ডার শৃক্ত হইলেও এ বিষয়ে আমাদের বিশেষ কোনো অভাব উপস্থিত হইবে না।

যে বায়ুমণ্ডল স্পাগরা পৃথিবী ব্যাপিয়া সমা বর্তমান আছে সেই অকর ভাণ্ডার আমাদিগকে প্রয়োজনাতিরিক্ত শক্তি দান করিতে পারে। [া] **অনীয় বাষ্প প্রস্তুত** করিবার জ্বন্স কয়লার আশ্ৰয় গ্ৰহণ না করিয়া অনেক ই্থ্যকর বারা আমরা সে কাজ চালাইতে পারি। প্রাণদাতা, শক্তিদাতা সবিতা বর্ত্তমান ধাকিতে আমাদের চিন্তার কোনোই মাষ্ট, বৈজ্ঞানিকেরা এইরূপ বলিতেছেন, ভাৰাই দেশাইতেছেন। শোড়াইরা আমরা বে শক্তি পাই তাহাও ক্র্য্যেরই। বহুশতাব্দী পূর্ব্বে যে সকল উদ্ভিদ্ হৰ্ষ্যকর গ্রহণ করিয়া বৰ্দ্ধিত হইরাছে, দেই-ভণিই বছকাল ধরিয়া মৃত্তিকায় প্রোপিত পাকিয়া পাথুরিয়া কয়লার পরিণত হইয়াছে; স্বাের তেজ তাহাতে সঞ্চিত হইয়া রহিয়াছে.

ইহা ত গেল পরোক্ষভাবে স্ব্যাশক্তির
বাবহার। আমরা প্রত্যক্ষভাবে স্ব্যা হইতে
শক্তি সংগ্রহ করিয়া তাহাকে কার্য্যে পরিণত
করিতে পারি— একথাটাও নিতান্ত নৃতন
নহে। কথিত আছে, আর্কমেডেস্ কতকগুলি
দর্শণের সাহায্যে প্রচুর স্ব্যাক্ষর দৃরস্থিত
শক্ত-আহাজের একছানে প্রতিফলিত করিয়া
আহাজ্থানি ভত্মীভূত করিয়া আপন মাতৃভূমি
সাইয়াকিউল্ রক্ষা ক্রিয়াছিলেন। এই
প্রাটকে এতদিন গ্রা বলিয়াই বোধ
ইইত। কিন্তু ভাসমান বন্তু সম্বন্ধীয় নিয়মের

আমরা কর্লা পোড়াইরা বহুশতাকী

সেই

স্থ্যশক্তি

কাঞ

সঞ্চিত

रंहेए

वानिएकि।

আবিষারক আর্কনেডেনের মন্তিকে স্থ্যশক্তির উপবাগিতা প্রবেশলাভ করিরাছিল—এ কথার এখন আর আশ্চর্য্য হইবার কোনো কারণ নাই। ইহা হইতে অন্তত এটুকু জানা বার যে আর্কমেডেনের সমসাময়িক লোকেরা জানিতেন যে দর্পণের সাহায্যে স্থ্যের কর একত্র করিয়া তাপ সংগ্রহ করা যাইতে পারে। পরবর্ত্তীকালে এঞ্জনের আধিষারক জর্জ

ষ্টিফেন্সন এ বিষয়ে ইঙ্গিত প্রদান করিয়া গিয়াছেন। একদিন ষ্টিফেন্দন্ তাঁহার এক বন্ধুর সহিত তাঁহারই এঞ্জিন্-চালিত একথানি ট্রেন দেখিতেছিলেন। হঠাৎ তিনি তাঁহার বন্ধকে জিজানা করিলেন — "ট্রেণ টানিতেছে কে ?" "বন্ধু উত্তর দিলেন—এঞ্জিন।" "এঞ্জিন্ চলিতেছে কিরূপে ?"—"কলীয় বাষ্প "ক্রলীয় বাষ্প উৎপন্ন হইতেছে কিরপে । "— "কম্বলা হইতে।" "কম্বলা কে প্রস্তুত করিল?"—বন্ধু এ প্রশ্নের কোনো উত্তর দিতে পারিবেন না; ষ্টিফেন্সন্ই উত্তর नित्न- "र्या।" ष्टिकन्त्रन् व्विश्रोहित्नन, কর্মা পোড়াইরা ভাহাতে সঞ্চিত সূর্য্যের শক্তিকে ব্যবহারে আনাও যা আর সোঞ্জাহজ না গিয়া নানা স্থান ঘ্রিয়া একস্থান হইতে স্থানাস্তরে যাওয়াও তাই। যদি একেবারে সূৰ্য্য হইতে শক্তি লইয়া তাহাকে কাযে नागाता यात्र छत्वहे त्रिणे त्रामाञ्चल हहेत् ।

চালক যন্ত্ৰ সকল চালাইতে স্থাকরের
ব্যবহার ধর্পণের সাহায্যে হইয়া থাকে।
কতকগুলি দর্পণ হারা স্থোর কর একটি
কলপূর্ণ "বরলারের" * উপর প্রতিফলিত কর

Boiler—এঞ্জিনের যে ছানে জল রাখিয়া তাপ সংযোগে তাহাকে বাল্যাকারে পরিণত ক্রা হয়
ভাহাকে "বরলার" বলে।

হর। দর্শণের সংখ্যা অধিক হইলে তাপ এতই অধিক হয় যে বয়লারের জল ফুটিরা উঠিয়া বান্দাকার ধারণ করে। সেই বান্দাকল চালাইবার জন্ম ব্যবস্থাত হইরা থাকে।

তুপুর বেলার ছাদের উপর উঠিলে দেখা বার সূর্যাকরে ছাদ গরম হইরা উঠিরাছে। যদি সমস্ত ছাদটার তথনকার তাপ একত্র করা হয় তাহা হইলে কত তাপ পাওয়া যাইবে ভাছা সহজেই অমুমের | ভিসাব করিয়া দেখা বাইতেছে যে একটি জাহাজের ডেকে বে সূৰ্য্যৰশ্মি পভিত হয় তাহাই একত্ৰ ক্রিলে তথায়া আহাজথানিকে চালানো বাইতে পারে। ইাহারা কাচ ফলক (lens) ঘারা একত্র করিয়া শোলা কিছা সূর্য্যের কর কাগজধণ্ডে অগ্নিসংযোগ করা দেখিয়াছেন তাহারা জানেন করেক ইঞ্চি মাত্র স্থানে যে স্থ্যকর পতিত হয় তাহাই একত্র করিলে কত তাপ উৎপন্ন হয়।

এরিকসন্ সর্বপ্রথমে স্থ্যকর-চালিত
চালক বন্ত প্রস্তুত করেন। তিনি বহু দর্পণ
বারা একটি বন্ধলারের উপর স্থ্যরিশ্ব প্রতিফলিত করিরা যে কল চালাইরাছিলেন তাহাতে প্রত্যেক একশত বর্গফুট্ দর্পণে যে শক্তি উৎপর হইরাছিল তাহাবারা প্রার সাত মন প্রব্যকে একফুট উন্তোলন করা যাইতে পারে। অবশ্র ইহা যথেষ্ট হইল না। কিন্তু এ বিষ্কের ইহাই প্রথম দৃষ্টান্ত। প্রথমেই এত আশাজনক ফল অতি অর ক্ষেত্রেই পাওরা গিরাছে।

শামেরিকার অনেক স্থানেই স্থাকর-

চালিত চালক বন্ধ ব্যবহৃত হইডেছে।
ওরাশিংটনের ডাক্তার ক্যান্ডার এরিকোনা
নামক প্রদেশের অন্তর্জর ক্ষেত্রে স্বর্হৎ একটি
কার্চের মঞ্চ প্রস্তুত করিরা তাহাতে ১৬০০
দর্শণ সাক্ষাইরাছেন। এই দর্শণগুলিকে
এরপে ঘুরানো, ফিরানো ও স্থানাক্তরিত
করা যার বে সকল সমরেই সেগুলিকে স্থ্যের
দিকে ফিরাইরা রাখা যাইতে পারে।

এক প্রকারের দর্পণ আছে তাহাতে

স্থাকর পতিত হইলে করগুলি প্রতিবিদিত

হইরা দর্পণ হইতে একটা নির্দিষ্ট দ্রুছে

আদিরা একত্র হয়। এই প্রকার দর্পণের

নাম burning mirror, অর্থাৎ আতদ-দর্পণ।

কতকগুলি আতদ-দর্পণ এক সময়ে ব্যবহার

করিয়া বে তাপ পাওরা যাইতে পারে তাহা

বড়ই ভীষণ। এই তাপে অতি কটে

ত্রবনীয় রাসিয়ান্ (Russian) লোহও

মোমের তার নরম হইয়া যায়। স্থা

হইতে তাপ সংগ্রহের জন্য এই প্রকারের

দর্পণও ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

'উপরে পৃথক পৃথক দর্শন-বিশিষ্ট বে স্থ্যকর চালিত চালক্ষত্রের কথা বলা হইল, কালিফর্ণিরার তাহা হইতে পৃথক আর এক প্রেকারের যন্ত্র ব্যবস্থাত হইরা থাকে। ইহাতে মাথা কাটা "কোনের" লি ভার আকার বিশিষ্ট একটি কাঠমঞ্চের ভিতর দিকটি ২ ফুট লখা ত ইঞ্চি চওড়া প্রার ১৮০০ দর্শন বারা আবৃত্ত আছে। মঞ্চটি এরণে স্থাপিত বে একটি ঘড়ির কলের ভার যন্ত্রের সাহায্যে স্থ্যের গভি

^{*} বে কাচক্ষক ছারা এইরূপে পূর্যাকর একতা করা যার ভাহাকে আত্স-পাধর করে। আত্স-অরি।

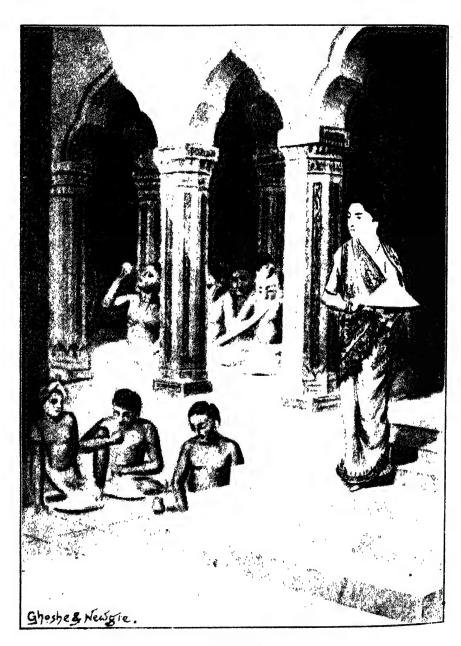
[†] Cone—এकि त्यांना बरेरछ छात्रांत्र याचात्र मिरकत हुई छिन देकि कार्तिता नहेरल এकि "त्वान्"। शाहात्र छेन्द्र मिरकत हैकियात्मक कार्तिता वाल मिरक यांका थाकिरन छात्राहे "नायाकांका कान्"।

पद्मिन ब्हेन किनाएज्यक्तियात पशायक ফ্রাছ শুমানু একটি নবোত্তাবিত উপারে স্থ্যকর হইতে উভাপ গ্রহণ করিয়া এঞিন চালাইয়া-ছেনঃ তাঁহার উত্তাবিত বত্তে একটি ছপুরু কাচের আবরণবিশিষ্ট পুরুহৎ বাল্পে কতকগুলি কালো হতের নল ক্রুর মত গুরাইরা সালাইরা त्रांथियां ट्रांटे मरणव मधा पित्रां चन किया चनते **८कारमा फन्नम भवार्थ ग**हेवा गां**क्वा** हत्। काटहत चान्त्रम इरेडिन मरना बायून बावशान शास्त्र । স্থাক্ষকে ছইভাগে ভাগ কৰা যাইতে পাৰে। একছাল কেবল আলোক ও অপর ভাগ ভুৰুত্ব ভাগ বের। আলোকগারী কর সহলেই দ্মাশৰামী করে পরিণত হয়। স্থাকরের আবোক্ষারী আন সক্ষেই বারটের কাচ ও বাহুৰ আবরণ ভের করিয়া নলগুলিয় ক্ষুত্র বিরা পড়ে ও সেধানে তাপদারী করে श्रीकृष्य हरेश नग ७ ज्याधार ज्याग नगार्थक क्रिक्ट महा । नरमत्र किस्टरतत करण शर्शार्थ ক্ষা ক্ষা ক্ষা কাশালো হয়। তাশ

चकि जा बारवरे ११६ वहेटक मुक्ति गरगु-शेष रहेल भारत। त तुम्म निवमिष्ठ रूर्याक्य शास्त्रा यात, देवलानिएक्ता चाना करवन, ता गकन रहरन नीयर वह ग्रा-क्रवाणिक गानक राजन आह्मम ब्हेरव । हेश्नक প্ৰভৃতি দেশে এ ছবিশা নাই, সেখানে कश्नारे नवन। अक विन द्रम नकन द्रमान ভরণ বায়ুর প্রচলন হইতে পারে। বিশেষজ্ঞেরা বলেন বে পারস্ত অন্তর্গত মরুভূমি এবং ष्पात्रवा, मर्ज्यानदा, मिक्किका, সাহারা. অষ্ট্রেলিয়া প্রভৃতি দেশের প্রথম পূর্ব্যকর সূর্ব্য-করচালিত চালক্ষম্ভের সাহায্যে কার্য্যে পরিণত হইতে পারে এবং তাহার ঘারা জল সরবরাহ ক্রিয়া সে দেশগুলিকে কর্মক্ষেত্রে পরিণত করা বাইতে পারে।

সাহারা প্রকৃতি মরুভূমিতে বে প্র্যকর পতিত হইরা নাই হইতেছে ভাহার সহস্রাংশ:এ বদি আমাদের কাবে আসে ভাহা হইলে কভ কর্মনা যে বাঁচিরা বার ভাহা চিন্তা ক্রিলে অবাক হইতে হয়।

বৈজ্ঞানিকের বহু চেষ্টার পর এই সেদিনের
নিতান্ত উচ্ছু আল, বহু বলশালী তাড়িৎ শক্তি
আয়ন্তীভূত হইরা অনেকটা আরব্যোপভাগের
আনীপের বৈত্যের ভার আর সকল কার্যোই
দক্ষ আজাধীন ভূত্য হইরা বাড়াইবাহে। এখন
প্র্যাকরের মূরে কাটাওরালা লাগান্ গাছটি
একবার ভাগে। ক্ষিয়া প্রাইরা বিতে পারিলেই
আরাকের আরে কা ক্ষিয়া প্রাইরা বিতে পারিলেই
আরাকের আরে কা ক্ষিয়া পর ব্রিরা বার।



कण्कः वया

কন্তকা কৃতী।

রাজা পুরদেন ভবন বছুবংপের অধীবর। ভারত সেই কল্পার বন্দির-ছুরারে ভুল হইয়া বেল: তৰ্ন আপন সহিষায় প্ৰদীপ্ত। উৰ্ছে সাম-পাৰের उथितिक चत्र, निष्म चाक्य चारीनकाद मूक कनदर वशास्त्राचारत कान, विका, विकान अवर विकासक মহাসন্মিলন ৷

तिह नमत ताका **भूतरमन सहबर्श्य मृ**क्षेत्रप्र। বাজার প্রতিজ্ঞা অটল, প্রতাপ অসীয়। সেই পণবার্থ্য-মহীয়ান দুগতি হইতে বাদৰ প্ৰকৃতিনওলের অতি नगंगा निक्षित दान पूरा अवर एउटबात निवान्तिवर বিরাজ করিত। বেন সেধানে, সমুরভ খনপ্রার শালতর হইতে হরিং-কচি তৃণাত্রট, বেঘবিদারী প্ৰত হুইতে প্ৰ-ধূলির ক্ষরটি, সবস্তই, নিৰ্ম্বল আকাশের নীলিয়ার তলে আর্থ্যাবর্তের বক্ষ-যণিপুঞ্জের লার চেডনার পুলক-প্রভার বিক্সিড হইবা বাকিও।

একদিন বছপুরীর আসাদচ্ডা সমূহে পভাকার সারি চকল रहेवा উঠিল, যাদবরাজ্যে মললবাদ্য বাজিলা উঠিল; যতুৰংশের খরে খরে আনন্দকোলা-श्लब मर्था, यथन, निर्माण छेगांत अथन चारणारमञ রক্তামর সরাইরা, পুষ্প কিরপের অর্ঘ্য-ডালার, প্ৰাতঃসাত নবীন হুৰ্যা উজ্জন হুতে ধরণী জননীৰ পুৰা নাজাইতেছিলেন, নেই সমূলে, রাজা পুরুষেনের গুড়ে রাধ-কন্তা পূথা জন্মগ্রহণ করিলেন।

त्र पित्र देश नेष्य अकार बहेन मा। यन. पार्गत (य अमृष्ठ हवि नृপणिशृद्ध मश्रीवनी विद्वाद्ध, আপনি উবাদেশী বিভাব হইয়া ভাহার সৌন্ধ্যসূধা পান করিতেছিলেন। লোকের সম্ভ বিনের মানাহার

স্বস্ত রাজ্য এই অলোকসামাত রূপন্নী কভার কলাপনীতে ভরিরা উটিল।

কিছ রাজা শ্রুসেন এক কঠিন প্রতিজ্ঞার আবদ্ধ ছিলেন। আপৰ পিতৃষ্তপুত্ৰ পাৰৰ বন্ধু রাজা-কুন্ধী-ভোষের নিকট ভাঁহার এই প্রতিশ্রুতি ছিল, বে. প্ৰথৰ তাঁহার বে সভাৰ হইবে, তাহা তিনি বছুকে व्यक्षांन कक्रियन।

আৰু তাহার শিশু পুৰার চল্লকিরণের ভার अमृष्ड्बि-नारमत थेथन स्रात्त मठ, शहरक्रमहाती वार्जारमञ्ज्ञ वानन्त कमारमञ्ज वरु-त्वन त्वन्नाव, व्यात्राध-ৰায়-টিভার এক অপূর্ব ভরক তাঁহার প্রাণনর (यनित्रा वांदेखिक।

পুথার জন্ম সংবাদ পাইরা হাস্য করিয়া ভোজরাজ বন্ধুৰ পাৰ্বে আসিয়া বলিলেন,—"বন্ধু, ভোমার পৰ ?"

নিৰ্বাত শিখার মত রাজা শুরসেন বন্ধুর দিকে मृष्टिगांक कत्रिराजन। निरम्पन, क्रमरतत्र अगुक-छेदन चूनियां निया बाजा वक्तक चानिकन निरमन, विनातन,- "वक्, छाराहे आमात्र मान हिल। अम्, प्रिथं, कि द्रमत अखारकत क्रिकां! नठाई छुवि। ত্ৰী হইৰে,--ৰছু। এদ, ভোষার কলা ভূৰি निका यांच ।"

(वश्विहिक यांग-वळ त्रश्लाहिक स्टेन : बाबा नवारबार कविशा बाला,चीव नवन-थार्गव चानकविर्वत, बोब धानात्मत्र निकं बारमांक, त्रांका-कूरमत्र थावत त्रव सनत्रवस् कुडोरणास्त्र (कारण जुलिश पिरनन ।

()

আনন্দের গলম্প বিধোত স্থান্ত নেই নিশা করিয়া বাপন ফিরিলা অমৃতসিক্ত পৰ বাহি দুণ ভোজ নগৰে আপন। তথা, বেন কোন্ পৃত অমিছ-কোমল কেম্পিঞ্চ-কাৰ্নালসায় गर्ज आंगार भूती एकाकाक-छेतन-श्री-दिन कानकार। অবনি বাজিল বাড, প্রেছনে চন্দ্রমে সারা ন্রীয়নে ভরিল প্রবাস, পালোগিক গডাকার ক্ষুদ্রকল আমর-আব্যানে বিভিন্ন আকান। খেলে গেল ভোজপুরে স্থাবরে বেন কোন্ মহাকলরব,—
মধুহাস্তে বিকশিত প্রভাতের শিশিরার্দ্র ফুলের উৎসব!
কোন্ খর্গ হ'তে আনি' চাঁদের কলিকা,
স্বেহসরোবর জলে প্রেমানন্দ কুতৃহলে
রাখিলা নুপত্তি ভোজ আলোকিতে নিজ জটালিকা।

(२)

কি ক্ষমা। কি ক্ষমা। প্রাসাদের অভ্যন্তরে—পর্ধারে বেন পূটে' বার অমৃত-আনন্দ প্রোত প্রতি ম্পন্দে, প্রতি হাজে, প্রতি ভরিমার। সমস্ত প্রাসাদমর অমৃতের উৎস-ধারে ঢালিরা কিরণ ফুটিল সহল হাজে জ্যোৎসার সহলদল জীবন্ধ হিরণ। কনক চরণজন, অলক্তকরেখা আঁকা আদরে নিপুণ, পড়ে-কিনা-পড়ে প্রার ধরাগার, নৃপ্রশিক্ষনে রুণু রুনু। উরুসিত সেই নৃত্যে পলে গলে রাজগৃহে ক্ষরে অকল্মাৎ; সমস্ত প্রাসাদকক্ষে সহল্র মর্ম্মরগিরি-নির্মার প্রপাত। সমস্ত আন্তন-ধূলি হ'রে উঠে রাজগৃহে ক্ষরাস-মধুর, লুটে' পড়ে মন্ত বত বৃক্ষবাটিকার কলকণ্ঠ বিহঙ্গের ক্ষর। অকল্মাৎ ভোজরাজ স্থাতিত করিরা দিরা পূর্ণ রাজসভা, ছুটি' আসি' লন তুলি' সে পূথারে কুড়াইরা, স্বীর রাজ্যপ্রভা। এইরূপে কন্তা পূথা বাড়িলা ক্ষমর,

আলোকিয়া নৃপতির আনন্দ সায়য়।
সে কি রূপ! অনস্ত উচ্ছ্বাস স্থেহ—অমৃতের কীর সর ননী।
কুস্তী' নামে ভোকগৃহে শিশু সন্ধী আইলা আপনি।

(0)

নবীন প্রভাত গুধু, গুধু হাস্ত, গুধু হর্ব, গুধু আলোমর
বেন সে জীবনধানি—হাস্তর মধুর রূপে হইল উলয় !
উত্তানে উত্তানে নিতা উঠে হাসি' প্রতি ভোরে বত ফুলকুল,
আপনি ভরিরা উঠে হেম ডালা—করে কার বিহলে আকুল ?
বীরে, বত প্র্যানীতি শাল্লগীতি উচ্চারিত সে কঠে স্ক্রন—
অমুক্ত বিধারি' দিয়া—বিধোহিরা গৃহ-প্রাণ-প্রর-জন্ম ঃ

দিনে দিনে সুখছৰ প্ৰশাস্ত উৰল-মধু,—এ কি পৌৰ্বাসী ?
ভারিয়া কোমল চিন্ত ভাগে নিত্য জ্ঞান ভাতি নবান্ত্ররাশি ।
অসামান্ত মহিমার চিন্ত ভারি' কি চেতন-সঞ্জীবন হইল প্রকাশ,—
দর্পণ বদনপটে ভাহারি নির্ম্মল পৃত অতুলন অক্ষর আভাব !
সে আভাব—কোন্ দূর স্থভবিশ্ব যেন মহা —মহামান্ত্রের,—
বেন কোন্ মহীরসী মহানারী—রাজ্ঞী—মাতা—বিশ্ব জগতের !
(৪)

ছড়াবে কিরণরাশি পথ ভরি' আজি কন্তা চলে উবাহ্বানে,
বিশ্ব সাগরমর শিহরণ বিরা বালা ফিরে গৃহপানে।
পূল্প-উত্থানের মাঝে হের হের উবাজ্যেরে আজি একি সহসা প্রকাশ
আপন জ্যোৎসার-সাত লিগ্ধ চাঁদ—কন্তাকুত্তী পরি' পট্টবাস।
অর্ঘ্য ডালা করে লরে কন্তা কুত্তী, প্ণাপ্রভা নরনাভিরাম!
কল্যাণ মূরতি বেন ধীরে উঠে মন্দিরসোপান।
সমাপিরা দেবপূলা কন্তা আদে গো-গৃহ মাঝার,—
অমৃত হহিতারপে দোহি' আনে বিশ্বস্থা ভোজরাজাগার।
লেহস্থাস্বরূপিনী, জগময়ী মাতৃত্বের স্থপ্রশান্ত ছড়ারে কিরণ!
তোজরাজ্য পাকশালে বিরাট রন্ধন ভার নিক্ক হল্তে লন।
সহস্র ব্যঞ্জনে, ক্ষীর, অরে ভরি উঠে মহাঅরশাল—
বিতরেন সেই অর মূর্ত্তিমতী লন্মী যেন! বন্ধ রাজ্য—ধন্ত নরপাল!
অঙ্কন যুড়িরা উঠে জনসক্যকোলাহল ছাইরা গগন;
ভালিয়া সমন্ত রাজ্য বায়ু প্রবাহের মত ক্ষ্ণাতুর আসে অগণন!
(৫)

বের হের ভোজপুরে মিলে গেছে আজি মরি ! দেবতা দানব !

বিজ অথিল দীন এক সাথে স্থা থার হন্দহীন করি' কলরব !

বর্ণের বিচার নাহি, অবিরাম জর বহি' লক বর্ণথালি—

অক্লান্ত মোহিনী আজি মাতৃরূপে স্থাডাগু বিখে দেন ঢালি'।

মহাত্রতশ্চর্যাময়ী অতৃলনা কল্লকার পূতনীপ্ত এ মৃর্জি স্থানর,—

হেরিলা প্রাসাদচ্ডে ধল্প রালা কুন্তীভোল—নেত্র দরদর।

"লয় অরপূর্ণা লয় ! জয় ! জয় !"—উঠে ধ্বনি ভোলরালপুর,

পবনে অমৃত যাথা দেই ধ্বনি গেল ছুটি' হন্তিনা স্থপ্র ।

শীক্ষণার্গন বিত্র মন্ত্র্যার ।

श्रीकहका वर्ष मृथा।

शृहिनी ७ विदनाम।

গৃ। বাবা আমি বড় খুসী হয়েছি,— আমাকে আগে ত খুলে বল্লেই হোত। তোমার যা ইচ্ছে— আমারও ঠিক তাই ইচ্ছে—

বি। আমি ভেবেছিলুম-বুঝি-

গ। বাবা বোঝনাত, ছেলের স্থপেই
মার স্থা। তাহলে বাবা শুভক্ত শীঘ্র — আদি
বলি এখুনি নিমন্ত্রণ চিঠিগুলো লিখে বিলি করে
ফেল, পরশুই দিন ঠিক করা বাক।

বি। পরশু! এত শীঘ্র কি সব বোগাড় হরে উঠবে ?

গৃ। বেশী লোক ত আর বলছিনে,—

হু চার জন আত্ম বন্ধু এখানে বরষাত্রী এসে

মিষ্টিমুখ করবে—ভার পরে কনের বাড়ী

যাবে,—এতে আর এমনই কি হেলাম।

বি। তবে বাবাকে একবার বল—

গৃ। সে আমি ঠিক সময়েই বলব এখন, সে জন্ত ভোর ভাবনা নেই। তুই এখন চিঠি কথানা লিখে বিলি করে ফ্যাল,—এই ভোর কাকার বাড়ী, মামার বাড়ী, রাম্ বাবুদের— আর—

বি। হরি বাবুদেরও ত বলতে হবে—?
গু। তা বলু না—তাদেরও জানান
উচিত বইকি—এতদিন থেকে আশা করে
আছে—এখন ঠিকটা বুঝুক।

ৰি। ভাকি রকম চিঠি লিখব ?

পৃ। এই বিরেতে যেমন লিখে থাকে— ভোমার বাবার নামের চিঠি হবে—-

বি। আচ্ছা আমি প্রাণধন বাবুর ছেলের

বিরের নিমন্ত্রণ পত্রখানা দেখে লিখে ফেলছি। কভার বাড়ীর নম্মরটা ?

গৃ। অত নম্বর দেবার দরকার কি বাবা! বর্ষাত্র ত স্বাই এখানেই প্রথমে আস্বে,— এসে তোর সম্বেই ত কনের বাড়ী যাবে—।

বি। **তা বটে !—কার মেরে সে**টা অবস্থ **লিখতে হবে ?**

গ। তাতেই বা দরকার कि ?

বি। তাও দরকার নেই! কিন্তু চিঠিতে ত ভা থাকে দেখতে পাই।

গৃ। আমি বলি না থাকাই ভাল। অত আড়ম্বর করে লেখাটা ঠিক হবে না—যত কম কথার চিঠি সারতে পার—

বি। আমিও দেখছি তাই স্থবিধে— কাজটা চটপট হয়ে বাবে। তবে যাই চিঠিগুলো বিলি করে ফেলিগে, তুমি বাবাকে বলে রেখো।

গৃ। দীড়া দাঁড়া—আর একটা কথা,— মিষ্টার কিছু ফরমাস দিতে হবে।

वि। कांत्र नारम ?

গৃ। কার আবার নামে? কর্তার নামে— বি। একবার তবু জিজ্ঞাস। করে এস,— কি কি চাই—

গ। বিজ্ঞাসা আবার করব কি—?
কি কি চাই আমি আনিনে নাকি? তাকে
বলতে গেলেই বলবেন—এটা—কম্বর—
সেটা কম কর,—জান ত বাবা তোমার
বাবার ধরণ—তার চেরে তুই ফরমাস দিরে

আয়—তখন আর গোল করার উপার থাকবে না।

বি। বেশ ! তুমি যা বল। আমি এখনি গিয়ে সব ঠিকঠাক করে ফেলছি।

প্রস্থান।

গৃ। বিষেব খবর পেরে হরি বাবু কি
রকম বলে পড়বে—আমি তাই ভাবছি!

হি হি হি! বাছা আমার পাঁচটি হাজারের

লগু এমন বন্ধ হারালে! উ: আমার এত
আহলাদ হচ্ছে। হিহিহি। শনী যথন বৌ

হরে ঘরে উঠবে তথন আর তাকে কেউ

প্রিয় বলে—দাসী বলে নাক তুলতে পারবে
না—চক্রকান্ত তার কাছে চাকর হয়ে দাঁড়াবে
—হিহিহি!—যাই এখন দাঁড়িয়ে হাসলে
চলবে না। শনীকে নিম্নে বোনের বাড়ী যাই—

সেখান থেকেই বিয়েটা হোক, সব ঠিকঠাক

করে আসি। ও শনি—শনিমুখি—কোধার

আবার গেল!

গৃহিণীর প্রস্থান। শশীর প্রবেশ।

শ। তাইও! একি আশ্চর্য্যি কাও!
(দেরালে টাঙ্গান একথানি আরনার মুধ
দেখিতে দেখিতে) তা এমনি কি আশ্চর্য্যি!
আমি যথন নিজের মুথ ধানা দেখি তথন
নিজেই মোহিত হরে যাই। তবে কথা হচ্ছে
তাতে ত একটা মীমাংসার উপস্থিত হতে হর
না। নিজে আমি ত চিরদিন নিজেরই আছি—
নিজেরই থাকব;—এখন কথা হচ্ছে এদের
ছজনের মধ্যে কাকে রাখি—কাকে ঠেলি!
(কপালের অলকদাম কুঞ্চিত করিতে করিতে)
তাইত এবে বিষম সমস্তা! একজন হলেন
বড়—একজন ছোট! একজন প্রভূ একজন

অমুগত, একজন পুত্র একজন পুষ্য। এক: अप्तत माम विषय हरन आभि हव धनीत चत्रनी स्नीत शृहिनी, नाम नामी स्मता कत्रदर. ব্দগতের বেতিক আদর করবে; অন্ত জনের সঙ্গে বিয়ে হলে আঞ্জ যা—কাল্ভ তা। এতে আর সমস্তা কি হতে পারে ? ওগো চাঁদবদনী তাকেই তুমি বিয়ে কর—যার স্ত্রী হলে জগৎ-সংসার তোমার অমুগ্রহডিথারী হবে। সেই ভাল, সেই ঠিক। উ: कि ऋथ। कि व्यानना। আমার যেন ধরাধানা সরা জ্ঞান হচ্ছে। কিন্ত তবুও কারা পাচেছ কেন ? তাহলে চক্রকান্তের म्भाकि हता। त्म कि मत्त गांत ना ? तम যে আমাকে বড় ভাল বাসে—আর আমিই কি বাঁচব ? কার দঙ্গে পরামর্শ করি ? চন্দ্রকান্তকেই কি সব বলব ? বলি ও চন্দ্রকান্ত কোথায় গেলে তুমি,—আমি আর সহু করতে পারছিনে।

(কোচে অৰ্ধশান্বিত ভাবে উপৰিষ্ট হইয়া গান)

মলার, রূপক।

আমার,—কেন গো আজি হেন উদাস প্রাণ কেন—মধুর রাগে হেন বেস্থরো তান। চঞ্চল মন সব হেলা ফেলা— কিছু না ভাল লাগে হাসি খেলা, প্রথর তাপ একি! প্রভাত বেলা, শাস্ত মেঘে একি বজ্ঞ গান! এই কি ভালবাসা! এরে কি প্রেম কহে? কিলাগি চার সবে—কিসের মোহে! মলর মধু বায়ু ইহাত নহে; এ বেন ফাগুন আগুন বাণ!

স্বরলিপি।

মাগ্ম। II রাপামা। মাগা। রগা সা I রামাগা। मा -1। **डे** ना न আজি হে॰ ন "আ মার" কে নগো প্ৰা ণ । माशा I द्वामामा। भाभा। नार्मा I नार्दामा। र्मर्ता-गा। धाभा II কেন **মধুর রাগে হেন বেহুরো ডা∘ নৃ"আমার**" $I + I \cdot I \cdot I$ ना $I \cdot I \cdot I \cdot I$ ना $I \cdot I \cdot I \cdot I$ ना $I \cdot I \cdot I$ **५० का या निम्न एक** । I नार्जार्भा। गांग्या। भाषा I गां-र्मार्भा। गर्मा-गथा। भाना I } কিছুনা ভাগ লাগে হা • সি খে• • লা • I $\{$ मा था था । ला नथा । ला नथा । ला नथा । ला -भा I $\}$ প্ৰথন্ন তাপ • একি প্ৰভাত • বে • লা • • I शा-नाना। र्जार्जा। शा मा I शा-धाणा। धर्मा-णा। धाशा II মেৰে একি ়ব ৽ জ গা৽ ন্ "আমার" । 11 दिता-। जा जा ता । जा जा दिता जामामा। मा-शा। जशामा [**এ है कि जा ग** वाना धातक एथ म क रह I त्रामामा। পা-। धार्गधा I পाधा পা। मा-शमा। त्रा-। नानाना। किनानि চার সবে কিসের খো•• ভে• মল্য । ना ना। नथां ना I जी जी जी शी। नी -थना। जी -1 I ना जी र्जा। ম শুবা• রুই হাড • ন • হে • এ ঘে ন • । गां-था। शां मगां I मामगां था। शां-मा। गमां जा II

۹t

অসমাপ্ত।

আজ তিন বৎসর পরে থোস্তালির সভোন্দ্রনাথ বি. এ, পাশ করিয়া দেশে চিরিয়াছে। কলিকাতা হইতে দেখে ফিরিবার পথটা তেমন স্থাম ছিল না বলিয়া সভ্যেম্র-নাথ দেশে ৰড-একটা আসিতে চাহিত না। কিন্তু নিন্দুকেরা বলিত, যে সভ্যেন্দ্রনাথের বিবাহের পর হইতে অবকাশ-সময়টুকু দেশে ন্ট করা অপেকা খণ্ডরালয়ে যাপন করাটাই তাহার নিকট বাঞ্নীয় সেই কারণেই নাকি সভোন্দ্রনাথের দেশে আসিবার পক্ষে বড একটা স্থবিধা ঘটিয়া উঠিত না। কিন্ত এবার বিধবা জননীর সকাতর অনুরোধ কোনরপ যুক্তি-তর্ক বা চক্ষুলজ্জার খাতিরেও এড়াইতে না পারিয়া ক্ষ্ম হাদরে অবশেষে একদিন সে খোস্তালিতে শুভাগ্মন করিল।

একে বি, এ, পাশ একমাত্র পুত্র, ভাহার উপর তিন বংসর পরে দেশে ফিরিয়াছে, শুধু পাড়া-প্রতিবেশী নহে, পুক্রিণীর মংস্তকুলের মধ্যেও একটা প্রবদ আন্দোলন উপস্থিত হইল।

মাতা জিজ্ঞাসা করিলেন, "বৌমাকে নিরে এলিনে কেন ? কতকাল দেখি নি, কেমন-টি
হয়েছে এখন ?"

পূল উত্তর করিল, "ভার শরীরটা এখনো তেমন সারেনি--পাড়াগাঁর জলহাওরাটা, বিশেষ এই গরম" ইভাাদি।

বিবাহের সমন্ন ধোস্তালিতে আদিরা সত্যেক্রনাথের নববধ্র একটু অস্থ্য করে—সেই স্ত্র ধরিয়াই সভ্যেক্রনাথের 'ইংরাজী'-মেজা- বের খণ্ডর মহাশর কল্পাকে পাড়াগাঁ। পাঠাইতে ততটা সম্মত নহেন এবং লী আসিরা দেশের এই জীর্ণ বাটি, অসভ্য প্রতিবেশিবর্গ বা উঠানের 'ধানের মরাই' প্রভৃতি উপ্তট জিনিসগুলার সহিত পরিচিতা হয়, সভোক্রনাথের তাহাও বড়-একটা অভিপ্রেত নহে।

₹

প্রায় আড়াই বংগর হইতে চলিল, কোথা হইতে এক অনাথ পিতৃমাতৃহীন কারস্থ বালক আসিয়া খোলালির বাবুদের বাড়ী আশ্রম-গ্রহণ করে। সকলেই বলে, 'ছেলেটি বড় ভালো'। বেশ শাস্ত, নম্র, বুদ্ধিমান চাকর! সকল কাজেই সে পটু! গক্ষর জাব দেওয়া হইতে আরম্ভ করিয়া বাবুদের তৈল মাধানো অবধি কোন কাজেই সে পশ্চাংপদ নহে! ছেলেটির নাম রাজু! পরিচয় জিজ্ঞাসা করিলে মৃত্ হাসিয়া সে শুধু বলে, 'আমরা গরিবের ছেলে, মা, আমাদের আবার শ্রিচয় কি ?'

সত্যেক্তনাথের জননী রাজ্র কর্মতৎপরতার বিস্মিত হইতেন; মধ্যে মধ্যে তিরস্কারও করিতেন, "অস্ত চাকর ররেছে, তুই
ছেলেমান্থর এত খাটিস কেন ?" সে হাসিরা
উত্তর দিত, "আমাদের ত, মা, চিরদিনই
খাটিতে হইবে; ওধু বসিরা থাকিরা
লাভ কি ?"

পুত্রের অমুপস্থিতিতে পুত্রস্নেহাতুরা বিধবা কননী এই আত্মীর-বান্ধবহীন অনাথ বালকটির প্রতি অনেকথানি স্নেহাযুত দান করিরা আপনার অভৃপ্ত কুত্ত হানরকে কথকিং শাস্ত করিয়াছিলেন।

এইরপে কাজে-কর্মে স্থপে-ছ:থে সেংমারার মধা দিরা বাব্দের বাড়ী রাজ্র প্রার
আড়াই বংসর কাটিতে চলিল। সভ্যেক্তনাথের শিভ্ব্য-ক্সা পাঁচ বংসরের 'ব্ড়ীর'
সহিত রাজ্র বড় ভাব! ছগ্মপানের নিমিত্ত
মাতার সহিত বৃড়ীর যথন স্বন্দ্র্যুদ্ধ বাধিয়া
যাইত, মা যথন বহু অযথা বচসা করিয়াও ক্ষুদ্র
বর্গীর হাঙ্গামা তুল্য এই ছন্দান্ত ক্যাটিকে
কিছুতেই স্ব-মতে আনিতে পারিতেন না এবং
ছগ্মপানের বিশেষ প্রয়োজনীয়তা ও ভদভাবে
কন্সারত্বের আত্ত প্রাণ-বিরোগের আলকার
লক্ষায়িতা হইরা বৃড়ীর গগুরুর টিপিরা ধরিয়াও
তাহার ম্থব্যাদান করাইতে সক্ষম হইতেন না,
তথন রাজ্পার কথার বিশেষ ফললাভ হইত।

10

রাজুকে দেখিরা সত্যেন্দ্রনাথ কহিল,
"মা, এ ছেলেটি কে?" মা বলিল, "এটি
একজন কারেতের ছেলে; এখানে এসে
ররেছে। চাকরের কাজ-কর্ম্ম সবই করে।
কাপড় কোঁচানো বল, জেল মাধানো বল, সব
কাবেই তৎপর! বড় শাস্ত ছেলে, মুখে
হালিটুকু লেগেই আছে; আহা, বাপ-মা কেউ
নাই, ছেলেমামুষ, আমি ওকে বড় ভালবানি!"
রাজুর প্রতি চাহিরা কহিলেন, "রাজু এই
তোর দাদাবাবু রে! তুই সেদিন বলছিলি
দাদাবাবুকে দেখিস নি; দাদাবাবুর কাজকর্ম্ম
করতে পারবি ত!"

্রতিকমুখ হাসিরা বিস্থৃতভাবে খাড় নাড়িরা সাজু সহর্ব সমতি জ্ঞাপন করিল। আজকাল সাজুর কাল-কর্ম অনেক বাড়িরা গিরাছে। নে ভাহাতে এট্টুকু অসম্ভই নহে। দাদাবাব্র কাপড় কোঁচানো, দান করিবার সময়
দাদাবাবৃকে তৈল মাখানো, দাদাবাব্র জন্ত
আহারাস্তে পানের ডিপা ও উপর্ক্ত অবসরে
ছঁকা প্রভৃতি সংগ্রহ করিয়া রাখিতে রাজ্
বিশেষ পটু! এই পাড়াগেঁরে ছেলেটির সমস্ত
কাজের মধ্যে এমন একটা সবজ-গ্রথিত
পারিপাটা ও শৃঙ্খলা ছিল বে ভাহা দেখিয়া
সভ্যেক্তনাথ প্রায় ভাবিত, 'ছেলেটি খুব
চালাক'!

Q

আব্দ্র সত্যেক্তনাথের নিমন্ত্রণ আছে। নদীর অপর পারে জনৈক শৈশব-স্থল্যের গৃহে নৃত্য-গীতাদি হইবে। বাড়ী ফিরিতেও রাত্রি হইবে।

সত্যেক্তনাথ রাত্রে বাহিরের ঘরেই শরন করে। স্ত্রীর অমুপস্থিতিতে বহিগুহে শরন করাটাই সঙ্গত বলিয়া অনেকের ধারণা! রাত্রে সত্যেক্তনাথের শয়া রচনা করা, শরন করিলে তাহার পদসেবা ইত্যাদি কাজ রাজ্ব পক্ষে নৈমিত্তিক ব্যাপার। পরে ঘাদাবাবুর রীতিমত নিজাকর্ষণ হইলে রাজ্ পাশের ঘরে শরন করিতে যাইত।

দেদিন সন্ধার প্রাক্কালেই রাজুর শীত করির।
মাথা টিপ-টিপ করিতে লাগিল। রাজু বৃঝিল,
জর আসিতে আর বিলম্ব নাই! মধ্যে মধ্যে
তাহার জর হইতেছিল; এ সকল লক্ষ্ণ তাহার
বিশেষ বিদিত ছিল। রাজু আর বিসতে
পারিল না। ঘরে বাইরা শুইরা পড়িল।
দাদাবাবুর যে বিছানা প্রান্তত হইল না তাহা
আর মনে রহিল না। রাজে সকলেই আহারাদি
করিল; রাজু আসিল না দেখিরা ইহিনী
সন্ধানে আসিলেন; দেখিলেন, রাজু একটা

কাপড় মৃড়ি দিরা **তুমাইডেছে। গারে হাত**দিরা দেখিলেন, গা বড় গ্রম! বুঝিলেন, জর
আসিরাছে; জার বিরক্ত না করিরা চলিয়া

রাত্রি প্রায় দ্বিপ্রহর হইরাছে। নিমন্ত্রণ-শেবে জনকোলাহলহীন ঝিল্লি-মুখরিত অন্ধকার গ্রাম্য পথ ধরিরা দত্যেক্সনাথ বাড়ী ফিরিল। গোবরা মাঝি লঠন ধরিরা বাবুকে বাড়ী পৌছাইরা দিল।

সত্যেন্দ্রনাথ বাড়ী আসিয়া কক্ষে প্রবেশ করিয়া দেখে, আলো নাই। পকেট হইভে नियाननाई वाहित्र कतिया वाछि ज्यानिया त्रत्थ, শ্যা অবধি প্রস্তুত হয় নাই ! একে ঘুমের ঘোর, তাহাতে নদীতীর হইতে হাঁটিয়া আসিতে কত কষ্ট হইয়াছে। পথে আসিতে আসিতে তাহার মনে পড়িতেছিল, কলিকাতার কথা। বন্ধবান্ধবের সহিত বর্ষাত্রীর নিমন্ত্রণাস্তে হাস্ত-মুখে কতদিন সে বাড়ী ফিরিয়াছে। পথে কত হাসি, গল্প, গান ৷ বাড়ীতে বাতায়নোপবিষ্ঠা প্রতীক্ষাকারিণী স্থন্দরী পত্নী জাগরণ-ক্ষাণা! কক্ষনধ্যে সপ্রেম আলিকন! তাহার পর জামা ছড়ি প্রভৃতি ষণাস্থানে রাখিয়া প্রেম-সম্ভাষণে জীবনে কি সে এক আনন্দোৎসবের স্টি করিত ৷ আর এথানে প্রতীকা করিয়া থাকিবে, একটা পাড়াগেঁরে অসভ্য ভূত্য-বালক ! কাহার অভাই বা এ পুস্পমাল্য ? হার ! গৃহে ফিরিয়া দেখে, সেই পাড়া-গেঁয়ে ভৃত্য বালকটাও বাবুর কট লাখৰ ক্রিবার জ্বস্তু বসিল্লা নাই! এক্সপ বৈশ্বাদ্পি না হইবারই কথা! সভ্যেন্ত্ৰাথ চীংকার করিয়া ভাকিল, 'রাজু', 'রাজু', 'दर्शका'।

কিছ, কোথার রাজু ! অবের প্রকোপে সে তথন সংজ্ঞাহীন হইরা পড়িরা আছে। আহা, বেচারা !

সভ্যেক্তনাথ ভাবিল, "নিশ্চয় বেটা ঘুমাইয়া আয়েস করিতেছে!" ভাহার ঘরে গিয়া দেখিল, রাজু বেশ মুড়ি দিয়া ঘুমাইতেছে!

অনহ। গৈশানিক জোধে সভ্যেক্তনাথ তাহার চুল ধরিরা টানিরা রাজ্কে বসাইবার চেটা করিলে রাজু ঢলিরা বিছানার উপর আবার শুইরা পড়িল। তথন বিষম জুদ্দ সভ্যেক্তনাথের হিডাহিত-জ্ঞান লুপ্ত হইল। সে তার পৃঠে সবলে পদাঘাত করিল। ভাম প্রহারে চৈতন্ত লাভ করিরা রাজু উঠিরা বিদল। সভ্যেক্তনাথ কহিল, "কনি খোকা, ঘুমিরে পড়েছ! বিছানাটা কি আমি করব?" কথার রাগ আরো বাড়িয়া গেল। হস্তের বেত্রঘটি রাজ্র পৃঠে বার ঘই তিন পড়িল।

বাহিরের ঘরে চীৎকার শব্দ শুনিরা সত্যেক্রনাথের জননীর নিদ্রা ভাঙ্গিরা গিরাছিল। পুজের প্রতীক্ষার বসিরা তিনি অব্দরের দালানেই তক্রামগ্রা হইরা পড়িরা ছিলেন। শশবান্তে বহির্বাটিতে আসিরা বালকের এই শান্তি দেখিরা পুত্রকে কহিলেন, "আহা, কেন ওকে বকছিস্! ছেলে মান্ত্রম জরে বেহুঁস হরে পড়ে আছে!" সভ্যেক্র বিক্রত স্বরে কহিল, "জর! ভোমার আদরেই ত ওর আম্পর্ক্রা জারো বেড়ে গ্রেছে!"

রাজ্কে ব্কের নধ্যে তার্নিয়া তার দীর্ঘ কেশগুলির মধ্যে হাত বুলাইতে বুলাইতে জননী বলিলেন, "আহা, বিছানাটা ক্ষ্মি আৰি তথন করে রেখে বেছুম !" নে রাজে রাজ্ বধন পদদেবা করিতেছিল তথন এক কোঁটা গরন জল বোধ হর সভ্যেজ নাথের পারের উপর পড়িরাছিল !

সমস্ত রাত্রি সভ্যেক্তনাথের ভালো নিদ্রা হইল না ! এক ফোঁটা জল বড় গরম বোধ হইরাছিল। রাগটাও সেদিন সহসা বড় অধিক মাত্রার চড়িরাছিল। সভ্যেক্তনাথ রাজ্কে . ভালবাসিতেন। আভাবিক মৃত্তার জন্ত, ভগু সভ্যেক্তনাথের কেন, সকলেরি সে প্রিয় ছিল।

রাত্রে কতবার সভ্যেত্রনাথের মনে হইল বে, একবার দেখিরা আসে রাজুর বেনী লাগিরাছে কিনা! কিন্তু না, সে বে চাকর— ইহা ভ ভাল দেখার না! কতবার মনে হইল, একবার বিজ্ঞানা করিরা আলে, তার অমুধ কমিয়াছে কি না! কিন্তু তাহাতেও লজ্জা বোর হয়!

সকাল বেলা রাজ্ মৃথ ধুইবার জল
আনিয়া দিল, তামাক সাজিয়া দিল। তাহার
মৃথ-চোধ ফুলিয়া উঠিয়াছিল। সমত রাজি
সে কাঁদিয়া কাটাইয়াছে। আহা, অসহায়
অনাধ! এখনো তার জ্রেরাদল বর্ব উত্তীর্ণ
হয় নাই। হার! সত্যেক্তনাথ, তথনো বদি
তার মূখের দিকে চাহিয়া একবার বলিতে
'আহা'! একবার বদি নিকটে ডাকিয়া
লইয়া বেখিতে, ভোষার বেতের ঘা'র কিরুপ
রক্ত ক্ষিয়াছে! অনেককণ ধরিয়া লজার
সহিত সংগ্রাম ক্ষিয়া অর্থেবে ডাকিল,
"রাজ্"। ইক্তা, সে কেনল আছে লিজাসা
ক্রিমে। কিন্ত রাজ্ নিকটে আনিবার প্রেই
নহলা ক্ষুমানা টেলিকার আনিল। তারের
সংবাবে সভোক্তানাথের বনটা বিচলিত হইবা

উঠিল। খুলিরা সেখিল, 'ব্রীর বড় পীড়া'।
ভরে তার যাথার রক্ত দোঁ সোঁ করিতে
লাগিল, চক্তে অবকার বেখিল। তৎক্ষণাৎ
তাহাকে কলিকাতার চলিরা আলিতে হইল।
রাজ্কে কুললপ্রার আর জিজ্ঞাসা করা হইল না।
সেহের বা সাখনার একটা কথাও বলা হইল
না। গাড়ীতে উঠিরা ভাবিল, "বুঝি বা
প্রারশ্ভিত হর।"

নাস থানেক প্রান্ত কাটিরা গিরাছে।
সত্যেক্তনাথের মূথে হাসি দেথা দিরাছে।
তাহার স্ত্রী এ যাত্রা বাঁচিরা গিরাছে। আন এক সপ্তাহ হইল পথ্য পাইরাছে। আঃ।
আজ সেই উপলক্ষে খণ্ডরের যাগানে বন্ধুবর্গের
জন্ত সভ্যেক্তনাথ ভোজের আরোজন করিরাছে।

উপযুক্ত বেশভ্ষার সজ্জিত সত্যেক্তনাথ গাড়ীতে উঠিতে যাইতেছে, এমন সমর ভূত্য একথানি পত্র আনিয়া দিল। পত্রথানি বাড়ী হইতে আসিয়াছে; অননী লিখিয়াছেন। অম্বান্ত কথার পর লিখিত আছে,—

"বড়ই হ:ধের বিষর, কাল শেব রাত্র একমানের জন-বিকারে আমানের রাজু মারা গিরাছে! মরিবার আগে অনেকবার সে তোমাকে দেখিতে চাহিরাছিল!"

পত্রধানির ছই এক স্থলে চোধের জল লাগিরা অক্ষরগুলা অভাইরা গিরাছে ! ই হতভাগ্য পিড়ুমাড়ুহীন অনাথ ! সেদিনকার বেদনার সাখনা-ভ্রলে, ইচ্ছা থাকিলেও সভ্যেত্র-, নাথের একটি কথা বলিবারো অবসর বিলে নাই! আর বিলিবেও না ! হার ! আল ্মেছের সেই একট কথা চির্নিবনেরি মন্ড অসমাপ্ত রহিরা গেল! জীলৌরীস্তানোহন মুখোপার্যার ।

कनकी-शिक्ष ।

হে বোহন, হে স্কার, হে আমার ম্থলিবদন,
সৌলর্গের লীলাভ্নি, তুমি নাথ জ্যোতির নির্বর ;
অশোভন বলে তবু "তুমি কৃষ্ণ, বড় অশোভন,"
কলত্ব হাঁকিয়া করে "তুমি কৃষ্ণ, কলত্ব-আকর ।"
অপরণ বনমালা, অপরণ তব পীতাখর,
জিনি দামিনীর কাতি, জিনি চার ক্ষিত কাঞ্চন ;—
মূনির মানদ টলে হেরি সেই শোভা-নিকেতন,

হেরে সেই চিত্রপটে ষদী-ষাত্র জন্মান্ধ বর্কর ।
হার বেই অব্ অব্ রবিকরে ভ্রন ভাষর,
পোচক কোটরে বিনি' ভাহারেই পাড়ে শত গালি ;
বুজিরা অভ্ত চকু, বলে পানী "দেবদিবাকর,
কলম্ব-আ দর ভূমি, বুরিরাছি তব নাগরালি ।"
স্থাড়া নেড়ি কি বুরিবে ভক্ত-ভোগ্য রাসের আবাব ?
ভীক্ত-চিত্ত কি বুরিবে পাঞ্জন্ত শথের-নিনাদ ?

হালার ধূমকেতু।

সম্প্রতি একটি বিপুলকায় ইতিহাস প্রসিদ্ধ ধ্যকেতৃ আমাদিগকে দর্শন দিবার জ্বন্স ব্যোম মহার্ণবের মধ্য দিয়া ছুটিয়া স্থ্য ও পৃথিবীর আসিতেছেন। ইহার দিকে প্রবলবেগে বেগ প্রতি সেকেণ্ডে ২৯ মাইল, হইয়া তাঁহার বৈজ্ঞানিক জগৎ শশবাস্ত আগমন প্রতীকা করিতেছেন। ইতি ম্যেধই কত শত শত চকু দূরবীকণের সাহায্যে ইহার শুভাগমন (৽) দর্শনের জ্বন্স চেষ্টা পাইভেছে। কিন্তু ধোলা চকুতে দেখিতে হইলে আমাদিগকে আরও কিছুকাল বৈর্যাধারণ ক্রিয়া থাকিতে হইবে। ক্রেক মাসের মধ্যেই ইনি আমাদিগকে দর্শন দিয়া কিছুকাল আমা-দের নয়ন পথের পথিক থাকিবেন। পুচ্চ্সহ ইহার বিশাল দেহথানি নাকি এরপ বে তাহা অকটরলোনী মহুমেণ্ট হইতে মেডিকেল কলেজের উপরিভাগ পর্যাস্ত বিভৃত ^{হইতে} পারে। কোন এক ওভ মুহুর্তে আসিরা ইনি আমাদিগকে দেখা দিবেন।

ইনি প্রার ৭৬ বংসর পূর্কে আর একবার দেখা দিরাছিলেন আর এই বংসর আসিতে-ছেন, স্ভরাং এমন অভিথির আগমনে জনসমাজ একটু বিচলিত হইবেন, সন্দেহ কি! বিশেষতঃ এই জ্যোতিজটির আবিষ্কারের সহিত জ্যোতির্জগতের একটি মহা তথ্যের আবিষ্কার হইরাছে। আইজাক নিউটনের, হালী নামক সহযোগী বন্ধু এই ধ্মকেতুটির গতি বিধি সম্বন্ধীর যাবতীর রহস্তের উদ্যাটন করিয়াছেন বলিয়া তাঁহারই নামাহ্মারে ইহাকে হালীর ধ্মকেতু বলা হয়। ইহার ইতিহাস বর্ণনা করিবার পূর্কে ধ্মকেতু সম্বন্ধে মোটামৃটি করেকটি কথা বলা আবশ্যক।

ধ্মকেতু সকল অত্যস্ত লঘু উপাদানে
নির্মিত এবং স্বছে। ইহার দেহ বছলক্ষ
মাইল ব্যাপী প্রমাণু পুঞ্জে গঠিত হইলেও
উহার ভিতর দিয়া নক্ষত্রাদি দৃষ্টি গোচর
হয়। ইহার ঘনত নিরূপণ করা বড়ই হরহ
ব্যাপারা। উহা এত কম যে উহা ভেদ

করিয়া বাইবার সময় আলোকর্শী আবে কিছ কোন জোভির্বিষ্ট ভাষার কথা গ্রাহ বক্ৰগতি প্ৰাপ্ত হয় না। প্ৰায় 'অধিকাংশ ধ্মকেতুরই শিরোভাগে নক্ষরের মত একটি করিয়া উজ্জ্বল স্থল দৃষ্ট হয়; ইংরেজীতে উহাকে নিউক্লিয়স (নীহারিকা) বলে। সকল ধ্যকেভুর আকার আবার একরূপ নতে, কোনটিকে দেখিতে ঝাঁটার মত, কোনটির আকৃতি বা বাঁকা ভলোগারের মত, কোনটিকে দেখিতে ঠিক ,কমারমত। প্রায় অধিকাংশ ধুমকেতুরই পুছে দৃষ্ট হয়। কোনোকোনো ধুমকেতুর পুচ্ছ আবার বিচ্ছিন্ন হইয়া ছই বা ততোধিক পুচ্ছে পরিণত হয়। নিউক্লিয়াসটি সকল সময়েই সুর্য্যের অভিমুখে থাকে। গতি বশে স্কলের আয়তনের ব্রাস বৃদ্ধি ধুমকেতৃ হইয়া থাকে। পূর্ব্ববর্তী ক্যোতির্ব্বিদ্গণ মনে করিতেন গ্রহগণের গতি ও ভ্রমণ পথের বেরপ স্থিরতা আছে ধুমকেতুর দেরপ নাই। ইহারা একবার দর্শন দিয়া উচ্ছু অল গতিবশে অনম্ভ ব্যোম সমুদ্রের কোথায় চলিয়া যায়. কেছ আনে না। কিন্তু ইহা একণে নিঃসংশরে প্রমাণিত হইয়াছে যে কডকগুলি ধুমকেতু নির্দিষ্ট কক্ষার ভ্রমণ করিতেছে। কেপলারই প্রথমে নির্ণয় করেন যে গ্রহগণ বুতাভাগ পথে সূর্যাকে প্রদক্ষিণ করিতেছে। নিউটন প্রমাণ -করেন মহাকর্ষণ শক্তি বশতই গ্রহগণের এরূপ গতি হইরা থাকে। তিনি ইহাও অনুমান करवन त्व ध्वरक्कू नकन भागातात्वांना वा দীর্ঘাকৃতি বুডাভাস পথে ভ্রমণ করে। তাঁহার সহমোগী হাণী এ বিষয়ে সত্য নির্ণয় করি-ৰাৰ অক্ত উঠিয়া পড়িয়া লাগিলেন। ইহার মছৰংকর পূর্বে সেনেকা নামক একজন পণ্ডিত বৰিবাছিলেন ধূৰকেতুৰও নিৰ্দিষ্ট কক্ষজাতে;

করেন নাই। তবুও সেনেকা দুঢ়ভার সহিত বলিয়াছিলেন, "এমন দিন আসিবে, বখন লোকে বুঝিতে পারিবে বে, ধ্মকৈতুপা নিদিট কক্ষায় ভ্ৰমণ করিয়া নির্দিষ্ট স্থারে পুনরায় যথাস্থানে উপস্থিত হয়।" বাহা হউক স্থানী অধাবদায়ের সহিত এ বিষয়ের অমুদ্ধানে প্রবৃত্ত হইলেন। বহু পরিশ্রম করিয়া দেশে **एर.न यूर्श यूर्श ध्यरक्कू नचरक** रा नकन বিবরণ লিপিবদ্ধ ২ইয়াছে সেগুলি সংগ্রহ বিশেষ নিপুণভাবে এই সকল আলোচনা করিয়া তিনি চবিবশটি ধূমকেতুর ভ্রমণপথ নির্ণয় করিলেন। সৌ ভাগাক্রমে তাঁহার সময়ে ১৬৪২ খুষ্টাব্দে একটি প্রকাণ্ড ধুমকেতু দুষ্ট হইল। হালি ইহারও গতি নিক্রপণ করিলেন। এই সময় তাঁহার মনে একটি প্রশ্ন উদিত হইল, 'এই ধুমকেতু পূর্বে আর কথনো পৃথিবী হইতে দুষ্ট হইয়াছে কি না ?' তিনি তাঁহার সংগৃহীত বিবরণগুলির সমাক আলোচনা ছারা সিদ্ধান্ত করিলেন, ১৫০১ ও ১৮০৭ খুষ্টাব্দের ধৃমকেতুদ্ব ও এই धुमत्क्जूषत्र वक्टे। ইহাদের আকৃতি ও ভ্রমণপথের সাদৃশ্র অহভেব করিয়াই প্রথমে তাঁহার মনে এই ধারণা বন্ধমূল হইয়াছিল। যাহা হউক তিনি স্থির করিলেন, ইহার অমণ-কক দীৰ্ঘাৰত বৃত্তাভাদ কে**তেৰ** ভাষ ^{এবং} সূৰ্য্য ইহার একতম কেন্দ্রে (focus) অব-विछ ; १६ कि १७ द९मात रहेश अकरोत र्शास्त्र अवक्ति कविश्वा आत्म । अमिरक यण्डे ভিনি এ বিষয়ের আলোচনা করিভে লাগিলেন ভতই তাঁহার এই আৰিষ্কৃত তথাটকে সভা বলিয়া বোধ হইতে লাগিল। ভিলি নিভীক-

हिट्ड छथन छविश्रशंगी खेठात कतिरंगन, এই ध्रारक्ष्री >११७ वृष्टीत्म भूनत्रात्र श्हेरवं। किन्न সৌরগ্রহগণের দ্ভিগোচন নিকটবৰ্ত্তী रहेरण खारारणत আকর্ববে উহার বেগের হ্রাস হইবার কথা স্মতরাং ১৭৫৮ श्रहोत्सन भनिवार्ख ১৭৫२ जात्मरे मर्खः-वकः खेशांक रम्था गारेत्। शानीत এह ভবিশ্বধাণী বৈজ্ঞানিকজগতের একটি স্মরণীয় निम। ইহাতে একটি রহস্তের বার উন্মুক্ত হটয়া গেল। জ্যোতির্বিদগণ সবিম্বরে ভনি-त्नन, धुमरक्जूत खमर्गत्र अ अक्टो निर्क्ति निव्नम আছে, আর উহা অভুপদার্থ মাত্র, অমঙ্গল-সূচক কোন দৈতা বা প্রেতায়া নহে। ফালী অবশ্য ব্ৰিয়াছিলেন, কণ্ডসুর মানবজীবনে পুনরায় এই ধুমকেতুটির উদন্ত দেখিবার দৌভাগ্য তাঁহার হইবে না, ভাই তিনি বলিয়া গিয়াছেন "ষদি আমার ভবিষ্যদ্বাণী সফল হয়, তাহা हरेल जाना कति, जानांत्रत ভবিষাদবংশীয়েরা একথা বলিতে কুন্তিত হইবেন না যে, একজন ইংরেজই এই তথাটি নির্ণন্ন করিয়া গিরাছেন।"

ক্রমে এই নির্দারিত সময় নিকটবর্তী হইরা আসিল; হালীর ভবিষাদ্বাণী সকল হর কিনা লানিবার জন্ত বৈজ্ঞানিকগণ উদ্গ্রীব হইরা উঠিলেন। ক্রেইরট্ (Clairut) নামক হবিখ্যাত গণিতজ্ঞ পণ্ডেত উরত্তর প্রণালীতে গণনা আরম্ভ করিলেন, এবং বীজগণিতের সাহায্যে তাহার গণনাফল প্রকৃতিত করিলেন, কিন্তু তবু কিছু কার্য্য বাকি রহিয়া গেল। লালান্দে ও মালাম্ লেপুটে ইহার সমাধানে প্রবৃত্ত হইলেন; ও মাল ধরিয়া অক্লান্ত পরিশ্রম চলিল! একক্লপ আহার নিজা ভ্যাগ করিয়া তই জনে প্রশার নিক্তেক মহিলেন,

भित्रियात मानात्म हित्र कतिराम, मीमेखारहत প্রতিকৃত আকর্ষণে ১০০ দিন ও বৃহস্পতির व्यक्रिंश १३४ मिन सांहे वह ७३४ मिन বিলম্পে ইহার আগমন হইবে, অর্থাৎ পুর্বাবারে ধূমকেতুটি যতদিনে স্থাকে প্রদক্ষিণ করিয়াছে, এবার তদপেকা ৬১৮ দিন বেশি দইবে স্তরাং ১৭৫৯ খুটাব্দের এপ্রিল মালের মধ্য-ভাগে লোকে ইহাকে দেখিতে পাইবে, কারণ এই সমরে জ্যোভিছটি, ভাহার কক্ষের যে স্থানটি হুৰ্য্য হইতে সর্বাপেকা নিকটবর্ত্তী (perihelion) সেই স্থানে আগিবে। কিন্তু এছলে ইহাও উল্লিখিত হইল বে সম্ভবত: শনিগ্রহের কক্ষের পরেও আরো হুই একটি গ্রহ থাকিতে পারে, স্থতরাং সেক্ষেত্রে তাহাদের আকর্ষণফলে ধুমকেতৃটির আবির্ভাবকাল, এই নিনীজ সময়ের একমাস পূর্বেব বা পরে হইতে পারে। বলা বাহল্য, তথনও ইউরেণাস ও নেপচুন গ্রহ আবিষ্কৃত হয় নাই। **म्थानिन**—मार्क मारमन >२ हे जानित्थ वर्षा নিৰ্ণীত সময়ের একমাস পূর্বে। ভবিষাদ্বাণী **अयुगान जकन इहेन। इंडेरब्रारभन्न अक** প্রাপ্ত হইতে অপর প্রাপ্ত পর্যান্ত আননাধ্বনি উখিত হইল ৷ স্থালীয় নাম স্বৰ্ণাক্ষরে লিখিত হইল ! এই আবিজিয়ায় নিউটনের মহাকর্ষণ-শক্তির (universal gravitation) অন্তিম্ব আরো প্রকৃষ্টভাবে সপ্রমাণ হইল এবং অনাবি-মুত গ্রহ্বয়ের আবিদ্বারের দিকেও জ্যোতি-র্কিদগণের মনোযোগ আরুষ্ট হইল ! লোকে বুঝিতে পারিল ধুমকেতুগণের মধ্যে অনেকে গ্রহ ভিন্ন আর কিছুই নহে, স্থাকে একডম কেন্দ্রে রাখিয়া ইহারা স্থদীর্ঘ বৃত্তাভাদ পর্বে (Eliptical path) पुत्रिया आरम ।

देशंत गरत गुनतात २४८२ चंडीरच २६६ নবেশ্বর তারিখে হাণীর ধুমকেতু আবার এবারকার প্রদক্ষিণ সময় वर्णन विद्याद्यित. পূৰ্ববান্ন অপেকা মাত্ৰ ৬০ দিন বাড়িয়াছিল, কারণ বৃহস্পতির আকর্ষণে এবার কেবলমাত্র ১৩৫ मिन विशय इटेवांत्र कथी छिन, किन्छ ইউরেনাস, শনি ও পৃথিবীর অমুকূল আকর্ষণে উহার ৬৬ দিন কমিয়া যায়। ক্যোতির্বিদ্দের গণনামুদারে আগামী ১৯১০ খুষ্টাব্দের ২৪শে মে ভারিখে পুনরার ইহার পেরিহিলিয়নে অর্থাৎ ইহার কক্ষের যে অংশ সর্বাপেকা সূর্য্যের কাছে—সেই অংশে আদিবার কথা, তাই আৰু বৈজ্ঞানিক ৰগৎ উৎক্ষিত ভাবে ইহার আগষন প্রতীকা করিতেছেন। 'পেরিহিলিয়নে' পৌছিলেই ইহার উজ্জ্বতা বেশি দেখা যাইবে বটে, কিন্তু ভাহার করেক मान भूक्त रहेरा हेरा शृथिवी रहेरा पृष्टि-গোচর হইবে। ভারতবর্ষ হইতে ধুমকেতৃটিকে দেখা যাইৰে কিনা এক্লপ বিভৰ্ক ইভিমধোই অনেকের মনে উপস্থিত হইরাছে, আশা করা বার বৈজ্ঞানিকগণ শীঘ্রই এই প্রান্তের মীমাংসা করিতে পারিবেন। 'পেরিছিলিরনে' পৌছি-ৰান্ন পূৰ্বেও পৰে অনেক্দিন পৰ্যান্ত বখন हेहांक तथा वाहरन, उपन मतन हत्र अतम হইতেও উহার দর্শনের বাধা হইবে না।

यूर्ण यूर्ण मानवश्य अहे विभाग त्याम-চরকে প্রত্যক্ষ করিয়াছেন এবং বিশ্বরাবিইচিতে हेरात्र विवत्रण निशिवक कतिया शिवाद्वन কিন্ত ইহার প্রকৃত শ্বরূপ বছশতান্দি অজ্ঞাত ছিল। এই বিপুলকার জীবটির (१) সহিত কত রাষ্ট্রবিপ্লব, কত যুদ্ধবিগ্রহ জড়িত রহি-য়াছে, ইনি যথনই উদিত হইয়াছেন তথনই একটা না একটা অনুৰ্থ ঘটিয়াছে তাই অল্পা-পিও ইহার উদরে লোকে ভাবী অমললের আৰকায় ভীত হইয়া থাকে। ১০৬৬ খুটালে উইলিয়ন यथन नहस्रान रेमळ नहेब्रा है:लख জয় করিয়াছিলেন, তথন এই ধূমকেতু আবিভূতি रहेबाहिन, व्यवन जूकी देशक यथन कनहा िंग्-নোপল অধিকার করিয়াছিল, ভাহার কিছুকাল পরে ১৪৫৬ খুষ্টাব্দেও ইহার একবার উদয় হইয়াছিল, তথন মুসলমানের প্রতাপে সমস্ত ইউরোপ খুষ্টধর্মের বিলোপাশকার ভীতি-বিহবল হইরা পড়িরাছিল। কুসংস্কারাপর লোকের কল্পনা এই ধৃমকেতুরপুচ্ছে কভরণ জনস্ত অন্তের অন্তিত আরোপ করিয়াচিল. গুনিলেও স্বস্তিত হইতে হয়। এই ধৃমকেতুর क्नार्त्रे ट्षिर्ल युक्कम हरेमाहिल धरे বিশ্বাসে, উক্ত ধৃমকেতুর পুছের অহরণ করিয়া মহারাণী ভিক্টোরিরার রাজমুকুটের একটি মণি গঠিত হয়।

প্ৰীকুলদাকুমার সেন রায়।

म्योदनाह्या ।

A Dying Race. By U. N. Mookerji. Published by Mukerjee & Bose, College Square. Calcutta, 1909. Printed by J. N. Bose,

Wilkins Press, College Square Calcutta, Price Annas Four.

হিন্দুলাভি বে ক্ষৰণাই ধাংসের মূবে চলিয়^{টিছ}, এই গ্রন্থানি পাঠ করিলে ভাহার বিশ্ব আভাহ পাওয়া

यात । अ००२ जारणत्र त्मन्त्रभाक्ष्याती बांधनाव दिस्पृत मर्था हिन ३१३ नक ७ मूननवारनत मर्था ३६१ नक । शहत ১৯٠১ সালের দেন্দদে हिन्दूत मःशा इत ১৯৪ लक ७ बूनलगात्नत्र मःशा २२० लकः। जिन বংসরে হিন্দুর সংখ্যা শতকরা ১৭ জন হিসাবে ও मुगलमीरनत সংখ্যা ७७ अन हिमारन वाफिनारक। ১৮৯১ সালে ৰঙ্গদেশের সেন্দ্রস-ক্ষিশনার ও'ডনেল मः (इव विम्यू-यूननयात्वव नःशांव छात्र अरमाव **छ**त्त्र श कत्रिया निषास कदबन, त्य काल हिन्यू এ क्वादबरे लाश পাইবে। আবার হিন্দু যে শুধু সংখ্যাতেই কমিতেছে তাহা নছে; ধনে, মর্যাদায়, শিক্ষার ব্যবসারালিতে অৰ্ধি মুদলমান হিন্দুকে আপনার পশ্চাতে ফেলিভেছে। এই তুলনা হইতে हिन्दूत वर्डमान पूर्वना नकत्न অত্নান করিতে পারিবেন। গ্রন্থকারের মতে উত্তর ७ পृक्षरक्षत्र भतिनम्द हिन्दूगृश किए पृष्टे श्रा আশকার কথা সন্দেহ নাই! তিনি হিন্দুর হুসিত मःवा। मच्दक त्य क्याकृष्टि कांत्रव निर्द्धन क्वियाहन. তাহা লাষ্ট্ৰ চক্ষে সকলেই দেখিতে পাইতেছেন-গেগুলি, জাতীয় **অ**থৈক্য, নীচলাতিগুলির প্রতি অমাত্যিক যুণা, সহাত্ত্তির অভাব, সামাজিক गर्थक्टोनंत, अनःसम, आनमा ७ शर्म अनुनात्रजा, मकीर्न षांडिरकान अञ्जि ! मूननपारनत्र উत्रजित अवान कात्रन, তাঁহারা সমগ্র ভারতে এক-মুসলমানত্বের প্রতিষ্ঠার জ্ঞ ব্যাগ্ৰ, তাঁহাদিপের সামাজিক বন্ধন স্পুঢ়, জাতীয় সহামুভূতিতে ভাঁহাদিশের অদর পূর্ণ ! হিন্দুগৃহে ইহার कि देवनदीका मका हरा। अध्कात बरमन, बनाकित মধ্যে শতকরা ৫৭ অন আতাকে হিন্দু অম্পৃত্ত এমন কি তাহাদের ছায়াম্পর্শ অবধি নিভাস্ত মুণিত মনে করেন। হভাগ্যের এমন প্রকৃষ্ট উদাহরণ সহতে বিশাসযোগ্য रान रहा नै। । अञ्चलात जात अकृष्टि (नाठनीय पृष्टोत्स्वत ₋^{দারা} হিন্দুর সহাস্*ভৃ*তির **অভাব সক্সের** চক্ষের সন্থে ধরিলাছেন। গভ জামালপুর অভ্যাচারে লনেকণ্ডলি হিন্দুনারী মুগলমান হতে অপ্যানিভ ও নিগৃহীতা হইর।ছিলেন, সেই সকল নিরপরাধিনী হতভাগিনীগণকে ভাহাদিগের বানী, পুত্র, ণিতা, লাডা গৃহে ছান দান করেন নাই; অগভ্যা ভাঁহা-

দিগকে গ্রীটান বিশবের আঞার লইতে হইরাছে!
নবালের আকাশে এই বে ছোট ছোট বেঘগুলি
অড় হইতেছে তাহা মহাপ্রসায়ের স্টনা করিতেছে
—সমাজের প্রত্যেক নরনারীর এদিকে বনোবোগ
আক্তর না হইলে আগ্রহকা অসম্ভব হইরা দাঁড়াইবে।
লাট কৌলিলের মেঘারই একবার কাষ্য বস্ত নহে—
তাহারি উপর জাতির সমগ্র শুভ নির্ভর করিতেছে
না! বে ধ্বংসের মূখে নিতান্ত অক্টভাবে পড়াইরা
চলিয়াছি, দে দিকে দৃষ্টিদান স্কাপ্রে কর্ভব্য! বর্ত্তবান
গ্রহখানি এই ছার্দিনে 'জ্ঞানাঞ্জনপলাকার' কার্য্য
করিবে। ইহারি সাহাব্যে সকলে কর্ভব্যনির্দ্ধারণ
কক্ষন। নহিলে ধ্বংস যে অবগ্রহাবী সে বিবরে
সংশ্রের কারণ নাই।

ব্রহ্ম প্রবাদীর পত্র। (ব্রহ্মদেশের সামাজিক, পারিবারিক, ধর্মনৈতিক ও ঐতিহাদিক বুডান্ত-মূলক मन्दर्भ अकानाहाम मानाम अनीह। अकामक, बीठाकृत्व बल्गानाधाय, देखियान् भावनिभिः राष्ट्रम् क्विकां । कांखिक थ्यात मूजिंछ। मूना व्याप्त গ্রন্থানি বছ জাতব্য বিবয়ে लायाकत प्रविवात मिक्ट बाह्य, এवः वाहा प्रत्यन. নিভাল প্রিচিত বা আত্মীয়-বান্ধবের মতই সরলভাবে मकन्तक छाश्वत विवत्री निष्ठ शास्त्रन-छाशास्त्र আড়ম্বর বা বিজ্ঞতার কোন ভাগ থাকে না। একাদশবানি চিত্রে পরিশোভিত এণ্টিক কাগজে পরিছার ছাপা এই গ্রন্থথানি সাধারণের ভৃত্তিসম্পাদনে সমর্থ হইবে বলিরা আমাদিগের ধারণা। তবে, ছ-একট ক্রটি, লেখক সকল কথা আগাগোড়া বেশ শুহাইয়া বলিতে পারেন নাই এবং ভাষার প্রতিও इत्त इत्त चब्द्द्ता धकान शाहेत्राष्ट्र, त्नब्दकत्र ध्वथम উদাস ভাবিরা ইহা মার্জনা করা যাইতে পারে। ভবিষাৎ সংস্করণে ভাষার প্রতি গ্রন্থকারের অধিকভর মনোবোগ धनान वाश्नीत ।

হিন্দু-বিজ্ঞান-স্তা। 'বসুবোর কর্তব্য কি ?' পবিত্র হিন্দুখনাবন। কেন ? তবে শুনুৰ। মূল্য কত্ত ? * • ইত্যাদি। জীবিখনিন্দুখ রার ভরকে বি, এন, রার প্রশীক্ত। কলিকাতা ভারতমিধির ক্ষে ব্যিক্ত ১৯১৫ । অছকার ক্ষমা ক্রিবেন, ভারার উন্দেশ্বের
সহিত সহাতৃত্তি থাকিলেও আমরা তাঁহার বর্ণনা
অবালটিকে আনে এইন করিতে পারিলান না!
বৌধ পরিবারে কাহারো নভানত উপেক্ষণীর নহে—
সকলের সমবেত চেটাই যাথ পরিবারের শীবৃদ্ধির কারণ
ভলভাবে ধ্বংস অবশুভাবী—ছুলতঃ ইহাই গ্রন্থকারের
বক্ষয়! কিন্ত ভাঁহার গ্রন্থ পাঠ করিলে ঠিক বুবা
বার না ইহা বাস, কি প্লেব,কি উপেলেশ,কি আর-কিছু।
আক্ষরণার ও বাজে কথার ক্র-কারা প্তিকাধানি
এখনি পূর্ব কোজের কথাটুকু সংগ্রহ করিয়া লওরা
নিভাত সহল ব্যাপার নহে। ইহাতে আছে ওধু
বক্ষে করাবাত, এবং 'পাবাবি', 'দীনভারিবি', 'হর
হর শকর'—প্রভৃতি বর্ম্বোচ্ছ্নাস। কিন্তু ওই
অর্থহীন আর্থনাবে কল কি ।

विमानात्रश्रम बान्याभाषात् विख्वांनी नावेद्वती, १० কন্টোলা খ্ৰীট, কলিকাতা। কান্তিক প্ৰেসে মুদ্ৰিত ! 'ভারতী' 'বঙ্গবর্শন' প্রভৃতি, नुका जाहे जाना। শত্তিকার প্রাচ্য শিল্প স্থকে গ্রন্থকার কয়েকটি প্রবন্ধ লিবিয়াছিলেন, বর্তমান গ্রন্থে সেইওলি তিনি সরিবিষ্ট ক্রিয়াছেন। ভারত চিত্রকলার বিশেষত কি ও क्षांचात्र,-- वनोत्त चात् धोत्रज्ञात युक्तिजर्क ७ वर्श्व ভাষায় এই গ্ৰন্থানিতে ভাহা বুঝাইতে চেষ্টা করিয়া-CER I গ্রন্থানি কাব্যের স্থার উপভোগ। অবচ हैहार्ड युक्ति-छर्क ও धावारनंत्र कि विशृत नवारवन । চিত্ৰকলার লব্ধতিঠ জীযুক্ত হাভেল-প্রমুখ পাশ্চাভ্য मन्षिवर्ष परमान्त्र विज्ञथाविष्ठ जीकि ও प्रकारामुगारी गान्हां हित्बन कुननात थांहा हित्बन विस्थर**ए**न শ্ৰদ্যোর যুক্তকণ্ঠ হইলেন কেন, ভাহার কারণ না वृतिया, त्म वित्मवर्षात म्याम ना कतिवारे व्यामानित्यत দেশের অসীম প্রতাপশালী সমালোচকবর্গ-বিলাডী এ) ল্বানাকের কল্যাণেই বাঁহাদিগের চিত্রজান লাভ रहेबारक, जाराबा स्वननाज नडाटन चाढुरनब साराहे বিলাই পাশ্চাতা চিত্ৰকে আমোল নিয়া সাধারণের নিকট হইছে সমন ভলীয় বাহৰা লইছে পারেব,কিন্ত ভাহাতে नवाक्षांत्रका बार्च कुत कर्ता स्त्र। तारे शक्तिहीन

উজিওলা কেবলি বে কোডুক হাডের ভাই করে ভাই नटर ; परम्याञ्चामी सम्बद्धान दाक्तित सरदा देशाह-क्वाट्डब्र मकात इष्ट्र। नगालाहरू महाभव्रभाव এই গ্রন্থানি বিশেষ করিয়া পাঠ করিছে অফুরোধ कति। व्यवशिक्षवांत् विनिष्टिष्ट्व, "Imitation यह art बन চর र इरेफ, ভবে পৃথিবীতে কবিগণের দ্বান हत्रदोगांत्र अधिकांत्र कविक,-नजीकांकार्रात हान Gramophone ও নৰ্ভকীগণের আসর কলের পুত-লিকার অধিকার করিত। काश्लिब कृश्यती कविश्व जाराका स्वादांना (छ। जामारम्ब जनकोवसः ভাবে ওনাইরা দেয়৷ বে বসস্তের ভাব আযাদের ৰনে আনিয়া দিতে কবিগণ ছন্দের পর ছন্দ, কথার भव कथा नीविदा करनन, स्वर्तामा छ भनाव कारव तिहा नातिका नव. **ভবে किन ना इत्रवानाक क**विव व्यागन पिरे, क्ल ना डाहाक true poet बनिया डिल করি ? * * আমাদের শিল্প বলে বিদ্যাদাগরের जवाकीर्य व्यवस्था माष्ट्रिय म्हिस क्रिका कि লাভ--এই লও * * * সাগরের ম্বার প্রশান্ত গন্তীর আনল্যোতিতে সমুক্ষণ তাঁহার তেলোবর অমর মূর্তি. বে মুর্ত্তিতে তিনি আমাদের মনে আছেন, সেই মানস মুর্তি।" বৃদ্ধুতি সক্ষে হাভেল সাহেবের উক্তি কি ক্ষরবাহী! " * * they (Indian Sculptors) would not take the hideousness of the starvation as the symbol of their worship; they thought not of the feeble wasted human body but only of the spiritual strength and beauty the Master had gained through his enlightment. They gave him a new spiritualised body broad-shouldered deep-chested golden coloured smooth-skinned supple and little, as a young lion." এ সকল কৰাত্তলা বিজ্ঞ স্থা-লোচকের পক্ষে বিভাৱ তুদ্ধি বিরা উড়াইবার সাম্ঞী मरक, दीकिमक क्रांवियात कथा । अक्रवानि शर्ठ कतिरण শিলের বিভিন্ন আদর্শসমূহত জাচ্যশিলের বিশেবই সম্বাদ বোটামুট আনলাভ বন্ধ, একথা বলিতে পারি।

বিরামক্ষ। একারোদ থানাদ বিনাবিবাদ।
প্রকাশক, প্রপ্রকান চটোপাধার, ২০১, কর্পগুরালিন
ইটি, কলিকাতা। কান্তিক প্রেনে মুদ্রিত। মূল্যা
বারো জানা। "বিরামক্ষ্র", 'কর্মকল', 'নির্বাদিত'
প্রভৃতি পাঁচটি গল্পের সমষ্টি। হোট গল্পের আটটুক্
সর্ব্বে সুরক্ষিত না হইলেও গলগুলি স্পাঠ্য। হাস্ত ও
কর্মপ্রসের নিপুণ অবভারণার এবং ভাষা ও বর্ণনাভ্রনীতে উপভোগ্য। অবসর-বাপনের পক্ষে "বিরামক্ষ্র"
স্থিমনীরসেবিত কুঞ্জের বত মনোরম লাগিবে বলিয়াই আমাদিগের ধারণা। গ্রন্থের হাপা কাগক ও
বাধাইও বেশ মনোজ হইরাছে।

আর্ঘা-নারী। বিতীয় ভাগ। (ঐতিহাসিক)। क्षिकानी अमन मामक्ष अब. अ ध विमक्तिगांत्रश्चन मिज-मङ्ग्रमात्र अभीछ। कलिकांछ। ७१नः कलब श्रीरे, ভট্টাচাৰ্য্য এও সন্সূ হইতে জ্রীনেবেক্সনাথ ভট্টাচাৰ্য্য कर्डक श्रकामिक। ১৩১७। मृता वक होका। বাধাই ১ - মাত্র। গ্রন্থব'নিতে 'দাহির-মহিষী' 'मःयुक्ता' 'कर्मात्ववी', 'नन्दीवाहे' 'दावी खवानी' প্রভৃতি চিক্মণটি ঐতিহাদিক রমণীয় পুণাকাহিনী সমিবিষ্ট অ'দর্শের জন্ম আমাদের ঘাইৰার কোন প্রয়োজনই ছিল না। তবে খরের দিকে কখনো চ:হিয়া দেখিতাম না, ইহাই হু:খ! গ্রন্থর বাই সকল আদর্শকাহিনী-সংগ্রহেরভার গ্রহণ করিয়া সমগ্র দেশের ধন্তবাদার্হ रहेशां हर, त्म विषय मत्मर नाहे। काहिनी-গুলি অসংহাতে অন্তঃপুরিকাবর্গের হভে দেওয়া বার। ভারতের আকাশ-অনিল আজো যাঁহাদিগের অমান য়ৰ:সৌরভে পরিপূর্ণ ভাহারি স্বাসে বক্রমণীর অদ্য় স্নিষ্ধ হইবে, উৎসাহে আনন্দে পূৰ্ণ হইবে! তবে ছ:খের সহিত গ্রন্থের ছ-একটি ক্রটিরও উদ্দেখ করিতে হইতেছে। অধিকাংশ কাহিনীই স্কুলপাঠা ইতিহাসের মত অনাবশ্রক সাল-তারিবে ও দীর্ঘ বজ্তার কণ্টকিত থাকায় গ্রন্থধানিতে সরস্তার অভাব হইরাছে এবং ভাবার প্রতি গ্রন্থকারছরের অনেকস্থলেই ওলাসীক্ত প্রকাশ পাইয়াছে। আশা করি বিতীয় সংক্ষরণে গ্রন্থখানির ভাবা সংক্ষৃত হইবে।

মাধুরী।— শ্রীদেবক্ষার রার চৌধুরী প্রণীত।
১০১৬। কলিকাতা ২৫ নং রাজা নবক্ষের খ্রীট, তৈবজা-স্টিম-মেদিন-যত্রে শ্রীউপেক্রনাথ মণ্ডল ছারা
মুদ্রিত। মূল্য আট আনা। এই ক্লুক্র কাব্যগ্রন্থানি
পাঠ করিয়া আমরা হথী হইয়াছি। কবিতাগুলিয়
কোনটিতেই কইকরানা নাই। করেকটি কবিতার
ভাবের কিঞ্চিৎ অম্পইতা দোব থাকিলেও অধিকাংশ
কবিতার ভাবই বেশ ম্পাই, সুন্দর! ভাষা মুক্তপক্ষ
বিহলের স্থায় লঘু ও তরল গতিতে কাব্যালোকে
উড়িয়া বেড়াইতেছে। ভাষারও কোথাও আড়াই-ভাষ
নাই! নবীন কবির সাধন। সফল ইউক ইংটি
আমাদিগের প্রার্থনা।

জীবন-স্রোত-না আশালতা ? উপস্থাস। শীসুরেন্দ্রনাথ রার এম.এ, বি.এল প্রণীত ও প্রকাশিত। বর্দ্ধমান, রাধানগর। ১৩১৫ সাল। কলিকাতা গুল্ত-প্রেসে বীপ্রহ্লাদচশ্র দাস দারা মুক্তিত। মূল্য এক টাকা। গ্ৰন্থানি পাঠ করিয়া আমরা ভঞ্জিত গ্ৰন্থকার বিশ্ববিদ্যালয়ের হইবাছি। উপাধিতে ভূষিত, অথচ গ্ৰন্থের ভাব ভাষা ক্লচি প্ৰভূতি मक्नरे कमर्ग ! जिस्त काथा कार्या-कातलब मधा একটা সমন্বয় নাই ৷ উপাখ্যান-ভাগের কলনা নিভান্তই श्रष्टिकाडा । अञ्चलानि छल-न्याब क्टेंट्ड निर्वामत्नव বোগ্য! লেখকের 'ভূমিকা'য় বিজ্ঞাপিত 'ব্যুনা' উপক্লাস বদি প্ৰকাশিত না হইয়া থাকে, ভাহা হইলে আমাদিগের স্নির্বন্ধ অমুরোধ, 'জীবন-স্রোতে'র यछ है यनि छै। होत्र 'समूना'त शक्ति इस, छरत स्वन লোকালরে তাহার প্রকাশ না হয়। প্রকাশ করিলে অপর কোন কভি না হউক বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চ निकात थिंड त्य मांधातरात निकास अवका समाहित তাহা অভাস্ত সতা !

শ্রীসভাত্রত শর্মা।

'টাউয়ার'।

ইহা লণ্ডনের সর্বপুরাতন রাজবাটী ও হুৰ্গ। লুওনের নিকটবর্ত্তী অন্য রাজপ্রাসাদ-শ্বলির মত এটিও পুণাতোয়া "টেমদ" নদীর ধারেই অবস্থিত। এটি এত পুরাতন যে অনেকের বিখাদ রোমান্দের আমলেও ইহার কতক অংশ বর্ত্তমান ছিল। নর্মাণরা ইংলও জয় করিলে তাহাদের রাজা "विक्यो উই नियम" এই স্থানে একটি কেলা নির্ম্থাণ করিয়া বিজিত দেশ শাসন করিবার ব্যবস্থা করেন। এবং চারিদিকে একটি চওড়া নালা কাটিয়া তাহা আবার একটি বৃহৎ প্রাচীর বেষ্টনে আবদ্ধ করিয়া ও সেই প্রাচীরের মধ্যে মধ্যে উচ্চ চূড়া তুলিয়া তুর্গরক্ষার বন্দোবস্ত আরও স্থূদৃঢ় করেন।

এখন এই টাউরার একটি পুরাতন দেখিবার স্থান মাত্র—রাজা বা রাজপরিবারের অবস্থিতি স্থান নহে। তবে—রাজ সংসারের যত মহামূল্য অলভার এখন এই স্থানেরই এক অংশে রক্ষিত।

এন্থানের ইভিহাস ক্ষতীব বিচিত্র। একটি ক্ষতি হর্দম্য ক্ষতি কিরপে শত বাধা বিপত্তির মাঝে থাকিয়া ধনে মানে শৌর্য্যেবীর্য্যেও ক্ষমতার পৃথিবীর সর্বাশ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার করিয়াছে এই স্থান হইতে তাহার সবিশেষ বিবরণ পাওয়া যায়। কত যুদ্ধ বিগ্রহ কত নরহত্যাও ক্ষমান্ত্রবিক অত্যাচার এই ভীষণ স্থানে ঘটিয়াছে তাহার ঠিক নাই।

আমি যে দিন প্রথ্ম এই বড় বড় পাথর নির্মিত কেলা বা রাজবাড়িটা প্রথম দেখি সেদিন প্রাতন রাজপ্তানার রাজধানী ভীষণ পর্বতের উপরিস্থিত এইরপই পাথরে গাঁথা "নিবারের" হুগটি আমার মনে পড়ে। এ হুটি অনেকটা একরূপই দেখিতে। এই প্রাতন রাজপ্রাদাদ গুলির তুলনার আঞ্চলালকার সমতলভূমিতে গঠিত বিশাদ উন্থানযুক্ত রাজবাটীগুলি নিতান্ত নিজেজ ও হীন বলিয়া মনে হয়। প্রাচীন রাজবাটী বা গড়গুলি যুক্ক বিগ্রহের রুড় ভাবমাথা হান আর আধুনিক রাজপ্রদাদগুলি যেন মূর্ত্তিমান নাট্যশালা।

জনভাপূৰ্ণ পথ ঠেলিয়া প্ৰথমে টিকিট লইবার স্থানে যাইতে হয়। পরে দেখান হইতে জল্মান ও জনতাপূর্ণ টেমদের ধারের স্থানর বাধা পথ দিয়া একটি ছোট খালের সেতু পার হইয়া এই ছুর্নে প্রবেশ করিতে হয়। অদুরে টাউয়ারের বিখ্যাত সাঁকো (Tower bridge)। ধারদেশে এক ভীমাক্বতি— সশস্ত্র প্রহরী, তাহার মাথার উপর একটি প্ৰকাণ্ড কাল ঝাঁকড়া লোমের তাহাকে যেন ভীষণ কেশর বিশিষ্ট সিংহের মত দেখাইতেছে। ইহাদের ইটার" বা গোধাদক। এমন ভীষণদর্শন পুরুষ আমি অন্ত কোথাও কখনও দেখি নাই।

এই স্থলেই Bell Tower "বেল-টাউয়ার"
নামক একটি উচ্চ কক্ষে রাণী হইবার পূর্বে
এলিজাবেথ অনেক দিন কারাক্ষদ্ধ ছিলেন।
এই টাওয়ারটির পরই ভীষণ "Trotorgate"
"টুটরগেট" বা রাজনতে দণ্ডিত লোকদের
কারাগৃহে বা হত্যা স্থানে বাইবার বিগ।
এই পথ দিয়া অইম হেন্রীর রাজী

"জানাবেলিন্" "দার্ টমাদ্ মুর্" ও "লেডী জেন্ গ্রেও" হত্যা স্থানে গমন করেন। ইহার পর আর একটি ভীষণ ঘটনা স্থল আছে তাহার নাম "Bloody Tower" "রক্তমঞ্চ-প্রাদার"। এই ঘরেই তৃতীয় এডওয়ার্ডের তৃইটি শিশুকে তাঁহালের অভিভাবক ও আপনার কালা "ডিউক প্রস্তর" রাত্রিযোগে লোক লাগাইরা হত্যা করেন। অনেক দিন পরে তাঁহালের অন্ধি এইখানে পাওয়া যায় এবং তাহা "আবির" চ্যাপেলে স্মাধিস্থ হয়।

এই টাওয়ারের নিকটবর্ত্তী আর একটি প্রাদাদের নাম "Wakefield Tower" "ওয়েকফিল্ড টাউরার"। ইহা দকল মণিমাণিক্য প্রভৃতি মূল্যবান আদবাব স্থান। দর্শকেরা কাতার দিয়া রাখিবার দাঁড়াইয়া বিক্ষারিত নয়নে দেই জ্যোতিশ্বয় পুরাতন সম্পদগুলি দেখেন। ঘরের মধ্য স্থলে একটি মণিরত্ব থচিত বেদীর সর্ব্বোচ্চ স্থানে রাজমুকুট থানি রক্ষিত। চারি দিকে অপরাপর गतक्षम। मकन किनिय खिलाई ठातिनिटक আলোক প্রতিফলিত করিতেছে, মুকুটথানি তিন সহস্র ধণ্ড চুনি-থচিত। রাজছত্রটিও এইরূপ কারু কার্য্যে রচিত। রাজ্তরবারি নাজমুক্ট ও রাজ্যে অভিষিক্ত হইবার অন্তান্ত সমস্ত সরঞ্জম স্থানর ভাবে রক্ষিত হইয়া যেন কি এক অপূর্ব দৌন্দর্যা প্রকটিত করিয়াছে। . সকল দৰ্শকেরই পক্ষে ইহা রমণীর স্থান-বিশেষ রমণীগণ ইহা দর্শনে নৈভাস্ত মুগ্ধ হইয়া পড়েন। দর্শকদের মধ্যে বার্থানা লোক তাঁহাদেরই জাতিভুক্ত দেখিলাম।

এই স্থান হইত্তে—White Tower— খেত প্রাসাদের ভিতর প্রবেশ করিতে হয়। এই স্থানটি সর্বাপেকা আভ্যন্তরিক স্থান. ও
সর্বাপেকা পুরাতন। যাইবার পথেই একটি
বৃহদাকার কামান রক্ষিত আছে দেখা যার।
এই কামানটির উপর চড়াইয়াই রাণী ভিক্টোরিয়ার মৃতদেহ সমাধিস্থানে লইয়া যাওয়া
হইয়াছিল। এই টাওয়ারে ইংরাজের অস্ত্রাগার।
এইটিই আমার মতে সর্বাপেকা বিশারজনক ও
দর্শনীর স্থান। ইহার উপরতালায় পুরাকালিক
অস্ত্রশস্ত্র, নীচে তালায় আধুনিক অস্ত্রশস্ত্র ও
ভারতীয় ও অস্তাক্ত দেশের অস্ত্র শস্ত্র রক্ষিত।
তাহাছাড়া ব্রীটিদ্ বারদের স্থতিচিক্ত স্বরূপ
তাহাদের কতক অস্ত্রাদিও অতি স্থব্যবস্থায়
এখানে সজ্জিত আছে।

মধ্যযুগের বর্ষণিরস্তাণধারী ভীষণদর্শন নাইটদের ভীমমূর্ত্তিগুলি অনেক স্থলেই বায়ুগামী
ঘোড়ার উপর রক্ষিত। অতি দীর্ঘাক্তি বল্লম
ও ঢাল হাতে করিয়া তীরবেগে শক্রর দিকে
ধাবিত হইতেছেন এই ভাবে রাধা। তাঁহাদের
এই গঠিত মূর্ত্তি দেখিলেও মনে ভর হয়—
জীবদ্দশার তাহারা কতই না জানি ভীষণ
ছিলেন। তাঁহাদের চওড়া তরবারি গুলি
(Broad sword) অভিশয় প্রশস্ত অভিশয়
ভারি, আর লদা তরবারিগুলি নিতান্ত দীর্য।
আমাদের আজকালকার দিনে এমন লোক
নাই যাঁহারা দেগুলি সহজে তুলিয়া ব্যবহার
করিতে পারেন।

সেই স্থানের আর একটি অংশে নানা সমরকার কামান বলুক ও অসি ক্রেমবিকাশ অনুসারে পরে পরে রক্ষিত। এক অবস্থার পরে আর একটি অবস্থা কেমন করিয়া আসিয়াছে সে স্বগুলি অতি স্থানরভাবে দেখান আছে। সেধানে আর একটি বেশিবার জিনিব বেশিবাস, সেটি ফরাসী
বিপ্লবের দিনে ফরাসীজাভিদের বারা উভাবিত
অভি শীঘ্র নরস্পুচ্ছেরকারী গিলোটন নামক
বন্ধ। এই কলে অভি ক্ষীপ্রগভিতে একথানি
শাণিত অসি পড়িয়া – নিমেবে অজত্র নরহত্যা
করিতে পারে। তাহা ছাড়া যে কোনও বুটীশ্
বীরের যুদ্ধে জাহাজ ভাঙ্গিরা গিয়াছে সেই
জাহাজের বিশিষ্ট টুকরাগুণিও অভি সরত্রে
এথানে রক্ষিত আছে। এমন বীর ভাব এমন
বীরপুলা কোবাও বেধি নাই।

এই স্থান হইতে নামিলেই "খেতপ্রাদাদের"
বিস্তৃত প্রাদেশে পড়া বার। এ স্থানের দৃশ্য
অতি মহান অতি ভীষণ ও অতিশর বিশারকর।
একদিকে পাহাড়ের স্তুপের মত রাশি রাশি
ভাকা কামান জড় করা আছে—এগুলি সব
বৃটিদ্রাতির যুদ্ধ জরের পাওনা,—বিজিত দেশ
ও নিপাতিত শক্র হইতে গৃহীত এবং জয় চিত্র
স্বরূপ অতি আদরে সংরক্ষিত। অপরদিকে
সেই প্রাদিক কারাগার উচ্চ অন্ধরুপ "বক্যাম্প
টাওরার।" এই সংকীর্ণ কারাগৃহেই যত
গণ্য মান্ত করেদীরা রুদ্ধ হইরা থাকিতেন।
কত্ত শোক আজীবন এই অন্ধর্কপ
কাটিইরাছেন।

ইহারই নিকটে এক প্রকাণ্ড প্রাঙ্গণে বধ্যভূমি অবস্থিত। এই স্থানটাতে এখনও
একখানি হাড়কাট দেখাযার। ভাহাতে—
অন্তম হেনরীর বিভীর রাণী "আনাবোলিন্"
লেডী জেন প্রে প্রভৃতি কন্ত রমণীই হত
ইংরাছিলেন। রাণী ভিক্টোরিরা ভাই এই
স্থানটি অতি মূল্যবান পাধর দিরা স্থানররূপে
এখন-বাঁখাইরা দিরাছেন।

উপসংহাত্তে এই অন্কৃপ গার্ঘ-খানার কথা

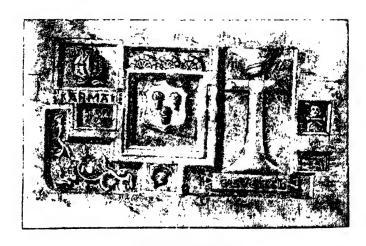
কিছু বিতারিত ভাবে বলি। এই মোটামোটা পাথর নির্মিত গ্রাক্ষহীন কারাগৃহটি সাধারণ করেদীদের জন্ত নহে—যত বিশিষ্ট ব্যক্তিদের আবদ্ধ রাধিবার স্থান। কত রাজা কত রাজপুত্রী, কত বোদ্ধা রাজসচিব, ধর্মবীর ও দেশহিতৈষী লোক এই কারাগৃহে বাস করিয়া গিরাছেন। তাঁহাদের নিদর্শন আর কিছুই নাই কেবল কাহারও কাহারও কারাগৃহের দেওরালে নিজ নামান্ধন বা মনের ভাব প্রকাশক নানার্ক্স ছবি আকা আছে। সেই বিস্মরকর লেখাগুলি ভাবুকের মনকে উদাসীন করিয়া দিয়া স্থদ্র অতীতে লইরা বায়।

এরপ ছোট অন্ধকৃপে একত্তে অনেকে আবদ্ধ থাকিয়া এইরূপ কাজে তাঁহারা মন **जुगारे**बा কাটাইতেন। এথানকার সম্য বেশী ভাগ কয়েদীই ইংলণ্ডের হৃদিনের কর্মবীর। ছদান্তপ্রতাপ রাজা অষ্টম হেনরীর আমলের অনেক নাম দেখা যায়—তাঁর নিজেরই তই মহিষী এইথানে কারাফ্র ছিলেন। তার পরের নামগুলি চারিটি রাণীর— বর্থা"লেডি ক্লেনগ্রে" "মেরী" "রাণী এলিজাবেথ" ७ करेगाएउत "(मत्री कृदेन।" देशांपत लहेगां नानाक्रभ প्रमन्न घटनान एम पद्म विषय इटेट থাকে। পরবর্ত্তী সময়ের ধরাও বিপ্লবের দিনেরও অনেক করেদীর নাম লেখা আছে। আর ধর্ম লইয়া চিরবিগ্রহের তো কণাই ু নাই। ধর্মের প্রধান উদ্দেশ্য একতা ও শান্তি স্থাপন অবচ ধর্মের নামেই সংসারে কত না অত্যাচারই সংঘটিত হইরাছে।

কারাবরগুণি অতিবর ছোট ইহার ^{খুব} উচ্চে ছোট ছোট গবাক আছে, সেধানে ^{মুব}



দুলের ভাষায় বংশ-লিপি



বক্যাম্প টাউয়ারের দেওয়াল

বাড়াইরা একটু আলো ও রাওরা গাওরা যার।

ঘরের নাঝে একটি সোটা থান তাতে

অনেকটা জারগা জুড়িরাছে, কক্ষ হইডে

কক্ষান্তরে যাইবার পথ সক্ষ ও অক্ষকার। কি

শুস্ত কি দেওরাল সকল ছানই ছবি ও

লেথা ভরা, অধিকাংশ লেথাতেই নশ্বর জীবনের

অস্থারী কথ সম্পদ ও ধর্ম্বের ছারীতের
কথাই অভিত। অনেকগুলি লেথাতেই

আমালের দেশের মত উলাসীন ভাব।

যে সকল ছবিগুলি খোনা আছে সেগুলি নানা রকমের রূপক (Alegorical Expression)। এক স্থানে একটি বৃহৎ দেবদারুগাছ বড় বড় ফলে ভরা। আর এক স্থানে একটি জুশ আঁকা। অপর স্থানে একটি রক্ত মাথা হৃদয়ের ছবি। আর এক স্থানে যুদ্ধের অস্ত্র একস্থানে একটা লোক হাট গাড়িয়া বসিরা কাতরে প্রার্থনা করিতেছে। আর এক স্থানে একটা ঘুঘু আঁকা। তার পাশেই একটি শান্তিস্চক ওলিভ গাছের পাতা। তার নিকটেই এক স্থানে এক ভক্তের হাদরের ভিতর একথানি ক্রস্ আঁকা। কিছু দূরে একটি প্রকাণ্ড চালের ভিতর অনেক আঁটা শস্ত পাশে কাঁটা গাছের মুকুট পরা একটি দেহবিচ্ছিন্ন মন্তক। তার হুই পাশে ^{হইটি} মৃত দেহের অস্থিপঞ্জর। কোন ছবিটি যে কি অর্থে লেখা হইরাছিল তা বুঝিয়া . ^{উঠिবার} যো নাই ।

প্রথম ছবি "রূপক ভাষা"। রাণী "জেন গ্রের" স্বহন্তে লেথা নামাত্বও আছে। তাঁর ক্ষীণ শরীরের মন্ত হাতের লেখাও বড় ক্ষীণ। "পুল" নামক এক ব্যক্তির নামের পাশে তাঁহার' নাম জঙ্কিত। ভার তলার লেখা— "He who sows in tears reaps in joy." যে কাঁদিতে কাঁদিতে কাৰ্য্যারম্ভ করে, নে পরিশেষে প্রচুর শহু লাভ করিয়া আনন্দ পার।

অধু জেন গ্ৰে নন--তাঁহার পূর্বপুরুষগৰ ও খণ্ডর দেবরেরা সকলেই ব্লুদিন এই স্থানে আবদ্ধ থাকিয়া—দেয়ালে নানাত্রপ ভাবের কথা লিপিয়াছেন। "ডাড্লে" वः नीव একজন আত্মীয় দেবর দেয়ালের একস্থানে যে একটি স্থন্দর ছবি লিখিয়া গেছেন-"ফুলের ভাষায় বংশ**লিপি।**" তাহা ইহা কারাগ্যহের দ্বিতীয় চিত্র। প্রতিলিপি উদ্ব रुरेग। লেখাটির চারিদিকে নানারপ লভাপাভা বেষ্টিত। একদিকে কাঁটাওয়ালা গোলাপ গাচ এক ভাই "রবার্টে"র নাম করে। অপর দিকে "জীরেনিয়ম" ফুল ও পাতা—এটি লেডী জেনের স্বামী জর্জের নাম স্চক। আর একটি ফুল "হানিদাকল-" দেটি তার আর এক ভাই হেনরীর। চতুর্থটি "একর্ণ" নামক দেবদারু গাছের ফল। এটা আর এক ভারের। এইরূপে সমগ্র পরিবারের লোকের নাম একত্র আবদ্ধ করিয়া সেই বন্দী পুরুষ ছঃসহ জীবন কাটাইয়াছে।

রাণী জেনের জীবন কাহিনী অতিশয়
পুণ্যময়। তিনি এক নিশাপ বিছ্যী রমণী
ছিলেন। অতি অর বরসেই তাঁর বিবাহ হয়।
য়ঠ এডওয়ার্ডের মৃত্যুর পর তাঁর বক্তর তাঁর
অমতে জেল করিয়া তাঁহাকে রাণী করেন।
তিনি এগার দিন মাত্র রাণী হইয়াছিলেন।
পরে তাঁর মামাতভগিনী "মেরী" আদিয়া
তাঁহাদের সমস্ত পরিবারকে বন্দী করিয়া নিজে

রাশী হন। বে বিম তাহাবের বধ করা হর সে বিন তার বানীকে প্রথমে বধ্যভূমিতে দইরা বাওরা হইল—তিনি উপরকার জানালা হইতে সে দৃশ্য স্বচক্ষে দেখিলেন ও কিছুক্ষণ পরে নিজেও হাড় কাটে হত হইলেন।

এইবার আর কতকগুলি লেখার কথা সংক্ষেপে বলিয়া এ প্রবন্ধশেষ করিব।

এক হলে সেণ্টপলের উপদেশগুলি একত্তে লেখা আছে—

"Love the brothers, Fear God, Honor the King."

ভাইদের ভাগ বাসো, ঈশ্বরকে ভন্ন করো, ও রাজাকে মান্ত করো,—এই করটি সকল নীতির মূলে।

আর একটি স্থানে দেখা আছে—
Grief is overcome by patience."
অর্থাৎ "সহিষ্ণুতার হঃখ দূর হয়।

আর একটি স্থানে দেখা—
"Better to be in the house of mourning
than in the house of Banqueting."
ভোজোৎসবের মধ্যে থাকা অপেকা শোক
ভাপের মধ্যে থাকাই শ্রের।

"There is time for every thing a time to be born—a time to die."

জীবনে সকল পরিবর্তনেরই সময় আছে
—ক্ষমিবার ও মরিবার। তার নীচে
লেখা

"Use well the time of prosporety and remember well the hour of misfortune.

সৌভাগ্য সময়ের সম্বাবহার করিও, এবং তথনও ছদ্দিনের কথা মনে রাখিও।

🗃 ইন্দুমাধব মল্লিক।

স্থরেন্দ্রনাথের একটি কম্পনা।

বর্ত্তধানযুগের ভারতবাসীর নিকট শ্রীযুক্ত: সুরেন্দ্রনাথের পরিচর দেওয়া জনাবশুক। যে.সকল মহাপুরুষ একটা সন্মিলিত জাতীই ভাব পূই করিয়া তুলিবার চেটায় ও আমাদের বর্ত্তমান শাসনপছতির সংস্কার সাধনের সংগ্রামে কারমনোবাক্যে নিঃবার্থসেবা ওটু শ্রম করিরাছেন, ওাঁহারা সকলেই আমাদের পূজা। কিন্তু সুরেন্দ্রনাথই এই মহারতসাধকদিগের গুরু—পথপ্রদর্শক। বস্তুতঃ তাঁহাকে ভারতে এই বর্ত্তমান আতীয়তার প্রস্টান্ধর বিল্লেখন বিদ্যান করেল বন্ধান্ধর প্রত্তমান বিল্লিয় শক্তিকে এক করিবার ক্ষপ্তও ইনি যে কিন্তুপ অরাজ চেটাও পরিশ্রম করিরাছেন এবং এবনো করিতেছেন ভাষা সকলেই জানেন। ধনীর ধনগোঁরর চির্লিন থাকে না—মানীর মানসক্রম চির্লিন থাকে না,—ক্ষিত্ত ভারতবাসীর ইতিহাসে, অক্ষর অমংক্রণে চির্নিরাজিত থাকিবে সে, বিব্রে সংশ্রম্যর নাই।

ভারতবাদীকে রাজনৈতিক কর্ম্মে দালিত করিবার কলনা তাঁহার মনে কি করিয়া থাখন উদিত ইইল।
ইইয়াহিল—আসাদের অসুরোধে সে সক্ষমে তিনি যাহ। লিখিয়া পাঠাইয়াছেন নিমে ভাহা প্রকাশিত ইইল।
ইইয়াহিল আমা আমার তাঁহার নিকট সাভিশর কৃতভা।
ভারতী সম্পাদিক্ষী।

১৮৭৭ সালে আছ্রারি মানে মোগল তাহা দেখিয়া সমগ্র ভারতকে স্থিলিত করিবার রাজধানী বিল্লী সুগরে যে বিরাট ধরবার হয়, ক্যুনা আমার মনে প্রথম উদিত হয়। আমি'হিপু



শীযুক্ত সরেন্দ্রনাথ বন্দের্গপাধ্যায়

(श्रिवष्ठ' शक्तिकांत्र विराम अस्वावकाञाक्ररण তথার পিরাছিলাম। অগীর ক্ষুদাস পাল তখন উহার সম্পাদক ছিলেন। আদি মনে মনে বলিলাম-"ভারতের বিভিন্ন প্রদেশের নুপতিগণের পক্ষে যদি একস্থানে এরপে সম-বেত হওয়া সম্ভব হয়, ভাহা হইলে জনসাধা-রণ ও তাহাদের প্রতিনিধিগণের পক্ষেই বা এরপ সন্মিলন অসম্ভব কিলে ?" তাহার পর হইতেই আমি আমার মনোভাবটি কার্য্যে পরিণত করিতে অগ্রসর হইলাম। অচিরে ভারতগ্রমে টিই আমাকে এক অভিন্ব মুযোগ প্রদান করিলেন। ইহাতে আশ্চর্যা হইবার কিছুই নাই, কারণ রাজশক্তির সঙ্কীর্ণ নীতি চিরদিনই প্রজাশক্তির পুষ্টির পক্তে সহায় হইয়া দাঁড়ায়। তদানীস্তন ভারতস্চিব লর্ড সলিববরি ভারতের সিভিল সার্ভিদ পরীকার্থী-গণের বয়সের সীমা ২১ বৎসরের পরিবর্ত্তে ১৯ বংগরে পরিণত করিলেন। আমি তং-ক্ষণাৎ ২১ বৎসরের সীমা পুন:স্থাপিত করিবার জ্য এক আন্দোলন উপস্থিত করিলাম এবং ক্লিকাত৷ হইতে লাহোর, লাহোর হইতে বোম্বাই ও বোম্বাই হইতে মান্ত্ৰাক্ত পৰ্যান্ত নগৱে নগরে সাধারণ সভা আহ্বান করিয়া পুরাতন বিধির আবশ্রক বুঝাইতে লাগিলাম। এই আন্দোলন ১৮৭৭ হইতে :৮৭৯ সাল প্রান্ত প্রায় ছই বংসর সমভাবে চলিল। অানোলন প্রমাণিত कत्रियां मिन অামরা বিভিন্ন প্রদেশের ভারতবাসী---ধর্ম, ভাষা ও সামান্তিক রীতি নীতিতে বিচ্ছিন্ন হই না কেন. কোন রাজনৈতিক অভাবের প্রতিবিধান চেষ্টার একভাবে সমবেড় হ্ইয়া কার্য্য করিতে

সক্ষ। এই আন্দোলনের মধ্যে ভারত-বাদী প্রথম ভাহার একা ভাব ও অন্তর্শক্তির পরিচর লাভ করিল,—এবং সেই ভাব ও শক্তির ফলে দশ বংসরের মধ্যেই দেশে জাতীর মহা-সমিতি **অন্মলা**ভ কিরল। ইহা ভারতব্যাপী এক মহান রাজনৈতিক আদর্শ ও আকাজনার অন্তিত্ব প্রমাণ করিয়া দিল। আমি ভারতের বিভিন্ন প্রদেশের যাবতীর সভাপ্রেই বক্তৃতা ক্রিয়াছিলাম এবং বক্তৃতাকালে ভারতবাদীর মধ্যে একতার আবশুকতার প্রতি শ্রোভবর্গের বিশেষভাবে মনোযোগ আকর্ষণ করিবার চেষ্টারও ত্রুটি করি নাই। আমার তদানীস্তন বক্তাদকৰ পুত্তকাকারে মুদ্রিত হইরাছে। ভারতের প্রধান প্রধান নগর হইতে বর্ড সলিসবরির নিকট সিভিল-সার্ভিসের বয়:-সীমা বৃদ্ধি করিবার জন্ম আবেদন পত্র প্রেরিভ মুসলমান প্রধান আলিগড় নগর হইতে পর্যান্ত একথানি আবেদনপত্র প্রেরিত হইন। আনিগড় মুসনমান কলেজের প্রতি-ষ্ঠাতা সার সায়েদ আমেদ এই নিবেদনপত্তের প্রধান উদ্বোগী ও পৃষ্ঠপোষক ছিলেন। তিনি এই সমিলিত চেষ্টার প্রশংসা করিয়া তাঁহার এক বক্তৃতামধ্যে বলেন--

"ভারতে হিন্দু ও মুসলমান স্থন্দরী ললনার নর্নযুগলের স্থায়, একটির ক্ষতি করিলে অপরটি ক্ষতিগ্রস্ত হইবে।"

এই আদশাস্থপারে কলিকাভার ভারত-সভা' য়ালবার্টহলে ১৮১৩ সালের ডিসেম্বর মাসে এক জাতীয় সমিতির অধিবেশনের আরোজন করেন। ভারতের বিভিন্ন প্রদেশ হইতে নিৰ্মাচিত সভাগণ সমিতিতে সমৰেত হইরা সমগ্র ভারতের সাধারণ স্বার্থ সমুদ্ধে

पारनाहरू स्वित्रीहः पान निवासिक स्वत আঠঃমার্থীর ক্রীৰ মান্তর আহিন্ধী বহাণঃ এই সমিভিতে মভাপতির আসম এহণ করেন। অই স্বিভি হুইতেই জাতীর মহাস্মিভির স্চনা হয়। ১৮৮৪ সালে আমি পুনরার ভারত-আৰুৰে বাহির হই। রাওলপিতি ও মূলতান পৰ্যাত্ত যাইয়া আমি একতার শিক্ষা প্রচার ক্ষিঃ ভাহার পর বৎসর অর্থাৎ ১৮৮৫ সালে

वाधीय महामृत्रिक जांश्वर व्यक्ति स्ट्रेंट अन्ति सम्बद्धाः कामात्र कामात्र के करमार स्वित महर्षि (शरवळनाथ क्रीकूष भागात वह রামক্ষণ ভটাচার্বোর নিক্ট বলিয়াছিলেন -"হ্লেক্সনাথের উৎসাহ বেথিয়া আমার গুল-কেশ আবার ক্রঞ্ছইরা উঠিয়াছে "

विक्रविमाप सम्मानामाम

চিত্রব্যাখ্যা।

নকল গড়--- শ্ৰীযুক্ত নন্দলাল বসু কৰ্ড্ক অন্বিত চিত্রের প্রতিলিপি। শ্রীযুক্ত রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর রচিত বিখাত কবিতা "নকল গড়" এই চিত্তের বর্ণনীয় বিষয়। কবিতাটির অংশ বিশেষ উদ্ভাইইল :--

> द्यान्त्रान् कत्रवना आह চিতোর রাণার পণ--वृं पित्र क्ला गाठित गरत पाक्रव वक्रम । कि थाँठका, शंत्र बरावाब, মাত্ৰবের যা অসাধ্য কাল কেম্বৰ করে সাধ্বে তা আল---करहन क्जिश्रा कर्टन बाका, गांधा ना इव गांवन स्थानांत्र शन ।

মন্ত্রী কহে যুক্তি করি---আৰুকে সারারাতি बाहि मिल्र बूँ मोत्र मञ नकन (कब्रा शिष्ठ।

কুন্ত ছিল রাণার ভূত্য शंत्रावरणीवीत হরিণ মেরে আসছে ফিরে কৰে ধহু ভীর। थवत (शात करक--- (कात नकन वूँ मी किना व्यद हादा वःभी ताळशूरकदत्र क्त्रद्य नक नित्र ? मकन दूंनी बायरवा व्यक्ति बाबावरणी वीत !

২০ কর্মভালিস ট্রাট, কাভিক প্রেনে শীহরিচরণ নারা বারা মুঞ্জিত ও ৪০,৩০চ বালিগঞ্ল রোড ুইট্রে ৰীসভীপচন্দ্ৰ মুৰোপাধ্যার বাদা একাশিত।



সুধি**টিবের মহাপ্রহান** শীস্ত যামিনাগকাশ প্রেপ্রিটে কর্ক অধিতি মূল চিত্র হইতে

ভারতী।

৩৩শ বর্ষ]

কাৰ্ত্তিক ১৩১৬

ি ৭ম সংখ্যা

সেমিরামিদের ভারত-আক্রমণ।

আদিরীর সামাজ্যের কথা বিহুদীদিগের ধর্মাণাত্ত্বে পাওরা থার। মিশর, পারস্ত ও আরব উক্ত সামাজ্যের অস্তর্ভুক্ত ছিল। ভাইগ্রীস্ নদের তীরে নিনেভ নগর উক্ত সামাজ্যের রাজধানী ছিল। গ্রীক ঐতিহাসিক দারোদোরস্ (Diodorus) উক্ত সামাজ্যের প্রবল পরাক্রাস্ত রাণী সেমিরামিসের ভারতা-ক্রমণ সম্বন্ধে নিম্নলিখিত বিবরণ লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন।

আসিরিয়া দেশে পুরাকালে নিনাস নামে

এক রাজা ছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর

রাজী সেমিরামিস তাঁহার শিশুপুত্র নিনিয়াসের

হলে সামাজ্য চালনা করিতেন। সেমিরামিস্
ভারতের শৌর্য্য ও সম্পাদের কথা প্রত হইলেন। তিনি ভানিলেন, পৃথিবীতে ভারতবাসীদিগের মত পরাক্রান্ত জাতি আর নাই,

এবং ভারতবর্ষ পৃথিবীর মধ্যে সর্বাপেক্রা রমণীয়

দেশ। বহুসংখ্যক নদনদী ভারতের বক্ষদেশে

প্রবাহিত হুইয়া উহার উর্ব্যন্তা সম্পাদন

করে। ভারতের জনীতে বৎসরে হুইবার ফসল
উৎপদ্ধ হয়। দেশের অধিবাসীগাল প্রভুত

ধনশালী এবং জীবিকার উপযোগী জব্য তাহা
দের গুছে এত অধিক পরিমাণে স্কিত

বৈ তথার ক্ষমত ক্ষমিত ব্যুব্য না। দেশের জলবায়ু স্বাস্থ্যকর এবং দেশে এত অধিক সংখ্যক হতী যে তানিরা অসম্ভব বলিয়া বোধ হয়। ভারতের হতী আফ্রিকাজাত হতী অপেকা অধিক সাহসী ও বলবান্। ভারতবর্ষে স্বর্ণ, রৌপ্য, লৌহ, পিত্তল ও ম্ল্যবান্ প্রত্তরাদি প্রচুরপরিমাণে পাওরা যায়।

ভারতের প্রতি রাজ্ঞীর বিবেষ বুদ্ধি কারণ ৰটে উৰ্দ্ধ হইবার কোনও নাই—তথাপি উক্তরণ ঐখায্য সম্পদের কথা শুনিয়া রাজীর হাদরে ভারত জর করি-বার একটি প্রবল আকাজ্ঞা উদ্দীপিত হইল। ন্তাব্যে-বেত্তন (Stobro bots) নামধের এক রাজা তথন ভারতবর্ষে রাজত করিতেন। তাঁহার অগণিত দৈৱা ও অসংখ্য সুসজিজ তাহার रखो ছিল। এবং শক্তগণ সম্ভত্ত থাকিত। সর্বাদা স্তরাং ভারত জয় করিতে হইলে প্রভৃত শক্তি সঞ্জের প্রােজন ইহা বুলিয়া সেমিরামিশ সাম্রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত বিভিন্ন বিভাগেৰ প্রতি দেশের সাহসী শাসনক র্ত্তাদিগের वीत्र यूवकशंश्यक रेमञ्जूषक चारम् कत्रिरमन्। প্রত্যেক निविद्देगरथा क লৈক সংগ্ৰহতাৰ :

অর্পিত হইশ। তিন বংসয়ের मर्था সাদ্রাব্যের যাবভীর বিভাগের সৈম্মগণ নৃতন অন্তৰ্শন্ত্ৰে স্থাজিত হইয়া বাক্তিয় দেশে (Bactria) এক নির্দিষ্ট স্থানে মিলিভ হইবে धारे जातम श्रामिक रहेन। মধ্যে জাহাজ নির্মাণপারদর্শী যত লোক ছিল, সমুদ্রতীরবর্তী ফিনিসিয়া, সিরিয়া, সাইপ্রাস প্রভৃতি স্থলে তাহাদিগকে নৌ-বাহিনী নির্মাণের জন্ত প্রেরণ করা হইল। নৌকাসকল এরকম ভাবে নির্মাণ করিতে बना हरेन रान रेव्हामछ जारामिशरक थए **५७ जःटम** धूनिया लहेया व्यनायात्म यथा ইচ্ছা তথার বহন করিতে পারা যায়। সিন্ধনদ ভারতের প্রান্তদেশে অবস্থিত। ভারত জয় করিতে হইলে এই নদ পার हरेए इहेर्द । উক্ত নদের নিকটবর্ত্তী ম্বানে নৌনিশ্বাণোপযোগী কাঠের অভাব থাকার দূর হইতে নৌকা প্রস্তুত করিয়া লওয়া যুক্তিসিদ্ধ বিবেচিত হইয়াছিল।

ভারতবর্ষের সহিত যুদ্ধে হস্তীর নিতান্ত প্রয়োজন, কিন্তু সাম্রাজীর অধিক रखो হন্তীর ছिन ना। অভাব পুরণ কৌণল ক্রিবার জন্ত তিনি 中 ভারতবাদীগণের করিলেন। বিশাস ছিল—ভারতের বাহিরে কোথাও হন্তী নাই। রাজী তিনলক বাঁড় নিহত করিয়া, ভাহাদের চর্ম্মে কৃত্রিম হস্তী নির্ম্মাণ করিতে বহুসংখ্যক লোক নিযুক্ত করিলেন। करत्रकथानि वर्ष 四百 সঙ্গে সেলাই ক্ষিয়া ভন্মধ্যে বড় পুরিয়া হন্তীর অবরব भठेन कड़ा रहेन এवर প্ৰত্যেক কুত্ৰিম रछोत्र একটা • মধ্যে এক

রাধিরা উট্রপৃঠে চাপান হইন। এই সক নরহন্তনির্শ্বিত হন্তী দ্র হইতে দেখিতে বাত হন্তীর মতই হইরাছিল। বথেট সতর্কতা সহিত এই হন্তীনির্শ্বাণ কার্য্য সম্প হইন।

নৌকা ও হন্তী নির্দ্ধাণে হুই বংসর
অতিবাহিত হর'। তৃতীয় বংসরে সংগৃহীত
দৈলদন বাক্তিরাভিমুখে অগ্রসর হইল।
কেহ কেহ বলেন সেমিরামিসের জিশলক
পদাতিক, হুই লক্ষ অখারোহী, এক লক্ষ
রথ এবং এক লক্ষ উট্টারোহী দৈল্ল বুছার্থে
বহির্গত হর। প্রত্যেক উট্টারোহীর হন্তে
চারি হন্ত দীর্ঘ এক একখানি তরবারি ছিল।
হুই সহস্র নৌকাও উট্ট পৃষ্ঠে চালান
হইরাছিল। ক্রত্রিম হন্তী সমুহের ভীষণ আকার
দেখিয়া যাহাতে অখ্বগণ ভীত হইরা পলায়ন
না করে, তজ্জন্ত অখারোহীগণ উহাদের নিকট
শ্রীয় অখ্বগণকে বারংবার লইয়া নিয়া উক্ত
দুশ্রে অভ্যন্ত করিয়া লইয়াছিলেন।

এই ভীষণ যুদ্ধোদ্যোগবার্ত্তা যথন ন্তাব্রো-বিভসের কর্ণগোচর হইল তথন তিনিও দৈল সংগ্রহে প্রবৃত্ত হইলেন। ভারতের নদী তীরস্থ স্থান সমূহে এক প্রকার বেত জন্ম এবং ঐ বেত ধারা এক রকম নৌকা নির্ম্মিত হর, উহা কথনও পচিরা বায় না। এই বেত ধারা ভাব্রোবেতস চারি সহস্র নৌকা নির্ম্মাণ করাইলেন। অন্তর্শন্তও প্রচূর পরিমাণে করাইলেন। অন্তর্শন্তও প্রচূর পরিমাণে নির্মাত হইল। ভাব্রেবেতস ক্ষমং ভারতের সর্মাত্র ক্রমণ করিয়া সেমিরামিসের সৈল্লাল অপেক্ষা বৃহত্তর সৈল্পাল গঠন করিলেন! প্রস্কেই তাঁহার প্রভৃত হত্তী ছিল আরও বহুন্দেই তাঁহার প্রভৃত হত্তী ছিল আরও বহুন্দেশ কংখাক হত্তী-মৃত্ত করিয়া তিনি তাহাদের সংখ্যা

বৃদ্ধি করিলেন। শক্রগণের ভীতি উৎপাদক
হন্তীগুলিকে রণ-সজ্জার সজ্জিত করা হইল।
তাহাদের সংখ্যাধিকা ও যুদ্ধ সজ্জা দেখিরা
বোধ হইরাছিল—সে আক্রমণ প্রতিরোধ করা
মানবক্ষমতার অতীত।

সমস্ত উদ্যোগ সমাধা করিয়া ন্তাব্রোবেতস্ সেমিরামিসের নিকট দৃত প্রেরণ করিলেন— এবং তাহাকে জানাইলেন—তিনি সেমিরা-মিসের কোনও ক্ষতি করেন নাই তথাপি যথন তিনি তাঁহাকে আক্রমণ করিতে আসিতেছেন, তথন যুদ্ধে জয়লাভ করিতে পারিলে তিনি রাজ্ঞীকে কুশ বিদ্ধ করিবেন।" দৃতের মুপে এই কথা শুনিয়া সেমিরামিস হাস্ত করিয়াছিলেন, এবং বলিয়া-ছিলেন "ভারতবর্ষের রাজা আমার কার্য্যের হারাই আমার বীরত্বের পরিচয় পাইবেন।"

সিন্ধনদের ভটে উপস্থিত হইয়া সেমিরা-মিদ্ দেখিলেন শক্তর নৌবাহিনী যুদ্ধোন্তমে তাঁহার অপেকা করিতেছে। তিনি বলিষ্ঠ দৈয় দারা স্বীয় নৌবাহিনী সজ্জিত করিয়া যুদ্ধারম্ভ क्तिर्गत । निक्छें इन रेम्य माहार्यात्र क्य প্রস্তুত হইয়া রহিল। উভয় পক্ষ বীরত্বের পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিল,—অবশেষে দেমিরা-মিদেরই জয় হইল। তিনি শত্রুপক্ষের এক সহস্র নৌকা জলমগ্র করিলেন এবং বছদংখ্যক দৈত ৰন্ধী করিলেন। স্বীয় কুতকার্য্যতায় • ^{উৎফুল হইরা সেমিরামিদ্ সিদ্ধ নদের তীরস্থ} যাবতীয় দ্বীপ ও নগর অধিকার করিয়া এক লক্ষ ভারতীয় সৈপ্ত বন্দী করিলেন। এবং প্রভৃত ব্যবে সিদ্ধনদের উপরে এক নৌ-সেতু নিৰ্মাণ বারা সৈত্ত সহ নদী পার হইরা পলারমান ভারতদৈঞ্জিগের অফুসরণ

করিলেন। কেবলমাত্র বাট্ হাজার সৈপ্ত সেতু
রক্ষার জঞ্চ রাখিরা গেলেন। গেমিরামিদের
সৈপ্তের অগ্রহাগে কৃত্রিম হস্তীগুলি স্থাপিত
দেখিরা ভারতবাসীগণ বিশ্বরে অভিত্ত
হইল। কিন্তু সম্বর্হ সেমিরামিদের প্রভারণা
ধরা পড়িল। অতঃপর স্তাত্রোবেতস্ সেমিরামিদের বিক্তমে পুনরায় অভিযান করিলেন।

रेमग्रमन পরস্পরের অভিমুখীন হইন। স্তাব্রোবেতস্ অখারোহী ও রথারোহীদিগকে সর্ববিথমে এবং তৎপশ্চাতে অনেক দূরে অধিকাংশ পদাতিক দৈত্ত স্থাপন করিলেন। শত্রু পক্ষের কৃত্রিম হস্তীদল সর্বাত্রে তৎপশ্চাতে অনেক দুরে অধিকাংশ সৈঞ স্থাপিত হ'বল। ভারতীয় অশ্বারোহীদিগের অশ্বগণ হস্তিযুদ্ধে অভ্যস্ত ছিল, স্থুতরাং কুত্রিম হস্তী দেখিয়া ভীত হইল না. নির্ভীকভাবে তাহাদের পরস্ত रुरेग। किंद নিকটে আসিয়া তাহাদের অস্বাভাবিক মুর্ত্তি দেখিরা এবং তাহাদের গাত্র নির্গত অনভাস্ত গদ্ধ আদ্রাণ করিয়া ভীত হইয়া পড়িল। তাহারা বিশৃ-ভাশ ভাবে ধাবিত হইয়া পরস্পরের উপরে পতিত হইতে লাগিল এবং অনেক আরোহীকে ভূপতিত করিয়া, শত্রুদৈক্তের মধ্যভাগে ধাবিত হুইল। অখারোহিদিগের পলায়নে স্তাত্রোবেতস্ বিশ্বিত হইলেন। কিছু ভীত না হইয়া স্বীয় পদাতিক দৈত্তদল ও হস্তিদল শত্রুর অভিমুধে চালনা করিলেন। এক বিপ্রলায় হস্তীর উপরে নিজে উপবিষ্ট হইয়া তিনি রাণী সেমিরামিসকে আক্রমণ করিলেন, সেমিরা-মিদ প্ৰীয় ক্লতিম হস্তিদল সমূধে চালান করিবেন। কিন্তু ভারতীয় হস্তির

তাহারা ক্রণমাত্রও ডিষ্ঠিতে পারিল না। তাহাদের অনেকগুলি আরোহীস ভারতীয় इहेन, পদদলিত কতকগুলি रुदेन ; আকাশে নিক্ষিপ্ত **ত**ণ্ডাঘাতে কতকগুলির অকপ্রতাক ছিল বিচ্ছিল হইয়া रेख्छाः विकिथ रहेन। মৃতদেহে যুদ্ধখন সমাজ্য হইল এবং আসিরীয় সৈতা রণে ভঙ্গ निया भनायन कतिन। त्रिमित्रामित्तत मञ्जूथङ হইয়া স্তাবোবেতস্ তাঁহার বাহু ও স্বন্ধদেশ শর-বিদ্ধ করিলেন। শরাঘাতে জর্জারিত হইয়া যুদ্ধকেত্ৰ হইতে পলায়ন করিয়া অধের ক্ষিপ্রগতিতে রক্ষা পাইলেন। তাঁহার হতাবশিষ্ট সৈতা সিন্ধনদের সেতু অভিমুখে ধাবিত হইল। কিছ সকলে এক সঙ্গে ধাবিত হওয়ায় বিষম বিশৃত্খলা উপস্থিত হইল। পরস্পরের উপর পতিত হইয়া ष्यत्न प्रत्ये प्रकृष श्राश रहेन। खर्नाहे সৈত্র যখন সেতুর সমীপে উপনীত হইল তখন ভারতীয় সৈত্র পশ্চাতে সমাগত। পলায়মান সৈক্সগণের অনেকে ভীতি বশত: নদীগর্ভে পতিত হইল। স্বরাবশিষ্ট সৈত্ত নদীপার

হইলে নৌসেতুর বন্ধনরজ্জু সমুদর
কাটিরা দেওয়া হইল। নদী পার হইলা
সেমিরামিদ্ নিরাপদ হইলেন। ভাত্রোবেতদ্
আর তাঁহার অন্সরণ করিলেন না। জ্যোতিযীগণ গণনা করিয়া বলেন যে সেমিরামিসের
অন্সরণ করিলে তাঁহার মঙ্গল হইবে না।
রাজা নিজেও অনেক ছণিমিত্ত দর্শন করিয়াছিলেন। আসিরীয় সৈত্তের এক তৃতীয়াংশ
মাত্র অবশিষ্ট ছিল। তাহা লইয়া সেমিরামিদ্
শীয় রাজ্যে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন।

উপরি-বর্ণিত ঘটনা দায়োদোরাসের প্রস্থে বর্ণিত আছে। সেমিরামিস্ সম্বন্ধীয় অনেক কিংবদন্তী দায়োদোরস্ লিপিবন্ধ করিয়া গিয়াছেন। ভারতাক্রমণ তল্মধ্যে একটি। কিন্তু আধুনিক পশ্চিতগণ বলেন সেমিরামিস্ নামী কোনও রাণী আসিরিয়াতে কখনও রাজত্ব করেন নাই। তাঁহাদের মতে এ সমস্তই মিথা। তবে ঘটনাটী সত্য না হইলেও ভাৎকালিন জগতে ভারতের শৌর্যবীর্যাের কিরূপ থ্যাতি ছিল বর্ণিত গল্প হইতে তাহার যথেষ্ট প্রমাণ পাওয়া যায়।

শ্রীতারকচন্দ্র রায়।

পাক চক্র। সপ্তম দৃশ্য।

চন্দ্রকান্তের প্রবেশ।

চ। প্রাণটা বে বোলআনাই ছত্
করছে! আঃ শশী যে ছদিন থেকে কোথার
গেল—কিছুই বুঝতে পারছিনে;—এমন
কি করতে হর—প্রেয়সি!

(নেপথ্যে—ও চন্দ্রকাস্ত বলি ও চন্দ্রকাস্ত) স্বাবার এই সময় কর্তাবাবু ডাকাডাকি হাঁকাহাঁকি করছেন ! নিস্তন্ধে বে একটু বিরহ আলা ভোগ করব—তারও যো নেই !

কর্তার প্রবেশ।

ক। চক্রকান্ত এ কি ব্যাপার! এ কি কাও!

छ। कि श्रम्बाह्य ?

ক। আমি ত কিছুই তলাতে ^{পার-} ছিনে—তুমি ছাড়া কেউ পারবে না। (ঝুড়ি মাথায় সন্দেশ ওয়ালীর প্রবেশ)

ক। একি! এ যে এথানে পর্যন্ত এদে উপস্থিত! বেরো বলছি বেরো। কি করি বল দেখি চক্রকান্ত—এ বেটি বলছে— আমি সন্দেশ ফরমাস দিরেছি—কিন্ত দিব্যি করে বলছি—আমি এর বিন্দৃবিসর্গ জানিনে।

চ। তাইত !

স-ওয়ালি। আপনকার বড়লোকের কি

রকম কথা বাবু!—আপনিই ত চিঠি দিয়েছ!
অর্জুন ময়য়া কি এমনি—আমাকে চিঠি তদ্ধ
পাঠিয়েছে—এই দেখ—

ক। (চিঠি দেখিরা) তাই ত আমারি
ত নাম সই দেখছি! চক্রকাস্ত ভর পেরোনা
বাহ,—তুমিই কি আমার নামে এ কাজ
করেছ? সত্য করে বল—আমি কিচ্ছু
বলব না।

চ। আমার ঘাড়ে দোব নিলে বদি
দামটা দিতে না হর—ভাহলে আমি রাজি
আছি। কিন্তু ভাতেও যথন আপনি রেহাই
পাবেন না তথন সত্য কথা বলাই ভাল—
আমি এর কিছুই জানিনে।

(খাজাওয়ালীর প্রবেশ)

থা-ওরালী। এক্তে কি রকম আপনার
বাড়ীর লোক সব—খালা গলা মতিচ্র
এনে—এত ডাকাডাকি হাঁকাহাঁকি করছি—
কেউ নিতে আসছে না—কালেই উপরে উঠে
আসতে হোলা।

ক। থাজা গজা মতিচ্র! খা-ওিয়ালি। এজে হাঁ? ক। কেন?

থা-ওয়াল। তা কি করে জানব-

আপনি করমান পাঠিরেছ আপনিই বলতে পার।

ক। আমি ফরমাস পাঠিয়েছি ?
থা-ওয়ালি। ওমা! অস্বীকার যাও
নাকি ? আজকাল দেখছি ধর্ম নেই। ভাগ্যি
ছেলেটা চিঠিখানা সঙ্গে দিয়েছে—এই দেখ!
চিঠি প্রদান।

ক। দেখ চক্স তুমি দেখ— যদি কিছু বুঝতে পার। আমার মনে হচ্ছে আমি কল্প দেখছি।

চ। ঠিক মনে করুন দেখি—আপনি এরকম স্বপ্ন আর কোন দিন দেখেছিলেন কিনা ?—কোন বিশ্বের ইচ্ছা করে—

ক। না বাবা আমি ত মোটেই মনে করতে পারছিনে।

চ। আছো আমি সন্ধান নিচ্ছি।
চক্তকান্তের প্রস্থান ও রসগোলাওয়ালীর
প্রবেশ।

র-ওয়ালি। আজ্ঞে কালালিচরণ রসগোলা পাস্কয়া পাঠিয়ে দিলে এক একটা চেথে দেখতে আজ্ঞে হয়।

ক। চেথে দেধব! নিম্নে যা তোর রসগোলা পান্তমা; আমি দেথছি পাগল হয়ে যাব! ও চক্রকান্ত তুমি আবার কোথার গোলে! কিছু কি সন্ধান করতে পারলে?

(কচুরী নিমকি প্রভৃতি লইরা আর একজনের প্রবেশ)

ক-ওয়ালী। আজ্ঞে থান্তা কচুরী নিমকি সিক্ষেড়া পাঁপড় এই সব এনেছি; আঃ একটু ৰসি।

আন্ত সকলে। বেশ বলেছ—আমরাও বসি
—সেই অবধি দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে পা ধরে গেল?

ক। কৃতার্থ হলুম! তোমরা সকলে মিলে এখানে বসে বসে থাওয়া দাওয়া কর— আমি চলুম—

(সকলে পুনরায় দাঁড়াইয়া উঠিয়া)

১ম। তা বাবে বাও সন্দেশের টাকাটা দিয়ে বাও বাপু, জান ত অর্জুন ময়রা—

২য়। আমার টাকাটা আগে মশার—

তর। এজে আমরা বড় গরীব,— দোহাই—

৪র্থ। টাকা না দিলে আমরা কিছুতেই ছাড়ব না।

क। कि नर्सनाम! निष्कत वाफ़ीएड ति आभारक वन्नी कवला! मन् वनहि— नहेल-नहेल!

(विकि अप्रोगांत अदवन)

ক। এ আবার প্রক্র মান্ত্র ! তুমি কেহে ? কি মিটি এনেছ ? আর অবিশাস করার যো নেই নিশ্চয়ই আমি সব ফরমাস দিয়েছি ।

বা-ওরালা। অজ্ঞে না আমি কোন মিষ্টি আনি নি।

ক। মিটি আননি? ভারী যে আশ্চর্যা মনে হচ্ছে! ভামাধন চটোপাধ্যারের কাছ থেকে কোন মিটায়ের ফরমাস পাওনি?

বা-ওয়ালা। আজে না, আমি-বা-

ক। খুব আশ্চর্যা ! খুব আশ্চর্যা ! স্বাই ফরমাস পেয়েছে কেবল তুমি পাওনি ? এ হতেই পারে না—

বা-ওরালা। তা পেরেছি বই কি—

ক। পেরেছ—আঃ বাঁচালে—তাই বল—

গ-ওরালী। দামটা চুকিরে দাওনা মশার—

বা-ওরালী। আর কত দেরী করবঁ—

ক। আঃ ভদ্রলোকটার সঙ্গে একটু কথা কইতেও দেবে না ?

ক-ওয়ালী। তা কওনা—কথা কইছে কইতে কি আমাদের টাকা দিতে পার না বাবু।

র ওয়াল। আমাদের কি খর ক্রা নেই বাবু—২৪ঘটা আমরা এখানেই কাটাব।

ক। চুপ কর – চুপ কর বলছি। তা তোমাকে কি ফরমাস দিয়েছি—বাবা!

বা-ওয়ালা। আমি বান্ধিকর! বান্ধি আনতে বলে ভূলে গেছেন দেখছি।

মিষ্টান্ন ওয়ালীগণ। ওঁর ঐ রকম মেজাজ! সব আনতে বলেন—আর টাকা দেবার বেলা ভূলে যান,—বুঝলে কথাধানা?

ক। আমি বাজি আনতে বলেছিলুম! স-ওয়ালী। ঐ শোন!

(সকলের হাস্ত)

বা-ওয়ালা। নইলে আনব কেন বলুন ?
ক। তাত ঠিকই! আমি যথন সন্দেশ
আনতে বলেছি, রসগোলা আনতে বলেছি—
কচুরী নিমকি থাজা গজা সব আনতে
বলেছি—তথন নিশ্চয় বাজিও আনতে
বলে থাকব।

বা-ওয়ালা। তবে কোথায় পোড়াব মুশ্যায় ?

ক। কোথার আর পোড়াবে ? আমার
মাথার হলেই ভাল হয়। বলি ও চন্দ্রকান্ত ? "
(চন্দ্রকান্তের ইাপাইতে হাপাইতে প্রবেশ)

চ। মশায়—বড় বড় গাড়ী [°] জুড়ীতে রাস্তা ভরে গেছে—লোকে লোকে গিস গিস করছে। ক। কেন কেন? আমি তাদেরও কি ফরমাস দিয়েছি ?

চ। সবাই বলছেন—আপনার নিমন্ত্রণ চিঠি পেরে তাঁরা বরষাত্রী এসেছেন।

মিষ্টান্নওয়ালীগণ। ঐ শোন গুনলি ?

চ। আপনি কি কোন চিঠিপত্র-

ক। একটু ভাবতে দাও—চিঠি পত্ৰ ত কই কিছুই মনে করতে পারছিনে বাবু!

চ। কিন্তু ওনছি বিনোদ বাবুর সঙ্গে শনীর বিয়ে দেবার জয়ে—

ক। বিনোদের সঙ্গে শনীর বিরে! তাই নাকি গিল্লির মংলব ? কি সর্ব্বনাশ! চন্দ্রকাম্ভ তুমি এগুলোকে বিদার কর—আমি আস্ছি? প্রস্থান।

স-ও। মশাই কে আপুনি—শালাবারু বৃঝি—

চ। দুর হ পাজিনী-

রস-ও। নানা দেখছ না—উনি বোধহয় ভগ্নিপোত হবেন।

घ। मत्ना मात्री—त्वात्रां—

থা-ও। নাগো না—দেধছ না—জামাই বাবু হবেন—

চ। আমি কে সে ধবরে ভোদের দরকার p ক-ও। তা বেই হও আপুনি—আমা-দের সে কথার কাজ কি—টাকাটা আমাদের চুকিরে দিলেই যাই।

চ। তা দিচ্ছি—নীচে চল—উঠনে বদগে—
সকলে। তা যাচছি! সেকথা ত এতক্ষণ
বঙ্গেই হোত। এখন দেখছি—ইনি বাবুর
ধর্মপুত্র যুধিষ্ঠির।

(মিষ্টার ওয়ালীগণের প্রস্থান। বাজিওরালার সম্মুধে আগমন)

वा। व्याभि छ कि नौ ए वाव १

চ। তুমি কে হে? .

বা। আমি বাজি এনেছি-

চ। বান্ধি! তা বাও—বাও—নীচেই বাও—আমি এধনি আসছি!

বাজিওয়ালার প্রস্থান।

চ। শেষকালে আমার বিনোধ বাবুর
সঙ্গে ধন্দ যুদ্ধ চলবে নাকি ? প্রাণ ধরে আমি
শশীকে তাকে দিতে পারব না—এতে বে
বাঁচে যে মরে! ওঃ বেশ বৃদ্ধি যুপিয়েছে!
তেমন বেগতিক দেখি—তথন বাজিগুলোকে
বোমা বলে ধরিয়ে দেব—দেখি শশীর সঙ্গে
বিনোদ ভারার বিয়েটা কি করে হয় ?

প্রস্থান।

(वञ्ना।

শারদ প্রভাত বলে গালুড়ের জলে—
হাসে দৈকত্তে শ্রাম গ্রামণানি
তক্ষণীথিকার তলে;
. কোলে লয়ে মৃত পতি,
ভেলায় ভাগিছে সভী,

ভীরে পুরবাসী ভাসে নরনের জলে
শারদ প্রভাতকালে !
ও কে যায় ও কে যায় !
কদলীর ভেলা করে ইলমল
উত্তলা দ্বিশ বায়,

ভরকের তালে বাজে করভাল জগৎ দেখিবি আর, ও কে যায় ও কে যায় !

হা হা হা রে নববধু !
বাসর শ্রনে শ্রেম বন্ধন
কাটি গেছে প্রাণবিধু !
গেছে আলো হাসি গেছে উৎসৰ
গেছে জগডের মধু,
হা হা হা রে নববধু !

ওগো সতি ওগো সতি;

হাড় ও প্রস্তাস পাগলের আন

ওগো মিধ্যা ব্রত্বতী।

মৃত্যু অকরুণ নির্মম দারুণ।

কেমনে জীয়াবে পতি!

ওগো সতি ওগো সতি!

অরি সুকুমারী লভা !

হের নদী খোর এ কি যাত্রা ভোর

অক্লেতে যাবি কোথা ?

মকর কুন্তীরে গরসিবে যে রে
রাধ্ ও দারণ কথা—

অরি সুকুমারী লভা !

শোভন সীমন্ত তলে

গত রজনীর আঁকো সিন্দুর

তক ভারা সম অলে,

কনক প্রভাতে শত আভরণ

থলমলে চেলীডলে,

মণিমর অঞ্লে !

'শরি গোঁ ভগিনী মোর !

কাল যে তুহারে সাঞ্চারে দিরেছি
বাঁধি মাণিকের ডোর'

থেরে সপ্ত ভাই আসি নদী ভীরে
কাঁদে করি মহা রোর ;— ।

'মরি গোঁ ভগিনী মোর !'

'চল ফিরে খাই ঘরে—
আহা কে পাবাণ কনক পুতলী
ভাসারে দিরাছে নীরে ৷
কাঁদিছে জননী ভিভারে ধরণী
চল বোন্ চল ফিরে,
বধিবি ভিজননীরে ?'

নুড়িয়া বুগল পাৰি,—
ভাসি আঁথিনীরে বেছলা সবারে
কহে বাধা নাহি মানি;
"জীবনে মরণে জীর স্বামী গতি
আর কিছু নাহি জানি"
মুড়িয়া সুগল পাৰি!

ভেসে বার ভেলা জলে,
পুরবাসী যত সজল আঁথিতে
দাঁড়ারে গালুড় তলে,
নমিছে কেহ বা কেহ জল লয়ে
অকে ও শিরে ঢালে,
"সতী গেছে এই জলে।"

যার দিন যায় রাত,
বুকে মৃত পতি ধ্যানরতা সতী
দেবে করে প্রণিপাত;
"কায় মনে যদি ভালবেসে থাকি
ভাবার পাইব মাধ"
ভাবে সভী দিন রাত।

গেল পক্ষ গেল মাস !
অনাবৃত শিরে লয়ে রবিতাপ্
সহে বালা উপবাস,
বরবার জল ঝরি অবিরল
বিগলিল পট্টবাস;
চলে বায় বর্ব মাস !

করাল তামসী নিশি; পরজে পগনে অশনি সম্বনে চম্কিরা দশদিশি, করি বহা রোর বাবে বারু বোর বিব ভূবন আসি : ভয়াল ভারসী নিশি।

তিমিরে ভূবন ভরা;
নাহি উর্দ্ধ অধঃ দিখিদিক-বোধ।
ছ্যুলোক ভূলোক বেরা—
বক্সায়ির শিখা দর্প জিজা দম
লেহন করিছে ধরা;
তিমিরে ভূবন ভরা!

কাঁপে সভী ধর ধর ;
উত্তাল তরকে ধরি পড়ে ভেলা
সহেনাকো আর ভর !
ইষ্ট দেবভারে মনে মনে ক্ষরে
নেত্রে নীর কর কর !
কাঁপে সভী ধর ধর !

সহসা ভিৰির টুটি
নক্ষন বন ফুল কুত্বৰ
নয়নে উঠিল ফুটি !

প্রিয় সন্তাবে কিয়র বাকা হাসি হাসি পড়ে কুটি, সহসা তিমির টুটি!

"হা রে অবোধিনী বালা,

মৃতের কলালে লয়ে হেন কালে
কোথা যাস্ বোয়ে ডেলা ?
আর হেথা আর নন্দনের বার
করিবি প্রবোদ লীলা ;

হারে অবোধিনি বালা।"

কৃতকে কিরারে মূধ সভী ভাবে চিতে "শুধু এ ক্লগতে ব্যথিতের তবে মুধ, পতিত লতারে পারে দলিবারে সকলের বাড়ে বুক?! লাজে অপখানে মুক!

যুচিল নক্ষন বন ;
সহসা প্রবল হিমানী সম্পাতে
ভরি গেল ত্রিভ্বন,
নিদারণ শীতে অঙ্গে হানে স্চী
ছর্কিসহ সে বেদন,—
যুচিল নক্ষন বন !

হেরে সভী নদী তীরে
বিচিত্র হর্ম্মের ধনীর কুমার
রতন পালক পরে,
হৈরি বেছলারে মোহে অভিভূত
ত্রাদে ধার ধরিবারে—
নদীর নিকট তীরে !

একা নিরপার নারী ।
ক্রদয়ের তলে আবরি করাল
ভরে কাঁপে ধরধরি ।
"রাধ অবলারে বিপদ পাধারে
দীননাথ ভয়হারি !"
ভাকে অসহায়া নারী ।

মিলাল সে মান্নাপুরী;
পূর্বদিক-পথে কিরণ বক্সা উথলিল বিশ্ব ভরি !
অপগত ত্রাস সঞ্চারিত আশ
পতিরে হলনে ধরি,
হেরে সতী চাহি,— দেববালাগণ
দাঁড়ায়ে তাহারে খিরি.
অধিরে ক্সা ভরি !

बीषात्मापिनी शाव।

বীজগণিতের প্রাচীন ইতিহাস।

বর্ত্তমান সময়ে বীজগণিতের ইতিহাস
চর্চ্চা করিলে দেখা যার বীজগণিতকে ভারতের
প্রাচীন সম্পদ বলিরা দাবী করিবার উপযুক্ত
প্রমাণের বড়ই অভাব। ইহার একমাত্র
কারণ—ভারতে বীজগণিতের চর্চ্চা একবারে
লয় পাইয়া গিরাছে। বেদ, বেদান্ত, জ্যোতিষ,
সাহিত্য, দর্শন, কাব্য প্রভৃতির স্থায় যদি
বীজগণিতও অর্থকরী বিস্থা হইত, তবে অবশ্রই
আমরা ভারতীর চতুম্পাঠিগুলিতে তাহার
আলোচনার আশা করিতে পারিতাম। তাহা
হইলে কথনই উহা এত অবহেলিত হইয়া এই
দরিদ্ধে দেশ হইতে নির্বাসিত হইত না।

বর্ত্তমান সময়ে গুরোপেই বীজগণিতের (Algebra) প্রভৃত আদর ও উরতি। সে উরতির মূল কোণায় ? কোন দেশ বা কোন জাতি ইহার প্রথম আবিজারক ও পথ প্রদর্শক ?

মুসলমান, গ্রীক্, ও হিন্দু এই তিন জাতি এই প্রশ্নের সমস্বরে উদ্ভর করিতেছেন—
"বীজগণিত আমাদের উদ্ভাবিত শাস্ত।"
বর্ত্তমান প্রবদ্ধে আমরা এই তিন জাতির দাবীর প্রাচীন ইতিহাস আলোচনার

মুসলমানেরা বলেন—

"খ্রীতীর ৮ব শভাকীর মধ্যভাগে থলিকা অলমামুনের রাজত্ব সমরে থোরাসন প্রদেশত মহম্মদ বেন্ মুশা সর্বাঞ্জ বীজগণিত প্রকাশ করেন: মুশার পর দশন্ শতাকীর পারতে মহন্দ্ আৰ্ল ওরাফ বীজগণিত প্রচারিত করেন। তথন বুরোপের কুরাণি গণিতের বীজ অকুরিত হয় নাই।"

য়ুরোপীর পণ্ডিতগণ মুসলমান ঐতিহাসিকের
উক্তি অধীকার্য করিতেছেন না। পরস্ক
মুসলমানগণ বীজগণিত রক্ষা করিরাছেন
বলিয়া য়ুরোপীর পণ্ডিতগণ মুসলমানদিগের
নিকট প্রভুত পরিমাণে ক্বভজ্ঞতা শীকার
করিতেছেন। কিন্ত মুসলমানেরা ইহাকে
রক্ষা করিয়াও যে বছকাল ধরিয়া ইহার
কোন উয়তি করিতে পারেন নাই তাহা
মুক্তকণ্ঠে ঘোষণা করিতেও তাঁহারা কুঞ্জিত
নহেন।

ষিতীয় পক্ষ গ্রীকদিগের মন্ত এইরূপ:--"গ্রীষ্টায় চতুর্থ শতাব্দীতে গ্রীকদেশে ভায়োকেন্টাসের আবিৰ্ভাব। ইনিই (Diophantus) ৰীজগণিতের আবিকর্তা। তাঁহার রচিত বীজগণিত (Arithmaticorum Lebrisex) 🖦 劉朝天 লিখিত হয়। পঞ্চন শতালীতে গ্রীকের সুপ্রসিদ্ধা বিদ্যী महिला Hipatia छोहात हीका धाकांन करतन। তার পর গ্রীকদের ভাগ্যের নানারূপ পরিবর্তন ঘটে। ক্ষরীতিনোপল ভুক্রি হত্তগত হর ও এীক ভূমি ब्राह्मेविद्यात উৎসন্ন इरेबा यात्र। এই विश्वत সময়ে भूजनगारनता औरमत अस्मक तर्मत अधिकाती हन। Diophantus Euclid, Apollonius অভৃতি বহ भनीविशालत जमूना भाष्ट्रिलि जमूह धरे जनमात मुगलमानिरिशन त्रवृष्टाशास्त्रत मन्त्रम वृद्धि करत। ক্ৰমে যুসলবানেরা আর্বী ভাষার ভাহাদের অসুবাদ

[•] Colebrook's Essays, Asiatic Researches Vol. XII, Elphenstone's History of India, Amirali's History of Serasoh, Hotton's Dictionary, Encyclopædia Britanica. Calcutta Review &c. &c.

প্রচার করিরা নিক্ষের গৌরব ও সম্পাদের পরিচর প্রদান করিতে থাকেন।" ইত্যাদি (১)

অতঃপর তৃতীর পক্ষ;—

বর্ত্তমান সমরে হিন্দুদিপের একমাত্র
বীজগণিত গ্রন্থ যাহা পাওরা বার, তাহা
ভাত্তরাচার্ব্যের জ্যোতিষ শাস্ত্র সংগ্রহের অংশ।
পণ্ডিতচ্ডামণি ভাত্তরাচার্ব্যের, স্থপ্রসিদ্ধ গ্রন্থ
সিদ্ধান্তশিরোমণি। ইহার পূর্ব্বাভাস বীজগণিত
নামে পরিচিত। (২) এই বীজগণিতের সংগ্রহ
সম্বন্ধে ভাত্তরাচার্ব্য লিখিয়াছেন:—
"বন্ধান্তর শ্রীশ্বর প্রমান্ত বীজানি মুলান্তিবিজ্ঞানি।

"ব্ৰহ্মাহ্বর শ্ৰীধর পদ্মনাভ বীজানি যত্মাদভিবিস্তৃতানি। জাদায় তৎসারমকারি নৃনং সদ্যুক্তিযুক্তং

नव्भिराष्ट्रेष्ट ।"

অর্থাৎ ব্রহ্মা, জ্রীধর ও পল্মনাভ নামক বীজগণিত প্রণেতাদিগের গ্রন্থ বিস্তৃত বিধার শিব্যদিগের পরিতৃত্তির জক্ত আমি এই সকল গ্রন্থ হইতে সারসংগ্রন্থ করিয়া ফুভিযুক্ত ভাবে এই সংক্ষিপ্ত বীজগণিত প্রস্তুত করিলাব।

উপরিউক্ত শ্লোক হইতে অবগত হওরা

যার বে তৎকালে পণ্ডিতদিগের চতৃপাঠিতে

ব্যাকরণ ও অলম্বার শাস্ত্রাদির ন্যার

বীজগণিত শাস্ত্রেবও অধ্যাপনা হইত।

এবং সেই জক্ত অধ্যাপকদিগকে টীকা সহ

সহল এবং সংক্ষেপ করিয়া ঐ সকল গ্রন্থাদি

সংগ্রহ করিতে হইত। ভাস্তরাচার্যাও সীয়

শিষাদিগের জক্তই এরূপ সংক্ষিপ্ত বীজগণিত

রচনা করিয়াছিলেন।

ইহা হইতে আরও অবগত হওরা বার বে বন্ধা, প্রীধর, পদ্মনাভ নামক তিন ব্যক্তিরও তিনধানা বীজগণিত তৎকালে প্রচারিত ছিল।

ভাস্বরাচার্য্য মহারাষ্ট্রীর পঞ্চিত। তিনি

১১১৪ খ্রীষ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করিরাছিলেন।

স্থতরাং তাহার সংগ্রহ অবলম্বনে দেখা বাইতেছে যে খ্রীষ্টির দাদশ শতাকীর পূর্বেও
ভারতে বীজগণিতকারের অভাব ভিলু না।

উক্ত শ্রীধর, পদ্মনাভ, ও ব্রন্ধা বাতীত শ্রীপতি, লল্ল, ব্রন্ধগুপ্ত ও আর্যাভট্ট প্রভৃতি পণ্ডিতগণও এক এক ধানা বীজগণিত রচনা করিয়াছিলেন বলিয়া শুনা যায়। কিন্তু বর্ত্তমান সময়ে এই সকল গ্রন্থের একবারেই অভাব।

বছদিন প্রাচ্যভূমিতে থাকিয়া মি: ছেভিদ্
(Devis) হিন্দুগণিত ও জ্যোতিব সম্বন্ধে
অনেক আলোচনা করেন। তিনি ব্রশ্বগুপ্তের
বীর্বগণিত গ্রন্থের আলোচনার প্রস্থকারকে
সপ্তম শতাকীর লোক বলিয়া অন্থমান করেন।
হাণ্টার সাহেবও ব্রশ্বগুপ্তের আবির্তাব ৬২৮
খ্রিষ্টাব্দে নির্দেশ করিয়াছেন। প্রাতম্ববেত্তা
মপণ্ডিত কোলক্রক্ বহু গবেষণার পর
সিদ্ধান্ত করিয়াছেন বে আরবীরেরা বীজগণিত শাস্তের সহিত পরিচিত হইবাব পূর্বের
ব্রশ্বগুপ্ত হইয়াছিলেন। কিছ্
ব্রশ্বগুপ্ত বে সর্বাপেকা প্রাচীন বীজ্ঞগণিতকার তাহাও বলা যাইতে পারে না। কেন
না আর্যাভট্টের প্রন্থ আর্যাভট্টীয় তাহা অপেকাও বহু প্রাচীন। আর্যাভট্টের আর্যাভট্টীয়

⁽১) খ্ৰস্ত সকলেই অৰগত আছেন বে ইউক্লিডের ও এপলনিরনের গ্রন্থ সমূহ আরবী ভাৰাতেই স্বাধ্যাধ্যা বিচারিত হইয়াভিল।

⁽२°) পূর্বভাবের প্রথম অংশ "নীলাবভী" ইহা পাটাগণিত বা ব্যক্তগণিত, দ্বিভীয় অংশু বীজগণিত বা অব্যক্তগণিত।

धक्रशनि क्यांकिर श्रष्ट । यह श्राप्ट वीक्रांनिक আছে। আর্যাভটের এই বীজগণিতের অধ্যার ভাষরাচার্য্যের শিষ্য গণেশ উদ্ধার করিয়া-ছিলেন। স্থপণ্ডিত ভাওদাজী বহু গবেষণার পর দেখাইয়াছেন যে আর্যাভট্ট ৩৯৮ শকাবে क्या श्रं क विश्वाहित्यन। এই আর্যাভটের পূর্বে কোন হিন্দু বীজগণিতকারের নাম ব্দৰগত হওয়া যায় না। লল্ল. পদ্মনাভ, শীপতি, শীধর প্রভৃতি যে সকল বীজগণিত-

কারের নাম অবগত হওয়া গিয়াছে উছিল। সকলে আর্যান্ডট্রের পরবর্তী লোক। (১) आंग्रज्ञा क्रांच्य मुननमान, बीक ७ हिन्तु- " দিগের বীজগণিতের প্রাচীন ইভিহাস ছুল ভাবে আলোচনা করিলাম। আলোচনায় যতদুর প্রত্যক্ষ প্রমাণ অবগত যায়, ভাহাতে গ্রীক পণিতবেতা ভায়োফেণ্টাসকেই সর্বাপেকা প্রাচীন বলিয়া গ্রহণ করা যাইতে পারে। কিন্তু যুরোপীর

"লল্লের তন্ত্রের নাম ধীবৃদ্ধিদ। এই গ্রন্থে বীঞ্চপণিত দেখিতে পাই মা। তাঁথার একখানা পাটীগণিত ছিল। ভাষা ভাষরের উরেবে অফুমান করা বার। অভাগি তাহা অভাত। প্রথমে লরকে বৃদ্ধ আর্যাভট্টের প্রভাক শিব্য মনে করিয়াছিলাম, পরে দীক্ষিতের (বোগেশবাবু ৮ শক্ষরবালকৃষ্ণ দীক্ষিতের কথা লিখিয়াছেন) হেতু দেখিয়া ভাঁহাকে আয় ৫৬০ শকে আনিতে হইয়াছে।

পল্লনাভ ও মধরের বীজগণিত পাওরা যায় নাই। ইহাদের বিষয় প্রায় কিছুই জানা নাই। কোল্ফক সাহেব এখারের পণিত্যার নামক এক অঙ্ক পুত্তক ও ক্ষেত্রগণিত পাইয়াছিলেন। বিবেদী সহাশয় (মহাসংহাপাধার স্থাকর বিবেদী) বছকটে তাঁহার ত্রিশতিকা নামক এক পাটাগণিত পাইয়াছেন। ইহাতে বীলগণিত নাই। **बहै श्रीधादात कथारे छात्रंत উद्भाध कतिहा**(हन कि ना 'छारांध निःमत्मार वला कठिन। विद्यानी मान करवन হয়ত এই শ্রীধর নগরকন্দলীর রচয়িতা, তাহা হইলে তিনি ১১৩ শকে ছিলেন। নগরকন্দলীকর্তা ভট্ট শ্রীধর ও জীপ্তর ভট্টাচার্য্য দক্ষিণ রাঢ়ে ভূরিস্টি (বর্তমান ভূবসুট) গ্রামের বাঙ্গালী। কিন্ত দীক্ষিত, বহাবীর নামক জৈম ধর্মাবলতী এক গণিভবেস্তার সারসংগ্রহ নামক ব্যক্তগণিত দেখিয়াছেন। সেই সারসংগ্রহে আধিরাচার্য দাঘক গ্রন্থকারের গ্রন্থের উল্লেখ আছে। সহাবীর সম্ভবতঃ १৭৫ শকে ছিলেন। এই হেতু দীক্ষিত জীগরকে ৭৭৫ খকের পূর্বের লোক মনে করেন। বোধ হয় ইহাই ঠিক।

কোলক্রক সাহেব বলেন-জীধরের পূর্বে পদ্মনাভ ছিলেন। এলভ দীক্ষিত মনে করেন পদ্মনাভ ৭০০ শকের পূর্বের লোক। বিবেদী জী পল্ননাভ মিল নামে এক ব্যক্তির ব্যবহারপ্রদীপ নামক সংহিতা বছর্তরপ গ্রন্থ পাইয়াছেন। কিন্তু তাহার অন্তভাগ পান নাই। কাজেই গ্রন্থকারের সময় অজ্ঞাত রহিয়াছে এবং সময় জ্ঞান বিনা ইনি ভাক্ষরোক্ত পল্লনাভ কি না ভাহাও বলা বাইতে পারে না। কিন্তু পল্লনাভ ক্যোতিবী["] किलान बनिया छोहार नावहार अमीरन जान। यात्र । वावहात अमीरन स्थानककुछ ताजवाईरा वहन जारह। আছাত্রৰ এই পদ্মনাভ ভোজরাজের পূর্বের অর্থাৎ ১৬৪ শকের পূর্বের লোক বলিরা বোধ হর।

্ৰীণ্ডি কৃত পাটাগণিত, বীজগণিত ও সিদ্ধান্তশেশ্য নামক জ্যোতিয় সিদ্ধান্ত ছিল। কিছ ^{(ক্ষিটা}ই পাওয়া বার বাই। বাহা পাওয়া গিরাছে তাহা অন্ত প্রকার গ্রন্থ—বধা রম্মানা, আতক্পছতি, সুমুর্ভরত্মাবনী, রতুনার। এতন্ ভিত্র বিবেদালী দৈববলে কশিতে ধীকোঞ্চিনংজ্ঞ নামাকরণ পাইয়াছেন ভাষাতে বটনাকাল aba मक शांक्या यात्र । अखबर बरे नमरत्र श्रीशक्ति विराम ।"

⁽১) এই প্রবন্ধ সংকলনে কটক রাভেল। কলেজের অধ্যাপক শ্রদ্ধান্দদ শ্রীমুক্ত যোগেশচন্দ্র রাম্ন এম, এ মহাশরের সহিত আমার বে পত্র ব্যবহার হইয়াছিল তাহা হইতে লল, প্রনাত, এপতি, এখর সম্ভায় অংশ এখানে সবত্বে উদ্ধৃত করিলাম। যোগেশ বাবু লিখিয়াছেন-

নিরপেক ঐতিহাসিকদের মত অন্তর্মণ। তাঁহারা ভারতবর্ষকেই বীজগণিতের আদিভূমি "বলিয়া মনে করেন। আমরা বীজগণিতের ক্রম বিকাশের সহিত সে আলোচনায় উপনীত হুইতে চেষ্টা করিব।

আমরা ইতিপূর্ব্বে মুসলমান ঐতিহাসিকের মত উদ্ধৃত করিয়াছি। তাঁহাদের মতে বেন মুসাই বীজগণিতের প্রথম প্রবর্তক। এদিকে মুপণ্ডিত Cowell সাহেব লিখিয়াছেন-৭৭৩ খ্রীষ্টাব্দে খলিফা মামুনের রাজত্বকালে আরবীয়গণকর্ত্তক সর্ব্ধপ্রথমে ভারতীয় বীজ-গণিত গ্রন্থ আরবী ভাষায় অমুবাদিত হয়। আরবীরেরা ভারতীয় কোন গ্রন্থকারের কি গ্রন্থ অমুবাদ করিয়াছিলেন, কাউয়েল্ সাহেব णांश निटर्फन करत्रन नारे। याशाहे इडेक, সেই সময়ে বা তৎপূর্ক শতাকীতে পদ্মনাভ, শল, ব্রহ্মগুপ্ত, আর্যাভট্ট প্রভৃতি ব**হ** ভারতীয় বীজগণিতকার আবিভূতি হইয়াছিলেন। ইহার ছই শতাকী পরে নির্বাসিত অলবেরুণীও একখানা সংস্কৃত বীজগণিত আরবী ভাষার অমুবাদ কবিয়াছিলেন। ঠিক এই সময়ে ডায়োফেন্টাসের বীক্গণিতও তাহাদের क्षांनरनत्व मभूक्षांमिक इहेम्रा छेर्छ। এवः श्रातृन ওয়াফা ভাহার সর্বাক্ষরদর একখানা অহবাদ প্রচার করেন। আবুল ওয়াফার धरे श्रंहरक मूननमानगन অমুবাদ গ্রন্থ • বলিয়া অস্বীকার করেন। কিছ আৰ্মানী শণ্ডিত গ্রীপরি (ইনি **हेश्टब्र**की Abul Pharagius বলিয়া পরিচিত) বছ ^{গবেষণার} পর ইহা ডায়োফেণ্টাসের অমুবার ংশিয়া প্রচার করিয়া গিরাছেন। স্বতরাং আরবীরেরা বে হিন্দু ও গ্রীকগণ হইতেই এই সম্পদ লাভ করিয়াছিলেন স্থনিশ্চিত।

বে সময়ে আরবে হিন্দু ও গ্রীক বীজগণি-তের অনুবাদ হইতে ছিল, সেই সময়ে গ্রীক ডায়োকেন্টাদের গ্রীকদিগের নাম নিকটই সম্পূর্ণ অপরিচিত ছিল।

খ্রীষ্টার্ম দানশ শতাব্দীতে ভারতবর্ষে ভাস্করা চার্যার বীজগণিত প্রচারিত হইলে লিওনার্ড नामक करेनक विशक वार्शिका वार्शितम ভারতবর্ধে আসিয়া তাহা অবগত হইয়া ধান ৷ এবং ১২০২ খ্রীষ্টাব্দে ইটালিতে ষাইয়া ভিনি ইহার মর্ম্ম প্রচার করেন। এইক্সপে যুরোপে বীজগণিতের বীজ রোপিত হয়। হিন্দু বীজ-গণিত মুরোপে প্রবেশ করিয়া স্বীয় কটিনতা দোষে সম্যক আদর অভ্যর্থনা লাভ করিতে किङ्क्षिन शत्त्र, खत्त्रांत्रभ পারে নাই। শতাকীর প্রারম্ভে আরবীয় বীজগণিতও (जन-क्वत) धीरत धीरत शूरतारा व्यादन লাভ করে এবং হিন্দু বীজগণিতের সহিত ষমভাবে অনাদরে রক্ষিত হয়। যুরোপের ভাষোকেন্টাস্ য়ুরোপে তথনও অজ্ঞাত।

এইরপে তিন শতাধিক বর্ষকাল অমা-দরের পর যুরোপে বীজগণিত আদর লাভ করিবার অবকাশ পার। sees Bigte क्षि एक व करेनक निक्रक, ब्रवार्ट दबक्छि ইংরেজী ভাষার Weston of wit নামক এক-থানি বীজগণিত গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। রেকর্ডির এই পুত্তক যুরোপে বীজগণিত আলোচনার পথ উন্মুক্ত করিয়া দেয়। ইহার ফলে ডায়ো-क्लिके नाम बनाउ श्राः अठातिक इत। ডারোকেন্টানের এই গ্রন্থের এক্থানা

পাঞ্লিপি রোমনগরের মহামাভ পোপের

বিভাগের আর্থা হওরা বার। ১৪৭৫
বীটাকে Hyland লাটীন ভাবার এই
আহের অহাবার প্রচার করেন। এইরণে
বীলগণিতের ক্রমবিকাশ স্চিত হর। এবং
মুরোপীর পণ্ডিতের। গ্রীসকে বীলগণিতের
আদিস্থান বলিরা প্রচার করেন। মুরোপীর
পণ্ডিভদিগের এই মত কিন্তু লান্তিসংকুল
বিলাম শীঘ্রই পতিপর হইরাছিল।

ত্ব প্রত্ত বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র

বোৰেলীর এই উক্তি হইতে স্থুম্পষ্টক্রপে

শবগত হওরা বার বে গ্রীকগণিতবেতা ডারোকেন্টাসের পূর্ব্বেও ভারতে বীজগণিতের
প্রচার বিরল ছিল না। যদি তাহাই হর—
বদি ডারোকেন্টাস্ ভারতীর গ্রন্থকারের মত
শীর গ্রন্থে উল্লেখ করিয়া থাকেন তাহা

হইলে সেই সকল গ্রন্থপ্রণেতা কে গ এবং
শ্রীকগণিতবেতাই বা কি উপারে তৎকালীন সংশ্রববিহীন স্থান্ত ভারতের বৈভ্বভব্ব অবগত হইলেন গ

পশ্চিত্য পণ্ডিভদিগের গবেষণার এ পর্যাস্ত ভারতীর গণিতবেজানিগের সম্বন্ধ যতদ্র শ্বনসভ ইওরা গিরাছে ভাহার মধ্যে আর্থ্য ভট্ট কর্মানেকা প্রাচীন ব্যায়া অব্ধারিত ইইরাছেন। আর্থাভট্ট ৩৯৮ শকে অন্মগ্রহণ করিরাছিলেন। কিন্তু ভারেকেটান তাহা অপেকাও প্রায় শতাধিক বংশর পূর্বে খীয় গণিত গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন।

স্পণ্ডিত কোলক্ৰক্ ও কাউএল সাহেব আর্যাভট্ট ও ডায়েফেন্টানের প্রচারিত নির্ম সমালোচনা করিয়া আর্যাভটের সমহের দিদান্ত সমূহকে বছউদ্দি স্থান প্রদান করিয়া-ছেন। কোলক্র লিখিয়াছেন "আর্যাভট্টের বীজগণিত এত উন্নত. পরিপৃষ্ট সম্পদশালী যে বছকাল-প্রচলিত চর্চো ব্যতীত এরপ উন্নতি প্রাথমিক চেষ্টার সম্পূর্ণ অসম্ভব। স্বতরাং আর্যাভট্টের পূর্ব্বেও হিন্দু বীজগণিতের অন্তিত্ব ছিল ইহা অনুমান করা অমূলক নহে। স্বপণ্ডিত কোলক্রক মহামতি পরাশর, গর্গ, ও বশিষ্ঠকেও গণিভবেতা বলিয়া উল্লেখ করিরাছেন। কিন্তু হৃঃখের বিষয় ভাঁহাদের কোন বীজগণিত গ্রন্থ এ পর্য্যন্ত আবিষ্কৃত হয় নাই। ভারতবর্ষের স্থায় বুগব্যাপী বিপ্লবোৎসন্ন পক্ষে সহসা তাহা সম্ভবপরও নহে। এ পর্যান্ত যাহা কিছু পাওরা গিয়াছে তাহাও পাশ্চাতা পণ্ডিতগণেরই গভীর গবেষণার ফল।

ভারতের বহু সৌভাগ্য যে ভারতীয় বহু গ্রন্থ মুসলমানেরা আরবী ও পারস্য ভাষার অফুবাদ করিয়া রক্ষা করিয়াছিলেন। নতুবা আর্থাভট, ব্রহ্মগুপ্ত, ভাস্করাচার্য্য প্রভৃতিরও অস্তিত লক্ষিত হইত কি না সম্বেষ্ট্র।

১৮০০ খ্রীষ্টাব্দে কবিন্ বারো (Rubin Burrow) ভারতীয় গণিতের উদ্ধার করে সচেই হন। ভিনি এই ব্রত গ্রহণ করিয়৯ বছ সংস্কৃত পাঞ্জিপি ও ভাহার পারত করেবাদ সংগ্রহ করিয়াছিলেন। ইহার পর

Boward Strachey ভারতবর্বে থাকিবা পারত ভাষার নিধিত ভাম্বাচার্য্যের বীজগণিত গ্রন্থের ইংরেজী অমুবাদ প্রকাশ করেন। এই অমুবাদ প্রকাশ করিতে ৰাইয়া তিনি লিধিয়াছেন—

"হিন্দুদিগের বহু বীজগণিত গ্রন্থ পার্স্য ভাষার অহুবাদিত হইয়াছে। এই সকল পারদী প্রছের অসুবাদ করিলে হিন্দুদিশের वीजगणिक मध्यीय डिक ब्हान गतियात वह নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যাইবে।"

১৮১१ औहीरम कानक्रक मारहव व्याधा-ভটু, ব্রহ্মগুপ্ত ও ভাষ্করের প্রস্থনিচয়ের এক একখানা ইংরেজী অফুবাদ প্রকাশ করেন। তিনি পারস্ত ও আরবী ভাষার সাহাযোই তাঁহার অফুটিত কার্য্য শেষ করিয়াছিলেন।

ञ्जितिका विष्यो महिला "बानिटवनाञ्ड" হিন্দু ফিলসফি বিষয়ক বকৃতা বলিয়াছিলেন...

"আর্থী ও পার্স্য ভাষায় এত মূল্যবান এছ সমূহ অুপীকৃত হইয়া রহিলাছে যে ভাহার ইংরেজী অত্বাদ হইলে আর কোন জাতির না হউক হিন্দু षांতित अञ्च कनाां नाविष्ठ हरेरत। देश हरेरड তাঁহারা প্রভুত আত্মসম্পদ লাভ করিতে পারিবেন।"

এসিয়াটীক সোপাইটীর কল্যাণে দিন দিন আমরা আমাদের প্রাচীন সম্পদের অধিকার ণাভ করিতেছি। এমতাবস্থায় পরাশর, •গর্গ, বশিষ্ঠ প্রভৃতিরও গণিত গ্রন্থের অভিত ধাকিলে তাহা অনাবিষ্কৃত থাকিবে এমন মনে হয় না ।

'व्यामत्रा ভাষরাচার্যোর শ্লোকে একার নাম উল্লেখ করিয়া আদিরাছি। এই বন্ধা আমাদের স্গাঁর পিতামহ ঠাকুর কি না নিশুর

করিয়া বলা যাব না। ভারতীর ভারতীয় শান্তপ্রছাদির রচরিতার স্থলে প্রারই ব্রহা বিষ্ণু, অথবা মহেশরের নাম দেখিতে পাঞ্জা यात्र। এই तहकज्ञात्तत्र तहना नवस्य अञ्चल-বিদগণ আস্থাবান নহেন। তাঁহারা বলেন-

"প্রাচীন ভারতে বশোলিকা বিরাগী এখন অনেক मरांभूक्रव ছिल्लन यारांत्रा चीत्र कोवनास्त्रक विभूत পরিশ্রমের ফলও অপরের সামগ্রী বলিয়া প্রকাশ করিতে খিধা বোধ করিতেন না। ইহারই ফলে प्रवानिष्मव अयु अवक्या ने जुरू हरेया शार्क সমাৰে গ্ৰন্থাৰির মৌলিকতা প্ৰতিপাদৰ ও সন্মাৰ वृक्षि कतिए अध्य ।"

লেধকদিগের প্রতি প্রছাবান না হইলেও ঐরপ ৰাম সংযুক্ত গ্ৰহাদির প্ৰাচীনত্ব অস্বীকার করিতেছেন না। আনরাও এই মুক্তিবলে পিতামহ ঠাকুরের নাম সংযুক্ত ভাক্ষর উল্লিখিত এই ৰীলগণিত গ্ৰন্থ ধানার প্রাচীনত্বের দোহাই দিতেছি। নানা কারণে আমাদের বিখাস আর্যাভট্টও এই গ্রন্থেরই অনুসর্ব ক্রিয়াছিলেন। ব্রহ্মার প্রণীভ গ্রন্থের ' অনুসরণ করিয়াও বে আগ্রভট্ট স্বীয় বাধীন চিন্তার পরিচয় প্রবান করেঁন নাই, তাহা বলা যায় না। আগ্যভট্ট উভাবিভ বীৰগণিতের "কুটক" নিয়ম ভাহার একটা সাধান চিন্তার ফল। সুপণ্ডিত ভাওদালী বলেন "এই নিয়মে অন্ধ কদিবার গ্রীতি ভাষার পূর্বে বোধ हम अहिन्छ हिन न। "

যুরোপীরেরা বিগত শতাব্দীতে মাত এই নিয়ম অবগত হইয়াছেন।

यि (वार्यनीत উक्टिर श्रक्ष रत्र, व-গ্রীক গণিতবেস্তার গ্রন্থেও ভারতীয় গ্রন্থকা-রের মত সমর্থিত হইরাছে, তবে ইহা অবশ্র चौकार्या (य. औडीय हर्व्य मंडाबीय शूर्व्य क ভারতবর্বে বীঞ্গণিতের চর্চা বিরশ ছিল না।

এখন দেখা বাউক হছুর জীলে বসিয়া

त्वर बाहीन काताका मृत्य हाताकहान् कि व्यक्ति कावहार बाहर कहनकान गरेश दिल्या र बाहे विहाद बाह्यम हरेश Edward Strackey द्य बहुन कालाम कहितादहन कारोर बाजाद्य निक्छ ममस्कि मुक्लिश् विकास बाम हरेग। जिनि गिथितादहन—

শ্বানেকজেরিরার কোব বাবিক বাবিরা ভালেবে ভারতবর্বে আসিচা কোন রান্ধণ পণ্ডিতের বিকট বীলগণিত শিকা করিরা আসিরা ভাহা ভারেবে নাচার করিরা থাকিবে; অথবা ভারেবেকটাসই ভারেকজেরিরা প্রবাসী কোন ভারতীয় বণিকের বিশ্বালাভ করিয়া থাকিবেন।"

নিজনার্ড ভারতবর্বে আসিরাই ভারতীর
নাজনিক ব্রোপে গইরা গিরাছিলেন।
ভারোকেন্টাস্ত এই উপারে বা অন্ত কোন
উপারে হিন্দু বীজগণিতের সহারতা লাভ
ভারাছিলেন, বোধ হয় একথা একেবারে

প্রতাবং প্রমাণ অন্তুগারে আমরা ভারতবর্ষকেই বীজগণিতের জন্মভূমি মনে করি। বিপুল গবেষণার ফলে কালে এই অনুমানই অবিসংবাদি সজ্যে পরিণত হইবে ইয়া ছানিকর।

ভারতবর্ধ বীজগণিতের সমূচ্যি হইলেও ভারান সমরে হুরোপই বীজগণিতের গীলা- ভূমি। সাধান পথানীতে জনানী ক্রান্তর বীলগণিতের উন্নতি করে নহ কেটা করে এই চেটার কলে উক্ত একাডেনির একা সভ্য বাচেৎ ১৬২১ এটাকে জ করা গণিতবেরা কারমেৎ ১৬৭০ এটাকে কর বা অতি উচ্চ অকের বীলগণিত এই নচন করেন। অতঃপর অটান্দ শতালীতে De La Grange এর স্থপ্রসিদ্ধ বীলগণিত এই মুচিৎ হইনা নুরোপারদিগের জ্ঞান গরিমা চতুর্দিকে বিভ্যুত করিনা দের।

যুরোপ অষ্টাদশ শতাবীতে বীৰ্ণণিত সৰ্ব্বে বে দিগত বিত্ত বশ অর্জন করিবাছিল প্রাচীন ভারতের বীৰ্ণণিত জ্ঞান ভাষা অপেকা বোধ হর কোন অংশে হীন ছিল না। এতংসক্ষে Edward Stracheyর মন্ত লিপিবদ্ধ করিবা৷ আমরা বর্ত্তবান প্রবন্ধের উপসংহার করিবাম।

"The Hindoos had made a wonderful progress in some parts of Algebra; that in the indeterminate analysis they were in possession of a degree of knowledge, which was in Europe first communicated to the world by Bachet and Fermat in the 17th Century and by Euler and De La Grange in the 18th."

विक्नांत्रनाथ बहुमनात्र

বিপরীত।

ক্ষর কৰা নিজ বলি, ব্যৱ বার আর ; ক্ষার বীশা কানি কান অপন কলার। ক্ষার ক্ষার্থনাক্ষ্য ক্ষান বারি আনবনে— বিশ্ব ক্ষার্থনাক্ষ্য ক্ষান্ত বহুনে।

হংব পোকে কাৰ্যানিক বাধিত চিক্তেতে নাৰি ক্লবে উপানীন—পুনা এ জগতে, একাৰিন থাকে জ্লো । বুকি জাৰ্যাতের ইংবেনে ক্ষমের বুক কারে কৌঞারক।



মহাদেবের তাওবনূত্য ^{নি}স্ত স্বেক্তনাথ গঙ্গোপাধায় কতৃক অক্কিত চিত্র হইতে

মিশর-কবিতা।

वित्र जरूरोनिक क्विकाश्वीन गांति नश्य वरनव नृदर्स द्रविछ।

পথিক-বধু।

ছ্বাবের পানে সতত চাহিরা থাকি,
বঁশু যে আমার আসিবে ছ্রার দিরা;
পথে পাহারায় রেখেছি ছুইটি আঁবি,
কর্ণ সলাগ, ভরু ক'রেছি হিরা।
ভরু হদর অসাড় হইরা আনে,
বলু ভোষার সাড়া যে পাইনে তবু;
ভব ভালবাসা নিধি সে আমার পানে,
তা বিনা পরাণ তৃপ্ত হ'বে না কভু।
প্রবাদে বনিরা পাঠারেছ সমাচার
'বিলম্ব হ'বে' জানারেছ লিপিমুখে,
কেন লিখিলে না 'ভালবাসি না গো আর
মনোমত ধন মিলেছে, ল্লেছি সুথে।'
চক্তল, তুমি কেন এত নির্দির ?
এমন ক'রে কি বেদনা সঁপিতে হয়।

शिलनानमा ।

যখন ভাষারে আসিতে দেখিতে পাই
ফালিপিও ক্রভ ভালে ছলে,
ছ'বাছ ৰাজায়ে বাছতে বাঁথিতে চাই
অসীম পুলক উথলে ক্রদর-কুলে।
ভূজবজনে বন্দী সে যদি করে,
তত্ম আরবের আতরে ভিতিরা উঠে,
চুলে বদি ছাসি-বিকচ-অথরে
বিনা মদিরার সংজ্ঞা আনার টুটে।

गत्नाका।

ভোষার সনের বভন হ'ইছে
কি থে হিল প্রয়োজন,
সে কথা আহারে হিরেমিল হ'লে
প্রাথনে আহারি বন।

তুমি বাহা চাও চাহিবার আগে আমি তা' করিয়া রাখি, रिश्रात वर्षन श्रें किरन, नज़्, সেধানে তখৰ থাকি। পাৰী মারিৰার তীর ধমু লই পাখी धत्रियांत्र काल, মুগন্বার মাঠে ছুটে সারা হই सूथ र'रत्र ७८५ नान। আরবের পাধী মিশরে আসে গো আতর বাধিরা পাৰে. টোপের উপর ঠোকর মারিয়া শুক্তে খুরিতে থাকে ! গায়ে আরবের ফুলের গব্দ, পাৰে তাৰ ধন ধন, তোমারে বন্ধু ! মনে পড়ে গেল ऑबि र'न स्थानम। শুধু কাছাকাছি পেলে ভোমা বাঁচি अधिक कामना नाहे ; নুতন পাৰীর স্তীব্র স্ব বারেক গুনাতে চাই।

মরণ।

মরণ, অবের দাহ অবসানে,

মুক্ত বাতানে বাওরা।
নিখিল ব্যাধির ঔবধ সে বে

দৈবে লিজরে পাওরা।

মরণ, ভ্রতি পূজা-ভবনের

ধূপের অককার;
বাত্যা-ভাড়িত ভরীতে নিজা,—

লেশ নাই সংজ্ঞার।
বে বে ক্রন্তের গৃহ পরিবন্দ,

वहा विषयात्र वर्ष वत्रन,---व्यनानि कारनत हुना । यूरकद रनरव ली-रमनावीत कित्रं वाख्या निक परन, আকাশ-বীলের বিমল বিকাশ रचात्र वक्षात्र त्नरव । वलीखानव कामनाव निधि यत्रांद्य यत्न रहा, वह वजरवज्ञ कांब्राटक्रम् वांब कीवन इःश्यत्र। সেই তো দেবতা দেহ-অবসানে যে গেছে সৃত্যু-লোকে, ৰোচন করিয়া দুরে কেলে দেছে भाग्नात्र निर्फारकः। প্ৰয়েৱ কাছে সুখে বলে আছে ক্ৰোৱি ৰৌকায়, ভৰ্পৰ-কালে দেবতার সাৰে ৰলি-উপহার পার; মৃত্যুরে পেরে পার গো না চেরে জানীর অধিক জান, भौतिष्ठ गां त्रवि ना मान् कथरना মৃত কৰে তাহা দ্যানু।

মিশর-মহিমা। विनंदन गूक्य वय-शिक्छ, त्रमणी बङ्ग्बंत्र ! স্থনাপায়ী-শিশু ভাহারে অননী वज्ञान् वज्ञःश्वः। মার কাছে ছেলে সভ্য বলিভে সভ্য পালিভে খেখে, সহজ সাহসে ছঃখ সহিতে त्नात्व रेनमव (थरक। ভয়ে সে কাঁপে ना, कांडे काँग ना, লোহার বাঁচুল ছেলে; ছুই দতে ৰশ করিতে সে পারে ছরন্ত যোড়াও পেলে। পিতা হাতে তার দেন হাতিয়ার শেশান অন্ত খেলা, বেড়ে ওঠে বুৰ—শড়্ৰী ৰহৰ नत्य कित्व नावादना । ভীমকল পারা হুর্ম্মণ ভারা, লড়িতে করেনা ভর, বিনা ছলে কভু তাদের হঠানো नदबन माथा नग्न। শ্ৰীসভ্যেন্দ্ৰনাথ দত।

পোষ্যপুত্র। প্রের অহবৃত্তি।

বস্থমতী সহরের বাহিরে বেশ একটু থোলা ও স্বাস্থ্যকর কারগার বাটী লইরাছেন। বোগেজ সপরিবারে সহর ছাড়িরা 'অসার সংসারের সারাশ্রমে' বাঙ্ডির অতিথি হইরাছে। মিঃ রার আক্কাল আর এ পরিবারের কাছে অপরিচিত বাহিরের লোক বহেন। তিনি এখন ইহালের মধ্যে অনেকথানি হান অধিকার করিরা লইরাছেন।

এখন এখানকার সকলেই প্রতি সন্ধ্যার আগ্রহের
সহিত তাঁহার আগমন প্রতীক্ষা করে।
রাত্রি বাড়িরা উঠিলেও বিদারের ইচ্ছাও
কাহারো মনে উঠে না। একদিন দৈবক্রমে
না আসিতে পারিলে প্রদিন ইহার উহার
মান ভালিতে ভালিতে বেচারার প্রাথ
হাঁফাইরা উঠে।

ह्यां द्वां एक्ट्नट्म्द्रका एका व्यक्तरे

বৰ হইয়া থাকে ; পূহকুৰী ৰহুমতী পৰ্যান্ত তাহার এই নৃতন ছেলেটার বস্তু বিকাল হইতে इटेक्टे क्राना ষতক্ষণ না মিঃ রার আসিয়া তাঁহার স্বহতপ্রস্ত মিষ্টারগুলি থাইতে বসিয়া স্থপ্রকাশের সহিত কাড়াকাড়ি লাগাইয়া দেন, ততক্ষণ যেন তাঁহার আরাম বোধ रव ना। ভারপর थावादवव সমালোচনার ও মারের উপর দাবী-দাওয়া লইয়া প্রায়ই ভাই হটিতে হাভাহাতির উপক্রম ঘটে ; অতান্ত লেহের চক্ষে তখন তিনি উভরেরই প্রতি চাহিয়া দেখেন। শাস্তি এসৰ স্বগড়া বিবাদ ও পাৰী শিকার ছাড়া বাকি সকল সময়ই তাঁহাদের সহিত সানন্দে যোগ দিত। মধ্যে মধ্যে বাগানের চড়িভাতির ব্যাপারে এবং প্রাতাহিক বৈকালিক ভ্রমণের সময় কোথার সত্যকালের ভগ্নস্ত,প পুরাতন দেবালয় অথবা উন্থান দর্শনে তাহারা যোগেন্দ্র অপেকা মিঃ রারের সাহায্য অধিক পসন্দ করিত। যোগেন্দ্র ভারি কড়া সমালোচক তিনি মুগের ডালের আঁকা গন্ধ ও নৌকার ধারে ঝুঁকিয়া পড়া কিছুই সহু করিতে পারিতেন না। কিন্তু মি: রার ডাল তো ডাল ভাত পর্যান্ত পুড়িয়া অঙ্গার হইয়া গেলেও স্প্রসন্ধভাবে ভাহার মধ্য হইতে নীব ছাড়িয়া কীরটুকু গ্রহণ করিতেন। এক-দিনকার চড়িভাতির খিচুড়ি ধরিয়া গিয়া ভয়ানক ধরা গন্ধ উঠিলে বোগেন্দ্র তীত্র সমালোচনা করিল "সরস্বতি! মিথ্যা কেন এ বিজ্বনা ভোগ করছো ? সপত্নী বিশ্বেষটা চিরকালের জিনিব! তার চেরে তোমার দিদিকে এই কাজটা ছেড়ে দিয়ে তভোক্ষণে वत्रक अक्ठा छिनिम्दनंत्र ज्ञान्दन्नम् कदत्र

কেল—ৰে সমৰের সার্থকতা হবে। কি বল হে নার মহাশর ?" শান্তি কাঁলো কাঁলো মুধে নত চক্ষে বসিয়া রহিল।

মিঃ রায় একবার চকিতনেত্রে তাহার
লক্ষা ও বেদনা পরিপূর্ণ করুণ মুধ্চছবি
সাগ্রহে চাহিয়া দেখিলেন। যোগেলেরে
উপরে একটুখানি রাগ হইল, ভাড়াভাড়ি
শান্তির কাছে আসিয়া বলিলেন "এসোডো
শান্তি এবার আমরা হজনে মিলে খিচুড়ি
রাধি, ও পেটুকটার অরে স্বরে কুলাবে
না ভো, সেজন্ত ভোমার রায়ায় দোব দিয়ে
আর এক হাঁড়ির বন্দোবন্ত করে নিচেন।"

চথের জল চাপিতে চাপিতে অপরাধীভাবে রন্ধনকারিণী বলিল "না ওটা সভ্যিই
যে পুড়ে গ্যাছে।" তথাপি মিঃ রায় বলিতে
ছাড়িলেন না যে ইহা যোগেনের নিক্ক অভাবের মিথ্যা দোবারোপ ভিন্ন আর কিছুই নয়। নহিলে এবানে এতোগুলা নাসিকার মধ্যে যোগেকাই বা ধরাগন্ধ পাইল কেম ?"

বোগেল কিন্তু এ অপবাদ সন্থ করিব না! সে রাগিরা বলিল "ঐতো তোমাদের কেমন রোগ! তোমরাই তো মিথা তোষামোদ করে এখনকার মেরেদের দিন দিম বিবি নাচাচ্চো। সরস্থতীরা মালন্দ্রীর সঙ্গে আড়ি দিয়ে নিশ্চিত্ত হরেছেন, বা করেন তাই মনে হয় থুব করেছি। খালি উল কার্পাটের প্রাদ্ধ করে বাতে ও অধলের বাায়রামে অহির হচ্চেন। তার কারণ কিন্তু এই তোময়াই! খোসামুদে!"

মি: রার হাসিরা বলিলেন "তুমি বৃঝি খোসামোদ জানোনা ? গৃহিণীকে একেবারে লম্মীর জাসন্থানাই দিয়ে কেলে !"

এই সৰ নানা কারণে শান্তি মি: রায়কে মনে মনে প্রখংসা করিত। বিশেষ, সম্পর্কের দোৰে বোগেন্ত ভাষাকে যে সকল ভামাগা ৰুৱিত এবং মণিমালা ওদ্ধ তাই লইয়া সময় অসমৰ তাহাকে যেরকম জালাইতে থাকিত ভাহাতে আরো ভাহার যোগেক্সনাথের সহিত ৰনিত না। আর ইহার সহিত কোন বিষয়েই ভাহার এভোটুকু পর্যান্ত মতবৈধ ছিল मा। वतः भगव भगव प्रशिवः जाम्हर्गाञ्चव করিত বে তিনি যেন তাহার বাবার লেখা গুলি সমস্ত পাঠ করিয়া আসিয়াছেন—বেন তিনি তাহার পিতার একটি প্রিব্ন শিষা। হাতে গড়িয়া তোলা ইদানীং বস্থমতীও এই অপরিচিত যুবাকে ম্বেহের সহিত বিশেষ একটু শ্রদ্ধা করিতে আরম্ভ করিরাছিলেন। কথাবাৰ্ত্তাৰ ও চালচলনে তিনিও বুঝিয়াছিলেন যে ছেলেটি ভাহার স্থামীর একজন বিশেষ প্রীতিপাত্র হইবার উপযুক্ত। তিনি তাঁহাকে নাম धित्राहे छाकिएजन, छाहात नाम नीत्रमक्सात রার। এখানে তাঁহার বিদেশী সহক্রমীগণের খারা নামটার সংক্ষিপ্ত আধুনিক সংস্করণ হইরা দাড়াইরাছিল মি: রার। বহুমতী তাঁহার আত্মীয় স্বজনের কথা জিজ্ঞাসা कतिया जानिया नहेबाहितन, तित्न व्यानकहे আছেন, বিষয় সম্পত্তিও কিছ আছে জাতিদের সহিত বনিৰনাও হয় নাই, তাই পৈড়ক সম্পত্তি ভ্যাগ কলিয়া আসিয়াছেন। अकवात्र समाज्ञि पर्यान याहेवात्र प्रवत हैका व्याटक, अवाधक्य नीखरे गारेद्यत । व्यादक तित हरेएक्ट सहित्क हेव्हा, दक्वन कानकर्त्युत ৰশ্বাটে পড়িয়া ঘটিয়া উঠিতেছে না। এথানে

মিঃ রায়ের চিনির কুঠি ও কাপড়ের তাঁত বেশ ভাল রক্মই চলিভেছে। তিনি নিজেই नव गानिक करतन। यश्नीमात्रतां धनी ব্যক্তি; নিত্য নৃতন নৃতন কাল আরম্ভ হইতেছিল। কতোকটা বস্থমতী ও কভোকটা শান্তির পত্রে এই দূরদেশের অপরিচিত বন্ধু ও অজ্ঞাতভক্তের বিষয় জানিয়া রজনী-নাথেরও ভাঁহার প্রতি বিশেষ একটু শ্রদ্ধার উদর হইতেছিল। একলব্যের মত কে এই পুজক ? এ কৌতুহল অনেকবারই মনে জাগিত। শাস্তিকে লিথিলেন "ৰুড়ি তুই বড় ছষ্ট্র হচ্ছিদ। প্রথম প্রথম রাষের কথা তোরা কতোই না লিখতিস্, কিন্তু আৰকাল আর মোটেই লিখিস্না। কেন বল্দেখি? তার তাত টাত সব উঠে গ্যাছে নাকি ? না তিনি তোদের বাড়ি আর আদেন না ?' শান্তি উত্তর লিখিল "না বাবা তাঁর কারবার বেশ চলছে। একটা কাপড়ের কল আবার শীঘ্র আরম্ভ হবে। তাঁর তাঁতের অনেকগুলো কাপড় কিনে নিয়েছি। দেগুলো সব দেশি হুতোর আর খুব মজবুত। চিনিও বেশ ফর্সা হচ্চে, বিক্রিও খুব।"

রজনীনাথ চিঠি পড়িয়া হাসিলেন, লোকটার সম্বন্ধে বৃঝি একটা কথাও লিখিবার প্রয়োজন নাই? শুধু তার কাজের সংবাদ!

এমনি করিরা অপরিচিত স্থানে নৃতন " লোকের মধ্যে শান্তিদের বেশ স্থাধে দিন কাটিয়া গেল।

প্রথম আবাঢ়ের আকাশ দেদিন আসর ব বর্ষণের জন্ত মেঘ বিহাৎ সইরা রুমণীর সজ্জার সাজিরা আইসে নাই। বথা পূর্কং তথা পর,:—সেই একথেরে বিস্তৃত নীলঢালা আকাশথানা সমস্ত দিন বোদে ঝলসাইরা ঝলগাইরা এতোক্ষণ পরে অগ্নিমর থালথানাকে নদীর ওপারে নারিকেল গাছগুলার মাঝথানে ঠেলিরা কেলিরা দিরা একটু ঠাপ্তা নিশাস ফেলিল।

এধানে প্রায়ই অসহ গরম পড়ে না,
আরু দিনের বেলা একটু গ্রীমবোধ হইলেও
এখন শুমোট কাটিয়া বেশ ঠাণ্ডা পড়িয়া
আদিল এবং বাগানের স্কুলগাছগুলার মাথা
নাড়াইয়া একটু ঝিরঝিরে বাতাসও বহিতে
আরম্ভ করিল। সন্ধাা হইয়া গেলেও সেদিন
মিঃ রায় আসিলেন না। যোগেক্র কিছুক্ষণ
পর্যাস্ভ তাঁহার অপেক্ষা করিয়া করিয়া অবশেষে
স্প্রকাশকে ডাকিয়া লইয়া বেড়াইতে বাহির
হইয়া গেল।

শান্তি গাড়ি বারান্দার একটা আইভি জড়িত থামের গারে হেলান দিয়া অনিলের ধরিয়া দাঁড়াইয়াছিল। মিঃ রায় না আসাতে সন্ধাটাকে যেন বুখা বলিয়া মনে হইতেছিল। ভাঁহার কথা,ভাঁহার হাসি, ভাঁহার মধুর স্বভাবটি তাঁহার मकरनत निक्र নম্রতা, বিশেষতঃ দেশের প্রতি প্রাণ্ঢালা অমুরাগ আগ্রহ তাহার প্রাণে কি একটি অমুণম আনন্দ ও প্রীতি জাগাইরা তুলিত। শান্তি কিইবা ছাই গল ফানে, কিই বা ^{প্}ন দেখিয়াছে *সে জানিবে,* তবু তাহাই তিনি কভো আগ্রহের সহিত ওনেন। আবার ,তাহার বৃদ্ধিশীলভার এতো বেশি প্রশংসা করেন বে গুনিরা লজ্জার সে মুধ ত্লিতে পারে না।

আৰু সহসা শান্তির হাসিমুখ মলিন হইরা

গিয়াছে, সে গন্তীর মুথে ভাবিতেছিল, "আর
কথনো তাঁহার সহ্তি সাক্ষাৎ হইবে না,
কেমন করিয়া হইবে ?" ভাবিতে ভাবিতে
শান্তির মুখখানা অকল্মাৎ একটুখানি রক্তিম
হইয়া উঠিল, মনে মনে সে আপনার নির্কাছিন
তায় আপনার কাছেই লজ্জা অমুভব করিল।
সে কি অক্তজ্ঞ! কি বোকা! সেখানে গেলে
সে নিজেদের বাড়িঘর, পাখী, পায়রা, হরিণ,
বিড়াল কুকুর পাঁচকড়ি, হরে, বিধুর মা,
হরিদাসী সর্কোপরি ভাহার বাবাকে দেখিতে
পাইবে, তা না ভাবিয়া কিনা সে ভাবিতে বিদল
বাড়ি গেলে কোথাকার কে মিঃ রায়কে
দেখিতে পাইবে না! কি লজ্জা! সহসা শান্তির
সল্মুখীন হইয়া নীয়দকুমার ডাকিলেন "শান্তির!"

চোর ধরা পড়িলে বেমন চমকার প্রথমটা শান্তি সেইরূপ চমকিয়া উঠিল কিন্তু শীত্রই প্রকৃতিত্ব হইয়া কহিল "আপনার বুঝি আর কান্ত্র শেব হয় না ? এতো দেরি ? তার চেরে না এলেই তো হতো।"

• নীরদকুমারের ললাট কর্ণমূল পর্যাপ্ত আরক্ত ও উত্তপ্ত হইয়া উঠিল। আনন্দ-উত্তেজনায় সহসা বলিয়া উঠিলেন "আমার আজ আসতে বিলম্ব হয়ে গ্যাছে; শাস্তি মাপ করো। তুমি আমার প্রতীক্ষা করছিলে?"

"করিনি ? যোগেজবাব্ও অনেকক্ষণ বসেছিলেন, তারপর রাগ করে একটু আগে বেড়াতে চলে গেলেন। স্থকুও তাঁর সলে গাছে।" নীরবকুমার মনের সে অদম্য হর্ষোচ্ছ্বাস গোপন করিতে না পারিয়া একটু নিকটে আসিয়া প্রক কল্পিত ব্যগ্রস্থরে বলিয়া উঠিলেন "আনি কেমন করে আমার আনক্ষ ও ক্ষতক্ষতা তোমার জানাবো লাভি গ্

শান্তি তাঁহার আগ্রহে দক্ষ্যমান্ত না করিরা বারের দিকে অপ্রসর হইরা তাহার স্বাভাবিক বিষ্ট হাসি হাসিরা কহিল "বরে আস্থন, কভোক্ষণ দাঁজিরে থাকবেন ?" চারিদিকে চাহিরা দেখিল, জনিল নাই, সে কোন্ সমর পলাইরা সিরাছে। ঘরে প্রবেশ করিরা মিঃ রার আসন গ্রহণ করিলেন না। দাঁজাইরা রহিলেন। বলিলেন, "আজ বোগেন স্ত্কু কেউ নাই, আজ আমি বাই। কাল থেকে খুব সকাল সকাল আসবো। বলো তো হুবেলাই আমি আসতে পারি।"

শান্তি হাসিল, অত্যন্ত মৃত্ ভূল সংশোধনের হাসি হাসিয়া কহিল "কালই আসবেন, পরত বোধহর আমরা এখান থেকে চলে বাবো। বাবা টেলিগ্রাম করেছেন, আমাদের নিতে আসবেন, বোধহর কাল সকালে এসে গৌছবেন।"

নীর্দকুমার ঈবং বিশ্বিত ঈবং ব্যধিত কঠে বলিরা উঠিলেন "সেকি তিনি এসে ছদিনও থাকবেন না, এতো শীত্র চলে ধাবেন ?"

"সেই রকমই তো লিখেছেন।" বলিয়া শাস্তি ঈষৎ নিশাস ফেলিল।

সে নিখাসটুকুও নীরদকুমারের কর্ণ অভিক্রেল করে নাই। তিনি ব্যথিত দৃষ্টিতে
ভাহার দিকে চাহিয়া দেখিলেন। তারপর
নীরবে অনেকক্ষণ ধরিয়া কি ভাবিতে
লাগিলেন। লাস্তি ব্লিগ "আপনার সঙ্গে আর
ক্রেভা আমাদের দেখা হবে না!"

শালিতে বলিতে সহসা তাহার সহাত ভেঙ্কবর শাভা লজার বেন মুদিরা আসিল। কৈ সালে কোন এক অনির্দেশ্য ভাবের আবেশে তাহার গোলাপি গণ্ডে রক্তিয়া স্থলাই হইরা উঠিল। মি: রায় ঘরের উজ্জল আলোকে লজ্জিতার সেই স্থলার মুখখানি অত্থ দৃষ্টিতে দেখিতে লাগিলেন, একটু হাসিরা বলিলেন,

"যদি ইচ্ছা করে। তাহলে আবার আমাদের দেখা হবে। কি বলো শান্তি হবে কি?" যে পর এই কথাগুলা উচ্চারণ করিল, তাহা বালিকা শান্তির কম্পনহীন হাদরতন্ত্রিতেও সবলে একটা আঘাত করিল। সে কিছু না ব্বিলেও না ভাবিলেও, তাহার নত দৃষ্টি সহসা আরো নত হইয়া পড়িল। নীরদকুমার আবার একবার সহাস্ত সপ্রেম দাগ্রহ দৃষ্টিতে তাহার লজ্জাকুন্তিত মুখের দিকে চাহিয়া গস্তীরম্বরে বিলয়া ফেলিলেন "আবার দেখা হবে শান্তি! নিশ্চর-নিশ্চরই আমাদের আবার দেখা হবে। না হলে আমি বাঁচবো না! তবে আজ চল্লেম—না একবার মার সক্ষে দেখা করে আগি—"

স্থাকাশ আসিয়া দিদির কাছে শুনিল
মিষ্টার রায় আসিয়া চলিয়া গিয়াছেন—সে রাগিয়া
গেল, কুদ্ধস্বরে বলিয়া উঠিল "বাঃ ষেই আমরা
বাড়ি থেকে চলে গিরেছি, অমনি তিনি
এসেছেন, তাও আর একটু দাঁড়াতে পারলেন
না! দাঁড়াও তো কাল আমি তাঁর সঙ্গে এমন
ঝগড়া করবো। মিঃ রায় কিন্ত দিদি, আমার
চেরে তোমার বেশি ভালবাসেন, তা তুমি॰
যাই বলো—"

শান্তি তাড়াতাড়ি ভাইরের কাছে আদিরা তাহার একটি ছোট হাত নিজের ছইহাতের মধ্যে ডুলিরা লইরা ব্যঞ্জকঠে বলিরা উঠিল "মুকু মুকু ওক্থা না; মুকু একথা বলোনা, বলতে নেই।" স্থকু দিদির কাও দেখিয়া আশ্চর্যা হইরা গেল, স্পত্যস্ত আমোদও স্থান্থতাক করিল, সে হাসিয়া বলিল "হাঁ৷ বলতে নেই বই কি ? খুব বলতে আছে! সত্যিই তো তিনি আমার চেরে তোমার বেশি ভালবাসেন। আমার অনেক জিনিব দেন, কিছু তোমার সঙ্গে বেশি গল্প করেন তো?"

শান্তি বড় বিপদেই পড়িল। মি: রায়
তাহাকে ভালবাসেন, তা বাসিলেই বা,
তাহাতে ক্ষতি কি ? এ লইয়া তাহার এতা
লজাই বা কিসের জন্ত ? কিছ আজ বেন
সবি নৃতন ধরণ। সেও নৃতন, তিনিও বেন
নৃতন! আজি সে ব্ঝিয়াছে—কে জানে
ছাই পাঁল কিই বা ব্ঝিয়াছে তাহাও সে
লঙ্গলনেনা—শুধু এইটুকু অভিজ্ঞতা সে লাভ
করিয়াছে যে তাঁহাকে ছাড়িতে তাহার প্রাণে
একটা গভার আবাত লাগিবে। আর
এইটুকুও সে বুঝে একজন নি:সম্পর্ক যুবার
জন্ত এ বেদনা বোধ করা তাহার পক্ষে

পরদিন রজনীনাথ আগমন করিলেন।
রজনীনাথ পুত্রের করমারেস মত এরারগান্টা
তাহাকে বাহির করিয়া দিয়া ক্সাকে জিজাসা
করিলেন "তুই যে কিছু আনতে বলি না বৃড়ি?
কেন?" রাগ করেছিস ?"

শান্তি হাসিরা কহিল "না বাবা! আমরা তো বাড়িই বাচিচ, তা ছাড়া আমার তো সবই আছে, কি আর আন্তে বলবো?"

ইস্ তুই বে সন্তলোক হরেছিস্ রে ! এমন কথাটা তো এপর্যান্ত কেউ বলেনি। তবু কিব একটা জিনিয় কামি ভোর করে কিলে এনেছি—এই নে। রম্বনীনাথ ভাছাকে ছবি আঁকিবার জব্যাদি সম্বলিত একটি বাক্স দিলেন।

রজনীনাথ মি: রাবের সহিত সাক্ষাৎ
করিবার জন্ম বিশেষ ব্যপ্তা থাকিলেও সেদিন
সাক্ষাৎ ঘটিল না। মি: রায় আসিলেন না।
এ ঘটনা অপ্রত্যাশিত। সকলেই ইহাতে
আশ্চর্য্য হইল। বস্ত্রমতী তাঁহার বাসার
জিজ্ঞাসা করিতে পাঠাইলেন "বাবুর কি অক্ষণ
করিয়াছে?" বলাই ফিরিয়া আসিয়া সংবাদ
দিল "তিনি বাড়ি নাই। সকাল বেলাই
বাহিরে প্রেছন, রাত্রেও হয়তো আসিবেন না।"

বহুমতী হৃঃখিত হইবা বলিলেন "কই কালতো দে কিছুই বলিল না। আমি সারাদিন ধরিয়া তার পসন্দসই ধাবার ধ্রনি তৈরি করে রাখলেম।"

যোগেন্দ্র বলিল "নিশ্চরই কোন অকরী
কাজে তাহাকে বাইতে হইরাছে। নাহলে
দে কথনো পিলে মহাশরের সঙ্গে দেখা না করে
চলে যার ?" রজনীনাথ একটু সনঃকুর
হইলেন। তাহার অজ্ঞাত ভক্তটিকে দেখিবার
জন্তে একটা আগ্রহ তিনি অনেকদিন হইতে
মনে মনে পোষণ করিতেছিলেন। দেদিনকার
আনন্দটা মাত্রাহীন হইরা রহিল।

শান্তির বিবাহ সম্বন্ধে বন্ধ্যতীর আবেদন শুনিরা চিন্তিভভাবে অনেককণ পর্যান্ত নীরর থাকিরা অবশেবে রজনীনাথ কহিলেন "এতো হতে পারে না বস্থ! আমি অনেকদিন হডেই একরকম কথা দিরে কেলেছি। বলতে পেলে তিনি একরকম শান্তির জন্তই ক্ষেত্রক পোবাপুত্র নিরেছেন। এখন কি শান্তি বত ব্যলাতে পারি ?"

-

· Telegraphic Transport of the state of the केषा राज्या अव। रनवक्त कथा रहरनायस बोकरनहें क्यान रख बोटक, कांट्ड कि बारन साका एक त्रारमणित्य त्वां त्रारमानि, कृतिन শ্লী কাছে রাথো, তাহলে আর কোন ৰাকাকেই বাধা মনে করবে ন।। ঠিক তুমি ক্ষেত্ৰটি পছন্দ করো ভগবান যেন তেমনি আন্তৰ মিলিৰে রেখেছেন। রূপই বা কি! क्षिणः नवा চওড়া হছ সবল দেহ। তা ছাড়া এ বিষেতে বোধ হয় মেয়েও বেশি সুখী হবে। শনীপুৰের ওরা বড়লোক সত্য, কিন্তু সেধানে * **পড়লে** ভারা আমার মেরে পাঠাবে ন। হেলেও কেমন তাইবা কে কানে ? नीत्रम শান্তিকে আমার পুব ভালবাসে। আমি ৰূৰৈছি সেও ওকে চায়।"

র**জনীনাথ** বিজপের সহিত হাসিরা **বলিলেন**—

্ৰ ভোমাদের একটা ভূল বিশাস বস্থ ! ক্ষমশ্বানা নভেল পড়ে তোমরা সংসারটাকেই . উপস্তাসের চক্ষে দেখতে থাকো। ভোষার नरक यथन आंभात विरत्न इत्, তথনতো करे जामाराव मध्य जानवामा इत्र मारे, ্**ৰার** ভার এমনই কি মনা ফল ফলেছে 🕈 শান্তির বাপ মা যে পথে চলেছে তারও সে শ্বই ভাগ। ওসৰ নভেলিয়ানা আমি ভাগ ৰুকি না। ভাষাকান্ত চৌধুৱীর ভারী সাধ বে শাক্ষি তীর বধু হয়। তীর ছেলে বিনোদ ক্ষমেদিন নিক্ষেশ এশগ্রন্ত ভাবার এভেটুকু व्यक्तिक भोजना नांच नांहे। यदन दनकः িলাই। 🖟 বিশেষ সেবাদ সংবাদপত্তে নাবেতে কাটাপকা ছেলেটৰ কথা वृद्धि कि बान कहाक नाटक टर

त रियाक क्षेत्र का तर्र ! क्षेत्रीरर न्नाना गणा किय शामि बार् पाटक ल **१६एमणिएक स्वरंग अध्य अध्यक्त** তোবে সে বিনোদ ছাড়া আর কেউ নহয় সেই জম্ম চৌধুরী বধন শান্তিকে পাৰার জন্ম তাঁহার ভ্রাভুম্মত হেমেক্সকে বস্তব্দ নিলেন আমি বাধা দিইনি। পূর্বেও আমি একবার তার কাছে বীকার করেছিলেব, বে বদি বিনোদ ফিরে আসে তাহলে আমি শান্তিকে তার হাতে দেবো। এখন খামাকান্ত **हो** भूते । एक मार्च जूरनाइन। তিনি নিজে তাঁহার বর্ত্তমান পুত্রকে সঙ্গে নিয়ে এসেছিলেন আমিও এক প্রকার কথা দিরে ফেলেছি।" বস্থমতী নীয়বে ৰসিয়া রহিলেন। তিনি করমাস ধরিয়া যে আশা সদৃঢ়ভাবে মনের মধ্যে পোষণ করিতে ছিলেন, বুঝিলেন তাহা পূর্ণ হইবার আর আশা নাই।

রজনীনাথ পুনশ্চ কছিলেন "ৰহা ! তুমি

তংগ করিও না! ঈশ্বর মঞ্চলমর তিনি বা

করেন তা ভাগর জল্পই করেন। দেখো

শান্তির জল্প শানাকান্ত বেমন ব্যঞ্জ পৃথিবীতে
বৌরের জল্প কোন শশুর বোধ হয় তেমন

হয় না। আমাদের বৃড়িটা বেমন আদরের

সেথানেও তেমনি আদর পাবে। ছেলেটাও

দেগতে ওনতে নম্রভাবে স্বর্ভমে ভাল;
নিশ্চরই শান্তি হথী হবে। এস বৃহ্ণ আমরা

তার মঞ্চলামনার মঞ্চলময়কে প্রধাম করি।"

বহুমতী গলার অঞ্চল দিরা স্থামীর পার্শে ভূমি
তলে প্রণক্তা হইলেন। এই ক্লইটি জেহগভীর

স্বাহরর আকুল প্রাথনা মানব্যস্থাইর নির্ভা

ভবিষ্তের প্রশাস্ত্র বর্ণক ক্লিভাবে এইণ

ক্রিলেন ভিনিই আন্তর্গ



সহাত্রা বাজা বামমোহন বায়

वौद्रं भूक्रव।

শ্বহো: সার্জিরাস । আর একটি কাজের কথা আঁছে।"

"কি কথা হতুর ?"

"कनद्वीमात्र मत्रवादत यश्चितंत्र वरमावछ कछत्त्र हरेन ?"

"সেহানে হজুরের নিজের উপস্থিত না হওয়াই কর্ত্তবা।"

"নিরাপদ নহে ? হা: হা: কেন ?"

শৃত্ত্র! ভগট্টোমার প্রাস্ত হইতে প্রাস্তান্তর নিহিলিটে পরিপূর্ণ। বহুসংখ্যক লোকদিগের প্রতি প্রিলের তীক্ষ দৃষ্টি রহিরাছে সত্য, কিন্তু সকলপ্রকার বিপদের প্রতি দৃষ্টি রাখা মানুবের সাধ্যাতীত। সেইজন্ত আমি পল কার্শনেকের সহিত পরামর্শ করিরাছি সে হজুরের স্থলাভিবিক্ত হইরা ভলট্রোমার দরবারে উপস্থিত হইবে।"

ক্ষ সম্রাটের আতুপুত্র গ্রাপ্ত ডিউক ভালিলিও এবং তাঁহার বিশ্বস্ত পরিচারক সার্জিরাসের মধ্যে উক্তরূপ আলোচনা হইডে ছিল।

"বটে !" প্রিন্স ভ্যাসিলি টেবিলের উপর বুঁকিয়া পড়িরা, সার্জিয়াসের প্রতি স্থাপনার মায়ত চকু হাপন করিয়া কহিলেন,—

"বটে ! ভবে শোন সার্জিরাস ! আগামী
• বৃহম্পতিবার ভুলট্রোবার ক্ষরারে আমি অরং
উপস্থিত থাকিব । এবং ইহাও শুনিরা রাথ
ভবিব্যতে আমি সেধানে বাস করিব ছির
ক্রিয়াছি।"

প্রিল ভাগিলির কোন নীমাংগার উপর কোন রুভ্য আপত্তি উত্থাপন করা বে বাতুলতা তাহা সার্জিরাসের মত আর কেছ ।

জানিত না। তথাপি প্রিরতম প্রভুর এই

বিপজনক প্রতাবে তাঁহার হিডাকাজনী

এবং বিখাসী ভৃতাটি নিতাত শকাবিত হইবা

উঠিল। সে শত চেটাডেও মুখের ভাতিবিহনল
ভাব লুকাইতে পারিল না। জিল্লাসা
করিল,—

শ্বার আমার কর্ত্রীঠাকুরাণী ? প্রিলেস ভ্যাসিলি ? তিনিও কি ভলট্রোমার বাস করিতে বাইবেন ?"

প্রিন্স দৃঢ়বারে "হাঁ।" বলিরা উঠিরা দাঁড়া-ইলেন। সার্জ্জিয়ান বুঝিল ভাহাদের কথাবার্ত্তা এইথানে শেষ করাই প্রভুর অভিপ্রায়।

প্রিক্ষ ভ্যাসিলি প্রকৃত বীরপুরুষ,—
ভর কাহাকে বলে ভাহা তিনি জানিতেন না। জীবনে তিনি কখন, ভীত
হইরাছেন বলিয়া স্মরণ করিতে পারেন না।
কাহাকেও ভীত দেখিলে তিনি অধৈর্য হইরা
উঠিতেন। সার্জিয়াসের তথন সেই গৃহ
পরিত্যাগ ভিন্ন উপার রহিল না। ছারের
নিকট গিয়া সে একবার কিরিয়া দাঁড়াইল;
অভ্যন্ত বিনীতস্বরে বিলি,—

"হত্র! আইভ্যান ক্যারেশিন নামে একটি লোক নীচে বসিরা আছে। ভলট্রোমা সবদে নাকি কি প্ররোজনীর সুংবার আছে হজ্রকে ব্যতীত সে অন্ত কাহারও নিকট সে কথা বলিবে না।"

'এই লোক সম্বন্ধে সে তাহার প্রভূকে কিছু বলিবে, না বলিয়াই একণে হির ক্ষরিয়াছিল। কিছু ভাষার ক্ষরার ভনিরা প্রিক্ ভলট্রোমার ৰাস করিবার যত পরিবর্ত্তন করিতে পারেন এই আশার সে একণে এই কথা বলিল। প্রিক্ত বলিলেন,—"তাহাকে আদিতে দাও—আমি বে কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছি তাহাতে তাহার সংবাদে আমার বিশেষ উপকার হইতে পারে।" অবিশব্দে আইভ্যান ক্যারেলিন গৃহে প্রবেশ করিল। প্রিক্ত তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন,—"আমার নিকট তোমার কিছু বক্তব্য আছে?" মন্তক অবনত করিয়া একটু কম্পিভন্তরে লোকটি বলিল,—

"হাঁা হজুর !"

আইভান ক্যারেলিন দেখিতে থর্কাক্বতি ভাহার চকুছটি অভিশব্ধ উজ্জ্বল হইলেও তাহার মুখে ছর্কালতা এবং ধৈর্য্যাভাব স্পষ্টই প্রতীরমান হইতেছিল। এ সংসারে এক প্রকৃতির লোক আছে যাহারা সামান্ত হঃথ কটের সহিত বহুকাল ধরিয়া যুদ্ধ করিতে পারে না—অভি সহজেই ভালিয়া পড়ে; এবং কর্মনাচক্ষে চতুম্পার্শে শুধু বিপদরাশিই দেখিতে পার। আইভ্যান ক্যারেলিন সেই প্রকৃতির লোক।

প্রিকা বলিলেন.—

"বেশ—বেশ-—ত্মি কি বলিতে চাও সৰ খুলিয়া বল।"

"হজুর ! একটা কথা প্রথমে নিবেদন করি,
এখান হইতে আমাদের কথাবার্ত্তা কাহারও
ভানবার সভাবনা নাই জো ? আপনার ভূত্য
আনার আপাদমন্তক পরীকা করিরা আমাকে
এই গৃহে প্রবেশ করিতে দিরাছে—স্তরাং
আমা হইতে হজুরের কোন বিপদের সভাবনা নাই।" প্রিক্ত ভাবেন । নার্জিরানের এই

ক্রপ সাবধানতা তাঁহার বিরক্তি উৎপাদন করিত। তাঁহার বিবেচনার এসকল নিআনো-জন এবং বালকস্থলত।

"তোমার প্রতি এই ব্যবহার আমার আজার্মারে হর নাই ইহা বিখাস করিও। আমার :ভ্তাকে এজ যথোচিত শিক্ষা দিব। চল আমরা ভিতরের ঘরে বাই—সেধান হইতে কেহ আমাদের কথা শুনিতে পাইবে না।" প্রিন্স সেই গৃহের ঘার অর্গনাবদ্ধ করিয়া ক্যারেলিনকে লইয়া পার্শ্বের একটি অপেকাক্বত ক্ষুদ্র গৃহে প্রবেশ করিলেন। গৃহের মধাত্বলে একটি লিখিবার টেবিল—তাহার পার্শ্বের চেয়ারে উপবেশন করিয়া ক্যারেলিনের প্রতি চাহিরা বলিলেন,—

"তোমার যাহা বলিবার আছে এইবার বলিতে পার।"

"হজুর! আমার কাহিনী কুদ্র নর—
অধীনের প্রতি দয়া করিয়া একটু ধৈর্যধারণ
করিতে হইবে। আপনার সমূহ বিপদ উপস্থিত—সে বিপদ হইতে আপনাকে রক্ষা করাই
আমার এখানে আসিবার উদ্দেশ্র। সেই জ্ঞাই
সকল কথা বুঝাইয়া বলা নিতান্ত প্রবোজন।"

প্রিন্স ভ্যাদিলি গম্ভীর কঠে বলিলেন,—
"নিজের বিপদাপদের জন্ম আমি কিছুমাত্র
চিস্তিত নহি—বাহাহউক তোমার কথা বলিয়া
বাও।"

"হজ্র! আমি একজন "নজরবন্দী"— ।
আমি সাইবেরিরার প্রেরিত হইরাছিলাম।
আমার পঞ্চবিংশতি বংসর বরুসের সমর
নির্কাসিত হইরাছিলাম—নর বংসর সেখারে
ছিলাম। ছই বংসর হইল সেন্থান ইইতে
প্রশারন করিয়া আসিরাছি।"

শপ্তিক এই সমরে বলিলেন,—"আমার নিকট সেজস্ত তুমি সম্পূর্ণ নিরাপদ—তোমার কথা নির্ভরে বলিয়া ঘাইতে পার!"

শ্বাপনার বিরুদ্ধে একটি বড়যন্ত্র চলি-ভেছে—ভলট্রোমার দরবারে উপস্থিত হইলে আপনাকে হত্যা করা হইবে।"

"তুমি কি করিয়া জানিলে?"

প্রিন্সের কণ্ঠস্বর একটু বিক্রপাস্মক। "নিহিলিষ্ট সম্প্রদায় কর্তৃক আমি চর নিযুক্ত হইরাছি। ভলষ্টোমার আমাদের দলের যে স্কল লোক আছে তাহারা অত্যন্ত স্রল প্রকৃতির —কিন্তু অতাস্ত কঠোর এবং কার্যা-তৎপর। আমরা বছ বৎসর ধরিয়া তাহা-দিগকে শিক্ষা দিতেছি। এখনও তাহারা नक्षत्रवन्ती इत्र नाहे! श्रृ निरमत লোক এখনও তাহাদের নিতান্ত নিরীহ বলিয়াই নিজেদের জানে। তাহারা মতামত প্রতিবাসীর নিকটও প্রকাশ করে ना।"

"ও: তুমি ভাহাদের জ্ঞান? ভাহারা , কোথায় থাকে বলিভে পার ?"

প্রিন্স টেবিলের উপর একখণ্ড কাগজ লইয়া অন্তমনম্বে কি সব লিখিতেছিলেন। মনে মনে একটি সংকল্প স্থির করিতেছিলেন। ক্যারেলিনকে আর একবার পরীক্ষা করিবার নিমিত্ত বলিলেন,—

"তুমি কৈ করিতে যাইতেছ একবার ভাল করিয়া ভাবিয়া দেখ। নিজের অবশিষ্ট জীবন নিরাপদ্ধ করিবার জক্ত করেকটি সরল নিরীহ লোকের সর্কনাশ করিতেছ। তাহাদের মৃত্যুর পথ কিছা ভাহা হইতেও ভরন্কর গাই-বেরিরার নির্কাসকের পথ উলুক্ত করিয়া দিতেছ। বিশাস্থাতকতা অপেকা মৃত্যুকে আলিকন করা কি শ্রের নয় ?"

অত্যস্ত কাতরম্বরে আইভ্যান ক্যারেণিন উত্তর করিল,—

"হজুর! অত্যন্ত নির্ভীক শ্বদর হইলেও আপনি শান্তিপ্রিয়। আপনার হাদর উদার, মহারুত্তব, দরা করুণার পূর্ণ এবং পরহুংখে ব্যথিত। ইহা আমার অজ্ঞাত নহে। আপনাকে হত্যা করিয়া আমাদের সম্প্রদারের কি অভীষ্ট দিদ্ধ হইবে জানি না। আমি আপনাকে রক্ষা করিবার জন্তুই এথানে আদিরাছি। নিজেকে রক্ষা করাও আর একটি উদ্দেশ্র। আমি ইহা বিশ্বাস করি না যে আপনার স্তার মহৎ ব্যক্তির পক্ষে এই লোক করটির সর্বানাশ করা সম্ভবপর। আপনি শুধু ইহাদের অভিসন্ধি ব্যর্থ করিয়া দিয়া"——

বাধা দিয়া প্রিন্স বলিলেন,—আমার কর্ত্তব্য আমি নিজেই নিরূপণ করিতে পারিব।"

তাঁহার মুথ দেখিয়া মনে হইল ভিনি কর্ত্তব্য স্থির করিয়াছেন।

"তোমাদের সম্প্রদারের এই আজ্ঞাধীন যন্ত্র কয়টি কে ?"

শনাইকেল পেটোভিচ ও তাহার পুত্র
সাইনন! তাহারা ব্যবদারে মুচি—মন্থা
রোডের উপর একটি কুল কুটিরে বাদ করে।
তাহাদের সহিত এই বড়বত্রে আর একটি
লোক আছে—তাহার নাম নিকিটা এপ্টোনিক—সে ডাক্তার। আগামী বুধবার সন্ধা
গটার সময় তাহারা ভিনজনে পেটোভিচের
কুটিরে আমার জন্ত অপেকা করিরা থাকিবে।
সেই কুটিরে ইহারা ব্যতীত মাত্র সাইবনের

স্বী মেরারা ও তাহার একটি শিশু পুত্র আছে। তাহাদের বাসস্থান বাহির করিরা লওরা অত্যন্ত সহজ হইবে। ঐ রান্তার উপর সর্বশেষ কুটিরে তাহারা বাস করে। নিকট-বর্ত্তী অত্যান্ত কুটির অপেকা ইহা অনেক কুত্র ও ক্রম্ভাণ

"এই তিনটি লোকের আকৃতি সম্বন্ধে আমাকে কিছু বলিতে পার ?"

"না ছ**জু**র! আমি তাহাদিগকে কখনও চক্ষে দেখি নাই।"

"তাহারা তোমাকে কথনও দেখিয়াছে? তোমার আফুতি সম্বন্ধে তাহাদের কোন জান আছে?"

"না হুজুর ! এই আংটি মাত্র আমার সঙ্কেত চিহ্ন। ইহা আমি আপনাকে দিতে পারি।"

ক্যারেলিন তাহার পকেট হইতে একটি স্বর্ণমন্ন অঙ্গুরী বাহির করিয়া প্রিন্সের সমূথে স্থাপন করিল। তিনি অসাবধানে একবার তৎপ্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন,—

"অন্ত কোন প্রকার সঙ্কেত নাই ? কোন প্রকার অভিবাদন বা ফরমাইস ?"

"না হজুর! এই তিনটি ব্যক্তি সম্প্রদারের মগুলিভূক্ত নহে। ইহাদের প্রতি ব্যবহারে সরলতাই শ্রেম এবং নিরাপদ।"

প্রিন্স ভ্যাসিলি উঠিয়া দাঁড়াইয়া বলিলেন,
"আইভ্যান ক্যারেলিন! তোমার কথাই
ঠিক। আমি এই সরণ নিনীহ লোক
তিনটিকে শান্তি ভোগ করিতে দিব না।
কিছ ভূমি বোধ হয় ব্যিতেছ বে তোমার
বিশাস্থাক্তা ইহাদের নিকট প্রকাশ
হইবে।"

"আজা হাঁ হত্ব! আমি তাহা জানি—
কিন্তু আমি একবার ইংলও বা আমেরিকার
নিরাপদে পৌছিতে পারিলে এখানকার
বন্ধবার্ধবদের মতামতে আমার বিশেষ কিছু
ক্ষতি হইবে না। আপনার ক্রপা হইলে
নির্বিদ্ধে এদেশ ছাড়িতে পারিব সেই আশাতেই এই হংসাহসিক কর্ম্মে প্রবৃত্ত হইরাছি।"
"না আইভ্যান ক্যারেলিন! তাহা
হইবে না।" বিচারকের দণ্ডাক্যা প্রদানের

ন্তায় প্রিন্সের কণ্ঠস্বর ধীর এবং গল্পীর।

"না আইভ্যান কাারেণিন! তাহা হইতে বিধান । তোমার আর বিধানপাতক বাঁচিরা থাকা নিরাপদ নহে—অন্ত দেশে বাইরা শুকুতর অপরাধ করিবার জল্প তোমাকে বাঁচিরা থাকিতে দিতে পারিব না। তোমার মত বিধানপাতক আর নাই। তুমি কুবরাজের নিকট বিধান্থাতক এবং তোমার সম্প্রদারের নিকট বিধান্থাতক। তোমার উপযুক্ত একমাত্র দশু—মৃত্য়!"

কিছুক্ষণের জঞ্চ উভয়ে নীরব !

আইভান ক্যানেলিন দেওরালের নিকট হিরিয়া গিয়া প্রিক্ষ ভ্যাসিলির স্থানীর্থ গন্তীর মূর্ত্তির প্রতি মন্ত্রমুথেরে ভ্যার চাহিয়া রহিল। প্রিক্ষ টেবিলের দেরাজ হইতে একটি পিন্তল বাহির করিলেন। তাঁহার অভিপ্রার, তাঁহার ধীর, গন্তীর, শান্ত এবং সতর্ক ব্যবহারেই প্রতীয়মান হইতেছিল। ক্যানেলিন নিশ্চিত বুঝিল এই নির্ভীক হাদর প্রিক্ষ তাঁহার প্রতিক্রা পালন করিবেন। ভবন ভাহার স্বাভাবিক বিবেষ আবার ফিরিয়া আদিল সে অত্যন্ত গর্মিত ভাবে মন্তক উত্তোলন করিয়া দাঁড়াইয়া অবক্রাপূর্ণ ব্বরে বলিল,

"জত্যাচারী পাবও! মৃত্যুকে আমি তৃচ্ছ জান করি।" আত্মসংঘনের যথেষ্ট চেষ্টা ধাকিলেও ভাষে তাহার কঠন্বর কম্পিত হইতে-ছিল।

প্রিন্ধ বিনাবাক্যে পিন্তল ছুঁড়িলেন !
সার্জ্জিরাস বাহির হইতে পিন্তলের আওরাজ
গুনিরা অত্যন্ত ভীতম্বরে চীৎকার করিয়া
উঠিল; রুদ্ধধারে পুনঃ পুনঃ করাঘাত করিতে
লাগিল। প্রিন্স ধীরভাবে আসিয়া দার উন্মোচন
করিয়া কহিলেন,—

"ঐ গৃহে একটি মৃতদেহ আছে। এ
সম্বন্ধে ধেখানে যেখানে সংবাদ দিবার
প্রয়োজন অন্তই দিবে। সাক্ষী দিবার
প্রয়োজন হইলে আমি দিব। যাহাতে আজই
সব শেষ হইয়া যায় তাহা করিবে। আমি
ভলট্রোমা অভিমুখে মঙ্গলবার যাতা করিব।
বেমন করিয়া হউক ব্ধবার সন্ধ্যা ছর ঘটকার
সময় সেখানে পৌছিতে হইবে।"

3

মাইকেল পেট্রোভিচ তাহার কুটরের মুক্তবারের নিকট দণ্ডারমান হইরা একাপ্তচিত্তে নগরের অপর প্রাস্তস্থিত তোপের আওয়াজ শুনিতেছিল। বৈকালে এক পদলা বৃষ্টি হইয়া অর অর বরফ পড়িতে আরস্ত হইয়াছে। দীন দরিদ্রের উৎকন্তিত চিত্ত ব্রিল ইহাই শীতের প্রারস্ত ! মাইকেল তাহার দ্রীর্য এবং বিকৃত অঙ্গুলির অপ্রভাগে তোপের সেই ভয়য়র আওয়াজগুলি গণনা করিতেছিল। কুটিরাভারতের তাহার পুত্র সাইমন একটি ক্ষে টেবিলের নিকট বিসিয়া, ওয়াজপুর্ণ দৃষ্টি দেওয়ালের প্রতি স্থাপিত করিয়া ভাহার নৃতন কর্তব্য ভাল করিয়া ক্ষমের করিবার

বৃধা চেষ্টা করিতেছে। তাহার কিশোরী পত্নী ভীত এবং উদ্বিগ্ন ভাবে তাহাকে নানা প্রকার প্রশ্ন করিতেছে।

মাইকেলের গণনা শেষ হইল। সে কুটিরে প্রবেশ করিরা ছার রুদ্ধ করিরা হাসিতে হাসিতে বলিল,—

"প্রিন্স ভ্যাসিনির তোপ! প্রিন্স আসিরা পৌছিলেন! খুব আমোদ করিতেছেন— না সাইমন ? খুব আমোদ ? হাঃ হাঃ হাঃ।" মেরারা বলিন,—

"নিকিটা এণ্টোনিক কোথায় ? সে ভো এথনও আদিল না।"

মাইকেল উদিশ্বভাবে বলিল,—ইঁগা—ইঁগা— তাই তো! তাহার বড়ই দেরী হইতেছে— সাতটা প্রায় বাঙ্গে।"

সাইমন বলিল,---

"বান্তবিক্ই বড় বিলম্ব করিতেছে। কে এখন—কি তাহার নাম বাবা—ভাহার সঙ্গে কথাবার্তা চালাইবে ? আমি তোঁ—

ু মাইকেল তাড়াতাড়ি বলিয়া উঠিল,— "আইভ্যান ক্যায়েলিন! আইভ্যান ক্যায়ে-লিন! তাহায় নাম আইভ্যান ক্যায়েলিন-— ভূলিও না।"

পকেট হইতে একথানি কৃদ্র পুস্তক বাহির
করিয়া মাইকেল ঈবৎ কোমলম্বরে বলিতে
লাগিল,—"হাঁ৷ আইভ্যান ক্যারেলিন—
আমাদের গুরু। সাইমন ৷ শোন তিনি
তাঁহার পুস্তকে কি লিথিয়াছেন—আমরা
যদি সতাই স্বাধীনতা চাই তবে আমাদের
প্রত্যেকেরই মৃত্যুকে আলিজন করিবার জন্ত
প্রস্তুত থাকিতে হইবে। আমরা একজন
আন্দ্রোৎসর্গ করিলে লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ লোককে

ষাধীনতা দিতে পারিব একথা যেন এক
মৃহর্তের জক্ত বিস্মৃত না হই। শোন সাইমন!
আমরা পিতাপুত্রে ইচ্ছা করিলে লক্ষ লক্ষ
লোককে রক্ষা করিতে পারি। ইহা কি
বিস্মাকর ব্যাপার নহে? আরও বিস্মাকর
আইভ্যান ক্যারেলিন আজ এই গৃহে পদার্পণ
করিবেন। আজ আমাদের উৎসবের রাত্রি
সাইমন! উৎসবের রাত্রি।"

শেরায়া করুণস্বাবে জিজ্ঞাসা করিল,—
"এবার কি গ্র্যাণ্ড ডিউক ভ্যাসিলির পালা
পিতা? কালই কি তাঁর শেষ দিন ?"

*হাঁ। প্রিন্স ভ্যাসিলি কান। আগামী
মাসে আর একজন—তার পরের মাসে
আবার একজন। এই রকম চলিবে—
বত্তদিন না আমাদের ভরে তাহারা কম্পিত
হইবে তত্তদিন ইহার শেষ নাই। তারপর
আমরা বাঁচিয়া থাকিবার অধিকার পাইব।
ব্রিলে মেরায়া ? আমরা বাঁচিয়া থাকিবার
অধিকার পাইব। এখন যে বাঁচিয়া আছি
ভাহা অপেকা মৃত্যুও শ্রের।"

মেরারা একটু চিস্তাপূর্ণ স্বরে বলিল,—
"আমি প্রিস্ন ভ্যাসিলিকে একবার পিটার্সবার্গে দেখিরাছিলাম।"

সাইমন অমনি ব্যস্তভাবে বলিয়া উঠিল,—
"সভ্যি ? বল বল সে সম্বন্ধে সব কথা বল।"
সাইমন তাহার পদ্মীর অভিজ্ঞতা সম্বন্ধে
একটু গর্মিত কেননা তাহারা পিতা পুত্রে
কথনও তাহাদের জ্লাস্থান পরিত্যাগ করে
নাই। তাই এই পৃথিবী সম্বন্ধে তাহারা
নিতার্ক্ত অনভিজ্ঞ।

^{া হৈৰ}বাৰা পূৰ্ববং প্ৰনে বলিতে লাগিল,— **"আঃ—তিনি কি আমানে**র মত ? তাঁহার চেহারা কেমন স্থলার—কত গঞ্জীর, কত মহৎ কত গৌরবাহিত!" মাইকেল স্থণ ভরে বলিয়া উঠিল, "ঈদ্!"

মেরায়া বলিক্স বাইতে লাগিল,—
"তাঁর জ্বন্ত আমার বড় কট হয় তাঁর কাল
মরিতে হইবে ভাবিয়া বড় ছ:খ হয়। তিনি
বড় ভাল।" মাইকেল চীৎকার করিয়া
উঠিল, "বাস—বাস।"

ষাহাকে সে অত্যাচারকারী পাবগু বলিয়া ঘণা করে তাহার জন্ম এই কাতরতা দেখিয়া সে ক্রোধায়িত হইয়া উঠিল। সে আরও কি বলিতে যাইতেছিল—কিন্তু অকন্মাং গবাক্ষ পথে একটি মন্থ্য মুগু দেখিয়া চুপ করিয়া গেল।

"এই যে নিকিটা! ভোমার এত দেরী হইল কেন? এস—এস—দরজা খুলিয়া দিতেছি।"

সাইমন উঠিয়া দ্বার উদ্বাটন করিল।
নিকিটা কুটিরে প্রবেশ করিয়া দ্বার পুনরার
অর্গলাবদ্ধ করিয়া হাঁপাইতে হাঁপাইতে বলিল,
—"নর্প্রনাশ হইয়াছে! সর্প্রনাশ হইয়াছে!
আইভ্যান ক্যারেলিন ধরা পড়িয়াছে। দ্বলী
থানেক হইল একটা দোকানে ছজন লোক
বলাবলি করিতেছিল। তাহারা অবশু কাহারও
নাম করে নাই—কিন্তু আমি নিশ্চয় জানি
সে আইভ্যান ক্যারেলিন। এমন কি
হইবে? সব কথাই তো তাহা,হইলে প্রকাশ
হইয়াছে। আমি তথনই"—

মাইকেল ভাহাকে কথা শেব করিতে দিল না। চীৎকার করিয়া উঠিল,—

"অসম্ভব! আইন্ড্যান ক্যারেলিন ধরা পড়িবে? বে একবার বৃদ্ধিবলে সাইবেরিরা হইতে প্লারন করিরাছে সে ধরা পড়িবে ? আনি বিধাস করি না।"

"মিথাা নয়—সব সতা। পুলিশ হয়তো এখনই এখানে আসিয়া পাড়িবে। আমানেয় কাগলপত্র সব এখনই নষ্ট করিতে হইবে— দে সব কোথায় ?"

সাইমন এতকণ কিংকর্তব্যবিমৃঢ্যের
তার একপার্থে দাঁড়াইরা ছিল। নিকিটার
শেষ কথা শুনিরা ক্রতপদে বাইরা তাহাদের
ক্তা সেলাই করিবার যন্তের বাল্লটি লইরা
আসিল। তাহার অভ্যস্তরে একটি শুপ্ত
দেরাজ খুলিরা একটি পুলিন্দা বাহির করিল।
তাহারা চারিজনে মিলিরা তাহার মধ্য হইতে
একটি একটি করিরা কাগজ আগ্নিতে সমর্পণ
করিতে লাগিল। সহসা সাইমনের কি শ্বরণ
হইল। সে বলিল,—

"বা:—আইভ্যান ক্যারেলিনের বই ধানা কি নষ্ট করা উচিত ?" নিকিটা বলিল,—

"অবশু—অবশু—সেধানা আমাদের একটি প্রমাণ। সৈধানা সর্বাত্যে নষ্ট করা উচিত।"

মাইকেল উভর হল্তে পুস্তক থানা বক্ষে চাপিয়া ধরিয়া বলিল,—

"কথনই নর---এখানা আমি নট করিতে দিব না।"

নিকিটা বেজার রাগিরা উঠিল,—"বিপ-দের সময় পাগলামী করিও না। দাও-বই ধানা দাও। পুলিশ হয়তো আসিয়া পড়িল।"

গৰ্মিত খবে মাইকেল বলিল,—"সে জন্ত আমি কিছুমাত্র চিন্তিত নহি। আমাকে হত্যা না করিয়া এখানা কেছ হন্তগত করিতে গারিবে না।" মাইকেল অতি বত্ত্বে বই খানা পকেটে পুরিল। সাইমন বলিল,—"বৃথা চেষ্টা নিকিটা! উহা পিতার বাইবেলের স্থান্ত প্রিয়।"

"বাক্—আনার কুজ যন্তটি আগগে শেষ করা যাকৃ তার পর দেখা যাইবে।"

নিকিটার "কুদ্র যন্ত্রটি আর কিছুই নয়— একটি বোমা। প্রিন্স ভ্যাসিলিকে ভত্তা করিবার জন্ত সে আত যত্নে প্রস্তুত করিয়া-ছিল। উহার লুকায়িত স্থান ও তাহারা অতি কৌশলের সহিত প্রস্তুত করিয়াছিল সভা, কিন্তু পুলিশের প্রথর দৃষ্টির নিকট ভাছা অধিককণ লুকান্বিত ণাকিত কিনা সন্দেহ। গৃহের এক কোণে শীতকালে অগ্নি জালিবার क्छ এक है नुबन हुन्नो श्रष्ठ बहेबाहिन। বোমাটি তাহারই নিমে সম্বন্ধে রক্ষিত হইয়া-ছিল। গৃহতলের কতকটা স্থান গর্ব করিয়া বোমাটি তাহার বুহৎ টালি ছারা আবুত করিয়া চুল্লীটি তাহার উপর প্রস্তুত করা হইয়াছিল। সাইমন ও নিকিটা উভরে मिनिया इरें हि राजुरी बाता तरे हुन्नी छ ख করিতে উন্মত হইল।

অকস্মাৎ সেই গভীর নিস্তব্ধতা ভঙ্গ করিরা কুটির বাবে কে করাযাত করিল। মুহুর্ত্তের জন্ত সকলেই নীরব! অজ্ঞাত অমঙ্গল প্রত্যা-শার নিকিটার ললাট বর্দ্মাক্ত হইরা উঠিল। স্থদীর্ঘ নিশাস ছাড়িরা অস্টুট বরে সে বলিল,— "আর রক্ষা নাই।"

অত্যন্ত উৎস্থক ভাবে মাইকেল্ বলিন,—
"হয় তো আইভ্যান ক্যায়েলিন।" সাইমন
উন্মুক্ত গবাক্ষের প্রতি অঙ্গুলী নির্দেশ করিয়।
কহিল,—"পুলিশ হইলে সর্বাগ্রে ঐ স্থান
হইতে'দেখিত।"

ছিল, তাই তিনি তাহাকে গৃহান্তরে গমন করিতে আদেশ করিলেই সে তাহা প্রতিপালন করিল। প্রিন্স বলিলেন,—

"এইবার কার্য্যে প্রবৃত্ত হওরা যাক্।" গৃহে একথানি চেরার ছিল প্রিস্সের জন্ত তাহা নির্দিষ্ট হইল। নিকিটা, মাইকেল ও সাইমন কার্ছের বেঞ্চিতে আসন গ্রহণ করিল। নিকিটা প্রথমে কথা কহিল,—

"আমরা মনে করিয়াছিলাম আপনি ধরা পড়িয়াছেন।"

প্রিন্স হাস্ত করিয়া উঠিলেন,—
"আমি? না—না—বে পাখী একবার জালে
পড়িরা মুক্তি পান, তাহার পুনর্কার জালে
পড়িবার সম্ভাবনা অতি অল্প।"

মাইকেল গর্বভারে নিকিটার প্রতি চাহিয়া
মৃত্যহাস্ত করিল। নিকিটা একটু অপ্রস্তত
ইয়া কহিল,—"এতদূরে আমরা সব সঠিক
সংবাদ পাই না।" প্রিন্স জিজ্ঞাসা করিলেন,—

"তারপর কালকার কার্য্য সপ্তের কি ঠিক করিয়াছ ?"

মাইকেল বলিল,—"কালকার কার্য্য সহক্ষে আমি একটুও ভীত নই। আপনি উপলেশ দিলে আমার কর্ত্তব্য আমি পালন করিতে পারিব।"

"ভোমরা আমাকে সম্পূর্ণ বিশ্বাস কর ?"
অন্ত কেহ উত্তর দিবার পূর্ব্বে মাইকেল
ভাড়াভাড়ি কহিল,—"আমরা আপনাকে
সম্পূর্ণ বিশ্বাস করি-সম্পূর্ণ।"

প্রিক্স কিরংকাল নীরব রহিলেন।— তিনি আসিবার সময় তাঁহার কর্ত্তব্য কিছুই হির ক্রিরা আসেন নাই। তাঁহার প্রতি এই তিনটি প্রাণীর কি ভাব তাহাও তিনি অবগত নহেন। কিছুকণ পরে তিনি জিজাসা করিলেন,—"তোমরা প্রিস ভ্যাসিলিকে কথনও দেখিয়াছ? তাহার সম্বন্ধে তোমরা কিজান?"

তিনজনে একবাক্যে বলিয়া উঠিল,—

"না—আমরা তাঁহাকে কখনও দেখি
নাই; আমরা তাঁহার সহছে আর কিছু জানিতে
চাহি না। আমরা তথু জানি তিনি একজন
অত্যাচারী প্রজাউৎপীড়ক জমীদার। এই
জ্ঞানই আমাদের পক্ষে যথেষ্ট।"

তাহাদের কণ্ঠন্বর কঠোর ! প্রিন্স তাহাতে কিছুমাত্র ক্রক্ষেপ না করিয়া কহিলেন—

"হাঁা হাঁা ঠিক কথা। কি**স্ক**েতামন্না ভাঁহাকে চিনিবে কি ক্রিয়া ?

নিকিটা বলিল—"দরবারে প্রধান ব্যক্তিকে চিনিয়া বাহির করা থুব অসাধ্য ব্যাপার নয়।"

মাইকেল উত্তেজিত হইয়া আপন বক্ষে
হন্তার্পণ করিয়া কহিতে লাগিল—

"আমার হানর আমাকে বলিরা দিবে। আমি আনি তাহার সন্মুখীন হইবামাত্র আমার সমস্ত শরীর স্থান্য সন্কুচিত হইবে। তাহার উপস্থিতি আমি শিরার শিরার অন্তব করিব। সহস্র মন্থব্যের মধ্যেও সে আমার দৃষ্টি এড়াইতে পারিবে না।"

প্রিস ভ্যানিলি ধীর শাস্তব্বরে বলিলেন—
"দেখিতেছি আমি আসিয়া ভালই ,
করিয়াছি। নিকিটা এপ্টোনিকে ভোমার
কথার উত্তর এই ধে, দরবারের প্রধান
ব্যক্তিকে চেনা সহজ বটে কিন্ত প্রিস
ভ্যানিলি বে দরবারের প্রধান ব্যক্তির হুানী
অধিকার করিবেন তাহা তুমি নিশ্চর করিয়া

বলিতে পার কি ? তোমরা কি জাননা যে এই সব কার্যো প্রারই পল কার্সনেফ 'প্রিন্সের স্থান অধিকার করে ? আর মাইকেল পেট্রোভিচ! তোমাকে বলিতেছি পাগলের মত কতগুলা বকিলেই এই সব কার্য্য সম্পাদন হয় না।"

প্রিম্পের তিরস্কারে কিঞ্চিৎ লজ্জিত হইয়া মাইকেল বলিল,—"আপনি কি মনে করেন আমি তাহাকে চিনিতে পারিব না ?"

"মনে করিব কি ? আমার সে বিষয়ে কোন সন্দেহই নাই। তোমরা কি প্রিজ্ ভ্যাসিলিকে সভ্যই স্থা কর ?"

মাইকেল পুনরায় উত্তেজিত হইরা উঠিল,—"সমস্ত হালয় মন দিয়া মাহুষের মাহুষকে যতদুর মুণা করা সম্ভব, আমি"—

বাধা দিয়া দুঢ়স্বরে প্রিন্স বলিলেন.—

"না—তোমরা ঘুণা কর তাহার কালনিক দোষগুলিকে। তাহার অত্যাচার তাহার নিষ্ঠুরতা—তাহার স্বেচ্ছাচারিতা, তাহার ফুলমহীনতা,—তোমরা তাহার কথা মনে করিলেই এই দোষগুলি তাহার প্রতি আরোপ কর। যাহাকে কক্ষনো চক্ষে দেখ নাই তাহাকে ঘুণা করা কি সম্ভব ? তোমরাই একবার ভাল করিয়া ভাবিয়া দেখ না?"

তাহার। একথার কোন উত্তর দিতে পারিল না। মাইকেল লজ্জিত হইরা মন্তক অবনত করিয়া আপেন পদস্বর নিরীক্ষণ করিতে লাগিল, নিকিটা মাথা চুলকাইতে চুলকাইতে জিজ্ঞাস। করিল—"তা—তা তবে কেমন করিয়া তাহাকে চিনিব ?"

"প্রিস গৃহ মধ্যে পাদচারণা করিতে উরিতে কহিলেন— "সেটা বোধ হয় খুব কঠিন হইবে না— আমি বিশ্বস্ত স্থাতে অবগত হইয়াছি প্রিক্ষ আপনার নির্দিষ্ট আসন গ্রহণ না করিলেও দরবারে উপস্থিত থাকিবেন।"

নিকিটা জিজাসা করিল—"কি করিয়া তাহাকে চিনিব ?"

ঈষৎ হাস্ত করিয়া প্রিন্স কহিলেন, "আমাকে খুঁজিও, দেখিতে পাইলে কাছে আসিয়া কার্য্য সম্পাদন করিও।"

মাইকেল একটু বিরক্তভাবে বলিল— "আপনার কথা বুঝিলাম না।"

निकिंग विनन, "वाभित ना।"

প্রিন্স বড়ই বিপদগ্রস্ত হইলেন। কি
ভাবে আত্ম পরিচয় দান করিবেন চিস্তা
করিতে লাগিলেন। কিয়ৎকাল সকলেই
নীরব। বাহিরে প্রবল ঝাটকা বহিতেছিল
ক্ষমধারের ক্ষুত্র ছিন্ত দিয়া অয় অয় বায়
প্রবেশ করিয়া গৃহস্থিত প্রদীপের সহিত ক্রীড়া
করিতে লাগিল। কিছুক্লণ নীরব থাকিয়া
প্রিন্স বলিলেন "প্রিন্স ভ্যাসিলি ও আমার
মধ্যে এত সাদৃশ্য বে উভয়কে ভিন্ন করিয়া
চেনা কষ্টকর।"

মাইকেল আপন মনে মৃহস্বরে বলিতে লাগিল—"অভূত— অভূত।"

"এত সাদৃশ্য, বে কাল যথন তোমরা প্রিন্সকে দেখিবে তখন নিশ্চয়ই একবাকো বলিয়া উঠিবে—"একি! ইহাও কি সম্ভব? এ যে আইভ্যান ক্যারেলিন!"

"নিকিটা অত্যন্ত বিরক্ত হইরা বলিল— "এসব ঠাটা ভাল লাগে না।" প্রিক্স বলিলেন:—"বড়ই ছঃখের বিষয় বে ভোমাদের মধ্যে এমন কেহই নাই যে প্রিক্সকে দেখিরাছে, তাহা হইলে এখনই সন্দেহ ভঞ্জন করিয়া দিতাম।"

সাইমন এতক্ষণ নীরবে বসিয়াছিল। প্রিন্সের কথা শুনিয়া সাগ্রহে বলিল—

"মেরারা প্রিন্স ভ্যানিলিকে দেখিরাছে।"
প্রিন্স বিশ্বিতের স্থার ভান করিয়া
কহিলেন:—"মেরারা? মেরারা কে? যে
মেরেটী আমাকে হার খ্লিরা দিরাছিল? বেশ
ভো ভাহাকেই ভাক।"

় এই বলিয়া অন্ত কাহারও অপেকা না করিয়া নিকেই ডাকিলেন.

"মেরায়।" কোন উত্তর না পাইয়া পুনরায় উচ্চকঠে ডাকিলেন—"মেরায়।"

মেরায়া বার উন্মোচন করিয়া ভীতস্বরে জিজ্ঞানা করিল—

"ৰামাকে ডাকিতেছেন ?"

প্রিক্স অগ্রসর হইরা তাহার চক্ষুর প্রতি আপনার, তীক্ষ স্থির দৃষ্টি স্থাপন করিরা কহিলে—"মেরারা! তোমার স্থামী বলিতেছে তুমি প্রিক্স ভ্যাসিলিকে দেখিরাছ! ইহা কি সভ্য?" মেরারা উত্তর করিল—"হ্যা!"

"তিনি কি ঠিক আমার মত দেখিতে ঠিক বল।" মেরায়া কি উত্তর দিবে বৃথিতে পারিল না। তাহার তীত নয়ন প্রিসের প্রতি স্থাপিত করিয়া নীরব রহিল। প্রিক্ষ প্ররায় একটু ব্যস্তভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন—

শ্প্রিন্স ভ্যাদিলির সহিত কি আমার কোন সাদৃশ্র আছে ?"

বেরায়া এইবার উত্তর করিল "হাঁ।"
"আয়াকে প্রিন্স জ্যাসিলি বলিয়া ভূল করা কি সম্ভব ?" "হাঁ।" বেচারা মেরারা ফ্রন্মের ভার আর স্থ্ করিতে পারিল না—কাঁদিরা ফেলিল।

প্রিফা বলিলেন; "বেশ এবার তুমি বাইতে পার।"

মেরারা প্রস্থান করিলে তিনি কিরিয়া বলিলেন—

"গুনিলে? , এখন তোমাদের প্রিন্সকে খুঁজিয়া বাহির করা অত্যস্ত সহজ হইবে।"

নিকিটা ঘুণাপূর্ণ স্বরে বলিল — "এই সাদৃশুতে আপনি খুব গর্বিত দেখিতেছি।"

প্রিন্স হাসিয়া বলিলেন,—

"ইহাতে গর্ব করিবার কি আছে। ভগবান আমাকে যে আক্রতি দিয়াছেন আমি তাহাতেই সম্ভষ্ট আছি।"

নাইকেল কহিল, তাহা হউক—আক্ততে সাদৃগ্য থাকিলে প্রকৃতিতে নাই ইহা নিশ্চিত।" প্রিম্স ভ্যাদিলি অতি ধীরে ধীরে বলিলেন —"প্রিম্স ভ্যাদিলির অনেক গুণের কথাও শুনিয়াছি।"

তাঁহার শ্রোভ্বর্গ জ্রুঞ্চত করিল। প্রিস পুনরায় কহিলেন,—

"গুনিরাছি তিনি অতি নির্ভীক ধানর। নিকিটা বিক্রপের স্বরে কহিল—"নির্ভীক হানর হওয়া উহাদের পক্ষে বড়ই সহজ্ব।"

প্রিস বৃথিলেন ইহাদের দ্বণা এত গভীর
বে তাঁহার স্বপক্ষে একটা কথা শুনিভেও
ইহারা প্রস্তুত নহে। তিনি নীরবে বিসিরা
তাঁহাদের বক্তব্য শুনিতে লাগিলেন। তাহারা
কত ক্ষুত্র ক্ষুত্র ঘটনার কথা বলিতে লাগিল।
প্রিস ভ্যাসিলির ভ্তাবর্গ দ্বারা বে সব্
ভাত্যাচার নিষ্ঠুরতা এবং হত্যাকাও তাহারী
স্বচক্ষে দেখিয়াছে ভাহা বলিল। প্রিস্কে

তাহারা অপবারী, এবং প্রজার স্থ তুঃথ সম্বন্ধে অত্যস্ত উদাসীন জমীদার কলিয়া চিত্রিত করিল। সর্বশেষে তাহারা দূঢ়বাক্যে বলিল নিষ্ঠুর শাসন হারা এতকাল যাহারা অজ্ঞান, নিরীহ এবং ত্র্বল প্রজার উপর অত্যাচার করিয়াছে তাহা-দিগকে ভয়াভিত্ত করিবার জৃত্ত তাহাদের ক্তুল শক্তি তাহারা যথাসাধ্য প্রয়োগ করিবে।

মাইকেল বলিল, "আপনি আমাদের অবিখাদ করিবেন না। সময় আদিলে প্রাণের ভয়ে আমরা কর্ত্তব্য অবহেলা করিব না। আপনার পৃস্তকে আপনি কি লিথিয়া-ছেন ?" মাইকেল পকেট হইতে পৃস্তক বাহির করিয়া পড়িতে লাগিল—

"আমরা যদি সতাই স্বাধীনতা চাই তবে আমাদের প্রত্যেকেরই মৃত্যুকে আলিঙ্গন করিবার জন্ম প্রস্তুত থাকিতে হইবে। একজন আত্মোৎসর্গ করিলে লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ লোককে স্বাধীনতা দিতে পারিব। একথা এক মৃহুর্তের জন্মও বিশ্বত হইলে চলিবে না।" আপনি নিজে একথা লিখিয়াছেন—আপনি আমাদের শুরু। আপনার মহৎবাক্য হাদয়ঙ্গম করিয়া আমরা মৃত্যুর জন্ম সম্পূর্ণ প্রস্তুত আছি।"

প্রিস মাইকেলের হস্ত হইতে পুস্তক
খানা গ্রহণ করিয়া ভাহার পাতা উণ্টাইতে

উণ্টাইতে বলিলেন—"এ সব কথা লেখা বড়

শহন্ত কিন্তু মাহুষকে হত্যা করা বড় কঠিন
ব্যাপার এবং সম্পূর্ণভাবে নিজের আয়জাধীন
উপার হানকে হত্যা করা কঠিনতম ব্যাপার।'

মাইকেল পুস্তক খানা প্রতি গ্রহণ করিয়া তাহা বঁথাস্থানে রক্ষা করিয়া কহিল,— "সহজ হউক কঠিন হউক—ভাহাকে বধ করিতে কুঠিত হইব না।"

"তোমরা কথনও কাহাকেও হত্যা করিয়াছ কি ?

তিন জনেই মন্তক সঞালন করিয়া কহিল "না"। প্রিন্স উঠিয়া দাঁড়াইয়া কহিলেন—

"আমি আৰু কয়েকদিন হইল একজনকে হত্যা করিয়াছি। তোমাদের নিকটে সে সব কথা বলিতে আদিয়াছি। তোমাদের এথানে দৃঢ় রজ্জু আছে ?"

নিকিটা আশ্চর্য হইয়া জিজাসা করিল— "রজ্জুকেন ?"

"প্ৰয়োজন সাছে"

সাইমন গৃহ কোণ হইতে একটা দীর্ঘ এবং দৃঢ় রজ্জু আনম্বন করিল। প্রিন্স বলিলেন—

"আমার হস্তদ্বর পশ্চাদ্দিকে দৃঢ়রূপে বন্ধন কর। সাইমন ও নিকিটা আশ্চর্য্য হইরা প্রস্পরের দিকে চাহিল। প্রিন্স বলিলেন—

"আমার আজ্ঞা পালন কর—এখনই শব কথা বুঝিবে"। তাহারা উভরে মিলিরা তাঁহার আজ্ঞা পালন করিল। তিনি কহিলেন "বন্ধন দৃঢ় কর আঘাত দিবার ভয়ে ভীত হইও না।"

তাঁহার আজ্ঞা প্রতিপালিত হইলে তিনি একটু দুরে সরিয়া দাঁড়াইলেন। তাঁহার গন্তীর মূর্ত্তি আরও গন্তীর দেখাইতে লাগিব। তিনি তাঁহার কাহিনী বলিতে আরম্ভ করিলেন।

"গুই দিন পূর্বে একটা অপরিচিত লোক আমার সাক্ষাৎপ্রার্থী হইয়া আমার গৃহধারে উপস্থিত হইল। অপরিচিত লোককে গৃহ আবেশ করিতে বেওরা আমানের নিয়ম বিরুদ্ধ,
কিন্তু ভর জিনিবটার সহিত আমার চিরশক্ততা
ভাই আমি কিছুমাত্র ভাত না হইরা আমার
বসিবার গৃহে ভাহাকে প্রবেশ করিতে দিতে
আমার ভ্তাকে আদেশ দিলাম।" নিকিটা
অম্পাইষরে আপন মনে কি বকিতে লাগিল।
প্রিচ্স বলিরা যাইতে লাগিলেন; "সেই
লোকটা আমাকে একটা বড়বত্তর হইরাছ
সেই রকমেরই একটা বড়বত্ত। কিন্তু সে
কাপুরুষ। পুর্বের একবার গৃত হইরাছিল বলিয়া
ভাত হইরা আত্মরক্ষার জন্ত আমার নিকট
উপস্থিত হইরা সকল কথা জ্ঞাপন করিল।"

মাইকেল জিজ্ঞাসা করিল "তাহার নিজের কার্যা সে বুঝি আপনার উপরে গুন্ত করিতে চাহিল ?"

"না তাহা নয়, সে নিজের অবশিষ্ট জীবন নিরাপদ করিবার জন্ত সঙ্গীদিগকে ধরাইয়া দিতে গিরাছিল। সে এই সম্বন্ধে সকল সংবাদ আমাকে বলিল। এই বড়বন্তে লিগু অন্তান্ত ব্যক্তিগণের নাম ও তাহাদের ঠিকানা আমাকে জানাইল। তাহার সকল কথা ধৈর্য্য সহকারে শ্রবণ করিয়া তাহাকে ক্ষম রাজ্যের ও তাহার আপন সম্প্রদায়ের নিকট বিশ্বাস্থাতক জানিয়া তাহাকে গুলি করিয়া হত্যা করিলাম।"

শাইকেল নিকিটা ও সাইমন রুদ্ধ নিখাসে
মন্ত্রম্বর স্থার সেই তেজোবাঞ্চক মূর্ত্তির
প্রতি চাহিরা রহিল। তাঁহার কাহিনীর
পরিস্বাধির জন্ম তাহারা উৎস্কুক হইরা
উঠিল। প্রিস্বাধিনেন,—

"প্রবেশের পূর্বে সে ভাহার নাম বঁলিয়া-

ছিল—আইভান কারেলিন শি মাইকেল ভীতি বিহ্বল হইয়া উঠিয়া দীজাইয়া অবি-খানের স্বরে বলিল—

"আইভান ক্যারেলিন !— মসন্তব !"
নিকিটা তাহার চঞ্চল চকু উৎকণ্ডিত ভাবে
প্রিলের মুধের প্রতি স্থাপিত করিয়া
উঠিল,—"বিশাস্বাতক!! আমরা শক্রহন্তে
সমর্পিত হইয়াছি!!"

"শক্ৰ ! হাঃ হাঃ হস্তপদ বন্ধ শক্ৰ ! বাঃ আমি যে সম্পূৰ্ণ তোমাদের আয়ন্তাধীন। আমি একটি কথা উচ্চারণ করিবার পূর্ব্বেই তো তোমরা আমাকে বধ করিতে পার।"

তিন মুখে এক সঙ্গে উচ্চারিত হইল,— "তুমি কে ? শীঘ্ৰ বল !"

"একটি শান্তি প্রিয় জীব !" প্রিন্স ধীরে ধীরে বলিতে লাগিলেন.—

"আমি আইভ্যান ক্যারেলিনকে বধ করিয়াছি সত্য—কিন্ত আমার জীবনে ইহাই প্রথম জীবহত্যা। আমি ভাহাকে বিখাস ঘাতক এবং প্রভারক বলিয়া বধ করিয়াছি। আমি ভোমাদেরই মত একজন মানুষ। সাইমন পেট্রোভিচ! আমিও একটি ক্ষুদ্র বালকের পিতা! ভোমর পুত্র যেমন ভোমার প্রিয়, আমার সন্তান আমার ভেমনই প্রিয়!" মাইকেল জিজ্ঞাসা করিল,—

"আপনি কে ? আপনার নাম^{*} কি ?" "সকলে আমাকে ভ্রাণ্ড ডি,উক ভ্যাসিলি ° বলে !"

তিনটি ভয়াভিত্ত প্রাণী নীরব, নিশ্চণ হইয়া রহিল। প্রিসের ধীর শাস্ত দৃষ্টির নিকট তাহাবের দৃষ্টি আপনিই নত হইয়া পড়িল। প্রিকা বুলিতে লাগিলেন,—

"গ্রাণ্ড ডিউক ভাসিলিকে হত্যা করিবার জন্ত কে জানে ভোমরা আজ কতকাল ধরিরা ষড়যন্ত্র করিতেছ। এই-ই উত্তম সুযোগ উপস্থিত! এই তো সেই গ্রাণ্ড ডিউক ভ্যাদিলি আজ তোমাদের সম্মুখে। তোমাদের সম্পূর্ণ আরন্তাধীন,—হস্তপদ দৃঢ় আবদ্ধ,— নিকটে পুলিশ প্রহরী দ্রের কথা,—জন মান-বের সাড়া পর্যন্ত নাই। একজনকে হত্যা করি-বার জন্ত তিন জন উপস্থিত আছে। তোমাদের কার্যা সুচারুরুপে সমাধা করিতে পারিবে।"

তাঁহার কণ্ঠস্বর বিজ্ঞপাস্মক নহে,—
একটু লজ্জাদায়ক। থামিয়া থামিয়া ধীরে
ধীরে তিনি কথাগুলি উচ্চারণ করিলেন।

কিন্ত কেই নজিল না। স্বাভাবিক প্রবৃত্তির বশবর্তী হইয়া কখন যে তাহারা মন্তক হইতে টুপী উন্তোলন করিল তাহা তাহারা জানিতেও পারিল না। তাঁহার পদগৌরব তাহারা ভূলিয়া গেল,—তাঁহার নির্ভীকতা, তাঁহার সাহসই এই শ্রমজীবিদিগের চক্ষে তাঁহাকে মহৎ করিয়া ভূলিল। তাঁহার ঐক্রজালিক ব্যক্তিত্বের প্রভাবে তিনি তাহাদিগের হাদয় জয় করিয়া লইলেন।

সহসা মাইকেল গুই হস্তে বদনাবৃত করিয়া জন্দন করিয়া উঠিল। নিকিটা ক্রত আসিয়া প্রিন্সের বন্ধন মোচন করিয়া দিয়া সসম্ভ্রমে জিজ্ঞাসা করিল, "আমাদিগের প্রতি কি শাস্তি বিধান করিবেন ?"

মৃহ হান্ত করিয়া প্রিন্স বলিলেন,—

"তোমরা আমার প্রতি কি শান্তি বিধান করিবে তাহা জানিভেই তো আমি আজ আসিরাছিলাম।" নিকিটা বন্ধচালিত পুত্লিকার স্থায় পুনরায় প্রশ্ন করিল,— · "আমাদিগ্রের প্রতি কি শাস্তি বিধান করিবেন ?"

উৎসাহ পূর্ণ মধুর স্বরে প্রিক্স বলিলেন,— "কি শান্তি বিধান করিব গ দিগকে বন্ধুত্বসূত্রে আবদ্ধ করিব। ধর্মভীক মহুযোর তাম সংপথে জীবন যাপন कतिरल তোমाদিগকে সর্ব বিষয়ে প্রাণপণে সাহায্য করিব। আমি ভোমাদিগকে একট্ট শিক্ষা দিতে আদিয়াছিলাম। ভাবিয়া দেখ দেখি কোন শিকা গ্রহণ করিয়াছ কিনা ? সাইমন ! একটা কথা মনে রাথিও,—ভোমার শিশুপুত্রকে স্বাধীনতা ভালবাসিতে শিক্ষা দিও; কিন্তু সেই সঙ্গে নিৰ্ভীকতাও শিক্ষা দিও। স্বাধীনতার স্পৃহা উত্তম, —কিন্তু নির্ভী-কতা. সাহদ আরও উত্তম। ক্রমরাজ্যের শ্রম-कौविशन, मिल्लिशन ও कांत्रिकत्रशन यिनिन निर्जी-কতা শিক্ষা করিবে, সেদিন আর অত্যাহারী জমীদারদিগকে হত্যা করিবার প্রয়োজন হইবে না। তাঁহাদিগকে পরিচালনা করিবার শক্তি তাহারা আপনা হইতেই পাইবে ৷ ৷"

ইহাই প্রিন্স ভ্যাসিলির শেষ আদেশ ! তাঁহার শ্রোভাগণ এই মহৎ বাক্যের উত্তর দিবার পূর্ব্বেই তিনি ধীরপদে সেই গৃহ ভ্যাগ করিলেন। তাঁহার স্থানি প্রশাস্ত মুর্ত্তি অন্ধকারে মিলাইরা গেল।

সাইমন ও নিকিটা নীরব নিম্পান হইয়া বিসিয়া রহিল। প্রিন্সের শেষ কথাগুলি তথনও তাহাদের কর্ণে বাজিতেছিল।

মাইকেল পেট্রোভিচ স্থলীর্থ নিধাস ছাড়িরা উঠিল। পকেট হইতে আইভ্যান ক্যারেলিনের প্তক্থানা বাহির করিয়া থণ্ড থণ্ড করিয়া ভূমিতে নিক্ষেপ করিয়া, ছিন্ন থণ্ডগুলি পদবারা মথিত করিতে লাগিল।

'বনলতা' রচয়িত্রী।

বাললা দেশে প্রথম বখন স্থীশিকার প্রবর্কন হর তখন সমাজে রীতিমত একটা আন্দোলন বাধিয়া গিরাছিল! কিছু ক্রমে ক্রমে
সেই স্থীশিকার শুভ কল যখন প্রফুট হইয়া
উঠিল, তখন দেশে যেন একটা নব শক্তির
আভাস পাওয়া গেল। আজু নারীগণ
শিক্ষিত সমাজে আপনাদিগের প্রভূত প্রভাব
বিস্তার করিয়াছেন এবং তাঁহাদের অনেকেরই
রচনার বলসাহিত্য আজু গৌরবাবিত।

আমরা ভারতীর পাঠক পাঠিকাগণকে এই নারী লেখিকাপণের গ্রন্থ ও জীবনী সম্বন্ধে সংক্ষিপ্ত পরিচয় প্রদানের করিতেছি। ইহা ছারা কেবল বে আমাদের বর্ত্তমান কৌতুহল নিবুত্ত হইবে তাহা নহে, ভবিষ্যতে বাঙ্গলা সাহিত্যেরও অনেক উপাদা ন প্রস্তুত হইরা থাকিবে। বঙ্গসাহিত্যে আধুনিক বিচৰী নারীর রচনা সম্বন্ধে আলোচনা করিতে वरित, छात्रजीत मन्नामिका वीमजी वर्गक्रमात्री मिवीत नामहे नर्स श्रथम जानिया পড़ে, कांद्रश ভাঁহার 'দীপনির্কাণ'ই আধুনিক সাহিত্যকেত্রে বঙ্গনারীর প্রথম রচনা। তাঁহার উপভাস, প্রহসন কবিতা প্রবন্ধাদি বঙ্গের শিক্ষিত ব্যক্তি মাত্রেই পাঠ করিয়াছেন, বলুসাহিত্যে তাঁহার প্ৰভাব কাহারও নিকট অজ্ঞাত নৰে। ভারতী পত্রিকার তাঁহার রচনাদি সম্বন্ধে আলো চনা করা ঠিক শোভন ও সঙ্গত নহে। সেইজন্ম আমরা সে প্রাঞ্জন হইতে নিবৃত্ত থাকিয়া এই বুসের অন্তাম্ভ লেখিকাগণের আলোচনা कामिक बाहुक रहेगाय।

विकान क्षेत्रक 'रनगण' काविबीय वहातिके मानकाव्य मान्याका विवत्र ।

रैशत श्रष्टापि नषस्य आलाइना कतियात व शृर्त्स डांशंत्र कीरनी जनत्क नश्रक्तल इ.वक्रि कथा वना निजां अधानिक हरेरव ना। त्विकांत्र नाम वीमठी अन्त्रमत्री (मरी। वर्त्त. মানবর্বের 'বৈশার' সংখ্যার 'নববৰ্ষে' শীৰ্ষক কবিতাটি ইনিই লিখিয়া-ছিলেন। প্রদন্তমন্ত্রী পাবনা জেলাম্ব হরি-পুর গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। ইহার পিতার नाम 🗸 इर्गानांत्र (ठोधुत्री। **शहमर्या**ष्ट्रा ७ वःभागोत्रात कोधूती वःभ छेक धारात्म ७ বারেক্স সমাজে অপ্রসিদ্ধ। সর্মজন প্রিয় মুপ্রসিদ্ধ স্বদেশপ্রাণ ব্যারিষ্টার ত্ৰী যুক্ত আভতোব চৌধুরী মহাশর ইহার সহোদর। "बामम ज्याधिकात्री" श्रद्ध देशिम त्रात्र वरत्मत সবিস্তার পরিচয় লিপিবদ্ধ আছে।

বালাকাল হইতেই প্রসরমরীর পাঠাতরাগ প্রবল। মেরেদের ফুলে পাঠানো তথনকার দিনে আচার বিক্রম থাকার বাড়ীতেই প্রসর-मबीब निका हत । वाकाना, मध्यु ७ हेश्त्र की তিনটি ভাষাতেই প্রসহমন্ত্রী শিকালাভ করেন। অলবরসেই তাঁহার বিবাহ হয়। স্বামীর নাম কৃষ্ণকুমার বাগচি। "আধ আধভাবিনী" নামক কবিভাগ্রন্থ তাঁহার চতুর্দ্দশ বংসর বন্ধসের রচনা ৷ প্রাক্তের বিক্তাসাগর মহাশর ৰ্ছিমচক্ৰ, দীনবন্ধু, হেমচক্ৰ প্ৰমুখ মনবিবৰ্গ ভাহার প্রশংসা করিয়া লেখিকার সাহিত্যায়-वार्ता उरमाह अमान करवन । उरशरव >२৮१ সালে প্রসরমনীর 'বনলতা' এবং তংপরে निविभिक्त अद्रश्रीम क्षक्षिण वशक्ति **₹**4---

मोशकिमा (माराध्य) व्यवस्थान।



শ্ৰিমতা প্ৰসন্নময়ী দেবী

आद्यांबर्ड (कांक्कबार मानाव्यांगा वंतर काहिनो) ।

बारनाका (उनजान)।

নীহারিকা (কাব্যগ্রন্থ) বিতীর ভাগ।

এতত্তির নানা ইংরাজী কবিতা ও প্রবন্ধের
সরল বন্ধান্থবাদ ইহা কর্ত্ত্ব নানাসমরে
সাময়িক প্রাদিতে প্রকাশিত হইরাছে।

প্রসরমরা দেবীর প্রথম প্রকাশিত বনলতা ২৫টি থপ্তকবিতার সমষ্টি। ভাবে ভাষার তেমন বৈচিত্র্য না থাকিলেও ইহার স্থরটি করুণ এবং সহজেই মর্ম্মশর্শ করে। ভাবপ্রকাশের কোন আড্মর নাই, শক্ষছটার পাঠকের মোহ উৎপাদন করে না কিছ ভাহা একেবারেই পাঠকের স্থা অমুভ্তিটুকুর উপর আঘাত করে! ভাই কইকরনার কণ্টকে বাণীর কমল বন কণ্টকিত হর নাই!

জীবনের হঃধ শোকে জর্জনিত হইরা প্রান্তমনী করনার আশ্রর গ্রহণ করিরাছেন। ইহাই কবির সান্তনা। মনের হঃথে পাশ্চাত্য কবি নক্ষত্রকে সম্বোধন করিয়া বলিরাছিলেন, "Ye Stars! which are the poetry of Heaven," 'বনলভার' কবিও 'নক্ষত্রকে বলিতেছেন—

স্থান গগনে থাকি বরবে কিরণ—
সে আলোকে আলোকিত অভাগ্যজীবন।"
'নীহারিকা' কবির ছিতীর গ্রন্থ। নীহারিকা পাঠ করিরা শ্রম্মের ৮ রাজনারারণ বহু
স্থার্থ পত্রে কাব্যথানির প্রশংসা করেন।
"উহাতে স্থানে ছানে বেরূপ ভাবের গভীরতা ও
সৌন্ধর্য প্রকাশিত হইরাছে ভাহাতে বাল্লা
ভাষার অভি শ্রেষ্ঠ কবিরাও কর্বাছিত হইতে
গারেন। * * ছানে ছানে হানে হাক্তের ভার

প্রকার । • • কাপনাকে Sappho of Bengal এই উপাধি দিতে ইচ্ছা হইল।
'সাধারণী' বলিয়াছিলেন, "তাঁহার কবিছা
সরশতা শক্তি এবং ভক্তি সকলই মনোরম।"

'নীহারিকার' প্রথম কবিতা বসস্ত পঞ্চন মীতে কবি সরস্বতীর প্রতি নিবেদন করিতে-ছেন—

"অরণ্য কুম্ম মম, আজিও কলিকাসম ম্বাস নাহিক তাহে, নহে বিকশিত; আধ কুট কুট করে, হয়ত বাইবে ঝরে অকালে হিমানী পাতে হইরা ব্যথিত।"

ছত্রগুলি পাঠ করিরা কীট্নের অমর ছত্তা মনে পড়ে—

"when I have fears that I may

cease to be

Before my pen has gleaned my "

teeming brain."

ক্ৰির দক্ষতা শুধু কাৰ্য রচনাতেই নিৰ্দ্ধ নহে। তাঁহার প্রমণ কাহিনী 'আর্যাবর্ত্ত' অনেক তথাকথিত সাড়ম্বর প্রমণ বুজান্ত হইতে উৎক্রষ্ট। প্রস্থানি ক্সাকে উপহার দিরাছেন। লেখিকা ক্সাকে বলিতেছেন, * * সীজা সাবিত্রী দময়ন্ত্রী জৌপদী ও লন্ধীরাণী প্রভৃতি পূণ্যকী প্রাতঃস্বরণীরা আর্যানারীগণ বে দেশের মুখোজ্জন করিয়াছেন সেই দেশে তুমিও ক্ষমিরাছ এইটি সভত স্বরণ রাখিরা তাঁহাদিগের উচ্চতম আদর্শে এবং তাঁহাদেরি পদান্থসরণে অন্ধকার বিজ্ঞাতিরাভাতা-বিভৃত্তিনা হইরা বথার্থ হিন্দুমহিলার উপকরণে নিজের স্ক্রমার ক্ষম্ম ও কিশোর চরিত্র স্থপঠিত কর।" গ্রন্থক্সী ভারতের নানান্থানে ক্ষম্ম বালে সেই সক্ষম স্থলের পুণোজ্মণ কাহিনী

'ৰাষ্যাৰতে' লিপিৰছ করেন ! এ প্রত্যেক হানের সৌন্দর্ব্যের বিশেষছাকু চিত্রিত করিতে ক্ষেকিনার প্রবাস সফল হইরাছে ! লেথিকার চক্ষেণ্ডান্ত্রহর্ত্ত "কঠিন প্রস্তরে ললিত সলীত, ভার্তিকর ক্ষানে আশার হাস্ত, প্রণরের স্থানর হান্ত-শিক্ষর প্রবং শিক্ষের চরমোৎকর্ব !" এই স্থান-শিক্ষর প্রবং শিক্ষের চরমোৎকর্ব !" এই স্থানকথার কি স্কুল্যর একথানি চিত্রের আভাব পাওরা বার । "অশোকা" সিপাহী বিজ্ঞোহের ঘটনাসম্বলিত একথানি কুল্র উপত্যাস ।

প্রসমম্বীর জীবনের উপর দিয়া নানা ছঃখন্দোকের ঝড় বহিয়া গিরাছে। অৱ বয়সেই তাঁহার ছইটি সন্তান হয়। তন্মধ্যে शुब्छि देनमद्बे हेहरमाक छात्र करत्र। তাঁহার স্বামীর মৃত্যু হয়। ইহার উপর বিবাহের অর্মিন পরেই তাঁহার একমাত্র ক্সাটিও একটি শিশুসন্তান কোলে বিধবা হন। শোকাতুরা প্রসরময়ী দৌহিত্রটির উপর মেহবর্ষণ করিয়া **প্রকারে কালাতিপাত করিতেছিলেন।** বিধাতা প্রসন্নমন্ত্রীকে সে স্থরেও শিশুটি অকালে সংসার তাাগ কবিলেন। कत्रियां भनाहेन। কিছ এক্লপ বিপদ ও আঘাতের মধ্যেও তিনি যেরূপ সৌম্য ও শাস্তি রক্ষা করিয়া সকলের সহিত ৰথোপযুক্ত ব্যবহার করেন, তাহা আদর্শ हिन्दू तमगैत्र शक्करे मञ्जर। छारात्र जीवत्नत्र **এই শান্ত সংযত** ভাবটি যথার্থ ই আদর্শ হোগ্য।

প্রসরমরী তাঁহার দৌহিজের উজেশে সম্প্রতি ছবিশীর্ষক যে কবিতাটি রচনা করিয়াছেন, সেইটি উদ্বত করিয়া আমাদিগের বক্তব্য সমাপ্র করিলাম।

ছবি।

ছবি তুৰি প্ৰতিবিদ্ধ, সাকার দর্শন, মৌন মূর্ত্তি, প্রতিভার প্রদীপ্ত নয়ন-ভাষাহীন, यह ভাষা সুধা बन्गाकिनी व्यवत् वानन् त्नत्व पिरन् यानिनी ছটিত আনন্দ উৎসে ভাব সচ**#ল**— व्यक्त व्यक्त नकातियां बीवन कर्त्वान সেই ভাষা ভব :-তৰ মূরতি ৰোহৰ পাৰাণ প্ৰতিষা সম ধানে সমাহিত বিশ্বরবে সে সমাধি নছে ভিরোছিত, নিদ্রিত ব্রহ্মাণ্ড বেন ছবির আকারে मृर्खियान, शतिवाशि व्यक्टत वाहिता। ভাস্কর খোদিত মূর্ব্তি দেবতা করিয়া, ভক্ত পুৰে অমুদিন মানস ভরিয়া महम्मन विवनम, পूष्प छादा छादा আন্ধ সমর্পণ করি নানা উপচারে: ভক্ত জদর নাহি চাহে ফিরাইয়া विनिमारा । अनत्स्वत्र अस्टरीन मान নিক্ষল জীবন ব্ৰত সফল কারণে অচেডনে সচেডনে মধুর মিলন; कोरामत প্রতিদিন করিতে বহন প্রতিবৃত্তি নির্খিয়া, পরশিরা ভার। প্ৰেৰেৰ অপূৰ্ব্ব দুখ্য ভালবাদা হায়। बीक्षत्रवयशे (परी।

চয়ন।

বিভিন্ন দেশের বিবাহপদ্ধতি।—পৃথিবীর বিশিক্ষ দেশে বিভিন্ন প্রকার বিবাহপদ্ধতি প্রচলিত। এক জারতবর্গে এই হিন্দুদিগের সংবাই বৈ কত প্রকার বিবাহশন্ধতি প্রচলিত আছে ভাষা বলা বার না। কিছ আমলা ভাষাক কোকও স্থানই রাখিনা।

'ক্ৰের ৰাল্লের' কথা বোৰ হয় এ দেশের কেইই कारमन ना। किन्न महत्का रम्भ व माम्हि थिछ गुरह ্রচলিত। তথার বর কভার বাটীতে বাজা করে ৰা, কলা বরের বাটিতে যাত্রা করে। বাত্রাকালে क्नाहित्क नानाविश वननकृषंत निक्का कविता अकहि कार्छत्र वास्त्रत्र वरश त्राविता गरेता यां वता हत ! বালের গঠনটা কভকটা থাঁচার মত, তবে ভাষাতে बारू व्यवस्थितं भव वक् बारक ना। এইक्रम याजा क्नात पर्क क्रिन रखंद हम जाहा महस्यहे अयू-ষের। নানারপ বাদ্যাদি করিয়া কল্পাবাতীয়ল নানা পৰিত্ৰ হাবে ভাৰী দ্বীপুৰুৰের অন্ত আশীৰ্কাদ ভিকা করিভে করিতে অতি মন্থরগতিতে অগ্রসর হন। কক্সা বেচারীর প্রাণ প্রাথ ওঠাগত হয় বলিলেই হয়। অবশেরে বরের বাটীতে উপস্থিত হইলে কক্সা থাঁচা হইতে ৰাহির হইয়া হাঁপ ছাডিয়া বাঁচে। ইহাদের ৰাসরব্যাপার ছই দিন ব্যাপী। ছই দিন পরে সেই ৰাক্লটিকে সৰ্ববিদক্ষে উচ্চে টাকাইয়া রাখা হয়। তাহার অর্থ এই যে একণে বিবাহিত দম্পতি অতিবিগণের অভ্যর্থনা করিতে প্রস্তুত।

প্রশান্ত মহাদাগরের অনেক দীপের মধ্যে অনেক আদ্দর্যা বিবাহপ্রথা প্রচলিত আছে। হেবাইডিস্ (New Hebrides) দীপের কতকালে বিবাহেচ্চুক কলার একটি অক্সীন হইতে হয়। এরোদশ বর্ষে উপনীত হইবার পূর্বেই ভাহার সন্মুবের দাঁতগুলি ভালিয়া কেলিতে হয়। নচেৎ কোনও যুবা ভাহাকে বিবাহ করে না পরস্ত বেচারীকে চির দিন সকলের নিকট যুণাভালন হইরা থাকিতে হয়।

আরল্যাণ্ডের (New Ireland) স্থানে স্থানে
কুমারী কন্তাদিগের অবস্থা এইরপ শোচনীর।
কন্তাটি ৮।১০ বৎসরের হইলেই পিতামাতা
তাহাকে একটি কুন্দ্র থাঁচার মধ্যে রাখিয়া দেন। এই
তাবে ভাহাদিগকে ৪:৫ বৎসর যাপন করিতে হয়।
বিবাহণ হইরা গোলে ভাহারা মুক্তিলাভ করে।
থাঁচাণ্ডলি এত ছোট বে ভাহার মধ্যে বসা বা
হাত গা গুটাইরা শোধারা ভিন্ন আর কিছু করিবার
উপার থাকে না। দিবা রাজ্যের মধ্যে প্লানের সম্মের

ক্ষেদ একবার মাত্র ভাষাদিগকে খাঁচা হইতে বাহিরে আসিতে দেওয়া হয়।

অবোরাই (Arorai) দ্বীপে কন্তার বর্ষর প্রথা
বড় চসংকার। বে কুমারীর পাশিপ্রবেশ বড় অনুক্র
পুরুব উৎক্রক সে কুমারীট নীচের একট বরে
পিরা বনে। তাহার টক উপরের দরেই ভার্টার
প্রথাকাজিগণ সমবেড হর। খেলের কাঁক
দিয়া প্রভাক পুরুব একটি করিয়া নাত্রিকেল পাড়া
নীচের বরের দিকে নামাইয়া দের। বালিকাটি একটি
পাড়া টানিয়া ভাহার অবিকারীর নাম জিজাসা
করে। উভরে যদি সে ভাহার প্রেমান্সাদের কঠবর
ভানিতে না পায়, ভাহা হইলে আবার আর একটি পাড়া
ধরিয়া টান দের। এইয়পে সে আপনার ইলিভ
বামী বাছিয়া লয়।

নালর দেশের কোনও রাজপুত্রের বিবাহ এক
দিনে সমাও হয় না। বিবাহ সাক্ষ হইতে প্রায় তিন
সপ্তাহ লাগে। উৎসবের প্রথম ক্রিয়া শোব হইয়া
গেনে, রাজকুমার আগনার প্রাসাদে ক্রিয়া আনে।
তথায় বোলজন নারী প্রহরীবরূপ ওাঁহাকে সর্বান
ঘিরিয়া থাকে। সপ্তাহকাল ভাহাকে বহির্গনন
ক্রিতে দেওয়া হয় না। পরে বিবাহক্র্ম সাক্ষ হয় ।
কিন্তু আশ্রুণ্য এই প্রথম ইইতে শেব প্রয়ন্ত ক্রায়
সহিত কোনপ্রকারে সাক্ষাৎ হয় না।

আপানে বিবাহবাপার ঘটকের ঘারা সম্পন্ন হয়।

ঘটকের নিকট হইতে মনোমত সম্বন্ধ ছির হইজে,
উভয়পক্ষের পিতামাতা সব কথাবার্তা ঠিক করেন।
বিবাহের পূর্বেবরকঞা উভরকে একবার পরস্পরের
সহিত সাক্ষাৎ করিতে দেওয়াহয়। ইহাদের মধ্যে
বিবাহক্রিয়া অতি সামাতা। ইহাদের দেশে বরের
বাটাতে বিবাহ হয়। কন্তাকে খেত রেশ্যের ব্লাক্তাদিত করিয়া বরের বাটাতে লইয়া যাওয়াহয়। বেত
বসনটা পোকচিহা। কন্তাকে খেত বসন পরাইবার
অর্থ বে, সে সেইদিন হইতে তাহার আত্মীয়প্রপ্রের
পক্ষে মৃতব্ররূপ গণ্য হইল। তাহার পর ঘটক ও
ছুইটি অল্পবয়্রতা কুমারীর সম্মুধে বয়কলা দওায়মান
হুইয়া ভিনটি পেরালা হইতে ভিনবার স্বরাপান করিলা

বিবাহসক্ষে আৰম্ভ হয়। স্থাপান সাক হইলেই বিবাহক্রিয়া সম্পন্ন হইল।

কোরিয়ার বিবাহপথাও অতি সহজ। বিবাহবিশের পূর্ব্বে বরকভার সাক্ষাৎ হয় না। বিবাহদিনে
বর একটি বেতবর্ণ বোড়ার উপর চড়িয়া কভার বাটীতে
উপস্থিত হয়। তথার কভার সহিত সাক্ষাৎ হইলে,
বর ভাহাকে একটি রাজহংস উপহার দেয়। রাজহংসকে ভাহারা বিশ্বভার চিক্ বলিয়া মনে করে।
ভাহার পর উভরে তিন চারি বার মন্তক নত করিয়া
পরশারকে অভিবাদন করে। বাস্, বিবাহ ইইয়া গেল !

ভিক্তে কোন বুবা কোন যুবজীর পাণি এইং পাছু হইলে, সে তাহার পিতামাতা সমভিবাহারে যুবজীর আবাসে গিরা উপস্থিত হয়। প্রথম অভিবাদনাদি সাক হইলে যুবজের পিতা প্রের হইয়া যুবজীর পাণি ভিক্ষা করেন। যুবজী থীকুত হইলে, বুবক একখণ্ড মাধন লইরা কন্তার কপোলে রাধিরা দেন। বুবজীও সেইরূপ ক্রিলেই তাহারা খামীপ্রী বলিয়া গণ্য হইল।

সার্ভিয়া (Servia) দেশে খামীর বাটাতে প্রবেশের পূর্বেক কলাকে ভাহার খামীর জননীর চতুর্জিকে ভিনবার খুরিতে হর। বাটার ভিতর প্রবেশ করিয়া উন্থনের চতুর্জিকে ভিনবার খুরিতে হয়। এদিকে একটি ভাঁড় আসিয়া রন্ধনের কাঠগুলিকে চতুর্জিকে ছড়াইরা কেলে। সে এইরপে চতুর্জিক সওভও করিবার পর, কলাটি আবার বাবতীয় প্রবাপ্তলিকে বধাহানে রাখিয়া দেয়। ইহা ভাহার ভাবী গৃহিণীপণার পরীক্ষা। আবাকের দেশে বিবাহের পর বেমন ভাঁড় ধেলা!

লাগল্যাতে পত্নী মনোনীত করিবার পদ্ধতি অতি
অত্ত। মূবক ও মুবতীকে একটা নির্দিষ্ট পথ
লৌড়াইতে হর। মূবকের ক্ষত্তে এরুপ ভার চাপাইয়া
দেওরা হর যে ভাহার পক্ষে ক্রতসমন একপ্রকার
লামন্তব। ভংগল্পেও যদি মুবা জ্বরী হুমেন, ভাহা
হইলে পরাজিতা ক্রারী উচ্ছা করিয়া পরাজ্য
লীকার ক্ষরেন। মূবক মনোমত না হইলে তিনি
লৌড়াইরা জ্বরণাত করিলেই ভাহার হত হইতে
জ্বাহাতি লাভ করিতে পারেন।

বিজ্ঞান কথা।

উপগ্রহের জন্ম।—উপগ্রহের জন্ম সবদে ছইটি

মত প্রচলিত আছে। একমতে উপগ্রহ গ্রহেরই

জংশমাত্র, গ্রহগঠনের প্রথমাবস্থায় ভাষার জবয়্র

হইতে বিক্সির হইছা পড়িয়াছে। এই মভাবলখীদের মতে পৃথিবী হইতে চক্র বাহির হইরা

গিয়াছিল বলিয়াই, প্রশান্ত মহাসাগরের উৎপত্তি

হইরাছে। আর এক মতে উপগ্রহন্তলি এককালে

ধ্মকেতু ছিল, গ্রহের আকর্ষণে আকুই হইয়া গ্রহের

চতুর্দ্ধিকে ঘুরিয়া বেড়াইডেছে মাত্র। এইরূপ

ধ্মকেতুগুলি ক্রমশ চক্রে পরিণত হয় 1 জধ্যাপক সী
বলিতেছেন যে তিনি এরূপ প্রমাণ সংগ্রহ করিয়াছেন

যাহা ঘারা ইহা স্পাই প্রতী হ হইবে যে উপগ্রহন্তলি

ধ্মকেতু ভির আর কিছুই নহে।

জাতি-নির্ণয়ের যয়ৢ।—সম্প্রতি বিলাতের রিভিউ অফ্ রিভিউস্ (Review of Reviews) পত্রিকার একটি আদ্রুগ্য বৈজ্ঞানিক যন্ত্র আবিষ্কারের কথা প্রকাশ হইরাছে। উইলিয়'য়্স্ (Williams) নাবে একজন এপ্রিনিয়ার একটি যন্ত্র আবিষ্কার করিরাছেন, যাহা ঘারা যে কোন প্রাণী পুরুষ কি নারী ভাষা সংজেই নির্ণয় করা যার। যন্ত্রটির মধ্যে একটি সক্র ইম্পাতের ভার আছে। ভাষার নিমে একটি গোলাকার ধাতৃপিও ঝুলিয়া থাকে। যন্ত্রটি যে কোন পুরুষজাতীর জীবের অকম্পর্শ করিবামাত্র, এই ধাতৃপিওটি ঘূরিতে থাকে। স্ত্রীজ্ঞাতির অক্রেম্পর্শ করিলে যড়ির পেঞ্লামের (Pendulum) স্থার ইহা কেবলই ছুলিতে থাকে।

বৰ্ণচিকিৎসা—আধুনিক বৈজ্ঞানিকগণের মতে নীল ও ভারলেট (Violet) বর্ণের আলোকে বাবতীয় রোগের বীজ পাঁচ মিনিটের মধ্যে নষ্ট হইয়া যার। এইরূপ আলোক প্রয়োগ বারা চিকিৎসার চেষ্টা হইতেছে।

বিভিন্ন জাতির বিশেষত্ব—ডাকার বাটিগ্নন্
(matignon) নামে একজন করাসী চিকিৎসক
বলেন পৃথিবীর মধ্যে প্রত্যেক বিভিন্ন জাতির অক

হইতে এক প্রকার বিভিন্ন গদ্ধ বাহির হর।
বেঠালবিগের ক্ষালের প্রতি বির্ভিত্ন কারণ
ভাহাদের অল হইতে একপ্রকার ছর্গদ্ধ বাহির হইরা
তাহাদিগকে শীড়িত করে। কৃষ্ণালগণও বেতালের
অলের গদ্ধে বিরভিত অসুভব করে। চীনবাসীরা
বলে খেতালের অলে মৃতদেহের ছায় ছুর্গদ্ধ।

নিঃশক্ষ ঘটিকা—ইংলতে কাটনাউ (Kutnow)
নাবে একজন শিলা তাড়িংশক্তিতে ° চালিত একটি
ঘড়ি আবিকার করিয়াতেন। ইহার বিশেষত্ব এই
যে ইহা চলিবার সময়ে কোনপ্রকার শব্দ হয় না।
যন্ত্রাদিও অতি সহজ্ঞ ও সাবাক্ষ। ঘড়ির ভিতরে
গাঁচটি মাত্র চাকা আছে। একটি তাড়িংযত্তের
সাহায্যে সহস্র দিন পর্যান্ত ইহা অবিরাম চলিবে।
পরে একটি নৃতন যন্ত্র বসাইয়া দেওয়া আবশ্যক।

আকের ছোবড়ার কাগল—ভারতবর্ষে লাকের প্রভৃত চাষ হইয়া থাকে বটে কিন্তু তৎসন্ত্রেও প্রভিবৎসর আমাদের লক্ষ লক্ষ টাকার বিদেশী চিনি কর করিতে হয়। স্কুতরাং আমাদের দেশে আকের চাব আরও অধিক হওয়া আবশ্রক। কেবলমান্ত্র আকের চাব করিলে বিশেষ লাভবান হওয়া কঠিন বলিয়াই বোধ হয় কুবকণণ এ বিবয়ে ভাদৃশী মনোযোগী নহে। কিন্তু ছোবড়াগুলিও যদি কালে লাগান বার ভাবা হইলে বিশ্বর লাভ হইবার কথা।

আমরা আক হইতে তাহার রস বাহির করিয়া
লইয়া হোবড়াগুলি ফেলিয়া দিয়া আলাইয়া ফেলি,
সেগুলিকে কোনপ্রকার ব্যবহারে লাগাইতে চেটা
করি না। ইয়ুরোপবাসীগণ কোন বস্তু ফেলিয়া দিয়া
সম্ভই হয় না, তাহা একটা না একটা ব্যবহারে
লাগাইবার বস্তু প্রাণপন চেটা করে। সেইলস্তু
ইয়ায়া বাণিজ্যে এত শীঘ্র উয়তি করেও লাভবান
হয়। ম্যাঞ্চেয়র নগরের টি, জে, হাচিন্সন্
(T. J. Hutchinson) নামে একবাজি আকের
হোবড়া হইতে উভম কাগজ প্রস্তুত করিবার একটি
প্রণালী বাহির করিয়াহেন। কাগজ প্রস্তুত করিবার
ব্যর প্রতি সামান্ত মুল্যে করে করে। কাগজ

ক্রিলে উহা হইতে বিশেব লাভবান হওয়া বাইতে পারে। আমাদের দেশে বাঁহারা চিনির কল ক্রিয়াছেন, ভাহারা এ বিষয়ে মনোযোগী হইজে নিজেরাও লাভবান হইতে পারিবেন, দেশেরও বিশেব কল্যাণ সাধিত হইবে।

গণনা ষদ্ধ—কালিখাটের শ্রীষুক্ত আওতোৰ মলিক নামে একটি যুবা এক আগ্লর্য্য গণনা ষদ্ধ আবিষ্ণার করিয়াছেন। ইহা দারা টাকা, আনা পাইরের যোগ বিরোগ বা ভাগ অভি সহক্ষেই সম্পন্ন করা যায়। স্বর্ম্মণির একজন এপ্লিনিয়ার এইরূপ একটি যদ্ধ আবিষ্ণার করিয়াছেন বটে, কিন্ত শ্রীষুক্ত মলিকের যন্ত্রটি ভাহা অপেক্ষা অনেক শ্রেষ্ঠ এবং ম্লোও স্বভ্ত বলিয়া শোনা যায়। বাঙ্গালীর মন্তিক্তেয়ে কৃষ্টি শক্তি আছে মলিক ভাহার পরিচয় দিয়া বাঙ্গালীর মৃথোক্ত্বণ করিয়াছেন।

नवाविङ्गठ टिनिट्यान्--- श्रेष्डानत इरे बन এঞ্জিনিয়ার একটি নৃতন সাইক্রফোন (microphon) আবিভার করিয়াছেন। এতদিন টেলিকোনের দশবিশ ক্রোশের মধ্যে সাহাযো চণিত। কিন্তু একণে এই নৰাবিছত যত্ৰ দারা এক দেশ इटेरिंड व्यक्त मिर्म यर्थिक कर्यानकथेन চালিত হইভে পারিবে। স্থইডেনের রাজধানী ইক্হল্য্ নগর হইতে জালের রাজধানী প্যারী নগর প্ৰয়ন্ত কৰোপকৰন শুনা গিয়াছে। ক্ৰৰে পুথিবীয় দেশে ৰসিয়া বন্ধুপৰ কথা কহিছে পারিবেন। ধরা বিজ্ঞানের মহিমা।

বীজের অমরত।—ভাজার ব্লাক্ষান
(Dr. F. F. Blackman) পরীক্ষা হারা প্রমাণ
করিরাছেন যে বীজের কোন অবহাতেই মৃত্যু
নাই; অর্থাৎ উৎপাদন শক্তির ধ্বংদ নাই। বৈ
প্রকার উত্তাপ বা শৈত্যে জীবনাত্তেরই ধ্বংদ পার,
ভাহাতে বীজের জীবনীশক্তির কোনই ক্ষতি হয় না।
কৃটস্ত জলের উত্তাপ বা যৎপরোনাত্তি শৈভ্যের মধ্যে
রাখিলেও ইহার উৎপাদন শক্তির হাস হয় না।
ন্যামোমিয়া বা অপর কোন কারের মধ্যে নিমক্তিভ
করিয়া রাখিলেও ইহার শক্তি নাই হয় না। একশভ

দাঁচ বংসকের পুরাজন বীজেরত উৎপাদনশক্তি

আকিকে দেখা পিরাছে। গ্রীস দেশের রোপ্য
দ্বিতে প্রাপ্ত বীজের গরা বদি সভা হর ভাহা হইলে

বীজের ক্ষরত্ব বিশ্বরে আর সন্দেহ খানে না।

গ্রুকটিরোপ্যধনিতে ১৫০০ বংসকের পর পুনরার

কার্যারত কালে কভকতানি বীজ পাওয়া যার।

শেশুনি বপন করিলে ভাহা অল্পুরিত হইয়া উঠিল।

পৃথিবীর অভ্যস্তর।—আত পর্যান্ত এঞ্জিনিয়ার-শ্বণ ভূষির উপরিভাগ হইতে ১০০০ ফিট পর্যান্ত ভূগর্ভে শ্রবেশ করিরা দেখিয়াছেন। ফুাম্মারিয়ন (Flammarion) নামে একজন ভূতত্ত্বিদ্ বলেন যে, ভূগর্ভন্থিত অবস্থা সহজে বিশেষ জ্ঞানলাভ করিবার ৰক্ত আমানের পৃথিবীর মধ্যে আবেশ করা বর্ত্তা।

হরণত হত পরিধির একটি পর্ত খন্দ করার ভাষার

নব্যে একটি বোলায় বনিরা প্রবেশ করা বাইতে
পারে। পৃথিবীর মধ্যে বেরণ উত্তাপ ভাষাতে
প্রার ছই নাইল নিরে বাইলেই ফুটত ললের উত্তাপ
পাওয়া যাইবে। স্তরাং অভবুর বাওয়া সভব

হইবে না। কিন্ত ভাষা না হইলেও এরপ পরীকা
বারা পৃথিবীর মধ্যহিত অনেক ভাগতন্ত্র, ধনি ও
আশ্চর্যা ব্যাপার বাহির হওয়া সভব। আনেরিকাও
করানীদেশের ছইজন ধনকুবের অর্থসাহায্য হারা
ভাষার করানাকে কার্য্যে পরিণ্ড করিতে প্রতিশ্রুত

হইরাছেন।

তারবিহীন টেলিফোন্।

বৈজ্ঞানিকের নিকট তাড়িৎ বেচারাকে
কি নাকালই হইতে হইরাছে। তাঁহারা
ভাহাদারা পাধা চালাইয়া, আলো জালাইয়া,
গাড়ী টানাইয়া লইতেছেন। কত কল যে
সে চালায় তাহার ইয়তা করা যায় না।
এত করিয়াও সে অবাহতি পায় নাই;
শতসহল ক্রোশ দূরবর্তী স্থানে তাহাকেই
সম্বাদ বহন করিয়া লইয়া যাইতে হইতেছে।

সম্বাদ-বহন-কার্য্যে এতদিন তাড়িতের একটা বাধা পথ ছিল,—সেট তার। এই পথ বাধিতে থরচও বথেষ্ট ছিল। সম্প্রতি বৈজ্ঞানিকেরা এটুকুও এড়াইবার উপায় করিয়া দিয়াছেন।

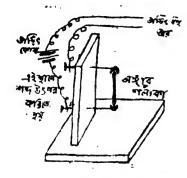
তারওরালা টেলিগ্রাফের কথা সকলেই জানেন। তারবিহীন টেলিগ্রাফের কথাও, জালা করি, সকলেই ওনিরাছেন। এখান ছইডে সমাধ পাঠাইলাস, এখানের, সহিত গুবানের কোনো বাহু বোগ নাই, মুহুর্ডমধ্যে এখানকার সম্বাদ শতসহত্র ক্রোশ দ্রবর্ত্তী স্থানে গিয়া পঁত্ছিল—ভারবিহীন টেলিগ্রাক্ষের কার্য্য এইরূপ।

টেলিগ্রাকে তাড়িৎ-সাহায্যে সক্ষেত্রারা সম্বাদ প্রেরণকরা হয়। টেলিফোনেও তাড়ি-তেরই সাহায্যে, সঙ্কেত হারা নহে, একেবারে গলার আওরাজ পাঠাইরাই সম্বাদ প্রেরিত হইয়া থাকে। টেলিগ্রাফে কিম্বা টেলিফোনে সম্বাদপ্রেরণ ও তাহা গ্রহণের স্থান ছইটির মধ্যে একটি তাড়িৎবাহী ভারের যোগ থাকার প্রয়েজন। এই তারের যোগ উঠাইয়া দিরাও টেলিফোনের সাহায্যে শব্দ প্রেরিত হইতেছে। কির্নেপ তাহা হয়, তাহাই এই প্রবন্ধের বক্রব্য বিষয়।

সাধারণত যে টেলিকোন্ ব্যবহৃত হয়
তাহাতে, স্থাদপ্রেরণের সময় একট্রি ^{ব্রের}
নিকট মুথ লইয়া গিয়া কথা কহিলে শ্লার্মান
বায়্তরক স্লাপ্তাবে ব্যক্তি অক্সার-শলাকার

ভাষাত ভূরিরা এটেলিকোনের ভারের সহিত তাভিং-কোবের (বেথানে তাভিং

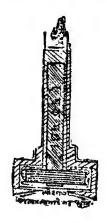
েটেলিফোনের প্রেরক বস্ত্র।



টেলিকোনে যে যন্ত্ৰটির নিকটে মুখ লইয়া গিয়া কথা কহিতে হয় তাহার ভিতরে এইরপে সঞ্জিত অগার-শলাকা থাকে।

উৎপন্ন হয়) সংযোগ কথনো দৃঢ় কথনো বা আলা করিয়া দের। একটি মাত্র শব্দ উচ্চারণ করিলে এই পরিবর্ত্তন বছবার ঘটে। এই পরিবর্ত্তনে টেলিফোনের ভারে ভাদ্তিং-প্রবাহেও পরিবর্ত্তন জন্মে, অর্থাৎ প্রবাহের হ্রাস বৃদ্ধি হইরা থাকে। এই বৈষম্যময়

টেলিফোনের গ্রাহক যন্ত্র।



डोड़िश-ध्येतार त्यवादन मचान श्रेंस्ट्रिटन छाङ्ग বাহিরা সেধানে গিরা একটি চুম্কদণ্ডের চুম্বশক্তিতে देवसभा উৎপাদন চুম্বদগুটির সন্মুথে একথানি লোহের পাতলা পাত থাকে তাহা চুম্বকৰ্তৃক আকৃষ্ট হইয়া কম্পন করিতে থাকে। চুম্বকশক্তির বৈষম্যে তাহার আকর্ষণেও বৈষম্য জন্মে. এই কারণেই লৌহপাতটিতে কম্পন উৎপন্ন লোহপাতের সম্পন্থ বায় এই পাত হইতে কম্পন গ্রহণক্রিয়া তরঙ্গায়িত रुरेश উঠে। भक्त अत्रत्व সময় বায়ুতে যে তরক উত্থিত হইয়াছিল লৌহপাতটির সম্বে তদমূরণ বায়ুত্বঙ্গ উথিত হওয়াতে मक्षि श्नक्षिठ इहेबा थाटक। যন্ত্রের নিকট কান লইয়া গেলেই শব্দটি শুনিতে পাওয়া যায়।

ধাতৰ তারধারা প্রেরক ও প্রাহক উভয়

যন্ত্রকেই সংযুক্ত করিয়া না দিলে টেলিফোনের

কাজ চলে না। শব্দ যেন তার •বাহিয়াই

যায়। অধুনা বৈজ্ঞানিকেরা শব্দকে এই

স্থবিধাটুকুও দিতে রাজি হইতেছেন না।

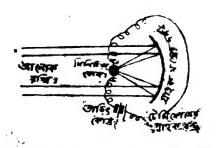
এখন তাহাকে বিনা তারেই চলিতে হইবে।

ছই প্রকার তারবিহীন টেলিফোনের কথা সামরা বলিব। প্রথমটিতে আলোকের সাহায্যে শব্দ প্রেরিত হইরা থাকে। ইহার কার্য্যপ্রণালী আলোচিত হইবার পুর্বে গ্রাহাম বেল কর্তৃক উদ্ভাবিত ফোটোকোনের কথা বলা আবশ্বক।

কোটোকোনেও কথা চলে। সাধারণ টেলিকোনে বক্তা ও স্রোতার মধ্যে বে ধাতব তারের যোগ থাকে, ফোটোফোনে সে যোগটি আলোকের। এই যন্ত্রে, একটি অভি পাতনা কাচের দর্পণের পিছন দিকে প্রেরিভব্য শক্ষাটি কোটোকোনের প্রেরক যন্ত্র।



হয় ৷ শকারমান বার্তরকের আঘাতে দৰ্পণটি, অতি পাতলা বলিয়া, আকারে পরিবর্ত্তন প্রাপ্ত হয় এবং ইহার আলোক-প্রতিবিশ্বন-শক্তিতেও বৈবমা জন্ম। এই দৰ্পণে কাচফলক ছারা (Condensing lens) খনীভূত আলোকরশ্মি করিয়া ইহাকে এরপে ফিরানো আলোকরশ্মি তাহা হইতে প্রতিফলিত হইরা শব্দতরক্ষে দর্পণটির শ্রোতার দিকে যায়। আকারে যে বৈষম্য জন্ম তাহার সঙ্গে সঙ্গে দৰ্পণ হইতে প্ৰতিফলিত আলোকে ঠিক छम्युक्रभ देवयमा अभिन्ना शांदक, व्यर्थार मर्भन হইতে আলোক কখনো অধিক কখনো বা প্রতিবিশ্বিত হয়। এই পরিমাণে আলোকই শব্দ বহন করিয়া এই বৈষম্যকেই শব্দের আর লইয়া বার। এক আকার বলা যাইতে পারে। ফোটোফোনের গ্রাহক বস্ত।



এই আলোককে ধরিরা তাহাকে কথা

कहारेबा नरेलहे हरेन। मर्भाग সাহায্যে। হইতে আলোক শ্ৰোতার निकारे चार একটি मर्भरव আসিয়া পডে। দর্পণটি (Parabolic Mirror.) এরপ যে তাহাতে আলোক পতিত হইলে. হইয়া কোনো প্ৰতিবিশ্বিত স্থানে আসিয়া একত **हत्र** । আলোকরশ্মি একত হয় সেই স্থানে একটি **मिलिनियम् (कांव আছে। এই मिलिनियम-**কোষের সহিত একটি তাড়িৎ-কোষ সংযুক্ত থাকে; তাহার সহিত একটি টেলিফোনের গ্রাহক যন্ত্রও (টেলিফোনে শ্রোতাকে বাহা কানে লাগাইতে হয়) সংযুক্ত করিয়া রাখা হয়।

সিলিনিয়মের একটা বিশেষ গুণ আছে বে ইহার উপর আলোক পতিত হইলে ইহার তাড়িৎ-পরিচালন-শক্তি বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয় অর্থাৎ তথন তাড়িৎ দিলিনিয়ম অতিক্রম করিয়া সহজ্বেই ৰাইতে পারে। ফোটোফোনে কাজ করিবার সময় সিলিনিয়মে যে আলোক পড়ে তাহাতে বৈষম্য থাকে বলিয়া ইহার তাড়িৎ-পরিচালনেও বৈষ্মা ইহাতে সংশগ্ন তাডিং-বহ তারে তাড়িতের পরিমাণে হ্রাসরুদ্ধি উৎপন্ন হর। এই বৈষম্য-ময় তাড়িং-প্রবাহ একটি সাধারণ টেলিফোনের পূর্ব্বর্ণিত-রূপে শব্দ গ্ৰাহক যন্ত্ৰে এ কেত্রে, লোহ-পাতটির কম্পন বক্তার বাক্যোখিত বায়ু তরঙ্গে কাঁপিরাছিল সেইরপই দর্পণখানি যেরূপে সেইজন্ত লোহপাতটির নিকটে যে উথিত হয় ভাহাতে প্রেরিট नक्षिरे উৎপन्न इहेना.शांटक ।

গ্রাহান বেল্ এই বস্তুটির সাহাব্যে ৮০০ গ্রুপুর শব্দ প্রেরণ করিয়াছিলেন। তিনি কেবল মন্থ্যের কণ্ঠস্বর প্রেরণ করিয়াই ক্লান্ত হন নাই, সন্ধাতিও প্রেরণ করিয়া তবে ছাড়িয়াছেন।

এখন বোষ্টন্ নিবাসী হামও ভি, হেজ্
কর্ত্তক উদ্ভাবিত Radiophone বা আলোকবক্তার কথা বলা যাউক। কোটোকোনের
বিষয় জানা থাকিলে ইহার কার্য্যপ্রণালী
বুঝা ক্ঠিন হইবে না। ইহাকেই তারবিহীন
টেলিফোন্ নাম দেওয়া হইরাছে।

যে বস্ত আলোক দেয় তাহা তাপও বিকিরণ করে। আলোক দেখিলেই বুঝিতে হইবে তাহার উৎপত্তিস্থানে তাপ আছে। তাপ ভিন্ন আর কি উপারে উজ্জ্বল আলোক উৎপন্ন করা যাইতে পারে আমরা জানি না। জাহাজে ও ষ্টীমারে বহুদুর পর্যান্ত আলোক বিকীর্ণ করিবার জন্ম এক প্রকার তাড়িতা-লোক ব্যবহৃত হয় তাহার নাম সার্চলাইট্ (Searchlight); ইহাতে প্রভূত আলোক ও উত্তাপ জন্মে। বহু মাইল দূরেও সার্চলাইটের षात्नांक (पथा यात्र। यउन्त्र षात्नांक यात्र তাপও তত দূর যায়, কিন্তু দূরে সে তাপ অহুভব করিতে আমাদের শক্তি হেজ্ এক অভিনৰ উপায়ে যাহাতে আলোকের তাপ গ্রহণ করা যার ভাহার ব্যবস্থা করিয়াছেন এবং ভাহাবারাই শব্দ পরিচালন করিয়াছেন।

আংশাক-বক্তার প্রেরক ষম্ভাট একটি দার্চলাইট ভিন্ন আর কিছুই নহে। ইহার পিছন দিকে চারিবোড়া ভার টেলিফোনের একটি প্রেরক ষম্ভের সহিত সংবৃধ্ধ হইরা

আছে। বে তার বাহিয়া তাড়িং আসিয়া সার্চ-লাইটে আলোক উৎপন্ন করে তাহাও এই তারগুলির সহিত সংযুক্ত। গ্রাহক যন্ত্রটি ফোটোফোনের গ্রাহক বল্লেরই তাহাতেও আলোক ঘনীভূত করিবার জন্ম একথানি দৰ্পণ (Concave or Parabolic এই দৰ্শণে আলোক Mirror) शहक। পতিত হইয়া যে স্থানে কেন্দ্রীভূত হয়, সেম্থানে একটি দীর্ঘাকৃতি কাচের ফাঁপা কুদ্র পাত্র আছে; এই পাত্রটি অতি সহজেই তাপ গ্রহণ করিতে পারে এরপ ধর্মবিশিষ্ট অঙ্গারকণার অৰ্দ্পূৰ্ণ এবং ইহার স্ক্র স্চ্যগ্র মুখটি ঈষৎ পরিমাণে কানে দিবার একটি চোঙের ভিতরে আসিয়াছে।

এই যন্ত্রহারা কোনো শব্দ প্রেরণ করিতে হইলে প্রেরক তাহার সার্চলাইট্টির আলোক যাহাতে শ্রোভার দিকেই চালিত হয় এরপে ফিরাইয়া লইয়া সার্চলাইট্সংলয় টেলিফোনে কথা কহেন। টেলিফোনের সহিত সার্চ-লাইটের তাড়িৎবাহী তার সংষ্ক্ত আছে। টেলিফোনে শব্দ হইলে শব্দতরঙ্গ শ্লপভাবে রক্ষিত অঙ্গারশলাকার সাহায্যে সার্চলাইটের আলোক-উৎপাদনকারী তাড়িৎ-প্রবাহকে कथरना किছू इर्सन कथरना वा किছू मदन कतिया (मय, कांट्यरे मार्रगारेटेव व्यात्नांटक হ্রাসবৃদ্ধি উপস্থিত হয়। সার্কলাইটের আলোক শ্রোতার নিকটস্থ দর্শণ হইতে প্রতিফলিত হইয়া ঘনীভূত অবস্থায় কাচের পাত্রটির উপরে পড়ে এবং অঙ্গারকণাগুলি সেই আলোক হইতে তাপ লইয়া আকারে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয় ও কাচ-পাত্রটির স্চ্যগ্র মুথটিকে কানে দিবার চোঙ্টির দিকে ঠেলিয়া দেয়; ইহাতে স্কাগ্র

মুখটি চোঙ্টিতে মৃদ্ধ মৃদ্ধ আৰাত প্ৰদান করে।
এই আৰাত হইতেই প্রেরিত শক্টি প্নরুখিত
হয়। আলোকের বৈবন্য হইতে অসার
কণাগুলির তাপেও বৈষ্ম্য জন্ম; কাচ
পাত্রটির স্চ্যান্ত মুখের আঘাতও তদমুরূপ
বৈষ্মাযুক্ত হয়। আলোকের বৈষ্ম্য তাড়িৎ
প্রবাহ হইতে এবং তাড়িৎ প্রবাহের বৈষ্মাটেলিফোন্ হইতে উৎপন্ন হয়; কাজেই গ্রাহক
ব্য়ে প্রেরিত শক্টিই উৎপন্ন হইনা থাকে।

সেদিন সম্বাদ আসিয়াছে যে মধাসমূত্রে একখানি ভাহাভের সহিত আর একথানি জাহাজের সংঘর্ষণ ঘটিয়াছিল। সেই জাহাজ ছইখানির একখানি হইতে ভারবিহীন টেলি-গ্রান্দের সাহায্যে নিক্টবর্ত্তী অন্তান্ত জাহাত্তে এই বিপদের সমাদ প্রেরিত হইরাছিল। সন্ধাদ পাইয়া অতি অৱ সময়ের মধ্যে করেক-থানি জাহাজ ঘটনাত্তলে উপন্থিত হইয়া প্রায় এক সহস্র লোককে আদর মৃত্যু হইতে রকা করিয়াছে। জাহাজে জাহাজে স্থাদ আদান প্রদান করিতে তারবিহীন স্থাদ-প্রেরক বন্ধ ভিন্ন অন্ত উপার নাই। তার-বিহীন টেলিগ্রাফের মূল্য অধিক বলিয়া সকল জাহাতে তাহা থাকে না। হেজের এই বছটি সকল জাহাজেই ব্যবহৃত হইতে পারে। অবশ্র হেজের যন্ত্রের সাহায্যে তার-বিহীন টেলিগ্রাফের মত বছদুরে সম্বাদ প্রেরণ-করা বার না, তবে যতটা বার সাধারণত তাহাই ৰখেই। প্ৰত্যেক জাহাজেই সাৰ্চণাইট থাকে. অবশিষ্ট বন্দোবন্ত করিয়া লওয়া সহজ ও जनवादगांवा ।

া এক প্রকার ভারবিহীন টেলিফোনের কথা বল হইল। অপর্টির কথা বঁলিতে হইলে আমাদিগকে বায়ুৰগুল ত্যাপ করিব।
ভূগর্ভে প্রবেশ করিতে হইবে।

ফিলাডেল্ফিয়ার শ্রীযুক্ত এ, এস, কলিকা পৃথিবীর অভ্যস্তর দিয়া তাড়িৎ-প্রবাহ পরি-চালন করিয়া এক তারবিহীন প্রকার টেলিফোন্ প্রস্তুত করিয়াছেন। এই বল্লে. মৃত্তিকা মধ্যে একথানি স্থুবৃহৎ ধাত্ৰ জাল প্রোথিত করিয়া তাহার সহিত একটি অভ্যন্ত প্রবল তাড়িং-কোৰ সংযুক্ত করিয়া দেওয়া হয়। এই জাল অতিশয় তাড়িতাবিষ্ট হইয়া ভূমধ্যে আপনার চারিদিকে তাডিৎ-শক্তি বিকীর্ণ করিতে এই পাকে। প্রেরিতবা শব্দটি এরপে উৎপন্ন করা হয় বে ভাহাতে জালখানির তাড়িতে বৈষমা জন্ম। ইহা হইতে চারিদিকে বিকীর্ণ শক্তি-রেখা-खनिट्छ देवसमा घटि। पूरत, संशास अस গ্রহণ করিতে হইবে দেখানে, আর একখানি জাল প্রোথিত থাকে; তাহাদ্বারা প্রেরকযন্ত্র-প্রেরিত কতকগুলি শক্তি-রেখা ধৃত হয়, এবং **এই बान मःनध्र এक** हि हिन्दिकात्म श्राहक যন্ত্রের সাহাধ্যে প্রেরিত শব্দটি পুনক্ষিত कत्रा रहेश्रा थाटक।

তারবিহীন টেলিগ্রাফ্ যখন প্রথম প্রস্তুত হর তথন তাহার একটি বিশেষ অস্তুবিধা এই ছিল বে তাহারারা গোপনীয় সন্থাদ প্রেরণ করা যাইত না, কারণ যে হানেই তারবিহীন টেলিগ্রাফের গ্রাহক যন্ত্র থাকুক না সেই ফানেই প্রেরিভ সন্থাদটি গ্রহণ করা যাইত। এখন যন্ত্রের উন্নতির সন্ধে সন্ধে এই অস্ত্রবিধা যুচাইবার পথ অনেকটা প্রাশন্ত হইরাছে। হইটি যন্ত্র গ্রন্থল প্রস্তুত করা হাইতে পারে বে একটির স্বারা প্রেরিভ সন্ধাদ দ্বিভীর্টি ভির

আর কোনোটির থারা গৃহীত হইবে না। + টেলিফোনেও দেইরূপ বন্দোবত হইবার আশা কলিন্দোর উত্তাবিত এই তারাবিহীন আছে।

শ্ৰীজ্ঞানেন্দ্ৰনাথ চট্টোপাধ্যায়।

যোগস্থিতি।

মন্থ্য স্থিতি চায়। স্থিতি বিনা শান্তি
নাই। স্থিতি কোথায় ? সামঞ্জ্যই স্থিতি।
কিসের সামঞ্জ্য ? শক্তির। শক্তিবিনা বস্তু
বা অন্তি নাই। এই সত্য-বস্তু শক্তির অস্তরে
বাহিরে অভেদে মিলন বা যোগস্ক্র হওয়াই
সামঞ্জ্য। এই শক্তিগত সামঞ্জারের মৃলে যে
ব্যক্তি প্রকাশমান তিনিই এক সত্য, আত্মা
বা স্থিতি।

শক্তি ও স্থিটি ছই নয় এক। শক্তির গতি বা ক্রিয়াকেই-স্থাষ্ট বলে। শক্তির গতি বা ক্রিয়ার দারাই প্রতি মৃহুর্ত্তে অস্তরে বাহিরে নানা বৈচিত্র্যের উৎপত্তি ও লয় হইতেছে। ইহাদের অস্তরে যে সামঞ্জ্য বা বোগ আছে তাহাই স্থিতি বা আনন্দ। এই যোগ বা আনন্দের প্রকাশ ইহার শেষ কথা বা চরম ফল হইলেও সাধারণতঃ বাহ্ন দৃষ্টিতে শক্তির ক্রিয়া বা গতির মধ্যে বৈপরীত্যই দেখা যার—যোগ বিয়োগের বৈপরীত্য, মঙ্গল অমঙ্গলের বৈপরীত্য, সত্য মিথ্যার বৈপরীত্য, পাপ পুণ্যের বৈপরীত্য, শীত উচ্চের বৈপরীত্য, মালোক অস্কলারের বৈপরীত্য ইত্যাদি। কিন্তু বাস্তবিক পক্ষে এই বৈপরীত্য স্বাভন্ত্র্যা

বা পার্থকা নম্ন ইহা নিবিড়তম ঐকান্তিক ঐক্যেরই অভিব্যক্তির প্রণালী বা উপায়।

বৈপরীতা ব্যতীত শক্তির প্রকাশ সম্ভবে না. শক্তির প্রকাশ ব্যতীত শক্তিগত সামঞ্জন্ত ঘটিতে পারে না। যোগ বিয়োগ, মঙ্গল অমঙ্গল, সত্য মিখাা, পাপ পুণা, শীত উষ্ণ, আলোক অন্ধকার, রূপ বৈষম্যের মধ্যে বে যোগমর অপণ্ডতা বিরাজমান তাহাই ক্রিভি বা আনন্দ, তাহাতেই এক-সত্য, আত্মা বা ভগবান প্রত্যক্ষ। প্রস্থপ্র বা প্রচ্ছন্ন যোগকে সজ্ঞান ভাবে অমুভব করিতে হইলে বিয়োগ मद्यस्य मञ्जान रुखात्र প্রয়োজন। বিয়োগ সম্বনীয় সজ্ঞানতা সজ্ঞান যোগেরই পূর্ব্বাবস্থা বা পূর্ব্বাভাস। এইরূপ সজ্ঞান অমঙ্গল শক্তি সজান মঙ্গল শক্তিরই পূর্কাবন্থা বা পূর্বাভাস। অমঙ্গণ কাহাকে বলে ? সমষ্টির সহিত বোগ-ভ্রষ্ট অবস্থার অহং অহুভূতির নামইত অমঙ্গল 🕈 ইহা বাতীত অমঙ্গলের আর কোন তাৎপর্য্য নাই ? এই সমষ্টি বা সকলের সহিত যোগ-ভ্ৰষ্ট রূপ অমঙ্গলবোধ মহুষ্য ছাড়া আর কোন জীবের আছে কি ? জড় কার্চ প্রস্তরের ইহার জন্ম তাহাদের কোন আছে কি ?

^{*} ভারবিহীন টেলিগ্রাফের কথা বলিবার সমর এ বিষয়টি আলোচিত হইবে।—জ।

[†] আরো একপ্রকার ভারবিহীন টেলিফোন্ উদ্ভাবিত হইয়াছে; ভাহার কার্যপ্রণালী অনেকটা ভারবিহীন টেলিগ্রাকেরই বড। পরে সে বিধরেও বলিবারণইচ্ছা রহিল।—জ।

प्रदेशन । ज्ञानि भागत्वां ज्ञान गुराह-ভূতিতেই পূৰ্বাৰহা বা পূৰ্বাভাগ। क्षाका जात कोन कीरवत भागरवाद नारे। শহর্মগতে এই যে রূপ বহির্জগতেও অবিকল জাই। প্রচন্ত্র আলোকেরই নাম অন্ধকার। ইহা আলোক অভিব্যক্তিরই পূর্ববিস্থা বা পূর্বাভাব∤ অন্ধকার সহন্দে শ্বতন্ত্র কোন সজা-नडा नारे; जालात्कत्र जाविज्ञातिर जनकात मुक्त मुख्यानका घटि। আলোকই শক্তি বা বৃদ্ধ ভাহার অভাব বা অপ্রকাশকেই অন্ধকার বলে। এইরূপ উষ্ণতাই শক্তি বা সক্রিয়তা উঞ্চতার অভাবই শীত বা নিজ্রিরতা। সত্য মিথ্যা সৰ্দ্ধেও এইরূপ। বাহা আছে যাহা বাস্তব ভাহাই সভা। যাহা নাই তাহার কলনা ও যাহা আছে ভাহা অস্বীকার করাকেই মিথ্যা বলে।

উষ্ণভার আবিষ্ঠাবে শৈত্য, আলোকের

করনা, মধনের আবিতাবে সমন্দা, বোনের আবিতাবে বিদেশের সাম্বানির বিদ্যানির সমন্দা, বোনের আবিতাবে সমন্দা, বোনের আবিতাবে বিদ্যানির বিরাশ বলে।

মুল বা বাহু দৃষ্টিতে ইহা বিনাশ কিছ সুন্ন বা অন্তর্গ হিলে ইহা বিনাশ নহে; নৃতন অবস্থায় নবজীবন লাভ। সম্পার মিথ্যা ও সমন্দা এইরপে লয় বা বিনাশ প্রাপ্তি ঘারা সভ্য ও মঙ্গলে পরিণত হইরা আসিতেছে ও আসিবে।

ইহাই শক্তি বা বস্তর সনাতন স্বভাব।

বাঁর অন্তরম্ব চেতনা পবিত্র আচরণ ও সাধনা বারা ক্ষতা প্রাপ্ত হয় তিনিই শক্তির এই গতি ও স্থিতি অমুভবে সমর্থ হন ও এই শক্তির মূলে বা মর্ম্মে বে একই সত্য অন্তরে বাহিরে অভেদে প্রকাশমান আছেন তাহা তাঁহার লক্ষ্য গোচর হয়।

শ্ৰীহেমণতা দেবী।

লালমোহন ঘোষ।

প্রত ১৮ই সেপ্টেম্বর শনিবারে ভারতগৌরৰ শ্রীযুক্ত লালমোহন ঘোষ পরলোক
গমন করিরাছেন। তাঁহাকে হারাইরা সমগ্র
দেশ আজ ব্যথিত। তাঁহার ভার বিঘান
বাগ্রী ও দেশসেবক ক্রমেই আমাদের মধ্যে
বিরল হইরা পড়িতেছেন। আমরা শোকসম্বর্ধ রুদরে আজ তাঁহার সংক্রিপ্ত জীবনীর
মধ্যে তাঁহার নানা সদ্পুণের আলোচনার
ভারত হইলার। তাঁহার জীবনের অনেক কথা
বালা তাঁহার কলা শ্রীমতী প্রকুমারীর নিকট
শ্রীমতী । ক্রম্বর্গ তাঁহাকে আমরা আত্তরিক

১৮৪৯ গৃহীব্দের ১৭ই ডিসেম্বর নদীরার সদর ক্ষনগরে লালমোহন জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতা রার রামলোচন ঘোব বাহাছর তথার সদর আমীন পদে নিযুক্ত ছিলেন। ঘোব পরিবার পূর্ব্বে পূর্ববিশে বিক্রমপুরে বাস করিতেন এবং ব্রিটিশ শাসন স্থাপিত -হইবার পূর্ব্ব হইতেই তাঁহারা জ্ঞাদার ছিলেন। ১

শিশুকাল হইতেই লালমোহনের অসাধারণ প্রতিভা প্রকাশ পাইত। তিনি বধন চারি বংসরের বালক তখন তাঁহার মাতা তাঁহার ভোঠা ভরিনীকে শভাইতেন কেথিয়া তিনিও বর্ণারিকে কাইবা তাঁহার বাভার নিকট



रिंग्रिक्त, अवर छीहोटक मकारेशंड कड পীড়ন করিছেন। তথ্যকার বিন্দুপ্রধায়সারে शक्य वरमत्र मा हरेला हाटा चिक हरेल मा, এবং হাতে খড়ির পূর্বে বিভারত করিতে नारे विशा बननी छाराटक भणारेत्वन ना,-छिनि निक्टि (थेनां क्रिडिजन ! जननीत्र निक्टे ধেশিতে ধেশিতে ভগিনীর পড়া শুনিরা তিনি পাঠ অভ্যাস করিয়া ফেলিতেন। একদিন হঠাৎ তিনি তাঁহার (बाई मनास्माहनर्क विलियन "बाबा, मा आमारक পড়ান না, আমি কিছ শুনিয়া শুনিয়া निश्तिज्ञाहि, व्यात्र निमित्र त्नथात्र छेशत निश्तित्रा লিখিতেও শিখিয়াছি।" মনোমোহন পরীকা করিয়া দেখিলেন লালমোহন আপন চেষ্টার বস্তুত্ত পড়িতে ও লিখিতে শিখিয়াছেন। তিনি তৎক্ষণাৎ লালমোহনকে পিতার নিকট লইয়া গেলেন। পিতা বালকের বিস্থা দেখিয়া আশ্চৰ্যা হাসিয়া ৰলিলেন-"তুৰি হাতে ধড়ির আগেই পড়িতে শিধিরাছ! তুমি এত পণ্ডিভ, দেখিও পেবে সরস্বতী বেন তোমার উপর অসম্ভই না হন।" বিস্তালয়ে শিক্ষাকালে ভাঁহার অসাধারণ ধীশক্তি, স্তিশক্তি ও পাঠাছরাগ দেখিরা সকলেই मुक्ष रहेराजन। ১৮৬७ मार्टन প্রবেশিকা পরীকার ইংরাজিতে সর্কোচ্চন্থান অধিকার করিয়া প্রাথম শ্রেণীর বৃত্তি লাভ করেন। পরে ব্যাসময়ে এফ, এ পরীকার উত্তীর্ণ হইরা বারিষ্টার হইবার জন্ত ইংলতে গমন করেন। তথায় লগুননগরে ল্যাকোনিক্স্ (Laconics) নামক আঁালাচনা সমিতিই জাঁহার স্বাভাবিক বাগ্মিতাশক্তির প্রথম বিকাশস্থা। ছাত্রাবস্থা-एके जिनि ध्यम् मानास्य वकुकारात्न निश्व

विस्त्रन, रा निगारका टार्क सका सन् बारेटछेत्र गरिक किनि थात्र गमकक व्हेस উঠিशছিলেন। এক নভাতে কন্ বাইছ न्डांगंडि हित्नन। यूर्व नानत्वाहन द्वह দীড়াইরা বক্তা করিভেছিলেন ৷ मिडोत्र बणहांह (Broadhurst) একজন পার্লামেণ্টের সভ্য বাহিরে হাড়াইরা ভাঁহার বক্তা ভনিতেছিলেন। ভাঁহার বক্তা শেব হইবার পর তিনি ভিতরে আসিরা বলিলেন—"ভদ্রমহোদরগণ, হুর্জাগ্য-সভাহৰে উপস্থিত হইতে বিলয় বশতঃ হওয়ার, আমি বাহিরে দাঁড়াইয়া কেবল বক্তা শুনিভেছিলাম মাত্র, বক্তাকে দেখিজে পাই নাই। ভনিতে ভনিতে আমি মনে করিতেছিলাম বক্তা নিশ্চরই পার্লামেণ্টের কোন বিখাত বাগ্মী হইবেন। কিছ ভিতৰে প্রবেশ করিয়া দেখিলাম বক্তা আমাদের ভারতবাসী লালমোহন।" மத் বলিবামাত্র শ্রোত্বর্গ উচ্চ করতালি দিল্লা উঠিবেন,—সভাপতি বন্ধ ভাহাতে ৰোগদান ্বকরিলেন। ১৮৭৩ সালে ভিনি বারি**ইারি** পরীকার উত্তীর্ণ হইরা ভারতে প্রভ্যাগ্রন करत्रन ।

১৮৭৯ সালে লর্ড লিটনের দেশীর সংবাদপত্ত আইন, নৃতন সিভিল সার্ভিদ্ ও আরাজ্ব অকল্যাণকর কর্মের বিক্তমে প্রতিবাদ করিবার জন্ম তিনি ভারতবাদীর প্রতিনিধিরণে বিত্তীর-বার ইংলণ্ডে গমন করেন। জাহার অলাধারণ বাগ্মিতা ও অক্লান্ত চেষ্টার ফলে দেশীর সংবাদপত্ত আইন লুগু হর এবং ভারতে সিভিল সার্ভিস পরীক্ষা প্রহণের বিশ্বি

দ্বাদে জিনি ভারতে জাতীরতার জ**ব**ু ও জাতীর মহাসমিতির অন্মের আভাস প্রদান করেন। ভারতের প্রতি ইংলপ্রের কর্তব্য শব্দে ভিনি এক সভান্তলে এরপ মনোহর ভাষায় ও অকাট্য যুক্তিপূর্ণ করেন বে অন ব্রাইট বক্তৃতা করিতে বলেন—"আমার হয় আমি কোন কথা কহিয়া লালমোহনের বক্তার মাধুর্য্য নষ্ট ় না করিয়া স্থলেই সভা ভঙ্গ করা সঞ্ত।" ভারতের ইতিহাসে ভারতবাসীর বক্তৃ তার প্রবল প্রভাব আর কথনও দেখা যার নাই। এই বক্ত তার ২৪ ঘণ্টার মধ্যেই ভারতে সিভিল সার্ভিস পরীক্ষা প্রতিষ্ঠিত করিবার আদেশ ভারত গবর্মেণ্টকে টেলিগ্রামে প্রেরণ করা হয়।

পর বংসর তিনি পুনরায় লর্ড লিটনের শাসননীতির বিরুদ্ধে প্রতিবাদ করিবার জন্ত ইংলতে গমন করেন। এবার তথায় উপস্থিত হইয়া তিনি ইংলতের চতুর্দিকে বেরুপ তুম্ল আন্দোলন উপস্থিত করিলেন ভাহাতে ইংলগুবাসী জাঁহার অসাধারণ প্রতি-ভায় বিশ্বিত হইয়া পড়িলেন।

পরে 'ইল্বার্ট বিলের' সেই লজ্জাকর আন্দোলন সমরে লালমোহন যেরূপ উদ্ধান করিয়াছিলেন তাহা দেখিয়া তাঁছার একজন বন্ধু বলেন "জাতীয় স্বার্থ ক্ষমার জন্ত একক প্রাণীর এরূপ উদ্ধান চেই। সচরাচর দেখা যায় না।" তাঁহার ঢাকানগরের বিশ্বরাত বক্তৃতার ফলে মিটার আান্সনকে (Branson) ভারতবর্ষ ত্যাগ করিয়া পলায়নে শাধ্য হুইতে হয়। ইহার কিছু দিন পরেই

किनि प्रभक्नार्यत का क्ष्मिनात है । ना शयन करतन । इहे वरतत कांग जिनि हेरलाए হিলবার্ট বিল' ও অক্সান্ত গুলীভি সমূদ্রে ১৮৮৫ সালে তাঁহার व्यक्तिन क्रांचन অসাধারণ বাগ্মিডা ও প্রতিভার মুগ্ধ হট্যা গ্রীনৃউইচ (Greenwich), ডেপ্টফোর্ড (Deptford) ও উপ্উইচ (Woolwich) এই তিনটি প্রদেশ তাঁহাকে তাহাদিগের প্রতিনিধিস্বরূপ পার্লামেণ্টের সভ্য হইবার জন্ত অমুরোধ করে। ভারতবাসীর পক্ষে এরপ নিমন্ত্রণলাভ এই প্রথম, এবং তাঁহার প্রতি এই সন্মান প্রদানের জন্ম আমরা ভারতবাসী চির্দিনই গৌরবাবিত। তাঁহাকে পার্লামেণ্টের সভ্য করিবার জন্ম গ্রীন্টইচবাসীর অমুরোধের ইতিহাসটি বলিলে বোধ হয় পাঠকবর্গের অপ্রীতিকর হুইবে না। পূৰ্ব্বে সাহেব যথন লালমোহনকে করেন "মিষ্টার বোষ, আপনার কি মনে হয় যে কোন ভারতবাদীর পক্ষে পার্লামেণ্টের সভ্য হওয়া সম্ভব ?" তথন লালমোহন বলেন যে ইংলওবাসীর পক্ষে ভারতবাসীকে ভাহাদের প্রতিনিধি নির্বাচিত করা অসম্ভব। পরে একদিন গ্রীন্উইচের এক প্রকাশ্র বক্তৃতা স্থলে তাঁহার জনৈক বন্ধু তাঁহাকে সঙ্গে করিয়া লইয়া যান। সেই বন্ধুটি যেখানকার সমিতির সেক্রেটরির নিকট লালমোহনের অসাধারণ বক্তৃতাশক্তির কথা উল্লেখ করেন। এই কণা ভনিরা তিনি লালমোহনকে ১০ মিনিটকাল বক্ততা করিবার জম্ব অমুরোধ করেন। দশমিনিট সময়ের মধ্যে লালমোহন এরপ বাগ্মিতার পরিচর প্রদান করেন, বে গ্রীক্টইচ বাসীগণ মৃশ্ব হইরা ভাঁহাকে ভাহাদের প্রতি-

निधिवत्रण भागीदमाणीय गणा दहेवांत अस चर्दां करान। এই बंहेनात शत बाहिह भारहर डाहारक विमाहित्मन-"मिष्टीत्र त्याय. আজ প্রাতে যখন এ সংবাদ আমি সংবাদপত্তে দেখিলাম তথন যেন নিজের চক্ষুকে বিশ্বাস করিতে পারিশাম না। তোমার বক্ত-তার কি মোহিনী শক্তি, যে, অঞ্জ ব্রিটশ প্রজাগণ ক্বফাব বিদেশীর প্রতি বিদ্বেষ বিস্মৃত হইয়া তোমাকে তাহাদিগের প্রতিনিধি নির্মা-চিত করিবার জন্ত ব্যপ্ত হইল। ভারতবাসীর निक्षे भागीरमाण्डेत चात्र मुक्क कतिवात क्रज তোমার নাম চিরম্মরণীয় থাকিবে।" হুর্ভাগ্য-বশতঃ নানা কারণে তাঁহার পালামেণ্টে প্রবেশলাভ ঘটন না, কারণ হোম কল (Home rule) আন্দোলন লইয়া ইংলণ্ডে উদারনৈতিকগণের প্রভাব সে সময়ে বড়ই কুল-হইয়া পডিয়াছিল। কিছ তংসত্ত্বেও তিনি যদি ডেপ্টফোর্ড ত্যাগ করিয়া বারমিংহামে যাইতেন তাহা হইলে তাঁহার পালামেণ্টে প্রবেশ করা অসম্ভব হইত না। কিন্ত একবার ডেপ্টফোর্ডের নিমন্ত্রণ গ্রহণ করিয়া নিজ খার্থের জন্ম বার্মিংহামে যাইতে অস্বীকার করিলেন। উপযুর্গরি ছইবার তিনি ডেপ্টফোর্ডে পরাঞ্চিত হন। ভোটের সংখ্যার হিসাবে পরাঞ্চিত হইলেও, অন্ত হিনাবে তিনিই জন্নী হইয়াছিলেন সন্দেহ নাই। গ্লাড়্টোন সাহেব তাঁহাকে লইয়া যাইবার জন্ম আপন গাড়ী পাঠাইতেন। এ নেহ ও সমান ইংলওে আর কথনও কেহ শাভ করিতে সক্ষম হয় নাই। সহত্র সহত্র ইংরাজ ঘোড়া খুলিরা আপনারা তাঁহার গাড়ী টানিয়া লইয়া বাইতেন। ইহা কৃঞাৰ ভারত-

বাসীর পক্ষে অর সন্মানের পরিচারক নট্টে তাঁহার প্রতিষ্ণী এভেলিন (Evelyn) সাহেব अम्रो रहेरन जनागरमाहरन म अम्रवाद्धा रचाविक করিয়া পার্লামেণ্ট ত্যাগ করেন। পার্লমেণ্ট প্রবেশের কিছু দিন পরে তিনি বলেন—"গভ নিৰ্কাচনে একজন আশ্চৰ্য্য শক্তি ও প্ৰতিভা শালী পুরুষ আমার প্রতিবন্দীম্বরূপ ছিলেন। তিনি বলিতেন আয়ৰ্লাণ্ডে স্বায়ন্তশাসন প্ৰদান বা প্রজাপীড়ন করা এই ছইয়ের মধ্যে মধ্যপথ কিছুই নাই। আমি কিন্তু আমার প্রদেশ-বাদীকে বুঝাইয়াছিলাম যে এরূপ মধ্যপথ যথাৰ্থ ই আছে। একণে রাজমন্ত্রীগণের ব্যবহারের বারা আমি বুঝিতেছি যে আমার পরাজিত প্রতিষ্দীর কথাই সত্য—আমার কথাই মিথ্যা ৷ এরপস্থলে আমি আর বর্ত্তমান গ্বর্ণমেণ্টকে সমর্থন করিতে অকম।"

ভারতে প্রত্যাগত হইয়া তিনি কলিকাতা হাইকোর্টে ব্যারিষ্টারি আরম্ভ করেন! তিনি ফিরিয়া আসিলে একজন বিচারপার্ত নাকি বলিয়াছিলেন—"পার্লামেণ্ট যাহা হারাইল, বিচারালয় তাহা লাভ করিল। অয়ের মধ্যে মনোগ্রাহী করিয়া অভিযোগ উপস্থিত করিতে, তাঁহার সমকক পুব অয় লোকই আছেন। তাহার প্রবল ও তীত্র যুক্তি শ্রবণ করিতেও প্রথ হয়।" ব্যবসাতে তিনি তাঁহার জ্যেষ্ঠ মনোমাহনের ভায় দয়ালু ও পরোপকারী ছিলেন। অনেক সময়ে অনেক দরিজ ব্যক্তিকে গুহে স্থান দিয়া খাওয়াইয়ি বিনা মূল্যে তাহার মকদমা করিয়া দিতেন।

বন্ধদের নিকট লালমোহন অমারিক ও কৌ চুকপ্রিয় ছিলেন। তাঁহার গর করিবার একটু বিশেষ শক্তি ছিল। শাহিত্য চর্কাই তাঁহার—জীবনের একমাত্র

কথ ছিল। কিছু দিন হইতে তিনি মেখনাদ
বধের ইংরাজি অমুবাদ করিতেছিলেন। পূর্বে
একবার মেখনাদ বধের অমুবাদ করেন। কিন্তু
তাঁহার এক ভূত্য তাহা হারাইরা ফেলার
তিনি পুনরার তাহার অমুবাদ আরম্ভ করেন।
নেপোলিরনের জীবন চরিত শেব করিবার
পূর্বেই তিনি রোগাক্রান্ত হইলেন। রোগ
শযার শারিত অবস্থাতেও সাহিত্য চর্চা
ত্যাগ করেন নাই। মৃত্যুব হুই সপ্তাহ
পূর্বেও তিনি তাঁহার কন্তাদিগকে মিণ্টনের

Paradise Lost পভিয়া শুনাইতেন।

পাঠের সমর বলি কেই জিল্লাসা করিতেন তিনি কেমন আছেন, তিনি বলিয়া উঠিতেন "এখন ও সব কথা থাক, পড়ার সময় বাঙ্গে" কথা কহিও না।" পদ্মীর মৃত্যুর পর কল্যা-দিগকে এতাদৃশ মেহ ও বদ্ধ করিতেন যে তাঁহারা একদিনের জন্মও মেহমরী মাতাব অভাব জানিতে পারেন নাই।

লালমোহনের পুত্র ছিল না। তাঁহাব ছইটি কস্তা। জ্যেষ্ঠাটি অবিবাহিতা, কনিষ্ঠটি ডাক্তার শরৎকুমার মল্লিকের পত্নী। ছবিতে তাঁহার নিকট তাঁহার দৌহিত্রীটি রহিয়াছে।

বিদায়-পূৰ্বে।

"বিশার !" যথন বল্তে হবে • তথন না হয় কেঁদো, বাহুণতার • তথন না-হয় কণ্ঠ আমার বেঁধো ! তার আগেতে হেলে হেদে থেকো আমার কাছটা ঘেঁষে; এটা-সেটা হাতের কাছে এগিয়ে দিয়ো, বধু ! **"ভবে আ**সি ?"— বল্ব য**ধন** তথন কেঁদো ভধু। 2 यत्नत्र इःस्थ **শারাদিনটা** উন্ধ-পুস্কু চুলে

ঘুরোনাক मखन टार्थ সকল যাব ভূলে! মোট্-মাট্ট সব গুছিরে বখন সাজ-গোজনী করে.---ঢুকবো তোমার **কু** প্ৰগৃহে —তোমার ছোট খরে; দেবতার ফুল, আঁচল থেকে हूँ हेट्ड यथन एएटर दहरथं, বিদার-চুয়ো म्पार्व बथन গলা জড়িয়ে ধরে ! কাদতে হয়ত কাঁদৰ তথন তুজনে প্রাণ ভরে। শ্ৰীগোলোকবিহারী মুখোপাধার।



অতিথি

শরতে আব্দ কোন্ অভিথি धन श्रीरंभन्न चारत । আনন্দগান গা'রে হুদ্য আননগান গা'রে ! नौनाकारभंद्र नौद्रव कथा. শিশির-ভেন্ধা ব্যাকুলতা. বেজে উঠুক আজি ভোমার বীণার তারে তারে। শতকেতের সোনার গানে যোগ দে রে আজ সমান তানে. ভাসিয়ে দে স্থর ভরা নদীর व्यमन कनशद्ता। বে এসেছে তাহার মুখে দেখ্রে চেয়ে গভীর স্থে, হয়ার খুলে তাহার সাথে বাহির হয়ে যা'রে। শীরবীজনাথ ঠাকুর।

नगरनाहना।

শুক্রাবিন্দ সিংহ।— শ্রীবসন্তক্ষার বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত। 'ঘোব প্রেসে মুক্তি ও প্রছকার কর্তৃক
প্রকাশিত। মূল্য । ৮০ মাজ। গ্রন্থখনি পাঠ করিয়া
ভাষার স্থা - ইইয়াছি। অলের ভিতর, গোবিন্দের
দীবনের অনেক জাতব্য কথাই গ্রন্থখনে সমিবিই
ইইয়াছে, অথচ কোথাও সুদীর্ঘ টাকা-টিপ্লনীর
বিজীবিকা নাই। বালকগণের উপবোগী সহজ ও
পরল ভাষার লিখিত এই কুল জীবনীগ্রন্থখনি বিশেব
বিদরপ্রাই। ইইলাচে।

বিভাসাগর ।— শীচণ্ডাচরণ বন্দ্যোপাধ্যার প্রণীত। তৃতীয় সংস্করণ। ইণ্ডিয়ান্ প্রেস, এলাহানাদ। ১৯০৯। মৃল্য ত্ টাকা মাত্র। প্রকাশ ক, ইণ্ডিয়ান্ পাবলিশিং হাউস, কলিকাতা। বর্তহার প্রস্থানির তৃত্যীয় সংস্করণ দেখিরা আবরা প্রকৃতই আনন্দিত হইয়াছি। এমন উপাধের প্রস্থ বাঙলা সাহিত্যে বিরল বলিলেও অত্যুক্তি হর না। চারিদিকে বিপ্ল মার্থের আবর্তে পড়িরা বাঙালীর হৃদর প্রকিল হইয়াপ্রাড়িতেছে, প্রকাহীনতার বিবে বাঙালী সুব্বের

स्वत्र वर्षात्रिक श्रेता केंक्रिकार, त्वरणत करे क्रिनित्, विश्वामांशरतत छात्र अविजीत कर्चरीरतत जीवनी बांडामीत स्वरत मश्रीवनी छेववित कार्या कतिरव। वर्षमान सीवनीअरह, अष्टकाइ रव शक्कि अवनयन **ক্রিয়াছেন, ভাহাতে** পাঠকের সমক্ষে বিদ্যাসাগরকে विविध विवस्य स्थाइवात वित्यव श्विधा श्रेगारह। বিদ্যালয়, কর্মকেত্র, বাওলা সাহিত্য, খ্রীশিকা, न्याक्रनरकात, कान ও শिकाविकांत्र कार्या, शातिवातिक 😉 সামাজিক জীবন এবং লোকসেবা প্রভৃতি বিভিন্ন বিবরে বিদ্যাসাগরের সার্ব্যক্ষনীন প্রতিভা কিরূপ विकाननाक कतियांक, नाशांत्रत्यत क्लिटिय विकान সাগরের ছংখকাতর হৃদর্খানি কিরুপ উন্মুখ ছিল. গ্রন্থখানি পাঠ করিলে ভাহার বিশদ আভাব পাওয়া যায়। প্রমুখানি মনোজ হইরাছে। গ্রন্থের ছাপা বাঁধাই প্ৰভৃতি বিশেষ চিতাকৰ্ষক—বে কোন উৎকুই ইংবাজী এছের ছাপা-বাঁধাইরের অপেকা কোন चः ए शीम नरह, अ क्थां हेकू आयता अकृष्ठि हिल्ड ৰলিতে পারি।

গাথা।— (কবিভাপ্তক) শ্রীকবিনাশচন্দ্র দাস এম, এ, বি, এল প্রণীত। কলিকাতা, সংস্কৃতপ্রেস ডিপমিটারী হইতে প্রকাশিত। ১৯০৯। বদেশ প্রেসে মুক্তিত। মূল্য বার আনা। ছংবের সহিত বীকার করিতে হইতেতে, কবিভাগুলি পাঠ করিয়া আমরী সভোষলাভ করিতে পারিলাম না। কবিভাগুলি নিভাতই শিক্ষানবিশি রচনা। "কু-ভত্ত্বী" ভিন্ন অশ্র কোন কবিভাতেই কিছুমান্ত বিশেষত্ব নাই! ভাব ও ভাষা-বৈচিন্ত্রেরও একাত্ত অভাব!

সরল পূর্ব্ধশিক্ষা।—প্রথম ভাগ। মূল্য ১॥॰
টাকা। বিত্তীর, তৃতীর ও চতুর্থ ভাগ (একত্রে) মূল্য ১॥॰
টাকা। অক্সবিহারী চৌধুরী, এল, দি, ই প্রণীত।
ভবানীক্ষ পার্থির বজে মুক্তিও। তৃতীর সংকরণ।
গ্রহকার অবসরপ্রাপ্ত পার্থলিক ওয়ার্কস্ বিভাগের
ইক্ষিনিয়ার। তাঁহার চতুর্বিংশতি বংসরের অভিজ্ঞতার
কল্পে, এই প্রহ্মানি বাঙলা সাহিভার একটি গুরুতর
অভার কল্পেন করিয়াছে। প্রহ্ণলিতে এনন সরলভাবে
গুর্নির্মাণ, রাতা নির্মাণ, ইইক তৈয়ারী, ও

ভাষার ওণাওণ পরীকা, স্থাকি, চূণ, বালি, বিবেণ্ট,
প্রকৃতি নালমননা, বং বার্ণিন প্রভৃতি বিশেব প্রয়োজনীর
কথার অবতারণা করা হইরাছে দে, প্রস্থানি শুধু
ইঞ্জিনিয়ারিং নিজার্থী কেন, সাধারণ গৃহছের গক্তেও
বিশেব উপযোগী ও উপাদের হইরাছে। বিষরবোধের
স্ববিধাকরে বিবিধ চিত্রেরও স্নাবেশ হইরাছে।
প্রস্থানি বছ সর্তে স্কুল ও টেকনিক্যাল স্কুলের
পাঠ্যস্বরূপ গৃহীত ক্ইরাছে। ইহা গৃহে থাকিলে
কণ্টাক্টর বা রাজমিন্ত্রীর অস্থাহের উপরই, আপনাকে
ক্লারণ অসহায় ভাবে নিক্লেপ করিতে হইবে না এবং
তাহাদিগের কার্যাদির গুণাগুণ সহজেই গৃহস্বের চক্ষেধরা পড়িয়া যাইবে।

বালিকা-নীতি।— শ্রীমতী দৈরিক্রীবালা বোধ প্রবীত। প্রকাশক, আওতোব লাইরেরী, চাকা। চাকা, আওতোব যয়ে ব্রিত। ১০১৫। মূল্য তিন জানা। জবিক্ষাইকা বালিকাগণকে নীতিবিবরে মোটাম্টি শিক্ষা দিবার অভিপ্রায়ে এই পৃত্তিকাথানি লিখিত হইয়াছে। লেখিকার ভাবাটুকু মন্দ নহে, তবে বক্তবাটুকু তেমন পরিক্ষুট হর নাই। লেখিকা ভালো করিয়া সকল কথা বুঝাইতে পারেন নাই।

स्कि।—वा श्रीवृषि ७ ममूत्रि । श्रीकारनज-মোহন হাস প্ৰণীত। প্ৰকাশক, শ্ৰীচাক্লচন্দ্ৰ বন্দ্যো-পাৰাায়, ইণ্ডিয়ান পাবলিশিং হাউস, কলিকাতা। কান্তিক প্রেসে মুক্তিত। বুলা ১।• বাতা। এছকার ৰলেন, 'দক্ষিত ধন বৃদ্ধি করিবার উপায়'ও 'সামাক্ত जात किकाल छहारेया मःमात्र कता यारेट भारत', 'ন্ধছিতে, ভাহার আভাব' পাওয়া বাইবে। ভবে 'ঝদ্ধি কাছাকেও দ্বাতারাতি বছুমাসুব করিতে পারিবে না।' এই শ্রেণীর গ্রন্থ যত অধিক প্রকাশিত হয়, ভতই দেশের মজল। বালকগণের পাঠ্য হিসাবে রচিত হইলেও প্রস্থানি সংগারী বাজি **মাত্রের**ই शांठे कहा कर्छवा। अरङ्ग कांवा दिन महस्त, महन ए অনাড়খর। 'ক্ছি'র করেকটি নোটামুটি কথা कार्ड-वार्ड निवित्रा विभाव चरत बर्छाकत अ्नाहुग बाथा উচিত। "क्ट्रेनिक् ना ट्रेन क्ट्रिनिक् হইতে পারে না।" "বৃহুর্তের স্ব্যবহার কর।"

"बर्क कविल मा" "बज चांत्र कवा बांत्र कविल मा।" "সংসালে বালে থনচ সহিত করা গৃহিণীর এগান কর্তব্য!" এই বোর বিলাসিডা ও অলসভার দিনে অনুৰ্ধক ৰাজে ধরতে, বাঙালীর কড়াক্রান্তিটি অৰ্থি বে ললে বাইভেছে, ভাহা ক্রমজনে বুঝিয়া চলেন। (इल्ट्राइइइ विवाद अनर्थक काक्कमरकत कथा ছাভিয়া দিলেও, বিলাসী বাবুদের চুক্রটের ছাইরের সহিত কভ পর্মা বে ছাই হইয়া বাইতেছে. म ज्वल दाथ कतियात कि **উ**भाग्न-नारे ! अकि मकलाक महाजन कतिया मिर्व। অজ্ঞানের মত এই ৰাজে ধরচের বস্তার, কত সংসার আল উৎসর যাইতেছে, কে তাহার সংখ্যা করিবে। "ঋছিতে" চিম্বাণীল গ্রন্থকার সমাব্দের এই দারণ কত কাজ্জন্য ভাবে দেখাইয়া দিয়াছেন এবং তাহার আশু প্রতিকারের ঔষধও নির্দেশ করিয়াছেন। গ্ৰন্থানির ছাপা কাগল ও বাঁধাইটিও পরিপাটি रहेशांट !

हब्रमिका।--- अवविखनाथ ठीक्त। धनाश्वाप, क्रिकाछ।, देखियान ইভিয়ান প্রেসে মুক্তিত। भावनिनिर हांडेम्, धकांचक, **बी**ठाक्रठळ बरन्गाभाषात, বি, এ। মূল্য চারি টাকা মাত্র। রবিবাবুর কবিতার ন্তন করিয়া পরিচয় দিতে যাওয়া বাতুলভা। সহজ নিম্পুকের নিন্দার কালি ডাঁহার কবিতার যশ:-গুভতা হরণ করিতে পারে না, এইটুকু বলিলেই যথেষ্ট হইবে। রবিবাবুর সমগ্র কবিভার মধ্য হইতে কভকগুলি উৎকৃষ্ট করিয়া চরন করিয়া, 'চরনিকা' বাছির হইয়াছে। এই গ্রন্থে প্রথমেই রবিবাবুর আধুনিক সম্বের এক-খানি ছবি ও পরে কবিতার বিষয় লইয়া সাতথানি আরো স্থার ছবি আছে। রবিবাবুর সমুত্ত কবিতা পড়িবার সুযোগ, যাঁহাদের হইয়া উঠে না,—ভাঁহা-निर्गत निक्छ 'ठत्रमिका' विनिष्ठे चामत शाहरव। গ্রন্থের ছাপা ও বাঁধাই এমন চমৎকার হইয়াছে যে বাঙলা কোন বই ইহার তুল্য নৱ৷ 'চরনিকা'র সংস্করণটি সাহিত্য-রসজ্ঞের পক্ষে বিশেষ লোভনীর रहेबाटक ।

(रामिश्र शाथा। बीकृमध्य प थ्योष

কুত্তনীৰ শ্লেস মৃত্যিও। মৃত্য এক টাকা। প্রচনাতে লেখক বলিতেছেন, "চিকিৎসা শাস্ত্র নিভান্ত নীয়স ও জটিল ধলিয়া আমাদের লক্ষ্মীরা পারত পক্ষে উন্থা পড়িতে চাহেন না।" 'তাই, কলকঠের আর্ত্তি-ক্ষ্মে' 'কবিতার, হোমিও পু'খি' রচিত হইরাছে। গৃহত্তের উপযোগী অনেক জ্ঞাতব্য কথার সমাবেশে, রোগের লক্ষণ নির্ক্ষেণ, পথ্য প্রভৃতির সহল অবভারণার হোমিও-গাখা উপাদের হইয়াছে। তবে গ্রন্থের মৃত্যা, আমাদিগের মতে, আর একটু ক্ষাইয়া দিলে, 'হোমিও-গাখা' সাধারণ গৃহত্তের পক্ষে একটু স্থাপা হয়।

नातायनी। উপস্তান। औक्कीरतामधनाम এম, এ, প্রণীত। কলিকাতা, ২০১ কৰ্ণভন্নালিদ খ্ৰীট, এভকদাদ চটোপাধাৰ কৰ্মক প্রকাশিত। মূল্য দেড় টাফা। সাহিত্য-বল্লে মুক্তিত। কয়েক বংসর পূর্কে নারায়ণী'র প্রথমাংশ যথক 'ভারতী' পত্রিকায় ধারাবাহিক ভাবে প্রকাশিত হইয়াছিল, তখন পাঠক-পাঠিকা ইহা পাঠে বীতিমন্ত তৃত্তিলাভ করিয়াছিলেন। তাহার পর, দিগুণ বর্দ্ধিত, স্বতন্ত্র গ্রন্থারে 'নারায়ণী' প্রকাশিত ছইয়াছে। 'নারায়ণীর' ভাষাটি এমনি সহজ, গ জনাড়বন্ধ य, जारा निष्यव्ये रुपग्रशारी रुरेगा छे । बाक्यन मनागित्वत्र चानर्ग श्रमञ्जल, রতনের তেজস্বিতা, তুলদীর নিঃসার্থ পতিপ্রেম, ব্রাউন সাহেবের সহাসুভূতি मकनरे (तम समात पृषिप्राष्ट्र। अत्नकश्चन आपर्भ চরিত্রের আলোক-রেখায় 'নারারণী'র পৃষ্ঠা উচ্ছল, অথচ দে উদ্দল্যে বাড়াবাড়ি দাই, তাহা বেশ শ্লিঞ্ক, মনোরম। গ্রন্থকারের আর একটি অসাধারণ ক্ষমতা, প্রথম পৃষ্ঠা হইতেই বে কৌতুহলটি তিনি পাঠকের यत्न कागारेश जूनिशाहन, क्लीर्च ७८३ . गृही वािश्या, त्म कोजूरलत माजारूक् ममजाउदे जिनि বক্ষা করিয়াছেন। উপজ্ঞাসবানি একবার পাঠ করিতে আরম্ভ করিলে শেব না করিয়া থাকা বার না। অধিকাংশ আধুনিক বাঙলা উপস্থানে এই গুণ্টির একান্ত অভাব।

लोबानिक कथा। बीशूर्यकृषाबात्रन निश्ह,

वाब, ब, वि, अन अवीछ। विश्वतिकान मार्गिकी इरेड बिजरवात्रनाथ पछ कर्ड्क ध्वकानिछ। भूगा ১।• টাকা। ৫৩ নং কর্ণগুরালিস ছীট, লোটাস गार्दिततीरक थाथरा। धरे अरह, कत्रक. अन, बामठळ, बीकुक, ७ विविध পৌরাণিক কাহিনীর ব্যাখ্যা সহজ ও সরল ভাষায় বিবৃত হইয়াছে। এই কার হিন্দুধর্মের বছ জটিল তথ্যের শ্রীমাংসা করিতে প্রয়াস পাইরাছেন। ভাগবতগ্রন্থ-পাঠকের নিকট ইহা একধানি টীকার কার্যা করিবে বলিয়া মনে হয়। 'রাসপঞ্চাধ্যায়' অধ্যাষ্ট্রকু এথনে। কিন্তু জটিল রহিয়া গিরাছে। আশা করি, বিভীয় সংকরণে এছকার সেগুলির আথ্যাত্মিক ব্যাখ্যা ক্ষুটভর করিয়া পাঠকের সন্মুৰে श्रीत्वन। क्रापक बाबाज किक क्रिया ना शिया, देवकव কৰির ভাবের অনুসরণ করিয়াই, গ্রন্থকার কাহিনী-গুলির আলোচনা করিয়াছেন। গ্রন্থের ভাষা বেশ ৰধুর ও চিভাকর্ষক হইয়াছে।

রামারণ। সচিত্র কৃতিবাস রচিত সপ্তকাণ্ড
রামারণ। জীরামানন্দ চটোপাধ্যার সম্পাদিত ও প্রকাপিত। কৃত্তলীন প্রেসে মুক্তিত। মূল্য ছই টাকা মাত্র।
সম্পাদক বিজ্ঞাপনে বসিরাছেন, "বউতলার ছাপা কৃতিবাসী ষধাসাধ্য সংশোধনপূর্বাক ভদ্রপরিবারে পাঠের
বোগ্য করিয়া এই সংকরণ মুক্তিত করিলার। ভক্তগৃহে
সম্পুর্ন জপাঠ্য সামাক্ত ছই একটি জংশ ব্যতীত আমি
এই সংকরণে বটতলার মুক্তিত পুঁথি হইতে আর কিছু
বাদ দিই নাই।" সম্প্রতি জারো ছই একখানি
রামারণের ভক্ত সংক্ষরণ প্রকাশিত হইরাছে। তন্মধ্যে
রামানন্দ বাবুর সম্পাদিত রামারণথানি উৎকৃত্ত
ইইরাছে বলিয়া আমাদিপের ধারণা! রামানন্দ বাবু খীর
ক্ষমভা প্রদর্শন মানন্দ কৃত্তিবাসের সরল রচনার উপর
ভিনের কলম চালান নাই, এই টুকুই ভাহার সংক্ষরণ

থানির আরো বিশেষত সম্পাদন করিয়াছে। গ্রন্থের ছাপা, বাঁধাই, কাগৰ প্ৰভৃতিও প্ৰথম শ্ৰেণীর হইরাছে। লৰপ্ৰতিষ্ঠ চিত্ৰশিলাগণের অভিত ৪৩ থালি বিবিধ বৰ্ণে রঞ্জিত চিত্রে গ্রন্থের সৌষ্ঠৰ সহস্রগুণ বর্দ্ধিত হইরাছে। বিভিন্ন চিত্রের সমাবেশে রামানন্দবার প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য চিত্র-প্রধার বিশেষত্ব ও পার্থক্য তুলনা করিবার পক্ষে পাঠককে পর্যাপ্ত অবদর দাব করিয়াছেন। মুক্তক্তলধারিণী কেশতৈলের বিজ্ঞাপন শোভাবৰ্দ্ধিনী উপেঞ্জ কিশোর বাবুর অন্ধিতা বিলাতী নায়িকা 'সীতা'র পার্খে, অবনীক্রবারু ও এমান্ অসিতকুমারের প্রাচ্য সীভা, পাশ্চান্ড্য কলাফুযারী শ্বহিত, যাত্ৰার 'ৰারদে'র পার্ষে, সুরেক্রনাথের থাচ্য কলামুধারী অভিত 'নারদ' মূর্ত্তি কি সঞ্জীব ও ক্লিঞ্কর! 'রামায়ণের' চিত্ৰ হইভেই, পাশ্চাভ্য ठिख्यम् भाग्रेरकत नत्रन आठा ठिख्यत निका याधुर्गाहेकू অনায়াদে ধরিতে পারিবেন, তাহা বুঝিবার জন্ত, বোধ इश, आत नीर्घ श्रुँ वि घाँ हिवान अस्तालन इहेरव না। চিত্র প্রভৃতির তুলনার এই গ্রন্থানির মূলা একাল ফুলভ বলিয়াই মনে হয় এবং মাধানশ বাবু সাধারণ বাঙালীর পক্ষেও রামারণ খানি সহল প্রাণ্য করিয়া দিয়া, সমগ্র দেশের ক্বতজ্ঞভাভাত্তৰ হইয়াছেন, मदम्ब नारे।

সাবিত্রী। একার্জিকচন্দ্র দাসগুপ্ত বি, এ, প্রণীত। প্রকাশক কে, ভি, সেন, এণ্ড বানার্ম। লক্ষীবিলাস প্রেমে মুক্তিত। মূল্য ছর আনা। সাবিত্রীর উপাধ্যান সরল রূপকথার ভাষার বিষ্ণুত হইয়াছে। ইহাতে ছয় থানি রঙিন ছবি আছে। ছোট ছেলে মেয়েদের পক্ষে বইথানি বেশ উপবোগী হইয়াছে। সকল ছব্রিয় পরিকরনা কিন্ত আবাদের ভেষন ভালো লাগিল না।

এগভাৰত শৰ্মা।

রাখীবন্ধনে।

প্রভাতী-একডালা।

কি আলোক জ্যোতি আঁধার মাঝারে, কি প্লকে প্রাণ ছার।

ফুটিল এ না কি অন্ধ নয়ন—সমূথে নেহারি কার।

আপনার মায়ে পেয়েছি দেখিতে, চিনিয়াছি ভাই বোন,
আর রহিব না গাঁড়াইয়ে দ্রে—আজি—মহোৎসব সন্মিলন;
শক্ত হায়ের দলরাশি মিলে একটি পরাণ হোক্

এক হয়ে বাক্ শত হাদয়ের হরব বিবাদ শোক।

শত কঠ তুলে অনস্তের সূরে গাহরে মিলন গান,

অসীম আকাশে উপলি উঠুক বিমল মধুর তান!

বরগের শান্তি আনিবে বহিরে আকুল সে প্রেম গান,
পবিত্র হইবে মলিন পৃথিবী ত্বিত পাইবে প্রাণ।

এমতী স্বৰ্ণকুমারী দেবী।

॥७॥ মংগংগংগংগরং সং। গংগংগংরং সংন্ধ। সংরংগংগং কি আ লোক জ্যোতি আঁধার মাঝারে কি পুল কে গুমগুল বুল্প মাম্বা সাম্বার্থ প্রাপ্ত প্রাপ্ত সাম্বা कृषिन थना कि च - सन প্ৰা গ ছা — — য মং গমপা। মং গাং গরং সং সং রং। সরং গাং রং সং॥ মং মং মং সমুধে নে হারি কা — - র, আমাপ নার মা গমপা। পাপাপাপাপাপা। পাধোত্ধাত্রত র্মান্রা। নার্সানা পে मि हि मि थि छ हि नि मा हि छ। हे तो — — (४१२ भरशास्त्राः) । त्नार्याः ८४१: शः मः मः गमशः। शः शः शः शः शः शः (भ स्त्र कि स्म वि প নার মায়ে আ প'। প' ধো' ধো' ধো' ধো' নোধো'। প' ধোপ' ম' প'। ম' মগ' চিনি য়া ছি ভা ই বো — - ন (ত ু মৃত্যাত ধ্যাত্ত বিষ্ণু বি প্য ধ্যে স্থান মপ্য মপ্য। মপ্য মগ্য গা হার त्र हि व ना माँ ज़ा हे स्नपूरत '(ज्ञांकि) म स्≛्य न व সং রং মিং গ্রমপ্র মণ ॥ विवर्धी मत्रमा (परी।

^{*} অন্ত কলিওলি ধারাবাহিকক্রমে উপরি উক্তরণ।

ভারতবর্ষের বীর-রমণী।

ভারতবর্ষে ইতিহাসে বীর-রমণীগণের व्यत्नक कार्या विवत्नण काना यात्र। महाताहे জাতিই এই গৌরবে বিশেষরূপে গৌরবায়িত - মহারাষ্ট্র রমণীগণ শারীরিক এবং মানসিক উভন্ন বলের জন্তই বিখ্যাত। শুধু যে যুদ্ধ-ক্ষেত্রে নেতৃত্বগ্রহণ করিয়া নারীগণ প্রসিদ্ধি শাভ করিয়াছেন এমন নহে, তাঁহারা অনেক হলে সাধারণ পদাতিক এবং অখারোহী रैननिकनन-जुक इटेश युक्त क्रियारहरन। অষ্ট্রাদ্দশ শতাব্দির শেষ এবং উনবিংশ শতাব্দির প্রারম্ভকাল পর্যান্ত হাইন্রাবাদের নিজাম মহো-দরের ছই শহল জী-সেনা ছিল। ইহারা আরবব-ংশ-সভূতা, ইহাদিগকে নির্মিত যুদ্ধ বিষ্ণা শিখিতে এবং অভ্যাস করিতে হইত, অন্ত:পুরের চতুপার্শে প্রহরীর কার্ব্য করা এবং পুরুষহিলারা যথন একস্থান হইতে অন্তত্ত যাইতেন, তখন তাহাদিগকে সর্বভোভাবে রক্ষার ভার ইহাদিগকেই গ্রহণ করিতে হইত। ১৭৯৫ শালে মহারাষ্ট্রীয়দিগের সহিত বুদ্ধের সময় কার্ডনা যুদ্ধক্ষেত্রে ইহারা অম্বা-বারণ এবং অখা চামবিবির অধীনে যুক্ত করিয়াছিল এবং পুরুষ গৈনিকদিগের অপেকা কোন क्रारं शैनजात शतिहत्र स्व नारे। तिशारी-দিগের স্থার বেশপরিধান করিয়া ছত্ত্বে বন্দুক বছল ক্রিয়াছিল এবং ১৮১৫ সালের রাজকীর-कारी विवत्न करेल कामा यात्र त्य, रेहाता ক্ষাসী-যুদ্ধ-ফৌশল পরীক্ষার নিপুণভার अधिका विवाहिन। शहेखावादमत अहे जी-क्या-नमात्मन नाम भामन शक्न वर्धार 'विक्रविनी' (गना।

সমরু বেগম। বিখ্যাত বীর রুমণী। গণের মধ্যে সমক বেগম বিশেষরূপে প্রতিপতি লাভ করিয়া ছিলেন-মীমান-সাহেব ইহার कौवरनत स्व मक्न बहैनावनि वर्गन कतित्राह्मन উপন্তাদের অপেকাও মনোরম। **শিক্ষিরা রাজের পহিত যুদ্ধে তাঁহার স্বামী**র মৃত্যু হয়, তথন তিনি অয়ং দৈক চালনার করিয়া, বিপক্ষের অবরুদ্ধ তুর্গ-প্রাচীরের ভগ্ন অংশে প্রথম আরোহণ করিয়া-ছिल्न । डांहांत्र এই अमाधात्रण माहम ও वीर्या দেখিয়া সিজিয়ারাজ চমৎক্রত ও মুগ্ধ হইয়া-ছিলেন। বিভীয়বার তিনি সমক নামক এক ব্যক্তিকে বিবাহ করেন, এই নাম হইতেই এই বীর রমণীর নাম সমক বেগম। এই নির্দয় পাষও পাটনার সমুদম ইউরোপীয়দিগকে একতে বধ করিয়াছিল। হরিয়ানা রাজ্য সংস্থাপয়িতা প্রাসিত্ব নাবিক কর্জ্জ টমাস এক সময়ে এই বীর রমণীয় অধীনে ভূত্য ছিলেন। ১৮০০ সালের যুদ্ধে জেনারেল ওবেলেস্লি বেগম সাহেবের সৈত্যবল ধ্বংস করেন। তথন তিনি নিরুপার হইয়া লেনেরাল লেকের নিকট আত্মসমর্পণ করিলেন। জেনারেল মহোদ্য তাঁছাকে পিতার স্থায় ক্ষেত্র এবং সমাদরে গ্রহণ করেন। ইহার পর বেগম সাহেব আয়ৃত্য অতি বৃদ্ধ বয়স পর্যস্ত তাঁহার জ্মীদারী " সার্দ্ধনার বাস করিয়াছিলেন।

মহারাষ্ট্র-বীর-রমণী। ওনিতে পাওরা বার পিতারী দল বধন আর্মে গ্রামে অত্যাচার ও পূঠন করিরা কিরিত তথন ভাহাদের শ্রীগণ্ড কথনো অবে কথনো বা

क्षेट्रे बार्त्राह्य कतिया जारायम मंदी रहेज এবং নিষ্ঠুরকার্যো ওধু সহায় কেন অনেক সময় প্রধান হইয়া দীড়াইত। ১৮১৭ সালে মহারাষ্ট্র যুদ্ধে অনেকগুলি নারী রাজসভা এবং যুক্তক্ষত্ৰ উভয় স্থানটিরই নেতৃত্ব গ্রহণ করিয়া বিশেষ খ্যাতিলাভ করিয়া ছিলেন। নাবালক মহলাররাও হোল-ইহার মধ্যে কারের অভিভাবিকা এবং রাজ্যশাসনকর্ত্রী जुननीवारे এकसन। हैनि मृज यत्नावस्त्र त्राव হোলকারের প্রেরসী ভার্যা ছিলেন—ইহার পুরুবোচিত পরুষগুণ অনেক পরিমাণে ছিল। ১৮১৮ সালের ডিসেম্বর মাসে ইনি যথন স্মূদার দৈত্রক লইরা মেহিদপুরে বৃদ্ধকেত্রে পটবাসে অবস্থিতি করিতেছিলেন তথন জেনারেল ট্রমাস হিম্পের অধীনে ব্রিটিশ সৈত্র ইহার বিরুদ্ধে অগ্রসর হইতেছিল। ম্যালক্ম ব্রিটিশ পক্ষ হইতে সন্ধির প্রস্তাব লইয়া ইঁহার নিকট আদেন; তুলদীবাই ভাহাতে অসমত ছিলেন না। কিন্তু এই সন্ধির প্রস্তাবে महाताद्वीयमिटशत मत्था विद्यात्थत रुष्टि कतिन. একদল সন্ধি এবং অন্তদল যুদ্ধের পক্ষপাতী হইল,—অবশেষে যুদ্ধ পক্ষীরেরা একদিন রাত্তে তুলসী বাইকে ধরিয়া লইয়া গিরা শিপ্রা नमी जीरत इंडा कतिम, ज्थन युद्ध ভिन्न উপায়ান্তর রহিল না। মেহিদপুরে যে যুদ্ধ रहेन जौराट मराबाद्वीय देमकारन मण्युर्ग -পরাজিত হইল-এবং বাহারা প্রাণে বাঁচিল তাহারা চারিদিকে ছড়াইরা পড়িল এই বিক্ষিপ্ত দলকে একজ করিয়া মৃত বশোবস্ত গাওমের বিংশতি বর্ষীরা কল্পা ভীমাবাই ভাহা দের নেভূত গ্রহণ করিলেন। তিনি পুরুষ-বেশে কটিভে তরবান্ধি বাৰিয়া

বক্সাইতে অর্থপৃঠে সৈত চালনা করিতেন। হোলকার যথন সন্ধি করিলেন তথন তিনি তাহার বিরোধী না হইরা ত্বয়ং ভার উই-লিরাম গ্রাণ্টের নিকট আত্মসমর্পন করিলেন।

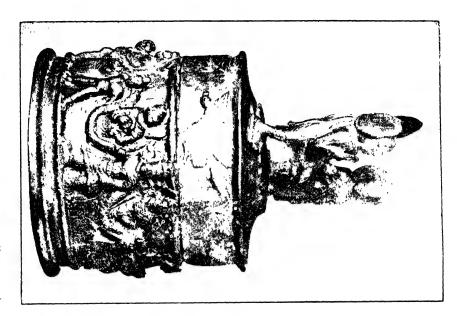
ঝান্সীর রাণী লক্ষীবাই। সমগ্র वीत-त्रभगी नगारकत मध्या बाज्यीत तानी नजी-बारे नर्साजगणा। : ५०४ थुट्टारम উख्राबि-কারীর অভাবে ঝান্সী রাজ্য ইংরাজ সরকার ভুক্ত করা হয়। মৃত গঙ্গাধর রাও হোল-কারের পত্নী লক্ষ্মীবাই এই অন্ধিকার চর্চ্চার বিরুদ্ধে অনেক প্রতিবাদ করেন। কিছ তাঁহার কথার কর্ণপাত না করিয়া ভাঁছাকে পোষ্যপুত্র গ্রহণের অমুমতি না দিরা কেবল-माज मामहाता मक्षुत कता हरेल। অস্তার বিচারে রাণী সাহেব মনে মনে ব্রিটিশ রাজের দারুণ শত্রু হইয়া রহিলেন এবং ১৮৫৭ সালে यथन जिलाही ११ विद्याही হইল তথন তাহাদিগের সহিত বোগ দিতে আর কালবিলম্ করিলেন না। রাজ্যভার গ্রহণ করিলে পর স্থার হিউরোক .>৮৫৮ সালের বসস্তকালে यथन बाष्नी इर्ग অবরোধ করিলেন লক্ষীবাই অতি দক্ষতার সহিত আত্মরকা করিয়া ছিলেন। অবরোধ-কারী দৈলগণ সর্বানাই দেখিতে পাইত তিনি রাজপ্রদাদের বাহিরে চক্রাতপের নীচে বসিয়া যুদ্ধ ব্যাপারের সকল কার্য্য পর্য্যবেক্ষণ করিছে-ছেন। ইংরাজগণ ৩রা এপ্রেল সহসা আক্রমণ করিয়া ঝান্সী হস্তগত করেন এবং রাণিসীত্বৈ বাতিবোগে শ্বর সংখ্যক সৈ সকে লইয়া উত্তরাভিমুখে প্লায়ন করিতে বাধা হইলেন। ल्लाहिनाके छाउकात व्यवाद्यांकी रेमक्कन লট্রা ভারার পশ্চাতাবন করিয়া আশী ইইডে

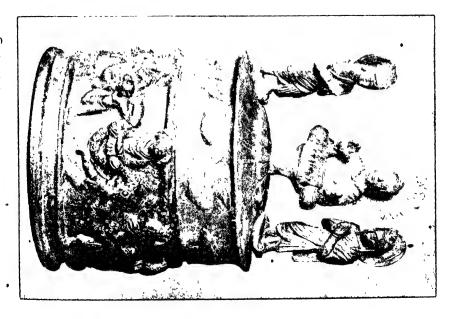
अवस्थित पूर्व कांकाव नवीन नवीनानेतार স্মালাৰ পৰাৰনের চিত্ বেৰিতে পাইলেন; গ্রেথিনেন ভাতুর সধ্যে তাহার অসমাপ্ত থাড পঞ্জিরা বহিরাছে। তিনি নগরের অপর পার্থে অঞ্জনর হইরা বুদ্ধে চল্লিশ জন রোহিলাকে 🐲 স্বারিলেন। এবং দেখিতে পাইলেন চারি स्नम्भाख रेमनिक नहेवा दानीकि এकि ध्रमत মর্শের অথে আরোহণ করিয়া অতি ক্রত পলায়ন **क्रिक्टिस्न। जात जब मृत वाहेटल भातिरमञ्** হাণীজকে বন্দী করিতে পারিতেন কিন্ত জীক ভরবারির মাঘাতে সাজ্যাতিক আহত হইয়া অধ হইতে পড়িয়া বাওয়াতে তিনি আৰু অঞ্চৰ হইতে পাবিলেন না। লন্ধীবাই শলাইরা বয়না তীরে করিনগরে নাহেবের ভ্রাতৃপুত্র রাওসাহেবের আশ্রর গ্রহণ করিরা বছের নিষিত্ত সহার প্রার্থনা করিলেন। ভাতিরা ভোগিকে সঙ্গে লইয়া ভাহার অধীনত সৈভের সাহাব্যে কুঞ্নগরে ভার হিউ রোজের স্থিত বুদ্ধ করেন। বুদ্ধে পরাত হইরা পুনরার **ভারিনগরে ফি**রিরা আসিলেন—সেথানে আর একবার মুদ্ধ হর কিন্তু এবারেও তাঁহার অদুটে सन-क्षीन-नाक चटि नाहै। সেই রাত্তিতে ছৰ্বাভাৰমীৰ তাহার শগন গৃহে একটি কাষানের গোলা পড়িয়া ফাটিরা রায় এবং নেই আখাতে চুই জন ভত্যের সুত্যু হয়, অগত্যা তিনি পলায়নে ক্ষি ক্টতে ভাঁকারা গোরালিয়র যাতা করিয়া এই সিভিয়ার বিজ্ঞাহী সৈক্তদলের সহিত মিলিড ভটরা স্বীয় অর্থবল এবং সৈপ্রবল বর্দ্ধিত এথানেও ইংরাজ সৈত্ত খেঁৰণ কৰে। জেনাৰেল স্থিপ ভার "প্রয়ায়তা করিবার *বায় 'কর্*সর

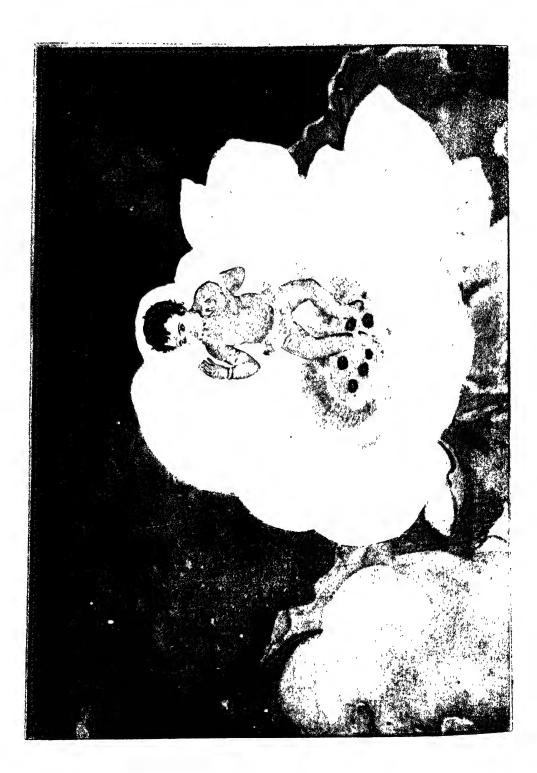
स्टेटकॉस्ट्रांच त्नरे बहुन गरिक सूर्व रव । वाले गणीवारे कुणवादन कांबाम श्रीतः ठानक रेम्छानिश्च निक्र विश्वा महत्व शान করিতে ছিলেন এমন সময় সংবাদ পাওল গেল বিজয়ী ইংরাজ সৈত অতি সন্ধিত্ট। রাণীজির পরিধানে চড়িদার পার্যামা লাল-कुर्छ। এবং মাথার পাগড়ি, গলার একটি বহুমূল্য মুক্তাহার শোভা পাইতেছিল। এইটি বিদ্রোহী रेमछ्रान मिकिया ताबरकाव स्टेस्ड मूर्छन स्तिया আনিরাছিল। সংবাদ পাইবামাত্র ভাঁছার পার্থ-চারিণী এবং নিতাসঙ্গিনী একটি ব্রা**স্থণ কল্পাকে** স্তে লইয়া তৎকণাৎ অখারোহণে ভিনি পলায়-নের আরোজন করিলেন ইংরাজ সৈত্ত এডাইরা যাইবার চেষ্টার হুর্গ পরিখা একলক্ষে পার হুইবার জন্ত অবচালনা করিলেন, অব গভীর বাত পার হইতে সাহস করিল না-ইংরাজ ক্রমশই নিকট-বর্ত্তী হইতে লাগিল রাণীজির পার্বদেশে বন্দুকের ঋলি এবং মন্তকে জীক্ষ ভরবারির আঘাত লাগিল তবুও তিনি পশ্চাংপদ হইলেন না, সমানবেগেই অর্থ ছুটাইরা চলিলেন। ইহার কিছুক্সণ পরে অর্থ হুইতে পডিয়া গেলেন তথন ভাঁহাকে পটবাসের ভিতর লইরা যাওয়া হইল: অরক্ষের মধোই তাঁহার প্রাণ বিয়োগ হয়। মৃত্যুকালে পার্থবর্তী বছদিগের নিকট তাঁহার সৈঞ্চদিগের বিশ্বস্থতা ও প্রভৃতব্দির বস্তু আন্তরিক কুডরতা জানা-ইয়া অমুরোধ করিয়াছিলেন বে. ভাঁহার অঙ্গের বছমূল্য অল্কার বেন তাহাদের মধ্যে বিভর্ণ করা হয়। মৃত্যুর পর, নিক্টবর্ত্তী কোন্ত উভানে মহাসমারোহে উাহার সংকার করা छात्र श्किरताक बरमन तिरलारी विद्रशंत प्रदेश जांकीक कार्क कार्ने गाँव । द्रणीरिया नीर्दा वयानुषि द्रमोग्रहम महर्गातम्

eret, e- wishfing life, wife o carri Anthon aim sin afare 's co, any alliese late ster.

Anthony was replacement and the







ভারতী।

৩৩শ বর্ষ 🎚

অগ্রহায়ণ, ১৩১৬

৮ম সংখ্যা

পোংগল উৎসব।

(অপূর্ব্ব মেলার বিবরণ)

দক্ষিণ দেশের পোংগল উৎসব ষেমন পুরাতন, তেমনি কৌতুককর ও আমোদপ্রদ। বলদেশে ভাজ মাদে "গোয়ালাইমী" উপলক্ষে গো-সেবা হইয়া থাকে এবং এই মাদে "অর্থন" নামে পর্বা দিনে অনেকে পূর্ব দিবসের পাক করা অর ব্যঞ্জনাদি পোংগল উৎসবে ভক্ষণ করিয়া থাকেন। সর্বপ্রথম পশুদেবা হইয়া থাকে। গবাদি পশুর গলদেশে পুস্পমালার্পণ, গাত্তে বিবিধ রঙের চিত্রান্ধন, মুখে নবীন শব্দ ও নানা-প্রকার থাতজব্য দান, তদনস্তর তাহার পূজা প্রভৃতি ক্রিয়া সম্পন্ন হইয়া গেলে পিষ্টক বিভরিত হইয়া থাকে। দক্ষিণাবর্ত্তের তামীল ভাষায় "পোংগ্ৰু" অৰ্থে ভাত ভাহার উপকরণ বুঝায়। কেবল ভাতের নাম "চোর" এবং চাউলের নাম "আশী"। চোর .শব্দ বোধ হয় সংস্কৃত চক্র শব্দের ডালের নাম পর্গ্র সমুদর ভেলুও ও তামিল প্রদেশ এবং তৎসহ মহিশ্র, **অিবাহুড়, কোচিন প্রভৃত্তি, বাঙ্গালীর** ভাত ভোজী। সিংহল, সিলাপুর, পিনাং, লাগান, ভাষ প্রস্কৃতি দেশও অর ভোজনে

প্রাণ ধারণ করে, স্থতরাং দক্ষিণ দেশে ভাতের একটা বিরাট উৎসব হওয়া আশ্চর্য্যের विषय नाइ। य प्रत्भव लाक्त्रा व প্রকার শস্ত থাইরা প্রাণ ধারণ লোকেরা সেই শক্ত लहेबा প্রতিবর্ষে একটা উৎসব করে, ইহা প্রায় পৃথিবীর সর্বস্থানেরই একটা রীতি ও নীতি। ইউরোপ ও আসিয়ার অনেক দেশে এইরূপ উৎসব এখন ও প্রচলিত আছে। মাঘের মকর সংক্রান্তি দিলে পোঞ্চল উৎসবের প্রধান পর্ব আরম্ভ হয়, ঐ দিবস मिकिनाट्या नवत्रवंत्र श्वाना इहेन्रा भारक, এই মাদের নাম "ভাই"মাস। জাতুয়ারী মাসের দ্বিতীয় সপ্তাহের যে দিনে সূর্যাদেব উত্তরায়ণে প্রবেশ করেন সে मित्न **এই উৎসব আরম্ভ হয়। নবৰর্ষের** প্রথম দিবসে শক্র, মিত্র, আশ্বীয়, কুটুখ, বন্ধু, গ্রামবাদী, স্বজাতি প্রভৃতিকে সলে গ্রইরা অয়াদি ভোজন করা এবং ভোজন্মের পূর্ব্বে ভগবানকে সভক্তি তাহা ত^{্ৰ}ণ করা যেমন তুথকর তেমনি আনম্জনক। সন্মিশনের ইহা স্থন্দর অবসর, এইজয় এই

^{**} ভাষিত্ৰ ভাষাত্ৰ পোংগ্ৰ প্ৰেত্ৰ ভিৰ পৰ্ব ;—(১)' ভাত ও ভাহার উপাদান। (২) চাউল বইতে প্ৰভত ভোষ্য ব্ৰহা। (৬) পাত্ৰিবাহিক ভ্ৰ ও প্ৰলোকে নাভি লাভের জন্ত বেবভা ও পিছ্-

উৎসবকে অনেকে আগ্রহ সহকারে দর্শন করিতে আসিরা থাকেন। ইউরোপীরের।
এই উৎসব দেখিরা এমন বিম্পা যে গভর্ণমেণ্ট
১৮•৭ অব্দে তিরুভারুড়ু মুঠিরা নামে তদ্দেশীর
এক গুণবান পণ্ডিতকে এই বিষয়ের ইতিহাস
লিখিবার জন্ত পুরস্কার দান করিয়াছিলেন।
মুঠিরা পণ্ডিতের ঐ বিবরণ ইংরাজিতে
অম্বাদিত হইরা গিয়াছে।*

উৎসবের প্রথম দিনে কৃষ্ণতিল, কুশ, पूर्वी व्यवः भक्त्रा मह कनमान कतिशा भिक्-পুরুষগণের তর্পণ করিতে হয়, তদনস্তর र्यापरतत পृका ममाश्च हरेरन भूकाकाती কহিয়া থাকেন—"হে স্বৰ্গস্থ পিতা! স্বৰ্গস্থ পিতামহ! হে মৃত সহোদর!† হে মৃত শিক্ষক ও উপদেষ্টাগণ! আপনাদের নিকটে আমি জ্ঞানতঃ বা অজ্ঞানতঃ যে কোন অপরাধ করিয়াছি তাহা কুপা করিয়া ক্ষমা করন। অন্ত ক্ষাগুণে আপনারা দ্বীণ চিত্ত হউন। এইরূপ পুন: পুন: উচ্চারণ করিয়া অধন্তন পুরুষেরা গুরুভক্তি প্রদর্শন করেন এবং কৃতজ্ঞতার পরাকাঠা দেখাইয়া থাকেন। এ সকল কথার পরে কহিতে হয় "হে আৰ্য্যগণ! আমরা যেন আপনাদিগের প্রতি অক্তজ্ঞ না হই, মুহুর্ত্তের বর্ত্ত যেন আপনাদিগের কৃত মহোপকার শমূহ বিশ্বত না হই।" ইহার পরে সকলে

বতত্ৰ বতত্ৰ হানে—এক জাতি বা কুটুৰাদি হইলে একত্রে ও একই স্থানে চাউল পাক करत थवर थे ठाउँन निष बहैरात नमस्त উহাতে শর্করা ও চ্ছা নিক্ষেপ করিয়া সকলে "পোংগল" "পোংগল" বলিয়া চীৎকার করিতে থাকে। কেহ কেহ বলে "পোংগলের জয়" "পোংগলের জয়।" এই সময়ে বাছা বাজিয়া উঠে এবং নর্স্ককীরা নৃত্য করিতে থাকে। বালক ও বালিকারা চীৎকার করিয়া করে "শান্তি হউক, স্থুৰ হউক এবং ভগবানে মতি রহক !" এই দৃশ্য বড়ই হুরমা। বালক বালিকাদিগের স্থকোমল কণ্ঠ নি:স্ত এই यधुत त्रत्व मत्नामत्था भत्रमानत्मत्र छेमत्र कतित्रा অতঃপর মেলার সর্বস্থানে সকলে দণ্ডাম্মান হইয়া স্থা প্রণাম করে এবং পাককরা ভাত, বাঞ্চন, ডাউল প্রভৃতি অর্পণ ক্রিয়া "স্থ্যায় নম:" উচ্চারণ করে; অনস্তর পিতৃপুরুষগণকে পোংগল প্রমন্ত হইয়া থাকে।

উৎসবের প্রথম দিবসের অপরাছে "প্রেম সন্মিলন" হয়। ইহার নিরম এইরূপ। অর বা অধিক দিন পর্যান্ত কাহারও সহিত কাহারও মনোমালিক্ত থাকিলে অথবা তজ্জ্ঞ কথোপকথন বন্ধ থাকিলে কিয়া রাজ্গারে মোকর্দমা প্রভৃতি চলিতে থাকিলে, তাহাদের পরস্পারের মিলন জক্ত এই সময়ে চেষ্টা করা হইরা থাকে। উৎসবের কির্দিবস

গণকে চাউল বা অনাদি উৎসগীকরণ। Rottler's Tamil Dictionary. তেলেগু ভাষার পোলল আর্থে ভাভ, ছবা ও শর্করা ব্রায়। Campbell's Talegu Dictionary. কানাড়ী ভাষাতেও ই অর্থ। See Wilson's Religious Sects of the Hiddoos. Voll. II. Page 170.

- * Asiatic Annual Register for 1807.
- † এইরণে অনেক মৃত আগ্রীয় ও বছুর নামোচ্চারণ করিতে হর। °

পুর্বে প্রামের প্রধান প্রধান লোকেরা কিছা পুরোহিত প্রভৃতির বত্নে ইহাদিগকে একত করিয়া মিলনের জন্ম পরামর্শ দেওয়া পরামর্শ মত যে ব্যক্তি কার্য্য হয় | করিতে সম্মত হয়, তাহাকে উৎসবক্ষেত্রে ভাহার শত্রুর সমুখে আনাইয়া মিলাইয়া দেওরা হয়। যে বাক্তি । এইরূপ পরামর্শ না মানে ভাহাকে কেহ বলপূর্বক মিলাইতে পারে না ইহা সত্য, কিন্তু লোক সমাজে দে ব্যক্তির ষথেষ্ট অপ্যশ ঘোষিত হইয়া थांदक। लांदक कथांत्र वटल "(भारताल ইহাদের বিবাদ মিটিল না, অতঃপর আর মিটিবার আশা নাই।" যাহারা বিবাদ মিটাইতে স্বীকৃত হয় তাহারা উৎসবক্ষেত্রে উপন্থিত হইলে, অপরাহে সূর্য্য পূজার পরে উভন্ন পক্ষের লোককে সম্মুথে দাঁড় করাইয়া গুরু, পুরোহিত, বন্ধু কিংবা কোন বয়স্ক আত্মীয় বলেন. "ভোমরা পরস্পরকে প্রথমে আলিসন কর; নমস্ত হইলে নমস্কার প্রণম্য হইলে প্রণাম কর।" তদনন্তর কহেন. "পরস্পর হাত মিলাইয়া বল, আমরা সরল হৃদয়ে সম্ভাবে মিলিত হইলাম, আমাদের মনে কোনপ্রকার কপটতা বা শত্রুতা নাই। দেবতাদিগের নামে আমরা ইহা স্বীকার করিতেছি।" অতঃপর পর**স্প**রের গ**ল**দেশে পুষ্পালা পরাইয়া দিয়া পরস্পারে মিলিয়া গান গায়, একত্র ভোজন করে, নৃত্য করিতে থাকে, হাসে, থেলে এবং ভগবৎ পূজা করে।

সায়াহে বালক, বালিকা, সাধু, বৈক্ষব, বাহ্মণ, পণ্ড, দরিজ ব্যক্তি প্রভৃতিকে নানাপ্রকার উৎক্ট ভোজজ্বর খাইতে দেওয়া হয়। রাত্রে বিবিধ প্রকার কৌতৃক ও তামাসা হইয়া থাকে এবং প্রীতিভোজনে অনেক টাকা ব্যয়হয়।

দিতীয় দিবসের কথা। রজনী প্রভাত হইলে জীলোকেরা কৃষিক্ষেত্রে গমন করিয়া শস্তের উপরে জল সিঞ্চনপূর্বক বলে "জয় পোংগল" "জয় পোংগল"। তদনস্তর বিবিধ প্রকার ফল ও মিষ্টান দারা সূর্য্য পূজা করা হয় এবং আত্মীয় ও বান্ধবগণসহ চর্বচ্যেয়া লেহপেয় ভোজন ক্রিয়া সমাপ্ত হইয়া থাকে। ভোজনের প্রধান দ্বা ভাত। মধাাছে হথ্মসহ চাউল সিদ্ধ করিয়া তাহাতে শর্করা মিশ্রিত করতঃ ইন্দ্রদেবকে অর্পণ করা হয়। অপরাত্রে পশুদিগকে মান করাইয়া বিবিধ রঙে স্থগোভিত করা হয় এবং নানা প্রকার দ্ৰব্য তাহাদিগকে থাইতে দেওয়া হয়। এই স্ময়ে স্থাধুর সঙ্গীত হইবার নিয়ম আছে। বালক, বালিকাও ব্রাহ্মণেরা গো, বলদ প্রভৃতি পশুর চারিদিকে পুষ্প ছড়াইয়া দিয়া নৃত্য ও গান করিতে থাকে। রাত্রিকালে আত্সবাজী, নর্ত্তকীদিগের নৃত্য, গায়কদিগের গান, শান্তপাঠ, এক্সম্ভ পূজা, গোদেবা कत्रिवांत्र विधि।* পশুসেবার সঙ্গে শ্রীকুষ্ণের স্তোত্র উচ্চারণ, ভাগবতশাস্ত্র পাঠ এবং •ক্বফ্ত পূজা করা আগনশ্রক। (Wil-

^{*}উৎসবের প্রথম দিবদের নাম ভোগ পংগল, দিতীয় দিবদের নাম পেরুম্ পোগল এবং তৃতীয়
দিনের নাম মধ্য গোলল। তুর্যা, ইক্স ও প্রীকৃষ্ণ এই তিন দেবতা তিন দিবদের কর্তা। Brown's
Telugu Dictionary and Molesworth's Marathi Vocabulary.

son's Glossary of Indian Terms. Page. 421.

তৃতীয় দিনে আত্মীয় ও বন্ধুগণ পরস্পরের খনে গিয়া নানা প্রকার দ্রব্য উপহার দের আলিঙ্গন করে। এই এবং পরম্পরকে मिवन महिलामिश्यक नाना श्रकांत्र দ্রব্য বিভরিত হইরা থাকে। মধ্যাক্ষে গুরু शृका जनतारङ्क वरबारकार्छिनगरक धानाम कता इव व्यवः मात्राट्स खीलांकश्य नानाविध भिट्ठेकानि প্রস্তুত করিয়া পুরুষাম্মীয়দিগকে ধাওয়াইয়া দেয়। এই ভোজের সময় কন্সা মাতাকে এবং কনিষ্ঠা জোষ্ঠা ভগিনীকে लागम कदत जवर डांशामत आगीकाम आर्थना করিয়া থাকে। অত:পর ক্যা পিতাকে এবং ভগিনী জ্যেষ্ঠ সহোদরকে প্রণাম করিয়া তাঁহাদের আফুগতা স্বীকার করে। স্ত্রী ও খামী গৃহের মধ্যে প্রবেশ করিয়া পরস্পরকে আলিঙ্গন পূৰ্বক একত্তে এক পাত্ৰে স্থমিষ্ট দ্রব্য ভক্ষণ করে এবং স্ত্রী স্বামীকে ও স্বামী স্ত্রীকে পিষ্টক খাওয়াইয়া দেয়। অন্তকার त्राजि. शामी जीत्र आत्माम अत्मादनत রাত্রি। সামাছে লাঠিখেলা, তরবারী খেলা, विविध क्षकात वाशिम क्षमिं इहेश थाक। এই ধেলার প্রধা অতি পুরাতন। মাহুরা লগরীতে পাতা বংশীয় রাজগণ যখন রাজত্ব করিতেন তথন হইতে একাল পর্যান্ত উৎসব ক্ষেত্রে এইরূপ খেলা চলিয়া আসিতেছে। এতগুপলকে দ্রীলোকেরাও নানা প্রকার ব্যাহাম প্রদর্শন করিয়া থাকে। এতন্ত্রিয় मान-दशका, ও ভাৰুকের বানর त्वव वृक्, बाह्रस्वत बज़बूक, शृर्धत न्हारे, পাৰির নৃত্য, বাজীকরের বাজী, কাকাভুয়ার

গান, প্রভৃতি কত বে কি দেখা বার ও তনা বার তাহার ইরতা করা বার না। দশ বার জন বরত্বা স্ত্রীলোক এক এক স্থানে একত্র হইরা বে অভুত নৃত্য দেখার তাহা বোধ হর সমস্ত পৃথিবীতে অভুলনীয়।

পোংগল উৎসবের প্রশংসা করিবার অনেক বিষয় আছে, কিন্তু নিন্দা করিবার कि किइरे नारे ? এ সময় निम्रत्था विक्तूता, — কথন কখন মধ্যশ্রেণীর হিন্দুগণও ইংরাজদের অভুত "বল্" নাচের মত পরস্ত্রীর হস্ত ধারণ করিয়া রাত্রিকালে প্রকাশ ভাবে নৃত্য করে; স্ত্রীলোকের স্বামী ঐ নাচে যোগ দের অথচ তাহার স্ত্রী তাহার পার্ষে থাকে না। পোংগল উৎসবে ব্রাহ্মণগণ নিরকর অবান্ধণ ব্যক্তিবৰ্গকে ঠকাইয়া বিবিধ প্রকারে অর্থ এবং বিবিধ দ্রব্য সংগ্রহ করে। কেবল তাহাও নহে; ইহা হইতেও অঘন্ত কাৰ্য্য করে। ইহা ব্রাহ্মণজাতির ঘোরতর কলঙ্কের পোংগলোৎসবে ভারতবর্ষের অনেক স্থলেই ব্রাহ্মণগণ ধর্ম্মের নামে এইরপ অধর্ষ করিরা থাকেন। জানি না. বৰ্ণশ্ৰেষ্ঠ ব্ৰাহ্মণসমাজের এ কলফ व्यथानिक इटेर्टा डेक डेरगर युवजी স্ত্রীলোকগণকে সম্মুখে বসাইয়া ব্রাহ্মণগণ যথন ভাগবৎ পাঠ করেন এবং তাহার ব্যাখ্যা করিতে থাকেন তখন ইহা প্রমাণ করিবার एहें। करतन य खाकान खब्रः क्रेस्त्र-विस्थवः ' মন্ত্রদাতা গুরু স্বয়ং পূর্ণ ভগবান শ্রীকৃষ্ণচন্দ্র, অতএব ব্রাহ্মণের দেহ স্পর্শ করিলে এবং ব্রাহ্মণের মনোক্ষামনা পূর্ণ, করিলে রুম্^{নীগণ} ত্রিতাপ হ**ইতে মুক্ত হ**ইয়া পরম শা্রিতে স্বৰ্গধাৰে গমন করিতে সক্ষম হরেন।

সমরে দেখিরাছি, সম্ভ্রাস্ত হিন্দুবংশের বরস্কা ও প্রবৃদ্ধা রমণীগণ পর্যাস্ত কুসংস্কারের বশ-বর্ত্তী হইরা এই সকল ব্যক্তিচার ও কদাচারের গোষকতা করিরা থাকেন।

আমরা এক বৎসর পোংগল্ উৎসবে ভাত ভোজন করিয়াছিলাম। ভাতের সঙ্গে কত যে কি থাইয়াছিলাম, এতদিন পরে সে সকলের নাম স্মরণ নাই। বাঙ্গালাদেশের তরকারি ও খাদ্যদ্রব্য মান্ত্রাজ প্রেসিডেন্সীতে পাওয়া যায় এবং মাক্রাজীরা তাহা ব্যবহার করে। পুদিনা শাক, সজিনা ডাঁটা, কচু, উচ্ছে, আমড়া, नटि भाक, अञ्चर्मानात, अधूत, कॅाठाकना, কুমাও, পটল, বেগুণ, চালতা, ইচড় আলু, मुज़ि, मुज़की, वाठामा, भाषानि, ख़ज़, नाज़, প্রভৃতি যে সকল দ্রব্য বাঙ্গালীরা ব্যবহার করে তাহার সমুদয়ই প্রায় তথার পাওয়া যায় —কেবল পাওয়া যায় না, সর্বপ তৈল; কারণ, সে দেশের লোকেরা গায়ে তিলের তৈল মাথে এবং তরকারীতেও তিলের তৈল ব্যবহার করে। ত্রিবাকুর ও কোচিন রাজ্যে এবং মালাবার উপকৃলে নারিকেল তৈশ তরকারীতে ব্যবহৃত হয়। মাদ্রাজ प्तरम प्रवंश देखन धर्मा वार पूर्या ना। तम দেশে সরিষার তৈলের আদৌ প্রচলন নাই। মাজান্সীরা বাঙ্গালীর মত তেল মাথে, ভাত ^{*থায়}, বাঁধে এবং প্রোষ্ঠি ভাত অর্থাৎ পাস্তা ভাত বা "বাদি" ভাত খাইয়া থাকে, কিন্তু বঙ্গ-বাদীর ব্যঞ্জনের সহিত মাদ্রাজীর ব্যঞ্জনের ও ক্ষচির স্বর্গমন্ত প্রভেদ। আমরা একা-ধিক সব্জি মিলাইয়া ভরকারী প্রস্তুত করি, মান্ত্রাজীরা ভাহা করে না, ভাহারা একটা

জিনিবেরই ব্যঞ্জন প্রস্তুত করে তাহাতে জ্বন্ত সব্জি মিশার না। সে ব্যঞ্জনের আহাদন আমাদের জিহ্বার ভাল বোধ হয় না; মশালা অতি সামান্ত ব্যবহৃত হয় এবং পাকের প্রণালীও স্থানর নহে।

সে দেশে "জলথাবার" অর্থে কাফি বুঝায়। কি হিন্দু, কি মুসলমান, কি গৃষ্টান, প্রতি তিন সহস্র লোক মধ্যে ছই সহস্র নয় শত নিরা-নকাই জন লোক প্রাতে উঠিয়াই কাফি খার, কাফি না খাইয়া কোন স্থানে যায় না বা কোন কার্য্য করে না। পঞ্চশত লোকের মধ্যে এক জনও চা থায় কিনা সন্দেহ। কাফির সঙ্গে, পশ্চিম বঙ্গের লোকদিগের প্রস্তুত পিষ্টকের ভাষ, "আস্কে" "সক্রচাক্লী" "ভাজাপিঠে" প্রভৃতি খাইয়া থাকে, তাহা চাউল হইতে তৈয়ার হয়। পিষ্টকের বছপ্রকার আকার। ত্রিকোণ, চতুকোণ, গোলাকার, দীর্ঘ, চ্যাপ্টা প্রভৃতি। পিষ্টকের ভিতর নারিকেল, গুড়, চিনি, চাউল চুর্ণ প্রভৃতি বছপ্রকার দ্রব্য থাকে। ময়দা বা "আটা" অতি কটে পাওয়া যায়, বড় বড় নগরেও অনেক সময়ে ময়দা বা ঘত পাওয়া যায় না। লুচি, কচুরী কি জিনিষ, এথানকার দশ সহস্র লোকের মধ্যে একখনও জানে কিনা সন্দেহ। লুচি কচুরী কোথাও বিক্রীত হয় না। ভাল ভাল মিঠাই, সন্দেশ বা মিষ্টান কেহ চকে দেখে নাই। এদেশের যাহা "মিষ্টান্ন" ভাহা আমাদের দেশের ছোট লোকেরাও হয়ত আহার করিতে কুন্তিত হইবে , এদেশের মিষ্টান্ন আমাদের অভোজ্য। যাহা হউক, আমরা পোংগলে ভাত ভোজন করিয়া যে করেকটা নৃতন জিনিষ আস্বাদন করিয়াছিলাম তাহাদের

মধ্যে ছই চারিটার কিঞ্চিৎ পরিচর দেওরা আবশুক বিবেচনা করিতেছি।

প্রকাণ্ড কদলীপত্তের সমূধে উপবেশন করিরা দেখিলাম, সমুদর ব্যঞ্জনে তিল তৈলের গন্ধ পাওয়া যাইতেছে। তিল তৈল ভিন্ন অভ তৈল এদেশের পাকশালায় ব্যবহৃত হয় না। আমার বন্ধুগণ তাহাতে অনভ্যস্ত ছিলেন, স্তরাং আহারের স্থবিধা হয় নাই, ইহা বলা বাহুল্য মাত্র। আমি অনেক দিবস মাদ্রান্ত প্রেসিডেন্সীতে ছিলাম, স্বতরাং তিল ও নারিকেল তৈলের প্রস্তুত ভক্ষণে আমি একপ্রকার অভ্যস্ত হইয়া গিয়াছিলাম। আমার ভোজনের অসুবিধা হইয়াছিল বলিয়া না। আমাদের দেশের ভাত ও মাদ্রাজ অঞ্লের ভাত প্রায় এক প্রকার; হিন্দু-স্থানীর হাতের তৈয়ারী ভাতের স্থায় পারাপ নছে। পূর্বেই বলিয়াছি, ডালের নাম এখানে পর্পূ, ইহা ঠিক যেন একটা ব্যঞ্জন। খন এবং তিম্বিড়ি (তেঁতুল) ও লকাসংযুক্ত। व्यर्गानित हेरा वाक जन्मनाजा। य कान থাদ্য জ্বো হাত দাও, তেঁতুল ও লকা প্রচুর পরিমাণে দেখিতে পাইবে। এই জক্ত সে দেশে উক্ত প্রকার রোগের যেমন প্রাতৃভাব তেমনি এই সকল রোগের চিকিৎসকও গণ্ডা গণ্ডা মিলে। মণ্ডর ডাউল রাঁধিলে তাহা পাংলা হয় বটে কিন্তু তাহাতেও ঐ অপরপ লঙ্কা 😵 তেঁতুল যথেষ্ট থাকে। বড় বড় লছার ঝোল হয়, তাহাতে লখা ভিন্ন কেবল েউতুল ও গোলমরিচ মাত্র থাকে। কৰণী ভাৰা প্ৰধান তরকারী; ভাউন সিদ্ধ ক্ৰিয়া ভাহাতে লক্ষা ও লবণ মিশ্ৰিত ক্ৰিয়া,

বে ব্যঞ্জন হয় তাহা অতি অভুত !! দ্বির নাম তায়ার, বোলের নাম মৌর এবং হয়ের নাম পাল। ভোজনের সময় এই তিনটা দ্রব্যের খুব প্রচলন আছে।

ডালের সঙ্গে কখন কখন বেগুণ, আলু, সঞ্জিনা ৰাড়া প্রভৃতি মিশাইয়া দেওয়া হয়: ইহাও এক প্রেকার তরকারী। দেশের মত স্বতম্ব "টক্" বা "অম্বল" বলিয়া কোন ত্রব্য নাই। মাছের ঝোল তাহার। জানে না। মাছ ভাজিয়া থায় অথবা "কলমু" करता "कलमू" अप्तरभन मर्खा मर्खा थान गुम्ना हेश यिन ना इब्र छाड़ा हहेटल ट्रिमिन आव আহারের স্থবিধা হয় না। কলমু ছই প্রকার আমিষ ও নিরামিষ। ছাগ, মেষ কিম্বা পক্ষিমাংস অথবা মংস্ত উষ্ণ জলে সিদ্ধ করিয়া তাহাতে বেগুণ কিম্বা আলু অথবা সঞ্জিনা ডাঁটা নিকেপ পূর্বক ঔেতুলের রস, লঙ্কা বাঁটা, হরিক্সা চুর্ণ ও গোলমরিচ চুর্ণ মিশাইয়া দিলে যে অদ্তত জিনিষ হয় তাহার নাম আমিষ "কলমু"; আমিষ ব্যতিরেকে ষাহা হয় তাহা নিরামিষ কলমু। ইহা তথাকার माञ्जाकात्र धन এक मानिक। हेहा.ना इहेल কাহারও অল কচে না। অত্য দেশের লোকেরা এ অঞ্লে আসিয়া তেঁতুল ও লয়া খাইতে খাইতে জালাতন হইয়া পড়ে। পোৰল উৎमत् अत (डाबन (भव इटेल, अलिक "পদ্মী" পান করে। পদ্মী অর্থে তালরস, বুঝার। ইহা তাড়ি নহে, তালগাছের তাজা রদ, স্তরাং অত্যস্ত শীতল, স্বাহ ^ও রোগ নাশক। ইহাতে নেশা হয় না। नकरनरे दन रेश थात्र, छारा नरह, কিত অধিকাংশ নরনারী ইহা পান কিরিয়া

থাকে। উৎসবের ইহাও একটা প্রধান ক্লিনিস। একটা স্থথের বিষয় এই, পোংগল নেলায় মদ, তাড়ি, গাঁলো, চণ্ডু প্রভৃতির ধ্ম ধাম বা অভজ্ঞতা দেখি নাই। মদের দোকান খুলিতেও কখন দেখিয়াছি বলিয়া বোধ হয় না।

ভোজন সহকে কেবল আর একটা কথা
লিথিবার আছে, তাহা এই। এদেশে
উচ্চশ্রেণী, মধাশ্রেণী এবং নিম্নশ্রেণীর হিন্দু,
মুসলমান ও নেটীব গ্রীষ্টান সমাজে
"মরিচজল" নামে এক প্রকার তরল পদার্থ
ভাত:ভোজনের সময়ে প্রচলিত দেখা যায়,
তাহা প্রায় নিত্য ব্যবহৃত হইয়া থাকে,
এদেশে ইহা অভ্যস্ত প্রিয় ব্যক্ষন।

গোলমনিচ চূর্ণ তিন্তিড়ি রদের সহিত উত্তমক্রণে মিশ্রিত করিয়া উহা উত্তপ্ত কটাহ বা হাঁড়ি মধ্যে রাথিয়া উক্ত করা হইরা থাকে, কিয়ৎক্ষণ পরে উহাতে লবণ ও থোল মিলাইয়া দিয়া পাত্রাস্তরে রাখা হয়। এই "মরিচ জল" ভাতে মাথিয়া খাঙ্কো হয়। অনেকে চুমুক দিয়াও থাইয়া থাকে। বাস্তবিক ইহার আস্বাদন মন্দ নহে কিন্তু ইহা যেমন উগ্র তেমনি উক্ত। ইহাতে লক্ষা চূর্ণ ডিম্প্রিত থাকে। এখন ভাবিয়া দেখুন, লক্ষা আর তেঁতুল মান্ত্রাজ্ব অধিবাসীদিগের পাকশালার কেমন প্রয়োজনীয় উপকরণ!!

প্রীধর্মানক মহাভারতী।

যুগল কিশোরের দস্ম্য-দমন ও বিচার ফল।

শতবর্ষ পুর্বে জমিদারগণ প্রজাগণের উপর এবং ছব্বল জমিদারের উপর কিরপ ক্ষমতা পরিচালনা করিতেন যুগলকিশোর রায়টোধুরী মহাশরের দহ্যদমন হইতে আমরা সে বিষরের হৃত্তর দুষ্টান্ত প্রাপ্ত হই। বোধ হর বর্ত্তমান সমরে বঙ্গের প্রাপ্ত বাজিত ব্যক্তির নিকটই গৌরীপুরের স্থনামধন্ত জমিদার প্রাক্ত ব্যক্তির নিকটই গৌরীপুরের স্থনামধন্ত জমিদার প্রাক্ত ব্যক্তির নিকটই গৌরীপুরের স্থনামধন্ত জমিদার প্রাক্ত ব্যক্তির নিকটই গৌরীপুরের স্থনামধন্ত জমিদার প্রাক্তি। যুগলকিশোর রায়টোধুরী ইহারই রন্ধ প্রপিতামহ। তিনি অত্যন্ত তেজস্বী ও দৃঢ়চেতা ব্যক্তি ছিলেন। তাহার প্রতাপে, বৃদ্ধি চাত্র্য্যে ও কার্য্যকৌশলে তিনি মরমনিসংহ অঞ্চলে আদর্শ জমিদারক্রপে লোকের ভর ও ভক্তির পাত্র ছিলেন। কর্ত্তব্য

পরায়ণতা তাঁহার রক্তের সহিত মিশ্রিত
ছিল। একবার যাহা তিনি কর্ত্তব্য বলিরা
থির করিতেন সহস্র বাধা ঘটলেও
তাহা হইতে বিরত হইতেন না। বাঙ্গাল।
১৯৯৫ সালে একবার ভীষণ জলপ্লাবন হইরা
লোকের ঘর্ষার জলপ্রোতে ভাসিরা যার।
ঐ সমর ময়মনসিংহ অঞ্চলে অনাহারে
বছলোকের জীবনাস্ত ঘটল। ভীষণ আর্ত্তনালে
দেশ ভরিয়া উঠিল এবং বছ গ্রাম জনশৃত্য হুইল।
ভগবানের এই কঠোর নিগ্রহে নিপোষিত হইয়া
লোক ধর্মাধর্ম ভূলিল। জীবিকা নির্বাহের জন্ত্ত
দক্ষ্যতা করিতেও কুঠা বা বিধা বোধ করিল
না। স্বরাজকতার তাওবে ময়মনসিংহ
স্ক্রণ কম্পিত হইয়া উঠিল।

युगनिक्रिनांत्र बांब्रहोधुती विशव ध्वजा-হু:খ দুর করিবার জন্ত क कि करबन नारे। অৰ্থ বাৰ কৰিয়াও ভাহাদের স্থব ও স্থবিধার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। কঠোর হস্তে অত্যাচার পীড়নের পথরোধ করিরা দেশে শান্তি স্থাপনের প্রায়াগী তাঁহার প্রতাপে দস্ত্য তম্বর **रहेर**नन । দণ্ডিত ও দেশ হইতে ভাড়িত হইতে লাগিল। অনেক হলের প্রজা পুনরার শান্ত ও নিরুদেগ ছইরা ক্রবিকর্মে নিরত হইল। কেবল ময়মনসিং পরগণার পূর্বদিক সিংধা পরগণার প্রজাগণ সে স্থাৰে বঞ্চিত হইল। সিংধা প্রগণার গ্রামসমূহে অভ্যাচারের পূর্ণস্রোত প্রবাহিত রহিল। এই অত্যাচার বারণের অন্ত যুগলকিশোর বদ্ধ পরিকর হইলেন; কিন্তু ইহাতে এক নৃতন বিদ্রাট উপস্থিত হইল।

সিংখা পরগণা যুগলকিশোরের সম্পত্তি নহে, মহম্মদ খাঁ নামক মুসলমান ভূম্যধিকারীর অধীন। স্থতরাং সিংধার প্রজাগণের উপর তাঁহার কোনও ক্ষমতা ছিল না। সিংধার হুবুত্ত প্রস্থাগণ প্রশ্রর পাইরা দলপুষ্ট হইতে লাগিল, विভिन्न परन विভক्त स्टेश शास्त्र शास्त्र शास्त्र গণের উপর নিত্য নুতন অত্যাচার আরম্ভ করিল। ক্রমশ: অত্যাচারের বৃদ্ধি দেখির। যুগলকিশোর প্রায় পঞ্চ সহস্রাধিক লোক সমভিব্যাহারে ২৪শে পৌষ সিংধাধিমুখে ধাবিত হইলেন। সশস্ত্র সৈতা ও नार्विद्रौनश्न करनाष्ट्रांत्पत्र छात्र जिःशांत मरश्र श्रीविष्ट रहेग । अहिद्र हे भीवन आर्खनादम ুদেশ ভরিষা গেল। সিংধার প্রজাগণের সর্বত্ত শুষ্টিত হইল। শুন্তাদি ও দ্রব্যসামগ্রী সকল পদমৰ্কিত হইতে লাগিল। গো ছাগাঁদি গৃহ

পালিত প্ৰদল গৃহীত ছইল। বালফ্বালিকা युवक युवजी वृक्ष वृक्षा व्यात्मक व्यापक व्येक। পরগণার এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত প্রায় সমস্ত গৃহ অগ্নি ছারা ভন্নীভূত হইল। माधु व्यमाधु मायो निट्मावी विठात बहिन না. সকলের ভাগাচক্র একই গভিতে व्यावर्षिक 'इहेन। নিগৃহীত নিশাড়িত প্রজার আকুল মার্ত্তনাদে সৈম্বগণ কেহ বর্ণপাত করিল না। এই ভীবণ অভ্যাচারে ৩১২ ঘর প্রজা ১২০০ গো বৎসাদি এবং প্রকাগণের সংগৃহীত বহুপরিমাণ ধান্ত ও বাসন পতাদি नहेबा देमछ ७ नाठिबानगंग यूगन कि मारवत নিত পরগণায় আনয়ন করিল। কাণ্ড শৃত্ত উন্মন্ত পদাতিক' লাঠিয়ালগণ শত শত পরি-বারকে হস্তীপদের সহিত রজ্জুবদ্ধ করিয়া আনিল।

উদ্দেশ্রে দস্যা ভস্করের শাসনমাত্র বুগলকি শোর এই অভিযান করিয়া-ছিলেন। ভাহার পরিণাম যে এত ভীষণ অমামুষিক অত্যাচারে পরিণত হইবে তাহা তিনি পূর্বে মনে করিতে পারেন নাই। পাঁচ সহস্রের অথিক লোক কি ভাবে কোণায় কি কার্য্য করিতেছে তাহা তিনি প্রথমে জানিতে পারেন নাই। নিরক্ষর অসভ্য যুদ-ব্যয়দায়ী লোক স্বাধীনভাবে অত্যাচার করিতে পাইরা উন্মন্ত হইরাছিল। তাহাদিগকে সংব্ত করা সহজ সাধ্য নহে। স্থভ্রাং অর দিনে यरधारे जिःथांत्र श्रकांशरनंत्र मर्कनाम रहेशा शिन । যুগলকিশোর সমস্ত অবস্থা অব্গত হইরা অমৃতথ হইলেন। তিনি উৎপীভ়িত প্রজা-**मिश्रंक काञ्चेद्र मिन्ना निक क**िकांत्र महम्मन-সিংহ

ভাহাদের চাবের জন্ত জমী বলদ বীজ প্রভৃতি প্রদান করিলেন। যুগলকিশোরের এই কাও অন্তাপি মন্নমনসিংহ অঞ্চলে প্রবাদ বাক্যরূপে প্রচলিত রহিয়াছে।

ময়মনসিংহ জেলার তাৎকালীন কালেন্টার রটন সাহেবের নিকট সিংধার জমিদার মহমদ থাঁ যুগলকিশোরের অত্যাচার, কাহিনী বিবৃত্ত করিয়া আভ্যোগ করিলেন। রটন সাহেব স্থানীয় ভদস্তের জন্ত আমীন কানন ও কাজী প্রভৃতিকে প্রেরণ করিলেন। অমুসন্ধানকারী গণ গ্রামে গ্রামে পরিভ্রমণ পূর্বকি সমস্ত বিবরণ সংগ্রহ করিলেন, অত্যাচারে পীড়িত ব্যক্তি-গণের নামধামসহ ক্ষতির তালিকা প্রস্তুত করিয়া যুণাসমরে রটন সাহেবের নিকট প্রেরিত হুইল।

তখন ইংরেজ রাজত্বের প্রথমাবস্থা। তখন ব্রিটীশ শাদন দর্বত স্থপ্রতিষ্ঠিত ও ব্রিটীশ শাদননীতি স্থাত্ৰ প্ৰচলিত হয় নাই! মুসলমানরাজ প্রবর্ত্তিত বিধি নিয়মই অনে-কাংশে অক্ষাছিল। কালেক্টারগণ জেলার প্রধান কর্মচারী হইলেও তাঁহাদের শক্তি অধিক ছিল না। বিভাগীয় শাসনকর্ত্তা বিচার প্রভৃতি বিষয়ে অনেক সময় শক্তি পরিচালনা করিতেন। তাঁহাকেও আবার বছবিষয়ে বোর্ডের আদেশাপেক্ষী হটয়া কার্য্য করিতে হইত। মন্ত্রমনসিংহের কালেক্টার রটন সাহেব আমীনের রিপোর্টসহ ঢাকার শাসনকর্তা ডগলাস সাহেবের নিকট নিজ রিপোর্ট প্রেরণ করিলেন। ডগলাস সাহেব যুগলকিশোরের তায় প্রবল পরাক্রান্তশালী জমিদারকে সাধারণ অপরাধীর ভার দণ্ডিত করিতে সাহসী হইলেন ना । कर्जुशक्कत्र चारमभाष्ट्रशास्त्र कार्या कत्राहे সঙ্গত ও নিরাপদ মনে করিলেন। তদমুসারে
ডগলাস সাহেব ১৭৮৯ খুষ্টাব্দে রেভিনিউ
বোর্ডের নিকট যুগলকিশোর রারের বিরুদ্ধে
অভিযোগ সম্বন্ধে যে রিপোর্ট প্রেরণ করেন
তাহার কিয়দংশ উদ্ধৃত করা গেল—

The atrocious and violent precedings of the Zeminder of Mymensing calls aloud for the examplary and condign punishment; for if the principal land-holders are suffered, in open violation to all laws, to commit such daring outrages and if a total disregard to the repeated positive orders of government, is allowed to pass over in silence. or with impunity, the most mischievous consequences are to be apprehended both for the peace of the District, the well being of its inhabitants and the safety of its revenues for many Zeminders or Talukders, will in future be liable the wanton and licentious oppressions and lawless userpation of their more powerful neighbours.

ঢাকার শাসনকর্ত্তার রিপোর্ট প্রাপ্ত হইরা রেভিনিউ বোর্ডের সদস্থাণ যুগলকিশোরকে দশু বিধান পূর্বাক ঐ প্রকার জমিদারগণের অত্যাচার সমূলে ধ্বংস করিতে ক্বত নিশ্চর হইরা বিহিত আদেশ প্রদান করিলেন। এ দিকে যথা সময়ে যুগলকিশোর রায় মন্থমন-সিংহ সহরে নীত হইলেন। তাহার জন্ম জামিন দিরা মুক্তি প্রার্থনা করা হইয়াছিল কিন্তু তাহা প্রথমে গ্রান্থ হর নাই। তৎপর অর্থের মোহিনী শক্তিবলে অনেকেরই সহায়ভূতি উপলিয়া উঠিল। যুগলকিশোরের ভাণ্ডার
হইতে বহু অর্থ বিচার বিভাগসংশ্লিষ্ট ক্ষুদ্র
বড় কর্ম্মচারীগণের ভাণ্ডার পূর্ণ করিল।
ইহার ফলে যুগল কিশোর তাঁবুতে বাস করিবার অন্থমতি পাইলেন। তাঁহার জন্ম ভূত্য
পাচক প্রভৃতি নিযুক্ত হইল। প্রহরীবেষ্টিত
হইয়াও তিনি স্বাধীনভাবে আমোদ আহলাদে
সময়পাত করিয়া বিচারকালের জন্ম প্রতীক্ষা
করিতে লাগিলেন।

যথাকালে বিচার আরম্ভ হইল। প্রত্যহ শত শত লোক ময়মনসিংহের বিচারালয়ে উপস্থিত হইয়া বিচার কার্য্য দেখিতে লাগিল। ঐ বিচারের কথাই লোকের একমাত্র আলাপের বিষয় হইল। সিংধার জমিদার সর্বন্ধ পণ করিয়া মোকদ্দমার ভবির করিতে লাগিলেন। যুগল কিশোরের পক্ষ হইতেও তি ছিবয়ের ত্রুটি হইল না। এই রূপে উভয় উকীল মোক্তারের উদর পূর্ণ হইতে লাগিল, সাক্ষীগণের মধ্যে অনেকেরই অবস্থার পরিবর্ত্তন ঘটিল। অনেকে বিচারালয়ে উপন্থিত হইতে অস্বীকার করিল। উপস্থিত হইল তাহাদের মধ্যে কেহ সত্য विनन (कह मण्पूर्व मिथा। विननं। युगन কিশোরের ভয়ে অনেকেই তাঁহার বিরুদ্ধে

সাক্ষ্য দিতে সাহসী হইল না। সম্ভ্রান্ত শ্রেণীর
কোন লোকই সাক্ষ্য দিলেন না। ফলত: লুগুন
গৃংদাহ প্রভৃতি কার্য্য যে হইয়াছে ভাহা
প্রাতপন্ন হইল কিন্তু ঐ সমস্ত কার্য্য যে মুগলকিশোর রায় কর্তৃক অমুষ্টিত হইয়াছে ভাহা
কেহই শপথ করিয়া বলিতে পারিল না।
যুগলকিশোর রায়কে কেহ দেথে নাই তিনি
যে আদেশ দিয়াছেন তাহাও কেহ শুনে নাই।
কেবল অমুমানের উপর নির্ভ্র করিয়া গাঁহাকে
দণ্ডিত করা সম্বত কিনা এই সম্বন্ধে উভয় পক্ষে
বহু বাক্বিতণ্ডা হইয়াছিল। পারশেষে প্রমালের অভাবে ও রটন সাহেবের অমুগ্রহে
কেবলমাত্র জামিন প্রদান করিয়াই যুগল
কিশোর অবাাহতি লাভ করেন।

যদিও উপরোক্ত কার্য্যে মুগলকিশোর অপ্যশভান্ধন হইয়াছিলেন তথাপি তাঁহার ভায় স্থবিবেচক ও বিষয় কার্য্যে নিপুণ লোক এখনও অতি অল্পই দেখা যায়। কালেক্টার রটন সাহেব বন্দোবন্ত রিপোর্টে লিখিয়াছিলেন—

Jugal Roy manages his business and by his prudent care and applities is a man of considerable property.

श्रीमोतीक्किमात्र त्रात्रकोधूती।

অভাগা।

আমি—তিমির মাঝারে ভাসিরে বেড়াই
মম সাথে ওগো সাথী কেই নাই
আমি যে পথিক একা !
আমি—নাবিক একাকী, জীর্ণ তরীটিরে
ভীতমনে সদা বহিতেছি ধীরে
কাহানে বাকিক প্রেম

আমি—সশস্কিত সদা অধ রাশ ধরি,
সারথি হইরে মৃত্যু ভরে মরি
শাস্তি কোথার মোর!
আমি—আপনারে হার! অরি ব'লে বৃঝি,
আপনার সাথে অবিরত যুঝি
একিরে অনুষ্ঠ খোর

অমরকণ্টক।

অমরকণ্টক বিদ্ধা শৈলমালার একটা পর্বতের নাম হইতে দেশের ও बनानरम्य नाम७ व्यमन्नक व्हेमारह। এই জলাশর একটা কুগু। যে স্থান স্বাভাবিক উৎস্বারা পরিপূর্ণ হয় তাহাকে পশ্চিমাঞ্লে "কুও"বলে। এই কুণ্ডের চতু-किंक প্রস্তর সোপানাবলী ছারা বাঁধাইয়া **(म अ**या इरेब्रा**रह। कू**ए अब व इतिनवर्ग वदः रेनवारम भून । वदः इंशात्र भन्तिमिन्दक এक है मदार्भ भन्नः अनानो चाह् ; এই अनानी-মুখে কুণ্ডধারা ক্ষীণধারায় বহির্গত হইয়া ক্ষাণ হইতে ক্রমশঃ বুহৎ, এবং বুহৎ হইতে বুহত্তর হইরা হুই ক্রেশে গিয়া প্রপাতরূপে পতিত হইশ্বছে। ইহাই নর্মনার প্রপাত। ইহাকে ক্পিল ধারা বলে। নর্মানার জন্মস্থান বলিয়া এই স্থান তীর্থরূপে পরিণত হইয়াছে।

বিলাসপুর হইতে কট্নি যাইবার একটা
শাথা রেল আছে। এই পথের "পাণ্ডরারোড"
নামক ষ্টেশনকে লোকে "গোরীলা" বলে।
বিলাসপুরে আমি একটা যুবা ছত্রী সাধুসন্ধী
পাইলাম, আমরা ছলনে রাত্রে গৌরীলার
পৌছিলাম,—পান্থশালার রাত্রিযাপন করিয়া
প্রাতে প্রাতঃ ক্বত্য সমাপন করিয়া অমরকটক
গৌরীলা হইতে ৭ ক্রোশ পথ। ইংরাজ,
নিজের সীমা আমানালার উত্তরাংশ পর্যান্ত
বিভ্ত রাস্তা করিয়া দিয়াছেন;—ছইটা
পর্বাত্ত এরাস্তা করিয়া দিয়াছেন গোওয়া
বায়। পথের ছই পার্শ্বে বিকট বিজন বন;
হিংল্রক করতে পরিপূর্ণ। বন্সে শাল পিয়াল

অর্জুন তিনিশ হরিতকী আমলকী বয়ড়া ইত্যাদির গাছ রহিয়াছে। শাল ও আমলকী গাছই অধিক দেখিলাম; হরিতকী ফল শৃষ্ট থেহেতু অগ্রহায়ণ মাদে ইহা বিক্রয়ার্থ চয়ন করা হইয়াছে। আমলকা বৃক্ষ ফলে পরিপূর্ণ;—পথে ইহাই আমাদের ক্রার্র্ত্তির প্রধান সহায় হইয়াছিল। বয়ড়া ছই একটী দৃষ্টি গোচর হইতেছিল। ভেলার গাছও ফলে পূর্ণ; কিন্তু এ গাছ দেখিতে যেন যমন্ত! বৃক্ষ যেমন ক্ষেত্রণ পাতাফলগুলিও তক্ষপ। ইহার অপক্ষণ গুলি কেহ ভাপিলে তাহা হইতে ফিনিক দিয়া এক প্রকার উত্যবার্থ্য রস নির্গত হয় ভাহা গায়ে লাগিলে সমস্ত শনীর বিষাক্ত হইয়া উঠে এবং নব মহাব্যাধির মত গায়ে চাকা চাকা চিহ্ন উথিত হয়।

এই বনপথে আরণ্য বিণক সম্প্রদারগণ দলবদ্ধ হইয়া গমনাগমন করিয়া থাকে।
ইহাদিগকে এ স্থানে "বনজারা" বলে।
বনজারাগণ পুত্র কল্পা পরিজন লইয়া নিজ দেশের শস্ত অন্তদেশে বিক্রয়ার্থ লইয়া যায়।
বলীবর্দ্দের পৃষ্ঠে শস্তভার চাপাইয়া দেয় এবং
ঘোড়ার উপর পুত্র কল্পা স্ত্রীকে আরোহণ
করাইয়া এই হুর্গম পথ অতিক্রম করিয়া
থাকে। পাঁচ ক্রোশ পথ অতিক্রম করিয়া
বিশ্রাম ও রাত্রিবাস করে। বন মধ্যে যে স্থানে
রাত্রিবাস করে। বন মধ্যে যে স্থানে
রাত্রিবাস করে। বন মধ্যে যে স্থানে
রাত্রিবাস করে। কন এক পরিবার
পৃথক্ পৃথক্ হুর্গ নির্মাণ করে। আবশ্রক মত
শস্তের ছালা একের উপর এক সাজাইয়া হুর্গের
প্রাকার নির্মাণ করে; এই প্রাকারের বাহিরে
চত্রদিকে বলীবর্দ্ধ ও বোটকদিগকে শিক্ল দিয়া

খোঁটার খাঁথিয়া দেয়। বনের শব্দ ব্যাস্থ

আদিলে প্রথমেই বলদ ও ঘোটকের ভীতি

বিহবল চীংকারে গড়ের যোদ্ধাগণ সজাগ হইয়া
ওঠে এবং শব্দকে বিভাড়িত করিয়া দেয়।

আমার সঙ্গী এই প্রকার এক দলের নিকট
গমন করিয়া কিছু খাভ ঘাচঞা করিলেন।
ভাহারা ভিক্ষাদানে ভাহার সংকার করিল।

ছুই এক ক্রোশ যাইবার পর একটা কুল नियंतियो (मथा (शन। जांहात कौण जनधाता পথের অল্প নিম দিয়া তির্যাক ভাবে প্রবাহিত হইতেছে। ঝরণার গর্ভ প্রস্তর খণ্ডময়:---मस्या मस्या वर्ष वर्ष कृषः व्यक्तत्रत्र डेक्ट खुन। এই স্থানে আমরা একটু বিশ্রাম করিলাম এবং ভিকালৰ আটার কটা প্রস্তুত করিয়া কুধা নিবৃত্তি পূর্বক যখন পুনর্যাত্রা করিলাম তথন রৌজ ঝাঁ ঝাঁ করিতেছে, প্রান্তর ধৃ ধৃ করিতেছে, পথ জনন্ত অঙ্গারবৎ হইয়াছে; পথিপার্যন্ত বুকের স্বন্ন ছায়াই তথন পথিকের একমাত্র আশ্রন্ন হল। চলিতে চলিতে দেখিলাম পর্বতের পানদেশে धकी दृहर कनाभय-एम शास्त रनकातागन দলে দলে বিশ্রাম করিতে পারে এ প্রকার বিস্তৃত ভূমিও রহিয়াছে। আমরা রৌদ্রতাপে তাপিত হইয়া দীর্ঘিকার জলপান করিয়া শীতল হইলাম।

অন্ন অগ্রসর হইরা পর্কতে উঠিবার পথ প্রাপ্ত হইলাম। পর্কতের পার্মদেশ গড়ানো ভাবে কুর্ন্তিত ও পরিষ্কৃত করিয়া এই পথ নির্দ্দিত হইরাছে। উপরে উঠিতে সর্ক সময়েই শাহাড়ের এই খড়ডভাগ পথিকের দক্ষিণদিকে অবস্থিত থাকে। পর্কতের হুর্গম নিম্ন স্থানকে খড়ে করে। ছুই পর্কতের মধ্যবর্ত্তী সংকীর্ণ নিম্ন ভূমিকেও খড়ে করে। বতই উদ্দে উঠা

যার এই খড়ড ভড়ই ভয়ত্বর বোধ হইতে থাকে। পথের দক্ষিণ ধারে দাড়াইরা নিয় দিকে চাহিতে গেলে হাদর ওক হইরা বার। প্ৰায় এক ঘণ্টা উচ্চপথে উঠিয়া পৰ্বভের উপরিন্থিত সমতল বা অধিত্যকা ভূমি প্রাপ্ত হওয়া গেল। যে ইংরাজের তত্তাবধানে ১৮৯৮ সালে এই পর্বাত- গাত্র কর্ত্তিত ও পথ প্রস্তুত হইয়াছে এই স্থানে পর্বতগাত্তে তাঁহার নাম প্রভৃতি লিখিত রহিয়াছে। হইতে নিমের দুখা कि मत्नात्रम त्वाध नाशिन ! হইতে বিশ্বচিত্রকার বিশাল চিত্রপটে বনরাজির ছবি অঙ্কিড করিয়া দর্শকের নয়নানন্দ বিধান করিতেচেন। আসিবার সময় যে শাল বৃক্ষগুলি ৫০।৬০ হাত উচ্চ বোধ হইতেছিল তাহাই বেন কুদ্ৰ ক্ষুদ্র গুকাবৎ প্রতীয়মান হইতে লাগিল। অর অধিত্যকা পথ অগ্ৰসর হইয়া আবার নিমে নামিতে रुहेन। এস্থানে হতুমানগণ দলবদ্ধ হইয়া এক বৃক্ষ হইতে বৃক্ষাস্তরে লক্ষ প্রদান করিতেছিল। নিম পথ ৩৪ পাক মিশিয়াছে। গাত্তে পর্বতের ञ्च উठिया এक न नम्छन दान नृष्टे श्रेग। এই স্থান হইতে অল্পুরে এ চটি প্রস্তরময় কুর নিঝারণী: ইহার পরিসর মাত্র হইলেও উচ্চ হইতে নীচে প্রবাহিত বলিয়া ইহার বেগ অত্যম্ভ প্রবল, ইহা ছই পর্বতের পাদদেশে অবস্থিত। ইহাকেই লোকে ॰ আমরা প্রস্তরগুলির "আমানালা" বলে। উপর পা রাধিয়া পর পারে চলিয়া গেলাম। **এই আমানালাই রে ওয়ারাজ ও ইঃরাজ** রাজ্যের সীমা নির্দেশ করিতেছে। আমানালা অমরকণ্টক পর্বভের পাদদেশ খৌত করিয়া

त्त्री अन्नात्रात्मत्र मीमात्र अकिन রামাত্তনী বৈরাগী সর্যাসী কুটার নির্মাণ করিয়া অবস্থান করিতেছেন। রেওয়ারাক তাঁহার ভরণপোষণার্থ সাহায্য করিয়া शांदकन । অভিথিসংকার সর্যাদীও করেন। পৃথক এবং দোভালা। অতিথিকাশ্রমটি আমরা স্থ্যাত্তের অব্যবহিত • পূর্ব্বে তথায় পৌছিলাম। আমাদের পুর্বে চারি জন আশ্রমটি मन्त्रामी অধিকার রামায়ত করিয়াছিলেন স্তরাং আমরা আর একটা কুদ্ৰ চালায় আশ্ৰয় नहेनाम । রাত্রিযাপন ক রিয়া আমরা প্রাত:কালে এন্থান করিলাম। **ट** इंड इ প্রস্থান আমানালার ভটভূমি হইতে অমরকণ্টক পর্বত উঠিলাছে। রে ওরারাজ পাহাড়ে উঠিবার যে রাস্তা করিয়া দিয়াছেন তাহা প্রায় ৪৫ অংশ থাড়াই উঠিবার সময় সম্মুখের দিকে অল অবনত হইয়া পৃষ্ঠ বক্র করিয়া উঠিতে হয়। এই খাড়াই পৰে উঠা অত্যস্ত ক্লান্তিজনক। পূৰ্বে উঠিবার এপথটীও ছিল না। তখন কামাঝার পাহাড়ে উঠিবার স্থায় পর্বতগাত্র অবলম্বন করিয়া উঠিতে হইত। ইংরাজ সীমায় পথ নির্মাণের পরে ইহা প্রস্তুত হইয়াছে। যাহা হউক পাঁচ ছয় বাঁক উঠিবার পর শিপর নিমে একটা সমতল স্থান হওয়া গেল। ইহা প্রায় আধ পোয়া বিস্তৃত। ইহার পরে ঢালু নাবিয়াছে। ঢালটীর নিমেই षमत्रक छेटक त्र कु छ वा कृष इन। भूकति गीत চতুর্দিক রেলে পাথর দিয়া বাঁধান। উত্তর দিকে প্ষরিণীর গর্ভে মহাপেবের মন্দির,— মন্দির গাত্তে একটা ভাত্র ফলক সংযোজিত, তাহাতে **সংস্কৃত** ও দেবনাগরী ভাবার

लिथा चारह, (व अवावास वचूनाथ निश्ह ১৯১৮ সমতে ইহা নির্মাণ করেন। পুক্রিণীর উপল্য স্থান সমতল ও জঙ্গলে পূৰ্ণ: মধ্যে মধ্যে ছই একটি ভগ্ন মন্দির রহিয়াছে এথানে তীর্থবাত্রী-গণ আসিয়া আশ্রয় গ্রহণ করেন। পুছরিণীয় উত্তরে অল্ল দূরে হইটী কুক্র মনিবের নর্মাণা মাতার স্বর্ণপ্রতিমা প্রতিষ্ঠিত। রে ওয়ারাজের নিযুক্ত পাণ্ডা তাঁহার দেবা করিয়া থাকেন। পুষ্করিণীর পশ্চিমদিকে পয়: প্রণালী একটা ক্ষীণ ধারা প্রবাহিত হইয়াছে। বনজন্মল ঝোপ ঝাপ প্রস্তর রাশির মধ্য হইতে প্রবাহিত হইয়া ছই ক্রোশ দুরে অনতি প্রবল শ্রেতে পরিণত হইয়া প্রপাত রূপে প্রায় ১০০ হাত উচ্চ হইতে হই পর্বতের মধ্যবর্ত্তী উপত্যকার পতিত হইতেছে। এই প্রপাতকে লোকে "কপিলধারা" বলে। শুনিলাম পুষ্করিণীর मिकन পूर्व यान इटेटि यात वकी कौन धाता প্রবাহিত হইয়া মহানদীতে পরিণত হইয়াছে; এবং পুষ্কিণীর উত্তর পূর্বাংশে প্রবাহিত ধারাই স্বর্ণভন্তার মূল !

নর্ম্মদা নদীর ধারা পরঃপ্রণালী হইতে
নির্গত হইয়া বে ভূডাগে প্রবাহিত হইয়াছে
তাহা ছই পর্মতের উপত্যকা ভূমি। উত্তরাংশ
বোধ হয় রে ওয়ারাজের এবং দক্ষিণাংশের
পর্মতমালা বোধ করি অন্ত কোন রাজার
সীমাভূক,—কারণ উহার পাদদেশে অয় অয়
অন্তরে সীমা নির্দেশক খোঁটা প্রোধিত
রহিয়াছে। কপিলধারায় যাইতে হইলে
উত্তরাংশ অর্থাৎ অমরকণ্টকের পাদদেশ দিয়া
যাইতে হয়। বাত্রীর চলাচল দারা ভূমিতে
একটি সংকীণ চিক্ত পড়িয়া গিয়াছে, ইহাকে
এথানে প্রাউড্ডী বা ভ্রিপেশ বলে।

मञ्जा अभाग चान ७ अन्न मर्था উराहे চলিবার একমাত্র পথ। এখানেও দল বাঁধিয়া याहेट इस । अथर अकना ताकना हना विभन বনরাজ ব্যাঘ্রের সহিত সাক্ষাৎ इ ७ मां चां कर्रा नरह। त्राकां ६ इरेल चात्र নিস্তার নাই। প্রায় ক্রোশ দেড়েক যাইবার পর নর্মদার ধারা পর্বতের একটী কুগুরপ∴হইয়া আবার বক্র হইয়া একটু দূরে গিলা প্রবাহিত. হইলাছে। এই কুণ্ডের নিকট অল্ল উচ্চে উঠিয়া আবার আমাদের নীচে নামিতে হইল। ইহার অল-দ্রেই কপিল ধারা। ইহার প্রায় হইএক শত হাত পূর্ব হইতে নর্মদার গৰ্ভ একটা বৃহৎ শিলাপট্টের স্থায় বোধ হইতে লাগিল। তাহার মধ্যে উচ্চ নীচ শিলাখণ্ড গ্রথিত রহিয়াছে। এই শিলাপট্রের উপর দিয়া নৰ্মদা তর তর বেগে প্রবাহিত হইতেছে। প্রপাতের নিকট হুইটী ধারা হুইয়া গিয়াছে। দক্ষিণের ধারাটী সূল উত্তরেরটী ক্ষীণ। এই হিধারপ্রপাত খেত ধুমকণায় নিয়ে শিলারাশির উপর পতিত ছইভেছে। প্রপাত-निथरत माँ ज़ारेबा तिथरन नौरहत मुख कि মনোরম ও ভয়ঙ্কর বোধ হয়। হই পর্বতের পাদদেশ উপত্যকা ভূমিতে গিয়া মিশিয়াছে। বিস্তৃত আকাশ যেন নিমে গিয়া সংকীৰ্ণ হইতে भःकोर्ने इंदेशार्ह, कूज तृहर भिनातानित উপর দিয়া নর্মদা কুশুকুশু করিয়া প্রবাহিত হইতেছে। এই দুখা দেখিলে মনে নানা প্রকার আধাাত্মিক ভাবের উদর হটরা মন উদাস হইরা যার। ইচ্ছাকরে জগৎপিতার সেবার निवृक्त रहेश এই निर्कत शांत व्यवहान कति। আবাদ পরমূহতে বধন ভাবি এই স্থানই

ব্যাঘ্রবাব্দের ক্রীড়াভূমি তর্খন এই প্রীতিকর স্থানও ভীতিপ্রদ হইয়া দীড়ায়। কপিল ধারার ঠিক উপরে দক্ষিণাংশে উৎকল দেশীয় সন্ন্যাসীর একথানি কুটির। माधु এখন একাকী আছেন। গুরুকে গতবংসর বাঘে লইয়া তিনি আমাদিগের নিকট সরলভাবে নানা গল্প করিলেন। তাঁহার কাছে শুনিলাম, এই পর্বতের একটা জঙ্গলময় হলে "গুলবকাবলা" নামে একরূপ পুষ্প আছে তাহার রূসে চক্ষের জ্যোতিঃ বৃদ্ধি ও নিশান্ধতা দুর হয়। তিনি নিজগুরুর কাহিনাও বিবৃত করিলেন। গুরু এই কুটীরে বাস করিতেন শিষ্য তাঁহার পরিচ্যায় নিযুক্ত থাকিতেন। এক निन धुनौ जानिट्डिह; नित्नत्र दिनात्र सीप থোলাই থাকিত, একটা বাঘ আসিয়া থাবা গাড়িয়া ঐ স্থানে বসিল। স্থক তরবারি হাতে শইয়া অগ্রদর হইলেন। বাঘকে আঘাত করিতে গিয়া তরবারি চালে বাধিয়া গেল। वाञ महे अवगद भनायन कविन किंद গুরুর প্রতি তাহার জাতবৈরিতা গেল। এথানে রেওয়ারাজের ছকুমমত কেহ গুলি মারিয়া বাঘ শিকার করিতে **शांत्र ना। वनवौद्रदक** সন্মুগযুদ্ধে তরবারি বারা বধ করিতে পারিলে সে পুরষার পাইতে পারে কিন্তু বন্দুক 'ছারা বধ করিলে তাহাকে দণ্ডিত হইতে হয় 🗠 যাহা হউক এক দিন রাজা কমিশনরের সহিত প্তক্র সেদিন किशनभात्रा प्रिचित्व चारेरमन। তাঁহার গরুগুলি লইরা কুটিরে ফিরিতেছেন ইত্যবসরে একটা বাদ আসিয়া সকল লোককে পরিত্যাগ করিরা তাঁহাকে লইয়া পলারন

করিল। তিনি জাজুটে বিভূষিত ছিলেন;
তাহার জটামগুলে ৮০ থান মোহর সঞ্চিত
এবং গেঁজেও থলেতে ২৪০টা টাকা ছিল।
বাঘ তাহাকে কোথার লইয়া গেল কেহ তাহার
সন্ধান পাইল না; তবে ২৪০ টাকার মধ্যে
৮০ টাকা পরে পাওয়া গিয়াছিল; তাহা
তাহার শিষ্যকে প্রদত্ত হয়।

ক্পিল্ধারার নীচে ছই পর্বতের পার্খে নর্মণা পরিভ্রমণকারী যাত্রীর যাইবার ও আদিবার হুইটী ভ ড়িপথ আছে। যাহারা নশ্মনা পরিভ্রমণ করেন ভাঁহাদের জন্ম রাজা,মহাজন ও জমিদারগণের প্রদত্ত অরসত্র বস্ত্র ও টাকার বন্দোবস্ত আছে। নর্মদার তিনটী প্রধান তীর্থ আছে যথা অমরকণ্টক ভৃগুক্ষেত্র ও অমরকণ্টকে তুই ওঙ্কারনাণ। অবস্থান করিয়া আমরা প্রত্যাবর্ত্তন কালে প্ৰরায় আমানালা হইতে গৌরীলা করিলাম। বন্ধু কটনী হইতে পদব্রজে প্রয়াগ যাইবেন বলিলেন,আমি জব্বলপুরাভিমুথে যাত্রা করিলাম। মীরগঞ্জ ষ্টেদন হইতে মাইল দেডেক চলিলেই ভৃগু কেত্র পাওয়া যায়। ভৃগুকেত্রের চলিত নাম ভেড়াঘাট। এ স্থানে একটি অনতি-উচ্চ প্রপাত আছে। ইহার বহু পূর্ব হইতে বিস্তৃত নৰ্মদাম্ৰোত অত্যস্ত বেগে উচ্চনীচ অথচ একাঙ্গীভূত শিলাপট্টের উপর দিয়া হাহা করিয়া প্রবাহিত হইতেছে। এথানকার অধিক উচ্চ প্ৰণাত যদিও ন(হ প্রবলবেগে শিলাস্ত পের পড়িয়া ধূমের ভার জলকণারাশি বিকীর্ণ করিতেছে। এই কারণে প্রপাতের সাধারণ নাম "ধুঁয়াধার। ইহাই জব্বলপুরের প্রদিদ্ধ প্রপাত। এই স্থানের

অনতি पृदत्र ষেত্পর্বতভোগী বেষ্টিত একটি কুন্ত হল। ইংরাজ এই শ্ৰেণীকেই marble rocks বলেন। निकछिरे छाकवाःना। हेःत्राञ्जान कव्यमभूत হইতে ভাল একাগাড়ী করিয়া দলে দলে প্রতি রবিবার প্রাতঃকালে এই মার্কেল পাহাড় ও হ্রদ দেখিতে এখানে আগমন করেন। হ্রদে তাঁহাদের বিচরণের জন্ম একথানি নৌকা আছে। তাঁহারা এখানে আমোদ প্রমোদ कतिया विकारण वा श्रवित हिलया यात। এই হ্রদের জল সুগভীর ও আন্নার ক্রান্ত নিশ্বল। তটোপরি বাণকুণ্ড;—এইস্থানে ছোট বড রাশি রাশি মার্জিত মস্থ প্রস্তরের ফুড়ি বিশ্বিপ্রভাবে পতিত রহিয়াছে इंशामिश्राक वांगित्र वंत्न। একটু উচ্চস্থানে শ্বেত প্রস্তবের একটি স্বাভাবিক গুহা আছে একজন লোক পদাসনে বদিয়া বেশ উপাসনা করিতে পারে। হ্রদের অক্ততটে একটি সন্ন্যাসী কুটীর করিয়া নিৰ্মাণ বাস নিকটে হুইধারে উচ্চশেত প্রস্তরের প্রাচীর উঠিয়াছে এবং নিমে পাথুরে কয়লার স্থায় ক্বঞ-বর্ণ বিস্তৃত শিলা অঙ্গবিস্তার করিয়া রহিয়াছে। খেত প্রস্তারের শিথর দেশে আবৃত অংশে মধু-মক্ষিকাগণ বৃহৎ চাক নিশ্বাণ করিয়াছে পুরাতন মধ্চিষ্টগুলি নীচে পতিত হইয়াছে। এই মোম হয়ের ভার ওল। মধুমক্ষিকাপণ বিজাতীয় শক্ষ ভনিশে বড় বিরক্ত হয় এই कांत्रण त्कृ छाशास्त्र हात्कृत नित्म कथावार्ड। কহে না। সন্নাসী বলেন রাত্রে সে স্থানে তিনি তাহাদিগকে কটী সংকার করিয়া থাকেন। বাস্তবিক্ট

अविकेतित्य " क्षेत्रकिरमानिक नेवित त्राम विकास नेवित अधिका बंदेन'। 'छाक बारमांव नीटा कुक्पूनिय खर्मा-पृथि। अवारम अक्षम कत वत्रो नद्यांनी ৰাকেৰ ভাষারও প্রভৃতি বহাত্তন তুল্য। আবি ইতারই আভিষ্য প্রতণ করিরাছিলাম। ত্রনের জল ৰ্বায় ব্যন পূৰ্ণ হয় তথন নৰ্মদা ইহাতে মিলিত হইরা বার। শীতকালে ইহাকে বেষ্টন করিরা নৰ্ম্মণা প্ৰবাহিত হয়। ইহার নিকট একটা অর উচ্চ পাহাভের উপর ৬৪ বোগিনীর মূর্ত্তি বিরাজ করিতেছে। এই মূর্ত্তিগুলি কালাপাহাড় জাতীয় কোন বিধ্নীর আবাত-

DICHE THE CITY PROPERTY व्यथिक नेक दृष्टि ए क्यांत्र व्यक्ति। व्यादनार्थं দর্শন অভিনাধ পরিত্যার করিলার ে ভলিনার উহা ভুসাওলের নিকট অব্দ্রিক। একটা কুও আছে। দেখানে বে বাণ্লিক পাওয়া যার ভোহা হুডৌল ও নানাপ্রকার বর্ণ বিশিষ্ট। মীরগঞ্জ ষ্টেসলে ছেখিলাম একপ্রকার মহৃপ পাধর স্পীকৃত বহিরাছে; শুনিলাম একজন ইংরাশ বাড়ী নির্শাণের জন্ম বিলাত পাঠাইতেছে।

প্রীক্ষানন্দ বন্দচারী।

পোষ্যপুত্ৰ। প্ৰের অহর্ডি

শান্তি ছারুমোনির্ম বাজাইতেছিল,— নীরদকুমার গৃহে প্রবেশ করার লক্ষিতভাবে वाक्रमा वक्क कतिन।

नौत्रमक्षात अनिज्ति गैं। शिशे विका ভাবে জিজাসা করিলেন "ভোমাদের বাড়ি বাওরার দিন স্থির হবেছে? কবে বেতে **इटर ?" भाखि पूथ ना जूनियारे উछत्र मिन** "বোধহর পরও" "বোগেনও যাবে ?" "ভা ঠিক বলভে পারি না, মণিদি ও অনিল বাবে।" মি: রার একটা চেরার সরাইরা বসি-লেন। "আমি কাল আগতে পারিনি বলে বুঝি রাগ ব্রেছে ? তুমিই ওধু রাগ করেছ मवाहे १ हामरण हर्द ना वन्छ - हर्द एक एक ষা স্কু যোগেৰ অনিল क्षेत्रं करत्रह । কুমি আছো স্কুর কুকুরটাও কি রাগ করেছে मा कि १ रमछारक छ। तबरू शांकि ना।" ें नावि गरमा बाग ज्निवा निन निन

করিয়া হাসিয়া ফেলিল "বাঃ কুকুর বুঝি রাগ করতে পারে ? ওদের বুঝি ততো বুদ্ধি আছে ? কুকুরটা রাগ করেনি"। মি: রায়ও হাসিরা ফেলিলেন "আর তুমিও রাগ করোনি—না ?" श्रिक्षा स्थ ऋोन শাস্তির ধে হাসিটুকু ষুটিতে ফুটিতে মিলাইরা গেল, তাহাই তাহার প্রশ্নের উত্তরে যথেষ্ট। মিঃ রায় ভাহার মধ্যকার একটুখানি অম্পষ্ট বিবাদের কীণছায়া লক্ষ্য করিলেন না, তাঁহার অন্পর मूथ न्उन এको छार्वत्र छेष्ट्रारम छेष्ट्रम रहेश क्रेडिन। धवन मधव वाहित्व धक्छ। ছुन्नान শব্দ ও একটা চীৎকার উঠিল "টেবি টেবি টি गर्भरक क्थकाम बरबन मरशा छार्यम তাহার হতে নুতন এরার গান্ এবং পশ্চাতে গুলার নীল-ফিডা ও প্রায়ে রপার বৃষ্য পরা শেতবোমাবৃত ক্ষকার কুরুর भावक ! द्विषि काश्त्रक मुक्त अकृत गरिक



ষশোদা • শীযুক্ত অসিতকুমার হালদাৰ অক্কিত মূল চিত্ৰ হইতে

बार प्रक्रिकार स्माचन टायुन ब्रांगांच नम किनिया नाहिबा गांकारेबा ज्यानकश्वनि कतिबा छेठिन। কুতক্সলীৰ এখনও জাঁহাকে ভূলে নাই। কুপ্রকাশ মিঃ রায়কে দেখিতে পাইয়াই গভীর অভিমানের সহিত ঈবৎ ৰূপ ফিরাইয়া লইয়া इंखइ खवाठे। शन्ठांश्मिटक नुकारेश्रा किना। কালোচোধে অভিমানের জল তাহার আসিরা পড়িরাছিল, সে আজ কোন মতেই তাঁছার সহিত কথা কহিবে না। মি: রায় তাহা বুঝিলেন। তাড়াতাড়ি উঠিয়া আদিয়া বালকের বন্দুক শুদ্ধ হাতটা গ্রেপ্তার করিয়া ফেলিলেন "বাঃ স্থন্দর বন্দুকটি ভো। স্থকু এখানে বেশ শিকার করা যেতো ভাই! কলকাতার তো সে স্থবিধা হবে না। আমরা তুজনে শিকার করতে কোনখানে যাবো বল-দেখি ?" এ कथा अनिया चकु ও শাস্তি ত্জনেই একসঙ্গে প্রশ্ন করিয়া উঠিল "সত্যি ! আপনি নাকি কলকাভার যাবেন ?" "হাবো বলেই ত কাল আসতে পারিনি। নানান ঝঞ্ট ঘাড়ে চাপান ;—সেগুলো সাফ চাই তো। স্থকু তুমি এটা সহজেই ছুঁড়তে পারবে। কাল স্কালেই আমি ভোমায় निथिय परवां, कि वरना ?"

স্থাকাশের অভিমান দ্র হইরা গেল,
সে আনন্দে বলিরা উঠিল "হাঁ। হাঁ।, কালই
আমার শেধাবেন। একটা পাথী কিন্তু আমার
মারতে দিতে হবে।" শান্তি তাহার সব কথা
গুলা বলা হইবার পূর্কেই তাড়াতাড়ি বাধা দিরা
উঠিল "নির্দোবী জীবকে অনর্থক মেরে
ভার কি স্থ হর স্কু? আহা ভোর কই
হর না? আগে ভো এমন নিষ্ঠুর ছিলিনে?"
"কেন হবে? নীরদ বাবুর কি হর?

উনিই তো বলেন শিকার না স্বর্গে হাডের কৌশল না স্বভাগে করলে এর পরে বলি ক্র্যুরো রাসিরানেরা স্বাসে তা হলে লড়াই করতে পারবো কেমন করে ? তথন কি লক্ষণ সেনের মতন থিড়কী ছোর দিয়ে পালাবো ? বাবাও জো তাই বলেন। তুমি কিন্তু স্বামার চেরে নীরদ বাবুকে বেশি ভালবালো দিদি! স্বামারি দোব ধর ! কিন্তু ওঁর বেলাভ কিছু বলোনা ?"

স্কুর দিদি কাওজ্ঞান হীন ভাইটার এই বেক্শে কথার লজ্জার যেন মরিয়া গেল। নীরদকুমার প্রীতিপূর্ণ নেত্রে চাহিয়া ঈবৎ সিগ্ধভাবে হাসিলেন। স্থকু বলিল "সন্তিয় ভূমি যাবে নীয়দ বাবু! বেশ হবে কিছ তা হলে; আমরা দেশে গেলেই তো দিদির বিয়ে হবে, সে সময় ভূমি থাক্বেণ্ কতো বাজনা বাজবে, আলো আর বাজি হবে। ভূমি এয়ন করে চেয়ে রইলে বে? ভূমি বুঝি শোননি দিদির যে এই মানেই লক্ষীপুরে বিয়ে হবে?"

মাহ্যকে সাপে কামড়াইলে সে বেমন আক্ষিক ভরে বিশ্বরে চমকিরা উঠে নীরদক্ষারের সেই অবস্থা হইল; তিনি হঠাৎ বিলিরা উঠিলেন "কোথার? কোথার? কোথার?" স্প্রকাশ তাঁহার কণ্ঠস্বরে অত্যন্ত বিশ্বিত হইল। সে কিছু না ব্রিতে পাঁরিরা একবার তাহার দিদির দিকে চাহিরা দেখিল। তাহার দিদি নতমুখে বসিরা হারমোনিত্র মর স্বপ্ত ভারার উপর অঙ্গুলী হারা মৃত্ মৃত্ আঘাত করিতেছিল। মি: রাবের দিকে কিরিরা ধীরে ধীরে উত্তর করিল "লক্ষাপ্রে"। মি: রার পরিত্যক্ত কেলারা থানার উপর বসিরা পাছরা কর্ম

খাসে জিজ্ঞাসা করিলেন "লক্ষীপুরে কাদের বাড়ি ? কার সঙ্গে ?"

বালক একটু ভাবিয়া বলিল "জোঠামশাই-দের বাজি হেম বাবুর সঙ্গে। জ্যোঠামশাইকে क्टिना ना ? जांत मख मानाना ज़ि तनहें भन्न अ জানেন না, তবুও তিনি আমাদের জ্যেঠামশাই আবার দিদির তিনি ছেলে হন। আমি তাঁর নামও বল্তে পারি, বলবো, তাঁর নাম এীযুক্ত वाव शामाकाछ कोधूबी, काटना नौतन वाव्। হেম বাবু তাঁর ছেলে নর,—বাবা মার কাছে वनिहरनन जांत्र ८ हरन विरनानं यनि किरत আসতো তাহলে আমি তার সঙ্গে বিয়ে निजूम ना, त्म अग्र गत विषय्त्र है जान हिल হলেও বাপের অবাধ্য। এ দত্তক ছেলে। वावा बरलन ७ विदनार्मत्र ८ हरत्र ना कि स्नम्त । বিলোদের কিন্তু খুব অক্সায় না নীরদ বাবু! त्म कि करत्र जात वावात व्यवाधा हरना! निनि তাকে ককণো বিয়ে করবে না, আমিও বাবার ष्यवाधा हरे न। पिषि वावात व्यवाधा हम ना।"

মি: রায়ের মৃথখানা মর্মাহতের মত নীল

হইয়া গিয়াছিল। অনেকক্ষণ পর্যান্ত তিনি
কোন কথাই বলিতে পারিলেন না; তাঁহার
রক্ত শৃত্ত বিবর্ণ ওঠ গভার হতাশায় ঈষৎ
কম্পিত হইল, তাহার মধ্য হইতে য়েন সকল
শক্তি চলিয়া গিয়াছিল একটিও ভাষা বাহির

হইল না। ক্ষপ্রকাশ তাহার অবস্থা লক্ষ্য
করিল না। সে এবার ভাহার দিদিকে লক্ষ্য
করিয়া-শরক্ষেপ করিল হাঁয়া দিদি, বাবা বলছিলেন তুমি হেমবাবুকে ভাগবালো। আমি
কিছ তা কক্ষণো বাসতে দেবো না।
ভা হলে তুমি যদি আমায় আর ভাল না
বালো? ভার চেয়ে বরং নীয়দ বাবুকে ভাল

বাসাও ভ'ল-ঐ বুঝি বাব আসছেন।" বলিয়া সে ছুটিয়া ঘর হইতে বাহির হইয়া টোবিও তাহার অনুসরণ করিতে ভূলিল না। এই অপ্রত্যাশিত নিষ্ঠুর আখাতে নীরদকুমারকে এক মুহূর্ত্ত যেন বজ্র স্তান্তিত করিয়া ফেলিল। কিন্তু মৃহুর্ত্ত মাত্র পবে দেই আকস্মিক বিহ্বৃগতার স্থানে একটা গভীর উত্তেজনা জাগিয়া উঠিয়া তাঁহার অদাড় মনোবৃত্তি দকল পুনশ্চ সচেতন করিয়া ভুলিল। অকস্মাৎ কেদারা ছাড়িয়া উঠিয়া জ্রুতপদে তিনি শাস্তির নিকটে গিয়া আর্ত্তকণ্ঠে বলিয়া ফেলিলেন "ওক্থা, আমি বিশ্বাস করতে পার্বোনা শাস্তি! ওকথা আমি বিশ্বাস করতে পার্বোনা! শোন শাস্তি! তুমি আমার অন্ধকার জীবনের ধ্রুবভারা। সেই কথাই আমি আজ তোমার বাবাকে বল্তে এসেছি। এমন সময় এমন আঘাত দিও না, বলো শাস্তি স্কুৰ কথা সত্য নয় ?"

একটা অফুট ধ্বনি করিয়া শাস্তি ছই হাতের
মধ্যে মুখ ঢাকিল। সে আগেই তাহার
বিবাহের কথা শুনিয়াছিল। "নারদকুমার
উন্নাদের মত তাহার একটা হাত মুথের উপর
হইতে সরাইয়া লইতে গেলেন। কিন্তু সহসা
ঈয়ং আত্মন্থ ভাবে সেই প্রসারিত কম্পিত
হস্ত ততোধিক কম্পিত আর এক খানা হস্ত
ম্পানা করিয়া নিজের উদ্বেলিত বক্ষে বদ্দ
করিয়া উত্তেজনাপূর্ণ কর্পে বলিতে লাগিলেন
"আমি তোমার পত্মীরূপে পাবার যোগ্য নই।
কিন্তু মান্থ্য সকল সমন্ধ যোগ্যাবোগ্য বিচার
করে আশা করে না শান্তি; শুধু তুমি বলো,
ভোমার কোন আপত্তি নেই তারপর আমি
তোমার বাবার কাছে গিরে আমার যা

বলবার আছে। সব বলবো। শুনে তিনি আমার ভাগ্য নির্ণয় করবেন।"

শান্তি তথাপি উভয় হত্তে মুখাবৃত করিয়া রহিল। তাহার বুকের রক্তটা যেন বরফ-পিতের মত জমাট বাধিতে আরম্ভ করিয়াছিল। সে কি বলিবে ? প্রথমকার প্রবন আঘাত জনিত অবহু বেশনা সহের **मोगाना**ग्र ফিরিলে ঈষং লজ্জিত হইয়া নীর্বকুমার একটু স্রিয়া দাঁড়াইলেন; শান্তি মুথ তুলিল না। একটা অব্যক্ত ব্যথায় তাহার ক্ষুদ্র দেহ থানি ফুলিয়া ফুলিয়া উঠিতে লাগিল। কেন তিনি তাহাকে এমন ভাবে ভাল বাদি-লেন! সেই কি তবে তাঁহার চিরহঃথের কারণ হইল ? দেও তো তাঁহাকে ভালবাসে কিছ জানিত না অভিধানে দে ভালবাদার कि व्यर्थ (लाय,—ভाলবাদাকে দে ভুধু দেই নামেই জানিত, কিন্তু দেদিন মাত্র দেই অজ্ঞাত মনোবৃত্তি অকুটবাক শিশুর প্রথম আধ আধ বুলির ন্থায় চারিদিকের ইঙ্গিতে যেন নবজীবন শাভ করিয়া কি একটা অপূর্বাশ্রত অম্পষ্ট গুঞ্জন আরম্ভ করিষাছিল। কিন্তু যে मूह्र एक दिवन व मूक्न रुधाम्यी नरह, ইহা কুমুদকলি, সেই মুহুর্ত্তেই সেই অাধ খোলা পাপড়িখানি মুদিত হইয়া আসিয়াছে। যতোটুকু ক্ষুদ্রই হোক কর্ত্তব্যপরায়ণ পিতার ক্সা কর্ত্তবোর বোঝা বহিতে কোন অবস্থাতেই অপারগ নহে। সে বোঝা যতই ভারি হোকৃ শান্তি তাহা বহিবেই।

বছক্ষণ একদৃষ্টে তাহার আনত মুথের দিকে চাহিয়া থাকিয়া আবার ধীরে ধারে তাহার কাছে একটু অগ্রসর হইয়া আদিয়া অত্যস্ত কোমল অত্যস্ত স্বেহপূর্ণ ধ্বরে নীরদ-

কুমার বলিলেন "শান্তি মুখ তোলো আমার কথার উত্তর দাও। তুমি কি আমার কথা বুঝতে পারছো না? আমি তোমায় চাই। মনে করোনা এ ক্ষণিক মোহ; আমার মনের ভাব আমি ভালরপেই জানি। যেদিন যোগে-নের বাগানে বনরেবার মতন ফুলরাশির মধ্যে শ্রেষ্ঠ ফুলের মতন তুমি গাঁড়িয়ে ছিলে, দেই মুহুর্ত্তেই আমার বিশ্বাদ পরিবর্ত্তিত र्रप्रद्ध । তারপর এই কয়মানে অনেক চেষ্টা করেছি কিন্তু যা কথনো কেউ পারেনি তুমি তাই করেছ! তুমি আমার পরাজিত করেছো। আমার গার্বত আয়াভিমানে পরিপূর্ণ হাদয় তোমার ওই হটি স্বচ্ছ কালো চোথের একটু খানি করণ দৃষ্টির মধ্যে একান্ত ভাবে আত্মদমর্পণ করেছে। আমার বর্ত্তমান আমার ভবিষ্যৎ সব আমি তোমার মধ্যে হারিয়ে ফেলেছি। আমার ভ্রম, আমার অহঙ্কার দ্ব চূর্ণ হয়ে গ্যান্তে। এখন আমি তোমার পবিত্রতায় সেদব মলিনতা দূরে ফেলে জটিল জীবনজাল সোঞ্চা পথে ফিরিয়ে নিতে ठारे. বলো শাস্তি তুমি এ ভিখারীর দান দয়া করে গ্রহণ করবে শু"

নীবদকুমার উৎকণ্ঠিত নেত্রে তাহার বেদনা চিহ্ন প্রকটিত মুখের দিকে চাহিয়া পুনশ্চ উচ্ছাসভরে বলিতে লাগিলেন "জ্বীব-নের কোন রহস্ত কোন পাপ আমি তোমার অজ্ঞাত রাবীতে চাইনা, সকল কথা স্পষ্ট করে বলতে অনেক বিলম্ব হবে, তবে এখন এই পর্যান্ত বলছি আমি নিশাপ নই। মানবের স্বভাব্রাত ভ্রম ও ত্র্কণতা আমাকে পুনংপুনঃ পথ ভ্রষ্ট করেছে। আমার জীবনের প্রথম প্রভাতে আর একদিন আমি এমনি শুভাবসর
পেরেছিলাম, কিন্তু শান্তি, অকপটে আমি
শীকার করছি, চেষ্টা করেও দেখানে আমি
ভালবাসা আনতে পারিনি, সে জন্ত আমার
দোব দিও না;—স্থাকে লোকে পুজা করতে
পারে ভর ও ভক্তি করতে পারে, কিন্তু
শ্বাবর্ষী চাঁদকেই ভালবাসে। একি শান্তি তুমি
কাঁদচো ?"—দারুণ সন্দেহে বিবর্ণ মুথে অবরুদ্ধ
প্রায় শ্বরে নীরদকুমার সহসা চমকিয়া বলিয়া
উঠিলেন "বঝেছি শান্তি! এ পৃথিবীতে
আমার আর কোন আশাই নাই। নৃতন
আশার যে আবার আকাশ কুসুমে মালা
গাঁথিতে ছিলাম, তাহা ছিল্ল হইয়া গিয়াছে।
আমার সব ফুরাইল।"

আহত নীরদকুমার মাতালের মতন
খলিত পদে নিজের পরিত্যক্ত আসনের
উপর বসিরা পড়িলেন। তাঁহার মনে হইতে
ছিল চারিদিকের কৌচ কেদার। সাঞ্জসরঞ্জাম
সমেত সমস্ত ঘরটা তাঁহারি চারিদিকে উন্মাদ
তাগুবে নাচিরা বেড়াইতেছে।

আর শান্তিও কি আঘাত পার নাই?

সে ভাবিল তাহার অপরাধের বৃঝি সীমা

হয় না! কি বিশ্বস্ত হলরে সে বজু নিক্ষেণ

করিতেছে। সে কি নির্ভূর! অথচ দেবতা

আনেন সে কত নিরুপার! সে ফে

অস্তের বাগলতা, সে যে উৎসর্গিত কুল!

সে তাঁহাকে ভক্তি শ্রমা বিশ্বাস সবি দিতে
পারে কিন্ত এতোটুকুও তো সমন্তনা দিতে
পারে না।" ঘড়িতে আটটা বাজিয়া গেল
ভিতরের কক্ষ হইতে স্প্রকাশের কঠ ভনিতে
পাওয়া গেল,—সে বলিতেছে "চলোনা বাবা,
ভিনি বসে ররেছেন। এসে তথন মাকে

চিটি পড়ে শুনিও। জ্যেঠামশাই কেন স্কাল বেলা চিঠি লিখতে পারেনি ?"

নীবদকুমার স্তব্জার মধ্য হইতে জাগিয়া উঠিলেন। চাহিয়া प्रिश्लिन. হারমোনিয়মের ভাশাটার উপর মাথা রাধিয়া নীরবে কাঁদিতেছে। আবেগপুর্ণ কণ্ঠে কহিলেন "তোমায় আঘাত দিয়াছি ভাল করি নাই শাস্তি৷ আমার বিশ্বাস হয়েছিল ভূমিও আমায় ভালবাদো তাই আমি এতোদুর সাহদ করেছিলেম। আমায় ক্ষমা করো।" শান্তি সহসা তাহার অশ্রু প্লাবিত করুণ দৃষ্টি তুলিয়া কাতর কঠে বলিল "কেন আপনি এমন কথা বলছেন। আমাদের উপর রাগ কর্কেন না! আপনি বিখাদ করুন আমরা চির্দিনই আপনার কথা মনে রাথবো। আমরা কি এতো অক্কুভজ্ঞ বলে আপনি মনে করেন ? আমরা তো সকলেই আপনাকে ভক্তি করি, সন্মান করি। মা আপনাকে কতো ভালবাদেন ৷ আর বরাবরই বাদবেন—"

"ভালবাদ" কথাটা তাহার মুথ হইতে কোনমতেই বাহির হইল না। ছি ছি দে কি নভেলের স্বেচ্ছাচারিণী নারিকা ? কেমন করিয়া দে বলিবে দেও তাঁহাকে ভালবাদে। নীরদকুমার করেক মুহূর্ত্ত চুপ করিয়া হহিলেন। তাঁহার পাণ্ডু মুথ হইতে অবশিপ্ত শোনিতবিন্দুটুকুও কে যেন শুষিয়া। লইল। কিন্তু তথনও বুঝি আশা ছাড়িতে পারিতেছিলেন না। বুঝি শেষ মুহর্তেও একটা প্রভ্যাশিত কথা শুনিবার অপ্রেক্ষা করিতে ছিলেন। তারপর ঈরৎ প্রকৃতিস্থ

ভালো, তাই ছালো, শান্তি! তুমি যা আমার ইচ্ছা করে দেবে তাই আমি মাথার তলে নেবো। ভক্তি! সন্মান! আমার পকে তাই যথেষ্ট !" তিনি শাস্তির কাছে আসিয়া দাঁড়াইলেন, মৃত্স্বরে বলিলেন "তবে বিদায় শান্তি, বোধ হয় জন্মের মত বিদায়। আণীর্বাদ করি উপযুক্ত পাজে পড়ে সুখী হয়ে। বাস্তবিক্ই আমি তোমায় পাবার উপযুক্ত नहे।" नौत्रमक्मात हिनत्रा (शत्नन। রজনীনাথের সহিত পাছে সাক্ষাৎ হইয়া যায় এই ভয়ে এক টু ক্রত পদেই চলিয়া গেলেন। শাস্তি একা সেইথানেই ভারাক্রান্ত বক্ষ লইয়া স্তব্ধ হইয়া বসিয়া রহিল। এ ঘটনাটা কি সত্য কিম্বা এতক্ষণ সে একখানা করুণ কাহিনীর একটা পৃষ্ঠা পড়িতেছিল, তাহাও যেন ভাল করিয়া অমুভব করিতে পারিতে ছিল না। কেবল তাহার মসীরেখাহীন অমল হৃদয়ে একটা কালির রেখা পড়িয়া গেল! হায় এ করুণ অভিনয়টা অনভিনীত থাকিলেই বা ক্ষতি ছিল কি ! এ অস্পষ্ট চিত্রথানাকে কেন তিনি অস্পষ্টই থাকিতে मिल्नन ना !

(86)

নীরদ কুমারের ন্তন জীবনের নবীন
আশা অকস্মাৎ প্রবল ঝঞা বাত্যার ছিল
ভিল্ল হইরা ধূলি লুঞ্জিত হইল। তিনি
সারাদিন তাঁহার অংশীদারদের বাড়ী বাড়ী
ঘুরিলা দিন কতোকের জন্ম যে অবসর চাহিলা
লইরাছিলেন, বাড়ী ফিরিবার পূর্কেই পথের
মধ্যেই স্থির হইলা গেল তাহার আর
আবস্তক নাই। তাঁহার দেশে ফিরিবার
প্রেলান কুরাইরাছে।

ঘরের মধ্যে জিনিষপত্র সব বিশৃত্বল,
একটা পোর্টমেণ্ট অর্দ্ধনজ্জিত এবং হুইটা
ছোট বড় চামড়ার বাগা সাজান পড়িয়া
আছে। নীরদকুমার বাড়ী ফিরিয়াই তাঁহার
শর্ম কক্ষে প্রবেশ করিলেন।

ভূত্য কাছে আদিতেই বিব্ৰক্ত চিৰে তাহাকে বিদায় করিয়া দিলেন। রানাঘরে পাচক তাঁহার আহার্য্য লইয়া প্রতীকা করিতেছে, আহ্বান না পাইয়া আনিতে সাহদ করিল না। তা ছাড়া দে জানিত অর্দ্ধেকরও অধিক দিন ইহার প্রয়োজন হয় না। নীরদ ছারক্ত্ব করিয়া একেবারে বিছানার উপরে শুইয়া পড়িলেন। কাপড় চোপড় গুলা পর্যান্ত ছাড়া হইল না। আজ এতোটুকু হস্ত পদ বা মনের শক্তি থরচ করা তাঁহার পক্ষে যেন অসম্ভব হইয়া পড়িয়াছে। পৃথিবার যভোকিছু আবশ্রক অনাবশ্রক খুঁটিনাটি আজ যেন তাঁহার নিকট মস্ত বড় বোঝার মতন ভারি ঠেকিতে ছিল। যেন জার কিছুরি প্রয়োজন ছিল না। এখন এই বিশ্ববন্ধাণ্ডটা রহিল কি গেল তাহাও খোঁজ করিবার আবশ্রক করে না। সব ফুরাইয়া গিয়াছে !

কি ফুরাইয়াছে ? কিবা ছিল, গেলই বা
কি ? এ কথা মনে অনেকবারই উঠিতে
ছিল। কি ছিল ? অনেক ছিল, অনন্ত
স্নেহ, অতুল সমান, অপ্রতিহত অধিকার
কি ছিল না ? সংসারে লোকে মাহা পাইলে
ধন্য মনে করে, যাহা কিছু কামনার
তা সবি ছিল। কিন্ত সে সব তো অনেক
দিনই গিয়াছে। তবে আবার আজ
এতোদিন পরে ইহা নৃতন করিয়া অমুভব কয়া

(कन १ 'नव कृतारेन । कृतारेवारक ।' হাঁ ফুরাইয়াছে সভ্য কিন্তু সে কাহার জন্য ? काशत लात्य कृताहैन ? निष्कत्रहे लात्य नत्ह কি ? কে শ্বেচ্ছায় কেদে পড়িয়া বুথা অহতারে অন্ধ হইয়া অভিমানে জ্ঞানশৃত হইয়া স্থের সংগার সাধের কানন ছাড়িয়া অকুতজ্ঞের মতন চলিয়া আসিয়াছিল? জনকের আত্মবিশ্বত ঢালা ভালবাসা, তাহা কি সেই তুচ্ছ কারণে পরিত্যাগ করিবার ? নিষ্ঠুর হৃদয়হীন একবার পশ্চাতে চাহিয়া দেখিলনা, নিজের (भद्रात्न निष्कत मर्ल व्यनाग्रात्म तम त्यरनौष् ছাড়িয়া আদিল! না হয় অন্তায় করিয়াই ফেলিয়াছিল.—কিন্তু ভারও ত পথ ছিল। ভুলতো বুঝিয়াছে কিন্তু তাহার সংশোধন করিল কই 🌱 কেন আবার কাঁদিয়া গিয়া তাঁহার বুকে পড়িল না ? সে বুক তো তাহারি জন্ত পাতা ছিল।

আর তাহাকে বিপদে আশ্র দিয়া অক্লান্ত ভশ্রবার প্রাণপণে যে বাঁচাইয়া তুলিয়াছে তাহাকেই বা সে কি প্রতিদান দিল ? এতদিন নীরদ ভাবিয়াছে "সে যে দয়া করিয়া শিবানাকে গ্রহণ করিয়াছিল, ভালবাসিতে ইচ্ছাও করিয়াছিল সে পুরস্কার সিদ্ধের্মার মেয়ের পক্ষে যথেই। তারপর স্বেচ্ছায় সে যথন সে অধিকার তাাগ করিল তথন নীরদ করিবে ? তাহার ইহাতে অপরাধ কি ?" কিন্তু ঠিক কি তাই ? কই সে কথা ভো আজ সে ভাবিতে পারিল না! কেন মনে হইতে লাগিল 'সে পাপের প্রায়শ্চিত্ত এই। সে ভাহার প্রতিশ্রুতি মন্ত্র, আরি দেবতা, এবং দেব মানব সাক্ষীগণের প্রতি তাচ্ছিক্রা করিয়া

তাহার অপমান করিয়াছে, আজ শান্তি ভাহার শোধ দিল। কেন দিবে না? चेषातत नित्राभक छात्र विठाएत यथार्थ ह তো সে এই অপমানদণ্ড ভোগ করিবার যোগা। কে বলে কর্মফল নাই ? তবে বেশ করিয়াছ^{*} শাস্তি ভালই করিয়াছ।' নীরদকুমার 'বিছানার উঠিয়া বদিলেন। পড়িয়া পড়িয়া ভাবিছে ভাবিতে নিজের জন্ম সাফাই খু নিতেছিলেন। একটা কিছু পরাজিত প্রায় উকিল হাল ছাড়িয়া দিবার পূর্ব মুহুর্ত্তে সহসা বিপক্ষ পক্ষের এতোটুকু একটুখানি ছল পাইয়া নুতন উৎসাহে সেইটুকু लहेश्राहे व्याचात्र ठालिश्रा धटत, नीतनकुमात्र छ তেমনি হতাশার শেষ প্রান্তে দাঁডাইয়া নিজেকে সাফাই করিবার একটা পথ পাইয়া ঈষং আশ্বন্তচিত্তে উঠিয়া বদিলেন "শিবানীর প্রতি আমার ব্যবহার খুব বেশি অভায় নয়। কেন সেতো স্পষ্টই স্বীকার করিয়াছে म आमारक घुना करता छरव १ रय छी স্বামীকে বিশ্বাস করে না যে বিনা প্রমাণে পরের কথায় নির্ভর করিয়া তাহাকে ঘুণা করে, তাঞ্জিলা করে, স্বামীই বা কেন তাহাকে পরিভাগে করিতে পারিবে না? অবশ্র পারিবে। এতোই কিনের অবিধান ? আমি মাতাল ? আমি হুলরেতা! কিছু কি অমাণ পাইয়াছিল ? আমি উপার্জনে অক্ষম তা সত্য, কিন্তু যখন তাহার মা আমার সহিত বিবাহ দেয় তখন তো অসহায় পথিক ভিন আমি নিজেকে জন্ত, ম্যাজিট্রেট রালপুত্র বলিয়া জাহির করি নাই, আবং আমি ইচ্ছা করিয়াও তাহাকে বিবাহ করি नाहे। दत्रः भै दिवार आमात्र स्थिष्टे अभगन

জনকই হইয়াছিল। সে ক্ষতি সন্তেও তাহার
কল অনর্থক তাহাদের বাড়ীতে আমার অকথা
লাজনা সহিতে হইরাছে। তাহাও সহিয়াছিলাম, শেষে যাহার জল্ল সহিলাম, সেও
আমার স্থা। করিল, তাচ্ছিলা করিল।
স্বামীকে অপমান করা স্ত্রীর ধর্ম নহে!
আমি সেধানে বেশি অপরাধী নই।

অপ্রাধীর পক্ষে অপ্রাধী নই-একথা ভাবিতে পাওয়া কম আরামের নয়। বুকের ভারটা যেন এ চিস্তায় অনেকথানি কমিয়া যায়। কঠের কাছ পর্যান্ত যে নিশ্বাস্টা রুদ্ধ ইইয়া কণ্ঠনালিকে চাপিয়া রাখিয়াছে, তাহা যেন কতোকটা হালা হইয়া বাহির হইয়াপডে। वरमत थात्नक इहेल, क्लाहित्न यथन कलाता বোগে দে মরণাপর হইয়াছিল, সেই সময়ে একজন वृक्ष প্রতিবেশী ঘারা পত্ত লিখাইয়া হাজার টাকা রেজিট্রী করাইয়া বুন্দাবনে পাঠায়, তথন সেটা সে স্নেহ বা ভালবাসার জন্ম করে নাই। সেটা যেন ভাহার ঋণ পরিশোধ। তারপর মৃত্যু আসিয়া মাথার শিয়রে দাঁড়াইয়া দাঁড়াইয়া, কে জানে কি ভাবিয়া ফিরিয়া গেল। বেমন আদিয়াছিল, তেমনি রিক্তহন্তেই ফিরিল, বরং একটুথানি শিক্ষা দিয়া গেল। এইটুকু বুঝাইয়া গেল যে আত্মীয়ের একটু গঞ্জনা সহিতে অভাত্ত হইলে নিদারণ তৃষ্ণার শীতল কল ও প্রবল যন্ত্রণায় অকাস্ত শুশ্রাষা অত্যন্ত সহজেই পাওয়া যায়। রোগমূকির পরই দ্বিত'রপত্র শিখিবার একটা আগ্রহ জন্মিল। কৈন্তু পরক্ষণেই সে আগ্রন্থ নিভিয়া গেল। আবার দেই দারিদ্রা লইয়া ভাহার নিকট পরিচিত হইতে ইচ্ছা হইল না।

বরং ভাহাদের সম্পর্ক মিটিরা গিরাছে এক রকম ভাল। যদি কথনো অবস্থা ভাল হয় তথন তাহাকে পত্র লিখিবেইণাই সঙ্কল্প করিয়া রহিল। কিন্তু থখন তাহার অবস্থা ফিরিল—তথন দৈবগতিকে ভাহার ইচ্ছাও ফিরিয়াগেল। শাস্তি আসিয়া শিবানীর আকাজ্যিত দিংলাসনথানা দখল করিয়া লইল। সেখানা শিবানীর জন্ম পাতা ইইয়াছিল এই মাত্র, কিন্তু ভাহাকে তো বসিতে দেওয়া হয় নাই, ভাই খালিই পড়িয়াছিল! আর যেটুকু সে দখল করিয়া লইয়াছিল, এভোদিনে বুঝি ভাহাও ভামাদি হইয়া গিয়াছে।

তারপর বিধাতা স্থবর্ণ-মুযোগ মিলাইয়া **पिरान । नौत्रमक्**मात ভाবिल छाहात अपृष्टी-কাশ হইতে অগ্নিমুণী ধুমকে তৃটা বৃঝি এতো দিনে নামিয়া গেল। অকমাৎ এই ভারতের এক প্রান্তে মাতুরার শাস্তির সহিত অপ্রত্যাশিত সাক্ষাতে তাহার সমুদর মন:প্রাণ যেন দেই মুহুর্ত্তে পূর্ণচক্তের উদয়ে ভোয়ারের উথলিয়া উঠিল। জলের মত ভাবিল এর চেয়ে উত্তম ঘটনা নানব कौवन ইতিহাদে **अ**न्नरे घरिवा**ছ। শাস্তিকে** यि तम भाग जाहा इटेल जनामात्महे আবার সে নিজের পরিত্যক্ত অধিকারে ফিরিয়া যাইতে পারিবে এবং নিজের অপ-वार्षत कानिमा श्रुणमश्री वानिकात मरशं মুছিয়া ফেলিয়া আবার তেমনি ক্ষেহের দাবীতে পিতার নিকট গিয়া দাঁডাইতে ারিকে তবে শান্তিকে পাইবার পক্ষে তাহার একমাত্র বাধা শিবানী; তা সে এমনিই কি প্রবল বাধা? কোপায় এক দরিদ্র অনাথার অশিকিতা কস্তা শিবানী দেকি শান্তির প্রতিৰ্নী হইয়া

দাড়াইবার উপযুক্ত! থাক না পড়িয়া। তারপর ষথন বিবাহের পর একদিন অত্যন্ত সাবধানে শান্তির কোমল হাতথানি হাতে ধরিয়া তাহার কালোচোথের দৃষ্টির সহিত দৃষ্টি মিলাইয়া পুন:পুন: ক্ষমা চাহিয়া সব কথা তাহাকে বলিবে তথন সে করুণা-ময়ী কথনোই তাহাকে ক্ষমা না করিয়া থাকিতে পারিবে না। সে যদি ক্ষমা করে তবে আর কে করিবে না ? ছইবার বিবাহে আর কাহার ক্তি ? রজনী নাথ ? ক্সা क्रमा कतिरल वांश कि कतिरवन ना ? नीवन-কুমার নিতাম্ভ অলীক বিশ্বাস স্থাপন করে নাই। সে ঠিকই বুঝিয়াছিল, একবার म यि नानमाष्ट्र ७ मानात्र मिं थिरमोष्ट পরা কল্যাণময়ী শান্তিকে নববধুবেশে তাহার রেশনী চাদরের গ্রন্থি বন্ধনে পাশে লইয়া দাঁড়াইতে পারে, তাহা হইলে ক্ষমা দেই মুহুর্ত্তে ত্ইবাহ প্রসারণ করিয়া তাহার জন্ত এগাইয়া আসিবে। তাহার কল্যাণবর্ষী রিগ্ধ হাসি টুকুতে তাহাদের কঠিন কৈফিয়ৎ মিটাইয়া দিয়া দীর্ঘ তাপদাহ মৃহত্তে জুড়াইয়া দিবে। সে বুঝিয়াছিল শাস্তির উপরেই তাহার সমুদর স্থুখান্তি নির্ভর করিভেছে। তাহার পাইতেই হইবে; সেই সঙ্গে রজনী নাথকে দিতীয় পিতাম্বরূপে পাওয়াও তাহার নিকট অল প্রার্থনীয় নয়।

কিন্ত এক মুখর্তেই সকল আশা ভরসা নির্ম্মূল ইইরা পেল; তাই ঘরে ক্লিরিয়া নীরদ-কুমার ভাবিলেন সব শেষ! গুধু শাস্তি নর শাস্তির সক্ষে সক্ষে তাহার অ্থশাস্তি সবি গেল! এখন তাঁহার কর্ত্তব্য কি ? এখন কি আরে তিনি রজনীনাধকে বিলিতে

পারেন, আমি শান্তিকে চাহি! তার পর यनि तकनीनाथ शूर्स कत्रवर्गदात्र देखिश्त শুনিতে চাহেন ? নীরদকুমারতো মিখ্যা-বাদী নন তাহা হইলে সকল কথাই প্ৰকাশ कत्रिया विलाख इटेरव। সে সকল কথা শুনিবার সময় রজনীনাথের ওর্চপ্রাস্ত তীত্র উপহাদের হানয়ভেনী তীক্ষ অথচ অস্পষ্ট হাস্তের আভাষে কিপ্রকার গভীর ঘুণা-কুঞ্চিত হইয়া উঠিবে তাহা কল্পনানেত্রে দর্শন করিয়া সে যেন লজ্জা ও ক্লোভে মরিয়া গেল। বহুমতীর প্রবল স্নেহ কেমন করিয়া গভীর ঘুণায় পরিবর্ত্তিত হইয়া দাঁড়াইবে, শাস্তি তাহাকে কি মনে করিবে এই সকল মনে করিয়া তাহার সমস্ত আশাভরুসা চুর্ণবিচুর্ণ হইয়া গেল। আর নীরদ তথন মধ্যে মর্মে বুঝিল আত্মপ্রকাশে সে শান্তিকে পাইবে না—অত্ম প্রকাশে কেবল এখন শান্তিরই ञ्चथ भाष्टि नष्टे श्रेटव । श्रेक रश्साख्यत मर्जिश শান্তির বিবাহ হউক,—হেমেক্সই তাহার বিষ-য়ের অধিকারী হউক—ইহাই তাহার বিবাহ যৌতুক। বেদনায় বুক ফাটিয়া পড়িতে চাহিল ৷ এর চেয়ে ভাহার পাপের সহজ শান্তি আর কি হইতে পারে 📍 সে দেখিল কর্মফল উদাম কর্মস্রোতে সে ভাগিয়া অকাট্য ! চলিয়াছে, ভাগিতেই হইবে। কুলে উঠিবার চেষ্টা এখন বৃথা!

নীরদ ভোরের বেলা ভ্তাকে গাড়ি তৈরার করিতে বলিয়া কাগজপত্র লোহ সিন্দুকে আবদ্ধ করিল। তার পর ভ্রমণের পোষাকে বাহির হইয়া গেল। ভ্তাকে বলিয়া গেল "বলি ব্রুহ আমার অস্থপদ্ধান করে তো বলিস আমি বিশেষ প্রারোজনে রামনাদে চলিলাম; দিন

পনেরো দেখানে আমার বিলম্ব হইবে, হয় তো বেশিদিনও হইতে পারে।" ভৃত্য বিশ্বিত হইরা বলিল "তবে জ্বিনিষপত্র ?"— মিঃ রায় অধৈর্ব্য ভাবে মাথা নাড়িলেন,

"কিছু না, কিছুনা কিছুই প্ররোজন নাই।"
মনের বিষম উত্তেজনা আবেগে আবার
একবার কাণ্ডজ্ঞান শূন্য হইয়। অকুলে
জীবনতরী ভাসাইয়া দিলেন।

কোচিন-চীন।

(ফরাসী হইতে)

আনামের এই মাঠ-ময়দান অতীব রমণীয়। প্রথমে ধানের ক্ষেত; তাহার পর, নিবিড় অরণা; কত কদলী রুক্ষ, উহার চওড়া পাতাগুলা ঘোর সব্জ্ঞ; কত বাঁশবন, উহার সক্ষ সক্ষ পাতাগুলা উজ্জ্বল-হরিৎ; কত স্থপারি-গাছ, তাহার দীর্ঘ কাপ্তের শীর্বদেশ হইতে পাথীর পালকের মত পত্র সকল ঝুলিয়া পড়িয়াছে; দুরে, উচ্চ-উচ্চ গিরিসমূহ লঘু বাজ্পে আচ্ছেল হইয়া যেন মনোরাজ্যে পরিণত হইয়াছে।

মধ্যে মধ্যে, যাত্রা-পথে, চাষারা আমাদের
সক্ষ্প আসিয়া পড়িতেছে; উহারা আমাদের
দেখিয়া, ভদ্রভাবে মাথা হইতে টোপা খুলিতেছে; এই বৃহৎ থড়ের টোপাগুল মগুলাকার কিংবা কোণালু...পথের দক্ষিণভাগে
একটা উফ জলের উৎস দেখা গেল; তাহা
হইতে ধুমরাশি উভিত হইতে ছে। এই
উৎস নব-জীলপ্তের উত্তর-প্রদেশমনে করাইয়া
দেয়। এই সকল জলাশ্রের ফুটস্ত জলে

Maoriগণ উহাদের আলু সিদ্ধ করিয়া লয়।...
প্রায় মধ্যাক্ সমরে, আমরা একটা ভক্ক-

প্রত্যুষেই পাকী করিয়া Tam-ky হইতে প্রস্থান করিলাম। এই পান্ধী একপ্রকার (hamac) त्वाना-विरमय, नीरब्रह त्यानारना, हानता थड़ निम्रा हा खा। জन यूर्वाभीयरक वहन कविरंड 8 जन विदः একজন দেশীয়কে বহন করিতে ২ জন লোক লাগে। আমাদের সঙ্গে একজন অ্যানাম্বাসী ভূতা, অনেক বোজ্কা বুজ্কি,—কাজেই ২০ জন লোক লইতে হইল। (গ্রামাধাক্ষ) Huyen-এর একজন দেপাই আমাদের আগে আগে চলিয়াছে; এবং একটা ঢাক বাজাইয়া লোক সংগ্রহ করিতেছে। একটা গাছের শুঁড়ি কুড়িয়া এই ঢাক নির্মিত। চামার তাহাদের গৃহ কিংবা ক্ষেত ত্যাগ করিয়া, আমাদের পাকী ও বোজ্কা-বুজ্কি নিক্টস্থ প্রাম পর্য্যন্ত বৃহিন্ধা লইন্ধা বাইতেছে।

পাকীর মধ্যে স্টান শুইয়া পড়িয়া নিজা
বাইতেছি; মধ্যে মধ্যে, বাহকদিগের ঈয়ৎ
পদঅলন হইলেই জাগিয়া উঠিতেছি। স্থোাদয়
হইলে, হাঁটিয়া চলিতে আমাদের ভাল লাগে।
পাঝীর মধ্যে হইতে দৃষ্ঠগুলা কেমন অস্বাভাবিক ও বিকৃতভাবে দেখা যায়।—বাভাস

সমাজ্য কুদ্র পর্বতে আদিয়া পৌছিলাম; बहेशात वांग, कमनी, वांजाबी-तिवृ, बहे সকল গাছ রহিয়াছে; বিশেষতঃ বড় বড় পর্ণতক (Fern) স্থনমা, স্বভঙ্গিম,—যেন তাহার ছায়াতলে পথিককে সাদরে আহ্বান করিতেছে।—মনে হয় যেন, স্থপরিচিত যুরোপের দৃশ্য সমূহ হইতে বহুদূরে আদিয়া পড়িয়াছি-অবারিত প্রকৃতি-রাজ্যের কোন একটা অজ্ঞাত প্রদেশে আসিয়া পড়িয়াছি; এই রমণীর মোহের আবেশে এইরূপ মনে হয়, পৃথিবীর এমন একটা ভূভাগ আমরা আবিফার করিয়াছি যাহা এখনও পর্যান্ত কাহার নয়ন षाकर्षण करत्र नाहे; কোন মানব-নেত্র এখনও পর্যান্ত এই তরু-আফুতি পর্ণগুলোর অহুপম দৌন্দর্য্য উপলব্ধি করিতে পারে নাই —তাহার বৃস্তের দেই মনোরম বক্রতা, তাহার প্রাবলীর সেই হন্ধ বিচিত্র কারুকার্য্য এখন ও কাহারও নয়নগোচর হয় নাই...

পর্কতের শিথর-দেশে উঠিলে, হঠাৎ ছবিটা বদলাইয়া ষার ;—একটা প্রশস্ত উপ-ত্যকা নেত্র-সমক্ষে আবিভূতি হয়। এইথানে য়ুরোপীয়দিগের কলকারপানার অনেকগুলি ইমারৎ আছে। ইহাই Bang Miu স্বর্ণথনির কর্মস্থান।

আমরা থনির পরিচালক মহাশরের নিকট,
একদিন ও একরাত্তির জন্ত, আতিথ্য যাজ্ঞা
করিতে যাইতেছি। এই দুরদেশে যে সকল
যুরোপীর বসতি করে, কোন পরিচর-পত্র
না লইরাই ভ্রমণকারীরা তাহাদের সহিত
সাক্ষাৎ করিতে যার—ইহাই এথানকার
প্রচলিত প্রথা। এই সব বিজন স্থানে
যে সকল যুরোপীরের সহিত সাক্ষাৎ হর,

তাহাদিগের মধ্যে সামাজিক জীবন-স্থান্ত কোন বৈরিতা নাই; কোন বিছেৰপূৰ্ণ প্রতিবোগিতা নাই। তাহাদের পরস্পরের মধ্যে স্বাভাবিক ভ্রাতৃসম্বন্ধ, মাহুষের প্রতি মাহুষের সমবেদনা, পরস্পারের প্রতি আফুকুল্য — এই সমস্ত সহজেই প্রতিষ্ঠিত হয়। খনির পরিচালক M: V....একজন সুইস্; ইনি "বিদেশী দৈভাদৰে" ভুক্ত হইয়া ইতিপুৰ্বে Tonkin-এ আদিয়াছিলেন। ইনি যার পর-নাই আমাদের আতিথাসৎকার করিলেন। তা-ছাড়া, যখন আমরা জানিতে পারিলাম, কয়েক মাস পুর্বের আমাদের পরস্পরের মধ্যে দেখা দাক্ষাৎ হইয়াছিল, তথন আমরা উভয়ই বিশ্বিত হইলাম। M. V. ক্যামোজিয়ায় ভ্রমণ করিতে গিয়াছিলেন, আমি Angkor-এর ধ্বংসাবশেষ দেখিয়া ফিরিয়া আসিতেছিলাম; **এकটা ফরাসী জাহাজে আমাদের দেখাসা**কাৎ হয়। এখানকার জনসমাজ অতীব ক্ষুদ্র।

খনি-পরিচালকের বাড়ীটি একটি স্থরমা স্থানে ছবির মত সমুখিত হইয়াছে। গত কলা M. V. যথন তাঁহার জান্লার ধারে দাঁড়াইয়া একটা জোলাপের ঔষধ খাইতেছিলেন,—হঠাৎ দেখিলেন, কতকগুলা রক্ষণত্র ইতস্তত বিকীর্ণ হইতেছে,—আর অমনি একটা রহৎ ক্ষণার তাঁহার দৃষ্টিপথে পতিত হইল। ক্ষণার তাঁহাকে শাস্তভাবে দেখিতে লাগিল। তিনি তাঁহার সেই ঘরটি হইতেই লক্ষ্য সন্ধান করিয়া, বন্দুকের এক গুলিতেই হরিণটাকে ধরালায়ী করিলেন। আজিকার প্রাতরাশে আমরা এই হরিণের স্থাছে মাংস

অপরাত্নে, পরিচালক মহাশরের সহিত,

আমরা কারধানা দেখিতে গেলাম। খনিজ ধাতুর মধ্যে যে দোনা ও রূপা থাকে তাহা এই কারথানায় বাহির করা হয়। প্রথমে খনিজ ধাতুকে শুঁড়া করা হয়, তাহার পর তাহাকে ধৌত করা হয়। এই ধৌত ধাতুর একাংশ একেবারেই ফ্রান্সে পাঠান হয়— কেননা ফ্রান্দে, উন্নত পদ্ধতি অহুসারে, ধাতু হইতে বেশী সোণা বাহির করা যায়, এখানে ভাহা পারা যায় না। অপরাংশ এখানেই মিশ্র দন্তা-পাতের সংস্পর্শে আনা হয়; এবং এইরূপে সেই ধাতু হইতে সোনা ও রূপা বিচ্ছিন্ন করা হয়। প্রতিদিন ১৫ মন ধাতৃ এই কাজে নিয়োজিত হয়। প্রতি ৩ মন অশোধিত ধাতুতে গড়ে ৫২৫ গ্রেন সোনা থাকে। প্রতি ৩• মণ স্বর্ণমিশ্র ধাতৃতে ১২৭৫ গ্রেন সোনা, ৩০০০ গ্রেন রূপা, ও ১৫০০ প্রেন সিসা থাকে। সোণা বাদে, শুধু বে রূপা থনি হইতে বাহির হয় তাহাতেই খনির সমস্ত থর্চা উঠিয়া যায়।

কারখানার কাজে অ্যানামবাসী মজুরগণ
নিয়োজিত হয়। M. V. বলেন, উহাদের
ভারা কাজের বেশ স্থবিধা হয়। তাহারা
প্রতিদিন ছয় আনা হইতে আট আনা মজুরী
পায়। যাহারা খনির শিল্পে বিশেষজ্ঞ
তাহারা > টাকা করিয়া পায়।
> টাকা কোচিন-চীনে উচ্চ বেতনের
হার।

থনি-পরিচালকের সহিত হইন্ধন যুরোপীর বাস করেন:—একজন সমাজের গণ্যমান্ত লোক, আর একজন তরুণবয়য় এঞ্জিনিয়ার—ইহাঁরা প্যারিদ হইতে আদিয়াছেন। আজ আমর! থনি-পরিচালকের সহিত সায়াহ্রভাজন করিব। পরিচালক মহাশয় তাঁহার প্ররোগ-আগার লইয়া ও তাঁহার দেশীয় উপপত্নীকে লইয়া বেশ স্থাথে আছেন। তিনি স্থায়ু বলিলেন "প্যারিদ অপেক্ষা Bong Miu আমার ভাল লাগে।"

শ্রীজ্যোতিরিজনাথ ঠাকুর।

শাশানে সিরাজ।

বিটপি-বেষ্টিত ওই নির্জ্জন গহনে
একেলা রয়েছ দেব অনস্ত ধেয়ানে;
নাহিক হোথায় তব রাজসিংহাসন,
বিষাদে হোথায় কেহ কাঁদেনা এখন!—
উঠিছে করুণ গীতি বিহগ ক্জনে,
প্রাক্ত পুজিছে পদ পতিত প্রস্নে।
বন্দাতির অভ্যাচারে কর্জারিত প্রাণে

ছেড়ে গেছ জন্মভূমি তরুণ জীবনে;—
অস্তিম দিনের সেই সজল নয়ন
আজিও তুলিছে মনে প্রশন্ন ভীষণ।
জননী তোমার খেদে মলিন বমন,
সহস্রাংশু-অংশুহারা স্থা শ ষেমন।
শ্বরি দেব, তব কথা, বাথা বাজে প্রাণে,
মুগ-চিতা ভশ্মীভূত তোমারি শ্মশানে।
আবহুলগণি (ছাত্রা)।

আমাদের দেশের আহার ও শিক্ষা সম্বন্ধে ত্বএকটি কথা।

আমাদের দেশের ছেলে মেয়েদের পক্ষে
কিরূপ আহার প্রশস্ত—এবং কিরূপ শিক্ষা
উপযোগী শ্রীযুক্ত রবীক্তনাথ ঠাকুরের সহিত
সে সম্বন্ধে আমার যে পত্র ব্যবহার চলে নিমে
ভাহাই প্রবদ্ধাকারে প্রকাশিত হইল।

আজকালকার দিনে দৈনিক কার্য্যের যেরূপ প্রথা হইয়াছে তাহাতে সকলেরই অল্ল অল্ল করিয়া অনেক বার আহার করা উচিত। খান্তে শরীরের অনেক শক্তি ক্ষয় হইয়া তবে সে খান্ত কার্য্যে পরিণত হয়-এরূপ আহার আমাদের এথনকার শক্তিহীন অবস্থার পক্ষে অমুপযোগী। জীবজগতে থাতের অভিব্যক্তি **८मिथरण** तुया यात्र माञ्च क्रमणः পরিমাণে षद्म किन्द्र সারবান জব্য থাইবার দিকে খত:প্রবৃত্ত হইতেছে। গরু মহিষ দাস পাতা খার, বানর জাতির খোরাক ফল ও বাঁচি। অল্লের মধ্যে শেষোক্তগুলি অধিকতর সারাল। হিংশ্রম্পন্তও শরীরের আয়তনের তুলনায় অতি অর পরিমাণ কিন্তু সারাল দ্রব্য থায়। তাহাদের দেহের সহিত তুলনায় হাত পা গুলি অপেকা-কত বড়, কর্ম্মঠ ও পাকষল্পের আয়তন অনেক কম। গরু ভেড়ার ঠিক বিপরীত। পাশ্চাত্য জাতিকেও সাধারণতঃ স্বল্ল কিন্ত সারাল ক্রব্যভোজী দেখা যায়। ভারতবর্ষের चारतक इत्या विरामयणः वक्रावारमञ्जूषे हेराव বিপরীত পরিমাণে ব্যবস্থা। অধিক এবং অসার দ্রবা ধাইয়া আমাদের শরীর মন এত হৰ্বল হইয়া পড়িয়াছে,—যে মাংসপেশীতে (यन चार्म) वन नाहै। इनव मार्गरभनीत

সাহায্যে রক্ত ছুটায়, কুসকুস্ও মাংসপেশীর সাহায়ে নিখাস প্রশাস লয়, পাকষন্ত্র
মাংসপেশীর শক্তিতেই থাত হজম করে।
এইরূপে জাবন ধারণের সকল মূল য়ন্ত্রগুলাই মাংসপেশী দারা পরিচালিত। প্রথম
বয়সে সারাল থাত্তের অভাবে চির্দিনের
কন্ত এইগুলি হীন হইয়া পড়ে। প্রধানত ছেলে
বয়সের অষত্রই আমাদের দেশের লোকের
অস্বান্থা ও হ্র্কলিতার কারণ।

পড়িবার বয়সে খাভ সহক্ষে আমানি এই কয়টি নিয়ম ভাল মনে করি—

১। দিনে অস্তত চারিবার আহার,—
প্রাত্তে ও বৈকালে লঘু, চুপুরে ও সন্ধ্যার
অপেক্ষাকৃত শুকু। সন্ধ্যাভোজনের পর
বিশ্রাম হয় বলিয়া এই সময়কার থাতুই
সর্বাপেক্ষা সহজে হজম হয়। দিবসের ভাড়াভাড়ি আহার ও তৎপরেই দিনে কার্য্যারম্ভ
করিতে হয় বলিয়া সে সময়কার থাবারটি
শুক্তর হওয়া ঠিক নয়।

২। পাঁউকটা, ডিম, মুড়, নারিকেল বাদাম, পেস্তা, ডাল, ছানা ক্ষীর ইত্যাদি সামগ্রীর নানা প্রকার স্থাছ স্থপচ্য ও সন্তা থাক্ত সহজে প্রস্তুত করা যায়। সেগুলি তৈরি করিয়া রাধিলেও ত্এক দিন থাকে।

আহার্য্য সামগ্রীর চারিটি গুণ দেখিতে হয়—সারাল, স্থপচ্য, স্থভার গু সন্তা। পূর্বোক্ত উপাদান গুলিতে এ সব গুলি গুণই আছে।

আমরাভাত তরকারী ঝোল ভাল লুন

জল ইত্যাদি বত জিনিষ দৈনিক আহার
ক্রিয়া থাকি তাহা বোল আনা ধরিলে
বোধ হয় পরিমাণে তাহার ছয় আনাতেই
আমাদের যথেষ্ট হয়। কেবল জিনিসগুলি
আরও সারাল হওয়া আবশ্যক। অধিক
শাইয়া বল হওয়া দ্রে থাকুক অশেষ
অপকার হয়। অভ্যন্ত • আছি বলিয়া
আমরা তা ভাবি না দেখিনা।

৩। আমার মতে দৈনিক আহারের নিমুক্ত ব্যবস্থাই ভাল।

প্রাতঃকাল আ—পাঁউকটী, মাথন ও ডিম্;
কিয়া ছানা বিষ্ণুট মাথন অথবা মোহনভোগ
গলা লুচী তরকারা বা ভালা ইত্যাদিরপ
কিছু লঘু আহার কর্তব্য। হুধ প্রচ্যাধ্য তবে
খাইতে পারিলে ভাল কিন্তু খারাপ হইলে
হানিকর।

১০টা—মাংস বা মাছ ভাত বা রুটী।
কিষা থিচুড়ি পোলাও বা ঘি ভাত। ইহার
মধ্যে যাহাই থাও অল্পরিমাণে ও অল্পরিতরকারী দিল্লা আহার করা বিধের।
তাড়াতাড়ি আহার করিলেও আহারের পরেই
কার্য্যে বাহির হইলে, ও থাছের সঙ্গে বেশী
কল পান করিলে হজমের বিশেষ ক্ষতি
হয়। আহার আবার মাঝে মাঝে বদল করা
চাই ও এক একদিন অজ্মনশন বড়ই ভাল।
আমাদের নিজের দেহ মন পাক্ষত্র ও
আমাদের বাড়ির মেরেরা ও চাকরেরাও
ইহাতে বিশ্রাম পার। শ্বিবারের মত সপ্তাহে
এমন একটি দিন রাধা সকল দিক হইতেই
হিতকর।

তটা ৪টার সময় আবার একটু জলযোগ। তাতে কিছু ফল থাকা ভাল। তাছাড়া ফটা মাধন, পুচি ছানা বা অল মিষ্টি দেওরা সন্দেশ, বা ভাল বিতে প্রস্তুত ভাল কচুরী সিঙ্গাড়া নিমকী ইত্যাদি স্থখাত। নারকেল বাদাম পেস্তা, মুড়ি চিড়া ইত্যাদি দ্রব্য দিয়া এই সমরের জন্ত সারাল ও স্থমিষ্ট ও সন্তা অনেক মিষ্টাল্ল ও সহজেই প্রস্তুত করিয়া রাখা যায়। আমাদের পূর্বেকার এই সকল আহার আজকালকার বাজারের জলখাবার হইতে অনেক ভাল এবং সন্তা ছিল। বাদাম পেস্তার সহিত স্থজি প্রভৃতি মিলাইয়া জ্লখাবার তৈয়ারী করিলে অতি উপাদের হয়। এই শ্রেণীর আহারের উন্নতি করা আমাদের একাস্ত আবশ্যক।

আহারের অনেকক্ষণ বাদে তবে মাঝে মাঝে অল অল জল খাওয়া উচিত। তাহাতে হলমের ও দান্তের সাহায্য করে। নির্মাল জলের মত কিছুই নাই। চা কোকো এমন কিছধ অবধি সে পক্ষে তত ভাল নয়। তবে অল অল খাইতে কিছু হানি নাই। কতকটা ক্লাস্তি দূর করে।

৭॥০টা---সচরাচর সন্ধ্যা-ভোজনই সর্বাপেকা শুক্তর হওয়া চাই। কারণ দেই সময়েই সকলে দিনের কাজ শেষ করিয়া নিশ্চিস্ত মনে ধীরে স্বস্থে আহার করিতে পারেন। পরিবারের মধ্যে এক সঙ্গে বসিয়া গল্প-শুজব করিয়া আহার করিলে যেমন স্থন্দর ভাবে আহার উপভোগ করা যায় তেমনি মনেও কত শান্তি जारम । नकल नमरब्रहे कर : ब्र हिखा ७ इन्छिखा শরীর মন উভয়ের পক্ষেই হানিকর। আমাদের দেশে শিক্ষিত সম্প্রদায়ের মধ্যে অহরহ এরপ চিস্তার অভ্যাসই সাধারণত: यक्ति मात्रापिम দেখা বায়। আমরা

খাটিয়া দিনেয় শেষ খংশ ও রাজের প্রথম খংশ টুকুতে বিশ্রাম ও আনন্দ করিতে পারি আমাদের শনীর মনের অর্জেক পাপ তাপ সহক্রেই দূর হয়। নিজ নিজ বাড়িতে রমণী জাতির এমন হীন অবস্থা করিয়া রাখিয়াছি বলিয়াই এই সহজ লভ্য আনন্দটুকুও সহজে আমাদের ভাগ্যে ঘটে না। বিলাত প্রভৃতি স্থানে এই সময়টুকু লোকের কি উপভোগ্য। অ'মি ঠিক সেই স্থানেই পৃথিবীতে স্বর্গের ছবি দেখিয়াছি।

এই সময়ের থাছাই সর্বাপেক্ষা সারাল প্রচুর
ও তৃপ্তিকর হওয়া চাই। এ সময় নিয়মিত
একটু মাংস থাওয়া ভাল। সহু হয় না বলিলে
চলিবে না—ভবিষাতের ভালর জন্ম অন্ত্যাস
ছেলেবেলা হইতেই করিয়া লইতে হইবে।
ইহার অভাবে জন্ম প্রকার এই জাতীয় সারাল
জিনিষ চাই। যথা ডাল ছানা বাদাম ইত্যাদি।
মাংসের পরিবর্তে মংস্ক ডিম থাওয়া চলে।
ডালের ঝনেক প্রকার সামগ্রীও চলে—য্থা
বাটা ডালের বড়া পাঁপড় ডালপুরী ইত্যাদি।

8। মোটামুটী আমি ধরচেরও একটা হিসাব দিতেছি। প্রাতে ডিম ক্লটী মাথন বা ভদ্পরিবর্ত্তে নিরামিষ কোনও থাবার যথা লুচী গলা সন্দেশ ইত্যাদিতে চার পরসা;—

ছপুরবেলাকার ভোজনে—কম পরিমাণে পোলাও বা খিচুড়ি—মাছ ভাজা, ডিম ভাজা, কটী মাংস বা আলু মাংস কিছা মাংসের পরিবর্তে মাছ ডিম ইহাতে ছই আনা বা দশ পরসা;—

বিকালে কল ও মিই বা কটী ও মাধন বা চিড়া নারিকেল মুড়ির মোলা ইত্যাদি চার পরসা;— রাত্রেও ছপুরের মত থাইতে ছই আনা বা তিন আনা।

আহারের পরিমাণ কম হইবে। হাব্জা গোব্জা বাজে জিনিব ভাহাতে বেশী থাকিবে না। তুপুরবেলা ও সদ্ধা বেলা আহারটি প্রধান করিয়া অপর সমন্ন সামান্ত জলযোগ করিবে। ইহাতে গড়ে প্রতিদিন একজন বন্ধন্ধ লোকের চারি পাঁচ আনা উর্দ্ধ মাত্রায় ছন্ন আনার বেশি থরচ পড়ে না। অর্থাৎ গড়ে ১০ টাকা মানে। অনেকে একত্রে থাকিলে ও থাইলে ইহার অপেক্ষাও কিছু কমে হন্ন।

তার পর ছেলেমেরেদের শিক্ষা সম্বন্ধে। প্রথমত শ্রীর গড়িবার জগ্ৰ ভাল প্রষ্টিকর খান্ত দরকার সেইরূপ ব্যায়াম শিক্ষাও আবশ্রক। রক্তশ্রেত তেকে मकानिज इरेल দেহের উপকার হয়। শরীরে সকল স্থানে রক্তরস সহজেই নীত হইয়া সে স্থানের ক্ষতিপুরণ করে ও সে স্থানের গঠন ও পুনর্গঠন কার্য্যে সাহায্য করে। আর তথাকার অশেষ্বিধ ক্লেদ ধুইয়া আনিয়া শরীর হইতে বাহির कतिया (नय। हेश नदौद्र वक्ष थाकित्नहें শরীরের যত ব্যাধি। (य मकन (इत वाि वात्र वहारम (मोड़ बन्म (शत्म ७ मूक হাওয়ায় বেড়ায় ও ব্যায়াম করে তাদের গঠন অতিশর স্থলর ও বলিষ্ঠ হয়। @ \$7 · নিম্লিথিত ব্যায়ামগুলি প্রশস্ত।

১। সকালে বিকালে স্বাধীন জাবে মুক্ত স্থানে স্বেজ্যার দৌড়াদৌড়ি থেলা। ব্যট-বল, ফুটবল, লনটেনিস ও আমাদের দেশী ধেলা কপাটি, ধার্মা ইত্যাদি। ই। দিনের মধ্যে একবার ড্রীল করা, ও. একবার নির্মিতরূপে মাংসপেশীর কোনরূপ চালনা করা। যথা মৃগুর ভাঁজা, বৈঠক, স্থাণ্ডো ইত্যাদি।

ত। স্পৃদ্দের নিয়মমত চালনা হয় এরপ বায়ামও আজকাল বিশেষ আবশুক বলিয়া বিবেচিত। তাহাতে স্পৃদ্দের আয়তন বাড়ে এবং সজোরে রক্ত সঞ্চালন হইয়া হলয়কে সবল ও দৃঢ় করে। ইহা দারা উদরের পাক যন্ত্র মূত্র যন্ত্র ইত্যাদি যন্ত্র সকলও সভেজ হয়। গান গাহিলে নাচিলে, কোন পাঠ সজোরে আর্ত্তি করিলে—ফুসফুসের ব্যায়াম সাধিত হইতে পারে। তবে তালে তালে নাচায় যে অক্সচালনা তাহাতে ব্যায়ামের কাজ বড় একটা হয় না। তার কারণ সে গতিগুলি কলের মত আপনিই আসে—তাহারা ইচ্ছায় আনীত হয়না।

৪। তাছাড়া দাঁতার, দৌড়ান, ঘোড়ার চড়া, লাফান প্রভৃতি আড়াআড়ি থেলার মাঝে নাঝে ছেলেদের উৎসাহ দেওয়া আবশ্রক। তাহাতে আনন্দ উৎসাহ ও ইচ্ছাশক্তি আরও দুঢ় হয়।

ে। স্থলর স্থলর কবিতার আর্ত্তি ও
গীত বাল্যাদিও ছেলেদের কিছু কিছু শেথান
ভাল। শরীর মন উভয়েরই তাহাতে উৎকর্ষ
সাধিত হয়। সর্বোপরি বেরুপ শিক্ষার
ছেলেরা আর্দ্ধনির্ভরতা শেথে সে বিষয়ে বিশেষ
বিদ্ধ করা চাই। শিক্ষার মূল উদ্দেশ্তই তাই,
—শিশু বয়সে শিক্ষা দিয়া জীবনের কার্য্যে
সহায়তা করা। অভএব তাহার প্রথম
শিক্ষার বিষয় হওরা চাই স্বাস্থ্য রক্ষা;

সঙ্গে সঙ্গে অর অর বন্ধন, হিদাবকেতাব বক্ষা, আপনার কাপড় চোপড় মেরামত, ঘরঝাড়া জুতা কাপড় ঝাড়া ইত্যাদি ষথা সমরে সকল রকম গৃহস্থালি কার্য্য করিতে শিক্ষা করা উচিত। বালকের ক্ষমতা ও ইচ্ছা ব্রিধা—কোনও এক বিশেষ অর্থকরী বিষয়েও বাল্যকাল হইতে অলে অলে তাহার শিক্ষা হওয়া বিশেষ আবশ্রক। অর্থকরী বিত্যা নহিলে অত্য সকল বিত্যাই দাক্ষণ অভাবে অনর্থক ও ব্যর্থ হইয়া যায়।

নীতিশিক্ষা সম্বন্ধে আমি এই বলি বে,
মহৎ লোকের জীবন কাহিনী শুনাইরা
ও চরিত্র দেখাইরা নীতিশিক্ষা দেওরা বেমন
ফলপ্রদ মুখের উপদেশে বা পুস্তকের
নীতিকথার তাহা হর না। অনেক সমর বরঞ্চ
শিশু চরিত্র তাহাতে নিস্তেজ হইরা পড়ে।
নিত্যকার ঘটনার প্রারই দেখা যার বেখানে
নীতি শিক্ষার প্রাচুর্য্য সেই স্থানেই চরিত্রের
সমধিক মলিনতা।

আর একটি কথা,—সামাজিক উদারতা শিক্ষা দেওয়াই নীতিশিক্ষার একটি প্রধান অঙ্গ হওয়া আবশ্রক।

ধর্ম সম্বন্ধে শিক্ষা দেওয়া আরও
কঠিন কথা। আমাদের এত শতাকার
অভ্যাদ দোষে ধর্ম বলিলেই আময়া বাছাড়ম্বর
পূর্ণ সমাজের আচার অহ্ন্ডানগুলিই মনে করি।
তাহাতে মাহুধের মনে অহুদারতা আরেও
বাড়ে। ধর্মনীতির কথা গোদে মোটেই
না শিথান ভাল। জ্ঞান বৃদ্ধির স্বাধীনবিকাশে
ধর্মভাব আপনিই সনাতনরূপে মনে জাগ্রন্ড
ইইয়া উঠে।

त्यय कथा विद्या भिका मद्दतः।

১। বত মুখে মুখে শিখান বার ততই ভাল। তাহাই সহজ ও স্বাভাবিক উপার।
ইহাতে অল্পকণে অনেক শিখানর কাজ ভাল করিয়া সম্পাদিত হয়। তবে তেমন শিক্ষক চাই। পৃস্তক শিক্ষকের ব্যবহারের জন্ত, পাঠার্থী শিশুর জন্ত নহে।

২। নিকটে আশে পাশে যে সকল
দ্রব্যাদি আছে তাহারই সাহায্যে বিভিন্ন বিষন্ন
শিখান যথা—পদার্থ-বিন্তা, রসান্ত্রন, উদ্ভিদ
বিজ্ঞান, জীববিজ্ঞান, ভূবিন্তা, জ্যোতির্বিন্তা
ইত্যাদি। এইরপ করিলে সর্বদা সেই সব
কথাগুলি শিশুর মনে আপনা হইতেই জাগরুক
থাকিবে। জ্ঞান অন্তরের ভিতর হইতেই
ফুটিরা উঠিবে। অর সমরের মধ্যে কোনও
একটি বিষয়ের পরিচয় করিয়া দিলে শিশু
আপনিই সে বিষয়ে মনোযোগ দেয়—ও আপনা
আপনিই জানার্জন করে। সকল বিষয়েই
একটু একটু জ্ঞান লাভ প্রথম বয়সে বড়ই
আবশ্রক। তাহাতে—মনের সকল দিকের
প্রসার বাড়ে ও জ্ঞানম্পুহা জন্ম।

৩। এক সক্ষে অভি অরক্ষণমাত্র পড়ানভাল। মোটামুট আদ দণ্টা এক এক বিষয়ে
পড়িলেই যথেষ্ট হইল। ছইবার পড়ার মাঝে
একটু বিশ্রাম বা ড্রীল্ ক্রিজনক। ইউরোপে এইরপই বাবস্থা।

৪। পরীকার উৎপীড়ন অতিশয় হানি কয়। মাঝে মাঝে পরীকা হইবে ও তাহার

কল লইরা বছরের শেষের পরীকার ফল ঠিক হইবে। ভিন্ন ভিন্ন বিবরক পরীকার ভিন্ন ভিন্ন সমরে উত্তীর্ণ হইলেই চলিবে; এক সঙ্গেই সকল বিজ্ঞার পারদর্শিতা দেখাইবার আবশুক নাই। যে যা দেখে শুনে সে তাহা ইহজনে ভূলে না। পরীক্ষার বাবে তখনি না বলিতে পারুক আবশুকের সময় আপনিই সে জ্ঞান মনের বারদেশে আসিয়া ভাহার জীবনের কার্য্যে তাহাকে সাহায় করিবে। শিশুর কাছে কোনও সময়েই যেন রুচ্মূর্তি না দেখান হয়।

"Spare the rod and spoil the child" পুরাকালে এই ব্যবস্থা ঈশবের রাজ্যের গহিত নিয়ম। আজকালকার কিন্তারগার্টেন নিয়মপ্রণালী শাস্ত ভাবের শিক্ষা অন্তমোদন করে।

৪। লেখাপড়া শিক্ষা সাদ্ধ ইইলে—
কিছুদিন শিক্ষানবিশক্ষপে কাহারও কাছে
হাতে কলমে কাজ শিখা উচিত। বিভার
সলে অর্থকরী বিভাও স্বত্তে শিক্ষণীয়।

৫। আজকালকার কর্মনীল জগতে বিজ্ঞানের স্থান উচ্চতর। বিজ্ঞান আর কিছুই নম্ন প্রকৃতির নিম্ন সম্বন্ধীর সম্যক্ষান। সেই জ্ঞানের দ্বারা প্রাকৃতিক মহাশক্তিশুলিকে নিজ কাজে লাগাইয়াই মহায় বিশ্বরাজ্যে জ্মনী হয়। সেই পথে যাহারা অগ্রসম হইতে পারে না তাহারাই শিছাইয়া পড়েও অবশেষে বিনষ্ট হয়।

बिहेन्द्रमाध्य मनिक।

পাকচক্র। শেষ দৃশ্য।

("চক্সকান্ত ও চক্রকান্ত" বলিয়া ডাকিতে ডাকিতে কর্ত্তার উর্নবাদে রঙ্গমঞে আগমন পশ্চাৎ পশ্চাৎ হরিবাবুর প্রবেশ।)

হরি। ভণ্ড, পাজি, আহামক, বেয়াদপ! ছেলের বিয়ের সম্ম ঠিক ঠাক করে,—এখন, "মশার. আমি ত কিছু জানিনে!"

ক। সত্যি বলছি হরিবাব্, তোমার গায়ে হাত দিয়ে দিব্যি করছি আমি কিচ্ছু কানিনে।

হরি। একেবারে ন্যাকা ? কৈচি থোকা ! ভণ্ডতপন্থী! পণ্ড শ্রম! ভোর বা ইচ্ছে কর,—আমার দশটি হাজার ক্ষেরত দে, আর নয় ত এই উকীলের চিঠি নে কালই নালিশ চডিরে দেব।

ক। বল কি হরিবাবু! ওঃ এতদিনের
বন্ধুতা,—তোমার জন্ত গিল্লির সঙ্গে কত ঝগড়া
ঝাঁটি মান অভিমান, চোথের জলের নাকের
জলের আমদানী,—হায় হায়! সে সমস্তই
মিধ্যা।

হরি। আমি কথায় ভূলিনে বাপু! হয় আমার টাকাকড়ি বুঝে দাও নয় ছেলেটকে দাও।

ক। এই ! আর ত কিছু না ? হরিবাবু শ্যামি ঠিক ব্লছি—আমি তোমা বই আর কাউকে জানিনে! তা গিলি যদি গলাল—

হরি। তবে চল ছেলে নিয়ে এক্ষণি আমার বাড়ী চল।

ক। একণি একণি। তাহলেই হোল ত ?
আ: আ:! (চৌকিতে বদিয়া পড়িয়া)

আ: একটু দম নিয়ে বাঁচি! সভ্যি বলছি হরিবাবু আমি ভোমা বই আর কাউকে জানিনে।

আমি আর কাউকে চিনিনে, জানিনে—
ও হরিমোহন বাবু,—চিনিনে,—গো মশার
জানিনে—

(হাতে তাল দিয়া স্থর করিয়া গান— গিন্নির ক্রতপদে প্রবেশ)

গি। আরাম চৌকিতে বসে ভারী বে ফুর্ত্তিতে গান করা হচ্ছে! আর এদিকে পুলিসে যে বাড়ী ঘিরে ফেলে? এমন পুরুষ নিয়েও মান্ত্র ঘর করে! হায় রে, আমার কপাল!

ক। (ত্রন্তে উঠিয়া দাঁড়াইয়া) আঁয়া
পুলিস ? কেন ? আমি কি তাদেরও ফরমাস
দিয়ে আনিয়েছি ? ও চক্র—চক্র গো় ? হায়
হায় ! চক্রটাও ভেগেছে দেখছি ! হরিবার—
তুমি একবার যদি দেখ,—মামি আর পারিনে!
লোকে মেয়ের দাসে পাগল হয়—আমি
ছেলের দায়ে পাগল হয়ে উঠেছি । প্রাণ গেল
গো গেল ! (পুনরায় উর্দ্ধ মুখে চৌকিতে
নয়ন মুদ্রিত করিয়া উপবেশন)।

হরি। আছো আমি দেখে আ<mark>সছি, অত</mark> অস্থির হয়োনা।

হরি বাবুর প্রস্থান,—চন্দ্রকান্তের প্রবেশ। চ। আজে প্লিস বোমা প্রতিত প্রসেচে।

ক। (চমকিয়া উঠিয়া) বৌমা! এখন থেকে কি বৌ এলেও পুলিসকে দেখাতে হবে? এই আইন হয়েছে নাকি? কিছ এখনো ত বিয়ে হয় নি, শশীকে তবে বৌমা বলে দেখিয়ে দাও বাবা!

চ। আজে তানা, বাজির আওয়াজ ভনেছে কি না তাই বোমা মনে করেছে, এই মাহুষ মারা বোমা, যার জন্মে আলিপুরে মেদিনীপুরে—

ক। সর্বনাশ! কি হবে কি হবে!

এবার ধনে প্রাণে মারা গেল্ম গো—আর

উপায় নেই গিলি উপায় নেই—

(উঠিয়া গিরির অঞ্চল ধারণ)

সি। তাই ত! কোপা যাব! এখনি আমাদের সব ধরে নিয়ে যাবে নাকি! বাবা চক্সকান্ত—উদ্ধার কর তুমি রক্ষা কর।

চ। তা আপনি যদি রাজি হন—মামি সব মিটিয়ে—

গি। এখনি রাজি—যা বলবে তাতেই রাজি—

চ। (মাথা চুলকাইতে চুলকাইতে)
এই—এই—যদি আমার সঙ্গে শশিমুথির ও
হরি বাবুর মেয়ের সঙ্গে দাদা বাবুর বিয়ে
দিতে রাজি হন—

গি। তাহলেই সব চোকে? এক্ষণি ৰাৰা এক্ষণি—

ক। (অঞ্চল ছাড়িয়া) এক্ষণি চন্দ্রকান্ত এক্ষণি—

(ৰুকে হাত দিয়া) উ: উ:—

চ। তা হলে আর ভাবনা নেই
আমি এখনি দব ঠিকঠাক করে আদছি।
(স্থগত)কি মজা এক বাণে দব পাথীগুলো
মন্নলো?

*ক। উ: বুকে হাত দিয়ে দেখ গিলি— আর একটু হলে নিশ্চরই ফেটে বৈত! চক্ৰকান্ত—বেঁচে থাক বাবা—তুমি ব্ৰহ্ম হত্যা নিবাৰণ করলে ?

গি। দেশ-বিপদের সময়ও এরকম নাকে কাঁদবে ?

वितामित्र श्रावम ।

বি। বাবা, প্লিদের সব লোকগুলো চলে গেল।

ক। এরই মধ্যে ? সাবাস চক্সকাস্ত— সাবাস—!

বি। বাইরে সব লোক বদে আছে— আপনি শীঘ্র আফুন।

ক। যাজিছ বাবা—একটু দম নিয়ে যাচিছ—তুমি এগোও।

(বিনোদের প্রস্থান)

দে**ধলে গিন্নি—**ভাগ্যিস চ**ন্দ্রকা**স্ত ছিল— তাই এ যাত্রা রক্ষা পাওয়া গেল।

গি। এমন বেইমানী যদি কোথাও দেখেছি! আমার শশী না থাকলে কার জন্ম চক্রকান্ত একাজ করত।

হরিবাবুর প্রবেশ।

হরি। এখন ঝগড়ার্ঝাট থাক, বাইরে সব বর্ষাত্রীরা এসেছে—বর নিম্নে চল যাত্রা করা যাক।

ক। বেশ বেশ সে কথা পুব ভাল।

গি। (দীর্ঘ নিশাস ছার্ডিয়া) তবে বিনোদকে বাড়ি ভিতর পাঠিয়ে দাও বরু সাঞ্চিয়ে বরণ করে পাঠাই।

ক। চক্ৰকাস্ত কোথা ? শনী কোথা ? তাদের বিষেটা কেন এথান থেকে ভাগে সেরে ফেলে আমরা বিনোদকে নিয়ে বর্ষাত্রী চলিনা। চন্দ্রকান্তের প্রবেশ।

্ চ। আজে সেই হলেই ভাল হয়। আমিও পাজি দেখে এলুন আজ এথনি একটা লগ্ন আছে আর রাত্তেও আর একটা আছে। বিয়ে-টার পর আমিও বরষাত্রী হয়ে বেরিয়ে পড়ব।

হরি। বেশ বেশ তাই হবে! তোমার
বৃদ্ধিতেই বাবা বাঘে গরুতে এক ঘাটে জল
থেরেছ—কর্তা গিন্নির মতের মিল হয়েছে—
আর আমিও কন্সাদায় থেকে উদ্ধার পাব
পাব করছি!—ভোমাকে আগে তুই করতেই
হবে—চল বাবা—চল!

গি। কিন্তু দেথ কর্ত্তা—সব বেন হোল—
ফুট টোপর ত ফরমাস দেওয়া হয়নি—তার
কি উপায়!

চ। তাতে কিছু ক্ষতি নেই, সেজন্য কিছু মনে করবেন না,—একটা ধুচ্নি হলেই চলবে এখন, দরকার বুঝে সেটাও আমি ঠিক করে রেখেছি।

হরি। বেশ করেছ বাবা! তোমার উৎসাহ দেখলে--আমারও আর একবার পাক থেতে ইচ্ছা করে।

চা (মাথা চুলকাইয়া) কি বলেন—
আজে, আপনাদের অসুগ্রহ—আমি বাই
কি হচ্ছে একবার দেখি। প্রস্থান।
ক। (গিলির প্রতি বঙ্কিম কটাক্ষ

ক। (গিন্নর প্রাত বাদ্ধম কটাক করিয়া) কি বল তুমি হরি বাবু এক • পাক!—সাত পাকের একটি পাক কম নয়— এ হচ্ছে বিষম পাক—পাকচক্র। কি বল গো গিন্নি ছা ছা!

গি। শুনলে কথার ছিরি। পাক খায়কে বর নাকনে ?

ক। তুমি বদি একটুথানি বিজ্ঞান

জানতে গিন্নি তাহলে আর কোন কথা

ব্যাপ্যা করে বলতে হোতনা। আদল কথাটা

হচ্ছে এই; গতি জিনিসটা বড়ই ভ্রাপ্তিজনক

—দেখনা পৃথিবীখানা ঘোরে মনে হর স্থা্যি

মামাই পালট থাচ্ছেন। সেই রকম আর কি,—

তোমরা খাও পাক,—আমাদের ঘোরে মাথা।

হরি। না গো না,—আমরাই খাই পাক

তোমরা ঘোরাও হাতা।

ক। হাতার বদলে যাঁতা কথাটাই এথানে স্প্রয়োগ হ'ত।

গি। বটে । এবার পোক তবে হাতার বদলে যাঁতাই ধরব। । প্র রসানচৌকি বেজেছে যাই আর দেরী করা চলে না।

কঠা ও হরি। চল চল আমরাও বাই,—
পাকচক্রটা এবার শেষ করে ফেলা বাক।
(সকলের হাসিতে হাসিতে প্রস্থান)
সন্দেশওয়ালীর গাহিতে গাহিতে প্রবেশ।
এনেছি মনোহরা রস্করা সন্দেশ!
ছনিয়া মাঝে মিলবে না বে এমনটি সরেশ।

(অন্তান্ত মিটারওয়ালীদিগের প্রবেশ)
বি। আর নাইক ভব ওগো কর্ত্তা মহাশয়—
আজ বিয়ের রাত্তি, বরষাত্রী—
বাওহা দেবে বেশ!

ত। এনেছি রসোণোলা মতিচ্র থাজা।

চ। কচুরী নিমকি পাঁপড় ভাজা।

(মাথায় ছই চারিটি হাঁড়ি স্তরে স্তরে বহন

করিয়া ক্ষীরওয়ালীর প্রবেশ)

এনেছি দুধিক্ষীর—মাতাজি কি ফিকির।

সকলে। বাজে বাঁশি হাসি হাসি—

বরণ কর শেষ। নৃত্যগীতে পটক্ষেপ।

সমাপ্ত ।

श्रविशि।

(मन-(थर्म)।

- ॥ {1 বা। পা মা-। গা গা -মগা। রাসা-। I রা-া-রা। মামা-।।
 এ নেছি ম নো হরা র ফ্লাস -
- ।পা -† -† । -† -† -† I} মা মা পা পাপা-| মা-† পা। স্থি |। শেশ • • • • • ছ নি য়া মাঝে • মিল • বে নাবে •
- I সামা-রা। সাণা-ধা। পা-া-া। া-া-া-॥ রা-া-।। রা-া রা। এমন্ টিস - রে শ - • • আর • • নাই ক
- ়রা-া-া-া-া I রমা-ামা।মামা-গা।রা-সা-া।-া-াসাI ভর্•• • (ওগো)ক • ৩টা ম হা • শর • • • • আবদ
- ः I রারা-। মা-া মা। পা পা-। সা-া -সাI সারা। সাণা -ধা। বিষের • রা • তি ব র • যা • তী বাওবা দে বে •
- । পা -1 -1 -1 -1 -1 -1 । বেশ • • • • •
- Iা-শিসা। রারা-। রারা-। রারা-াI -া-ামা। মামা-। এ নেছি - র স - গোলা - • ম ভি চুর •
- । গা-রা-গা। রসা-া-। I -া- রা। মামা-া। পা -া-। ধা-ণা-ধা I ধা • • • • • • • চুরি • নিম • • কি • •
- I •া-† পা। ধাপা-|। মা-ধা-|। পা-† -1 [-† -† না। নানা -†।
 •• পাঁ পড়• ভা•• জা•• মা ডাজি •
- । সাসা-1। সাঁ-1-1 I -1-1 সা। সা সা-1। না সা -1। রা -1 -1 I } कि कि • कि व • • • • • • • । स्व कि • की व • • °
- I নানা-। নানা-।। সীসা-। সা সা -। I সাসা -রা। সাণা -^{ধা।} ্রাজে - বাশি - হাসি - হাসি - ৰর ণ কর['] -
- 一村 -1-1-1-1-1
- CONT



ेशक डेगरे

প্রিন্স্ ইটো।

সেদিন এক কোরিয়াবাসীর হতে জাপানের ভাগ্যবিধাতা প্রিক্স ইটো নিহত
হইয়াছেন। ক্ষরিয়ার অর্থসচিবের সহিত
সাক্ষাৎ করিবার জ্বন্থ তিনি হার্বিন টেশনে
গমন করিয়াছিলেন। তথায় ইসভাপরিদর্শনকালে তিনি হত্যাকারীর গুলিতে হত হন।

জাপানের এ ক্ষতিতে আজ সমগ্র সভ্য-জগত কুৰা। যে সকল মহাপুক্ষ যুগ্যুগান্তর হইতে নিজালদে মৃতপ্রায় জাপানকে জাগ্রত ও জীবিত করিয়া তাহাকে শক্তি ও সভাতার উচ্চশিখরে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন, প্রিন্স্ ইটো তাঁহাদিগের মধ্যে অগ্রণী। তাঁহার জীবনের কর্মের ও উরাতর ইতিহাস অর্থে বর্ত্তমান জাপানের ভাবাস্তর ও যুগাস্তরের ইতিহাস। তাঁহার জীবনের সহিত জাপানের সমগ্র জাতীয় জীবন : সম্বন্ধ ছিল। ইটো একজন অসাধারণ পুরুষ ছিলেন। ভিন্ন ভিন্ন দেশে যুগে যুগে পতিত জাতিকে উদ্ধার করিবার জন্ত এইরূপ এক এক অসাধারণ পুরুষকেই জন্মগ্রহণ করিতে দেখা যায়। লক্ষ লক্ষ ব্যক্তি যে কর্মভার গ্রহণ ক্রিতে সাহস করে না, ভিনি একাকী তাহা সম্পার করিতে সক্ষম হইয়াছিলেন, ইঁহার জীবনের ইতিহাস জগতে সকল জাতির মধ্যেই ञ्चानम् ज्ञानीत्र ।

প্রিন্স ইটো ১৮৪১ সালে জন্মগ্রহণ করেন। ইহার পিতা জাপানের একটি প্রাতন জমিদারের জন্মচরের কর্ম করিতেন। তিনি ভাতিতে সামুরাই। সামুরাইগণ বংশগত যুদ্ধব্যবসায়ী। ইটোর বাদ্যকালে

জাপান ভীক, ছর্বল ও কুসংস্থারাচ্ছর ছিল। এই সময়ে কভকগুলি পাশ্চাত্যবাসী জাপানে একটি ছর্গ নির্মাণ করিয়া তাহার মধ্যে বাস ক্রিত এবং স্বদেশের বাণিজ্যদ্রব্য বিক্রম করিত। সে কালে জাপানীগণ বিদেশীকে অভ্যস্ত দ্বণার চক্ষে দেখিত। वालक हेटिं। কিছ নানা বাধাবিদ্ন অতিক্রম করিয়া গোপনে ইংরাজি ভাষা শিক্ষা করিতে লাগিলেন। তাহাতেও তাঁহার প্রাণ তৃপ্ত হইল না। তিনি ইয়ুরোপে ঘাইয়া এই সকল জাতির শক্তি চিস্তা, জীবন ও চরিত্র অমুশীলন করিবার মানস করিলেন। সেই অল বয়সেই তিনি বুঝিয়াছিলেন যে পাশ্চাত্য শক্তির ঋথ রহস্ত টুকু শিক্ষা না করিলে জাপানের স্বাধানতা লোপ অনিবার্য্য। স্থতরাং যে কোন উপারে হৌক তিনি ইয়ুরোপ যাইবেন স্থির করিলেন। त्म ममात्र काशानवामी वित्तनीत्क तमने **रहेर्ड** বহিষ্কৃত করিবার জন্ম ব্যগ্র হইয়া উঠিতেছিল। ইটো একজন জাপানীকে জিজ্ঞাদা করিলেন -- "वितिनीशनरक आर्यातित तित्न श्रीतिन করিতে বাধা দিবে কি প্রকারে ?"

দে ব্যক্তি ভিতত্তর করিল—"কেন, আমা-দের দেশের চতুদ্দিকে হুর্গ নির্মাণ করাইয়া।"

বালক ইটো জিজ্ঞানা করিলেন—
"কামান প্রস্তুত করিবে কি প্রকারে?" সে
উত্তর করিল—"কেন, বৌদ্ধনদিরের ঘণ্টা
গালাইয়া।"

ইটো তাহার নির্কৃত্বিতা ব্রিলেন কিছ কোন উত্তর করিতে সাহসী হইলেন না। সে সমরে বিদেশীকে দেশে প্রবেশ করিতে দেওরা সঙ্গত বলিলে তাঁহাকে শক্রজানে তৎক্ষণাৎ হত্যা করিত। যাহা হউক তিনি এই সময়ে জাপানের উন্নতি ও রক্ষার জন্ম জীবন উৎসর্গ করিতে কৃতসংকল্প হইলেন।

ভাঁহার প্রথম ইয়ুরোপ্যাত্রার বর্ণনাম তিনি বলিয়াছেন "১৮৬০ সালে আমি ইয়ুরোপ যাত্রা করি। তথন আমায় বয়স ২২ বংসর। আর তিনটি বন্ধুর সহিত পরামর্শ ক্রিয়া আমরা চার জনৈ টোকিও নগর ত্যাগ করিয়া ইয়োকোহামা নগরে উপস্থিত হইলাম। তথায় মিষ্টার কেন্টইক্ নামে একজন ইংরাজ ব্যবসায়ীর নিকট সাহায্য করিলাম। সে সময়ে জাপানে বিদেশ যাত্রা যে কেবল ধর্মনীতি বা সমাজ-রীতি বিক্লম তাহা নহে—সে সময়ে বিদেশ-यां वा वाहेनिविक्रक ७ मधाई विषया পরিগণিত হইত। অনেক অনুনয় বিনয়ের পর কেস্-উইক্ সাহেব আমাদের সাহায্য করিতে সন্মত इट्टन्न।

আমরা একথানি জাহাজের মালপত্রের
মধ্যে সুকাইয়া রহিলাম। আমরা মাথার
চুল কাটিয়া বিদেশী নাবিকের বেশ পরিধান
করিলাম। মধ্যে একবার কেন্টইক্ সাহেৰ
ভীত হইয়া বলিলেন "তিনি দেশের আইনের
বিরুদ্ধে আমাদিগকে জাহাজে স্থান দিতে
অক্ষম।" আমরা আত্মহত্যা করিব বলায়
ভাবশেষে তিনি সন্ধত হইলেন।

চার মাস পরে আমরা. স্থাননগরে উপস্থিত হইলাম। সেধানে আমরা প্রাণপণ পরিশ্রম করিরা ইংরাজি, অঙ্ক, তাড়িত বিভা, শির, অর্থনীতি, বন্দুক ও কামান প্রস্তুত এবং জাহাল নিশ্বাণ শিকা করিতে লাগিলাম। একদিন শুনিশাম বিদেশীগণ জাপান আক্রমণ করিবার উত্যোগ করিতেছে। আমুরা তৎক্ষণাৎ স্বদেশ সেবার জন্ত প্রভ্যাবর্ত্তন করাই হির করিলাম।"

দেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া কিছু কাল তাঁহারা স্বদেশবাদীকে শিক্ষিত ও টেরত করিবার চেষ্টায় নানা বিষয়ে পুস্তক লিখিতে লাগিলেন। এ কর্ম্মে তিনি কতকগুলি নিঃস্বার্থ সহকারীও লাভ করিয়াছিলেন। প্রথম প্রথম ইঁহাদিগকে সর্ব্বদাই প্রাণভয়ে লুকাইয়া থাকিতে হইত। ইঁহাদিগকে হত্যা করিবার জন্ম চতুর্দিকে লোক বুরিত। একদিন রাত্তিকালে কভকগুলি সশস্ত্র লোক তাঁহাকে হতা৷ করিবার জন্ম তাঁহার হোটেলে প্রবেশ করিয়াছিল। একটি চতুর্দশ বর্ষীয়া বালিকা সে রাত্রে সেই হোটেলে অবস্থান করিতেছিল। সে ইটোকে এত ক্ষিপ্রতার সহিত লুকাইয়া ফেলিল যে সে যাত্রা তাঁহার প্রাণ রক্ষা হইয়া গেল। সেই বালিকাই পরে প্রিন্স ইটোর পত্নী হইয়া স্বামীর মহৎকর্ম্মে সহধর্মিণী হইয়াছিলেন।

পরে ইটো পুনরার ইয়ুরোপ যাত্রা
করিয়া তদেশীয় শাসননীতি শিক্ষা করিয়া
আসিয়া অদেশের শাসননীতি সংস্কারে প্রবৃত্ত
হন। এরূপ চেষ্টার আর্থান্ধ দেশবাসীর নিকট
বাধা লাভ অবশুস্তাবী। ফলে ছই পক্ষের
মধ্যে যুদ্ধ উপস্থিত হইল। অবশেষে ইটোর
পক্ষই জয়ী হইলেন এবং জাপানে বর্ত্তমানশাসননীতি প্রচলিত হইল এবং প্রিক্ষ ইটো
প্রধান মন্ত্রীর পদে নিযুক্ত হইলেন।

তিনি আজীবন শিক্ষা গাভের জগুৰ্বাগ্র ছিলেন। শিক্ষার জন্ত তিনি কোন প্রকার উপায়কেই অবহেলা করিতেন না, বা কোন প্রকার সামান্ত বস্তকেও উপেক্ষা করিতেন

ইটো চারিবার প্রধান মন্ত্রীর পদে
নিযুক্ত হইরাছিলেন। তাঁহারই চেষ্টার ও
আত্মোৎসর্গে জাপান শিক্ষা, শাসন, শিল্প ও
শক্তিতে বর্ত্তমানে যুগাস্তর আনয়ন করিয়াছে।
তাঁহারই বুদ্ধি ও বীর্যাের বলে ক্লম্ব জাপান-যুদ্ধে
জাপান আপনার অসাধারণ শ্রেষ্ঠতা দেখাইয়া
সভ্য জগৎকে মুগ্ধ ও সম্রস্ত করিতে সমর্থ
হইয়াছে। তাঁহারই আদর্শ ও শিক্ষার বলে
পঞ্চাশ বৎসর পূর্বের যে জাপান জগতে নগণ্য
ও মৃতপ্রাম্ব ছিল, সে আজ জগতের শ্রেষ্ঠ
জাতিগণের মধ্যে উচ্চামন লাভ করিয়াছে।

মৃত্যুকালে প্রিন্স ইটো সম্রাটের প্রতি-নিধি স্বরূপ হইয়া কোরিয়ার শাসনকর্তার পদে নিযুক্ত ছিলেন।

মরণকাল পর্যান্ত ইটো দরিদ্র বাক্তি ছিলেন। ধনী হইবার জন্ম তিনি কখনও কোন চেষ্টাই করেন নাই। তাঁহার সমগ্র জীবন তিনি স্বদেশ সেবায় উৎসর্গ করিয়া-ছিলেন। তিনি যাহা কিছু উপাৰ্জন করিতেন সমস্তই দরিজ স্বদেশবাসীগণের শিক্ষার কবিতেন। বর্ত্তমণন জ্ঞ বায় একজন প্রধান জাপানী রাজনীতিক্ত বলিয়া-ছেন—"প্রিন্স ইটো আমাদের দেশের বর্ত্তমান ও ভবিশ্বতের দৈহিক অবতার। ু তাঁহার প্রতি দেশবাসী যতই বিরূপ হউক ना क्न, दंग्यत विश्वत्व कित्न आवानवृक्ष-বনিতা তাঁহারই সাহায্য ভিক্ষায় তাঁহারি মুখের দিকে চাহিয়া থাকিবে। তিনিই জাপানের কৰ্মকৰ্ম্ভা ও চালক।"

এই মহাপুরুষের জীবন ইতিহাদের

উপসংহারে ১৮৯৩ সালে ইয়োকোহামা নগর হইতে স্বামী বিবেকানন্দ তাঁহার স্বদেশ-বাসীকে যে পত্র লিথিয়াছিলেন, আমরা তাহারই সারাংশ উদ্ধৃত করিয়া আমাদের স্বদেশবাসীকে উপহার দিতেছি।

"তোমরা কি করিতেছ। চিরদিন কেবল বাজে কথা বকিয়া মরিতেছ। এখানে আসিরা জাপানী জাতিকে দর্শন কর এবং গৃহে গিরা লজ্জার মূথ আবৃত করিয়া থাক। হায়, খদেশ ত্যাগ করিলে তোমাদের জাত যায়।। সহস্র বৎসর ধরিয়া তোমরা সঞ্চিত জঘতা রীতির পীড়নে নিপোষিত হইতেছ। খাদ্যের পবিত্রতা ও অপবিত্রতা ছির করিবার জাত তোমরা সহস্র বৎসর ধরিয়া তোমাদের শক্তি কয় করিতেছ। পুরোহিতগণের নির্বোধ পীড়নের ঘূর্ণিতলে তোমরা ড্বিতেছ ও উঠিতেছ। বহশতালার সামাজিক পীড়নে তোমরা আপন মন্ত্রাত্ম হায়াইয়া ফেলিয়াছ।

ভাবিয়া দেখ তোমরা কি এবং তোমরা কি কাল করিতেছ। হার নির্কোধগণ, তোমরা পুত্তক হত্তে লইয়া সমুদ্রভীরে বিচরণ করিতেছ—বিজ্ঞানের এক আগ টুকরা শিথিতেছ মাত্র—ভাহাও আসল জিনিয় নহে। তোমরা বিজ্ঞানের পুত্তক হত্তে লইয়া ঘূরিতছ বটে কিন্তু ভোমাদের প্রাণ পড়িয়া ম্লাছে— ত্রিশ টাকার কেরাণীগিরির উপর—না হয় বড় জোর ধুর্জ উকাল হইবার উচ্চাশায় ভোমরা মুদ্ধ! দেশে প্রত্যেক ছাত্রেরই চতুর্দিকে কতকগুলি সন্তান ঘেরিয়া ভাহাকে আহারের জন্ম পীড়ন করিতেছে! আমি জিজ্ঞাসা করি, ভোমাদের সমুদ্রে কি এতই জলের অভাব যে ভোমরা ভাহাতে ভোমাদের বইগুলা, গাউনগুলা, বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাণ্ডিলা ও এইপ্রকার সবগুলা ডুবাইছত অক্ষম!

এখন শোদ, মাত্ম হইবার চেষ্টা কর। সর্বঞ্জেখন পুরোহিতগুলাকে পরিত্যাগ কর, ওঞ্চলা ক্রীভি ও ভার্থান্ধতার মধ্যে প্রতিপালিত—উহারা বৃক্তি বৃধিবে না, গুনিবৈ না। স্কুতরাং প্রথম উহাদের হাত হইছে অব্যাহতি লাভ কর। এস মাসুব হও! তোষাদের ওই সংকীর্ণ সীমা হইতে বাহিরে আসিয়া দেও পূথিবীর অপর জাতিরা কিরুপ উন্নতি করিতেছে। তোমরা কি সভাই হয়কে ভালবাস? তেবে অগ্রসর হয়ে এস। এস আমরা প্রাণপণে আমাদের দেশের লোককে সাহায্য করিতে বছবান হই। পশ্চাতে ফিরিয়া দেখিও না—অতি প্রিয় ও আত্মীয়গণকে অশ্রবর্ধণ করিতে দাও! পিছনদিকে দেখিও না—অসকোচে অগ্রসর হও।

আবাদের মাতৃভূমির উদ্ধারের জন্ম অন্ততঃ এক

সহত্র মুবাকে উৎসর্গ দেওয়া আবছাক—মার্মুব, পশু
নহে। আমি জিজাসা করি 'ভারতবর্ধ কর্মন
নিঃমার্থ বুবা আছে যাহারা সমাজসংকারের ক্ষন্ত,
দেশের লোককে জাবনদান করিবার ক্ষন্ত, দরিজকে
সাহায্য ও ক্ষ্মিতকে অর্মান করিবার ক্ষন্ত, সকল
শ্রেণীকে সমভাবে শিক্ষাদান করিবার ক্ষন্ত অর্থাৎ
ভাহাদের পূর্বপ্রক্ষের পীড়নে পশুত্রমান্ত ক্ষান্ত ক্ষর্য করিবার ক্ষন্ত জ্বীক্ উত্তর দানে
সমর্থ হার্য ভারতবর্ষ করে এ কর্ক্রশ প্রশ্নের উত্তর দানে
সমর্থ হার্য।

শ্রীস্থরেন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য্য।

ছবি ও গান।

कवि:--

তুমি আসিয়াছ রাণি! শ্রামগিরি শিরে,
পুলকে শিহরি তাই নামে সন্ধাসতী,
কুস্থমের চারু অর্ঘ্য হাতে ল'রে ধীরে,
তারকা-প্রদীপ-হারে করিবে আরতি!
কুস্তুক স্তবক ল'রে থেলিছে মলয়,
গাহিছে বন্দন-গীতি স্থেথ নির্মরিণী,
পরেছ মুকুট কিবা অর্গজ্যোতির্ম্মর,
আকাশ দিরাছে রচি চন্দ্রাতপ থানি!
সন্তোব-শীতল হাসি থেলিছে অধরে,
বর্ষে নয়ন হ'টি শাস্তি-স্থধাধারা,—
দুর হ'তে দীন কবি, ভাবনত স্বরে,
গাহে তব জয় গাথা, মুঝ আত্মহারা।
মাধুর্য্য মহিমামনী মুরতি তোমার,—
ছুটাক বীণার ভানে নুতন ঝ্রার।

চিত্ৰকর:--

নায়াক গগনপটে অচল শিখরে
দাঁড়াও আসিয়া সন্ধ্যাপ্রতিমার প্রার,
নিবিড় অলকদাম পড়ি থরে থরে,
টেকে দিক্ স্বর্ণছবি তিমির রেথায়।
অঞ্চলে সাঁঝের ফুল উঠিবে হাসিয়া,
চরণে থেলিবে শুলু নির্মরের জল,
সাজাইবে রক্ত রবি শেষ কর দিয়া,
কত স্থবিচিত্র রঙে সন্ধ্যা নভতল।
নীরবে উঠিবে ফুটি অধর কোণায়
মধুর হাসিটি তব, রিশ্ব সমুজ্জল;
বভনে আঁকিয়া লব, স্বপ্ন-ছারা প্রার,
দিব্য সেই ছবিধানি শাস্ত নিরমল।
ফুল, জল, নীলাকাশ, আর তুমি তার,
কালে উপহাস করি রহিবে জক্ষর!

নবাম।

(পল্লীচিত্র।

রামদদর বাবু গ্রামের মধ্যে বেশ অবস্থা-পর লোক। বাটীতে ৮/১•টী গোলা। ধান্তে ও অহাত রবি-শস্তে প্রভাকটীই পরিপূর্ণ। গোয়ালে কুড়ি পাঁচশটীর অধিক গাভী এবং চারিটী বলদ। বাছুরগুলি ইতস্ততঃ ছুটাছুটী করিয়া বেড়াইতেছে। ছোট বড় ছয় সাত থানি কাঁচা ঘর। কোনটী রায়া घत, (कानी (उँकिमाना, (कानी मधन घत প্রত্যেক ঘরের দেওয়ালগুলি অত্যন্ত পরিষ্কার এবং নানাবিধ আলিপনায় চিহ্নিত। উঠানটীও তেমনি পরিষার। কেবল মধ্যে মধ্যে শীতকালীন শাকের বীজ বপন করা হইয়াছে। শাককেত্রের আইলগুলি নিকাইয়া সমান করিয়া রাখা হইয়াছে।

বাহিরে বৈঠকখানা। তাহার সরঞ্জামও বড় বেলী নহে। একথানি বড় ঘরের তুই পার্শ্বে তুইটী কুঠারী। একটী কর্ত্তার কাপড়, উড়ানী প্রকৃতিতে পরিপূর্ণ তোরঙ্গ পেটরায় বোঝাই। অপরটিতে লাঙ্গল, কাল্ডে, কোলালি, প্রভৃতি চাষের উপকরণাদি ঘণান্থানে সজ্জিত রহিয়াছে। মধ্যেরটী কর্ত্তাবাবুর বিস্বার্থ বিশ্বার উপর একথানি মোটা সতর্ক্ষ বিস্তৃত, তাহার উপর একটী শুল্র তাকিয়া। সম্মুথে দেওয়ালে জগলাথদেব, কালীবাটের কালী, আর্টস্কুলের অরপূর্ণা প্রভৃতি কয়্মথানি ছবি।

বাহিরের রোয়াকে একথানি খেতবর্ণের কম্বল বিছান, তাহার পার্খে হুইটী চর্মাচ্ছাদিত মোড়া শোভা পাইতেছে। বৈঠকধানার পার্ষেই একখানি ইটক নির্মিত ক্ষুদ্র গৃহে একটা শালগ্রামণিলা বিরাজ করিতেছেন। একজন পূজারী আন্ধণ আদিয়া প্রতিদিন যথা সময়ে চারিটী আতপ চাউলে শালগ্রামদেবের ক্ষ্ণাশাস্তি করিয়া যান। সন্ধ্যার সময় কাঁসের ঘণ্টার রোলে সমস্ত গ্রামথানি মুখরিত হইয়া উঠে। কথনও বা কর্ত্তা নিজে দৌহিত্রকে ক্রোড়ে লইয়া দেব-দর্শনের জন্ত তথায় আগমন করেন।

বেলা তিনটা বাজিয়া গিয়াছে। হার্যদেব

ঢলিয়া পড়িয়াছেন। কাজেই রৌজটুকুও

সমস্ত বাড়া ছাড়িয়া পশ্চিময়ারা বরের দাওয়াশ
পোঁছিয়াছে। রামদদেয়র বর্ষায়দী গৃহিনী
আহার শেষ করিয়া উঠিয়া পান মুথে দিয়া
রৌদ্রে আপনার পরিধেয় বস্তেয় অঞ্লখানি
বিছাইয়া হয়াবের চৌকাঠের নিয়কাঠকলক
থানিকে উপাধান রূপে পরিণত করিয়া
শয়ন করিলেন। কনিঠা কলাও প্রবধ্য়য়
আসিয়া কেহ তাঁহার হস্তপদ মর্দনে, কেহ
বা তাঁহার অর্জপক আলুলায়িত কুস্তলের মধ্যে
অঙ্গুলি সঞ্চালিত করিতে লাগিলেন। কলার

ছই বৎসরের শিশুপত্রটী নিকটে বিদয়া
অম্পষ্টভাবে হই একটা ছড়া আর্ত্তি করিয়া
হাস্তের ফোয়ারা ছুটাইতে লাগিল।

রামদদয়ের, ছইটী পুত্র ও গ্রহটী কক্সা।
প্রথম পুত্রটী ইংরেজী ইস্কুলে দিন কতক
পড়িয়াছিল বলিয়া ১৫ টাকা বেতনে জেলার
জজ আদাশতে একটী চাকরীতে নিযুক্ত
ভইয়াছে। ছুটী কম বলিয়া তাহার বাড়ী

আসা এক প্রকার ঘটিয়া উঠে না। কেবল পূজা ও বড় দিনের অবকাশে তুই চারিদিন পল্লীর শ্রীমুখ দর্শন করিতে পায়। বেতনও অল্ল, কাজেই পরিবার লইয়া কর্মন্থলে থাকাও একরাপ অসম্ভব। কনিষ্ঠ পূত্রী গ্রামন্থ জমীদারের তহশিলদারের কার্য্যে নিযুক্ত হইয়া বৈধ উপায়ে প্রায় ২০ া২৫ টাকা উপার্জ্জন করিয়া থাকে। কিন্তীর সময় ভিল বৎসরের অন্ত সময়টা স্বগৃহে নাপন করিবার অবকাশ পায়। গৃহে কোন উৎস্বাদি হইলে মহলের রায়তগণ স্বতঃ প্রব্র হইয়া স্ব স্ব ক্ষেত্রোৎপল্ল তরকারী প্রভৃতি দারা তাহার গৃহ পূর্ণ করিয়া কেলে। রামসদয় জ্যেষ্ঠ পুত্রের নিকট হইতে কোন সাহায়া না পাইলেও পুত্রের সম্মানে আন্তরিক স্থী।

কন্সা ছইটীর মধ্যে একটী বিধবা। সে প্রায় খণ্ডরালয়েই থাকে। বিশেষ কার্যো ভিন্ন পিত্রালয়ে আসিবার তাহার অবসর নাই। অপরটি কন্নদিন হইল পিত্রালয়ে আসিয়াছে।

সকলকে একত্র পাইয়া সহসা নবারের কথাটা গৃহিণীর মনে পড়িয়া গেল। অমনি সেদিন কাহাকে কোন কার্য্যের ভার লইতে হইবে ভাহার একটা সংক্ষিপ্ত মৌথিক তালিকা প্রস্তুত করিয়া ফেলিলেন।

ক্রমে অবশিষ্ট রৌদ্রট্ কুও গৃহ ছাড়িরা
নিকটয় নারিকেল গাছের শীর্ষদেশ আশ্রয়
করিল। গৃহিণী ও পুত্রবধ্বয় তাড়াচাড়ি
উঠিয়া শৈশুপুত্রকে কোলে লইয়া
পিতার নিকট বৈঠকখানার দিকে চলিল।
কলা পিতৃগৃহে আদিলে সংসাবের কাল
হইতে অনেকটা মুক্তি লাভ করে।

রামসদয় তথন সবেমাত্র মধ্যাক্তের 'আলিঞ্জি' ত্যাগ করিয়া গাড়ু ও গামছা লইয়া মুখ প্রকালনে ব্যাপুত ছিলেন।

কন্সার ক্রোড়দেশে শিশু দৌহিত্রকে দেখিয়া বৃদ্ধের আনন্দ উচ্ছ্সিত হইয়া উঠিল। স্তরাং বিরলদ্ত শুক্ত মুখথানা ক্রত্রিম ক্রোধে একটু বিক্বত করিয়া শিশুকে লক্ষ্য করিয়া বলিয়া উঠিলেন—"মার্ বজ্জাত্কে।" শিশুও অমনি এক গাল হাসিয়া মাতামহের শুল্র-লোমময় বুকের উপর ঝাঁপাইয়া পড়িল।

বৃদ্ধের কোন ভ্তা ছিল না। কাজেই দৌহিত্রকে একটা মোড়ার উপর বসাইয়া নিজেই চক্মাক ঠুকিয়া অমি উৎপাদন করিয়া ধ্মপানের উপায় করিয়া লইলেন এবং সেই ভত্ত কম্বলখানির উপর উপবেশন করিয়া হুকা নিংস্ত পুঞ্জীকত ধ্মরাশি ফুংকার দারা 'শিশুর উদ্দেশে প্রেরণ করিয়া তাহার আনন্দ বিধান করিতে লাগিলেন। কর্ত্তার ধ্মপান শেষ হুইলে ক্তা বলিল—"বাবা, নবালের দিনটা ভবে দ্বির ক'রে দিন।"

রামসদয় অমনি ছকাটী নামাইয়া রাথিয়া
গৃহাভাস্তর হইতে একথানি মোটা কাগজের
মলাটে আরত "গুপ্তপ্রেশ" পঞ্জিকা ও
একথানি বছদিনের মরিচাধরা স্থতাবাধা চশমা
বাহির করিয়া আনিলেন। অতি সম্তর্পণে
চশমাথানি নাকে দিয়া, পঞ্জিকাথানি চক্ষ্
হইতে অনেকটা দূরে স্থাপন্ করিয়া প্রায়
অশ্বিণটাকাল ভাহার পৃষ্ঠা উণ্টাইতে
লাগিলেন।

পরে কস্তার প্রতি চাহিরা ইলিলেন—"না দিন ত তিনটা দেখছি, সতেরই, একুশে আর আটাশে; তা আটাশে ত অ'ধার পড়্ছে, সে দিন ত হতেই পারে না; একুশে তারিধ হক্ষে 'বিস্পতিবার'—
'বালিাদিন' সে দিনটাও বড় হবিধা নর। তবে ঐ
'সতেরই দিনটাই প্রশন্ত। সেদিন হচ্ছে আবার ব্ববার
'বুধে বাল তৃতীয়কং' একটু চট্পট কাজগুলো সেরে
নিতে হবে নইলে বারবেলা পড়বে।"

ইত্যবসরে দৌহিত্রটী সকলিকা স্থকাটীকে কম্বলের উপর বিসর্জন দিয়া•বিসল। বৃদ্ধ তাড়াভাড়ি উঠিয়া কম্বল ঝাড়িতে ঝাড়িতে তাহার সহিত অনেকগুলি অভ্ত সম্বন্ধ পাতাইয়া ফেলিলেন।

ক্সাটী ঈষৎ অপ্রতিভ হইয়া পুত্রকে
টানিয়া কোলে লইয়া মিষ্ট ধমকানি দিয়া
বিলল—"এমন তৃষ্টু ছেলে—"

কর্ত্ত। যথন এইরূপে বিব্রত হইরা পড়িয়াছেন এমনি সময়ে পাড়ার মধুদাদা আসিয়া ডাকিল—"কর্ত্ত। বাবু গা' তুলেছেন কি ?"

কর্ত্তাবারু সামলাইয়া লইয়া উত্তর নিলেন "এস, মধু এস।"

সম্ভ্রান্ত পরিবারের মধ্যে অবরোধ প্রথাটা প্রচলিত থাকিলেও পল্লীগ্রামে তাহার তাদৃশ প্রাবল্য দৃষ্ট হয় না। বিশেষতঃ পল্লীগ্রামের কন্তারা এ বিষয়ে অনেকটা নিরস্কৃশ। মধু রামসদয়ের ফুইটা কন্তাকেই ছেলেবেলায় 'কোলে পিঠে' করিয়া 'মানুষ' করিয়াছে। কাজেই মধুর সন্মুথ হইতে পলায়ন কন্তার জাবশুক হইল না।

মধু বাটী প্রবেশ করিয়াই কন্তাকে দেখিয়া সাগ্রহে জিজ্ঞাসা করিয়া লঠিল "এই যে, তুমি কবে এলে ?"

মেরেটীও সবিনয়ে উত্তর দিল "এই চার্নিন হঁ'ল এসেছি।" পরস্পার কুশল প্রশোর পর কন্তা অন্সরে প্রবেশ করিল। মধু কর্তার সহিত বৈষয়িক কথাবার্তায় ব্যাপুত হইল।

পাড়ার পাড়ার টেলিগ্রাফ হইরা পেল বে রামসদয় বাবু সতেরই তারিখ নবায়ের দিন স্থির করিয়াছেন। কাজেই প্রতিবেশীয়াও নিজেদের জন্ত সেই দিনটী স্থির করিল।

দেখিতে দেখিতে নবান্নের দিন সমাগত হইল। পূর্বাদিবদ হাটের জিনিষ তুর্মাল্য হইয়া উঠিল। একটা মূলার দাম তুই পয়সা, পটল, আলু ছয় আনা দের, কদলার দর উত্তরোত্তর বেলা বৃদ্ধির সহিত বৃদ্ধি হইতে লাগিল। সকালে পয়দার তুইটা পাওয়া গিয়াছিল, মধ্যাত্তে হইল দেড়টা, সায়াত্তে একটাও পাওয়া যায় না।

मकारन नवाम इहेर्द विनया शृहिनी পূর্বিদিনই তরকারী কুটিয়া রাথিবার ব্যবস্থা করিলেন। ছয় সাতথানি বঁটী পড়িয়াছে। কেহ লাউ, কেহ কুমড়া, কেহ বার্ত্তাকুর বিনাশ সাধন করিতে বসিয়াছেন। রাম-সদয়ের দৌহিত্রটী উঠানে পড়িয়া চীৎকার করিতেছে "মা, দাদা মেয়েছে।" কেহই দেদিকে লক্ষ্য করিতেছে না। শিশুর ক্রন্দন যথন পঞ্চম ছাড়াইয়া সপ্তমে উঠিল তথন তাহার মাতা তরিবারণকল্পে যেরূপ ৰক্ষার দিয়া উঠিলেন তাহাতে শান্তি স্থাপন হওয়া দূরে থাক, গোলমাল আরও বৃদ্ধি পাইল[°]। পাড়ার ছেলেরা দলে দলে থেগার কল্পনা করিতেছে। আজ তাহাদিগকে মাতা পিতার শাসনাধীনে থাকিতে হয় না স্বতরাং তাহাদের व्यानकरे नर्तारभक्ता क्रमनर्यागा।

রার্ত্তি পর্যান্ত সমন্ত প্রয়োজনীয় স্বব্যাদি

বথান্থানে রক্ষা করিরা গৃহিণী, কল্পা ও পুত্রবধ্বর নিজার্থে গৃহে প্রবেশ করিলেন। সেরাত্রে তাঁহাদের স্থানিজা হইরাছিল কিনা বলা যার না। প্রভাত না হইতেই গৃহিণী আপনার শ্যা ত্যাগ করিয়া. কল্পাকে উঠাইলেন। বধ্দিগকে গৃহহার হইতে ডাকিতে লাগিলেন,—

"বৌমা, ওঠনা মেলা আর কি আছে? কাক. কোকিল যে ডেকে গেল।"

বধ্ৰয়ের নিক্রা অনেকক্ষণ ভক্ত হইয়াছিল, লেপের উষ্ণ কোল ত্যাগ করিয়া কিরুপে বাহির হইবে এক্ষণে তাহাই ভাবিতেছিল। শান্তড়ীর আহ্বানে আর ভাবিবার অবসর পাইল না। তাড়াতাড়ি উঠিয়া আসিয়া শাশুড়ীর সঙ্গে যোগ দিতে হইল।

'অস্নানে' কোন জিনিষ স্পর্শ করিবার উপায় নাই, কাজেই সকলে পৃষ্টরিণী হইছে লান করিয়া আসিলেন। তখন শীতে তাঁহা-দের মুখ'হইতে প্রায় বাক্যানিঃসরণ হয় না। সিক্ত কুন্তলয়াশি পৃষ্টের উপর 'এলাইয়া দিয়া, পরিধেয় বস্ত্রের পাতলা অঞ্চলটুকুতে গাত্র আরত করিয়া পূণ উপনাহে এঘর ওঘর করিয়া বেড়াইতে লাগিলেন। কেহবা কেশের দৈর্ঘ্য দৌরাজ্যো তাহাকে মন্তকের উপর চূড়াকারে বাঁধিয়া র'বিলেন।

ইতিমধ্যে পাকশালে উনান জলিয়াছে।
রন্ধনের ভ্রানে এবং ছ্যাক্ ছ্যাক্ শব্দে পাড়া
আমোদিত হইয়া উঠিয়াছে। গৃহিণী স্তুপীকৃত
কল্বধান্তের • খেতবর্ণ সিক্ত চাউলের নিকট

একথানি প্রকা**ও** শিল পাতিয়া ভাহা পিষিবার উপক্রম করিতেছেন।

গৃহিণীকে এরপ শ্রম্মাধ্য কর্মে নিবৃক্ত দেখিরা গৃহের আরও ছই একজন আসিরা তাঁহার কাজের সহায়তা করিতে লাগিল। অবিলম্বেই সেই চাউলের রাশি চুর্ণ হইরা গেল। পরে তথারা 'পঞ্চামৃত' প্রস্তুত হইতে লা'গল। প্রথমে সেই চাউলচূর্ণের সহিত প্রচুরপরিমাণে হগ্ন, ক্ষীর ও চিনি মিশ্রিত করা হইল। পরে ইক্র টুকরা, পানিফল, কলা, নারিকেল ও মূলা ক্ষুত্র ক্ষুত্র কার্য়া কাটিয়া তাহাতে প্রদত্ত হইল। অধুনা অনেক স্থলে বাদাম কিস্মিদ্ও ইহাতে প্রবেশ-লাভ ক্রিয়াছে।

এই প্**ঞামৃত নবাল্লে**র প্রধান উপকরণ।

গৃহিণীর কাজ শেষ না হইতেই পুরোহিত
ঠাকুর আসিয়া উপস্থিত। পুরোহিতের শিশায়
একটা হরিদ্রাবর্ণের কুল বাধা, পরিধানে
একথানি শুল্র বস্ত্র, বামহস্তে একটা কলণাপত্রের ঠোলায় কতকগুলি অনায়াসলক্ষ
পূজা ও তুলসীপত্র। গাত্রে নামাবলী।
প্রাতঃমান করিয়া পুরোহিত ঠাকুর শীতে
কাঁপিতে কাঁপিতে উঠানের যে অংশে সকালের রৌদ্রটুকু পড়িয়াছে তথায় আসিয়া
দাঁড়াইয়া ডাক দিলেন—"কই গোঁ মা, সব
ঠিকুহয়েছে কি ?"

পুরোহিত ঠাকুরের স্বর শুনিয়া গৃহি^{নী} অর্দ্ধঘোমটাবৃত বদনে বাহিরে আসিয়া ^{ব্রি-}

^{*} হৈমভিক থাজের মধ্যে লঘুথাক্ত কার্তিক্যাসের মধ্যেই পাকিয়া উঠে। কাডেই এ থাজের চাউচই নবালে অধিক ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

लाम-- "व्याख्या हैं।, नमच ठिक्, खे भा धूरेराव बतु तरहरह ।"

নিকটে একটা ঘটাতে তুষারশীতল জল ছিল। পুরোহিতের ইচ্ছা না থাকিলেও গৃহিণীর উপরোধে পদপ্রকালন করিয়া গৃহে প্রবেশ করিলেন। কর্ত্তাও কালবিলম্ব না করিয়া ম্বান করিয়া গামছাথালি স্কম্বে লইয়া যজ্ঞোপবীতের জল নিক্ষাসন, এবং মুথে নানাবিধ মস্ত্র উচ্চারণ করিতে করিতে অন্দরে প্রবেশ করিলেন। তাঁহার শীতের যন্ত্রণাটা মস্ত্রের সঙ্গেই অনেকটা প্রকাশিত হইয়া পড়িতেছিল।

কর্ত্তা গৃহে প্রবেশ করিবামাত্র গৃহিণী তথা হইতে স্থানাস্তরে প্রস্থান করিলেন।

সমুথেই নৃতন চাউল, ডাউল, ম্বত, তরকারীবিশিষ্ট প্রকাশু 'ভোজা' সালান। কর্ত্তা কুশাসনে বিদরা গঙ্গামৃত্তিকার ফোঁটা কাটিয়া আচমন করিলেন। পুরো-ছিত ঠাকুর প্রান্ন বোলআনা অশুদ্ধ মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া কর্ত্তার পিতৃপুক্ষগণের উদ্দেশে সেই 'ভোজা' উৎসর্গ করিয়া দিলেন। ভদস্তে উঠানে একটী মৃৎপাত্রে কতকগুলি নৃতন বিচালী জালিয়া তত্তপরি কয়েকবার 'পঞ্চামৃত' নিক্ষেপ করিয়া বেলাদেবকে নবায় করাইলেন।

এইবার গাভী, কাক ও বাস্তদেবের পালা। সকলকেই কদলীপত্রে করিয়া কতকটা 'পঞ্চামৃত' প্রাদন্ত হইল। তবে বাস্তদেবের সম্মানটাই কিঞ্চিৎ অধিক বলিয়া বোধ হয়। কারণ নারিকেল মালার জল হইতে আরম্ভ করিয়া পান পর্যান্ত কোনটীই তাঁহার বাদ পড়িল না।

এই সকল নিমন্ত্রিতগণের মধ্যে কাকই

নিমন্ত্রকের সম্মান রক্ষা করিতে অধিক তৎপর। কারণ তাহার অভ্যর্থনার জ্ঞাবে সকল দ্রব্য প্রদন্ত হইয়া থাকে তাহার সদাবহার ত দ্রের কথা নিজ্জীব বাস্ত্রদেবের উপরেও বল প্রকাশ করিতে কুঞ্জিত হয় না।

ইহাদের নবার ভোজ শেষ হইলে গৃহের
সমস্ত পুরুষগণ একত্র পূর্ব্বাভিমুখী হইরা
উপবেশন করিলেন। ছোট ছোট ছেলেরা
নৃতন কাপড় পরিয়া একটা মহা ছুলস্থুল বাধাইয়া
দিল। সকলকেই এক একটা পাথর বাটীতে
করিয়া 'পঞ্চামৃত' পরিবেশন করা হইল।
বলা বাছল্য রামসদয়ের গৃহদেবতা শালগ্রামশিলার নবার ইতিপূর্বেই সমাধা হইয়াছে।
প্রথমে সেই প্রসাদ মূথে দিয়া সকলে 'পঞ্চামৃত'
ভোজনে মনঃসংযোগ করিল। পিতা পুত্রে
একত্র উপবেশন করিয়া নবার করা নিষিদ্ধ।
স্থতরাং রামসদয়ের কনিষ্ঠ পুত্র স্থানাস্তরে
আসন প্রাপ্ত ইইল। পুরুষরো উঠিয়া গেলে
স্ত্রীলোকেরাও সেইরূপে নবার শেষ করিল।

দেখিতে দেখিতে গ্রামের ইতরলোকেরা
এক একটা পাত্র হক্তে আসিয়া উপস্থিত
হক্ত লাগিল। গৃহিণী লোকবিশেষে কিঞ্চিৎ
কিঞ্চিৎ 'পঞ্চামৃত' দিয়া সকলকে বিদার
করিতে লাগিলেন। অবশ্র ইহাদের জন্ম
যে 'পঞ্চামৃত' প্রস্তুত করা হইয়াছিল তাহাতে
ছগ্ধ, ক্ষীর ও মিটের ভাগ অপেক্ষাক্কত অর।
তারপর রামী, শ্রামী ও যাহারা বৎসক্রর
মধ্যে ছই একদিন গৃহে বিনা 'রিশ্রমি কোন
কাল করিয়া দিয়াছে তাহারা আসিয়া জ্বটিল।
সকলকেই পরিতোষপূর্ব্বক ভোজন করান
হক্তা।

বৈষ্ণব ভিকুক্দিগের ভিড় আজ ঠেশা

বার না। কারণ আজিকার দিন কেইই ভাহাদিগকে বিষ্থ করে না। সকলে দল বাঁথিরা, বড় বড় ভিলক কাটিরা, গলার মালার বোলা বাঁথিরা 'হরিবোল' বলিয়া গৃহ বারে আদিরা ুদাঁড়াইতেছে। গৃহের যে কেই ভাহাদিগকে মৃষ্টিভিক্ষা প্রদান করিতেছে।

দেখিতে দেখিতে বেলা অধিক হইয়া
উঠিল ৷ গৃহিণী একটা পাত্রে নৃতন ও পুরাতন
চাউল দিয়া একথানি স্বর্ণ ও একথানি রোপ্য
আলভার তহুপরি রাখিয়া দিলেন ৷ সকলে
আসিয়া ভাহাই বামহতে এক একবার ম্পর্শ
করিয়া নিয়লিখিত মন্ত্রটী উচ্চারণ করিতে
লাগিল :—

"ন্তন বাধি পুরাণ থাই জন্ম জন্ম।"
য়ন্ধনের শেষ হইতে অপরাক্ হইয়া গেল।
গাভী, কাক, বাস্তদেব প্রভৃতিকে পর্যায়ক্রমে
ভাত ও নবার দানের পর গৃহের সকলের
আহারাদি শেষ হইল। তৈদান কোন গৃহে
রাত্রিভোজনেরও নিয়ম দেখা বার।

ব্যঞ্জনাদি প্রতিবংসর একই প্রকার।
তাহার পরিবর্জনের কোন নিরম নাই। বৃদি
দৈবছর্জিপাকে কোন একটা ব্যঞ্জন বাদ
পড়িরা যায় তাহা হইলে সমস্ত বংসর তাহা
গৃহিণীর পরিতাপের বিষয় হইয়া থাকে।
গৃহের সকলের ভোজন হইলে পূর্কোক্তরূপে
অন্যান্য লোকদিগকে ভোজন করান
হয়।

এই সকল রাজস্ম ব্যাপার শেষ হইতে অগ্রহায়ণ মাসের ক্ষুদ্র দিন অবসান হইয়া আসিল। স্থ্যদেব অস্তাচল আশ্রম করিলেন। গৃহের সমস্ত কাজ শেষ হইতে রাজি প্রায় নয় ঘটকা অতীত হইয়া গেল। সমস্ত দিন অসাধারণ পরিশ্রমের পর জীলোকেরা একণে বিশ্রামের অবকাশ পাইলেন। সমস্ত গ্রাম শান্ত হইল। কেবল উচ্ছিইপ্রেয়াসী সারমেয় ক্লের বিবাদ ধ্বনি নবায়ের কলরবস্থতি রক্ষা করিতে লাগিল।

প্রীজগদীশ বাজপেরী।

মদন ভস্ম।

নিম্নলিখিত কুল প্রবন্ধটি একজন মুসলমানের লেখা। ইনি : সংস্কৃত সাহিত্যের অন্তরে কতদূর প্রবেশলাভ করিয়াছেন এই প্রবন্ধ ভাষার পরিচায়ক! আজকাল বাঙলা সাহিত্যকে জাতীয় সাহিত্যকপে গ্রহণের দিকে আমাদের মুসলমান ভ্রাতাগণের মধ্যেও একটি চেঠা দেখা ঘাইতেছে। ইহা বড়ই স্থের বিষয়। ধর্মসন্থাক আমাদের পরক্ষারের বতই মতভেদ থাক্ক—আমহা উভয় সম্প্রদায়ই বাঙালী—বিধাতা শবিধানে আমাদের উভয়কেই একতে বাঁচিতে মরিতে হইবে। এ অবহায় আমাদের মধ্যে সাহিত্যের একতা বিশেবভাবে প্রাথনীয়;
—কেন না সাহিত্যেই পরক্ষারের মিলনের প্রেট উপার। বর্ত্তমান লেখকের আমাদের প্রাতন সাহিত্যের একতা বিশেবভাবে আমাদের প্রাতন সাহিত্যের একতা বিশেবভাবে প্রাতন সাহিত্যের একতা বিশ্বর প্রাতন সাহিত্যের প্রাতন সাহিত্যের প্রাতন সাহিত্যের প্রাতন সাহিত্য বিশ্বর প্রাতন সাহিত্যের প্রাতন সাহিত্যের প্রাতন সাহিত্য বিশ্বর প্রাতন সাহিত্যের সাহিত্য বালে বিশ্বর প্রাতন সাহিত্য বালে বিশ্বর প্রাতন সাহিত্য বালে বিশ্বর প্রাতন সাহিত্য বালে বিশ্বর প্রাতন সাহিত্য বালে বিশ্বর সাহ

প্রীকপুরাণের রূপকের (allegory) দিবপার্মতীর বিরহাদি বর্ণনচ্ছলে প্রাচীন চমংকারিছে আমরা মুগ্ন হই। কিন্তু হিন্দু- কবিগণ ছর ঋতুর কি স্থান্ত বিরহাদেও বে স্থানের রূপক আছে, তাহা আঁকিয়াছেন।
কর্মন অনুসন্ধান করিয়াছেন ? দক্ষবজ্ঞে সতী দেহত্যাগ করিয়াছেন।

সভীশোঁকে পঞ্চপতি প্রমণগণের সহিত যজ্ঞভদ্দ করিতেছেন। চাঁরিদিকে ভূতগণের তাওব নৃতা! হেমন্তের কি অরপ বর্ণনা। প্রকৃতিতে আর শরতের সেই সঙ্গীবতা নাই। গাছের পাতা পড়িতে আরস্ক করিরাছে এখনও কিন্তু একেবারে মৃড়া হয় নাই। সরোবরে এগনও কমণ শোভা পাইতেছে। কিন্তু উত্তরের কন্কনে বাতাস আর ভূষারপাত শীঘই শবতের শেষ চিত্রগুলি লোপ করিতে বিদিরছে। প্রথমেই হেমন্তের বর্ণনা কেন? অগ্রহারণ (হায়ন—বংসর) শক্তেই তাহা প্রহাণ। পূর্ণের হেমন্ত্র ঝারস্ত হইতেই ঝার বর্ণনা করিয়াছেন।

হেমন্ত গেণ। শীত আদিশ। হেমন্তেই প্রকৃতিব শোভার দক্ষম্ভ বিনাশ ই ব্যাপার আরম্ভ হইরাছিল। ১ এখন ভাষা সম্পূর্ণ হইরাছে। রক্ষশুলি নেড়া মূড়া হইরা দাঁড়াইরা আছে। মাঠের ধান কাটা হইরা গিরছে। চারিদিকে ক্ষেত্র ধৃধৃ করিতেছে। যেন সমস্ভ প্রকৃতির উপর কি এক ভাষণ অত্যাচার হইরা গিরছে। এখন যেন জগং নরন মুদিরা যোগাদনে বদিরছে। কবি ক্ষপক্ষলে বলিলেন, সতীর দেহ শশু বিশশু হইল দেখিরা মহাদেব তপ্তায় বদিলেন।

ব্দস্ত আদিল। মলর ও নব্মশ্বরী

দেখা দিল। প্রকৃতি পুনজ্জীবিতা হইল
আবি সতীও পুনরায় জন্মগ্রহণ করিলেন।

কোকিল পঞ্চমে গাছিতে লাগিল। অলিগণ শুঞ্জন আরম্ভ করিল। চারি দিকে ফুলে ফুলমর। এইবার জগতের জড়ভাব গেল। এখন সকলই আনন্দমর। কবি বলিলেন মহাদেবের তপ্তা ভালিরা পার্বভীর সহিত্ত মিলন সংঘটন করিতে মদন আদিরা উপস্থিত, হাতে তাঁর ফুলবাণ, বসস্ত আর রভি (প্রীতি) তাঁর সহচর! মধুমানের কি কবিত্বপূর্ণ বর্ণনা!

তারপর শিবের ক্রোধে মদন ভস্ম হইয়া গেলেন আর পার্ব্বতীও পঞাগ্নি মধ্যস্থা হইয়া ভপস্থা আরম্ভ করিলেন। গল্পের ভাষার বলিতে গেলে, গ্রীম আরম্ভ হইল। চারিদিকে বেন আঞ্জনের হল্কা বহিতে লাগিল।

পাৰ্কতার উগ্র তপস্থা শেষ হইল যথন গ্রীষ্ম গেল। শিবপাৰ্কতার মিলন হইল অর্থাৎ বর্ষা আসিল; মদন পুনন্ধাবিত হইলেন। বর্ষায় যে বিরহীদের মদনবাধা জাগিয়া উঠে তা ত প্রসিদ্ধই আছে খ্ৰা,— মেঘালোকে ভবতি স্থিনোহপ্যতথা বৃত্তিচেতঃ, কঠালেষপ্রগায়না জনে কিং পুনদুরিসংস্থে।

তার পর হরগোরা মনঃস্থথে মিলন উপভোগ করিতে লাগিলেন। ছরিৎশস্তত্পার্ত,
কুমুদকহলারবিভূষিত, গুলুজ্যোৎসাবিধাত
শরতে প্রকৃতি, স্বামি-দোহাগিনী নারীর স্থায়
ধরাতলে প্রকাশিতা হন। তাই শিবহুগার
মিলন সম্ভোগচ্ছলে কবি ধরাতলে স্বম্মেরী
প্রকৃতির প্রকাশ বর্ণনা করিং:ছেন।
সহস্মদ শ হীহুলাই।

श्रश।

একটা দরিদ্র লোক অন্ধকার কুট্রীতে বসিয়া নিজ শোচনীয় অবস্থা এবং ভগবানের রাজ্যে অন্তায় ও অবিচারের কথা ভাবিতে-ছিল। দরিদ্র অভিমানের বণীভূত হইয়া विनाट नाशिन, "लादक" कर्पात लाशह দিয়া ভগবানের স্থনাম বাঁচাইতে চায়। জন্মের পাপে যদি আমার এই হর্দশা হইত, আমি যদি এতই পাপী হইতাম, তাহা হইলে নিশ্চর এই জন্মে আমার মনে পাপচিন্তার স্রোত এখনও বহিত, এত ঘোর পাতকীর মন কি একদিনে নিৰ্মাণ হয় ? আৰু ওই পাডার তিনকড়ি শীল, তাঁহার যে ধনদৌলত স্বর্ণরোপ্য नामनामी, कर्यकन मठा इहेरन निन्दब्रहे भूकी कत्म তिनि कगिष्यां नाधु नहां या हिलन, কিন্তু কই ভাহার চিহ্নাত্রও এই জন্ম **८मिथ ना।** धमन निष्ठंत भाको वनमारत्रभ कारल नाहे। ना, कर्यदाम जगवात्नत्र काँकि, मन जूलान कथा माता। शामञ्जात रंफ् চতুরচূড়ামণি, আমার কাছে ধরা দেন না, তাই রক্ষা-নচেৎ উত্তম শিক্ষা দিয়া সব চালাকী বাহির করিতাম।" এই কথা বলিবামাত্র দরিক্র দেখিল হঠাৎ তাহার অম্কার ঘর অতিশয় উজ্জ্ব আলোকতরঙ্গে ভাসিয়া গেল, অলকণ পরে আলোক তরক অন্ধকারে মিলাইয়া গেল, আর দে দেখিল ভাহার দল্মখে একটি স্থলর কৃষ্ণবর্ণ वानक. अमीन शाक मांजारेबा विश्वाह-মৃহ হাসিতেছে, কিন্তু কোনও কথা কহিতেছে मयूत्रभूष्ट् ও পায়ে নৃপুর দেখিয়া পরিত্র বুঝিল স্বরং শ্রামস্থলর আদিরা তাহাকে बता क्षेत्रिकारहर । पतिस व्यक्षिक हेरेन.

একবার ভাবিল প্রণাম করি, কিছ বালফের হাসিমূপ দেখিয়া কিছুতেই প্রণাম করিবার প্রবৃত্তি হইল না,—শেষে মুধ হইতে এই कथारे वाहित रहेगा ताल "अत्त तकही, जूरे थींन (कन?" वानक शामिश्रा विनन, "কেন, তুমি ডাকিলে না ? এইমাত্র আমাকে চাবুক মারিবার প্রবল বাদনা তোমার মনে ছিল। তা, ধরা দিলাম, উঠিয়া চাবকাও না।" দরিক আরও অপ্রতিভ হইল, ভগবানকে চাবুক মারিবার ইচ্ছার জন্ত অমুতাপ নহে, কিন্তু স্নেহের পরিবর্ত্তে এমন স্থন্দর বালকের গারে হাত লাগনেটা ঠিক ক্রচিদঙ্গত বলিয়া (वाध इहेन ना। वानक आवात्र वनिन. "দেথ, হরিমোহন, যাহারা আমাকে ভয় না করিয়া স্থার মত দেখে, স্নেহভাবে গাল দের, আমার সঙ্গে থেলা করিতে চার, তাহারা আমার বড প্রিয়। আমি খেলার জন্মই জগৎ সৃষ্টি করিয়াছি, দর্বনা খেলার উপযুক্ত मनो थूँ कि उहि। कि इ, छारे, भारे उहि ना। नकल आभात उपत द्वाध करत, नावी करत, नान ठाव, मान ठाव, मुक्ति ठाव, ভक्ति ठाव, কই আমাকে ত কেহ চার না। যাহা চার, वािम मिरे। कि कतिव मुब्हेरे कतिए **इब, नहित्न आ**मात्क हि किंबा शहित। তুমিও, দেখিতেছি, কিছু চাও। বিরক্ত হইয়া চাবকাইবার লোক চাও, আমাকে সেই সাধ " ৰিটাইবার জন্ম ডাকিয়াছ। চাবুকের প্রহার ধাইতে আসিরাছি—যে যথা মাং প্রপাততে। তবে যদি প্রহারের আগে আমার ইংখ ভনিতে চাও, আমার প্রণালী বুঝাইয়া দিব। কেমন, রাজী আছ ?" হরিমোহন বলিল,

"পারিবি ত ? দেখিতেছি, বড় বকিতে জানিস, কিন্তু তোর মত কচি ছেলে যে আমাকে কিছু শিখাইতে পারিবে, তাহা বিশাস করিব কেন ?" বালক আবার হাসিরা বলিল, "এস, দেখ, পারি কিনা।"

এই বলিয়া শ্রীকৃষ্ণ হরিমোহনের মাথায় হাত দিলেন। তথনই দরিশ্রের সর্বশরীরে বিগ্নাতের স্রোত খেলিতে লাগিল, মূলাধারে ভপ্ত কুম্বলিনাশক্তি অগ্নিময়ী ভূজজিনীর আকাবে গর্জন করিয়া ব্রহ্মবন্ধে ছুটিয়া আদিল, মস্তিষ প্রাণশক্তির তরকে ভরিয়া গেল। পরমূহুর্তে হরিমোহনের চারিধারে ঘরের দেওয়াল যেন দূরে পলাইতে লাগিল, নামরূপময় জগৎ যেন তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া 🕻 অনস্তে লুকায়িত হইল। হরিমোহন বাইজানশুভা হইল। যথন আবার চৈত্ত হইন, সে দেখিল কোন অচেন। বাড়ীতে বালকের সঙ্গে দাঁড়াইয়া আছে, সম্মুথে গদীতে বিদিয়া গালে হাত দিয়া একজন বৃদ্ধ প্ৰগাঢ় চিন্তায় নিম্ম রহিয়াছেন। দেই ঘোর হশ্চিস্তাবিক্বত স্থান্যবিধারক নিরাশাবিমর্য মুখমণ্ডল দেখিয়া হরিমোহন বিশ্বাস করিতে চায় নাই যে এই বুদ্ধ গ্রামের হৰ্তাকৰ্তা তিনকড়ি শীল। শেষে অতিশয় ভীত হইয়া বালককে বলিল, "कि করিলি কেষ্টা, চোরের মত খোর রাত্রিতে পরের বাড়ীতে ঢুকিলি 📍 পুলিস আসিরা ধরিয়া প্রহারের চোটে হইজনের প্রাণ বাহির করিবে যে। তিনকড়ি শীলের প্রতাপ षानिम ना।" वालक शामिश्रा विलल, "थूव জানি। কিন্ত চুরি আমার পুরাতন ব্যবসা, পুলিদের সকে আমার বেশ ঘনিষ্ঠতা আছে,

ভয় নাই। এখন তোমাকে স্ক্রনৃষ্টি দিলাম, বুদ্ধের মনের ভিতর দেখ। তিনকড়ির প্রতাপ জান, আমার প্রতাপও দেখ।" তথন হরি-মোহন বৃদ্ধ তিনকড়ির মন দেখিতে পাইল। দেখিল, যেন শক্র আক্রমণে বিধ্বস্ত ধনাঢ়াা-নগরী, সেই তীক্ষ্ণ ওজ্বিনী বৃদ্ধিতে কত ভাষণমূর্ত্তি পিশাচ ও রাক্ষদ প্রবেশ করিয়া শাস্তি বিনাশ করিতেছে, ধ্যান ভঙ্গ করিতেছে, হুথ লুষ্ঠন করিতেছে। বুদ্ধ প্রিয় কনিষ্ঠ পুত্রের সঙ্গে কলহ করিয়াছেন, তাড়াইয়া দিয়াছেন, বৃদ্ধকালের স্বেহের পুত্রকে হারাইয়া শোকে নুষমান, অথত ক্রোধ, গর্বা, হঠকারিতা হৃদয় বাবে অর্গন দিয়া সাল্লী হইয়া বৃদিয়া আছে। ক্ষমার প্রবেশ নিষেধ করিতেছে। কলার নামে তৃশ্চরিত্রা বলিয়া কলক রটিয়াছে, বুদ্ধ তাঁহাকে বড়ৌ হইতে তাডাইয়া প্রিয় কন্তার জন্ত কাঁদিতেছেন, রুদ্ধ জানেন সে নির্দোষ, কিন্তু সমাজের ভয়, লোক্লজ্জা, অহঙ্কার, সার্থ সেহকে চাপিয়া ধরিয়াছে। সহস্র পাপের স্থৃতিতে বুদ্ধ ভাত হইয়া বাৰবাৰ চমকিয়া উঠিতেছে; তথাপি পাপপ্রবৃত্তির সংস্থারে দাহদ বা বল নাই। মাঝে মাঝে মৃত্যু ও পরলোকের চিস্তা বৃদ্ধকে অতি নিদারুণ বিভীষিক। দেখাইতেছে। হরি-মোহন দেখিল; মরণ চিস্তার পশ্চাৎ হইতে বিকট যমপুত কেবলই উঁকি মারিভেছে ও কপাটে ঠক ঠক করিতেছে। যত বার এই রূপ শব্দ হয় বুদ্ধের অন্তরাত্মা ভয়ে উন্মন্ত হইয়া চীংকার করিয়া উঠে। এই ভয়ঙ্কর দৃশ্ত দেখিয়া হরিমোহন আতক্ষে বালকের দিকে চাহিয়া বলিল, "এ कि রে কেষ্টা। ভাবিতাম 'বুদ্ধ পরম স্থী।"

ৰলিল, "ইহাই আমাৰ প্ৰতাপ। বলদেখি কাহার প্রতাপ বেনী; ও পাড়ার তিনকড়ি नीरनत्र ना देवकुश्वामी श्रीकृत्भव ? तनथ, हति-মোহন, ুআমারও পুলিশ আছে, পাহারা আছে, গভর্ণমেণ্ট আছে, আইন আছে, বিচার আছে, আমিও রাজা সাজিয়া খেলা করিতে পারি, এই খেলা কি তোমার ভাল লাগে।" हित्रियाहन विनलः, "ना वावा। এ ত वफ़ वन থেলা। তোর বুঝি ভাল লাগে?" বালক হাসিয়া বলিল, "আমার সব খেলা ভাল লাগে। চাবকাইতেও ভালবাসি, চাবুক খাইতেও ভাল বাসি!" তাহার পর বলিল, "দেথ হরিমোহন ভোমরা কেৰল বাহিৎটা দেখ, ভিতরটা দেখি-ৰার স্কাদৃষ্টি এখনও বিকাশ কর নাই। मिहे क्रिकेट वन, जूमि इःथी, जात्र जिनकि ए স্থী। এই লোকটির কোনই পার্থিব অভাব নাই—অথচ তোমার অপেকা এই লক্ষণতি কত অধিক হঃধ ষম্ভনা ভোগ করি-তেছে। কেন, বলিতে পার? মনের ष्परहात्र ऋथ, मत्नित्र व्यवहात्र इःथ। ऋथ इःथ মনের বিকার মাতা। যাহার কিছু নাই বিপদের মধ্যেও পরম স্থী হইতে পারে। चावात्र (एव कृषि (यमन नौत्रम भूर्ग) पिन কাটাইয়া মুখ পাহতেছ না কেবল হংথ চিন্তা ক্রিভেছ ইনিও সেইরূপ নীর্দ পাপে দিন काछोहेमा क्वरनहे इःविश्वा करतन। তাই পুণ্যের ক্ষণিক হংধ পাপের ক্ষণিক হংধ বা পুণ্যের ক্ষণিক হঃধ পাপের ক্ষণিক সুখ। **এই चटम आ**नम नारे। आनम आगारतत ছবি আমার কাছে; আমার কাছে যে আসে, পড়ে, আমাকে দাধে, আমার প্রেমে

আমার উপর জোর করে; অত্যাচার করে; সে আমার আনন্দের ছবি আদার করে।" হরিমোহন আগ্রহ পূর্বক শ্রীক্ষের কথা ভনিতে লাগিল। বালক আবার বলিল; "আর দে**থ হরিমোহন শুক্ষ পুণ্য** তোমার নিকট নীরস হইয়া পড়িয়াছে অথচ সংস্থারের প্রভাব তুমি ছাড়িতে পার না; সেই তুচ্ছ অহন্ধার জয় করিতে পার না। বুদ্ধের নিকট পাপ নারস হইয়া পড়িয়াছে অথচ সংস্থারের প্রভাবে বিভানৰ তাহা ছাড়িতে না পারিয়া— ইহজাবনে নরক যন্ত্রণা ভোগ করিতেছেন। ইহাকে পুণোর বন্ধন পাপের বন্ধন বলে। অজ্ঞানজাত সংস্কার গেই বন্ধনের রজ্জু। কিন্ত বৃদ্ধের এই নরক যন্ত্রণা বড় ভভ অবস্থা; ভাহাতে তাঁহার পরিকাণও মঙ্গল হইবে।

হরিমোহন এতক্ষণ নীরবে কথা শুনিতে-ছিল, এখন বলিল, "কেষ্টা, তোর কথা বড় মিঠে, কিন্ত আমার প্রত্যয় হইতেছে না। স্ব্রংথ মনের বিকার হুইতে পারে, কিছ বাহিক অবস্থা তাহার কারণ। দেখ, কুধার জালায় যথন মন ছটপট করে, কেহ কি পর্ম স্থা হইতে পারে ? অথবা যথন রোগে বা যন্ত্রণায় শরীর কাতর হয়, তথন কি কেহ তোর কথা ভাবিতে পারে ?" বালক বলিল, "এস, হরিমোহন, তাহাও তোমাকে দেখাইব। এই বালয়া বালক আবার হরিমোহনের মাথায় হাত দিল, স্পর্শ অমুভব করিবামাত হরি-মোহন দেখিল, আর তিনকড়ি শীলের বাড়ী নাই, নিৰ্ক্ষন স্থায় পৰ্বতের বায়ুদেবিত **শি**थत्त्र **এकजन महाामी जामीन,** धारिन मध, চরণ প্রাস্তে প্রকাপ্ত ব্যাঘ প্রহরীর ভার

শারিত। বাাজুদেথিয়া হরিমোইনের চরণ-ব্যু অগ্রসর হইতে নারাজ হইল, কিন্তু বালক তাহাকে টানিয়া সন্ন্যাসীর নিকট লইয়া গেল। বালকের সঙ্গে জোরে না পারিয়া হরিমোহন অগত্যা চলিল। বালক বলিল, "দেথ হরি-মোহন !" হরিমোহন চাহিয়া স্ম্যাসীর মন তাহার চক্ষের সামনে খোলা-থাতার মত রহিয়াছে, তাহার পৃষ্ঠায় পৃষ্ঠায় **बोक्रक नाम महस्रवात** লেখা। নির্বিকল্প সমাধির সিংহ দ্বার পার হইয়া স্ব্যালোকে শ্রীক্ষরে সঙ্গে ক্রীড়া করিতে-ছেন। আবার দেখিল, সন্ন্যাসী অনেক দিন অনাহারে রহিয়াছে, গত ছই দিন শরীর ক্ষুৎপিপাসায় বিশেষ কষ্ট পাইয়াছে। হরি-মোহন বলিল, "এ কিরে, কেষ্টা ? বাবাজী তোকে এত ভালবাদেন, অথচ ক্ষ্ৎপিপাদা ভোগ করিতেছেন। তোর কি কোনও জ্ঞান কাণ্ড নাই! এই নির্জ্জন ব্যাঘ্রসঙ্কুল অরণ্যে কে তাঁহাকে আহার দিবে !" বালক বলিল, "আমি দিব। কিন্তু আর এক মজা দেখ।" হরিমোহন দেখিল, ব্যাঘ্র উঠিয়া তাহার থাবার এক প্রহারে নিকটবন্তী বন্মীক ভাঙ্গিয়া দিল। ক্ষুদ্র শত শত পিপীলিকা বাহির হইয়া জোধে সন্মাসীর গায়ে উঠিয়া দংশন করিতে লাগিল। সন্ন্যাসী ধ্যানমগ্ন, নিশ্চল, অটল। তথন বালক সন্নাসীর কর্ণকুহরে অতি মধুর স্বরে একবায় ডাকিল "সথে !" সন্ত্যাসী চকু উন্মীলন করিলেন। প্রথমে মোহ-জালাময় দংশন অহুভব করেন না, তথনও কর্ণকুহরে সেই বিশ্বণাঞ্ছিত চিত্তহারী বংশীরব বাজিতেছে— যেমন বৃন্দাবনে রাধার কাণে বাজিয়াছিল। তাহার পরে শত শত দংশনে বৃদ্ধি শরীরের

मिटक चांक्र है रहेग। मझांनी निष्टान ना— সবিশ্বরে মনে মনে বলিতে "এ কি ? আমার এমন ত কখন হয় নাই। যাক্, জীক্ষ্ণ আমার দঙ্গে ক্রীড়া করিতেছেন, কুদ্র পিপীলিকাচয় রূপে আমাকে দংশন করিতেছেন।" হরিমোহন দেখিল; দংশনের জালা বুদ্ধিতে আর পৌছে না, প্রত্যেক দংশনে তিনি তীব্ৰ শারীরিক আনন্দ অমুভব করিয়া कृष् नाम উচ্চারণ পূর্বক অধীর আনন্দে হাততালি দিয়া নৃত্য করিতে লাগিলেন। পিপীলিকাগুলি মাটীতে পডিয়া পালাইয়া গেল। হরিমোহন সবিশ্বয়ে জিজ্ঞানা করিল: "কেষ্টা, একি মায়া!" বালক হাতভালি দিয়া তৃইবার একপায়ের উপর ঘুরিয়া উচ্চ-হাপ্ত করিল। "আমিই জগতের একমাত্র যাহকর। এই মাগা বুঝিতে পারিবে না, এই আমার পরম রহস্ত। দেখিলে ? যন্ত্রণায় মধ্যেও আমাকে ভাবিতে পারিলেন ত! আবার দেখ।" সরাদী প্রকৃতিস্থ হইয়া আবার বসিলেন; শরীর ক্ষুৎপিপাসা ভোগ করিতে লাগিল, কিন্তু হরিমোহন দেখিল সর্গাসীর বুদ্ধি সেই শারীরিক বিকার অনুভব করিতেছে মাত্র. কিন্তু ভাহাতে বিকৃত বা লিপ্ত হইতেছে না। এই সময়ে পাহাড় হইতে কে মধুর বংশী-বিনিন্দিত স্বরে ডাকিল, "দখে'!" মোহন চমকিল। এ যে ভামস্থলরেরই মধুর বংশীবিনিন্দিত স্বর। তাহার পার দ্বেথিল, শিলাচয়ের পশ্চাৎ হইতে একটা স্থলর কৃষ্ণবর্ণ বালক থালায় উত্তম আহার ও ফল লইয়া আসিতেছে। হরিমোহন হতবুদ্ধি হইয়া শ্রীক্ষের দিকে চাহিল। বালক তাহার পার্মে দাঁড়াইয়া আছে, অথচ যে বালক

আসিতেছে, সেও অবিকল শ্রীক্ষা অপর বালক আসিয়া সন্ন্যাসীকে থালা দেখাইয়া विनन, "(नथ, कि এনেছि।" मन्नामी হাসিয়া বলিলেন, "এলি ? এতদিন না খাওয়াইয়া রাথিলি যে ? যাকৃ, এলি ত বস্, আমার मद्भ था।" मन्नामी ७ वानक मिट थानाव খান্ত থাইতে বিদল, প্রম্পারকে খাওয়াইতে লাগিল, কাড়াকাড়ি করিতে লাগিল। আহার শেষ হইলে বালক থালা লইয়া অন্ধকারে মিশিয়া গেল।

হরিমোহন কি জিজ্ঞাসা করিতে যাইতে-हिल. इठा९ (मिथल ब्रीक्स बात नारे, সন্নাদীও নাই, বাান্তবাই, পর্বতওনাই। দে একটা ভদ্রপল্লীতে বাস করিতেছে, বিস্তর धनामान बाह्, जीशतियात बाह्, ताक ব্রাহ্মণকে দান করিতেছে, ভিক্ষুককে দান করিতেছে, ত্রিদদ্ধা করিতেছে, শাস্ত্রোক্ত আচার স্যতে রক্ষা করিয়া রঘুনন্দন প্রদর্শিত পথে চলিতেছে. আদর্শ পিতা. আদর্শ স্বামী, আদর্শ পুত্র হইয়া জীবন-যাপন করিতেছে। কিন্তু পরমূহর্তে ভীত হইয়া দেখিল যে যাহারা সে ভদ্রপল্লীতে বাদ করে. তাহাদের মধ্যে লেশমাত্র সদ্ভাব বা व्यानन नारे, यञ्चव९ वाहित्तत्र व्यानात क्याटकरे তাহারা পুণা জ্ঞান করিতেছে। প্রথমটা হরি-মোহনের যেমন আনন্দ হইয়াছিল, এখন ভেমনি যন্ত্ৰণা হইতে লাগিল। তাহার বোধ হইল যেন তাছার বিষম ত্রুফা লাগিয়াছে. কিন্তু জল পাইতেছে না, ধূলি থাইতেছে. কেবলই ধূলি কেবলি ধূলি অনন্ত ধূলি থাইতেছে। সেই স্থান হইতে প্লায়ন করিয়া সে আর এক পল্লীতে গেল, সেইখানে

একটা প্রকাণ্ড অট্টালিকার সন্মুখে অপূর্ব জনতা ও আশীর্কাদের রোল উঠিতেছিল। হরিমোহন অগ্রসর হইয়া দেখিল, তিনক্ডি শীল দালানে বসিয়া সেই জনতার মধ্যে ধন করিতেছেন, বিভরণ কেহই নিরাশ হইয়া ফিরিতেছে ন।। হরিমোহন উচ্চহাস্ত করিল, সে ভাবিল "এ কি স্বপ্ন। তিনকড়ি শীল আবার দাতা।" তাহার পরে সে তিনক্ডির মন দেখিল। বুঝিল, সেই মনে লোভ, ঈর্ষা, কাম, স্বার্থ ইত্যাদি সহস্র অতৃপ্তি ও কুপ্রবৃত্তি দেহি দেহি রব করিতেছে। তিনকড়ি পুণ্যের খাতিরে, যশের থাতিরে, গর্মের বশে সেই ভাবগুলি ছাপাইয়া রাথিয়াছেন, অতৃপ্ত রাথিয়াছেন, চিত্ত হইতে ভাডাইয়া দেন নাই। এই সময় আবার কে হরিমোহনকে ধরিয়া তাড়াতাড়ি প্রলোক ভ্রমণ করাইয়া আনিল। ছরিমোহন हिन्दूत नतक, शृष्टीरनत नत्रक, मूननमारनत नत्रक, औकामत नत्रक, हिन्तृत वर्ग, शृष्टारनत चर्न, मूननभारनत चर्न, औकरनत चर्न, आत কত নরক, কত স্বর্গ দেথিয়া আসিল। তাহার পরে দেখিল, সে নিজ বাড়ীতে পরিচিত ছেঁড়া মাহরে ময়লা তোসকে ভর দিয়া ব্যিয়া আছে, সম্মুখে শ্রামস্থলর। বালক বলিল, "ৰড বাত্ৰি হইয়াছে, বাড়ীতে না ফিরিলে সকলে আমাকে বকিবে, মারামারি আরম্ভ করিবে। সংক্ষেপে বলি। যে ফুর্গ নরক দেখিলে, সে অপ্রজগতের, কল্লনাম্পুট। মা**সু**ষ মরিলে স্থর্গনরকে বায়, গতভানের ভাব অভ্তত ভোগ করে। তুমি পূর্ক জন্ম পুণ্যবান ছিলে, কিন্তু প্রেম তোমার ছদয়ে शान शारे नार, ना जूमि अधेर्यतं का

व्यवश्यम्, २०२७

বাসিয়াছ না মাস্যকে। প্রাণত্যাগের পরে স্বপ্নস্থাতে দেই ভদ্রপলীতে করিয়া পূর্ব্ব জীবনের ভাব ভোগ করিতে লাগিলে, ভোগ করিতে করিতে দে ভাব আর ভাল লাগে না, প্রাণ আকুল হইতে লাগিল, সেখান হইতে গিয়া ধূলিময় নরকে বাস করিলে, শেষে জীবনের পুণ্যফল ভোগ কবিয়া আবার তোমার জন্ম হইল। সেই জীবনে কুদ্র কুদ্র নৈমিত্তিক দান ভিন্ন, নীর্স বাহ্যিক কাহারও ব্যবহার ভিন্ন অভাব করিবার জন্ম কিছু কর নাই বলিয়া এই জন্মে ভোমার এত অভাব। আর এখনও যে নীরদ পুণা করিতেছ, তাহার কারণ এই যে, কেবল স্বপ্নজগতের ভোগে পাপপুণ্য সম্পূর্ণ ক্ষা হয় না, পৃথিবীতে কর্মফল ভোগে ক্ষয় হয়। তিনকড়ি গতজন্মে দাতাকর্ণ ছিলেন. ব্যক্তির আশীর্কাদে এই জন্মে লক্ষপতি ও অভাবশূন্ত হইয়াছেন, কিন্তু চিত্ত-শুদ্ধি হয় নাই বলিয়া অতৃপ্ত কু প্রবৃত্তি এখন পাপ ষারা তৃপ্ত করিতে হইয়াছে। কর্মবাদ বুঝিলে কি ? পুরস্কার বা শান্তি নহে -কিন্তু অমঙ্গলের দারা অমঞ্জল श्रुष्ट মঙ্গল হারা মঙ্গল স্ষ্টি। ইহা প্রাকৃতিক পাপ অভভ, তাহা দারা হঃখ স্টু হয়; পুণ্য ওড, তাহা হারা স্থ স্ট হয়। এই বাবস্থা চিত্তভদ্ধির জন্ত, অভত বিনাশের জ্লন্ত। দেখ হরিমোহন, পৃথিবী আমার বৈচিত্রাময় জগতের অতি ক্ষুদ্র অংশ কিন্ত সেথানে কর্ম্মবারা অগুভ বিনাশ করিবার জন্ম তোমরা জন্মগ্রহণ কর। যথন পাপ-পুণ্যের হাত হইতে পরিত্রাণ পাইয়া প্রেম-রাজ্যে পদার্পণ কর, তখন এই কার্য্য হইতে

অব্যাহতি পাও। প্রজন্ম তুমিও অব্যাহতি পাইবে। আমি আমার প্রিয় ভগিনী শক্তিও তাহার সহচরী বিফাকে তোমার কাছে পাঠাইব, কিন্তু দেখ, এক সর্তু আছে, তুমি আমার খেলার সাথী হইবে, মুক্তি চাহিতে পারিবে না। রাজি?" হরিমোহন বলিল, "কেষ্টা, তুই আমাকে গুণ করিলি। তোকে কোলে লইরা আদর করিতে বড় ইচ্ছা করে, যেন এই জীবনে আর কোন বাসনা নাই।"

বালক হাগিয়া বলিল, "হরিমোহন, কিছু বুঝিলে ?" হরিমোহন বলিল "বুঝিলাম বই কি।" তাহার পরে একটু ভাবিয়া वनिन, "अदत दक्षी, आवात काँकि मिनि। করিলি ऋ क्रम কেন. ত কোনও কৈফিয়ত দিস্নি।" এই বলিয়া সে বাশকের হাত ধরিল। বালক হাত কাড়িয়া লইয়া হরিমোহনকে শাদাইয়া বলিল, "দুর হ! এক ঘণ্টার মধ্যে আমার স্ব গুপ্তকথা বাহির করিয়া লইবি 🕍 বালক হঠাৎ প্রদীপ নিবাইয়া সরিয়া সহাত্তে বলিল, "কই, হরিমোহন, চাবুক মারিতে একেবারে ভুলিয়া গেলে যে! সেই ভয়ে তোমার কোলে বিদিলাম না, কথন বাহ্নিক ছঃথে চটিয়া আমাকে উত্তম শিক্ষা দিবে! তোমার উপর আমার লেশমাত্র বিশ্বাস নাই।" হরিমোহন অন্ধকারে হাত বাড়াইল, কিন্তু বালক আরও সরিয়া বলিল, "না, সে স্থুখ তোমার পর-জন্মের জকু রাখিলাম। অনান।" এই বলিয়া অন্ধকার রজনীতে বাশক কোথায় অদৃশ্র হইয়া গেল। হরিমোহন মুপুরধ্বনি শুনিতে শুনিতে জাগিয়া উঠিল। জাগিয়া ভাবিল, "এ কি রকম चर्त्र" (मिश्रमाम ! नद्रक (मिश्रमाम, चर्ग (मिश्रमाम, আদিতেছে, দেও অবিকল শীক্ষ। অপর বালক আদিয়া দল্যাদীকে থালা দেখাইয়া বলিল, "দেখ, কি এনেছি।" সন্ন্যাদী ছাদিয়া বলিলেন, "এলি? এতদিন না খাওয়াইয়া রাখিলি যে? যাক্, এলি ত বদ, আমার দক্ষে খা।" সন্ন্যাদী ও বালক দেই থালার খাস্ত থাইতে বদিল, প্রস্পরকে খাওয়াইতে লাগিল, কাড়াকাড়ি করিতে লাগিল। আহার শেষ হইলে বালক থালা লইয়া অন্ধকারে মিশিয়া গেল।

হরিমোহন কি জিজ্ঞাসা করিতে যাইতে-हिन. श्ठी९ (मिथन जीकुक चात नारे, সন্ন্যাসীও নাই, ব্যাঘ্র নাই, পর্বত্র নাই। সে একটা ভদ্রপল্লীতে বাস করিতেছে, বিস্তর ধনদৌলত আছে. স্ত্রীপরিবার আছে, রোজ ব্রাহ্মণকে দান করিতেছে, ভিকুককে नान ক্রিভেছে, ত্রিদন্ধ্যা ক্রিভেছে, শাস্ত্রোক্ত আচার স্যত্নে রক্ষা করিয়া द्रघुननान প্রদর্শিত পথে চলিতেছে, আদর্শ পিতা, আদর্শ স্বামী, আদর্শ পুত্র হইয়া জীবন-যাপন করিতেছে। কিন্তু পরমূহর্তে ভীত হইয়া দেখিল যে যাহারা সে ভদ্রপলীতে বাদ করে, তাহাদের মধ্যে লেশমাত্র সদ্ভাব বা ष्यानन नारे, यद्यवर वाहित्तत्र ष्यानात ब्रह्माटक हे তাহারা পুণ্য জ্ঞান করিতেছে। প্রথমটা হরি-মোহনের যেমন আনন্দ হইয়াছিল, এখন তেমনি যন্ত্রণা হইতে লাগিল। তাহার বোধ হইল যেন তাহার বিষম তুঞা লাগিয়াছে, কিন্তু জল পাইতেছে না, ধূলি থাইতেছে, কেবলই ধূলি কেবলি ধূলি অনস্ত ধূলি খাইতেছে। সেই স্থান হইতে প্লায়ন ক্রিয়া সে আর এক পল্লীতে গেল. সেইখানে

একটা প্রকাণ্ড অট্টালিকার সন্মুথে অপুর্ব জনতা ও আশীর্কাদের রোল উঠিতেছিল। হরিমোহন অগ্রসর হইয়া দেখিল, তিনকডি শীল দালানে বসিয়া সেই জনতার মধ্যে বিভরণ অশেব धन করিতেছেন, ফিরিতেছে ন।। নিরাণ হইয়া কেছই হরিমোহন উচ্চহাস্ত করিল, সে ভাবিল "এ কি স্বপ্ন ! তিনকড়ি শীল আবার দাতা।" তাহার পরে সে তিনক্ডির মন দেখিল। বুঝিল, সেই মনে লোভ, ঈর্ষা, কাম, স্বার্থ ইত্যাদি সহস্র অতৃপ্তি ও কুপ্রবৃত্তি দেহি দেহি রব করিতেছে। তিনকড়ি পুণ্যের খাতিরে, যশের থাতিরে, গর্কের বশে সেই ভাবগুলি ছাপাইয়া রাথিয়াছেন, অতৃপ্ত রাথিয়াছেন, চিত্ত হইতে ভাডাইয়া দেন নাই। এই সময় আবার কে হরিমোহনকে ধরিয়া তাড়াতাড়ি প্রলোক ভ্রমণ করাইয়া আনিল। হরিমোহন हिन्तूत नतक, श्रुष्टारनत नतक, मूननमारनत नत्रक, धौकानत नत्रक, हिन्तृत वर्ग, शृष्टात्नत वर्ग, मूननमात्नव वर्ग, औक्राव वर्ग, व्याव কত নরক, কত স্বর্গ দেখিয়া আদিল। তাহার পরে দেখিল, সে নিজ বাড়ীতে পরিচিত ছেঁড়া মাহুরে ময়লা ভোসকে ভব দিয়া ব্দিয়া আছে, সমুধে শ্রামস্থলর। বালক বলিল, "ৰড় বাত্তি হইয়াছে, বাড়ীতে না ফিরিলে সকলে আমাকে বকিবে, মারামারি আরম্ভ করিবে। সংক্ষেপ**্বলি।** যে ^{স্ক্র} নরক দেখিলে, সে অপ্লজগতের, ক্রনাস্^{ট।} মাত্র মরিলে স্বর্গনরকে বায়, গৃতজন্মের ভাব অন্তন্ত ভোগ করে। তুমি পুর্বাজনে পুণাবান ছিলে, কিছ প্রেম তোমার হৃদরে স্থান পাই নাই, না তুমি ঈশ্বরতে ভাল

বাসিয়াছ না মাতুষকে। প্রাণত্যাগের স্থপ্ৰগতে সেই ভদ্ৰপল্লীতে করিয়া পূর্ব জীবনের ভাব ভোগ করিতে লাগিলে, ভোগ করিতে করিতে দে ভাব আর ভাল লাগে না, প্রাণ আকুল হইতে লাগিল, দেখান হইতে গিয়া ধ্লিময় নরকে বাস করিলে, শেষে জীবনের পুণ্যফল ভোগ করিয়া আবার তোমার জন্ম হইল। সেই জীবনে কুদ্র কুদ্র নৈমিত্তিক দান ভিন্ন, নীর্দ বাহ্যিক ব্যবহার ভিন্ন কাহারও অভাব দূর করিবার জন্ম কিছু কর নাই বলিয়া এই জন্মে তোমার এত অভাব। আর এখনও যে নীরদ পুণা করিতেছ, তাহার কারণ এই যে, কেবল স্বপ্নজগতের ভোগে পাপপুণ্য সম্পূর্ণ ক্ষম হয় না, পৃথিবীতে কর্মফল ভোগে ক্ষয় হয়। তিনকড়ি গভজন্ম দাভাকর্ণ ছিলেন. আশীর্কাদে এই সহস্র ব্যক্তির লক্ষপতি ও অভাবশৃত্য হইয়াছেন, কিন্তু চিত্ত-শুদ্ধি হয় নাই বলিয়া অতৃপ্ত কুপ্রবৃত্তি এখন পাপ ষারা তৃপ্ত করিতে হইয়াছে। কশ্ববাদ বুঝিলে कि ? পুরস্কার বা শাস্তি নহে –কিন্তু मृष्टि. দ্বারা অমঙ্গলের অমঙ্গল এবং মঙ্গল হারা মঙ্গল স্ষ্টি। ইহা প্রাক্তিক নিয়ম। পাপ অভভ তাহা দারা হঃথ স্ট হয়; পুণ্য শুভ, তাহা দারা স্থ স্ট হয়। এই ব্যবস্থা চিত্তভদ্ধির জন্ত, অভ্ত বিনাশের জ্রন্ত। দেখ হরিমোহন, পৃথিবী আমার বৈচিত্রাময় জগতের অতি কুদ্র অংশ কিন্তু সেথানে কর্মন্বারা অগুভ বিনাশ করিবার জন্ম তোমরা জন্মগ্রহণ কর। যখন পাপ-পুণ্যের হাত হইতে পরিত্রাণ পাইয়া প্রেম-রাজ্যে পদার্পণ কর, তখন এই কার্যা হইতে অব্যাহতি পাও। পরজন্ম তুমিও অব্যাহতি পাইবে। আমি আমার প্রিয় ভগিনী শক্তিও তাহার সহচরী বিদ্যাকে তোমার কাছে পাঠাইব, কিন্তু দেখ, এক সর্তু আছে, তুমি আমার থেলার সাথী হইবে, মুক্তি চাহিতে পারিবে না। রাজি?" হরিমোহন বলিল, "কেষ্টা, তুই আমাকে গুণ করিলি। তোকে কোলে লইরা আদর করিতে বড় ইচ্ছা করে, যেন এই জীবনে আর কোন বাদনা নাই।"

বালক হাসিয়া বলিল, "হরিমোহন, কিছু বুঝিলে ?" হরিমোহন বলিল "বুঝিলাম বই কি।" তাহার পরে একটু ভাবিয়া বলিল, "ওরে কেষ্টা, আবার ফাঁকি দিলি। স্থাৰ করিলি (कन. ত কোনও কৈফিয়ত দিস নি।" এই বলিয়া সে বাশকের হাত ধরিল। বালক হাত काष्ट्रियां लहेबा हिंदिमाहनत्क भागाहेबा विनन, "দূর হ! এক ঘণ্টার মধ্যে আমার সব গুপ্তকথা বাহির করিয়া লইবি ?" বালক হঠাৎ প্রদীপ নিবাইয়া সরিয়া সহাস্তে বলিল, "কই, হরিমোহন, চাবুক মারিতে একেবারে ভূলিয়া গেলে যে! সেই ভারে তোমার কোলে বিদিলাম না, কথন বাহ্মিক ছঃথে চটিয়া আমাকে উত্তম শিক্ষা দিবে! তোমার উপর আমার লেশমাত্র বিশ্বাস নাই।" হরিমোহন অন্ধকারে হাত বাড়াইল, কিন্তু বালক আরও সরিয়া বলিল, "না, দে স্থুথ ভোমার পর-জন্মের জকু রাখিলাম। আন্দা^ক এই বলিয়া অশ্বকার রজনীতে বালক কোথায় অদৃশ্র হইয়া গেল। হরিমোহন মুপুরধ্বনি শুনিতে শুনিতে জাগিয়া উঠিল। জাগিয়া ভাবিল, "এ কি রকম चक्ष (पश्चिमाम! नद्रक प्रिश्चाम, चर्न (पश्चिमाम, তাহার মধ্যে ভগবানকে তুই বলিলাম, ছোট ছেলে বুঝিয়া কত ধমক দিলাম। কি পাপ! যা হোক,প্রাণে বেশ শান্তি অমুভব করিতেছি।" হরিষোহন তথন কৃষ্ণবর্ণ বালকের মোহনমৃত্তি ভাবিতে বগিল এবং মাঝে মাঝে বলিতে লাগিল, "কি স্থন্দর! কি স্থন্দর!"

बिषद्रिय (श्रिष्ट)

রহত্তম দূরবীক্ষণ যন্ত্র।

চন্দ্র আমাদের নিকট হইতে হুইলক চল্লিশ हाकांत्र माहेन पृदत्र चाह्यं। এমন একটি দুরবীক্ষণ যন্ত্র, যাহার সাহায্যে চন্দ্রকে পৃথিবী হইতে মাত্র ৩৫ মাইল দূরে দেখিতে পাওয়া ষার, আজ আমরা তাহারই কথা বলিব। ইহা এত দীর্ঘ যে ইহার এধার হইতে ওধারে ঢিল ছুড়াও কষ্টকর; এত ভারি ও প্রকাও যে हेहारक नहेबा बाहेरा इहेरन अक्थानि त्रानब মালগাড়ীর ট্রেন্ আবশুক। মূল্যও কম লম্বা চওড়া নহে; অনেক ক্রোড়পতিকেও এইরূপ একটি ষম্ভ নির্মাণের আদেশ দিবার পূর্বে করিতে হইবে। ্এই যন্ত্ৰটি ইতম্ভত: "প্যারিসের টেলিফোপ" নামে প্রসিদ্ধ। ইহা ফ্রান্সের রাজধানী প্যারিস্ নগরে ১৯০০ খৃঃ অব্দে যে প্রদর্শনী ব্যিয়াছিল তাহাতেই रुरेग्राहिन। প্রদর্শন করিবার জন্ম প্রস্তুত পৃথিবীতে এইটিই বুহত্তম দূরবীক্ষণ যন্ত্র।

এম, ডিলোঙ্কের (M. Deloncle)
উপদেশমত প্যারিসের জ্যোতিষিগণ দারা এই
যন্ত্রতি প্রস্তত হইয়াছিল। ইহার পূর্বে ইয়ার্কেসের (yerkes) দূরবীক্ষণটিই বৃহত্তম ছিল।
ইয়ার্কেসের যন্ত্রটির যে কাচফলকথানি (lens)
ফ্রেইব্য বস্তুর দিকে থাকে তাহার ব্যাস ৪০
ইঞ্চ; প্যারিসের দূরবীক্ষণটির সেই কাচফলক
থানির ব্যাস ৪০ ইঞ্চ। এই কাচফলকথানির

উপরেই দ্রবীক্ষণের গুণাগুণ অধিক পরিমাণে নির্ভর করে। ইহা যত বড় হইবে দ্রবীক্ষণও তত ভাল হইবে।

যে বস্তুটি দ্রবীক্ষণের সাহায্যে দেখা হয় তাহা হইতে আলোক আসিয়া সমুখের কাচ ফলক থানিতে পড়ে। সেই আলোক যয়ের চোঙের ভিতর দিয়া আসিয়া দর্শকের চোথে পড়ে; দর্শক তখন কাচফলকের গুণে বস্তু-টির ছবি বর্দ্ধিত আকারে দেখিতে পায়। বস্তুটি হইতে বেশি পরিমাণে আলোক না আসিলে ছবি বড় হইয়া কোনো লাভ নাই, কারণ ছবি যতই বড় হইবে আলোক ভতই ছড়াইয়া পড়িবে এবং ছবি অস্পষ্ট হইয়া যাইবে। দ্রবীক্ষণের সমুথের কাচফলকথানি বেশ বড় হইলে দ্রইবা বস্তু হইতে অনেকথানি আলোক আসিয়া যয়ের মধ্যে প্রবেশ করিতে পারে এবং ছবি বড় হইয়াও অস্পষ্ট হয় না।

কোনো বস্ত হইতে আলোক আসিয়া
আমাদের চোথে পড়িলে তবে আমরা তাহা
দেখিতে পাই। কিন্তু আমাদের চোথের
তারার মধ্যন্থিত যে অংশটিতে (যাহার নাম
চোথের মণি) আলোক পতিত • হইয়া
ভিতরে প্রবেশ করে তাহা অতি কুদ্র। দূরবীক্ষণের সাহায্যে অনেকথানি আলোক সেই
কুদ্রে পথে আনিতে পারা যায়। কোনো

বস্তুকে দুরবীক্ষণের সাহায্যে বর্দ্ধিত:ুস্সাকারে দেখিতে হইলে আকারে যতগুণ বর্দ্ধিত করিতে হইবে, শুধু চোখে সেই বস্তুটি হইতে যতটুকু আলোক আসিয়া পড়ে যন্ত্রে তাহার ততগুণ আলোক পড়া চাই। তাহা না হইলেই ছবি অম্পষ্ট হইয়া যাইবে। আমাদের চোথের মণিটের ব্যাস यদি এক ইঞ্চের দশভাগের এক ভাগ হয় এবং দূরবীক্ষণের সাহায্যে যদি কোনো বস্তুর আকার ১০০ গুণ বাড়াইয়া দেখিতে হয় তাহা হইলে যন্ত্রের •সম্বুথের কাচ-ফলকথানির ব্যাদ চোথের মণির ব্যাদের >•• গুণ হওয়া চাই। যদি তাহা > ইঞা না হইনা ৫ ইঞ্চ মাত্র হয় তাহা হইলে দূরবীক্ষণে যে ছবি পাওয়া যাইবে তাহা স্পষ্ট হইবে না। ডিলোঙ্ক একটি প্রকাণ্ড দুরবীক্ষণ প্রস্তুত করিতে চাহিয়াছিলেন, কাজেই তাঁহাকে ৪৯ ইঞ্চ ব্যাস বিশিষ্ট একথানি কাচফলক সংগ্ৰহ করিতে হইয়াছিল।

নিথুঁৎ ছোট একথানি কাচফলক পাওয়াই ঘটিয়া উঠে না, এত বড় একথানি ফলক কোথায় পাওয়া যাইবে? দূরবীক্ষণের জন্ত ১৮০ কুটু দীর্ঘ চোঙই বা কে প্রস্তুত করিবে? প্রথমে ডিলোঙকের প্রস্তাবটি তো স্বলে হাসিয়াই উড়াইয়া দিয়াছিল। কিন্তু ডিলোঙকে তাহাতে দমিবার লোক ছিলেন না। তিনি কাজ আরম্ভ করিয়া দিলেন। গটিয়ে সাহেব (Gautièa) যন্তুটির অক্তান্ত অংশ প্রস্তুত করিবার ভার গ্রহণ করিলেন এবং বিখ্যাত কাচফলক নির্মাণকারক মাতোয়া (mantois) ফলক প্রস্তুত করিবার ভার প্রস্তুত্ত বিশ্বার ভার প্রস্তুত্ত করিবার স্তুত্ত করিবার ভার প্রস্তুত্ত করিবার স্তুত্ত করিবার স্তুত

কিন্তু এ যে এক অসাধারণ দ্রবীক্ষণ যন্ত্র ! একটি প্রকাপ্ত দর্শণ না হইলে ইহা

সম্পূর্ণ হইতে পারে না। সাধারণ দৃষ্বীকণ-खिन रामिरक हेन्छा चुत्राहेबा रा रकारना **वस्नत** প্রতি নির্দেশ করা যার; ভিলোওক্লের দুর-বীক্ষণটি এত বন্ধ হইবে যে তাহাকে ঘুরাইবার ফিরাইবার বন্দোবস্ত হওয়া একপ্রকার অসম্ভব বোধ হইল। অনেক চিস্তার পর স্থির হইল যে যন্ত্রটিকে স্থায়িভাবে রাথা হইবে এবং যে বস্তকে দেখিতে হইবে একথানি প্ৰকাণ্ড দর্পণের সাহায্যে তাহার ছায়া ঘুরাইয়া আনিয়া ্বৈক্রটির সন্মুথের কাচফলকে ফেলা হইবে। ফুঁকো (Foucault) এ বিষয়ে পথ প্রদর্শন করিয়া গিয়াছিলেন, তাঁহার পথই অহুস্ত হইল। কিন্তু এত বড় একখানি দৰ্পণ কোথায় পাওয়া যাইবে ? দর্পণ খানির ব্যাস অস্ততঃ সাড়ে ছয় ফুট্ হওয়া আবশ্ত । ইহাতেও কান্ধ আটকাইল না। ডেদপ্রে (Despret) দর্পণ প্রস্তুত করিবার ভার লইলেন।

প্রকাণ্ড বাাপার ! যতদূর সম্ভব সাবধান-তার সহিত দুরবীক্ষণটি প্রস্তত করাঁ হইয়া-ছিল। দর্পণখানি এরপে সাজানো হইয়াছিল মে তাহা এক ইঞ্চের ২৫ হাজার ভাগের এক ভাগও এদিক ওদিক হইবার জো ছিল না। ১৮ ফুট দীর্ঘ দুরবীক্ষণ যন্ত্র ওজনে প্রায় ৬০০ মণ; সাতটি মোটা মোটা লোহার নিরেট থামের উপর তাহা সাজানো হইয়া-ছিল। এ ছাড়া দর্পণথানি আছে। যাহাতে দর্পণথানিকে সহজে ঘুরানো বার ভাহার জন্ম २१ किं**ট উচ্চ ফ্রেম স**েড দর্শণখানিকে পারদ পরিপূর্ণ একটি প্রকাণ্ড উপর ভাসাইয়া রাথা হইয়াছিল। ফ্রেম সমেত দৰ্পণথানি ওজনে প্ৰায় ৩৬৪ মণ। ছিল বলিয়া ইহাকে ভাগানো

সহজেই এদিক ওদিক ঘ্রানো কিরানো যাইত।

ভাজকাল এঞ্জিনিহারিং বিস্তার যেরূপ উন্নতি হইরাছে তাহাতে দর্পণধানি ও কাচ-ফলক ভিন্ন দূরবীক্ষণটির অপর অপর অংশ নিৰ্কাণ করা তত কঠিন বোধ হর নাই। ধর্পণ ও কাচকলক প্রস্তুত করিতেই বথেষ্ট কষ্ট পাইতে হইয়াছিল। কাচফলক প্রস্তুত করা বড় সহজ কাজ নহে। কাচের আর দাম কি ? ফলক প্রস্তুত করিতে যে সাবধানতা, कोमन, देनश्रा ७ शतिश्रासत्र अर्घाकन इम ভাহাতেই ফলকগুলির মূল্য এত অধিক হইয়া থাকে। প্রথমে কাচ গলাইয়া ছাঁচে ঢালিতে হয়, তারপর ঘষিয়া মাজিয়া তাহার উপরিতল – সমান ও মন্থণ করিয়া লইতে হয়। কাচের মধ্যে একটিমাত্র বায়ুর বুদ্বুদ থাকিলে কিছা ফলকের উপরিতল সামাক্ত একটু অসমান হইলেই তাহার মূল্য শত শত গুণ কমিয়া বার। একখানি ভাল কাচফলকের মূল্য লক টাকাও হইতে পারে।

মান্টোরা একজন বড় কাচফলক ব্যবসারী
ছিলেন। তিনিই দ্রবীক্ষণটির সম্পুথের বড়
ফলকথানি প্রস্তুত করিয়াছিলেন। বার্
ব্দব্দের হাত হইতে নিস্তার পাইবার জন্ত কাচ বারবার গলানো হইত, তারপর তাহা
ছাচে ঢাশা হইত, ছাঁচটিকে অতি সাবধানতার
সহিত থীরে ধীরে ঠাপ্তা করা হইত। এক
একটি ছাঁচ ঢালার একমান পরে ভাঙা হইত,
ক্রিক প্রারই দেখা বাইত বে ফলকের কোথাও
ক্রিকার লোবেই ইহা হইত। কাচের বাহির
দিকটি ভিতর দিক অপেকা শীল ঠাপ্তা হইবা এই কাট উৎপন্ন করিত। বাহা হোক, শেষে একটা ছাঁচ উৎনাইনা গিনাছিল।

ফলকের তো উপার হইল। বর্ণগানি প্রস্তুত করা আরো কঠিন ব্যাপার। ডেস্প্রে এমন একটা চুলি প্রস্তুত করিলেন বে তাহাতে প্রার ৪২০ মণ কাচ গালানো বার। সাড়ে ছর ফুট্' ব্যাসবিশিষ্ট এবং ১১ ইঞ্চি পুরু দর্পণ চাই। ২০টি ছাঁচে কাচ ঢালা হইরাছিল, তন্মধ্যে ১৮টিই কোনো কাজে আসে নাই। দর্পণথানিতে প্রার ১০৫ [মণ কাচ লাগিরাছিল।

*ফলক ও দৰ্পণ ঢালা হইলেই তো হইল না। সেগুলিকে ঘষিয়া মাজিয়া ঠিক করিতে হইবে। এপ্র লির উপরিতল বেশ সমান ও মৃত্ৰ হওয়া আবশ্ৰক ; কোৰাও এক চুৰ উ'চু নীচু থাকিলে চলিবে না। হাতে এ কাৰ হওরা একেবারেই সম্ভব নহে। গটিরে বন্ধের এ काळाँ मन्नामन कतिराम। সাহাযো নানা প্রকার সাবধানতা অবলম্বন এক বৎসর ধরিয়া অক্লান্ত পরিশ্রমের পর हरेन। श्रुष्ठ हरेल দৰ্শণফলক প্রস্ত দেখা গেল, দৰ্শণ ও क्नरकत्र অসমানতা এক প্রকার নাই; যেথানে আছে, ভাছা এক ইঞ্চের ২ লক্ষ ২৫ হাজার ভাগের এক ভাগের বেশি নছে।

দ্রবীক্ষণের আর আর সমন্ত অংশ প্যারিস্
নগরে কিন্তু দর্শণথানি জিউমণ্টে (Jeumont)
প্রস্তুত হইরাছিল। সেধান হইতে দর্শণথানি
স্পোল্ ট্রেণের সাহায্যে, বেন কেংনো
রাজা বাদসাহ বাইতেছেন এইরূপ স্কত্নর
সহিত প্যারিসে লইরা আসা হইরাছিল।
ট্রেন্থানি রাজে চলিরাছিল এবং কোথাও



থামে নাই। টেনের বেগে কোনো পার্থকা জারিতে দেওরা হর নাই, পাছে দর্পনথানির কাচে কোনো নড় চড় ঘটে। তার পর অতি সাবধানতার সহিত সেথানিকে টেশন্ হইতে প্রদর্শনীতে সইরা যাওয়া হইরাছিল।

প্রকাপ্ত কাচফলকথানিও বড় কম সমানর গার নাই। তালাকেও দর্পণথানির মত অতি বন্ধে প্রদর্শনীতে লইয়া যাওয়া হইয়াছিল।

প্রদর্শনীতে দ্রবীক্ষণটি ষেরপে প্রদর্শিত হইরাছিল তাহাও বর্ণনাযোগা। একটি অর্নচন্দ্রাকৃতি মঞ্চ প্রস্তুত করিয়া তাহারই সন্মুধে যন্ত্রটিকে রাখা হইরাছিল। মঞ্চে দর্শকেরা বসিত, আর দ্রবীক্ষণটির সাহাযো আকাশের চক্র, স্থা, গ্রহ প্রভৃতির ছবি একখানি ত্রিশ ফুট উচ্চ পর্দ্ধার উপর ফেলা হইত; দর্শকেরা তাহাই দেখিত। যন্ত্রটির ভিতরে চক্র স্থাাদির যে ছবি দেখা যাইত তাহার ব্যাস ২১ হইতে ২২ ইঞ্চ এবং ভাহা ৩০ শুণ বর্দ্ধিত হুইয়া পর্দ্ধার উপর

দূরবীক্ষণে ছবি সুস্পষ্ট দেখিবার জন্ম চোধ লাগাইবার স্থানটি এদিক ওদিক সরাইরা বস্ত্রের চোড়টিকে ছোট ৰড় করিয়া লইতে হয়। ইহাকে "কোকাদ্"
করা বলে। এই অতি প্রকাণ্ড বছাটিছে
"কোকাদ্" করিবার ব্যবস্থা এক অভিনব
উপারে করা হইয়াছিল। দূরবীক্রণটির বে
দিকে চোথ লাগাইতে হয় সেই দিকের
খানিকটা চোঙের তলদেশে চাকা লাগাইরা
তাহা রেলের উপর এরপে রাধিরা দেওরা
হইয়াছিল যে একটুকু ঠেলিয়া দিলেই চোঙের
সেই অংশটিকে ইচ্ছামত এদিক ওদিক
সরাইয়া "কোকাদ" করা ঘাইতে পারে।

ডিলোঙ্ক্ যথন সর্মপ্রথম দ্রবীক্ষণটিতে
চোথ লাগাইলেন তথন তাঁহার যে কি আনন্দ
হইয়াছিল তাহা বর্ণনা করা বার না। এই
দ্রবীক্ষণ যন্ত্রটি নির্মাণ করিবার প্রস্তাব করিরা
তাঁহাকে অনেকের নিকট হইডেই বিজ্ঞাপ সহ
করিতে হইয়াছিল; কিন্তু অধাবসার বলে
পূর্ণমনোরথ হইয়া সে বংসর জগিছিখাত
প্যারিসের প্রদর্শনীতে সহস্র সহস্র প্রদর্শকের
মধ্যে তিনিই সকলের শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার
করিতে পারিয়াছিলেন। প্রদর্শনী তো ক্ষ্
স্থান, সমগ্র পৃথিবী তাঁহার শ্রেষ্ঠতা স্থান
করিতে বাধ্য—তাঁহার দ্রবীক্ষণটি এমনি
অভলনীর।

গ্ৰীজ্ঞানেন্দ্ৰনাথ চট্টোপাধ্যার।

শুভ-বিবাহ-রচয়িত্রী।

বাওগার সাহিত্যাসুরাণীর নিকট এবিতী শরৎত্বারীর নার স্পরিচিত। তাঁহার 'ওভবিবাহ'
উপস্তাস পাঠ করিয়া বাঁহারা মুদ্ধ না হইডাছেন,
তাহাদিগের সাহিত্যসম্প্রাহিতা সম্বন্ধে আমাদিপের
বিসক্ষণ সংশল্প আছে।

.

গুড-বিবাহ রটরিত্রীর শিক্ষালর কলিকাতা চোর-বাগানে। ইনি অন্মর্থহণের করেক নাস পরে ই'হার শিতা ব্যোঠ ভাতার নিকট সুদ্র পঞ্চাবে চলিরা বান এবং এক বংসবের মধ্যে ভাতৃলারা ও রী কভা প্রভৃতিকে লইয়া পিরা সেধানেই স্থায়ী হন। ত্রীকৃত শ্লীকৃত্ বস্থ প্রারীচরণ সরকারের ছাত্র। প্রারীচরণের আদর্শে বাল্যকাল হইতেই দ্রীশিক্ষার উপর তাঁহার বিশেষ অসুরাগ জন্মিলাছিল তাই পিতার বড়ে ও এ আগ্রহে তিন বৎসর বরস পূর্ণ হইতে না হইতে শরৎকুমারীর বিভারত হয়।

বঙ্গদর্শনে প্রকাশিত "প্রবাসের পাঠশালাটি" শরৎক্ষারীর বাল্যের স্মৃতিচিত্র। এই স্কুলে অনুমান এক বৎসরকাল পাঠের পর শরৎক্ষারী একটি ইংরাজি বালিকা বিদ্যালয়ে ভর্তি হন। এথানে তখন ইংরাজ এবং দেশীর গ্রীষ্টান বালিকা ব্যতীত অন্ত কোন জাতীয় বালিকা লওয়া হইত না! শশীবাবু অনেক যন্ত্র ও চেটা করিয়া শরৎক্ষারীকে দেখানে ইংরাজি শিক্ষার জন্তর পাঠাইলেন। কিন্তু সে স্কুলে তাঁহাকে বড় বেশি দিন যাইতে হয় নাই। এক বৎসরের মধ্যেই তিনি শীড়িত হইয়া পড়ায় সে স্কুলে যাওয়া বন্ধ হয়।

নরবৎসর বরুসে আন্দুলের হবিখ্যাত চৌধুরীবংশে

শব্দর্যক্র চৌধুরী এম্, এ, বি, এল্, ও আটর্ণির
সহিত শরৎকুমারীর বিবাহ হয়। বিবাহের এক
বংসর পূর্বেই তাঁহাকে বাকলা বিদ্যালয়
হইতে ছোড়াইয়া লওয়া হইয়াছিল। অক্ষয়চন্দ্র
শরৎকুমারীর বৃদ্ধি ও অরণ শক্তি দেখিয়া বাড়ীতে
লেখা পড়ার ব্যবস্থা করেন। একজন বিসন্ধি মেম
ভাসিয়া পড়াইয়া যাইজেন।

শরৎকুমারীর বামী অর্গার অক্ষয়চন্দ্র চৌধুরী
এটার্বি হইবার পূর্বে হইডেই বঞ্চনাহ্যিত্যে প্রকবি
বলিরা পরিচিত ছিলেন। অক্ষয়চন্দ্র, বিহারীলাল,
হেমচন্দ্র প্রভৃতি কবিগণের সমসামরিক। প্রভন ভারতীতে অক্ষয়চন্দ্রের বে সকল কবিতা প্রকালিত হুইভ ক্ষনসাক্ষে ভাষা বিশেষ সমাদর লাভ করিত। রাক্ষ না, হুইরাও অক্ষয়চন্দ্রের স্ত্রীশিক্ষা ও স্ত্রীম্বাধীনতা সম্বন্ধে বংগ্রু উদারতা ছিল। ভাষার বন্ধ্বাক্ষরের নিকট ভিনি পত্নীকে পরিচিত করিতে কুঠিত হুইভেন মা। পাশ্চাতা কবি রাইনিং দম্পতির অন্তর্গ্রপ অক্ষয়চন্দ্র ও শরৎকুমারীর সাহিত্যসেবা বঙ্গসাহিত্যের একটি হয়। :ইহারা সাহিত্যদেবার পঞ্চারের অক্তিম বৃদ্ধ সমালোচক ছিলেন। 'এহিসাবে শ্রংকুমারা আদর্শ সহধর্মিণী ও আধুনিক বঙ্গারীর সমধিক শ্রদার পাতী।

'ভারতী'সম্পাদিকা শ্রীমতী স্বর্ণকুমারী দেবীর সহিত শরৎকুমারীর প্রীতিসৌহার্দ্য আজীবন সমভাবেই আছে। সাহিত্য সেবার এরূপ অকৃত্রিম সথ্য নিভান্তই আনন্দের বিষয়, সম্পেহ নাই।

শরৎকুমারীর প্রথম রচনা "কলিকাতায় স্ত্রীসমান্ধ" বছকাল পুর্নে ভারতীতে প্রকাশিত হইয়া প্রশাসালাভ করিয়াছিল। ইংাদিগের পতি-পত্নীর যে তুখানি ছবি এবারকার ভারতীতে প্রকাশিত হইল তাহা দেই সময়কার তোলা। তখন হইতে ভারতী সাধনা বঙ্গদর্শন প্রভৃতিতে তাহার রচনা মধ্যে মধ্যে প্রকাশিত হইয়া আসিতেছে।

সাহিত্য-সাধনার, শরৎকুমারীর যশ বেষন স্প্রতিন্তিত, সংসারের কর্তব্য সাধনেও তাঁহার তেমনি স্থশ। স্বনিপুল গৃহিণীপণা যাহা প্রাচানারীর মজ্জাগত ভাব যে ভাব দূর হইলে সহস্রমুখা প্রতিভার বিকাশ সত্ত্বে প্রাচানারীর নারীত্বে আঘাত লাগে, সেই গৃহিণীপনায় শরৎকুমারীর বিন্দুমাত্রও উদাগিন্ত নাই। সাহিত্য-সেবারতা, নিষ্ঠাবতী শরৎকুমারীর পতিভক্তি, ও সংসারপালনদক্ষতা প্রভৃতি প্রকৃতই অসুকরণীয়।

শরৎকুমারীর পুত্রসন্তান নাই—একটিমাত কতা। বর্তমানবর্ধের 'ভারতী'র জাৈষ্ঠ সংখ্যায় প্রকাশিত 'বিদিমা' শীর্ষক চিত্রে আংমরা শরৎকুমারীর জাবনী সম্বন্ধে ছই চারিটি মনোক্ত ইক্তিরে সন্ধান পাইয়াছি! 'বিদিমা'র স্বেহ, ভক্তি প্রভৃতি শ্রৎকুমারীর ক্লয়ের ছায়ারেখাপাতে কেমন সুন্দর বিকাশলাত করিছাছে!

'শুভবিবাহ' উপক্ষাসধানি আমাদিগের হিন্দু সমাজের একথানি নিখুঁত ছবি। উৎসবালোকের বৈচিত্রো, সচ্ছল সংসারের আনন্দ কোলাহল মুখরতার, পারিবারিক প্রীতিবদ্ধ আন্থীয় বান্ধবের কলংক্তি, ক্যাদাম্বের করণ অঞ্জরেধার, ও বিধবা নারীর মহিমার উল্লেল আলোকৈ 'শুক্তবিধাহ' বল্লসাহিত্যে একটি অপূর্ব্ব সামগ্রী! ইহার সহজ, স্বাভাবিক স্থাটী নিমেবেই মর্ম পার্শ করে। স্নেহসমূজ্জনা দিদি, বেট্রি, পিশি, খুড়িমা, জাদরের পোকাধুকি হৃদয়টাকে একেবারে অধিকার করিয়া বদে।

শরৎকুষারীর রচনাম যে আড়ফরহীনতা ও ওচিতার স্লিগ্ধালা বহিয়া গিয়াছে তাহা প্রাচ্যের নিজ্ঞা, এবং তাহাই শরৎকুমারীর রচনাকে একটি বৈশিষ্ট্য ও বৈচিত্র্য দান করিয়াছে !

'ভভবিবাহে' উপাখ্যান ভাগ অল! তিনটি পরি-বাৰের চিত্রের মধ্য দিয়া লেখিকার স্বাধীন সামাজিক मक हेक् समात स्टिश डिजिशा छ विशाहि । ध्वतानिनी विश्वा ভূবনেশ্বরী দীর্ঘ পঁচিশ বৎসর পরে উপযুক্ত পুত্র ললিতকুমার ওরফে গণেশকে লইয়া কলিকা হার ওাঁহার निनित्र वाड़ी व्यानित्नन,-पूट्यत्र विवाह मिखारे ইচ্ছা। দিদির ধনী-সংসার-পুত্র পৌত্রের আনন্দ-কোলাহলে হর্ষিত। দেখান হইতে দিদির 'মেজ যার' কন্তার বিবাহের দিন, খণ্ডরু পক্ষের গোলঘোগের দক্ষণ বিবাহভক্ষ ও ললিতের সহিত কন্সার বিবাহ হইয়া যায় এবং ললিড তাহার বিধব৷ পুত্রহীনা পিশিমার অগাধ ঔষর্য্যের অধিকানী হয়! ইহাই গ্রন্থের উপাখান ভাগ! অৰলঘন করিয়াই নানাবিধ শাখাপল্লবে ১২৮ পূঠা ব্যাপিয়া 'বেশ একটি সুখপাঠ্য চিত্রমূলক উপত্যাস বিকশিত হইয়া উঠিয়াছে !

হিন্দু বিষবা, ধনীর গৃহিণী, সরম সঙ্গুচিত। 'বুকভরামধু' বাঙালীর বধু, অংধুনিক আহারাদি বিগয়ে সংবমহীন যুবক, পিতৃহীন মাতৃনির্ভর পুত্র, প্রভৃতির
চিত্রে এডটুকু খুঁত নাই। সর্বাপেক্ষা অধিক
ফুটিয়াছে, বাঙালীর বিবাহ ব্যাপার। লেথিকা
তেম্ন করিয়া এই বাাপারটির শোচনীয়তা গুফুট
করেন নাই, তথাপি তাঁহার পাত্রপাত্রীর বক্তব্যের
কাঁক দিয়া সমাজের এই দারণ কভটি আমাদিগের
দৃষ্টি এড়াইতে প্লারে নাই। ইহা নেথিকার ব্লীতিমত
দক্ষভার পরিচায়ক সন্দেহ নাই।

ভূবনেশ্বনীর দিদি—ধনী সস্তানাদির মাতা সাংদারিক শোকের ছই একটা ক্ষুদ্র আশাত পাইয়াছেন বটে, কিন্তু তথাপি সাধারণ ধনী গৃহিণীর মতই নিজের স্বার্থ টুক্ একটু অধিক ব্রেন। তাঁহার কথাবার্ত্তা হইতে আমরা তাঁহার যে একটা কাল্পনিক মুর্ত্তি গড়িয়া লই, সেটি সাধারণের ধারণার সহিতও বেশ খাপ খায়! মোটা সোটা দেহথানি—হাতে অনেক গুলি সোনার চুড়ি, বালা, তাগা, গলায় হার, কোমরে মোটা গোট', বেশ রাশভারি লোকটি! কথাবার্ত্তায় সর্ব্বদাই একটা 'বড়মাস্থবির বনিয়াদি' আভাষ পাওয়া যায়। মনের মধ্যে একটা তেল আছে—গর্ব্ব আছে, 'ছেলেগুলিও সুসন্তান' ইহাই গর্ব্বের প্রধান কারণ—কোন্ স্থমাতা না এ গর্ব্বের জ্লম্ভ লালারিতা হন! থাকুক গর্ব্ব, কিন্তু দিদির জ্বনম্ব স্লেহও অপ্র্যাপ্ত! এইটুকুই হিন্দুনারীর বিশেষত্ব!

দিদি বলিতেছেন, দেবিছিস্ তো আমার ছেলে-গুলি ? এ কলকেতা সহরে আঞ্চকের বাজারে এমন হারের টুকরো ছেলে কার আছে বল্ দেখি !"

া গর্ব পুত্রেরেহান্ধতার খাতিরে দাধারণে ক্ষমা করিবেন বলিয়া আশা করা যায়!

সঙ্কীৰ্ণতা দোবের হইলেও, সেকেলের গৃহিপীর
মধ্যে আনরা একটা প্রচন্ত্র অভিমান দেখিতে পাই!
দিদির 'মেজ্বদার' কন্সার বিবাহোপলক্ষে ভাহার
বন্ধু আসিয়া নিমন্ত্রণ করিয়া চলিয়া পেলে—দিদি
কন্সাকে কহিলেন,—

"রাণি আমার 'মেজ্যায়ের আর্কেল দেখছিস্, একটা পুঁটে বে দিয়ে কিনা আমাকে নিমন্ত্রণ করা হয়েছে। আমি ত যাব না, তুই কান নের্থেরে নিরে যাসু। কালই চলে আদিস্।"

রাণী দিদির বিবব। কত্যা—রাণী কথিন, 'নেজ কাকীর জ্বর হয়েছে মা, তাই এতা আসতে পারেন নাই দেখলে না কত করে বলে দিয়েছেন!"

দিদি কিন্তু সহজে ছাড়িবার পাত নহেন দিদি কহিলেন, "বড় বৌদে তো পাঠাতে পারতো, বেটার বড় চাকরী হয়েছে কিনা তাই বড় শুমর হয়েছে! ইত্যাদি! কিন্তু স্লেহছদয়া দিদির অভিমান আর অধিকক্ষণ রহিল না—কন্তাবধুবর্গকে কইয়া সানন্দে নিমন্ত্রণবাড়ী বাইয়া গৃহিনীর স্থান অধিকার করিলেন! বে কথা ৰলিভেছিলান,—উৎসবানব্দের একটি স্থিনারা 'শুভবিবাহে'র প্রতি পৃঠাটির মধ্য দিরা ৰহিয়া গিরাছে! সেই আনন্দকোলাহলের বধ্যেও নেপথ্যে অন্তরাল হইতে সমাজের হুই একটা মর্ম্মদাহী বেদনার কাতর স্বরও আমাদিগেরর শ্রুতিমূলে মাঝে বাবে আয়াত করিয়াছে!

রাণী ও ভ্বনেবরীর চরিত্রে বেশ একটু পবিত্রতা আছে! বখন পলাপুর বাসে আমাদিগের রন্ধনশালা ও সারা গৃহ একটি বৈদেশিক বিভ্রম আনিরা দেয়, তখন বিধবানারীর ঠাকুর ঘর হইতে ধূপধূনার যে পবিত্র স্থাভি উপিত হর তাহা কি ন্রিন্ধকর! কি চিন্তরপ্রথক। রাণী দিদির জ্যেষ্ঠকতা, নিঃসন্তান ও বিধবা, অধিক সংয় পিত্রালয়েই বাস করে। আতাদের লইরাই তাহার বর সংসার, তাহাদের স্থাংর হংবী!' এই অল্প কথায় রাণীর কতথানি পরিচর পাওয়া যায়! সকলের উপকারের জন্ম রাণীর কর্পাহত্ত সর্বাদা প্রসারিত রহিয়াছে ব্রের সামাত্র দাসদাসীর স্থ হঃগটুক্ বুঝিতে রাণীর যত্ম কত! বিশ্ববিধ্যা ভিল্প এমন সার্ক্তেম বিশ্বজনীন প্রেম অপরের জনদ্বে কতকটা ছল'ভ নহে কি!

রাপী পরের নিন্দা করিতে জানে না—কেছ যদি
কাহারো নিন্দা করে রাণী অমনি তাহার মধ্য
ছইতে ভালোটুকু বাছিয়া দেয় ! দৃষ্টাস্তবরূপ "দিদি
পাকাচুল তুলাইতে তুলাইতে বলিলেন—দেখেছিদ
রাণি, বোঁএর শিকলি চুড়ির গড়ন দেখেছিস, ঢ্যাপা
ঢ্যাপা—

রাণী। কিন্তু মা বেলওয়ারি কগাছির চমৎকার গড়ন।"

রাণীর মাতা যখন 'মেজবারের' নিমস্ত্রণ করার
মধ্যে ক্রটি দেখাইয়া "ছেলের চাকরীর শুমরই ভাষার
কারণ বলিয়া উল্লেখ করিভেছিলেন, তখন রাণী মাতার
শ্রম বুঝাইরা বলিল,—

শনা মা মেঞ্চকাকী ডেমন মান্ত্ৰই নৰ—বিশেষ আমাদের কভ ভালো বাদেন—কি করবেন দারে পড়েছেন। তা মা তুমি যাবে না কেন, ও ত তোষার কুট্মবাড়ী নর। এ বাড়ী ও সেবাড়ী আমাদের তে; একই বলতে হবে। আমিই বা কেনল করে কোন নিমন্ত্রিতের মত বাব আর চলে আসবো ভাই ভাবছি।

নিমন্ত্রণ বাটা গিরা রাণী লোকজনের আহারাদি"
দেবা, পরিবেশন করা শ্রন্থতি পৃহিণীপনার নির্ক্ত
হইল। কুটুখবাড়ী হইতে গাত্রছরিন্তার তত্ত্ব আসিরাছে
—চাকর দাসীরা খাইতে বসিবে—কল্পার পিতা—
রাণীর পিত্বাপুত্রকে রাণী কহিল, "বাই আনি কুটুম
বাড়ীর বিয়েদের বসাই। তুই ভাই চাকরদের বোঁল
তল্লাস নিস, খাবার যারগা টারগা হল কিনা দেখগে,
আমি লুচি টুচি পাঠিয়ে দিছিছ।"

ক্সার পিতা কহিল, "হাা, মহামাক্ত মহামহিষ রাজা পেঁচো, রাজা হরে, রাজা রামা, রাজা স্থামাদের অভ্যর্থনার ক্রটি না হর দেখিগে; আবার নইলে বেহাই কোঁদ করে উঠবেন।"

বাস্তবিক এই সকল রাজা রামা শ্রামা প্রভৃতিকে লইয়া কিরূপ ব্যতিব্যস্ত হইতে হয় তাহা ভূত-ভোগীমাত্রেরই অফান্ড নহে! ক্সাকর্তার মুখ দিয়া লেখিকা অনেক হুংখেই এই কথাগুলি বলাইয়াছেন।

'শুভবিবাহে'র লেখিকার স্কর অন্তচ্চিও সহ্নয় সহাস্তৃতি আমাদিগের দাধারণ গৃহকোণটকেও একটি বিচিত্র সৌন্দর্যো ভূষিত করিয়াছে ! 'ভভবিবাহ' সমা-থির সহিত একটা উৎসবের অনেন্দ কোলাহল, নহ-বতের মিষ্ট রাগিনী, দাসদাসীর কলহ চীৎকার, শিশু-দিগের ক্রন্ন হাস্ত, গৃহিণাগণের গল্ভজ্ব, ব্ধুংর্গের পট্টাম্বের অসংস্ শব্দ মুখর শিঞ্জিতের মৃত্যকীত, ছোট মেয়েদের মলের ঝুমুঝু শব্দ এভুতি মিলিয়া পাঠকের চিত্তে একটা বিভ্রমের আবেশ আনিয়া দেয়! সেই 'শাদা ধ্বধ্বে প্রকাণ্ড ভেতালাবাড়ী—গাড়ীবারান্দার নহবৎ বাজিতেছে, গোলাপী রঙের কাপড় পরা ছ^{চার} জন দাসলাসী ৰাগানে ঘুহিতেছে। ৰড় বড় নোটা মোটা সোনার চেনহার গলার, নীল লাল সব্জ রঙের রেশমের কোট অথবা পাঞ্জাবী গায়ে, ফরদাধ্তি পরা ছোট ছোট ছেলেয়া ও জনী দিয়া ঝোঁপ্য বাধা,নোলক-নাকে, কানে এয়ারিং, পায়ে মল, ঘাগরার মত করিরা নানা রঙের কাপড় পরা, কেশে লাল সব্ল অংবা কালো রভের এক একটা ফিভাবাধা ৫/গাঁ> বছরের

বেছেরাও ২। জন বাগানে খুরিভেছে। এটুকু জনর হুইতে চকিভেই মিলাইয়া বায় না।

ঁ আমরা সংক্ষেপে শুভবিবাহের পরিচয় প্রদান করিলাম। পাঠক নিজে খনিচরণে পরিচিত হইয়া ইহার প্রকৃত রস গ্রহণ করুন।

শরৎকুমারীর লেখার বিশেষ আকর্ষণই এই; তিনি প্রত্যেক ছোটথাটো বিষরগুলি যেন ফোটোগ্রাফের মন্ত করিয়া আঁকেন। ভারতীর মেয়েঁযজ্ঞিতে শরৎকুমারী বে উৎসব চিত্র দেখাইরাছেন তাহা কি সুন্দর! ডাহার বর্ণিত উৎসবপ্রাঙ্গনের সেই কলকোলাহল এখনো আমাদিগের কর্পে বাজিতেছে, সেই বাড়ী কিরিবার সং একটা বিপর্যায় পোলোযোগত 'পাড়ী কইত "খোল কোখা" 'খুকির গলার হার কে নিলে !' কিছুই খুজিই শিলিতেছে না—বোমার হারার ধুক্ধ্কি নাই, টেঁপি মাথার টুপির ল্যাক্স ছেড়া, গিরির নাকের নথে: নোলোক পর্যান্ত পড়িয়া গিয়াছে,—অমিয় জুতা হারা ইয়া শুধু মোলাপায়েই আমার জুতো-ও-ও-ও-ও ক্রিয় চীৎকার ক্রিতেছে—

এই বিচিত্র কোলাহল গুনিতে গুনিতে গামরা বিদায় গ্রহণ করিলাম।

সমালোচনা।

কল্লকথা।---- শীমণিলাল গলোপাধ্যার। ইঞ্চিরা পাবলিশিং হাউস হইতে প্রকাশিত, কান্তিকপ্রেসে ্ মুদ্রিত। মুশ্য আট আলো। সাহিত্য জগতে মণিলাল বাবুর নাম স্থারিচিত। "কল্পখা" ডাঁহারি রচিত একাদশট ছোট গল্পের সমষ্টি। জাপানী গলের ভাব नरेशा त्रिक इरेलिंड, शब्धिनिटक भिनान बातू (व একটি বিচিত্র হরের মধুরতা দাব করিয়াছেন, তাহা তাঁহার নিজৰ। গরওলি সমাপ্তির সহিত পাঠকের হাদয়বেলাটি প্রচুর ভাবতরকে উদ্বেলিভ করিয়া তুলে। অছের ভাষাটিও হন্দর উপভোগ্য। মণিলাল বাবুর পরিপক হত্তের রচনা এই গলভাল কাব্যামোদীমাত্রেরই চিন্তরঞ্জন করিবে। গলগুলির মধ্যে বেশ একটু নুতনত আছে। 'বৈরাগ্য', 'দান', 'মণি' 'মিলন' প্রভৃতি গরগুলি ভাবসম্পদে অতুলনীয়। গ্রন্থানির বাঁধাই ও জাপানী চিত্রগুলিও মনোজ হইরাছে।

চাঁকমাজাতি।—(কাতীর চিত্র ও ইতিবৃত্ত)
শীসতীশচন্দ্র বোব, এম, আই, আর, এস প্রণীত।
বৃল্য সোণা-রূপার ছাপা বাঁথাই, তিন টাকা। পেই-বোর্ডে বাঁথাই, আড়াই টাকা। ভারতী'র পাঠক
বর্গের নিকট চাকমাজাতির কথা নিডাছই নৃত্র
নহে। গ্রন্থোক্ত অনেকগুলি অধ্যায় পূর্ব্বে ভারতীতে
প্রকাশিত হইরাছিল। লেখকের ছি:সহ শ্রমসাধনার

ফলে^{, ক্র}গ্রন্থণানি বঙ্ক সাহিত্যের সম্পদ্ স্বরূপ **হই**য়াছে। লেখক চাকমালাতির ইতিবৃত্ত, সামাজিকতা, সভ্যতা প্রভৃতির স্থন্দর একটি চিত্র পাঠকের সমক্ষে ধরিয়াছেন: ভৌগোলিক ভন্তুকুও বাদ পড়ে নাই। গ্রন্থানিতে লেথকের হুদ্ধ পর্যালোচনা শক্তি, হুশুখল বর্ণনাভলী, ও উদার সহাত্বভূতি প্রতি পত্তে জাজ্লামান হইরা উঠিয়াছে। এই অজ্ঞাত পার্বতা জাতির ঘরের ছোট কথাটিত লেখকের দৃষ্টি এড়াইতে পারে নাই। লেখকের ভাষাটুকু কেবল সর্বত স্থাক স্থলর নহে। ইহা ভিন্ন গ্রন্থখানির অপর কিছু ক্রটি নাই। ভাষাতত্ত্ব ৷— (ভারতবর্ষীয় আর্য্যভাষার তথা-लुगीनन)। बीबीनाथ (मन धनीड। বিভীয় সংশ্বরণ। বিভীয় খণ্ড। ৫০, কর্ণভয়ালিস ষ্ট্রীট,লোটাস লাইব্রেরী হইতে প্রকাশিত। মূল্য প্রতিখণ্ড এक টাকা। ব্যাকরণ ও শব্দ শিক্ষাই ভাষাজ্ঞানের পকে চূড়ান্ত নহে। ভাষার আভ্যন্তরিক ব্রৈজ্ঞানিক তত্ত্ব সমূহের সহিত পরিচর বা হইলে ভাষাজ্ঞান অসম্পূর্ণ রহিয়া বায়। বক্ষামাণ গ্রহখানি গ্রহকারের ছু: দহ অধাৰদার ও পবেষণার একটি অমৃত ফল। সংস্কৃত ও বাঙলা ভাষার পারশারিক সম্পর্ক বিচার, রীতিব্যতিক্রম (Idiom) সন্ধির ব্যবহার প্রয়েজনীয় বিষয়গুলি বেশ প্রাঞ্জল ভাষায় আলোচিত হইরাছে। গ্রন্থকারের মতের সহিত সর্বব্য আমাদিপের মতের মিল না থাকিলেও গ্রন্থখনি প্রত্যেক
সাহিত্যসেবীর পক্ষে যে অবশ্য পঠনীর, তাহা আমরা
অসক্ষোচে বলিতে পারি। ব্যাকরণ লইরা অতিরিক্ত
আলোচনার, গ্রন্থকারের বক্তব্য সর্বব্য তেমন সরস
হয় নাই, তবে বিধয়ের শুক্তত্ব বৃদ্ধিয়া দে ক্রটি
ধর্তব্য নহে।

कृत्री।--- श्रीकोद्धानश्रमान विद्याविद्नान श्रीछ। व्यकानक, श्रीश्रक्षकात्र ठट्डाशाधात, २०३, कर्वश्रालिन ষ্ট্ৰীট, কলিকাভা। কান্তিক প্ৰেদে মুদ্ৰিত। মূল্য वात्र व्याना। हिन्दू वानकवानिकांश्यत जन्म मतन ৰাঙলাম মাৰ্কণ্ডের পুরাণান্তর্গত চণ্ডীর আখ্যান সন্ধলিত হইয়াছে। এছের সরল অনাড়ম্বর ভাষাটি সংজেই পাঠকের চিত্ত আৰুষ্ট করে। গুরু বালক বালিকা নহে, তাহাদিপের অভিভাবকগণও গ্রন্থানি স্থাঠ করিয়া আনন্দ ও জ্ঞান লাভ করিবেন। গ্রন্থকার সকল কথাই গুছাইয়া বলিয়াছেন। তবে ছু এক স্থানে তাঁহার শিশু পাঠকপাঠিকাগণকে নিতাম্ভই যেন काँ कि निवारक्त। कीरवान वातूब छात्र धारीन अस-कारत्रत এই শৈপিশু দেখিয়া আমরা কুর হইয়াছি। পরিশেষে ছঃখের সহিত আরো স্বীকার করিতে হই-তেছে: এন্থের পারন্তে দেবী চিত্রের পরিকর্মনারও আৰুৱা স্ব্ৰাতি ক্রিতে পারিলার না। রক্তাপরা 'ৰভিশ'-পরিহিতা ছুর্গা-চিত্তে,—বরাভয়প্রদা মাতৃমুর্ত্তির পরিবর্তে রক্ষমঞ্চের 'ব্রিটানিকা' অথবা যাত্রার 'বশোদাঠাকরুণের' ছারাই পরিস্ফুট হইয়া উঠিয়াছে !

স্তীলক্ষ্মী — উপন্থাস। শ্রীবিধুত্বণ বহু
কর্ত্ব প্রণীত ও প্রকাশিত। মজুমদার প্রেদে মৃদ্রিত।
মৃল্য ॥• আট আনা। বাঁধাই দশ আনা। দেড় শত টাকা
মাহিনার একজন কেরানী, —সাহেব কর্ত্ব 'ড্যামফুল
ইত্যাকার গালিলাভে অপমানিত ও লান্তিত হইয়া
পদ্ধী ক্ষলার অভ্যধিক আগ্রহ ও ইচ্ছায় সে চাকরি
পরিস্থাপ করে। ভাষার পর উপশুসহলভ ঘটনাপরক্ষারা রক্ষারী বাষাক্ষারীর সহিত পাঠকের
পরিচরাভে গ্রহ ব্যাপ্ত হইরাছে। অক্সের সাহেব
বিদি অপমান করে ভবে বাঙালা কেরানী বাবু ভগনি

চাকুরি ছাড়্ন, ভাহাতে আমাদের আপত্তি নাই কিন্তু তাই বলিয়া গ্রন্থকারের মতের অকুসরণ করিয়া যে সকল বাঙালীই এক যোগে অমনি চাকরি পরিভ্যাপ করিবেন, এ কথার আমরা অমুমোদন করি না। অফিসের সাহেবের অকস্মাৎ প্রতিশোধ বাসনা চরিভার্য করিবার উদ্দেশে কলিকাতা ভ্যাগ কুরিয়া স্বদূর পল্লী-গ্রামে আরদালি ও বন্দুক সহ আগর্মী, স্বামীর চাকরি পরিত্যাগ ব্যাপারে বার্ডালী বধু কমলার একেবারে রাজপুতমহিলার মুর্ভি ধারণ বিষয়গুলি জামাদের নিকট হাস্তোদীপক বলিয়া মনে হয়। নীতি শিক্ষার কথা ছাড়িয়া দিয়া উপক্যাসের দিক দিয়া দেখিলে 'সতীলক্ষী' একবানি নিম্বল উপক্তাস। এই শ্রেণীর উপক্তাসকারগৰ সংঘমটুকু দেশছাড়া করিয়া বদেন-পাত্র পাত্রীর मूर्थ গবেষণাত্মक ध्ववस्त्रत वांছा वांছा वङ्गवा वश्च⁺त्र স্রোতের মত বদাইয়া দিতে পারিলেই উপকাদের চূড়ান্ত হইয়া গেল বলিয়া ইহাদিগের ধারণা! গ্রন্থ-কারের ভাষাটি মিষ্ট হৃদয়গ্রাহী, লিখিবারো জাঁহার ক্ষতা আছে সেই জন্মই আমরা কুল উপন্তাস্থানি সম্বন্ধে এত কথা বলিলাম। 'সভীলক্ষীর গ্রন্থকার ভাবের রশ্মি সংষত করিয়া সাহিত্যের পথে চলিলে তাঁহার রচনা ভালো ফুটিবে বলিয়া আশা করা যায়!

देवजनाथ कथा। खेजिशांत्रक विज्ञ। विविध विषय এवः ममूनग्र म्वापनीत शान मधनिछ। সোনারভারত পুত্তকালয়, ৩৬নং বনমালী সরকার ঘীট, ১০১৮। কমলা প্রিন্টিং ওয়ার্কদে মৃদ্রিত। মুলা //১০ মাতা। প্রছের মুধবলে লেথক वित्रशारहन, "दिनानार्थत विविध छ्थापूर्व अक्शानि পুত্তকের অভাব 🔹 * যথাসম্ভব দূর করিবার জন্ম 'বৈদ্যনাথ কথা' বঙ্গীয় পাঠকগণের হত্তে সমর্পিত इहेल। প্রধানত: ভক্ত বিশাসী देरगुनाधराजीन जन्म রচিত হইলেও পুত্তকখানি যাহাতে সাধারণ পাঠক ও প্রতত্ত্ব বিক্তাস্থ্যও প্রীতিকর হন, আমি ভাহার এম্ব্র শিবপুর্বার উংপতি, চেষ্টা করিয়াছ। देवगुनात्थे निवित्रक द्वांशनात्र ଓ मैन्सित निर्मातित कान निर्भन्न व्यक्ष्ष्ठ किंग विषयत्त्र बाटनावन।" ध वर क्ष अध्यानि देशाष्ठ महिनिष्ठे द्वेषांष्ट्।

বৈদ্যালাথযাত্রীর পক্ষে স্থদক্ষ 'গাইডের' কার্য্য করিবে বলিয়া আমাদিগৈর বিখাস।

मारिल तिया। वीमोती खर्माइन ७४. वन. এম এস প্রণীত। জীকিরণচন্দ্র রার কর্তৃক প্রকা-শিত। মুক্তর। কলিকাতা একমি প্রেসে মুদ্রিত। মুলা এক টাকা মাতে। চিকিৎদা ব্যবদায়ী গ্রন্থকার यशार्व हे वित्राद्धन, "এই य एमनवात्री म.विज्रा, निक्रमाम, পারিবারিক ছঃখশোক, की वनमः शास्म পদে পদে পরাক্ষ্য, জাতীর চরিত্রের অবন্তি, ইহার ভিতর ম্যালেরিয়ার প্রভাব বড় সামাক্ত নহে।" গ্রন্থগানি পাঠ করিয়া আমরা বিশেষ প্রীতিলাভ করিয়াছি। চিকিৎসাবিষয়ক প্রস্তের এমন হৃদয়প্রাহী সুদক্ষ আলো-চনা বলসাহিত্যে অধিক আছে বলিয়া মনে হয় না। মালেরিয়ার ইতিব্রু উৎপত্তি, কারণস্কান, ম্যালে-রিয়া হইতে আত্মরক্ষার উপায়, পথ্যাপথ্য ও চিকিৎসা সম্বন্ধে গ্রন্থকার এমনি সহজ প্রাপ্তল ভাবায় বিশ্ব আলোচনা করিয়াছেন, যে গ্রন্থানি উপস্থাদেরি মত সুপাঠ্য হইয়াছে। আরো হবের কথা, গ্রন্থবানি চরকম্ম্রুত ও পাশ্চাত্য গ্রন্থাদির সৃশ্ব আলোচনা ও গ্রন্থকারের খীয় অভিজ্ঞতার ফল, ইংরাজি 'তর্জমা' नहर। मारलितियां कोर्ग वां छालीत गुरह गुरह गुरू-পঞ্জিকার মত এই গ্রন্থ বিরাজ করুক, ইহাই আমা-দিগের প্রার্থনা। গ্রন্থানির মূল্য আরো একটু হইলে সাধারণের বিশেষ হবিধা হয় এবং মোটের উপর গ্রন্থকারেরও তাহাতে विटम्य अञ्चित्र। इहेर्ब विन्ताः यत्न इत्र ना । अविया গ্রন্থকারের মনোযোগ বাঞ্চনীর।

Life of Dr. Mohendra Lal Sircar. By Sarat Chandra Ghose, M. D. Published by Jnahendra Nath Bose. The Oriental Publishing House, 11 Issur Thakur Lane, Calcutta. Printed at the Wilkins Press, College square, Calcutta. গ্রন্থানির মূল্য ছই টাকা। মহেন্দ্রলাল বাঙলার কৃতি সন্তান, ও আদর্শ কর্মবীর; তাহার জীবনী হইতে শিবিবার জিনিব প্রচ্য আছে। মহেন্দ্রলালের জীবন-

চরিত সকলন করিয়া শরৎবাবু বাঙালীমাজেরই কুভজভাভাজন হ**হ**রাছেন। গ্রন্থানিতে ভাজার गर्रक्तनान, छानमात, हस्तरभवत कानी अछ्डित করেকখানি চিত্রও প্রদন্ত হইরাছে। মহেল্রলালের চিকিৎসাপছতির বিশেষত্ব, সামাঞ্জিকতা, ধর্মজীবন ও রাজনীতিজ্ঞতা প্রভৃতির বিশদ বিবরণী সংগ্রহে গ্রন্থকারের ক্রভিত্তের পরিচয় পাওয়া যায়। মহেক্র-লালের ফায় বিশেষজ্ঞ ও ফুদক্ষ এলোপেথিক ডাজারের হোমিওপ্যাধি পদ্ধতির অমুবর্ত্তিতার বিবরণ-টুকু বিশেষ কোতৃহলোদ্দীপক, সাধারণ এবং অসাধান্ত্রণ এলোপেথমাত্তেরই অবশ্য পঠনীয়। এই গ্রন্থানিতে লেখক নিরপেক্ষ ভাবে হোমিওপ্যাথির বিশেষত্ব সম্বন্ধে স্থানে স্থানে ইঞ্চিত ক্রিয়াছেন। এম্বনারের প্রতিষ্ঠিত উষধ প্রচার সমিতির প্রতি মদেশামুরাগী ব্যক্তি মাত্রেরই মনোধোগংদেওয়া উচিত। সাধারণের আন্তৃকুল্যে এই দমিভিন্ন কার্য্যের প্রদারবৃদ্ধি দেশের পক্ষে রীতিমত গৌরব ও কল্যাণের বিষয় ৷ প্রস্থকারের ভাষাটিও সুন্দর, সরল, এবং মর্ফ্রান্সানী। শরং বাবু আশাকরি গ্রন্থানির একথানি বাওলা অমুবাদ প্রকাশ করিয়া ইংরাজী অনভিজ্ঞ পাঠকের ক্ষোভ ছুর করিবেন।

সতী-শতক।—(শান্ত্ৰোক্ত সহুপদেশপূৰ্ণ এক শত সতীরমণীর জীবন-চরিত্ত) শীনির্মলবালা চৌধুরাণী প্রণীত। দিতীয় সংস্করণ— মূল্য আট আনা ৰিতীয় খণ্ড মূলা বার আনা। ৫০ কর্ণভয়ালিস খ্লীট, লোটাদ লাইবেরী। দিতীয় খণ্ডে, 'পল্মা' 'রেণুকা', 'সুক্সা', 'সীডা', 'বেহুলা', 'সভী', 'লোপামূলা' 'শুচিস্মিডা', প্রভৃতি প্রাচীনা সভীর কাহিনী লিপিবছ হুইয়াছে। আরো ছুই খণ্ড প্রকাশিত হুইলে শতস্তীর কাহিনী সম্পূৰ্ণ হইবে! লেখিকার উদ্যয় ও অধ্যবসায় প্রশংসনীয়, অমুকরণের যোগ্য। গ্রন্থের, ভাষা '(मारकाल' इट्टाला विश्वक, ''विक काहिनी वर्गनात উপযোগী ভবে অধিকমাতায় সংস্কৃতবহুল হওৱায় काहिनीश्वित्र याथा गर्याय गत्रमधा त्रिष्ठ इत नारे। যাহা হউক, এ কুল্ল ক্রটি সম্বেও গ্রন্থবানি নারীপাঠ্য গ্রন্থের মধ্যে যে বিশিষ্ট আদন পাইবার অধিকারী... ভাষা কৈহই অধীকার করিবেন না।

যুগয়া।

্ৰিটিক বেৰ বাৰে বা কৰেৰ এই কবিডাট বিগত আধিৰ বাবের ভারতীতে প্রকাশিত বৈলাপা বাৰত বিলাহ অনুক্রণ। আবলা ভাষার বহণুৰ্বে এই কবিডাট পাইয়াহি। হাৰাভাবে এডবির প্রকাশিত ক্রানাই।] ভাঃসঃ

ি গুড় বিধাহর। পথ ধূলিধূদরিউ ; প্ৰাত্তে ভার পুত্র এক জীর্ণ পর্ব গেছ। অমুরে বিশীর্ণা নদী, ক্ষীণ রেবা ভার প্ৰাৰ প্ৰান্তে বক্ৰগতি হেৰেছে জাঁকিয়া। তীয় যেশে বসে আছে চক্ৰৰাক্ একা, হুৰে সংগ্ৰ বৌন সুধ আতুল আকাজা খাণাণ্য চেয়ে কার ৷ কুত্র খাঁথি কোণে প্ৰস্কৃত্তিৰ জ্যোতি বেধা ছিত্ত সচকল ; এবনি আসিবে বুঝি চক্রবাকী ভার ? পরিপূর্ণ আশা, আর আনন্দ হিলোল পুত্ৰ বিহলৰ কৰে কৰিয়া ধাৰণ ধাানসর যোগী যেন সহা তপজার ! कृदंद राज दिवारत गात्राह क्रोत ; ৰাহিৰি সুদীৰ হতে, আগ্ৰেয়ান্ত হাতে बीदा बीदा चिंछ बीदा पूरा अक्वन **দীকৃতিন বুক্ততে সতৃক্ত নয়নে ; द्रिवना चानिनना**—विश्व निर्वत । व्यक्ति केंद्रिय नक ब्रह्म नगरत मन भन भन ; छेरक हारह बीता जूनि। करें बारन थिया वृति । क्य नक इति विकाशिया बहान्त्य : शूनक हकन নৃত্যপরা অভারার মুবর সুপুর কৰিয়া নধুমে বেদ বিলায় আবার। পুনকিত চত্ৰবাক কৰিৎ কাপাত্ৰ ভাৰ क्षेत्र दिष्ठि डामहिकी बाह् मक्शनत-ৰ্থা খিৰ বীয় ভাবে বলিল ভৰ্মি।

বিলন আকুল হিলা তৃবিত অংক নিৰ্বাক নৱনে বেন কৰিছে কাডৰে "তৃত্ত মোর দর্ব্য সাধ পূর্ব এডদিলে আয় তুই হাদিবাঝে বাজিত আৰায় यज्ञ हात्री अ कीश्न रुष्ठेक नार्थक। এখনি जानिरव नका। मृद्धिन जांचि চলে বাৰ ছুইখনে ছুই প্রপারে गीमारीन वित्रदश्य पूत्र गावशात ; গাহিব আহুল কঠে উন্নত স্থীত **कृथिरीन वाण्डिरीन रनि नारानिनि।"** नात्म इक्रवाकी बीरत, गढ़ाइँएव खीवा সন্মিলন ব্যগ্র হাদি, কুর পদভার वबनीएक बादिवात विजय ना नह। কঠোর চপুর স্পর্ণে চকিত চুখনে বিলাল অধ্য ধ্য উর্ছে বেহভার। গুড়ুৰ গুড়ুৰ গুৰু পৰ্মিল পঢ়ুৱে व्यननित्र बानामन शैक्ति नत्तन । विष-कर्श विश्वत भूगांत्र गढ़िय ব্যরিল শোণিত ধারা মুদরদ বেরে। ভয়ত্ৰতা চক্ৰবাকী চকিতে উদ্ভিদ क्नारद मरका र्यात्र कामिन नावित्रा, সেইবত ঠোঠে ঠোটে অলে অল রাখি সৈকত প্ৰাশাৰে শুৱে দুকু আলিকৰে गारिन कालत मुझै छेनात बनाय, বিন্দুৰাত্ত ভক্তবল বয়নের কোৰে।

विनीवारको त्रवी।

ক্ষমিকার, ২০ ক্ষমানিক টাই, কাজিক থেনে শীব্যিকণ নামা বাদা মুক্তিত ও ০০, তক বাদিনত বেডি ব্ইডে শীন্তাশচল বুৰোগাধান বাদা প্রকৃতিক



বিপন্ন ত্কাদা শ্বেলনাথ গ্লোপাধায় অঙ্কিত চিব **২**ইতে

ভারতী।

৩৩শ বর্ষ]

পোষ, ১৩১৬

িম সংখ্যা।

ভোজরাজ ও ধাররাজ্য।

শিক্ষিত অশিক্ষিত প্রত্যেক ভারতবাসীর নিকটই উজ্জনিবাজ বিক্রমাদিতোর নাম সম্ধিক পরিচিত। বালমনোরঞ্জন গলাবলী হইতে আরম্ভ করিয়া, বেতালপঞ্বিংশতি বা ছাত্রিংশ সিংহাসনের বিচিত্র উপাথান সমূহ হইতে, এবং বিক্রমাদিত্য সভান্থিত নবরত্বাদির কাব্যোক্ত প্রসঙ্গে অইন্তীরাক বিক্রমাদিত্য বে একজন অভূতকৰ্মা প্ৰবল প্ৰতাপাবিত ন্রপতি ছিলেন, তাহা সহজেই হাদরসম হয়; এবং তাঁহার সম্বন্ধে ক্রমশঃ অধিক छथा जानियात हेच्छा यनवजी हहेटछ थाटक। কিন্তু গবেষণামূলক বৃহৎ ইতিহাস হইতেও বিক্রমাদিতা বিষয়ক ধারাবাহিক ইতিবৃত্ত অবগত হইতে পারা যায় না। কেবল কিম্বন্তীর উপর নির্ভর করিয়া, কেহ কেহ লিখিয়া গিয়াছেন, 'তিনি অবস্তী রাজ্যের রাজধানী .উজ্জবিনীতে রাজ্য করিতেন, শকনামক অনাৰ্য্য জাতিকে বিভাড়িত করিয়া শকারি আখা লাভ করেন। একজন প্রতাপশালী রাজা হইয়াও, তিনি তাঁহার প্রতিত্তিক জীবন একজন সামান্ত মিতব্যয়ী গৃহস্থ হইতেও অধিকতর সাধারণ ভাবে পরি-চালিত করিতেন।' এই জাতীর হুই একটি नरेनिक्शनिक উत्तर श्रेटक, जायनवार्डे

মার্কাস অরেলস হইতেও তাঁহার জীবনযাত্রা অধিকতর দীনভাবে নির্মাহিত হইত এই জ্ঞানটুকু লাভে, জাতীয় গৌরবাভিমানে সামান্ত একটু আত্মপ্রসাদ লাভ ব্যতীত বিক্রম্'দিতা বিষয়ক ঐতিহাসিক কোনই সন্ধান পাওয়া যায় না। কেচ কেছ বিক্রম্মংবতের আলোচনাবসরে বলিয়া থাকেন, 'বিক্ৰম খৃষ্টীয় পঞ্চম বা ষষ্ঠ শতাকীর লোক. তিনি পরবর্তীগণের নিকট স্বীয় রাজস্বকাল প্রাচীনতর প্রতিপাদন করিবার অভিপ্রারে ৫৭ খৃ: পূর্ব হইতে গণনা করিয়া গিয়াছেন।' আবার ইংরাজরাজের ভারতীয় শিক্ষাবিভাগের একজন হযোগ্য কর্ণধার গুপ্তবংশীয় মহারাজ চক্রগুপ্তের সহিত উজ্জিদিনীরাজ বিক্রমাদিত্যের ঐক্যপ্রতিপাদন প্রয়াগী হইয়াছেন। বিক্রম-সম্বন্ধীয় অগণিত অভূত ঐতিহ্ সমূহের সহিত, ঐতিহাসিকগণও এইরূপে আরও করেকটি স্বকপোলকলিত বিচিত্ৰ উপাধ্যান সংযোজিত করিতে রূপণতা করেন ন.ই। ইহাতে বিক্রমচরিত আর্ত্ত রহস্তমর হইরা উঠিরাছে. এবং সেই দক্ষে তাঁহার, ইতিবৃদ্ধ অহুসন্ধানের পথও ক্রমণঃ কণ্টক্ষী হইরা পড়িরাছে। वारात बात धकार धेविशांतक बारहन शहाक्ष विक्रमाण्डि नामक द्वाल बाल्ड

রাজার অন্তিম্বই স্বীকার করেন ना । উঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ একটু ওদার্যা অবলম্বন করিয়া বলিয়া থাকেন,—বিক্রমাদিত্য উপাধিমাত্র, ভোক প্রভৃতি বহুসংখ্যক রাকাই ঐ উপাধি ধারণ করিয়াছিলেন, স্নতরাং বিক্র-মের একথানি পৃথক্ ইতিবৃত্ত সংকলন আদৌ সম্ভাবিত নহে। আর একপক বলেন প্রাচীন ব্রিটেনের আর্থারের কায় বিক্রমাদিতাও রাজামাত্র, সত্যের কল্পনারাজ্যের কোনই নিণীত তাঁহার স্থান হইতে না : এবং আর্থার সম্বন্ধীয় পারে উপাথ্যানাৰলীর জায় বিক্রমাথ্যায়িকাও কবি-কল্পিত হইয়া জন মধ্যে প্রবেশ লাভ করিয়া কালক্রমে সভারূপে পরিগৃহীত হইয়াছে। পক্ষান্তরে প্রাচীন ভারতের আধুনিক ইতিহাস লেখকগণের মধ্যে বাঁছারা স্ব স্থ গবেষণার জন্ম সুখ্যাতি লাভ করিয়াছেন, তাঁহারা বিক্রম সম্বন্ধীয় জটিল সমস্তার কোনই সমা-ধানে উপনীত হইতে না পারিয়া একেবারে কোন মত প্রকাশ বা কোন প্রসঙ্গই উত্থাপন করেন নাই।

এই ত গেল ইতিহাস ঐতিহের কথা।
প্রাক্তবক্ত পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের গভীর
গবেষণা সমূহ হইতেও বিক্রম চরিত সমূদারের
কোন পথই খুঁজিয়া পাওয়া যায় না, কারণ
ভারতের প্রসিদ্ধ প্রাচীন রাজা বিক্রমাদিতাের
প্রাত্ত লইয়া কাহাকেও মন্তিক পরিচালিত
করিতে দেখি না, অথচ আলেকজাঙারের
ভাষ ব্সিকেলসের কেন্ন অংশ খেত কোন
ভাংশ ক্রফবর্গ, তাহার প্রকৃতিই বা কির্নাপ,
তাহার নামের হেতুবাদই বা কি এই
সকল আলোচনার ভাঁহাদিগের বিশ্ববকর

আগ্রহাতিশয় প্রদর্শিত হয়। অস্থ্য দিকে বিক্রমচরিতোদ্ধারের প্রধান অন্বেষণ স্থল মহাসাগরোপম সংস্কৃত সাহিত্যের প্রতি দৃষ্টি-পাত করিলেও হতাশ হইয়া পড়িতে হয়। বিক্রমাদিত্য ও ভোজের ঐক্য নির্দেশক ছই একটি কিম্বদন্তী সংস্কৃত সাহিত্যে নিতান্ত বিরল না হইলেও, তাহা হইতে উভয়ের ঐক্য প্রতিপাদক কোন প্রমাণই পাওয়া ষায় না। উভয়ের রাজধানীর ও বরং সময়ের পার্থক্যপ্রকাশক প্ৰবাদ উভয়ের ভিন্নতে প্রতীতি कनार्देश (महा এরপ স্থলে কেবলমাত্র ভোজ ও ভদ্বংশীয়-আলোচনা ছারা ভাবী বিক্রম-চরিতোদ্ধারের জটিলতা কতকটা অপসারিত হইতে পারে. এই আশার প্রসিদ্ধ প্রস্তুত্ত বিদ্গণের প্রকৃষ্ট গবেষণা পদ্ধতির অমুসরণ করিয়া প্রথমে বিক্রমালিতা হইতে বিভিন্ন ভোজরাজ ও তহংশের পর্যালোচনায় প্রবৃত্ত হওয়া গেল।

মালব দেশের উচ্চসভ্যতা ও বিশ্বামরাগিতা অতি প্রাচীনকাল হইতেই ভারতের
সর্বত্র প্রথিত। কালিদাস প্রভৃতি কবিবুন্দের ভাবমন্নী বর্ণনার সংস্কৃত সাহিত্যের
ন্তরে স্তরে ইহা উজ্জ্বল হইরা রহিরাছে। মালবের
সৌন্দর্যাগরিমার হিউরেন-সাংপ্রমুধ বৈদেশিক
ভ্রমণকারীও মুগ্র না হইরা থাকিতে পারেন
নাই। আমাদিগের বোধ হঁচ, অবস্তী ও ধার
রাজ্য এক মালবেরই হুইটি উপবিভাগ মাত্র।
অতি প্রাচীনকাল হুইতেই ইহাদিগের অন্তর্গত
উজ্জ্বিনী ও ধারা এই ছুইটি প্রধান নগরের
উল্লেখ দেখিতে পাই; ইহারাই কালক্রমে
বিভাগদনের গৃথক্ প্রক্ষানীরূপে

প্রিকল্পিত হয় ৷ কিন্তু কোনটি কাহাকর্তৃক • প্রতিষ্ঠিত হইয়া সমৃদ্ধিলাভ করে, তাহা জানি-বার উপায় নাই। তন্মধ্যে কিপ্রাতটবর্ত্তিনী উজ্জবিনী মহারাজ বিক্রমাদিতোর রাজধানী ৰ্লিয়াই সমধিক প্ৰসিদ্ধ এবং মহাকবি কালি-দাদের অমর কবিতায় অবিন্যুরক্রপে অঙ্কিত হইয়া রহিয়াছে। কর্ণেল টড তাঁহার রাজস্থানে ব্রিয়াছেন তম্বনগরী বা আনন্দপুর (বর্ত্তমান আহড়) হইতেই বিক্রমাদিত্য অবস্তী গমন করিয়া তথায় আধিপত্য লাভ করেন। দিতীয় ধারা বা ধার-নগরীই আলোচ্য ভোজরাজের রাজধানী ছিল। শিশুপাঠ্য পুরুষপরীকা প্রমুখ সংস্কৃতগ্রন্থ ও কুত কুত কবিতা হইতে বুহৎ কাব্য নাটকাদিতে পর্যান্ত ধারানগরী ও ভোলদেবের উল্লেখ নিতাস্ত বিরশ নহে। এভদ্বাতীত,মাণ্ডু, বাঘ, বরবাণী প্রভৃতি স্থানে আর্য্যস্থপতির যে সমস্ত কীর্ত্তিচিত্র উৎপাত হইতেছে, তাহাতে সে ক্ষলিও এক সময়ে এক একটি প্রসিদ্ধ নগর ছিল বলিয়া. প্রতীতি জন্ম। * প্রচলিত গ্রন্থাদির সাহায্যে এবং মহারাজ ভোজের ন্তার নানা বিষয়ে অগাঢ় ব্যুৎপত্তি বিশিষ্ট শাসনকর্তার রচনাদি হইতে ধাররাজ্য ও ভোজ সম্বন্ধে যে টুকু তথ্য সংগ্রহ করিতে পারা যায়, তাহা ধারা-वाहिक मृष्युर्व विवत्रत्वत्र भटक यत्यष्टे ना इहेरन्ड নিভান্ত উপেক্ষণীয় নহে। ভোজ একজন

প্রজাপালননিরত নরপতিরূপে উল্লিখিত হইলেও বৈয়াকরণ ও দার্শনিক পণ্ডিত বলিয়াও তাঁহার প্রসিদ্ধি কম নহে। রাজকার্য্যের অবসরে তিনি ব্যাকরণ ও দর্শন বিষয়ে বিস্তর গ্রন্থ করিয়া গিয়াছেন। তাঁহার গ্রন্থ যে করেকথানি এখনও পাওয়া যায়, তাহার মধ্যে 'বাক্যপদীয়' বৈয়াকরণ পণ্ডিতগণ এখনও যত্নসহকারে পাঠ করিয়া থাকেন। ভোক পাতঞ্জল যোগসতেরে রাজমার্ত্ত বা রাজ মৃগান্ধ নামক যে সরল ব্যাখ্যাগ্রন্থ প্রণয়ন করেন, তিনি তাহাতে রণরঙ্গ মলনামে আত্ম-পরিচয় প্রদান করিয়াছেন: অভাপি তাহা ভোজবৃত্তি নামেই স্থপরিচিত থাকিয়া পণ্ডিত-সমাজে অতি আদবের সহিত পঠিত হইতেছে। इंश इटेटिट व्यवगठ इख्या यात्र, त्रावक्रमञ्ज ভোজের নামান্তর মাতা। ভোজ প্ৰবন্ধ, ভোজচম্পু. ভোজচরিতাদি ভোজবিষয়ক যে সকল সংস্কৃত গ্রন্থ প্রাপ্ত হওয়ী যার, তাহাতে তিনি সিন্ধুলের পুত্র এবং মুঞ্জের অব্যবহিত সিংহাসনাধি গারী বলিয়া কথিত। ভোক্ত প্রবন্ধকার বল্লাল বা বল্লভ পণ্ডিতের মতে, এই মুঞ্জ সিন্ধুণের কনিষ্ট ল্রাতা স্থতরাং ভোজের পিতৃবা। ভোজ যথন পঞ্চমবর্ষীয় বালক, তথন তাঁহার পিতৃবিয়োগ হওয়ায় পিতৃব্য মুঞ্জই রাজ্যশাদন করিতে থাকেন। ভোজচরিতকার মুঞ্জকে দিলুমহিষী পদ্মাবজীর

^{*} নাড় (বা মাওবা) রাজগণের প্রথম প্রাধান্ত সমন্ত্রই স্থাপিত হয়। পরে থৃপ্রীয় চতুর্দশ শতাকীতে ফলতান হোলাং শাহ গোরী কর্তৃক প্রাচান হিন্দুনগরীর ভগ্নাবশেষের উপর মাঙু প্ন: প্রতিষ্ঠিত হয় এবং মালবে মুসলমানাধিপভ্য বিলয়ের সক্ষেত্রই উহা বিশ্বতির কৃষ্ণিত হইতে থাকে। ধারী ক্রের স্থাপত্যবিভাগকর্তৃক প্রাচীন স্থানভার উৎথাত হইরা স্ব স্ব প্রতিহাসিকত্ব প্রতিপাদনে অগ্রসর হইতেছে। ধাররাজ্যের শিক্ষাবিভাগের পর্যবেক্ষক কাশীনাথ লেলে মহোদয় তাহার ক্রমিক বিবরণী প্রকাশে প্রযুক্ত হইয়াহেন। আমরা স্থানান্তরে সেওলি সংক্ষেণে বিবৃত্ত করিবার টেষ্টা করিব।

शुक्रकारि निर्दिष পালিত করিয়াছেন. ভাহাতেও তাঁহার পিতৃব্যত্ব অকুন্নই থাকিয়া যাইতেছে। ভোজের ৫৫ বংসর ৭ মাস ৩ দিন ব্যাপী রাজত্বকাল সম্বন্ধে গ্রন্থেরই সম্পূর্ণ ঐকমত্তা দেখা যার। আছে, কোন সন্মাসীর প্ররোচনার তাঁহার আত্মা এক শুকপক্ষীর মৃতদেহে পরিচালিত করিলে, তাহা সঞীব হইয়া উঠে, এবং সেই স্থবোগে সন্মাসী স্বীয় আত্মা ভোজদেহে সংক্র-মিত করিয়া, তাঁহার স্থলাভিষিক্ত হইয়া কিয়ৎ কাল রাজ্যস্থভোগ করে। অতঃপর চন্দ্রা-বতীর চক্রদেন সাহায্যে ভোজের আয়া তাঁহার শরীরে পুনঃ পরিচালিত হইলে, ভোজরাজ পুনরাজ হতরাজ্যের অধিকারলাভে সমর্থ হন। স্থাসিদ্ধ প্রত্নতব্দি রাজেজলাল মিত্র মহোদয় অহমান করেন, ভোজ চালুক্যবংশীয় সোমেশ্বর নামক রাজা কর্ত্তক পরাজিত ও বিতাড়িত হইলে তাঁহার পরাজয় মানি প্রজন্ন রাখিবার জন্তই সম্ভবতঃ এই অলোকিক কাহিনীর উৎ-পত্তি হইয়া থাকিবে। সোমেখনের রাজ্যকাল গণনার ১০৪০-১০৪৯ খুটাব্দের মধাবর্ত্তী সমর নির্ণীত হইয়া থাকে, স্নতরাং ইহারই মধ্যে কোন সময়ে ভোজ স্বীয় রাজ্য হইতে বহিষ্কৃত ও জ্বতস্ক্র হইয়া কিয়ৎকাল অতি-বাহিত করিতে বাধ্য হইন্না পাকিবেন। ভ্যেক্তের মৃত্যুর পর ভদীয় দত্তকপুত্র গব্দানন্দ কর্তৃক ধাররাজ্য হইতে প্রমার বংশের বিলোপ সাধিত হৈয়। কারণ গজাননৈর অপুত্রক অবস্থার মৃত্যের পর তুষারবংশীয় চৈতভাপাল নামক অনৈক ভূমাধিকারী ও তাঁহার বংশধর-গণ ২১৪ বৎসর যাবৎ রাজত্ব করেন,—এক শ্ৰেণীর পুরাতম্বনিদ্র্গণ এইরূপ দিদ্ধান্তে উপ-

নীত হইয়াছেন। তাঁহারা ভোজরাজের ইতিবৃত্ত অহুসন্ধানে অতঃপর আর অগ্রসর হইতে চাহেন না। কিন্তু অপরাপর মনীযিগণের মত সমালোচনা ও উৎকীর্ণ লিপি প্রভৃতির পাঠোন্ধার আলোচনা করিলে, উক্ত মত যে ঐতিহাসিক সত্যরূপে পরিস্থাতীত হইতে পারে না, অতঃপর আমরা তাহাই দেখাইতে চেষ্টা করিব।

অধাপক नामिन বলেন, মুঞ্জ দিলুলেরই ভাতা। সিকুল যে সময়ে দকিণাপথ জয় করিতে যান, মুঞ্জ দেই সময়ে ধার রাজ্য অধিকার করেন। কথিত আছে, দাক্ষি-ণাত্য প্রয়াণের কিছুকাল পূর্বে জ্যোতির্বেস্তা-গণ ভবিষ্য গণনা দারা স্থির করেন, মুঞ্জ সিন্ধ-লের রাজাগ্রহণ করিবেন। বাজগোচরে এ বুতান্ত বিজ্ঞাপিত হইলে,:ক্রোধান্ধ হইয়া সিন্ধুল ভাতার শিরচ্ছেদের আজা প্রদান করেন, কিন্তু পরক্ষণেই স্বীয় বিবেক্হীনতা উপলব্ধি করিয়া ও ভ্রাতৃমেহে আর্দ্র হইয়া মুঞ্জের হস্তেই রাজ্যসংক্রান্ত সমস্ত ভার সমর্পণ করিয়া বিজয়াভিয়ানে প্রস্থান করেন। কিম্বনস্তীর সহিত জন্মাণ অধ্যাপকের উক্তির কতকটা সামঞ্জ দেখা যায়। মুঞ্জের বংশধর গণের উৎকীর্ণ শিলালেখ্যাদি হইতে, তাঁহার वः भवलो (यन वह शुक्रव अर्याख बास्त्रिः शंगन অধিকার করিয়া ছিল বলিয়াই প্রতীতি জন্মে। সম্ভবতঃ তাঁহারা ধাররাজ্যের অংশবিশেষ প্রাপ্ত হইয়া, তাহাতেই দীর্ঘকাল যাবৎ আধিপত্য করিতে থাকেন। ভারতের সুপ্ত গৌরবোদ্ধা^{রের} পথপ্ৰদৰ্শক মহাস্থা টড্ হবৌতিস্থিত মধুকর ^{বর} নামক স্থানে বে প্রস্তরাহশাসন আবিষ্ণার ক্রিয়াছেন, তদসুসারে ভোজের পর তদীয়

আত্মীয় ধারসিংহাসনে অধিরঢ় হন এবং • তদ্বংশীয়গণ কয়েক পুরুষ পর্যান্ত উক্ত সিংহাসন অলক্ষ্ত করিয়া থাকেন-- এইরূপ অবগত হওয়া যায়। কিন্তু নাগপুরের সমীপবতী বাণগন্ধার পশ্চিম উপকুলে যে অনুশাসন আবিষ্কৃত হইয়াছে তাহার পাঠোদ্ধার প্রদক্ষে অবগত হওয়া যায়, ভোজের পূর্বপুরুষ প্রমার वःगीय देवती निःटहत পत छमीय পूज ভीमक এবং তৎপরে তাঁহার পত্র রাজরাজ বা ভোজ রাজত্ব করেন। অনস্তর ভোজের পুত্র উদয়া-দিত্য রাজপদে অভিষিক্ত হন। পুত্র নরবর্মদেবের শাসন সময়ে পুর্বাকথিত উৎकोर्ग इम्र। **ৰিলালিপিটি শাতারার নিকট উক্ত মর্ম্মের** লাদেন ও ত্মার একথানি তৰ্মশাসন প্ৰাপ্ত হন। ইহাতে পুরাতত্ববিদ্গণ অমুমান করেন, উক্ত-প্রস্তর ফলক ও তাম্রপত্র উভয়ই একই মন্দির সন্নিবিষ্ট ছিল, মহারাষ্ট্রীয়দিগের আক্রমণ সময়ে সম্ভবতঃ তাম্রফলক থানি মহারাষ্ট্রসেনাকর্তৃক সাতারায় নীত হইয়া থাকিবে। এই তার্ম-লিপির পাঠোদ্ধারে অবগত হওয়া যায়,— বৈরীসিংছের পুত্র দিয়কের তুই পুত্র—মুঞ্জ ও দিংহরাজ, এবং দিংহরাজের পর তদীয় পুত্র ভোজ রাজ্যাধিকারী হন। তাঁহার মৃত্যুর পর দেশ্বে অরাজকতার আবির্ভাব হওয়ায় উদয়াদিজ নামক তাঁহার একজন আত্মীয় সিংহাসনাধিকার পূর্ব্বক শান্তিসংস্থাপন করেন। ক্থিত আছে, তাঁহার পুত্র লক্ষ্যদেব বাহ্লিক হইতে গৈড়ৈ ও দিংহল হইতে হিমালয় পর্যান্ত রাজ্য বিস্তার করেন। কিন্তু কোলক্রক পঠিত উজ্জाबनीत ফলকলিপিতে লক্ষ্ণেবের কোনই উলেধ দেখিতে পাওলা যার না। রাজস্থান

পাঠে অবগত হওয়া যায়,—উদ্যাদিতা চৌহান বীর বিশালদেবের সমসাম্ব্রিক। ভট্টগ্রন্থের निर्फिन बङ्गादा विभागामव ১०७७ इहेट ১১২০ সংবৎ পর্যান্ত আজমীরের সিংহাসনে অধিষ্ঠিত ছিলেন। মুদলমান দিগের আক্রমণ ও অত্যাচার হইতে ভারতবর্ষকে রক্ষা করিবায় উদ্দেশ্যে তিনি যবনদেনার প্রতিযোগিতায় দণ্ডায়মান হইবার জন্ম পার্মবন্তী রাজন্মবর্গকে করিয়া তাহাদিগকে বিভাড়িত করিবার চেষ্টা করেন। তাঁহার নেতৃত্বাধীনে সম্মিলিত রাজগণের মধ্যে ধারপতি উদয়াদিত্য প্রমারের নামোল্লেথ দেখিতে পাওয়া যার। কর্ণেল টড্নানারপ খোদিত লিপি হইতে উন্মাদিত্যের শাসনকাল ১১০০ হইতে ১১৫০ गःवः निर्वत्र क्तिया वरनन, मखवठ: **উ**क्ट সময়ের মধ্যভাগেই বিশালদেবের পতাকাধীন হইয়া উদয়াদিত্য यवन विकट्य धात्रण करत्रन ।

আমাদিগের বিবেচনায় উহা কোন इहेट्ड ১১२० সংবতের সময় ও আহুসঙ্গিক मक्र (कर (कर নির্ণন্ন করিয়া-অবস্থা পর্য্যালোচনা দারা ट्टन, विभागतित्व যুদ্ধায়োজন গজনবীর অধস্তন চতুর্থ পুরুষ মোদাদের विक्राह्म र न जा जून इरेग्ना हिन। जाना करे জানেন,—এবং ইহা একটি হ:थञ्जनक সত্য, যে ভারতে মুদলমান জাক্রমণের ইতিহাস ভারতবাসীগধণর অনৈক্য ও পরাজ্যের স্থবি-স্তৃত কলকক।হিনী মাতা। किंख स्थानादनत ভারতাভিয়ানের বিস্তৃত বিবরণ প্রকাশিত हहेला এই युद्धवर्गना रव्यक, ভावकवानीत দুরপনেয় কলককালিমা অন্ততঃ

অপনোদন করিয়া, দিতে পারিবে বলিয়া আশা হয়।

244

উদয়াদিভার পর ক্রমান্তরে নরবর্মদেব ও बर्णावर्षात्व, धवर विजीयंत्र इटेशूळ क्यार्ग्यात्व শক্ষীবর্মদেব ধারসিংহাসনে অধিষ্ঠিত ছিলেন,। কিন্ত মহামতি টড় বলেন, ষশোবর্ম উদয়াদিত্যের পৌত্র এবং সমগ্র মালবের অধীশর ছিলেন। ঝালরাপত্তন ৰা চন্দ্ৰাবতী প্ৰভৃতি মধ্য ভারতের অনেক न्द्र ह তাঁহার অমুশাসন প্রাপ্ত হ ওয়া यात्र । সভারা-ভাষ্রশাসনে লক্ষদের নর-বর্মদেবের ভ্রাতারূপে উল্লিখিত হইয়াছেন। ইহাতে ভারতগৌরব মিত্রমহোদর অনুমান करतन,--- উদয়াদিভার মালবের রাজ্যাধিকার নরবর্শ্ব প্রাপ্ত হন, এবং তাঁহার ভ্রাতা লক্ষদেব অগ্রজের করদরূপে পূথক স্থানের স্বতন্ত্র রাজ্যে আধিপত্য শাভ করেন। এক্লপ স্থলে স্বর্গীয় মিত্রমহাশরের প্রদর্শিত পছারুদরণে উল্লিখিত আপাত প্রতীয়মান বিসংবাদী লিপিছয়ের নিয় লিখিতরূপে সামঞ্চ্যা বিধান কাতে পারা যার।-মালবের গুমাররাজবংশের পূর্ব পুরুষ ক্লফসিংহ, দিতীয় বৈরীসিংহ, তৃতীয় সিয়ক বা সিন্ধুল এবং চতুর্থ বাকপতিরাল বা অমোঘবর্ষ বা বলভেঞা। শেষোক্ত নরপতি ১০৩১ সংবৎ (৯৭৪ খ্ব: আ:) ও ১০৩৬ সংবতে (৯৮. श्: षः) উজ्জिशनीए ज्ञि नाम करतम। মুঞ্জ সম্ভবতঃ ইহারই আদরের নাম এবং উজ্জানী ইহারই অধিকারভুক্ত ছিল। সিদ্ বৈরীসিংহ বা সিংহরাজের ন্রান্তর বলা ঘাইতে

পারে। সাভারা ভাত্রশাসন পাঠে অবগভ হওয়া যায়, লক্ষদেৰ ১১৬১ সম্বতে (১১০৪. थः अः) कौविक हिल्मा। छाँशात खाला নরবর্ষের পুত্র বশোবর্ম ১১৯১ সংবতে (১১৩৫ ধৃঃ অঃ) কার্ত্তিকমাদের ওক্লাষ্টমী তিথিতে পিতার সাম্বংসরিক প্রাদ্ধ উপলক্ষে যে গ্রামন্ত্র मान करतन, छाँशांत शूब, जन्नवर्ष ১२०० সম্বতের (১১৪৪ খৃ: অ:) প্রাবণমাসের পুর্ণিমা তিথিতে তাহা পুনরঙ্গীকার করেন। এই সাম্বংরিক প্রান্ধকে অধ্যাপক লাসেন প্রথম প্রেতশাদ্ধ রূপে গ্রহণ করায় কাল নির্বাচনে দশ বৎসরের গোল পড়িয়া গিয়াছে। কুমার-পালচরিতে লিখিত আছে,---মুঞ্জ ১০৭৯ সংবতে (১০২২ খুঃ অঃ) জীবিত ছিলেন। দিতীয় উজ্জিদনীলিপি পাঠে ঘশোবৰ্ণের পুত্র লক্ষীবৰ্ম ১২০০ সংবতে (১১৪০৪ খৃঃ অঃ), এবং তৃতীর পিপ্লিয়ানগর লিপি হইতে যশো-বর্ষের প্রপৌত্র অর্জুনবর্ষ ১২৭২ সংবতে (১২১৫ খু: অ:) জীবিত ছিলেন, অবগত হওয়া যায়। সিহোরার তাম্রশাসন পাঠেও অর্জুন বর্ম্মের একপ সময়ই নির্ণীত হয়। এই অর্জুন বর্মদেবের সহিত গুর্জার রাজ চালুক্য বংশীর সিদ্ধরাজ জরসিংহের যুদ্ধ হয় বলিয়া উল্লেখ আছে। ক্যান্তেল মহোদয় वर्णन. এই সিদ্ধরাজ বা সিদ্ধরায় -আনহিল ওয়ারা পত্তনে ১০৯৭ হইতে ১১৪৩ খৃঃ অঃ পর্যান্ত রাজত্ব করেন। এই যুদ্ধপ্রদান ধাররাজ্যে প্রাচীন ভোজশালার একথানি প্রস্তর্ফলকে থোদিত নাটকাংশ হইতে অবগত হওয়ী যায়⊌*

^{*} এই ফলকবানি ৫ মুট ৮ ইঞ্চি দীৰ্ঘ এবং ৫ ফুট প্ৰশন্ত। ভাহার বোদিভ অংশ প্রাচীর গাতের সহিত প্রথিত ছিল। ইহাতে রাজগুরু বালহরখতী-উপাধিধারী মধনরচিত্তপারিজাভনপ্পরী বা লয়প্রী নামক সংশ্বত নাটকের প্রথম কুই আছ উৎকী প্রহিয়াছে। ইহাতে অর্জুন বর্ষের প্রশন্তি এইয়ালে বর্ণিত আছে,

কিন্ত ভাহাতে বুৰ্ণিত বিষয়ের কাব্যাংশ বাদ ু দিলে কভটুকু অংশ ঐতিহাসিক সভারপে অবশিষ্ট থাকে, তাহা নির্ণয় করা কঠিন। ধার রাজ্যের শিক্ষাবিভাগের পর্য্যবেক্ষক কাশীনাথ কৃষ্ণ লেলে মহোদয় অৰ্জ্জন বৰ্ম নির্দ্ধারণ করিয়াছেন। কিন্তু অনিহল পত্তনের সিদ্ধরাজ জয়সিংহের সময় তিনি ১০৯৭—

১১৪৩ थुंडीसरे चौकांत कतिश नरेबाह्न। অথচ ইহার কোনরূপ সামগ্রস্য বিধানের **टिशे करत्र नारे। रेशट व्हार दार हम्, श्राप्त** थानिक नांवेकाःम व्यर्द्ध्न वर्त्यत नमस्बर्ध লিখিত হয়, অতএব তাঁহার স্তুতি প্রদক্ষে পূর্ববর্ত্তী কোন রাজার বিজয় মুকুট কবিকল্পনা দারা তাঁহারই মন্তকে আরোপিত হইয়া থাকিবে। স্তরাং সিদ্ধরাজ জয়সিংহ অর্জুন

—'ভোজদেবের বংশপুরক্ষর বীরাপ্রণায় মহারাজ অর্জুনর্ম্পাদেবের গুজরাত্রাজ জয়দিংতের সৃহিত মুক্ উপস্থিত হয়। 'পর্বা পর্বাতের নিকট (সম্ভবত: পঞ্চনহলের অন্তর্বার্ত্তী আধুনিক পাবাগড়) তাঁহাদিপের মধ্যে একটি ভীবণ পশুমুদ্ধ হয়। প্রতিবন্দী দেনাবয় ঝটি গানিকিপ্ত সমুদ্রতরক্ষের ভায়ে পরস্পরকে আফ্রমণ করিল। শত্রুবেনা রণক্ষেত্র পরিত্যাগ করিয়া পলায়ন করিল। বিক্রয়ী বীররাজ বাণবর্ষণ রহিত করিয়া मिरानन, ইত্যাদি। এই ভোজশাল'র—আধুনিক কমল-উদ্দীন মদজিদ,—शिलारना অপর পার্যের প্রাচীর-গাত্রে ঐরপ আর একবানি:প্রস্তুরফলক আবিষ্কৃত হইয়াছে। তাহ'তে প্রাকৃতভাষায় আগছনের ভোক্তবির্চিত কুৰ্মাৰভাৱের স্তুতিমূলক একটি শ্লোক ও তাঁহার আশ্রিত কোন কবিবির্চিত অণুর আর একটি শ্লোক খোদিত রহিরাছে। এতদ্যতীত মধ্যবর্তী গুম্বজের যে হুইটি আশ্রয়স্তম্ভ দৃষ্ট হয়, তাহার একটিতে এক-সর্পবন্ধে সংস্কৃত বৰ্ণনালা ও 'মুপ' বিভক্তি এবং বিতীয়টিতে বি-দর্পবন্ধে ধাতুপ্রত্যয়ণ্টিত ছুইটি শিক্ষাবিষয়ক সাংকেতিক লিপি (Table) উৎকীর্ণ রহিয়াছে। স্থানে স্থানে তাহার পাঠ নষ্ট হইয়া গিরাছে সত্য, তথাপি লেলে মংবাদরের যত্ত্বে তাহার উদ্ধার সাধিত হইয়া সাধারণের গোচরীভূত হইয়াছে। ইহাতে স্পষ্ট প্রতীত হয়, এগুলি ভোঙ্ক-প্রতিষ্ঠিত পাঠশালার ছাত্রগণের শিক্ষাসৌকর্য্যার্থে থোদিত হইয়া বিদ্যালয়গুহে ইক্ষিত ইইয়াছিল। এই ভোলশালা এক্ষণে একটি মুসলমান সমাধি ও প্রার্থনাগারে রূপান্তরিত। প্রাচীন আর্যাকীর্তির উপর, এই মদজিদ্টি মাঙুর মহমুদ শাহ বিলজিকর্তৃক ৮৬১ হিজরী অর্থাৎ ১৪৫৭ খ্রীষ্টান্টের নিকটবর্তী সময়ে মৌলানা কমল-উদ্দানের সমাধিরক্ষার্থ নির্দ্মিত হইরাছিল: কিন্তু ইহার প্রাচীন নাম, বিশ্বতিগর্ভে বিলীন হওয়া দূরে থাকুক, আন্ধও জনসাধারণে 'ভোজরাঞা কী নিসাল' অর্থাৎ ভোজরাজের 'বিদ্যালয় এই অভিগানেই আত্মণরিচয় প্রদান করিতেছে। উল্লিখিত ভতত্বরের দিতীয়টিতে ছুইটি লোক উৎকীর্ণ রহিয়াছে। তাহার একটিতে উদয়াদিত্য নরবর্দ্ম উভবের এবং দিত্রাঘটি:ত কেবল উদয়াদিত্যের নাম দেখিতে পাওয়া যায়। ইহাতে অমুষিত হঁর, পূর্ব্ব প্রতিপ্তিত বিদ্যালয়ের পৃষ্টিদাধনে ইহারাও দাতিশয় মনোযোগী ছিলেন। গৌরবাস্পদ পূর্বপুরুষের কীর্ত্তির দহিত স্বাস্থ লাভ অভিত করিয়া রাখিবার অস্ত প্রথম রোকটি নরবর্মের সমধ্যে এবং **বিতীয়টি তাহাঁরও অনেক পূর্বে উদ্যাদিত্যের সময়ে ভোজনশালার অন্তগাত্তে ধো**িত **হইন। থাকিবে।** পাঠৰগণের কৌতৃহল নিবৃত্তির অন্ত বেরূপ অনংক্ষত পাঠের সহিত রোক ছইট প্রকাশিত হইরাছে, অবিকল'দেই অবহাতেই নিমে উদ্ত হইল। অধোরেধান্ধিত শক্তলিছ উপহিত আকারে কোনই অর্থ निकांत्रन कता यात्र ना ।

अरक यम् प्रमाणिकानवर्षपशीकृत्वाः। नरम्याबिता र्या हिरेका निकाबि পुतिका॥ > উদল্লাদিতাদেব্ত বল **দাগরুণাণিকা**। क्वीनांक नृशानक छात्राद्योकति द्यांशिकः । २

वर्षात ममनामत्रिक न। इहेबा, ठेरछत्र निर्गत অমুসারে, তাঁহার পূর্ব পুরুষ উদয়াদিতোর সময়েই জীবিত ছিলেন। মহামতি টড নানা निशि हहेटल, छेन्द्रोनिटलात ममन ১১৫० मःवर (১ - ৯৪ -- ६ थृ: यः) পर्यास পরিবাধি ছিল, এইরপ নির্দেশ করিয়াছেন: কিছ এ সম্বন্ধে তাঁহাকে অভ্রান্ত বলিয়া স্বীকার করিতে পারা যার না। মিত্রমহোদর নানা যুক্তি তর্কের অবতারণা বারা প্রতিপর করিয়াছেন,ভোঙরাজ ১•২৬ হইতে ১০৮৩ খ্রী: অ: পর্যাস্ত রাজত্ব करतन। अमिरक त्वण्डेनी मरहामग्रं मण्यूर्व স্বাধীন গবেষণার দ্বারা ১০৮২ খ্রী: অ: ভোজের কাল নির্ণয় করিয়াছেন। রাজ্যশাসন

ভোজ বে ১০৩৫ খুৱাব্দে রাজপদে অধিষ্ঠিত हिलन, এकथा कर्लन ठेउठ चौकांत्र करवन। উদয়াদিত্যের রাজ্য শাসনকাল তাঁহার গণনামূ সারে, ১০৯৭ পূর্বে ধরিয়া লইলে, তাঁহার সহিত সিদ্ধরাজ জয়সিংহের সম্সাম্য্রিকভার বিষম বাধা উপস্থিত হয়। অথচ ভিনি উভয়কে সমসাময়িক বলিয়া অনেকবার স্বীকার করিয়া-ছেন। এরপ স্থলে উদয়াদিত্যের রাজ্যারন্ত-कान ১०৪० ना इहेब्रा, ১०৮२ वा ১०৮৩ थुड्डीक वर्थाए >> ह॰ मःवए इटेलारे कान অসামশ্বসা থাকে না। वात्रांगमी अवामी

শ্রীললিতমোহন মুখোপাধ্যার।

মেয়েযজ্ঞির বিশৃৠলা।

সে আজ বোধহয় ৩০ বংসরের কথা যধন ভারতী নৰ উৎসাহে নৃতন প্রকাশিত হইতে আরম্ভ করিয়াছে। আমি তখন ছেলেমাত্র্য-আমাকে পাঁচজনে বলিলেন প্রবন্ধ লেখ।

সর্কনাশ-"বামন হইয়া চাঁদে হাত" দেওয়া যেমন অদন্তব কথা, আমার প্রবন্ধ লেখাও ঠিক তেমনি অসম্ভব। আমি विनाम शांत्रिव ना-छाँशांत्रा मत्न छात्रि-বলিলেন, 'হাঁ পারিবে—পারিতেই হইবে, নিষত্রণে যাও, বাংগ দেখিরা আনিরা গল कत-छारारे निविद्या नां । । अति वनिनाम 'ভাছাতে কি হইবে দে ত প্রবৃদ্ধি নয়। তাঁহারা একবাক্যে বলিলেন' সে সর্ব তোমার ভাবিতে হবে না-আমরা তাই থেকে রচনা করির

লইব। আমি দশ বৎসরের স্মৃতি একতা করিয়া যাহা মনে পড়িল লিখিরা দিলাম। किছूनिन পরে দেখি আমার সেই কর্নগ্য হস্তাক্ষর ভারতীর পৃষ্ঠায় স্পষ্টাক্ষরে ফুটিরা উঠিয়াছে। কি ভয়ানক। ঘরে ঘরে একটা আন্দোলন, একটা আলোচনা পড়িয়া গেল-এ সৰ ঘরোয়া কথা কে লিখিল ? ধরা পড়ি-লাম-লামনা যথেষ্ট ভোগ করিতে লাগিলাম। খণ্ডর ভাণ্ডর প্রভৃতি গুরুজনেরা ব্লিলেন "অল বিস্তা ভর্করী, কথামালা গড়ে আর কত বিভা হবে-নইলে ঘরের কথা কাগজে ছাপার—মনে করেছে ৰড্ড শিখেছে—ছি: ছি: !" একে ছেলেমাম্ব— তাতে বউ—লাহনা খাইরা কাঁদিতে লাগিলাম। এ বাছনা গ্ৰনা আমাকে বিভ অনৰ্থক

বিনা অপরাধে • ভোগ করিতে হইরাছিল।

• আমি প্রবন্ধও লিখিতে বাইনাই—ইচ্ছা
করিয়াও লিখি নাই—কাহারও বা কোন
সমাজের দোষ গুণ বিচারের শক্তিও আমার
ছিল না—আমি সে বিচার করিতেও বসি
নাই। কিন্তু আমার বিচারকেরা আমার
বক্তব্য শোনার অপেক্ষা বা আবশুক বিবেচনা
না করিয়াই একতরকা মকদমা ডিসমিদ্
করিয়া দিলেন।

আজ স্বেচ্ছায় প্রবন্ধ লিথিব বলিয়া লিথিতে বসিয়াছি-মনের কথা যে গুছাইয়া লিখিতে পারিব তাহার ভরদা কম—অতএব পাঠক পাঠিকাদের নিকট আমার বিনীত নিবেদন এই যে, আমার কোন কথা অসকত বা অসংলগ্ন হইলে তাহাতে ক্ট না হইয়া যেন সঙ্গত কথাগুলির আলোচনা করেন। আজ আমাদের পিতা, স্বামী, পুল্র সকলেই ষাহাতে দেশের উন্নতি হয় দেজতা সাধ্যমত সচেষ্ট--আমাদেরও কর্ত্তব্য তাঁহাদের সহায়তা কিন্তু কেমন করিয়া কি করিলে আমরা তাঁহাদের যোগ্যা গৃহলক্ষা হইতে পারি ভাহা চিস্তার বিষয়। নারীজাতির উন্নতি ব্যতীত সমাজের উন্নতির আশা বুথা। নারীজাতির উন্নতিতে সমাজের উন্নতি হয়, কেননা সম্ভান পালন করা মাতার কর্ত্তব্য কর্ম। শ-ই ছেলেকে "মামুষ" করেন। তাই ছেলেকে মামুষ করিতে হইলে আগে শা'কে মাত্র্য তৈরার করিবার যোগ্যা করা পরকার। ° সেই জন্মই ত স্ত্রীশিকার এত ব্যবস্থা হইয়াছে, এত বালিকা প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। এখন দেখিতে হইবে षामात कीवत्न এই ४৫ वश्मदा द्वीनिका

কতদূর অগ্রসর হইয়াছে। হাঁ পাড়ার পাড়ার পাঠশালা হইয়াছে—বর্ণপরিচয়ের জ্ঞানশৃতা ত্ত্ৰীলোক হাজারে একটীও মিলিবে না-কিছ বাস্তবিক বাঙ্গালী রমণীর উন্নতি কভটুকু হইয়াছে ? অথবা উন্নতি হইয়াছে না অবনতি হইয়াছে ? এক হিসাবে অবনতি হইয়াছে— সেকালের কিছুই নাই--অতএব মন্দের সহিত ভালটুকুও গিয়াছে। লেখাপড়ার সময় সেই ৫।৬ বৎসর বয়স হইতে ১০।১১ বৎসর পর্যাস্তই गोमांवक चाष्ट्र—(नरे कथामाना, वाधानम পড়াই শেষ পড়া। সেই ১৩।১৪ বংসর বয়সে বালিকা মা হইয়৷ শিওপালনের ভার গ্রহণ করে। সে যে তথনও নিজেই মামুষ হয় নাই —দে আবার অভাকে মাযুষ করিবে কি ? সেকালে যদিও ৮৷১৷১০ বংসর বয়সেও বালিকারা বিবাহিত হইত কিন্তু ১৫।১৬ বংসর वश्रामत शृत्र्व श्रंखत्रांगात्र यादेश व्यधिक मिन বাস করিত না। একালে বিবাহ ১৩/১৪/১৫-তেও হয় কিন্তু ১২ হইতেই "বে হোল না. বে হোল না, কবে হবে, কবে হবে"-এই আলোচনা ছাড়া শিক্ষার কোন ব্যবস্থা দেখা বার না। বিবাহ হোক বা না হোক স্কুল ১০।১১ বৎসৱেই ছাড়ান হইয়া যায়। আর তাহাও বলি সাধারণ গৃহস্থ খরের মেরেদের এ রকম স্কুলের লেখাপড়ায় অধিক শিক্ষা না হওয়ায় কোন ক্ষতি বৃদ্ধি নাই—শিক্ষার প্রণালী পরিবর্ত্তিত না হইলে বাস্তবিক উন্নতি ঃাবে না -- অতএব বড় কথা ছাড়িয়া যে কথা নিতান্ত আমাদের चरत्रत कथा छाहाई तृहेशा आत्नाहना कति।

"মেরেষজ্ঞি" বশিংলই বুঝার বিশৃত্থলতার সমষ্টি—ইহা কি লজ্জার বিষয় নহে—ইহার কি প্রতিবিধান সহজে হইতে পারে না চ

মেরেবজ্ঞিতে আমাদের বাকালী রম্ণীর প্রকৃত পরিচয় পাইয়া থাকি। আমাদের শামাজিক ব্যবস্থার ভাল মন্দ বিচার করিয়া চলিতে পারি। অনেক বিশৃত্যলা সামাজিক नित्रस्तत क्रमु७ इत्र—रयमन ज्ञान সংক্ষেপ रहेरा निमञ्जन क्रिए हे हेर्दा। "কাকে রেখে কাকে বাদ দেব" অতএব কুটুম্বিনী সকলেই আসিলেন—সম্ভানদের কোথায় রাখিয়া আসিবেন —তাহারাও আদিল-সঙ্কীৰ্ণ স্থান-বালকবালিকা যুবতী প্ৰোঢ়া वृद्धा मकरण এकरब नानाश्चकात्र विषयः चारनाहना हिन्छि - वानकवानिकाता स्य "মামুব" তাহাদের অশ্রাব্য যে কিছু থাকিতে शांद्र त्रथान त्र विहात नाहे, छाहात्मत्र त्य শরীর নামক পদার্থ আছে, কুধা আছে— নিজা আছে, স্বাভাবিক নিয়মের ব্যতিক্রমে य তाहारनत कष्टे रम्र अकशा विठात कता इत्र ना । भिष्ठ क्रिय्म कें। पिटल्ड वानिका মাতা নিরুপারে তাহাকে যথাসাধ্য পিটনচত্তী দিতেছে—এ দৃশ্য মেরেযজ্ঞিতে প্রচুর। বদি বলি এত ছোট ছেলেপিলে এনেছ কেন -উত্তর-কার কাছে রেখে আস্বো। বাস্তবিক (क छात्र नहेरेव ? निमञ्जलात अको। निर्किष्ठे দিন ষেমন স্থির করা হয় তেমনি যদি একটা निर्फिष्ट সময় श्रित कतिया (पश्री इय--यपि পুরুষ রমণীর বেমন পৃথক ব্যবস্থা আছে তেমনি ছেলেপিলের একটা পুথক নির্দিষ্ট সময় বা দিনের ব্যবস্থা হয় তুর্নে শিশু নিমন্ত্রণ পাওয়ার হাত হতে কত্য পরিষ্ণাণে নিছতি শাভ করিতে পারে। পুনেক মাভী শিহরিয়া উঠিবেন--"বে লেখিকা বলে কি. ছেলে ঘরে কেলে আপনি থেতে বাব—মুখে কি

থাবার উঠে"। তাঁহাদের ,নিকটে আমার নিবেদন বে .নিমন্ত্রণ গৃছে শিশুরা বাবার সময় আগ্রহ সহকারে যায় বটে-কিন্ত সেখানে একটা বয়স্ক ব্যক্তির মত পোষাক আঁটিয় গম্ভীরভাবে আহারের প্রত্যাশার বসিয়া ধৈর্যারক্ষা কভক্ষণ করিতে পারে ? ভারপর ক্রমশ: তাহার কর্ত্তব্য জ্ঞান দূরে যায়—জুতা হইতে ক্রমে ক্রমে মাথার টুপি পর্যান্ত পুঁটুলি-জাত হয় না কি ? মাতা শিখাইয়া আনিয়া-ছেন "হটুমি কোরোনা বাবা ক্লিদে ক্লিদে কোরোনা"৷— সাসিয়াছেন বেলা একটা— বাজিল রাত ১২টা তথনও থেতে পায় না---যুমুতে পায় না-কর্তব্যজ্ঞান কি থাকে ? আমাদের ঘরকরা এই রকম সকল বিষয়ে ঢিলা ঢালা রকমের, খিণ্ডদের শিগুকাল হতেই কর্ত্তবাজ্ঞান এজন্ত মজ্জার সহিত মিশ্রিত र्ष ना। हलन रलन नज़नहज़्दन (र এक हो নিয়ম বা তাহার আবশ্রকতা আমরা আজও হৃদয়ক্ষম করিতে পারি নাই। সময়ের মূলা যে কত তাহা বুঝিতে শিথি নাই। সময়ে হুন ভাত খাওয়াও ভাল অসময়ে পোলাও লুচিরও মর্য্যাদাহানি হয় তা আমরা বৃঝি না। বিচার নাই—কুটুম্ব পরিচিত স্থানাভাব নিমন্ত্রিত হইরাছেন, আরোজন সকলেই প্রচুর হইয়াছে—কিছ দাঁড়াবার নাই—রালা শেষ হইতে সন্ধা হইল— কিছুতে দৃৰ্পাত নাই ; ও বৃহৎ বাপারে অমন हरद बाक ।" এ 8৫ वरमदा এ विषयत किइमाज वनन रत्र नारे। . এरेशान श्रीकात করিতেছি একটি কুপ্রথা দ্র হইয়াছে— "সরা ভোলাশটা একেবারে উঠিরা গিরাছে। আহার করিতে আসিরাই মিটায়ের পাত্তে

দুচিগুলি তুলিয়া পশ্চাতে রাখা—হ তিনথানা ুগাড়া এক একজনে অধিকার করিয়া "ওধানা আমার সরর, ওখানা আমার বরর, এতে **ज्यकां में** निरम्ना नां (मत्न मत्न नुि यज পার দাও) তা আর নাই। আমাদের কন্সারা এই প্রথা এদেশে ছিল বলিয়া বিশাস করে একেত আমাদের জানা থাকে না— যে লোক নিমন্ত্রণে আগিবে—অমুমান লোক ছই শতও হইতে পারে তিন শতও হইতে পারে—কেমন হিদাব দেখন— অত এব প্রচুর থাবার রাখিতে হয়—পাছে কম পছে। এর উপর যথন "তোলা" প্রথা ছিল-তথন গৃহত্তের কি কট্ট ছিল তাহা সকলেই বুঝিতে পারিবেন। কিন্তু তা বলিয়া আৰু কাল খরচ গৃহত্তের যে কম হয় তা কেহ (यन मान ना करतन। कातन घरत नहेशां या अभी इस ना वटि किन्छ नष्टे इस अहुत। সেকালে এত "রকম ফের" ছিল না-লুচির ষজ্ঞি—লুচি কচুরি পাঁপর ভাজা আলুনি ছোকা. পটল বা বেগুন ভাজা ক্ষীর দই মিষ্টার (তাও মিষ্টান্ন মেরেরা ঘরে লইরা বাইতেন স্বামী পুত্র আছেন)—স্থতরাং এত "ফেলা ফেলির ঘটা" ছিল না-মিতবারিতা ছিল, লক্ষীত্ৰী ছিল। কান্সালী ভোজন ছিল, উৰুত্ত সামগ্রী তাহাতে খরচ হইত। এক প্রান্ধ ব্যতীত আরুর ত এখন কাঙ্গালী ভোজন বড় একটাহয় না৷' তার পর বিশৃত্থলাঘটবার একটা বৃহৎ কারণ গাড়ী পান্ধি। সে কালের মত এখন 'আর কাহারও বাড়ী পাক্তি আদে ना-निमञ्जन कतिया शिनाम निष्कताहे (यदा। ইহাতে পূর্বাপেকা একটু স্থবিধা হইয়াছে— এখন ফিরিরা যাবার ব্যবস্থা ও সময় মত

আহারের ব্যবস্থাটা হইকে অনেক অস্থবিধা দ্ব হর। নিমন্ত্রণের প্রধান উদ্দেশ্য এই বে মেলা মেশা—আলাপ পরিচর। কিন্তু আমা-দের এই বৃহৎ বজিতে সে স্থবিধা আদৌ হর না।

নিমন্ত্রণ বাড়ীতে গিয়াই সকলে চান্, থাওয়াটা হলে হয় চলে বাই—খাওয়াও বে কতক্ষণে হবে তার ঠিক নেই। মুথ চেনা-চিনি অথবা আর কে কি বন্ত্রালয়ার পরিয়া আদিয়াছে ইহা লক্ষ্য করা ব্যতীত আর কোন রকম আলাপ পরিচয় প্রায়ই হয় না। এথানে সাজসজ্জা সম্বন্ধে এই বলা যায়, মহিলাদের পরিক্লের অনেকটা উয়তি দেখিতে পাই। একবম্বণরিহিতা বাঙ্গালী রমণী দেখা যায় না—বিধবারা তসর গরদ বা মোটা বন্ত্র ব্যবহার করেন। আর রেশমি বন্ত্র ছাড়িয়া হতার বন্ত্র পরিধান করিয়া যে আহারে বসা হইত এখন আর সে জালা নাই। ইহা হইতে এই অহমান করা যায় যে, "সকরীর" বিচার মেয়েদের মধ্যেও ততদুর প্রবল নাই।

শিশু সন্তানকে মাহুবের মত মাহুব করিরা গড়িতে মাতাই পারেন। আমাদের দেশের একরতি মেরেদের কোলে বড় বড় সন্তান দেখিলে ঠিক সেই"১২ হাত কাঁকুড়ের ১৩ হাত বীচি" কথাটি মনে পড়ে। বালক বালিকাকে, 'ছিঃ এটা করিতে নাই' 'ছিঃ ওটা করে না' ইত্যাদি ধীর ভাবে শিকা ।:তে বড় একটা দেখা যার না হৈলে যতদ্র সাধ্য অস্তার করিরা যাইতেছে মাতা কিছুই বলে না, সকল রকম আবদার অস্তার দোরাত্ম্য সহু করিতেছে হঠাৎ এক সমরে মেজাজ খারাপ আছে—তথন শিশু ভারসঙ্গত কোন কিছু চাহিলেও

थहात भाषा २।८ चा थहात्र थाहेबा हैं। করিয়া কাঁদিতে বসিল। অনেক পরে আবার মা আসিয়াই কোলে তুলিয়া যাহা চাহিয়া প্রহার খাইয়াছিল তাহা দিলেন। তবে সে শিশুর ভাশ মন্দ জান হওয়া কি কঠিন নহে ? मकन घरतरे कथरना ना कथरना अमन घरना ঘটেই—ইহা কি সাধামত নিবারণের চেষ্টা ক্রিলে কতকটা উন্নতির পথে অগ্রসর হওয়া যায় না ? প্রথমে ছোট খাট বিষয়ে কর্তব্যের অধীন হইতে শিখিলে তবে ত বালকেরা বড় हरेशा दृहद कार्या कर्खदात मधाना द्वित । বত্বে মামুষ হইলে পরে ত স্বাইকে প্রাণভরে यञ्च कतिरव। পুত मञ्चान यनि वा किছू यञ्च পায়-হায় কন্তাদের কি অযত্ন ! এক একটি মাতার সহিত ৪।৫টি ক্সা, ১টি হয়ত পুত। পুতাট আদরের ঢেঁকি—বাহানা লইয়াই আছে। ক্সাগণ ভাহার দাসী—ছেলে থাইয়া ফেলে দিলে তারা খাবে। তাহাদের মানমুখে সকোচের ভাব দেখিলে প্রাণ ফাটিয়া যায়। ক্সার প্রতি এত অনাদর কেন ? বিবাহ বায়ভার কি ভয়ানক সকলেই তাহা জানেন। - পুত্রকে পথে বদাইয়া দর্বস্থ ঝোয়াইয়াও পিতামাতা যে কন্তার বিবাহ দেন—সেই ক্সাকে কি যত্ন পূর্বক পালন করিতে পারেন না ? পারেন-কিন্ত "মেয়ের মুখ দেখিলেই एव तुक ख्यादेश উঠে" कार्यादे आनत यञ्च व्याप्त ना। वह **मेक** म অষত্বপালিত কলা কালে মাভা হইয়া কোন মুতে ঘরকরা চালাইয়া দেয়—অধিক আরু কত করিবে।

শামি বলিয়াছি বে মেরেদের অবনতি হইরাছে—ভানিরা অনেকৈ হাড়ে জলিয়া বাবেন। "এত মেরে বছর বছর বিএ, এম এ, পাশ করিতেছে—আর তুমি কিনা বল অবনতি!" পূর্বেই বলিয়াছি মেয়ে যাঞ্চাত, একত্রে অনেককে দেখিতে পাওয়া বায়। তাহাতে সমস্ত বালালী রমণী সমাজের একটা পরিচয় পাওয়া বায়। পরিচছদের কিছু উয়তি হইয়াছে বটে কিছ জাঁক জমকের দিকে যতটা দৃষ্টি পরিচছয়তার দিকে ততদ্র নহে—ফুফটিসঙ্গত বা শোভনীয় বা পরিপাটি নহে। ইহাতেও একটা ঢিলা ঢালা ভাব সর্বাঞ্জ লক্ষিত হয়— বস্ত্রালহারে ভূষিতা হইলে মহিলায়া আর নড়িতে চড়িতে পারেন না—ইহা পূর্বে যেমনছিল এখনও ঠিক তেমনি আছে। ঘরে বার যত অলহার আছে সমস্ত একত্রে পরিধান করাই নিয়ম—সে নিয়মের ব্যতিক্রম হয় নাই। ইহাতে জড়ভয়ত ভাবটা পূর্বেবং।

আলাপ পরিচয় যভটা হয় ভাহাও পূর্ববং, কিন্ত আমার মনে হয় যে পুর্বে বেমন অপরিচিতাদের মধ্যেও সরলভাবে পরিচয় করিয়া লওয়া হইত এখন তেমনও দেখা যায় না-এটা আমি অবনতি বলিয়াই মনে করি। মেলা মেশার স্থবিধা ত আমাদের মধ্যে তেমন नारे-जां यिन तिथा हरेता भी भी ना করি ত আর কেমন করিয়া হইবে। মেয়েরা এক व इहेब्राइन, এक पन नाइ अपनी नाइ গান করিতেছে—এ প্রথা পূর্বে মোটে ছিল ना-मर्सा पूर धारण इत्र-याज कांग यन একটু কমিয়াছে। আমার মনে হুর যে এ প্রথা" বত শীঘ্ৰ উঠিৰা যায় তত ভাগ। সে নাচ পান যে কেহ মুগ্ধ হইয়া শুনিতেছেন বাদেখিতেছেন তাহা ত আমি কথনই দেখি নাই—তাহীতে কেবল নিজেদের মধ্যে আলাপ পরিচয়ের অব্সরটুকুও হারাইতে হয়।

त्रक्षनामि घरत्रत्र कार्य शृर्स्त स्थम स्मात्र-দের উৎসাহ ছিল এখন তাহা ততদুর নাই--কলিকাতার মেয়েরা ত ভ্রিয়া অবাক হইবেন যে যজ্জিতে এখনও পল্লিগ্রামে क्षीत्वादकत्रा निस्कत्राहे ताँद्यनः। २००।८०० क्रानंत्र ब्राह्म अक्कन वा इटकनटे वाँरधन। যারা রাঁধেন **তাঁরা যতক**ণ রাঁধেন ততক্ষণ অবশ্র পরিবেশনে যোগদান করেন না---কিন্তু সে বিশাল ডেক্চি ও কড়া ধরিয়া যথন তাঁহারা ঝাঁকানি দেন তথন তাঁহাদের শারীরিক বল ও কার্যাকুশলতা দেথিয়া আনন্দিত ও বিশ্বিত হইতে হয়। ১০ বৎসরের বালিকা ২৫।৩০ জনের রাল্লা অনায়াদে রাঁধে—কেবল হয়ত ভাতের হাঁড়ীটা অন্তে নামাইয়া দেয়। কিছু রদ্ধনাদি কার্য্যে পল্লী-মহিলারাও আর সম্ভষ্ট নহেন-- অসম্ভোবের গুঞ্জন বাদলার সর্বত্তই গুলু গুলু করিতেছে শুনিতে পাই। এটা ত উন্নতির লক্ষণ নহে। ইহার ফল এই অল্ল সময়ের মধ্যেই ফলিতে আরম্ভ করিয়াছে। আমাদের দিদিমা ও মা অনায়াদে অক্লেশে ঘরের সকল কায করিয়াছেন-আমার সময়ে দাস দাসীর চলন আরম্ভ হয়—তবে আমি কতক কতক কায কর্ম করিতে পারি—কিন্তু আমানের কন্তারা সকল কার্য্যেই অপটু—তাহারা দাস দাসী পরিবেষ্টিতু হইয়া মানুষ হইয়াছে ও হইতেছে। 'কিন্তু এই অল সময়ের মধোই দাস দাসীর প্রচশন কমিয়া আসিয়াছে—আর স্থলভে দাস দাসী পাওয়াও যায় না ধরচেও কুলায় না। কাষের অভ্যাস-স্রোতে মাঝে একটা বাঁধ পড়িয়াছে—ভাই चয়ের কাব যে গৃহিণীদেরই একায়ত সেটা তারা প্রাণে প্রাণে অমুভব করেন

না— ঘরের কাষ যেন কেবল দাস দাসীর কাষ

— দাস দাসী স্বাধিতে না পারা যেন ত্রভাগ্যের

ফল এমনি ধারণা সকলেরই ইইয়াছে।

শিশু চক্ষের সম্মুথে তিল তিল করিয়া পরিবর্ত্তিত হইলে সহসা বোঝা যায় না ষে তাহার কতদ্র পরিবর্ত্তন হইয়াছে। কিন্তু এক বংসর পরে হঠাৎ দেখিলে ষেমন একেবারেই বোঝা যায় যে তাহার ঘোরতর পরিবর্ত্তন হইয়াছে—আমি তেমনি অনেক দিন পরে মহিলাসমান্ত দেখিয়া একেবারেই বুঝিয়াছি যে তাহার অনেক পরিবর্ত্তন হইয়াছে—কিন্তু উয়তি যে বিশেষ কিছু হইয়াছে তাহা মনে হয় না। বায়ু এলোমেলো ভাবে বহিতেছে মধুর দক্ষিণে বাতাসও নহে, হাড়ভালা উত্তরে শীতল বাতাসও নহে।

সকল বিষয়েই ভাল মল ছই আছে।
ভাল হইতে মলটুকু চক্ষে পঢ়িলেই সকলে
সেটা পরিহার করিতে চেটা করেন—তাই
আমি আজ মেয়েযজ্জির বিশৃষ্টলার সহিত
সকলের সমুপে বর্তমান স্ত্রীসমাজের কিছু কিছু
চিত্র নিবেদন করিলাম—যদি স্থাশক্ষিতা ধনী
মহিলারা এদিকে দৃষ্টিনিক্ষেপ করেন তবে
তাহারা নিজেরাই অনেক অস্থবিধা দূর
করিতে পারেন—তাহাদের দৃষ্টান্তে যেমন ফল
হইবে (ও কতক কতক হইতেছে) তেমন
আর কিছুতে হইবে না। যেখানে কেবল
স্থাশক্ষিতা মহিলারা মিলিত হয়েন, সেখানে
কোনই বিশৃষ্ট্যলা দেখা যায় না। কিছু সে
কয়জন ? তাহাতে আমি বঙ্গারমণী সমাজের
উরতি হইরাছে এছুণা বলিতে প্রস্তুত নহি।

বারাস্তরে এ বিষয় আরও বিশদক্ষণে আলোচনা করিবার ইচ্ছা রহিল।

शक्नी-यमूना ।

লেৰারে পশ্চিমে বেডাইতে গিয়া যেথানে বাসা করিয়াছিলাম ঠিক তার সমুখে বাদশাহি আমলের একটা বাগিচা ছিল। প্রকাপ্ত वांशान ;-- भाषत्त्रत्र व्याहीत्त्र हात्रिमिक त्वत्रा, ভারি মাঝে পাথরে গাঁথা গোল-গমুক ভিনটা বাগানের স্থানে স্থানে লাল পাথরে হৌজ তার মাঝে জলের ফোয়ারা; নিমগাছের তলায় খেতপাথরের বড বড চাতাল। স্থানটা জনশুর এবং অ্যমে এখন নষ্ট্রী। বাগিচার ধ্বরদারি করিতে কোম্পানি বাঁহাছরের নিযুক্ত একজনমাত্র বৃদ্ধ মালী ছিল এবং তাহারই বত্নে তুইচারিটা ফুলগাছ ও কতকটা সবুজ ঘাস সেই স্থানটাকে মনোরম এবং সকালে সন্ধায় হাওয়া থাইয়া বেডাইবার মত করিয়া রাথিয়াছিল।

আমার বাসার ত্রিসীমানার আর জনমানব ছিল না। থবরের কাগজ এবং গুই একখানা চিঠি লেখা ছাড়া হাতে কাজও বড় একটা ছিল না, স্বতরাং সেই বছ্ক মালীর সঙ্গেই বছ্কতা পাতাইলাম ও সিকি গুরানির লোভ দেখাইরা তাহাকে আমার বাংলা ঘরের এক কোণ দখল করিতে রাজি করিলাম। সন্ধ্যাবেলা ঠিকা চাকর গুইজন কাজ শেষ করিরা যখন আমার একলা রাখিরা চলিয়া যাইত তখন মালী আসিয়া গল্প জুড়িয়া দিত। আমি তাহার মুখে সিফাই বিদ্রোহ, কমিশনার ক্লাহেবের বাঘ শিকার ভনিতে ভনিতে খুমুইয়া পড়িতাম। নীতকালের সন্ধ্যাটা ভামারের ধুম আর গরের পর গালের বিশ্বে গরম থাকিত।

নিষ্মা মাসুবের অনেক রকম বাভিক

আসিরা জোটে; আমারও ডেমনি অনেক-গুলা ছোট-পাট বাতিক দেখা দিল ভার মধ্যে লেখা বাতিকটা সর্বপ্রধান। আমি প্রথম প্রথম ছোট গর এবং খণ্ড কবিতা শিখিয়া মাসিকপত্তে পাঠাইতে লাগিলাম। করিয়া লেখা যে সহজ নয় এ কাওজান তথন আমার জন্মে নাই। যাই হোক নেশা ক্রমে অমিয়া উঠিল। ডিকিন্সনের দোকানে রীতিমত হিদাব খুলিয়া মাদিকপত্তের জন্ম আকটা উপন্থাস আরম্ভ করিয়া দিলাম। উপন্থাসটা বে মেই সাহি-বাগের কবর তিন্টার চারিদিক বেড়িয়া বেড়িয়া গৰাইয়া উঠিতেছিল তাহা আর বলিতে হইবে না। কলসের মধ্যে আরব্য উপস্থাসের দৈত্যের মত গল্লটা আমার তিনটি মাত্র পরিচ্ছেদের ভিতরে দিবারাত্রি থাটিয়া বেশ ফেনাইয়া তুলিতেছিলাম।

সেই সময় একদিন বাদলার পরে দারুণ শীত পড়িল,—বরে আর বসিয়া থাকিবার যো রহিল না। উপস্থাসটার একটা পরিশিষ্ট সেই সাহি বাগিচার ক্রব্রের উপরে বসিয়া লিথিব মনস্থ করিয়া থাতা হাতে বাহির হইলাম।

উত্তর পশ্চিম কোণ হইতে বরফের মত
তীক্ষ হাওয়া বহিতেছিল। ঘাসের উপরে মেছদী
গাছের বেড়ার গায়ে গায়ে শিশিরের জাল
পড়িয়াছে। বেলা আট্টা; তখনও স্থাদেবের
দর্শন নাই। বাগিচার সান্বাধা রাস্তার চলিতে
পা যেন হিম হইরা গেল। আমি নিঃশব্দে গিয়া
বাগিচার মধ্যে বড় কবরটার আশ্রর লইলাম।
কবর-হানের দেওয়ালের একদিকে আনারফ্লের জালি দিরা বাহিরের আলোক জাগিতে-

ছিল, আমি তাত্তারই কাছে বসিয়াঁ লিখিতে

লাগিলাম। দিবসের আহার সঙ্গে লইয়া ঠিকা
চাকরদের ছুটি দিরা আসিয়াছিলাম। স্থতরাং
বাসার যে ফিরিতে হইবে তাহা মনেই ছিল
না। লেখা শেষ করিয়া যথন উঠিয়া দাঁড়াইলাম তথন সমাধি-গৃহটা অন্ধৃকারে পরিপূর্ণ
হইয়া গিয়াছে;—চারিদিকের দেওয়ালে নানাবর্ণের-প্রস্তরে লেখা বিচিত্র লতাপাতা, কার্ণিসের কোলে কোলে পাথরে খোদাই করা
আলার ভেতর দিয়া একটুখানি চন্দ্রালোক
কররের উপরে আসিয়া পড়িয়াছে—ঠিক যেন
কে সেখানে বড় বড় ক্রপার ফুল ছড়াইয়া
গিয়াছে।

• আমি বাহির হইবার জন্ত বারের নিকট আসিয়া দেখিলাম বার বন্ধ। মালী ঠিক নিরমিত সমরে বাহির হইতে শিকল টানিয়া চলিয়া গিয়াছে। শীতকালে জলে পড়িলে যেমন হয়, হিম অন্ধকারের ভিতরে প্রাণটা আমার তেমনই হাঁফাইয়া উঠিল। পকেট হইতে দেশালাই লইয়া একটা জালাইলাম বু এবং তাহারই ক্ষীণ আলোকে পথ চিনিয়া যেখানে বসিয়া লিখিতে ছিলাম সেইখানে আসিয়া বসিলাম। অন্ধকার কবরে চামচিকা বাছড় এবং কে জানে আরো কাহাদের সহিত একা প্রাণী রাত কাটাইতে হইবে ভাবিয়া মন চঞ্চল হইয়া উঠিল।

আৰু পাত্ৰিটা জাগিয়া কাটাইবার মতলব করিয়া একটার পর একটা সিগারেট ধরাইতে লাগিলাম। এ ভাবে কতক্ষণ কাটিয়াছিল বলিতে পারি না। হঠাৎ এক সময়ে একটা বন্ধানু শব্দে চমকিয়া জাগিয়া উঠিলাম। প্রথমটা কিছুই হির করিতে পারিলাম না; ক্রমে সকল কথা মনে আসিল।

মালী থ্ব প্রাতে আদিয়া কবরের দরকা
খুলিয়া দিত, আমি ভাবিলাম দেই বৃদ্ধি
শিকণ খুলিল। তাড়াতাড়ি উঠিবার চেষ্টা
কবিলাম কিন্তু পারিলাম না,—হাত পা
যেন অবশ হইয়া গিয়াছিল। ঘোর অন্ধকারে
কিছুই দেখিতে পাইতেছি না। পকেট
হাতড়াইয়া দেশালাই বাহির করিলাম,আন্দাকে
আন্দাজে একটা কাঠি ছিলাম,—খন্ করিয়া
বাল্পের গায়ে শক হইল কিন্তু আলোটা ঘেরূপ
হইল তাহাতে আমি অবাক হইলাম;—দেশলাই
কাঠিকে এরপ ব্যবহার করিতে জন্মে দেশি
নাই! কাঠিটার মাধার অগ্নিশিধা নাই অথচ
সমস্ত গৃহটা যেন দিনের মত স্পষ্ট দেখা
ঘাইতে লাগিল।

আমি দেখিলাম চারিদিকে খেত পাথরের দেওয়ালে লেখা বিচিত্র বর্ণের লতা, পাতা, ফুল, ফল, মণিমাণিক্যের মত ঝক্মক্ করি-তেছে। দিনের বেলায় কতদিন এই কবরের ভিতর বেড়াইয়া গিয়াছি কিন্তু এত কারুকার্য্য তো কোন দিন চোখে পড়ে নাই! দেওয়াল-গুলা বেন আয়নার মত মস্ণ—কোথাও বিন্দুমাত্র মলা ছিল না! বোধ হইল যেন আজ্ব প্রস্তুত করিয়াছে! এক দুরুর্তে আমার চোথের সমুথে মোগল শিল্লের সমস্ত গৌরব উদ্যুটিভ হইয়া গেল। সামান্ত একটা দেখলাই কাঠি যে এরূপ কাঞ্চ ঘটাইবে আমি আশা করি নাই। সোনার কাঠির স্পর্ণে বেন একটা মায়া রাজ্যের নার শ্বলির গেছে মনে হইল। বাহিরে বাগিচায় গোলাপ ফুল ফুটিয়াছিল কিনা কে জানে, কিন্তু একটা মৃতু গোলাপী গন্ধ এবং

জলের ফোয়ারার একটা শীতল ঝর্থর:সমীত ম্পষ্ট অহুভব করিতে লাগিলাম। মনে হইতে লাগিল এথনি আমার চোধের সমূৰ হইতে অভাতের একথানা পদা সরিয়া ষাইবে ! আমি একটা অনাবিষ্ণুত রহস্তের এক অহ্ব পাঠ করিবার আশার লোলুপ চিত্তে অপেকা করিয়া রহিলাম। কতকণ এরপ অবস্থায় কাটাইরাছিলাম বলিতে পারি না। হঠাৎ এক সময়ে সমস্ত আলোক নিভিয়া গিয়া চারিদিক অন্ধকার হইয়া একটা দারুণ শীত ও সঙ্গে সঙ্গে কম্প হাডে হাডে বিধিতে লাগিল আমি গায়ের লুইখানা টানিয়া মুড়ি দিলাম এবং যে অভিনয়টি দেখিবার আশা করিতেছিলাম ভাহাতে নিরাশ-হইয়া নিদ্রার উল্লোগ করিতে লাগিলাম। হঠাৎ আমার থাতা ধানার কথা মনে পড়িল—সেটাকে উপাধান করিব বলিয়া। কিন্তু থাতা নাই। অন্ধকারে আশপাশ হাতড়াইয়া দেখিলাম খাতার চিহ্নাত্র নাই ! তখনই একটা দেশালাই জালিয়া থাতার সন্ধানে উঠিলাম এবার দেশলাইটা আর পূর্বের মত ব্যবহার করিল না—সহজ ভাবেই জ্বলিতে मानिन।

আমি যেথানে বসিয়া ছিলাম তাহার একলোপে অনতি গভীর একটা শৃত্য কবর ছিল, আমি সেই স্থানটার ভাল করিরা খুঁজিবার জন্ত , আলোক হাতে ঝুঁকিয়া পড়িলাম। সহসা সেই সময়ে কে বেন পশ্চাৎ হইতে আসিয়া আমাকে স্পর্শ করিল এবং চমৎকার উদ্ধৃতে বলিরা উঠিল—বাব্দা এই যে তোমার কেতার । আমার শিরার শিরার বিহাৎ ছুটিরা গেল। চীৎকার করিবার শক্তি ছিল না—কঠরোর হইল গিলাছিল। ব্রহালিতের মত

আমি ফিরিয়া দাঁড়াইলাম। মাথার ভিতরটা বাঁবোঁ করিভেছিল, চোথে ভাল দেখিতে" পাইতেছিলাম না। সম্মুখে দেখিলাম অস্পষ্ট ছায়ার মত মোগলাই পাগড়ি এবং জামাজোড়া পরণে এক পুরুষমূর্ত্তি! সে ধরণের কাপড় এবং শিরস্তাণ এখন দলিত নাই কিন্তু তবু লোকটি যেন চেনাচেনা বোধ হইল। তাহার শাশ্রুনীন মুখে এমন একটা কমনীয়ভা ও রাজভাব বিভ্যমান ছিল যে, তাহাকে দেখিয়াই আমি বুঝিলাম, ইনি কোন বড় লোক হইবেন।

পশ্চিমে অনেক দিন থাকিরা আমার মুসলমানি আদৰ কারদাও উদ্ভাবাটার বিলক্ষণ দখল জন্মিরাছিল। আমি লোকটিকে রীতিমত সেলাম ও সম্ভাবণ করিরা থাতাথানির জন্ম হাত বাড়াইলাম।

লোকটি একটু হাসিয়া বলিলেন— থাতাতে কি লিথিয়াছেন পড়িয়া শুনাইতে আপত্তি আছে কি ?

রাত্রি এখনো অনেক আছে—থাতা ভনাইতে আমার আপত্তি দুরে থাক্ ভনাইবার লোক পাইলে বাঁচি, তবু ভদ্রতার থাতিরে বলিলাম—যদি আপনার বিরক্তি না হয়—।

'তবে আহ্ন' বলিয়া লোকটি আমাকে
লইয়া সেই সমাধি গৃহের পূর্ব্বদিকের এক
অংশে প্রকাপ্ত এক খানা খেত পাথরের
চৌকির উপরে গিয়া বসিলেন।' ধরিয়া
ধরিয়া লেখা শুনাইয়া অনেক মানব আয়াকে
আমি নির্ভারে বস্ত্রণা দিয়াছি, এবার
প্রেতাজ্মার সলে আলাপটা এই ক্রত্তে
কিরূপ জমিবে সেটি একটা ভাবনার বিষয়।
যাহা হউক গল স্থক করিয়া দিলাম এবং
বত শীল্প পারা যাম ভিনটা পরিছেন শেব

করিলাম। গরের, পরিশিষ্টটাও শুনাইয়া দিবার
•ইচ্ছা ছিল কিন্ধ শোতার মুথে উৎসাহের লক্ষণ
বড় একটা দেখা গেল না, স্মৃতরাং থাতা বন্ধ
করিয়া জিজ্ঞাসা করিলাম— গল্লটা আপনার
কেমন লাগিল ? উত্তর হইল—মন্দ নয়। কিন্ধ
সাহিবাগের ইতিহাসটা আপনি, যেরূপ দিয়াছেন সত্য ইতিহাসটা তাহা অপেক্ষা আরও
ছদয় বিদারক এবং আমিই সেই বিয়োগান্ত
নাটকের প্রধান অভিনেতা ছিলাম। তবে
বলি শুমুন :—

"দিল্লীর রাজ-তক্তের ঠিক নীচেই আমার আসন ছিল। হিন্দুস্থানের বাদশাহি একদিন আমাকেই করিতে হইবে এ কলনাও সমরে সময়ে করিতাম। বাদশাহি প্রথামত এক হিন্দু রাজকুমারীর সহিত°আমার প্রথমে বিবাহ হয়। আমি ২১ বৎসরে ছয়-হাজারি শাসন কন্তার পদ ও হিন্দুবেগমকে লইয়। বাঙ্গালা **(मर्म (श्रमाम) (महेथान आमारमत नव** অমুরাগের মাঝথানে গোপন বিচ্ছেদের যে মোগলকুমারী আমাদের প্রথম সঞ্চার। ছই হৃদয়ের মাঝে আসিয়া দাঁড়াইল, তাহার রপের দীমা ছিল না, আর যে রাজমুতাকে णामि जालात नाम लहेशा वतन कतिशाहिलाम, তাঁহার গুণের শ্বৃতি প্রেতলোক হইতে আজিও আমায় আকর্ষণ করিয়া আনে। বাঙ্গালাদেশে আসিয়া কেবল যে রাজ্য শাসনে বাস্ত নই একথা কে জানে কেমন পৌছিল দিলীতে এবং সঙ্গে সঙ্গে এই দীরিয়া-গঞ্জ ও তৎসন্নিহিত ভূথণ্ডের শাসনভার অনভিবিল্পে লইবার জন্ম অরুরী পরোয়ানা আমার নিকট পৌছিল। আমি বাধ্য হইয়া বাদালা দেশের বসস্তলীলা অসময়ে

এবং অতি অশোভনরূপে অসমাপ্ত রাখিয়া সপরিবারে এই নিমগাছের দেশে চলিয়া আদিলাম। মনটা আমার যে নিমের মতনই তিক্ত হইয়া গিয়াছিল দেটা অধীনম্ব সকলে কিছু দিন ধরিয়া বেশ অত্তব করিতে থাকিল। ভাবিয়াছিলাম শাসনকার্য্যে আমার অতি-मत्नारयात्र, नीघरे मिल्ली मत्रवादतत्र मृष्टि आक-র্ধণ করিবে এবং অচিরে পুনরায় আমাকে বাঙ্গালাদেশে নিৰ্কাসনে যাইতে হইবে। কিন্ত যেরূপটা চাহিয়াছিলাম সেরূপটা ঘটিল না। স্থান বদলের তাগিদ না আসিয়া উল্টিয়া বরং দরিয়াগঞ্জে নৌ-সেতুটা ভাল ক বিয়া বাঁধিয়া গঞ্চা যমুনার সক্ষ হলে প্রাচীন কেলাটাকে স্থাত বাসোপযোগী করিয়া লইবার জন্ম তিন গাড়ি মোহর আসিয়া হাজির হইল। আমি বেশ বুঝিলাম দিল্লী হইতে আমার জন্ত সোনার শৃঙ্খল আসিল এবং আমার নিজের কারাগার নিজেই প্রস্তুত করিয়া লইতে হইবে। বাঙ্গালা-দেশ ছাড়া হর্দমনীয় সাহাজাদাদিশের জন্ম অন্ত স্থান ও ছিল, দেটা আমি বেশ জানিতাম। স্থতরাং দেই তিন গাড়ি মোহরের জন্ম দিল্লীতে একটা বিশেষ রকম ধতাবাদ প্রেরণ করিয়া যতটা সম্ভব প্রফুল্লচিত্তে কাব্দে লাগিয়া গেলাম। হিন্দুবেগমের অহুরোধে যমুনা তীরে একটা হিন্দুর দেবমন্দির ঘিরিয়া আমি কেলা,ও আমার মণিমাণিক্যে বিচিত্র অপুর্ব্ব প্রাসাদ গাঁথিয়া তুলিলাত। সেখানে সেই গঙ্গায়মুনার চির মিলনের তীরে আমার বিবাহিত জীবনের দ্বিতীয় অঙ্কটা আরম্ভ⁸ুকরিলাম এবং সেটা যে চোথের জলে চিরবিরহের করণ ক্রন্দনের মাঝখানে শেষ করিয়া ছিলাম তার সাক্ষী

এই কবর তিনটি। তার পর আমি ওই দকিণ निटकत करत्रोत्र आभात हिन्सू त्रागरक वामितिकत (छाउँ शबुक्रोत नौटि आमानित চারি বৎসরের স্নেহের ধনকে ফেলিয়া রাথিয়া দিল্লীর রাজতত্তে গিয়া বসিলাম। সেখানে ঐশর্যের নেশা, রূপের লালদা কোনটাই অতৃপ্ত রহিল না। যাহার জন্ম বাঙ্গালা দেশে নির্বাসনকামনা করিয়াছিলাম; সেই মোগল-কলাকে একদিন স্থতীক্ষ ছুরির বিহাদাম করাল কৃষির বর্ষার অভিসার রজনীতে হিন্দৃত্বানের অধিশ্বরীরূপে বাদশাহি তক্তে আমার পাশে আনিয়া বসাইলাম। তার অভাবনীয় ভোগ এবং পিতৃদ্রোহী বাতৃহস্তা, সম্ভানগণের হাতে মর্শ্বান্তিক শোক ও বন্ত্রণার মাঝে জীবনের আমার হঠাৎ তৃতীয় অঙ্কটা একদিন শেষ কবিলাম। এই যে মাঝের ক্বরটা দেখিতেছ এটা আমি নিজের জন্ম প্রস্তুত করিয়াছিলাম। কিন্তু কে জানে, কেন তাহারা আমাকে এথানে, আনিল না! লাহারের আনারবার্গে আমার নিরা সেই রূপবতী মোগলকুমারীর পাশে রাখিয়াছে, আর আমার প্রেতাত্মা এই সাহিবাগের শৃশু কবরটার স্থানলান্ত করিবার জক্ত ঘ্রিয়াবেড়াইতেছে। গলাধমুনার চিরমিলনের মাঝে যেমন রেখা মাত্র ব্যবধান কিছুতে মুছিবার নয়, তেমনি মোগল সম্রাট আমি আর আমার হিন্দুবেগম ধমুনার ছই জনের মাঝে শৃশু কবরের বিচ্ছেদ চিরদিন অপূর্ণ রহিয়া গেছে! ওই বোড়া আসিয়াছে, আমি তবে চলিলাম আপনি বিশ্রাম করুন।"

আমি কি একটা বলিতে বাইতেছিলাম, হঠাৎ বিজাতীয় ভাষায় Well, good morning শুনিয়া চমকিয়া দেখিলাম ঘোড়ায় চড়িবার সাজ পরিয়া দারাগঞ্জের ভাকার সাহেব। ইনি মাঝে মাঝে সকালবেলা অশ্বারোহণে সাহি-বাগিচায় বেড়াইতে আসিতেন।

बीव्यवनोक्तनाथ ठाकूत।

শেষ।

জীবন নাট্যের শেষ ভব রক্ষভূমে
ববনিকা পড়ে গেল ধীরে;
'কি মধুর শান্ত হাদি কুটে উঠেছিল, হাট
দান গণ্ডু অধরের তীরে।
ধীরে ধীরে অভিধীরে ক্রি হোল হাদি যন্ত্র
দ্বির হোল লগ দিহ লভা!
প্রশান্ত শান্তির মাঝে ছিরভাবে মুদে এলো
মোহাছের ছটি আঁথিপাতা!

জীবনের স্থুখ হুংখ বাসনার বিফলতা—
আকুলতা ভালবাসা বাসি,
সেহভক্তি প্রেম স্বার্থ সুরাইরা গেল সব
লগতের হাসি কারা রালি!
প্রকৃতি ঝাটকা অস্তে স্তব্ধভাবে চেয়ে আছে—
অসংযত সানচ্ছিন্নবেশ!
একি মোহ! একি স্থাপ্ত। স্থুখ হুঃখ হুরা শান্তি
ইহলোহক এরি নাম শেব!

শ্রীইনিরা দেবী।

আকবর ও আগ্রা।

মিটার এম্, এ, উইলিয়মসন্ নামে একজন ইংরাজ
আকবর সপজে একটি ইতিহাস প্রকাশ করিয়াছেন।
আমরা তাহারই সারসংগ্রহ করিয়া নিয়ে প্রকাশ
করিলাম।

আকবরের রাজত্বের পূর্বের আগ্রা একটি নগণ্য शान हिन बाज। जारात शुर्व्स रेशत नाम शानीत অধিবাদীগণ ভিন্ন অপন কেহ জানিত না। পুর্বেব ইহা বিয়ানার অধীন একটি গ্রাম ছিল। পরে সিকন্দর লোদী এই স্থানে তাঁহার রাজধানী স্থাপিত করেন। কিন্ত এই পুরাতন আগ্রা নগর যমুনা নদীর বাম ভীরে অধিষ্ঠিত ছিল। আধুনিক আগ্রা নগর चाक्रदाक मभरत यमूनात मिक्न जीरत देष्टेकनिर्धिक গৃহপূর্ণ একটি কুল নগরী ছিল মাতা। কিন্তু আক্রের সিংহাদন লাভের কিছুদিন পরেই কাদিম থা নামে একজন বিচক্ষণু রাজকর্মচামী এই স্থানে হুবৃহৎ সৌধনালা গঠিত করিয়া স্থানটিকে সুশোভন করিয়া তুলেন। রাজ্যভার গ্রহণ করার অব্যবহিত পরেই আকবর আগ্রায় এক বিরাট ও অজের হুর্গ নির্মাণ করান। সিপাহী বিজোহের সময়ে বিজোহী-গণ যথন চতুৰ্দিকে রক্ত পিপাদায় উন্মত হইয়! ছুটতেছিল, তখন বহসংখ্যক ইংরাজ এই দুর্গ মধ্যে আশ্রয় এহণ করিয়া প্রাণরকা করিয়াছিলেন। আক্রের পরবর্তী স্থাটগ্র ভূবন্থাত মর্মান স্বন্ন তাৰ মহল ও অক্যাক্স সৌধমালা হারা আগ্রার শোভা ও গৌরব বাৰ্দ্ধত করিয়াছেন। আগ্রার সহিত তাহার পিতামহ বাবরের শ্বতি জড়িত ছিল বলিয়াই বোধ হয় এই ছানটি আকৰরের এত বিশেষ প্রিয় হইয়া-ছিল। কালে মুসলমান শক্তির হ্রাসের সহিত আগ্রা ও তৎচতুর্দিকছ অদেশ মহারাষ্ট্রদিগের হত্তগত रम। পরে ১৮০০ সালে লর্ড লেক ইহা জয় করিয়া ইংরাজ রাজীভুক্ত করেন।

আক্ষর ও আগ্রা সম্বন্ধে বাহা কিছু প্রাতন নিদর্শন বা ইভিহান হিল তাহার অধিকাংশই সিপাহী বিজ্ঞাহের সমরে নই হইরা গিয়াছে। ইহাতে যে আমাদের কতদুর ক্ষতি ;হইয়াছে তাহা বলা যায় না।
আকবরই প্রকৃত পক্ষে ভারতে মোগল স্থাজ্যের
প্রতিষ্ঠাপক এবং মহজে ও িজ্ঞতায় ভারতের
যাবতীয় স্মাতদিগের শীর্ষহানীয়। আকবর
ক্রাসাদেশের রাজা চতুর্থ হেনরি ও ইংলণ্ডের রাণী
এলিজাবেথের সমসাময়িক। যিনি অপক্ষপাত
ভাবে ইতিহাস আলোচনা করিয়া দেখিবেন
তিনি ইহাদিগের তিন জনের মধ্যে আকবরকেই
সর্ব্বোচ্চ স্থান প্রদান করিবেন। ছুর্ভাগ্যের বিষয়
আকবর স্থকে বিশ্বাদ্যোগ্য ইতিহাস আমরা প্রায়
স্বই হারাইয়াছি।

১৫৪২ সালে আকবরের জন্ম হয়। প্রায় পঞ্চাশ বৎসর কাল তিনি রাজত করেন। উহার পিতা ছমায়ুন দশ বংসর কাল আফ্গানদিগের সহিত যুদ্ধ করিয়া পরাজিত ও তাড়িত হইয়া সিন্ধুদেশের মক্ষ-ভূমির মধ্য দিয়া পারভাদেশে পলায়ন করিতেছিলেন। পথে তাঁহার পতিপ্রাণা মহিষীর প্রদববেদনা উপস্থিত হওয়ার তিনি অমরকোটের কুক্ত হুর্গমধ্যে আঞ্চয় গ্রহণ করেন। এই স্থানে আকবর ভূমিট হন। এই দুঃসময়ে অতি অল লোকই তাঁহার সঙ্গী হইতে সাহসী হইয়াছিল। তিনি ও তাঁহার বিষ্কুত্যা পদ্মী অর্থহীন বন্ধুহীন ভাবে দেই ভীষণ মরুভুমির তপ্ত বালুকার মধ্যে ভ্রমণ করিতে ছিলেন। বনের পুতরও একটা আত্রর স্থল থাকে, ইহাদিগকে বিধাতা সেটুকু হইডেও বঞ্চিত করিয়া ছিলেন। আক্বরের জন্মকালে তাঁহার নিকটে যে কয়টি সহচর উপস্থিত হিল, তাহাদের পুরস্কৃত করিবার সামর্থা পর্যান্ত তাঁহার ছিল না। সম্পত্তির মধ্যে কেৰল একটি মুগনাভি মাত্র তাঁহাঃ সম্বল,—ভিনি তরবারি ঘারা ভেইটি থও থও করিয়া অন্ত্চরবর্গের মধ্যে বিভরণ করিয়া বিলিলেন—"ঈখর করুন যেন এই মৃগনাভির স্থায় জাকবরের গুণগোরৰ চতুর্দিকে विख्जू रहा।"

হতভাগ্য হুমারুনের অবশিষ্ট জীবনের আলোচনা

করা এছলে অনাবশ্বক। বহু ছুর্দশার পর তিনি পুनরায় দিলী অধিকার করেন। কিন্ত অচিরেই काहात मरमारतद (थमा (यह इरेम। ১৫৫७ थृष्टारम ভাষার পুত্র আকবর চতুর্দশ বৎসর মাত্র বয়সে পিতৃসিংহাসনে আরোহণ করেন। বান্ননাম থাঁ ভাঁহার বাল্যশিক্ষক ছিলেন। তিনিই একণে তাঁহার রক্ষক খরূপ হইয়া রাজকার্য পরি-চালিত করেন। আকবরের রাজ্যাভিষেকের পরেই আফগানগণ বিজোহী হইয়া উঠে। আকবর পানি-পতের বিভায় বুদ্ধে বিজোহাগণকে পরাজিত করিয়া ভাহাদিগের শক্তি চুর্ণ করিলেন বটে কিন্ত ইহাতেও রাজ্যে শান্তি ছাপিত হইল না। অব্যবহিত প্রেই রাজ্য মধ্যে ভীষণ সমর্বহি অবিয়া উঠিয়া নিল্লী ও আগ্রা তাঁহার হস্তচ্যত হইল এবং তাঁহার সাম্রাজ্য বলিতে পঞ্চনদের কিয়দংশ মাত্র অবশিষ্ট রহিল। এই বিপদের সময়ে একমাত্র বায়রমের বিচক্ষণ বুদ্ধি ও অমিত সাহসের বলেই আক্রর ভাঁহার রাজ্যোদ্ধারে সমর্থ হন। অষ্টাদশ বর্ষ বয়ক্রমে উপনীত হইলে আকবর স্বয়ং রাজ্যভার গ্রহণ করেন। বায়রম কুদ্ধ হইরাউঠেন। আকবর তাঁহাকে পরাজিত করিয়া ক্ষমা করেন ও ওাঁহার প্রােচিত রাজবৃত্তি দান করেন। আকবরের অসা-थात्र छेत्रिक त्य दक्वन छाँदात्र निस्त्र छा दहेगाहिन, তাহা নহে। তিনি যে মন্ত্রণাদাতা সচিবমণ্ডলি निर्सािष्ठ कतिबाहित्तन, छाहाबा मक्तिहै छाहाब এ কঠিন কর্মে প্রধান সভার ছিলেন। আবুল ফজেল্ তাঁহার অর্থসচিব ও ধর্মোপদেষ্টা ছিলেন, ভীকুবুদ্ধি টোডর মল্ল তাঁহার রাজস্বদ্চিব ছিলেন, সংস্কৃত ও আরবী ভাষায় স্থপন্তিত ফৈজী তাঁহার প্রামর্শদাতা ছিলেন। শ্রেষ্ঠ হিন্দু রাজবংশের কন্সাগণের পাণিগ্রহণ, সকল ধর্মের প্রতি সমান্যু শ্রদ্ধা প্রদর্শন ও অপক্ষপাত শাসনের ঘারা তিনি হিন্দুদিগক্তে করায়ত করেন এবং তাঁহার জীবিত কালের মানাই তাঁহার সামাল্য चाक्शानिश्वाम इटेरड धात्र मुर्मेश ভाরতব্যাপী इटेबा উঠে। শুনা বায় পঁচার্ডীর ক্রোড় টাক। তাঁহার বাৎস্ত্রিক রাজক ছিল ৷

তাঁহার শেব বয়সে ভিনি মুদলমান ধর্শ্বের বিক্তম্ভ এক বিধি প্রবর্ত্তিত করেন বে পদ্মী বন্ধ্যা ব্যতীভ কেত বিতীয় পত্নীগ্ৰহণ করিতে পারিবে না—এক ঈবর ও " এক পত্নীই সাধারণ বিধি। মেরি বা মেরিয়ম নামে এক আরমানী খুষ্টান ললনা তাঁহার এক বিয়ে বেগ্য ছিলেন ৷ তাহার পুত্র মুরাদ সম্ভবতঃ খৃষ্টবর্দ্মাবলম্বী ছিলেন। মেরির ভগিনী জুলিয়ানা স্বন্দরী আকবরের অন্তঃপুরে চিকিৎসকের কর্মে নিযুক্ত ছিলেন। আকবর ক্তাভারের রাজকুমার অনু ফিলিপ বৌর্বনের সহিত (Prince John Philip Bourbon of Navarre) ইঁহার বিবাহ দেন। রাজকুমার ফিলিপ ফরাসী দেশের রাজা চতুর্থ হেনরির ভাতম্পুত্র ছিলেন। জনপ্রবাদ হইতে জানা যার্যে রাজকুমার বন্দযুদ্ধে এক উচ্চপদস্থানীয়কে হত্যা করার অপরাধে ফরাসীদেশ ত্যাপ করিতে বাধ্য হন এবং আকবরের যশের কথা ভানিয়া ভারতে আগমন করেন। আকবর তাঁহার পদম্বাদা ও বীরুত্ব কাহিনী শুনিয়া তাঁহাকে নবাব উপাধি দান করিয়া আপন শ্রালিকার সহিত বিবাহ দিয়া রাজপুরীর তত্তাবধারকের পদে नियुक्त करदन। ১१७१ औडोर्स नामित गांव দিল্লী আক্র×ণ কর। পর্যান্ত রাঞ্জুমার বৌর্বনের रः नथत्र ११ अहे भरत नियुक्त हिलन। ज्भान द्वारका এখনও তাহার অনেকগুলি বংশধর ভূপাল যেগমের व्यथीतन नाना व्यकात जानकर्या निवृक्त व्याहन। এर ঘটনা ছারা আমরা দেখিতে পাই যে এক সময়ে हेबुद्धारभद्र याचा अर्द्धारभक्ता बीव, भवाक्रमभागी ও গব্বিত রাজবংশধর প্রাচ্যদেশের নারীর পাণিগ্রহণ করিতে কুঠা বা অপমান বোধ করেন নাই। কিন্তু হায়! এক্ষণে আদিয়াবাদিগণের প্রতি ভাঁহাদের कि ভावास्ट्र शिक्षाह्य !

রোমান্গণ ধবন বিটেন অথম অধিকার করেন
তথন এক উচ্চপদস্থ রোমক মুব। একটি বিটিণ
রাজকুমারীর রূপে মুখ্ধ হইয়া তাহাকে কিবাহ কুরেন।
এই সংবাদ যথন তাহার পরিবার মধ্যে প্রকাশিত
হইল, তাঁহার জননী হাত কচ্লাইরা, চুল ছি ডিগা
কোনে ও মুণার বলিরা উঠিলেন—"আমার নহিমাঘিত

পুত্র ব্রিটেশের একটা কদর্য্য মেয়েকে বিবাহ করিল।"
ভাহার পিতা ব্রিটিশ রাজকুমারীকে বিবাহ করার
ভাষ্য ভাহাকে ত্যজাপুত্র করিলেন। অবস্থাভেদে
সংসারে এতই ব্যবহারভেদ। মামুবের মনে এই
তর্টুকু বেশ ভাবিদ্বা দেখিবার বিষয়।

বোগ্দাদের হারুণ-অল্-রসিদের স্থায় আকবর তাঁহার রাজ্যরবারে ভাঁড় বা চতুর রহস্তপ্রিয় অমুচরে পরিবৃত থাকিতে ভাল বাসিতের। তাঁহার দরবার मध्य त्माला त्मानियायारे मर्काटल यहिन । लाकमूर्थ छना यात्र-- এक नमरत्र व्याकवत छाशरक বহুমূল্য উপঢ়েকিন সহ পারস্তের শাহের নিকট প্রেরণ করিয়াছিলেন। রাজধানী পরিত্যাগের পূর্বে মোল্লার কতকগুলি শত্রু উপঢৌকন ত্রব্যাদি বাহির ক্রিয়া লইয়া তাহার পরিবর্তে বাক্সের মধ্যে কতকগুলি মাটি ও পাণর রাখিয়া দেয়। মোলা নিরাপদে পারতে উপস্থিত হইল এবং নির্দিষ্ট দিনে প্রকাশ্ত রাজনরবারের মধ্যে বাক্টি খোলা হইল। বাজের মধ্যে রক্নাদির পরিবর্তে মাটি ও পাথর দেখিয়া মোলা ও সাহ যে কি প্র্যান্ত আশ্রেঘায়িত ইইলেন তাহা আর বিশেষ করিয়া বলিবার আবশুক নাই। মোলা रुज्कि रहेश राम अवः भारत्त्र त्कार्थ वाकाकृर्वि हरेन ना। পরে শাহ বজ্রখরে জিঞানা করিলেন--"মোলা ভোমার কি জীবনে বিরাগ জন্মিয়াছে যে তুমি আমার নিকট এই দকল কদ্ধ্য বস্তু লইয়া উপস্থিত **२२ एक मार्गी इरेगाह।" भाना वृत्तिल एक स्म** কোন প্রকারে প্রতারিত হইয়াছে। কিন্তু তাহার উপস্থিত বুদ্ধি তাহাকে সে যাত্রা জীবনদান করিল। সে তৎক্ষণাৎ উত্তর করিল—"জগদীশব আমাদের नकलादक क्रमा कक्रम, कांत्रण महात्राक आंशीन वाहादक **প্লামাটিজানে অবজ্ঞা করিতেছেন তাহা ইসলামধর্মে** वियामीत हत्क व्यम्ला वस्ता 'कांत्रदला' कार्य व्य शान पर्यावीत्रग्य कीवन मानः कतिशाहित्तन, ज धुना-মাটি সেই হান হইতেই সংগ্রহ করিয়া আনিয়াছি। বহ কট্ট ও ব্যয় স্বীকার করিয়া মহারাজা আকবর এই স্বৃতিচিহত লি সংগ্রহ করিয়াছেন এবং দেওলি আপনার নিকট ধোরণ করিবার অর্থ এই বে, ভারতের স্মীসম্প্রদায়ভুক্ত মুসল্যানগণের অপেক্ষা ইহা আপনার দেশেই অধিকতর আদৃত হওয়া সম্ভব।" এই কথা শুনিবামাত্র শাহের ক্রোধ দুর হইল। ওমরাহস্প পরিবৃত হইয়া ভিনি সসম্মানে সেই বাক্ষ্টির প্রতি দৃষ্টি করিয়া প্রিয় পারিষদগণের মধ্যে সেই ধূলামাটি বিভরণ করিলেন—তখন সেই একটু ধূলা পাইবার জন্ম সকলে কাড়াকাড়ি কিঃতে লাগিলেন।

পারস্থাহের দরবারেও মে'ল্লার কতকগুলি শক্ত একদিন রাজ্বরবার মধ্যে ভাহারা চক্রান্ত করিয়া মোলাকে জিজ্ঞানা করিল—"কোনু রাজা বড়,—আকবর না পারস্তের শাহ?" তাহারা মনে করিয়াছিল এবার মোলা যে প্রকারেই উত্তর করুক না কেন তাহাদের উদ্দেশ্যসিদ্ধি সম্বন্ধে আর কোন সন্দেহ নাই। মোলা যাহাকেই বড় বলুক না কেন তাহাদের প্রতিহিংসা লইবার স্থবিধা হইবে। কিছ মোলাকে ভাহাতা ঠিক চিনে নাই। প্রথম উত্তরদানে একটু ইতত্তত করিতেছিল, কিন্তু শাহ স্বয়ং বখন দেই প্রশ্ন করিলেন তখন দে বলিল— "ৰহারাজ ৷ আপনার আয় পরাক্রান্ত নুপতির সহিত বাদশাহ আকবরের কি প্রকারে তুলনা হইতে পারে? আপনি পূর্ণচন্দ্রের স্থায়, আকবর অমাবস্থার স্থায়।" শাহ সম্ভষ্ট হইয়া ভাহাকে বহু পুরস্কার দান করিয়া বিদায় দিলেন। মোলা আগ্রায় উপস্থিত হইলে আকবর তাহাকে সাদর সন্তাবণ না করিয়া একটু বিরক্তিও জোধ প্রকাশ করিলেন। তিনি পারভের শাহের সহিত তাহার তুলনার কথা ইতিপুর্বেই শুনিয়াছিলেন। তিনি মোলাকে बिজাদা করিলেন -- "ভাল মোলা, ভোমার পারস্তদেশে ব্যবহার সম্বন্ধে আমি এ সকল কি শুনিতেছি! যে সকল নির্বোধ य छात्न वरम रमन् छानने कारि, पूमिश्व कि छानापन মধ্যে একজন ?" মোলা বিনীও ১'বে উত্তর করিল-"আমি কি অগ্রাধ করিয়াছি, মহারাজ?" আকবর বলিলেন—"তুমি বিশ্বারস্তের সাহের সমূধে তাঁহাকে পূর্ণচক্র ও আমাকে অমাবস্তার সহিত তুলনা কর নাই!" ধুর্ত বোলা তৎক্ষণাৎ উত্তর করিল-"মহারাজ, এ উত্তরের ছারা আমি আপনার কোন আবদানৰা কৰি নাই। আমাৰভাৱ চক্ৰ দিন দিন নবকলাৰ পূৰ্ব হইরা সৌন্দর্যাগোরবে চরাচর আছের কৰে, কিন্তু পূর্ণচন্দ্র দিন দিন ক্ষয়প্রাপ্তই হইয়া থাকে। মোলার এই সমূভরে আকবর সম্ভই হইলেন।

ত্বা যায় মোল্লার পারভাদেশে অবস্থানকালে পারত্তের সাহ তাঁহাকে একদিন তাঁহার চিত্রালয় দেখিবার অন্ত নিমন্ত্রণ করেন। আকবরের প্রতি ইবাবশতঃ এবং আকবরের ভৃত্য মোল্লাকে অপথানিত করিবার বাসনায় শাহ আকবরের প্রতিকৃতিধানি ভাঁহার পাইবানার মধ্যে টাকাইয়া রাবিতে আদেশ দেন। মোলাকে অস্তাম্ত যাবতীয় চিত্র দেখাইবার পর শাহ বলিলেন "এইবার দেখিবার উপযুক্ত আর একখানি চিত্র অবশিষ্ট আছে। আমার বিখাস তুমি চিত্ৰ দেখিলেই ব্যক্তিটকে বুকিতে পারিবে। কোতুহলপরবশ মোনা দেখিল চিত্র শাহের। সে তৎক্ষণাৎ এ অপমানের প্রতিশোধ লইবার প্রতিজ্ঞা করিল। স্বতরাং যেইমাত্র শাহ ক্রিলেন—"চিত্রটি কাহার চিনিতে পারিলে ?" অমনি নিতীক্জদয়ে সে উত্তর করিল-'আজাই। মহারাজ চিনিয়াহি। চিত্রটি এমন একটি পরাক্রমশালা সুসাটের প্রতিকৃতি যে তাঁহার মুখ দর্শনই আপনার পক্ষে বিরেচকের কার্য্য করে। श्रुवाः जाशनि हेश दकाद छेखम श्रानहे निर्साहन ক্রিয়াছেন। এ স্থানে ইছা থাকিলে আপনার খাষ্ট্যভাষের আর কোন আশঙ্কা নাই।

এই মোলার সম্বন্ধে আর একটি মটনার উলেধ
করিয়া বামরা ইহার নিকট হইতে বিদার লইব।

একবার আক্রর মোলার উপর রুষ্ট হইয়া
ভাহাকে তৎক্ষণাৎ রাজ্যভাগা করিয়া যাইতে আদেশ
করেম। এই ঘটনার কিছুদিন পরে একদিন এক
বনের মধ্যে শাইতে ঘাইতে আক্রর দেখিলেন একটা
মাসুহ ভাহাকে দেখিলা তৎক্ষণাৎ এক গাছের উপর
চঁড়িয়া বসিল। বৃক্লের নিকট গাইয়া আক্রর দেখিলেন লোকটা সেই মোলা, এবং বলিয়া উঠিলেন—
"ভূমি এবনও এবানে রহিয়াঁছ? আমি ভোষাকে
আবার য়াজ্যভাগে ক্রিয়া যাইতে বলি নাই হ" মোলা

নেই ভালের উপর বসিয়া বিশীজভাবে উন্তর করিল

— "ক্ষা করন মহারাল! আর্থি সমস্ত পৃথিবী ভ্রমণ
করিয়া দেখিলাম। বেখানেই যাই গুলি ভাহা মহারাজা আক্ররের রাজ্য। স্তরাং আমার স্বর্গে বাওয়া
ভিন্ন অল্প উপায় নাই। মহারাজ ভ দেখিতেছেন
আমি আজ কটো উঠিলছি।" এই উত্তর গুনিরা
আক্রর হাসিয়া উঠিলেন এবং ভাহার প্রতি সম্ভাই
হইয়া পুনরার তাহাকে পারিবদমধ্যে গ্রহণ করিলেন।

আক্রর অভি বিচক্ষণ দুরদর্শী রাজনীতিজ্ঞ ছিলেন। তিনি হিন্দুগণের কল হইতে 'জিজিয়া' কর রহিত করিয়া সকল প্রজাকে সম অধিকার দান করেন। তিনি এতদুর সাহিত্যামুরাগী ছিলেন বে সংস্কৃত শান্ত ও কাব্যাদি পারস্ভাবায় অমুবাদ क बारे श्री सूमन सानगर्भव सर्था अहिना क विवाहितन । সকল ধর্মকেই তিনি শ্রদ্ধা ও সম্মান করিতেন। তাঁহার হৃদয়ও অত্যন্ত দরালুছিল। তিনি জীববলি ७ वानाविवाह निरम् कृतिग्राहितन। পুনবিবাৰ প্রচলিত করিতে 'দতী' প্রথা লুপ্ত করিতে यञ्जान इरेग्नाहित्नन। छाहात वृश्विनीर्यात वरल আফগানিছান হইতে উড়িব্যা ও হিন্দুদেশ প্ৰায় রাজ্য বিস্তার করেন। কেবল চিতোরের রাজপুতগণ আলীবন বিপর্যন্ত হইয়াও তাঁহার বশ্যতা মীকার कत्र नारे। এই একৰাত্ৰ शिम्पूनाजिरे नगर्व्य ७ সতেলে তাঁহার সকল চেষ্টাকে বার্থ করিয়া আপন স্বাধীনতা রক্ষার সমর্থ হট্যাছিল। আমেদনগরের রাণী চ'দেবিবির কৌশলে ও বীরত্বে দক্ষিণ ভারতে মোগলসামাল্য প্রতিষ্ঠার চেষ্টাও ব্যর্থ হইয়াছিল।

শুনা যায় প্রতি রবিবারে আকবর বিভিন্ন ধর্মের পণ্ডিতপণকে সমবেত করিয়া ধর্মালোচনা শুনিতে ভাল বাসিতেন।

আকবরের শেব ঞীবন বড়ই ছ:খের। তাঁহার বন্ধু ও অমাত্য কলেল ও কেইন্সার মৃত্যুতে তিনি বিশেষ কাডর হইয়া পড়িয়াছিলেন। জাঁহারু উণর তাঁহার ছইটি প্রিয় পুল অকালে ইংলোক ত্যাগ করে! কিছু স্কাণেকা তাহার স্বেহময়ী মাতার মৃত্যুই তাঁহার পক্ষে বিশেষ পীড়ায়ারক হইয়াছিল।

ম:ভার যৃত্যুর পর ভিনি শোকের চিহ্মন্বরপ ক্ষমবন্ত্র পরিপ্লান করিতেন ও মন্তক ও শাল্রু মৃণ্ডন করিতেন। এই শোকের কিছুদিন পরেই তিনি দ্বরং বধন মৃত্যু-শ্যার শায়িত হইলেন, তখন ওমরাহগণকে ডাকিরা অনেক উপদেশ দিয়া বলিলেন "বদি তোমাদের কাহারও কোন ক্ষতি করিয়া থাকি, দয়া করিয়া ক্ষমা করিও। সকলে অক্রবর্ধণ করিত্রে লাগিল। পুত্র কাহানীর তাঁহার পদতলে পড়িয়া উচ্চৈঃধরে ক্রন্দন করিতে লাগিলেন। আকবর তাঁহাকে উঠিয়া ওরবারি গ্রহণ করিতে ইন্ধিত করিলেন। ইহার পর্মুহর্জেই তাঁহার জীবনপ্রদীপ নির্বাণিত হইল।

১৬০৫ খৃষ্টাব্দে আকবরের মৃত্যু হর। আগ্রার
নিকটে সিকাল্রা নগরে তিনি সমাধিত্ব হন। তাঁহার
পুত্র আহাঙ্গীর পিতার সমাধির উপর এক বিরাট ও
বহন্লা সমাধিত্বস্থ প্রতিষ্ঠিত করেন। এই সমাধিরই
একটি শুল্ডের উপর 'কোহিত্বর' নাগক প্রদিদ্ধ হীরকটি
সংলগ্ন ছিল। এক্ষণে সেই কোহিত্বর ইংলেওরাব্দের
মাধার মণি ইইয়াছে।

মহামতি আকবর মরলোক ত্যাগ করিয়াও আৰ জীবিত। ভবিষ্য-বংশের অন্তর্রাজ্যে যিনি অধিচান করেন তিনি মরলোকে জন্মগ্রহণ করিয়াও অসর। শ্রীপ্রবেক্তনাথ ভট্টাচার্য্য।

ব্যবসায়ে সমবায়।

বছ⊲র্ধের নিজালস নয়ন উন্মীলন করিয়া ভারতবাদী জগতের প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া বুঝিয়াছে, দে সভ্যজগতের কত পড়িয়া রহিয়াছে। বুভূকার প্রপীড়নে, মহামারীর ভীষণ তাড়নে ভারতবাদী বুঝি-রাছে, "বাণিজ্যে বসতে লক্ষা * * * * ভিক্ষারাং নৈব নৈবচ।" তাই আজ ভারতের ইতস্ততঃ যৌথব্যবসায় প্রতিষ্ঠার উন্মোগ চলিতেছে। যাহার মূলধন আছে সে খদেশী আন্দোলনের সহায়তায় তাহার একগুণ অর্থ চতুগুণ করিছে ব্যস্ত। কিন্তু ধনীর এই অর্থ-বৃদ্ধি-প্রচেষ্টার ফলে তৈলাক্ত শিরেই তৈল মর্দনের ব্যবস্থা হইতেছে— °দরিজের ধনাগ্রমের পথ কিন্তু পূর্ব্ববৎ সংকীর্ণ ই রহিয়াছে। বস্ততঃ এই মসিজাবী, কৃষি-জীবীর দেশে কয়জন একশত, পঞ্চাশত, এমন কি পঞ্চবিংশতি মুদ্রাই বা অক্লেশে ব্যবসার স্থাপনের জন্ত প্রদান করিতে সক্ষম ? হতরাং "উখার হৃদি লিয়ত্তে দরিক্রাণাং

মনোরথাঃ"। যাহা হউক যদিও নিশ্চেষ্টতা অপেকা এই উন্সম কতক প্রশংসাযোগ্য বটে, তথাপি যে বিষম ভ্রমে আজ বাণিজ্যের আদর্শক্ষেত্র ইয়ুরোপ, আমেরিকা বিপন্ন আমরাও সেই ভ্রমেই পদার্পণ করিছে অগ্রসর হইয়াছি, ইহা বস্ততঃই চিস্তার বিষয়। সংসারে অপরিণামদর্শী ঠিকিয়া শিথে আল দ্রদর্শী দেখিয়াই শিখে। পাশ্চাত্য বণিকের ভ্রমপূর্ণ বাণিজ্যনীতির অমুগমন আমাদের অদ্বদর্শিতার ও বাণিজ্যে অনভিজ্ঞতারই পরিচারক এবং আমাদের ভবিষ্য বাণিজ্যের বিশেষ বিপদস্টক। আমরা বিষয়টী বিশদ্দর্শন আবোচনা করিতে চেষ্টা করিব।

অত্যন্ত পরিতাপের বিষয়,তারতের বাণিঞ্চা বে সময়ে সম্গ্র জগতের মধ্যে চরম উৎকর্ষ লাভ করিয়াছিল সে সময়ের ইতিহাস কালের কুক্ষিতে বিলীন হইয়া গিরাছে। আমরা আমাদের দেশের অতীত বাণিজ্যের অভি-জ্ঞতার সাহায়ালাভে সম্পূর্ণ বঞ্চিত। স্কুতরাং বাধ্য হইরাই আমাদিগকে বর্ত্তমান মুগের
বাণিজ্যকেক ইয়ুরোপ ও আমেরিকার ব্যবসার
ও বাণিজ্যের আদর্শ লইরাই আমাদের লুগু
ব্যবসার ও বাণিজ্য পুন: প্রতিষ্ঠিত করিতে
হইবে; ভজ্জ্য ঐ সকল দেশের ব্যবসার ও
বাণিজ্যের অতীত ও বর্ত্তমান অবস্থাই এক্ষণে
আমাদের বিশেষরূপে পর্যাণোচনা করা
প্রার্জন।

অতীতকালে এ সকল দেশে প্রথমত: ব্যক্তিগত ব্যবসায়, বাণিজ্যই বর্ত্তমান ছিল। তৎপর ধখন ব্যক্তিগত মূলধন বৃহৎ কোন অষ্ঠানের পক্ষে অপ্রচুর বা বিপদসকুল বিশয়া অমুভূত হইন তথন সাধারণ যৌথকারবারের প্রতি ব্যবসায়ীদিগের দৃষ্টি আরুষ্ট হইল। যৌথমূলধনে ব্যবসায়বাণিজ্যের দিন দিন জীবৃদ্ধি হইতে লাগিল, অজস্র ধনাগমের পথ বিমুক্ত হইল; ভারতবর্য প্রভৃতি দেশের ব্যক্তিগত ব্যবসা প্রতীচা মৌথব্যবসায়ের সন্মিলিভ প্রবল শক্তির সন্মুখে তিষ্টিতে অক্ষম হইয়া জ্রুতবেগে অন্তর্হিত হইল। ব্যবসায়িগণ অয়ত্বে বা স্বন্ন যুদ্ধেই ক্রোডপতি হইলেন; এমন কি ভারতের ভার বিরাট শামাজ্যও অনাগাসেই করতলগত করিতে সক্ষ হইলেন। কন্ত সংসারে অসত্যে অভিষ্ঠিত দুচ্ভিত্তিবিহীন কিছুই চিরকাল সমভাবে দশুরমান থাকিতে পারে না; কালের পরিবর্ত্তনশীল গভির সমকে তাহার একদিন পতন অনিবার্যা ও অবশ্রস্তাবী। **পাশ্চাত্য সাধারণ বৌধ**ব্যবসূর্বরও আত্র তাই পভলোমুৰ।

স্পধন, প্রম ও জর এই তিনটি মূল শক্তির সন্মিলন ছারাই প্রত্যেক বাবসায়

পরিচালিভ হইরা থাকে। এই ভিনটি শক্তির একটিও यদি বিরুদ্ধ হয় তবে কোন ব্যবসায়ই, পরিচালিত হইতে পারে না। সাধারণ যৌথ ব্যবসাম্বিগণ ধনতৃষ্ণায় অন্ধ হইয়া, জন-সাধারণের অজ্ঞানতার হুবোগে একমাত্র মুলধনের গর্কে, অপরিহার্য অপর হুইটি শক্তিকে নগণ্য জ্ঞানে অবহেলা করত: এত-কাল আয়ত্তাধীনে রাখিয়া লাভের অধিকাংশই অক্লেশে ভোগ করিতেছিলেন ; কিছ শিক্ষার প্রসারের সঙ্গে সঙ্গে শ্রমজীবী ও ক্রেডারা -যথন বুঝিলেন যে, ঐ সকল ব্যবসায়ের স্থিতি ও উন্নতি তাঁহাদের হস্তেও তুল্যপরিমাণে নির্ভর করে এবং এতকাল মূলধনীগণ তাঁহাদের চক্ষে ধূলিকণা নিকেপ করিয়া তাঁহাদের ভাগের কাঁঠাল তাঁহাদের মন্তকেই ভালিয়া খাইয়াছেন তথন তাঁহাদের স্থায়া অধিকার লাভের জন্ম তাঁহারা বন্ধপরিকর হইলেন: তাহার ফলেই আজ সহস্র সহস্র শ্রমজীবী ধর্মঘট করিয়া মূলধনীর সর্বব্যাসী কুধার কবল হইতে মুক্তির উপার নির্দারণে কুতসঙ্কর; এবং যে ক্রেভুগণ এভদিন নিজের উপার্জিভ অর্থে পরের অন্তার লোভ চরিতার্থতার সহায়তা করিয়া আদিয়াছেন এখন সেই প্রবঞ্চিত ক্রেভাও কোন দ্রব্যের উপযুক্তাধিক भूगा बिट्ड স্বীকৃত नर्म । योशवादमाविशन विषय विश्वास शिक्षणन-একপকে বছকাল অথবা অর্থলাভে ভাঁহাদের বৰ্দ্ধিত, ধনতৃষ্ণা অসাধারণরূপে जानव कहेमांग, जानव शक्क अभनी । পাশ্চাত্য ক্রেতা বিপক্ষ, স্থতরাং र्योथग्रवमात्रस्कतः त्रगटकत्व शत्रिगंड हरेंगः वांगिकानोिकत अहे विवयं नवका नवांगात्वत करा

পাশ্চাত্য অর্থ নীতিজ্ঞগণ বহু গবেষণা দারা এই ু সিদ্ধান্তে উপনীত হইলেন যে, সচরাচর প্রম-জীবিরা পরিশ্রম দারা যাহা প্রস্তুত করে তাহা বাজার দরে বিক্রয় করিলে দ্রব্য প্রস্তুত বিক্রেয় করিবার সমস্ত খরচ বাদে একটা লভ্যাংশ থাকে। চিরন্তন নিয়মামুসারে শ্রম-জীবীরা কেবল মাত্র তাহাদের পারিশ্রমিক পায় এবং তাহাও আবার সর্বত্র উপযুক্ত পরিমাণে পার না; কারণ মুলধনী টানাটানি করিয়া তাহা যথাসাধ্য হ্রাস করিয়া দেন। মুল্ধনী মনে করেন লভ্যাংশ সমস্তই তাঁহার প্রাপ্য, কারণ তিনি কার্য্যক্ষেত্রে প্রথমতঃ অব-তীর্ণ না হইলে প্রমজীবীরা বাজারে বিক্রয়ো-পযোগী দ্রব্যাদি প্রস্তুত করিবার অর্থ সাহায্য পাইত না। ইহার ফলে ক্ষমতাবান মূলধনীর व्याकर्षा व्यमकौवीरनत्र शातिव्यमिरकत क्रमणः লাঘৰ হইতে থাকে—ধনীর অবস্থা বেমন উত্তরোত্তর শ্রীদম্পন হয় শ্রমীর অবস্থা ততই হীন হইতে হীনতর হয়। পরে উভয় পক্ষের স্বার্থের সভ্যর্থে কট্ট অস্ফ ছইলে প্রমজীবীরা অগ্র পশ্চাৎ বিবেচনা না করিয়া ক্ষেপিয়া দাঁড়ায় ও ধর্মঘট ইত্যাদি দারা ধনীকে পরাস্ত করিতে নিফল প্রয়াস পায়। ইহাতে ধনীর যথেষ্ট লোকসান দাঁড়ায় বটে কিন্তু প্ৰমজীবী-**रमत्र विस्थिय किছू ऋविधा रम्था यात्र ना वत्रः** তাহাদের ছ:খ দারিক্রা আরও বৃদ্ধি পার। কিন্ত যভাপি . শ্ৰমজীবীরা স্বীয় প্রিশ্রমণক অর্থ হইতে সামাগু কিছু সংগ্রহ করিছে পারেন, ,ভাহা হইলে "দলের লাঠি একের বোঝা" হইয়া দাঁড়ায় ও ঐ একত্রীকৃত অর্থ মূলধনরূপে ব্যবহৃত হইলে শ্রমের প্রাপ্য পারিশ্রমিক ব্যতীত মূলধনের উপরেও একটি

লভ্যাংশ প্রাপ্য হয় এবং তাহা শ্রমজীবীগণ অর্থের অমুপাতে স্থ প্রদত্ত कतिया नहेटा भारतन। किन्ह समझीतीरमञ्ज এইরূপ চেষ্টা নানাকারণে কার্য্যক্ষেত্রে প্রকৃত ফলবতী হয় না। অন্ততঃ তাহা কষ্টসাধ্য। তাঁহারা এই সকল বিষয় বিশেষক্রপে বিবেচনা করিয়া "সমবায় ব্যবসাগ" প্রচলন অবশ্র প্রয়োজনীয় বলিয়া স্থির করিলেন। বলা হইয়াছে যে মূলধন, শ্রম ও ক্রয় এই তিনটি শক্তির একত্র সমাবেশ ব্যতীত কোন ব্যবসায়ই স্থনিয়ন্ত্ৰিত হইতে পারে না। ক্রেডা না কিনিলে ব্যবসায় চলে না। অথচ সাধা-রণতঃ কোন দ্রব্য বিক্রয়োপযোগী করিতে যথার্থ যাহা থরচ গড়ে ক্রেডাকে তদপেক্ষা বছগুণ অধিক দাম দিয়া তাহা ক্রব্ব . করিতে হয়। প্রত্যেক ব্যবসায়ে প্রস্তুত-কর্ত্তা বা উৎপন্নকারী ও ক্রেভার মাঝে নানা শ্রেণীর লোক আদিয়া পড়ে ও তাহাদের উদর পূর্ত্তি করিতে গিয়া বিক্রেয় দ্রব্যের মূল্য অধিক হইয়া পড়ে। মূল্য অধিক হয় বটে কিন্তু ইহাতে উৎপন্নকারী শ্রমজীবীর, এমন কি মলধনীরও কোন লাভ হয় না পরস্ক ক্রেডাকে প্রকারাম্ভরে প্রবঞ্চিত হইতে হয়। যগুণি ধনী, শ্ৰমী ও ক্ৰেতা অথবা শ্ৰমজীবী ও ক্রেতা ব্যবসায়ের নিমিত্ত সমবেত হইয়া নিজ নিজ অর্থ একতা করিয়া ঐ ধন ছারা নিত্য প্রয়োজনীয় বস্তু সমূহ উৎপদ করেনু বা পরি-শ্ৰম প্ৰয়োগে তজ্প উপাদান দারী জ্বাদি প্রস্তুত করিয়া বাস্কারে উপযুক্ত মূল্যে তাহা বিক্রের করিয়া লভ্যাংশ যথোচিতরূপে তাঁহাদের স্কলের মধ্যে বণ্টন করিয়া দেন, ভাহা হইলে এইরপ ব্যবসায় "সমবায় পদ্ধতি" পরিচালিত

ৰলা বাইতে পারে। ইহাতে ধনী ও শ্রমীর
বিপরীত স্বার্থের সংঘর্ষ নাই। ক্রেডা ক্ররকালে
বালার দরে ক্রর করিলেও প্রদন্ত মূল্যের অংশবিশেষ লভ্যাংশক্রপে পুনঃপ্রাপ্ত হন। উপরি
উক্ত পদ্ধতিতে সমবেত চেপ্তা হইলে ধনীর
অয়থা উৎপীড়ন হইতে শ্রমজীবী ত্রাণ পার।
যকল পক্ষের স্বার্থ সমান হওয়ায় ক্রেডা ক্রেম
করিবে ও তাহার দৈক্ত ঘুচিয়া বাইবে;
উল্লিখিত মধ্যন্থ ব্যক্তিগণের হন্ত হইতে সকলে
উদ্ধার পাইবেন; অধিকন্ত ধনী তাঁহার ধন
প্ররোগতেতু পূর্বাপেক্যা অধিক লাভও পাইতে
পারেন।

অধুনা প্ৰবঞ্চিত ক্ৰেতা ও শ্ৰমজীৰিগণ অর্থ ক বিয়া সামাস একত मृण्यनी. <u>अ</u>भको वो 8 ক্রেভার মধ্যে वादमारबद्ध लाख श्रायांकरभ वर्णन করিবার व्यनानीत्व मनवद्भ इहेग्रा वावमात्रक्ताव व्यवजीर्न হইরাছেন। মূল ধনের অসচ্চলতা এবং চিরন্তন রীভির পরিবর্ত্তে এক নৃতন क्षात्र क्षिमा, क्रमाधात्रगरक বুঝাইশা, তাহাদের মনোযোগ আকর্ষণের ৰিলম্ব বশতঃ বদিও প্ৰথমতঃ সমৰার প্ৰথার আরম ব্যবদায় সমূহ দেত উন্নতিলাভ করিতে পারে নাই বটে,কিন্তু ব্যবসারের মূল শক্তিত্ররের এক্ত সময়য়ে এই প্রণালীতে পরিচালিত ব্যবসাম্বের উত্তরোত্তর প্রীবৃদ্ধি হইয়া বর্ত্তমানে এক অভাবনীয় উন্নতির সোপানে আবিভূতি একণে জগড়ের সর্বত সমবার रहेबाट । নীতির মহিমা ক্রত প্রসারিত হইতেছে। পাশ্চাত্য বহু ধীর, মনবিগণ এই প্রথার পৃষ্ঠ-(পাবকরণে দঞ্চারশান হইরা ইহার জ্মোর-

তির জন্ম দৃঢ় প্রতিজ্ঞার সহিত অন্দেব বস্ত্ব ও চেষ্টা করিতেছেন। আর নাই বা করিখেন কেন ? "সভেঘ শক্তি: কলোযুগে" ইহা সাধক ঋষি বাক্য। বর্ত্তমানকালে মনুষ্য চেষ্টার প্রত্যেক বিভাগে ব্যক্তিগত উন্তমের সার্থকতা ক্রমশঃই লোপ পাইতেছে। সাধারণ তন্ত্র একাধিপত্যের স্থান অধিকার করিতেছে: मूनित निर्द्धन शान अर्थका प्रगद्ध आलाहना ও প্রচারই ধর্মের উন্নতি সাধনের প্রকৃষ্ট উপায় বলিয়া গণ্য হইতেছে; এবং শুণী ও জ্ঞানী বাক্তিবিশেষের আবির্ভাবের অপেক্ষা না করিয়া মণ্ডলী গঠন ও শিক্ষালয় স্থাপন ছারা বিজ্ঞান ও ললিভকলা উৎকর্ষ লাভ করিতেছে। কলি-যুগের বাণিজ্যেই বা উল্লিখিত শাস্ত্রবচন খাটবে না কেন? বিদেশে ত দেখিতেছি সর্ব্বত্রই সমবায় নীতি অগ্রসর হইয়া চলিয়াছে এবং বাক্তিগত প্রাধান্তের পথ সন্তীর্ণ হটয়া আসি-তেছে। আমাদের দেখেও বেথানেই সমবায় নীতি জ্ঞান, বৃদ্ধি ও সাধুতার সহিত পরিচালিত হইয়াছে সেইথানেই আশাতীত ফললাভ ঘট-য়াছে। এই নীতি জনসাধারণের যত শীঘ হৃদয়ক্ষম হইবে ততই তাহাদের উন্নতির পথ উगुक्त हरेरव।

পৃর্বেও বলিরাছি, পুনর্বার বলিতেছি
আমাদের এমন আশস্কা করিবার কোনই
কারণ নাই বে সমবায় নীতির বিভারের সলে
সঙ্গে মৃলধনী সম্প্রদার বিনুপ্ত হইবে। সমবায়
নীতির প্রভাবে বরং ধনের শক্তি স্থনিয়প্রিত
ও স্থান্য হইরা তাহার প্রেরাজনের ক্ষুত্র
প্রারিত করিবে ও অধিক ফলবান হইবে।
অনিচ্ছুক শ্রমনীবীকে অভাররূপে আব্দ রাধিতে, ভারাংশ্র ক্রেভাকে ভূলাইয়া

আনিতে বে অনর্থক অর্থবার ও ক্ষতি অনি-ু বার্ষা, সমবার পদ্ধতি অতুসারে শক্তিত্রর পর-ম্পারের নিকটবর্ত্তী ও ঘদ্দশৃত্য হইলে তাহা লাঘৰ হওয়ায় শ্ৰমজীবী ও ক্ৰেতাকে সম্পূৰ্ণ তৃপ্ত করিয়াও মূলধনী নিজ অংশে প্রচুর লাভ পাইতে পারেন। তদ্যতীত ধনীর শ্রমী হইতেও বাধা নাই। কিয়ৎ পরিমাণে ক্রেতা শ্রেণীভূক্ত হইতেও তিনি বাধ্য। স্বতরাং দ্বিগুণ বা হিনগুণ পরিমাণে লাভ হন্তগত করিবার উপায়ও রহিয়া যায়। স্বার্থ ও পরার্থকে এক না করিলে পরমার্থ লাভ হয় না। ইহাই সমবায় নীতির শিক্ষা, এই পরমার্থ ই সমবায় পদ্ধতির সাধনা।

একণে পাশ্চাত্য দেশ সমূহেও স্থানুর আমেরিকায় এই সমবায় নীতি ব্যবসায়ে কিরপ ফলবতী হইয়াছে ও ভারতবর্ষে কোন কোন স্থানে এই পদ্ধতিতে কার্য্য পরিচালন চেষ্টা হইয়াছে এবং সেই চেষ্টা কভদুর সফলতা লাভ করিয়াছে তাহা সাধারণের অবশ্র জ্ঞাতবা। আমরা বারান্তরে "দমবারের ইতিহাস" প্রকাশ করিতে চেষ্টা করিব। উপসংহারে আমরা আমাদের স্থধী ব্যবসায়ী মণ্ডলীকে এই সমবার নীতির সার্থকতা সম্বন্ধে একটু বিশেষরূপে বিবেচনা করিতে অমুরোধ করি।

শীব্ৰজেক্তকিশোর রার চৌধুরী।

ফরাসী রাফ্রবিপ্লবকালীন দৃশ্য।

প্রথম অন্ধ।

১৭৯৪ খুষ্টাব্দের মার্চ্চ মাস অতীত হইতে চলিল-মাত্র এক দিন অবশিষ্ঠ আছে। পেরি (প্যারিস) নগরের জনতা কুরুচিত্তে জনশ্রতি শুনিতে পাইল যে তাহাদের উপাস্ত দেবতা-যাহাকে তাহারা এতদিন প্রাণাপেকা প্রিয়তম মনে করিত—সেই দান্তন (Danton) বিশাস্থাতকতার কার্য্য করিয়াছে; অর্থলোভে জন্মভূমিকে প্রাসিয়গণের হত্তে সমর্পণ করি-রাছে। সে সমরে সাহস করিয়া, বড় করিয়া কেহ কোন কথা বলিতে পারিতনা, কি জানি গিলোটির রাক্ষ্মীর করালকবলে কাহাকে কোন সময়ে পতিত হইতে হয়। কিন্তু সকলেই ব্লাবলি করিতে লাগিল যে দান্তনের সৌভাগ্য-হ্মা অভ্যমিত হইয়াছে; তাহার

ঘনাইয়া আসিয়াছে; যে শোণিতপিপায় রাক্ষনীর দে প্রতিষ্ঠা করিয়াছে, দেই রাক্ষনীই বুঝি তাহাকে শীর্ছই গ্রাস করে। আডায় মৃত্সবে মাতব্বরেরা জিজাসাবাদ করিতেছিল যে বাস্তবিদই কি দান্তন প্রতা-त्रक, श्रक्कुड कि त्म अर्थनिन्म, यथार्थ है कि অর্থলোভে শত্রুর হন্তে সে সাধের ফ্রান্সকে সমর্পণ করিয়াছে ? যে দান্তন একদিন সমগ্র ফ্রান্সকে এক মোহমন্ত্র বলে ক্রাগরিত করিয়া, বীণার ভন্ত্রী সকল একত্র করিয়া এক স্থমহান ঝঙ্কারে কম্পিত, করিয়া শত্রুর হৃদয়ে ভয় স্ঞার করিয়াছিল, আবাল বৃদ্ধ বনিভার সেই উপাত্ত দান্তনকৈ তাহার শত্রপক কি আৰ সভাই কারাগারে পাঠাইতে সাহস পাইবে ?

বখন সমগ্র পেরি নগরীর লোক এইরপ চিন্তা করিভেছিল, তখন নিজ গৃহে একাকী একটী লোক কুন্নমনে বসিয়াছিলেন। তাঁহার অবরব দীর্ঘাক্ষতি; মুখে বসস্তের চিহ্ন; ললাট প্রশন্ত। পরিধেয় বসন দেখিলে তাঁহাকে ব্যবহারজীবী বলিয়া বোধ হয় কিন্তু পরিচ্ছদের আড়ম্বর মাত্র ছিল না। বেশ সাদা-সিদে অধচ দেখিলেই ভদ্রলোক বলিয়া সহজেই প্রতীয়মান হয়।

ইনিই-সেই দান্তন। দান্তন বসিয়াছিলেন;
বিসিয়া ভূত ভবিশ্বং বর্ত্তমান চিন্তা করিতেছিলেন। সতাই কি তাঁহার গোরবরবি
অন্তমিত হইয়াছে? সতাই কি তিনি আর
তাঁহার প্রাণাপেকা প্রিয়তম জন্মভূমিকে বিপদ
হইতে উদ্ধার করিতে পারিবেন না? সতাই
কি তিনি আর রক্তশ্রোত নিবারণে সক্ষম
হইবেন না?

দান্তন , সবেমাত্র তাঁহার স্বপ্রাম হইতে
ফিরিয়া আসিয়াছেন। গিলোটন উঠাইয়া
দিবেন, রক্তন্তোত আর প্রবাহিত হইতে
দিবেন না, পেরি এবং সমগ্র ফ্রান্সকে নৃতন
পথে আনয়ন করিবেন এই সমস্ত প্রতিজ্ঞায়
দৃচপ্রতিজ্ঞ হইয়া স্বগ্রাম হইতে ফিরিয়াছেন।
কামিল দেশমোলিনকে প্ররোচিত করিয়া
"Vieux Cordelier" ("বৃদ্ধ সয়য়াসী")
সংবাদপত্র বাহির করিয়াছেন। সদ্ধাসমাগমে
সীন নদীস্থ ,সেতৃর উপর দুঙায়মান হইয়া
স্কৃতিমিত রবির লোহিত কিরপে আলোকিত
জলরালি দেখিয়া তাঁহার বৃদ্ধকে বলিয়াছিলেন
"দেখঃ ক্ষৃত রক্ত! সীন আজ মহুয়ারকে
রিজ্ঞা কামিলি! আবার্গ তুমি ভোমার
লেখনী ধারণ কর—আমি প্রাণপ্রণ ভোমার

সাহায্য করিব। দেখি আমরা আবার এই রক্তল্রোত প্রতিরোধ করিতে পারি কিনা ?"

দান্তনের চিন্তান্ত্রোতের আজ আর বিরাম ছিল না। তিনি বুঝিতে পারিলেন বে তাঁহার সব ফুরাইয়াছে। বাতায়নপথে দাঁড়াইলে আর নিমে তাঁহাকে দেখিবার জন্ত জনতা হয় না; বৈকালিন ভ্রমণের সময় আর তাঁহাকে দেখিয়া লোকে বড় একটা টুপি তোলে না; সেতুর উপর গেলে আর মাঝিরা তাঁহার দিকে উদ্গ্রীব হইয়া চাহে না। দান্তন সমস্তই বুঝিতেছেন তত্রাপি মনে ভাবিতেছেন যে রোবেশপিয়ার তাঁহাকে আটক করিতে সাহস করিবে না।

হঠাৎ কি একটা শব্দ, তাঁহার কালে গেল। কি ও ? রোবেশপিয়ার কি সভাই তাঁহাকে গ্রেপ্তার করিতে আসিয়াছে ? সিঁড়িতে লোক উঠিবার শব্দ শোনা গেল-পরমূহর্তেই তাঁহার বন্ধু পানিস ক্রভবেশে সেখানে উপ-স্থিত। "দাস্তন, এই মুহুর্জেই তোমার আবাসভূমি পরিত্যাগ क्र । পিয়ারের লোক প্রায় আসিরা পড়িয়াছে। यां अ. यां अ - व्यक्ट दिला वाहेश न् उन की वन আরম্ভ কর।" ধীরে ধীরে দান্তন তাঁহাকে বলিলেন "কোথায় যাব? Emportet'on sa patrie sons la semelle de les souliers ?" জুতার তলায় করিয়াত আর আমার জন্মভূমিকে লইয়া ঘাইতে পারি না! জনাস্থা ছাড়িয়া আমি কোণায়ও •যাইতে পানিদ চলিয়া গেলেন— প্ৰস্তুত নহি।" रमशात थाका निकालन नरह। <u>श्रि</u>शांठ রোবেশপিয়ারের লে কিন্দ আসিয়া পড়িল-

দান্তন সেথানে যাইয়া দেখেন যে তাঁহার করেকজন বন্ধু সেই কারাগারে শৃন্থলাবদ্ধ। গন্তীরভাবে তিনি বলিলেন ,"বন্ধুগণ, আমি তোমাদের উদ্ধারের কল্পর্নী করিয়াছিলাম কিন্তু ভগবানের এমনি লীলা যে আমিও আজ তোমাদের সহিত একত্র হইয়াছি। আমি ইহার কোন প্রতিকারই দেখিতেছি না।"

>লা এপ্রিল কনভেনদন বদিল। দাস্কনের বন্ধু কসাই নিজেলার প্রস্তাব করিলেন বে দাস্কনের বিচার সাধারণ প্রথা মতই হউক। রোবেশপিয়ার এই প্রস্তাবের তাত্র প্রতিবাদ করিল। "না আমরা আর কোন কথা স্থানতে চাহি না; আমরা আর কাহাকেও কোন বিশেষ অধিকার দিতে প্রস্তুত নহি; আমরা আর দেবতা চাহি না।" কনভেন্সনের সদস্ত্রগা পিশাচভয়ে ভীত—তাহারা কোনক্ষপ উচ্চবাচ্য করিলেন না। দেও জাই তথন দাস্কনের বিক্লছে অভিযোগ যথারীতি পাঠ করিলেন। কনভেনসনের সদস্রা ব্রিলেন দাস্তনের সময় হইয়াছে।

পরদিন বিচার আরম্ভ হইল; জুরি
নির্বাচনের পর দাস্তন ভাবিলেন আর একবার তাঁহার অভ্যন্ত বক্তৃতাশক্তির আশ্রয়
গ্রহণ ক্রিবেন। একদিন এই মহতী
শক্তি বারা পরিচালিত হইয়া ফরাসীরা
একস্বরে রণশিঙ্গা বাজাইয়াছিল;—এই অমহান স্বরে হরে ঘরে একদিন রণভেরী গুরুগন্তীর নিনাদে ধ্বনিত হইয়াছিল, এই বক্তৃতাশক্তিই একদিন ফ্রান্সের আবালর্জবনিতাকে
শক্রদিগকে পরাজিত করিতে সক্ষম

করিয়াছিল! আব্দ আবার দান্তন সেই
শক্তির পরিচালন করিতে ক্বতসঙ্কল হইলেন।
বিচারকের প্রতি নহে, জুরীদিগের প্রতি নহে,
সমাগত শ্রোত্বর্গের প্রতি, পেরির, ফ্রান্সের
জনসাধারণের প্রতি তাঁহার মোহিনীশক্তির
পরিচালনে দান্তন আজ সচেষ্টিত। তিনি স্থির
করিলেন, ইহারই বলে একদিন তিনি ফ্রান্সের
উপাশ্তদেবতা হইয়াছিলেন, ইহারই কৌশলে
আব্দ তিনি আবার সকলকে মৃথ্য করিবেন,
রোবেশপিয়ারের দন্ত চুর্ণ করিবেন, রক্তশ্রোত
নিবারণ করিবেন। এই একটা মাত্র ভন্তীর
উপরই আজ তাঁহার সকল আশা—সকল
ভরসা-সকল বল—সকল অবলম্বন।

হইলে কি হয় ? দাস্তন এবং তাঁহার
সহযোগীবর্গ আজ চোর ও গুপ্তচরের সহিত
একই কাঠগড়ায়। বিচারক, সহকারীগণ,জুরী
—সকলেই রোবেশপিয়ারের নিজের লোক।
তারপর, রোবেশপিয়ার যাহাতে দ্বাস্তনের
পক্ষে কোনপ্রকার সাক্ষ্য উপস্থিত না করা
হয় তাহার যথোপযুক্ত ব্যবস্থাও করিছাছিল।
পক্ষাস্তরে অভিযোগের অফুঠানের কোনরূপ
ক্রুটিই হয় নাই।

হরা এপ্রিল মোকদমা আরম্ভ হইল।
আসামীদিগের নাম জিপ্তাসার সমর বৃদ্ধ
ওরেপ্তারমান থিকেটারের অভিনেতাগণের স্থার
আবৃত্তির স্বরে বলিলেন হে তিনি যতগুলি
অস্ত্রাঘাত প্রাপ্ত হইয়াছিলেন কাহা ফ্রান্সেরই
জন্ম এবং সবগুলিই সন্মুখদেশে। পৃষ্ঠে অস্ত্রলেখা কেবল এখন্নই হইতেছে। দাস্তনকে
নাম ও নিবাস জিপ্তাসা করিলে তিনি বলিলেন
বে "আমার নাম দাস্তমী; এ নাম তোমাদের
নিকট অপরিচিত নহে; এখন পর্যান্ত আমি

শেরিভেই বাস করিভেছি কিছ শীঘ্রই ইভি-হাসের স্বর্গে আমার নাম থোদিত হইবে।"

৩রা এপ্রিল দান্তন তাঁহার বক্ততা আরম্ভ করিলেন। এ রকম বক্তৃতা তিনি আর কোন দিনও দেন নাই। আদাৰত গৃহ আজ একেবারে পরিপূর্ব। গৃহ ছাড়াইয়া আজ তাঁহার কথার শব্দ বাহিরে বাইতে বাগিল। ফ্রান্সের প্রতি তিনি তাঁহার অবিচলিত ভঞ্জির ক্রথা গদগদ খবে বলিতে লাগিলেন। তাঁহার শক্তদের অভিসন্ধি প্রকাশ করিয়া দিলেন। क्नडा विष्टाण इटेटड नाशिन , धनमन क्त-তালি পড়িতে লাগিল; বাহারা বহির্দেশে দাঁড়াইয়া তাঁহার কথা অস্পষ্টভাবে গুনিভেছিল ভাহারা আবার বক্তৃতার মর্ম আরও দুরের লোককে বুঝাইয়া দিতে লাগিল। আদালত पृष्ट रहेट जीन नहीं পर्याष्ठ सन्जात मस्या विनक्षण ভारबत्र পत्निवर्श्वन (मथा श्राम । ज्यात এক দ্টা সময় দাস্তনকে বক্তৃতা করিতে बिटन कि रुत्र वना यात्र ना! वृक्षि द्वादन-পিয়ারের সব আশা নির্দ্দ ল হর।

হঠাৎ বিচারকের ঘণ্টা বাজির। উঠিল;
সেদিনকার মত সভা ভঙ্গ হইল। দান্তন আর
বিনতে পারিলেন না। সেদিন রাত্রে রোবেশ
শিরার ভাহার সহকারী ও বিচারকের সহিত
পরামর্শ করিরা কর্ত্তব্য স্থির করিল। যথন
সাজি প্রভাতে পুনর্বার বিচারক আসন গ্রহণ
ক্ষিণেন, তখন দান্তনকে আর বলিভে
কেওরা ক্ইল না। তাঁহাকে সাক্ষী ভাকিবার
অক্সতি দেওরা হইল না; বাজেকাকে সমর
কাটাইরা দেওরা হইল। আসামী বুঝিলেন
ভাহার সমর হইলাছে।

९ इ. जानिए विशासक स्विमिन्न किसाना

করিলেন বে তাঁহারা বাহা শুনিরাছে তাহাতে কোন মতামত প্রকাশ করিছে তাঁহারা পারগ কি না। অমানবদনে জুরির বিশিলেন বে "তাঁহারা সিদ্ধান্তে উপনীত হই-রাছেন। আর কোন বিষয় তাঁহারা শুনিতে চাহেন না।" দাস্তন এবং তাঁহার বন্ধুদিগকে আদালত গৃহ হইতে অপসারিত করা হইল। বৈকালে বথন আদালতের কর্মচারীগণ তাঁহাদের নিকট আসিরা আদালতের আদেশ পাঠ করিতে উত্তত হইলেন, তথন তাঁহারা বিশিলেন বে তাঁহারা উহা শুনিতে চাহেন না। তাঁহারা উহা অবগত আছেন—মুহ্তাতে তাঁহারা কাতর নহেন। কর্মচারীগণের প্রস্থানের পর দাস্তন তাঁহার বন্ধু ও সহযোগীদিগের সাখনা বিতে লাগিলেন।

সন্ধ্যার কিছুপুর্ব্বে ত্থানি গাড়ী কারাগৃহহর হারদেশে উপনীত। প্রথম থানিতে
চোর, গোয়েলা প্রভৃতি উঠিল। হিতীয়
থানিতে দাস্তন ও বন্ধুবর্গ উঠিফেন—দাস্তন,
সেচেলেস, দেশমোলিন, লাক্রয়, ওয়েটারমান, কামিলি ঘাহারা দেশের জক্ত অনেকবার রক্তদান করিয়াছিলেন, ফ্র্যান্সকে যাহারা
হুর্গাদিপ গরীয়সী মনে করিতেন তাহারা আজ
গিলোটিনকে আলিঙ্গন করিতে চলিলেন।
একত্র এক ভাবেই সকলে প্রাণ দিতে
চলিলেন।

দান্তন পূর্ববং সকলকে সান্তন। দিতে
বাগিলেন। কামিলি তাঁহার প্রিয়ুত্মা স্ত্রীর
অন্ত করেকবার আকেপ করিলেন কিন্ত ধল
পতির উপদেশ বাকো তাঁহাকে সহজেই
বিশ্বত হইলেন। শেরির অবাবস্থিতিতি

লনভার কৈহ হাসিতে লাগিল, কেহ কাঁদিতে লাগিল। দান্তনের কয়েকজন বন্ধু ভাহাদিগকে মুখ ভেলাইতে লাগিলেন— নিব্বিকার—সম্মুখে মৃত্যু কিন্তু তত্ত্বাপি প্রশাস্ত্র।

বধাভূমির নিকটবর্ত্তী হইলে দান্তনের করেকজন বন্ধ সমস্বরে রোবেশপিয়ারের অবশ্রস্তাবী পত্তন সম্বন্ধে এক গান গাইতে লাগিলেন। কে জানিত, আর কয়েক সপ্তাহ মাত্র পরেই রোবেশপিয়ারও তাঁহাদের পদামুদরণ করিবে! সম্মুখে গিলোটিন; দাস্তনের সহধর্মিণী শেষ বিদায়ের জন্ম উপস্থিত। এক মুহুর্ত্তের জন্ম দাস্তন আত্মবিশ্বত হইলেন; বলিলেন "প্রিয়তমে আর তোমার সহিত দেখা হইবে না।" পরক্ষণেই আত্মসম্বরণ করিয়া বলিলেন "না; না; দাস্তন; এসময়ে আরু ব্যবহার করিও না।" কাপুরুষের হেরল্টকে আলিঙ্গন করিয়া নিকটবর্ত্তী ঝুড়ীর

দিকে চাহিয়া বলিলেন "শীঘ্রই আমাদের
মাথা একত্র হইবে।" একে একে সকলেই
মৃত্যুমুথে পতিত হইলেন; দান্তন সকলের
শেষে চলিলেন। শেষ পর্যান্ত প্রশাস্ত বদন,—
কোনরূপ উদ্বেগের চিক্ত দেখা বাম নাই—
ধীর স্থির, নিশ্চল! হত্যাকারীকে গন্তীয়
ভাবে বলিলেন "আমার এই মন্তক যখন
দেহচাত হইবে, তখন ইহা জনসাধারণকৈ
দেখাইতে কৃষ্টিত হইও না। Vive !'
Republic."

গিলোটিন আপন কার্য্য সমাধা করিল।
সমবেত জনতা কেহ সম্ভটমনে, কেহ সন্দিগ্ধচিত্রে, কেহ হতাশহাদরে স্বস্থানে প্রস্থান
করিল। "সাধারণ তান্তের জয় হউক" এই
শেষ কথা দ্বারা দান্তন তাঁহার বিপক্ষ পক্ষের
ভূল নেথাইয়া দিয়া স্বধামে চলিয়া গেলেন।
নাটকের এক অন্ধ অভিনীত হইল।
শ্রীষোগীক্রনাথ সমান্দার।

পোষ্যপুত্র। (প্রান্তর্ভি)

যণাসমরে আলোকমালার মন্তিত পুরপ্রাক্তণে বাজনাবান্ত, শত কঠের হল্পনি
ও শত্রারোলের মধ্যে শান্তির বিবাহ হইয়াগেল। বর হেমেন্দ্রনাথকে দেখিতে বড়
স্থলর; তেমন স্থলর ছেলে সদা সর্বাদা চোথে
পড়ে না। জামাই দেখিয়া বস্তমতীর হাদরের
ক্ষোভ জনেকটা নিবিয়া গেল। তথাপি
আর একটি উন্নত মহিমামন মুখ চকিতের
মতন বে মমের মধ্যে আসিরা উঁকি নিতেন
ছিল মা, স্থালা কলিতে পারি লা ব

শান্তি বিবাহের পূর্বেই অনেকথানি বদলাইয়া গিয়াছিল। যে আর তেমন করিয়া কারণে অকারণে যথন তথন হাসে না । হাসিলেও সে হাসি যেন আর ওঠাধরের সীমানা ছাড়াইয়া চোখে মুগে উথলিয়া উঠিতে চাহে না। স্কুর সহিত ছুটাছুটি করিয়া খেলিয়া বেড়ায় না, পিতাকে যাহা খুসী প্রার্ম করিয়া বিব্রত করিয়া তুলে না। শান্তি বিয়ের কনের উপযুক্ত হিন্তু ও গন্তার হইয়া পঞ্জি-য়াছের গেব বে নামজের মুক্ত একলন ধ্রাক্রের এতোদ্র মনোকটের কারণ হইরা দাঁড়াইল, ইহাতে নিজের প্রতি তাহার তারি বিরক্ত ধরিরাছিল। নিজের কথাটা তাবিতে শিথে নাই, তাই আজও ভাবিল না।

बुटकन्न मधारो त्यन ७४ थाकिया थाकिया কেবল হল করিয়া উঠে আর কেবলি কালা পার। মধ্যে মধ্যে চুপ করিয়া বদিয়া বদিয়া ভাবে আর কয়দিন পরেই সে কোন অচেনা घटत हिन्द्रा बाहेट्य। या वावाटक प्रविद्ध পাইবে না, স্বকুকে কেমন করিয়াই দে ছाড়িয়া পাকিবে ? সময়ে সময়ে বালিসে মুপ ৰ্জ জিয়া, ঠোঁটে ঠোঁটে চাপিয়া অনেক চেষ্টা হারাও আত্মসম্বরণ করিতে ক্রতকার্য্য হইতে পারে না। কোণা হইতে কেন্দানে হত করিয়া চোধে জল আদিয়া পড়ে। মানমুধে বাবার থাবার আনিয়া চুপ করিয়া বসিয়া থাকে। মার গৃহকার্য্যে সাহায্য করিতে করিতে অভ্যমনা হইয়া যায়। হরতো স্কুরই সব প্রশ্নের উত্তর দেওয়া হইয়া উঠে ना। प्रियामा विकल करत्र 'अकिपन স্বারি বিয়ে হয় গো, তা বলে আর কেউ এতো করেই বরের ভাবনা ভাবে না ৈ স্কু রাগিয়া বলে—বাও দিদি তুমি যেন কি হচ্ছো ! তাহলে আমি কিন্তু তোমার সঙ্গে যাবো না। খণ্ডরবাড়ি যাবার সময় নিবে যেও ভূমি वे कूरना र्वजानहोरक।' यां गरत्रह অঞ মুছিয়া ভাবেন 'বঙর বাড়ি বাবার खरत स्वा वायात वायथानि हस शिला। মাগে। আমি আমার শতিকে ছেড়ে কেমন करतरे थांकरवा। आमात वाष्ट्र घत नव **अक्षकात**े हरत वारव। (कांशांत वारव १ কৈ ভাহাকে সময়ে আহার দিবে ? বছ

আয়তি করিবে কিনা? জামাই না জানি কেমন চোথে দেখিবে ?" স্থেপর মধ্যে এইরূপ, ছংখের ভয়ের কতো ভাবনা, তাহা সেই মাতৃহ্বদয়ই বলিতে পারে।

বিবাহের পর যথন গোলাপি বেনারদী সাড়ি পরা মর্কাকে স্থবর্ণালকারভূষিতা অঞ্-মুখী নতাননা শাস্তি তাহার मिन्गीर व দারা পরিবেষ্টিতা হইয়া ধীর অনিচ্চুক গতিতে গাঁঠছড়া বাঁধা বরের সহিত পিতার পায়ের কাছে আসিয়া প্রণাম করিয়া দাঁডাইল उथन अम्भा अञ्चल्पत ध्ववाद छित्र शस्त्रीत প্রকৃতি রজনীনাথের দৃষ্টি রোধ হইয়া গিয়া-ছিল। তিনি তাঁহার কম্পিত দক্ষিণ করে ধীরে ধীরে ধান হর্ম। তুলিয়া স্থগভীর মেহের ধারাম তাহা দিক্ত করিয়া তাঁহার অন্তরের আশীর্কাদের সহিত তাঁহার স্বেহাধার-দ্যের মন্তকে প্রবান পূর্বক একে একে চুম্বন করিলেন তারপর **উভয়ের মন্তকে** পুরমহিলাগণের আদেশে ক্সার স্বর্ণমণ্ডিত मिक्न इस अक इटल डिठाइमा नहेमा जानत হত্তে জামাতার হস্ত ধারণ করিয়া উভয়ের হস্ত একতা করিয়া গদ্ গদ্ কণ্ঠে জামাতাকে मरबाधन कतिवा विवादन-

"হেম! আমার শান্তিকে আজ আমি
তোমার হাতে দিলেম। এতােদিন দে
আমার ছিল, আজ হতে আমার শান্তিলতা
ভোমার হলাে। তুমি তাকে বিপদে সম্পদে
রক্ষা করাে, পালন করাে, বালিকার সম্পদ্ধ
ক্রটি অপরাধ মার্ক্রনা করে তাকে নিজের
মনের মতন করে গড়ে নিও। মা আমার!
ন্তন জীবনে ত্বী হয়াে।" তাহার চুই চকু
হইতে বার বার ক্ষালা আনক্রমিশ্রিত বেদনার

অশ্রেদ্ধল ঝরিয়া নেই পবিত্র পৃত স্নেহাশ্রবিন্দু · নৰ্দম্পতির সন্মিলিত হস্তবন্ধনের উপর পতিত इहेन। পিতৃত্বদরের সেই অনস্ত আশীর্কাদ অতুলা সেহধারায় দেই মঙ্গল আবো পৰিত্ৰ, আবো নিবিড় করিয়া তুলিন। তীর্থসঙ্গমের মত পবিত্র দেই সন্মিলন যেন बाह्रवीमिनम्पर्स भविज्ञ उत्र इहेब्रा डेकिंग। **मिट मकक्ष मृत्य मर्गकवृत्मत्र (नज् ७ जूर्यम् ३** বিষাদে ছব ছল করিতে লাগিল। তারপর त्रक्रनीनाथ क्ञात रुख धतिया देवराहिटकत निकरि जामितन। খ্রামাকান্তের হন্তে তাহাকে সমর্পণ করিয়া অঞ্চরুদ্ধ স্বরে ধীরে ধীরে কহিলেন "আমার লতিকে আমার মাকে আমি আপনার কোলে তুলে দিলেম। আমি कानि त्रथात्न तम थुवरे खुत्थ थुवरे नित्रांभतन থাকবে, তবু বাপের প্রাণ কিছুতে প্রবোধ বাপের কর্ত্তব্য শেষ হয় না. আপনার নিকট প্রার্থনা---

वांधा नितन, छाटे अपन कथा वतना ना, आपि যে তোমার কাছে কভো থাণী তা সংখুমা बगम्बाहे कारनन। जुमि आमाय या निरश्ह, এ পৃথিবীর মধ্যে কেহই আমার তাহা দেয় নাই। তুমি সম্ভানহীনকে সম্ভান দিয়েছ। এলো মা স্বামার লক্ষ্মী! কেন কাঁদছো মা! বাবার কাছথেকে জ্যোঠামশারের কাছে যেতে কি কাদতে আছে মা! তাহলে বে তোমার ছেলেটি ছ: ब कत्रद ।"

অঞ্জলে ভাসিয়া নববধুবেশে শাস্তি তাহার আজন্মের ঘর বাড়ি চির্দিনের স্নেহের শীড় ছাড়িয়া অপরিচিত সন্দীর সহিত কোন্ ज्ञाना गृट्हात्करम हिनदा रगन । गाफिरछ

উঠিবার সময়েও দে তাহার বাবাকে ছুই হাত দিয়া এমনি করিয়া জড়াইয়া রহিল, বে সে নির্ভর বাহুপাশ ছিন্ন করা তাঁহার কঠিন হইনা উঠিয়াছিল। সেই স্বেহপালিতা ক্ষুদ্র লতাটি বে প্রকাণ্ড মহীরুহের আশ্রয়ে এতদিন বৃদ্ধিত হইতেছিল সেই নিরাপদ কক্ষ ছাড়িয়া কোথায় কোন অপরিচিত উন্থানক্ষেত্রে প্রোথিত হইতে চলিয়াছে। সেখানের ঝঞ্চা বৃষ্টি বজ্ৰ হইতে উংপাটক কি তাহাকে এমনি করিয়া রক্ষা করিতে পারিবেন গ

স্প্রকাশ তাহার নৃতন জরীর পোষাক পরিয়া দিদির সঙ্গে যাইবার জক্ত প্রস্তুত হইয়া আনিগ্লাছে। সে দিদির এতদূর কালাকাটি মনে মনে একটুও পছল করিতেছিল না। এমন স্থানর জামা কাপড় এতো গহনা ফুলের মালা পরিয়া এমন উৎসব সমারোছের মধ্যে চতুরখ যানে চড়িয়া দেশাস্তর গমন; ইহার মধ্যে যে কালা আসিবার কি কথা আছে শ্রামাকান্ত ব্যস্ত হইয়া তাঁহার হাত ধরিয়া 🛶 কু তো তাহা বুঝিয়াই উঠিতে পারে না। মা বাবা পর্যন্ত কালা আরম্ভ আশ্চর্য্য। সে যেদিন नियोट्य । সাজিয়া অমনি মুক্তার মালা, হীরার আংটি পড়িয়া এমনি ধুমধামে বধু আনিতে ষাইবে मित्र या मा वावा अ निनि अमन कतिया কাঁদিতে বদে তাহা হইলে সে কিছ ভারি রাগারাগি করিবে। দিদি যে এখনও অত্যন্ত ছেলে মামুষ ও নির্বোধ রহিয় গিয়াছে ইহা মনে করিয়া ভাহার প্রতি ভাহার একটু করণা হইল। হন তাহাকে একটু আখন্ত করিবার জ্ঞা তাডাতাড়ি তাহার কাছে আসিরা কানের কটিছ মুখ আনিরা চুপি চুপি विनन "निनि जुनि क्रिंता ना छारे! आमि

কাল কিন্তে আদৰো না, কিছুতেই আদবো ना, स्वामात्र द्वीरकत्र मध्य शानकश्रम ७ দশপটিশ নিম্নে নিয়েছি সেথানেও থেলা ভাদের বাগানে লুকোচুরি যদি খেলতে না দেয় ভো ছাদে নাহয় খেলবো।"

ভনিরা দিদির অশ্রুপরিপ্লৃত মুখখানি একটা স্বেহ করুণ হাস্তের আভাষে বর্ষাকাশে মৃহ স্থালোকের ছটার মত একটু খানি **उच्चन** रहेश डिठिन।

তারপর সে আবার তেমনি সমারোহের মধ্যে সেই ইন্দ্রপুরীভূল্য প্রাসাদে শত চ্লু-श्वनि ७ मक्नाहादात्र मत्था माश्रद मानदा পৃহীত হইল। সেই পুরাতন প্রাসাদ আজ আবার অনেকদিন পরে তাহার শোক্মলিন অঙ্গ মার্ক্জিত করিয়া নৃতন শোভায় সুসজ্জিত হইরা উঠিরাছিল। একটি হানর ভির আরু সর্বজেই নৃতন চিন্তা। হায় হর্ভাগ্য বিনোদ! একি তোর হর্জয় অভিমানের পরিণাম !

ক্রমে ক্রমে কুলশ্যা, বৌভাত প্রভৃতি বিবাহের আমুসঙ্গিক অন্তান্ত আবশ্রকীয় মঙ্গল অমুষ্ঠান সকল যথারীতি রূপে সম্পর হইরা গেল। বিবাহের রাজি বেদমত্রে এবং श्वक्रकत्नत्र यांगीर्सारम राणिका मास्त्रित्र क्रास-ধ্বদক্ষে একটি নৃতন রেখাপাত করিল। কিছ ভভদৃষ্টির সময় সকলকার পুনঃপুনঃ অফুরোধে তাহার লক্ষামুকুলিত চকু তুলিয়া সম্বাধ্য চক্ষে স্থাপন করিতে গেল, ঠিক সেই সময়ই মণিমালার একটা সমালোচনাস্চক বাক্যে ভাষার হাদরখানি একটা অভ্যাত বাধার বাথিত হিমা চমকাইরা উঠিল। মৃহত্তে সন্মুখের দুপ্তপট অপস্ত করিরা তাহার স্থানে সেই কাতরতাপূর্ব হভাশদৃষ্টি করুণ মুখখানা ভাসিয়া

উঠিग। চমকিয়া সে চকু नত ऋतिया क्लिन। আর চাহিতে পারিল না।

শৌৰ, গুণুড়

क्नभेगांत त्रांट्य (रूपम्य रूपन सामत করিয়া তাহার মুখের দীর্ঘ ঘোমটা খুলিবার ८६ हो कतिया वार्थ हहेल, अवः मृश्र हानिया স্বহন্তে ফুলের পাথা ৰারা বাতাস করিয়া বণিল ভারি গরম, কাপড় মুজি দিরে বেমে উঠ্ছো যে, খুলে ফেল" তথন সে চকিতমাত্র নতনেত্র তুলিয়া আধ অপস্তত খোষটার মধ্য হইতে স্বামীর দিকে চাহিল্লা দেখিলা ঘোমটার মাত্রাটা আরো একটুথানি বাড়াইয়া দিল। **(मिथन, ठिक्टिंड मर्यार्ड (मिथन मिर्ट मूथवानि** অত্যন্ত ফুলর। হেমেক্সও তথন তাহার দিকে চাহিয়াছিল, দে দৃষ্টি বদিও তেমন করুণ, তেমন উচ্ছল, তেমন মর্মপার্শী নছে তথাপি শান্তি মনে মনে স্বীকার করিল, খুব স্থন্দর পুরুষ। দে কাহারো সহিত এমূর্ব্তির তুলনা कतिन ना, कतिरान कानशास शनम बाउँ छ বলা যায় না। সে কিছ নত মন্তকে নীরবে এই অপরিচিতকে চিন্ননির্ভন্ন করিয়া ধরিল মনে পড়িল বাসরে একজন ঠানদি বলিয়া-ছিলেন 'লতির আমাদের তপস্ত। ভাল, যেন यमनविज्य भिनन इरहाइ।' ह्हास्य मुख নেত্রে তাহার নব পরিণীতাকে দেখিতেছিল, সেও প্রশংসাস্টক ভাবে শীকার করিল 'কুল কিখা স্থ্যসূথী, রেবেকা কিখা আরেসা এমন স্থলরী ছিল কি ?' ভাহাদের বর্ত্ত-মান সংশ্বরণেরা তো অতো রংচং লাগাইরাও हेरात्र कारक में प्राहेरक शादत ना है। जी रहरडा ध्यमि।"

তাৰপৰ খীৰে ধীৰে একটু একটু "করিরা নবদম্পতির মধ্যে পরিচর হইতে লাগিল।

ক্রমেই বেন শাস্তির মন হইতে পূর্বেকার ুসেই ভার বোধটা সরিয়া সরিয়া হাকা হইয়া আসিতে লাগিল। তারপর পিত্রালয়ে ফিরি-বার দিন হেম :তাহার কোমল হাত ত্থানি ছহাতে ধরিয়া মানভাবে বলিল চলেন শাস্তি, আবার কবে দেখা হবে কে জানে।' হেম চলিয়া গেলে ভাহার মনটা একটুও যে কেমন কেমন করে নাই, তাহাও আমরা বলিতে পারি না। পিতৃগৃহে আদিয়া কয়-দিনকার বন্দিত্বের শোধ সে কভার গণ্ডার মিটাইল। প্রতিবেশিনী ও কুটুম্বিনীরা তাহার অপর্যাপ্ত হীরা মুক্তার দিকে লুব্ধ ও ঈর্বাহ্রিত ভাবে চাহিয়া যথেষ্ট প্রশংসা করিল। মাতা বলিলেন গহনাগুলো ভারি সেকেলে, কিন্তু জিনিষ বটে। পিভা বলিলেন, কি সর্বনাশ! একটা মানুষে এতো সব পরতে পারে? ওবে বুড়ি! এমন কর্ম কথনো করিস্নি माथा धरत डिर्रटा। वस्त्रमञी द्वेषः वित्रकः ভাবে কহিলেন, "তোমার এককথা, মাথাই ধরতে যাবে কেন? পরবে না তো কি গহনাগুলো যক্কে দেবে ?" রজনীনাথ হাসিয়া উত্তর করিলেন "কেমনই বা মাথা তোমাদের কে জানে। আমার তো ওগুলো দেখলেই মাথা ধরে ওঠে। আশার স্থুন্দর মেয়েকে কুৎদিত করবার এ किला"

শণিমালা • আসিয়া তাহার গলা ধরিয়া বরের কথা জিজ্ঞানা করিল, এবং পীড়াপীড়ির চোটে সৰ কর্মটি কথা বাহির করিয়া লইয়া শেবে বিশ্বর প্রকাশ করিল "ওমা! শুধু প্রক্ষ ছাড়া ছাড়া কথা ! তোর ভগ্নিপতি কিছ ভাই ওর চেরে অনেক কথাবার্তা বলতেন। রাজে খুমুতেই পেতাম না! **হেষ** অমন কেন !

শাস্তি লজ্জার রক্তিম হইরা উঠিয়া সবেশে বলিরা উঠিল "দ্র দে বুঝি ভাল।" মণিমালা তথাপি ছাড়িল না, হাসিরা বলিল "তথন ভাল লাগতোনা তা সভাি; যাই বলিদ ভাই। তোর বর কিন্তু বেরসিক। এ দিকেতো দিব্যি দৌখিন মানুষ কিন্তু ধরণটা ধেন কেমন কাঠ কাঠ, বজ্জ গুমুরে বোধ হর, তা বজ্ লোকের ছেলে হবে নাই বা কেন। দেব যেমন আমাদের নীরদকুমার, তার কি মিষ্টি ধরণটি, অমনটি আর কারও দেখা যায় না। অপ্ত কেমন তেজী লোক।"

শান্তির আরক্ত মুথথানা মুহুর্ত্তে কাগজের মত সাদা হইয়া গেল।

(3%)

विश्रहत्त्र अथत स्याजात हातिनिक वाँ। ঝাঁ ক্ষিতেছে। রোদ্রের বাতাসে অনুরম্ব নারিকেল বাগানের উচ্চনীর্যবৃক্ষশ্রেণীর কোন অদুশ্রমান নীড় হইতে চিলের স্বর ভাগাইয়া আনিতেছিল। একটা আম-গাছের শীতৰ ছায়ায় বদিয়া মালী ও ভূতাদের ছেলেরা ঘুঁটিং থেলিতেছিল, ইহারা 'এখানের তিনপুরুষেব বাসিন্দা। মালীর গৃহমধ্যে তালপাতের চেটাই পাড়িয়া মালিপত্নী নিজ্ঞা-मधा। मानीत चरतत न करनहे. तुक्क छात्रा ঘেরা পুক্ষরিণী; তাহার চারিপাড়ের বাঁধা ঘাট এখন জনশৃত। । কেবল একপাশে বাটে বসিয়া একটা নিম্বর্দা বালক জলের মধ্যে বঁড়িদি ডুবাইয়া পাৰাণম্ভির মত চুপ করিয়া বদিয়া অবদর প্রতীকা করিতেছিল।

অমিনারদের কোলাহলমুখরিত প্রকাশ্ত बाष्ट्रित विश्वहरतत विश्वाम व्यवमदत ध्वथन व्यत्न वर्षानि : मःयङ । যেখানে কোলা-হলের প্রধান আড্ডা দেই নাগীমহলেও এখন একজনের ভিন্ন সাড়া পাওয়া যাইতেছে উচ্ছिष्ठां ज्ञितारी कारकत मन শোধটা তুলিয়া লইতেছিল। বিশ্ব ঝি জোরে জোরে পিত্তবের উপরে তেঁতুল **ঘর্ষণ করিতে করিতে** সেই স্বরে স্বর মিলাইয়া আত্মগত বলিল "মর হতভাগা কাকগুলো কি অৰুকুণে ডাকই ডাকতে ণেগেছে। ওনৰে যেন গা শিউরে উঠে।" চন্দর হেঁসেল निकारेश এইমাত বাহিরে আদিয়াছে দে সঙ্গনীর টিপ্পনীতে টীকা কাটিল "অলুকুণে বলে व्यनुक्ष ! वाम्निविव वरन-रियवादत व्यामादवत मामावाव निউদ्দেশ इत्य यात्र त्मवादत्र नाकि এই পোড়ার মুখোরা এমনি ডাক ডেকেছিল, ভনিসনি নাকি বিধি! তুই তো সেই বছরেই এলি।" বিধু পূর্বকথা শ্বরণ করিতে গিয়া मिथिन मिटे जात निक्रांग बहेर्ज्हे काक দল এমনি উৎসাহে গৃংস্থের ঘর সরগরম রাখিয়া কোনদিনই ইহার ব্যত্যয় আসিতেছে। হইয়াছে বলিয়া তাহার মনে পড়িল না। কিছ তাহা মুখে স্বীকার করিলে ব্রাহ্মণ-ঠাকুরাণীর বছদ্শিতা ও বিশ্বাদের বিরুদ্ধাচরণ করিয়া তাহাকে অপনানিত করা হয় সেইজ্ঞ , সে সাগ্রহে তৎক্ষণাৎ বলিয়া উঠিল "ওমা তা चात्र मत्न'नारे, तम এक काछ ! जा तिर्था छारे मिन वारात के श्रत्था गाहिन दित्र भारन একটা শেবা ডাকছিল, তা যতো বিদঘুটে ব্যানোরারপ্রণো তো স্থরতে আর জায়গা भाष ना।" विधू खाँछ। आकानन भूक क मह

কুদর্শন, ক্রফাক জীবনলকে তাড়না করিয়া
সমস্বরে সহাক্সভৃতি প্রকাশ করিয়া বলিল
"সত্যি বলেছ দিনি, হতভাগাঞ্জলো তো
মরতেও জানে না! এই বে পিরমিমিতে
এতো ব্যায়রাম, স্যায়রাম হচ্চে, পটাপট
মাহ্র মরচে তা কাকগুলোকে তো মরতে
দেখিনে! পেলেগ না কেলেগেতে ইত্ব
মরে তা কাকগুলোকে কি মরণও দেন নি
গা! এমন একচোকো ঠাকুরও তো দেখিনি।
ছিষ্টিতে এতো মনিয়া এতো জন্ত থাকতে
অমর হলো কিনা ওরা! তা বোন কলির
ধর্মই এমনি! এই দেখো না ছেরকাল ধরে
থেটে মন্থ আমরা আর মাঠকুরুণের সঙ্গে
তীথি কর্ত্তে বাবে কিনা তারিণী আর বিমলি,
বিচার দেখলে?"

চল্দরা ও বিধুম্থী উভয়েই কাল ধর্মের অবিচারের কথা ভাবিয়া একান্ত ছংথে গভীর নিমাস পরিত্যাগ করিয়া সহংথে বলিল "আর বোন ওকথা বলিস নে, আর কি এখন আমাদের কাল আছে না দিন আছে? এখন যতো খোলাম্দেরই রাজ্যি! তা দাঁড়া না ছ দিন; নতুন মা একটু ভারিক্যিক হোক। এরিমধ্যে দেখছিস না,—ওমেয়ে গুণের আদর করতে জানে। খাণ্ডড়ি ভালবাসতো ওনে অবধি আমার কতো থাতির করে দেখিসনি? ও বিদি! আমার পোড়া ছখানা আজ তুইই না হর মাজনাভাই! আমি একবার মিতিনের সঙ্গে দেখাকরে চট করে তামাক পোড়াটুক বানিরে নে আসি!"

প্রাত্যহিক কাজ কর্ম সারিয়া আহারাজে নিজের নির্জন মূরে বসিয়া, শান্তি তাহার

निकृतक दमनाहरत्र करन मनिवित्र नवश्रक्ष ুসস্থানের জন্ত একটা ফ্রাক দেলাই করিতে-हिन। निक्टेष्ट (थाना कानानात्र प्रधा निज्ञा ঈবহুষ্ণ বাতাস আসিতেছিল। সে বেন স্বৃতিলোভে তাহার খোলা চুলগুলার নিকট হইতে কোনমতেই নড়িতে পারিতেছিল না। ভাহাদের উড়াইরা উড়াইরা দীর্ঘতা পরীকা করিতেছিল, নাচাইশ্বা নাচাইশ্বা খেলা করিতে-ছিল, আবার ভিজাচুল কথাইয়াও দিতেছিল। জানালার বাহিরে কার্লিসের উপর একটা কুন্ত বিরহী ঘুঘু বসিয়া আকুল বিরহ গানে জগতের কর্মাবসরে ক্লান্ত বিরহীর অর্জ-নিমীলিত তন্ত্ৰাজড়িত চক্ষের সমুখে ক্রণ-বিরহচিত্র প্রতিফলিত করিতেছিল। কিন্ত তথাপি তাহার প্রবাদী প্রিয়ের কোন সাড়াই পাওয়া গেল না। জগতের নিয়মই বৃঝি এই 📍 একজন অভ্যের জন্ম কাদিয়া ফিরিবে। উন্থানে বসম্ভের পদ্চিত্র অশোকশাখায় লোহিত রাগে ফুটিরা রহিরাছে। আত্রমুকুলের মদির স্থাদে ভ্ৰমরকুল মাতাল হইরা ঢলিয়া পড়িতে ছিল। পাথীওলার আনন্দ কলরবের শেষ নাই। গন্ধরাজের অভোটা গন্ধ রোদের তেজে ख्यादेवां क्वादेवां शिवादह ।

ক্রকটা শেষ হইয়া গেল, নিজের হাতে কাটা স্থতার বোনা লেশ হারা তাহার গলার ক্রিল ঝুলাইরা দিরা কল বন্ধ করিয়া লে একটু কি ভাবিল। তারপর আপনা আপনিই একটু সলজ্জ হাসি হাসিয়া বলিল না, তিনি আসবেন না।

একপাশে একটা কাঠের চৌকির উপরে সেশুন কাঠে পালিস লাগানো একটি চরকা একথানি কাপড় দিরা ঢাকা ছিল। শাস্তি একবার এদিক ওদিক চাহিয়া দেখিরা
সেটাকে নামাইরা লইল। চুপড়িতে পাঁজ
পাকাইবার সরকাঠি বাগানের কাপাসতুলা
এবং একটি ছোট ধন্তকের মতন তুলা বুনিবার
যন্ত্র আছে। তৈরি স্থতাটুকু স্ভার নাটাইরে
জড়াইরা লইয়া পরীক্ষা করিল, হুটো
পৈতে হতে পারে, কিছ লেশের জন্ম সক্ষ

প্রথমটা চরকার ঘরবর শবেদ শুনিতে পার নাই, কিছ যখন সেই পরিচিত জুতার শব্দট। বাবের কাছাকাছি পৌছিয়াছে সেই गमरत जाहात कर्ल रम भक्त श्रादम कतिन, ति अनुभक् छाहात सामोत, । द्रास्त्रनात्थन, তাই দে একটু চঞ্চলভাবে হস্তস্থ স্তাটুকু ছাড়িয়া দিয়া মাথায় কাপড় তুলিয়া দিল, এবং ভারপর দ্বারের দিকে একবার চকিত নেত্রপাত করিয়া মুধ নীচু করিয়া টোকা र्हेट रूडा थूनिट मनार्यां अनान कतिन। চিত্মবেগজনিত ভাবপরিবর্ত্তনটা করিয়া ফেলিতে ইচ্ছা ছিল না, কিন্তু তাহার নত দৃষ্টির মধ্যদিয়া প্রীতির একটি মিগ্ৰচ্চটা বিশেষ চেষ্টা সত্তেও গোপন রহিল না। একটি মধুর সলজ্জ রাগে মুখখানি নতুন কোটাফুলের মত স্থন্দর হইয়া উঠিল।

মধ্যাত্ন নিদ্রা হইতে জাগিয়া হেমেন্দ্রনাথ
আজ হঠাৎ অনেক দিনেন্দ্র পরে এ সময়ে
অন্তঃপুরে প্রবেশ করিগেন। বিঝাহের পর
প্রথম প্রথম স্থান্দুরী জীকে একদণ্ড চোঝের
অন্তর করিতে ইচ্ছা হইত না। সেই অত্যধিক
লাভেচ্ছা পত্নীকে ক্ষুত্রকটা কইক্রান্ত করিয়া
তুলিয়াছিল। এবং তাহার হাত হইতে স্থাক্তি

পাইবার জন্ত অনেক সময় লজাসভোচে স্কুচিতা বধূকে, হরির শরণাপন্ন হইতে रुटेबाट्ड। ट्रायक्त वर्ग मःनात्र पिथिवात्र ভোষার কি প্ররোজন ? সে সকল বাঁহারা ৰাড়ি জুড়িয়া বসিয়া ৰসিয়া অনুরাশি ধ্বংস করিতেছেন, তাঁহারা দেখুন না! সেবা! ভা সেও ভো এভোকাল চাকর দাসীতেই করিয়া আসিতেছে, ভোমায় কি কেবৰ খাটাইতেই আনিয়াছেন নাকি ? বাহাদের একশত লোক ছকুম বরণারী করি-ৰার জন্ত মুখ চাহিয়া হাজির আছে, ভাহারা কোন হ:থে কাজ করিবে ?

এই সকল সত্রপদেশ পালন করা শান্তির পক্ষে অসম্ভব হইয়া পড়িত। সে লজ্জার ম্বণার মর্ম্বের মধ্যে মরিরা যাইত। এবং স্বামী আজ্ঞা লঙ্ঘন করা ভিন্ন তাহার এথানে গভি ছিল না। তারপর আস্বাবে বালকের স্থের পুকুলের মত বাক্সে না তুলিয়া আলমারির মধ্যে না সাজাইয়া দিনরাত নাডাচাডার ছদিনে নৃতনত্বের সাধ মিটাইয়া কেলিয়া সে এক অভিজ্ঞতা লাভ করিল। वस्त्रवत्र वारगरनत्र जेनरम् किं। कांन करेन, 'সভাই ভো সে এভোবড় একটা লোক, ভাবি অমীদার, সে কিজ্ঞ এমন করিরা স্ত্রীর আঁচল ধরিয়া থাকে গ ইহাতে ভো তাকে ভারি পুতার দেওয়া হইতেছে ৷ বরং সেই ভাষার, সাকাৎশাভের অন্ত আকুলি क्टिनि कन्न ।"

ব্রুদ্ধিটা ঠিক মনের মধ্যে থাপ থাইরা বসিৰা বেংগেল বে গাৰ্ডটোনেরি মত বৃদ্ধি-মান ভাহা সেদিন স্থমাণ হইয়া গেল।

रहरमञ्च चरतन मरथा भी नित्राहे झेयर বিরক্তির স্বরে বলিয়া উঠিলেন "এই বে আবার আজ চরকা নিয়ে বদে গেছ! আছো এ পাগলামি কি তুমি ছাড়বে না ? ভদ্ৰ ঘরে थरमह, अमन क्षांनानोत्र मठन मध (कन् १ শিল কাজ করতে হয় একটা মেরে রেখে-मिष्टि ভागतकम भिन्न (भार्था, ছোটলোকের मञ्ज চরকা খ্যান খ্যান ভাল লাগে না।

শাস্তি মাটি হইতে দৃষ্টি না তুলিয়াই একটুথানি সলজ্জ হাসিল, আতে আতে বলিল "বাবা বলেন, স্ক্ল শিল্পের চেলে স্তা কাটা শেখা আমাদের বেশি দরকার। দেলাই, বোনা এসৰ ভো কিছু কিছু জানি, কিব তারচেয়ে আমারো হতা তৈরি করতে ভাল গাগে। বাবা বুলেন পূর্বের আমাদের দেশের মেরেরা ঘরে ঘরে স্ভাকেটে তাঁতিদের কাপড় বুনতে দিত। বাবা---"

বিজ্ঞপের সহিত ক্লষ্ট হাসি হাসিয়া উঠিয়া হেম বলিল "বলতে দাও ভোমার বাবাকে, তিনি যা বলেন, তাই যে একেবালে দেববাক্য তা কিছু নয়। তার পরামর্শে চলতে গেলেই व्यामार्तित्र व्यथः शांक त्वरक हत्व कान निन प्तिश्रह। **डिनि डेक्नि, डाँ**व नवहे नात्न। আমাদের এতো বাডাবাড়ি করলে, যোগেশ वनहिन, द्यानिम कारमञ्जात मार्ट्यत नवत পড়বে। একে তারি পরামর্শে সেদিন বাবা ভিক্তোরিয়া মেমোরিয়লের চাঁনার পঞ্চাশটী টাকা দিয়া মহা অক্টার কাল করলেন। তার ফল ভুগতেই হবে, তার উপর ভোমরাঞ্জি দেশগুৰ লোককে ভূলোর চাষ, ভাঁত ও চরকা নিৰে নাচিৰে তোল ভাহলে পথে গিয়ে मैक्षिट इटन संबद्धि। अनव झेट्डा, क्या

শোল, স্বামীর ক্থা ভনলে পাপ হবে না।

বল তো একটা মেম গবর্ণেদ রাধিয়ে দিচিচ,

সাহেব ভনলে খুনী হবে এখন। যোগেশ

বলছিল হশো টাকা মাইনে দিলে, ম্যাজিস্থেট সাহেবের কে আত্মীয়া একটি মিদ্

নারারণগঞ্জের কুঠিতে থাকেন, তাঁকেই ঠিক
করে দেয়।"

শাস্তি একবার নতমুথ তুলিয়া সবেগে বলিয়া উঠিল 'না, দে জ্যেঠামশাই পছন্দ কর্মেন না', তারপর ঈষৎ অপ্রতিভভাবে, মৃত্ত্বরে কহিল "দেলাই ভো আমি চলনদই জানি, বেশি করতে ভো সময় হবে না, দে কাজ নাই। তাছাড়া—"

বলিতে গিলা হঠাৎ সে থামিরা গেল। হেমেক্স. বিরক্তভাবে জ্ঞানা করিল "কি তাছাড়া?" "এতো টাকা একজন মেমকে দিয়ে কি হবে? এবৎসর একে বৃষ্টির জন্ম কল বেশি না হওরাতে প্রজাদের কিছু ছেড়ে দিতে হবে।"

সরোবে ভাবি জমীদার বসিতে বসিতে বলিরা উঠিল "মিথ্যাকথা, ফসলের কিছু অভাব হরনি। ওসব কেবল শালাদের বদমাইসি। বাবা আবার তাই বিশ্বাস করে-ছেন। ঐতেই সব গোল্লার বাবে দেখছি। এ বোধহর রওরমশাই পরামর্শ দিরেছেন।

শান্তি - সঞ্চলনেত্র তুলিরা করুণদৃষ্টিতে সামীর দিকে চাহিল। হেমেন্ত ততোক্ষণে সোফার উপর শুইরা পড়িরাছে। ভাল করিরা আলক্ষ ভালিতে ভালিতে বলিল "এ আবার কি হজুক উঠছে শুনছি? ভোষরা নাকি ভীর্বজ্ঞমণে চল্লে ?" শান্তি রীরে ধীরে উঠিরা আসিরা স্থামীর অনভিদৃরে

নোফাধানা খেঁদিয়া মেজেতে বসিন। স্বামী
না ডাকিলে কাছে বেতে এখনও তাহার
একটু লজ্জা একটু সঙ্কোচ বোধহয়। ইচ্ছা
সত্তেও দেইজ্জ সে নিজের পূর্ব অধিকার
গ্রহণ করিতে পারে না। এ গৃহেয় সে
সর্বময়ী গৃহিনী, কারণ গৃহসামী তাহাকে সে
পদ সম্পূর্ণরূপে প্রদান করিয়াছেন। খণ্ডরের উপর সেই দাবীতেই মাতৃত্তের পরিপূর্ণ
গৌরব দখল লইয়াছিল। কিন্তু স্বামীর
নিকট নারীজ্বনয়ের স্বাভাবিক সরমসজ্বোচ,
মানাভিমান লইয়া সে নববধ্ কই অ্যাচিত
হইয়া একেবারে পত্নীত্বদ তো লইতে
পারে না। উত্তর করিল হাঁ জ্যেঠামশাই
যাবেন বলছেন। তিত্র বাত্রাকন,
তুমিও নাকি যাচো ? তি

*হাঁ। জোঠামশাইএর ইচ্ছা তুমিও যাও, তোমার কিছু বলেছেন ?"

"আমার!" হেমেক্র সাশ্চর্য্য বিলয়া
উঠিল "আমার তো সে সাধ নাই। দিব্য
বাজিতে রয়েছি, এসন ছেড়েছুড়ে কোথার
বিদেশে বিভূঁইয়ে অস্তিতপঞ্চকে খুরে
বেজাতে যাবো! বানপ্রস্থাবলঘনের সমন্ন
হয়েছে তা আমার তো মনে হচেচ না।
তা ওঁরা বুড় হয়েছেন, তীর্থ করতে বাচেচন,
সে বেশ কথা—তোমায় আমায় টানাটানি
কেন ? তুমি ওঁদের সজে কোথায় ঘুরুডে
বাবে ? তোমার গিরে কাজ নাই।".

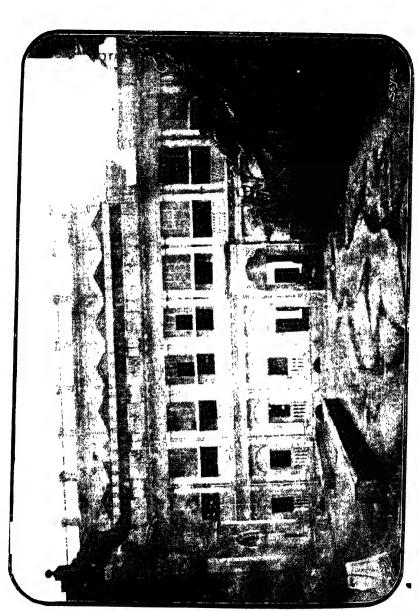
শান্তি সাতকে জিহ্বা দংশন করিল, একবার চকিতনেত্রে বাবের দিকে চাহিছা দেখিয়া শক্তিকরে বলিয়া উঠিল তাকি ইয়, জোঠামশাই নিয়ে বেংতে চাইছেন কি করে বলবো আমি যাবো না! হৈবেজ মুখটা একটু ভার ভার করিব "বেশ ভবে বেও, আনি বেভে পার্কো না। ছুমি গেলে আনার আর কভিটা কি? ভোষারই কঠ হবে তাই বলছিলাম।"

শানী তাহাদের সঙ্গে বান সে ইচ্ছা শান্তির
শত্যন্তই ছিল। কিন্তু সে সবদ্ধে সে তাহাকে
শার কিছুই বলিল না। কাহারো ইচ্ছার
বিক্তমে নিন্দের জেলে কাজ করানো
তাহার শতাব নর। বিশেব হেনেজের
শেবের কথা করটা ভাহাকে আঘাত করিরাছিল। ভালবাশার থাভিরে অনেকথানি
শত্তার সভ্ করা বার, কিন্তু শান্তি কাছে
থাকিবে না বলিরা হেনেজের কিছুমাত্র হংথ
নাই; এ শুধু ভাহার কর্ত্রবো বাধা দিবার
চেটা ?

রাত্রে আহারকালে পাথাহন্তে আদীনা
বধুকে সংবাধন করিরা শ্রামাকান্ত চৌধুরী
বলিলেন, "রা আমাদের বাওরা ঠিক তো ?"
শান্তি ঈবং নতমুধে সলক্ষে উত্তর করিল
"হা জাঠামশাই।" "এথমে কোথার-গিরে
উঠা বাবে, তাকি ঠিক করেছ মা ?" তাহার
ক্ষুত্র জননী, জননীর মতই সরেহ হাসি
হাসিরা কহিল "সেটা আপনিই থির করুন,
জোঠামশাই। আমি বলে করেছিলেম,
বৈজনাবে গিয়ে একটু বিশ্রাম করে নেবেন,
ভারপর পরা হরে পরে কানী বাবো। আপনার
শরীর ত্যো তত ভাগ রূর, একেবারে কানী
বেতে উলি পড়বে। কিছু আপনি—"

বৃদ্ধ আনিবাৰ বৃধ তৃলিয়া বালু দিকে সংগ্ৰহ চাৰিবাল শৈলামান মা থাকতে আনি হিয় নাম্প্ৰী চু "না ঠা আনিটকা কোনাৰ অবাধ্য হোগে নাই চু" ব্লিতে বলিতে ঠাহার অভাত-

সারে তাঁহার ছবর ভেন্ করিয়া একটা কুজ নিৰাস সহসা বাহিত্ত হইলা আসিল। মান্তবে সংসারপথে চলিতে শিল্পা পরে পঞ ख्य कवित्रा वरत। खाडिशूर्व चगरणत वहा व्यवश्वनीत्र नित्रम विनित्रारे दिन बदन इत्र। महा महा अवित्रा वर्षन এই विश्व ब्रह्मा कोएक है मछ वर् अक्टो जम जिन्न चान किह्ने महर গিলাছেন, তথন সামার মাত্রু त्न यांश किंदू करत बांश किंदू हाटइ बांश আশা করে সেওলা কেমন করিয়া অবিচল সভাবরণ হইনা দীড়াইবে ! তাই অনেক ভাবিরা চিডিয়া অনেক আশা করিয়া বে भागानाच भन्नीन रहरमळाटक आगानिक भूरवान পরিতাক্ত শৃক্ত সিংহাসনে তুলিয়া লইরা মনে করিরাছিলেন,, সেধানে প্রভিষ্কিত रहेश त्र छाराबरे रहेश गहेरव,-विमान-मार्ग ऋमत्रक्राण निर्मिष्ठ बहानिकादर সে আশা অচিরেই ভূমিসাৎ হইরা গেল। এক বৃক্ষ হইতে ছাল কাটিয়া বৃক্ষান্তরে জুড়িয়া দিতে চেটা করিলে বেমন জোড়া লাগে না, বরত্ব পোয়পুত্র লইয়া ভাহাকে ঠিক মনের মতন পাইতে আশা করাও তেমনি ছুরাশা। পরিবের ছেলে বড়-लाक हरेबा हठाए नवाव छेनाविशाबी कौरमरमञ्ज मःशा दृष्टि कतिया गायाकां प्रतिशत्मन, छोहांत्र निव श्व विरमार विश्वतंत्र माहाया कृतिए व वर्ष वास कृतिक, তাহার অষ্ট্রপু অধিক হেমেক্স বিশাশিভার **छेकाहेबा बिटल्ट्ड। त्म ब्रहेबाला भूबालन्** गाफि किनिया अर्थिक ब्रेशिकन,--(र्म এখন নিত্য নুতন গাড়ি গোড়ার আভাবন क्यादेश दर्गामा बार्रास्था द्यार्थ वार्रास्था



त्यांकेव अगद तथे व्याट्टरे। ट्रायस त्यांके ্দেখিতে ধংগঠ বাবু হইরা উঠিব। তাহার মোসাহেবের সংখ্যা রক্তবীকের ভার ক্রত গতিই বাডিয়া চলিল এবং মাতা বীণাপাণির সম্পর্ক এক রকম রহিত হইল। কালেজে অহপন্থিতি নিতা নিতাই বুদ্ধি পাইতে লাগিল। কিন্তু দাকার্স বা থিয়েটারের বক্সাসনে উপস্থিতির অভাব ছিল না। এবং নারামণগঞ্জের বাগান বাড়ি যাহা বিনোদের পিতামহের মৃত্যুর পর হইতে পরিত্যক্রই পড়িয়াছিল, ভাহার নৃতন সংস্কারের সঙ্গে সঙ্গেই আবার পুরাতন স্মৃতির মতন তাহার বৃহৎ উন্থান ও উচ্চ প্রাচীর ছাড়াইরা বিশ্বিত পথিকবর্গের কর্ণে নারী কণ্ঠের স্বর্লহ্রী ও मध्र रूपृत्र निक्रन मर्था मर्था अर्वन कतिरङ লাগিল। দেখিয়া শুনিয়া রজনীনাথ বলিলেন *হেমের স্বতম্র বাড়িতে থাকিবার প্রয়োজন নাই। কাঞ্চকৰ্মের ঝঞ্চ লইয়া আমিতো সর্বানা ভাহার সংবাদ রাখিতে পারি না। ভাহার চেরে সে আমার কাছেই থাক আমারও ভো স্থকু ভিন্ন ৰাড়িতে আৰু কেহ নাই।" শুনিয়া স্থী হইরা খ্রামাকান্ত হেমেন্ত্রকে ডাকাইরা তাহার খণ্ডরের আদেশ জানাইলেন, বলিলেন "কাল হইতেই তুমি সেখানে যাও, বিলম্বে প্রবোজন কি ?" হেম সে সংবাদে মহা চটিয়া উঠিল "কি আমি খণ্ডরবাড়ি গিয়ে থাকবো ! **অাপনি এমন কথা আমার কি করে বলেন ?** তিনি একথা বলৈ যে আপনাকে শুদ্ধ অপমান করেছেন তা কি আপনি বুঝতে পারেন নি ?" ভাষাকান্ত অনেক প্রকারে তাহাকে বুরাইতে **ठाहिटनन रव प्रस्तीमाध्येत महिल डाहा**ई गदक ठिक रन धाकाव नरहते. बसनी हिंक

তাঁহার ছোট ভাইরের বতন। তিনি বাহা
বিলিলেন ভাহাপেক। সহপদেশ আর কেইই
দিতে পারিবেন না। বিশেষ হেমেন্সনাথের
বে অবস্থা, ভাহাতে তাহার খণ্ডরালর বাসে
কেই তাহাকে 'ঘরলানারে' ভাবিরা অবজ্ঞা
করিবেন না, সেজগু ভর করা অনাবশুক।
কিন্ত হেমেন্স সে কথা কানেও তুলিন না,
সে সাফ বলিরা দিল "খণ্ডরের কাছে গিরা
সে কিছুতেই থাকিবে না, তাহাতে তাহার
পড়াগুনা হোক, আর নাই হোক।"

किছ्निन পরে সে আরো সাফ্করিয়া বলিয়া দিল যে 'তাহার চকের দৃষ্টিশক্তি একেবারে হীনতা প্রাপ্ত হইতে বসিয়াছে, আর পড়াগুনা করিতে যাইয়া সে কি ক্ষন্ধ হইবে ?' তারপর সে একজন ডাস্তারের নিকট হইতে একজোড়া সোনা বাঁধান চশমা পরিবার অনুমতি লইয়া দিনকতোক দার্জিলীং বেড়াইয়া আসিয়া থিয়েটার প্রভৃতি নানারপ হজুক বইয়া কন্দীপুরে অস্থায়ীরপে খামাকাস্ত ভবে একটি কথাও বিদিল। বলিতে পারেন না, শাস্তি একটিও রুঢ়কথা বলিল না। রজনীনাথ তীত্র তিরস্কার করিয়া পাঠাইলেন। কাঞ্চেই সে তাঁহার উপর হাড়ে চটিয়া রহিল। শাস্তির নিকটে মনের ঝাল মিটাইয়া ভাহার পিতৃমিন্দা করিল। শাস্তি রাগ বা বিরক্তির চিহ্নাত্র প্রকাশ না করিয়া বসিয়া শুনিল, এবং সম্ভ টুকু বলা শেষ হইয়া গেলে নীরবে ওঠিয়া চলিয়া গেল। পিতার স্বপক্ষে বা স্বামীর বিপক্ষে একটি कथा अविन ना। त काशांसन बृद्ध मा, ব্ৰিতে চাছে না কেন সে ভাষাকে লোৰ कविषा छोड़। बुबारेट बारेटन !

হেবেজের চকো শান্তির লে সহিমৃতাটাকে সে বনি রাগই না করে ভারা হইলে বলার একটা অপ্রতিহত গর্ম বলিয়া বোধ হইতে আসল স্থাটুকুই নট হইল। ইহাতে মাছ-, লাগিল। বাহাকে হুক্থা গুলাইরা দিলাম, বের রাগ না কমিরা বরং বাড়িরাই বাছ!

মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ।

The Autobiography of Maharshi Devendranath Tagore (with portraits) Translated from the original Bengalee by Satyandranath Tagore and Indira Devi. Calcutta S. K. Lahiri & Co. 1909. Price Rupees 2-8.

মন্থী বার্ক বলিয়াছেন, "Great men are the guide-posts and Land-marks of our Society." বেবেক্সনাথের জাবনী আলোচনা করিলে আমরা এই সত্য গভীরভাবে উপলব্ধি করি। যিনি সার্দ্ধ শতাক্ষার অবিক্কাল ব্যাপিয়া বলীয় ধর্মজীবনের এক্ষিক আপন শক্তির আলোকে উজ্বল রাধিয়াছিলেন, বে আলোক্ছটা বজের অন্তর বাহির এবনও পর্যন্ত আলোকিত করিয়া রহিয়াছে এবং ভবিষ্যতেও রাধিবে, আমরা তাঁহার জাবনের কতটুক্ স্থান রাধি!

যখন পাশ্চাত্যজ্ঞানের,ধর্মের ও সামাজিক আদর্শের প্রবল স্রোভ প্রাচ্যমালের জার্প প্রাচীরে আঘাত করিতেছিল, তখন দেবেক্রনাথ তৎকালোপযোগ্র সংস্কার বারা সেই জার্প প্রাচার সংরক্ষণে সমগ্র শক্তি নিয়োজিত করিয়া সমগ্র বাঙালীলাভির প্রোরব বৃদ্ধি করিয়াছেন। আনাদের লাভীর জাবনের এই ধর্ম ও কর্মবীরের জীবনী আলোচনা সমাজের গক্ষে কতদ্ব শুভক্তর ভাহার ব্যাখ্যা নিপ্রান্তান।

দেবেজনাথের জীবন একটা দীর্ঘ সুক্ষাহিনী।
আই দেশাচার, আই ধর্মবিবার, ইহারাই উাহার ছবিব
লক্ত ছিল। তিনি ভাষাধিগকে পরাত করিরা
সভ্যোর সিংহাসন প্রতিটা করিতে স্বক্ত জীবন
অভিযাহিত করিরা বিরাহেন : এবন কি বাহারা
ভীহার করের অনুষ্টোমন করেন না—ভাষারাও ভাষার
সহস্থ, উর্ভ চরিত্র, ভাষার জ্বান, ভাষার সভ্যাসুরাধ
বিশ্বাহ্র না হইবা থাকিতে পারেন লাঃ

যিনি কেবলৰাত একটা মুখের কথার—আপনার স্থিপুল সম্পত্তি রক্ষা করিরা স্থাধ বিলাসসভোগে কালবাপন করিতে পারিতেন, তিনি ভাষা না করিরা ধর্মের জন্ত বেচ্ছার সমস্ত ভ্যাপে প্রস্তুত হইরা সামান্ত-ভাবে দিনবাপন করিতে কুঠিত হন নাই! ভাষার সেই স্থাহান ভ্যাপনীকারই ভাষাকে "মহবি" আব্যার উপযুক্ত করিয়াছিল। এমন কি ভিনি বিদি ধর্মাসম্ভে কোনরপ আলোচনা বা সংখ্যার না করিতেন, কেবলমাত্র ভাষার সেই ভর্কণ বেখিবনের,—ব্রন ভোগ ম্পৃহা মানবের ধর্ম্য,—স্থাহান ভ্যাগই ভাষাকে মহর্বি নামের বোগ্য করিত!

মহর্ষি দেবেক্সনাথের জীবনের একটা প্রধান
ঘটনা—মহাল্মা কেশবচন্দ্রের সহিত, তাঁহার চিরবিজেব। তাহার স্থা কারণগুলি বর্তমান গ্রন্থের
ভূষিকার সভ্যেন্তবাবু অতি সাবধানে আলোচনা
করিয়াছেন। তিনি যে আলোচনা করিয়াছেন
ভাহা ব্রাক্ষসম্প্রদায়ের ইতিহাসের অন্তর্গত; কিছ
আষরা ব হারা ব্রাক্ষসম্প্রদার বহিভূতি ব্যক্তি আমরা
দেবেক্সনাথকে একজন সাম্প্রদায়িক ধর্মনাথার গুরু
না মনে করিয়া, জগতের ইতিহাসে উাহাকে,
একজন মহাল্যা পুরুব বলিরাই দেবিতে গাই।

দেবেজনাথকে স্থাজ্ঞসংকারক সনে করিলে ভাঁহার
চরিত্র আব্দরা টিক ক্ষরকার করিছে, গারিব না ।
ভিনি বর্ত্তরক্ষক ছিলেন। চিরস্তীবন বর্ত্ত ক্ষরকাই
ভিনি ভাঁহার প্রভাগ্রে ক্ষরিয়াছিলেন। প্রাচীন ভারতের
ক্ষরিবণ বন এক্ষর ব্যৱণ উপনিব্যান পুরুষ বর্ণনা



भश्मि—(तग्नम ४०)





করিয়া গিয়াছেন তিনি সেই সনাজন পরবন্ধেরি উপাস্নার প্রবর্তন করিতে প্রাপণাত করিয়া গিয়াছেন। ভারতের ধর্ম ভারতে প্রচার—ইহাই তাঁহার উক্ষেক্ত ছিল।

ভাঁহার বাহ্মধর্ম একটা বতত্ত্ব ধর্মমত নহে। हिन्पूर्वा कानमूनक वर्ष-वाहा महान्। बानयाहन রার প্রবর্তন করিতে প্রয়াস পাইয়াছিলেন তিনি সেই মত সমর্থন করিয়া দেশে প্রচার করিতে চেষ্টা कतिशा शिशांद्यन । त्वन ना यानिशा वि विकासर्थ मनाजन हिम्मुधार्मात्र भाषा हग्न: जाजिएजन ना মানিলেও শ্রীচৈতক্তদেব যদি হিন্দুধর্মের অবভার মধ্যে भग इन, छद अहर्वि प्रत्यक्तनाथ यिनि दक्वन माकाव উপাসনা পরিত্যাগ করিয়া হিন্দুধর্মের উচ্চ শাখা নিরাকার উপাদনা পদ্ধতি প্রচার করিতে চেষ্টা হিন্দুধর্মবিচ্ছিন্ন क्रियाष्ट्रिनन, তিনি কোন নুত্রন মত প্রবর্তন করিতে যান নাই। হিন্দু-ধর্মের অন্তর সীমা তেশনমার্গ ই বাঁহার অভীষ্ট ভিনি কি কম হিন্দু ছিলেন ! হইতে পারে আধুনিক "बाक्कवर्ध" नाना विषय था। मिछ हिम्पूपर्थ इहैएड শতন্ত্ৰভাব অবলম্বন করিয়াছে, কিন্তু মহর্বি তাঁহার বে ধর্মমত অতি পরিকার প্রশাষ্টভাবে ব্যক্ত করিয়া-ছেন—তাহা আর্য্য হিন্দুরই সনাতন নিরাকারবাদ।

তিনি মভাবতঃ রক্ষণশীল ছিলেন—অর্থাৎ হিন্দুনাম ত্যাগ করিয়া তিনি সমাজ সংস্কারে প্রায়ানী হন
নাই। অথচ ধর্মের জন্ম যতদ্র সংস্কার প্রয়োজন সে
বিষয়ে তিনি এডটুকু পরাগুর ছিলেন না, এজন্ম তিনি
তাহার প্রমান্ত্রীয়গণকেও ত্যাগ করিতে কুঠিত
হন নাই।

সমাল সুংস্কারে তিনি বে একেবারেই হন্তক্ষেপ করেন নাই তাহাও আমরা বলিতে পারি না। তাঁহার অসূষ্ঠান পদ্ধতিতে বালিকাদিগের বিবাহের যে বর্ষদ নির্দারিত করিয়াছেন তাহা হইতে শাইই দেখা যায়—ভিনি প্রচলিত বাল্য বিবাহের পক্ষপাতী ছিলেন না। আর, ব্লীশিকা সম্বন্ধে ত তাহার অন্তঃপুর দৃষ্টান্ত স্থল। ও শিক্তে, পাওয়া বায় তাঁহার বিবাহিতা কল্যা ও শ্বেবধুনিককে সংস্কৃত ও বাজনা শিক্ষানানের কল্প

তাঁহার অন্ত:পুরে পণ্ডিত নিবুক্ত ছিলেন, এবং মেম আসিরা ইংরাজি শিখাইয়া যাইতেন। ইহা ছাড়া গৃহে অবস্থান কালে ভিনি নিজে প্রত্যন্ত অন্তঃপুরে ব্রাহ্ম ধর্ম শিক্ষা প্রদান করিতেন। বেথুনস্কলে শিক্ষার वश्च याहाता मर्क अथम कछा अत्रव करतन तिर्वास-नाथ डाँशाम्त्र मस्माछ अकलन। छात्रजी मण्लामिका আমতা স্বৰ্কুমারী দেবীর গ্রন্থ রচনায় তিনি যথেষ্ট উৎনাহ প্রদান করিতেন,-এবং ডাহার পৌত্রী ইন্দিরা দেবী এবং मिहिकी সরলাদেবী वि-এ পাশ করিলে ইহাদের পাণ্ডিভো ভিনি অভিশয় আনন্দপ্রকাশ করিয়াছিলেন ৷ স্ত্রীলোক মাত্রকেই তিনি লক্ষ্মীস্বরূপা জ্ঞানে সমাদর করিতেন। কি স্ত্রী কি পুরুষ কোন সামাত্র দীন ব্যক্তিও মহর্ষির দর্শনে আসিলে তাঁহার ব্যবহারে মুগ্ধ হইয়া গৃহ গমন করিতেন, ইহা একটি व्यवाम कथा। এই क्रथ यामिक मित्रारे मिथे उँ शिव ৰহৎভাৰ উপলব্ধি করি।

এই সর্বাঞ্চণদন্দার মহাপুরুবের বাঙলা ১২২৪ সালের জ্যৈষ্ঠ মাদে (ইংরাজী ১৮১৭ মে মাদ) জ্বোড়াসাঁকোর হুপ্রসিদ্ধ অট্রালিকায় জন্ম হয়। শৈশবে রাজা রাম-যোহন রায় প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালরে শিক্ষালাভের পর **ठ**कुर्फन वश्त्रव वद्यात्रव नवय महिंद दिवस्तान विक् क्रांवा अर्थनां क्रांवन। अिन् वावकांनां (वेब পুত্র বিলাস ঐশব্যার মধে, আজীবন পালিত হইয়া পিতামহার তত্তাবধানে দেবেক্সনাথের বাল্যজীবন গঠিত হয়। এই মহীয়দী মহিলার ধর্মভাব দেবেন্দ্রনাথের শৈশব-হাদয়ে ধর্মের প্রতি একটা আন্তরিক শ্রদা কাগাইয়া তোলে। কিন্তু শৈববের म ज्यालाहे धर्माद दावा भवजीवत्व ममधिक व्यमादनाञ्च क्रिय विनया काशास्त्रा बात्रवा हत्र नार्श नाथात्रव ধর্মপ্রাণ হিলুগুহের বালকবালিকার মত্ই দেবেল-नार्थत रेन्नवजीवन गठिङ इट्रेडिका। ॰ शतमार्थत প্রতি মনের একাগ্র অত্যাগ তবন ব্যক্ত হইবার অবসর পার নাই বরং ইহলোকের ওভাওভের विवास है प्रात्यक्त नाथित कित्नाव कारत नमधिक छेथान ছিল। কি করিয়া সহসাঞ্চলদৰ তাঁহার চিড এক্ষের প্রতি সচেতন হটয়া উঠিয়াছিল, ভাঁহার 'আত্ম-

জীবনী'তে এ সৰছে তিনি হ'লৰ ইঞ্জিত বাজ্ঞ করিয়ারেব। পিভানহীর মৃত্যুর সমর বেবেক্রনাবের क्षपटक व्यवनारमञ्ज्ञ ध्यवम खत्रक हिर्दाम्ख हत। তথৰ ভাষার শিভামহীকে গলাভীরে গলাখাত্রীদিগের গুহে আনা হইরাছে। ভিনি 'ৰাজ্বীৰনী'ভে লিশিরাছেন, "বিদিমার মৃত্যুর পূর্বাদিন রাজিতে व्यक्ति 🖣 চালার निक्টवर्जी निमञ्जात वार्ष अक्षाना ठाँटित উপরে বসিয়া আছি। ঐ দিন পূর্ণিयात्र রাজি-চল্লোদয় হইরাছে, নিকটে শ্মশান। उपन मिनियांत्र निकृष्टे नांस मझोर्छन इटेएडिल, "এसन षिन कि करन, क्तिनाम तिला थान वारत।" वातून সঙ্গে ভাহা অল অল আমার কাণে আসিতেছিল। **এই অবসরে হঠাৎ আমার মনে এক আশ্চর্য। উদাসভাব** উপস্থিত হইল। আনি বেন আর পূর্বের মাসুব নই। ঐবর্য্যের উপর একেবারে বিরাগ লামিল। যে টাচের উপর বদিয়া আছি, ভাহাই আমার পক্ষে ঠিক বোধ इहेन, शानिहा इनिहां मकन रहत्र तीप इहेन, बरनत बर्या এक ज्ञूष्ठ भूर्य जानन उपहित्र हरेग। आबाद ৰন্নদ তৰৰ ১৮ আঠানো বৎসর।"

এই সময় হইতে দেবেজ্ঞনাথের হাদরে ধর্মণিপাসা লাগরুক হইর। উঠে। ১৮৩৯ পৃষ্টান্দে দেবেজ্ঞনাথ তত্ত্ববোধিনী সভা অভিঠা করেন। সভার অধিবেশনাদি তাঁহার গৃহেই হইত। ধর্মানোচনাই সভার অধান উদ্দেশ্য ছিল। প্রতিমাদে উপাসনা, প্রার্থনা, উপনিবদ পাঠও নিয়মিত হইতে লাগিল। এবং ক্রমণঃ এই সভা হইতে তত্ত্ববোধিনী প্রিকা প্রকাশিত হর। ক্রমীর অক্ররুমার দত্ত বহাশার এই প্রিকার প্রথম স্থামক সম্পাদক।

১৮৪২ খটালে এই সভা রাজা রাসমোহন রার

কর্ত্ব প্রতিতিত রাজ্যমালের অন্তর্ভুক্ত হয়। এবং

নহর্বি দেবেজনাথ অকাশুভাবে রাজ্যর্প এবং করেন।

১৮৪৪ বৃটালে দেবেজনাথের বলে ভর্ববোধিনী
শালালা প্রতিভিত্ত হয়। বেলাভের আলোচনা ও

বাজ্যলালক্ষরণবন্দে শিলালান করাই এই পাঠনালার

বনান উল্লেখ ছিলা। প্রবর্ণীতে এই পাঠনালার হাতে
চারিলন হাত্রকে ক্ষ্মীতে ধর্মনার প্রান্ত বেল

প্রস্থারনের কম থেরণ করা হয়। উছোরা প্রত্যাবর্তন করিয়া বধাসময়ে প্রচারনের কার্যে প্রবৃত্ত হন। ইহাদিসের মধ্যে পণ্ডিত আনন্দচন্দ্র বেদান্ত-বাগীপের নামই বিশেবভাবে উলেবযোগ্য। তিনি ভাহার মৃত্যুকাল কর্মি সমাজের প্রধান আচাধ্যের পদে প্রভিত্তিত ছিলেন। বেদান্তের অনেকণ্ডলি সংক্রমণ ভগ্রদানিও। প্রোভ্ত ও গৃহস্ত্রাধির সম্পাদন করিয়া তিনি বিশেব প্রতিষ্ঠালাভ করিয়াছিলেন।

১৮৪৫ খৃষ্টাব্দে খৃষ্টান মিশনরীবিগের প্রবন্ধ অন্ত্যাচার হইন্ডে স্বর্গন রকা করিবার বিপুল চেষ্টা
আক্ষধর্গের পক্ষে একটি স্মর্থীন বর্ষ ৷ সে সমর
দেবেন্দ্রনাথ অপূর্বর ধীশক্তি বারা আপনাদিগের আসন
কি করিয়া স্থাতিন্তিত রাবিয়াছিলেন ভাষার আমুল
বিবরণী প্রদান এই ক্ল পরিসর ছানে সম্ভবপর নহে।
'আক্ষরীবনী'তে ও সত্যেন্দ্রনাধের ইংরালী অন্ত্বাদের
ভ্রিকায় ভাষার কোতৃহলোদ্ধীপক্ষ বিবরণী পাওরা
যার।

১৮৪৬ পৃষ্টামে বিলাতে প্রিল মারকানাধের মৃত্যু হর। তাঁহার প্রামানির সমর আমীরবলনের সকাতর অহুরোধ এবন কি আমীরবলনের সেহ হারাইবার শ্বাসাত্ত্ব দেবেল্রনাথ আপনার ধর্মবিবাস অটল রাথিলেন। 'আমুজীবনী'তে দেবেল্রনাথ বলিয়াছেন,—
"এ'ক্ষধর্মের অহুরোধে পৌডলিকতা পরিত্যাগ করিয়া প্রামানুষ্ঠান এই প্রথম দৃষ্টান্ত। জ্ঞাতিবন্ধুরা আমাকে ত্যাগ করিলেন, কিন্তু ইবর আমাকে আরো গ্রহণ করিলেন। ধর্মের ক্রয়ে আমি আমুগ্রসাদ লাভ করিলাম এ ছাড়া আর আমি কিছুই চাহি না।"

মৃত্যুকালে বারকানাথ প্রায় এক কোর টাকা বণ রাখিয়া যান, অথচ উহিার বিবয়ের মুল্য ৪০ লক্ষ টাকা মাত্র। দেবেক্রনাথের 'আক্সলীবনী' হইওে এইছল উদ্ভূত করিলাম:—

শ্বাবি কাৰী হটুতে কিরিয়া আসিরা দেবি * * *
আসাদের ছাউসের বোট দেনা এককোট ট্রকা—
গাওনা সোভার কাক টাকা—বিশ কাক টাকার অসংহান ৷ * শব্বাদ কর্মজারী ভি, এল গাওন গাওনা
কার্মগাকে স্ক্রিয়েল, কা এই হাউসের গাওনা ও





মহনি ও ঠাৰার পত্নী



नृष्णि अवर देशायब अभिगातीय एक न्यान आशहारकत अशीरन आनिता পাওনা পরিশোধ করন। কিন্তু একটি টুট্ট সম্পত্তি আছে ভাহাতে ভাহারা অধিকারী নহেন কেবল সেই সম্পত্তির উপরে আপনারা হস্তক্ষেপ করিতে পারিবেন ना।" यपिछ प्यनात वक क्रेड-मण्लाहत छेनत কাহারো হতকেশ করিবার ক্ষমতা নাই, তথাপি त्ररवजनाव देहे छानिया वन शतिरमाय कविरक व्यवक इहेलन। **পাও**नांगांबर्गन **এই ब्रा**भादि खिछ इहेन्ना (गग। 'अत्वक महत्तव बहाबत्वत ठकू हहेत्छ जाक-পাত रहेता।' काहाता अहे माधुलात हमरकृष हहेता यशाब कतिरलन (य, यथन दैशाता नकति छाड़िता **बिरानन, उपन दैशारित मन्निख स्ट्रांड अन्नर्शियरा**त क्छ देंशना था ७ वरमन २००० , नीतिन हासान होका कतिवा शाहेरवन । * (क्ट छाकात अन्छ नानिन क्तिर्वन ना। वह मन्त्र रक्टनलनार्वत्र महानत गिशी अनाप विभागन, "% है। अथन लादक जायक चामारमव वक चामता किहर वाथि नारे-जारावा वन् दैशा मक्य थन मिरमन, मर्कारकमार माने।" ভাহাতে দেবেলনাথ উত্তর করিলেন, "লোকে বলিলে कि रहेरद ? आमानक क अनिरंत ना। आमानक व কেহ নালিশ করিলেই আমাদের দপথ করিয়া বভাতে रहेर य यात्रवा नकति विनाम, यात्रारम्य यात्र किन्नहे नारे। नजूना चामानज चामानिगत्क हाज़ित्त ना। कि यादर चाक अकृष्टि होत्र भ्यां स्थाकित्व, कादर রাজঘারে দাঁড়াইয়া শুপর ক্রিয়া বলিতে পারিব না व पर निजाय। अयनि प्रकृति निय, किन्छ मृत्रथ क्तिएक शांतिय मा। जैयत ७ धर्म ब्यामानिशक तका कक्रन। द्वन हेनननंदक चाहेरन चामारक मछक े निरंख ना क्य !"

এই থোর স্বার্থসংগ্রামের দিনে, মামলামোকদ্মার সংঘর্ষে মুম্ব্যুদ্ধ বখন চূর্ণ হইরা বাইতেছে, বিশাস-মাতকতা প্রবঞ্চনা প্রভৃতির দারণ ক্ষত সমাজকে নিদারণ বল্পা দিতেছে তখন মহর্ষির এই অপূর্বে ব্যব-হারের আলোচনাটুক্ত প্রতেশের ভার বিশ্ব ও বনুষ মনে হয়। বহর্ষির জীবনী জালোচনা করিলে চারিধারের চক্তরভার সংখ্য ভাঁহার সূচ্ডা, সহত্র মিধ্যার মধ্যে সভ্যের জবিচলিভ জ্যোভিশ্বর মূর্ত্তি কিরূপ জাজ্জানান জ্যোভিতে প্রকাশমান হইয়া উঠে।

১৮৮৫ খৃটানে কেশবচন্দ্রের সহিত তাঁহার ধর্ম-জীবন সম্বাীর সম্পর্ক বিচ্ছিল হয়। তাঁহার সবিভার বিবরণী বাঁহারা জানিতে ইচ্ছুক, ভাঁহারা বর্ত্তমান গ্রহণানি পাঠ কলন।

দেবেল্রনাথের আত্মজীবনীতে কোন উল্লেখ काहिनी नारे, कान जामाक्कत घटनात म्यादन নাই--ধর্ম ও সত্যের জন্ম আলৈশৰ সংস্কার ও সামা-জিক বন্ধন প্রভৃতির উদ্দেশ্যকরে একটি শক্তিমান আত্মার মান্সিক সংগ্রামের বিবরণীতেই তাঁহার 'बाजबोवनी' পूर्व। छाहाद वर्षवित्रः म मत्राक माधा-রণের মতভেদ থাকিতে পারে, কিন্তু দেবেল্রনাথের क्षांत्रा भूख, बांडनांत्र रात्रगा कवि त्रवीत्वनारभन्न সহিত সমন্বরে সকলেই খীকার করিবেন বে "ভক্লণ ব্ৰাহ্মসমাজ যখন পাশ্চাতা শিক্ষার প্ৰভাবে বৰ্ণের খদেশীর রূপরকা করাকে সম্বীর্ণতা বলিয়া জান क्रिक-व्यन त्म यत्न क्रियाहिन वित्नशीय हेडि-হাসের ফল ভারতব্যীয় শাখার ফলাইরা ভোলা मञ्चरणत अवः मिरे क्ट्रीक्टर यथार्यकात्य जेनार्यात्रका হয় তবন দেবেল্রনাথ সার্বডৌমিক ধর্মের খদেশীয় প্রকৃতিকে একটা বিষিশ্রিত একাকারত্বের মধ্যে বিস-ৰ্জন দিতে অখীকার করিলেন—ইহাতে তাঁহার অমুবৰ্ত্তী অদামান্ত প্ৰতিভাশালী ধৰ্মোৎদাহী অনেক তেজবী যুবকের সহিত ওাঁহার বিচেছদ দটিল। এই विष्ठ्य श्रीकांत्र कतिए य पृष्ठा, य गारुम, य वरमध অহোজন হয়, সমন্ত মতামতের কথা বিশ্বত হইয়া আজ তাহাই বেৰ আমরা শ্বরণ করি ৷ আধুনিক হিন্দুসমাজের প্রচলিত লোকাচ,টের প্রবল্ব প্রতিকৃলভার মুখে আপন অনুবর্তী সমাজের ক্ষমতাশালী সহোদর-গণকে পরিত্যাগ করিয়া নিজকে সকল দিক হইতেই রিক্ত করিতে কে পারে—বাঁহার অভঃকরণ লগতের আদিশক্তির অকর ব্রিথর বারার অহরত পূর্ব হইরা ना डेडिएडएड "

আৰম্ম বাজনার আপাৰর সাবারণকে মহর্মির আত্মবীবনী পাঠ করিছে অভ্যুৱোধ করি। ইহাতে উাহাদিসের পর্যশিপাসা আগরিত হইবে ও অনিয়ন্তিত

जोक्टन अरुप्ति मुख्यमा मानिटन देशे मानाविटणव पृष्ट विचान ।

কোচিন-চীন।

৭ ফেব্রুয়ারী

আৰু প্ৰাতে বং-মিউর খনি দেখিতে গেলাম। মামুবেরা আলোক-হীন থনিগর্ভে পত্র স্থায় খাটতেছে,—এই নির্চুর দুখ দেখিতে হইবে বলিয়া প্রস্তুত ছিলাম। যে পৰ্বতে ধনি, সে পৰ্বভটা ঝোপ্-ঝাড়ে আছের; —ঝোপ্গুলা প্রায়ই স্থবমা। ইহার চারি ধার দিয়া একটা পথ গেছে—এই পথের ভূমি উक्र ७ हानू-मध्य मध्य समात्र कार्कंद्र राष्ट्र चाट्ह । পर्करज्द्र धाद्र धाद्र धान-galery-न थाटक-थाटक সমুখিত। খনির আকারে ভিতরটা অন্ধকার, কিন্তু বেশ বাভাসের **हनाहन बाह्य। मील हत्य, धीरत धीरत** আমরা তাহার ভিতর দিয়া চলিতে লাগিলাম। বে সকল আনাম-বাসী থনির কালে ব্যাপত, छाहाता य थूर दिनी थाटि किःरा काट्स थूर তৎপর এরপ বোধ হইল না। এক টন্ পরিমাণ ধাতু উঠাইলে, প্রত্যেক কুলীর দল একটা নিশিষ্ট পরিমাণ মজুমী পার। তাহারা ইচ্ছামত তাহাদের কাজের বন্দোবস্ত করিতে পারে। কেবল, তাহার। প্রতিদিন ১২ cent (ছই জানা) করিয়া নির্দিষ্ট বেতন প্রাপ্ত হয়। এই ৰৎসামন্তি বেতন পাইলেও প্ৰতি মানে > श्रीवन माज छाराता काक क्रांत्र ; कीविकात অল্পভাৰার অধিক কাজ করা ভাষারা व्यविष्ठेक बरम करत्र मा। (कम मा, छाहारवत्र व्यथान व्यव्याजनीय जिनिम्खिन थूबरे मुखा। छूरे

সপ্তাহ খাটরা, আর ছই সপ্তাহকাল নিজ নিজ গ্রামে গিরা উহারা বিশ্রাম করে। খনির পরিচালক, উহাদের এই ঔদাসীষ্টটা গণনার মধ্যে আনিয়া, ছই দল লোকের যোগাড় রাখেন। প্রত্যেক দল ১৫ দিন করিয়া কাজ করে।

অপরাহের প্রাকালেই, খোড়ায় চড়িয়া আমরা বং-মিউ হইতে প্রস্থান করিলাম। খনির পরিচালক আমাদিগকে ঘোড়া ধার দিয়াছিলেন। অ্যানামের একটি গণ্ডগ্রাম Tramy-র অভিমূবে আমরা যাত্রা করিলাম। সেধানে দেশীর সেপাই পাহারার একটা থানা আছে; ভাহার নায়ক একজন করাসী। এই গ্রামটির ক্ষেত্রভূমি বেশ **শশু**णानिनी। ৰব্বীপের ভাষ, ইহার ভূভাগ তিন ভাগে সুবিভক্ত—ধান্তক্ষেত্ৰ অরণা ও পর্বত। ঈষৎ বিষাদময় কি এক অপূৰ্ব্ব কবিছা, এই সকল নিম্পন্ম ও নিশুক্ক ক্ষেত্রভূমিকে সজীব वाधिवाद्य। किन्न ज्यात्मादकव ज्यानम, এই নিস্তত্তার গান্তীর্যাকে একট থকা ক্রিয়াছে। বাভাবি নেবুর ফুলের স্কুমার সৌরভে মাঠ-मयनान खत्रभूत । ममन्त्र भवेषाम धारे धकरे ফুলের গছ।

মধ্যে মধ্যে আমরা এক একটা গওঞ্জানে আদিরা পৌছিলেছি; এই সব প্রামে চূন্-কাম-করা বাবের হোট ছোট গৃহ। কথন কৃথন, একজন সেশীর পোক আমানের আপে-



নহিন-(ব্যস ৮৭)

ভাঙ্গে চলিন্ধছে; আমাদের অথবিগেরই
ভাঙ্গ লৌড়িরা চলিয়াছে। আমাদের যাত্রার
কথা ঘোষণা করিবার জন্ত, এবং সন্তবত
আমাদের সম্মানার্থ, উহারা একপ্রকার কাঠের
ঢাকু পিটিতেছে। Tramy-তে আলাজ
কর-ঘটকার সমর আমরা পৌছিব—চাবাদিগকে আমরা প্রারই জিজ্ঞাসা করি।
তাহারা সকলেই উত্তর দের:—"আজ রাত্রে"।
এই সকল প্রাচাধিগের নিকট হইতে ঠিক্
থবর বাহির করা অসন্তব। একদিন, বলিরেখা-সমাচ্ছর বর্ষীয়ান্ কোন বৃদ্ধকে তাহার
বরসের কথা জিজ্ঞাসা করার আমার দোভাষী,
না হাসিরা উত্তর করিল;—"৪০ বৎসরের
অধিক হবে"…

দিনাস্তে, আমরা একটা গিরি-কর্তে উপনীত इटेगाम। अनिनाम, এখানে বাঘ আদে। তাছাড়া, দেখিলান, কাঠের পায়ার উপর ভর করিয়া কতকগুলি মঞ্চ উঠিয়াছে। এখানে ৰাখের অপেকায় শিকারীরা বসিয়া থাকে। বাদদিগকে আকর্ষণ করিবার জন্ম ভেড়ার মাংস কিংবা জীবন্ত শুকর রাধা হয়। এখানে যে বাবের ভন্ন আছে,—আমাদের বন্ (boy) সে কথা অবশ্ৰই জানে। যে ব্যক্তি অক্তদিন ভক্তবার খাতিরে, বোড়ায় চড়িয়া আ্মাদের পিছনে পিছনে চলিত— আল কিন্না সে আমার বন্ধুর ঘোড়ার ও খাষার ঘোডার মাঝগানে ডাহার ঘোডাকে রাথিকার অভ গোঁ ধরিরাছে। আমার বন্ধু সকলের আগে, ও আমি ২০ ফুট পিছনে রহিয়াছি । ভনিতে পাই, যে সকলের व्यथाय किश्ता नकरनत त्नात बादक, বাাস নাকি প্রার তাহাকেই আক্রমণ করে। এখন রাত্রি স্থারম্ভ হইরাছে—স্ব্যান্তের পর,
Tourane ও Hue—এই তুই স্থানের মধ্যে
কতবার বহিক সংগ্রহ করিতে আমরা কট
পাইরাছি। আনামবাসীরা বাবকে এতটা
ভর করে, বে বাবকে তুট কবিবার জ্ঞা
ব্যাহ্রকে সমন্ত্রমে "ব্যাহ্র মহাশর" (অংকপ্)
বলিরা অভিহিত করে। এক রাত্রি, আমাদের
অগ্রে ও পশ্চাতে কতকগুলা মশালধারীকে
স্থাপন করা আবশুক হইরাছিল। বোধ হর
বাব আলো দেখিলে ভর পার। আর এক
রাত্রি,—আমাদের কুলিদিগকে নির্দিষ্ট মজ্রীর
বিশুণ মজুরী দিতে চাহিলেও তাহারা বাবের
ভরে আমাদের সঙ্গে বাইতে স্বীকার করিল
না; শেষে গ্রামের প্রধানকে বলিরা
তাহাদিগকে বাইতে আমরা বাধ্য করিলাম।

আমার বন্ধু, আমার 'বর' ও আমি---আমরা তিন জনেই মুথে প্রকাশ না করিলেও -- मत्न गत्न वारचत्र कथा ভाविष्ठिक्ताम। পীতাভ গোগুলীর মধ্যে দাঁড়াইয়া, আমি দেখিতেছিলাম—দূরবর্ত্তী পর্বত সকল ক্রমশ कुक्षवर्ग इरेबा जानिट्डिंह; जानि धकाको সকলের পশ্চাতে; আমার বোড়া ধীরে ধীরে ত্বকি চালে চলিতেছে। হঠাৎ ঝোপের মুখ ফাঁক হইল; কুদ্র ব্যান্তের মত একটা প্র বাহির হইল। পশুটা আমার বোড়ার উপর ঝাঁপাইয়া পড়িল: আমি ত্রস্ত হইয়া আমার ঘোড়াকে থুব ছুটাইরা দিলাম ৷ পশুটাও আমার পিছনে পিছনে ছুটিভে লাগিল। আমি আমার রিভল্বার খুঁজিয়া বাহির ক্রিলাম; এবং লক্ষ্য সন্ধান ক্রিবার জন্ত कितिनाम...किड् े ज्क्षन चानि चडेनेंटक চিনিতে পারিলাম: এবং আমি বে ভর পাইরা-

ছিলাম এই মনে করিরা খুব হাসিলাম। **শন্ত**টা আর কিছুই নয়---বং-মিউ থনির কুকুর! সচরাচর কুকুরটা বোড়ার পিছনে পিছনে ছোটে; পাছে আমাদের পিছনে পিছনে আদে এই জন্ত বং-মিউ হইতে ছাড়িবার সময় উহাকে বাধিয়া ररेबाहिन; क्षि करत्रक .चन्छा भरत उरात्र वस्त भू निश्रां (म अशांत्र, कू कू त्रों। आमारमत शन-চিহু অহুসরণ করিয়া, আমাণিগকে শীভ্রই ধরিরা কেলিল। রাত্তি ক্রমশই অর্কার হইরা আসিতেছে; আমাদের এই সময়ে পৌছান উচিত ছिन। এই চৌমাথা পথে কোন পথ নিদৰ্শক খোঁটা না ধাকায় আমরা কি পথ ज्ञानाम ? এই সমরে আমাদের যেমন ভর रहेरक गांतिन,—मिरे मर्न এको। चाल्रंत्र পাইৰারও প্ৰবল ইচ্ছা হইতে লাগিল,—

অদ্রে কতক এলা আলো দেখা যাইতেছে না ? ইহাই কি সেই গ্রাম ? না, এই আলোক- বিন্দুখনা একবার অনিতেছে, আবার নিবিরা বাইতেছে;—উহারা আমাদের চারিদিকে চলিয়া বেড়াইতেছে—মিট্মিট্ করিতেছে। উহা জোনাকির নৃত্য;—অতিপ্রাচ্যধ্যে উহাই রাত্রির অপুর্ব শোডা।

হঠাৎ দূর হইতে তুরী নিনাদ শুনা গেল;
তবে বুঝি এইবার আমাদের গন্তব্য স্থানে
আনিলাম! আমরা অধীরভাবে বার প্রতীকা
করিতেছিলাম, এই বুঝি সেই গ্রাম।
Tramyতে পৌছিয়া প্রথমেই বে গৃহগুলি
দেখিলাম, সেইখানেই লোকদিগের নিকট
একজন পথপ্রদর্শক চাহিলাম। তাহারা বড়
বড় মশাল আলাইয়া মহা-আড়ম্বরে আমাদের
সঙ্গে চলিল। আলোকছেটার আছের হইয়া,
বোড়ায় চড়িয়া খুব আড়ম্বর সহকারে আমরা
গ্রামের মধ্যে প্রবেশ করিলাম। কি
হাস্তজনক ব্যাপার!

শ্রীজ্যোতিরিন্তনাথ ঠাকুর।

গোপন অশ্রু।

মধুর কুত্ম কত
রাতে শুধু কুটে,
কত মধু আঁথি জল
আঁথারেতে টুটে।
উঁকি দের আসি' ববে
দিবসের আলো
পাপ্তি হইতে করে
লাকে কণা শুলো;

আলোকের মানবের।
নাহি দেখা পার,
আঁধারের সাথে আসে
তারি সাথে বার।
বার মোহ গেগে' আছে
তাই তা' শোভন,
দেখিতে পাইনা বলে'
মধুর—গোপন!
ভীস্থবঞ্জন রার।

দেশের অবস্থা।

निःय, प्रतिष्ठ क्रुयक् स्थाति চেষ্টায় কিন্নপে কোন এক পতিত জাতির উত্থান হইরা থাকে, গত ভাদ্রের ভারতীতে কোন আমেরিকা প্রবাদী—বিস্থার্থী "ডেনমার্কের क्रवकरात्र डेक्डिमिका" श्रीवस्त्र डाहा स्मात्रडात দেখাইরাছেন। সত্যই দেশ এবং জাতি শুধু মৃষ্টিমের ধনাঢ্য এবং শিকিত লোকের হারা গঠিত, পরিপোষিত, সংস্কৃত, এবং পরিচালিত হইতে পারে না, ভারতের ক্রায় যে দেশে খতকরা ৮০ জনের উপর লোক কেবল মাত্ৰ ক্লবিলৰ আয়ে জীবিকা নিৰ্ব্বাচ ক্রিয়া থাকে সে দেশে কুষক শ্রেণীকে वाम मिर्टन काहारक नहेबा काछि ? काहारक লইয়া দেশ ? বাঁহারা আমাদের মন্তক, यांशात्मत्र डेशात्म आमारमत्र भिटतांशार्या, आक কাল তাঁহারাই ব্যাধিজরা অনশনক্লিই হর্বল ক্লবক এবং নীচ জাতীর লোকের সহিত শিক্ষিত ভদ্র সম্ভানদিগকে মিলিতে মিশিতে এবং সমবার চেইার দেশের অভাব ও দরিন্ততা উন্মোচন করিতে কতভাবে উৎসাহিত করি-তেছেন। সে দিন বরদারাজ এবং মি: এ, চৌধুরীর ব্রুতাতেও আমরা এবিষয়ে সমাক উপদেশ পাইয়াছি। यত দিন না কৃষকদের হু:খ দৈত উদ্মোচনে আমরা বছ পরিকর रहेव, यछिमन ना नौठकां ि वरः कृषक শ্ৰেণীকে ভালবাসিতে শিখিব, যত দিন না তাহাদের শিকা দীকার বিধি ব্যবস্থা করিব. ৰত দিন্না ভাছাদের প্রতি অবজ্ঞার ভাৰ তাগ করিয়া ভ্রাতভাবে ভাহাদিগকে আলিকন

করিব ততদিন আমরা বে তিমিরে আছি সেই তিমিরেই রহিব।

লেথক ডেনমার্কের স্থায় আমাদের দেশে স্থানে স্থানে কৃষিবিষয়ক পল্লীসমিতি, স্থল, পরীকাক্ষেত্র. কো-অপারেটিভ সোগাইটা প্রভৃতি স্থাপনের জন্ত স্বদেশ বাসীকে অফুরোধ এবং লিখিয়াছেন "জাপানে করিয়াছেন, শিক্ষিত শ্রীযুক্ত যত্নাথ সরকার মহাশয় ও আমেরিকা প্রত্যাগত শ্রীযুক্ত দ্বিজ্ঞদাস দত্ত মহাশ্র প্রভৃতি মহোদরগণ সমর ও অবোপ মত নিমন্ত্ৰিত হইলে যে তাঁহারা সানন্দচিতে এইরপ পল্লী দশ্মিলনে যোগদান করিয়া ইছার মঙ্গল উদেয়াগের সহায়ক হইবেন ভাহাতে मत्नर नारे।" এতলে আমার নাম উল্লেখ থাকাতেই আমি পাঠকগণের নিকট.উপস্থিত হইলাম, আমি লেখক মহাশয়কে সম্পূর্ণ সমর্থন করি। কৃষি এবং কৃষক শ্রেণীর উন্নতির জন্য জাপানে অবস্থান কাল হইতেই অনেক-ক্রপ করনা জরনা করিয়া আসিতেছিলাম। চারি বংসর কালের পর অনেক আশা পোষণ করিয়া দেশে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়াছিলাম। এবং যতদুর জানি শ্রীযুক্ত বিজ্ঞাস দত্ত মহাশর কৃষক শ্রেণীর উন্নতি করে অনেক স্বার্থ ত্যাপ করিয়া দেশের কাজে বে'া দান করিতে প্রস্তু। কিন্ত আমাদের ছরদৃষ্ট বলিতে হইবে, নতুবা কত ,পতিত, অপরিজ্ঞাত দেশ कांशिन डेठिन, अमन कि नीर्य द्वारन अधि-রোহণ করিশ, আর স্থামরা প্রাচীন স্থসভ্য ভারতবাসী নিজ নিজ খার্থে অন্ধ হইরা

হীনাবস্থাতেই পতিত রহিলাম। দরিদ্র ক্ষকের দিকে একবার একই ভারত মাতার সম্ভান বলিয়া দয়ানেত্রে তাকাইবার অবকাশ পাইলাম না।

আমি দেশে প্রত্যাবর্তন করিয়া প্রায় এক वरमत्रकांग युक्त वरमत व्यत्नक महातामा, রায় বাহাছর, মহামহোপাধ্যায়, রাজা, অমিদার, তালুকদার, ধ্নকুবের, म अमार्गत्र, মহাজন, প্রভৃতি সকল শ্রেণীর লোকের ঘারে ঘারে অনেক ঘুরিয়াছি অনেক রকম প্রস্তাব করিয়া দেখিয়াছি, কিন্তু আমার হর্ভাগ্য বলিতে হইবে যে কেহ কেহ বাহ্নিক আগ্ৰহ দেধাইলেও আন্তরিক সহামুভূতি একজনের নিকটও পাই নাই। কেহ বলিয়াছেন কি कतित क्रि आहि টोका नारे, आवात कर বলিয়াছেন টাকা আছে জমি নাই। যে দেশে ছুইটী উচ্চদরের ব্যক্তির একতা সম্মিলন অস-স্তব সেদেশে ত্রিশ কোটী সাধারণ লোকের সন্মিলন কিরূপে আশা করিতে পারি। কোন কোন জমিনারের নিকট,—জাপান গ্রথমেণ্ট নিয়োজিত কৃষিপ্রচারকের ন্যায় তাঁহাদের कमिनात्रीत नर्सव ध्वकांगरनत मर्गा कृषिविषत्रक উপদেশ প্রচার করিব এবং সম্ভবপর এবং সহজ সাধ্য প্রণালীগুলি প্রত্যক্ষভাবে হাতে কল্মে বুঝাইয়া দিব বলিয়া অনেক অপুরোধ করিয়াছি। किंद्र छाराएड अक्न मत्नात्रथ इहे नाहै। অনন্যোপার হইরা এইক্পে বুথা নষ্ট না করিয়া অবশেষে প্রিয় বঙ্গভূমি ছয়ভিয়া আম ১৬০০।১৭০০ মাইল দুরবর্ত্তী স্থানে আসিতে বাধ্য হইরাছি। আজ আমি রাজ-পুতানার অন্তর্গত বিশ্বানীর টেট্ গার্ডেন সমূহের হুপারিটেওেট্। আমি অবগ্র

ক্ষবিভাগের কার্য্যেই নিয়েজিত আছি।
কিন্তু তবু আমার কল্পনা জলনা হৃদরেই নির্মান
লিত হইবার উপক্রম প্রায়। জানি না কোন
দিন বঙ্গীয় ক্ষবকের কোন সাহায্য করিতে
পারিব কি না।

এন্থলে আমাদের শিক্ষিত সমাজ ধনাঢ়া এবং জমিদারমহাশয়গণের নিকট একটা প্রার্থনা জ্ঞাপন অপ্রাসঙ্গিক হইবে না। শিক্ষিত সমাজ আজকাল ক্ববিতে আস্থা স্থাপন এবং কৃষকের প্রতি সহামুভূতি প্রকাশ করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। এমন কি অনেক ভদ্ৰ সন্থান অনেক স্থলে সহস্তে কৰ্মণ করিতে পৌরব বোধ করিতেছেন। ইউরোপ আমেরিকা, জাপান দুরের কথা আমাদের হিন্দুস্থানের অনেক প্রদেশেই আজ পর্যান্তও কৃষি পৰিত্ৰ কাজ বলিয়া ধৰ্ত্তব্য। এই রাজপুত ভূমির অধিবাদী, যাহারা বঙ্গের অধিবাদীকে প্রকৃত আর্য্য সম্ভান বলিয়া গণ্য করিতে হয়ত অস্বীকার করিবে তাহারাও ক্লযি পবিত্র বলিয়া মনে করে এবং অনেক ব্রাহ্মণ সন্তান পর্যান্ত আপন ভূমি কৰ্ষণ করিয়া জীবিকা নির্বাহ করিতেছে। আমার বাগানগুলিতেই কত ব্ৰাহ্মণ কৃষিকাৰ্য্যে নিয়োজিত আছে।

গতবংসর হামিণ্টন সাহেব আমাদের
শিক্ষিত যুবকগণের নিকট এক বক্তৃতা দ্বারা
ক্রমির আবশ্রকতা বুঝাইরা দেন এবং তিনি
২০৷২৫ টাকার কেরাণীগিরি কাজ করার
পরিবর্দ্তে শিক্ষিত যুবকদিগকে ক্রমিকার্য্যে
প্রস্তুত্ত ইবতে উপদেশ দেন ৷ বাত্তবিক এখনও
আমাদের অঞ্চলের অনেক জ্নি পতিতাবস্থায়
পড়িয়া রহিয়াছে; উহা অল্প ধরতে এবং
সহক্ষেই বেশ আবাদের উপবোগী করিরা

লইতে পারা ধার। সাঁওতাল পরগণার,
মর্ত্জ অঞ্লে, স্করবনে, ত্রিপ্রায়,
ভাওয়াল, রংপুর ও আদাম অঞ্লে অনাবাদী
জমি বিস্তর রহিয়াছে। কিন্ত ক্রমক হইয়া
ক্রবকদের সহিত না মিশিলে শুধু আখাদ
দানে কাঞ্জ হইবার নর।

ক্ষবির উন্নতি শিক্ষিত সমাজের অপেকা অমিদারদের উপরই অধিক পরিমাণে নির্ভর कतिट्डि । आभारतत रामीय अभिनातरात আয় তথু প্রজাদের দেয় রাজস্বের উপর নির্ভর করে। রাজস্ব বৃদ্ধির চেষ্টা কোন জমিদার না করিয়া থাকেন ? শুধু রাজ্মে পরিতৃপ্ত না হইয়া কোন কোন জমিদার থরচা চাঁদা, মাথট মাঙ্গন প্রভৃতি নামে অতিরিক্ত হারে কর आनाग्र कतिया नीन नृतिष्ठ প্রজার ষ্থাসর্বস্থ আত্মগৎ করা অন্যায় মনে করেন না। এমন কি প্রতিবংসর একই জমি একই নলের সার্ভে জরীপে আয়তনে বৃদ্ধি পাইতে থাকে, যাহা পাঁচ বংসর পূর্বের এক বিঘা ছিল, এখন হয়ত তাহা দেড় বিঘা পবিণত হইয়াছে। আবার স্থল বিশেষে আমিনের অনুগ্রহে পাঁচ বিঘা জমি হয়ত চারি বিখায় পরিণত হুইয়াছে। জমিদার মহাশয়দিলের এ বিষয়ে দৃষ্টি রাখা উচিত। তাঁহাকে আরও দেখা উচিত যে, যেসকল প্রজার দের রাজত্বের উপর তাঁহাদের कौरिक। निर्जंत करत जाहारमत्र श्रेशन वदः একমাত্র অবলম্বন কৃষির কোনরূপ উর্গতি হইতেছে কি না। জমির উৎপর বৃদ্ধি না পাইলে-বর্দ্ধিত রাজত্বের সন্ধুলান দরিক্ত কৃষক काथा इटेटड कतिरव ? वन्नीय अभिनात्र गण नारमुव, नाकीत, अमानिवन, स्मात नवन, म्की रेकात्रपात्र, उरुनीनमात्र, পांवे उदात्रो, व्यामिन, পেয়াদা, পাইক প্রভৃতি কত অনাবশ্য লোককে
তথু যেন প্রজা পীড়নের জন্যই রাথিয়াছেন,
অথচ জমাজমির উন্নতিকল্লে একটা কৃষিজ্ঞ ব্যক্তিকেও কি কোন জ্বমিদার মহাশ্র কথন নিয়োগ করিয়াছেন ?

বঙ্গের প্রত্যেক জমিদারই যে এক ছাঁচের তাহা বলিতেছি না। অধিকাংশস্থলে যাহা প্রতাক করিতেছি তাহাতেই এতটা লিখিতে হইল। কিঞ্চিং ব্যয়সাপেক হইলেও আমা-দের এত বড় বড় জমিদার আছেন যাঁহারা স্বস্থ জমিণারির উন্নতিকল্পে আদর্শ কৃষিক্ষেত্র স্থাপন না করিলেও অন্ততঃ কম্বেকজন কবিলা কৃষি প্রচারক অনায়াদেই নিয়োগ করিতে পারেন। বরদারাজ, মহীশুররাজ, গোয়ালিয়ররাজ, কাশ্মীররাজ প্রভৃতিকে এ বিষয়ে পথপ্রদর্শকরূপে গণ্য করা উচিত। বিকানীররাজও রাজপুতানার মরুভূমি প্রদেশে কি উপায়ে ক্বয়ির উন্নতি হইতে পারে তজ্ঞ বিস্তর প্রয়াস পাইতেছেন। জমিদারদিগকে অন্ততঃ কুদ্রাতমনে কৃষির উন্নতিবিধানে প্রয়াস পাওয়া উচিত।

মনে করুন কোন জমিদারের বার্ষিক আর আড়াই লাথ কিম্বা তিন লাথ টাকা।

সাধারণতঃ দেখা যার তিনি প্রতি টাকার প্রতি বংসর প্রজাদের নিকট হইতে অস্কতঃ
এক আনা হারে খরচা আদায় করিয়া থাকেন। এই এক স্পানা খরচার একটা পরসা যদি জমিদার মহাশ্য প্রজার মঙ্গলকামনার ব্যয় করিতে কুঞ্চিত না হরেন তবেই আমরা কৃষির জন্ম অনেক ক্রিতে পারি।
প্রকৃতপ্রস্তাবে জ্মিদার মহাশ্যের নিজের প্রকৃতপ্রস্তাবে জ্মিদার মহাশ্যের নিজের

चर्षठ ध्यक्षारमञ्जू त्रमृह উপकात कत्न। हत्र।

योकात कति हेउँद्रांभ, आसितिका ध्वः काभात्न त्राक्रस्त्रत हात दिनी। उथां श्रका गण किर्मा भारत हाकात क्रमण क्रमाहेता द्रमण्ड कार्य आस्ताद्रत महिङ त्राकादक >० मण होका थाक्रना द्रमा। किन्न आमा-द्रमा श्रकाश मण होका क्रमाहेश मण होकाहे थाक्रनाम मिटण निद्ध्याहेश हो क्रिक्रद्रभ भित्रतात श्राह्मिन क्रिय्य आत्र क्रिय्रहेश क्रियात श्राह्मिक क्रिय्य १ আমাদের নিরক্ষর ক্ষরিগণ নির্মোধ নহৈ।
আন্তান্ত বেশের সহিত তুলনীর দেখিরাছি
ভারতের বিশেষতঃ বঙ্গনেশের ক্ষরকগণ বেশ
অচতুর এবং বৃদ্ধিমান, একমাত্র অর্থাভাবে
তাহাদিগকে নিস্তেজ করিয়া রাখিয়াছে।
শিক্ষিত সমাজ এবং জমিদারগণ সহার হইলে
ধনী, দরিদ্র, ইতর, ভদ্র, জমিদার, ক্ষরক
প্রস্তুতি বিভিন্ন শ্রেণীর লোকের ভিতর
ভেদাভের বিস্থা হইবে এবং সকলেই পরস্পরের সাহায্যে আগ্রহ প্রকাশ করিবে।
শ্রীষহ্নাথ সরকার।

অরণ্য ষষ্ঠী।

প্ৰকাণ্ড পাদপ শাৰাপত্ৰে স্থােভিত, व्याहीन रायाह (पर करें। প্রবাধিত। স্মিগ্ধ ছারা বিতরণে করে কুপা দান, ক্লাস্ত পরিক নিত্য জুড়ায় পরাণ। অৰখ নামেতে সদা পরিচিত সেথা. পৰিত্ৰ পরশ তার নাহি আবিশতা। विष्णीत खश मृत्न वही अवी नित्न বিরাশিত, মুর্ত্তিমতি সদা ওভ কাজে। রমণী জননী বত পুজে ভক্তি ভরে, সন্তান কুশল তবে বংগরে বংগরে। অপতাপালিনী দেবা হিতৈবিথী মতি. আপদ অশান্তি নালি রক্ষে সদা সতী। क्न क्न रित्रिक्षा नव वर्षा जाना, মুক্ল্যার সীমন্তিনী করে সেথা মেলা। কার্শাস করণ গ্রন্থি হরিদ্রা রঞ্জিত, ভামপূৰ্মাণণ গুৰু তাহে বিজড়িত।

वछीव अनाम वन वैदिध शुद्ध करन. নিদাঘের তাপ পীড়া লয়ে যাবে হ'রে। নব ভালবৃস্ত দিয়া করেন বাতাস, अभनन शास्त छेए प्राहेश जान। অরণ্য প্রাঙ্গণ মাঝে নিদাৰ প্রভাতে, সাধেন জননী ব্ৰত অতি ওছ চিতে। মুখরিত তরুলতা উৎসব হরষে. কুন্থম চন্দনগন্ধ বায়ু সনে ভাগে। জ্যোছনার নাঝে মরি খণ্ড মেঘ সম. কে রমণী দাঁড়াইয়া মুখ মানতম ! এক পালে সম্কৃচিতা ভাবে কার কণা, দেবি তুমি আশাপূর্ণা মিটাবেনা ব্যথা 2 কম্বণ লইরা করে তালবুত্ত ধরি -অপেথিয়া এডক্ষণে অশ্রু পড়ে ঝরি। ৰোড় করে মৃত্ত্বরে জিজ্ঞাসে রমণী, এখনও এলোনা কেন মোর বাছমণি। विनिष्ठातिनी (मर्वी।

অভয় মন্ত্র।

গত ১৫ই নবেম্বর শ্রীমতী সরলা দেবী কায়ছ
পাঠশালার সাম্বংশরিক উৎসব উপলক্ষে যে বস্তৃতা
দান করিয়াছিলেন, আমরা ভাহার সারাংশ উদ্ভূত
করিয়া দিলাম।

ভোর চারটের সময়ে আমি আখালা ষ্টেদনে উপস্থিত इंडेलाम । नाहाजानभूरतज्ञ रहेन धतिनात क्रम भ्राहि करम অপেকা করিতেছি—এমন সময়ে একটি যুবা আদিয়া অতিশ্ব ভদ্রতাদহকারে ও আগ্রীয়ভাবে আমার সহিত অ'লাপ করিয়া আমার স্বামীর কুশল বিজ্ঞাসা कत्रिल। ७९९८त्रहे স্বেচ্ছা এবুত্ত হইয়া আমাকে সংবাদ দিল যে একজন ডিটেক্টিভ লাহোর হইতে সারাপথ আমার অনুসরণ করিয়া আসিতেছিল। পরে আবার আমাকে নিশ্চিম্ত করিবার জ্বন্স জানাইল যে. আমার ভয়ের কোন কারণ নাই, কিঞ্চিৎ পুর্বেই ডিটেক্টিভটি আমাকে ভাগ কিব্যা প্রত্যাবর্ত্তন করি-রাছে! এই কথা গুনিরা আমি যথাসম্ভব ভদ্রভাবে ভাহাকে জানাইলাম যে ভিটেক্টিভকে ভর করিবার আমার কোন কারণ নাই, যেহেতু আমার গুপ্ত ব্যাপার किहूरे नारे। लाकि विकर् व्यवस्य रहेन। পরে বেই আমি তাহাকে তাহার নাম ভিজাগা कतिलाम व्यमनि त्र नाम ना विलया मूथक शार्ठक श्राप्त উত্তর: করিল সে দ্যানন্দ (আর্ধ্য) বৈদিক কলেজের ছাত্র। কথাটা ওনিয়া আমার একটু হাসি আসিল এবং মনে একটু চিন্তারও উল্লেক क्त्रिन।

এই একটি অপরিণত বয়স্ত বালক, আধার এক আতি ও এক রক্তের সন্তান হইরাও এত সম্মান্তিকরণে বিকৃতপ্রকৃতি হইরা গিরাছে, এত চাতুরী এত বিবাস্বাতকতা ভাষার অন্তবে আধিপত্য লাভ করিরাছে, বে সে আল গুণ্ডারের কর্ম্মে উরতিলাভের লক্ত্র মাতৃভূমির প্রতি অন্তর্ভা বলিয়া বিদিত একটি ব্রীলোককে এইরপ অব্যক্তম কাপুস্বের ভায় ভীতিপ্রকর্পন ক্রিভেও কুঠাবোধ করিভেছে না। এই বালকের এইরপ হুবুভিতাও ভারতবর্ষবর এইরপ

সহস্র বংলকের এই প্রকার চরিত্র বিকৃতির বর্ত্তর দায়ী কে এবং ভারতীর চরিত্রের কোন্ উপাদানটিকে অবলম্বন করিয়া ইহারা এরপ জঘন্ত ব্যবসায় চালাইতেছে । ভারতের জননীগণই তাঁহাদিগের সন্তানগণের এই বিকৃতির জন্ত দারী—বা এইরপ বিকৃতি ভারতীয় জননীগণের 'অবিভা' অর্থাৎ উপবৃক্ত শিক্ষা-ভাবের ফল, এবং ইহাদের কার্যাসিদ্ধির কল্প ভারতীয় চরিত্রে ভর বলিরা বে বৃত্তিটি আছে তাহারই সাহায্যে ইহারা স্বকর্মসাধনে প্রবৃত্ত হইতেছে।

শান্তে ছয়টি বন্ধনের বিধর উলিখিত আছে।
এই ছয়টি বন্ধন আমাদিগকে 'অবিদ্যার' সহিত
বাঁধিয়া রাখিয়াছে। ইহাদিগের মধ্যে ভরটি সর্ববপ্রধান বন্ধন। এক্ষণে ভর জিনিষ্টি কি ভাহাই
ভাবিয়াদেখা যাউক।

যভোবিক বা খাহ্যকর অবহায় ভয় জিনিবটা আত্মরকার একটা সহজ বুডি। পশ্চাৎপদ, পলায়ন বা অস্ত কোন উপযুক্ত উপায় হারী আত্মরকার চেষ্টা নাত্র। কিন্তু অস্বাভাবিক বা অবাহাকর অবহায় ভর জিনিষ্টা ইহার ঠিক বিপ-बीज इहेबा मैं। जांब-डिशकांबी ना हहेश हैहा व्यनिष्टेकब रहेया माँजार,— क्ष्माब छेलाय ना रहेया हेश क्षरमंत्र अञ्च इहेग्रा माँ जागा। व्यर्थार स मूहर्स्ड জীবের কোন কর্মের উপর তাহার জীবন মরণ নির্ভর করে, যে মুহুর্ত্তে আক্রমণ, আত্মরক্ষা বা পলারন নিতাক্ত আবশ্যক, সেই মুহুর্তে আমরা মাতৃষ ও পশুকে উদ্বেগপঙ্গু হইতে দেখিতে পাই এবং আক্রান্ত অবস্থায় ভাহাদের বেটুকু শক্তি থাকে ভাহা ব্যবহার করিতে অক্ষ হইয়া পড়ে। অস্বাভাবিক • ভয় তাহার উদ্রেকের কারণ অপেক। অনুৈক অধিক হইরা পড়ে। খাভাবিক সঙ্গত ভয় অভিক্রতা ও জ্ঞানের উপর প্রতিষ্ঠিত, চিস্তাশক্তিই তাহার চালক কিন্তু অৰাভাবিক ভয় অবৃত্তি ও বৃদ্ধি বিচায়ের অভাবের উপরই প্রভিষ্টিত। ভাবী অনিট সঁক্ষক আমাদের যেরপ সভ্য বা মিখ্যা ধারণা হয়, আমাদের ভরের মাত্রাও সেইরণ বিভিন্ন হয়। অনেক সময়ে অভিরিক্ত করনাশক্তিই আমাদের ছায়ী বা অখা-ভাবিক ভয়ের কারণ। যাহা হউক সকল প্রকার ভয়ই জ্ঞান ও যুক্তির হারা দূর হইতে পারে।

বিজ্ঞানবিদের। বলেন অংগাগতির অবস্থাতেই ভরের উৎপত্তি ও বৃদ্ধি হর। স্থতরাং আমাদের ভারতের সমালদেহ হইতে এই রোগের উচ্ছেদের কক্ত চিকিৎসার ব্যবস্থা করাই আমাদের সর্বপ্রথম কর্তব্য। আমাদের আভির অংগতন, সমালদেহের অন্ধাকের উপেক্ষিত অবস্থা। নারীগণের অশিক্ষিত অবস্থাই দেশের সকল অনিষ্ট ও ভুনীতির মূল।

এমন কি সিংহলের গংগ্র পর্যান্ত সেদিন এক সভাপ্তলে আমাদিগকে তির্মার করিয়া বলিয়াছেন "এ দেশের অধিৰাসীগণের সাবধান হওয়া উচিত যেন ভাঁহারা অক্তাক্ত শিক্ষার বস্তার মধ্যে পড়িয়া এই यशमञाष्टे जूनिया ना यान त्य, जाशास्त्र ৰকীয় ইতিহাস ও ভাষা সম্পূর্ণ ভাবে শিক্ষা করা ভাঁহাদের সর্ব্বপ্রথম কর্ত্তব্য : আমি ·সেণ্ট্পলের ভাষায় পুনরায় বলিতেছি বে[°]যদি এ দেশের কোন অধিবাদী দেবদুতের স্তায় সুকণ্ঠলাভেও मक्तम हर्ने, किन्न छै। होत्र चल्मा थ्रम ना बोकित তিনি শিশুলের করতালের ক্যায় ধানি করিতে থাকেন এবং জাতির উন্নতিকল্পে প্রত্যেক ব্যক্তি-मार्जिद्वे अवश्र कदवीश कर्त्वाशामात्म अक्रम इन।" ভিনি আরও বলিয়াছেন "এদেশবাসীকে তাহার স্থাপ ও যাতৃভাষা সম্বন্ধে এবং বিশেষতঃ ভাছার বজাতিগৰৰে শিক্ষাদান করা ভাহার পিতামাত। তির অপর কাহারও পক্ষেই সম্ভব নহে !"

এইভাবে তোমাদিগের একজন সদাশর শাসনকর্তা বলিভেছেন বে ভোমাদিগের পিতা মাতাই তোমাদিগের বিশ্বামান করিতে সক্ষম। দিগকে বথার্থ শিক্ষাদানে মমুব্যক্ত দান করিতে সক্ষম। কিন্ত এই পিতামাতার মধ্যে মাতা যিনি বথার্থ ই সম্পূর্ণ আবিজ্ঞিতা। এরূপ অবহায় তিনি তাহার সন্তানকে আতীর উন্নতি কর্মে সহায়তা করিতে শিক্ষাদান করা কি সক্ষম।

এই ভারতেই একদিন यथम आर्वाकारिक উন্নতির চরমবিধরে উপনীত ছিলেন, তখন আর্থা-রমণী সমগ্র জাতির শিক্ষা ও সাধনার সম্পূর্ণ অংশলাভে नक्य **इ**हेशा **भूकरसद अका ७ मन्यान नाट्य व्य**शिकादी হইয়াছিলেন। **আজ সে দেশের নারীগণ** যেরূপ ব্দখন্তভাবে রক্ষিত ও পালিত হয় তাহার ফলে তাহারা কেবল ড়িটেক্টিভ, বিশ্বাস্থাতক, যথেচ্ছাচারী ও কাপুরুষ স্থান করিতেছে। তাহাদিগকে স্যন্ত্রে প্রতিপালিত কর, জ্ঞানদানে উল্লভ কর,—তাহাদিগের আস্থার আলোক উদ্দীপ্ত করিয়া তোল দেখিবে ভাহারা আবার রাম ও ভরত, যুখিটির ও শ্রীকৃষ্ণ গর্ভে ধারণ করিবে। আজ অস্বাভাবিক ভীতি সমগ্র ভারত वर्षक जाहात्र लोहकबल धतिया त्रावियात्ह-- व्यथः-পতিত ভূমি পাইয়া সেই ভীতি আজা ৰদ্ধনুল হইবার স্থোগ পাইয়াছে। অধঃপতনের কারণ দুর কর, **मिथित এ छीछि प्रमृत्न छैक्टिल इहे** स्रो याहेता। তোমরা অমরত্বের সন্তান—্তোমরা 'অভয়ের' সন্তান তোমাদিগের নিকট হইতে ভর চিরদিনই দুরে পলাই বার কথা। হিন্দু ঋষি বলিয়া গিয়াছেন জ্ঞানই ভীতির প্রধান ঔষধ। স্তরাং গৃহের নারীগণকে জ্ঞানদান কর, ভাহাদিগকে ভীতি হইতে মুক্ত কর, দেখিৰৈ ভাহারাই ভোমাদিগকে অভয়দান করিবে। এ প্রস্তাব বেন এই খানেই এক দিনের বক্তার কখাতেই প্র্যাবসিত না হন্ন-অন্তরের সহিত ইহা কর্মে পরিণত করিতে উদ্যোগী হও। উঠ, জাগ্রত হও--যতক্ষণ না লক্ষ্যৰূপে উপস্থিত হও তত্ত্বিন সকল বিরাম ভাগি কর। উপস্থিত সকলেই আপন গৃহ হইতে আরম্ভ করিয়া খদেশ কল্যাণে প্রবৃত্ত হও।

অামি বে দেশে জন্মগ্রহণ করিরাছি সে দেশ উত্তর ভারতে যাত্ব ও মত্র তত্ত্বের জন্ত প্রাণীক। উত্তর ভারতের সজীত ও প্রচলিত উপক্ষা গুলি এ দেশ বাসীর যাছবিদ্যা শিক্ষার জন্ত বঙ্গে গমন ও তথায় জানা হঃসাহসিক হুইটনার বর্বনায় পরিপূর্ণ আজ আমি ভোষাবিপকে একটি জতি কুন্ত মন্ত্র দান করিব, বজ্বের জনত্ত রাত্ব ভাতার হইতে একটি সামাত্ত মন্ত্র আজ ভোষাবিপকে শিবাইয়। দ্বিব। ইহাঁ ভাগ্য হইতে ভীতি দ্ব করিবার মন্ত্র—কিন্তু ইহা অতি
গোপনে তোমাদিগের কর্ণে দান করা আবগুক।
অতএব শুন—মন্ত্রটি তিন অক্ষরে গঠিত—অ, ভ, র।
অভয় নাম উচ্চারণ কর,—আপনাকে অভর কর—
অবিরাম এই অভর মন্ত্র জপ করিতে থাক। তথন যে
কেহই ভোমাদিগের অন্তরে ভীতি উৎপাদন করিতে

চেষ্টা করক না কেন এ মহামন্ত্র ভোষাদিগকে সে আক্রমণ হইতে রক্ষা করিবে। মুখে ইহার জপ কর এবং অস্তরে ইহার জীবস্ত মুর্ত্তিকে অবিষ্ঠাত্রী করিয়া রাথ—ভিনিই আমাদের জাতির সকল ভয় ছুর করি-বেন। অভ্যের শাস্তি ও মহত্ব উপলব্ধি কর ভাহা হইলেই ভোমরা উন্নতি পথে অগ্রসর হইবে!

সংস্কার বিধান।

বিগত ১৫ই নবেম্বর ইণ্ডিরা গেজেটের এক অতি-রিক্ত পত্রে মিণ্টো মর্লের সংস্কার বিধান প্রকাশিত হইয়াছে। বছদিন হইতে এই সংস্কার বিধান লইয়া ভারতে স্বয়ং রাজ প্রতিনিধি হইতে রাজপক্ষের চুনো পুঁটিটি পর্যন্ত যেরূপ ভেরীনিনাদ করিতেছিলেন, তাহাতে আমরা আশা করিয়াহিলাম এই নববিধা-নের বলে ভারতে প্রজাশক্তির আংশিক প্রতিষ্ঠা ঘারা রাজা ও প্রজার মধ্যে আন্তরিক সহযোগ সংস্থা-পিত হইবে এবং সাধারণ শাসননীতিতে এক অভি-নব যুগান্তর প্রবর্ত্তি হইবে। ভারতে শাসননীতির এ নববিধান দেশের শিক্ষিত ব্যক্তি মাত্রেই পাঠ করিয়া-ছেন সুতরাং তাহার আর এ ছলে পুনরাবৃত্তি অনা-বশুক। বিধানটি আভোপান্ত পাঠ করিয়া আমরা একটু ছঃথের হাসি না হাসিয়া থাকিতে পারি না। ছঃৰ আমাদের নিজেদের জন্মই একান্ত নহে— ১:খ দেশের রাজা প্রকা উভয়েরই জন্ম, তাহ'দের মধ্যে ভবিষ্যতে সম্বন্ধের জন্য-রাজপক্ষের দেশে অশান্তি ও অসভ্যোব দুর করিবার উদ্দেশ্যে বহবারত্তে লঘুক্রিয়ার জন্ত-মিণ্টো ও মর্লির তার প্রবীন বিজ্ঞ [®]ও বিচক্ষণ রাজনীতিজ্ঞের হর্মলতা ও অদুর দৃষ্টির **जग,**—चात्र—**हे**:तात्मत এই चमचन चल वृक्तित जग ।

ভারতবাসী তুরস্ক, পারত বা চীন অপেকা বৃদ্ধি
বা শিক্ষাতে হীন নহে। উক্ত তিন জাতির মধ্যেই
রাজশক্তি প্রজাশক্তিকে খীকার করিয়া প্রজার
ইচ্ছামুলারে রাজকার্য পরিচালনা করিতেছেন বা
করিবার উল্যোপ করিতেছেন। কিন্তু সাম্যতন্ত্রী

সভাতাভিমানী ইংরাজ এত আড়ম্বরের পর ভারত-বাদীকে যে কেবল 'যথাপূর্ব্বং' অবস্থাতেই রাখিলেন তাহা নহে, অধিকস্ত সংস্থারের নামে সংকীর্ণতার প্রতিষ্ঠা ও শক্তিদানের নামে শক্তিক্রাস করিতেও কুঠিত হইলেন না।

গবমে দ্বের প্রকাশিত বিধানের মন্তব্য পাঠ করিলে মনে হইবে আমরা যথার্থই 'একটা কিছু' পাইলাম ? কিন্তু একটু তীক্ষদৃষ্টি দিয়া পাঠ করিলেই গবমে দ্বের আশাতীত মহাত্তবতা উপলব্ধি করিতে বিশেষ বিলম্ব হর না। এরপ বিধানের বিচার করিতে হইলে তিনটি প্রধান বিষয় বিবেচনা করা আবশ্রক। প্রথম প্রতিনিধিগণের সংখ্যা ও প্রকৃতি, বিভীয় দেশের প্রতিনিধি শক্তি এবং তৃতীয় নির্বাচিত প্রতিনিধিগণের কর্মা ও ক্ষমতা। পরে পরে এই তিনটি বিষয়ের বিচার করিয়া দেগিলেই আমরা ব্রিতে পারিব দেশে সংস্কারের নামে সংকীর্ণতার প্রতিষ্ঠা ও শক্তি দানের নামে শক্তিহাস হইল কি না।

প্রথম, প্রতিনিধি সংখ্যার দিক দিরা দেখিলে কাগজে কলমে আমরা সর্ব্ পূর্ব্বাপেক্ষা সংখ্যাবৃদ্ধি দেখিতে পাই। কিন্ত সংখ্যাবৃদ্ধির "সজে যথার্থ শক্তিবৃদ্ধি না হইলে, কেবল সমিতি গুলির কলেবর বৃদ্ধি ভিন্ন দেশের যে আর কি উপকার হইতে পারে ভাষা আমবা বৃদ্ধিতে জক্ষম। স্তরাং ইহাকে দেশের পক্ষ হইতে লাভ বলিয়া বিবেচনা করা অক্সন্তব।

তাহার পর প্রতিনিধিগণের প্রকৃতি সক্ষে বিচার

করিয়া দেখিলে আমরা দেখিতে পাই এডাদন বেবানে ৰাভিগৰ্ম নিৰ্কিশেবে ভারতীয় সভ্যগণ সাধারণ প্রজায় অভিনিধি বলিয়া গণ্য ছিলেন, এক্ষণে তাহায় মধ্যে ৰাভি, ধৰ্ম, ও অৰ্থ আসিয়া আপৰার আধিণত্য প্ৰভিগ পূৰ্বক পূৰ্বের অবও ভাৰটিকে নষ্ট করিয়া নানা ৰওভার গণ্ডি অন্তনে বিবেষ ও বিরোধের পথ উন্মুক্ত করিয়াছে। এতদিন बाबहरू रेखांक वा ভाরতবাদী हुई काडिई हिल। একণে ভাষার ছলে ভারতবাসীকে বিভক্ত করিয়া जिन्हें बाजि एहे इरेन-रेश्ताब, मूमनमान ७ हिन्तु। হিন্দু সকলের শেষে আসিরা পড়িল। সংখ্যা ও শিক্ষার যুসলমান অংশকা শ্ৰেষ্ঠ হইলেও সে আৰু রাজচকে निकृष्टे ७ होन । क्लांब प्राट्य এकवांत्र এक वक्छांब विशाहितन "शिक्षु बुगलवान व्यावात हुई महदर्शियी।" এই উপলকে দেই कथा। यद পড়িয়া গেল। এতদিনে বুরিলাম আমরা উভরেই রাজরাণী—ভবে আমরা 'ছয়ো' ভাই খামী-দোহাগিনী হয়োরাণী 'ছুয়ো'কে গোৱাল ঘরে ঠেলিরাছে।

কৈ তাই বলিয়া মুসলমান বাত্তেরই উপর যে ইংরাজ স্বাক্তরাপ প্রকাশ করিয়াছেন তাহাও নহে। শিক্ষিত ও পদস্থ মুসলমান অপেকা অশিক্ষিত ও হীনপদস্থ মুসলমানগণের প্রতিই তাঁহার অকুরাপের বাত্রাটা কিছু অধিক। শিক্ষাতিমানী ইংরাজ প্রতিপদেই শিক্ষাবিবেবের পরিচর প্রদান করিয়াছেন।

বর্গতা তিক্টোরিরা রাজ্যতার গ্রহণ করিয়া
১৮৫৮ সালে তাঁহার চিরস্মরণীর ঘোষণাপত্র প্রকাশ
করার পর হইতে আল পর্যান্ত ইংরাজ আর
কথনও ভারতবাসীর মধ্যে এরপ প্রকাশ্যতাবে
ধর্ম ও সম্প্রদার ভেদনীতি সমর্থন করেন নাই।
এরপ ওভদনীতি প্রজার পক্ষে অভিতক্তর ও বটেই,
রাজার পক্ষেণ্ট্ ইহা কোনমতেই কল্যাণকর নহে।
মূসল্যান্সপ্রের প্রতি এইরপ পক্ষপাতিতা প্রদর্শনের
সমর্থনে ভাঁহারা বলিরাহেন যে নান্সংখ্যক সম্প্রারহেন
রক্ষণ করা রাজার কর্তব্য। কিন্ত তাহা হইলে কেবল
মূসল্যান্যকে রক্ষা করিরাই ভু রাজার কর্তব্য শেব
হবরা প্রকাশ প্রারহি ভু রাজার কর্তব্য শেব
হবরা প্রকাশ প্রারহি ভু রাজার কর্তব্য শেব

সক্ষার সহকে তাহারা কি করিলেন। কৈ ভাহাদিগকে রক্ষা করিবার জক্ত ত কোনপ্রকার ব্যবতা দেখিতে, পাই না। আর সকল ছানেই বে হিন্দু অপেকা মুসলবানের সংব্যা অল তাহাও নহে। পূর্ব বলে হিন্দু অপেকা মুসলবান অনেক অধিক। তবে সেবানেও আমরা মুসলবানের প্রতি রাজপক্ষের এ পক্ষণাতিতা দেখিতে গাই কেন!

এইবার প্রজাপ্রতিনিধির আধিকা সম্বন্ধে বিচার করিয়া দেখা যাউক। বড়লাটের ব্যবস্থাপক সভার ७ कि अवर्गस्य प्रकात में वाकित्व-- १४ कन রাজকর্মচারী এবং ৭ জন রাজমনোনীত সভা। আর ২০টি একানির্বাচিত সভার ১১ট ভারতের বিভিন্ন প্রাদেশিক সভা হইতে প্রেরিত হইবে। সুভরাং তাহারা বে গবর্ণমেণ্টের সকল কর্ম্মের সমর্থনকারী হইবে সে বিৰয়ে সন্দেহ নাই। কারণ আমরা পরে দেখিতে পাইৰ আদেশিক সভার কাগৰে কলবে নিৰ্বাচিত সভার সংখ্যা অধিক হইলেও বস্তুত পঞ্চে সে স্কল স্থানে গ্ৰণ্যেণ্ট পক্ষেরই প্রাধাক্ত অকুল থাকিবে। তাহার পর হুইজন ইয়ুরোপীয় সভ্য হুইবেন। ভাঁহার। কোন পক্ষ আলোকিড করিবেন তাহা বলা অনাবশ্রক। তাহার পর্যুদলমানগণের বিশেবাধিকারে নির্বাচিত ৫ জন মুসলমান সভা। তাঁহারা রাজপক্ষের এই সবিশেব অনুপ্রহের যে মধ্যাদা রক্ষা করিয়া जित्वन स्म विषया मान्यक ना कतिरमध ज्ञाना ৰে কয়টি সংব্যা অবশিষ্ট হহিল ভাহার সকল-ভলিই জমিদারশেণীর প্রভিনিধি इहेरव। छाहारमञ्ज मरवा रक्ष वक् अक्षे अखिनाम করিভে সাহসী হওয়। সম্ভব বংহ---করিলেও ভাহা শরণ্যে রোদন, কারণ সে প্রতিবাদ সমর্থন করিবে কে ? সুতরাং কার্যান্তঃ বড়লাটের সভার বধার্য 👵 একাগকের প্রতিনিধি কার একজনও থাকিবে না, সংকারের এই প্রথম লাভ! ভাহার পর বলের বাৰহাপক সভাৱ বিষয় আলোচনা করিয়া দেখা বাকী विधान लावा चारक अवारत: २२ वन वावमरनानीछ छ २० जनवामानिकाणिक मका थाकित्व। त्वित्व महन स्म **এইবানে বৃদ্ধি প্রজাশক্তি প্রাথন্য লাভ ক্**রিরাছে।

किस এक विवास कतिया पिनिटल है और भारशा-∡ভক্ষী' ভালিয়া যাইবে। গ্বৰ্থমেটের সভ্যের সংখ্যা ছোটলাট ইচছ। করিলেই আরও চুইটি বাডাইতে পারেন: এবং সভাপতি স্বরূপ ছোট-লাটের একটি অভিরিক্ত ভোট আছে। সুতরাং প্রয়োজন মতে গবর্মেণ্ট পক্ষে সব গুদ্ধ ২৬টি ভোটই ত্রল। প্রজাপক্ষের প্রাধান্তের এইখানেই পঞ্চত্রপাপি। ইঙার উপর নির্কাচিত সভাগণের মধ্যে সাধারণতঃ ৪জন ইংরাজ নির্বাচিত হইবেন। অবশিষ্ট২২জনের মধ্যে B सन युगलयान, ও একজন বিশ্ববিদ্যালণের প্রতিনিধি। हैशतां अवर्य के पक मबर्यन कतित्वन बनियाहे बागा করা যায়। অবশিষ্ট রহিল ১৭টি, তাহার মধ্যে ৫টি জমিদার। বাকি রহিল ১২টি। ইহার মধ্যে ১লন জেলা বোর্ডের ও গ্রান মিউনিদিপালিটির সভা। জেলাবোর্ডের সভাপতি জেলার ম্যাঞ্জিটে। স্তরাং म इब सन्दर्भ नवकाती मूखा विल्ला व्यक्तांकि द्या ना। এইরপে দেখিলে শেষে প্রকার ভাগ্যে কেবল 'টিকি'টি মাত্র অবশিষ্ট থাকে—আর সবই সরকারীগুলিতে হল্প হইয়া যায়।

এইবার দেশের প্রতিনিধি নির্বাচন-শক্তি সম্বন্ধে আলোচনা করিয়া দেখা ঘাউক আমাদের নৃতন শক্তি লাভ হইল না পুরাতন শক্তি ক্ষয় হইল। এতদির আমাদের জেলাবোর্ড বা মিউনিসিপালিটি জেলার অধিবাদী যে কোন উপযুক্ত ব্যক্তিকে আপনাদিগের প্রতিনিধিমরণ থেরা এই নববিধাৰের করিতে পারিতেন। কিন্ত ফলে আর ভাহা হইবার উপায় নাই। এখন হইতে বোর্ড বা মিউনিনিপালিট তাঁহাদিগের শ্মিতির সভ্য ভিন্ন অপর কাহাকেও নির্বাচিত করিতে পারিবেন না। স্তরাং মিষ্টার এ চৌধুরী বা ৰীযুক্ত ভূপেন্দ্ৰনাথ বহুর ক্যায় ব্যক্তিগণও আর নিৰ্বাচিত হইতে অক্ষম। তাহা ভিন্ন যে কোন ব্যক্তি গ্ৰমে চিটর কর্মচাত হইয়াছেন, কারাক্রন বা ঘীপান্তরিত হইয়াছেন বা শান্তিরকার জন্ম মৃচ্লেকা দিতে ৰাধ্য হইলাছেন, সেরূপ ব্যক্তিও নির্বাচিত হইতে পারিবেন না। ইহার ফলে স্রেক্রনাথ, তিলক,

অধিনীক্ষার, অনাধবদ্ধু গুহ, দজপত রার ইত্যাদি
নহারথিগণ ব্যবহাপক সভার প্রবেশাধিকারে বঞ্চিত।
এ সকল গণ্ডি বাঁধিয়াও রাজপক্ষ নিশ্চিন্ত হন নাই।
রাজপক্ষ বাঁহাকে অনুপ্যুক্ত অর্থাৎ অমনোনীত
করিবেন তিনি নির্কাচিত হইলেও সভামধ্যে প্রবেশ
করিবে পাইবেন না।

निर्वाहन मंख्नि नहेशां अ गवाम के हिन्दू मूमनमात्नत মধ্যে প্রভেদ সৃষ্টি করিয়াছেন। বাৎদরিক १,৫০০ টাকা রাজকর না দিলে কোন হিন্দু জিশদার সভ্য হইতে পারিবেন না। অথচ উহার অপেক্ষা অনেক অল্ল রাজকর দিলেই মুদলমান সভ্য হইতে পারিবেন। হিন্দুর কোনও শিক্ষিত ব্যক্তিই ভোট দানে সক্ষম নহেন,...মুদলমান বি,এ, পাশ করার ১০ বৎসরের মধ্যে ভোট দিতে পারিবেন নাঃ কিন্তু অপর পক্ষে ২৫ টাকা বেতনের একজন সামাক্ত প্রাম্য মৌলবী যে সমরে ইচ্ছা ভোট দিতে পারিবে। হুতরাং মুদলমানগণের মধ্যেও শিক্ষিত সম্প্রদায়কে অশিক্ষিতের অপেক। নিকৃষ্ট স্থান দেওয়া হইয়াছে। হিন্দু যত বড়ই হউন তিনি ভোট দিতে পারিবেন ন', কিন্তু মুদলমান দামাক্ত ব্যবসায়ী হইলেও গে ক্ষমতা হইতে বঞ্চিত হইবে না। এইরূপ পদে পদে বিধানটি শিক্ষিত অশিক্ষিত ধনী দরিজ, হিন্দু মুগলমানের মধ্যে ভেদনীতিতে পরিপূর্ণ।

অবশেষে নির্বাচিত প্রতিনিধিবর্গের কর্ম ও
ক্ষমতা। প্রথমত: ত প্রতিনিধিবর্গের পরামর্গ দেওয়।
ভিন্ন অন্য কোন অধিকারই নাই। কিন্তু দেওলা
টুকুকেও নানারপ নাগপাশে বদ্ধ করিয়া প্রভিনিধিবর্গের কঠরোধ করা হইয়াছে। বৈদেশিক শক্তি বা
দেশীর রাজ্যের সহিত সম্বন্ধের বিষণে, সৈয়া, নৌবিভাগ
ও সামরিক বিভাগের ব্যয় সম্বন্ধ ও অংকাপর
বহুবিধ বিষয়ের আয় ব্যয় সম্বন্ধে এইনিধিগণ কোন
প্রকার প্রশ্ন করিতে পারিবেন না। যে সকল বিষয়ে
গাহারা প্রশ্ন করিতে পারিবেন না। যে সকল বিষয়ে
গরেশেণ্ট ইচ্ছা করিলে কোন প্রকার উত্তরদান না
করিতে পারেন। বিলাতের পালানেন্টের সাধারণ
সভায় পার্মকারীর শক্তির উপর যদি এতগুলি অসুশাসন

ব্যালিত থাকিত, তাহা হইলে সভার অর্থেক কর্ম কমিয়া বাইত সন্দেহ নাই। ইণ্ডিরা গবদে টি আত্মরকার জন্ম এবন স্বৃদ্ধির সহিত প্রতিনিধিবর্গের শক্তির সীমা বন্ধ করিয়া দিয়াছেন যে, গবদে টের পক্ষে অস্থবিধান্তনক বা ক্ষতিকর মনে করিতেই উাহারা তাহাদিগের সে শক্তিটুকু হরণ করিতে পারেন। ইহার উপর আবার সভাপতি উত্তরদানের অস্থবিধা বোধ করিলে অর্থাৎ আপনাদিগকে অপদন্থ হইবার আশহা থাকিলে বেঁ কোন প্রশ্ন বা প্রস্তাব অর্থাহ করিতে পারিবেন। বাসু, সকল আপদ চুকিয়া গেল।

রিস্লি সাহেব রাজভক্ত না পাইলেও ইতিহাদের পত্তে অমরস্থান লাভ করিলেন। তাঁহারই মুলিয়ানার আমরা বক্তচের পাইয়াছিলাম আর তাঁহারই জনুর্গ্রহে আমরা এই নববিধান লাভ করিলাম। এইরূপ নীতিই যদি অলোর সহিত সহযোগিতা হয়, ভবে ইহার একটা মহা হুবিধা এই; কাউলিলে এবেশ করিতে পারিলে অলোভাগ্যের ভহবিলে শ্রম-শ্রহার শৃক্ত এবং উপাধিটাই ভাহার লাভ লমা! ষ্যাক্ডোনান্ড সাংহবের(Mr.Ramsay Macdonald) অভিষত উদ্ভ করিয়া আষাদের বক্তব্য শেব ক্লবি-্ লাম। তিনি বলিয়াছেন—

"এই বিকাৰে ভারত গ**ৰনে 'ট** এক মহা ভূল করিতেছেন। শিক্ষিত হিম্মুগণের প্রতি অবিখান তাঁহাদের অথম ভ্রম; জেলাবোর্ড ও মিউনিসিপা-লিটির সভা ভিন্ন অপর কেহ প্রতিনিধি নির্বাচিত হইতে পারিবে না, এরপ নিরম করা তাঁহাদের বিতীয় ভাষ; আর মুদলমানগণের প্রতি বিশেষ অনুগ্রহ প্রদর্শন করিয়া হিন্দুদিগকে অবিশাস করা এক বিন্ম ইহা ঘারা এই উভয় সম্প্রদায়ের মধ্যে মিলন হওয়া দুরে থাক, দিন দিন অধিকতর বিচ্ছেদই সংঘটিত হইতে থাকিবে! ইহার ফল অতি শোচনীয় इटेरव विलिहारे आसि मन्न कति: कांत्र রাজনৈতিক আন্দোলন অপেকা ধর্ম ও সাম্প্রদায়িক ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত আন্দোলন গ্রমেণ্টের পক্ষে অধিকভর বিশক্তনক नारे।"

হাইন হইতে।

টগরের ঝাড়ে একটি টগর বিষয় আভাহীন; শিশির অস্তে নবৰসস্তে তবু সে তেমনি দীন;—. পাণুর ছবি—বেন আহা মরি! রুগ্ন বালিকা ক্ষাণ!

মৌন কুমুম মিনভিয়া কহে
ভূলি লও সথা মোরে;
আমি কহিলাম—তুমি ত সে নও;
টগর না চাহি তোরে;
আমি পুঁজি রাঙ্গা ফুলর কুমুম,—
অগান্ত ভিয়াসা ভরে।

বাথিত টগর কহে—থোঁজ তবে
দেখ যদি তারে পাও;
মোর মনে হয় পাবে না দে ফ্ল—
বুণায় খুঁজিতে যাও।
লহ তুমি মোরে মিনতি রাবগো
বাথিতে শরণ দাও।
গুনি টগরের আকুলতা বাণী
তুলিয়া লইমু করে—
অমনি ফুড়াল মরমের বাথা
আলো ফুটে আঁথি গরে;
দেবপুল ভ বিমল আনন্দে
হালয় উঠিল ভরে।
শ্রীষ্তীক্রমোহন বাগিটা, বি, এ।

শোকবার্তা।

ভাতঃকালে ভারতবর্ধের উজ্জ্বল রক্স রমেশচক্র

৬১ বৎসর ব্যুসে প্রলোকগনন করিয়াছেন।
১৮৪৩ খুষ্টান্দের ১৩ই আগতে রামবাগানের
প্রাক্তি লক্তবংশে তাঁহার জন্ম.হয়। তাঁহার

এই অকাল মৃত্যুতে হিমালয় হইতে কুমারিকা
পর্যান্ত সমগ্র ভারত আজ শোকাছেয়।
কালের এই নির্দিয় আঘাতে বাঙ্গালীমাত্রেই
আজ মর্ম্মাহত। আর আমরা—রমেশচক্রের
মৃত্যুতে যে কেবল স্বজাতিগোরব, স্বদেশপ্রেমিক কর্মবীরকে হারাইয়াছি ভাহা নহে,
—তাঁহার মৃত্যুতে আমরা আজ বন্ধ্বিয়োগেব
আঘাতে মর্মাহত। জীবিতকালে রমেশচক্র
অনেক সময়ে তাঁহার অক্লান্ত লেখনীর ছারা
ভারতীর পত্র ভূষিত করিয়াছেল।

বঙ্গদেশ চিরদিনই রত্বপ্রদ্বা বলিয়া জগতে বিদিত। আজ দেশের এ হঃথ দারিজ্যের জন্মভূমি কি দিনেও আমাদের জননী ধর্মো, কি কর্মো, কি কার্যো, কি সাহিত্যে, কি স্বদেশপ্রেমে কি স্বদেশসেবায় যে অমূল্য রত্বগুলি প্রসৰ করিয়া জগতের 13:4 আপনাকে গৌরবাবিত করিয়া তুলিয়াছিলেন; त्रामनुद्ध (महे नवत्राष्ट्रत अकि। জীবন অক্রান্ত কর্ম ও অবিচলিত সাধনার উজ्জ्वन मुद्रीस। ठाँशांत कीवतन ও সাহদ, শক্তি ও সাধনা, কর্ম্ম ও চিস্তা খদেশপ্রেম ও খ্বজাতিদেবার যেরূপ একত্র সমাবেশ বদখা যায়, এরপ দৃষ্টাস্ত, ভারতের ইতিহাসে কেন, সমগ্র জগ্তের ইতিহাদেও বিরল। .

বিংশতিবর্ষ বয়সে ১৮৬৮ খৃষ্টান্দের ৩রা

মার্চে তিনি তাঁহার বাল্যবন্ধ বিহারীলাল
গুপ্ত ও স্থরেন্দ্রনাথের সহিত গোপনে
শিক্ষালাভের জন্ম বিলাতে গুলাইয়া যান।
তথায় দিভিল দার্ভিদ পরীক্ষায় তিনশত
ইংরাজ পরীক্ষার্থীদিগের মধ্যে তিনি ইংরাজি
ভাষায় বিতীয় স্থান অধিকার করেন। ইহা
তাঁহার ন্যায় অল্লবয়য় বিদেশীর পক্ষে কম
গৌরবের কথা নহে। সংস্কৃতে তিনি প্রথম
স্থান অধিকার করিয়াছিলেন।

১৮৭১ সাল হইতে ১৮৮২ সাল পর্যান্ত রমেণচন্দ্র বঙ্গের বিভিন্ন জেলায় নানাপ্রকার কর্মে নিযুক্ত ছিলেন। যেথানে হিন্দু ম্পলমানে বিরোধ হইয়া শাসন বিশৃঙ্খলা উপস্থিত করিত, যেথানে ছর্ভিক্ষ বা বস্তায় দেশে হাহাকার উপস্থিত হইত, দেইখানেই যুবক রমেশচন্দ্র নিযুক্ত হইতেন। রুমেশচক্র তাঁহার অসাধারণ শ্রমণক্তি, সহাতুত্তি ও অধ্যবসাম্ভের ফলে অচিরে বিরোধ, বিশৃত্থলা, ছর্তিক ও হাহাকারের স্থানে শাস্তি, শৃঙ্গলা, সভ্লতা ও সন্তোষ পুনঃপ্রতিষ্ঠিত করিতে সমর্থ হইতেন। এবং এই সকল দায়িত্ব ও প্রমের মধ্যেও তাঁহার লেখনী একদিনের জ্বন্তও অলস থাকিত না। তিনি তাঁহার কর্মের প্রথম অবস্থাতেই তাঁহার ইয়ুরোপ ভ্রমণ ও বঙ্গদেশের সাহিত্য ও কৃষকদিগের জীবন সম্বন্ধে পুস্তকাদি প্রণয়ন করিয়াছিলেন। ত ার প্রবে তিনি মাতৃভাষায় উপস্থাস লিখিতে অগ্রঁসর হন। বৃদ্ধিমচন্দ্র রুমেশচন্দ্রের একজন বিশিষ্ট বন্ধ একদিন কলিকাতায় উভয়ের সাক্ষাৎ হইলে বৃদ্ধিয় রমেশচক্রকে মীভূ-ভাষায় পুস্তক লিখিবার জন্ম অনুরোধ করেন। রমেশ্যক্স বলিয়া উঠিলেন—"আমি
বালালায় লিখিব—আমি যে বাললা ভাষাই
লানি না।" বিদ্ধিন উত্তর করিলেন "কেন,
ভোমার মত শিক্ষিত ব্যক্তি যাহা লিখিবে,
ভাহাই ভাষা বলিয়া চলিয়া যাইবে। ভোমার
যদি ভিতরে শক্তি থাকে ত ভাষা আপনিই
আসিয়া যাইবে।" এই উপদেশের ফলে ১৮৭৪
হইতে ১৮৮০ সালের মধ্যে রমেশচক্স তাঁহার
ঐতিহাসিক উপস্থাসগুলি প্রকাশ করেন।

ইতিমধ্যে তাঁহার চাকরির ১১ বংসর হইয়া গিয়াছে। এক্ষণে রাজপুরুষণণ চিন্তা করিতে লাগিলেন একজন দেশীগকে জেলার ম্যাজিষ্টেট করিয়া দেওয়া সঙ্গত ও নিরাপন কি ন।। গ্রমেণ্ট তাঁহাকে পরীক্ষা করিবার জ্ঞ বঙ্গের সর্বাপেকা ছুদান্ত জেলা বাধরগঞ্জে প্রধান ম্যাজিট্রেট করিয়া দিলেন। তিনি এরপ স্থচাক দক্ষতার সহিত শাসন করিতে লাগিলেন, সমগ্র জেলায় এরূপ শান্তি ও শৃত্যনা প্রতিষ্ঠিত হইল যে বহু বৎসরাবধি তাঁহার পূর্ববন্তী ইংরাজ ম্যাজিষ্ট্রেটগণের শাসনে সেরপ হয় নাই। তাঁহার কর্ম্মে বড়লাট রিপন সাহেব এতদূর প্রীত হইয়া-ছিলেন যে তাঁহাকে আপন প্রাসাদে আহবান করিয়াবলেন-"আমি তোমাকে ডাকিয়াছি-ভারতভাগের পূর্বে তোমাকে দেখিব ও তোমার পবিচয় গ্রহণ করিব বলিয়া। তোমার কৃতিছ ইংলগুৰাসীৰ জানা আবগুক, তাহা इहेरन ভविषार जातज्यामीरक डेक भागन কর্মে নিযুক্ত করিতে আর তাহাদের কোন व्याशिक इहेरव ना।"

ভোহার পর ১৮৮৫ সালে ছই বৎসরের ছুটি লইয়া রমেশচক্ত [®]ঋথেদের অন্মবাদ প্রকাশ করেন। তিনি শুদ্ধ ইছ্রা বেদের অম্বাদে অগ্রদর হইন্নাছেন বুলিয়া দেশমর তুম্ল আন্দোলন উপস্থিত হইল। কিন্তু রমেশচন্দ্র তাহাতে ভীত না হইন্না অবিচলিত চিত্তে স্বকর্মে অগ্রদর হইতে লাগিলেন এবং ১৮৮৬ সালের প্রথমভাগে তাহার ঋর্যেন প্রকাশিত করিলেন।

এই সময়েই ভারতবর্ষের ইতিহাস লিখিবার কলনা তাঁহার মনে জাগ্রত হইয়া.উঠে।
পাবনার ম্যাক্সিষ্ট্রেট করিতে করিতে তিনি
"পুরাতন ভারতে সভ্যতা" নামে তিন থণ্ডে
এক বৃহৎ ইতিহাস প্রকাশিত করেন। সমস্ত
দিনের শ্রমের পর তিনি প্রায় সমস্ত রাত্রি
এই কঠোর কর্ম্মে মতিবাহিত করিতেন।
১৮৯০ সালে তিনি "বৃদ্ধীয় সাহিত্য পরিষদ"
স্থাপিত করেন। সাহিত্য পরিষদ্ যে এই
কল্প বৎসরের মধ্যে দেশের সাহিত্য জীবন
কতপ্রকারে সমূলত করিয়া তুলিয়াছে তাহা
বঙ্গবাসীমাত্রেই জানেন।

১৮৯৪ সালে রমেশচন্দ্র বর্দ্ধমান বিভাগের কমিশনরের পদে নিযুক্ত হন। ইংরাজ শাসনে ভারতবাসীর এক্সপ উচ্চ কর্মপ্রাপ্তি এই প্রথম। এবং এই বংসর তিনি বঙ্গার বাবস্থাপক সভার সভ্য নির্মাচিত হন। অবশেষে অর্থচেটা ত্যাগ করিরা সাহিত্য ও ব্যদেশের সেবার জাবনের অবশিষ্ট ভাগ উৎসর্গ করিবার উদ্দেশ্যে ১৮৯৭ সালে তিনি রাজকর্ম ইইতে অবসর গ্রহণাস্তে ইংলপ্তে থাকিরা স্থর্গাত উমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার ও দেশপূজ্য দাদাভাই নাওরোজার সহিত্ত ভারতবাসীর ভংগমোচনের জন্ত কার্মনোবাক্যে চেষ্টা ক্রিতে থাকেন।

১৮৯৯ সালে কংগ্রেসের সভাপতি হইয়া তিনি ভারতে প্রত্যাগমন করেন। ১৯০৪ সালে বরোদার মহারাজা কর্তৃক রমেশচক্র তাঁহার রাজস্বসচিবের পদে নিযুক্ত হন। তিন বংসরের মধ্যে বরোদা রাজ্যে রমেশচন্দ্র **শिका, भिन्न, कृषि, वाणिका, विठात ও भागन** সম্বন্ধে এরূপ উদার সংস্কার সকল প্রবর্ত্তিত করেন যে তাহার ফলে বরোদারাজা আজ ভারতে শক্ত মিত্রের নিকট আনুর্শরাস্থ্য বলিয়া পরিগণিত। "বরোদাবাদী কর্ত্তক রমেশচন্দ্র দরিদ্রবন্ধু" উপাধি লাভ করিয়াছিলেন এবং তাঁহার অবদর্গ্রণের সময় শিক্ষিত অশিক্ষিত. ইতর ভদ্র সকণেই কুর ও শোকসম্ভপ্ত হইয়া-ছিল। পরে ছই বৎসর রমেশচক্র রাজনিযুক্ত Decentrelisation কমিশনে নিযুক্ত ছিলেন। • ছই বৎসর পরে তিনি পুনরায় দেওয়ান পদে নিযুক্ত হইয়া ব্রোদারাজ্যে গমন করেন। একটি জীবনে এরপ বছমুখী চেষ্টা ও সফলতা पिथित्न वञ्च उदे मुक्क इटेर्ड इम्र। जिनि যে কেবল কৰ্মী ছিলেন তাহা নহে। শাসনদক্ষতার গুণে তিনি বর্ত্তমান যুগের স্বংশ্রেষ্ঠ শাসনকর্ত্রণবের সমকক্ষ ছিলেন। খদেশপ্রেমে তিনি বর্ত্তমান যুগের সক্রশ্রেষ্ঠ স্বদেশদেবকগণের সহিত সমাসনে প্রতিষ্ঠিত হইবার যোগ্য। ইংরাজি লিথিবার ক্ষমতায় তাঁহার সঁমকক বড় কেহই নাই। কিন্তু ভারতের ইতিহাসগুলি তাঁহার অক্ষম কার্তি,— ইহারাই তাঁহার নামকে ভারতের ভবিয়াং ইতিহাদে অমর করিয়া রাথিবে। এইরূপ ইতিহাসের দ্বারাই জ্বাতির অন্তর গঠিত ও উন্নত হইর। উঠে। যতদিন ভারবর্ষ থাকিবে ততদিন এই অমর পুরুষের স্বদেশ সেবা

তাঁহার ইতিহাসের পত্রে পত্রে জীবিত ও জাগ্রত হইয়া থাকিবে।

পूर्व रहेट इंशत श्रुद्धांत हिन। ইংলণ্ডের ডাক্তারেরা আখাদ প্রদান করিয়া বলেন, 'ইহা মারাত্মক নহে, দাবধানে থাকিয়া কাজ কর্ম করিতে বাধা নাই।' কিন্তু এবার জেনেরলের বরদা গমনকালে দাওয়ানের কর্ত্তব্য বোধ তাঁহাকে আর সাব-ধান হইতে দিল না। সেই সময়কার নিরতিশয় শারীরিক পরিশ্রম ও মানসিক উদ্বেগই প্রকৃতপক্ষে তাঁহার এই আক্সিক মৃত্যুর কারণ দাঁড়াইল। প্রাসাদে বেদিন লাট সাহেবের ভোজ—একত্র ভোজনে বসিয়া রমেশচন্দ্র বক্ষে ধারুণ বেদনা অনুভব করিভে লাগিলেন। কিন্ধ টেবিল হইতে উঠিলে উৎमव जन्न रहेन्रा याहेर्त এहे क्य रवननान ঘর্মাক্তকলেবর ও মুক্তিত প্রায় প্রাণপণ আয়াদে শেষ পর্যান্ত বসিয়া, লাট माट्टर्वत উঠিবার পর বিদায় গ্রহণ করিলেন। এই ঘটনা তাঁহার মনের বল ও কর্ত্তব্যজ্ঞানের কিরূপ জনস্ত পরিচয় প্রদান করিতেছে!

কেবল রমেশচন্দ্র দত্ত নহেন, সম্প্রতি আমরা আরও কয়েকটি কর্মবীর ও আদর্শ পুরুষ হারাইয়াছি। স্থ[†]নাভাবে আমরা শোকসম্ভওচিত্তে তাঁহাদের কর্মশীল জীবনের সংক্ষিপ্ত পরিচয় প্রদান করিয়াই স্থ্লয়ের ক্ষোভ কথঞিং নির্ত্তি করিলাম।

তকেদারনাথ রায় দেশন জজ ছিলেন। "বিচারাসনে বসিয়া তিনি এক ধর্মরাজ বিধাতা ব্যতীত কাহাকেও তর করিতেন না। তিনি একদিকে যেমন

স্বাধীনচেতা ছিলেন, অপরদিকে ভেমনি দয়াৰু ও ধর্মভীক ছিলেন। তাঁহার এই नकन अप नकन कहे मुद्र कतिल वर नवरम के व्यत्नक नमस्बरे छै। हात्र छे पत्र इरेडि छिनात कर्षजात ऋछ कत्रिरजन। जाहात याधीन-চিত্ততা ও কর্ত্তবানিষ্ঠার জন্ম তিনি অনেক শমরে শোকের ও গ্রমেণ্টের বিরাগ ভাষন হইতেন। কিন্তু তাহার প্রতি তিনি কোন দিনই দৃক্পাত করেন নাই। গ্রমেণ্টের কর্ম হইতে অবসর গ্রহণ করিবার দিনেও তিনি **লিখিয়াছিলেন—স্বা**ধীনচিত্ততা विजातकत टार्क खन। द्वानीत द्वानी अ বিপল্লের কার্য্যোদ্ধার করিবার সময় কেদার-নাথের সময়ের জ্ঞান বা আহার নিজাবোধ থাকিত না। কর্ম হইতে অবসর গ্রহণ করিয়াও তিনি নিশ্চেষ্ট ছিলেন না। ব্রাহ্মধর্ম্ম ও সমাজের উরতি করে আত্মোৎসর্গ করিয়া-ছিলেন! এ সকল করিয়াও তিনি নিজের প্ৰতি সৰ্ব্ধ ছিলেন না-সৰ্বাদাই বলিতেন-"आमात्र को वनते। वार्थ इहेन।"

অধাবদার, কার্যোশনাহ, দৃঢ় প্রতিজ্ঞা ও উচ্চাভিনাষ সম্বেও তিনি কোন দিন নিজের জন্ত কিছু করিবার চেষ্টা করেন নাই—পরিবার, সমাজ বা দেশই তাঁহার সকল কর্মের লক্ষান্তল ভিল।

ত্রনাথবন্ধ্ প্রাণক্ষা দত্ত।
ইহারই উভোগে, দেবার, মার্থতাগে ও
আন্মোৎসর্থে আনাদের নগরের অনাথ
আশ্রমটি প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। প্রথম তিনি
নিঃসম্বল অবহার বধন অনাথ প্রতিপালন
আরম্ভ করেন তথন অনেকেই উপহাস
করিয়াছিলেন। কিছু প্রাণক্ষের কেবিভিড

সে সকল হীন তিরস্কার উপেক্ষা করিয়া আপন মহৎকর্ম অনুসরণ করিতে বিমুখ প্রথমে নিজের উপর নির্ভর कतियां नातिरकन्छात्राय शक्षि कृष भर्न-कृष्टीत निर्माण कत्रारेग्रा जनाथ रमरा खात्रस একটি শিশু **इ**टेट চারিট শিশু সংগ্রহ করিয়া তিনি আশ্রম স্থাপনা করেন। আশ্রমের বায় নির্বাহের জন্ত ভিক্ষার ঝুলি হাতে করিয়া তিনি বাঙ্গালীর ঘারে খারে খুরিয়া বেড়াইতেন। কেহ বা ষৎকিঞ্চিং দান করিতেন, কেহ বা অপমানিত করিয়া তাডাইয়া দিতেন। প্রাণক্লফ্র তাহাতে বিচশিত হইতেন না। তিনি আদমা উৎসাহে ও অক্লান্ত দেবায় দেই নগণ্য আশ্রমটিকে ক্রমে বঙ্গের একটি বৃহৎ কীর্ত্তিতে পরিণত করিয়া গিয়াছেন। ১৮৯২ সাল হইতে সাধারণে বিধিবদ্ধ ভাবে ইহার সহায়তা করিতে আরম্ভ করেন। ১৯০০ সালে বঙ্গের ভূতপূর্ব অধীশ্বর সহানর উডবর্ণ সাহেব ইহার পৃষ্ঠপোষক হন। পরে প্রাণক্ষণ বাবুর যত্নে কুমার মন্মণনাথ মিত্র খ্রামবাজারে ২৩ কাঠা জমিদান করেন ও অহান্ত সহাদয় বাক্তির নিকট প্রায় বিশ সহস্র মুদ্রা সংগৃহীত হয়। এইরূপে বছকটে তি নি অনাথআশ্রমের বৰ্ত্তমান বুহং बहानिकां है নিৰ্শ্বিত ক রিয়া তুলেন। **ा। करक व भन्ने यथार्थ हे स्नामीत** महधर्मिणी ছিলেন। তাঁহার ভগিনীও এই কার্যো তাঁহাদের সহারতা করিয়া আসিয়াছেন। रेशद्रा **मक**टल ३ অনাথদেবার জীবুন উৎসর্গ করিরাছিলেন। পালিত অনাথগণ তাঁহাদের সম্ভান অপেকা প্রিয় ছিল। অনাথ আল্রমের ইতিহাস প্রাণক্ষাের কীর্ত্তিকে অনর

করিয়া রাখিবে,। আজ প্রাণক্কফের মৃত্যুতে

• তাঁহার ভগিনীই অসহায়গণের একমাত্র

আশ্রম্বরূপ রহিলেন।

৺ডাক্তার দেবেন্দ্রনাথ রায়। ইহার জন্ম নদীয়ার রাজবংশে। ইহার চিকিৎসানিপুণ কৃতি লোক অব্লই इति গবমে चित्र अधीत अतिक (नश योग्र। প্রকার কর্ম্ম করিয়া অবশেষে কলিকাতা ক্যান্থেশ হাঁদপাতালে অধ্যাপক এবং বডলাটের অবৈতনিক চিকিৎসক নিযুক্ত হন। ১৮৭৬ সালে মাক্রাজের <u> তর্ভিক্ষে</u> যথন গ্ৰমেণ্ট বাঙ্গলা হইতে কতকগুলি ডাক্তার প্রেরণ করিবার ব্যবস্থা করেন তথন যুবক দেবেক্সনাথ সর্ববিথম সেই কার্য্যে অগ্রসর হন। ১৮৭৭ সালে বড়লাট লিটন সাহেব इर्डिकश्व পরিদর্শনে গমন করিয়া দেবেক্ত-নাথের গুণপণা ও কার্য্যকুশলতা দেখিয়া এতদুর প্রীত হইয়াছিলেন যে তৎক্ষণাৎ আপন ष्यक्रुत्री थूलिया (मरवन्तर्नाथरक शूत्रकात मार করেন ও পরে স্বহস্তে প্রশংসা পত্র লিথিয়া তাঁহাকে প্রেরণ করেন। কর্ম্ম হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া তিনি কলিকাতার অ.লবটাভন্টর হাঁদপাতাল ও বিভালয়ের উন্নতিকল্পে জীবন উৎসর্গ করিয়াছিলেন। তাঁহার স্থায় অমায়িক, পরোপকারী, স্বেহ্ময় অন্ত:করণ থুব অল ্লোকেরই দেখিতে পাওয়া যায়।

৺নুরেন্দ্রনাথ গাঙ্গুলি । অদেশীভাবের প্রসিদ্ধ চিত্রকর শ্রীযুক্ত অবনীক্রনাথের ইনি একজন প্রিয় ছাত্র ছিলেন। ৺রমেশচক্র দত্ত প্রশৃতির স্থায় কর্মবীর না হইলেও ইহার মৃত্যু কম শোকজনক নহে। এই অকাল মৃত্যুতে ভারতমাতার কণ্ঠলগ্ন একটি উজ্জল রক্ত্রুল লগতে বিলীন হইল। ছাত্রজীবনেই স্থাবেন্দ্রনাথ চিত্রাঙ্কনে যে অসামান্ত প্রতিভা দেখাইয়াছেন, বয়োবৃদ্ধি সহকারে তাহা যে পরিক্ষৃট মহিমান্ত ভারতচিত্রজগতের গৌরব শতগুণ বর্দ্ধিত করিত তাহাতে সন্দেহ নাই। এই বংসরের ভারতীতে স্থরেন্দ্রনাথের অভিত অনেকগুলি চিত্রের প্রতিলিপি প্রকাশিত হইয়াছে;—এই সংখ্যার বিপন্ন ছর্মাসা তাহারই চিত্রলিপি।

এই শোক সংবাদে আমরা যেন আত্মীয় বিয়োগের আঘাত প্রাপ্ত হইলাম। ভবিষাতে ইঁহার সংক্ষিপ্ত জীবনী প্রকাশে ইচ্ছা রহিল!

৺ব্ৰজনাথ কাঞ্জিলাল। বংসর থানেক পূর্বে মাত্র জষ্টিস আশুতোর মুখোপাধ্যায়ের বিধবা কন্তাকে বিবাহ করিয়াছিলেন। সংসারে মৃত্যুতাপ, শোকহঃখ আছেই; সঙ্গে সঙ্গে তাহার পূরণও আছে। কিন্তু ইঁহার অকাল্যুতাতে, ইনি পরিবারকে যে অসীম শোকে আকুল করিয়া গিয়াছেন-দেশকে যেরূপ ক্ষতিগ্রস্ত করিয়া গিয়াছেন— তাহার বুঝি আর পূরণ নাই! তথাপি আমরা यज्ञनर्भी मानव त्मरे नर्सनर्भी निष्ठ - प्रकृत्यत মঙ্গল ভাবের উপর বিশ্বাস স্থাপন করিয়া বলিব --- "তোমারই ইচ্ছা হউক পূর্ণ. মঙ্গলময় স্বামী; দাও হু:খ দাও তাপ—সকলি দহিব আমি।" সেই করুণাময় স্বামীই শোকার্ত্ত পরিবারকে এই অসীম শোকবেদনা সহু করিবার বল প্রদান कक्रन : ইহাই मस्रश्र श्रमरत्रत्र आस्त्रिक आर्युना ।

চিত্রব্যাখ্যা।

গত অগ্রহায়ণ মাসে শীবুক্ত অবনীক্রনাণ অসিতকুমার হালদারের 'যশোদা' নামক চিত্তের ছইখানি প্রতিলিপি ভারতীতে প্ৰকাশিত হইয়াছে। তাহাদের সম্বন্ধ ছ-এক কথা ব্যাখ্যা অনেকের নিকট আবশ্রক বোধ হইয়া থাকিতে 'পারে। এজন্ম ঐ চিত্র হুখানিকে আমরা যেরূপ ব্রিয়াছি তাহারই সংক্ষিপ্ত আভাদ এথানে লিখিত হইতেছে।

नौनाकमन। बिक्कमृति वामात्त्र দেশের ভগবানের চিহ্নপ্ররপ, কেহ বা বৃদ্ধাবনের কৃষ্ণকে পূজা করেন, কেহ বা গীতার কৃষ্ণকে স্বীকার করেন। মোটের উপর একেশ্ব-বাদীও গীতার ক্রফকে ভগবানের নামান্তর বলিয়া গ্রহণ করিতে দ্বিধা বোধ করেন না। শ্রীকৃষ্ণমূর্ত্তি আমাদের দেশের মন্দিরে মন্দিরে, গৃহে গৃহে, হ্বদমে হ্বদমে বিভিন্নরূপে বিরাজিত। তাঁহাকে বেষ্টন করিয়া মা যশোদার স্নেহ, গোপবালকের স্থা, রাধার প্রেম, ধ্রুব প্রহলাদ উদ্ধব অক্রুরের ভক্তি, অর্জুনের নির্ভরতা অহরহ আমাদের মনের মধ্যে জাগরুক হইয়া উঠিয়াছে। একুফ ব্যক্তি-विरम्ब नव, এ कृष्क भूतांन महाভातरत्त नव -এ इस भावेज भूकर, यामार्गत नदनानम. হৃদক্ষের, এক অধিতীয় ভগবান। তাই वृतिबारे निद्धी जिक्क्षत्र পরিকল্পনা করিয়া-ছেন। তিনি কাহারো মতামুসরণ করেন নাই। ভক্তের অমল ধবল পবিত্র হৃদর শভদলের উপর ভাৰবিহ্বণ আনন্ত্ৰালকে চিত্রিত করিয়াছেন। খনরপন্ম বিৰুশিত হইরা ক্লের চরণতলে পাতা আছে, পদ্ম-

পত্রের যত সব শিরা উপশিরা সে ত ভক্তেরই ঠাকুরের পরিকল্পিত 'লালাকমল' ও গ্রীযুক্ত • শিরাধমনী—ভক্তের হৃদয়রক্তের মধ্যে স্থানন্দ-তরঙ্গ, ভাব পান্দন, বিচিত্র অমুভূতি বিবিধ বর্ণে, অপুর্ব রেখায় প্রকাশিত হইরা পড়িয়াছে ক্ষাের স্থানর শিশুমূর্ত্তি দর্শকের চিত্তকে রদাভিধিক্ত করিয়া দেয়; তাঁহার মুখে তন্ময়তা, অংক উচ্ছলতা। হক্তে ধৃত মিটান উপভোগের আনন্দ ও চিরপূর্ণতার হচনা করিতেছে। এই চিত্রখানি ভাবে, মাধুর্য্যে, त्रोक्तर्या, व्यक्नशात्रिशात्वा अधिक निज्ञौत তুলিকার উপযুক্তই হইয়াছে।

> যশোদা। লীলাকমল প্রদক্ষে কৃষ্ণদশ্বে অনেক কৰা বলিয়াছি। তাহার পুনরুলেধ নিস্পরোজন। যশোদা আমাদের মাতৃমুটির व्यानर्ग. व्यामादनत्र महात्वाना। যশোদার স্থেহবর্ষিণী স্লিগ্ধ দৃষ্টি চিত্রকরের তুলিকার অতি চমৎকার প্রকাশিত হইরাছে। 'ভুগ বৈকুঠের তরে देवकदवद গান' নয়। 'आयार्तित कृषीत-कानरन कृष्टे भूल, (कह দের দেবতা-চরণে, কেহ রাখে প্রিয়জন তরে।' এইরপ স্কর মাতৃমূর্ত্তি আমাদের ঘরে মরে, **डारे** जामारमत এ ছবিখানি বড় ভাল गांगि-রাছে। শিশুটির পরম নির্ভর শাস্তগভীর নিক্রা ও জননীর ক্ষেহদৃষ্টি অতি মধুরভাবে অত্তিত হইয়াছে। যশোদার বস্তের আকুঞ্ন, শিলীর কলাকুশলতার পরিচর দিতেছে। ভাবের সহিত সৌন্দর্য্য সমাবেশ করাই প্রাচ্য শিলীর কবিছ। অসিতকুমার সেই সাধনায় দিছির পথে অগ্রসর হইয়াছেন, ইহা প্রাচ্য-व्यथावित्राधीतां । श्रीकातः कतित्वन । विवासकता वत्नाभाषात्र।

্ রিপন্ন তুর্বাসা। হুরেন্দ্রনাথ গঙ্গো-পাধ্যায় কর্তৃক অন্ধিত।

অম্বরীষ নামে পরম বিষ্ণুভক্ত এক রাজা [®] ছিলেন। ভগৰান বিষ্ণু তাঁহার প্রতি প্রসন্ন হইয়া তাঁহাকে নিজের চক্রটি দান করিয়া-ছিলেন। সেই চক্র সদাসর্বদা অম্বরীষের পাশে পাশে থাকিয়া তাঁহাকে রক্ষা করিত। একদিন তুর্বাসা মুনি তাঁহার বাড়ি আদিয়া উপস্থিত; -- সে দিন কার্ত্তিক মাসের দাদণী-ব্রতের পারণ। এই পুণ্য দিনে হুন্মাসার মত ঋ'ষকে বাড়িতে অতিথি পাইয়া অম্বরীষ অ हा छ | जास्ता पि छ हरेगन | वर निर्कारक কুতার্থ জ্ঞান করিলেন। ওর্বাদাকে যথোচিত স্মাদর করিয়া তাঁহাকে সেদিনকার মত সেখ'নে ভোজন করিতে অহুনয় কংলেন। করিতে **তুৰ্বা**সা সম্ম ত হইয়া সান গেলেন।

ছর্কাসা সেই যে গেলেন আর ফেরেন্
না — অনেক সময় বহিয়া গেল। রাজা
ভাবিলেন ঋষি আর আসিবেন না। তথন
প্রোহিতের অনুমতি লইয়া নিজেব আহার
শেষ করিয়া ফেলিলেন। তার পর ছর্কাসা
আসিয়া হাজির। ছর্কাসা একে রাগী মানুষ
তাহার উপর উপবাসী, যথন ভানিলেন রাজা

আহার করিরা বসিয়া আছেন তথন তাঁহার সর্বাঙ্গ ভয়ানক ক্রোধে জলিয়া উঠিল। তথনই তিনি নিজের জটা হইতে উগ্রদেবতার স্থাষ্ট করিয়া তাঁহাকে বলিলেন—পাপিষ্ঠ অম্বরীষকে বধ কর। উগ্রদেব আক্রমণ করিতে আসিতেছে, স্থদর্শন চক্র ছিল অম্বরীবের পাশে, সে ছুটিয়া আসিয়া উগ্রকেছিয় ভিয় করিয়া ফেলিল—তাহার পর হর্বাসাকে তাড়া করিল। হর্বাসা ভয়ে ছুট দিলেন—স্থদর্শন পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল; —বেথানে যান নিস্তার নাই, স্থদর্শন পশ্চাতে। অনেক ঘুরিয়া শেষে অম্বরীষের শরণাপয় হইলেন, তথন রক্ষা!

হ্বাসাপলাইতেছেন স্থাপনি তাড়া করিয়া
চলিয়াছে এই কৌতুকজনক দৃশুটি শিল্পী অতি
পারদর্শিতার সহিত অঙ্কিত করিয়াছেন।
ছব্বাসা কিরুপ প্রাণপণে ছুটিয়াছেন তাহা
তাহার অসভিসিতে বেশ ব্ঝা যায় ৮ পবনতাড়িত বদন প্রান্ত হইতেও সেই ভাবের
আভাব পাওয়া যায়। তিন ছুটিতে পারিতেছেন না তব্ও ছুটিয়া চলিয়াছেন এই ভাবটিও
বেশ পরিক্ট হইয়া উঠিয়াছে। তাহার
মুথে একটা অসহায়তা, একটা দারুণ ভয়ের
ভাব জাজলামান!

मान।

জানিনা দেবতা তুমি থাক কোন্ দেশে
প্থিও তার নাহি বোর চেনা,—
নাহি জানি কবে তুমি কোন্ দেব বেশে
ধর্ম মাঝে কর জানা গোনা!

জানি শুধু হে রাজন্, মোরা হেণা বাহা

স্থ আর শুভ রূপে পাই,—

নীরবে গোপনে রহি' অকাতরে আহা,

লাও তুমি, দাও তুমি তাই!!

শীক্ষীবেক্রকুমার দক।

नगटना हुन।

সরল বিজ্ঞানসোপান। অক্লবিহারী, এন,
নি, ই এইড । ১২টি চিত্র পোডিত ভবানীপুর পার্বিব
ব্য়ে বৃত্রিভ । ক্লা ১০টি চিত্র পোডিত ভবানীপুর পার্বিব
ব্য়ে বৃত্রিভ । ক্লা ১০টি চিকা, বোর্ডে বীবাই । এই
এইবানি পাঠ করিরা আনরা বিশেব প্রীতিলাভ
করিরাহি । ইহাতে জড়লগত, নক্ষত্রবঙ্গন, তর ও
স্থীপ্রহণ, জোরার ভাঁটার বিবরণ, আলোক, ভাড়িত,
নারু, প্রাণিভছ, বাছাবিবান প্রভৃতি সবতে স্থক
আলোচনা নিশিবছ হইরাছে । অধ্যাপক গিকি রচিভ
আক্রভিক ভ্লোল, হক্সলি রচিভ প্রাথবিক বিজ্ঞান
প্রভৃত্রির বভ হাত্রহাত্রীগণের পদ্দে এই প্রভ্থানি
সহিশেব উপযোগী (শিক্ষাদানের জন্ত বিজ্ঞান প্রস্থানি
স্বিশেব উপবালি টেরট্বুক ক্সিটির কর্তৃপক্ষকর্তৃক
পাঠা পুত্রক্ষ্ত্রপ নির্মানিত হইলে, আনাবিপের ছাত্রছাত্রীগণ বে উপকার লাভ করিবে ভারা নিঃসংক্ষঃ ।

ভালম্বরী: প্রভিত ভারাশ্বর তর্বরু এপ্রত अब कारनपत्न किन्नक्रक वत्नाभाषाव, वि. ७ ७ अभिनिनांत श्राक्षाणावादि कर्डक मश्कुल बुनासूबाही क्षिक्ष मञ्जामित । अकानक, क्षेत्रकाठीय मानान, े शिवान पार्निनिং हाउँम, क्लिकाठा। ১৯٠১। मृता ৰশ আৰা। কৰিবর এবীক্রণাথ ছচিত ভূমিক। এই MERS Beilegot auf Plante : 4140cha भाग्यती छावात जेवाया, छाटवत देविहत्त्वा छ मोन्दर्गत विकारन मान्य मार्थिका बन्यानि অসিত্র এছ। কবির স্থানখাটি ক্যাকগুলি ভুজার া সাধুৰ চিত্ৰের পাপ বিয়া এখন সক্ষপভাবে কৃটিয়া উঠে, বে বিশুল অলকার ও রীর্থ বচনবিক্তানের কবোও তাং। क्लानं, अमन्यारी: बरीक्षवायु कवित्र त्रीमर्ग्य-আহিতাত্ব কুলিপুৰ বিৱেবৰ ক্রিয়াছেত, ভারার मिन्न चाम अधिक बिनात किছ वु बिना नाई ना। व क्षक क्रिक्रिक्ट करू जागानिद्वत पृष्टित जनवारम विक्रिक संबंध इक्तरण पहान ७ कहानात विक्री कृत, पादा त्म क्या क्रांट्याक क्यांक क्यांट्याक्रक क्यांट्या क्यांच क्यांच क्यांच

নেই বিশ্বত প্রাতন ভারতের দরনারীবনের ক্ষরবাধা প্রেলকাছিনী, বিচিত্র প্রবর্গনীতি, বে অবলম্ব গড়ীর নবো উহাদিপের জীবনবাত্রা নির্কাহিত হুইছে, ভাষার বলোজ সরস ইলিত, আমাদিপের ক্রিক্সকে আজ কি এক অনির্কাচনীর বিস্কারণতে প্রিক্তি করিয়া কেলে। প্রস্থানির হুদরগ্রাহিতার পরিচর বোধ হর বল গরিসর ছানে আর অবিক করিয়া বলিতে হুইবে না। প্রস্থের পরিশিষ্টভাগে দীকা সরিবিষ্ট হুইরাছে। দীকা সংক্ষিপ্ত হুইলেও বনোজ। প্রস্থে পুঞাসিদ্ধ বামিনীবাবুর অভিত হুইবানি চিত্রের সমাবেশ ইহার কন্দনীরভা বৃদ্ধি করিয়াছে। বিশ্ববিধ্যালয়ের ছাত্রগণের কল্প এইরূপ প্রস্থ পাঠারানিকাত্বক হুইলে কোনপক্ষে

সংস্কৃত সাহিত্য বিষয়ক প্রেক্তাব। নীবিবেরর मान, वि. अ नव्हनित । केनिकांका, केनेनिका क्षांत মুলিত। মূল্য হয় আনা। সংকৃত সাহিত্য আমারের **ब्लाम विलाम का**नत शाहेबात वांगा क्य. अञ्चलात अथाम छात्रात कृष्टेकि माथात्रन कालन निर्माल मामन इरेब्राह्य এवः भारत मामूक कावा बावेक, रवाम ब ভिक्रिनाञ्चानि इहेट्ड मञ्जन अनुवासित महिछ विविध (ज्ञाक मञ्जलन कविशास्त्रन। श्रुवानि मःकन्तरन उत्पन्ध - सावयश्रमीय समरव मानुस साराय सप्टरान देशिक कविया व्यक्ता! केटमक नायू अवर निष क्ट्रें(व मृत्क्ष्य नाटे! कातन अध्यानि मनम হুইয়াছে। ডাৰ শেষাংশের বাজিলাত উল্লাসটুত্ আৰানিশের মতে বর্জনীর। এরণ অবহীৰ উজ্বাদের बाहरका किसाब बाबीन पछि अकिनक इस बिनियारे minifern faun !

A Discourse on The Study of Sanskrit. By Bisvesvar Das, B. A., Printed at the Wilkins Press, Price three Annas and States are supplied to the Control of the

ক্তিয়ার ২০ কবিনালৈ আই ক্তিক কেনে নীংক্তির আলা ছাল্ডারির ক্রিকান্ড ইংবাগাধার্মভাল কর্মপুরু



ত আক্রান্ত লাস-কথন শ্রীন ব সম্বোদ্ধার ৬৩ কড়ক অস্থিত ১৮১৮৮১

ভারতী।

৩৩শ বর্ষ]

মাঘ, ১৩১৬

[১०म मःখा।

পোষ্যপুত্ৰ। (প্ৰাহঃ (ছ)

() ()

বৈশ্বনাথে গিরিগর্ভন্ত মহাদেব দর্শনান্তে ষষ্ঠ দিবদ গরা ও গরা হইতে কাশীধাম পৌছিয়া শ্রামাকাস্ত দেখানে বাঙ্গালীটোলার বাহিরে একমাদের ভাড়ায় দিন পনেরোর ক্ষম্ম একটা বাসা লইয়া একবার হাঁপ ফেলিয়া লইলেন।

শাস্তি পূর্বে একবার কাশী গিয়াছিল, বৈশ্বনাথ মধুপুর তাহার অচেনা স্থান নয়, কিন্ত শ্রামাকান্তের প্রবীণা আত্মীয়ার অত্যন্ত মুগ্ধনেত্রে এ সকল স্থানের 40 ধূলিকণাটা পর্যান্ত পর্যাবেক্ষণ বালুকাময় করিতেছিলেন। বিশ্বেখরের আনন্দধাম বিশ্ব-মাভার রন্ধনশালা বোগিবাঞ্চিত পুণ্যক্ষেত্র; এখানকার পবিত্র বাতাদে সংসার-তাপদাহ क्रुफ़ारेबा यात्र। কতদিনের কাশী। এই জনাকীৰ্ ব্ৰাজ্পথ ক্ত শত শত বৎস্ব পুর্বে মহামহর্ষিগণের পবিত্র পদান্ধ বক্ষে ধরিয়া গর্ম-ফীত হইয়াছিল; এই নগর-গপন সামগানের গম্ভীরতানে স্পলনাহীন ভাবে প্রণত হইরাছিল আর আঞ্জিও এই অবনতির শেষ যুগে হিন্দুর হিন্দুর, সাধুর সাধুৰ, অহৈতবাদের অচল মহিমার মধ্যে এইখানেই° প্রতিষ্ঠিত আছে। বিদ্ধা5ল প্রেরাগ হইরা টুপুলা দিরা আগ্রা করপুর वादः खन। इरेटक भूकत जीर्व । माविकी

পাহাড়ে দেবী দর্শন করিয়া শ্রামাকাস্ত উজ্জায়নী গমন করিলেন। উদয়পুর চিতোর গড় দেখিয়া আরাবলি পর্বতপ্রাচীর বেষ্টিভ গিরিপথে কত শত ইতিহাস প্রসিদ্ধ প্রাচীন কাহিনীর করণ ও গৌরবস্থৃতি হৃদরে লইরা খণ্ডর ও বধু ফিরিয়া আজমীরে আসিলেন। আজমীরও এক বহু পুরাতন ইতিহাস-প্রদিদ্ধ অ্বসৃদ্ধ নগর। ইহার প্রাকৃতিক নুখাও অত্যক্ত রমণীয়। আরাবলির সমুগ্রত ध्मत्रवर्ग देननत्याची हेहादक हातिनिक দিয়া অটল প্রাচীরের মত বেষ্টন করিয়া রাখিয়াছে। মেঘের কোল হইতে সহরের জনাকীৰ্ণ রাজ্পথ পৰ্যান্ত দেই প্ৰাক্তিক প্রাচীর বিস্তৃত। একদিকে গিরিপ্রবাহিত সশিলরচিত স্পৃতা এদ আনারকাগর! তাহার তিন পার্শ্বে শৈলপ্রাকার; সমুখতীরে মর্মারনির্মিত নরহন্তরচিত প্রাশস্ত দালান, রেইলবেষ্টিত কুদ্র কুদ্র গ্রীমাবাদ এবং রত্বর্ফিত আধুনিক কাাসানে প্রস্তুত त्राककोत्र उद्यान। এই প্রস্তর প্রাসাদাবলী পূর্বে মহাত্তৰ সমাট আকবরসাহ এবং সাৰাহানের কাছারীবাড়ী En, ইহা চিফ কমিশনরের আবাদ। সে উষ্ঠান বাটিকার আর সে মহিমা, সে গরিমা কিছুই नाहे, এখন हेहा माधावन हेश्वाक को श्रक्ष्य দর্শকর্নের কৌতূহলরুত্তি ক্ৰীড়াকানন,

চরিতার্থ করিবার হল। আজনীরে সাধারণত এইব্যহল অনেকগুলি। আজনীর রাজবংশীর কীর্ত্তি অধুনা বাহা আড়াইরা ঝোবরা নাম প্রাপ্ত তাহার হল্পশিল ও নির্মাণকৌশল অপুর্ম। ইহার অসমাপ্ত অবস্থাতেই হিন্দু সোভাগ্যস্থা অন্তমিত হইরা গিয়াছিল। মুসলমান অধিকারের পরে ইহা পুনঃসংস্কৃত ও সমাপ্ত হর, এবং ইদানীং ইহার শোচনীর ধরণদের ও উপরে আমাদের রাজপুক্ষগণের করুণ দৃষ্টি নিপতিত হইরাছে।

ভারাগড় চর্গে এখন বিদেশী বিশ্বেতার বৈজয়স্তি উড়িতেছে। ধূদৰগিরি মালার উচ্চতর গিরিচ্ডা প্রাচীন ভারত ইতিহাসের একটি গৌরব চিহ্ন। সেই উন্নত ছৰ্গ শিরে সমগ্র রাজপুত জাতির বিগত পুণাগৌরবময় রক্ত পতাকা তাঁহাদের বিভীষিকামর বেদনাস্বৃতি वीत्रज्ञनस्य এक জাগাইয়া রাখিয়াছে। তারাগড়ের ঠিক নীচেই পর্বতের-গাত্র হইতে আরম্ভ করিয়া সমতলভূমি পর্যান্ত বিস্তৃত মুসলমানের পুণাতীর্থ আজমীর সরিক। ইহা ধর্মের সহিত ঐথর্বোর মিলনে পবিত্রতার ও দৌন্দর্যো ভারতের একটি শ্ৰেষ্ঠ দৰ্শনীয় স্থান। ভক্তের ভক্তি আরাধনার নিমিত্ত আন্তরিক প্রবাস ইহাতে হইতেছে। অতি পুরাতনকাল হইতে বর্তমান-काल भर्वाष्ठ সমস্ত সম্রাট, নবাব, দেনাপতি, ও ,ওমরাহগণের কিছু না কিছু কার্ত্তি চিহু इहात्र महैशा बाह्हि। वावत, हमातून, चाक्यत्रगह, झाहांनीत, चात्रत्वत, हहेएड हांब्रमोत्र भवां यहां यहां यनायकां उ वास्तित अक, धक्छ (शंहे, मन्जिन, वा क्लान किडू नाम अथन । छाहातमा नामत्क अथात्व मसीव वाथिवाटकः। देशालव मध्या निद्योषटतत्र अन्ञिन ভক্তোজনোচিত পৰিত্ৰ, এবং সৌধিন সম্ৰাট সাহজাহানের মর্ম্মরপ্রাদাদ ভাঁহারি কচিত্র অমুরুপ। প্রবেশবারের উপর নহ্বৎথানায় চিতোরলুঞ্চিত বিগত গৌরবচিহ্ন জয়ঢ়াক, এখনও তেমনি মেঘমন্দ্র স্বরে श्राहत, श्राहत वासिया डिर्फ। किस तम मक রাজপুত হিন্দুর হাদরে আর তেমন অশনি निर्दाय विषय्नी वास्त्र कि? रत्र हिन्तू आत नाहे त्म वित्कृ यूमनमान आद नाहै। ইহা ভিন্ন রাজকুমার কলেজ, প্রভৃতি আধুনিক কালেরও কিছু কিছু দ্রপ্তবা আছে। বনপর্বতমালাপরিবেটিত নিৰ্জ্জনকানন মধাবর্জিনা সাবিত্রী পর্বতের উচ্চচ্ছ মন্দিরাভাস্তরে খেত প্রস্তরময়ী অপূর্ক শিল্লকলার আদর্শমূর্তি সাবিজী ও সরস্বতী व्यधिष्ठि । উচ্চ माञ्चेत्रा ठातिनिटक ठारिया দেখিলে মন এক অনমুভূতপূর্ব শান্তির্সে পরিপ্লত হইরা বার। বিশ্বশিলির অন্ত শিল্পচাতুর্যোর মধো ইহাও त्मोन्पर्या। नौनाकात्मत्र नौत्र य**छ**प्त हाविश्री Cनटथा ध्मत टेननमाना **এवः डे**ळ नौठ श्राम বৃক্তশ্ৰণীর মধো কৃত বৃহং গিরিতর্লিণী দকল এবং একপাৰ্বে মারোরার-মকুবালুর

শাবিরীদেবীকে সিন্দুর্বান স্ত্রীলোক্ষর কার্যা সোবিরীদেবীকে সিন্দুর্বান স্ত্রীলোক্ষর কার্যা সেই রক্ত শাবাকান্ত সাবিত্রী না গিলা প্রবেই বথাক্তর সন্পর করিরা হুদতীরে নির্দিট বাসাটতেই সাধাহিক বিশ্রাম করিতে লাগিলেন। শান্তি বধন কিরিয়া আসিল তথন পাঞ্জার পাঞ্জনা পঞা লইরা তারার, সহিত

व्यक्षेत्र सम्बद्धाः

সরকার মহাশরের একটুথানি বিবাদের হত্ত্ব-পাত হইরাছে। সেই গোলমালে জমীদার শ্বহাশর ঘুন ভাঙ্গিরা উঠিয়া বধুর আগমন বিলম্বে উৎক্টিত হইরা উঠিয়াছেন,—এই সময় শাস্তি ঘরে চুকিয়াই সাগ্রহে বলিয়া উঠিল "কি চনৎকার মূর্ত্তি ছটি জ্যেঠামশাই। আমার ইচ্ছা করছে আমাদের লক্ষ্মপুরে অমনি মূর্ত্তি ঘটি থাকে। আহা আপনি যদি দেখতেন।

শ্রামাকান্ত বধ্র পরিশ্রমে ঈবং মান ও ও ভক্তি আনন্দে সম্জ্ঞান মুথথানির দিকে সম্প্রেহে দৃষ্টি করিয়া ঈবং হাসিয়া কহিলেন "কেন মা! এই যে তারি ছায়া আমার ভক্তিমতী জননীর মধ্যে আমি দেখতে পাছিছ! মায়ের অরপূর্ণা মূর্ত্তি মায়ের করালিনী মূর্ত্তি লিল রাজরাজেশ্বরী কমলা প্রভৃতি সকল মূর্ত্তিই তো আমি আমার্ক্ত করি। শুব ভাল লাগলো মা ?"

শান্তি এ অযোগ্য প্রশংসাবাদে লজ্জা-কুষ্ঠিত ভাবে চোথ নীচু করিয়া উত্তর করিল "ধুব ভাল লাগলো।"

উজ্জিনী হইতে ফিরিবার মুথে আজমীরে যেদিন বিশ্রাম লওয়ু ইইল সেইদিন রাত্রে শ্রামাকান্ত একটু জরামুভব করিলেন। শাস্তি তাঁহাকে হোমিওপ্যাথি ওমুধ থাওয়াইয়া অনেকরাত্রি পর্যান্ত পাথা করিয়া ঘুম পাড়াইল কিন্তু মনে মনে সে বড় উল্লিয় হইয়া রুহিল। বীদি জ্যাঠা মহাশয়ের অমুথ বাড়ে! এ বিদেশ বিভূঁরে নারীবাহিনী লইয়া কি বিপদ! সেদিন স্বামীর উপর তাহার ভারি রাগ হইল। তিনি যদি নিতান্ত স্বার্থপরের মতন নিজের কথাই শুধুনা ভাবিয়া একটু ব্লাঠামহাশরের কথাই শুধুনা ভাবিয়া

কিন্তু পর্যাদন প্রভাতে শ্রামাকান্ত ক্ষ্ম হইরাই
জাগিলেন। সে যেন হাঁফ ছাড়িয়া বাঁচিল।
কোলের ছেলেটিকে স্কুম্ম হইতে দেখিলে
মা যেমন নিক্ষেগ হয় সেও সারারাত্রির
পর তেমনি শান্তি অম্ভব করিল। শান্তির
সাগ্রহ প্রশ্নের উত্তরে শ্রামাকান্ত বলিলেন
ব্যার এমন সেহময়ি মা সঙ্গে রয়েছেন
সে কি বেশিক্ষণ অম্ভ থাকতে পারে?
চলো মা আমরা আজই বেরিয়ে পড়ি।"
তাঁহারা কুক্কেত্র, জালামুখী, ও হরিষার
মুরিয়া মথুরা র্লাবন দর্শনে গমন করিলেন।

কুকক্তের স্বিভৃত ময়দান ও ধান্তক্তে সকল এখনও দেই সব পুরাতন যুগান্তব্যাপী মহাস্মৃতি বক্ষে ধরিয়া পড়িয়া আছে! উদাস আকাশে মহাগাম্ভীর্ঘাময় অব্যক্ত হার এথনও মহাভারতের মহাধজের কাহিনী ব্যক্ত করিতেছে! এদেশের মৃত্তিকা এখনও সেই স্রোতোবাহিত শোণিতে রঞ্জিড; বাতাস-শোক গাথায় মিয়মান ! অঞ্চর্ভনেত্রে স্থূদুরে চাহিয়া বাশিকা এক অজ্ঞাত ব্যথায় স্তম্ভিত হইলা রহিল। হারলারে হিমরাজের ভীমকান্ত শোভাও ধ্বলতরঙ্গার অনিক্রিনীয় শোভা দেখিয়া সবচেয়ে শাস্তি বিশ্বয় জড়িত আনলাহভব করিল। বিবিধ বর্ণের **প্রভর** সকল শৈলজা-জাহুবার অমল সলিলের ভিতর হইতে বিচিত্ৰ ভাবে প্ৰকাশ পাইতেছে। বিল্পের ও নীল পর্বত লগনে মস্তক উত্তোলন পূর্বক জননীর 'ইক্রমুকুট মণি রঞ্জিত চরণের প্রতি চাহিয়া মহাধানে ময় হইয়া গিয়াছে। জলমধ্যে মৎসগণের নিভীক আনন্দ ক্রীড়া চকু ভরিয়া দেখিবার সামগ্রী। .ভীরে ক্ষুত্র জনপদ বান্ধার দোকান গইরা পর্বত গণ্ডির মধ্যে সীমাবদ্ধ, সংযত। শাস্তি
মংসদের আহার দিয়া বানরকুলের হাতে বড়ই
নাকাল হইল।

তার পর দুখ্যপট পরিবর্ত্তন হইয়া গেল। মপুরার ছই সপ্তাহ কাটাইয়া তাঁহারা বুলাবন यांका कतिरंगन, यारेवात श्र्विमान भावि विश्रास ঘাটে ও সভীঘাটে আরতি দর্শন করিয়া আদিল। সভীন্তম্ভ দেখিতে দেখিতে ভাহার मन এकंটা অপূর্ব শ্রদার ভারে নভ হইয়া পড়িব। সেই অতুন্য আত্মত্যাগী প্রেম ও সতীম্বের পুণাপ্রভাব অমুভবে সে আনন্দে निम्लान इरेबा ठाहिल। এ কীর্ত্তি আর काशाद्या नरह, ७४ जात्रजत्रमगीत! সাগ্ৰহে মধ্যে চাহিয়া অন্তর দেখিল। मिथिया निष्कृष्टे क्रेयर विश्वय छ বেদনা করিল। কই পুরাকালীন আত্ম-দানকারিণী পুণাবতী সতীর ক্লায় কি त्म छाहात्र श्रामीत्क छान वारम ? किंड्रे स्म ভাবিশ্ব-স্থির করিয়া উঠিতে পারিল না, বাসে-विव ? किंद्र करें यनि जाशारे रहेज जदव এতোদিন কেমন করিয়া সে স্বামীকে ছাড়িয়া ন্তনত্বের আনন্দে বিভোর হইয়া আছে! मिनिनि हरेल शांत्रिक ना, रमक्वके, रमक ঠাকুরঝি নির্মালা, মালতি, কেহই পারে না। কই বেমন ওনা যায় দেবতার চেয়েও স্বামীকে ভক্তি করা উচিত দেকি তাই করে ? না ত্তদ্র কৈ ? তবে কি সে স্বামীকে ভাল-वाटम ना 📍 भावि मात्राभथ गाज़ित मर्था हुन ৰূরিয়া বঁশিয়া ভাবিল, হাঁ বাদে বই কি ৷ তাঁহার একটু মাৰা ধরিলেও তো সে বেদনা বোধ করে ৷ তবে ৷ বাড়ি ফিরিয়া কাল কর্ম দারিরা ^কভরকে ঘুমপাড়াইরা আহারাত্তে

निष्मत्र चरत थारवण कतित्रा नहीत सिरकत् জানালা খুলিয়া জোৎনার আলোকে বৃদিয়া একটা নৃতন কণা ষেন ভাহার বেধনার यरश বাক্ত হ ইয়া পড়িডে क्रांश्नि। তাহা বুঝি আর চাপা দেওরা চলে না! বুঝি হেমেন্দ্রই ভাহাকে ভালবাদে না। বংশমগ্যাদায় হেমেক্স যে শাস্তির পিতা অপেকা অনেক বড়,—ধনে মানে তিনি বে তাহাপেকা चारतक नौरू अगव कथा मर्त्राहर छाहारक স্মরণ করাইতে হেমেক্স ভুল করিত না। কই একটি দিনও তো শাস্তির একটা কাঞ্জকেও তিনি সহায়ভূতির চকে দেখেন নাই! তাহার সকল কার্য্যেই একটু লেবপূর্ণ বিজ্ঞাপের সহিত কথনও অল্ল কথন তাত্র সমালোচনা করা ছাড়া আর কি বলিয়াছেন ? বিছ্যা, পণ্ডিত মশাই, এজিটেটার প্রভৃতি শক্তলাই ত ठाँशांत्र मानत मुखायण! मनियारम भावि ভাবিশ "কেমন করিয়া আমি তাঁহার মনের मछन रहेर ? आकीवटनत ममूनम मःयात শিকানা ভূলিতে পারিলে বুঝি ভাগ্যে দে হৰ নাই ? কিন্তু তাই কি ? কেন পারিব না ? চেষ্টা করিলে, প্রাণের সহিত হতু করিলে পারিব বইকি। সত্য কি তিনি নির্ভুর! অগতে সকলেই ভ দেবতা নয়; মাতুৰ কিন্ত অনেকেই; তিনিও তাহার মধ্যে একজন। তাঁহার মন বুঝিয়া আমার চলিতে হইবে।"

দেবতার কথার আর একজনের কথা মনে পড়িল, তাঁহাকে সে দেবতা বলিয়াই মনে করে। সে ভানিরাছে মিঃ রাম এখন তাঁহার কর্মকেন্ত কভথানি উন্নত করিয়া তুলিয়া ছেন। ভিনি ভাহার সম্পূর্ণ ধ্বনয় সেবাবতে নিয়োজিত করিয়া ধ্থাশক্তি সংদেশ

হিতত্তত অস্তরের সহিত পালন করিতেছেন। শান্তি বাহা ভয় কেরিয়াছিল তাহা ফলে নাই, · দে অংশত তাঁহার এই উরতির মূল ইহা বুঝিয়া ভাহার গোপন বেদনা অনেকাংশে প্রশমিত হইয়া গিয়াছে। সে শুনিয়াছে তিনি বিশেষ যদ্ধ ও চেষ্টায় একটি অনাথ আশ্ৰম ও সংস্কৃত বিভালয় স্থাপন করিয়াছেন। নিজের বাবসারের সমুদর আয় তাহারি জ্ঞ वाय करबन। निष्कु कर्छात्र बन्नाहर्या **সংসারের সমুদর ভোগত্তথ** ডুবাইরা দিয়া कक्षां चर्च व्यथानिनां करतन । यार्शक्त वरन, তাঁহার গুরুদেব একজন অসাধারণ ব্যক্তি। মুগ্ধ। শাস্তি তাঁহার উদ্দেশ্তে বার বার করিয়া প্রণাম করিল। তার পর সে সাঞ্জ-নেত্রে ভক্তি গদগদ কণ্ঠে কহিল "তোমায় -শ্রদ্ধা করিতাম ভক্তি করিতাম এখন পূজা করি; তুমি এতো মহং ! এতো উচ্চ !"

পরদিন যাইবার গোলমালের মধ্যেও
শাস্তির মনটা কেমন যেন পূর্বরাত্তের গোল-যোগে বিমর্থ বিমর্থ হইয়া রহিল। শ্রামাকাস্ত সেটুকুও লক্ষ্য করিয়াছিলেন, জিজ্ঞাসা করি-লেন "শরীরটা কি ভাল নাই মা ?" শাস্তি চোণ তুলিয়া বিষর ভাবে হাসিল; মৃত্ত্বরে উত্তর করিল "আমিতো ভালই আছি জ্যেঠামশাই।"

বৃদ্ধ নিজিত মুখে ভাবিতে ভাবিতে প্রশ্ন করিলেন "রজনীর চিঠিতো কাল এসেছে! স্থ প্রকাশও তো লিখেছে মা ?" শাস্তি ধীরে ধীরে উত্তর দিল "হাা জ্যেঠামশাই তারা স্বাই ভাল আছেন।" শ্রামাকান্ত ঈবং ব্যথিত নিশাস কেলিলেন "মা হেমতো আর শামাদের চিঠিপত্র লেখে না!" সে কথার

শান্তির বুকের মধ্যে থানিকটা রক্ত, আসিয়া জন্পিণ্ডের উপরে ছলাৎ করিয়া পাড়ল। একটু থানি মুখ নীচু করিয়া সে অঞ্চলের স্থা টানিতে লাগিল তাহার গালহটো ও কপালটা একটুখানি যে লাল হইয়া উঠিয়াছিল—পাছে জ্যেঠামশাই ভাহা ধরিয়া ফেলেন, ভাই ভাবিয়া সে সেই রক্তিমাকে আরো বর্দ্ধিত করিয়া তুলিল।

খ্যামাকান্ত তাঁহার বড় আদরের বধ্র প্রতি হেমেন্দ্রের এমন উদাসীন, অনাগ্রহ ব্যবহারে मन मन वष्टे वाथाश्च कविरुक्त। रहम যে তাঁহার সহিত্ত বেশ সম্ব্যহার করিত তা নয়; কিন্তু নিজের প্রতি অসন্মান সহু করা যায় কিন্তু শান্তির অপমান অসহা তবুও পুথ বুজিয়া সব সহা করিতে হইত। কারণ দে শান্তির স্বামী,—দে যদি তাহারই শাসন না মানে তবে কেমন করিয়া তিনি তাহাকে সংশোধন করিবেন! বিশেষ এখন আর সে मन्त्र वन ७ नाहे त्म किष्टे! वा উक्रम किष्ट्रहे নাই। সে সবি সেই একজন সঙ্গে লইয়া চলিয়া গিয়াছে। এমনি করিয়া তিনি তাহার সকল অন্তায় সকল আন্ধার সহিয়া তাহার অন্তারের মাতা বর্দ্ধিত করিখা তুলিতেছিলেন। ইহা যে শান্তির পক্ষেই অধিক ক্ষতিজনক इटेट्ड हेश कानिया व्विधा अ त्नोर्क्सलात বশে পড়িয়া কিছুমাত্র প্রতিকারের চেষ্টা করিতেও পারিতেন না। সত্য কথা বৃ্লতে গেলে বালতে হয় খ্রামাকান্তের প্রয়োজন ছিল শাস্তিকে; হেমেক্র তাঁহার তেমন বেশি লোভ-नोत्र नटि। किंद এখন आत छारा वना हरन ना; त्म (य भाखित स्वामी, भाखित हित्रकोवत्नत् स्थ ত্ব: ধ যে একান্ত ভাহৰ তাহারি উপর নির্ভর

করিভেছে একথা তো অগ্রাহ্ম করিবার নর।
ভাই বখন মনে হয় লোভপরবশ হইরা
শান্তিকে তিনি অবোগ্য হল্তে প্রদান করিরাছেন, তথনি আত্মানিতে হাদর ভরিরা উঠে।
কেমন করিরা হেমেন্সকে ভধরাইরা
ভূলিবেন কি করিলে শান্তির স্থথ অবিচ্ছির
হইতে পারে এই কঠিন সমস্তা যতই জটিল
হইরা উঠে, ব্যাকুলতা ততোই যেন বাড়িতে
থাকে। এই সমর নিজের ছেলের প্রতি
অভ্যন্ত কোথ জন্মে। সে যদি কিরিরা আসিত!
সেই ভো তাঁহাদের সব ছংথের মূল!
সেইদিনই দেওয়ানকে পত্র লিখিলেন—

"হেমকে বলিও সে বেন ছই একদিন অস্তর পত্র লিখে। তাহার হস্তলিখিত পত্র না পাইলে আমাদের ভৃপ্তি হয় না। সে বেন ইহার অস্তবা না কয়ে। সে এখন কোবার আছে তাহা জানিনা বলিয়া তাহাকে পত্র লিখিলাম না; ভূমি এ পত্র তাহাকে দেখাইও।"

কর্মদিন পরে উত্তর আসিল ছোটবার্
কলিকাতা হইতে আসিলে তাঁহাকে আপনার
পত্র দিলাম। তিনি পাঠ করিরা বলিলেন
তাঁহার আজকাল সেরপ অবসর নাই, সেজস্ত
আপনাদের বাস্ত হইবার প্রয়োজন কি? সংবাদ
তো পাইভেছেন। নারারণগঞ্জের বাগানে
সাহেব ভোজের জন্ত আমরা সকলেই অত্যস্ত
ব্যস্ত আছি, বোধহর ইহাতে পাঁচহাজার
টাকা, থরচ পড়িবে। রাজরাজেবরী দেবীপ্রতিমা গঠন প্রার শেষ হইরা আসিরাছে,
বোধহর ভাত্র প্রিমার সমরে দেবী প্রতিষ্ঠা
করান ইরা উঠিবে। মন্দিরেরও আর অধিক
বিলম্বাই। কিন্ত অতিথিশালা বাড়ান এবং
ভাজ্যের্থানা ও ক্রিরাজিক চিকিৎসালর, শেষ

হইতে কিছু বিশব হইতে পারে। লাহা
হউক সমস্তই ভাজ পূর্ণিমার একপ্রকার
দাঁড়াইরা যাইবে। সেই সময় মাতাঠাকুরাণীকে
লইরা আপনি আসিলেই সমস্ত প্রস্তুত দেখিবেন এবং নি:সন্দেহ সম্ভুই হইতে পারিবেন।
ছোটবাবু স্বয়ং ম্যাজিপ্রেট সাহেবের নিকট
গিরা পঞ্চাশ হাজার টাকার সহি দিয়া আসিয়াছেন শুনিলাম। সাহেবের প্রশ্রে বলিয়াছেন
'আপনার ইচ্ছাতেই তিনি ইহা দিতে স্বীকার
করিতেছেন। শুনা যায় সাহেব আপনার
জন্ত 'রাজা' থেতাবের চেটা করিবেন।'

স্থামাকান্ত এ পত্ৰ শান্তিকে দেখাইতে পারিলেন না। সরোধে পত্রথানি ছি'ডিয়া क्लिया वक्कवाक्थां। এक नमस्य वश्रक বলিলেন। শাস্তি খুদী হইরা বলিয়া উঠিল [®]আমার ঠাকুর কি ভেমনি ফুলর হবেন। আমি কিছ কাশী থেকে জরি চুমকি এনেছি তারি কাজ দিয়ে বেনারসী সাড়ি তৈরি করে পরাবো। আর অনেকগুলি গ্রনা করাতে रूरत, ना स्काठीयभारे! ना रूटन यानारव কেন ? ঠাকুরের মাপ নিয়ে কাকা যেন চুড়ি বাউটি আর সোনার মল গড়িরে রাথেন। বাকি আমি নিজে পছন করে গড়াবো। পুব ভাল করে সাজাতে হবে জাঠামশাই! ना इत्न बाजबादजचती मूर्खि मानारव रकन? व्यामास्त्र मा তো गला कानानिनी नरहन। वावा वरलन, छिनि नरेक्षधंग्रमत्री करीकावी; তার তেমনি মৃত্তি হওয়া চাই।"

মুগ্ধ প্রামাকান্ত কহিলেন "তুই বা করবি তার কি কিছু খুঁৎ থাকতে" পারে মা! এতোছিন বন্দের ধন কেবল সঞ্চরই করেছি। তার ধে এমন সহার হবে, তা স্বপ্নেপ্ন ভাবিনি। তোষার আতৃরালর ও অতিথিশালার ,বন্দোবস্তও নৃতন করাচিচ। এবার ছম্মন ভাল ডাক্তার ও একজন কবি-রাজের জন্ম রজনীকে লিখবো।"

আনলে বালিকার উজ্জ্বল চক্ষু বিক্ষারিত হইরা উঠিল "এবার অনেক লোক থাকতে পাবে তো ? সে বেশ হবে। এটার নাম কি থাকবে জ্যোঠামশাই। ওর নাম থাক না কেন "রাজরাজেশ্বরীর ভাণ্ডার।"

76

বুন্দাবনে যমুনাতীরে তেমন স্থবিধা মতন ভাল বাড়ি পাওয়া গেলনা সেই জন্ম একটু দুরে রাস্তার উপরেই এক প্রকাণ্ড পাথরের বাড়ির একটা অংশ ভাড়া লওয়া হইয়াছে। वानरन चारहे বেশি লোকজন **এ**সদিন নাই। একটু বেলা করিয়া সকলকার কাছে সামুনরে সম্মতি সংগ্রহ করিয়া শাস্তি यथन প্রাচীনা, অর্দ্ধ প্রাচীনা, এবং অল সংখ্যক যুবতী বালিকাদলের সহিত যমুনায় করিতে আসিল তথন বুটি থামিয়া গিয়াছে। ঘাটে জনতা করিয়া ব্রজবাসী জ্রীপুরুষ সান করিতেছিল এবং পৃথক এক পাশে একটি বাঙ্গালির মেরে কাপড কাচিতেছিল। শাস্তি তাহাকে দেখিয়া সানন্দে তাহার মাসতুত यात्क जनिन 'रमञ्जीन रमर्था (मरम् छि (कमन • स्कार १" (मक्तिकि यूवडोब किंदक অপালে চাহিয়া তাচ্ছিল্য ভাবে উত্তর করিলেন "ফুম্বর তো কতো! নাও মান করে মাও, পৃথিবীর লোকের স্কে भागातित (बांक कि ?

কোপড় কাচিয়া একটা ডুব দিয়া উঠিয়া

বুবতি সিঁ.ড়িন উপর হইতে পিন্তলের কলসী তুলিতে গিয়া দেখিল, এক যোড়া উজ্জ্বল কালোচোধ সিঁ.ড়ির উপর হইতে বিশ্বয়ের সহিত তাহাকে লক্ষ্য করিতেছে।

শান্তির একেই মিণ্ডনে স্বভাব। তাহার উপর এই খোট্টার মূলুকে অলবয়স্থা সুন্দরী বাঙ্গালিনী দেখিয়া সে মনে মনে ভারি সুক হইয়া উঠিল। লোভ সম্বরণে অক্ষম হইয়া ধীরে ধীরে তাহার কাছে আসিয়া একটুশানি মাত্র ইতন্তত করিয়াই মৃত্রুরে জিজ্ঞাসা করিল "তোমার বাড়ি কোথা ভাই! "যুবতী ঈষৎ বিশ্বিত ভাবে শান্তির আপাদ মন্তক ক্রিয়া পর্যাবেক্ষণ দেখিতে উত্তর করিল "আমাদের এই ঘাটের উপরেই বাড়ি। আপনারা কোথা থেকে এসেছেন ?" শান্তি মাথায় নদীরজন একটু ছিটাইয়া দিয়া আনতাপরা পাছটি অলে ডুবাইতে ডুবাইতে কহিল "আমাদের ৰাজি লক্ষীপুরে। আচ্ছাভাই এখানে তোমরাও তো তার্থ করতে এসেছ ?"

"না, এইথানেই আমাদের বাড়ি।" "বাপের বাড়ি না খণ্ডর বাড়ি?" "বাপের বাড়ি!"

"আছে। তোমার খণ্ডর বাড়ি কোথার ভাই ?"

এ প্রশ্নের উত্তরে রমণী ধীরে ধীরে একটা
নিখাদ ফেলিয়া অন্তচ্চ স্বরে উত্তর দিল 'কানি
না।' বলিয়াই ঈবং মুখ ফিরাই ৯ নাথা মুছিতে
লাগিল। উত্তর শুনিয়া শান্তি আশ্চর্য্য হইরা
গেলেও দে বিষয়ে তথন দে কৌতুহল দমন
করিয়া রাখিল। কিন্তু অন্ত্রণটার মধ্যেই দে
কানিয়া লইল যে ভাহার নব পরিচিভার নাম

শিবানী, তাহার একটি শিশুসম্ভান ও মা ভির আর কেহ নাই।

ভনিয়া শান্তির বড় কট বোধ হইল।
শান্তির সন্ধিনীরা তাহাকে 'গুঁড়ি 'গুঁড়ে'
'বৃষ্টিতেও দাঁড়াইয়া বাহার তাহার সহিত
বহুক্ষণ গরুকরিতে দেখিয়া মৃহ মৃহ অনুযোগ
করিতে লাগিলেন। মাসিমা বলিলেন,
একি মা ভোমার লীলাথেলা! নিজের
সোনার 'শরীরে একটুও কি মায়া নেই গা!

কাকিমা কহিলেন'পাগলীর বেটির আমার সকল তাতেই পাগলামী। এখন কি তোমার মাঠে ঘাটে দাঁড়িয়ে থাকা উচিত ৰাছা! নাও চান করে ঘরে চলো অহুথ বিহুথ হয় তো আমরা মাথা চাপড়ে মরবো তখন। "ঠানদি কহিলেন" নাত বৌ তোর ভাই সকলি বাডাবাডি। যদি ব্যারাম হয় প্রামাকাস্ত ষামাদেরই বকবেন, ওঠ।" অপরা আর একটু मोखा ठड़ारेलन; जाँहन निया वधुत अव्हत বৃষ্টির জলজণা মুছাইয়া কহিলেন "আহা মা বেন আমার এ পির্থিবির নন ৷ অনাথ মাতুর रमथरन, मारबज व्यामाज कि व्यानि गतन পড়ে। তা যেও গো বাছা। একদিন আমা-দের বাসার বেও। মারের আমাদের দরার भनोत्र।" भाखि लब्बाब (यन माष्टि श्रेयां (शल। শিবানীর স্থির চক্ষে ঈষং কৌতুকের হাসি অতাস্ত मसर्भात कृषिया छिठिन। तम कनमोठा नहेवा আবার ললে নামিরা গামছা কাচিতে লাগিল। কাছে আসিয়া সনজ্জে চুপি চুপি শাস্তি ভাহাকে ৰশিশ "ওঁদের কথায় তুমি কিছু মনে করো না ভাই, মাপ করো।" শিবানীর দৃঢ়বছ ওঠে একটুৰানি অবভার হাসি ফুটতে ফুটতে আবার মিলাইয়া গেল, েনে তেমনি প্রশাস্ত-

ভাবে উত্তর করিল 'কিছু না।" "ঝারপর ভিজা গামছা কাঁধে ফেলিয়া মাজা কল্মীতে জন ভরিতে লাগিল। সঙ্কৃচিতভাবে শান্তি কহিল "আছা ভাই কাল আবার এই সময় স্নান করতে আসবো তুমিও তখন এসোনা ? তোমাদের বাড়িতো খুবই কাছে।" শিবানীর পক্ষে এ নিমন্ত্রণে আগ্রহ বা অনাগ্রহ কিছুই ছিল না। সে শাস্তির গহনা বস্ত্ৰ∙ও সঙ্গের লোকজন দেথিয়া ভাহাকে 'বড়লোকের ৰধু' বলিয়া বুঝিয়াছিল। গরীৰ শিবানীর প্রতি তাহার এই সহদয় বাবহার, **ट्रिश शैठिकत्मत्र मधा विनद्या मत्म इत्र** তাহা পাইবার জন্ত শিবাণী কিছুমাত্র উৎস্থক পृथिवीत्र मस्या এইটিকেই मवटहरत्र दवनि चुना करत्र। शास्त्रित्र দেইজন্ত দে টলিল না। নিজের অকুগ্র গর্কের মধ্য হইতে স্বৰ পাষাণ প্রতিমার মতন ঈষৎ মন্তক সঞ্চালন বারা সম্মতি প্রকাশ করিয়া কোনদিকে আর লক্ষ্যমাত্রও না করিয়া পূর্ণকুম্বকক্ষে ধীরে ধীরে উঠিয়া চলিয়া পশ্চাতে আর বারেকও ফিরিয়া দেখিল না। ভাহার আর্দ্র বস্ত্র হইতে জল ঝবিয়া ঝবিয়া পড়িতে লাগিল। পদ চিহ্নগুলি সিঁড়ির ধাপের উপর কিছুক্রণ পৰ্যান্ত লিখিত হইয়া বহিল। ভিজা কাপড় তাহার কাণবেহে সংযুক্ত থাকিয়া তাহার মান সৌন্ধ্য বিকাশ করিয়া তুলিতেছিল। त्म मक्नि मास्त्रिक होएं আকুইভাবে ঠেকিতেছিল ! শে নুতন (महेनिटक वहकन हाहिया दिला। "

সেদিন ৰাড়ি ফিরিয়া ভাড়াভাড়ি পটুবল্ল ছাড়িয়া খণ্ডরকৈ প্রভিদিনকার সত্ই ধাওৱাইতে বদিলে, ভাষাকাত সহসা আজ আবার প্রশ্ন কুরিলেন "হেম কি চিঠি शिटबट्ड ?" भाखि नौत्रद घाड़ ভাহার নিজের ছ:থে সে তাঁহাকে ছ:খিত করিতে নিতান্ত অনিজুক থাকিলেও মিথ্যা কেমন করিয়া বলিবে! খ্রামাকাস্ত व्यात এकिं कथां अना विनया, नौत्रद बाहात করিতে লাগিলেন। আককাল এই ছোটখাট ব্যাপারটি শইয়া তাঁহার মন অত্যস্ত উত্যক্ত হইয়া উঠিতেছিল। নিজের দিনতো ক্রমেই শেষ হইয়া আদিতেছে, কিন্তু তাঁহার এই জীর্ণ তরীতে যে কুদ্র আরোহীটিকে তিনি কূলের আশ্রম জনপদ হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া তুলিয়া লইয়াছেন, মাঝনদীতে তাহাকে তিনি কোন व्यानाष्ट्रि माबित हाट्ड फिनिया गाँरदन। একি করিলেন ? নিজের স্বার্থ খুঁজিতে গিয়া শান্তিকে তিনি কি জন্মছ:থিনী করিয়া ফেলিলেন নাকি? হেম একি হইয়া উঠিতেছে। মনের হু:থে তাঁহার দেদিন আহার্য্য বেন মুথে উঠিতে চাহিতে ছিল না।

শাস্তি ভাহা ব্বিতে পারিল, সে তাঁহাকে
ভূলাইবার চেষ্টার অন্তকথা পাড়িতে
গেল; "আজ ঘটে একটি বাঙ্গালীর মেয়ে
দেখে এলাম জ্যোঠামশাই, আহা তার একটি
ছেলে ভিন্ন আর কেউ নাই। তার বড়;কষ্ট
না জ্যোঠামশাই?" শ্রামাকান্ত এ সংবাদে
একটু সহামুভূতি দেখান উচিত ভাবিয়া
বলিলেন "সত্যি! বড় কষ্ট তো।"

হাঁ।, জাঠামশাই ! তার বজ্ঞ কট বই কি ! সে সধবা কিনা জানি না, সে কথা কিছু বল্লে না, কিছু হাতে ছগাছা লোহা আছে । তাতেই ভাকে কতো কুনার দেখাচে।

তার ধরণও খ্ব উঁচু। আর তার মুখথানি
কি স্কর ! চোধহাট ঠিক বেন স্কুর মতন।"
ভামাকান্ত ঈষৎ সেহের হাসি হাসিলেন
"তাকে কিছু কি দিতে হবে ? সে তোমার
সঙ্গে এসেছে ব্ঝি?" শাস্তি অপ্রতিভভাবে বাধা
দিল "নানা, সে খ্ব গরীব নয় । সে কিছু
চায় না। আছো জোঠামশাই! আমি বদি
লান করতে গিয়ে তার বাড়ি ঘাই ভাহলে
কিছু দোব আছে ? ঠিক ঘাটের উপরেই
তাদের বাড়ি। আমার তাকে খুব ভাল
লেগেছে।" "কেন মা! তুমি বা ইচ্ছা করো
কথনোতো অস্তার ইছো করোনা! তাতে দোব
কিসের ? তোনার মাসিমাকে নিয়ে যাও।"

(66)

প্রথম প্রথম সানের ঘাটে ও ভারপর হপুরবেলা শিবানীর জীর্ণ গৃহেও শাস্তি আসিতে আরম্ভ করিল। শিবানী প্রথম প্রথম ইহাতে ভারি অশান্তি অমুভব করিত। কারণ মামুহ বাড়ি আদিলেই ভদ্ৰতার থাতিরে তাহার সহিত কথাবার্ত্তা কহিতে হয় তাহাকে একটু যত্ত আতিথা দেখাইতে হয়। কিন্তু শিবানী তাহার নিজের অভেন্ত গান্তীর্ব্য বর্ম পরিয়া চারিপাশের পৃথিবীটাকে নিজের হইতে বছদুরে ঠেলিয়া সরাইয়া দিয়া নিজের অচল ধ্যানাদনে স্তব্ধ হইয়া থাকিতেই ভাল-বাসে। সেইজন্ম শান্তির অতিরিক্ত আদর তাহার পক্ষে প্রথমটা ক্লেশ্বায়ক হইয়া পড়িয়াছিল। সাধক তাহার সাধনার ব্যাঘাতে বৈমন কট অমুভব করে, সে তেমনিতর একটা ব্দবছৰ বোধ করিত। কিন্তু সৌন্দর্য্যের কি একটা অপ্রতিহত ক্ষমতা আছে সে সৌন্দ্র্য্য वाहित्त्रत वा जिल्हात्रत दशेक ना दकन, ভাহার সংস্পর্শে আসিলেই চুম্বকার্ট্ট লোহের ভার আরুট্ট হইতেই হইবে। শান্তির এই উভষ সৌন্দর্য্যই শিবানীর কঠিন লোহবর্ম্ম ভেদ করিয়া ভিতরে গিয়া প্রবেশ করিল। লোহা কাটিয়া বে অন্ত বক্ষে বিঁধে তাহার বড় সামার শক্তি নহে। নেহাৎ অনিজ্ঞা-সম্বেও গরীব শিবানী রাজবধ্ শান্তিকে অত্যক্ত ভালবাসিয়া ফেলিল।

া শাস্ত্রি অল্পনের মধ্যেই তাহাকে চিনিয়া লইরাছিল। সেই জন্তু সে এপর্যাম্ভ একদিনও তাহাকে তাহাদের বাদায় নিমন্ত্রণ করে নাই, তাহাদের সাংসারিক আর বার সম্বন্ধে একটিও শ্রেশ্ন করে নাই সাহায্য করিবার চেষ্টাও করে আজ যথন তাহারা অনেকথানি কাছাকাছি আসিয়া পৌছিয়াছে ভখন শাস্তি ছলছুতায় কথাটা পাড়িয়া ফেলিল, সে তাহার শ্বভরের সহিত পরামর্শ করিয়াছে যে তাহারা একবার শিবানীর निक्रिक्ट वामीत अञ्चनकान कतिश प्रिथित ! শান্তি বলিল "আজহা ভাই তাঁর নিজের কোন ফ'টো কি হাতের লেখা কিছুই नारे ? ७४ूरे ७२ ही बाब आरों ?" **म्हें कृष परवब कानानाव निकट** विवध ছুইজনে কথা কহিতেছিল; অদূরে শিবানীর পুত্র সভ্যোপ্রাপ্ত উপহারের চুপড়িট লইয়া ব্যাপৃত রহিয়াছে, মধ্যে মধ্যে চুপড়ি হইতে বলিন কাঠের থেলনা গুলা নামাইতে নামা-ইতে 'এ্ঠা খোৱা, এতা গয়ু, এতা হ্মান।' रेजामि यथम् वित्मत्वात वाता वाहादक चुनी বিশেষিত করিতেছিল, নিজের বৃদ্ধির উপরে হে তাহার কিছুমাত্র অবিখাদ আছে তাহার किहूमां वक्ष के स्वा बारे छिन ना।

কথাটা শুনিরাই শিবানী প্রথম চয়কিরা উঠিল। তার পর ধীরে ধীরে নিখাদ কেলিরা বলিল "আর কেন? বে স্বপ্ন শুধু স্পাই » থাকিরা যাইবে, সে স্বপ্ন আর জাগান কেন? "তুমি আমার ভালবাসো আমার উপকার করতে চাইছো করো; কিন্তু আমি জানি না ইহা স্মামার ঠিক উপকার কিয়া অপকার যদি এ বিখাদ আমার ভেকে যার, যদি সত্য সত্যই জানতে পারি আমি বিধবা।"

শাস্তি বিদার কালে ক্রীড়ারত অমুলাকে কোলে তুলিয়া চুম্বন করিতে করিতে বলিল 'करे' त्र आश्वित नित्न ना ? निवानी कार्छत निम्कृषि थ्निया এकथानि कांगरक মোডা ফ'টোগ্রাফ ও আংটটি বাহির করিরা দিয়া বলিল "এই চুটি তাঁর মার জিনিষ আমায় রাখতে দিয়েছিংলন, তাঁর আর কোন চিহুই আমার কাছে নাই।" শান্তি অমূল্যকে কোলে লইয়া আদর করিতে করিতে ছারের দিকে অগ্রসর হইল শিবানীও তাহার অফু-সরণ করিল, গাড়িতে উঠিতে উঠিতে মুখ फित्रारेबा भाखि निवानीत निटक ठारिन, मृश হাসিয়া অধূলাকুমারকে দেখাইয়া "কেমন তোমার ছেলে নিয়ে যাই ?" শিবানী সম্মতি সূচক ঘাড় নাড়িয়া ঈষং হাসিল, শাস্তি আবার ফিরিয়া আসিয়া ছেলেকে তাহার মাৰের কাছে দিতে দিতে বিনীত ভাবে বলিল; "এक मिन आंभारमत्र अथारन भारतित ध्राती পড़বে ना ?" "शांदा देविक" विनश निवानी চুপ করিল। কোথাও যাওয়া ভাহার যেন মস্ত मात्र। "खरा कानहे या छोरे।" मकातीरे আমি তবে গাড়ি পাঠাবো। মাসিমাকেও নিরে दि**ल, छीटक जांज वरन** यांख्या हरता मां।"

"কালই ? আচ্ছা" বলিয়া শিবানী ছেলেকে
কোল হইতে রামাইয়া দিলেন, সে ছুটিয়া
ভাহার পরিত্যক্ত খেলনা লইতে চলিয়া গেল।
শাস্তি গাড়িতে উঠিতে গিয়া আবার ফিরিয়া
আসিল "একটা কথা, তোমার স্বামীর নামটা
তো জানা চাই।" শিবানী উত্তর করিল "কাল
লিখে দিলে হবে না ? কেমন করে বলবো।"

সেরাত্রে শ্রামাকান্তের শরীর ও মন তেমন হস্ত ছিল না বলিয়া তিনি কিছুই আহার করিলেন না। বধূর সঙ্গেও বেশি কথা-বার্ত্তা হইল না কাজে কাজেই সে দিন আংটিও ছবি বাক্সের মধেই পড়িয়া রহিল।

পর দিন মাতঙ্গিনীকে সঙ্গে লইয়া শিবানী স্থীর বাড়ী নিমন্ত্রণ রাখিতে আসিল। শাস্তি অমূল্যকে ও নিমন্ত্রিতাদ্বরকে আদর করিয়া গ্রহণ করিল। শ্যাশাকাস্ত আহার করিতে বসিলে শাস্তি অমূল্যকুমারকে কোলে করিয়া দেখরে প্রবেশ করিল, এমন চাঁলের মতনছেলেট জ্যেঠামশাইকে না দেখাইয়া তাহার আরাম হইতে ছিল না। শ্রামাকাস্ত তাহার চুড়ির শক্ষে চাহিয়া দেখিলেন, ছেলেটকে দেখিয়া বিশ্বিত হইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন "এছেলেট কালের মা?"

শান্তি শিশুকে কোল হইতে নামাইয়া
পাথা হাতে লইয়া শশুরের কাছে বসিল।
অম্ল্য সর্বিশ্বরে তাহার বড় বড় চোক ছইটা
•বিক্ষারিত করিয়া শাস্তির গায়ে হেলান দিয়া
র্দ্ধকে দেখিতে লাগিল। শান্তি পরিচয় দিল
"সেই যে মেয়েটির নাম শিবানী যার কথা
আপনাকে বলেছিলেম ছেলেটি তারি। বেশ
ক্ষের নয় ?"

ভামাকান্ত একটা গভীর দীর্ঘ নিখাস

পরিত্যাগ করিয়া বছক্ষণ নীরবে চদমা যোড়া-টার মধ্য হইতে শিশুকে দেখিতে লাগিলেন। সে অপরিচিত দৃষ্টিতে বালক যেন কেমন একটু বিব্ৰত হইয়া পড়িয়া শাস্তির কাছে আরো বেঁ সিয়া আসিল, তার পর সেও মুখের মধ্যে একটা অঙ্গুলি প্রবেশ করাইয়া দিয়া গম্ভীর ভাবে তাঁহার দৃষ্টি পর্য্যবেক্ষণ করিতে লাগিল। শ্রামাকান্ত হঠাৎ দৃষ্টি ফিরাইরা শইয়া আবার একটা যন্ত্রণাব্যঞ্জক নিশ্বাস ফেলিলেন, চক্ষের দৃষ্টি বিপর্য্যস্থ এবং বুকখানা উৰেলিত হইয়া উঠিল, দৃষ্টি যেন দেখান হইতে শার ফিরিতে চাহিতেছিল না। একাস্ত কাতর স্বরে বলিয়া উঠিলেন "মা, মা, একে কোথা থেকে নিয়ে এলি মা ? আমার मिहे हि । पूर्वानि, अदत मि एवं ज्वनक অমনি স্পষ্টভাবে এই বুকের ভিতরে আঁকা রয়েছে। এযে তারি জীবস্ত ছায়া, এযে সেই— আমার বিনো! আমার বিনো আধার কি তুই তেমনি ছোট্টি হয়ে আমায় দেখা দিতে এলিরে • " বলিতে বলিতে হঠাৎ আত্মবিস্থত বৃদ্ধ আত্ম সম্বরণ করিয়া লইলেন, অত্যস্ত বিষাদের ক্ষীণ হাসি হাসিয়া কহিলেন "পাগলের কাণ্ড **(मृट्थ व्यवांक इद्य शिष्ट मा! किन्छ मब्हाें इ** পাগলামী নয়। একে দেখে আমার একটি ছোট্ট মুথ মনে আসছে, ফুলর ছেণেরা বুঝি ছোট বেলায় এক রকমই থাকে? বেশ ছেলেটি, এসোতো দাদা, আমান কাছে এসো তো ভাই! বলিতে বলিতে সাগ্ৰহে তিনি শিশুর দিকে উভয় বাহু প্রদারিত করিয়া **मिल्लिन। भाञ्जित मृद्द मृद्द व्यक्टरहाट्स वालक स्रेय**९ ভয়ে ভয়ে খ্রামাকান্তের নিকট এক পা এক পা করিয়া অগ্রদর হইয়া গেল। ভাষাকান্ত

ভাৰাকে হই হাতে টানিয়া দইয়া কোনে
বদাইয়া অভৃগু নেত্রে দেখিতে লাগিকোন। দেখো মা খোকার হাতথানি ঠিক
ভার মতন, কপাল চুল চোধ কি আশ্চর্য্য
সাদৃষ্ট! ভোমার নামটি বলতো দাদা ?"

ৰালক একবার অদূরবর্তিনী শান্তিকে দেখিয়া **ख्टा** আন্তে বলিল "অসুম্বকুমার চৌধুরী" 'সে শান্তির নিকটেই নিজের নাম বলিতে শিথিয়াছিল। "অমৃল্যকুমার চৌধুরী ৷ চৌধুরী ৷ তোমার वांबाब नाम कि कांना (थाका ?" वांवा मक्ते। বালকের তেমন পরিচিত নয়, সে ইহার ভাল অর্থবোধ করিতে পারিল না. একবার ইহার একবার উহার মুখপানে চাহিয়া দেখিল ! শান্তি বলিল "আমি জেনেছি তাঁর নাম ছিল নীয়দকুমার চৌধুরী, তারাও বারেক্ত খেণী।" খ্যামাকান্তের মূথে বোর হতালার চিহু প্রকাল शाहेन, किह भाषि जाश नका कतिन ना; সে পঞ্চপথান্ত হইতে অসুরীটি ও ছবিধানা বাহির করিতে করিতে বলিতে লাগিল "ঠাৰ দেশ কোনখানে সে কথা পর্যান্ত তিনি শিবানীকে कानान नारे, किळागा ক বলে বলতেন 'যখন সময় আদবে **७**थन निरम्हे तगर, এथन मरन करता আমার অজ্ঞাতবাদ। এই একটি হীরার আংটি ও একথানি ছবিমাত্র তিনি বেছেন,এ থেকে যদি কিছু সন্ধান করা যায়।" বলিতে বলিতে সে মোড়ক খুলিয়া ছবিখানার উপর নেত্রপাত করিল। त्म हिंख जक्रि मशास्त्रका समात्री त्रमणित । অম্পষ্ট হইয়া আসিলেও চেহারা চিনিবার পক্ষে কিছুমাত্র বাখাত জনার না। চাছিরাই শাবি চমকিরা

উঠিল "একি এ কার ফ'টো! এ শিশ্পনীর
খাত ডির কেন হবে । এ হে জাঠাইমার!"

"কি ! বল্লে মা !" উচ্চকঠে এই কথা।
বিনিয়া তাড়াতাড়ি শ্রামাকান্ত বধ্র হাড
হইতে ফ'টোগ্রাফথানা তুলিরা লইলেন।
দেখিতে দেখিতে তাঁহার হাত ছইটা থর থর
করিয়া কাঁপিতে লাগিল, তারপর শিথিল
অঙ্গুলিচাত হইরা চিত্রখানা ভূমে পড়িয়া গেল।
কতোক্ষণ পর্যান্ত কেহ কোন কথা
কহিতে পারিল না; মহাবিশ্বরে অভিভূত হইরা
জড়ের মত হইরা রহিল। তারপ্র প্রথমে
শান্তির অবসর শরীরে সংজ্ঞা ফিরিরা আদিলে
দে দেই হীরকান্থুরীয়টা তাড়াতাড়ি তাঁহার

সমূথে ধরিল "তবে দেখন দেখি এটাও

চেনেন কিনা। তিনি ইছা শিবানীকে যত-

পূর্বক রাখিতে বলিয়াছিলেন।"

ভামাকান্ত বিহাৎ তাড়িতবং চমকিরা উঠিলেন "আংটি ? ঠিক কথা ! তার মারের নাম লেখা হীরার আংটি একটা তার হাতে থাকতো, সেটার দাম বোধ হচ্ছে পাঁচ হাজার টাকার কাছাকাছি, কিন্তু দামকে সে গ্রাহ্থ করতো না, মার শেষকালের দেওয়া জিনিষ বলে সেটা তার কাছে বহুমূল্য ছিল। ভিতর দিকে কিছু লেখা আছে কিনা দেখোতো মা!" শান্তি শুভরের নির্দেশান্ত্র্যারে দেখিল অঙ্গুরীর ভিতর দিকে বাজলা অক্সরে ভ্রনমোহিনী এই নাম খোদা আছে। আংটিটা শুভরকে, দিরা পুলক কম্পিতশ্বরে কহিল "আছে"।

শ্রামাকান্ত নাষ্টা পড়িরা আর কোন কথাই বলিতে পারিলেন না, শির্থকে উভর্^{ত্তী} বাহর মধ্যে টানিরা সবলে বুকে চাপিরা ধরিলেন। তাঁহার চোধের অবিশ্রান্ত ধারার হতবৃদ্ধি বাশকের জনাত্ত জক ভিজিয়া বাইতে লাগিল।. সে কিছু এই অঘটিতপূর্ব
কাণ্ডে এতোই বিশ্বিত হইয়াছিল যে তাঁহার
হাত ছাড়াইয়া পলাইতেও ভূলিয়া গিয়া তাঁহার
কেন্দ্রন দেখিতে লাগিল। এ জিনিষ্টা দেখা
তাহার বড় জনভাস্ত ছিল না।

শক্তি চোথের আনন্দাশ মুছিতে মুছিতে
শিবানীর নিকট ছুটিল। তাহার কাছে
এই মুহুর্কেই যেন দে নিজেকে অপরাধিনী
বলিয়া অস্কুত্ব করিতে লাগিল। 'ছি ছি
এ সমস্ত রাজঐশর্য্যের প্রকৃত অধিকারিনী বে
দে কিনা আজ দীনা অনাধিনীভাবে কোথায়
পড়িরা আছে, আর তাহাদের স্থারসঙ্গত অধিকার
কাড়িরা লইয়াছে কে? না সে নিজে!

শাস্তির সহিত অর্দ্ধ মূর্চ্ছিতাপ্রায় শিবানী আসিয়া যথন খতরের পায়ের কাছে প্রণাম করিয়া নতমুখে বসিয়া পড়িল তখন খ্রামাকাস্ত বক্ষবন্ধ নাতিকে নামাইয়া দিয়া অবগুঠনবতী বধুর হাতহখানা নিজের কম্পিত শীর্ণ হস্তের मधा नहेबा ভाशांक निकटि होनिय। नहेलन, তাহার মাথাটা বুকের উপর রাথিয়া রুদ্ধকঠে বালকের ভায় কাঁদিয়া বলিলেন "মামা, আমার হারানিধি আবার কেন হারালি মা! আমার অমূল্যধনকে কেন আমায় এতোদিন দিসনি মা ? আমার নয়নতারা হারিয়ে আমি অৰ হয়ে গেছৰুম !" স্বামীহীনা ুপুত্রহারার বিরহসম্বপ্তচিত্তের অঞ্জ অঞ্-জলের মধ্যে উভয়ের একমাত্র প্রবতারার কুদ্ৰ প্ৰতিকৃতি অমূল্যের আৰু অভিবেক হইয়া গেঁল। সেও কারা দেখিয়া দেখিয়া বেশিক্ষণ আর চুপ করিয়া থাকিতে পারিল না गरमा र्टीं एकारेबा का मिन्ना छेठिन। भासिख সে দৃত্ত আর বেশিকণ সহ্ করিতে পারিল না. স্থেরি হোক আর ছঃথেরই হোক কাধারও অঞ্জল তাহার বুকে বড়ই বালিত। সেই দিনই সে পিতাকে যখন পত্ৰ লিখিতে বদিল व्यथरमरे এই एडमःवान निर्ड ड्निन ना। ষতীত ও বর্ত্তমানের সকল সংবাদ জানাইয়া লিখিল 'বাবা, আপনি কি মনে করিতেছেন ? আমার ভাহর কি বাঁচিয়া নাই? আমার কিৰ আজ আবার অত্যন্ত আশা ইইতেছে। নিশ্চয়ই তিনি বাঁচিয়া আছেন. আসিবেন।" একটা কথা লিখিতে গিয়াও দে পারিয়া উঠিল না, পূর্বাস্থৃতির উদরে म्थथाना नेष९ लाल कतिया कि हुक्कन हुन করিয়া বসিয়া থাকিল। "নীরদকুমার রায় ও নীরদকুমার চৌধুরী,একই লোক নহেন তাহার প্রমাণ কি ?"

দেদিন আনন্দের প্রথম উচ্ছাসে বিষাদের স্থরটাই ক্রমাগত বাজিতে লাগিল। অশ্রুজনের উৎস একবার বহিতে আরম্ভ করিলে আর তাহাকে থামানো যায় না। শিবানীর স্থির গাম্ভীর্যা ঘোর বিষাদের বাষ্ণ-ক্সপে ঝরিয়া পড়িতেছে। এতোদিন সে যেন কোনখানেই একটুখানি আলোক দেখিতে পাইতেছিল না! সমস্ত জীবনটাই তাহার পক্ষে একথানা অভেন্ত রহস্তময় জটিশ উপস্থাস হইয়া উঠিয়াছিল। একটা বৈচিত্তাপূর্ণ স্বপ্নের স্মৃতি ও বাকী সবটা অন্ধকার লইয়া তাহার শুক্ত অ্বদর্গথানা হাহা করিয়া ফিরিতেছিল। মৃত্যুর যুগাস্তরবাাশী অন্ধকারের মতন তাহা যেন তাহাকে একটা অচ্ছেম্ব নাগপাশে আঁটিয়া আঁটিয়া বাঁধিয়া রাখিরাছিল, কোথাও সে এমন একটু ফাঁক

পাইত না যে সেখান দিয়া তাহার বন্ধনপুক্ত প্রাণটা মুক্তপক্ষ বিহলিনীর মত হাকা হইয়া বাহিরের বাতাসে উড়িয়া বেড়ায়। আজ সহসা সেই জীবনরহজের শেষ অল্ল অভিনীত হইয়া গেল, আজ সকল প্রহেলিকা তাহার নিকটে সভার আলোকে পরিষার হইয়া গেল! সেই ছক্তের অভিমানও আল সে মর্ম্মে মর্মের অভিমানও আল সে মর্মের মাজা দরিজা নিগুণা শিবানী তাহাকে কেমনকরিয়া ধরিয়া রাশিবে? পিতৃলেহও যে অভিমানকে ঠেকাইয়া রাশিতে পারে নাই সে কি শিবানীর প্রেমে প্রভিহত হইবার? সেদন মাতলিনীর বড় আনন্দের দিন। তিনি সত্য সত্যই নিরাশ্রমা বালিকার জন্ত মনে মনে

বড়ই উৎক্ষিতা ছিলেন। আৰু অক্সনাৎ দেই শিবানী এই রাজ্যেশ্বর, তুলা ধনপতির একমাত্র পুত্রের বধু জানিয়া, তিনি আনন্দে ও বিশ্বয়ে অনেককণ তত্ত্ব হইয়া থাকিলেন। তারপর সহসা উচ্ছাস দমন করিতে না পারিয়া (क्लिलन। कैं। निया "মাগো ভোর বে একটা হিলে হলো, এ আনন্দ রাথবার ঠাই নেই। আমার বিশ্বাস নীরদ আমার বেঁচে আছেন, আবার তাঁকে তুমি ফিরে পাবে মা,রাজরাণী হরে স্বামী পুত্র निष्म ऋथ चत्र कत्रव। आहा मिनि यनि এখন এখানে থাকতো, কেজানে ঠাকুরবাড়ী থেকে কভোদিনেই ফিরবে, ইচ্ছে করছে र्य ছুটে গিয়ে খপরটা দিরে আসি।" শিবানীও তথন মার জন্ম উৎক্ষিতা হইতেছিল

সিপাহীর বিশ্রাম।

("Soldier's Song" হইতে)

চির সহিক্ সাহণী সিপাহী
রাজ-চরণ আজ,
বিআম তরে কাজর নেছে
নিভ্ত সমাধি মাঝ।
মিথ্যা আজিকে তুর্গা-নিনাদ, আর সে দেবে না কাণ;
ছাউনি ফেলেছে মরণের ছারে

হাডান কেলেছে নরগের ছারে বাজার অবসান।
বালক বরসে ছেড়ে এসেছিল
ুরীর বাপের কর,
ভাগ্য কিরাতে সৈনিক হ'রে
বুবেছে নিরম্ভর।
ছর্গন কেলে ছুঃসাহস্য বেলে
ক্রেছে সর্বায়াই,

সম্পদ কোন ছিল না সহার

হিল না বন্ধু, ভাই।

ছ:খ বিপদ : গ্রাফ করেনি,

চলেছে গাহিয়া গান;

আজি বিভাম; পেয়েছে আরাম

যুগার অবসান।

ফান্তনী বিঠা পুল ছিটায়ে আবরিয়া শ্বাধার,—

ছ:ৰ স্থের দোসরেরা তার মুছে আঁথি শতবার।

কাদিরা বেচারী সিপাহীর নারী চলিরাছে বিরবান!

সিপাহীর ভার হ'বেছে বাজার চিরভরে শব্দান!

শ্বিদ্যান্তার বাবা ।

কোচিন-চীন।

৮ ফেব্রুয়ারী।

আজ Tramyতে আমাদের বিশ্রাম।
এই আজ্ঞাটির মধ্যে দেশ-রক্ষী দৈলদলের
একটি গৃহ, (এই দৈলদলের নারক একজন
Alsace-বাদী ফরাদী) পাস্থদিগের জল্প
একটি কাম্রা, অ্যানামবাদী দৈনিকদিগের
কতকগুলা আবাদ-গৃহ এবং অশ্বশালা-সমূহ
সন্নিবিষ্ট। মধ্যস্থলে একটি স্থান্দর উন্থান।
আয়রক্ষণের উদ্দেশে এই আজ্ঞাটি একটি ঢালু
ভূমির ভারা বেষ্টিত। সিংহলারের উপর নহবৎখানার মত একটা ভর; সেইখানে সান্ত্রী
পাহারা দের। এই ভরের উপর ফরাদী
রেপত্লিকের তে-রক্ষা নিশান উল্লাদ-ভরে
উড়িতেছে।

Tramyর যিনি একমাত্র অপরাত্তে উপনিবেশী তাঁহার সহিত আমরা সাক্ষাৎ করিতে গেলাম। প্রেমে হতাশ হইয়া এই অনবয়স্ক যুবক ফ্রান্স ত্যাগ করিয়া এইখানে আদিয়াছেন। ইনি এখানে ডালচিনির ব্যব-সায়ে ব্যাপত। ইনি "মোই"দিগের নিকট হইতে সমস্ত ডালচিনির গাছ ক্রয় করেন-তাহার পরিবর্ত্তে উহাদিগকে কম্বল, মুক্তার হার, মহিষের "পু্মৃত্মে"র চাম্ড়া, (আানামের হুরা) বোতল দেন ; এই সকল ্গাছ কাটিয়া Fai-Fooতে চালান দেন; এবং रेशंत हान हौत्नात्तत्र निक्रे विक्रय करत्न। মোইদিগের সহিত পরিচয় করিবার জ্ঞা, কভ বংদর বিরয়া তিনি একাকী পর্বতে পর্বতে ঘুরিয়াছেন, কথন কুধার যন্ত্রণা ভোগ করিয়া-ছেন, কখন বা দারুণ জবে কম্পমান

হইরাছেন; মোইদের সহিত একত মুর্গির রক্ত পান করিয়া, ভাহাদের কতকগুলি পবিত্র মন্ত্র আবৃত্তি করিয়া, ভাহাদের সহিত মৈত্রী-বন্ধন করিয়াছেন।

আজ অপরাহে তাঁহার গৃহে কভকগুলি মোইকে দেখিলাম। এরা প্রকৃত 'বুনো' লোক; ইহাদের গাত্রচর্ম লাল্টে শ্রামল, म्थावववर्णन मानान्-महे, हाथ (माना, नाक् চ্যাপ্টা, মুথ বিশাল; কপালের সম্মুথভাগের চুन ছाँটा ; माथात्र পिছन-नित्क এकটা शौंशा। শরীর দীর্ঘ ও স্থগঠিত; বক্ষদেশ স্থবক্ত ও ফুণানো। পরিধানে একটা খুতি, কখন বা यक्षानाम একটা উত্তরীয়, পরিচ্ছাদের দিকে উহাদের তত্টা দৃষ্টি নাই, অলকারের প্রতিই উহাদের বেশী অমুরাগ। চুলের ভিতর ছোট ছোট কাঠের গোঁজ, কানে কান-বালা, বুকে মুক্তার মালা, এবং হাতে প্রচুর বলর। উহাদের মধ্যে একজনের পিঠের উপর একটা চুব্রী; সকলেরই হাতে একএকটা কাঠের বল্লম; বল্লমের আগায় একএকটা লোহায় ফলা।

এই ফরাসী উপনিবেশী উহাদিগকে কতকশুলা ঢাক্-ঢোল দেখাইলেন; ক্রের করিবার
পূর্বের, উহারা বাজাইয়া তরতররণে পরোধ
করিয়া লইল। পরে তিনি কতক্শুলি
মুক্তার মালা উহাদিগকে নির্ভাচনের অঞ্চ
দিলেন। তন্মধ্যে কতকগুলা উহারা অগ্রাহ্
করিল, কতকগুলা খুব উৎসাহের সহিত গ্রহণ
করিল; উহাদের পছন্দ অপছন্দের ক্রেণ
অনুষান করা আমাদের পক্ষে অসম্ভব; বাই

হৌক, উহাদের সঞ্জা-করা দেখিরা আমাদের ব্ব আমোদ হইল। ডাল্চিনী-সঞ্জাগরের কুঠার সমুখে, এই স্থ্যান্তের সমরে, আমাদের যে মঞ্জীটি একত্র হইরাছিল তাহা অতি আছুত:—তিনজন ফরাসী, উপনিবেশ-ঝুসীর স্বলরী দেশীর উপপত্নী, তাঁহার চীনে কর্মচারী। কর্মচারীর ছইটী ছেলে, ও ৪। জন বুনো। "মোই"!

প্রিজ্ঞাতিরিজনাথ ঠাকুর।

পঞ্চম শতাব্দীর ভারত।

পুরাকালে চীনদেশীয় ভ্রমণকারিগণ আমাদের দেশের যে সমন্ত বুতান্ত লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন তাহা হইতে আমরা ভারত-বর্ষের তৎকালীন অবস্থার বিষয় পরিমাণে অবগত হইতে পারি। "বিভিন্ন দেশের ইতিহাদে ভারতের কথা" প্রবন্ধে আমরা যে সমস্ত ঐতিহাসিক বা পর্যাটন-कात्रिशरनत्र উল्लেখ कतिशाष्ट्रि. उाँशामत्र मरधा প্রার সকলেই বাণিজ্যব্যপদেশে ভারতবর্ষে আগমন করিয়াছিলেন। কিন্তু চীনদেশীয় ফাহিয়ান বা হিউয়েনসাং প্রভৃতি মনস্বীগণ জ্ঞান এবং ধর্মলিপা হইয়াই এ দেশ ভ্রমণ করিরাছিলেন।

বতদ্র জানা বার তাহাতে চি-টাও-জান
নামক ভ্রমণকারীই ঐ দেশ হইতে আমাদের
দেশে প্রথম আইসেন। তিনি গৃষ্টীর চতুর্থ
শতাব্দীর প্রথমভাগে আগমন করেন কিন্ত
হংশের বিবর তাহার লিপির্ভান্তের কোন
অক্সার্কান পাওরা যার না । ফা-হিরান
নামক স্থপ্রনিদ্ধ ভ্রমণকারীও গৃষ্টীর পঞ্চম শতাব্যীতে এই দেশে আসিয়া দেশের বৃত্তান্ত

লিপিবভ করিয়াছেন। পঞ্চম শতাকীতে रेश्त्रक धरः प्रक-देशन नामक घर वाकि উত্তর-ভারতে পর্যাটন করেন কিন্তু তাঁহাদের ভ্ৰমণ বুতান্ত অতান্ত मःकिथ। হিউয়েনসাং খৃষ্টীয় ৬২৯ খৃষ্টাব্দে এই দেশে আসিয়া অধ্যয়নাদি ও ধর্মালোচনা করিতে शांकिन धनः ७८८ शृष्टीत्व चरमर्ग खेळार्गमन করেন। হিউয়েনসাংয়ের বৃত্তান্ত "Records of the western world" অত্যন্ত মুল্যবান। হিউয়েনগাং কেবলমাত্র রাজনৈতিক এবং गामाक्षिक विधि निशिवक करतन नारे; जिनि অনেক জনশ্রুতির কথাও তাঁহার পুত্তকে লিখিয়া গিয়াছেন। এই সমস্ত প্রাচীন জন-শ্রুতি পাঠে আমরা অতি পুরাকালের অনেক বুক্তান্ত অবগত হইতে পারি। হিউরেনসাংরের कीवनी थार्गठा छाहात वक्वत छहेगित (Hwui-li) বুস্তান্ত পাঠেও আমরা তৎকালীন ভাতসমূদ্ধে অনেক বিষয় জানিতে পারি।

ইংসিং নামক অন্ত একজন স্থাসিত্ব ভ্ৰমণ-কারী, খুষ্টার সপ্তম শতাব্দীতে যে ষাট ৬০ জন চীন দেশীর বৌদ্ধ যাব্দক এদেশে,আগ্রহন

[্] পটের দলের এক শভালী পূর্বে প্রাচীন নামক চীনদেশীর প্রথম ঐভিহাসিক ভারতবর্ষের এক প্রনার ইতিহান বিধিয়াছিলেন।

করেন তাহাদের উল্লেখ করিয়াছেন। ইৎিদং
নিজে সপ্তাম শতাকীর শেষ ভাগে ভারতবর্ষ
এবং মালয় দীপপুঞ্জ দেখিয়া তাঁহার পৃস্তকে
"ভারতবর্ষে এবং মালয় দীপপুঞ্জ বৌদ্ধ ধর্মের
অবস্থা" প্রকাশ করেন। তৎকালীন ভারতের বৌদ্ধ ধর্মের এবং সংস্কৃত ভাষার আমূল
বৃত্তান্ত এই পুন্তক পাঠে জানা যায়। হঃথের
বিষয় ইৎিসং তাঁহার পুন্তকে দেশের অঞান্ত
অবস্থার বিষয় কিছুই লিপিবদ্ধ করেন নাই।
খুষ্টায় দশম শতাকীতে কিনি নামক বৌদ্ধগুরু
প্রায় তিনশত শিষ্য সহ এই দেশ পরিভ্রমণ
করিয়া যান কিন্তু তাঁহার বৃত্তান্ত পাঠে
বিশেষ কিছুই অবগত হওয়া যায় না।

এই সমস্ত পর্যাটকদিগের মধ্যে ফাহিয়ান এবং হিউয়েনসাংয়ের বৃত্তাস্ত ছইটীই বিশেষ আদরণীয়। ফাহিয়ান পঞ্চম শতাকীতে এবং হিউন্নেন্সাং স্থ্য শতান্দীতে ভ্রমণ करत्रन । इः एथत्र विषय त्नर्याक भर्या हेनकाती ভারতবর্ষের তদানীস্তন সকল বিষয়েরই যেরূপ আমূল বুভান্ত লিপিবদ্ধ করিয়াছেন, প্রথমোক্ত ব্যক্তি সেরপ করেন নাই। ফাহিয়ান সাধারণতঃ বৌদ্ধ ধর্ম তথ্পাসঞ্চিক বিষয়েরই অবতারণা করিয়াছেন। তত্রাপি তিনি শে বুডাস্ত লিথিয়া গিয়াছেন তাহা হইতে আমরা তৎকাণীন ভারতের বেশ একটা চিত্র দেখিতে পাই। ফাহিয়ানের পুস্তকের নাম ফু-কো-কি-(Fou-ko-ki) ইহা চল্লিশটী অধ্যায়ে শমাপ্ত। তিনি ভক্ষশীলা, মথুরা, কনোজ, কোশল, সরস্বতী, কপিলবস্তা, ভৈমালী, মগধ ও তাহার রাজধানী পাটলিপুত্র, নালন, রাজগৃহ, গয়া, কাশী প্রভৃতি থান পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন। দাক্ষিণাত্যের কতকাংশেরও

বৃত্তান্ত তিনি রাখিয়া গিয়াছেন। ভাশ্রণিপ্তি (বর্তুমান তমপুক) সহরে তিনি হুই বংসর থাকিয়া অনেক প্রাচীন পুঁথি নকল ও অনেক প্রতিমৃত্তির নক্ষা লইয়া ছিলেন। তৎপর তিনি লঙ্কাদ্বীপ ও জাবা হইয়া সেশে প্রভ্যাণ্যমন করেন। ফাহিয়ানের বৃত্তান্ত পাঠে সহজেই বোঝা যায় যে দেশের অবস্থা তথন অনেক ভাল ছিল এবং তৎকালীন রাজা বিক্রমাদিভ্যের স্থানানন প্রজাপুঞ্জ, নির্ক্তিম্নে কালাতিপাত এবং দিন দিন সমৃদ্ধিশালী হুইতে ছিল।

ফাহিয়ান যথন এ দেশে আগমন করেন তথন গুপ্তবংশীয় চক্রগুপ্ত বিক্রমাদিত্য দেশের রাজা ভিলেন। বিক্রমাদিত্য শৌর্য্যে সিংহকে পরাস্ত করিতে পারিতেন এবং তিনি ৪১৩ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত রাজা ছিলেন।

ফাহিয়ান যথন প্রথম পাটলিপুত্রে গমন করেন, তথন তিনি অশোকের রাজপ্রাদাদ দেথিয়া অতিশয় মুগ্ধ হন। দেড়শত বৎসরেও ঐ রাজপ্রাসাদের বিশেষ কোন ক্ষতি লক্ষিত হয় নাই। প্রাসাদ প্রস্তরে নির্দ্মিত এবং এমন স্থানর প্রণালীতে গঠিত হইয়াছিল যে দেখিলে সাধারণ মন্তব্যের রচিত বলিয়া বোধ হইত না। ফাহিয়ান বলিয়াছেন,—তিনি লোক মুখে অবগত হইয়াছিলেন যে ইহা স্থাটের নিয়ো-জিত অশরীরী ভূত প্রেতহারা গঠিত হইয়াছিল এবং দেই জন্মই এত দিনেও তাহার কোন ক্ষতি হয় নাই। পাটলিপুত্র সহরে রুসন্নিকটেই হুটী মঠ ছিল; একটীতে "মহাযান" মতাব-লম্বিগণ বাদ করিতেন এবং অপর্টীতে "হীন্যানাবল্ঘী" সন্ন্যাসীগণ থাকিতেন। ছই মঠে প্ৰায় ছয় শত কি সাত শত বাজক

থাকিতেন এবং তাঁহারা অধ্যাপনার একপ প্রসিদ্ধিলাভ করিয়াছিলেন যে দুর দেশ হইতেও ছাত্রগণ আসিয়া তাঁহাদের নিকট শিক্ষা গ্রহণ করিতেন। ফাহিয়ান এই সহরে ৩ বংসর বাস করিয়া সংস্কৃত শিক্ষা করেন। তিনি এই স্থানের প্রচলিত উৎসব, যাত্রা, মিছিল প্রভৃতির বিশেষ প্রাশংসা করিয়া গিয়াছেন। এই সমস্ত মিছিল বিশেষ জাঁকজমকের সহিত সম্পাদিত বংগরের প্রত্যেক দ্বিতীয় মাসের অষ্ট্রম দিনে বিশ্বানি প্রকাণ্ড স্থদজ্জিত রথে করিয়া দেবমৃর্তিগুলি নগরের প্রত্যেক রাস্তায় প্রদর্শন করান হইত। সঙ্গে সঙ্গে অনেক বাক্তকর এবং গারক ঘুরিত। অন্তান্তত্তলে ও তিনি এইরূপ দেখেন।

ফাহিয়ান মগধের নগরী সমূহ এবং জনদম্হের সমৃদ্ধির কথা শিপিবদ্ধ করিয়ছেন।
জনসাধারণ বিশেষ স্থী এবং সকলেই
ধার্মিক ছিল। বদাক্ততা এবং দয়ার কার্য্যে
সকলেই তৎপর ছিল এবং দেশে দানশীললোকের অভাব ছিল না। রাস্তায় রাস্তায়
ভ্রমণকারীদিগের থাকিবার জ্ঞা গৃহাদি ছিল
এবং রাজধানীতে এক প্রকাণ্ড দাতবা চিকিৎসালর সকলের অভাব মোচন করিত। এই
চিকিৎসালয়ে ব্যাধিগ্রস্ত সকল ব্যক্তিই আশ্রম
পাইত। তাহাদের রীতিনত তত্বাবধান হইত
এবং ঔনধ ও পথা বিনা মূল্যে প্রদন্ত হইত।
সম্পূর্ণরূপে স্কন্থ না হইলে তাহাদের যাইতে
দেওলা হইত না।

ফাহিন্নান গৈন্ধ নদ হইতে যমুনা তীরবর্ত্তী মধুরা নগরে যাইবার পণে বহুসংখ্যক বৌদ্ধ মঠ দেখিরাছিলেন; এই সমন্ত্র মঠেই সহজ্র সাইজ বৌদ্ধ ভিক্ষু বাস করিত। মধুরার প্রাক্তে তিনি এই প্রকার কুড়িটি মঠ দেখিতে পান, সেথানে তিন সহস্র বৌদ ছিলেন। 'এই প্রদেশে বৌদ্ধ ধর্মেরই প্রাধান্ত ছিল।

মথুরার দক্ষিণে মালব প্রদেশে যাইরা ফাহিয়ান বিশ্বরে আপুত হন। স্বভাবের শোভা, প্রকৃতিপ্রের প্রকৃতি এবং আইনের স্ববাবহা ও রাজার ভায়নীলতা দেখিয়া তিনি আশ্চর্যায়িত হয়েন। একদিকে দেশের জল বায়ুর প্রশংসা, এবং অভাদিকে নিজের দেশের কঠোর শাসনপ্রণালীর সহিত এতদেশের শাসন প্রণালীর তুলনা করিয়া রাজার ওণায়্বাদ করেন। রাজা আদৌ প্রজাপীড়ন করিতেন না। প্রজাপ্তর ইচ্ছামত যাতায়াত করিতে পারিত এবং সে জন্ম কোন প্রকার ছাড়পত্রের আবশ্রুক হইত না।

ফাহিয়ান ফৌজদারী কার্যাবিধির বিশেষ
প্রশংসা করিয়াছেন। সাধারণতঃ অপরাধ
করিলে ভরিমানা হইত এবং প্রাণদণ্ড আদৌ
প্রচলিত ছিল না। বার বার রাজদ্রোহ অপরাধে অপরাধী হইলে দক্ষিণ হস্ত ছেদন করা
হইত কিন্তু এই প্রথা কদাচিৎ অবলম্বন করা
হইত। ধর্মাধিকরণে কোন রূপ যন্ত্রণা
দেওয়া হইত না এবং সাক্ষী ও অভিযুক্ত পক্ষকে
কোনরূপ নির্যাতন করা হইত না। রাজকর
রাজার স্বকীয় ভূমি হইতেই উঠিত এবং
রাক্ষম্বাচারী দিগের নির্দিষ্ট বেতন থাকাতে
ভাহারা প্রজাপৃত্ধকে উৎকোচ দানে বাধা
করিয়া কট দিতে না।

সাধারণতঃ বৌদ্ধধর্ম প্রচলিত নির্মাবলী সক্ষত্রই অবলম্বন করা হইত। কেহ কোন ভীব হত্যা করিত না, সম্মপান করিত না, এবং পেঁয়াল, রক্ষ্মত থাছাদির মধ্যে পরি- গণিত হইত না। * নগরের মধ্যে কসাইয়ের বোকীন বা ভাটিখানা থাকিতে দেওয়া হইত না। *

ফাহিয়ানের বৃত্তাস্ত পাঠে অবগত হওয়া ষায় যে অনাৰ্য্যজাতিদিগের নগরের মধ্যে বাসাধিকার ছিল না। চণ্ডাল অক্তান্ত অনার্য্যজাতির কোন ব্যক্তি নগরের मर्पा अर्याकाष्की इहेरन जाहारक इहेथछ কাঠে আঘাত করিয়া অর্থাৎ ঐ শব্দে অন্তান্ত উচ্চজাতীয় ব্যক্তিকে সাবধান করিয়া নগরে বা বাজারে প্রবেশ করিতে হইত। কেবল-माज व्यनार्ग्यकाि जिश्वे कमाहिए व कार्या. মৎস্তজীবির ব্যবসায় এবং শিকারে লিপ্ত থাকিত।

বৌদ্ধ সন্যাদিগণকে এবং মঠে রাজারা প্রচুর দান করিতেন এবং যতিগণ যে কোন স্থানেই যাতায়াত কঁক্লন না কেন তাঁহাদের থাকিবার স্থান, আহার্য্য এবং বস্ত্রাদির অভাব হইত না।

ফাহিয়ান তিন বংসর পাটলিপুত্রে অধ্যয়ন করিয়া পরে তাত্রলিপ্ত † (বর্ত্তমান তমলুক) গমন করেন। তমলুক তথন একটা প্রাসিদ্ধ বন্দর ছিল এবং পাটলিপুত্র হইতে তমলুক গমন করিতে তাঁহাকে কোনরূপ কন্ত বা কোনরূপ দম্যুতস্করের হস্তে পতিত হইতে হয় নাই।

কাহিয়ান যে শ্রমণ বৃত্তান্ত লিপিবদ্ধ • করিয়া সিয়াছেন তাহা পর্য্যালোচনা করিলে

আমরা কয়েকটা বিষয়ে প্রাচীন ভারতের আভ্যন্তরিক অবস্থার বিষয় অবগত হই। প্রজাপুঞ্জ স্থুশাসনে বিশেষ स्रुषी वदः সমৃত্বিশালী ছিল এবং দেশে চৌর ভর মাত্র ছিল না। সর্পত্রই বিদ্বান ব্যক্তি এবং বৈদেশিকগণ সম্মানিত হইতেন এবং দেশে বিত্যাশিক্ষার যথেষ্ট প্রচলন ছিল। দয়া-দাক্ষিণ্যাদি গুণে ভারতবাদীরা প্রদিদ্ধ ছিলেন এবং যে দাতব্য চিকিৎসালয়ের কথা ফাহিয়ান উল্লেখ করিয়াছেন তাহা হইতে আমাদের দেশ দেই সময়ে সভ্যতার যে শার্ষস্থান অধিকার ক রিয়াছিল তদ্বিষয়ে কোন मत्नरहे थारक ना। ध ममस्य পृथिवीत কুতালি আর দাতব্য চিকিৎসালয়াদি বর্ত্তমান ছিল না। সপ্তমশতাকীতে ইউরোপে প্রথম দাতব্য চিকিৎসালয় প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল কিন্ত আমাদের দেশে তৃতীয় শতাদী হইতেই চিকিৎসার ব্যবস্থা দেখা যায়। অশেকের দ্বিতীয় প্রস্তর লিপিপাঠে যায় যে অশোক নিজরাজ্যে এবং নিকটবর্ত্তী চোলদেশে, পাণ্ডারাজ্যে, এমন কি অদুর লক্ষা, এবং গ্রীদ দেশে পর্যান্ত পশু এবং মহুয়োর চিকিৎসার স্থব্যবস্থা করিয়াছিলেন। এবং রাজা অশোক যে মহৎ পথ প্রদর্শন করিয়া-ছিলেন শতাব্দীর পর শতাব্দী চলিয়া গেলেও বদান্ততা ও দয়ার হ্রাদ হয় নাই। আমাদের বিশ্বাস মিতাচারের জন্ম ভারতবর্ষ প্রদিদ্ধিলাভ করিয়াছে . এবং চিরকালই

^{* &}quot;রাজতরজিণী" পাঠে অবগত হওয় যায় যে পেঁয়াজ ও রহন নিষিদ্ধ খাদ্যমধ্যে পরিগণিত ইইবার কারণ এই যে, উহা দ্বিশু করিলে উহার মধ্যস্থিত অংশবিশেষ মাংসের স্থায় বেধি হয়। গোপাদিত্য: নামক কাশ্মীরের জনৈক রাজা পেঁয়াজভোজী ব্রাক্ষণদিগকে বিশেষ শান্তি দিতেন।

[†] বর্তমান ভমলুক সমুদ্র হইতে এইকণ প্রায় ৬০ মাইল দ্রে অবস্থিত।

বাই বৈদেশিকের শ্রমণর্থাতে আমাদের সে বিশাদ আরও ব্রুগ্ন হয়। পত্তগা ইত্যাদি আমাদের দেশে অশোকের সমর হইতে মিবিদ্ধ হইরাছিল এবং কলিক বিজয়ের পর অরোদশ প্রান্তর লিপিতে অশোক বে আদেশ প্রাণ্ডিত করিরাছিলেন সেই বৃক্ষ ফাহিরানের সমরও ফল প্রসব করিতেছিল।

শাহিয়ানে আমরা আর একটা বিষরের আতাস পাই। অতি প্রাচীনকাল হইতেই দেখা যায় যে ভারতবর্ষে সাক্ষী বা অপরাধী-গণকে নির্যাতন করার প্রথা কোনকালেই ছিল না। মনস্বী এলফিনষ্টোন সাহেব হিন্দুদিগের দণ্ডবিধি আইন সমালোচনা করিতে গিরা যদিও তাহার অনেক ক্রাট ধরিয়াছেন তত্রাপি বলিতে বাধ্য হইয়াছেন যে "It is an honorable distinction from most ancient codes, that torture is never employed either against witnesses or Criminals."

আঞ্চান্ত দেশের আইলের দাইছে কুলানা করিলে ভারতবর্ধের পক্ষে ইহা কম সৌরবের বিষয় নহে। ফাহিরানেও আমরা ইহার উল্লেখ দেখিতে পাই।

ফাহিরান ইহাও শিপিবদ্ধ করিয়া গিরা-ছেন বে, "ব্রাহ্মণধর্মাবদ্দী" নাবিকগণ গঙ্গাতীরবর্তী বন্দরাধি হইতে লক্ষা দ্বীপে, লক্ষা হইতে জাবা এবং তথা হইতে চীন পর্যান্ত বাণিজ্যার্থ গ্রমনাগমন করিতেন। জাবাধীপে হিন্দুধর্ম প্রচলিত ছিল। তৎকালীন হিন্দুগণ যে সমুদ্রযাত্রার বিরোধী ছিলেন না ফাহিরান পাঠে তাহা বেশ হুদয়লম হয়।

স্থতরাং মোটামোটী হিসাবে ফাহিয়ান পাঠে আমরা খুঠীয় পঞ্চম শঙালীর যে বৃত্তান্ত পাইতেছি তাহাতে দেখিতেছি যে কি অর্থে, কি স্থাসনে, কি বিস্তায়, কি দয়াদাক্ষিণ্যে কি আইনকান্থনে আমরা তৎকালীন অন্ত কোন দেশ অপেক্ষা কোন অংশে হীন ছিলাম না। আগামীবারে আমরা ফাহিয়ানের ভ্রমণের বিস্তারিত বৃত্তান্ত দিব।

উৎসব।

(শাস্তি নিকেতনের বাংসরিক উৎসব উপলক্ষ্যে)

প্রভাবের স্থা যে উৎসব দিনটির
পদানগুলিকে দিকে দিকে উদ্যাটিত করে
দিলেন ভারই মর্শুকোবের মধ্যে প্রবেশ করবার
আনু আনু আমাদের আহ্বান আছে।
ভার স্বর্গরেপ্র অন্তরালে যে মধু সঞ্চিত আছে
দেশনৈরোকে কি কোনো স্থান্ধ আন্ধ আমাদের
ক্রম্যের আন্ধানে এসে পৌছর নি ? এই
বিধি উপবনের রহস্ত-নিলরের ভিতরটিতে

প্রবেশের সহজ অধিকার আছে বার, সেই
চিত্তমধুকর কি আজও এখনো জাগ্ল না?
কোনো বাতাসে এখনো সে কি খবর পায় নি?
আলকের দিন যে একটি অনেক দিনের
খবর নিয়ে বেরিরেছে এবং সে বে সম্পূর্থর
অনেক বিনের দিকেই চল্লেছে। সেত্র্যে
দূর ভবিষ্যকের পরিক। আল তাকে ধরে,
নীঞ্ করিবে আনালের প্রায় করতে হবে,



মহবি দেবেল্রনাথ ঠাকুর—(বয়স ১৮)

"Benz

ভার বা কিছু কথা আছে সমস্ত আবার করে
নেওরা তাই। সমস্ত মন দিরে না জিজাসা
করলে নে কাউকে কিছুই বলে না, তথন
আমরা মনে করি, এই গান, এই বাতধ্বনি,
এই অনভার কোলাহল, এই ব্ঝি তার যা
ছিল সমস্ত, আর ব্ঝি তার কোনো বাণী নেই!
কিছু এমন করে তাকে যেতে দেওরা
হবে না—আজু এই সমস্ত কোলাহলের মধ্যে
বে নিজক হবে আছে সেই পথিকটিকে
জিজাসা কর, আজু এ কিসের উৎসব ?

প্রতি বৎসর বসস্তে আমের বনে ফলভরা
শাখার মধ্যে দক্ষিণের বাতাস বইতে থাকে—
দেই সময়ে আমের বনে তার বার্ষিক উৎসবের
ঘটা। কিন্তু এই উৎসবের উৎসবত্ব কি নিয়ে,
কিসের জন্তে ? না, যে বীঞ্চ থেকে আমের
গাছ জন্মছে সেই বীজ অমর হয়ে গেছে
এই শুভ থবরটি দেবার জন্তে। বৎসরে বৎসরে
ফল ধরচে—দে ফলের মধ্যে সেই একই
বীঞ্জ—সেই পুরাতন বীজ। সে আর
কিছুতেই ফুরচ্চে না—সে নিতাকালের পথে
নিজেকে দিগুণিত চতুগুণিত সহস্রগুণিত
করে চলেছে।

শান্তিনিকেতনের সাম্বংসরিক উৎসবের সফলতার মর্মান্থান যদি উদ্বাটন করে দেখি তবে দেখাতে পাব এর মধ্যে সেই বীজ অমর হয়ে আছে যে বীজ থেকে এই আশ্রম-বনস্পতি, জন্মলাভ করেছে।

েন হচ্চে সেই দীক্ষাগ্রহণের বীজ।
মহর্ষির সেই জীবনের দীক্ষা এই আশ্রমবনস্পতিতে আজ আমাদের জন্তে ফল্চে;
এবং আমাদের আগামীকালের উত্তরবংশীরদের
আজে কলভেই চলবে।

ৰছৰাৰ পূৰ্বে কোন্ একদিনে মছৰি
দীক্ষাগ্ৰহণ করেছিলেন, সে ধবর ক'জন লোকই বা জান্ত ? যারা জেনেছিল যারা দেখেছিল ভারা মনে মনে ঠিক করেছিল এই একটি ঘটনা আজকে ঘট্ল এবং আজ্কেই এটা শেষ হয়ে গেল।

কিন্ত এই দীক্ষাগ্রহণ ব্যাপারটিকে সেই
স্থান কালের ৭ই পৌষ নিজের করেক ঘণ্টার
মধ্যে নিঃশেষ করে ফেল্ডে পারেনি। সেই
একটি দিনের মধ্যেই এ'কে কুলিরে উঠ্ল না।
সেদিন যাব ধরর কেউ পায়নি এবং তারপরে
বহুকাল পর্যান্ত যার পরিচর পৃথিবীর কাছে
অজ্ঞাত ছিল সেই ৭ই পৌষের দীক্ষার দিন
আজ অমর হয়ে বৎসরে বৎসরে উৎসব ফল
প্রসব করচে।

আমাদের জীবনে কত শত ঘটনা ঘটে যাচে কিন্তু চিরপ্রাণ ত তাদের স্পর্শ করে না—তারা ঘট্চে এবং মিলিয়ে যাচে তার হিসেব কোথাও থাক্চে না।

কিন্তু মহাপ্রাণ এসে কার জীবনের কোন্
মুহুর্তিটকে কথন্ লুকিয়ে স্পর্ল করে দেন,
তার উপরে নিজের অদৃশ্র চিক্টি লিখে দিয়ে
চলে যান—তারপরে তাকে কেউ না দেখুক
না জামুক, দে হেলায় ফেলার পড়ে থাক্,
তাকে আবর্জনা বলে লোকে ঝেঁটিয়ে
ফেলুক—সেদিনকার এবং তারপরে বছদিনকার ইতিহাসের পাতে তার কোনো উল্লেখ
না থাকুক্—কিন্তু সে রয়ে গেট্টা জালির
রালি রালি মৃত্যু ও বিশ্বতির মাঝখান থেকে
সে আপনার অন্তুরটি নিয়ে অতি জনারাসে
মাথা তুলে ওঠে—নিত্যকালের স্থ্যালোক এবং
নিত্যকালের সমীরণ তাকে পালন কর্মীর

ভার একা করে—স্বাচকণ সংগারের ভয়বর ঠেলাঠেলিভেও ভাকে আর স্বিরে ক্লেভে পারে না।

মংর্বির জীবনের একটি ৭ই পৌবকে
সেই প্রাণস্বরূপ অমৃতপুক্র একদিন নিঃশবে
স্পর্ল করে গিরেছেন—তার উপরে আর
মৃত্যুর অধিকার রইল না। সেই দিনটি
ভার জীবনের সমস্ত দিনকে ব্যাপ্ত করে
কি রক্ষম করে প্রকাশ পেরেছে তা কারও
অগোচর নেই। তারপরে তার দীর্ঘ জীবনের
মধ্যেও সেই দিনটির শেষ হয়নি। আজও
সে বেঁচে আছে—তথু বেঁচে নেই, তার
প্রাণশক্তির বিকাশ ক্রমশই প্রবশতর হয়ে
ভিঠ্চে।

পৃথিবীতে আমরা অধিকাংশ লোকই
প্রাক্তর হরে আছি আমাদের মধ্যে দেই
প্রকাশ নেই বে প্রকাশকে প্রবি আহলান
দরে বলেছেন, আবিরাবীর্ম এবি— হে প্রকাশ,
তুমি আমাতে প্রকাশিত হও! তাঁর সেই
প্রকাশ বার জীবনে আবিভূতি তিনি ত আর
নিজের ঘরের প্রাচীরের ঘারা নিজেকে
আড়াল করে রাণ্ডে পারেন না এবং তিনি
নিজের আর্টুকুর মধ্যেই নিজে সমাপ্ত হরে
থাকেন না! নিজের মধ্যে থেকে তাঁকে
সর্বাদেশে এবং নিতাকালে বাহির হতেই হবে।
সেই ক্রেই উপনিষ্ধ বলেছেন
যবৈত্য অন্ত্রপ্রতি আত্মানং দেবম্ অঞ্লসা
ক্রীনার ভূতন্তবাক্ত ন ততো বিজ্কপ্রতে।

বৰন এই দেবতাকে এই প্রমান্তাকে, এই ভূতভবিহাতের ঈশ্বরকে কোনো ব্যক্তি হাজাৎ দেশ্তে পান তথন তিনি আর গোণান থাক্তে পারেন না। ভাবে বিলি সংক্ষাৎ কেবেছেন অর্থাএকেবারে নিবের অন্তরান্ধার মার্থানেই
কেবেছেন তার আর পদা নেই, দেয়াল নেই,
প্রাচীর নেই—তিনি সমস্ত বেশের, সমস্ত
কালের। তার কথার মধ্যে, আচরণের
মধ্যে, নিত্যতার লক্ষণ আপনিই প্রকাশ
পেতে থাকে।

वा कार्र कि ? वा कार्र कार्र कार्र

বে, তিনি বে আত্মানং, সকল আত্মার আত্মাকে দেখেছেন। বারা সেই আত্মাকে দেখেনি তারা আহকেই বড় করে দেখে। তারা বাহিরের দরজার কাছেই ঠেকে গিরেছে। তারা কেবল আমার বাওয়া আমার পরা, আমার বৃদ্ধি আমার মত, আমার প্যাতি আমার বিত্ত— একই প্রধান করে দেখে। এই যে অহস্তার এতে সভ্য নেই, নিজ্য নেই; এ আলোকের দারা নিজেকে প্রকাশ করতে গারে না, আঘাতের দারা প্রকাশ করতে চেটা করে।

কিন্তু যে লোক আত্মাকে দেখেছে সে
আর অহংরের দিকে দৃক্পাত করতে চার না।
তার সমস্ত অহংরের আরোমন পুড়ে ছাই
হরে যার। বে প্রাদীপে আলোকের শিথা
ধরে নি সেই ও নিজের প্রচুর তেল ও পল্তের
সঞ্চর নিরে গর্মা করে—আর যাতে আলো
একবার ধরে গিয়েছে সে কি আর নিজের
তেল পল্তের দিকে ফিরে ভাকার? সেওঁ
আলোটির পিছনে তার সমস্ত তেল সমস্ত
পল্তে উৎসর্গ করে দের। কিন্তু সে একেবারেণ
প্রকাশ হরে প্রড়ে, সে আর নিজের আড়ালে
গোপনে থাক্তে পারে না।

ন ভতো বিজ্ঞগতে। কেন ! কেননা তিনি অঙ্গঞ্জতি আত্মানং বেরং। তিনি



ছাতিমতল —শাণিলিকেওল

আশ্বাকে দেখেছেন, দেবকে দেখেছেন। দেব
শব্দের অর্থ দীপ্তিমান। আত্মা যে দেব, আত্মা
যে জ্যোতির্মায়। আত্মা যে অতঃ প্রকাশিত।
অহং প্রদীপ মাত্র, আর আত্মা যে আলোক।
অহং দীপ যথন এই দীপ্তিকে এই আত্মাকে
উপলব্ধি করে তথন সে কি আর অহস্কারের
সঞ্চয় নিয়ে থাকে ? তথন সে আপনার স্ব
দিয়েই সেই আলোককেই প্রকশি করে।

সে বে তাঁকে দেখেছে যিনি ঈশানো
ভূতভবাস্থা, যিনি অতীত ও ভবিষ্যতের
অধিপতি। সেই জ্বপ্রেই সে বে সেই বৃহৎ
কালের ক্ষেত্রেই আপনাকে এবং সব কিছুকেই
দেখতে পার। সে ত কোনো সাময়িক
আসক্তির ছারা বদ্ধ হর না কোনো সাময়িক
ক্ষোভের ছারা বিচলিত হতে পারে না। এই
জ্বস্তই তার বাক্য ও কর্মা নিত্য হয়ে ওঠে—
তা কালে কালে ক্রমণীই প্রবলতর হয়ে ব্যক্ত
হতে থাকে, যদি বা কোনো এক সময়ে কোনো
কারণে তা আচ্ছের হয়ে পড়ে তবে নিজের
আচ্ছোদনকে ছয়্ম করে' আবার নবীনতয়
উজ্জ্বশতার সে দীপ্যমান হয়ে ওঠে।

মহর্ষির १ই পোষের দীক্ষার উপরে আত্মার
দীপ্তি পড়েছিল—তার উপরে ভূত ভবিস্তত্তর
থিনি ঈশান তাঁর আবির্ভাব হয়েছিল—এই
জন্তে সেই দীক্ষা ভিতরে থেকে তাঁর জীবনকে
ধনী গৃহের প্রস্তরকঠিন আচ্ছাদন থেকে
সর্ব্বদেশ সর্ব্বকালের দিকে উদ্যাটিত করে
• দিয়েছে—এবং সেই ৭ই পৌষ এই শাস্তিনিকেতন আশ্রমকে কৃষ্টি করেছে এবং এখনও
প্রতিদিন এ'কে কৃষ্টি করেছে এবং এখনও

র্তিনি আৰু প্রায় অর্দ্ধ শতাকী হল যেদিন এর সপ্তপর্শের ছায়ার এসে বসলেন সেদিন তিনি জান্তেন না বে, তাঁর জীবনের সাধনা এইথানে নিভ্য হয়ে বিরাজ করবে। ভিনি ভেবেছিলেন নিৰ্জন উপাদনার জন্মে এখানে ভিনি একটি বাগান তৈরি করেছেন। কিছ ন ততো বিজ্ঞপতে। যে জায়গায় বড় এসে দাঁড়ান সে জায়গাকে ছোট বেড়া দিয়ে আর খেরা যায় না। ধনীর সন্তান নিজেকে যেমন পারিবারিক ধনমানসম্ভমের মধ্যে ধরে রাখতে পারেন নি সকলের কাছে তাঁকে বেরিয়ে পড়তে হয়েছে—তেমনি এই শান্তিনিকেতনকেও তিনি আর বাগান করে রাখতে পার্লেন না-এ তাঁর বিষয়সম্পত্তির আবরণকে বিদীর্ণ করে ফেলে বেরিয়ে পড়েছে,—এ আপনিই আজ আশ্রম ২ের দাঁড়িয়েছে। যিনি ঈশানো ভূত-ভবাস্ত, তাঁর স্পর্শে বোলপুরের মাঠের এই ভৃথগুটুকু ভৃত এবং ভবিষ্যতের মধ্যে বাাও हरत्र (मथा मिरत्रहि ।

এই আশ্রমটির মধ্যে ভারতবর্ধের একটি
ভূতকালের আবির্ভাব আছে। সে হচ্চে সেই
তপোবনের কাল। যে কালে ভারতবর্ধ
তপোবনে শিক্ষালাভ করেছে, তপোবনে
সাধনা করেছে এবং সংসারের কর্ম্ম সমাধা
করে তপোবনে জীবিতেখরের কাছে জীবনের
শেষ নিখাস নিবেদন করে দিয়েছে। বে কালে
ভারতবর্ধ জল স্থল আকাশের সঙ্গে আপনার
যোগ স্থাপন করেছে এবং তক্ষণতা পশুপক্ষীর
সঙ্গে আপনার বিচ্ছেদ দূর করে দিয়ে শর্মকভূতেরু চাত্মানং" আত্মাকে স্মভূতের মধ্যে
দ্র্শন করেছে।

শুধু ভূতকাল নয়, এই আশ্রমটির মধ্যে একটি ভবিশ্বংকালের আবির্ভাব আছে। কারণ, সত্য কোন অতীতকালের ক্সিনিব •

स्टब्स् भारत मा । वा अदक्तांत्रम् स्टब हुटक श्राष्ट्र, यात मारवा खिवशाल चात्र स्वात किहेरे নেই তা মিখ্যা, তা মারা। বিখপ্রকৃতির ৰাৰখানে দাঁড়িরে আত্মার সঙ্গে ভূমার যোগ-गांवना এই विक गढ़ा गांवना হয় তবে এই সাধনার মধ্যে এসে উপস্থিত না হলে কোনো কালের কোনো সমস্তার মীমাংসা হতে পারবে না। এই সাধনা না থাকলে সভ্যের সঙ্গে মল্লকে আমরা এক করে দেখতে পাব না---मकरनत गरम जन्मरतत्र जामता विरुद्ध चिरव वनव-- এই সাধনা না शाकरन आयता जगरउ অনৈকাকেই বড় করে জানব এবং স্বাতম্ভাকেই **পরম পদার্থ বলে জ্ঞান করব--- পরম্পরকে থর্কা** करम ध्येतन हरम अर्थताम क्छ क्यान रिमा-ঠেলি করতে থাকব--সমন্তকে এক করে নিরে विनि भाखः निरः चरिक्छः क्रांश विश्वास क्यारान তাঁকে সর্বাত্ত উপলব্ধি করবার অন্তে না পাব অৰকাৰ, না পাব মনের দান্তি।

শত এব, সংসারের সমস্ত ঘাত প্রতিবাত কাড়াকার্ডি মারামারি বাতে একাক্ত হরে উত্তপ্ত হরে না ওঠে সে অন্তে এক আরগার শাক্তং নিবং অবৈতং-এর প্ররটকে বিভঙ্কভাবে আগিরে রাখবার অক্তে তপোবনের প্রয়োজন। সেথানে কণিকের আবর্ত্ত নর, সেথানে নিভ্যের আবির্ভাব, সেথানে পরস্পরের বিচ্ছেদ নর সেথানে সকলের সঙ্গে বোগের উপলবি। সেথানকারই প্রার্থনায়ন্ত্র হচ্চে অসভোষা সন্প্রবর, তমসোরা জ্যোভির্নমর, মুড্যোর্থা-মুজাগ্যর,

শৈই তপোবনটি মহর্ষির জীবনের প্রভাবে এবানে" আপনি হরে উঠেছে। এবানকার বিষ্টি প্রান্তরের মধ্যে তপভার দীবি আগনিই

विखीर्न स्टब्ट्ड अधानकात्र कल्लाका ग्रह्मा সাধনার নিবিড়তা আপনিই স্কিড চায ঈশানো ভূতভব্যত এখানকার আকাশের মধ্যে তাঁর একটি বড় আসন পেতে-ছেন। সেই মহৎ আবির্ভাবটি আশ্রমবাসী প্রত্যেকের মধ্যে প্রতিদিন কান্ধ করচে। প্রত্যেক দিনটি প্রান্তরের প্রান্ত হতে নি:শব্দে উঠে এশে তাদৈর হুই চকুকে আলোকের व्यक्तित्वर निर्माण करत पिरक नमन पिर्मे আকাশ অলক্ষ্যে তাদের অন্তরের মধ্যে প্রবেদ করে জীবনের সমস্ত সংখাচগুলিকে ছুই হাত দিয়ে ধীরে ধীরে প্রাসারিত করে দিচ্চে-তাদের ক্রম্মের গ্রন্থি অরে অরে মোচন হচে. তাদের সংস্থারের আবরণ ধীরে ধীরে কর হরে ৰাচ্চে, ভাৰের ধৈৰ্য্য দৃঢ়তর ক্ষমা গভীর-তর হয়ে উঠচে— এবং আনন্দমর পরমান্তার সঙ্গে তাণের অব্যবহিত চেতনাময় যোগের वावधान ध्वकान कीन रुख पूत्र रुख शांव সেই ওভকণের জন্তে তারা প্রতিদিন পূর্ণতর আশার সঙ্গে প্রতীকা করে আছে। তারা চ:ধকে অপমানকে আঘাতকে উদার শক্তির সল্পে বহন করবার অক্ত ছিলে দিনে প্রস্তুত इटक-वर (य क्यांटियंत भवमानम धार वित्यंत्र कृष्टे कृगाक छेत्वन करत्र मिरत्र नित्रस्त शाताक विक्षिशखरत अरत शर् वास्त्र कीवनरव ভারই কাছে নত করে ধরবার জন্মে তারা क्षे वास्तान उन्छ शह्त।

এই তপোৰনটির মধ্যে একটি নিগুচ রহস্তমর ক্ষেত্র কাল চল্চে লেই রহস্তটি আমাদের
মধ্যে কে দেখতে পাচেচ! ধে একটি জীবন
কেছের আবস্তব আজ বৃচিরে নিরে পরমঞালের
প্রত্যালে আপনাকে সম্পূর্ণ করে

মন্দির—শাস্থিনিকেন্তন ৷ ৰোলপুর

দিরেছে সেই জীবনের ভাষাযুক্ত স্বর্মুক্ত জান্তি বিশুদ্ধ আনম্প এথানকার নিশুদ্ধ আকাশের. মধ্যে নির্মাণ ভক্তিরনে সরস একটি
পবিত্র বাণীকে কেবলি বিকীর্ণ করচে—কেবলি
বল্চে ভিনি আমার প্রাণের আরাম আত্মার
শাস্তি, মনের আনন্দ, সে বলা আর শেষ হচেচ
না—সেই আনন্দের কান্ধ আর-কুরালো না।

জগতে একমাত্র আনন্দই যে সৃষ্টি করে. স্ষ্টির শক্তি ত আর কিছুরই নেই। এথানকার আকাশপ্লাবী অবারিত আলোকের মাঝথানে বঙ্গে আনন্দের সঙ্গে তাঁর যে আনন্দ মিলে-ছिन, त्रहे जानल, त्रहे जानल मिनन उ শুক্ততার মধ্যে বিলীন হতে পারে না। সেই আনন্ত আত্তও সৃষ্টি করচে, এই আশ্রমকে সৃষ্টি করে তুলেছে-এথানকার গাছপালার শ্রামলতার উপরে একটি প্রগাঢ় শান্তির স্থান্থির অঞ্জন প্রতিদিন যেন নিবিড় করে মাথিরে দিচে। অনেকদিনের অনেক হুগভীর আনন্দ-মুহূর্ত্ত এথানকার সুর্য্যোদয়কে, সুর্য্যান্তকে এবং নিশীথ রাত্তের নীরব নক্ষত্রগোককে দেবর্ষি নারদের বীণার তারগুলির মত অনি-র্বাচনীয় ভক্তির স্থরে আত্তও কম্পিত করে তুলচে। সেই আনন্দৃষ্টির অমৃতময় রহস্ত আমরা আশ্রমবাসীরা কি প্রতিদিন উপলব্ধি করতে পারব না গ একদিন একজন সাধক অক্সাৎ কোথা থেকে কোথায় যেতে যেতে এই ছারাশৃভ বিপুল প্রান্তরের মধ্যে যুগল সপ্তপর্ণ গাছের ভলার বসলেন—সেই দিনটি আর মরলনা—সেই দিনটি বিশ্বকর্মার স্ষ্টি-শক্তির মধ্যে চির্দ্ধনের মত আটুকা পড়ে গেল, শৃষ্ণ প্রাস্তরের পটের উপরে রঙের পর রং: প্রাণের পর 'প্রাণ ফলিরে ভুল্ভে লাগল-বেধানে কিছুই ছিল না, বেধানে ছিল বিভীষিকা দেখানে একটি পূৰ্বতার মূর্ত্তি প্রথমে আভাগে দেখা দিল তার পরে ক্রমে ক্রমে দিনে দিনে বর্ষে বর্ষে স্পষ্টতর হয়ে উঠতে লাগল, এই যে আশ্চর্য্য রহস্ত, জীবনের নিগৃঢ় ক্রিয়া, আনন্দের নিত্যলীলা, সে কি আমরা এথানকার শালবনের মর্মারে, এখানকার আম্রবনের ছায়াতলে উপলব্ধি করতে পারব না 📍 শরতের অপরিমের গুত্রতা যথন এখানে শিউলি ফুলের অজ্ঞ বিকাশের মধ্যে আপনাকে প্রভাতের পর প্রভাতে ব্যক্ত করে করে কিছুতে আর ক্লাস্তি মান্তে চায় না তখন সেই অপর্যাপ্ত পুষ্পবৃষ্টির মধ্যে আরও একটি অপরপ ভ্রতার অমৃত বর্ষণ কি নিঃশব্দে আমানের জীবনের মধো অবতীর্ণ হতে থাকে না ? এই পৌষের শীতের প্রভাতে দিকপ্রান্তের উপর থেকে একটি সূক্ষ শুল কুহেলিকার আচ্ছাদন যথন উঠে যায়ু,আমলকী-কুঞ্জের ফলভারপূর্ণ কম্পিত শার্থাভাগর মধ্যে উত্তর বায়ু স্ব্যাকিরণকে পাতার পাতার নৃত্য করাতে থাকে এবং সমস্ত দিন শীতের রোক্ত এখানকার অবাধ-প্রসারিত মাঠের উপরকার স্থ্ৰতাকে একটি অনিৰ্ব্বচনীয় বাণীর দারা ব্যাকুল করে তোলে, তথন এর ভিতর থেকে আর একটি গভীরতর আনন্দ-সাধনার স্থৃতি 🍑 आभारतत कतरवत मर्या वाथि रख शर् मा १ একটি পবিত্র প্রভাব, একটি অপর্ক্ন সৌন্দর্যা, একটা পরম প্রেম কি ঋতুতে ৠুতুতে ফল পুষ্পা পল্লবের নব নব বিকাশে আমাদের সমস্ত অন্তঃকরণে ভার অধিকার বিস্তার করচে না ? নিশ্চরই করচে। কেননা এই থানেই 🚄 এক্সিন- সকলের চেয়ে বড় রহন্ত নিকেতনের

এकि दांत. भूरम शिरव्रह्— এथान शांहिब তলার প্রেষের সঙ্গে প্রেম মিলেছে, হুই আনন্দ **এक हरदाह— त**रहे था अन्न अनमः व देनि देशांत्र भारतानम मिट देनि धारा धा কতদিন এইখানে মিলেছে—হঠাৎ কত উষার আলোর, কত দিনের অবসানবেশার, কত নিশীপ রাত্রের নিস্তব্ধ প্রহরে—প্রেমের সঙ্গে প্রেম, আনন্দের সঙ্গে আনন্দ! সেদিন যে ৰার খোলা হরেছে সেই হারের সমুখে এসে আমরা দাঁড়িয়েছি, কিছুই কি ভন্তে পাব না ? कांडेरक्टे कि प्तथा यादन ना १ प्रदे मुक ছারের সাম্নে আজ আমাদের উৎসবের মেলা বসেছে, ভিতর থেকে কি একটি আনন্দ গান বাহির হয়ে এসে আমাদের এই সমস্ত দিনের ক্লরবকে সুধাসিক্ত করে তুল্বে না ? না, তা কথনই হতে পারে না। বিমুখ চিকও किंद्रदन, भाषांग क्रमग्रंथ शन्दन, एक भाषारण्य মুল মুটে উঠবে। হে শান্তিনিকেতনের অবি-দেবতা, পৃথিবীতে ষেখানেই মাহুষের চিত্ত ৰাধামুক্ত পরিপূর্ণ প্রেমের ঘারা তোমাকে ম্পর্শ করেছে সেখানেই অমৃতবর্ষণে একটি আশ্চর্যা শক্তি সঞ্জাত হয়েছে—সে শক্তি किছুতেই নষ্ট হয় না, সে শক্তি চারিদিকের গাছ-পালাকেও জড়িয়ে ওঠে, চারিদিকের বাতাসকে পূর্ণ করে। কিন্ত ভোমার এই একটি আশ্চর্য্য লীলা, শক্তিকে ভূমি আমাদের কাছে প্রত্যক করে রেখে দিতে চাও না। তোমার পৃথিবী षांचारमत्र वैकृषि व्यष्टल होत्न हित्न (त्रस्थरह, কিছ ভার দড়িদড়া ভার টানাটানি কিছুই চোথে পত্তে মা-ভোমার বাতাগ আমাদের উপর যে ছাৰ চাপিয়ে রেখেছে সেট কম ভার নয়, ক্রিত্ব বাভাসকে আমরা ফারী বলেই বানিনে;

তোমার স্থালোক নানাপ্রকারে আন্থাবের উপর বে শক্তিপ্রয়োগ করচে বদি গণনা করতে বাই তার পরিমাণ দেখে আমরা তালো বলেই জানি শক্তি বলে জানিনে। তোমার শক্তির উপরে তুমি এই একটি ত্কুম জারি করেছ সে লুকিরে লুকিরে আমাদের কাজ করবে এবং দেখাবে যেন সে খেলা করচে।

কিন্তু তোমার এই আধিভৌতিক শক্তি যা আলো হয়ে আমাদের সাম্নে নানা রঙের ছবি আঁকচে, যা বাতাস হয়ে আমাদের কানে নানা স্থুরে গান করচে, যা বল্চে "আমি জল," বলে, व्यामात्मत्र ज्ञान कतात्क, या वन्त व्याम ज्न वर्ण आमारित कारण करत (तर्थाछ- यथन শক্তির সঙ্গে আমাদের জ্ঞানের যোগ হয়, যখন তাকে আমরা শক্তি বণেই জান্তে পারি--তখন তার ক্রিয়াকে আমরা অনেক বেশি করে অনেক বিচিত্র করে লাভ করি: তথন তোমার যে শক্তি আমাদের কাছে সম্পূর্ণ আত্মগোপন করে কাঞ্চ করছিল সে আর ন ততো বিজ্-শুপ্রতে—তথ্ন বাষ্পের শক্তি আমাদের দূরে বহন করে বিদ্যুতের শক্তি আমাদের হংগাধ্য প্রব্রেজন সকল সাধন করতে থাকে। তেমনি তোমাৰ অধ্যান্ত শক্তি আনন্দের প্রস্রবণ থেকে উচ্ছিদিত হয়ে উঠে এই আশ্রমটির মধ্যে আপ-निर्दे निः भरन काम करत वास्क्र, निरम निरम बीद्ध धीद्ध, भञ्जीद्ध शांभदन-किर्द महाउन, সাধনার বারা যে মুহুর্তে আমাদের বোধের সঙ্গে ভাৰ যোগ ঘটে যায় সেই সুহুৰ্ত্ত হতেই সেই শক্তির ক্রিয়া দেখতে দেখতে আমাথের জীব-त्नत्र मध्या **नित्रवाश्च ७ वि**ष्ठिव रुष्ट्र ७८८। ভখন দেই বে কেবল একলা কাৰু করে তা

নর, আমরাও তথন তাকে কাজে লাগাতে পারি। তথন তাতে তথামাতে মিলে দে তথক আশ্বা ব্যাপার হয়ে উঠ্তে থাকে। তথন বাকে কেবলমাত্র চোথে দেখ্তুম, কানে ভন্তুম, অন্তর বাহিরের বোগে তার অনস্ত আনন্দর্মণটি একেবারে প্রত্যক্ষ হয়ে ওঠে—দে আর ন ততো বিজ্গুপ্সতে। দে ত কেবল বস্ত নয়, কেবল ধ্বনি নয়, দেই আনন্দ, দেই আনন্দ।

জ্ঞানের থোগে আমরা জগতে তোমার শক্তিরপ দেখি, অধ্যাত্মযোগে জগতে তোমার আনন্দরূপ দেখতে পাই। তোমার সাধকের এই আশ্রমটির বে একটি আনন্দরূপ আছে সেইটি দেখতে পেলেই আমাদের আশ্রমবাদের সার্থকতা হবে। কিন্তু সেটি ত অচেতনভাবে হঁবে না, সেটি ত মুখ ফিরিয়ে থাক্লে পাব না। হে যোগী, তুমি যে আমাদের দিক থেকেও বোগ চাও-জ্ঞানের 'বোগ, প্রেমের বোগ. কর্মের যোগ। আমরা শক্তির ছারাই তোমার শক্তিকে পাব ভিক্ষার দ্বারা নয় এই তোমার অভিপ্রায়। তোমার ব্রগতে যে ভিক্ষুকতা করে সেই সব চেয়ে বঞ্চিত হয়। যে সাধ্ আত্মার শক্তিকে জাগ্রত করে' আত্মানং

পরিপশুতি, ন ততো বিজ্গুপ্সতে; সে এমনি পরিপূর্ণ হয়ে ওঠে যে আপনাকে আর গোপন করতে পারে না। আজ উৎসবের দিনে তোমার কাছে সেই শক্তির দীক্ষা আমরা গ্রহণ করব। আমরা **আজ** জাগ্রত হব, :চিততেক সচেতন করব, হাদয়কে নির্মাল করব, আমরা আজ যথার্থ ভাবে এই আশ্রমের মধ্যে প্রবেশ করব। আমরা এই আশ্রমকে গভীর করে. বুহৎ করে, সভা করে, ভুত ও ভবিষাতের সঙ্গে একে সংযুক্ত করে দেখব, যে সাধক এখানে তপস্থা করেছেন তাঁর আনন্দময় বাণী এর সর্ব্বত্র বিকীর্ণ হয়ে রয়েছে সেটি আমরা অস্তরের মধ্যে অন্নভব করব-এবং তাঁর সেই জীবনপূর্ণ বাণীর দারা বাহিত হয়ে এথানকার ছায়ায় এবং আলোকে, আকাশে এবং প্রান্তরে, কর্ম্মে এবং বিশ্রামে, আমাদের জীবন তোমার অচল আশ্রয়ে, নিবিড় প্রেমে, নিরতিশন্ন আনন্দে গিয়ে উত্তীর্ণ হবে এবং চন্দ্র সূর্য্য, অগ্নি বায়ু তক্রনতা পশুপক্ষী কীট পতঙ্গ সকলের মধ্যে তোমার গভীর শাস্তি, উদার মঙ্গল ও প্রগাঢ় অধৈতরদ অমুভব করে শক্তিতে এবং ভক্তিতে সকল দিকেই পরিপূর্ণ হয়ে উঠ্তে থাকবে। শীরবীক্রনাপ ঠাকুর।

স্বপ্ন-ভঙ্গ।

তর্থন গ্রামের পাঠশালার পড়িতাম।
পড়াশুনার মোটেই ভাল ছিলাম না। শুরুমহাশরের তর্জন গর্জনে সর্বাদাই অন্তির
থাকিতে হইত। তবু শত তাড়নার না
কাঁদিয়া এবং লজ্জা না পাইরা শুরুকে
ব্যতিব্যক্ত করিয়া ভূঁলিভাম। কিন্ত এমনটা

বরাবর চলিল না, এমনও দিন জাসিল

যথন আমি বেত্ততাড়নে ৃপ্র্কানমূভ্ত

বেদনা পাইতে লাগিলাম এবং আমার

বৃদ্ধিনীনভার আমার মর্ম্মদেশ নীরবে লজ্জাহত

হইতে লাগিল। এই পরিবর্জুনের
কারণও ছিল।

আমি বড় মাতৃভক্ত। মারের কাছে শত আন্ধার করিয়া, নিত্য নুতন জিনিবের বাম্বনা ধরিয়া তাঁহাকে স্নেহের অভ্যাচারে বিত্ৰত রাধিতাম। থেলিতে থেলিডে হঠাৎ মাম্বের কথা মনে পড়িলে আমার (थना इहें ना, हक्ष्म हाज्यनी थि নিমেষের দম্কা বাতাসে একেবারে निः ट्लार्य निविधा घारेक, थीरत धीरत शृहर ফিরিয়া আঁসিয়া মাকে সমস্ত গৃহকর্ম হইতে ছिनाहेबा वहेबा डाँहाब तूरक मूथ नुकाहेबा ষথন তথন ক্লপকথার জন্ত আবার করিয়া বিসিতাম। মা আমাকে অত্যন্ত ভালবাসিতেন কাৰেই এ সবে তিনিও অহাত সুখী হইতেন।

किंद विविध्य काशास्त्र नमान यात्र ना, व्यामात्र अथा ना। এक निन मकारण घूम रुहेट উठिश पूत्र रुहेट एपिनाम मारब्र কোলে একটি কচি শিও রহিয়াছে, বাড়ীর গোকে সে ঘরে আমাকে প্রবেশ করিতে निन ना । धेक यांन नीर्घ निनश्चनि आयात বড় কটে কাটিতে লাগিল, কিন্তু তবু তথনো बाद्य नाजाहेबा यथन उथन माद्यत निध नृष्टि-हेकू इतरत मक्ष कतिया राथान रमधान হাস্তমূৰে ছুটিরা বেড়াইতে পারিতাম। যাহা হউক মাসটি দীর্ঘ হইলেও অক্তান্ত মাসের ভার সেটিও চলিয়া গেল। মাকে আবার কাছে পাইলাম। সে কি আনন্দ! সারারাত্রির বিনিজ ব্যাকুশতার পর পূঞ্ার প্রভাতের প্রথম व्यक्तभाष्ट्रीय देविया नववज्र श्रियान स्थालां हो चामात्र वागिहित्व ये जानम वर्द वर्ष পাইভাষ, স্থদীর্ঘ এক মাদের নির্বাসন <u>ছঃখের পর আমার মাকে পাওরার আনন্দের</u> कारह डाहां अकिकिश्क्य!

প্রথম আনন্দ-উচ্ছানের মুখে ঘ্রিতে পারি নাই, কিন্তু শীত্রই বুঝিতে লাগিলাম যে পুরাতন আর অকুগ্ল নাই, একটি নবীন অভিথি আদিয়া আমার ও মায়ের মধ্যে ব্যবধান রচনা করিয়া বসিয়াছে। আমার স্কল আনন্দের উৎস এবং সকল ছ:পের যেখানে অবসান সেই বুকটি ত খোকাই একচেটিয়া করিয়া লইয়াছে, এমন কি মায়ের অঞ্লের আড়ালটুকু হইতেও আমি ধীরে ধীরে বঞ্চিত হইতে লাগিলাম। কাছে আসিলে মা বলি-তেন "পড়াওনা নেই ? সারাদিন পাছে পাছে যা পড়্গে"; রূপকথার জ্ঞ ঘুরঘুর ! করিলে বলিতেন—"না, এখন থোকাকে হুধ খাওয়াতে হ'বে।" তিনি তখন चात्र चामाटक निक्रहाट था अत्राहेश (मन न!, নিজহাতে সাজাইয়া কুলে পাঠান না, নিতা নুতন জিনিষ দিয়া আমাকে ভুলাইতে চেষ্টা কৃত্ব অভিমানে আমার বুক करत्रन ना। कांडिया यादेख नाशिन, मात्र कां इंटेंख দুরে দুরে সরিয়া থাকিতে লাগিলাম, দেখি কভু আদর করিয়া আমাকে ডাকিয়া পাঠান কি না,—কিন্তু নিভা নুভন আশা নিভা নুভন নিরাশা ব্যধায় পীড়িত হইতে লাগিল।

মাতার স্নেছ হইতে বঞ্চিত হইরাছি মনে
করার বে ছংথ তাহা আমার চিত্তকে
সকল ছংথের প্রতিই সচেতন করিয়া তুলিল।
আমার হৃদরের বিরাট ছংখপাথারের,
শীতম্পর্লে সামাক্ত আঘাতের আবহারাটুক্
পর্যান্ত অফার্লে গলিয়া আসিয়া আমার
অন্তর্গেশ মণিত করিয়া তুলিতে মানিল।
ছংখই ছংখকে টানিয়া আনে, জলই
বাসাকে কলে পরিশত করিয়া প্রের,—আঘাত

ষতই সামান্ত হউক না তাহাকে আমার হৃদর-সঞ্চিত হংধরসে শিঞ্চিত করিয়া আমি প্রতিমূহুর্বেই ন্তন করিয়া পুরাতন হংধকে অনুভব করিতে লাগিলাম। এই সময়ই গুরু-মহাশরের বেত্রতাড়ন এবং আমার বৃদ্ধিহীনভা আমাকে স্থগভীর সাজনাহীন অব্যক্ত বেদনায় ব্যথিত করিয়া তুলিতে লাগিল।

(2)

পাঠে অমনোযোগ বাড়িতে লাগিল. সারাদিন একটা অন্তিত্বহীন মলিন ছারার মত বাড়ীর এখানে দেঁথানে বুরিয়া ফিরিতে লাগিলাম। সেদিন স্থলে গুরুমহাশয় অনেক-শুলি প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিলেন, তার মধ্যে কমেকটা অতি সাধারণ কথা ছিল, কিন্তু আমি একটিরও উত্তর দিতে পারিলাম না। একটি নীচের শ্রেণীর ছাত্রকে ডাকিয়া আনিয়া জিজ্ঞাদা করার সে সব গুলিরই উত্তর 'অনুর্গুল বলিয়া গেল। সম্ভ ছাত্রের সামনে আমি ৰজ্জার এতটুকু হইয়া গেলাম,—তাতেও लाञ्चन ए নাই. গুরুমহাশরের নিস্তার সেইদিন আমার পিঠে একটি চিরস্থায়ী দেদিন আমার লাঞ্ন আঁকিয়া দিল। চোখে একফোঁটা জল না দেখিয়া সকলে বিশ্বিত হইল। আমি গৃহে ফিরিয়া আসিয়া রক্তাক্ত জামাটি কোনো প্রকারে চালরটি দৃষ্টি এড়াইয়া দিয়া ঢাকিয়া স্কলের -রাখিলাম। মনে করিলাম সকলের নিকট হইতে গোপন রাথিয়া এই দারুণ কথাটি আজ মারের নিকটই প্রথম ফাঁশ করিব। বাড়ী অসিতেই বাবা বলিলেন "কি রে বিমু! তোর মুথ আজ এত শুক্নো দেখাছে কেন ?" আমি ব্ৰাসম্ভব দৃঢ়তার সহিত ৰলিলাম "না

কিছু নয়।" বাবা বাললেন "কাপড় ছেড়ে কাজ নেই, ওপাড়ার মাথনকে বলে আয় ত সে রাত্রে এখানে খাবে, সে আবার বেরিয়ে যাবে, যা শীগ্ৰীর্ যা।" আমি যন্ত্রচালিতের মত মাধনদাকে রাজে আমাদের বাড়ীতে খাইতে বলিয়া আদিলাম। কিন্তু সব সময় সেই একই কথা আমার অম্বরে জাগিতেছিল। পিঠের অসহু যন্ত্রণা আজ আমাকে বিন্দু-মাত্রও কষ্ট দিতে পারিতেছিল না, বরং তাহা ষেন হাদয়ের হৃঃখের সহিত সমান ভাল রাখিয়া আমাকে একটি অপুর্ন ভৃপ্তি দিতে লাগিল। আমার কেবলি মনে ছইতে-ছিল—ভাজ মা আমাকে কথনো উপেক্ষা ক্রিবেন না, আমার এই আঘাতের জন্ম আজ मा ट्रांथित जन ना ट्रिनिया निन्ह्य থাকিতে পারিবেন না, হয় ত থোকাকে নামাইয়া তাঁহার বিহুকে আজ উচ্ছ, দিত স্নেহে বুকে চাপিয়া ধরিবেন। পিঠে হাত দিয়া দেখিলাম যে তথনো অল অল গঁক ঝরি-তেছে এবং ক্ষতস্থান গভীরও বটে। মা আপন মনে থোকার জন্ম একটি জামা তৈয়ার করিতে নিযুক্ত আছেন দেখিতে পাইলাম। আমি কিছুক্ষণ তাঁহার কাছে কাছে ঘুরিলাম ফিরিলাম, কিন্তু তাঁহার দৃষ্টি আমার উপর পতিত হইল না, তিনি আমাকে ডাকিলেন ना। अञ्चित्त रहेटल उथनहे छिनेबा गहिजांग, किछ मिनि आमात्र श्रमप्र राजाद भूर्व किन, মার পায়ে তাকে নিঃশেষে শৃত্য করিয়া না দিয়া ফিরিয়া বাইতে পারিলাম না। কিছুক্ষণ বার্ধ চেষ্টার পর মার সমূথে আসিয়া নীরবে দাড়াইলাম, কিন্তু তবুও তিনি মুখ **তুলিকা** • চাহিলেন না। আমার চকু ছল ছল করিয়া

উठिन, कैंव कैंक खुद्ध विनिध किनिनाम "মা আমাকে মাষ্টারে আৰু বড় মেরেছে।" मा मूथ ना जुनिवारे वनितन "त्वम कत्त्रह, मात्र्र्व नां! পড़ा छना महे मात्रापिन पूरत पूरत्र (वड़ान्'। यां' त्रांख थावात्र क्रम वागान (थरक इटिंग (वश्चन निष्य चात्र छ, माथन मकान बाँधरा हरत।" शंदर, नकान **শেধানে আর দাঁ**ড়াইয়া থাকিতে পারিলাম ना, পুত्रनिकात में वाशास्त्र मिटक हिनाम, किरात्र अन्न यारेटिक किडूरे वृत्रिनाम ना। वांशास्त अक्टा दफ् कांशांन शास्त्र नीत ছারার গিরা বসিরা পড়িলাম। বুক ফুলিয়া উঠिन, চোধে नवनव शाद अञ्च वहिएछ লাগিল, মাটির উপর মূব রাখিয়া অনেককণ শুমিয়া শুমিয়া কাঁদিলাম। কাঁদিয়া কাঁদিয়া কতকটা শাস্ত হইলে পিঠে ভয়ানক ষ্মণা অকুভব করিতে লাগিলাম। মনে হইতে শাগিল-- এখন বদি মরি তবে বেশ হয়, चाका धैमने यति इत य धहे शाह इटेट একটা সাপ আসিয়া আমাকে কাম্ডায় ভবু কি মা আদিল আমাকে কোলে নেবেন না ! ভাবিতে ভাবিতে আমার ঘুম আসিল। কতকণ অর্জনিদ্রিত অবহার ছিলান कानि ना।

হঠাৎ পারের দিকে যেন কি একটা বন্ধণা অস্তুত্ত করিব জাগিরা উঠিলাম। ব' ভাগিরাছি তাই। একটা লাপ আমার পারের উপর দিলা হিড় হিড় করিরা চলির। গেল। কি হইরাছে কোথার কামড়াইরাছে আমার আর দেখিবার শক্তি ছিল না। ক্রিলো' বলিরা চীৎকার করিরা প্রাক্ষণের ক্রিকে দৌভিরা আসিরী চলিরা প্রিলাম। সন্ধান্ধাশের রক্তিষ আলো দেখিতে দেখিতে
নান হইরা আদিল, বাড়ীর সকলে 'কি
হইরাছে' বলিয়া বাহিরে ছুটিয়া আদিলেন,"
মা আদিরা আফুলকঠে জিজ্ঞাসা করিলেন—
"কি হইরাছে?" "সাপে কাম্ডাইরাছে" জল্ফুট
স্বরে এই কথাটুকু বলিয়াছিলাম মনে আছে।
দেখিতে দেখিতৈ সর্বাপরীর বিবে দগ্ধ হইয়া
বাইতে লাগিল, মুথে কথা ক্রন্ধ হইয়া বখন
কৌণ হইতে ক্রীণতর হইয়া কখন
কোধার থামিয়া গেল, বিশ্বরক্ত্মির উপর
কে একটি তিমির ঘর্বনিকা টানিয়া দিল,—
তার পর কোধার কি হইল আমি কিছুই
জানিতে পারিলাম না।

(0)

কভক্ষণ অথবা কয়দিন এইরূপ অবস্থায় ছিলাম জানি না। তার পর হইতে লাগিল আমি যেন স্থপ্ন দেখিতেছি। ষেন চারিদিকে বড় বড় ঢেউ খেলিতেছে; হাঙ্গর কুঞ্জীর গুলা এখানে সেখানে ভাসিয়া উঠিতেছে, কোনোটা বা আমার কাছে আদিয়া আবার দুরে চলিয়া যাইতেছে; যেন চারি-मिटक **भागन** हिल्लानिङ भगात्कव, मधा मिश्री এक है। श्रकाश्व नमी आभारक वहन करिया কোপার ছুটিরা চলিরাছে; কখনো কখনো পাৰে কত বর দেখা বাইতেছে, কথনো বা मायूब,—ভाদের মধ্যে সকলেই বেন মার মত, বাবার মত, গুরুমহাশয়ের মত; আবার, ক্থনত পার একেবারে মুছিয়া বাইতেছে, সেধানে নদী কত প্রশন্ত; . কথনো ছেন শান্ত নদী স্থ্যালোকে বক্ বক্ করিয়া উঠিতেছে, কৰলো বা উন্মাদ বাতাদের সঙ্গে र्थना कतिता कतिता क्रेंक इटेना छेडिएउए ह

চারিদিক হইতে সমুবোর ক্ষীণ চীৎকার শুনা বাইতেছে; কথনও ক্ষো মুপ্ল চিত্রগুলি হঠাৎ *বাজাসে মিলাইয়া গেল,—আবার সেই অন্ধকার!

একদিন যখন হঠাৎ চোখ মেলিলাম দেখি —আমাকে বাহিরে চাটাইত্রের উপর শোয়াইয়া এক ব্যক্তি আমার দর্ম শরীকে হাত বুলাইতে বুলাইতে কি মন্ত্র আওড়াইতেছে। আমার চোধ মেলার সকে সকে চারিদিক হইতে অনেক লোকে সমন্বরে বলিয়া উঠিল "বাহি-शाष्ट्र, वाँ विश्वाष्ट्र।" आमि वादिनित्क ज्य চ্কিত দৃষ্টি নিকেপ করিয়া দেখিলাম সকলের মুখই আমার নিকট অপরিচিত এবং ঘরদার কেমন নৃতন ধরণের, তখন এক ব্যক্তি একবাট গরম হুধ আনিয়া আমাকে খাওয়া-ইয়া দিল। আমি হ্যন একটু বল পাইয়া ধীরে ধীরে উঠিয়া বদিতে চেষ্টা করিলাম। কিছ'পারিলাম না। যে ব্যক্তি আমাকে: ছধ দিয়াছিল দে আমাকে অনেক প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিশ—ভোমার বাড়ী কোথা, ভোমার নাম কি, তোমার বাবার নাম কি ইত্যাদি। আমি **जाहांत्र मिर्टक कार्गण कार्गण कतिया को** किया রহিলাম, সে কি জিজ্ঞাদা করিতেছে আমি যেন ঠিক বুঝিতে পারিলাম না। रयन कि मान आनिए एउड़ी कविनाम, मान शांतिन ना, काटकहे (न वाक्ति काटना প্रदर्भ-রই আমার নিকট হুইতে সহত্তর পাইল না। সেই বাডীতে তিন চার দিন ছিলাম। ত'হাদের নিকট হইতে শুনিলাম যে তারা নদীতীর হইতে, প্ৰশিক্ষা আনিয়া ওঝা ডাকাইয়া আমাকে বাঁচাইয়াছে। ভার পর আরেকটি লোক खानियां कांचारक काल जांदीरक लहेरां शहा ।

সেখানে একটি খরে একা থাকিতাম, একা থাইতাম, তারা যা বলিত তাই করিতাম, এমন করিয়া কতদিন গেল জানি না।

দেখানে কত জায়গা হইতে কত লোক আসিয়া আমাকে কত কথা জিজ্ঞাসা করিত —আমি কিছুই উত্তর দিতে পারিতাম না। একদিন একজন একখানি বই আনিয়া আমাকে পড়িবার জন্ম দিয়াছিল। বইটা খুলিয়া পড়িবার চেষ্টা করিতেই আমার বকের ভিতরটা কাঁপিয়া উঠিল, কবেকার যেন কোন অতীতের একটা ভ্য-বিছড়িত স্মৃতির আভাস ছায়ার মত আমার মনে আদিল, কিন্তু অক্ষর গুলার সঙ্গে প্রিচ্ম করিয়া উঠিতে পারিলাম না। আমার কাছে অনেক লোক দাঁড়াইয়াছিল, —তার মধ্যে একজন বলিল আমি বলি নাই ও ভদ্ৰ লোকের ছেলে: নিশ্চয়ই জানে কিন্তু কিছুই মনে আনতে পার্ছে না।" তারপর অনেকে অনেক কথা বলিল, আমার সাঁৰ কিছুই মনে নাই।

এমনি করিয়া যে কতা দন, কতা মাদ, কতা, বৎসর গেল কিছুই বলিতে পারি না। চারিদিকে দেখিতাম কতা মামুষ হাসিতেছে, থেলিতেছে, আমোদ করিতেছে,আমি সকলের মধ্যে নিঃসঙ্গ নিরাশ্রয়! চারিদিকে স্থেপ হঃখে প্রামের পরিবারগুলির একটির পর একটি করিয়া দিন চলিয়া য়াইক্সেছে তাদের সহিত আমার কিছুরই যোগ নাই! বদ্ধু বদ্ধকে আলিঙ্গন করিতেছে, পিতামাতা সন্তানকে আদর করিতেছে, পল্লীঘাটে শতানরনারী আদিয়া জমা হইতেছে, গ্রামা প্রথাকিয়া কতা লোক হাটে ষাইতেছে, রাখাল

পক্ত লিকে লইরা মাঠের দিকে চলিরাছে;
এওলি আমার চোপে অপ্রচিত্রের মন্ত থেলিতে
থাকে। চারিদিকের ছন্দোপ্রবাহের মধ্যে
আমি যেন একটি স্তর যতি, চারিদিকের
মিলন-মৃঢ় শরীরীগুলার মধ্যে আমি যেন
একটি অন্তিত হীন ছারা? হার! হার! চারিদিকের পুলক-নিগুঢ় তাড়িত-বহনের মাঝে
আমিই শুধু যেন একটা প্রকাণ্ড পাথর!

এমন করিয়া আর কতদিন থাকা যায়। একদিন কি যেন একটা অজানা কিছুর অকৃট আকাজ্ঞা আমাকে বিশ্বকগতের মধ্যে বাহির করিয়া দিল: সে বাড়ী হইতে अकित कारां कि का विनया भनारेया গেলাম। তার পর এখানে সেধানে ঘুরিয়া কতদিন কত বংসর কাটাইয়াছি,-কত রোদে অনাবৃত মাঠে হাঁটয়া চলিয়াছি. কত শীতে গাছতলায় সারারাত কাঁপিয়াছি, সারাদিন উপুবাসের পর কত গৃহত্বের পাতের व्यव्यवित पिटि मञ्च नग्रत जाकाहेग्राहि। (क्ट मन्ना कतिया कारनामिन किट्ट थांटेट निशाह. कांना निन वा अक्वादा ना শাইয়া কাটিয়াছে, কোনদিন গাছ হইতে কল পাড়িয়া থাইয়াছি। একদিন এক আখের ক্ষেত চড়াও করিয়া বসিয়াছিলাম, কিন্তু ধাইবার আগেই একবাক্তি আসিয়া আমাকে थित्रा रक्तिन, विनन "वाछ। बत्रावत्र आथ থেরে কেতের একটা কোণকে একেবারে थानि करत्र निरम्रहरू, कांक बार्कारक धरत्रि !" ভারপর থানাওয়ালা আদিরা আমাকে থানায় निश चांडक् कतिशो तार्थ, त्रथारन (शंड ভবিষা খাইতে পাইতাম। কিছুদিন পরে সেথনি হইতে ছাড়িয়া দিল, আবার পুরিয়া

ফিরিতে লাগিলাম ! পথে ঘাটে বেখানেই
আমি কোনো জীলোককে দেখিতাম আমার
একটা অভ্যাস ছিল ভার দিকে জনেকক্ষণ
ধরিয়া না চাহিয়া কেমন ,থাকিতে পারিতাম
না। কতদিন কতজনে কত কি বলিয়াছে
কিন্তু আমার ইচ্ছাকে বাধা দিতে
পারিতাম না। '

(8)

সেদিন ছুইদিন ধরিয়া না থাইয়া অনবর্ত হাটিয়া ক্লান্ত হইয়া পড়িয়াছিলাম। সামনে একটা পুকুর ছিল। তার পারে একটা গাছতলায় গিয়া বদিলাম। তথন বেলা পড়িয়া আসিয়াছে, সুর্য্য পশ্চিমদিগন্তের গাছ গুলার উপর নামিয়া আসিয়াছে, আলোছায়া হুট বোনের মত হাত ধরাধরি করিয়া আমার চারিপাশে যেন আমাঝে উপেক্ষা করিয়াই নীরব কল গীতিকে খেলিয়া ফিরিতেছে। তথন গ্রামের বধুগণ একটি একটি কারয়া ৰাটে আগিতেছে, আমি অভাগে মত গেদিনও সকলকে আগ্রহ সহকারে লক্ষ্য করিয়া **मिथ्छि हिनाम। इठा९ এकि खौला**क्त्र মুখ দেখিয়া আমি চমকিয়া উঠিলাম, সে যেন কোন জনাস্তরের কীণ স্থৃতির মত আমার वक कैं। भारेश जूलिन, (व (यन (कान सप्रवृत्त्र একটি প্রিয় আলবের ছারামর স্বপ্ন-আভাস আমার প্রাণে কাগাইরা তুলিল। আমি আমার অজ্ঞাতসারে দেই স্ত্রীলোকটির অসুসরণ করিতে " লাগিলাম। একটা বাড়ীর কাছে আসিতেই আষার মন হটতে বেন একটা বছদিনের আবরণ ধসিরা পড়িন, এক নিমেবেই ৰাষ্ট্রীটকে আমার চিরপরিচিত মনে হইতে লাগিল। यनिও वर्षात त्रथात चत्वक शतिवर्धन , इरेबार्छ,

ভথাশি বছীতশার বেলগাছটি, ৰাড়ীর वांगात्मत्र भूवांब्ना कांठील गांछि धदः শ্ভীমগুপ না থাকিলেও তাহার পাশের त्मरे वष्टमित्नत्र जीर्व भन्तित्र विक प्रकृत्विर আমি চিনিয়া লইলাম। আমি আর দাঁড়াইয়া থাকিতে পারিশাম না, দৌড়িয়া গিয়া সেই বেলগাছটিকে বুকে চাপিয়া ধরিলাম, সেথান হইতে বেগে কাঁঠাল গাছটির দিকে ছুটিলাম; তাহার नौट গিয়া একদিন ওইয়াছিলাম তেমনি ভইলাম: আমার বুকের রক্ত ক্রত তালে নৃত্য कतिर्छ नागिन, आमात्र मत्न एव ज्थन কি হইতেছিল তা কি করিয়া বুঝাইব! তাহার পর বাগান হইতে বাহির হইয়া বাড়ীর ভিতরের দিকে ছুটিলাম—কে একজন আমাকে মানা করিতে লাগিল আমি ভনিলাম না। ভিতরে ঢুকিয়া প্রাঙ্গণে আসিমা দাঁডাইতেই দেখি একটি স্ত্ৰীলোক হাতে কি নিয়া একঘর হইতে অভ্যারে যাইতেছেন, তাঁহার পশ্চাতে একটি দশ বার বংসরের বালক। আমি দেখিবামাত্রই ত্রীলোকটিকে চিনিতে পারিলাম, বাহজান नुष्ठ रहेबा छाँहात निटक ছुটिया চলिलाम, তিনি সচ্কিত হইয়া স্বিয়া গেলেন, আমি তাঁর পদতলে মুক্তিত হইয়া পড়িলাম !

মূর্চ্ছা ভাজিলে দেখি কয়েক জন লোক স্থামার কাঁছে দাঁড়াইয়া রহিয়াছে। তাহারা আমার বাড়ী কোথা, এথানে আদিয়াছি কেন, বাড়ীর ভিতরে চুকিয়াছি কেন ইত্যাদি প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিতে লাগিল। আমি চারিদিকে চাহিয়া লইয়া বলিলাম "এই শামার বাড়ী"। বারাদার দণ্ডায়মানা

রমণীকে লক্ষ্য করিয়া বলিলাম,— "আর এই আমার মা।" সকলে তথন উচ্চম্বরে হাসিয়া উঠিল, বলিল "পাগল দেখ্ছি।" আমি তথন আমাকে সাপে কার্ডানর কণা হইতে অন্ত সমস্ত বৃত্তাস্তই বলিলাম। তাহারা এ ওর দিকে চাহিয়া আমার এবং আমার পিতার নাম জিজ্ঞাসা করিল। পিতার নাম বলিতে পারিলাম না, আমার নাম বলিলাম 'হারাণ'। তাহারা আবার হাসিল, বলিল "মরিয়াও কি কেহু কথন বাঁচে!"

দেখিতে দেখিতে গ্রামের লোক আসিয়া আমার চারিদিকে ভালিয়া পডিল। তার মধ্যে জত জনে কত কি যে জিজাসা করিতে লাগিল। একজন বলিয়া উঠিল "হু'দিনের সাপে-কাটা মরা ত কথনো ভাল হ'তে দেখিন।" সেই সময়ে একজন আসিয়া আমার কাছে দাঁড়াইলে, তাঁহাক্লে আমার পিতা বলিয়া চিনিতে পারিলাম। সারী একজন বুদ্ধ আমার কাছে আসিয়া বলিলেন "বিনয় ফর্শা ছিল, এ ত কালো; তবে একটা কথা আমার কেমন কেমন ঠেক্ছে। বিনয়কে আমি যেন পিঠে একদিন খুব শক্ত মেরে-ছিলাম, এর পিঠেও একটা দাগ দেখা যাচ্ছে।" এমন সময় মা আসিতেছেন, ওনিয়া সকলে দুরে সরিয়া গেল। মা আসিলেন, আমি সকল ভূলিয়া তাঁর দিকে ব্যাকুলভাবে চাহিং রহিলাম। তিনি আমার পিঠ এবং চিবুকের, নীচে কি লক্ষ্য করিয়া দেখিয়া চীৎকার করিয়া বলিয়া উঠিলেন "এ যে আমারি বিনয় গো! গ্রামের লোকের মধ্যে তথন একটা কানাঘুষা তানিংক পাইলাফ। বাবা কি ভীবিয়া আসিয়া আমাকে

বাহিরে শইরা চলিলেন, আমি বাইতে চাহিলাম না, কিছ তবু বাইতে হইল। তথ্য সন্ধান বনাইয়া আসিয়াছে, অনেক রাভ প্রান্ত নানা রক্ষ প্রামর্শ আঁটিলেন।

পরদিন হইভে বাড়ীর লোকেরা বাহির ৰৱে আনিয়া আমাকে তিন বেলা ভাত দিয়া ৰাইড, ভিতরে ঢ্কা আমার পকে নিবিৰ হইল। দেই ঘরে আমি একা বসিয়া বসিয়া কড কি ভাবিভাম, কোনোদিন কালা চাপিয়া রাখা আমার পক্ষে অসম্ভব হইরা উঠিত। মাকে সব সময় দেখিতে চেষ্টা করিতাম. কিছ বড় একটা পাইতাম না, দেখিলেও ভাহার কাছে ভিড়িতে আমার সাহস হইত না। তিনি চেষ্টা করিরাই যেন আমার নিকট হইতে দূরে দূরে থাকিতেন। এক দিন আর সহ হইল না, বাড়ীর ভিতরে চুটিরা আসিরা উঠানে পড়িয়া ফুলিয়া ফুলিয়া काँদিতে জাগিলাম। মা আসিয়া সান্ত্রা मित्रा बर्निटनने "(कॅमना विनग्, नमाटकत मटशा থেকে ভোমাকে কি করে ঘরে আন্ব বল, তুৰি কত লোকের ছোঁরা খেরেছ! বাহির ঘরে থাক, সেখানে বরাবর নিয়ম মত ভাত দিয়ে আস্ব।" হার! .আমি ত ভাতের কালাল নাই, আমার কুধিত क्षत्रक्रिक मा यनि अकिवांत त्महे चार्त्रकांत्र মভ বুকের মধ্যে চাপিয়া ধরিতেন ভবে বে ভাহা অমৃত রদে পুরিরা উঠিত, বিনরের সকল কুধা বৈ এক নিমেবে মিটিরা বাইত।

আর কিসের জন্ত থাকিব বল । একদিন বাড়ী ছইডে পলাইরা পেলাম। আবার কেই উন্মাত কমণ !

कांत्र व्यानक दिन श्रीत मा वावा - এक दिन

পুঁলিরা পুঁলিরা গিরা আমার কাছে উগছিত

ইবলন। তাঁদের ননিকট ওনিলাম বে

আমার ছোট ভাইটি মারা গিরাছে, তাঁহারা আমাকে লইরা বিদেশে গিরা বসবাস করিতে

চাহেন। আমি তখন এক ভণ্ড সন্নাসীর সক লইরাছিলাম, এবং তাহার দৃষ্টান্তে

কুক্রিয়ারত হইরা পড়িরাছিলাম। সন্নাসীর বেশ দিরা ভূলাইরা লোকের সর্বনাশ করিতাম। পিতা মাতার সহিত ঘাইতে

আমার তখন একটুও ইচ্ছা হইল না! তাঁহারা অনেক কান্নাকটি করিলেন, শেষে আমাকে

না পাইরা ফিরিরা গেলেন।

অনেক দিন পরে সয়াসী আমাকে ছাড়িয়া গেল। মার অন্ত মন তথন আবার কাঁদিয়া উঠিল। খুঁজিয়া খুঁজিয়া আমাদের সেই থ্রামে আসিলাম; দেখিলাম মর ধার শুন্ত পড়িয়া আছে, বাড়ীতে কেহ নাই। একটি লোকের নিকট জিজ্ঞাসা করিয়া জানিলাম যে তাঁহারা বাড়ী ছাড়িয়া চলিয়া গিয়াছেন, আর ফিরিবেন না,—কোথায় গিয়াছেন দে বলিতে পারিল না। আবার এই বিশাল বিশ্বজগতে একাকী নিরাশ্রম অসহায় প্রাণা অস্তহান উদ্দেশ্রহান উদ্ধান্ত শ্রমণ বাহির হইয়া পড়িলাম। ইহার কভু শেষ হইবে কিনা কে জানে!

এই পর্যান্ত যাহা বলিতেছিলান পাঠজ সৰ ঠিকই মনে করিরা আসিতেছেন দেখিতেছি। অবস্থ বল্প দেখিবার সুময় আমিও তাহাই মনে করিতেছিকাম এবং চোধ মেলিরাও এই ভূল দীল ভালে নাই। কিছু কিছুক্ত পরেই, ব্রিলাম বে বহু মিথা। কেবল সাপে কাম্ডাইয়াছিল
ইহাই সতা। দেখিলাম খাঁমার পা দড়ি দিয়া
শক্ত করিয়া বাঁধা রহিয়াছে, কাচের টুক্রা
দিয়া দংশন স্থান কাটিয়া দেওয়া হইয়াছে
এবং দেখান হইতে কালো রক্ত ঝরিতেছে,
ওঝা মত্র আওড়াইতেছে, আমি উঠানে মায়ের
কাছে শুইয়া রহিয়াছি। আঁমাকে সজ্ঞান
দেখিয়া সকলে আনন্দে : অধার হইয়া
উঠিলেন, মার চোথ দিয়া আনন্দাঞ্চ
বহিতে লাগিল। আমি স্বপ্রের কথা স্বরণ
করিয়া আশ্চর্যান্তিত হইলাম। আমানের ও
পাড়ার মধু ব্যাবের ছেলে সর্পান্তে মারা

গিয়াছিল, তাহাকে কোনো ওঝা ভাল করিতে না পারায় নদীতে ভাসাইয়া দেওয়া হয়, সে বাঁচিয়া অনেক দিন পর বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়াছিল, দেখিলাম তাহারই জাবনের অনেক ঘটনা আমার স্থেয় মধ্যে আসিয়া পড়িয়াছে!

আমি সম্পূৰ্ণ ভাল হইয়া উঠিলাম।
আমার স্বপ্লের কথা মাকে বলিলাম, মা
থুব কাঁদিলেন। কাঁদিয়া আমাকে বক্ষে
টানিয়া লইলেন, আমি স্থেথে অভিভূত হইয়া
পাজ্লাম। ধেই হইতে আর কোন দিনই
মাতার স্বেহের অভাব অমুভব করি নাই।

লেখকের বিড়ম্বনা।

- এই, যথনি ঠিক থেতে বদি, একলা কিছা দলে,
 ভাতে ভালে মাথি মুখে তুলি পূর্ণগ্রাদ,—
 ভাবের মাত্রা মগজটারে নাড়ে বিষম বলে,
 —কত রঙ্গ-কথা, কাব্য গল্প বে ছাই পাঁশ।—
 আহারটিকে ন্নীতিমত শাস্তভাবে সানি
 কাগল হাতে লয়ে ভাকাই হায় রে চারিদিশে,
 কোথার বা ভাব, কোথা কাব্য ? বার্থ ছলনারি
 আক্রেশ্নতে চিত্ত আমার যার যে ভেঙ্গে পিবে।
 ২
- এই, ছুটির দিনে ছপুরবেলার, থেলছি দাবাপাশা, থেলার সনে, চলছে হ'কা—সমাজতত্ত্ব কথা মাধার মধ্যে ভোলাপাড়া,—পরিণাটি থাদা— সমুদ্রেশির শুক্ত কিসে, কিসে বা তার ব্যথা।

- খেলাভকে, ভাবের রকে কাগন কেইণাড় করি, লোরাতটাতে ভরি কালি, ধরি ক্ষলটারে, মাধায় রাধি উভর হন্ত, এত ভেবে মরি! অত বে ভাব,—কিছুই কি তার মনে গড়েনারে!
- এই আফিনেতে গলদবর্ম কাগলপত্র যেঁটে,
 সাহেব হাঁকে, বন্ধ ডাকে, বিষম হটগোলেই
 ভাবের আঠা ভাবনাটাকে যেন ধরে এঁটে,
 লিপবো ভাবি, ছুটি হয়ে একটু বসতে পেলেই!
 বাড়ী ফিলে—কথাবান্তা নয়কো—আলি আলো,
 কাগলপত্র সামনে নিয়ে, ভাবি দক্ত মত।
 এত চিন্তা-ভাবতরক।—কোথায় হাস্সব গেলো!
 ওমা, গাড়তর নিত্রা কিনা করে অভিভূত।

श्रीतोज्ञास्याहन मूर्थार्थाशाह ।

পূৰ্ৰবঙ্গের ষষ্ঠীত্ৰত।

পূর্ব মন্ত্রমনসিংহে সঞ্চিত্রত হিম্মুনারীর একটি অধান বত। ২ন্তীদেবী শিশুসম্ভানের রক্ষাকর্ত্রী, হতরাং ষষ্টাপুলা নারীর নিকট শ্রেষ্ঠস্থান অধিকার ক্রিয়াছে। জ্যৈষ্ঠ মাদের শুক্লপক্ষের বন্ধী ভিথিতে পুরবারীগণ এই অভের অমুঠান করিয়া থাকেন। बाजित पूर्विषिन नात्रीगर ७० गाहि इन्ता ७० ही हाडेन কলাগাছের স্তার বাধিরা প্রত্যেকে পৃথক পৃথক এক এক গুচ্ছ গ্ৰহণ করেন। একটা ডোকায় चाय कांश्रात्मत्र পाठात्र উপत्र कना, इस्ता कन ७ वन রাবিলা দিতে হয় এবং সানাতে পূর্বমূবে দণ্ডায়মানা ৰভণারিশীর নাভিতে সেই ছর্কা দারা পাত্রস্থ কর দিতে হয় ৷ পরে ঐ ডোকা আর নানাবিধ ফল ও কাপড় ইত্যাদি সমেত আর একধানা ডালা পুলাব रम । रेशांक পूज-छाना वान। ৰতশেৰে ঐ পাত্ৰের ফন ও ভালার ৰত্ন ইত্যাদি, পুত্ৰ ককা এবং জামাতাকে বিতে হয়। ইহা ছাড়া চাউলের শুড়ার প্রস্তাবেইত একটা पूर्व प्राकृति बादक देशादक "बातिप्री" वटल । ব্ৰাহ্মণ পূলা করিলে পর ব্রচের কথা শুনিতে হয়। अडम्था (नव हरेल अडधानियो इस्राध्यक हरेल ্ এক এক পাছি ছুৰ্বা ও চাউন পুত্ৰ কলা ও कांगाञात वाथात्र कांगीर्सात बताय ध्रतान करवन अवर मत्त्र मत्त्र "वारे" "वारे" मन डेळ्राव्य कतिया बाटकन। वांग्रे त्मख्या (नाव क्हेरन (वायना) वनन হয়। এতের দিন অর ভক্ষণ নিবিদ্ধ।

ব্ৰত কথা। এক ছিল গৃহছ: তার
একনাত্র পুত্র। পুলের বিবাহ দিল। বিবাহের পর
বেকে তার সুংসারের আর উন্নতি নাই—গোলালে
গল্প নরে, 'কাতানে' ৰহিন নরে, এইরপো নানা
অন্তল্প বটতে লাগলো। কত দিন পরে পুত্রবর্ধ
সভিবতী হলো—কিন্ত সন্তান জন্মাবার আগেই সর্ভ নই
নাল্প নালা। গৃহছের বান ক্রমে হন বার সর্ভ
নাই হলো। গৃহছের বান শান্তি নাই।

গৃহছের স্ত্রীর এক সই ছিল—গোরালিনী।
গোরালিনী বেশ ফথে অচ্ছন্দে আছে। একদিন
কথার কথার গৃহছের স্ত্রী গোরালিনীকে বলে "নই
ভোদের দিন দিনই উর্লিভ হচ্ছে আর জানাদের
ছ:খের কথা কব কি ? বে দিন খেকে ঐ বটটা ঘরে
পা দিরেছে দেদিন খেকে আমাদের ঘরে অলক্ষী
এনেছে। আল এটা কাল ওটা একটা না একটা
অনসল লেগেই আছে। তুমি কি কর সই যে
ভোমার এমন শ্রী"! গোরালিনী উত্তর করিল
"বোন্ বছর বছর আমি বটারত করি আর কিছু
জানি না। তুমিও ভোমার বটকে নিয়ে এরত
কর সংগারের উর্লিভ হবে।" গৃহছের স্ত্রী জার্চ
মানের ভক্কবিটাতে ব্রুভ আবোল্যন করলেন।

ভার পুত্রবধূ সব জিনিব আগে চুরি করে ৰায় তাই তাকে সকলে "আবিপুংটা" বলে ! সে বছরও ব্রভের আগে চুরি ক'রে বাওয়ায় ভার বত করা হলো না। এক বছর গেল, আবার বছর ফিরে এলো, গৃহছের স্ত্রী এবার পুত্রববুর অজ্ঞাতে গোয়ালিনীর বাড়ীতে ত্রভের আরোজন করলেন। ব্ৰতের দিন প্রাতে, ব্রতের স্বৰু আয়োজন বাড়ীতে আনলেন এবং পুত্রবধূকে বেঁধে কাঞ্চকর্ম করতে नागतन । भूजवध्व वावा हरा बाउद वजा छेपवांभी ধাকতে হোল। ত্রত শেব ক'বে গৃহত্বের স্ত্রী গৃহে এসে বধুর—"আলজিহ্বা" খরের পালা-খুঁটি বেড়ে ফেলেছে। তখন খাওড়ী ২।• আঙ্গুল জিব (कछि मिलन। ८४८व चात्र सर হল; দিন বায়, বে আছে থকে বায়, ক্ৰমে পঠবতী হলে।—এবার—দশমাস দশ দিন পূর্ণ হলো,--ভারণর একদিন বদে চরকা কাটতে কাটতে প্ৰসৰ বেশনা উচন। ৰাভড়ী এক গুটি স্তা প্ৰেলে नित्त रामन, रामारन त्रित्त अहे मुख्या त्नर हरेरे त्नहे খানেই ভোর সন্ধান ভূমিষ্ঠ হবে। "আরিপ্টো" नागरना,—स्वर्ण—स्वर्ण अरु हर्शानत

শ্মশানে গারে গুটি শেব হল এবং তার একপুত্র জন্মাল'। তথন খাশানের সমৃত্ত মরার, বিছানা সংগ্রহ করেনে इंटल • क्लिक क्लिक्ट व्याप्त प्रहेल। असन मस्य (प्रथि) তাহার ছেলেকে নেওয়ার জন্ম বমদ্ত দব ঘ্রছে। কিন্ত মারের কোল থেকে ষমপুত ত ছেলে নিতে পারে না তাই সহসাএক ঝাণটা ৰাজাস এলে ছেলেকে মায়ের কোল বেকে সরিয়ে ফেল্লে,—এই অবসরে যতদৃতগণ ছেলে নিলে,—আরিপুংটি তাদের সঙ্গে সঙ্গে চলো। (মেৰেলি প্ৰবাদ এই যে মাতা বাম হন্তপদ ঘারা সন্তানকে আগুলিরা রাখিলে যমদৃত তাহাকে ম্পর্ণ করিতে পারে না। এই জভ্য সন্তানের ব্যারাম হইলে জননী উক্তরণে তাহাকে আগুলিয়া রাবেন।) যেতে যেতে পথে আরিপু:টীর সহিত এক গাভীর দেখা। গাভী বলে 'আরিপুংটী কই যাচছ!' আরিপু:টা বলে 'আমার ছ:থের কথা ৰলতে ষষ্ঠিয়াকক্লণের কাছে ৰাচ্ছি।' তাই শুনে গাই বলে "ৰামারও হুটা হু:খের কথা আছে। দেখ আমার এ**ड इर, डा माञ्च त्नत्र ना, वाडूद्र अात्र ना**। वाँटित বেদৰার আমি দিবরাত অহির। তোমার পার ধরি व्यामात्र कथाणां विश्वेशक क्रनाटक बटना ।"आतिपूरणी योकात করে চলো। যেতে যেতে আরিপুংটা রৌফ্রে ক্লান্ত হয়ে এক আম পাছের নীচে বিশ্রাম করতে পেল। দেখাৰে **আ**মগাছ জিঞাসা কল্লে "আরিপুংটা কই ৰাচ্ছ ?" "ৰস্তা ঠাককণের কাছে ছ:খের কথা বলতে যাচিছ।" "আমারও হুটী কথা তাঁকে জিজাস। কংলা: দেব আমার কভ ফল; কেউ খার না, ঝড়ে পড়ে না, পক্ষীতে ধরে না; কি হলে আমার ফল লোগে খায় তাঁকে বলো।" আরিপুংটী স্বীকার করে চলতে লাগলো। • যেতে থেতে এক ব্ৰাহ্মণের ৰাড়ীতে উপস্থিত।•বাড়ীতে ব্রাহ্মণের যুবতী সাত কন্সার বিবাহ হর না। ব্রাহ্মণ জিজাদা করলে "আরিপুংটা কই य। म्। " व्यादि पूरि वरल "वामि वशी ्ठाककर्ण कराष्ट्र যাচিছ ৷'' "তবে আমার ছইটা কথা বলিস—আমার শাত কৰ্ত্তীর বিৰাহ হয় না, কি উপায়ে ভাদের বিবাহ रद यक्रीबादक विकामा करत बतन वाम। चातिप्री चीकांत्र एत्त्र हता।

তার পর পথে এক বৃদ্ধার সলে দেখা। সে বলে "আরিপুটো কই যাও।" "আমার ছংখের কথা বলতে বঠীমার কাছে যাই।" তবে আমার একটা কথা ব'লো। আমার চক্ষে জল নাই,—কি হ'লে আমার কালা আনে—যতী ঠাকরুণকে জিল্ঞানা করে আমাল বলে বেও।

পরে এক কাঠুরের ও এক চুণওয়ালীর সকে দেখা। কাঠুরের মাথায় এক ৰোঝা কাঠ, কেউ কেনে না, মাধার বোঝাও নামে না; আর চ্ণ-ওয়ালীরও চ্ণও কেউ কেনে না মালদাও নামে না। আরিপুংটা তাদের ছংগের কথাও গুনতে শুনতে চলিল। যেতে যেতে ক্রমে যমের বাড়ীতে গিয়া উপস্থিত। তখন যমের মা একটা ফোড়ার বেদনায় অস্থির হয়ে অচেতন অবস্থায় বিহানায় পড়ে আছেন। আরিপু:টা ফোডাটা গেলে দিয়ে পাनस्कत नीटि जूकिए। तहेल। यस्त्र भा आताम বোধ ক'রে বল্তে লাগলেন আমাকে যে এবস্ত্রণা থেকে मुक्ति मिरबर्ह रि পুল্বতী इ'क। व्यातिभूः वि अवाय क'रत वत्त, "या, वामिन व्यामी व्यान করেছেন আমি পুত্রবতী হব কিন্তু 🞉 পুত্রকে প্রেই নিয়েছেন আর শেষের প্তুর্ঠকে আগনার নিয়েছে। এখন যদি আপনি আমার দূতগণ পুত্রদের ফিরিয়ে না দেন তা হলে আপনার निकल इरव।" यरमद मा বাধ্য হয়ে তার পুত্র সাতটীকে ফিরিয়ে দিতে সম্মত হলেন আর কতকগুলি নিরম ব'লে দিয়ে <লেন যে 'এগুলি যদি পালন কর তবে তোমার পুত্র তোমার निकडे शांकरव नक्षां भूनतात्र এवान आमरव। वहत বছর দ্বৈষ্ঠ মাদের শুক্ল ষ্ঠীতে ত্রত কংতে হবে, বতের দিন মা ছেলেকে তৈল মাধাবে না, ধোপার কাপড় পড়তে দেবে ৰা, জল ভাত বেক্তে দেবে না।' এই বলে ছেলেদের তার মায়ের "সঙ্গে যেতে বল্লেন। বিদায় হবার সময় আরিপুংটী পথের লোকদের कशाश्चिम डाँटक वनाव वश्चीशांकक्रण वालन "आविप्रिणी यातात्र (बनाम्न बाक्तनरक वरना "नीयरे छात्र स्वकृष्ट-ৰবাছ •হবে। ভা [®] দেয়েরা পুরুৰকে দেৰে

বেনেছিল একত ভাদের এই দশা। গাভীকে বলো अ ह रामून रारतराव क्य इर निर्छ अरमहिन छथन ছ্ব দেয়নি ছ্ব চুরি করে রেখেছিল এ জক্ত তার এই দশা। এখন একজন ব্রাহ্মণকে ডেকে ছব দিলেই তার এ ছংখ দূর হবে। আৰ গাছকে वला;--- এक वायून दिवरमवात्र अन्छ এकति भाका আৰ নিতে চেয়েছিল,—গাছ বোঁটা শক্ত করে ধরেছিল বলে বায়ুন আম নিতে, পারে নাই তাই তার এদশা। এখন ব্ৰাহ্মণ ডেকে আম ওাঁকে দিলেই ছংখ বাবে। বৃদ্ধাকে বলো তার কাঁদবার দিন **অভি নিকট, তথন কাঁদতে কাঁদতে তা**র চক্ষে যা হবে। কাঠুরিয়া ও চ্ৰওয়ালিকে বলো ত্রাহ্মৰ रमर्थ बान कंद्ररावे जारमञ्ज कहे मूत करत, लारक চুৰ ও কঠ কিনবে।" তখন আরিপুংটা পুত্রদের निद्य रिष्ठेपोटक थानाम कदा विनाय निद्यान । टक्त्रवात म्बद्ध भर्ष भर्ष मकनरक धरत निरंत्र भिरतन। व्यादिभूरी अटक्वादि माछ हाल निरंत चलत मालज़ीत चरत्र এলেन; नाकि मिर्थ काँमित्र चानन धर्म ना। अहेन्द्रभ कछिमन याह, आवाह वहीडछ अल। अवाह "আরিপুংটী বিজেই ত্রতের আয়োজন করলেন। उट्डिय मिन कांत्र रेश्टलंबा टिन कारेटन, या मिरन ना, ছোট ছেলেটী অক্ত ছান থেকে তেল নিলে, ধোপার কাপড় ৰাম নিকট না পেরে অক্ত ছান থেকে পরলে। এইব্লপ নিয়ম ভক্ত করে ধ্যের বাড়ী চলো। সাও সক্ষে সঙ্গে গেলেন। পুত্ৰ ষষ্টিঠাকরণকে প্রশাষ করে দাঁড়ালো আরিপ্টোও প্রণাষ করেন দাঁড়ালো।

বজীঠাকরণ সৰ কথা ওনে বরেন 'শ্বৰন তুরি নিজে ব্রভনিয়ন পালন করেছ তবুন ভোৰার প্ত তুমি পাবে। তবে আরো করটা নিয়ন পালন করতে হবে। তোনার এই ছেলের নাম রাখ গোবিল; এবং একটা রূপার বালা দিয়ে বরেন; বে মেয়ের হাতে এই বালা লাগবে তার সকে এই ছেলের বিবাহ দিও। ছর দফা বাজনা, ছয় ঝ'াক হলু ইভ্যাদি ছয় ছয় ক'রে সব ক'লে। আর বিবাহের দিন যখন ছেলেকে নাপিত কামানে তখন ছেলে নাপিতের কাশ কেটে দিলে, নাপিত যেন বলে—

'বাইট বাইট কাশ গেলে পাইবাৰ
বাইটার পুত গোবিন্দ সেলে কই পাইবাম।'
পরে বশুর বাড়ী যাওয়ার সময় গৃহত্বের পাকা ধান-ক্ষেত ভেলে বাবে, তখন গৃহত্ব যেন বলে—
'বাইট বাইট এক ক্ষেত গেলে আর ক্ষেত পাইবাম
বাইটার পুত গোবিন্দ গেলে কই পাইবাম।'

এই সব নিরম রক্ষা ক'রে তোমার ছেলের
বিবাহ দিলে তার উপর' আমার আর কোন
অবিকার থাকবে না তোমার পুত্র নিয়ে তুমি চিরকাল হবে থাকবে।" আরিপ্টো বাড়ী গিয়ে তুমি চিরকাল হবে থাকবে।" আরিপ্টো বাড়ী গিয়ে তুমি তে
পুলৈতে ঐ রাহ্মণের ছোট কল্পার হাতে বালা লাগল।
তথন তার নাভ কল্পার সহিত তার সাত পুত্রের
বিবাহ হরে গেল। স্থে দিন বেতে লাগল।
আর সেই হতে বলীঠাকরপের মাহাক্সা প্রচার হোল।
ত্রীলোকেরা পুত্র কামনার ঘল্পারত করতে লাগল।

শ্রীনরেন্দ্রনাথ মন্ত্র্মনার।

यात्र ।

দে ত আজ কত দিন,—তুমি এসেছিলে
চির-পরিচিত দম মোর গৃহতলে,—
নিতান্ত সুহজ ভাবে শুধু একদিনে
কেমন আপন করি নিলে দর্ম জনে :
ভাম ক্র-রেধা-সম এক মালিকার
আমার সংসারখানি বাধিলে ধরার;
ভামির পভার প্রেম—ভারী এক-ক্রে—

বিভিন্ন বিচ্ছিন্ন বাগ রাখিলে যে ধরে !
টুটালে স্বার্থের গঞ্জি, দেখালে জগ্
কৈ স্থ প্লকে জরা—বিচিত্র—মহং!
কুমি আজ গেছ, তবু তব প্লাবলে
তোমার সংসারখানি আজো দ্বির চলেধ—
-- হে মোর গৃহের লন্ধি, সন্তান-জলনি
জীবনের ক্ষভারা হে চির-কল্যাণি!

ভোজরাজ ও ধাররাজ্য।

(পূর্ব্বসংখ্যার অমুবৃত্তি)

লৈলে মহোদয় বলেন, অর্জুন বর্মদেব ধাররাজবংশের কুলপ্রতিষ্ঠাতা উপেক্ত হইতে উনবিংশতি এবং স্থবিখ্যাত ভোজদেব হইতে দশম স্থানীয়। কিন্তু আমাদিগের সংগৃহীত ধারবংশের রাজাবলী হইতে লৈলে মহাশ্রের উক্ত উক্তি সপ্রমাণ করিবার পক্ষে যথেষ্ট উপাদান সঞ্চিত হয় নাই। कर्पन हेछ বলেন, প্রমারবংশীয় ভোজনামক তিন জন নরপতি ধারসিংহাসনে ক্রমশঃ ছিলেন। প্রথম তই জন সম্বন্ধে আমরা বিশেষ কিছুই অবগত হইতে পারি নাই। টডের তৃতীয় ভোজই এথানকার আলোচনার বিষয়। তিনি বলেন, 'হিন্দু সাহিত্যে ভোজ প্রমার ও তাঁহার নীবরত্নের নাম অবিনশ্বর হইয়া রহিয়াছে।' কোন ভোজ যে নবরত্বের আশ্রমণাতা, তাহা তিনি নিশ্চয় করিয়া বলিতে পারেন নাই। কিন্তু তাঁহার সময় নির্দারণ হইতে বিচার করিতে গেলে অনুমান হয়, তহুলিখিত প্রথম ভোজই হয়ত আমাদিগের অহুসন্ধের বিক্রমাদিত্য, নবরত্বের প্রবাদ্ধাক

আরোপ জাঁহাতেই সম্ভাবিত। পূর্বে দেখা গিয়াছে কর্ণেল টডের সমন্ত্রনির্কাচন সর্বত্ত লাভিশ্য নহে এবং তাঁহার প্রথ্ম ভোজের मभग्न व जाव अधिन हरेल भारत ना, তাহার অকাট্য প্রমাণ নাই। যে বিক্রমাদিত্য শকগণকে বিতাড়িত করিয়া 'শকারি' আখ্যা লাভ করেন, তাঁহার সময় পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ কর্ত্ক টড্নির্দিষ্ট প্রথম ভোজের সময়েই নিণীত হয়, কারণ শকাধিপতা নিবারক কোহরুর যুদ্ধ ঐ সময়ে হওয়াই সম্ভাবিত। টড় অপর ভোজ দ্যের সম্বন্ধে অধিক কিছু না বলিয়া 'মুঞ্জপুত্ৰ (? ভ্ৰাভূপুত্ৰ) ভোজের সময় স্থলররূপে নির্দারিত হইয়াছে. জোরের সহিত এই বলিয়াছেন। কোন কোন ঐতিহাসিকের মতে বিক্রমাদিত্যও ভোজের স্থায় 🕬 মারবংশ টড় বিক্রমাদিতাকে তুয়ার-বংশীয় বলিয়াই স্বীকার করেন, এবং ঠাহার ভোক্তায় সকলেই প্রমার বংশোড়ত। † কিন্ত স্থানাম্বরে তিনি উজ্জিঘিনী ও ধারের নরপতি-

† Indraprastha was conquered by Vicramaditya Tuar of Oojein.....(Vicramaditya) who transferred the seat of imperial power from Indraprastha to Avante or Oojein from which time it became the first meridian of the Hindu stronomy'—

Rajasthan Vol. I., Intro., ch. III., pp. 46, 48.

'Salivahana the conqueror of Vicramaditya was a Takshak, and his era set aside that of the Tuar in the Dekhan.' [Ib. Intro. ch. VII, p. 87. ভটভের উক্ত ভিন্ট মন্তব্যের ঐতিহাসিক উপযোগিতা নিশ্চণ করা কঠিন। তাহার মীমাংসা অনুসারে শালিবাহন কর্ভ্ক বিক্রমাণিত্য-বিজ্ঞানিতা হইলে, ঐতিহাসিক গবেষণায় মুগান্তরের আবির্ভাব হইবে সন্দেহ নাই। ইহাতেও তাহার সময় পতীর প্রথম শতানীতে নিয়া পড়ায়, তাহার প্রাচীনত অক্ষরই থাকিয়া যাইতেছে। নচেৎ বিক্রমাংবংকে অত্যন্ত পিছাইয়া দেওরায় শ্রাক্ত সেইরপ একটা কিছু বোঝা পড়া করিয়া লইতে হয়; নতুবা ক্টিলের উলি আছু প্রভিন্ন হয়।

^{* &#}x27;Vikramajeet, the champion of Brahmanism was a Powar according to the common accounts.'—Captain Cunningham's History of the Sikhs, ch. II, p. 26. Footnote. পোয়ার বা পুরার প্রথারেরই অপভাষ্ট প্রচলিত রূপান্তর মাত্র।

হেনেছিল একত তাদের এই দশা। গাভীকে বলো अ ह रासून म्बरमवात सक इव निर्छ अरमहिन छथन ছ্ধ দেয়নি ছ্ধ চুরি করে রেখেছিল এ জক্ত তার এই দশা। এখন একখন ব্রাহ্মণকে ডেকে ছব দিলেই তার এ ছ:খ দুর হবে। আম গাছকে वा:-- এक · वायून (पवत्त्रवात्र अन्त्र এक नि भाका আম নিতে চেয়েছিল,—গাছ বোঁটা শক্ত করে ধরেছিল বলে বামূন আম নিতে পারে নাই তাই তার এদশা। এখন ব্ৰাহ্মণ ডেকে আম তাঁকে দিলেই **इ:व यादा।** वृक्षांत्क वत्ना छात्र काँमवात्र निन অভি নিকট, তখন কাঁদতে কাঁদতে তার চকে ঘা হবে। কাঠুরিয়া ও চুণওয়ালিকে বলো তাহ্মণ **८एरच मान कंद्र**ति छाएमद कष्टे मृत श्रद, लारक চুৰ ও কঠি কিনবে।" তখন আরিপুংটী পুত্র:দর ৰিয়ে ষষ্ঠীমাকে প্ৰণাম করে বিনার নিলেন। ফেরবার त्रमञ्ज शर्थ शर्भ मकनरक धरत निरंग शिलन। আরিপুংটা একেবারে সাভ ছেলে নিরে শশুর শাশুড়ীর चत्र এलान ; नाकि मार्थ काँमित चानन पत्रम ना। এইক্লপ কতদিন যায়, আবার বভীৰত এল। এবার "আরিপুংটী নিজেই ত্রতের আয়োজন করলেন। उट्डब मिन अंत्र हेप्टलबा ट्लन हाइटल, बा.मिटनन ना, ছোট ছেলেটা অক্স স্থান থেকে তেল নিলে, বোপার কাপড় ৰাব নিকট না পেরে অক্ত ছান থেকে পরলে। এইক্লপ নিয়ম ভক্ত করে ববের বাড়ী চলো। মাও স্ত্রে সঙ্গে গেলেন। পুত্র ষষ্টাঠাকরণকে প্রণাম করে দাঁড়ালো আরিপু:টাও প্রণায় করেন দাঁড়ালো।

বজীঠাকরণ সব কথা শুনে বল্লেন ''বৰ্ষৰ জুকি নিজে ব্ৰভনিয়ম পালন করেছ তথুন তোৰায় পুত্র জুমি পাৰে। তবে আরো করটা নিয়ম পালন করভে হবে।, তোমার এই ছেলের নাম রাখ গোবিন্দ; এবং একটা রূপার বালা দিরে বলেন; বে মেরের হাতে এই বালা লাগবে তার সঙ্গে এই ছেলের বিবাহ দিও। ছয় দলা বাজনা, ছয় ঝ'াক হলু ইন্ডাদি ছয় ছয় ক'রে সব ক'লো। আর বিবাহের দিন বখন ছেলেকে নাপিত কামাবে তখন ছেলে নাপিতের কাণ কেটে দিলে, নাপিত যেন বলে—

'বাইট বাইট কাণ গেলে পাইবাৰ

যাইটার পুত গোবিন্দ গেলে কই পাইবাম।'
পরে শগুর বাড়ী যাওয়ার সময় গৃহছের পাকা ধানক্ষেত ভেকে বাবে, তখন গৃহস্থ যেন বলে—
'বাইট বাইট এক ক্ষেত গেলে আর ক্ষেত পাইবাম
বাইটার পুত গোবিন্দ গেলে কই পাইবাম।'

এই সব নিরম রক্ষা ক'রে তোমার ছেলের
বিবাহ দিলে তার উপর' আমার আর কোন
অবিকার থাকবে না তোমার পুত্র নিয়ে তুমি চিরকাল হবে থাকবে।" আরিপ্টো বাড়ী গিয়ে ভূঁলতে
খূঁলতে ঐ ব্রাহ্মণের ছোট কল্যার হাতে বালা লাগল।
তবন তার সাত কল্যার সহিত তার সাত পুত্রের
বিবাহ হয়ে গেল। হথে দিন বেতে লাগল।
আর সেই হতে বজীঠাককপের মাহাস্ব্য প্রচার হোল।
ত্রীলোকেরা পুত্র কামনার যন্তীব্রত করতে লাগল।

वीनदबस्तनाथ बस्माना

यात्र ।

দে ত তাল কত দিন,—তুমি এসেছিলে
চির-পরিচিত সম মোর গৃহতলে,—
নিতান্ত সুহল ভাবে ভধু একদিনে
কেমন আপন করি নিলে সর্ব্ধ জনে!
ভাষ ক্রে-বেধা-সম এক মালিকায়
আমার সংসারধানি বাধিলে ধরার;
ভিনার গভার প্রেমে—ত্বারী এক-ক্রে—

বিভিন্ন বিচ্ছিন্ন রাগ রাখিলে যে ধরে !
টুটালে স্বার্থের গঞ্জি, দেখালে জগ্
কি স্থ প্লকে ভরা—বিচিত্র—মহৎ !
তুমি আল গেছ, তবু তব প্ণাবলে
তোমার সংসারখানি আলো হির চলে !—
- হে মোর গৃহের লন্ধি, সন্তান-জননি,
জীবনের শ্বন্ডারা হে চির-ক্ল্যাণি !
- শ্রিক্টার্ডক মক্রনীর ।

ভোজরাজ ও ধাররাজ্য।

(পুর্বসংখ্যার অমুরুত্তি)

লৈলে মহোদয় বলেন, অর্জুন বর্মদেব ধাররাজবংশের কুলপ্রতিষ্ঠাতা উপেক্স হইতে উনবিংশতি এবং স্থবিখ্যাত ভোজদেব হইতে দশম স্থানীয়। কিন্তু আমাদিগের সংগৃহীত ধারবংশের রাজাবলী হইতে লৈলে মহাশয়ের উক্ত উক্তি সপ্রমাণ করিবার পক্ষে যথেষ্ট উপাদান সঞ্চিত হয় নাই। कर्पन हेख বলেন, প্রমারবংশীয় ভোজনামক তিন জন ধারসিংহাসনে অধিষ্ঠিত নরপতি ক্রমশঃ ছিলেন। প্রথম হই জন সম্বন্ধে আমরা বিশেষ কিছুই অবগত হইতে পারি নাই। টডের তৃতীয় ভোক্ষই এথানকার আলোচনার বিষয়। তিনি বলেন, 'হিন্দু সাহিত্যে ভোজ প্রমার ও তাঁহার নীবরত্বের নাম অবিনশ্বর হইয়া রহিয়াছে। 'কোন ভোজ যে নবরত্বের আশ্রদাতা, তাহা তিনি নিশ্চয় করিয়া বলিতে পারেন নাই। কিন্তু তাঁহার সময় নির্দ্ধারণ হইতে বিচার করিতে গেলে অনুমান হয়, তহলিখিত প্রথম ভোজই হয়ত আমাদিগের অহ্সক্ষের বিক্রমাদিতা, নবরত্বের প্রবাদমূলক

আরোপ তাঁহাতেই সম্ভাবিত। পূর্বে দেখা গিয়াছে কর্ণেল উডের সময়নিকাচন স্কৃত্ত ভাষিশৃক্ত নহে এবং তাঁহার প্রথ্ম ভোজের সময় যে আরও প্রাচীন হইতে পারে না, ভাহার অকাট্য প্রমাণ নাই। যে বিক্রমাদিত্য শকগণকে বিতাড়িত করিয়া 'শকারি' আথ্যা লাভ করেন. তাঁহার সময় পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ কর্ত্ক টড্নিদিট প্রথম ভোলের সময়েই নিণীত হয়, কারণ শকাধিপত্য নিবারক কোহরুর যুদ্ধ ঐ সময়ে হওয়াই সম্বতি। টড্অপর ভোজ ছয়ের সহস্কে অধিক কিছু না বলিয়া 'মুঞ্জপুত্ৰ (? প্ৰাভূম্পুত্ৰ) ভোজের সময় স্থলররূপে নির্দারিত হইরাছে. রাজস্থানে জোরের সহিত এই বলিয়াছেন। কোন কোন ঐতিহাসিকের মতে বিক্রমাদিত্যও ভোজের স্থায় শ্রিমারবংশ সমৃত্ত *। টড বিক্রমাদিতাকে তুয়ার-বংশীয় বলিয়াই স্বীকার করেন, এবং তাঁহার ভোকত্রয় সকলেই প্রমার বংশোন্তত। † কিছ স্থানাম্বরে তিনি উজ্জিয়িনী ও ধারের নরপতি-

† Indraprastha was conquered by Vicramaditya Tuar of Oojein.....(Vicramaditya) who transferred the seat of imperial power from Indraprastha to Avante or Oojein from which time it became the first meridian of the Hindrastronomy—Rajasthan Vol. I., Intro., ch. III., pp. 46, 48.

^{* &#}x27;Vikramajeet, the champion of Brahmanism was a Powar according to the common accounts.'—Captain Cunningham's History of the Sikhs, ch. II, p. 26. Footnote. পোৱাৰ বা পুৱাৰ প্ৰথাবেৰই অপজ্ঞই অচলিত ক্ষপান্তৰ মান।

^{&#}x27;Salivahana the conqueror of Vicramaditya was a Takshak, and his era set aside that of the Tuar in the Dekhan.' [Ib. Intro. ch. VII, p. 87. °টডের উক্ত তিনটি মন্তব্যর ঐতিহাসিক উপযোগিতা নিশ্চর করা কঠিন। তাহার মীমাংসা অনুসারে শালিবাহন কর্তৃক বিক্রমানিত্য-বিশ্বস্থাতিত হই'লে, ঐতিহাসিক গ্রেবণায় যুগান্তরের আবির্ভাব হইবে সন্দেহ নাই। ইহাতেও তাহার সময় পত্তীর প্রথম শতানীতে দিয়া গড়ার, তাহার প্রাচীনত অকুন্নই থাকিয়া বাইতেছে। নচেৎ বিক্রমণংবংকে অতান্ত পিছাইয়া দেওয়ায় শকান্ধ সম্বন্ধেও সেইরূপ একটা কিছু বোঝা গড়া করিয়া লইতে হয়; নতুবা কর্তানের উল্লিখ্য প্রত্যান্তর হয়।

পণকে অনেক সময়ে এক বংশীভূত স্বীকার ক্রিয়া, আরও কতকগুলি নুতন প্রতিজ্ঞার অবতারণা করিয়াছেন। চিতোর সন্নিহিত মানসবোবরতীরে মৌর্যাজগণের যে খোদিত লিপি প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে, তিনি রাজা ভীমকে মালবের অধীধর এবং অবস্থী বা উজ্জ্মিনীর নরপতি বলিয়া উল্লেখ ক্রিয়াছেন। ইহাতে রাজা ভোজ তাঁহারই বংশধর বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন। ইনি আমাদিগের প্রস্তাবিত ভোজ নহেন,—বাপ্পা রাওরের সমসাম্যিক রাজা মানের পিতা। ইনিই সম্ভবত: টডের বিতীয় ভোল, কারণ তাঁহার গণনা অনুসারে, বিতীয় ভোজ ৭৩১ সংবতে বর্ত্তমান ছিলেন। এদিকে বাপ্পারাও ৭৮০ সংবতে মোরিবংশীর মানরাজকে নিহত করিয়া, চিতোরের সিংহাসনে আরোহণ করেন। এই মানের পিতার সময়, স্থতরাং,

৭২১ সংকু হওয়াই সঙ্গত। এই মোরি বা

মোর্যাবংশ লৈ প্রমারবংশের একটি শার্থা

মাত্র, তাহা টড্মহোদয় পুন: পুন: স্বীকার

করিয়াছেন।* তাহাতে বোধ হয়, টড্

মহোদয় ধার বা উজ্জিগ্নীর ইতিরত সম্বন্ধে

তাদুশ সাবধানতা ও পূর্বাপর সামঞ্জ রক্ষ:

করিতে সমর্থ হন নাই। স্কুতরাং প্রমার-

CFS

বংশের উল্লেখ সত্ত্বেও প্রথম ভোজকে বিক্র-মাদিত্যরূপে গ্রহণ কুরিলে নিভাস্থ অসমত হয় না, কারণ তাঁহার কুলনির্বাচন খ্যাতনামা ঐতিহাসিকগণের পক্ষেও বিতর্ক শৃক্ত নহে। কানিংহাম তাঁহাকে বিশ্বামিত্রের ভার বােজ্ঞ পদলিপুর বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। আমাদিগের প্রস্তাবিত টডের তৃতীর ভোজ স্বয়ং বিধান এবং একজন বিস্থোৎসাহী নরপতি ছিলেন; তাঁহার বাক্যপদীয়, ভোজবৃত্তি প্রভৃতি গ্রন্থ, ভোজশালা ('ভোজরাজা-কী নিদাণ') অর্থাৎ ভোজরাজের বিভালর ও তৎ-স্মিহিত সরস্বতীকৃপ ('অ্কিল কুই') অত্যাপি বর্তমান। সম্ভবতঃ ভিন্ন ভিন্ন সময়ে সমস্ত স্বনামধ্য পণ্ডিতমণ্ডলি আবিভূতি হইয়া খ্যাতনামা বিক্রমাদিত্যের বা ভোজের সভা-পতিতগণৰ ৰ আশ্রদাতার আশ্রাধীন বলিয়া প্রচার করিয়া তাঁহার গৌরববর্তন করিয়া-গিয়াছেন। নচেৎ বিক্রমাদিত্যের নবরত্বের অন্ত-নিবিষ্ট বলিয়া বে ধন্বস্তবি, ক্ষণণক, অমরসিংহ, শস্কু, বেতালভট্ট, ঘটকর্পর, কাবিদাস, বরাহমিহির, বরক্চি প্রভৃতি পণ্ডিভগণের নামোলেথ করা হয়, বিক্রমাদিত্যের সময়ে দুরে থাক, কোন এক শতান্ধী মধ্যে তাঁহারা সকলে বর্তমান ছিলেন বলিয়াও

'From the inscription it is evident that Chitore was an appanage of Oojein, the seat of the Pramar empire. Its monaich Chandragupta (Mori) degraded into the barbar (Marya) tribe was the descendent of Srenica, prince of Rajgriha, who according to Jain work Culpoodrum Calka, flourished in the year 477 before Vicamaditya and from whom Chandragupta was the thirteenth in descent.'-Ib, p. 230.

ক্তির এই শেব উল্লিট ঐতিহাসিক তথারূপে প্রমাণিত হইলে, পাটলিপুরের নেবাবাবদের ইতিহাস-সংকলনেও বংগ্ট সহায়তা কৰিবে। আৰমা তল্ৰভগুবিবন্ধক আলোচনায় এ তল্প নিৰ্দ্ধিৰ সমৰ্থ ইই নাই।

^{* &#}x27;Chitore at this period was held by a Mori prince of the Pramar race, the ancient lords of Mawa, then paramount sovereigns of Hindusthan.'-Rajasthan I, Mewar, ch II., p. 211.

প্রমাণী করা বাছ না। বিক্রমাণিত্যের সময়
নির্দ্ধারণে গোলণ উপস্থিত হওয়ার ইহাও একটা
গামান্ত কারণ নহে। কি বিক্রম কি ভোজ—
কাহারও সময়েই সমগ্র নবরত্বের অফিড্র
প্রমাণ করা বায় না। স্থতরাং 'বিক্রমের'
নবরর' বে ভিত্তিহীন স্কৃতি গানমাত্র, ইহাই
অনুমিত হয় এমন কি কালিদাসও ভোজের
সভাপণ্ডিত হিলেন কি না তাহাও সংশয়ের
মধ্যে আসিয়া পড়ে। কারণ কালিদাস
খুইাবির্ভাবের বহু পুর্বের না হইলেও,
পরের লোক নহেন, ইহা একরূপ স্থির
হইয়াছে, স্থতরাং তাঁহার পক্ষে একাদশ
শতাব্দার ভোজের সভায় কেন, টডের ষ্ঠ ও

দত্তান শতাকার বিতার ও তৃতার ভোরের দতাপতি হওরাও সম্ভবপর নহে। ইহাতে বাধ হয়, বিক্রমাদিত্য সম্বন্ধীয় কিম্বন্ধীগুলি, ভোরের বিক্রামুরাগিতা প্রভৃতি কারনেই, তাঁহাতে আরোপিত হইয়া থাকিবে। এতঘাতীত অপর কোন মৃশভিত্তি অবলম্বন করিয়া এরূপ করা হইয়াছে কিনা, তাহা নিশ্চয় করা আদৌ সহজ্ব নহে। কিন্তু আমাদিগের চির পরিচিত পরস্পরাগত বিক্রমাদিত্য সম্বন্ধীয় ঐতিহা ভোজে আরোপিত হইলেও, বিক্রমাদিত্য ও ধারপতি ভোজ যে অভিন্ন ব্যক্তি তাহা কোন মতেই প্রতিপাদিত হয় না। কর্ণেল উড্ বিক্রমাদিত্যকে ইন্ত্রপ্রহিক্রী

প্রবাদ আছে. ভোল ন্তন লোক প্রবণ করাইতে পারিলে লক্ষ্যা পারিভোষিক দিবেন, এই খোষণাবাক্য প্রচার করিলে, কুবিগণ দলে দলে উপস্থিত হইরা সভাস্থিত প্রতিধরগণের দোরাজ্যে স্বর্চিত লোকভালির
প্রাতনত প্রতিপাদন হইতে দেখিয়া ভগ্ননোরথ হইতে লাগিলেন। মহাক্রি কালিদাদ ইহা অবগত হইরা,
অতি সামান্ত একটি কবিতা আবৃত্তি করিয়া, রাজসভায় প্রবেশাধিকার লাভ করার পর, নিম্লিশিত লোক
পাঠ করিয়া রালাকে ও চতুর সভাপত্তিভগণকে অতি শক্ষ্ট অবস্থায় পাতিত করেন।

স্বাস্থি শ্রীভোজরাজ ত্রিভ্বন বিজয় ধার্দ্রিকঃ সভ্যবাদী পিতা তে মে গৃহীতা নবনবভিষ্তা রক্তনটিন্দীয়া। ভাং স্বং মে দেছি শীঘ্রং সকল বুধজনৈজ্ঞায়তে সভ্যমেতৎ নোবা জানস্থি কেচিল্লবকুভমিতি চেদ্দেহি লক্ষং ভতো মে ।

এই তোল পরিবর্তী স্লোকে শীকণটি বস্থারাধিপ' রূপে বর্ণিত। স্থতরাং আমাদিগের আলোচ্য ভোজের সহিত ইহার কোন সকল শীকার করা যার না।

ক্ষিত আছে, ভোল মহিনীও প্রম বিহুনী ছিলেন এবং পাতিভ্যাতিমান বশতঃ একাশ্ব সভার পশ্তিভ-দিগের উপর অবমাননাস্চক উদ্ধত বাক্য প্রয়োগেও লক্ষাবোধ করিতেন না। কালিদাসের ক্বিত্ব পরিচয় পাইয়া তিনি নির্বাধিত শ্লোক রচনা করেন।

> একোহভুরলিনাৎ ভতশ্চ পুলিনাৎ ব্যাক্তকাপরঃ ভে সর্ব্বে ক্রয়ন্ত্রলোকগুরর স্তেভ্যোন্মস্কুর্মহে। অর্ব্বাঞ্চো যদি গদ্যপদ্য রচনৈশ্চেভশ্চমৎ কুর্বতে ভেষামান্ত্রিদ্বামি বামচরণং কর্ণাটরাজ্ঞিয়:॥

ইহাতে তিনি আপনাকে 'কর্ণাটরাজপ্রিয়া' বলিয়া পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। ইনি উপরিলিখিত প্রবাদ কথিত কালিয়ানের অধন্ধ ভোলেরই পত্নী হইবেন, স্বতরাং আমাদিগের প্রভাবিত ভোলের সহিত ইহার কোন সবল নাই।

এবং পকান্তরে শালিবাহনকে বিক্রমাদিত্য विश्वती विश्वती निर्दम् कतिबाह्न। कि ভিন্দেট স্মিথ প্রমুখ প্রাচীন হিন্দুরাজত্বের আধুনিক ঐতিহাসিকগণ, বিক্রমাদিত্যের স্থায়, मानिवाहरमम् अखिएव मन्पूर्व मन्मिहान। এরপ অবস্থায় উপক্থার আবরণ উন্মোচন করিয়া যতদিনে যথার্থ বিক্রমচরিতের উদ্ধার সাধিত না হইতেছে, তৃত্দিনে ভারতের প্রাচীন ইতিবৃত্ত সংকলনপ্রয়াস ফলোপদায়ক হইবে বলিয়া আশা করা যায় লা। কারণ বিক্রমাদিত্য বিষয়ক ঐতিহের সভ্যাদভাের উপরই প্রাচীন ভারতেতিহাসের উপাদান, গবেষণা ও তত্ত্ব সমূহ অতাধিক পরিমাণে নির্ভর করিতেছে। ভারতবর্ষে সময় নিৰ্দেশ প্ৰধানতঃ বিক্ৰমসংবং সাহায্যেট স্মাহিত হইরা থাকে, স্বতরাং বিক্রম र्भमञ्जल (कन्नक्राल व्यवस्य ना क्रिल, প্রাচীন বালের ঘটনাবলীর পৌর্বাপর্য্য নির্দারণও একরপ ছঃসাধা। এরপ স্থলে প্ৰত্যেক লেখক এবং প্রত্যেক ঐতি-হাদিকের সংবংপ্রতিষ্ঠাতা বিক্রমাদিতোর কাল নিৰ্বাচন ও ইতিবৃত্ত সংকলনে যত্নবান হওয়া একান্ত প্রয়েজন।

মহমুদ পজনবীর ভারত আক্রমণের অব্যবহিত পরেই ভোজ ধারসিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন। তাঁহার পূর্ববর্তী নরপতি নেহর ওয়ালা বা অনিহল ওয়ারা পত্তন প্রভূতি অবরোধের সময় মুসলমানদিপের অভিযান প্রতিলোধ করিবার জন্ত অভ্যাথিত হইয়াছিলেন, কি সম্পূর্ণ ঔদাসীয়া অবলম্বন করিয়াছিলেন, ভাহার কোন প্রমাণ পাওয়া যার নাই। ভোজের মৃত্যুর পর ভাহার স্বংশীর ও নিকট

আত্মীর উদয়াদিত্য ধারসিংহাসনে অধিরোহণ করেন, এবং স্বদেশের স্বরাজকতা নিবারণ করিয়া, ভারতের বহিঃশক্ত দমনার্থ অক্তায় রাজন্তবর্গের সহিত আজমীরের বিশালদেবের পতাকামূলে একত্রিত হন। উদরাদিত্যের বংশধর যশোবর্মের পৌত্রের ধার শাসন সময়েই সম্ভবত: ভারতে মুসলমানরাজত্বের প্রতিষ্ঠাতা শাহাবৃদীন মহম্মৰ গোরী ভারত আক্রমণ করেন। কনোজাধিপতি ভারতকলম জয়-চক্তের বিধেষয়ত সাহায্যে চৌহানবীর পূথী-রাজ এই ভারতবিধ্বংসী অগ্নিকুতে প্রথম আছতিরপে প্রদন্ত হন এবং সেই মহাপাপ কালণাৰ্থ রাঠোররাজ পবিত্রসলিলা নদী গর্ভে নিমজ্জিত হইয়া দেশজোহীর শেষ পুর্জারের रुष रहेर्ड यथः त्रका भारेरन् , स्थ्राहर्स्य পাপে গোরীর হন্তেই তাঁহার স্ত্রী পুত্রের অশেষ হর্দশা ঘটে। কারণ ভিবৌরী-ক্ষেত্রে পৃথীরাজ পরাজিত হইলে, গোরী তদীয় নিমন্ত্রণকারী কনোজরাজের সম্মান-বদ্ধণার্থ প্রস্তিত হইলে, হতভাগ্য জয়চপ্র बाजा, धेचर्या, नामनात्री, महियो, बाजवर् সমস্তই অতিথি সংকারের জ্ঞা উৎসর্গ করিয়া, व्यवस्थित यभूनागर्छहे व्याद्विमर्कन कतिर्छ বাধ্য হন। এই শাহাবুদ্দীনের অভিযান কালে ধাররাকাও পরস্পর বিবেষ্ও প্রতি-হিংদানলে জলিতেছিল, স্বতরাং যে এধাররাজ্য বিক্রমদংবতের প্রথম হইতে শতাকী পর্যান্ত ভোজের পূর্বপুরুষ ও প্রথম-পুরুষগণের শাসনগোরবে উরতমন্তক্ ছিৰ, কেবল আত্মকলহেই তাহা খুষ্টার অফোদশ শঙাকীতে সমগ্র স্থালবের সহিত সুস্লমান-দিগের করকবলে পতিত হয়। ১৩৮৭ <mark>খুটান্</mark>

স্থলভান দিলাওয়ার গোমী মালবদেশের শাসনকর্তা ছিলেন জুনি ১৪০১ খুষ্টাব্দে ব্রাধীনতা অবলম্বন করিয়া শাহ উপাধি গ্রহণ करत्रन। ১৪ • ৫ युष्टीत्म रहामाः मारु रगात्रो ধার হইতে দশ ক্রোশ উত্তরে মাণ্ডুর প্রাচীন তুর্বে তাঁহার রাজধানী স্থানাস্তরিত করেন, এবং এই সময় হইতেই পুনরায় মাঞুর গৌরব রৃদ্ধি পाইতে থাকে। হোশাংশাহ বে জুমামসজিদ নির্মাণ করিতে আরম্ভ করেন তাহাই মাধুর স্কাপেকা রমণীয় স্থপতিকার্যা,—ফগুসন প্রমুখ মনীষীগণ এইরূপ নির্ণয় করিয়াছেন। ১৫08 शृहोत्र পर्याख मानव चाधीन मूननमान-রাজ্য ছিল। পরে ১৫৭০ খুষ্টাব্দ মোগল কেশরী আকবর কর্তৃক রাজবাহাত্রের পরাজ্যের পর, मानव निज्ञीत अधीनञ्च এक छि পृथक भागन বিভাগ (স্বা) রূপে নির্ণীত হয়। ♦ মাঞু गाठीन भागनाधीन थाकिया (य शोबवनाएं गमर्थ रहेशाहिन, তार। এই गमन रहेटा নষ্ট হইতে আরম্ভ হয়।

কিন্ত ১৬১৭ খুষ্টাব্দে জাহাঙ্গীর সাময়িক অবস্থানের জন্ম কতকগুলি সৌধের জীর্ণ সংস্থার করেন। অতঃপর আওরঙ্গজেবও ১৬৬৮ খৃ: অব্দে একটি প্রাচীন তোরণ পুন-র্নির্মাণ করিয়া তাহাকে 'আলম্গীর দরওয়াজা' নামে অভিহিত করেন। তদব্ধি ইহার ধ্বংসসাধনের প্রতিরোধ করিতে কেহই চেষ্টা না করায়, মাণ্ডু ক্রমশঃ অগভ্য ভীল ও বন্তপশুগণের আশ্রয় স্থল হইয়া উঠে। অবশেষে খুষ্টীয় উনবিংশ শতান্দীর প্রারম্ভে মহারাষ্ট্রকুলতিলক মহারাজ শিবাজীর পৌত্র সাহ মহারাজের শাসন সময়ে পবার অর্থাৎ প্রমার বংশীয় উদাজী রাও মুসলমান কবল হইতে মালবের উদ্ধার সাধন করেন। অতঃ-পর ধার ও দেওয়াস্ ছইটি পৃথক্ মহারাষ্ট্র রাজ্যে পরিণত হইয়া, অভাপি প্রাচীন প্রমার বংশের পারম্পর্য্য ও গৌরব রক্ষা করিয়া আদিতেছে। ইহারা একণেও ্ ইংরাজ সামাজ্যের করদ মিত্র রাজ্যরপেঞ্চ স্থ স্থাতন্ত্র্য

* জেমস্ ফ ্র সানের মতে মালবজয় ১৫৬৮ খৃ: অজে সমাহিত হয়। তাঁহার গণনা অসুসারে স্থাত নির্দিধিত ক্রমে রাজত্ব করেন :---

স্পতান দিলাওয়ার গোরী
স্পতান হোশংশাহ গোরী
স্পতান হোশংশাহ গোরী
স্পতান গলনী থা
বহমুদ বাঁ (চিতোরের রাণাকুছের সমসাম্মিক)
স্পতান গিরাসউদ্দীন
স্পতান মহমুদ (হিতীয়)
১৪০২—১৫০৪

১৪০২—১৫০৪

১৪০২—১৫০৪

১৫০২—১৫০৪

১৫০২—১৫০৪

১৫০২—১৫০৪

ইহার পর হইতে মালব আক্রর কর্তৃক পরাজিত হইবার পূর্বে পর্যান্ত গুজরাক্তের সহিত সীরিবিট হইরা গাকে। মাঙ্র নিকটে মর্মাণা উপত্যকার স্মীপবর্তী পর্বতিগাত্তে আক্রর কর্তৃক পরাজিত রাজবাহাচ্ছের ভরাবশিষ্ট প্রাসাদ বিজ্ঞমান রহিয়াছে।

ক্ত নৰ মহোলবের ভার একজন অক্লাভ পরিশ্রমী ছুগতঃবিজ্ঞানবিশারদও ধারের প্রস্তুত্ত্বিবর÷ ক্রাক্রন বুজন ভগ্য আবিভারে সুর্বুর্থ হ'ন নাই।

আংশিকরণে অবাহত রাধিতে পারিরাছে। ভারতের এই অধ:পতনের বুগেও ধাররাজ্যের व्याठीन निःशांत्रतः श्रमात्र रःमीत दाकारे অধিষ্ঠিত থাকিরা ভোজ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ প্রাচীন প্রমারগণের কীর্ত্তি কলাপ লোক সমূহের গোচরীভূত করিতে বদ্ধবান হইয়াছেন; এवः त्राममस्मित ७ क्रयकग्रापत भली शामनामित्र ৰায়া মাণ্ডুর হুর্গমতা অপনোদন করিয়া অমু-मिष्ट्रशांगत चानीसीम जांकन ट्रेबाएक। महात्राष्ट्रीय्राम्तरात्र व्यक्षिकात्रत्र शत हहेटल. हेहात्र স্থাপত্য ও পুরাতত্ত্বে দিকে ইংরাজদিগেরও দৃষ্টি আরুষ্ট হইতে আরম্ভ হইরাছে। তাহার **কলে** ১৮৪৪, ১৮৫০, ও অবশেষে ১৮৯৫-৬ খু: অব্দে বছবিধ পুস্তক প্রবন্ধাদি প্রকাশের পর মাণ্ডর ঐতিহাসিকত্ব সমুদভাসিত হইরা উঠিতেছে। * এবং এই আন্দোলন প आलाठनात कल, है बाजबाज हेशव श्राबिव জীর্ণ সংখারের ভার গ্রহণ করিয়াছেন। मां क्र हिस्मानामहन, खाहा जमहन, निठादा-পাক প্রভৃতি স্থানগুলি বিশেষ উল্লেখ যোগ্য। ধারের ভোজপালা মহম্মদ শাহ খিলজি কর্ত্ত ১৪৫৭ খু: মন্দে বা তাহার ৫০ বংসর পূর্বে মস্জিদ্রপে পরিণত হয়। মৌলানা क्रमन-डेकीन नामक छटेनक मुननमान डेशांड সমাহিত হওয়ায়, ইহা পরবর্ত্তী কালে কমল

মৌলা-মদ্বজিদ আখা লাভ করিলেও, স্থানীয়

হিন্দুগণের মধ্যে এখনও ভোলরাজের বিভালর (ভোজ রাজা कि निशाण) নাষেই সমধিক পরিচিত রহিয়াছে। এতথাতীত ধারনগরে। লাট মসজিদ নামে আৰু একটি ভুগঠিত ভলনালয় আছে। शांद्रव दांकशांमात्मव সমীপবত্তী 'হাতীথান' নামক স্থানে কুপ খনন मभरत वह मःशाफ अछत्रपृष्ठि । आहोन जवा সমূহ আবিষ্কৃত হইয়াছে। মুর্ত্তিগুলির অধি-কাংশই জৈন প্রতিমা, তাহার কতকগুলি এখনও ধারের একেন্সী ভবনে সংব্রহ্মিত রহিয়াছে। ইহাতে দেখা যাইতেছে, ধারে এकाधारत हिन्तु, देखन, पूत्रनमान तकरनदरे প্রাচীন গৌরব চিহু বিছমান। এই হেতু বর্তমান ধাররাজের পূর্ববন্তী মহারাজের সময় হইতে, প্রাচীন স্মরণীর পদার্থগুলির সংরক্ষণ विवास थात्रत्रात्कात्र अ शृष्टि चाक्रहे स्टेम्। অমুসন্ধান ও সংগ্রহ চলিতেছে. হিন্মুসলমানগণের খোদিতলিপি ও হিন্দু জৈনদিগের দেবসূর্ত্তি সংগৃহীত হইয়া একটি সাধারণ প্রদর্শিনীতে স্থাপিত হইতেছে। জৈন মুর্তিগুলির বাহল্য হইতে অয়োদশ শতাক্ষীতে মানবে জৈন ধর্মের প্রাধান্ত হচিত এত্বাতীত উन. উজ্জাৱনীতে প্রমার শাসন সময়ের কতকগুলি সংস্কৃতামুশাসন কাশানাথ ক্লক্ষ লেলে মহোদয় কণ্ঠক আবিষ্কৃত হইম্লাছে। ধারের ভোজ-

The palaces of Mandu are, however, perhaps even more remarkable than its mosques. Of these the principal is called the Jehaj Mahal, from its being situated between two great tanks almost literally in the water, like a "ship." It is so covered with vegetation that it is almost impossible to sketch or photograph, it, but its mass and picturesque outline makes it one of the most remarkable edifices, of its date; very unlike the refined elegance afterwards introduced by the Moguls but well worthy of being the residence of an independent Pathan chief of a warrior state.—James Fergusson's Indian & Eastern Architecture Bk VII, ch. VI, p. 543f

শালাকসায় উন ও উজ্জায়িনীতেও বর্ণমালা-विषय क मारक ड शांध वृक्षा नियाह. वर শাৰ্কাতার কতকগুলি তামশাসনে পরবর্ত্তী প্রমারগণের বংশামুক্রমণী লিপিবদ্ধ রহিয়াছে। এঞ্লির পাঠোছার হইলে ধাররাজ্যের প্রাচীন ইতিহাস সংকলনের বিশেষ স্থযোগ উপস্থিত হটবে বলিয়া আশা করা যায়। এই তাম-निनिञ्जनित नमन ১२७১ थः यः निर्फिष्ठे ধাররাজ্যের শিকাবিভাগের र्वेषात् । পর্যাবেক্ষক লেলেমহোদ্ধের যতে নিম্নলিখিত বিষয়গুলি আবিষ্কৃত ও সংগৃহীত হইয়াছে। (ক) ধারের গৌহস্তম্ভব্র সম্বন্ধে সমালোচনার পর স্থির হইয়াছে, ইহারা সম্ভবত: ভোজ বা অপর কোন প্রমার কর্ত্তক জন্নস্তম্ভরূপে উত্তোলিত একটি সমগ্র স্থদীর্ঘ স্তম্ভের ভগ্ন খংশ মাত্র। দিল্লীর দৌহস্তম্ভ 🔹 ব্যতাত লোহ

শিলের এরূপ বিশ্বর কর ব্যাপার অন্তর দৃষ্টি-গোচর হয় না। (খ) ভোজশালায় খোদিত ছইটি দৰ্পবন্ধ ও (গ) পারিজাত মঞ্জরী ৰা खर् मी नामक मश्कुल नाहिकाश्म। त्मात्मरहान्य সর্পবন্ধ ৰয়ের বর্ণমালা, বিভক্তি, ও ধাতু প্রত্যয় ঘটিত ব্যাখ্যা এবং নাটকাংশের একটি সংক্ষিপ্তসার প্রকাশ করিয়া গোচরীভূত করিয়াছেন। (ঘ) বিস্তৃত ইতিহাস সংক্লিত হইয়া তিন খতে প্রকাশিত হইতেছে। তাহার প্রথম ভাগে ৩০০ খ্র: পু: হইতে চতুদ্দিশ খুষ্ট শতাব পর্যাস্ত মাশবের প্রাচীন ইতিবৃত্ত গ্রথিত থাকিবে। বিক্রমাদিতোর পুরারত সংগ্রহে হয়ত ইহা হইতে মহান স্থাগে উপস্থিত হইবে, এই আশার আমরা ইহার আও প্রচার প্রতীকা মুদলমানশাদিত করিতেছি।

"It stands 22 ft. above the ground, aud as the depth under the pavement is now ascertained to be only 20 in., the total height is 23 ft. 8 in. Its diameter at the base is 16.4 in., at the capital 12.05 in. The capital is 3½ ft. high, and is sharply and clearly wrought into the Persian form that makes it look as if it belonged to an earlier period than it does; and it has the *smalaka* moulding which is indicative of considerable antiquity....My own impression is that it belongs to one of the Chandra Rajas of the Gupta dynasty either consequently to A. D. 363 or A. D. 400. Taking A. D. 400 as the mean date—and it certainly is not far from truth—it opens our eyes to an unsuspected state of affairs to find the Hindus at that age capable of forging a bar of iron larger than any that have been found even in Europe upto a very late date and not frequently even now.......It is almost equally startling to find that after an exposure to wind and rain for fourteen centuries, it is a rusted and the capital and inscription are as clear and as sharp now as when put up fourteen centuries ago."

"There is no mistake about the pillar being pure iron. Gen. Cunningham had a bit of it analysed in India by Dr. Murray, and another portion analysed in the School of Mines here by Dr. Percy. Both found pure malleable iron without any alloy." [Footnote on the above]—History of Indian and Eastern Architecture, Br. VII, ch. III. pp.507-8.

^{*•} দিল্লীর কুতব্যনিবারের লোহতত ফগুসনের ন্যার সমগ্র জগতের স্থপত্যবিজ্ঞানবিশারদেরও কিন্ধপ বিশ্বর উৎপাদন করিয়াছে, নিমের বর্ণনায় তাহা বুঝা যায় ঃ—

ইভিবৃত্ত বিতীর ভাগের, এবং মহারাষ্ট্রারগণের রাশ্যারত হইতে ধারের আধুনিক ইতিহাস ভূতার ভাগের বিষরক্রণে নির্ণীত হইরাছে।
ইহাতে আশা করা বার, এই বিপুল গ্রন্থ সম্পূর্ণকারে প্রকাশিত হইলে, ধার ও উজ্জ-রিনী বিষয়ক অজ্ঞাত পূর্ব অনেক পুরাতন তত্ত্ব নৃত্র অবগত হওয়া যাইবে। ভারতের অক্যান্ত রাজকার্বর্গ দি ধারের মহারাষ্ট্রায়াজের সক্ষান্তের অক্সান্ত করেন, তাহা হইলে ভারতবাসীর ইতিহাস নাই' এই অমূলক অভিযোগে আমাদিগকে অ্যথা আত্মানি

ভোগ করিতে হয় না। বস্ততঃ ভারতেত্নিহাদ সংকলনোপযোগী উপাদানের, আদৌ অভাব নাই, কেবল আমাদিগের প্রকৃতিগত বৃদ্ধা এবং দেশমুখগণের উৎসাহাভাবই কাতীয় গোরবোদ্দীপক ও বদেশাহ্বাগ বর্দ্ধক ইতিবৃদ্ধ সংগ্রহের পথ রোধ করিয়া আছে, এবং ওদ্ধ এই জন্মই আমাদিগকে জগতের সমক্ষে নতাশির ও হেয় বলিয়া প্রতিপন্ন করিয়া দিতেছে।

বারাণদী প্রবাসী শ্রীনলিতমোহন মুখোপাধ্যার।

मगादलाह्या।

বিক্রমপুরের ইতিহাস। এীযুক্ত ধোগেন্দ্র-নাপ গুপ্ত প্রণীত। কলিকাতা ভট্টাচার্য্য এও সৃদ্দ হইতে শীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য্য কর্ত্তক প্রকাশিত্য ক্রিকাভা ভারত্মিহির বল্লে মুদ্রিভ खरन कांडेन दाज़नाःन s>२ गुर्वा, मृना २1 • होका। स्टब्ब कथा छाविटक स्टब्ब कथा खानिएक. स्टब्ब क्यां निर्वित् यथन लादित रेड्या ७ बाग्रह পतिनकि হয়, তথন তাহা দেশের উন্নতিঃ লক্ষণ। যোগেক্সবাবু এই বিপুলকায় গ্রন্থের উপাদান সংগ্রহ করিতে, সংগ্রহ-ভলি সুবিদ্রন্ত করিতে, আব্যানভাগ স্থবপাঠা করিতে र विश्व পরিশ্রম ও আয়াস বীকার করিয়াছেন, এই প্রস্থাঠে তাহার পরিচয় পাওয়া বার। যে দেশে পলার मछ नमी, देव दमत्म धर्मविश्वव,देव दम्दन देवदम्भिक द्वाका, সে দেশের অধিবাদী ইতিহাদ অপেকা ইতিকথার অধিক পক্ষপাতী, সে দেশের ইতিহাদ-সঙ্কলন কিরুপ खबमाना, छाहा महरायह अस्तित । विक्रमणुद मधरक ৰাহা-কিছু বক্তৰ্য বোগেজবাবু তাহার প্রায় সমন্তই **এই** প্রছে বি**পিবছ ক**রিরাছেন।

 বাঙালীর উপর বিক্রমপুরের প্রভাব ক্রদুর তাহা এই প্রস্থ পাঠেই জানা যার। প্রাচীন বাঙল, দেশের জ্ঞানচর্চা, শারালোচনা, ধর্মাস্টান, চিকিৎসাবিদ্ধা, ছাপত্য বিদ্যা—"নভাতার" অলীভূত ক্লাশুঘি কি ভাবে পরিণক হইরাছিল, তাহাই বিক্রমপুরের ইতিহান। যাঙালী রাজাদিগের কাহিনী বাঙালীর মুদ্ধকাহিনী, আতীয়:সম:জের ইতিহাস কাহিনী পাঠ করিতে করিতে সভ্য সভাই মনে একটা আত্মপ্রান অমুভ্র করা যার!

চাঁদ ও কেদার রায়ের রণলীলা ও আজতাগের
লীলাভূমি, দেন ও পাল রাজগণের কীর্ত্তিকাহিনীপুত
রাজবাড়ীর ষঠ, রাজ আদ্যের মদজিদ্শোভিত
হিন্দু, বৌদ্ধ, গ্রীষ্টার ও মুদলমান ধর্মের দ্যোলনক্ষে
বিক্রমপুরের ঐতিহাসিক প্রদক্ষ আমরা ক্য়লর পুথান্তপুথারণে অবগত আছি। অধ্য ইহাই বাডালীর ভিতিহাদের বথার্থ আছি।

এই এছে, এছকার বিজ্বপুরের সুবোজ্কলকারী সন্তানগণের—বাছার মধ্যে অগবিব্যাত জনবীশচল জন্ততম,—পরিচর সন্তন্ধন্তৎপ্রদেশ প্রচলিত বার, এত, আচার বাবহার, পোবাক পরিজ্ঞান, কবি শিল্প প্রফৃতির প্রাচীন ও আধুনিক ইতিহাস সক্ষলন করিয়া প্রন্থানি
চিন্তাকর্ষক করিয়াছেল। ০তবে অনেক village
Hampden বা inglorious Miltonএর নাম
প্রন্থের কলেবর অনাবশ্যক বৃদ্ধি করিয়াছে।
ছইথানি স্থরপ্রিক্ত মানচিত্র প্রায় ৪৫ বানি চিত্র, স্থানর
বাধাই প্রন্থানির মূল্য ও শোভা বৃদ্ধি করিয়াছে।
পতিত শ্রীমুক্ত অম্ল্যচরণ বিদ্যাভ্বণ মহালয় এই প্রস্থের
স্থানর, প্রেবণাত্মক ভ্রিকার অনেক নৃত্ন তথ্যের
সমাবেশ করিয়া প্রন্থানির উপাদেয়তা বৃদ্ধি করিয়াছেন। যোগেক্রবাব্ এই প্রন্থ প্রকাশ করিয়া
বাঙালীমাত্রেরই বস্থবাদাহাঁ। এই প্রস্থে একটি ক্রন্তা
ক্রি, মানচিত্রশুলিতে "স্থেল" দেওয়া হর নাই,—
আর একটি প্রধান ক্রটি অসক্ষত ও অসংযত উচ্ছান্ত্রলি
বছ স্থানে রসভক্ষ করিয়াছে।

শিৰাজী ও মারাঠাজাতি। শ্ৰীমৃক শরংকুমার রায় প্রণীত। হিতবাদী লাইত্রেরী, শ্রীমনোরঞ্জন বন্দ্যোপাধ্যায় কর্ত্তক প্রকাশিত। হিতবাদী প্রেদেমুক্তিত। ৮৫ পৃষ্ঠা, মূল্য আট। তথানা। সুখের বিষয়, বঙ্গীয় সাহিত্যদেবীগণের দৃষ্টি ইতিহাসের প্রতি আকুট্ট হইয়াছে। কিন্তু অধিকাংশ লেখক প্রারই ইতিহাসের বাহ্নবস্তু, রক্ত, নাংস লইয়াই ব্যস্ত ;— षिकाः न अस्, छाहे, शृष्टोस, युक्त विश्रद्धत्र वर्गनात्र পরিপূর্ণ। অবশু এ কথা বলিতেছি না যে ঐতিহাসিক ष्ठेना वा छात्रित्थेत्र क्लान मुना नाहे। ঐতিহাসিক তথ্যের মূল্য বংশষ্ট, কারণ ঐ সকল ঘটনার অস্তরালে य पक्ति कांक कविरक्षक जांकात वक्त छन ना करेल আমরা ইতিছাসের আভান্তরীন্ প্রাণটুকুর সন্ধান পাই না। বর্তমান গ্রন্থানি রাণাতে লিখিত Rise of the Mahratta Power ও কাৰ্যেন ্রাণ্টডকের ইতিহাস অবদম্বনে লিখিত।

কিরপে একটি জাতি গঠিত হয়, কোন্কোন্
শক্তি ও ঘটনা ঘারা তাহার অভ্যুথান ও পতন হয়,
কিরপে একটি জাতির ব্যবস্থাবিধি, আচার ব্যবহারের
মধ্য দিয়া জাতীর জীবন প্রবাহিত হয়, রাফ্রীয় শাসনপ্রণালী, অধিকার বিধি প্রবর্ত্তিত, পরিবর্ত্তিত ও
পরিণত হয়;—ইয়াই ইতিহাসের কলাল; (Consti-

tuitonal history)। মারাঠাগণ কিরূপে সহসা মাধা
তুলিয়া দাঁড়াইল,—কিরুপে বিভিন্ন দলগুলি সন্মিলিভ
হইল, কিরুপে শিবাজী মারাঠাদিপের এই অভ্যাপরে
আগনার ঐশী শক্তি নিরোজিত করিয়া রাষ্ট্রীয়
ঘাধীনভার প্রতিষ্ঠা করিলেন; নিরক্ষর শিবাজীর
প্রতিষ্ঠা করিলেন; নিরক্ষর শিবাজীর
প্রতিষ্ঠা কেনি, উপায়ে প্রকৃষ্ট প্রকাশপথ
পাইল;—বিচ্ছিন্নভার মধ্যে ঐক্য আবিদ্ধার করিয়া,
শিক্তিত অংশগুলিকে সংযোজিত করিয়া, কিরুপে
একটি সমগ্র জাতি গঠন করিল, এই গ্রন্থে ভাহাই
বিশ্বভাবে আলোচিত হইয়াছে।

কেবল রাষ্ট্রীয় ইতিহাস লইয়া শরংবার্ গ্রন্থানি
নীরস করিয়া তোলেন নাই। ঐতিহাসিক তথ্যেরও

যথোচিত আলোচনা করিয়াছেন। আফলল খার

হত্যাবর্ণন প্রসঙ্গে, তিনি শিবালী চরিত্রের ছরপনের

কলক মোচনে সফল হইরাছেন। গ্রন্থের ভাষাটী
কেবল স্থলবিশেবে ছর্বল এবং ইংরাজি ভাবের অমুকরণে ছলে ছলে শ্রুতিকঠোর হইলেও শাব্যায়িকাটুকু

মুখণাঠ্য।

এই গ্রন্থে কবিবর রবীক্সনাথ একটি উপাদ্যে ভূমিকা লিখিয়া দিয়া মারাঠা ইভিহাসেক বিশেবস্থ, ও বৈচিত্যা স্বতি প্রাপ্রকভাবে বুঝাইক্স দিয়াছেন।

ঐতিহাসিক সাহিত্যবিভাগে কুজ গ্রন্থবানি যথেষ্ট আহরের সামগ্রী। ভরদা করি, নাধারণ্যে ইহার বিশেষ সমাদর হইবে।

মহাত্মা রাজা রামমোহন রার। (এবং ধর্ম্ম, সমাজ রাজনীতি প্রভৃতি বিষয়ে তাঁহার উপদেশ ও মতামত) প্রীরুক্ত নগেন্দ্রনাথ চটোপাধ্যার প্রণীত। কলিক'তা ইতিয়ান্পাব্লিশিং হাউস হইতে প্রীরুক্ত চারচক্র বন্দোপাধ্যার কর্তৃক প্রক্রুলিত। কান্তিক প্রেয়, মুক্তিত, চতুর্থ সংক্ষরণ কাপড়ে বাধাই, মুল্য ভিন টাকা। প্রছখানি যে আনরের সহিত সাধারণা গৃহীত হইয়াছে তাহা ইহার চতুর্থ সংক্ষরণ হইতে বুঝা বায়। আমানের দেশে উপাদের প্রস্থের তেমন আদের নাই নতুবা এই প্রস্থের চৌন্দটি সংক্ষরণ দেখিতাম। লোমহর্বণ উপভাগি, কুক্রিপুর্ণ নাটক ও অর্থহীন, চটুল ডিটেক্টিডের

ं नहीं पोक्रोत व्यानिश्वक कडिएकर । व्यत्य गरन व्यक्तिक नाटान, व्यावस कनात वारकण कडिएकरि ; विश्व देश कटिन गर्छ ; वनगारणत देशाह गरे ।

करे बार, मध्यम वानू नश्क्षा वागरनाहन वातव स्वकृत्य (व नवण कथा रेजिक्यांकि नवणन कविवादम क्रिक्स व्यक्ति ध्यानानिक। वैश्वान वर्गीत नशकात्क प्रत्यक मिनवादिक वा वैश्वान क्रिक्स निविक्त विस्तान अनम व्यत्यक निवक्त (नाकनून स्टेट्टरे व्यक्तियात्म निवन्ती नश्चार कविवाद्यत । अरे विक्त व्यक्तियात्म नवन्ती नश्चार कविवाद्यत । अरे विक्त व्यक्तियात्म नवन्ती नश्चार कविवाद्यत स्ववन्तात्म विभिन्द स्टेश (वन क्षत्रवार्य स्टेशांक्—कार्य तम

ं वहे मरकदान पूर्व मरकदर्शकी वार्यका अरहत क्रम्बन्न वृक्ति भारेवारह। बरनक न्यन ७ वकाय-भूक् क्यांत्रक अवारतम् बारहः। अरहत्र छारा अतन मरन्त्र । रक्षम प्रमदिर्गरं अपनात प्रमान वराया-গণের সহিত, ৱাৰবোধনের তুলনা করিতে গিরা সংখ্য হাবি করিরাছেন। (খিতীর পৃঠার, বিভীয় भावाधारकः रनवारम्)। बाद अक्षिक्या, नरमळवाद् अष्ट्राविनिक्के कृष्ठीव्रवाद्यव "विकाशन" निविद्यास्त्र, "श्रेषांत्र बोजना-अद्द नकत्नत्र छोवा, वर्डवान नगरवत्र জোংকর বোৰভুগত ও কচি সক্ত নতে বলিয়া এবৰভার লোক ভাষা পাঠ করিতে ইচ্ছা করেন ন[া]। तिरेक्क चरनक चरन चामना ब्रांबाब ब्रह्मा, আধুনিক ৰাজালার পরিবর্তিত করিয়া বিয়াছি।" मरमञ्जादूर वरे कार्यात जायना जाए। जन्दानिन ক্ষি না ৷ এবং সাহিত্য স্বাক্ষীতি ৰতেও তিনি অব্যক্তির হতকেশ করিয়াছেন। এরপ বাধীন-कांत्र त्यांशरे विवा,। ७४नकांत्र यतिष्ट्रत्य पृतिक, श्रीमान किया वर्षेयान किथे केर्गलानी केन्निए रहा। क्षं मरङ्गा साविष्ठा, योजना व्याहीन गुर्शिस्छात्रक बुक्षन नहिंदक स्थिति , व्यव । होसाह काना परि क्रिनामक में मर, रह छारा सक्त करून, नह छाराव क्रिक्रमान क्रिक्स स्थित । क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स निकारण र विद्यालय अधारा स्थान करा रत !

APPLIE APPLIE HATE MITTERS PRICES

লক্ষরতী ভাষারি লালোচনার স্থাবেশ- প্রথম ব্রুলার ইয়াকে বেবৰ স্থানার ভাষা কলাপের সহিত পরিচর স্থাপন বন তেবনি রালায় লভারের -ছবিও ব্যেতে পাওয়া যায়। এ প্রথানি বে প্রসাহিত্যে গৌরবের বভা, নে বিবরে সন্থের নাই।

বেতাল পঞ্বিংশভি। স্বনীয় ঈশবচন্ত বিভাগাগর মহাশুর কর্তৃক প্রশীত। ইতিহান্ পাব্লিশিং হাউস হইতে, 🕮 বুক্ত মণিলাল গ্রেপাধার কর্তৃক অকাশিত, সচিত্র সংস্করণ কান্তিক প্রেসে মুক্তিত। বর্ত কাশড়ে বাধাই >८२ पृक्षे। म्ला ॥√० चामा बीख। वनिवाद् কিছুদিন পূর্বে সংস্কৃত রত্মকরের উচ্ছল রত্ন 'কাৰবরী'র সচিত্র সংকরণ একাশিত করির।ছেন। সম্ভতি বিস্তাসাগর মহাশয়ের বেডাল পঞ্চবিংশভির ভুণভ ও সচিত্ৰ সংক্রণ প্রকাশিত করিয়া বাণবার্ अध्यानिक रहेन थाठाव-१४ व्यवस कवित्रा वित्राहिन। विशामान्य महानदम्य अध्यम् ममाद्याचन् । সাহিত্যের হিসাবে গ্রন্থবানির একটি বিশেব মূল্য এই বে ইহা অভাধিকশভাৰী পূৰ্বে বৰ্ডমান ব্লুভাষার আদি শুকু কর্তৃক লিখিত। বিদ্যাসাগন মহাশ্রের রচনা ৰৰোবোপের সহিত পাঠ করিলে একুতই ভাষা निका रता 'नक्विरमण्डि' क्यांश्रम् अवर बीहि ভারতীর ভাবেও ব্রুবে পরিপুর, নানা বিচিত্র রলের সংমিশ্রণে কৌভূহলোকীপক ৷ বণিবাৰু এছের नाजिएस कृषिकात, पत्र कथात्र, अस्टब स्म एसम बनारेना पित्राटक्त । कारान जारूक्य पाठिएक बर्गकरी क्षिया हरेरव ।

পরিণাট ব্রণ, ও সুক্তর কাপক, বনোরন বাছার্যর, চিত্র ও সুগত বৃদ্য — এছবাবির একটি এবাব আকর্ষণ। পারিভোধিক বা উপহার বিষায় উপদক্ষে এইরপ প্রস্তের ব্যবহার প্রস্তুত্ত এবং বাছারীয়।

क्ट्रमा । जीविविष्यमा वाव । क्रिकांका कर व्यारम ब्रिक्ट । जूना वार्षि जाना मान । जनानि हुई कविकातक। करि बाजीव जीवनस्था सकतारक वारास्त कविकारका । नवाककेव महत्वा करिय केनाव उटका क्रिकांक्सा सरक्ष मक्ता किंद्र वार्षिक व्हेंबर केविकार ।



रुर्जुनुनाथ १ अ.भाषात्र

च्रदत्र जनाथ गटकाशाधास ।

১২১২ সালের ১৬ই ফার্টিক বরিশাল জেলার অন্তর্গত শুরুগড় প্রানে স্বরেক্সনাথ ভূমিঠ হন।

প্রাষ্টা কুল হইবেও নিভান্ত কথেনিছ নহে।
এখানকার কাষার কুষার কুষী প্রভৃতিরা নিজেরে
হন্তশিলে চতুর্দিকের কর্মণত প্রামের লোকের প্ররোজনীর জিনিসপত্র জোগাইরা পাহক। এতদ্ভির
শুক্তাগড়ের শান্তিল্য গোত্রীর ত্রাক্রণেরা সংক্রতে
স্পত্তিত বলিরা সর্বত্র বিখ্যাত।

শহরেক্সনাথের পিতা শভগবতীতরপ গক্ষোপাধ্যার উক্ত শান্তিল্য-গান্তীয় শ্বনক্ষার চক্রবর্তীর ভাগিনেয়। ভগবতীতরপের পৈতৃক বাজী চেচড়ী; কিন্তু ক্রীন ভগবতীতরপ মাতৃলালয়ে জন্মগ্রহণ করিয়া, মাতৃলালয়ে জীবন কাট।ইয়া মাতৃলালয়েই দেহত্যাগ করিয়াছিলেন। ভগবতীতরপ ও তাঁহার কনিষ্ঠ সহোদর প্রীকালীচরণ মাতৃলকে পিতার যত ভক্তি করিতেন এবং মাতৃলানীর স্থিত মারের কোনো তফাৎ আছে বলিয়া জানিতেন না। ইহারা এবং ইহাদের সন্তানগণ সকলে অন্যাবধি মাতৃলগৃহে অবস্থান করিতেছেন।

ধনকুমার সত্যনিষ্ঠ, লিভেক্সিয়, তপথী, ধর্মপ্রাণ মহাপুরুষ ছিলেন। চতুর্দিকের মুসলমানেরা তাঁহাকে "ধার্মিক ঠাকুর" এই অধ্যা প্রদান করিয়াছিল। আমের মধ্যে সর্বাদা মানলা মোকজমা ছিল, কিন্তু কোন পক্ষই তাঁহাকে শক্ত বলিয়া মনে করিত না। পুলিশ আসিয়া সাক্ষ্যপ্রদানের লক্ষ্য সব বাড়ীর স্বলোক লড় করিত, কেবলমাত্র "ধার্মিকঠাকুর" তাহাদের কাছে রেহাই পাইতেন। ইহার ধর্মভাব, ইহার ভাগিদেয় ভগবতাচরণে এবং ভগবতাচরণ হইতে সংক্রেকানাথে ক্থকিৎ সংক্রমিত হইয়াছিল।

তগবজীচরণ কিঞিৎ সংক্ষ ব্যাকরণ পড়িয়াই লগারন বিরত হন। তিনি পৌরহিত্যকার্ব্যে অত্যক্ত পটু ছিলেন। একালে তেমন বিগুদ্ধ বাজনিক কিয়াবিং বাজন বিরল। হিন্দুখর্মের ক্রিয়াকনাপে তাঁহার বিশেব আছা ছিল, এবং তিনি মান নাহ্নিক লগ তর্পন প্রভৃতি নিরতিশর ব্যাসহকারে সম্পর করিতেন। প্রোর বিন্যালাভ কামনার ভগবভীচরণ

অনেক তপজা ও দেবারাধনা করিয়াছিলেন। ইহারই
ফলে হরেন্দ্রনাথের প্রতি শিল্প সর্থতী স্থাসন্ধ হইরাছিলেন। ভগবতীচরণ নিপুণ শিল্পী ছিলেন। তিনি
বহরার নিজের ছুর্গাপ্রতিমা বহুতে গড়িরাছিলেন।
তিনি ছুতোরের এবং ঘরানির কাজেও নিজহুত
ছিলেন। ভগবতীচরণের শিল্পনৈপুণ্য স্থরেন্দ্রনাথে চরম
উন্নতি লাভ করিয়াছিল। পিতার এই সকল খংগর সজে
সজে পুত্র স্থরেন্দ্রনাথ তাঁহার ক্ষর-রোগেরও, অধিকারী
ইইয়াছিলেন, এবং ইহাই তাঁহার অকাল মৃত্যুর কারণ।

স্বেজনাথের জননী জীগুলা অটলমণি থেবী সাভিশন্ন বৃদ্ধিমতী রমণী। স্বেজনাথকে গর্ভেধারণ করিয়া ও তাঁহাকে স্থানিকা প্রদান করিয়া তিনি বঙ্গদেশে চিরশ্বরণীয় হইয়াছেন। তিনি গ্রাম্যানিকারন, কাথা শেলাই, আলেপনা প্রভৃতি তৎকালীন মহিলা-শিল্পগুলি স্লব্রুপে জানিতেন।

স্থারেন্দ্রনাথ অতি আফ্লাদের ছেলে ছিলেন।
তাঁহার পিতার মাতুলানী তাঁহাকে আদর করিয়া
"ঠাকুরচাঁদ" নাম দিয়াছিলেন। স্থারেন্দ্রনাথ তাঁহার
প্রামে স্থানে এবং কুট্র ও বজুবর্গের নিকটে ঐ নামেই
প্রিচিত ছিলেন। ঠাকুরচাঁদ যে প্রিবারে ক্রিয়াছিলেন, সেটা একটা বৃহৎ একারভুক্ত পরিবার।
বিশেষত তথনও ঠাকুরচাঁদের কাকাদের (একজন
পিতার সহোদর এবং ছইজন পিতার মামাত ভাই)
কাহারও সন্তান হর নাই। সকলেই ঠাকুরচাঁদকে
নিজ সন্তানের মত মেহ করিতেন।

ঠাকুরটাদ ছোটকালে কথনো মারামারি ধরাধরি করে নাই। এবং কি বাল্যে কি যোবনে, কথনো কটুকথা বা কর্কণ ব্যবহারে কাহারও মনে ক্লেশ দের নাই। ঠাকুরটাদ বাল্যকালে অলীল কথা জানিত না। একদা তাহার কোনো বরগু করেছে অত্যন্ত অলীল ভাবার গালি দের। অর্থ না আনার বালক স্বেক্রে দৌড়াইরা গিয়া পূর্ণ সভার ঐ কথার অর্থ জিল্ঞানা করিবাছিল।

চারি বংসর চারিবাস বয়সের সময় ইয়েরচালার হাতে বড়িকর। এই সময় হততেই কোনাপড়া অংশক

শিলকার্যোর দিকে ভাহার বেশী বনোবোগ দেখা যাইতে আক্রকাল কিন্তারগার্ডেনের দিন: কিন্ত চিরকালই দেশে কিগুরগার্ডেনের অমবিতর চলন ছিল। ঠাকুরচ'াদ বাল্যকালে মাটির ছুর্গাপ্রভিমা গঠন ক্রিত, এবং নানারূপ কলকজা নির্মাণ করিয়া ঘকীয় ভারী প্রতিভার পরিচয় প্রদান করিত।

695

এই সময়ে ঠ:কুরচাঁদের পিতা ও খুরভাল নলছিটা त्रबहेती चाकित क्रतानिगिति क्रिलन। ध्र चन বয়দে ঠাকুরচাঁদ মাতৃক্যোড় ছাড়িয়া লেখাপড়ার জন্ত नमहिं भगन करत, अपर नमहिंगे क्रूटन किहूमिन পড়িয়া তথা হইতে নিমপ্রাথমিক পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হয়। এইখানে বাঞ্লার সঙ্গে সংক ঠাকুরটান একটু ইংরাজি শিবিতে আরম্ভ করে। দৈবছবিপ:কে এই সময়ে তাঁহার পিতা ও খুনতাত চাকুরি এন্তাকা দিতে বাধ্য হন। বরিশালের তদানীস্তন মাজিট্রেট্ বিট্যন্ বেল্ সাহেবের ভ্রমে এইরূপে ছঃছ পরিবারের অনুসংস্থানের পথ বন্ধ হইল। তবন ঠাকুরচাঁদের অক্তম काका विवृक्त रनमाती ठक्तवर्डी मर्द माज वि. এ, शान করিয়াছিলেন। ভাঁহার এবং ঠাকুরচালের অধ্যয়ন ব্যয় क्नारेबा डिठा कठिन इरेबा माज़ारेन। ठाक्बराम আমে কিরিয়া আসিল এবং আমের একজন গুরু बरानएक निक्ष वाकाला ও देश्वाकि পড़िटक नाशिन। **এইकृत्य এक द९मद का**छिया रशन।

১৩.8 সালের অগ্রহারণ মাসে বনমালী বাবু बिद्यालय बाब्राक्य कलाब देश्वाबि पर्नत्व व्यथापक নিযুক্ত হইলেন। শুক্তাগড়ের চক্রবর্তী-গলোপাধ্যাঃ **श्रिवादित इववद्यात अक्ट्रे द्वान क्ट्रेल।** ठीकूत्रहान অধ্যয়নমানসে বনমালীবাবুর সহিত বরিশাল পমন করিল. এবং তথায় রাজচত্র কলেজের সংস্ট স্কুলে वर्ष स्थापित छहि इहेन। ये कृत्न स्रातकनारकः वालाकीवानत बाए दिन वहत किवाहिक हहेग्राहिल।

পরিচয় প্রদান করেন। স্থরেন্ত্রনাথ ক্রাসের পাঠে ভত মনোবোগী ছিলেন না, কিন্ত ড্ য়িং শ্রেণীতে चित्रतंष देवभूना धावर्णन कविरकन। देश मिविवा ৰোয়াৰালীয় জীযুক অক্তত্ত্বাৰ চক্ৰৱৰ্তী (এখন

अम् अः वि, अन्, मूनितक्) यहानम छेहात्क माविनास আর্টিফুলে পাঠ।ইতে পরামূর্ন দেন,। অক্ষরবাবু নিজে चनिश्व कनाविए--छांबाबर निक**ष्ट या**त्रक्रनाथब স্বাভাবিক প্রতিভা সর্বপ্রথমে ধরা পড়িয়াছিল।

১৩.৮ সালে আবাঢ় মাসে বনবালী বাবু বরিশাল ভ্যাপ করিয়া বঙ্গবাদী কলেজের প্রধান সংস্কৃতাধ্যাপক হইয়া ক্লিকাতা গমন করেন। স্বরেক্সনাথও ভাঁহার সলে সঙ্গে গিয়া বসবাদী কলেজিয়েট স্কুলে ভর্তি হন। এই স্বেল্রনাথের প্রথম কলিকাভায় আগমন। ভবিষাতে এইখানেই তাঁহার প্রতিভার বিকাশলাভ इहेग्रा हिन्।

কাশীতে গিরা সেউাল হিন্দু কলেবের স্কুলে ভর্তি हन। कानीशास्त्रत थाहोन कीखित हिन्दक्षण प्रशिपा ম্বেলনাথের চিত্ত প্রাচীন ভারতের দিকে ঝুঁকিয়া পড়ে, এবং দেট্রাল হিন্দুকালেজের অনমগ্রাহী শিক্ষা তাঁহার নয়নের কাছে নৃতৰ আদর্শ আনিয়। উপস্থাপিত করে। কাণীতে স্বেক্সনাথের जुग्रमी উव्रजि इहेग्राहिन। हेहात भूत्व श्राप्त मात्य মাঝে সুরেক্রনাথের জব হইত। কিন্তু সাশীতে প্রায় পাঁচমাদ নিবমিত খ্যায়ামের পর উহাঁর শরীর বেশ হুটপুট হইরা উঠে এবং জ্ব প্রভৃতি ব্যাধি একেবারে অন্তর্হিত হয়।

किञ्चमिन भारत यनमाली वायू कनिकाला मश्चल বেদাস্তাখ্যাপক इडेब्रा व्याहेश्यन। সুরেন্দ্রনাথও তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে আসিয়া কলিকাতা मःक्षृत्र कालाब्बद्ध कूल छर्छि इन। वााद्यात्मव (वन प्रवास्थावस हिन। प्रवासनाथ निष्म নিচ্মিত ব্যায়াম করিতেন এবং অপেকাকৃত অল रमक राजक्षिभरक नराष्ट्र साम्राम निशहराजन। এখানেও ডুমিংক্লাদে ভাষার বিশেষ প্রতিপত্তি ছিল।

১০১১ সালে इटब्रेसनाथ সংস্কৃতকলেसিয়েট স্কৃত हरेट धन द्वीमृत् गत्रीका तन, এवर त्रीकारशात्र विवत् रक्ल इन: विम रक्ल मा इहेर्डिन, छर्टन फिलाकन স্রেক্তের পরিবর্জে আমরা কেরাণি বা হাকিম স্থরেক্ত-नाथ शाहेरक शाबिकांस ज्ञा, क्वि छेहा बाता

আমানের দেশের কোনও ছারী কল্যাণ সাধিত হইত না। ডাই ক্রেক্সনার্থর 'ফেলে' আমরা ভগবানের কল্যাণময় হত দেখিতে পাইয়াছি।

সুরেন্দ্রনাথের পিতা ভগবতী চরণ সেকেলে লোক: তাঁহার একাস্ত ইচ্ছা ছিল যে সংরেজনাথ আবার এন্ট্রান্স্ পড়ে, এবং বি, এ, এম্, এ পাশ করিয়া উকিল বা হাক্ম হয়। কিন্তু সুরেন্দ্রনাথের শিকা-বিষয়ক নিয়ন্তা বনমালী বাবু; তিনি জ্যেষ্ঠ ভগৰতী हत्रांत्र कथा উপেका कतिया दरततानावरक आर्छ-ফুলে দিতে চাহিলেন। আলকালকার শিক্ষাবিভাটে বে অনেক প্রতিভাবান যুবকও সমাজে মুর্থ বলিয়া পরিচিত হন, এবং অনেক অন্ত:সারশূক্ত জড়বুদ্ধিও বে মুৰন্থের জোড়ে লমা লমা উপাধিতে ভূষিত হন, हेश वनभाली वांवू विलक्षन व्यवंश्व हिल्लन। निरस অনেক পরীক্ষায় পাদ করিয়া এবং প্রায় আটবংসর ধ্রিরাবি, এ, এম্, এ, ক্লাদে অধ্যাপনা করিয়া তিনি পরীক্ষার মধ্যাদা সম্যক জনমঙ্গম করিয়াছিলেন। তাই जिनि किছতেই ऋतिसनारीक श्नदाय अन्दान्म পড়িতে দিতে চাহিলেন না। সুরেক্তও আটস্থলে যাইবার[®]জন্ত সমুৎস্ক ছিলেন। তিনি পিতাকে বলিলেন "বাবা, আমি ষষ্ঠ শ্ৰেণী হইতে আজ প্রাপ্ত কর্মণ ক্ষুলপাঠ্য বিষয়গুলি মনোযোগ দিয়া পাড় নাই, যদি আবার এন্ট্রন্স পড়িতে পাঠান তৰে অবশ্ৰুই পড়িব, কিন্তু পাস হইব না ইহা ঠিক।" हेशात भन्न चात विधा कतरणत अवकाभ तरिम ना স্বরেন্দ্রনাথ ওডক্ষণে আটস্কুলে প্রেরিত হইলেন।

এই সমরে বিখ্যাত হাবেল সহেব কলিকাত।
আটসুলের অব্যক্ষহিলেন। তিনি অঞ্চয়গুহার চিত্র,
বিভিন্নছান হইতে আনীত হিন্দুও বৌদ্ধ মূর্ত্তি, এবং
যোগল বাদলাহদিগের আমলের চিত্রাদিকে ভারতীয়
চিত্রকলার মূল আদর্শ বলিয়া ধরিলেন। তিনি কলাবিদ্যায় "বদেশী" চালাইলেন। দেশের লোকে
প্রথমে উল্টা বুরিলেন। সংবাদপত্রে এবং অ্যাত্র ছানে হাবেল সাহেবের প্রতিষ্ঠাট্টাবিজ্বপ চলিতেলাগিল,
কিন্তু প্রব্রশ্বেষ্ট মহামতি হাবেলের পক্ষ অবল্যন
ক্ষিলেক। ভাহারই বল্প বিখ্যাত চিত্রশিল্পী শীর্ত

অবনীজনাথ ঠাকুর আর্টিসুলের সহকারী অধ্যক্ষ হই-লেন। অবনীজ্রবাবু যে দিন আর্টিসুলে পদার্পণ করিয়াছেন, সেদিন অভি গুড়দিন। সেইদিন হইডে গ্রব্যিটেট্র যত্নে ভারতীয় আর্টে "হদেশী"র দৃত্তর প্রতিষ্ঠা হইয়াছে।

হুরেন্দ্রনাথ অন্ধদিনের মধ্যেই হাবেল সাহেব এবং অবনীক্র যাবুর প্রিরপাত্র হইয়া উঠিলেন। হুরেন্দ্রনাথের উদ্ভাবনী শক্তি দেখিয়া ইহারা মুদ্ধ হুইলেন। হুরেন্দ্রনাথ মাসিক আট টাকা হিসাবে বৃত্তি পাইলেন।

১৩১৩ সালে হুরেন্দ্রনাথ পিতৃহারা হন। ১৩১৪ माला को माम ख्राबलनार्थन विवाद रहा। স্বেদ্রনাথ কুলীন, বিশেষত নিপুণ চিত্রকর বলিয়া তথন সুরেন্দ্রনাথের বিলক্ষণ নামও হইরাছিল। তিনি ইচ্ছা করিলে থিবাহের সময় যথেষ্ট অর্থ গ্রহণ করিতে পারিতেন। কিন্তু সংসারের কর্ত্ত। বনমালী বাবু সমাঞ সংস্কারে ত্রতী ছিলেন। তিনি স্থারেলের বিবাহে **ढाका नरें एक हारिलन ना।** সুরেন্দ্রনাথ ইহাতে धूव अभी इहेरलन, এवः निष्य ष्यम् कतिश विल्लन যে, গরীবের গৃহে স্থপাত্রী পাইলে বিনা-পঞ্জে বিনা-অলকারে বিবাহ করিবেন। সঙ্গতি সম্প্রস্থাল ভাল ৰংশজেরা তাঁহাকে কক্সাদান করিতে আগ্রহ প্রকাশ ক্রিলেন। বংশজের কন্তা বিবাহ ক্রিলে নগদ অর্থভিন্ন বংদর বংদর কিছু বার্ষিকও পাওয়া যায়। অজ্ঞ কুলানেরা উহাকে একপ্রকার "ভালুক" বলিরা মনে করে। কিন্তু বনমালী বাবুর শিক্ষার কলে সুন্ধেন্দ্ৰনাথ ভাবিলেন "কুলীন কস্তান্ন বিবাহে ধেরূপ কষ্ট, তাহাতে অর্থলোভে কুলীনকন্ত। পরিহার করির বংশঞ্চম্মার পাণিপীড়ন করা অকর্ত্তব্য।" স্বরেন্দ্র-নাথের মন বাক্যও কার্য সর্ববদা একরপ ছিল। তিনি নিঃশব্দ সংস্কারক ছিলেন। তি**্টিক্ত**কার্<mark>থ</mark>ৰ, কুলীন সমাজের কল্যাণের জ্বভূবংশজের মেরে বিবাহ করিতে নারাজ হইলেন। এবং বহু সম্বন্ধের পর প্রিয়বালা নামী একটা লক্ষাত্রী সম্পন্না দরিত্র কুলীন কল্পার পাণিপ্রহণ করিলেন। বিবাজে পরে লক্ষ্মী প্রিরবালার ভাগ্যবলে স্ট্রেল্ডনাথ অচুর অর্থ উপার্জন করিরাছিলেন। স্থানেল নাথের খণ্ডর বিধাহে কিছু বোডুক দিতে পারেন নাই, এবং খছর বছর উপায়ুক্ত ভল্লার পাঠাইতে পারি-ভেল না বলিরা, বাড়ীর কেহ কেহ ভত্তপরি একটু বিরক্ত ছিলেন। কিছু স্থারেল্ড ইহাতে বিচলিও ইইতেন না। শ্বপ্তরের কাছে অর্থপ্রত্যাশা দীন ভিল্-ক্ষের কারণ বনমালী বাব্র এই অন্ল্য উপার্থন স্থারেল্ডনাথ স্বাজ্যকরণে গ্রহণ করিরাছিলেন। শির-শুরু অবুনীল্রনাথ এবং আধ্যান্থিক গুরু বনমানীর প্রভ্রেক উপার্থন স্থারন্তনাথ কার্থ্যে পরিপত করিরাছিলেন।

সকল সংকালেই স্বেক্তনাথের অসাধারণ উৎসাহ ছিল। বখন "বদেশীর" প্রথম তরঙ্গে দেশ নাচির। উঠে তখন স্বরেক্তনাথও স্বদেশীর উন্নজির জন্ত মধাসাথা চেষ্টা করিরাছিলেন। বিস্তু তিনি কখনও শিক্টে করিয়া বা বিছিলে গান গাহিয়া সমর কাটান নাই। তিনি ৮ ছুর্গাপুজার বজে বাড়ী না গিয়া কলিকাতার খাকিয়া হাটার্স্লি উত্তের (hatersley loom) ব্যবহার অভ্যাস করিয়াছিলেন ৮ তাহার আশা ছিল যে প্রামে প্রামে বিনা পারিক্তাকিকে ছাটাস্লি তাতের ব্যবহার শিধাইয়া করেলী শিক্ষের প্রকৃত ইম্নিডিঃ এখ সাধ্যাসুস্বরে সুগম করিয়া শিকেন।

আর ছই বৎসর পূর্বে কলিকাতার যে আচ্যকলাআনশনী (Oriental Art Exhibition) বলিয়াছিল,
ভাষতে স্বেক্সনাপের ছবিগুলি সর্বেচ্চি তান
আবিকার করে। স্ব্রেক্সনাথ ঐ সমরে ছবির নাম ও
পূর্কার বাবদে প্রায় আটশত টাকা প্রাপ্ত হন।
গরীবের বরে প্রতিপালিত বিংশতিবর্ষী হ্বান্তর
হতে হঠাৎ এত টাকা পড়িল, কিন্তু প্রকাশনী
স্বর্ক্সনাথ ঐ টাকার একপরসাও বারুয়ানিতে বার
করেন নাই। শীন্ত, আননীক্রমান্ স্বরেক্তনাথকে
পূর্বেহ করিতেন। তাঁহারই পরামর্শ মত
ঐ টাকা দিলা পরিবারের বৎসরের বান্ত সংখানের
আন কিছু করী রাধা হইয়াছিল। স্বরেক্তনাথ সর্বান্ত

নিভিত বৰে ছবি আঁকিব। বড়লোভ হতনা, বা স্কর বংগ্লা পরিজ্যালয়ার করা নিজরোজন"। হারেজনাধ একালের "বুনো স্বানাধ"।

ৰাণা দৰতে সুবেজনাৰের এক বহা ৩৭ ছিল।
বাংগ দেও না কেন, তাহাতে উহার প্রাপ্ত হইত।
ইহা ভাল হয় নাই, ইহা কৰ হইরাছে বলিয়া সুবেজ
কবনও দৌরাজা করিত না। সামাজ বিষয়েও
অপরকে কই দেওয়া তাহার মভাববিষক্ষ ছিল।

হরেন্ডাবের কোনও থির মুক্ত ভারাকে বলেন **"ভোমাদের চিত্রগুলি সাধারণের কাছে** ভঙ ভাল লাগে না: বাজাৰে চলিতে পাৰে, এমত ছবি তৈয়ার कत्र, छारा रहेरन बढ़माञ्चर रहेरक नात्रित । श्रीपृष्ठ बाबा विवसीत शनाबायुम्बन्हें छात्रक्षीय विवक्तपत কর্তবা।" হারেল এডচড়রে ভারতীয় প্রাচীন চিত্রের শ্ৰেগৰ বুৰাইতে চেষ্টা করেন। বন্ধু ভাষাতে বলিলেন "তোমার ছবি যেন ভালই হইল, কিন্তু সাধারণে ना वृक्तिल छेहा विक्रम हहेरव रकन ? पुनि कि बाहेम ছবি औं किरव?" प्रश्निमांच विवासन "वतः ना शारेबा बतिव, किन्छ याहारक ठिजिविनाांत व्यापनी বলিয়া বুৰিয়াছি, কখনও অৰ্থলোডে, ভাহ হৈত বিচাত হইব না"। এইরূপ আদর্শব্ভা ও একাগ্রতা हिन विनिदारे अनक शायन अ वनशासनाय स्वतः নাথের আদর করিতেন। এই একারতার ফলে, গত ত্রীমাবকালের সময় সুরেন্দ্রনাথ মাসিক একণ্ড টাকা বেতনের চাকুরী পাইরাও ভাষা এহণ করেন नाहै। भनीर स्टबलनार्यन शक्क हेश अल्पका আদৰ্শগরতা ও লোভহাৰতার আমাণ কি হইতে

১৩১৫ সালের অগ্রহারণ বাসে স্থারেক্রনাথের অভিভাবক বন্যালী বাবু কার্যুগভিকে কলিকাতা পরিভাগে করেন। এই সময় কলিকাভার বিখ্যাত প্রিক্ত অর্ক্রেন্ত্রনার সলোপাধ্যার (এম্, এ, বি,এল্,) মহাশর স্থারেক্রনাথের নিকট চিত্রবিদ্যা অভ্যাস করিবার নিমিন্ত উহাকে অগৃহে আঞ্রের দান করিলেন। গালুলী পরিবারের বন্ধে ও স্লেহে, ভ্রেক্রনাথ নিম্পারিবার হইতে -বিজ্ঞির ইইরাঙ, ভোনও অস্ত্রিবার

বোধ ক্ষরেন নাই। স্থানের সর্বনাই।ঐ পরিবারত দ্বীপুরুষ সকলের বিশেব ক্ষরাতি করিতেন।

কালে স্বেল্ডনাথের মধ্যে মধ্যে অর হইতে আরম্ভ হয়। ১৩১৬ সালের আবাঢ় বাসে স্বেল্ডনাথে সীড়িত হইরা বাড়ী যান। তথার স্ববিজ্ঞ কবিরালেরা উহার অফত রোগ কি তাহা নির্বর করিতে সমর্থ হন নাই। পরে বরিশালের প্রবীশ ডাক্ডার প্রস্কুক ত্রিণীকুমার সেন মহাশয় পরীশা থার। বুকিতে পারেন ইহা ক্ষয় রোগ! বনমালী বারু ইহা শুনিয়া প্রার বজের সময় ভাহাকে লইয়া কলিকাভায় আগমন করেন। সেইখানে ডাক্ডার আরু এলু দন্ত এবং ডাক্ডার ইন্দুমাধ্য মল্লিক মহাশয়ের চিকিৎসাধীনে কিছুদিন অভিবাহিত করিটা গত ৪ঠ৬ অগ্রহায়ণ স্বেল্ডনাথ ভাগীরথীবক্ষে দেহ ভাগে করিয়াছেন।

সুরেজনাথ চিয়নীবন কর্তব্যপরারণ ছিলেন! কর্তব্য বৈ মূর্ত্তি পরিগ্রহ করিয়া উপনীত হউক না কৈন, সুরেজনাথ সংক্ষিণ ভাছাকে সাদরে মাথা পাতিরা গ্রহণ করিতেন।

চক্ষিপ বছরের বালক স্বেক্ষনাথ ছাত্রাবস্থার খর্পে পিয়াছেন। তাঁহার জীবনী লিখিব কি? ইহাতে ঘটনার বৈচিত্র্য কি থাকিবে? কিন্তু স্বেক্ষনাথের জাবনে পিক্ষিতব্য বিবরের অভাব নাই। স্বেক্ষনাথ প্রকৃতই আদর্শ চরিত্রের লোক। সত্য-বিঠা, সংঘন, সরলতা, পরোপকার প্রভৃতি তাঁহার খাড়াবিকশুণ বলিরা প্রতীরনান হইত। স্বরেক্ষনাথের অসাধারণ সভ্যবিঠা দেখিয়া তাঁহার মৃত্যুর পর একজন লিখিয়াছেন "ঠাকুরচাঁদের মতন সভ্যবানী লোক আর সংসারে কখনও দেখি নাই।" তাঁহার

বধ্ব জীবন, তাঁহার ঐকান্তিক সভানিষ্ঠা, তাঁহার অকণ্ট সরলতা, তাঁহার আভাবিক সংবদ, তাঁহার প্রশাস্থ বাড্ডজি, তাঁহার অকলাম্বর্তিতা তাঁহার অক্ত অবর ধামে রক্ষসিংহাসন নির্দিষ্ট করিয়া রাবিয়াছে; তাঁহার অনাড্রর সমাজ-সংকার, তাঁহার অক্লান্ত আদর্শ সেবা, তাঁহার দেশাস্থরাপ, তাঁহার মনেমুবে স্বাধীন জীবিকা প্রীতি তাঁহাকে চিরকাল বিভার্থী সমাজের অসকরণীয় করিয়া রাখিবে; কলাবিৎ স্বরেম্রনাথের চিত্রগুলি তাঁহাকে [মর স্বপতে] অমর করিয়া রাখিবে" (প্রবাসী পৌব)। সত্য শিবস্থন্দর এই তিন সন্তিন আদর্শের মধ্যে স্বরেম্রনাথ স্করকে সত্য ও শিবের অক্তাবে উপাদনা করিতেন। তাই তাঁহার জীবন মধুর ছিল। তাই আত্ম তাঁহার প্রাহরে আমরা বলিতে পারি—

सपू वाजा अजाग्रत सपू क्रवे ति स्वः भाशीर्वः नत्स्वावशेः । सप् नक्ष्म्रत्जावताः सपू (ग्रावश्व वः निका सपू सान् त्वा वनम्निकः । सपू सानश्च म्र्या साक्षीर्गावा कवस्व वः । कुःसपू के सपू के सपू ! भरवक्षनाथ,

ভোষার জীবন বধ্মর ছিল। ভোষার আচার
ব্যবহার বাক্য কার্য্য সমস্তই ইছ জগতে মধু বর্বণ
করিত। তুমি আজ স্বর্গে চলিরা গিরাছ। সেখানে
বায়ু তব মধু হোক্
স্থ্য তব হোক্ মধুমান।
মধু তবু আমুক নদীরা। মধুক্ষরা হোক্ গাজী
ওবধিরা মধু হোক্
বিশ্বপাশ মধুপারাবার
আকাশ বর্গক মধু
সংগ্রে তার থাক লুকাইয়া।
বিশ্বপাশ বর্গক মধু
স্থা তির বাক লুকাইয়া।

खत्र निशि।

ললিভ—চিমা তেতালা। (বিলাভ বাত্রার সময় ১৮৬০ খৃষ্টাব্দে রচিভ)

কেমনে বিদায় লব থাকিতে জীবন শরীর যদিও যাবে, মন সদা হেথা রবে,

কোন্ প্রাণে চলে যাব বিজন গহন।	যার ধন তারি কাছে রবে অমুক্ষণ।
কেমনে ছাড়িব তারে, সদা প্রাণ চাহে যারে,	দিবস ফুরায় যত, 🔻 ছায়া থায় পুরে তত,
क्यान महित वन विष्कृत महने।	কভু না ছাড়য়ে তবু গা দ প বছ ন।
•	শ্ৰীসত্যেক্সনাথ ঠাকুর।
	11
॥ { সা ঋা মা-। মামা - া- গমা	। - गर्मा - भर्मा - भर्मा ना । भा - 1 - 1 - म्रभा I
त्क म त्न • विनादा • •	॰ ॰ न व • ॰ •
I मामा-मशामा। -। वना -। भा। -। -।	त्रभा - মাː - গমপা। °-মা - গা - ঋা - সা I }
থাকি • তে • জী • ব •	· · · · • •
I भानार्भा-।। t-tर्भार्था।र्मना-ना-	নালা। পা-া-া-লপাI মামগামাণলা।
কোন্প্ৰা • • • গেচ লে •	
। । - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -	
· • • • • • • •	•
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
। - मिशा - मा शा ना। मी - नमी - श्री	
• নেছাড়িব • •	
मि भी भी -र्मभी। -शी भी र्गभी -र्मा। -	नर्जा-ना-ना-भा I } I भाना मी-।।
প চাহে • • যা রে .• ·	• • • কে ম ে ন
। - 1 - 1 मी व्या। मना - ना ना । शा - 1 -	i-দপা I মা মাঃ -গঃ মা। শদা -i পা -i।
• • সহি ব • • ব ল • •	• विस्वरू • म म • इ •
। -† -দপা -মা -গমপ।। -মপমা -গা ঋা -	•
. { क्यां-ांक्यांक्या। -1 -1 -1 -छत्रक्या I जाक्य	_
ও । यादा ०००० म	
-1-शमा-गा -शा I (गा वा गवा-।।	-i-नाननाना)।} I-भा नानी-
थ भी ही हा ।	• विषि 'सो इस्थ

। -1--1 र्मा वर्ग। र्मना - ना ना ना। भा -1 - न भा । मा -1 - ना। मा - ना ना। **৽৽ন তা**রি•৽ •কাছে ৽৽ - র বে • ৹ । भा-तभा - मा-भगा। - गर्गा-शा मा I { भाभा भता-गा-† - १ भा ना। • • ণ দিব স • • ফুরায় । - र्मा - नर्मा - थार्मा । र्मा - १ - १ वर्षा । र्मा निमा - र्मा । र्मा भी । अर्था । য ত, • • ছা য়া য়া • 1-र्जार्जार्ज्या-र्गा। -नर्जा-ना-ना-ना I I ना नार्जा-। र्जार्थार्जना-ना। কভুনা৹ ছাড য়ে 1-ना ना शा-1 1 -t -t -t -न शा मा मा मा मा ना -t -t शा -न शा তবু • • • • পা म भ । मा - भर्मा - भा - मा । - मा - भा शा - मा ॥

बिहेन्सिता (मवी।

সাময়িক প্রদঙ্গ।

লাহোরের জাতীর মহাসমিতি।—এবারকার সমিতিকে জাতীয় বলা যে কতদুর সকত, তাহা হির করা কঠিন। কলিকাতার শেব সমিতি ও আৰু লাহোরের এ সমিভিতে কি প্রভেদ। সেবারের **ज्ननात এवात अ**िनिधिमःशा गृष्ठित्यग्र এवः লোকের উৎসাহ, উদাৰ ও সহামুভূতিও ৰাই বলি-লেই হয়। তাছার উপর কন্ভেন্সনের বিধি-খীকারে অসম্মত ব্যক্তিগণ এবারও এ সমিতি হইতে দ্রে। আর মুসলমানগণ ত শাসন সংস্কার বিধিতে হিন্দুর উপর প্রাধান্তলাভ করিয়া লয়োল্লাসে মন্ত। ভারতের জাতীর বাপার তাঁহাদের পক্ষে ক্ষতিকর विणयारे डांशामब अविकाशमब बाबगा। डांशाबा তাঁহাদের মস্লিয় লিগু লইয়াই ব্যস্ত। স্তরাং कनार्वाम यूमनयानशर्वत श्राक्तिविमारवाधि धूव व्यवहर উপস্থিত ছিলেন। ভাই বলিভেছিলাৰ সমিভিকে লাতীয়-শলা বে কতদূর সঞ্চত, ভাহা হির করা কটিন।

ৰুসলমান সংখ্যা অল বলিয়া ভামরা সমিভিকে দোব দিতে পারি না। মুসলমানগণের মধ্যে শিক্ষা ७ छान्ति वत्न मान्ध्रमदिक अक्षीर्यका यङ्गिन ना সাধারণের অন্তর হইতে দুর :হইতেছে, ততদিন চুই চারিজন উদারচেতা তেজাখী পুরুষ ভিন্ন আর কেছ সমিতির সহিত যোগ দেওয়া সম্ভব নয়। কিন্তু হিন্দু-দের মধ্যেও আল এ চুর্বলতা কেন? আল এ শোচনীয় দলাদলি কেন ? ইহাতে যে স্মিতির উদ্দেশ্যের বুলেই কুঠারাখাত করা হইতেছে তাহা কি ইহারা ব্ঝিতেছেন নাঃ একতা ভিন জাতীয়তা मैज़िहरत दकाथा ? शिक्सुनिरशत मरपार अने हरे मरनत एष्टि इरेब्रा हिन्सूमञ्जूषांद्रक विविद्य ७ वनशेन करत, ত' ভারতের এত বিভিন্ন সম্প্রদার ও বার্থ লইরা এক করিবার যোগ্যতা আমাদের কোবা? এলাহা-वाम कन्रजनमानत नियमावनीर हिन्मूमत मार्था और क्रनाखरमञ्जू कात्रव। अन्तरम व्यापता अकी क्या বিশিষ্টে চাই। যাহা দেশের ও জাতির কর্ম ভাহা ভোষার বা আমার ইচ্ছামুদারে চালাইলেই ছইবে না, ভাহা দেশের ও জাতির অসুমোদিত হওয়া আবশুক। এলাহাবাদ কন্ভেন্দৰ আপন ইচ্ছামত বিধি লিপিবছ করিয়া জাতীয় কর্মকে পণ্ড করিবার উদ্যোগ করিয়াছেন। কন্ভেন্দনের নেতাগণের সহিত বাঁহাদের মভের বিরোধ, ভাহায়া বে সকলেই দেশের অকল্যাণ ব্রতে ব্রতা ভাহা আমরা মনে করি না। তবে সকলকে এক করিয়া সমবেত জাতির সম্মুধে কন্ভেন্দনের বিধিশুনি অসুমোদিত করিয়া লওয় ছইল না কেন ? দেশের এই ছ্রিনে আমাদের মধ্যে এ ছ্র্বেলভা ভারতবাদীর ছুর্ভাগ্য ভিন্ন আর কিছুই নহে।

অত্যর্থনা সমিতির সভাপতি লালা হরকিবণ্ লালের বজুতার একটি হল আমরা উভ্ত করিলাম। ভারতের ইংরাজপণ এ সভাটী মনে রাবিয়া চলিলে দেশের অনেক অমজল এভদিনে দূর হইত। তিনি বলিরাছেন—

ৰুসলমান লিগ্কে কুপাদান করিলেই হিন্দু সম্প্রদার একত্রিত হইয়া কুপা ভিক্ষা করিতে থাকিবে; অভিজাত-দেল্লীদিগের পিঠে হাত চাপাড়াইতে আরম্ভ क्तिलाहे, (मान अञ्चाहत्त्वत्र द्वा अवन हहेश उद्घेद ; अभिनात्रभग अमञ्जूष्टे इट्टेग्ना डिटिल्टे वायमानाद्रभग चमख्डे इहेटा डेठिटन अवर भनम (फेट मजन। महाश्वन নগণোর ঘারা পূর্ণ করিলেই, াইরের রান্সনৈতিক बाल्बानन विद्विष्ठ इत्रा व्यवश्रकारी। मकरनहे रान খবৰ রাখেন যে এ সংগারে ঘাত ৯ ভিযাত সূর্বাদাই जूना वननानी ও विभन्नीजगाभी। देश कड़ सगर्ड বেষৰ সভা, রাজনৈতিক অগতেও ভক্রপ। আমা-एक देश मत्न दांचा आवश्वक एव, एव एक्टम मापन कर्ड्य विष्णा, त एए मक्न म्याय भागक छ শাসিতৈর বার্থ একই প্রকারের হওয়া অসঞ্জব। স্তরাং এরণ •ছলে যাতপ্রতিবাতের নীতিটা আরও প্রবল হইরাই গাঁড়ায় । সাপ্রালায়িক চেষ্টার বিভিন্ন প্ৰিয় সময়েও এই নীভিয় প্ৰভাবই আময়া দেবিতে পাই। কোনও সক্ষদায় যে ইয়ার আঘাত হইতে क्षम् गारेरवन, छाहाब छेनात्र हारे।"

चाना कति रिष्णु यूननयान छेक्टरारे व क्रवाहि স্থ্য রাধিবেন। মহাদ্মিতির সভাপতি পণ্ডিত মদনমোহন মালব্য তাঁহার বঙ্গুভার প্রারক্তেই উহাের ত্ৰুটির জম্ম ক্ষমা ভিক্ষা করিয়াছেন। তিনি বস্তার পূর্বে কেবলমাত্র ছয়দিন সমগ্ন পাইয়াছিলেন। সে ক্য়দিনও আবার তিনি মফবলে ওকালভিতে ব্যস্ত ছিলেন এবং তাঁহার শরীরও অমৃত্ ছিল। কিন্ত তাঁহার বজুতার কতক্ষ্ঠীল অধাৰ্জনীয়। কলিকাতা-কংগ্ৰেস আমাদের রাজ-নৈতিক আন্দোলনকে যে নবছীবন দান করিয়াছিল তাহার কোন লকণইই ওাঁহার দীর্ঘ বক্তৃতার নাই। দেই পুরাতন 'ভিক্ষা দেও গো বলবাদী'র হব। তন্তির বর্তমান মুগের কতকওলি প্রধান বিষরেয়ও কোন উत्तब है जामना दिवाग्य मा। दक्षाक्ष, जामनी श्री গ্ৰহণ, ৰাতীয় শিক্ষা, ট্ৰান্সভালে ভারতবাসীর প্রতি নিৰ্য্যাতন ইত্যাদি বিৰয়ে তিনি একেবাৱেই মৌন। মলি সাহেবের শাসন সংস্কার বিধির খুব ভীত্র সমালোচনা করিয়াছেন বটে, কিন্তু ভাহার মধ্যে উদেধবোগ্য বিশেষ কিছুই নাই। সে সমালোচনা সংবাদপত পাঠক মাত্রেরই নিকট পরিচিত। আরু সব দেই চৰ্কিত চৰ্কাণ।

দাক্ষণ আফ্রিকার ভারতবাসা ৷—দক্ষিণ व्याक्रिकात रेश्त्राम डेलनिर्दर्ग छात्र व्याप्तीत्व छेलत অত্যাচার, অবিচার ও পী ;নের কথা আমরা বছদিন হইতেই গুনিয়া আদিতেছিলাম। ব্রিটিশ সামাল্য মধ্যে ভারতবাদী ব্রিটিশ প্রজা হইয়াও যেরূপ নিপ্তীড়িত হইতেছে, ভাহা আমাদের কলনা করাও শ্চীৰ। সম্প্ৰতি ভথাকাৰ ভাৰতবাদীগৰ তাহাদের এই লাখনা ও নিখ্যাতনের কাহিনী ত্রিশকোটি ভারত वानीत्क सानाहेवात सञ्च अ(स्व नात दश्न्ति । शानक (H. S. L. Pollock) সাহেবকে তাহাদের প্রতিনিধি-সরণ করিয়া প্রেরণ করিয়াছেন। ভারতবাদীর প্রতি है बाद मस्टबंगमा जमायावन ७ जागामद इश्व माहत्वत 💂 वक देनि द्यक्रण वार्वजान । वात्यावनर्ग कतिहरू हन, তाहा गाउं कतिरम विशिक्ष ७ मूच स्टेंए स्म। ক্লিকাভার আসিহা ইনি আফ্রিকা প্রবাসী ভারত-

বাসীর শুভি আমাণের দেশের নরনারী সকলে:ই
সহামুভ্তি জাগ্রত করিয়া তুলিয়াছেন। আমাণের
নেতৃত্বল এই সকল প্রবাসীকে যথাসাথ্য সাহায্য
করিবার জন্ম একটি সমিতি গঠন করিয়াছেন।
দেশের শিক্ষিতা মহিলাগণও তাঁহাদের প্রবাসের
অসহায়া ভগিনীগণকে সাহায্য করিবার জন্ম একটি
সমিতি গঠন করিয়াছেন।

তথায় কঁঠুপক্ষের অত্যাচারের প্রকৃতি যে কি ভয়ন্তর তাহা নিমলিপিত ঘটনা হইতে সকলে উপলব্ধি করিবেন। ভারতকে তাহাদের ছু:খ জানাইবার জন্ম তাহারা পোলক সাহেব, এবং একজন মুসলমান, একজন হিন্দু ও একজন পার্সীকে প্রতিনিধিষরপ মনোনীত করিয়াছিল। তাহাদের নাম একাশিত _ হইবামাত্র কর্ত্বক পোলক ুসাহেব ভিন্ন অপর তিনজন ভারতবাসীকে একটা ছুঙা করিয়া গ্রেপ্তার করিলেন ও পরে কারাকৃদ্ধ করিলেন। এই প্রকার লাঞ্নার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ কথিতে গিয়া ভিন সহস্র ভারতবাসী সম্রম কারাদত্তে দণ্ডিত হইয়াছে। পীড়নের তাড়নে তিন বৎদরের মধ্যে ট্রান্সভালে ভারতবাদীর সংখ্যা ত্রাদশ সহস্র হইতে আজ হয় সহস্রে দাঁড়ো-ইয়াছে। হহা অপেক্ষা শোচনীয় ব্যাপার আবা কি হইতে পারে। আমাদের সুখের ও গৌরবের বিষয় এই যে, এইরূপ অভাচার ও যথেচ্ছ শক্তির বিরুদ্ধে व्याजिवारित सम् प्रदेश, अथीन, अभशा छ। त्रज्यामी. कि हिन्तू, कि सूत्रलभान, कि निश्च, कि शानी, जकलह সমবেত হইয়া অদম্য উদ্যুদ্ধে, অসাধারণ দৃঢ়তার সাহত, দৰ্বৰ ত্যাগ ক্রিয়া এক প্রাণে এই অসাধ্য সাধ্নে প্ৰবৃত্ত হইয়াছেন।

ভারতের সম্মান রক্ষার অস্ত, ভারতবাসীর অধিকার ৩ মথ্যাত রক্ষার জন্ত তিন সংস্র ভারতবাসী যে ছক্ষায় সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইরাছেন, অনাথা মহিলাগণ পর্যন্ত অসহায় শিশুসন্তানকে লইয়া নিরাশ্রমে, অনশনে যে ছংখ ভোগ করিভেছেন, আমরা ত্রিশকোটি ভারতবাসী কি কেবল নারবে চাহিলা চাহিয়া উল্লেক্ষ এই আন্তর্কা ও অপস্ত্যু দেখিতে, প্লাকিব! ভালাকের প্রতি এ অভ্যাচারের প্রতিধিধানে আমরা অক্ষম সত্য, কিন্তু

ক্রিশকোটি নরনারীর আন্তরিক সহামূত্তি এবং
নৈতিক সহায়তা পাইলে এ প্রগতে কোন্ অবিশ্বনার না উচ্ছেদ করা সম্ভব, এ পৃথিবীর কোন্
গর্বিত শক্তিকে ধর্বে করা অসন্তব! তথাকার
মৃষ্টিমের ভারতবাসী নরনারী যে নৈতিক সংগ্রাম ও
আন্তর্তাগের মহৎ দৃষ্টান্ত দেখাইয়াছেন, তাহা আন্তর্শক্তিদর
শক্তিদর্পে উপেক্ষিত হইলেও, জগতের ভাবী
ইতিহাসে অমর অক্ষরে লিখিত থাকিবে। বাহ্শক্তির
গরিণামন্তর অবশ্রতাবী। "যতো ধর্মান্তবে লয়ঃ!"

ট্রান্সভালের ভারতবাদী সম্বন্ধে শ্রন্ধের পোলক সাহের কংগ্রেদে যে বক্ততা করিয়াছেল, ভাষার সারাংশ আমরা প্রকাশ করিলাম।

আফ্রিকার খেত ঔপনিবেশিকের ভারতবাদীর শ্রতি মনোভাবটি কি তাহা বুঝাইবার জন্ম তিনি একটি দৃষ্টান্তের উল্লেখ করেন। একটি স্ত্রীলোক অরেঞ্জ উপনিবেশে বাদ করিত। পরে বিবাহ করিবার জক্ত সে পাৰ্থবৰ্তী নেটাল প্ৰদেশে গমন করে। অবশেষে যথন সে জন্মভূমিতে প্রবেশ করিতে আসিল, তখন কর্তৃপক্ষ তাহাকে নিষেধ করিলেন। কর্ত্তপক্ষ বলিলেন যে, ভাহাকে প্রবেশ করিতে দেওয়া দঙ্গত নয়, কারণ পরে ভাহার কতকগুলি কল্পা হওয়া সম্ভব এবং সেই সকল কন্যার আবার কভকগুলি ক্রিয়া সন্তান হওয়া সন্তব, এই প্রকারে দেশে অনেক গুলি কুঞ্চাঙ্গের বৃদ্ধি হইবে। এইরূপ অন্তায়ের বিরুদ্ধে ভারতবাসীগণ নিজের সন্মান, ধর্ম ও অধিকার রক্ষার জন্ম প্রাণপণে সংগ্রাম করিতেছে। ফলে ভিন সহস্র ব্যক্তির কারাবাদ হইয়াছে। ভাহার ফলে শত শত পরিবার আজ পথের ভিথারী ইইয়াছে, নাগাপান (Nagappan) नात्म अकृष्टि यूवा - १व अर्थास করিয়াছেন। আফ্রিকার ভারতবাদীর ইতিহাস অর্থে কেবল মিখ্যা আখাস, সর্বস্বাস্ত ও বিভিন্ন পরিবারের ভগ্ন হাদয় এবং ভগ্ন আশার এক দীর্ঘ ইতিহান। এই সংগ্রামের অন্ত, তথাকার ভারত-বাসীগণ অশিক্ষিত ও চুৰ্বলুল হইলেও, আপৰ জীপুত্ৰ,

वानिका डेनकीविका चारीमठा ७ जावक्रक बट्ड धान পর্বান্ত ভাগে করিতে বন্ধ পরিকর। তাঁহাদের এরপ चनदा द्य, थाएं द्य गृह इटेल निकाल इटेन, महााइ ৰে **আ**র গুড়ে ফিরিরা আসিবে কি না, পৰে ভাহারা কারাক্ত হইবে কি না, কারাবাদের পর তাহারা জীৰিত অৰম্বায় স্থা পুত্ৰের নিকট আসিয়া উপস্থিত হইবে কি না, বা বন্ধুহীন গৃহহীন ও অর্থহীন ভাবে উপনিবেশ হইতে তাড়িত হইবে কি না, ভাহার क्ट्रिके दिवला गाँह। आत अमिरक लाशास्त्र क्षी পুরুগণ অনশনে পথে পথে ঘৃরিতেছে। ট্রান্সভালে व्यत्क भूबच्ची পেটের দায়ে ভিকা করিয়াবা পথে পথে সামাঞ্চ কিছু জবা বিক্রন্ন করিয়া বেড়াইভেছেন। ভারতগবর্ষেণ্ট ভবিষাতে যাহাতে আর কুলি ধ্রেরণ না করেন এরপ ব্যবস্থা করিবার জন্ম তিনি ভারত-ৰাসীকে সচেষ্ট হইতে অমুৱোধ করেন। ত্রুখের পেষণে অনেক ভারতবাসী অনজীবী আত্মহত্যা বারা নিজুতি লাভ করে। নির্দিষ্ট সময়ের পর আমঞাবিগণ তথার বাস করিতে ইচ্ছা করিলে প্রত্যেক খোল বংসরের **পুরুষকে ও ১৩ বৎসরের স্ত্রীলোককে** বাৎসরিক ৫৫ টাকা ক্রিয়া কর দিতে হয়। ১০ বংসরের বালিকার शक्त स्कार्ट की वन बाबब कविशा वरमदब aa हाका করিয়া গ্রহেণ্টকে দেওয়া অসম্ভব। ইহার ফলে পুরুষণণ সংসার ত্যাগ করিয়া অক্তর পলায়ন করিতে ७ नाना अकर्ष कतिए वांश इब এवः चोलाकशन অনেকে সভাত পৰ্যন্ত বিক্রম কারতে বাব্য হয় বলিয়া श्रवस्य दिने विक्र विक्र के विक्र के विक्र किया विक्र के किया विक्र किया विक्र के किया किया विक्र के किया किया विक्र के किया विक्र के किया विक्र के किया विक्र के किया विक আবেদন করা হইরাছিল। কিন্তু ভাহাতে কোনো क्लानबरे रह नारे। धरे नक्ल रुज्जाता नाराया कतियात वक धरा व्यनाव शतियातकनित्क कत्रमान করিবার অস্ত ভালতবাদীর অর্থ বারা ব্যাসাধ্য সাহান্য করা কর্তব্য।

ৰজ্তা ছলে প্ৰীমতী নুৱলা দেবী তৎকণাৎ ওঁহোৱ হৈতের ৰালা খুলিয়া প্ৰদান করেন এবং ৫০ টাকা ক্ষমিহাৰা করিতে প্রতিশ্রুত হন। আরও চারিজন মহিলা চারিট অসুরীয়ক প্রদান করিয়াছেন। দেখানে ১০১২ হোলার টাকা টালা উটবাছে। জাশা করি ভারতবর্ধের অভাত বিভাগের ধনী ছরিক্সকলেই এখাসা এই পুণ্যকর্মে সাহায্য কেরিতে ক্রিড ছইবেন ন। এইরূপ বিপদে ভারতবাসী ভারতবাসীকে সাহায় না করিলে সে কলক অনস্তকালেও মুহিবার নহে।

কাহোরে মহিলা সন্মিলন।—গভ ৩০লে ডিসেম্বর লাহোরে একটি মহিলা সন্মিলন হইয়াছিল। আল কয় বংসর হইতেই কংগ্রেমের পর এইরপ মহিলা সন্মিলন হৈতেছে। দেশের ত্রবস্থায় ক্র হইরা বছদিন পূর্বে বলের মগীয় কবি হেলচন্দ্র

"না জাগিলে সৰ ভাৱত ললৰা, এ ভাৱত আৰু জাগেনা জাগেনা।"

কবির সে কাতরবাণী আজ সকল হইরাছে।
নববুণের নব জাগরণেদ সঙ্গে হিমালর হইতে কুমারিকা
পথিত সকল প্রদেশ, সকল সমাজেরই মহিলাগণ আজ
লাগ্রত হইরা উঠিরাছেন। ভারতের পুনরুখানের
ইংাই পুসবলক্ষ্যা

এবার লাংহারের সন্দিতানে পঞ্চাবের পদস্থা ও
শিক্ষিতা সকল মহিলাই সমবেত হইরাছিলেন।
প্রায় চারি শত মহিলা এই সন্মিলনে স্থাগদান
করিরাহিলেন। আক্ষেপের বিষয় মুসলমান মহিলাগণ
কেহই যোগদান করেন নাই। লাউপত্বী কোডি ডেন্
পর্যায় এই সন্মিলনে উপস্থিত থাকিয়া ওাহার
সহাস্কৃতি প্রকাশ করিতে কুঠিত হন নাই।
প্রতাপগড়ের মহারাণী সভাপতির আসবে আসানা
ছিলেন। ইমানতী সরলা দেবী ট্রাজভালের ভারতমহিলাগণের প্রতি আন্তরিক সহাস্কৃতি প্রকাশ
করিবার লক্ষ্য একটি প্রতাবের স্কুচনা করেন। ওাহার
বক্ত গাচি এত শিক্ষাপ্রদ ও সম্রোপ্রোগী ইইয়াছে,
যে আম্বান তাহার সারাংশ উদ্ধৃত করিয়া দিবার
লোভ সম্বরণ করিতে পারিলাম না।

নারীগণই ন্যান্ডের, সংসারের, কাতির ও অগতের কল্যাণ সাধনে সক্ষয়। আমাদিগের শান্ত্ নারীকে 'অবলা' না বলিয়া শক্তি নারেই অভিহিত করিয়াছেন। পুরুষ চালক শক্তি কিন্তু নারীই ভাষার শক্তিকে আত্রত করিয়া কুলেন। তিন্তিই গৃহের

मन्त्री वा वशीवती दनरी। छिनिहे गुंद्दत भातीतिक ও বৈতিক কলাও-বিধানিত্র। সমাজের মধ্যে নারী-आक्रिके সর্বপ্রধান। স্বামী হয় ত একজন বিখ্যাত বাগ্মী বা সমাজ সংস্থারের পক্ষপাতী, হয় ত তিনি বস্তামকে দ:ড়াইয়া ওলবিনী ভাগায় ত্রীশিক্ষা ও विश्वा-विवाह ममर्थन कतिया चारमन এवः वालाविवाह প্রথাকে ধিকার দিয়া থাকেন, কিন্ত মুগ্ধ শ্রোতৃবৃন্দের প্রশংসাধ্বনি লাভ করিয়া বাডী ফিরিবামাত্র তাঁহার দশ বংসরের বালিকা কন্তাটিকে অবিবাহিত রাধার অণরাধে পত্নীকর্ত্ক তিনি তিরক্ষত ও ধিকৃত হইতে থাকেন। একশতের মধ্যে নিরেনকাই স্থলেই অগতা। তিনি পরাজয় স্বীকার করিতে বাধা হন। তথাপি नाबीटक वर्ल 'खवला'। नाबीटे সমাজদংস্কারকে প্রতিপদে বিপর্যান্ত করে। প্রকৃত পক্ষে নারীই সমাজের স্ট, ছিতি ও প্রলয়ের কর্ত্রী। নারীই মানব-জাতির অননী, সুতরাং নারাই মানবজাতির শিক্ষয়িত্রী, নারীর হল্তে সভ্যের আলোক দিতে পারিলে সে তাহার সঞ্জীনগণকে ষ্থার্থ উন্নতির পথে চালিত করিতে পারে। কিন্তু তাহার হতে দে জ্ঞানবর্ত্তিকা না থাকিলে তাহার পুত্রকন্যাগণের জীবন-পথ অন্ধকারাক্তর হইয়া পডে। সাধারণ মানবসমাজে নারীর প্রভাব অনস্ত।

তাঁহার বজ্তার উপসংহারে তিনি 'ভারত স্ত্রীমহামওল' ন মে একটি ভারতীয় মহিলাসমিতি গঠন
করিবার প্রস্তাব করেন। একস্থানে একটি প্রধান
সমিতি থাকিবে ও ভারতের চতুদ্দিকে তাহার শাধাসমিতি প্রতিটিত করিতে হইবে। মণ্ডলের প্রধান
উদ্দেশ্য হইবে নারীগণের মঙ্গল ও উন্নতিকলে
ভাহাদের মধ্যে নানা বিষয়ক শিক্ষা বিস্তাব।

আমর বিধাতার নিকট প্রার্থনা করি শীমতী সরলা দেবীর এ প্রস্তাব থেন অচিরে দেশের মধ্যে একটি জীবস্তঃ শক্তিতে পরিণ্ড হয়।

শ্ৰীম:

শিংরারতি সমিতির বৈঠক। — মহাসমিতির অধিবেশনের অবাবহিত পরেই বারবঙ্গেখরের অধি-পজিডে-শিক্স সমিভিয় 'বৈঠক বদিয়াছিল। লালা ইর্কিখণ অভ্যর্থনা বিভাগের কর্তা ছিলেন। ঘারবদেশর তাহার বস্তৃতার যে সকল বিষয়ের সমাবেশ করিয়াছেন তমধ্যে অনেকগুলি সমীচীন মন্তব্য আছে! মহারাজা সভাই বলিয়াছেন যে একদিনে হোমনগরী নির্মিত হয় নাই এবং আমরা যদি আমাদের পূর্ব্ব গৌরব লাভ করিতে চাই তবে 'রাভারাতি বড়লোক' না হইয়া ধীর পদবিক্ষেপে কার্য্যক্ষেত্রে অগ্রসর হইতে হইবে। "First thing first" প্রথম আমাদের কৃষির উন্নতি করিতে হইবে,—আমাদের দেশের অধিকাংশ লোকই কৃষিনির্ভর। ছংখের বিষয় আবহমানকাল হইতে কৃষকেরা তাহাদের চিরন্তন সাদাসিদে উপার অবলখন করিয়া রহিয়াছে। বিজ্ঞান তাহারা লানেনা;
—যাহাতে বৈজ্ঞানিক উপার শিক্ষার তাহাবের কিছু ব্যবহা হয় তাহার চেটা একান্ত কর্ত্ব্য।

মহারাজ তৎপর, তন্ত্রনির্মিত শিল্পের কথাপ্রসঙ্গে বিলয়াছেন যে ১৮৮০ সনে মাত্র ৪৮০০ উতি ছিল। ২৮ বৎসরে কি প্রকার উন্নতি হইয়াছে তাহা নিয়লিখিত তালিকার দেখাইয়াছেন। ১৮৯০ সনে ১৯৬৪, ১৯০১ সনে ১৫০৩৬, ১৯০৫ সনে ২১৩১৮ এবং ১৯০৮ সনে ৩০৮২৪টা শুলি তাঁত বৃদ্ধি হইয়াছে। শিল্পপ্রশানারা আমাদের কি উপকার হয়, চিনির করেবানা হওয়া কতদ্র বাঞ্জনীয়, যৌশ ও সমবার শক্তিতে দেশের শক্তি কিরপে নিয়োজিত হওয়া উচিত ইত্যাদি বিষয় উল্লেখ করিয়া মহারাজা বলিতেছেন, প্রকৃষ্ট উপায়ে দেশের ধনবৃদ্ধি করাই "অদেশীর" উদ্দেশ্য।' মহারাজের এ উক্তি অর্ণাক্ষরে লিখিয়া রাখিবার যোগ্য।

পরিশেষে মাননীয় সভাপতি মহাশর ইংরাজ গবর্ণনেটের স্থাননের জক্ত যে দেশে শান্ত রহিরাছে, এবং ঐ স্থাননের জক্ত যে কৃষি ও শিক্স উন্নতি শীর্ষে আরোহণ করিয়াছে এইরূপ, এলিয়াছেন। "We want India to be country of happy home and of a loyal contented people." আমরাও সকলকেই রাজভঙ্ক হইতে উপদেশ দিই, ইংরাজ বিহেষ আমরা মোটেই ভাল বনে করি না। ভবে আইনসক্ত উল্লামে এবং ক্ষরা সক্ত

আবোদনে বভদিব নিজনু অধিকার না পাইব ভভদিব বোধ হর আমঙা সভ্ত হইতে পারিব না। ক্সাব্য সাবী করিতে বোধ হয় গভর্গনেণ্টও আমাদের নিবেধ করেন মা—দিন আর নাই দিন।

শিল্প স্মিতি সভার স্থাগ্য সেক্রেটারী রাওবাহাছ্র
মাধালকর কর্তৃক অসুক্তন্ধ হইয়া ভারতবর্ধের
আনেক সহর হইতে আনেকে প্রবন্ধ পাঠ করেন।
প্রবন্ধগুলি বিশেষজ্ঞদারাই সাধারণতঃ লিখিত স্থতরাং
ইহালের মূল্যও অধিক। তেরাখ্যে নিম্নলিখিতগুলি
বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য।

- · ১। কলিকাভার পাটন সাহেবের 'সহযোগিতা'।
- ২। মাজাজের সার নিকলদনের—'মৎস্থা ধরিবার ঝ্রদায়'।
- ॰ লিকাতার লা টুদ সাহেবের 'ভারতবর্ষের
 শবিধ বিদার ভৃত ও ভবিষাৎ।
- ৪। পুনার খেল মহাশয়ের 'ভারতবর্ধের বর্তমান

 ভার্থিক অবস্থা।
- শাজালের হাডাওয়ে সাহেবের "ভারতবর্বয় চিত্রবিদ্যালয়ে শিক্ষা"।
- । ক্রেলিকাভার মি: দাসের "বলে মৎস্ত-ব্যবসায়।"
- ণ। কেনি সাহেবের "প্রকৃত] নেশহিতৈবিতা ও মনেশী"।
- ৮। অমরাবভীর সাম্ভ নংশিয়ের "ভারতবর্ষে নর্মাল সুস ম্বাপনের সাবস্থাকতা।
- ১। পুনা কলেকের জীয়ুক কাগলাধ রায় মহাপ্যের "উদ্যানরক্ষণ"।
- ১০। পুনার এলেন সাহেবের "বৈজ্ঞানিক এবং শিক্স শিক্ষা"।
 - >)। वाकारनारवड रह नारहरवड "लिखांडि"।
- २६। शक्काकोबार"३ (थारक्मद्र ममान्नारद्रद्र "राम् महाकारे"।
- * ১০। ওক্নর সাহেবের "ভারতীয় শিলোরতি"।
- ১৪। দেরাগ্নের ট্যা সাহেবের "দেশালাই নির্দ্ধাণ উপুযোগী ভারতীয় কার্চ"।
 - > । নাগপুরের সাকর জ্বালার "ভঙ্গিরু"।

১৬। কানপুরের সেয়পিয়ার সাহেবের [♠]চিনির ব্যবসার"।

বারান্তরে এতক্মধ্যের করেকটি প্রবন্ধ স্থত্তে বিশ্ব আলোচনার ইচ্ছা রছিল।

ভারতেব নীচঞাতি। মাঞাল হইতে প্ৰকাশিত Indian Review শামক সুপ্রতিষ্ঠিত মাদিকপত্তে বরোদার মহারাক্স গুইক্লোয়ার "The Depressed classes" ব লবা একটা সারগর্ভ প্ৰবন্ধ নিধিয়াছেন। এই প্ৰবন্ধের সকল সত্ত সংরক্ষিত স্তরাং আমরা ইহার সমস্ত উদ্ধৃত করিতে পারিলাম কৌতুহল নিবারণার্থে **পाठे** क्रि विषदम्ब উল्लंख क्रिटिक्। अथ्य আমাদের দেশের অনাচরণীর ও অস্পু আ আতির সংখ্যা ছরকোটা। আমাদের বেশের মোট লোকসংখ্যা ত্রিশকোটি স্করাং এক পঞ্চমাংশ দিয়া আমাদের কোন কাঞ্চ হয় না. ফাহিয়ানের ভারত ভ্রমণ পাঠ করিলে জানা যায় যে, অস্পুচ্চ জাতিগণ সহর এবেশের পূর্বে কাঠে কাঠে আবাত করিয়াঁ আগমনবার্ত্ত। জ্ঞাপন করিত। দাক্ষিণাত্ত্যে এখনও এই-क्षण ध्यथा वर्डमान व्याष्ट्र। अक्ट क्षेत्रदेव श्रेटकोव মধ্চ তাংগ্ৰিগকে স্পাৰকরা দুরে থাকুক, ভাহারা अभारतम निकटि यानिटिं नात्रिय ना देश कि ভীষণ অবিচার ৷ অংমরা তবে কোন যুক্তিতে রাজনীতি ক্ষেত্রে শাসনকর্তাদের সংক্ এক मैड़िक्ट हारे।

মহারাজ বাহাত্তর ভগবলগাতা হইতে "গুণকর্ম বিভাগণ" উদ্ভ করিয়া চ'লে আঙ্গুল দিয়া দেখাইয়াছেন যে বৈদিককালে এরপ কোন নিয়ম ছিল
না তিনি শুঙ্ই বলিয়াছেন যে আমনা বাহিক
ভিল তুলনা গলাম্ভিকা আর্ভ হইয়া অস্তরে কত না
মলিনতা লইয়া বাস করিতেছি। শোনের দৃষ্টাত্ত
দেখাইয়া বলিয়াছেন যে পুরোহিত শ্রেণীর অসামাত্ত
প্রাধান্ত বীকার করিয়া পড়িয়া থাকিকে চলিবে নাও
যদি আমরা আমানের এই ছয়কোটা আভাই মায়া
পরিত্যাপ করিয়া কেবলবাত্ত নিজ আর্পি ক্প
বত্তকর স্তার আবহু থাকি ভারা হইতে ক্পানের

- 'ত্রজিক সম্বন্ধে। রয়াল ট্টাটিনটিকাল সোদাইটার পত্রিকায় ষধ্যপ্রদেশের আাকাউণ্টেণ্ট জেনারেল
 মি: এটকিনসন সাহেব ভারতবর্ষে দিন দিন সকল
 জবোর মূল্য চড়িতেছে কেন ইহার সম্বন্ধে একটা
 প্রবন্ধ লিপ্তিয়াছেন। এটকিনসর সাহেবের মতে
 নিম্নলিখিত কারণে মূল্য দিন দিন চড়িয়া যাইতেছে:—
 - (১) বৃষ্টির আধিক্য বা অক্সতা।
 - (২) চলিত মুদ্রার আধিক্যবা অরভা।
- (৩) খাদ্যক্তব্যের রপ্তানি এবং তৎসহ সরবরাহ (sapply) অপেকা গ্রাছকসংখ্যার আধিকা।
- (৪) বেতলের হার বৃদ্ধি এবং তৎসহ খাদ্যক্রব্য উৎপাদনের ব্যয়বৃদ্ধি।
 - (e) व्यनावश्चक खवानित्र व्यामनानी । (Import)
 - (७) मिट्न मूनशःनत्र व्याधिका।
- ্ (৭) ব্যবসাধীদের কৃত্রিম উপায়ে খান্য আব্যের দর বৃদ্ধি করন।

এটাকজন সাহেব এই সমন্ত বিষয় বিশেষক্লপ প্র্যা-লোচনী করিয়া নিম্নলিখিত সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেব।

- (>) বিভিন্ন সময়ে মূল্যাদির ভারতমা হইয়াছে।
- (१) অনাবৃষ্টির জন্ম মূল্যবৃদ্ধি অনেক সময় হই-য়াছে এবং দুত্থাপাতা উত্তীর্ণ হইয়। গেলেও মূল্যাবিক্য কমে নাই।
- (০) **ছত্থাণ্যতার শেব সমরে অনেক** খলে অবভিন পরিলক্তিত হইয়াছে।
- (৪) যাহাদের ব্যবসারে একচেটীরা আছে ভাহারা এই সময় নিজেদের আরও স্বিধা করিয়া লইয়াছে এবং জাব্যাদির দর আরও অধিক করিয়াছে।
- (৫ **) অনেক সময় অ**নাবশ্যক মুদ্রা প্রস্তুত কর। **হ**ইয়াছে।
- () বেতনের হার সৃদ্ধির সহিত মূল্য বৃদ্ধির কোন সম্পর্কই নাই।

ইংরাজের বিজ্ঞাপ। আমাদের দেশে যে কাগজের কল নাই এমন কি থাটা খদেশী কাগজেও যে খদেশী কাগজে মুজিত হর না Advocate of India এইরপ বিজ্ঞাপ করিরানিছে। আমরা এ বিজ্ঞাপ নত মন্তকে সহ্ করিতেছি কেন না এ কথা সম্পূর্ণ সভা। আমাদের দেশে ভ ধনকুবেবের অভাব নাই। গত ১৯০৭ সালে গবর্ণমেন্ট কাগজাদিতে আমরা ৬১২৫৮১৪৭৩ টাকা ব্যাক্ষে মন্তুত করিরাছি। ইহার কিছু অংশ দিয়া কি আমাদের ক্বেরগণ একটা কাগজের কল করিতে পারেন না!

শাসননীতি সংস্কার !— বলি মিটো আমাদের

যে "দিলার লাডড়" খাওয়াইয়াছেন, সে সম্বাক্ত ভারতীয়
শিক্ষিত ব্যক্তিদিগের মত 'ভারতীর' অনেক পাঠক
পাঠিকাই অবগত আছেন! সম্প্রতি ইংরাজ পরিচালিত কলিকাতা হইতে প্রকাশিত দৈনিক সংবাদপ্রত্ব

'এম্পায়ার' যে মন্তব্য ক্রিয়াছেন ভাষা গ্রপ্নেটের
পক্ষে ভাল না লাগিলেও ভাষাতে যে কেবল মাত্র সত্য
ক্থাই বলা হইয়াছে ইয়া অনেক বিরুদ্ধবাদীও বীকার
ক্রিবেন। এম্পায়ার লিাব্যাছেন—

"Moslems to right of them, Moslems to left of them, Moslems behind them, Volleyed and thundered."

অর্থাৎ নৃত্য মতে কাউলিলের সদস্য নির্বাহন ব্যাপার শেষ হইলে গ্রব্যেট দেখিবেন, যে দক্ষিণে বামে, পশ্চাতে মুসলমান বাতীত অন্ত কেছই নাই। 'এম্পায়ার' সভাই লিখিয়াছেন ে মুসলমান আবিকা যে এত হইবে ভাহা গ্রহ্ণিমেট নিজেও ভাবেন নাই। সংমরা আমাদের মুসলমান আভূদিগের উপর কটাক্ষণাত করিয়া এম্পায়ারের এ মন্তায় উল্কৃত করিতেছিলা, হিন্দু এবং মুসলমান এক মায়ের সন্তান উভয়েই তুল্যাধিকার পাউন এই আমাদের প্রার্থনা। ভেদমন্ত্র প্রায়েগে গ্রহ্ণিমেটের কায্যাস্থির ।কছুই সন্তাবনা বেখা বায় না।

প্রকৃত পক্ষে, এবাবং নির্বাচনে বাহা দেখা যাই-তেছে তাহাতে স্পাইই প্রতীব্রমান হইতেছে যে কয়েকটা "brilliant exception" ব্যতীত অঞ্চায় মনোনীত ব্যক্তিকে প্রথম শ্রেণীর ব্যক্তি বলা বায় না এবং গ্রথকৈ এই ব্যক্তিদিগের নিকট বে শাসন কার্য্যে বিশেষ, সাহায্য পাইবেশ ইহা ভরসা করা বায় না।

করোবিক কলের উপর বিরা ইকলে তারা চলেছে বাহি জরী।— মৃত্যু তীরে দাঁড়াল আসি পিতা, ক্রে হিয়া বাধার গেছে ভরি'। ক্রু তীর,—বাটকা-প্রবল বুকে বেশিল রামা আপন নেরেটারে, একটা কর মাগিছে অনুত্রহ,

"কিন্তে আৰু মা, ক্ৰাৰ," নে কৰে জাকি,
"বানীৰে তোৰ কৰিক আমি ক্ৰমা,
বালা মুখন নাগৰ হিলা ভাজি,
আননে কলা—আননে প্ৰিৰতনা।"
বুখান ডাকা,—বন্ধ বাওৱা আসা,
উক্ত উৰ্দ্ধি প্ৰহানি' বান তীৰে;—
কিন্তা দলিল প্ৰাদিল নাজবালা,
লোকের তবে রাখিনা নৃপতিরে।

औरस्ट्यक्षनान द्राव ।

চিত্ৰ-ব্যাখ্যা।

আরব্যেপয়াস ক্থন।— ঐযুক গমরেলনাথ ৩৪ কর্ত্ক অহিত চিত্রের প্রতিদিশি।

বাঁহারা আর্বোপঞ্চাস পাঠ করিরাছেন তাহারাই জানেন,-- পারস্ত-সুবভান শাহরিয়া নিজ পদ্মীর বিশাস্থাতকতার উন্মন্ত হইয়া नंबल जोबाठित উপর বিভূক হইরা উঠেন। ভবন তিনি যাজামধ্যে এই নিষম প্রচার क्तितन य श्रिकिन मुद्दााकारन अक अकि इसके विवाह कविया शबकिन बाळकारन छारांत्र त्यान मश्हान कन्नियम । अहेन्द्रान थालिन बोहला हहेर्ट नानिन-बाबायत হাহাকার উঠিল ৷ এই হাহাকার দুর করিবার বস্ত প্রশাসনের প্রধান মন্ত্রীর ব্যেষ্ঠ করা ्नार्शक्यांच नक्तनविकत्र स्टेरनन् । जिनि चन्नर क्षणान्यक विवास क्षित्र हास्टिलन । विवा-হের বাতে তিনি অস্তানের নিকট এই व्यार्थमां साना रेशन त्यु छै। रात्र की रत्य लय বাবে ভিনি একবার কমিলা ভগিনীকে কমের त्माय त्यविशे गहेटवन। বুগভান ভারার बार्मीत्रथ পूर्व कतिर्शेष-विनात्रक्षांति कुन-

ভানের শর্নকক্ষে আসিয়া রাজি বাপন করিতে লাগিলেন। জোঠা ভগিনীর শিকাষত তিনি ভোর রাত্রে উঠিয়া বিদিকে সংখ্যাল করিয়া কহিলেন-দিদি। প্রতিদিন তোমার নিকট যেখন পর তনি আজও তেমনি একটি उनाहेरव ना ? श्वकारनत्र आका नहें। সাহারকাদি গল আরম্ভ করিলেন। শাহ্রিরা मौजरे ठिखरात्री शत्रमाधुर्ता चाक्के हरेता পড়িলেন। সাহারজাদি কৌশল করিয়া এক পরের শহিত আর এক গর যুক্ত করিতে (क्लिट्नम ना। লাগিলেন—শেষ কৰিয়া श्रद्धारक् म व जुलिश्रा (श्रर्णन। गरव अवनी कारिया धरेक्रां धकाषिक श्रात्म अनुकारमञ्ज अनुकित भविनक्षेत्र एहेग-জীজাতির উপর বিধেব চলিয়া পিয়া শ্রহা কিবিয়া আসিল।

ব্রীক্তা শাহারলাটি ক্রিটা ত্রিনী ° দিনারফারি ও ক্রগডাম শাহরিহাকে গ্র ব্লিডেফেন ইহাই এবারকার চিত্রের « বর্ণনীয় বিশ্বর চ

ক্লিকাতা, ২০ কবিবালিন মিট, কাভিক থেনে জীব্ৰিচন্দ্ৰ নামা ব্যায় ও ০০, কলু নাৰিব্ৰুত্ত বেতি বৃহত্তে জীবভীনচন্দ্ৰ বুৰোপান্যায় বামা জকাশিকা



Partouring our Province of the parton of the con-

ভারতী।

- ৩০শ বর্ষ]

ফাল্পন, ১৩১৬

১১শ সংখ্যা।

চিরনবীনতা

প্রভাত এসে প্রতিদিনই একটি রহস্তকে উদ্বাটিত করে দেয়—প্রতিদিনই সে একটি চিরন্তন কথা বলে অথচ প্রতিদিন মনে হয় দে কথাটি নৃতন। আমরা চিস্তা করতে করতে, কাল করতে করতে, লড়াই করতে করতে প্রতিদিনই মনে বর্ণর, বহুকালের এই জগংটা ক্লান্তিতে অবসর, ভাবনার ভারাক্রান্ত এবং ধূলায় মলিন হরে পড়েছে-এমন সময় প্রত্যুবে প্রভাত এসে পূর্ব আকাশের প্রান্তে দাঁড়িয়ে স্মিতহাস্তে যাত্রকরের মত জগঙের উপর থেকে অন্ধকারের ঢাকাটি আন্তে আন্তে थूल त्मय-तिथ नमछ हे नवीन, यन ऋजन-কর্মা এই মুহূর্তেই জগৎকে প্রথম সৃষ্টি করবেন। এই যে প্রথমকাবের এবং চির-কালের নবীনতা এ আর কিছুতেই শেষ হচ্চে না প্ৰভাত এই কথাই বল্চে।

আর এই যে দিনটি দেখা দিল এ কি
আরকের ? এ বে কোন্ যুগারন্তে জ্যোতিবাঁলোর স্থাবরণ ছিল্ল করে বাত্রা আরন্ত করেছিল স্কেকি কেউ গণনার আন্তে পারে ?
এই দিনের নিমেবহীন দৃষ্টির সাম্নে তরল
পৃথিবী কঠিন হলে উঠেছে, কঠিন পৃথিবীতে
জীবনের নাট্য আরন্ত হলেছে এবং সেই
নাট্যে অকের পর আরে কত মৃতন নৃতন
প্রাণী তাদের জীবনীলা আরন্ত করে স্থাধা
করে দিরেছে; এই দিন সাম্বের ইতিহাসের

কত বিশ্বত শতালীকে আলোক দান করেছে, এবং কোথাও বা সিন্ধুতীরে, •কোথাও মরুপ্রান্তরে, কোণাও অরণ্যচ্ছারায় কত বড় বড় সভাতার জন্ম এবং অভ্যানয় এবং বিনাশ দেখে এসেছে,—এ সেই অতি পুরাতন দিন বে এই পৃথিবীর প্রথম জন্মমূহুর্ত্তেই ভাকে নিজের ভল্ল আঁচল পেতে কোলে তুলে নিরে-ছিল,—সৌরজগতের সকল গণনাকেই বে একেবারে প্রথম সংখ্যা থেকেই আরম্ভ করে দিয়েছিল। সেই অতি প্রাচীন দিনই হাস্ত-মুথে আজ প্রভাতে আমাদের চোথের সাম্নে বীণাবাদক প্রিয়দর্শন বালকটির মৃত এসে দাঁড়িয়েছে। এ একেবারে নবীনতার মূর্জি---সম্ভোজাত শিশুর মতই নবীন। ম্পর্শ করে সেই তথনি নবীন হয়ে ওঠে— এ আপনার গলার হারটিতে চির্যৌবনের স্পর্নমণি ঝুলিরে এসেছে।

এর মানে কি ? এর মানে হচ্চে এই,
চিরনবীনতাই জগতের অস্তরের ধন, জগতের
নিত্য সামগ্রী—প্রাতনতা, জীর্ণতা তার
উপর দিরে ছারার মত আস্চে রাচ্চে, বৈধা
দিতে না দিতেই মিলিরে বাচ্চে—এ'কে
কোনোমতেই আছের করতে পারচে না।
জরা মিধ্যা, মৃত্যু মিধ্যা, কর মিধ্যা, তারা
করীচিকার মত—জ্যোভির্মার আকান্যের উপরে
ভারা ছারার মৃত্যু নাচে এবং নাচকে নাচকে

তারা দিক্প্রান্তের অন্তরালে বিলীন হরে বায়।
সত্য কেবল নিঃশেষহীন নবীনতা—কোনো
ক্ষতি তাকে স্পর্শ করে না, কোনো আঘাত
তাতে চিহ্ন আঁকে না—প্রতিদিন প্রভাতে
এই কথাটি প্রকাশ পায়।

এই যে পৃথিবীর অতি পুরাতন দিন, এ'কে প্রতাহ প্রভাতে নৃতন করে জন্মলাভ করতে হয়। প্রত্যহই একবার করে তাকে আদিতে ফিরে আস্তে হয়, নইলে তার মূল হ্বৰটি হারিয়ে যায়। প্রভাত তাকে তার **চিরকালের ধুরোটি বারবার করে ধরিয়ে দের**, কিছুতেই ভূল্তে দেয় লা। দিন ক্রমাগভই যদি একটানা চলে যেত, কোথাও যদি তার চোৰে নিমেষ না পড়ত, খোরতর কর্ম্মের ৰাম্বতা এবং শক্তির ঔদ্ধত্যের মাঝধানে একবার করে যদি অতলম্পর্শ অন্ধকাবের মধ্যে সে নিজেকে ভূলে না যেত এবং তারপরে আবার সেই আদিম নবীনতার মধ্যে বদি তার নৰজন্মণাভ না হত তাহণে ধুলার পর ধ্লা আৰক্ষনার পর আবর্জনা কেবলি জমে উঠ্ত-চেষ্টার কোভে, অহকারের তাপে, কর্মের ভারে তার চিরস্তন সভ্যটি আছের হয়ে থাকত। তাহলে কেবলি মধ্যান্ডের প্রথরতা, व्यवारमञ्ज व्यवन्छ। (क्वनि काफ्ट यां अयां. **क्विन शका था** अहा, क्विन चढ़रीन १४, **क्विन नकारीन योजः**— ध्रवे डेग्रामनात ७ छ बार्ण क्षम्राज् क्षम्राज् शृथिवीरक यन এकतिन বুৰ দের মত বিদীর্ণ করে ফেল্ড।

এখনো দিনের বিচিত্র সঙ্গীত তার সমস্ত মুর্চ্চনার সঙ্গে বেজে ওঠেনি। কিন্তু এই দিন যতই অগ্রসর হবে, কর্মুসংখাত ততই বেড়ে উঠ্জে থাক্বে, অাক্টা এবং বিরোধের সুর- গুলি ক্রমেই উগ্র হরে উঠ্ভে চাইবে,—
দেখতে দেখতে পৃথিবী জুড়ে উদ্বেগ ভীব্র,
কুধাতৃষ্ণার ক্রন্দনম্বর প্রবল এবং প্রতিযোগিতার ক্র্রুর গর্জন উন্মন্ত হরে উঠ্বে।
কিন্তু তৎসন্ত্রেও সিন্ধ প্রভাত প্রতিদিনই
দেবদূতের মত এনে ছিল্ল তারগুলিকে সেরেহরে নিরে যে মূল স্থরটকে বাজিয়ে তোলে
দেটি যেমন সরল তেম্নি উদার, ষেমন শাস্ত তেমনি গল্ভীর, তার মধ্যে দাহ নেই, সংঘর্ষ
নেই, তার মধ্যে ধণ্ডতা নেই, সংশ্রন কেই,—
দে একটি বৃহৎ সমগ্রতার সম্পূর্ণতার স্থর
—নিত্যরাগিণীর মূর্বিটি অতি সৌমান্তাবে তার
মধ্যে থেকে প্রকাশ পেয়ে ওঠে।

এম্নি করে প্রতিদিনই প্রভাতের মুধ থেকে আমরা ফিরে ফিরে এই একটি কথা ভন্তে পাই যে, কোলাহল যতই বিষম হোক্না কেন তবু সে চরম নর, ক্রাসল জিনিষটি হচেচ শাস্তম্। সেইটিই ভিতরে আছে, সেইটিই আদিতে আছে, সেইটিই শেষে আছে। সেই অগ্রই দিনের সমস্ত উম্মন্ততার পর প্রভাতে আবার যথন সেই শাস্তকে দেখি তথন দেখি তাঁর মৃত্তিতে একটু আঘাতের চিহ্ন নেই একটু খুলির রেখা নেই। সে মৃত্তি চির্লিয়া, চিরাভাত্তা, চিরপ্রশাস্তা।

সমস্ত দিন সংসারের ক্ষেত্রে তুংথ দৈত মৃত্যুর আলোড়ন চলেইচে কিন্ত রোক্ষ সকাল বেলার একটি বাণী আমাদের এই কথাটিই বলে যার কে, এই সমস্ত অকল্যাণই চরম নয়, চরম হচ্চেন লিবম্। প্রভাতে তার একটি নির্মাল মূর্ত্তিকে দেখাতে পাই—চেরে দেখি সেখানে ক্ষতির বলি রেখা কোথার ? সমস্তই প্রণ হরে আছে। ধেখি বে বুরুদ্ধি যথন কেটে বার সমুজের জথনো কণামাত্র ক্ষয় হয়
না। আমাদের চোথেও উপরে যতই উলট্
পালট্ হয়ে বাক্ না তবু দেখি যে সমস্তই জব
হয়ে আছে—কিছুই নজে নি। আদিতে শিবম্,
অস্তে শিবম্ এবং অস্তরে শিবম্।

नमूर्य राउ यथन हैकन हरा अर्थ उथन দেই চেউদের কাণ্ড দেখে সমুদ্রকে আর মনে থাকে না—তারাই অসংখ্য, তারাই প্রকাণ্ড, তারাই প্রচণ্ড এই কথাই কেবল মনে হতে থাকে। তেমনি সংসারে অনৈক্যকে বিরোধকেই সব চেয়ে প্রবল বলে মনে হয়—তা ছাড়া আর ংযে কিছু আছে তা করনাতেও আগেনা। কিন্তু প্রভাতের মুখে একটি মিলনের বার্তা আছে যদি তা কান পেতে শুনি তবে শুন্তে পাব এই বিরোধ এই অনৈকাই চরম নয়-চরম হঁচেন অবৈভয়। আমরা চোথের সামনে দেখতে পাই হানাহানির সীমা নেই, কিন্তু তার পরে দেখি ছিন্ন বিচ্ছিন্নতার চিহ্ন কোথায় ? বিশ্বের মহাদেত্র **ढे**(गिनि । লেশমাত্র ও গণনাহীন অনৈক্যকে একই বিপুল ব্ৰহ্মাণ্ডে বেঁধে চিরদিন বদে আছেন, সেই অবৈতম্, সেই একমাত্র এক। আদিতে অবৈতম্, অংক षदेवलम्, अञ्चदत षदेवलम्।

মানুষ যুগে যুগে প্রতিদিন প্রাতঃকালে
দিনের আরন্তে প্রভাতের প্রথম জাগ্রত আকাশ
থেকে এই মন্ত্রটি অন্তরে বাহিরে ওন্তে
পেয়েছে শাস্তম্ শিবম্ অবৈতম্। একবার
ভার সমস্ত কর্মকে থামিয়ে দিয়ে তার সমস্ত
প্রত্তিকে শাস্ত করে নবীন আলোকের এই
আকাশ্ব্যাপী বাণীটি ভাকে গ্রহণ করতে
হয়েছে শাস্তম্ শিবম্ অবৈতম্—এমন হাজার
হাজার বৎসর ধরে প্রতিদিনই এই একই

বাণী, তার কর্মারন্ডের এই একই দীক্ষামন্ত।

चामन मजा कथांगे इत्क धई त्य, यिनि প্রথম তিনি আজও প্রথম হয়েই আছেন। मूहार्ख मूहार्खेरे जिनि सृष्टि कंद्राहनू, निथिन बन्ध वहेमाज अथम शृष्टि हम व कथा वरत মিথ্যা বলা হয় না। জগৎ একদিন আরম্ভ হয়েছে তার পরে তার প্রকাণ্ড ভার বহন করে তাকে কেবলি একটা সোলা পথে টেনে আনা হচ্চে এ কথা ঠিক নয় :--জগৎকে কেউ বহন করচে না, জগৎকে কেবলি স্ষ্টি করা হচ্চে-যিনি প্রথম, জগৎ তাঁর কাছ থেকে নিমেষে নিমেষেই আরম্ভ হচ্চে—দেই প্রথমের সংস্রব কোনো মতেই যুচ্চে না-এই জন্তেই গোড়াতেও প্রথম, এখনো প্রথম, গোড়াতেও নবীন, এথনো নবীন। বিচৈতি চাস্তে বিশ্বমাদৌ — বিশ্বের আরম্ভেও তিনি, অস্তেও তিনি, সেই थ्रथम, त्मरे नवीन, त्मरे निर्क्तिकात्र।

এই সতাটিকে আমাদের উপলব্ধি করতে হবে—আমাদের মূহুর্ত্তে মূহুর্তে নবীন হতে হবে
—আমাদের ফিরে ফিরে নিমেবে নিমেবে তাঁর
মধ্যে জন্মগাভ করতে হবে। কবিতা যেমন
প্রত্যেক মাত্রায় মাত্রায় আপনার ছল্টাতে
গিয়ে পৌছয়—প্রত্যেক মাত্রায় মাত্রায় মৃগ
ছল্টিকে নৃতন করে স্বীকার করে এবং সেই
জন্মেই সমগ্রের সঙ্গে তার প্রত্যেক সংশের
যোগ স্থলর হয়ে ওঠে, আমাদেরও তাই করা
চাই। আমরা প্রবৃত্তির পথে স্বাভুর্ত্তের পথে
একেবারে একটানা চলে যাব তা হবে না—
আমাদের চিত্ত বার্ষার সেই মূলে ফিরে
আসবে—সেই মূলে ফিরে এসে তাঁর মধ্যে
সমস্ত চরাচরের সঙ্গে আপনার যে স্থেও যোগ

সেইটিকে বারবার অনুভব করে নেবে ভবেই সে মঙ্গল হবে, তবেই সে হৃদর হবে।

এ বদি না হর, আমরা বদি মনে করি
সকলের সঙ্গে যে যোগে আমাদের মজল,
আমাদের স্থিতি, আমাদের সামঞ্জ্য, যে যোগ
আমাদের অন্তিত্বের মূলে তাকে ছাড়িয়ে নিজে
অত্যন্ত উরত হয়ে ওঠবার আয়োলন করব,
নিজের স্থাতস্ত্রাকেই একেবারে নিত্য এবং
উৎকট করে তোলবার চেটা করব, তবে ভা
কোনো মতেই সফল এবং স্থায়ী হতে পারবেই
না। একটা মন্ত ভাঙাচোরার মধ্যে তার
অবসান হতেই হবে।

জগতে যত কিছু বিপ্লব, সে এমনি করেই হরেছে। যথনি প্রতাপ এক আরগার পঞ্জিত राष्ट्रहरू, यथनरे वार्णत, कूरणत, ক্ষমতার ভাগ বিভাগ ভেদ বিভেদ পরম্পরের তুৰেছে তথনই সমাৰে ঝড় উঠেছে। যিনি অবৈতম্, যিনি নিধিল ব্যুত্র বৈচিত্রাকে একের সীমা শুভ্যন করতে দেন ना छाटक अकाकी ह्र दिय गावात हाली करत জয়ী হতে পাৰ্কে এত বড় শক্তি কোন্ রাজার বা রাজ্যের আছে ! কেননা সেই অবৈতের সঙ্গে যোগেই শক্তি—দেই যোগের উপলব্ধিক नीर्ग कत्रामहे इर्क्सन्छ। अहे क्रान्तहे व्यवकात्रक. ৰণে বিনাশের মৃথ, এই জন্মেই ঐক্যহীনভাকেই বলে শক্তিহীনতার কারণ।

অবৈতই যদি অগতের অন্তরতবরূপে বিরাজ করেন এবং সকলের সঙ্গে বোগ সাধনই যদি জগতের মূলতত্ত্ব হয় তবে স্বাতন্ত্র জিনিবটা আসে কোথা থেকে এই প্রশ্ন মনে আগতে গারে। স্বাতন্ত্রাক সেই অবৈত ধ্যকেই মানে, স্বাতস্ত্রাও নেই মারৈতির^হ প্রকাশ।

জগতে এই সৰ স্বাভন্ত্যগুলি কেমন ? না গানের যেমন তান। তান ষতদূর পর্যান্ত যাক না, গানটিকে অস্বীকার করতে পারে না. সেই গানের সঙ্গে তার মূলে বোগ থাকে। দেই যোগটিকে সে ফিরে ফিরে দেখিরে দের। গান **থেকে** তানটি য**থ**ন হঠাৎ ছুটে বেরিয়ে চলে তথন মনে হয় সে বুঝি বিক্লিপ্ত হয়ে উধাও হরে চলে গেল বা-কিন্তু তার সেই ছুটে ষাওয়া কেবল মূল গানটিতে আবার ফিরে আদবার জন্মেই, এবং দেই ফিরে আদার রসটিকেই নিবিড করার জন্তে। বাপ যথন শীলাচ্চলে হুই হাতে করে শিশুকে আকাশের দিকে ভোলেন, তথন মনে হয় যেন তিনি তাকে দুরেই নিক্ষেপ করতে যাচ্চেন,—শিভর মনের ভিতরে ভিতরে তথন একটু ভর ভয় করতে থাকে-কিন্ত একবার তাকে উৎক্রিপ্ত করেই আবার পরমূহর্তেই তিনি তাকে বুকের কাছে টেনে ধরেন। বাপের এই দীলার মধ্যে সভা জিনিষ কোন্টা ? বুকের কাছে টেনে धत्राठाहे :-- जात्र काह (बदक हूँ एक किनाठाहे নয়। বিচেপের ভাবটি এবং ভরটুকুকে সৃষ্টি कता এই खाला य महाकात विष्कृत निर् সেই আনলকেই বার্মার পরিকৃট তুল্ভে হবে বলে।

অতএব গানের তানের মত আমাদের "
বাতস্থের সার্থকতা হচ্চে সেই পর্যান্ত বৈ পর্যান্ত
মূল ঐক্যকে সে লক্ষ্যন করে না, তাত্ত্বেই
আরো অধিক করে প্রকাশ করে; মুমন্তের
মূলে বে শান্তম -শিবমবৈতম্ আছে বতকণ
পর্যান্ত তার সক্ষে সে নিজের বোগা ত্বীকার

करत- अर्थाए य चाज्या नीनाक्रालरे स्नत, তাকে বিজোহরূপে বিক্বক্তনা করে। বিদ্রোহ করে মামুষের পরিআণই বা কোথায় 📍 যত-≖পুরই যাকু না সে যাবে কোথার ? তাঁর মধ্যে ফেরবার সহজ পথটি যদু সে না রাথে, যদি দে প্রবৃত্তির বৈগে একেবারে হাউয়ের মতই উধাও হয়ে চলে যেতে চায়, কোনোমতেই নিখিলের সেই মূলকে মানতে না চায় তবে তবু তাকে ফিরতেই হবে-কিন্তু সেই ফেরা প্রল-মের ঘারা পতনের ঘারা ঘট্বে—তাকে বিদীর্ণ হয়ে দগ্ধ হয়ে নিজের সমস্ত শক্তির অভিমানকে ্ভত্মদাৎ করেই ফিরতে হবে। এই কথাটিকেই খুব জোর করে সমস্ত প্রতিকৃল সাক্ষ্যের বিরুদ্ধে ভারতবর্ষ প্রচার করেছে:— অধর্মেনৈধতে তাবৎ ততো ভদ্রানি পশ্রতি, ততঃ সপত্নান্ অয়তি সমূলস্ত বিন্ভাতি। অধর্মের দারা লোকে বৃদ্ধি প্রাপ্তও হয়, তাতেই সে ইষ্টণাভ করে, তার ঘারা সে শত্র-দের অয়ও করে থাকে কিন্তু একেবারে মূলের থেকে বিনাশ প্রাপ্ত হয়। কেন না সমস্তের মূলে যিনি আছেন, তিনি শাস্ত, তিনি মঙ্গল,

এই জন্তে ভারতবর্ষে জীবনের আরন্তেই সেই মূল স্থারে জীবনটিকে বেশ ভাল করে বেঁধে নেবার আয়োজন ছিল। আমাদের শিক্ষার উদ্দেশ্রই ছিল ভাই। এই অনস্তের স্থার স্থার মিলিয়ে নেওয়াই ছিল ব্রহ্মচর্যা—খুব বিশুক্ষ করে, নিখুঁৎ করে, সমস্ত ভার গুলিকেই

তিনি এক—তাঁকে সম্পূর্ণ ছাড়িয়ে যাবার ভো

নেই। কেবল তাঁকে ততটুকুই ছাড়িয়ে

যাওয়া চলে যাতে ফিরে আবার তাঁকেই

নিবিড় করে পাওয়া যায়, যাতে বিচ্ছেদের দারা

তাঁর প্রকাশ প্রদীপ্ত হয়ে ওঠে।

সেই আসল গানটির অমুগত করে বেশ টেনে বেঁধে দেওয়া এই ছিল জীবনের গোড়াকার সাধনা।

এমনি করে বাঁধা হলে, মূল গানটি উপযুক্তমত সাধা হলে, তার পরে গৃহস্থা শ্রে ইচ্ছামত
তান থেলানো চলে, তাতে আর স্ব-লয়ের
খলন হয়না; সমাজের নানা সম্বজ্জের মধ্যে সেই
একের সম্বজ্জেই বিচিত্রভাবে প্রকাশ করা হয়।

স্থাকে রক্ষা করে গান শিথ্তে মানুষকে
কতদিন ধরে কত সাধনাই করতে হয়। তেমনি
যারা সমস্ত মানবজীবনটিকেই অনস্তের
রাগিণীতে বাঁধা একটি সঙ্গীত বলে জেনেছিল
তারাও সাধনার শৈথিল্য করতে পারে নি।
স্থাটকে চিন্তে এবং কণ্ঠটিকে সভ্য করে
তুল্তে তারা উপযুক্ত গুরুর কাছে বছদিন
সংয্য সাধন করতে প্রস্তুত হয়েছিল।

এই বন্দর্য্য আশ্রমটি প্রভাতের মত সরল নির্মাণ, স্নিথা। মুক্ত আকাশের তর্লে, বনের ছায়ায় নির্মাণ স্রোতম্বিনীর তীরে তার্র আশ্রয়। क्रननीत दर्गान अवः क्रननीत पृष्टे वाह वक्ष्टे যেমন নগ্ন শিশুর আবরণ, এই আশ্রমে তেমনি নগ্নভাবে অবারিত ভাবে সাধক বিরাটের দারা বেষ্টিত হয়ে থাকেন,---ভোগবিলাদ ঐশ্বর্য্য উপকরণ থ্যাতি প্রতিপত্তির .(कारना वावधान थारक ना। সেই গোডায় গিয়ে শান্তের সঙ্গে মঙ্গলের সঙ্গে একের দঙ্গে গায়ে গায়ে সংল হয়ে বুসা---কোনো প্রমন্ততা, কোনো বিক্রতি দেখান থেকে তাকে বিক্ষিপ্ত করঁতে না পারে এই হচ্চে मधियां।

তার পরে গৃহস্থাশ্রমে কত কাজকর্ম, অর্জ্জনন্যায়, লাভ কবি, কত বিচ্ছেদ ও মিলন।

कि व এই विकिश्च छाई हतम नय- धत्र सर्गा দিয়ে যতদূর যাবার গিয়ে আবার ফিরতে হবে। ঘর যথন ভবে গেছে, ভাণ্ডার যখন পূর্ণ, তখন তারই মধ্যে আবদ্ধ হয়ে বদলে চল্বে না-আবার প্রশস্ত পথে বেরিয়ে পড়তে হবে-আবার সেই মুক্ত আকাশ, সেই বনের ছায়া, সেই ধনহীন উপকরণহীন জীবনযাত্রা। নাই আভরণ, নাই আবরণ, নাই কোনো বাহ্ আয়োজন। আবার সেই বিশুদ্ধ হুরটতে পৌছন, সেই সমে এসে শান্ত হওয়া। যেথান থেকে আরম্ভ সেইখানেই প্রত্যাবর্তন-কিন্ত এই ফিরে আসাটি মাঝখানের কর্মের ভিতর দিরে বৈচিত্রোর ভিতর দিরে গভীরতা লাভ করে। যাতা করার সময়ে গ্রহণ করার সাধনা আর ফেরবার সময়ে আপনাকে দান করার সাধনা।

ু উপনিষৎ বল্চেন আনন্দ হতেই সমন্ত জীবের জন্ম, আনন্দের মধ্যেই সকলের জীবন যাত্রা এবং দেই আনন্দের মধ্যেই আবার সক-লের প্রত্যাবর্ত্তন। বিশ্বজগতে এই যে আনন্দ-সমুদ্রে কেবলি তরঙ্গণীত চলচে প্রত্যেক माञ्रू स्व की वनिष्टिक ५ त्र हे इत्न मिनिए इत देश হছে জীবনের সার্থকতা। প্রথমেই এই উপলব্ধি তাকে পেতে হবে যে দেই অনস্ত व्यानम श्टारे तम दलता डिर्माह, व्यानम श्टारे ভার যাত্রারন্থ, ভার গরে কর্মের বেগে সে ষতদূর পর্যাস্থই উদ্দিত হয়ে উঠুক না এই অন্তৃতিটীই বৈন সে রকা করে যে সেই অনন্ত আনন্দ সমুদ্রেই তার লীলা চল্চে—তার পরে কর্ম সমাধা করে আবার যেন সে অতি সহজেই নভ হরে সেই আনন্দ সমুদ্রের মধ্যেই আপ্-নার সমস্ত বিকেপকে প্রশাস্ত করে দেয়। এই

হচ্চে যথার্থ জীবন—এই জীবনের সঙ্গেই সমস্ত জগতের মিল—দেই থিলেই শান্তি এবং মঙ্গল এবং সৌন্দর্যা প্রকাশ পায়।

হে চিত্ত, এই মিলটিকেই চাও! প্রবৃত্তির বেগে সমস্তকে ছাড়িয়ে যাবার চেষ্টা কোরো না। সকলের চেয়ে^পবড় হব, সকলের চেয়ে কৃতকার্য্য হয়ে উঠ্ব এইটেকেই ভোমার জীবনের মূল তত্ত্ব বলে জেনোনা। এ পথে অনেকে অনেক পেয়েছে, অনেক সঞ্য় করেছে, প্রতাশশাণী হয়ে উঠেছে তা আমি জানি তবু বলছি এ পথ ভোমার না হোক্! তুমি প্রেমে নত হতে চাও, নত হয়ে একেবারে সেইখানে গিয়ে ভোমার মাথা ঠেকুক্ যেখানে জগতের ছোট বড় সকলেই এনে মিলেছে; তুমি ভোমার স্বাভয়াকে প্রভাহই তার মধ্যে বিদর্জন করে তাকে সার্থক কর—যতই উচু' হয়ে উঠবে ততই নত হয়ে তাঁর মধ্যে আত্ম-সমর্পণ করতে থাক্বে, ষতই বাড়বে তিতই ত্যাগ করবে এই তোমার সাধনা হোক ! ফিরে এদ, ফিরে এদ, বারবার তাঁর মধ্যে ফিরে ফিরে এদ--দিনের মধ্যে মাঝে মাঝে ফিরে এস দেই অনস্তে। তুমি ফিরে আস্বে বলেই এমন করে সমস্ত সাকানো রয়েছে। কত কথা, কত গোলমাল, বাইরের দিকে কত টানাটানি, সৰ ভূল হয়ে যায়, কোনো কিছুব পারমাণ ঠিক থাকে না, এবং সেই 'অসভ্যের ক্ষেত্রে প্রবৃত্তির মধ্যে বিক্বতি এদে ["]পড়ে। " প্রতিদিন মুহুর্তে মুহুর্তে এই রঞ্চম ঘট্চে, ভারই মাঝখানে সভর্ক হও, টেনে আনু আপনাকে ফিরে এম. আবার ফিরে এম, মেই গ্যোড়ায়, দেই শা**ন্তে**র মধ্যে, **সঙ্গলের মধ্যে**, দেই একের মধ্যে। কাজ করতে করতে কাজের মধ্যে

একেবারে হারিরে বেয়ো না, তারি মাঝে মাঝে ফিরে ফিরে এসো তীর কাছে, আমোদ করতে করতে আমোদের মধ্যে একেবারে লিকদেশ **হয়ে মেয়ো না—ভা**রি মাঝে মাঝে ফিরে ফিরে এসো যেখালে সেই তাঁর কিনারা। শিশু খেল্ফে খেল্ভে মার কাছে বারবার ফিরে আদে; দেই ফিরে আসার যোগ যদি একে-বারেই বিচ্ছিন্ন হয়ে যায় তাহলে তার আনন্দের খেলা কি ভয়ক্ষর হয়ে ওঠে ৷ তোমার সংসাবের कर्या नः नारवत रथना ভत्रकत हरत्र উঠ্বে यनि তাঁর মধ্যে ফেরবার পথ বন্ধ হয়ে যায়;—দে পথ যদি অপবিচিত হবে ওঠে। বারবার যাতায়াতের দ্বারা সেই পথটি এমনি সহজ করে রাধ যে অমাবস্থার রাতেও সেথানে তুমি অনায়াদে যেতে পার,তুর্যোগের দিনেও দেখানে তোমার পা পিছলে না পড়ে;—দিনে হপুরে বেলায় অবেলায় যথন তথন দেই পথ দিয়ে যাও আর আস-তাতে যেন কাঁটাগাছ জনাবার অবকাশ না ঘটে।

সংসারে হঃথ আছে শোক আছে, আঘাত আছে, অপমান আছে, হার মেনে তাদের হাতে আপনাকে একেবারে সমর্পণ করে দিয়ে। না, মনে কোরো না তারা তোমাকে ভেঙে ফেলেছে, গ্রাদ করেছে, জীর্ণ করেছে—আবার क्ति वम जांब मर्था-वरकवारत नवीन हरा নাও ৷ • দেখতে দেখতে তুমি সংস্কারে অভিত হয়ে পড়, লোকাচার তোমার ধর্মের স্থান অধিকার করে, যা তোমার আন্তরিক ছিল তাই বাহ্নিক হয়ে দাঁড়ায়, যা চিস্তার দারা বিচারের দারা সচেতন ছিল তাই অভ্যাসের দারা অন্ধ হ'রে ওঠে, বেথানে তোমার দেবতা বেধানেই অনক্ষ্যে সাম্প্রদায়িকতা

এসে তোমাকে বেষ্টন করে ধরে—বাঁধা পোড়ো না এর মধ্যে-ফিরে এদ তাঁর কাছে, বার বার ফিরে এস-জান আবার উজ্জল হয়ে উঠ্বে, বৃদ্ধি আবার নৃতন হবে। জগতে যা কিছু তোমার জানবার বিষয় আছে, বিজ্ঞান বল, দর্শন বল,ইতিহাস বল,সমাজতত্ত্ব বল সমস্তকেই থেকে থেকে তাঁর মধ্যে নিমে যাও, তাঁর মধ্যে রেখে দেখ-ভাহলেই তাদের উপরকার আবরণ থুলে যাবে—সমস্তই প্রশস্ত হয়ে সত্য হয়ে অর্থ-পূর্ণ হয়ে উঠ্বে। অগতের সমস্ত সঙ্কোচ, সমস্ত আচ্ছাদন, সমস্ত পাপ এমনি করে বারবার তাঁর মধ্যে গিয়ে লুপ্ত হয়ে যাচে— এমনি করে জগৎ যুগের পর যুগ স্থন্থ হয়ে সহল হয়ে আছে। তুমিও তার মধ্যে তেমনি স্থ হও, সহজ হও—বারবার করে তাঁর মধ্যে দিয়ে পূর্ণ হয়ে এদ, তোমার দৃষ্টিকে, তোমার চিত্তকৈ, তোমার হৃদয়কে, তোমার কর্মকে নির্মালরপে সভ্য করে ভোলো!

একদিন এই পৃথিবীতে নঁগ্ৰ শিশু হয়ে প্রবেশ করেছিলুম—হে চিত্ত তুমি তথন সেই অনস্ত নবীনতার একেবারে কোলের উপরে থেলা করতে। এইজন্তে দেদিন তোমার কাছে সমস্তই অপরূপ ছিল, ধূলাবালিতেও তথন তোমার আনন্দ ছিল; পৃথিবীর সমস্ত •বর্ণগদ্ধরস যা কিছু তোমার হাতের কাছে এসে পড়ত ভাকেই তুমি লাভ বলে জান্তে, দান বলে গ্রহণ করতে; এখন তুমি বল্ডে শিখেছ, এটা পুরাণো, ওটা সাধারণ, এর কোনো দাম নেই। এমনি করে জগতে তোমার অধিকার সন্ধীর্ণ হয়ে আদ্চে। अপং তেমনিই নবীন আছে, কেন না, এবে অনস্ত রসসমুদ্রে পদ্মের মউ ভাস্চে; , নীলাকাশের

নির্মাণ শশাটে ঝর্মকোর চিহ্ন পড়ে নি; আমাদের শিশুকালের সেই চিরস্থল্ চাঁদ আঞ্জ পুর্ণিমার পর পুর্ণিমার জ্যোৎসার দানসাগর ব্রভ পালন করচে ; ছয় ঋতুর ফুলের সাজি আজও ঠিক তেমনি করে আপনা আপনি ভরে উঠ্ছে; রজনীর নীলাম্বরের আঁচলা থেকে আজও একটি চুম্কিও খদে নি; আজও প্রতিরাত্তির অবসানে প্রভাত তার সোনার ঝুলিটিভে আশাময় রহস্ত বহন করে জগতের প্রত্যেক প্রাণীর মুখের দিকে চেম্বে হেসে বল্চে, বল দেখি আমি তোমার জন্তে কি এনেছি! ভবে জগতে জরা কোথায় ? জরা কেবল কুঁড়ির উপরকার পত্রপুটের মত निक्टिक विमीर्ग करत्र थिंगरत्र थेगिरत्र रक्निटि, চিরনবীনতার পুষ্পই ভিতর থেকে কেবলি ফুটে কুটে উঠ্চে। মৃত্যু কেবলি আপনাকেই আপনি ধ্বংস করচে---সে যা-কিছুকে সরাচ্চে তাতে কেবল আপনাকেই সরিয়ে ফেল্চে, লক্ষ লক্ষ কোট কোট বংগর ধরে তার আক্রমণে এই জগৎপাত্তের অমৃতে একটি কণারও ক্ষর হর নি। হে আমার চিন্ত, আৰু এই উৎসবের দিনে

হে আমার চিন্ত, আন্ত এই উৎসবের দিনে
তুমি একেবারে নবীন হও, এপনি তুমি
নবীনতার মধ্যে জন্মগ্রহণ কর, জরাজীর্ণতার
বাজ আবরণ তোমার চারদিক থেকে কুরাশার
মন্ত মিলিরে থাকু; চিরনবীন চিরস্কলরকে
আন্ত ঠিক একেবানে ডোমার সন্মুখেই চেয়ে
দেশ—লৈশবের সভা দৃষ্টি ফিরে আন্তক,
জলত্বল আকাশ রহক্তে পূর্ণ হরে উঠুক্, মৃত্যুর
আচ্চাদন থেকে বেরিরে এসে নিজেকে
চিরবৌবন দেবতার মত করে একবার দেখ,
সকলকে অমৃতের পূত্র বলে একবার বোধ
কর। সংখারের সমস্ত জীবরণকে ভেই করে

আৰু একবার আত্মাকে দেখ—কত বড় একটি मिनानत मर्था रत निमध हर निस्न हरत রয়েছে, সে কি নিবিজ, কি নিগুঢ়, কি व्यानसम्म । कारना क्रांखि तहे, सन्ना तहे. মানতা নেই। সেই/মিগনেরই বাঁশি অগতের সমস্ত সঙ্গীতে বেন্দে উঠ্চে, সেই মিলনেরই উৎসবসজ্জা সমস্ত আকাশে ব্যাপ্ত হয়েছে ! এই জগৎজোড়া সৌন্দর্যোর কেবল একটিমাত্র অর্থ আছে, তোমার সঙ্গে তাঁর মিলন হয়েছে সেই অতেই এত শোভা, এত আয়োজন! এই সৌন্দর্য্যের সীমা নেই, এই আরোজনের ক্ষর নেই—চিরধৌনন তুমি চিরধৌনন-চির-স্ক্রের বাছপাশে তুমি চির্দিন বাঁধা---সংসারের সমস্ত পদা সরিরে ফেলে সমস্ত লোভ মোহ অহ্ডারের জ্ঞান কাটিয়ে আজ একবার সেই চিরদিনের আনন্দের মধ্যে পরিপূর্ণ ভাবে প্রবেশ কর—সভা , হোক্ ভোমার জীবন, ভোমার জগৎ, জ্যোভির্ময় হোক, অমৃতমন্ন হোক !

দেখ, আজ দেখ, তোমার গলার কে
পারিজাতের মালা নিজের হাতে পরিবেছন
—কার প্রেমে তুমি স্থানর, কার প্রেমে
তোমার মৃত্যু নেই—কার প্রেমের গৌরবে
তোমার চারদিক থেকে তৃচ্ছতার আবরণ
কেবলি কেটে কেটে বাচ্চে—কিছুতেই
তোমাকে চির্নদিনের মন্ত আবৃত, আবদ্ধ
করতে পারচে না । বিশ্বে তোমার বরণ হয়ে
গ্রেছ—প্রিয়ন্তমের জনস্ত মহল বাড়ির মধ্যে
তৃমি প্রেমেশ করেছ, চারিদিকে দিকেদিগর্থে
দীপ জন্চে, স্থরলোকের সপ্রশ্ববি এলৈছেন
তোমাকে আশির্কাদি করতে—আল তোমার
কিনের সন্ধাচ—আল তুমি নিজেকে কনি—

সেই জানার মধ্যে প্রকৃত্র হরে ওঠ, পুলকিত হরে ওঠ—তোমারি জাত্মার এই মহোৎদব সভার অপ্লাবিষ্টের মত এক ধারে পড়ে থেকোনা —বেথানে তোমার অধিকারের সীমা নেই সেধানে ভিক্তকের মত শুরুত্তি কোরো না!

হে অন্তর্তর, আমাকে বড় জানবার ইচ্ছা তুমি একেবারেই সব দিক থেকে ঘুচিয়ে দাও—ভোমার সঙ্গে মিলিত করে আমার বে আনা সেই আমাকে জানাও! আমার মধ্যে তোমার যা প্রকাশ তাই কেবল • হান্দর, তাই কেবল মঙ্গল, তাই কেবল নিত্য ; **"আর সমন্তের কেবল এইমাঐ মূলা যে তারা** সেই প্রকাশের উপকরণ। কিন্তু তা না হয়ে যদি ভারা ৰাধা হয় তবে নিশ্মমভাবে ভাদের **पूर्व करत नां ७ !** श्रामात धन यनि ट्यामात धन না হর তবে দারিজ্যের হারা আমাকে তোমার বুকের কাছে টেনে নাও, আমার বুদ্ধি বদি তোমার শুভবৃদ্ধি না হয় তবে অপমানে তার গৰ্ক চূৰ্ণ করে তাকে দেই ধ্লায় নত করে দাও যে ধ্লার কোলে ভোমার বিশ্বের সকল জীব বিশ্রাম লাভ করে। স্থানার মনে যেন এই আশা সর্বাধীই জেগে থাকে যে, একেবারে দূরে তুমি আমাকে কখনই যেতে দেবেনা—ক্ষিরে ফিরে তোমার মধ্যে আস্তেই হবে, বারম্বার তেমিার মধ্যে নিজেকে নবান করে নিভেই হবে! লাহ বেড়ে চলে, বোঝা ভারি হর, . ध्ना करमे ७८ठे, किन्ह अमन करत्र वजावत हरन না, দিনের শেষে জননীর হাতে পড়তেই হয়— অনত অধাসমূদ্রে অবগাহন করতেই হর, नमछ क्षित्व वान, नमछ हाका हत, ध्नान हिन्न थां क ना,--- धरकवांत्र टामानहे या तिहे গোড়াটুক্তে গিৰে পৌছতে হয়, বা কিছু

আমার সে সমন্ত জঞ্চাল খুচে যার। মৃত্যুর আঁচলের মধ্যে ঢেকে তুমি একেবারে ভোমার অবারিত হৃদয়ের উপরে আমাদের টেনে নাও —তখন কোনো ব্যবধান রাখনা,—তার পরে বিরাম-রাত্রির শেষে হাতে পাথের দিরে মুখচুম্বন করে হাসিমুখে জীবনের স্বাভল্লোর পথে আবার পাঠিয়ে দাও—নির্মান প্রভাতে প্রাণের আনন্দ উচ্চ্ দিত হয়ে ওঠে, গান করতে করতে বেরিয়ে পড়ি,—মনে গর্ক হয়, ৰুঝি নিজের শক্তিতে নিজের সাহসে, নিজের পথেই দূরে চলে যাচিচ; . কিন্তু প্রেমের টান ত ছিন্ন হয় না, ওক গৰ্কা নিয়ে ত আত্মার কুধা মেটে না---শেষকালে নিজের শক্তির গৌরবে ধিকার জন্মে, সম্পূর্ণ বুঝ্তে পারি এই শক্তিকে বতকণ তোমার মধ্যে না নিরে যাই ভতক্ষণ এ কেবল হর্মলতা—তথন গর্মকে বিস্ঞ্জন দিরে নিথিলের সমান কেত্রে এসে দ্রাড়াভে চাই—তথনি তোমাকে সকলের মাঝখানে পাই কোথাও আর কোনো বাধা থাকে না-দেইখানে এসে সকলের সঙ্গে একত্রে বসে यारे द्यथात्न "मरधा वामनमामीनः विरच त्मवा উপাদতে।" শান্তম্ শিবমবৈতম্ এই মন্ত্ৰ গভীর স্থরে বাজুক্, সমস্ত মনের তারে, সমস্ত কর্মের अकारत,--राबर्फ वाबर्फ এरकरारत नीत्रव र्टेंत्र योक्, भारखत भरधा, भिरवत भरधा, धरकत्र नत्या, ट्यामात मत्या नीत्रव रुख योक्-शविख रदा পরিপূর্ণ হয়ে ऋधामत्र হয়ে मौत्रव हदा ষাক্-স্থহঃধ পূৰ্ণ হয়ে উঠুক্, জীবন মৃত্যু পूर्व रुष छेर्रक, अञ्चत्र वाश्त्रि भूर्व रुष छेर्रक, **ভূভূ वयः পূর্ণ হয়ে উঠুক্, বিরাজ করুন অনুম্ভ** नत्री, अनस (श्रम, अनस आनम, वित्रोक कक्रन भाउँम् भिवमदेवछम्।

র্যালের পরিণয় কাহিনী।

(অগষ্টা ভেরিন্মিধের ইংরাজি গল হইতে লিখিত)

্বার ওয়াল্টার র্যালে একজন সাবাস্ত ব্যক্তি ছিলেন। যৌবনে একদিন লওনের এক পথ দিয়া বাইবার সবহ দেখিবনে সন্মুখে জনতা, রাণী এনিজাবেধ এক জটালিকা হইতে নানিরা গাড়িতে উঠিভেছেন। র্যালেও দাঁড়াইলেন। এলিজাবেধ সন্মুখে একটু কর্জমাক্ত স্থান দেখিয়া ভাষার উপর চরণ রাখিতে একটু ইডভেজ করিভেছেন দেখিবামাল ম্যালে তাঁহার গাল্ডবন্ত শেই কর্জমের উপর পাতিয়া দিলেন। রাজী ইবং হাজ ঘারা তাঁহার সল্লোব জ্ঞাপন করিয়া গাড়াতে উঠিয়া চলিয়া গোলেন। সেই জ্ঞাবি রালের ভাগ্য পরিবর্তিত হইল। রাজীর কুপাপালে হইয়া তিনি দেশের একজন গণামাক্ত ব্যক্তি হইয়া উঠিলেন। নবাবিকৃত জামেরিকায় গ্রমন করিয়া প্রভূত খনরত্ব লইয়া বদেশে প্রত্যাগ্যমন করিলেন। পরে তাঁহার সৌভাগ্যলক্ষী বিষ্কু হইলেন। রাজীর রোসন্মনে পতিত হইয়া তিনি দাঁকিলা বন্দী অবস্থায় অতিবাহিত করিয়া অবশেন প্রাণ্ডতে ছতিত হব। এই ঘটনাটিকে জ্বলম্বন করিয়াই বর্তবান আব্যায়িকাটি রচিত হইয়াছে।]

রাজ প্রাসাদের আম দরবারের বাতারন পথ দিরা শীতের ক্ষীণ স্থাকিরণ আসিরা প্রশন্ত গৃহটিকে আলোকিত করিরাছে। এই মাত্র রাজ্ঞী এলিজাবেও তাঁহার অস্চর, সহচর ও পারিবদগণের সহিত সশস্ত্র প্রহরী পরিবৃতা ইইরা তথা হইতে প্রস্থান করিরাছেন। রাজ্ঞীর সঙ্গীদলের শেষ ব্যক্তিটি গৃহ হইতে নিজ্ঞান্ত ইইতেছিলেন, এমন সমরে তাঁহার একজন সহচরী কিরিয়া আসিরা ঘাররক্ষককে ইঙ্গিত ছারা জানাইল বে, তাহার আর পরদা তুলিয়া ধরিরা থাকিবার আবশ্রক নাই, তিনি অস্ত হবে দিরা গৃহতাগ্য করিবেন।

জীলোকটি দেখিতে ক্মনরী, স্বর্ণরঞ্জিত কেশদাম, নীলাজ নমন ছটি উষৎ বিমর্থ ও চিন্তাবিত। কিন্তু তাহার গতি ও দেহভলী দেখিলে তাহার অন্তর চিন্তা ভারাক্রান্ত বলিয়া বোৰ হয় না। বসনভ্যণ আড়ম্বর বিহান। ইহারই ক্লাম এলিজাবেধ পুগ্মর্টন্, রাণী এলিজাবেধের সহচরীগণের মধ্যে ইনি স্কাঞ্জেঠা

शृहित मध्य व्यवित कतिका वसम देन वृद्धिन

বে ছারের প্রহরীবর অক্লাক্ত পারিবদগণের সহিত দে স্থান ভ্যাগ করিয়া গিয়াছে, তখন বালিকা টেমদ নদীভীরবর্ত্তী একটি বাভারনের দিকে অগ্রসর হইল। ,বাতায়ন সমূবে দীড়া-ইয়া একবার পদাসূলির উপর ভর করিয়া মাথা ভলিয়া দেখিল। পরে, বাহির হইতে পাছে কেহ ভাহাকে দেখিতে পার, সেই ভরে মাগাট किकिए वास्य डिलारेबा वानीत मनवनाक অস্তরাল হটতে লক্ষা করিতে লাগিল-রাণী उपन मनगरन आमारमञ् अकृषि अकृषि अरकार्कत मासा अरवन कतिरुद्धन । क्रीए সে দেশিল মুহুর্ত্ত পূর্ব্বে নিজেকে দে যেমন कतिया मनविष्ठित कतिवा छन, विक मिरे छात् একজন দীৰ্ঘায়তন ব্যক্তি একপাৰ্থে দাঁড়টিয়া কিরংকণ অপেকা করিল ও পরে ক্রতপদ-কেপে কিবিরা আসিরা আম দরবারের হার श्राक्षा त्यारवर्ण कविन ।

বালিকা তাড়াডাড়ি খালাবিক ভাবে শুড় হইরা নাড়াইরা টেম্নের পরপারবর্তী উভান ও ক্ষেত্রের প্রতি নৃষ্টিনিক্লেণ্ করিরা রহিল। ভাহার পঞ্চারের রক্ষণণ কিছু বালি- কার অন্তরের আন্দোলনটি গুপ্ত রাখিবার চেটাকে বার্থ করিয়া দিশ।

্পশ্চাতে কে ডাকিল—"এলিজাবেধ থুগ্মর্টন্।"

বালিকা পশ্চাৎ ফিরিয়া নবাগতের প্রতি
দৃষ্টিনিক্ষেপ করিল। পীসকুণেই তাহার নয়নছাট আনত হইয়া পড়িল এবং ওষ্ঠাধর
ঈবং হাক্তরেখায় কম্পিত হইতে লাগিল,
তাহারা আর কোন মতেই শাসন মানিল না।

নবাগত ব্যক্তিট মৃহস্বরে উচ্ছসিত আবেগ ভরে বলিয়া উঠিলেন—"আমি এমন কি অপ-রাধ করিয়াছি যে রাণী যতক্ষণ দরবারে উপস্থিত ছিলেন, তাহার মধ্যে তুমি ভূলেও একবার আমার প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে না ?"

"তাহার কারণ • তুমি রাজীর দিকেই
চাহিয়া থাক, ইহাই আমার ইছে। ছিল।"
 "হচাধ ছটো ত আমার নিজের!"

বালিকা একটু রহস্তের সহিত উত্তর করিল—''কিন্তু মাথাটা ত তোমার নিজের নয়।"

"কোন্ জিনিষটি আমার নিজের কোন্ জিনিষটি আমার চুরি গিয়াছে, আর কোন্ জিনিষটি বা আমি প্রফুল্লচিত্তে অপরকে দান করিতে পারি, তা আমি বেশ জানি।"

* বক্তান কণ্ঠবর বেশ প্রফুল এবং দৃষ্টিটি
তাঁহার সলিনীর রূপগোরবে মুদ্ধ। এক
মুইর্জ পরেই তিনি আবার বলিলেন—
"এলিজাবেথ ভোমার আমি যা দিতে চাই,
সেটা কেবল আমাদের হজনের মধ্যে একটা
আদানপ্রদান মাত্র—একটা বিনিমর মাত্র।
এক মুবোর বদলে অপর জব্য বেওরার নীতি

আমরা সকলেই জানি, তবে প্রাণের বদণে প্রাণ দিতে বাধা কি ?" ক্থাগুলি বলিজে বলিতে র্যালের রক্তিমমুখ অধিকতর আর্তিম হইয়া উঠিল।

"সে কেবল আমার প্রাণটা কোমল ও অকপট বলে।"

"ঈশ্বর জানেন, আমারও প্রাণ কি কোমল অকপট নয় ? সুন্দরি, আমি তোমার কাছে শপথ করিতেছি যে তুমি আমার এই প্রাণটকে গ্রহণ করিয়া প্রেমের বিনিময় নীতি ক্রমে তোমার আপনার প্রাণটিকে আমায় সমর্পণ করিলে, ভোমাকে কদাচ তাহার জন্ম অসুতাপ করিতে হইবে না। আমার জীবন মাত্র ও অদৃষ্টের সঙ্গে কঠোর সংগ্রামে অতিবাহিত হয়েছে। व कोरानत वक्षा नका, वक्षा छक्काकाका আছে সত্য, কিন্তু আমার অন্তরের গুঢ়তম প্রদেশে যে একটি শুপ্ত মন্দির আছে তথাকার व्यिष्ठां वो प्रवी य अनिकारवध्न, स्म स्मरे সিংহাসনাসীনা, আস্মাভিমানিনী, সর্মনাশিনী এলিজাবেধ নয়, সে অপর এক এলিজাবেধ। আমি তাহাকেই যথার্থ ভালবাসি ও তাহারই ভালবাসার ভিথারী। তবে রাণী এলিকাবেথের কাছে যে প্রেমের খেলা খেলি, সে কেবল আপনার প্রাণ রক্ষার জন্স।"

এই কথা বলিয়া তিনি তাঁহার দীর্ঘ হস্ত প্রসারিত করিয়া ধরিলেন, যেন এলিজাবেথ তাঁহার সেই বিস্তীণ অঞ্চল মধ্যে কিছু রাথিরা দিবে বলিয়া তিনি আশা করেন। বালিকার দ্বীত বক্ষ ও আরক্তিম কপোল তাহার অন্ত-রের উদ্বেগকে প্রকাশ করিলেও, সে নিজে নিক্ষত্র দেখিয়া রালে বলিয়া উঠিলেন— ভোষারও ভাগবাসা পাইতে হইলে কি মণি-মাণিক্যের আবস্তুক হয় ?" এই বলিয়া তিনি তাড়াতাড়ি তাঁহার বস্তু মধ্যে কি একটা পুঁজিতে লাগিলেন।

তাঁহার কথাগুলি কশাখাতের স্থার বালিকাকে আঘাত করিল। সে কাতর স্বরে
বিলয়া উঠিল—"না, না ওয়াল্টার! তুমি
আমাকে পৃথিবীর মধ্যে সব চেরে বড়, সব
চেরে ভাল, সব চেরে মহৎ ধন দান করেছ।"
কথা শেব হইতে না হইতে একটি মুকার
মালা বাহির হইরা পড়িল।

"ও সকল মণিমাণিক্য আমাকে দিও না! আমার কেবল তোমার ভালবাসাটুকু দেও, সেইটেই আমার কাছে সব চেরে মূল্যবান।"

র্যালে বালিকার একটি হাত ধরিরা ক্লব্ধ-কঠে বলিরা উঠিলেন—"তুমি বা বল্ছ, তা কি সত্য ? আমার ভালবাসার কি তোমার কাছে সতাই কোন মূল্য আছে ?"

বালিকা ভৱে একবার চারিদিকে চাছিয়া বলিশ—"আত্তে কথা কও। মনে থাকে যেন আকাশের পাথীটা পর্য্য আমাদের এ সংবাদ রাণীর কাছে উপস্থিত করতে পারে।"

"কিন্ত তুমি কি আমার ভালবাস ?" "হাঁ বাসি।"

তথন সেই দাঁর্য স্পুক্রর নত হইরা বালি, কার ধৃত হকাঞ্জলির উপর একটি সৃত্ত চুত্বন রাধিয়া দিলেন।

"কিছ," ওরাণটার, রাণীর কাছ থেকে •রকা পাৰার কি হবে^{*}?"

শের ভার আমার। মাহুবের চিরদিনই অন্তাবে শৃথাল ভোগ করা সম্ভব নর।"

धरे क्या विनन्ना ज्ञाहन तरहे बुक्तान मानाहि

বালিকার কঠে পরহিরা দিলেন। বালিক মালাটকে চুম্বন ক্রিয়া ভাষা এইণে সম্বতি জানাইল।

(२)

করেক মাস পরে একদিন আমদরবারের বাহিরের সাঁকাশ বজ্ঞজা মেখে পরিপূর্ণ। সে দিন 'সে গৃহ রাণী এলিজাবেথের
এক পারিষদের নিকট অসম্ভ হইরা উঠিল।
লোকটি সৈনিক ও নাবিক, স্তরাং বাহিরের
মৃক্ত আকাশ ও বাতাসের জন্ম তাহার প্রাণটা
স্বভাবত:ই আকুল হইয়া উঠিভেছিল। তাহার
তৃষিত দৃষ্টি বার বার পার্মন্থ বাতারনের দিকে
ছুটতেছিল।

একজন ওমরাহ তাঁহার ঠিক পার্বে দাঁড়া-ইরা ছিলেন। তিনি তাহাকে চুপি চুপি বলিরা উঠিলেন—"ব্যাপার কি র্যালে? তোমার সেই সাধের পাখীটির কাছে যাবার ক্ষম্ম বেশী ব্যস্ত হরে পড়েছ নাকি?"

র্যালে প্রশ্নকর্তার প্রতি একবার অর্থভর।
দৃষ্টি দিরা বলিলেন—"আমার বোধ হর রাণী
আমাকে সন্দেহ করেছেন।"

এমন সময়ে সঙ্গীত মধুরকঠে রাণী এলিজা বেথ আদেশ করিলেন—"একণে আমাদের ইচ্ছা আপনারা সকলে প্রস্থান করুন। কেবল সার গুয়াল্টার র্যালে এখানে উপস্থিত থাকুন, গুঁহার সহিত আমাদের কিঞ্চিৎ পরীমর্শ করি-বার আছে।"

বাহিরে ভেরীর নিনাদ উঠিল। পারি-বদগণ একে একে সকলেই দরবার ভাগ করিলেন।

গৃহ জনপ্ত হেইল, বারের পরনা পড়িরা গেল ৷ এলিজাবেধ এতজন জালার বান হতের হুইটি অঙ্গুলির উপর চির্ক রাধিরা হেলিয়া ছিলেন। এইবার ধীরে ধীরে ধীরে ধার ধার বছ হইলা বিদিয়া মন্তকের ঈবং ভঙ্গী হারা র্যালেকে নিকটে আসিতে ইক্লিড করিলেন। র্যালে আজ্ঞাপালন করিরামাত্র মৃত্তরে বলিলেন—"আমালের একজন সহচরীকে পুঁজিয়া পাওয়া যাইতেছে না । আমি তাহার অক্লপস্থিতি অনেকবার লক্ষ্য করিয়াছি। ভনিলাম তুমি নাকি তাহার সন্ধান বলিতে পার ?"

এই বলিয়া রাজ্ঞী নীরব হইলেন। তাঁহার ক্লফচক্ষুর তীক্ষ দৃষ্টি র্যালের অস্তরস্থল ভেদ ক্রিতে লাগিল।

তথন তিনি নতকামু হইয়া উত্তর করিলেন

"শংবারাণি, আপনি বলশালিনী, আপনার
'পক্ষে অপরের হর্ষক্তাকে ক্ষমা করা অধিক
সম্ভব। এলিজাবেপ পুগ্মর্টন্কে আমি
বিবাই করিয়াছি সভা; কিছ তৎসত্তেও আমি
বে এখনও আমার রাজ্ঞীকে ভালবাদি এবং
তাঁহার জন্ত প্রাণপাত প্রান্ত করিতে প্রস্তত,
এ বিবরে সন্দেহ করিবার কোন কারণ
নাই।"

"মানুষের কথা, রালে, কেবল শৃত্ত ধ্বনি মাত্র।"

শমহারাণি, এতকাল বে আপনাকে প্রাণ , দিয়া ভাগ বাদিল, দেবা করিল, আজ এরপ নির্দিয়ভাঁবে তাহার প্রাণের সকল আশা চূর্ণ করিবেন না। অধ্যের অন্থরোধ আপনি যেন জোধ বলে বিশ্বত না হন বে জগতে দরা না থাকিলে দেবত্ব থাকিত্ব না, প্রতিহিংসা পশুর ও মানবের ধর্ম্ম। পৃথিবীর সকলেই আপনার জারু স্বাভাগাব্তী ও পক্তিশালিনী হর না।

আপনার প্রজাগণ নিম্নের অধিত্যকা ও সমভূমিতে পর্যাটন করিয়া বেড়ার, কিন্তু পর্বতশূরুই আপনার বিহার হল। বিধাতার গৌরব
রিশ্ম আপনার শিরোদেশকে সমুজ্জন করিরাছে। সেইজন্ত আজ নতজাহ হইরা আমার
এই কর্ম্মের জন্ত আপনার নিকট ক্ষমা ভিকা
করিতেছি।"

"তৃমি উঠিয় আরও একটু নিকটে এস। হাঁ, এই সিংহাসনের সোপানের উপন অতীত অ্থসময়ের ভাষ নতজাত হইয়া আমার পার্শে অবস্থান কর।"

রাজী তাঁহার বছ্মৃশ্য হারকপচিত দক্তানাটি থুলিয়া ম্ণালকরের কমনীয় স্থলর অঙ্গুলিগুলি নতজাম র্যালের অমরক্বফ কেশ্লামের উপর অতি ধারে রক্ষা করিলেন।

"ওয়াল্টার, আমার রুপা কি এডই মূল্যহীন ?" রাজ্ঞীর কণ্ঠস্বর অতি মৃত্ সঙ্গীতমধুর ও নতম্থ র্যালের অতি নিকটবর্ত্তী।
"মধ্যাক্ সুর্য্যের পূর্ণগরিমা ভারে করিয়াও
নামগোত্রহীন একটা কুল তারকার ক্ষীণ
আলোকণাভ করিতে তোমার আকাজ্ঞা?
তোমার রাজ্ঞীর চুম্বন লাভ করিয়া আবার
অপর চুম্বন লাভ করিয়ে তোমার সাধ?
ওয়াল্টার, মূথ তোল। তোমার চক্ষের
দৃষ্টিতে আমি তোমার অস্তর-কথা পাঠ করিব।
এ কি, তোমার মূথে কোন বেদনার চিহ্ন
নাই, আপন দোষ খণ্ডনের লেংমাত্র প্রস্তান
নাই! তুমি আমারই কায় সমভাবে আমার
দিকে চাহিয়া আছ!" তোমার কপোলের
রক্তিম্মরণ কিছুমাত্র বিবর্ণ হইল না!"

মৃহুর্ত্তকাল নীরব থাকিরা এ**লিহ্নাবেধ**আরও মধুরস্বরে বলিলেন--"জুমি নিক্তর

রহিলে বে ! লজা আসিরা কি তোমার বাক-রোধ করিল ? আছো, একটা কথা শোন। चानि ट्यांगारक धकि कथा विकामा कंतिय. ভূষি ঈশ্বরকে সাক্ষী করিয়া সত্যকথা বলিও, ৰচেৎ ধৰ্মে পভিত হবে। তুমি কি এই বালি-कारक यथार्थ खानवानिए व'रानहे खारक विवाह क्रबह ?"

*

ब्रालि किव्रश्कन नोवर विश्लान। शहर নির্ভীক চিত্তে রাজ্ঞীর মুখের দিকে চাহিয়া সদস্মানে অথচ সভ্যবাদীর ফ্রার অকুষ্ঠিত ভাবে वित्रा छैठितन-"महातानि, ভावी भन्नीतक পুরুবের বেরুপ ভালবাসা সম্ভব, আমি এই त्रमणेटक रमहे जानह छान वामिडाम।"

छश्क्रभार, कोननी शाहा रवमन চৰিতে তাহার কোৰ হইতে তীক্ষ তরবারি নিফাসিত করে, সেইরূপ নিমেবের মধ্যে এণিজাবেৰ তাঁহার ক্রোড়স্থিত রম্বর্থটিত দক্তানাটি তুলিয়া লইয়া সার ওয়ালটারের মুখের উপদ্ধ সহলে নিক্ষেপ করিলেন। তাহার বুদ্ধশ্যি চারিদিকে বালসিরা উঠিল।

ब्रांग माजारेबा उठित्नन। এ अनुवासन ক্রোধবহি তাঁহার বীরমূবে জলিরা উঠিল। राहे मीर्च ऋंग्रेम स्नंह, ७ च खन्न व पतिष्कृत-মণ্ডিত, কটিলেশে নানা রব্রথচিত তরবারি-क्षांव धवः मक्तित यानमुकारवामिक हूतिका কোষ বুলিভেছে ও খলসিভেছে, সে রূপ মনোহুর বটে !

রাজীও আসন ত্যাগ করিয়াছিলেন। ভাছার সেই আর ঘাট্ বংসরের বার্দ্ধক্য সংখ্র নে দেহখানি লীকা বসনভূষণ মণিমুক্তার (यन- क्षमत्र त्यसाईटङ्किन। সেই নাতি-বাৰ্ছকোর বেধানিত বংন, নেই

क्राज्यन क्रक्षभन्त नवन, महे , राज्ञ नानिका अवर निथु ९ क्लान , ७ हिन्क त्वन তাঁহাকে শালসা ও ক্লোধের জীবন্ত প্রতিমান করিবা চিত্রিত করিয়াছিল।

রাজী তীব্র খবে চাংকার করিরা উঠি-লেন—"কে আছ পূৰ্বানে ? আমার **গ্ৰহ**রী-গণ কোথা ?"

মৃহর্ত্তের মধ্যে পরদা সরিবা পেল, ছাদশ कन गणब व्यव्हे गणक शृह मर्था व्यव्य করিল।

করেক মৃত্র্ত পূর্বে বে ব্যক্তি রাজ্ঞীর গ্রির পাত্রের মধ্যে গণ্য ছিল, এক্ষণে সেই হত-ভাগ্যের প্রতি একটি ক্ষীণ অসুলি নির্দিষ্ট कतिया এनिकार्यथ आह्न कतिराम-"मात्र **अश्राम्हे। उद्या क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र व्याप्त व्याप्त विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट विष्ट क्रिक्र विष्ट विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र विष्ट क्रिक्र विष्ट क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्र**

ভবিষাৎ অদৃষ্ট বুঝিরা সার গুরাল্টার ভীব্র স্বরে বলিয়া উঠিলেন—"অছকুপে !"

*হাঁ, সেই খানেই তোমার স্থলিদ্রা ইইবার সন্থাবনা।"

"দোহাই আপনার, আমাকে অন্তক্পে পাঠাইবেন না। আমি বন্দী থাকিলে বা कीवन भर्गाञ्च मान कतिरल यनि महात्रांगीत লেশমাত্র উপকার হয়, ভাহা হইলে আমি ঈশ্বর শপথ করিয়া বলিতেছি আমি স্বাধীনতা वा व्याचकोदन हाहि ना। किन्द माहारे আপনাম আমাকে অরকুপে প্রেরণ করি-বেন লা।"

"हेशारक अञ्चान इहेरक गहेबा बांध छ আমার সহচরীগণকে ডাকিয়া দেও। বি পাণ! আমার অর্থন্ড শিভার বুরবারে গাড়াইরা কি আমাকে ভোষায় সহিত কথা काशकाष्ठि कवितक बहेटन ? मा, नात प्रशृतिः

টার, তোষার সুহিত আমার আর কোনও
কথা নাই। আমি অনেক কথা ক'রে নিজের
পদম্ব্যাদা নষ্ট করেছি বলেই বোধ হয়।"

সহচর সহচরীগণ পারিষদবর্গের সহিত্ত আদিরা গৃহমধ্যে উপস্থিত হইলে রাজ্ঞী উচ্চ কঠে "বলিলেন—"লিস্টার, সিংহাসনের সোপানের উপর আমার হাতের দন্তানাটা যে পড়িরা রহিরাছে তাহা কি তোমবা কেহই দেখিতে পাও নাই ? ইংলণ্ডের রাজ্ঞীকে কি তাঁহার দন্তানা কুড়াইবার ছক্ত নত হইতে হইবে ?"

লিস্টার তৎক্ষণাৎ র্যালের মুথোপরি প্রক্রিপ্ত দেই দন্তানাট কুড়াইয়া নতজার হইয়া এলিজাবেথের সন্মুথে ধরিলেন। তথন তিনি তাঁহাকে ধঞ্চবাদ দিয়া বলিলেন "ভোমার প্রতি সম্ভোবের চিহ্ন- স্বরূপ আমি তোমাকে আমার অঙ্গুলি স্পর্শ করিতে অনুমতি দিলাম। বাদক্ষণা, তভেরীনিনাদ করিয়া এ স্থান হইতে অগ্রসর হও।"

সার ওরাণটার র্যানের পার্শ দিরা একে একে সকলেই গৃহত্যাগ করিল। হতাশা-পীড়িত জ্বন্দে সার ওরালটার একাকী সৈস্ত-পরিবৃত হুঁইরা তথার অবস্থান করিলেন।

(0)

ছর নাদ অস্কৃত্পে অতিবাহিত করার পর পাঁচ বংশরের অক্ত র্যালে রাজদরবার ইইতে নির্বাদিত হন। এই কর বংশর তাঁহারা বামা ত্রী উভরে তাঁহাদের প্রাম্য ভবনে বাদ করেন। তথার মনোহর পুশোছানে কুস্থমিত বীথিকার মধ্যে, মৃক্ত,আকাশের তলে, নিয় স্থান্ধি সমীরণের কোলে পদচারণা করিরা তাঁহানা তাঁহানা তাঁহানা তাঁহানা তাঁহানা তাঁহানা তাঁহানা ক্রিভিন।

মাঝে মাঝে তাঁহার পদ্মী জিজ্ঞাসা করিতেন—"তুমি কি এখন স্থাী ?" রালে
উত্তর করিতেন—"হাঁ, স্থাী বটে, কিন্তু মনে
থাকে যেন আমার অনেক সাধ এখনও অপূর্ণ
রয়েছে। ঐ অনম্ব সমুদ্রের পরপারে
ধনধান্তে পরিপূর্ণ বহুদ্ধরা পড়িয়া আছে।
তা ছাড়া ইংলভের মত এই ক্লুদ্র দেশ
এককালে দেশের লোক সংখ্যার পক্ষে অমুপ্রক্র ভারে তেনা করলে, গর্কের ইত্রের মত সকলকে
এই থানে ব'লে মরতে হবে।"

"কিন্তু ভাই ব'লে আমাদের সে দেশে যাওয়া হ'তে পারে না।"

"থাক্ থাক্! তুমি আমার কাছে ভোমার বৃদ্ধি প্রকাশ না ক'রে তোমার প্রাণটিই প্রকাশ করো। অমন মধুর প্রাণ প্রজগতে স্থার নাই।"

এই ভাবে কথা কহিতে কৃহিতে ছই জনে উত্থানপথে ভ্রমণ করিতেন। •

পাঁচ বংসরের পর বাজ্ঞীর সহিত মনোমালিক্স ঘৃচিয়া গোল। র্যালে অকুল সমুদ্র
পারে যাত্রা করিয়া আমেরিকা হইতে প্রভৃত
ধনরক্স লইয়া আসিলেন; কিন্তু ঘূর্ভাগ্য ক্রমে
প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হইয়া পুনরায় অন্ধকৃপে
আবন্ধ হইলেন।

সেই অন্ধকুপের মধ্যে র্যালে মুত্যুর অপেকা করিয়া বাদশ বর্ষ অতিবাহিত করিলেন।

প্রাণদণ্ডের পূর্বারাত্তি আদিলা উপস্থিত। তাঁহার পত্নী ও সন্তান তাঁহার নিকটে। জ্বন-কুপের অস্বান্থ্যকর বার্ আল তাঁহার সেই স্বল দেহকে কর করিয়া কেলিয়াছে। সে অঞ্ দেহ আজ নত হইরা পজিরাছে, এক হড়ের অসুলিগুলি কুঞ্চিত হইরা গিরাছে, শরীরের এক দিক মৃত দেহের ভার অসাড় হিম হইরা পঞ্জিরাছে, সে ব্রমরক্ষণ কেশগুলি আজ সর পাকিয়া উঠিয়াছে।

সেই অন্ধৰার নিশীথে মৃত্যুর বাবে দাঁড়া-ইয়া র্যাণে তাঁহার পত্নীকে সম্ভাষণ করিয়া বলিলেন—

"প্রিরে, আন্ধ তোমার সঙ্গে এই শেষ
কথা। না, না, ও স্থান থেকে ন'ড়ো না।
আন্ধ আবার সাধ হচ্চে তোমার হাতটি ধ'রে
এই হর্জন কোলের উপর তোমার বসাইরা
রাখি। কিন্তু আর তোমাকে হংল দিতে
আমার প্রবৃত্তি নাই। আমাদের এ জীবনের
স্কল হংল বেন আমারই সঙ্গে সমাধিস্থ হ'রে
খ্লিতে পরিণত হর। আমার এই হত্যার
বিচলিত হ'রো না। তোমার ভার রমণীর
শোককে সংযত্করা কর্ত্তর। তুমি আমার
কল্প বে সকল হংল বন্ধা ভোগ করেছ, তাতে
আমার মৃক্তি বা প্রাণরক্ষা না হ'লেও আমি
ভোষার সে ঋণ এ জীবনে শোধ করিতে
শারিলাম না।"

শোকবিহরণা এনিজাবেপ তাঁহার পতির চরণে নৃষ্টিতা হইয়া পড়িলেন। প্রকৃত্মচিত্ত বালক পেলিতে থেলিতে একবার নিজম হইয়া বিশ্বিত ভাবে ভাহাদের মুধ্বে দিকে চাহিল।

পদ্ধীকে নাম্বনা দিয়া ন্ত্যালে বলিয়া উঠিলেন,—

"তুমি আমার শোকে অধিকদিন বিহবেগ হইও না। বাশক প্রটির কথা মনে রেখো। মনে রেখো তাহার পিতা কৃপট কাপুরুষ ছিল না, সে মৃত্যুকে অবজ্ঞা করিতে স্থানিত। আমি আর বেশী কথা কইতে পারচি না। পৃথিবীর
কাছ থেকে বিদার নেবার সমর নিকট হ'রে ।
এল। এখন পার্থিব চিন্তা ত্যাগ করাই শ্রের।
জীবনে বে দেহ হ'তে তুমি বঞ্চিত হ'লে, মৃত্যুর
পর আমার সেই শব্দেহ নিবে আমাদের সেই
উন্থানমধ্যে সমাধি দিও।"

কিছুকণ উভরেই নীরব রহিলেন।
অন্তিমের উচ্চ্ সিত আবেগ গোপন রাথিবার
জন্ম রালে সহসা আসন ত্যাগ করিয়া উঠিলেন।
এলিজাবেথ আর হির থার্কিতে পারিলেন
না। উট্চে:ম্বরে কাঁদিরা উঠিয়া পতির শীর্ণ
বাছর উপর ঝাঁপাইয়া পড়িলেন। র্যালে
কটে তাঁহাকে আলিকন মধ্যে ধরিয়া বলিলেন—

''প্রিয়ে, বিদার! বতদিন জীবিত ছিলাম তুমিই আমার হৃদরের অধিষ্ঠাত্রী দেবী ছিলে! — এলিফাবেথ স্বামীর বাছর পরে মূর্চ্ছিতা হইরা পড়িলেন। তুর্বল দেহে পত্নীর দেহুভার বহনে অক্ষম হইরা র্যালে কছবকে উপন্থিত প্রহরীহন্তে মূর্চ্ছিতা পত্নীকে চিরদিনের জন্ত বিদার দিলেন। প্রহরীকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন—''ইহাকে গ্রহণ কর। লিখর ইহাদিগকে ক্ষম কল্পন।"

পরকণেই ঝনু ঝনু শব্দে লোহকবাট বছ

হইয়া গেল। সেই অন্ধকারমধ্যে র্যালে একা।

চকিবল ঘণ্টা পরে একটি লোক্রসপ্তরী

রম্মী পতির মৃতদেহ ভিক্ষা করিরা কম্পিত

হতে এই পত্রধানি লিখিল—"আনি আমার

মর্গগত স্বামী সার ওরাণ্টার র্যালের মৃত
দেহ সমাধিত্ব করিবার জন্ত আন্ত আপ্নাদিগের

নিকট তাঁহার শ্বপ্রার্থিনী—ঈশ্বর আমার এ
প্রার্থনা পূরণ কন্ধন।

श्रीयरश्यमाथ क्षेत्रावर्थ ।

পৃথিবীর মানব-সমাজে ভারতের স্থান। *

মত্বা জাতির মধ্যে শাষ্য ও ভাতৃভাব অপেকা -আদর্শ আর নাই এবং এই আদর্শকে কর্মে পরিণত করার চেষ্টা অপেকা উচ্চত্র মহত্তর কর্মণ্ড আর নাই। किंद्र এছলে আমাদিগের ইহা ज्ञान রাখা আবখাক যে এই আদর্শটির ভিত্তিস্থল আমাদের সত্তরাত্মার মধ্যে। যেখানে এক জাতি অপর জাতিকে ঘুণা করে বা राथात मःकीर्व मःस्त्रात्र वा गटर्वत वनवर्की इहेग्रा এক সম্প্রদায় অপর সম্প্রদায়কে হীনজান করে, সেধানে এই আভ্ভাব প্রতিষ্টিত হওয়া অসম্ভব। বেখানে আমাদের পরস্পারের মধ্যে সুবৃদ্ধি ও সহাত্ম-ভূতি থাকে, সেইথানেই এই ভাণটির উপলব্ধি সম্ভব।

এই ভাতৃভাবের আদর্শ টি অন্তরে লইয়া পৃথিবীর বিভিন্ন জাতিপণের মধ্যে আমরা যথন ভারতের প্রতি দৃষ্টিনিকেশ করি, তখন আন'দের সমুখে কতকগুলি ৰ্ণিকট ৰাধা আসিয়া উপস্থিত হয়। সৰ্বপ্ৰধান বাধা এই যে ভারতবর্ষ আদিয়ার অন্তর্গত ও ভারতবাদী আদিয়াবাদীর মধ্যে গণ্য। বহশতাকী হইতে ইয়ু-রোপ ও আমেরিকা আসিয়া ও প্রাচ্য বস্তু মাত্রকেই দুণা করিয়া আদিতেছে! ইহা এক আশ্চর্য্য ব্যাপার, কারণ ভাবিলা দেখিলে আসিলা আমাদের কে: আসিয়াই আমাদের আদি মহাদেশ। আসিয়াই পৃথিবীর বিভিন্ন বর্ণ, জাতি, ভাষা, শিল্প এবং সর্প্রো-পরি পৃথিবীর উচ্চজীবনের আদি জননী। ইয়ুরোপ ও আনেরিকার সভাভার প্রত্যেক মূলটিই আসিয়ার রদে সঞ্জীবিত ও পুষ্ট। তবে আমরা আসিয়ার প্রতি ফুৰাদৃষ্টি করি কেন ৷ পৃথিবীর বাবতীয় প্রদিদ্ধ ও * স্মহৎ ধর্মগুলির উৎপত্তি ঐ আসিয়ার ভূমিতে। যে দেশ হইতে আমরা আমানের বাইবেল ও ধর্মবিখাস পাইয়াছি, সে দেশের প্রতি আমাদের এ হীনভাব কেন ? অথচ আমাদের সকলেরই মধ্যে এই ভাবটি বর্ত্তমানু। আল বছণতালী হইতে ইয়ুরোণ তাহার

প্রকার নির্যাতন করিয়া আসিতেছে, তাহার বিশদ বর্ণনা করিবার অবসর আমার নাই। যাহা হউক, ভারতবর্ষ যে আদিয়ার মধ্যে অবস্থিত, এই ঘটনাটিই আমাদিগের ভারতবাসীকে বুঝিবার পক্ষে এবং আমাদিগের মধ্যে ভাতৃভাব প্রতিষ্ঠিত হইবার পক্ষে একটি বিরাট বাধা।

আর একটি বাধা এই যে আমাদিগের ধারণা ভারতবর্ষ "পৌত্তলিক" দেশ। বহুদিন হইতে আমরা হিন্দুদিগকে খৃষ্টান করিবার জন্ত ভথার ধর্মপ্রচারক পাঠাইয়া আদিতেছি। আমরা এই "পৌত্তলিক" কথাটি যেভাবে ব্যবহার করি, তাহাতে ভ:হার মধ্যে কি একটা ছ্ণার ভাব লুকায়িত থাকে না ৷ ইহা কি কতক অংশে বর্বের বা অসভ্যের অর্থবোধক দহে ? খৃষ্টান হইয়া আমরা কি আপনাদিগকে ধর্মে ও সভ্যতায় "পৌত্তলিক" অপেক্ষা শ্ৰেষ্ঠ বলিয়া মনে করি নাঃ বস্তুতপক্ষে ভারতে ধর্মপ্রচারক প্রেরণ করার অর্থ ই কি আমাদিগের শ্রেষ্ঠত প্রতিপাদন করার চেটা নহে এবং ইহাই কি আমাদিগের উভয়ের মধ্যে ভাত্ভাবের পকে একটি বাধাবরণ নছে ৷ আমাদিগের ধর্মপ্রচারকগণ সকলেই উদারচেতা হইতেন, তাহা হইলে হয়ত এই বাঁধার সৃষ্টি হইত না। কিন্ত ছভাগ্য বশত: ধর্মপ্রচারকগণ সকল সময়েই যে সর্বাপেকা উদারচেতা তাহা নহে। প্রকৃত-পক্ষে আমাদের দেশের ধর্মপ্রচার-সমিতিগুলি মনে করেন যে ধর্মশান্তে অনভিজ্ঞ ব্যক্তি প্রেরণ করাই সর্ব্ব-প্রথম আবশ্রক। অর্থাৎ, তাঁহারা যাঁহাদিগকে প্রেরণ করেন তাঁহারা শিক্ষাগত সংকীর্ণন্দা এবং ষে জাতির মধ্যে ধর্মপ্রচারে তাঁহারা নিযুক্ত হন, তাহা-দিগের ধর্ম বা সভাতার ভালটুকু উপলব্ধি করিতে ওাহারা অক্ষম। ধর্মপ্রচারকগণের নিকট হইতে ভারতের বিবরণ শুনিবার বা পাঠ করিবার সময়ে খুণা ও নির্দ্দরতার হারা আনিয়ার এতি যে অলেব আমাদের সর্বাদা এই কথাটি মনে রাধা কুর্তুব্য।

[🤏] विक्रमित्रकात ८ शहेन् नशस्त्र (ज, हि, সাধারল্যাও সাক্ষে এই বজ্ভাটি পাঠ করিলাছিলেন।

ষদি আমাদের ধর্মপ্রচারকগণ এদেশে ফিরিয়া আসিরা বলিতেন যে ভারতের অধিবাসিগণ আমাদিগেরই মত বুজিমান, ধর্মভাবাপন্ন, আমাদিগেরই মত ভাহাদিগের পারিবারিক জীবন পবিত্র ও চরিত্র নির্দ্ধোন, ভাহা হইলে আমাদিগের ধর্মানওলীর মধ্যে ভাহার ফল কি প্রকার হইত গ ওৎক্ষণাৎ চতুর্দ্দিকে প্রশ্ন উঠিত—তবে ধর্মান্দির প্রভারক প্রেরণ করা কেন? ধর্মপ্রচার-সমিতির আবস্টকতা কি? স্বতরাং আমারা দেখিতে পাইতেছি যে ধর্ম্মপ্রচারক পব ভারতের চিন্তা ও জীবনের ভাল দিকটি বর্ণনা হইতে বিরত হইতে বাধা—তাঁহারা কেবল ভ্যাকার হীনতম ও নিক্টতম দিকটাই আমাদের নিকট প্রকাশ করেন। ভোহার ফলে আমরা যথার্পভারতের পরিচয় কইতে বঞ্চিত্র থাকিতে বাধা কই।

ভঙ্কি আমাদিপের ইহাও মনে রাখা উচিত যে ষ্থার্থপক্ষে এই সকল ধর্মপ্রচারকের মধ্যে অতি অল লোকই ভারতের শ্রেষ্ঠ ভাষ্টির সংস্পর্ণে আসিবার ও তাহ। উপলব্ধি করিবার অবসয় লাভ করেন। ভীহাদের ধর্মপুশুক লইয়া ভাঁহাত্রা যে সকল লোকের নিকট অপ্রদর হন, তাহারা প্রধানতং তথাকার নিয়-তম শ্রেণীর নির্ক্তর অশিক্ষিত ও চরিত্রহীন বাজি। ভারতের বুদ্ধি, সাহিত্য, শিল্প ও উচ্চতর ধর্মভাব সম্বাদ্ধ তাঁহাল অপেকাকত অলই জানেন। ভটিন ই হারা যতই ভাল লোক হচন না কেন, বর্তমান ব্যবস্থার তাঁগারা ভারতের অসমপূর্ণ ও পক্ষপাতী বিবরণ দিতে বাধা। সুতরাং পাশ্চাতা দেশের পক্ষে প্রধানতঃ এই সকল ধর্মপ্রচারকের নিষ্ট হইতেই ভারতবর্ষ সম্বন্ধে জানলাভ করা ভিন্ন উপায়ভাব ব কত্ৰুর পেচনীয় ব্যাপার তাহা আমরা সকলেই বুবিতে পারিতেছি। ধরন ভারতবাদীর চরিত্র আমাদিলৈর সমূপে এর পাচিত্রে বর্ণিত হর হৈ আমরা ভাহাদিগকে উদ্ধৃত পর্বের সহিত ঘূণার চক্ষে না দেৰিলেও, অন্তঃ ৰাকেপ মিলিত একট কুপাচকে ना पिरिया शाकिएक शादि ना, एथनहे जामापिरभव উভরের মধ্যে বথার্ব জাভীয়ভাবের মূল উপাদানগুলি নট হইবা বায়। আতৃভাৰ পৰৰে চিল্লাৰ স্বৰে ভারতের কথা মনে হইলৈ আবাদের সমূপে আর

একটি বাধা আসিয়া উপ্রিত হয়—ভারতবর্ষ বিজিত

দেশ, ইংলতের অধীন; ভারতবাসী থাধীন জাতি '
নহে। বিদেশী শক্তির ভরবারিবলে ইংদের অধিবাসীগণ বশীভূত; রাজনীতিক্ষেত্রে ভাহারা ভাহাদিগের আপন ভাগাগঠনের এধিকার হইতে বঞ্চিত,—
বিদেশী প্রভু ভাহাদিগকে সর্বতোভাবে শস্ত্রেভ কিল,—
বিদেশী প্রভূ ভাহাদিগকে সর্বতোভাবে শস্ত্রেভ করে।
বিদ্যান ভিপ্রিভ করে।
ইহা আত্তাবিটিকে
নষ্ট করে। বস্তুতঃপক্ষে একটি আধীন ও একটি
পরাধীন জাতির মধ্যে রাজনৈতিক আত্তাব প্রতিন্তিত
হওয়া অসন্তব।

ভারতবাদী সাধীন আনতির শক্তি ও অধিকার ' হইতে বছভাবে ৰফিত। আমি এছলে ছুই এক্টির উল্লেখ ক্রিব বাত্র।

পৃথিবীর রাজনীতি সম্বন্ধীয় জীবন ও কর্ম্মে তাহার প্রতিনিধি প্রেরণের অধিকার্ম নাই। ওয়াশিংটনে বাইলে আমরা কি গেবিতে পাই? পৃথিবীর ক্ষাম্ম বৃহৎ সকল স্বাধীন জাতিরই কোন না কোন প্রতিনিধি তথার রহিয়াছে। কিন্তু ভারতের কোন প্রতিনিধি তথার আছে কি? কেইই না; অথচ ভারতে ত্রিশ কোটি লোকের বাস—লোক-সংখ্যায় ক্রিয়া অপেকা বিগুণ। ইয়ুরোপের কোনও রাজনরবারে কি কোনও ভারত-প্রতিনিধি নিযুক্ত আছে? একটিও নহে। ইহা অপেকা হীনতম অবহার বি কোনও জাতিকে হাপিত করা সন্তব ? অপতের সাম্যনীতির বিক্লম্বে ইহা অপেকা অবহাতম্প্রতার বার কি কিছু সন্তব ?

একটি বিষয় কাইখা ভারতবর্ষকে চীন ও জাপা-নের সহিত তুলনা করিয়া দেখ। জাপান ভাষার শ্রেট যুবকগণকে ইয়ুরোপ ও আবেরিকার বিশ্ববিদ্যা-লয় ও শিল বিশ্যালয়ে প্রেরণ করিভেছে, বাহাতে আবাদিগের দেশ হইতে শ্রেট জ্ঞান ও শিক্ষণি লাভ করিয়া, ভাষারা খদেশে বাইয়া স্ক্রাভির করে। অকাভরে সেই জ্ঞান ও শিক্ষা, শ্রেচার ক্রিক্টে সক্ষম

হয় : ৩গত চলিশ বৎসরের মধ্যে জাপান যে অসা-ধারণ উন্নতি লাভে সমর্থ হইয়াছে, ইহাই তাহার এক •প্রধান কারণ। চীনও জাপানের আদর্শ অতুকরণ क्रिडिट्रा वर्डमान मगदा आरमितिकात विश्ववित्रा-লয়ে চারি শত হইতে পাঁচ শত চীন ছাতা অধ্যয়ন ভারতেছে, এবং প্রতি বংসরই তাহাদিগের সংখ্যা वृद्धि शाहे (इटाइ) अहे मक्क यूवक शलब निक्रे হইতে চীৰ পাশ্চাভা-দেশের দেয় যাহা কিছু শ্রেঠ শিক্ষা ও জ্ঞান, ৰাহা কিছু মানসিক ও নৈতিক জ্ঞান प्रकार निजय कतिए मधर्य इरेरा। এই प्रका যুবক দেশে ফিব্লিলে চীন গবমেণ্ট ভাহার দাত্রা-জ্যের চতুর্দিকে ইহাদিগকে নেতৃত্বের পদে নিযুক্ত • कदिरवन।

ভারতবর্ষও জাপান ও চীনের স্থায় স্থদেশের কল্যাণ কল্পে আমাদিণের শিল্প বিজ্ঞান শিক্ষার জন্ম ভাহার যুৰকগণকে এ সকল দেশে প্রেরণ করিতে ৈছুক। ভারতের লক্ষ লক্ষ লোক জ্ঞান ও উন্নতি লাভের অব্য ব্যগ্র ইয়া রহিয়াছে। কতিপর ভারত-ৰাদী এদেশে আদিয়াছে বটে,-কিন্তু বৰ্ত্তমান ভারত গ্রমেণ্ট স্বাধীন স্বার্ত্তাধীন ভারতগ্রমেণ্টর স্থায় কি তাহাদিগকে প্রেরণ ও সাহাষ্য করিতেছেন ? না, তাহা নহে। ইহারা তাহাদিগের পথে বাধাই ব্দান করিতেছেন। তাহারা এখানে আসিয়া কি ক্রিতেছে দেখিবার নিমিত্ত ইহারা তাহাদিশের পশ্চাতে গুপ্তচর নিযুক্ত করিতেছেন। ভাহাদিগকে महाहे मत्म्बर्ध्व कत्म (मविट्क्टिन जाहामिश्व গতিবিধি লক্ষ্য করিতেছেন। ভারতগবমেণ্টের ইচ্ছা নহে যে ভথাকার যুবকগণ স্থানৰ ত্যাগ ক্রিয়া পাশ্চাত্য জগতের জ্ঞান লাভ করে। ুবিশেষত: আমেরিকার ক্রায় স্বাধীনতার বায়ুপূর্ণ দেশে আসার সহকো তাঁহারা নিতান্তই বিরূপ। সকল ৰাধা অভিক্ৰৰ করিয়া যে সকল যুবক আমে-রিকায় আসিয়া অধ্যয়ন করিতেছে, তাহারা যধন ভারতে প্রত্যাবর্ত্তন করিবে, তখন কি ভারত গবমে ট ভাহাদিপকে এক্সপ পদে নিযুক্ত করিবেন যাহাতে ভাষার। ভাষাদের জ্বান ও শিক্ষার স্বাবহার বার।

ৰদেশের কল্যাণ সাধুনে সমর্থ হইবে ৷ ভাহা না করিয়া গ্রমে ট ভাহাদিগকে উপেক্ষা করিবেন, বাধা थमान कतिरवन, राष्ट्रमनीजि व्यवस्थन कतिरवन, अवश प्रत्नेत्र अधान अधान भन्छनि छाश्विन्दक ना निया, **असर्वयक दे:बाजगंगटकर्रे मिर्वन। देशरे छात्रछत्र** পরাধীনতার ফল। এই প্রকারেই সামাজানীতি, অর্থাৎ একজাতি অপর জাতির সম্মতি ব্যতিরেকে তাহাকে শাসন করিবার প্রথমেই মানব সমাজের মধ্যে ভ্রাতৃভাবটিকে নষ্ট করিয়া দিতেছে।

প্রাচ্য দেশ হইতে এ দেশে যে দক্স ছাত্র আদে তাহাদের সম্বন্ধে আর একটি উল্লেখযোগ্য বিষয় আছে। रि नकन कांभानी वा ठीन हाज এ मिल व्यथायन করিতে আদে, তাহার৷ আঞ্চদিগকে জাপান ও চীনকে বুনিবার নকে সাহাষা করিয়া আমাদিগের বিশেষ উপকার করিয়া থাকে। তাহারা আমাদিগকে তাহাদিগের দেশের শ্রেষ্ঠ দিক্টি দেখাইয়া দেয়। যবন তাহার৷ আমাদিণের শ্রেষ্ঠ যুবকগণের সহিত এক শ্রেণীতে অধায়ন করিয়া তাহাদিগেরই তুলা শ্রম করে ও তাহাদিগেরই ফ্রায় উচ্চ সম্মান লাভ করে, ভখন তাহারা প্রাচ্য জাতি সম্বন্ধে আমাদিগৈর ভাস্ত শারণা দূর করিবার পক্ষে বিশেষ সন্ধায়তা করে; তাহারা দেখাইয়া দেয় যে চীন ও জাপান ঘুণার পাত্র নহে, তথাকার অধিবাসিগণ অ্যুথাদিগেরই তুল্য গুণসম্পার। এই প্রকারে তাহারা প্রাচ্য ও প্রতীচা জাতির মধ্যে ভ্রাত্ভাব প্রতিষ্ঠার পক্ষে বিশেষ সহায়তা ক্রিতে দুমুর্থ হয়। ভারত হইতে যদি অধিক সংখ্যায় ছাত্র আসা সম্ভব হইত, তাহা হইলে তাহারাও আমা-, দিগকে বুঝাইতে পারিত যে ভারতের অনেক উচ্চগুণ বর্ত্তমান আছে এবং ভারতবাসী পাশাতা জাতির সহিত সমাদনে বদিবার উপযুক্ত। এই একারে পৃথিবীর মধ্যে জাতীয় সাম্য ও ভাত্মভাব পুষু হইয়া । তথ্যী

ধর্ম প্রচারকগণের নিকট হইতে বিবরণ লাভ করা ভারত ও পাশ্চাত্য প্রদেশ উভয়েরই পক্ষে কিরূপ ক্ষতিকর তাহা পূর্বের বুঝাইয়াছি। তদ্দেশের ইংরাজ শাসনকর্তৃগণের নিকট হইতে তথাকার বিবরণ লাভ

আমাদিশের ভারত সথকে জান, লাভের আর একটি উপার। ইহাও অল শোচনীর ব্যাপার নহে। বিদেশী কোডা ও শাসনকর্তা হওয়াতে ইহারাও ধর্ম-কোরকর্মণের স্থার জপক্ষপাত বিবরণ লানে জসমর্থ। ভারতের অনেক ইংরাল অবস্থা আমাদিশেরই স্থার স্থারপরায়ণ ও অকপটিভিত্ত, এবং সতা দর্শনে ও বর্ণনে ইচ্ছুক। কিন্তু তাহাদিশের অবস্থাটা বিচার করিরা দেখ। ভারারা বিদেশী এবং ভারতবাসীর অসমাভিক্রমে ভারারিদিশের শাসন করিতেহেন। তাহাদিশের ভারতে অবস্থান সমর্থন করিবার অস্থাতা। স্করাং সকল বিধ্য তাহাদিশের আপনপক্ষের বিরুদ্ধে দর্শন বা বর্ণনা করা তাহাদিশের পক্ষে

আমেরিকায় ক্রীতদাস বাবদায় যথন প্রচলিত ছিল, তথন ক্রীতদাস অধিকারিগণের নিকট ইইতে ক্রীতনাদ ও ক্রীতদাস-প্রধা সম্বন্ধে অপক্ষপাত বিবরণ পাওনা কি সম্ভব হইত ? তাহারা কি পক্ষপাতী সম্প্রদার हिन ना ? डाइटिन्द्र मध्य चटनटक छान लाक हिलन. অনেকে বুদ্ধিমান ছিলেন, অনেকে ক্যারপরায়ণ হইতে ইচ্ছুৰ ছিলেন সতা, কিন্তু অবস্থার প্রভাবে ওাঁহারা পক্ষপাতী ভিলেন এবং ক্রীহনাস প্রধা সম্বন্ধে তাঁহানিগের বিষরণও তত্রপ হইয়া পড়িত। ভারতের ইংরাঞ-গণেরও সেই অবদা। যে লকল ইংরাজ ভারতে পমন করিয়া তথায় বছবং দর গবমে টেটর কর্মে অভিবাহিত করিয়া দেশে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া ভারতে? অবহ। বৰ্ণনাম প্ৰবৃত্ত হন, ভারত সম্বন্ধে পুত্তক অপরন করিয়া বা সংবাদপত্রে ও মানিকপত্রিকার ধাৰদাদি লিখিয়া পাশ্চাতা লগতকে ভারতবাদী म**राज क्यांन होन कट**दन—विद्यांत्री खाद्यांनिरश्च (सर्वेत्र ক্রীতথাস বাবসায়ীগণের মত ভারতবাসী ও ভারতীয় ব্যাপার স**ৰ্ব্ধ** 'ভূল্যভাবেই পক্ষপাতী। ই হাদিগের ब्रियम नार्क्ष मनत्र वार्मीनिग्रंक वह क्वांक्रि मर्द्रवाहे बरन बांबिएक इरेटन ।

পৃথিবার সমূবে ভারতকে বনীভূত রাধার উচিতা সমর্থনের অন্ত ইংলতের পক্ষে ভারতবাসীকে নিকৃষ্ট আভিয়পে বুলি করা অবুষ্ঠ আভাবিক। কিন্তু বস্ততপক্ষে ভারতবাসীরা কোন্ জাতির অর্থপিত ? ভারতের উচ্চবর্ণের অধিবাসিগণ শভোষার আমার সহিত একই ফাতির অন্তর্গত। তাহারা আর্থা; গ্রীক, রোষান্, জর্মাণ ও ইংরাজের জ্ঞাতি। অন্তর্গব তাহারা বিশেষ নিকুট আতি নহে।

তত্তির, ইংরাজগণ ভারতির সভাতাকে অবস্থাগত হীনভাবে চিত্রিত শ্রিতে অলুক হইয়া পড়েন। কিন্ত অকৃত অবস্থাটা কি ? ইংলও অসভাতার অৰ কার হইতে উত্তীৰ্ণ হইবার বহপুৰ্বে হইতেই ভারত সভাতার উচ্চশিধরে আরোহণ করিরাছিল। পুরাতন পৃথিবীর মধ্যে ভাহার সভ্যতাই স্কাপেকা প্রাচীন ও শ্রেষ্ঠ ছিল। পুরাতন পৃথিবীর যে তিনটি মহান সাহিত্য আমাদের মধ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছে— তাহা প্রীদ, ইতালি ও ভারতের সাহিত্য। প্রিবীর মধ্যে যে পাঁচ ছয়টি এধান মহাকাব্য আছে তাহা দেখিতে চাহিলে ভারত হইতে দুইটিকে গ্রহণ করিতে हरेरव। পृथिवीत मध्य मर्स्वारभका थाठीन ७ समात ভাগার সন্ধান করিলে, আমার মনে হর সংস্কৃত ভাষাকেই সে সম্মান দান করিতে আমরা বাধ্য ভাষাভম্ববিদ্গণের মতে সংস্কৃত ভাষাই পুথিবীর মধ্যে সর্বাপেকা নির্দোব ও সুসঙ্গত ভাবা। ভারতবাসী পুৰিবীকে ভাহার যে কভকগুলি শ্রেষ্ঠ আধ্যাত্মিক নীতি দান করিয়াছে.—সে নীতিগুলি গ্রীস বা অর্থাণির শ্রেষ্ঠ নীভির পার্যে আসন পাইবার উপযুক্ত। ভংহাত্রা পুথিবীকে যে শিলকলা দান করিয়াছে, তাহা সৰুল জাতির শ্রেষ্ঠ শিল্পমধ্যে গৌরবাসন পাইবার डेनचुक्त। এই कांडिटकई देःब्राक्शन डाहारमञ ষণার্শ গৌরবচ্যুত করিয়া হীনভাবে চিত্রিত করেন।

ইংরাজের ভারতে অবস্থানের সমর্থনে আর এক

মুক্তি তাঁহার। প্রহোগ করিরা থাকেন থে, তথার

শান্তিরক্ষার লক্ত, পরশারের কথার আবছিতি আবশুক।

করিবাল লক্ত ভারানের তথার আবছিতি আবশুক।

কিন্ত প্রকৃত অবস্থা আবলা কি বেবিতে গাই।

ভারতের ইতিহাসে আমন্ত্রী দেবি বে ভারতবর্ধ ইয়্বোপ অপেকা চির্টিনই শান্তিপূর্ব। দ্র্শ্মণির ত্রিশ

বংগরের বৃদ্ধের ক্তার ভাষা ভাষার ভোল বৃদ্ধ্যাপার আনা-

দের নরজপোচর ইয় मা। নেশালিয়নের জীবনকালে • ভারত অনতিবিলফেই কর্মক্ষ শাসনশক্তি প্রতিষ্ঠার রক্তপাতের ভার বা আমেরিকার গৃহযুদ্ধের ভার কৈান্ত দৰ্বনাশকর ব্যাপার আমরা তথায় দেখিতে शाह ना। किन्न मिह कांत्र कि कि किन विमानी मक्ति. रायन होन, अञ्चनरत्र मक्तिमानी विनया, বৃত্তপাত নিশারণের জয় ইয়ুরোপকে জয় করিয়া वाशन वशीत वाधित वाभावेश मबर्चन कता मज्ञ । হইত'় না দেই শক্তি আমেরিকায় গৃহযুদ্ধের জন্ম ্ৰাষাদিগকে পদানত ৱাখিলে তাহা সকত হইত 🏾

পাশ্চাতাপণ বলেৰ ভাৱতবৰ্ষ খাহত-শাদৰে অকম। ষদি তাহা সত্য হয় তাহা হইলে ইহা ইংলভের বিক্লমে কি দারুণ অভিযোগ আনিয়া উপস্থিত করে ? ইংলও আসিবার পূর্বেত ভারত স্বায়ত্রশাসনে অক্ষম ছিল না! আজ দেড়শত বংসর আাপী ইংলভের শিক-কতার ফলে কি তাহার এ অধংপতন আনিয়া উপস্থিত করিয়াছে ? আমরা পূর্বেই বলিয়াছি যে ইংলও বা ইয়ুরোপের অপর কোনও দেশ অসভ্যতার অক্কার হইতে উত্তীৰ্ণ হইবার বীছপূৰ্ব হইতেই ভারত উচ্চ সভাতা ও উন্নত শাসননীতির অধিকারী ছিল। ইংলও আদিবার পৃথেব তিন সহস্র বৎদর ধরিয়া ভারতের রাজ্য ও সাত্রাজ্যগুলি আসিয়ামধ্যে সর্ব্বপ্রধান স্থানে অভিষ্ঠিত ছিল। এ পুৰিবীর মধ্যে শ্রেষ্ঠ লোক-শাসত, রাজনীতিজ্ঞ ও অর্থনীতিজ্ঞের মধ্যে কতক-গুলিকে ভারতভূমিই প্রস্ব করিয়াছে। তবে চংলও উপস্থিত ইইবামাত্র সে স্বার্ডশাসনের শক্তি হারাইয়া क्लिन, हेशद व्यर्थ कि ? এ कथा मठा य है:नाउन আগমনের কালে ভারতবর্ষ অলান্তি ও বিশুখালার गत्रा नियब्बिक श्रेषा পড़ियाहिल ; कांत्रण आयारमत এছলে শারণ রাধা কর্তব্য যে মোগল সামাজা দেই সবেমাত্র ভালিয়া পড়িতে আরক্ত করিয়াছিল এবং দেশের চতুদিকে নৃতন রাজনৈতিক ব্যবস্থা প্রতিষ্ঠিত করিবার একটা চেষ্টা চলিতেছিল,—এই বিশেব অবস্থার ফলেই ইংলও ভারতের রাজনীতিকেত্রে শ্লাপণি করিবার হুযোগ লাভ করিয়াছিলেন। কিন্ত ভারতের প্রকৃতি হইতে আমাণের মনে হয় বে ইয়ু-রাগ্রীর শক্তিক্তলি আসিয়া হতকেপ না করিলে,

সক্ষ হইত।

ভারতের শাসনশক্তির অভাবের অভিবোগ সম্বল্পে আর একটি অকাট্য উত্তর এই যে, এখনও প্র্যাস্ত ভারতের অনেকাংশে ভারতবাদী স্বায়ত্তশাসন ক্রি-তেছে—এবং তাহা বেশ পারদর্শিতার সহিতই চালাইভেছে। ইহা কাহারও অবিদিভ নাই যে ভারতে সর্বশ্রেষ্ঠ শাদনবিধি ইংরাজের রাজ্যে নহে, ভারতবাদীর স্বাধীন রাজ্যমধ্যেই প্রচলিত; বরোদ। ও মহিশুর রাজ্যই এ বিষয়ে অপ্রণী। ভারতে আজিও কতকগুলি দেশীর রাজ্য রহিয়াছে যাহারা সাধারণ ভাবে ইংরাজের অধীন হইলেও, আভ্যন্তরীণ বিষয়ে কতকাংশে স্বারত্বাসনে ক্রাধিকারী। এই সকল রাজ্যমধ্যে, বিশেষতঃ বরোদারাজ্যে, প্রজাগণ ভারতের অণর যে কোন রাজ্যের অধিবাসী অপেক্ষা অধিক স্বাধান, সমৃদ্ধিশালী, তৃপ্ত এবং অধিকত্তর উন্নতি-শীল। উপরিউক্ত ছুইটি দেশীয় রাজ্যের সাধারণ শিকা সম্বন্ধে শ্রেষ্ঠভাটি লক্ষ্য করিবার বিষয়। সাধারণ শিক্ষার জন্ম প্রত্যেক প্রজার উপুর মহিশুর রাজ্য ব্রিটিশ গ্রমেণ্ট অপেক্ষা তিন গুণের অধিক ব্যয় করিয়া থাকেন। আবে বরোদা রাল্যে সাধারণ শিকা বিনামুল্যেই বিভারিত হইবা থাকে। সেধানে সকল প্ৰকাই, কিন্ত্ৰী কি পুরুষ পিক্ষালাভে বাধ্য। এ অবস্থা ত্রিটিশ ভারতের প্রজাগণের পক্ষে স্বগ্নাভীত ব্যাপার। শিক্ষা বিষয়ে বরোদা রাজ্য ইয়ুরোপ वा कारमिक कांद्र अधान कांडिश एन ममजूना। এই ছুই রাজ্যের সহিত ব্রিটিশ ভারতের তুলনা করিলে ুদেখিতে পাইবে যে তথার যে সামাক্ত শিক্ষাটুকু দেওয়া হয় সেটুকু হইতেও দেশের দশজন বালকের মধ্যে नप्रक्रन विकेष्ठ এवर ১৪৪ জन वाकि नद्र मर्पा ১৪७ জন ৰঞ্চিত।

यथार्थ कथा এই यে अज्ञन এकहिं धै श्रवू श्रवाराव উল্লেখ করা অসম্ভব, যাহা হারা প্রমাণ হইতে পারে যে সুযোগ পাইলে ভারত স্বায়ত্তশাদনে অক্ষ। আজ ভারতে এমন এক পালামেণ্ট গঠন করা ছংদাধ্য व्याणात्र मञ्ज, बाहात मक्तान मक्कला ७ উक्त हिंददबन ভাবে আপানের অন্ধর পার্লাবেণ্টের বা চীনের ভাবী
পার্লাবেণ্টের সভাগণের অপেকা কোন অংশ হীন
ইইবার সভাবনা। অর্থাৎ বর্তমান ভারতের দেশীর
রাজ্যের ও বিটিশ প্রদেশসমূহের নেতৃগণের মধ্যে
এমন সকল ব্যক্তি রহিরাছেন যাঁহাদিগকে লইয়া
ভারতের একটি লাতীর পার্লাবেণ্ট গঠিত করিলে,
ভাহা পারদর্শিতা ও নৈতিক চরিত্রের বলে পাশ্চাত্য
অসতের বে কোন পার্লাবেণ্ট অপেকা হীন হইবে
বলিয়া আশ্রা করার কোনও কারণ নাই।

আৰু ভারতে এক নবভাব জাগ্রত হইয়া উঠিরাছে। ভারতবাসীর অস্তরে একটা ন্তন আশা
ও প্রতিজ্ঞা উবুদ্ধ হইয়া উঠিতেছে এবং তাহা
দেশের নৃতন জাতীর দলের মধ্যে বিকাশ লাভ করিভেছে। ভারতের এই ভাবটি পরাধীন জাতির জাগরণ
ও প্রতিবাদ ভিল্ল আর কিছুই নহে। একদিন যে
জাতি ভ্র-খাত ছিল এবং আজিও যে তাহার
বাভাবিক শ্রেতা সম্বন্ধ সচেতন, ইহা তাহার ধূলি
ইইতে উঠিবার, পুনরার আপন পদে নির্ভর করিয়া
বীড়াইবার,তেই। বারা।

আৰু নৈড়লত বংগর ভারতবাসীর স্বন্মত্মি বিদেশীর লীলারল, কা অনু টুরাট মিলের ভাবায় 'ইংলতের গোচারণ ভূমি' হইরা রহিয়াছে। আন ভারাদের এই ভাবটি ভারাদের মনেশকে কেন্দ্র আপনার ধন বলিয়া কিরিয়া পাইবার একটা চেটা মাত্র। ভারতবাসী যে বাধীনতা লাভের জন্ম উদ্প্রীব সে খাধীনতার উপর ভারার ক্রমাণত অধিকার। সে খাধীনতার ভারার ক্রমাণত অধিকার। সে খাধীনতা অর্থে ভারাদের আপন বিবি আপন শিক্স ও আপন ক্রাতীর জীবন গঠিত করিবার শক্তিলাভ ভিল্ল আর কিছুই,

শুৰে আপাদের ক্ষার পার্লাবেণ্টের বা চীনের ভাবী - নছে। তাহারা এ পৃথিবীর বানৰ স্বাল্প আঠার-পার্লাবেণ্টের সভাগণের অর্ণেকা কোন আংশে হীন স্বাজের বধ্যে একটা ুনির্দ্ধিট সম্মানসূচক আসন হইবার সম্বাবনা। অর্থাৎ বর্তমান ভারতের দেশীয় পাইবার জন্ম উৎস্ক। এ আসন তাহাদের আড়ে জ্যোর পি ব্রিটিশ প্রদেশসর্ভের নেতুগণের মধ্যে করাও উচিত।

> व्यापि यांश विनिधाय छाहात स्वत दक्छ छात्र वर्ष না ব্ৰেন। ভাহাদের এই ভাবটির এমন অর্থ ন্তু ষে তাহার। ইংলও এইতে বিচ্ছিত্র হইবার বঞ্চ বাঞা। ভারতবাসী ৷ নেতৃগণ ইহা বার বার স্পষ্টাক্ষরে প্রকাশও क्रिग्राह्म। ७८४ এই ভাষ্ট্র অর্থে ইহা निःम्रान्स् বুঝা যায় যে যতদিন ভাহারা ব্রিটিশ সামাল্যের সহিত সংযুক্ত থাকিবে, তভদিন তাহারা নিঃসহায় অবীন श्रमा वा मादिष्ठीन श्रमुगायत्र राख माख्यीन क्रीज-नारमञ्जाब ना शाकिका जिप्ति धाजाब अवन्ति व्यवन . कारत व्यक्तिकाती इहेम्स् शाक्टि ठाव्र। देशव व्यर्व • এই বে ভারতব্যকেও ক্যানাডা বা অষ্ট্রেলিয়ার মত माञ्चाबा मर्या এको। भठत ज्ञान (४७३) व्यावश्रक धरः अरे मक्त काबीन, काय्रडनामनाधिकाती उपनिद्वदन्त कात्र ভারতকেও থবেশী শাগন দান করা আবশ্বক। ভারতবাদীর এ দাবী কি ক্রাষ্য নহে ? এ প্রশ্নের উত্তরে কেবল ভারভবাগী নহে, অনেক শ্রেষ্ট চরিত্র ইংবাৰত অকণট চিত্ত এ স্থাষ্যতা স্বীকার করিয়া থাকেন। এই উদ্দেশ্য সিদ্ধির লক্ত ভারত বে ছুংসাধ্য উवार्य अवुक इहेग्राष्ट्,—ছ:नाधा, कावन এ পुविवीरक रयव्यागात्री मात्रियशेन मालिक, व्यवद्यात्र जाएम जिल्ल ওংহার আপন ক্ষমতাকে পরের হল্ডে ডুলিয়া দিতে वामत्रा वड़ এकडा प्यविद्ध भारे ना,—डाहाट दम म-ज काञ्जिहे उपात्रहा ७ वाबीनडाब्यि बार्न्सर्वत निक्रे बार्श्वाक महायूकुणि नाम क्विर्य मत्नद नाहै।

কোচিন-চীন।

৯ই ফেব্ৰুৱারী

বকী দৈয়দ্দ আপনাদিগকে ভাগ্রত রাধিবার জন্ত, ১৫ মিনিট অন্তর, ছইটা ছোট বানের চাক্তি লইয়া কাজাইতেছে। নসস্ত রাত্রিই এই শক্ষ শোনা বাইতেছে। এই
সামি বেচারিদিগের কাসির শক্ষও ক্রমাগত
আমাদের কানে আসিতেছে। অ্যানামবাসীদিগের পক্ষে এই পার্কজ্ঞাটি

অভ্য**ন্ত**িথা। ভারা-ইচ্ছীস্থে এখানে আসে নাই। সৈনিক কাজের সমুরোধে বাধ্য হইয়া আসিরাছে।

• পুর প্রাক্ষালেই আমরা ঘোড়ার চড়িয়া
(Travan) ত্রাভানের অভিমুপে যাত্রা
করিলাম। আমাদের বোজ্জাবুজ্কি বহিবার
জ্ঞান পাহারার লোকেরা যে সকল কুলি
যোগাড় করিয়াছিল, তাহাদের আসিতে একটু
বিলম্ম হইল। রক্ষীদলের ফ্রাসী-স্নার
বলিলেন;—"গত্ত রাত্রে যদি তাদের ক্রেদ
করিয়া রাধিতাম, তাহা হইণে নিশ্চয়ই
তাহারা আমাদের হাতের মধ্যে থাকিত…"

পোয়া ঘণ্টা ধরিয়া, কত স্থরম্য অরণ্যের
মধ্য দিরা আমরা চলিতে লাগিলাম। এই
অরণ্যগুলা,—সিংহল ও ববছীপের অরণ্যের
ভার বৃহৎ। নিবিড়° জঙ্গলের মধ্য হইতে
লতা ও পর্গাছায় আছের কত ব্র্যান বৃহ্দ
মাথা তুলিয়া রহিয়াছে; তাহাদের শাখা
প্রশাখার বানর ও টিয়াপাথীরা বাস করে;
মাঝে মাঝে, দলিত বৃক্ষাদির মধ্যে, মাটির
উপর বৃড় বড় পায়ের ধাগ দেখা যাইতেছে।
এই সমস্ক বুনো হাতীর পদচিত্র।

মাঠ ময়দান কুয়ালায় আছেয়। এমন কি
পর্বত-চুড়ার উপর হইতেও,— রক্ষাদির মধ্যে,
একটা কুয়ালায় সমৃদ্র বই আর কিছুই দেখা
যায় না। পর্বতের পায়ে-গায়ে ছোট-ছোট্
মেঘ চলিয়া বেড়াইতেছে। ছায়ে (Hue) নামক
গণ্ডগ্রামে, আানাম্-সমাটের প্রালাদে, আময়া
এই প্রকার দৃশ্রের ছবি দেখিয়াছিলাম। এই
সকল চিত্র তথন অন্ত্র-কল্পনাপ্রস্ত বলিয়া
মনে হইয়াছিল, কিছ এখন যতই দেশের
সহিত্র পরিচয় হইতেছে, তত্তই এই সব

চিত্রগতদৃশ্র বাস্তবের অমুরূপ বলিরা মনে হইতেছে।

এই রহস্তমর স্বরণ্যের মধ্য দিয়া, রহস্তমর বড় বড় গাছের নীচে দিয়া আমরা অখারোহণে, ত্রাভানে আদিয়া পৌছিলাম।

এথানকার রক্ষীদৈগুদলের নেতা—ফরাসীজাতিভ্ক্ত একজন স্থাইদ্। ছেলেটি বেশ
সৌম্যদর্শন, কর্মিষ্ঠ ও আমুদে। পূর্বে যেমন
তিনি ট্রামির (Tramy) আড্ডাটি গড়িয়া
তুলিয়াছিলেন, সেইরূপ এখন তিনি ট্রাভানের
(Travan) আড্ডাটি গড়িয়া তুলিবার উন্তোগে
আছেন; তিনি তাঁহার লোকজনের বারা
কতকগুলা কাঠের হর ও কতকগুলা চুনকাম-করা হর তৈরী করাইয়াছেন। তাঁহার
ছকুমে, আ্লামানাসী সৈনিকেরা ইট তৈয়ানী
করিতেছে, তক্তা প্রস্তুত করিতেছে, শাকসক্রির চায করিতেছে, ছাগ ও থর্গোদ
পালিতেছে।

অপরাত্নে, রক্ষীদলের সদ্দার, একজন বুদ্ধ
প্রধান মোইকে লইয়া আদিল তাহার নাম
"নোয়া" (Noah)। আমরা তাহাকে
জানাইলাম যে, আমরা পার্পত্য প্রদেশ দিয়া
তু-নাক্ (Tou-Nac) পর্যান্ত থাইতে ইচ্ছা
করি। আমাদের এই অসমসাহসিক
সংকল্লের কথা শুনিয়া বুদ্ধ সদ্দার ভীত হইল;
যদি তাহার দলের লোক ছাড়া কল্য দলের
লোক আমাদিগকে আক্রমণ করে ভাহা
হইলে কি হইবে ?—তথন আমুরা তাহাকে
এক পাত্র অ্ন-অ্ন্ন্ (স্কুরা) দিলাম। নোরা
ব্রুত্বা-পাত্রটি আমাদের সকলের সম্মুথে এক
একবার ধরিল; আমরা একে-একে স্বাই সেই
স্কুরায় স্লামাদের অস্কুল, ডুবাইলাম, এবং

ভাহাদের রীতি অনুসারে সেই আঙ্গুল চুবিলাম; সে, কতকণ্ডলা মন্ত্র আওড়াইয়া ভাহার পর সেই স্থরা পান করিতে প্রবৃত্ত হইল। স্থরার প্রভাবে তথনি তাহার সমস্ত ভর-ভাবনা কোথায় উড়িয়া গেল। আমাদের যাত্রা যাহাতে সফল হয়—আমাদের সাহায্যার্থে তাহার কতকগুলি লোককে সে আমাদের মঙ্গে পাঠাইতে স্বীকৃত হইল। আভান্-আডার প্রধান, এক দল রক্ষী-সেনা লইয়া তু-নাক্ (Tou-Nac) পর্যাস্ত व्यामात्रत मान याहेर्यन बिल्हा जित्र कतिराजन।

45.

গত বৎসর, মোইদিগের কতকগুলা শাখা-জাতি ট্রামি-হিত মুরোপীর উপনিবেশের कूठी मूठे करत ७ जानारेश (मन। (मरे ममरत्र) তাহাদের বিকল্পে এক দল রক্ষী-দৈল্প প্রেরিড হয়, এবং সেই যুদ্ধে উদ্ৰেয় পক্ষেত্ৰই কতকপ্ৰলা লোক নিহত হয়প হইতে পারে, এই সকল শক্রজাতিরা অন্ত যুরোপীয়দিগকে আক্রমণ করিয়া, প্রতিশোধ লইবার চেষ্টার আছে: আবশ্রক হইলে, ভাহাদের আক্রমণ প্রভিরোধ করিবার জঞ্জামাদের প্রস্তুত হইতে হইবে। শ্ৰীজ্যোতিবিজ্ঞনাথ ঠাকুর।

চীনের কবিতা।

বদন্তের প্রত্যাবর্ত্তন।

(ऋकूद हरेट)

किद्र(प चलपल व्यशांध नीलवन, नीन क्यन छात्र मूरहेरह; বনের পথ ধরি' চলেছ युम्बद्री नोल कमल रहति हुरिएह। ৰাণ্সা ৰোণে ৰাণে वाषिष्ठ वाशू कें(भ, পিচের শাবে শাবে পাভার হচী: कांडेरवब युद्ध हाव! ब्रहिट्ड कि य यात्रा ছড়ায়ে বৰ পথে সোনার কুচি। চলে कमल-मबी, नीन करन नार्व' वन विक्रम, जिल्ला । ध्वस छा । जारनम् धकाकात्र চলিতে পিছে ভার শুনি গো বারবার পুরাণ তান :---'নিখিলে আছে মি:ল काहिनी बनामि म यां किल भूबाउन र'ल तम नव : কালের বিবে জরা ভক্ৰ হল ব্য়া, **পূর্াণ আবে नव द्वीरवादनव ।'**

অশ্রে ।

(ওয়াং-সেং-জু হইতে)

টাদের নৌকা ভাসিয়া চলেছে শৈল-শিধর পরে. প্রদীপের আলো বরে: অভীত অৰুত বসস্ত আজি বুকে মোর হাছা করে, আর অঁথি জলে ভরে, ষরমী নারিল মরম ব্ঝিতে, এ হব রাপিতে ঠাই नाहे (मा क्यायां नाहे।

> বাসন্তী স্বপ্ন। (ৎসেন্-ৎসান্ হইতে) चानात्र चांधात चटन, নাতে এগেছিল হাজা ৰাভান कांस्थी जोनास्टरः । व्यामाद्य विश्वित्रा वृद्य किरत त्नर्व हूर्ण हूर्ण बल "खरव ! छेफ् छेफ् यन छेकाव जानित्क

নাগরে চলিন ধারা,
জ্যোৎসা-জড়িত শ্লুতেক বোজন
মিলার অপন পারা।
মন-রাধা ও গো মনের রাধাল।
এমু কি ভোষারি দেশে।
চান্দা নদীর কিনারে কিনারে
• ফাগুনী হাওয়ায় ভেসে!

ক্ষণিক স্বপ্লাবেল
আঁথির পলক পড়িতে টুটিল,—
হ'রে গেল নিঃশেব !
ব্যথিত নয়ন লুকামু ঘেষন
বিতথ শ্যা বাঝে,
প্রাণ আমার হ'ল উপনীত
অমনি তোষার কাছে!

কোথায় চম্পাপুৰ !
কোথা আমি, হায়, তুমি বা কোথায়,
শতেক যোজন দুৱ !
মাঝে ব্যবধান গিরি, নদী, গ্রাম,
গথে বাধা শত শত,
হুপ্ত মু'বানি ছু'ৱে এফু তব্,—
চক্তে,—হাওয়ার মত !

মণিহারা।

(মোং-হৌ-জান্ হইতে)

রক্ত আলো মিলিয়ে গেল

ইতন্তঃ করে,
মৌন চাঁদের সুষ্যাতে

 রাজি ওঠে ভরে'।

জান্লা খুলে ষাদ্লা হাওয়া

নিই গো মাথা পেভে,

কালো চুলের লহর দোলে
জ্যোৎমা তরঙ্গেতে !
নিশার বায়ু নীলপদ্মের
পোপন কথা বলে,
টুপ টুপিয়ে শিশির পড়ে
তর ঝাউয়ের তলে ।
ইচ্ছা করে—বাজাই বীণা ;
শুন্বে কে ভা' আর !
যুতের জগৎ জাগায় এমন
শক্তি আছে কার !
এম্নি করে' স্বপ্ন মিলার
উড়ো পাষীর সাধে !
মনের মাঝে হারা শ্বণি
পাই গো গভীর রাতে !

সে।

(স্কুম্ভ হইতে)

বনে, প্রাপ্তরে, শৈল শিখরে সে আছে সীমার পারে,
সে রয়েছে লোক-লোচন্দির অগোচরে ;
ল্প্র-আলাপ বিশ্ব রাগিণী লিপ্ত করিছে তারে,
পান্থ পানীর সাধী হয়ে দে বিহরে।
নিভান্ন নিবিড় পদ্দা দোলায়ে বাতাস বেমন ক'রে
যার গো জানায়ে আগন আবিভার,—
বাংশের বাঁলিতে পশিরা যেমন নিশ্বাস ধরা পড়ে'
ফুকারি, প্রকাশে গোপন গভীর ভাব,—
তেমনি করিরা মারে মারে সে বে ধরা দিতে কাছে
আাসে,

ধরিতে গেলেই পলায়ে পলাবে ফিরে,
নব বেশ বাদ, নব বিস্তাস নিভি নব হাসি াসে
বিহরে লীলায় অকুলের তীরে তীরে!

শীসত্যেক্তনাথ দত্ত।

क्ट मि श्रम सम्बद्ध---

গড়িতেছে মনোমাঝে থেকে নিরস্কর 🕟

বি বিট্ খাছাল—একভালা।

বিচিত্র রূপেতে বিনি অতি মনোহর। বেরূপ হইলে দীন্ মনোভাব গতিহীন্ আনন্দ মুরতি বাঁরি মনেরে বিচিত্র করি। তিলেক বিচ্ছেদে বাঁর ব্যাকুল অস্তর ॥ ्र औपठो (रमनठा (पर्वा) ${ 1! } { 1!$ (कं• < न পরম **ञ्• म র • • इ** • । १ - १ - मिशा I शांशा - मा। शां-नाना। मां-नर्जामा। पर्मा-वधांशा I বিচি - অ - কা পে - তে যি - নি I मा शा जा। ज्ञा-मा ता। शा-ा-मशा। मा-धा शा II शा। मा शमा ता I चा**छित्र । ता॰ इ द ॰ ॰ "कि॰ म** चा न न पू র তি • বারি • • • ম নেরে,বি চিতা• . । अन्ना था-नथा । $_{_{\#}}$ (পथा-पर्मा र्मा । पथा प्रमा गजा) $\} \mathbf{I}$ -পा-। मा । $\{$ मा पथा ना \mathbf{I} আ ন. দ মূ • • গ ড়িভে'ছে 爷何. I जी भंगीन्त्री। जी जी त्रेंगी। - ना - जी ना। धा - नधा भा I भा - धशा था। म लां• भारतः • • एथं स्म • नि । ना - i - जर्ना। (त्था - नार्जा)। । -था-ना-भा। मा-धाभा II ना। नानानाना ग ••• "কে•সে" বে রুপ্র • • 5 I ना नर्जा-र्ज्जा। (नधा - शा - १। - १ - १ ना)। नधा-भा-धभा। - मा-भा गा। हेल • नै • न् • व तौ • • 1 मा भा भने I र्ज्ज नाः-४:। नधा-नधा भमा । - मना-धना-मना । -नमा-नमा-नजी I নোভাৰ গতি • হী • • • • I-मा-र्वनाः [शाशाशाः क्यामा-। शाक्ता-। I (-1-1ना)ः] न् • छि । ज वि । छ । ज • • • छ • I जा-जी नथा। शथा-ना था। शा-ा-मणा। मा-था शा IIII न व खद • বা • কু श्रिक्षणी हिम्बर्ग त्ववी।

পোষ্যপুত্ৰ। (প্ৰাহঃভি)

(२०)

সে দিন শক্ষীপুরের চৌধুরীবাড়ী ভারি ধুম। ঠাকুরদালানের যোটা মোটা থামের মাথার **(** एत्रमाझ भाषा विकास क्षेत्र । चारत হারে আমপাতার মালা ঝুলান, রালা নিশানে লাগান সকু মোটা নানানু আকারের জরি-গুলা রৌড় পড়িয়া ঝক মক করিয়া জলিতেছিল। প্রুরাতন মন্দিরের মধ্যে রূপার **লোলনার, রাধাখ্যামের** যুগলমূর্ত্তি স্থাপিত; ধুপের পবিত্র গছে চতুর্দিক আমোদিত হইয়া উঠিতেছিল। ্মন্দিরের অপর পার্যে ঠিক রাধাশ্রামের সম্মুথদিকেই এক মর্ম্মরবেদীর উপর রজভকান্তি মহাদেবের বক্ষোপরি বিরাজিতা অহ্রনার্শিনী মহাশক্তি। বন্ধাও তাঁহার কঠের মুওমালা, হত্তে জ্ঞান অসি ধারণ করিয়া তিনি অঞ্চানরূপী দানব गक्नरक निरुष्ठ क्रिट्डर्डन, मार्वित्र यार्शिख বাহ্ছিত পদম্পর্লে শিবেও শিবত্ব লাভ করে। পরমাপ্রকৃতি একণে স্থিতি সংহারকারিণী। খ্রামান করের বামভাগে নুতন উঠিয়াছে, স্থনর কারুকার্য্যক্ত ছগ্ধফেণ্ডভ্র দেবালয় নির্মাল ক্র্যালোকে সবুজ গাছগুলার मुबंबान नीन चाकारनंत्र প্राप्त प्रशोहक छन মেঘধণ্ডের মতন দেখাইতেছে। পত্রে পুশে •মঙ্গলঘট ও কদলী বুকে স্থােভিত এই মন্দির শক্তির সাধের রাজরাজেশ্বরীর মন্দির। যন্দির প্রতিষ্ঠা আৰু মহাসমারোহের সহিত শশ্যর ছইয়া গেল। মন্দ্রির হোমাদি বছকণ হইরা গিরাছে কিন্তু এখনও চণ্ডিপাঠ শেষ र्व नार्रे। बाम्भ सूनं बाक्षर्वत्र मरश পश्चिष्ठ

হরিনারায়ণ ভক্তি গদৃগদ কঠে অ্ললিত ভাষার পাঠ করিতেছিলেন

"দেবী প্রপন্নাতি হবে প্রদীদ,

প্ৰদীদ মাতৰ্জগতোখিলক. প্রদীদবিষেশ্বরী পাহি বিশ্বম্ ত্মীশরী দেবী চরাচরশু" ফেঁটা তিলক কণ্ডিধারী ভক্তগণ এবং ছাইমাখা গেরুয়াপরা সন্ন্যাসী অবধৃত অনেকগুলি একত্র হইয়া কেহ রাধাস্তামমূলিরের দালানে কেহ কেহ খ্রামা বা রাজরাজেখরী মন্দিরের সমুখে তর্ক বিতর্ক কলহ কোলাহলের দ্বারা পূজা রাত্তি সরগরম রাথিয়াছিল। ঠাকুরবাড়ি ও অভিথি-শালার আজ মস্ত বড় একটা যজের ব্যাপার চলিতেছিল। শান্তি সর্বাতো দেবীদর্শন করিতে আদিয়াছিল। জয়পুরী শিরীর ভাস্কর্যা-পরাকাষ্ঠাস্তরূপ 'সেই মর্ম্মর নৈপুণ্যের প্রতিমাকে স্বহন্তে অলহার বস্ত্রে সাঞ্চাইরা দে ভক্তি ও আনন্দের আবেগে বাক্শুন্ত হইরা অপলকে তাঁহার দিকে চাহিয়া রহিল। তথন চারিদিক হইতে দেবীর অভিষেক দ্রব্য সম্ভার আনীত হইতেছে; লোকে লোকারণা। খ্রামা-•কাস্ত ভক্তিভরে প্রণাম করিয়া উঠিয়া বধুকে जिक्छात्रा कतिलन "त्कमन मा, रायमन तहरत्र हितन তেমনি পেয়েছ তো ? বধু সাঞ্ছে মুম্বজি জানাইয়া পরে বলিল "কিন্ত ভনেছি তপজা ৰায়া প্ৰথমে মহারুদ্ররপিণীকে প্রসন্না করতে পারলে তারপর সাধক তাহার রাজনাবেশ্রী মূর্ত্তি দেখতে পার। খোর ঝঞ্চা অমাবস্তা ও मानान • छोहात माधनात चन, देखितवत स

समत्रामिक मान ठाँहात्र मार्थना । त्रहे यहा কঠোর তপৰারা জজ্ঞান অহুর নাশ হইণে তবে ভাঁহাকে রাজরাজেখরী মূর্জিতে পাইবে। কিছ তা না করেই যে একেবারে মার वाक्वारक्षत्री मृर्खि हाशना कत्रत्छ वरमिह विन তিনি অপ্রসরাহন ?" বৃদ্ধ লমীদার বিশ্বরোৎফুল-নেত্রে কুত্র বালিকার দিকে চাহিয়া বুগ্রহরে কহিয়া উঠিলেন "হিন্দুর সাধনা তো এক জন্মের জন্ত না পা আমাদের মতন বৃদ্ধদের मात्राकत्मव माधनात्र कत्न मा विचमत्री यनि প্রসন্না হয়ে তার পবিত্র নির্মাণ্য হতে একটি মাত্র কুল প্রদান করেন তাতেই আমরা ধন্ত হইতে পারি। শান্তি মা! তোমার বাজরাজেশরী ভোমাকে তাঁহার সহিত এখানে চিরপ্রতিষ্ঠিতা রাধুন।" বৃদ্ধের স্বেহপরিপূর্ণ হুদর বিষাদের ছারা দুরে সরাইরা ফেলিতে भीतिष्क्रिण ना। नर्सनारे छारात्र आत्वत মধ্যে বে্ন কি একটা অপ্রকাশ্র অরকার ঘুরিয়া বেড়াইত।

শান্তি মৃহ্রের ভাবনা ভূলিয়া হাসিম্বে বলিল "জাঠামশাই।" আনন্দমঠের মতন আমাদেরো তিনটি মৃর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করলে বেশ হয়। মা বা ছিলেন, বা আছেন, বা হবেন।" ভামাকান্ত হাসিলেন "মা এইজন্তেই শান্তে বলে লোভ বাড়াতে নাই।"

বান্ধণভোজন বাঙ্গালিভোজন ইত্যাদির সঙ্গে থিরেটারের প্রতাবেশ ঘটা লাগিলাছিল। বড় বড় পীল থাটাইরা বাঁশ বাঁধিরা, বেঞ্চ, কেনারা নাড়ানাড়ি করিরা চিক থাটাইরা সভরঞ বিছাইরা বাড়ির ভূতা গণ, ভাড়াকরা করাশেরা ও গাঁরের প্রাঞ্গাণ ভঙ্ক বেন হিম্পিন ধাইরা বাইভেছিল! বিপুল উদরের ভারে হেলিয়া পড়িয়া মৃহমন্দ গমনে এখানে ওখানে লাড়াইতে লাড়াইতে
পান চিবাইতে চিরাইতে প্রোচ় দেওয়ানজী
বিরলকেশ মন্তকে ভিজা গামছা ঢাকা দিয়া
সকলকার প্রতি হুকুম জারি করিয়া
বেড়াইতেছিলেন।

কলিকাতা হইতে মিনার্জা বিরেটার জানা হইয়াছে আফ রাত্রে তাহারা কপালকুগুলার অভিনর দেখাইবে। দূর পল্লীপ্রামের জনভিজ্ঞ জনগণ কোতৃহলে অধৈর্যা হইরা উঠিয়াছিল। হেমেক্রনাথ এই সব বাংপার লইরা আজ ভারি ব্যতিবাস্ত হটয়া আছেন। উপেন ও বোগেশের সলে ঘূরিয়া বেড়াইতে বেড়াইতে মধ্যে মধ্যে বলিতেছেন "দেখলে হে সরকারটার আকেল কোন যুগে হকুম করেছি পোটাকতক ভাল ভাল গোলাপের ভোড়া বানিয়ে যেন 'লেডিদের' পাঠিয়ে দেওয়া হয়, এডক্রণে ধবর দিচ্চেন মালি বেটারা সব ভাল কুল প্রার জক্ত তুলে দিয়েছে।

উপেন জিজ্ঞাসা করিল "কর্জার কিরতে বে এতো দেরি হলো ?" ওদান্তের সহিত ভাবী ক্ষমীদার উত্তর করিলেন "কে জানে রাত্রে তথন আমি ঘুম্জিলাম সকালবেলা গিরে দেখি কর্তার মেজাজটা ধেন চটা চটা। গতিক বড় স্থিধে মতন নর বুবে বুজিমানের মজুন চটপট সরে পড়া গেল।" বোগেল পুর সমজ্লারের মতন মালা নাড়িরা সার দিরা গেল। "তাই তো চাই। তাই ত লাজে বলেছে 'স্থান ত্যাপেন ক্র্জানা।' উপেন হাসিরা বলিল "ক্রজনই বটে। তার পর অন্ধর মহলে?" সেবানেও বোধ হয় স্থাটা ঠিক কোবল নির্মাণে আরম্ভ হরনি !"

হেকেল করের হাসি হাসিল "আহা: আমার তেমনি আহার্মক বৃঝি ষ্ঠাউরেছ ? আলকের এমন আমোদের দিনটা আমি সকল কর্ম क्ला त्में भारती मारहरवन्न धर्माभारतम ভনতে ছুটলাম আর কি! একে চিঠিপত্র लिथा निद्व एकनकात्रहे हमकाक शत्रम हरत আছে জানি,—তারপর এই থিরেটারও একটা ছতা रद । व्यावनात्र म्हर्सा ना । उँद्रा अधिक मिक हैर हैर करत पूरत विज्ञादन, आत আমি শালা নিভ্য নৃতন ঠিকানা খুঁলে চিঠি লিখে মরি! আর ওঁরা রাজ্যের ঠাকুর আর মন্দির তৈরি করে পর্যাগুলো জলে **१**थिवोङ्क्र (१८वन, একটা কুড়ের রাজ্যত্ব স্থাপন করে অপূর্ব্ব কীর্ত্তি ্ স্থাপন কৰ্মেন ভাতে কিছু ক্ষতি নাই, যতো লোক্ষান বোধ হয় আমাকে একটু আমোদ कत्रदुष्ठ (तथरन! व्यान्धर्या कथा! কি নাও টাকাগুলো তার চেয়ে অনাথ আতুরকে দিলে ভারা বেঁচে যেতো! আরে বাপু অনাথ আতুরকে বাঁচিয়ে তোর কি উপকার! স্থন্ধ পৃথিবীর দারিদ্রা ও ভার বৃদ্ধি বৈতো শয় ৷ ওসব মেরে শঙ্করাচার্যাদের কাছে যাওয়াও আতম্ব জনক ৷" উপেন বলিল আছা উপদেশ छिनिवछ। असन सन्त कि ? विटमव অমন উপদেষ্টার মৃথে ?" "না: কিছু না তুমি " যাই বুলে তার গুণগান করতে চাও করো ভাই! আমি কিন্তু গার্গী দীলাবতীকে ভন্ন ভিন্ন কথনো ভক্তি করতে পার্ব্বোনা। ইহাদের সংস্রব হতে বভোই দুরে থাকিতে পাওয়া যার ^{*}আমাদের পকে^{*} ততোই মকল! বরং ভটাচাৰ্ব্য মহালৱ ব্ৰন টিকি নাড়িৱা বৰ্ম কথা কৰেন তথন লাবে পড়িলে ছদও সেধানে

ভিষ্ঠিতেও পারি তুর্ও স্ত্রীর পণ্ডিতি কোন রক্ষেই বরদান্ত করিতে পারি না।"

উপেক্স ঈষৎ ক্রন্ধরে কহিল "হেমবাবু এ তোমার বড় অন্তার অমন গুণবতী স্ত্রীরও যদি তুমি নিন্দা করো তোমার নরকেও স্থান হবে না।"

যোগেশ উত্তেজিত উপেনের পিট চাপডা-ইয়া তাহাকে থামাইয়া দিয়া বলিল "নরকে স্থান না হলে এমনি বেশি ক্ষতি কি ? বিকাম, বিকাম।" হেম বলিল আমার অভোটা চটোনা। আমি কি বলছি আমার স্ত্রী বড় মন্দ ? তাহলে আর দে আমার স্ত্রী হলো কেন ? তবে কি জানো জ্রীর মতোন আবদার করবে, মান অভিমান করবে, চাই কি তাই নিয়ে মধ্যে মধ্যে সোনালী রকম এক আৰু পদলা त्रोजदृष्टि रुख (शन-ज्द ना ति वो ! को ধরবে বাড়িতে যাত্রা থিয়েটার দাও, প্রতি শনিবারে গড়ের মাঠের সার্কাণ থিয়েটার বা চিড়িয়াখানা দেখিয়ে আনে৷, সন্ধ্যাবেশা বাসন্তী রংয়ের সাড়িখানি পরে ফুলের মালাগাছি হাতে নিমে দাঁড়িয়ে থাক বে, যাবামাত্র মালাগাছি গলায় পরিয়ে দিয়ে হাত ধরে ভালবাসার কথা বার্ত্তা কইতে থাকবে, তা নয় গিম্মে দাঁড়াবামাত্র —বাবা লিখেছেন তোমার এখন হতে পড়া-ভনা ছেড়ে দেওয়া উচিত নয়; কিছু দিন বরং মেডিকেল কলেজে পড়লে হয় ন। কভো গরীব হঃথীর উপকার হবে ইত্যাদি ইত্যাদি! গরীব ছ:খীদের জক্ত ভো ভেবে ভেবে আমি মারা গেলাম ! এদিকে লজ্জাবতী गठांটि किन्द पत्रकात हरण श्रीरवर्णांटचेत्र. মতন বকুতা দিতেও পিছপাও হন না! দার

উপন্ন আবার খণ্ডর বধন আরম্ভ করেন তথন কোধার বা লাগেন হ্যরেক্সবাব্ কোধার বা থাকেন রবীক্স বাব্ আহি মধ্যদন ডাক ছেড়ে উঠতে হয়!"

অমন সময়ে সাধুচরণ ভূতা আসিরা
ভানাইণ "বে তাঁহার খণ্ডর আসিরাছেন এবং
তিনি তাঁহাকে ডাকিতেছেন।" বিপর হেমেন্দ্র
জিজাসা করিরা আরো জানিল যে ডিনি এখন
অভঃপুরে তাঁহার কল্পার নিকটেই আছেন।
হেমেন্দ্রনাথ বিরক্তচিতে বলিরা উঠিল "তবেই
আজ দেখছি আমার দফা নিকেশ! মণিকাঞ্চনে সংযোগ!" যাইবার সময় বন্ধুদের
বলিরা গেগ "দেখেছে বন্দোবস্ত যেন সব
ঠিক হয়; শালারাতো ফাঁকি দিতে পেলে
ভিছুই আর চার না। লেডিদের যেন কোন
প্রেবার অন্থবিধা ভোগ না করিতে হয়।
বোগেশু ভূমি সেখানে বাও আমি শীঘ্রই কিরে
আসছি।"

রজনীনাথ জামাতাকে সমূথে পাইরা প্রথমতঃ তারাকে পড়াওনা ত্যাগ করার জন্ত পুর একচোট তিরস্কার কাররা লইলেন। তার পর বলিলেন এই বরদে পড়াওনা ছেড়ে বিরেটার ও আমোদ নিয়ে ঘুরে বেড়ালে তোমার চলবে না। আমি তোমাকে উৎসরের পথে ছেড়ে দিতে পারব না তো; আমার ' কাছে থেকে আবার তোমাকে পড়াওনা করতে হবে। কালই আমি তোমাকে নিয়ে যাব। অনেক বার ভোমার একথা বলেছি ভূমি গ্রাহ্ করো নাই।"

হেমেক্র মনে মনে ভারি চটিল, কিন্ত তথাপি

কোঁথ দমন করিয়া বেশ শান্ত ও বিনীত
ভাবে কবিল "আমার বিচাবেয় অকুব,

পড়ান্তনা করতে গেলেই আমি অন্ধ হয়ে।।ব। ভাতে যদি আপনার ন্যাপত্তি দা থাকে বেশ বৰুন আমি যাজি ?"

রজনীনাথ মৃত হাসিলেন বলিলেন "ভোমার চক্ষ্রোগের কথা আমার. মনে আছে বলিই বা ভূগভাম কিন্তু /১ক্ষের সামনেই গুই নীল চলমাটা দেখে সেটা ভোলা অসম্ভব। চলমাটা কি সর্কানাই ব্যবহার কর ? না আমার সামনে এখন পরে এলে ? সে বা হোক আমার জামাই অন্ধন্ন হর অবশু সে ইচ্ছা আমার নেই সে ভাবনাট। ভূমিন আমার উপরেই ফেলে দিয়ে রাজের মধ্যে প্রস্তুত্ত হরে থাকো, ৬টার টেনেই আমাদের যেতে হবে বিশ্ব করতে পারবনা।"

রজনীনাথের খরের দৃঢ়তা দেখিরা হেমে-জ্রের মনে মৃত্তির আশা কীণ হইরা আদিল ভারি রাগ হইল, সে ঈবৎ ক্রু কঠেই বৃলিয়া কেলিল "কাল সকালেই আমি কেমন করে বাব ? বাবাকে বলতে হবে ভা ভির আম বাড়িতে কাল; আদ রাত্রের মধ্যেই তো সব উল্ভোগ হরে উঠবে না, সে একেবারে অসম্ভব! আমি গ্রু একদিন পরে যাবো।"

রন্ধনীনাথ ক্রকৃটি করিলেন, বলিলেন
"মণন্তব! অনন্তব কিনে? তোমার ব্যাবাকে
আমি সব বলে রেখেছি। থিরেটার তুমি যথেই
নেখেছ; গোছানর জন্ত ভোমার ভাবনা নেই
শান্তি সে সব বন্ধোবন্ধ করবে। বৃড়ি! কেমন ভ

পার্বের ধরে ধারের নিকটেই অবশুঠনবতী ব শান্তি দাঁড়াইরা ছিল। পিডার আহ্বানে সে ধীর পদে কক্ষণ মধ্যে প্রবেশ করিয়। জানাইল,—পারিবে। ধ্বনীনাথ উঠিয়া দাঁড়াইলেন "আমি ভোষার বাপের কাছে যাচিচ, একটু পরে তুমিও সেথানে বেও, কিছু কথা আছে। বুড়ি

-এখন আমি চল্লাম"। বলিয়া রজনীনাথ সে বর

ইইতে বাহির হইয়া প্লেলেন। হেমেক্র পরুষ

কর্তে বলিয়া উঠিল "তুমি বুঝি আমার নামে

খণ্ডর মশারের কাছে কতকগুলো লাগিয়েছ ?

শাস্তি অককাৎ চমকিয়া উঠিল, বিশ্বরে নেত্র বিক্লারিত করিয়া ক**িল "আমি** ! সে কি কথা !" •

"তুলি নরতো আর কে ? তোমার চিঠি
পত্ত লিখতে ক্রসং পাইনি, কাল্কের ভিড়ে
তুমি এসে পর্যান্ত দেখা করতে সমর করতে
পারিনি বলে বৃঝি ভোমার রাগ হয়েছে ?
তারি শোধ নেবার জ্লু বাপের কাছে কতকভলো আমার মিথ্যা নিন্দা করে আমার
বাড়ি থেকে বিদার করবার চেষ্টা হচ্চে ? তা
বেশ বেশ ! তুমি খ্ব ভাল স্ত্রী ! তুমি ছচকে
আমার দেখতে পারোনা ।"

শাস্তি শিহরিয়া বলিয়া উঠিল, "তুমি আমাৰ্য এমন নীচ মনে কর ছিঃ!

সে-ধিকারে হেমেক্স যেন স্তম্ভিত হইর।
গেল। শাস্তির কঠে ইহার পূর্বের সেরপ স্বর
ভনে নাই তাই প্রথমটা ঈবং লজ্জা বোধ
কুরিয়া মুথ নাজ করিল। কিন্তু পরক্ষণেই
নে নিজের আগতপ্রায় বিপদের কথা স্মন্ন
করিয়া যেন শাস্তির উপরে মমতাহীন হইয়া
উঠিল বলিল "নিশ্চরই এ তোমার কাল
নইলে তিনি আল রাত্রেই এ যন্ত্রণা ভোগ
করাইতেন না। কিন্তাহেই পড়লাম, এমন
জানলে আমি তোমার সামনে আসতাম না।

• শাল্কির বিবর্গ অধর ঈবং কম্পিত হইল,

সে তীবভাবে কি একটা কথা বলিভে গিল্পা হঠাৎ ক্রতপদে কক্ষের অপর প্রান্তে একটা জানলার ধারে গিয়া মুখ ফিরাইয়া রহিল। তথন শরতের অপরাহ ছায়াচ্ছন সন্ধার मर्पा भिनारेश यारेट छिन। स्नानात्र नीरि উত্থানস্থ কামিনী বৃক্ষের শ্রেণী হইতে একটা মদিরময় স্থবাস সন্ধার বাতাদে মিশ্রিত হইয়া উঠিতেছিল। পাথীটার গান গাহিবার সাধ তথনো যেন মিটে নাই, তাই থাকিয়া থাকিয়া জামকল গাছের মধ্যে লুকাইয়া দিয়া উঠিতেছিল। শাস্তি তাহার অনাদৃত, অভিমানাহত হাদর লইয়া চুপ করিয়া বাহিরের দিকে চাহিয়া রহিল। কালো চোখে একটা কম্পিত জলের রেখা দেখা দিল, সেটাকে সে তাহার অঞ্চলপ্রান্তে थीरत धीरत मृहिश रक्तिता। अमन समब्दीरनत কাছে হৃদয়ের দৌর্বল্য প্রকাশ করাও অপুনাম ! যাহার নিকটে তাহার কথার একটা সামারুও মুণ্য নাই !

শান্তির ব্যবহারে একমুহর্ত্ত হেমেক্সের
মুথথানা ক্রোধে স্মারক্ত হঁইয়া উঠিয়া বিতীর
মুহুর্ত্তে আবার তাহা স্বাভাবিক ভাব ধারণ
করিল। সে স্থির দৃষ্টিতে কিছুক্ষণ শান্তির
দিকে চাহিয়া রহিল। গোধুলীর সেই
আধ আলো আধ আরারে, ঈয়দয়ক্তিয়
ক্রীণালোকে সেই অদ্রবর্ত্তিনী নারীমূর্ত্তি বেন
কোন নিপুণ চিত্রকরের তুলিতে চিত্রিত করা
ছবির মতন দেখাইতেছিল। তাহার স্থরচিত
কবরী তাহার পীতবর্ণের সাড়িখানি সেই
পরিপুই অলবেষ্টন করিয়া তাহার গুলুর্বর্ণের
সৌল্ব্য্য আরো বাড়াইয়া তুলিতেছিল, তাহা
হেমেক্রের দৃষ্টি স্মাকর্ষণ করিয়া লইল।

यत्न मर्देन त्म त्मन क्षेत्र मक्का ७ भदाखर বোধ করিতে লাগিল, শান্তি কি তাহার সমালোচনা এইমাত্র শুনিয়া আসিয়াছে ? कथारे ना વાર્ક শে वस्ताव काटक **धरेमांब बागरिक ।** मठामठारे कि उत সে এতোদিন তাহার মনোমত সাবে সাবিয়া তাহার অক্ত উৎক্ষিত হৃদয়ে পথ চাহিয়া ছর্ভাগ্যের বিষয় যে উপস্থিত ছিল ? সেখানে একগাছা জুঁই সুলের গোড়ে हिन ना, आत এই यে नीर्घ वित्रहत्र भन দম্পতির প্রথম আলাপ ইহাকেও ঠিক প্রেমালাপ বলিতে পার্রা যার না। হেমেন্দ্র ভাকিল "শান্তি।"

অনিচ্ছাসত্ত্বও অভ্যাসের বশে সে কিরিয়া ক্রাড়াইল। তাহার বিষাদপূর্ণ স্লানমূথে বেদনা ও অভিমানের রেখাগুলি পরিকার অক্ষরে ক্রিয়া উঠিল। "শাস্তি কাছে এসো, এতোদিন পরে দেখা রাগ করোনা।"

সত্য, 'এডোদিন পরে সাক্ষাৎ শান্তির আরু অভিমান প্রকাশ করা উচিত হয় নাই।
সে ধীরে ধীরে ফিরিরা, আসিল। হেমেন্দ্র
কোমল মিনতিপূর্ণস্বরে কহিল, ''শান্তি,
কাল সকালেই আমি বেতে পারবো না,
সে একেবারেই অসম্ভব, তোমার এর কিছু
উপার করে দিতে হবে, লক্ষীটি আমার এই উপকারটা করো।'' "আমি।" সবিশ্বরে
শান্তি, জিজ্ঞাসা করিল "আমি কি উপার
কর্মো।" হেমেন্দ্র প্রামর্শ দিল "তোমার
বাবাকে বলো আজ তোমার শরীর ভাল নাই
সেইজ্ল কিছুই উল্লোগ করে তুলতে পারলে
না, ভাহলেই তিনি বিশাস করবেন। তুমি
ইচ্ছা করলে কি না হব। দেখো দেখি

কাল ভোষাদের আবৃঁহোসেন আর বিবাহ-বিপ্রাট গ্লে হ'বে নকাল আমি কেমন করে যাবো, তুমিই বল দেখি ? শান্তি সভরে জিহবা দংশন করিল "না না আমি বাবার । কাছে মিথাা বলতে পারবো না, আর কিছু বলো।"

হেমেক্সনাথের মুখে গভীর বিরক্তির চিক্ত্ প্রকাশ পাইল, সবেগে সে ভূমে পদাঘাত করিয়া বলিয়া উঠিল "ঐতো ভোষার দোষ, ঐ জন্তই ভো ভোষার সঙ্গে আমার বনে না। মিথ্যা কিসে হোল ? আমার উপেকারের এটুকুও তুমি করতে পারোনা ? সাধ করে কি বলতে হয় যে আমি ভোমার আপদ আমার বিদার করতে পারনে তুমি বাঁচো।"

শান্তি কুদ্ধ হেমের হাতথানা হুই হল্তে
চাপিরা ধরিরা ব্যাকুলকঠে তাহাকে বাধা
দিরা উঠিল "তুমি আমাকে এমন করে
আঘাত করোনা, বলো আমার কি করতে
হবে ? ভাই আমি করছি।"

"আ: তাই বলো, এইতো বেশ ভাল-মান্থবের মতন কথা; বেশি আর কি এমন কর্তে হ'বে, হৃদ্ধ কাল আমার বাতে চলে থেতে না হর তারি কিছু উপায় করো! আমি কাল যাশোনা সেটা নিশ্চিত তবে তা নিয়ে একটা রগড়া বাধান আমার ইচ্ছা নর !"

্র প্রথ বিবর্ণমুখ নত করিরা সে উত্তর করিল "চেইা করিব।" ছেমেক্স খুসী হইরা প্রীকে একটু কাছে টানিরা লইল, তাহার শুত্র ললাটে মৃত্র মৃত্ব অঙ্গুলির আঘাতে পরিস্টুট ক্রডজ্ঞতার চিক্ষ প্রকাশ করিরা ব্রলিল "আমার বাঁচালে, দেখো দেখি খণ্ডর মশানের অক্সার, এতো পরসা ধরচ করে আা্রি

থিরেটারটা থেঁশে অগুনাইলাম, আর আজই আমাক্ষযতো দরকার পড়ে গেল এ ভাগু আমার উপর "আক্রোম প্রকাশ তবে আমি এখন চল্লাম, দেখিগে ওদিকে কভোদুর কি হলো, আবার "নবকুমারের" भतीबढ़ी ভान नार, मार्डनिकांत्र धरतरह जामाव 'নবকুমারের পাঠ নিতে হবে'। যদিও কলকেতার বারকয়েক আজি করা গেছে, ्ज्य अथात्न अक्ट्रे यन वाथ वाथ र्ठटक। ওটা আর কিছু নয় অনভ্যাদেব অগ্ন। না হলে সকলেই বলে 'নবকুমারের আকটিং 'আমি যেমন করেছিলুম তেমন অন্ত কেহ পারে না। হাঁ আর একটা কথা, মাানেজার বলছিল र (पर्दक्तिमात क्र क्र क्न करत नान तः रावत সাড়ি আনা হয়েছে, তাতে তাকে মানাবে না। দাও দেখি তোমার একথানা নীল বা গোলাপি রংয়ের ভাল সাঁডি।

একমূহুর্ত শান্তির শান্তমূথ ঘুণা মিশ্রিত বিরক্তিতে আরক্ত হইয়া উঠিল, কিন্তু মুহূর্ত্ত ্মধ্যে সে আত্মসংবৃত্ত হইয়া এতো শীঘ্ৰ পার্ষের মরে চলিয়া গেল যে ভাহার এই সহসা অন্তর্ধ্যানে হেমেক্ত বুঝিয়া উঠিতে পারিল না, ষে, সে রাগ করিয়া গেল বা ভাল মনে গেল। কিন্ত বেশিক্ষণ তাহাকে সমস্তায় থাকিতে **इहे**ल ना, अन्नक्ष्ण भरत्रहे এक्श्राना फिरक নীলবুর্ণের রেশমী সাজি হাতে শান্তি সেই ঘরে श्रात्म कत्रिन। হেমেক্স আবার বিশ্বিত रुहेश रान, "य भाष्ठि छेन्द्रम निरंक नातितन আর কিছুই চাহে না—" সে আজ স্বামীর মুখের কথা ধদিতে ধদিতে তাহার আজ্ঞা পালনে ছুটল, এমন বাধ্য দ্বী সে কবে হইতে হইল! পরীকা করিয়া দেখিল সাজিখানি

বছমূল্য। প্রকাশ্তে বলিল 'হাঁ এখানা মেহের উনিসার যোগ্য হইবে।" বলিয়া পত্নীর গন্তীর মুখের দিকে চাহিয়া দেখিরা ঘর ছাড়িয়া চলিয়া গেল। যাইবার সময় বলিল "ভেরীমাচ্ খ্যাক ইউ, কিন্তু দেখো যেন সে কথাটা ভূলে যেও না।" শান্তির ললাট হইতে কর্ণমূল কে যেন লোহিত রাগে রাক্সাইয়া দিল।

রন্ধনীনাথ আদনে বদিয়া কিছুক্ষণ অন্তমনস্ক ভাবে আহার করিতে লাগিলেন। শাস্তি নিকটে বদিয়া পিতাকে পাধার বাতাদ দিতে লাগিল, দেও সহদা কোন কথা বলিতে পারিল না। পিতার অভ্ত গান্তীর্য্য তাহার স্নেহকোমল বক্ষে কেমন যেন ব্যথার মত বাজিতে লাগিল! ধীরে ধীরে ডাকিল বাবা!" রজনীনাথ মূথ তুলিয়া কন্তার দিকে ফিরিয়া চাহিলেন, বিষণ্ণভাবে একটুখানি স্নানহাদি হাদিয়া কহিলেন "কিরে লাভি! তুই যে বড় থিয়েটার দেথতে যাদনি ?

সেও একটু ক্ষীণভাবে হাসিল, কথা
ঘ্রাইয়া লইবার চেষ্টায় বলিল "বাবা, স্থকু
কেন এলোনা, ভাকে • অনেকদিন দেখিনি
বড় দেখতে ইচ্ছা করে।"

"তার শরীরটা ভাল ছিল না, সেইজ্ঞ আনতে পারিনি মা, সেতো আসবার জ্ঞ মলা হাঙ্গামা হরু করেছিল। বুড়ি তোর মাও ভোকে দেখবার জ্ঞা ভারী ব্যস্ত হয়েছেন।"

শান্তির বিষয় চোথে আননেদর জ্যোতি
নবোৎসাহে ফুটিয়া উঠিল "অমিও অনেকদিন
মাকে দেখিনি, বাবা, আমার কেন নিয়ে
চলুন না ?"

বিষয়ে নিমে থেতে পারলেতো বাঁচভাষ ক্রিন্ত নিমে থেতে পারলেতো বাঁচভাষ ক্রিন্ত ক্রিম্ব ক্রেডা এখন পারব না।" বালিরা ভিনি একবার চারিদিকে চাহিরা বেশিরা ক্রম্থ নিরম্বরে প্নশ্চ কহিলেন শুরুষ বাদি ভোকে নিরে বাই ভাহলে চৌধুরী ক্রমার হরভো অন্ত রক্রমণ্ড মনে করতে পারেন; সেটা আমি উচিত মনে করি না, ক্রিম্বালিক লভি ভোকে পূজার পরই একেবারে ক্রিম্বালিকর রভ নিরে বাবো, সেই ভাল না !" একটা ক্রম্ব নিধাস কেলিরা সে উত্তর ক্রিম্বালিক।

নিষাসচা কুল হইলেও সেটা রজনীনাথের কান এড়াইতে পারে নাই! তিনি অমনি চকিতনেত্রে তাহার মুখের দিকে একবার চাহিরাই একসূহর্তে তাহার মনের লেখা মেন কভোকটা পাঠ করিরা কেলিলেন, কৈছুর্বণ নীরব থাকিরা পরে বলিলেন "হেমকে কাল আর নিরে বাবোনা, আরু ডোর পাকে বথেই পরিশ্রম হরেছে লতু, আরু আর তার বাবার বডোবন্ত করে উঠতে পার্নিনে, হেম না হম, ছদিন পরেই বাবে এখন। কিছু ভার বাওরা চাইই সে ভার ভোরার উপর রৈল, এখন থেকে পড়া ছেড়ে থিরেটারের দলে যিশলে চলবে কেন গ্"

আচনবাতে বৰে কিনিলা আসিলা রজনী-নাৰ কভাল হাত হইতে পানের ডিবাটা লইতে লইতে কিজাসা করিলেন "তোম বাওলা ব'বে গিনোছে ? গোছা তবে তুই যা, আমি একটু বনি

শনেক বাজি পৰ্বাস্ত পিতা পুত্ৰীতে ক্ৰাবাৰ্থা ধ্ৰুপ। সম্প্ৰীনাৰ বলিংগৰ

"alla cule nece nee les vois धारति । कांत्र अविकास दक्ष देवर विद् भातरय मां; कृरे 'क्लेथूबी 'बलादबब काटक् बाकरि। क्षिष्ठ दश्य ध्वयम इट्ड प्राथात्र कार्ड (बंदन श्रेष्ठांका कडाव। त्व (वन বুৰিমান ছেলেই জো ছিল দারিশ্ব মুখলে এখন ও বন্ধ করতে পারে। আবার বিবাস এই ব্যাপারটা ভগবান ভারি মন্ত্রের অন্ত याँग्रेटक्ट्रम, जात्र अन्त आयात्र वस्त्रहे जावना হরেছিল, এবন সময় তোর চিঠি পতে আমার ভরানক একটা ছল্ডিবা বুল হলে গেল। এবার সে আবার পড়্ক, মাছুব হবে, কেন হতে পার্কেনা!" ভারপর একটু চুপ করিয়া থাকিয়া আবার বলিলেন "লভি ভোর যা ভাবছিলেন বে শিখানীর সঙ্গে ভোর वनिवनां करव कि मा! छीत्र हेक्श कृरेख আমাদের কাছে থাকিন, আমি কিছ বলেছি गढ़ व्यायात्मत्र अयम स्यात नत्र स्व छात्र गत्य कात्र वनर्य मा। त्मक दुशा छावना। কি ৰলিস্ বুড়ি! আৰি তোকে ভোৰ মার -চেরেও বেশি চিনি কিনা 🕈 সে মৃত্যুরে কহিল "হাঁ৷ বাৰা, তিনি আবায় কি না, পুৰ ভাগৰাদেন।" পিডা সঞ্চেহে কভার हाउठे। हारकत बरश हानिया गरेबा भगतरख তাহার মাধাটা বুকেম উপর চাশিরা মেং क्केंक्ड इरेडा शांत्रश परिशाम "(कन, व्यामात्र त्यदब्रिटिक व्याप्ति कि छात्र वानिमां ? আজা বৃদ্ধি বিনোবের বাছাড়ি লোক ভাগ ट्या १ आप पति छ। मारे वन, छाट्यरे वा (छात्र क्षाँछ कि । पूरे छाटक निरमत गास्त वचन संबा कृष्टि कड़िन, गक्य कारवरे छी। ग्रदामन हारेषि, व्यवक्षरे क्रिकि स्कारक कांग-



ब्क मोत्रोक्ताइन माथाशीशाह

বাসবেন। নিজে ক্রাল থাকলে কেউ মক্ত্রেক্তর না। বিনোদের ত্রীর সলে ঠিক বাবের ত্রীর সলে ঠিক বাবের ক্রাল ভার হাতে দিবি, অথচ নিজে সব কাজেতেই তার সাহায্য করবি! আমি জানি আমার মাকে আমার বৃড়িকে আমার কিছুই বলবার প্ররোজন নাই, তবুও বাপের একটা কর্ত্তর ত্রোজন নাই, তবুও বাপের একটা কর্ত্তর ত্রোজন নাই, তবুও বাপের এই সব ভোট বড় পরীক্ষার দিন এসেছে সংসারের এই সব ছোট বড় পরীক্ষার উত্তীর্ণ হতে হতে তবেই প্রালত কর্ম্যক্ষেত্রে অচল প্রতিষ্ঠালাভ ঘটে। বিনোদকুমারের বিধবা যেন—"

"বাবা! সভ্যি কৈ দিদি তা'ই ? সভ্য সভ্যই তাঁকে আর পাওয়া যাবে না বাবা ক্সার স্বরে রজনীনাথ বেদনা বোধ করিলেন, সামশাইয়া শইলেন।

"ওটা আমার বলা তুল হয়েছে বৃড়ি! ঈশবু জানেন বিনোদ জীবিত কি না কিছ আশা তো কিছু দেখি না। ই্যাবে হেম তো শিবানীকে বেশ শ্রহাভক্তি করে? তাকে এ এ সহছে কিছু বলবো মনে করেছিলাম কিছ সেতো আমার সঙ্গে আর দেখাই করলে না। শিবানী বা তার ছেলের উপর তার তো কোন বিশ্বহাব করে নাই ?" শান্তি দেখিল কথাওলার শেবে তান্তার পিতা ঈষৎ গভীর হইরা পড়িলেন। সে চকিতদৃষ্টি ভূমিসংলয় করিয়াকেনিয়া অস্কৃটখরে উত্তর দিল "দিদির সঙ্গে দেখা হয়নি তো ?"

শোটে দেখাই করেনি, ভাল করেনি, তাকে বলতে হবে যেন সে তার উপর বেশ সন্থাবহার করে। অমৃল্যকুমারের ভার এখন তারি উপর তো! ওরা আসাতে সন্ধই হরেছে তো?"

শান্তির নত দৃষ্টি আরো নত হইরা আসিল, মান মুধ অধিক মান করিয়া মৃত্সরে লজ্জার মধ্য হইতে দে উত্তর করিল "তাতো জানি না।"

রজনীনাথ জবং ^{*}বিমন্তপূর্ণ ক্রোধে নীরব হইয়া রহিলেন।

তথন অনেক রাত হইরা গিরাছে।
পূর্ণিমার চাঁদ বিমল জ্যোৎসা ভরকে ভাসিরা
যাইতেছিল। ঘুমন্ত জগতের উপর অমৃত
বর্ষণ করিরা প্রকাণ্ড পুরীর এক অংশ হইতে
মধুর বন্ধবরের সহিত সন্মিলিত সকর্রণ সুমধুর
সন্ধীতলহরী ভাসিরা আসিতেছিল "

"কোলে তুলে নে'মা কংলী! কালের কোলে দিপনে কেলে, বড় জালার জণছি বে মা, আমার

यार पर अन्न कानी तता ।*

উদীয়মান লেখক।

(>

সোরীক্রমোহন মুখোপাধ্যায়।

শেকালি। প্রীনোরীক্রমোহন মুখোপাধার প্রশীত। প্রীচুক্ত নরেক্রনাথ চৌধুরী কর্তৃক প্রকাশিত। স্থানিক কাগতে কান্তিক প্রেনে মুক্তিয়া মুক্তা এক স্থানা। আল বরসেই, সৌরীক্রবোহন সাহিত্য-সাধনার যশের
গথে অর্থসর হইরাছেন স এরগ খঁল সময়ে, সাহিত্য
সমাজের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে পারা আর লোকের
ভাগ্যেই ঘটে। সৌরীক্রমোহনের বরস এখনও ২০
বংসরের অধিক হর নাই।

পত বংসর তাঁহার "বংকিঞ্চিং" টার রক্ষালয়ে স্বায়াতির সহিত অভিনীত হইরা গিরাছে। তাঁহার এই প্রস্থের বিবৃত বিবর সম্বর্জ অবেকের মতভেদ থাকিতে পারে,—আর এমন কোন লেখক আছেন বাঁর রচনা সম্বন্ধে মতভেদ নাই !—তথাপি একখা অনেকেই খাকার করিবেন যে, তাহাতে সোরীক্রমোহন একটি মনোরম বৈচিত্রা, স্বম্ধুর ন্তনত্ব এবং ব্যঙ্গ নাট্যের অন্তর্জ নাটকীয় শিক্ষচাতুর্যের পরিচয় দিয়াছেন।

কিন্ত 'বংকিকিতের' লেবক অপেকা, সৌরীক্রমোহন, সুন্দর গল লেবক বলিয়া অবিকতর
স্পরিচিত। বাঙ্গালার শ্রেষ্ঠ মাসিক প্রিকার
উাহার সে সকল গল প্রকাশিত হইয়াছে—সম্প্রতি
তাহার কভকগুলি গুড়োকারে শেকালি নামে
পুত্তকাকারে প্রকাশিত হইরাছে। অনাড়থর
শেকালিকার শুত্রশোভা যেবন অগ্রামীর মনোমোহক,
সৌরীক্রমোহনের শেকালিও সাহিত্যসেবীর পক্ষে
তেমনি প্রতিশ্রেদ হইবে আশা করা যায়।

শেকালি একবানি ছোট গরের বহি। ছুচারিটি
পাডার আড়ালে একটি ফুলের স্থার, ছোট একটি
গর আপনাতে পরিপূর্ণ একটি বও সেন্দির্যাঃ
পান্চাত্য সাহিত্যের সহিত নিজ্য সম্পর্কে বাজালা
সাহিত্যে ছোট গরের স্তুটি হইরাছে। বলসাহিত্যে
ছোট গরের প্রবর্জক কে সে সম্বন্ধে আপাতত আলোচনা
করিতে প্রস্তুত নহি। তবে মোটামুটী বলা যাইতে
পারে—ৰন্ধিমবাবুর 'ইন্দিরার' পর প্রমতী স্বর্ণকুমারী
দেবীর "মালভী" প্রভুজি এবং ভাহার পর রবীক্রবাবুর
নাম আসিয়া পড়ে। বস্তুতঃ ইহারা আভা ভগিনীতেই
বল্পসাহিত্যে ছোট গ্রের বহুলপ্রচার করেন।

ইংবিপের দৃষ্টান্তে এখন কুল গল্পের রচনায় অনেক 'লেখকই হতকোপ করিলাচেন। সুখের বিষয়, এই ব্রতে এতী সৌরীক্রমোচন আগনার স্বাধীন প্রচুক্ আবিষ্ণার করিয়া ক্ররাচেন। তাঁহার বর্ণনা-কেশিল, চিত্রাঙ্কন পদ্ধতি,—এখন কি বাক্তলি প্র্যান্ত তাঁহার নিজ্প। শত রচনার মধ্য হইতেও তাঁহার রচনা স্ক্র সমালোচকের চক্ষে ধরা প্রে।

मोहोक्स्याहरनद्र क्रमाञ्चीरङ छाहात्र बनवत्री

প্রকার ও মনোজ। রচনার ক্ষম আনবাদের মধ্য হইতে গ্রন্থকার স্টুটিয়া বাদ্ধির হন। অনেক সময় দেবা বায়, অনেক মনন্দী লেখকও আপান বক্তব্য ভাবটাকে "সংযত করিতে না পারিয়া উচ্ছুখাল ভাবে লেখনী, চালন করিতেছেন। সৌরীক্রমোহনের রচনার সেরুপ ক্রটি, সেরুপ তুর্বলতা বা অক্ষমতার চিক্ত বিরল। অনাবশ্রুক ভাবের বা বর্ণনার আভিশব্যে জিনি আপান বক্তব্যের প্রকাশটুকু কুরাসাক্ষর করিয়া ভোলেন না। তেজবিতার সহিত যুক্তবাগতা, ভাবের সহিত ভাবার ব্যাতিক মিলনই উহার রচনাকে এমন হালয়গ্রাই করিয়া তোলে।

भोडीक्रासार्वत काता काता शब् नावेकीय ভাবের সংমিত্রণে সরুজ্বল। "শেফালির" সর্বাপেকা क्ष शत "निर्द्ध" ' छोहात अकृष्ठे উनाइद्रव ! সামাক্ত একটা বিনের ঘটনা--সামাক্ত স্চনা; কোৰ আয়োজন নাই, কোন পুৰ্বোভাষ নাই; অথচ তাহার পশ্চাতে আসম ট্রাঞ্চেডির করাল ছায়া! व्यञ्जित्त्व यांश्या-व्यानात, উৎमव व्याप्मात्वत्र মৃত্যুর শোকনাট্য-শভিনয় সমাও হইয়া পেল। উৎসৰ-ভবৰে ভাৰার সাড়াটী প্ৰ্যান্ত পৌছিল কিনা ভাহার কোন সংবাদ নাই; অথচ কেমন একটার পর একটা, দুর্ভের পর দৃত্য, ছরিত পতিতে মহা অবসানের আয়োজন আরম্ভ ও लित इहेबा लिल । विकाल माह ध्रतिष्ठ याख्याय अमन কিছু বিশেষৰ নাই। এই নাটোর দৃশ্যপটের আয়োজৰ অনেকদিনের পুরাতন একবানি নেযাচ্ছর অ'কাশেই স্মাপ্ত। তারপর, মেলগর্জনসহ বড়, ুপিতা পুত্রের মরণ-কঠিন-শেষ আলিক্সন তার পর ছাড়া-, ছাড়ি, পুলহীৰ পিতার প্রত্যাবর্ত্তন, পুলব্যাক্লা মাতার স্কাতর্বাাক্লতা, স্থানীপ্রহীনা নারীর সকরণ চিত্র, শুধু এক রাত্রের বড়ের পাশ দিরা প্ৰতি প্ৰায়ক্ষৰে উপান অঞ্চমাৰা আলোকচ্ছটাৰ पृष्ठिश छित्रात्य ;- यहाजात मध्य ठिखवानि अत्कवात मम्पूर्व त्मीन्यर्था कृष्ठिशा उठिपारक ।

এরণ ভাব সৌরীজবাবুর অবেক গলেই পাওয়া

বার। তাঁহার "নীরা" স্বরুটী নাটকীয় বর্ণে কেনন ক্ষার ইইরাছে। বংশহান পিতামহের একসাত্র অবলম্বন স্নেহণাত্রীর জন্ত শুভীর সেহধারা, প্রচ্ছের ক্ষার মত, হলকের ভিতর দিয়া বহিয়া গিয়াছে। ত্র চুরির জন্ত এক বার্থকা, কোলাহল, সৌজন্তনিকা, নির্দিয়কা, তবু তাহার কোন সন্ধান বিলিল না! লাখিত, অপবাদ-কলন্ধিত পিতামহের ক্ষমে মধ্যাদা, অভিমান সেহ তিনটাতে বিরোধ বাধাইয়া ভাহার গোপন কথাটা রহস্তগর্ভে চিরগোপন রাথিয়া দিয়াছে; মৃত্যুর দিব্য আলোকে সহসা তাহা বাহিরের আলোকে আসিয়া পড়িয়াছে!

ত্ব একটা কথাক অনেকখানি প্রকাশ করা, কিয়া একটু ইঙ্গিতে পাঠকের হৃদয়ে সহাত্ত্তিঘারা অসমাপ্ত টিএটুকু সম্পূর্ণ করিয়া ভোলা সাহিত্যিকের শিল চাত্র্যা। সেরপ উদাহরণ উদ্ভূত করা অনাবশ্যক। পাঠক পাঠিকাগণ সহজেই ভাহা লক্ষ্য করিবেন।

চিত্রাবনে দৌরীল্রবাবুর কৃতিত্ব যথেষ্ট। গার্হস্থা

শীবনের যে যে চিত্র তিনি অকিত করিয়াছেন ভাষাতে সর্বত্র স্বাভাবিকতা পরিক্ষুট। জনীদার, দরিজ্ঞ প্রজা, তেজখীপুরুষ, পতিব্রতা নারী, কিশোরী, বালিকাবধু, বিপত্নিক, বিপথগামী, শিক্ষিতা স্ত্রী সকলগুলি কেমন স্বাভাবিক, সুন্দর ও প্রদয়গাহী।

করুণরদে দিছাহত্তে হইলেও, ব্যক্ষেও তিনি যথেই শক্তির পরিচয় দিয়াছেন। ব্যক্ষ অর্থে কেবলি হাসিন্য;—ব্যক্ষে একটা উচ্চ অক্ষের আনন্দ আছে। শেফালির "ময়্রপুক্ত" নামক ব্যক্ষ গল তাঁহার অসামান্ত বৈপুণা প্রকাশ শাইরাছে।

অবশেষে সৌরাল্রবাবুর 'শেক।লি' সম্বন্ধে আমাদের কেবল ছইটী কুজ বক্তব্য আছে। প্রথম, কোন কোন গলে ঠাছার রচনার শেষভাগগুলি অন'বশুক উস্থল ভাবা ও ভাবের আভিশ্যে ভারী হইয়া পড়িয়াছে;—ছিতীয়, "হারানো চিঠি" বোধ হয় তাঁহার বহুপূর্বের রচনা,—ওটি এ সংগ্রহে স্থান না পাইলেই ভাল হইত।

ক্ষাণীর গান।

ননদিনি, কদিন থাকে বা মামুব সহরে ?
ও সে গিয়েছে দেই ভাগর মাসে
এ বে আবার ভাগর ফিরে আসে
দিনি যারাই ছিল পরবাসে সবাই ত এল খরে ;
ও তার হাতের ছাওয়া নতুন খরে
এখন দেবতী লাগলেই পানি পড়ে,
ওসে গোঁলা দেওরা টিক্ছে না আর

এ কাল বছরের বাদরে—
তবু কেমন বেহু সু মামুহ সেকি ফিরে আমার নাম করে !
কিনি থাকে বা মামুব সহরে ?

আমি বিকাল বেলা বাইনা ঘাটে
আমার থোঁপা বাঁধতে পরাণ ফাটে
ও সে কি ছবে যে দিবস ফাটে কেশ্নে জান্বে অপরে ৷
বিধন সাঁজের বেলা পোলার পালে
কাল ছায়া পড়ে ছবেনা ঘানে

তথন ডুক্বে আমার কাঁদন আসে
শুধু কাঁদি না তোদের তরে;
যদি দেখার হ'ত দেখ্তে পেতিব্
কি আগুন জলে অন্তরে—
কদ্দিন্থাকে বা মানুষ সহরে ?

ননদি সে কেমন তোর ভাই
আমি ভেবে কিছু ঠিক্না না পাই
আমি আন্চান্ করে' মরি সদাই

সে থাকে কেমন করে' !
কত লোকে কাঁদে হাসে
আমার কাঁদা বার মাসে
ও যার আপন মাত্র নাইক প্লানে
সে কি আশে পরাণ ধরে !
ও সে কি দিয়ে যে মন ভার গড়া
আনিনা কোন্ পাথরে !
ক্ষিন থাকে বা মুক্র সহরে !



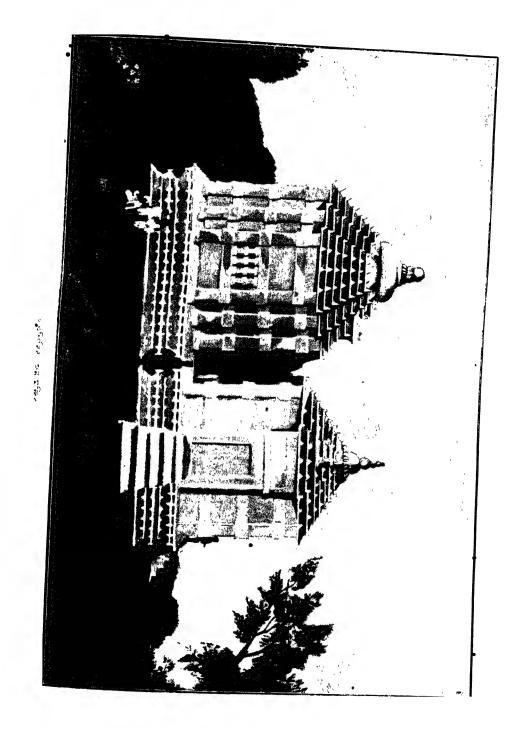
বিশ্ববিধি গৌরবের অঞ্চবিদ্। অঞ্ বেশিকে চাও ড' বেখ, কিন্ত বাহার এই অঞ্চ, জাহার হাসি ভূমিও না। ইতিহাসের কথা শরে বনির; আগে বাহা দেখিরাহি, ভাহাই বলি।

ভূৰনেশ্বর হইতে, তিন মাইল দ্রে,
শগুণিরির বৌদ্ধনীর্ত্তী। চারিদিকে হরিংশাক্তর্কাভূমি, মর্শারিত নিরিড় অরণ্য,—
মধ্যে অসমোচ্চ পথ। সেই পথে, গোশকট
বার। সন্ধার পর, এথে বাধের ভর আছে।

উৎকলের প্রার সমস্ত শৈলই বালুকাপ্রস্তরগঠিত। থওগিরিও তাই। বালুকাপ্রস্তরগঠিত পর্বতমালা অপেক্ষাকৃত কোমল
হর। সেই কল্প এখানে শুহাক্ষোলনের
ক্ষবিধা হইরাছে। কোমলতার জল্প, শিল্পিগণের-কার্য্য, ধেমন অনারাস্যাধ্য হইরাছে,—
ধ্বংসধর্মী কালের জংটাচাপও তেমনি ইহার
উপরে শীল্প বনিরাছে। নতুবা, থওগিরির
বৌদ্ধকীর্ত্তি হুই হাজার বৎসরের ভিতরেই
বিধ্বংসত্তপে পরিণত হুইত না।

উদর্গিরির শিশর হইতে খণ্ডগিরির শীর্ব অপেকাকত উচ্চ। কিন্ত ইহা পাহাড্মাত্র,— ইহাকে গিরি বলা চলে না। নীচের সমতল ভূমি হইতে, খণ্ডগিরির উচ্চতা ১০ হতের অধিক নর। বিভারেও সামান্ত।—নরশত হাতেঁরও কয়। উশ্মিগিরির অংশ পূর্বাদিকে এবং গণ্ডগিরি পশ্চিমদিকে। সধ্যে একটি অপ্রিস্কর পথা শৈলাককে বিধা-বিভক্ত করি-রাজে। প্রক্রুক্তপক্ষে, এখানে একটিই পাহাড়। খণ্ডগিরির গুরাসিংখা কর। গুরা গুলির কোনোট খুব বছ, কোনোট নিগ্য-মাকার এবং কোনোট বা নিভার ছোট। এখানকার গুরার মধ্যে, বেটি খুবই বড়,---কারলী বা ইলোরার একটি ছোট গুরার কাছেও সেটি গামান্ত মাত্র।

त्राविश्वकारे नक्तार्थका वस्त्रा সেটি ৰাৰে প্ৰাৰ ৪০ হাত ও উচ্চে ১১ হাত। দেখিতে ঠিক যেন চকমিলানো বর। বারা-ন্দাটি পাঁচ হাত চঞ্জা ও প্রার' ২৪ হাত শ্বা। ৯টি ভাস্তের উপরে, ছাদের গুরুতার " অপিত। खडाखीन विजन। वादानाव मञ्जूर्य, क्रुशार्य कृष्टि यत्र वाहित्र इहेग्रा व्याज-আছে। বারান্দার তলার, পাশাপশি আটটি ষর আছে। প্রত্যেক ঘরই প্রায় দশহাত দীৰ্য ও ভিনহাত উচ্চ। ছারণীৰ্যে কোখাও বিচিত্ৰভাষ্ট্ৰ ভ্ৰীণ্ণনা, কোথাও অত্ত-গঠন অনভার, সভীতবন্তাদি এবং কোণাও বা বিভিন্ন আহর্দের অক্সছদ প্রভৃতি। উপরের छगां ि धकास गःकोर्। मिक्निमिक है। पूरु-खशामि मुखा मध्या धकि खाभन चाहि — সেটি দীর্ঘে প্রায় একত্রিশ হাত এবং প্রায়ে : १। । হাত। ছুপাশের প্রথম বর ছটিতে ভি"ত্তসংশগ্ন বর্ত্মপরিশ্বত ছারপালের মূর্ত্তি। জাঃ 'হাণ্টার বলেন, ছ'পাশের ঘর ছ'টির পুক্টীতে तक्त ଓ अन्त्रतीटि आहानानि रहेड।" वादान्यां पृष्ठिन्त नत्। त्रहे तकन पृष्ठिहे পিরিয় পাবাণদেহ মাধার বরিয়া আছে 🖺 किन होता थक नवद धरे करा, निवित्तत -वानिम् बार्व कतिक, - धरे मूर्डि, - धरे कीव-



क्षेत्र, रहिन नेब, वीड़ार निर्वानिडा, STATE THAT COLL काविनीवृद्धिकति, अहे विमानवन्, जिरव्यक, क्वाहिक जानाक्रमहिज्याह वर्षपुञ्च , धहे **छक्तिः गर्भर्, गांधनात्र ममाहिल, बी**र्या कृतिक, त्नोंदर्ग मृषं, त्कारंग मोथ श्रूम-मृर्खिश्री, मुद्र नर्गरकत विचारतत कात्र हिन, সেই সৰ্বরসাধার মূর্বিওলির স্থমার্কিত অব্যের উপৰে ভাছৰ প্ৰয়োভ বল্মল করিত! হারলে, • আল ভাহারা ভগচুর্বে পরিণত; क्लातां करब, क्लातां चब, क्लातां ह নাসাচাত, কোনোটি ইস্তহীন, কোনোট ভরকটি বা ধল। শুহাও ভালিরাছে, তাহার हांन दिनियोद्ध, छाहात पिश्वाल काठेन ধরিরাছে, তাহার প্রীবেশপথের দার ভালিরাছে, তাহার ভিত্তির কারকার্য পদিরাছে, তাহার গৃহতবের আরতনে আরণ্যলভা ক্রিরাছে, क्ष : विश्वकान ध्यमन हिन ना। तम यह-পতিও নাই আর সে মধুরাপুরীও নাই। ा **विशेषात्र ।** नारे चात्र तम चरवाशात्र নাই। - ক্যালের ভশ্বতুপ কেখিয়া দেহের गांवना वृक्टिक भावित्व ना।

রাজিওকার উপরে, গণেশগুকা। ইহা
একজনা। চ্থানি বর আছে। প্রভ্যেকেরই,
পরিনাণ এক। স্থার নর হাত ও চওড়ার
শীচ হাত। বর হ্থানির বাহিরের দেওরাল
বাপিলে কুড়ি হাত হয়। বরের সমূথেই
নারাকা। হুপানে হুটি পাধরের হাতী আছে।
চাহার প্রয়, একটি উটু বারগা, নাম বড়
হাজা।

कंड कंड बरमां चाटन, र्वाकारेका, त्योक्तरकित्रम, व्यायक-गुठ-टेलकिक वारम ভिक अजनदर्गटक छनत्र मिथनदर ट्याटके রক্তরাঙা রবির রশ্মিছটা দর্শন ক্রিভেন গণেশ গুক্ষার পাশে, মর্ত্ত্যপুর, পাতালপুর ও देवक्र्वभूत नात्म करबक्षि श्रान। বিশেষ পরিচয়ের আবশ্রক নাই। তাহার পর হন্তী গুদ্দা। পধ প্রদর্শক বলিল এখানে রাজার হাতী থাকিত। হন্তী ওকার ছাদে একটি শিলালিপি আছে। লিপির অক্রপ্তলি অনেক স্থানেই অস্পষ্ট হইরা গিরাছে। বিশেব চেষ্টা করিলেও পড়া বার না। ছাদটি পতনোমুধ হইয়াছিল, পাছে শিলালিপিটি নষ্ট হইয়া যার, সেই ভারে বলের ভূত ৰূপ মৃত ছোটলাট উভবরন্ সাহেব, ছাদের তলার, তিনটি প্রস্তর তম্ভ করিরা দিয়াছেন। অন্তপ্তলি সাদাসিদা,—তাহাতে কোনো ক্লপ কাককাৰ্য্য নাই,—ভনিলাম ভাছাই নিশাৰ করিতে হুহাকার টাকা খরচ হুইরাছে 🗀 .

তাহার পর, থুব উচ্চে আরো আনেক শুলি ছোটখাটো গুহা আছে। তাহাদের কোনোটার নাম পবনাহারী গুড়া; কোনোটার নাম বাাল শুড়া, কোন গুড়াটার নাম সর্প গুড়াইত্যাদি। ব্যাল শোকাটি অবিকল, বাবের মুখের মত। চোখ, নাক, মুখ সবই কোদিত হইরাছে। দেখিলে মনে হর, যেন একটি বাঘ, মুখব্যাদান করিরা রহিরাছে। অর্পপুরী-শুড়াই পিন্টাভে। এ শুহাটভেও হুটি ঘর। নীচের বারাক্ষার তিনটি বার্ণাল মূর্ভি, গুড়ের উপরে, ছুইটি অব্যানোহী মূর্ভি, তাহারা ছাদের ভাল বহন করিতেছে। গ্রের ভিতরে, পার্লি

ভাষার শিখিত, একটি শিলালিপি আছে।
হরিদাস গুহা লখে সাড়ে পাঁচ হাত ও প্রস্কে,
চার হাত। উচ্চতাও পাঁচ হাত। জগরাথ
গুদ্ধা লখে চৌদ্দ হাত, চওড়ার সাড়ে তিন
হাত ও উচ্চতার সাড়ে চারি হাত।
তিনটি থামের উপরে ছাদ। ছ'পাশে হুখান
খর। জ্বা-বিজ্যা প্রভৃতি নামে আরো
কতগুলি ছোট গুহা দেখিরা, আমরা উদর
গিরি হুইতে থীরে থীরে নামিরা আসিলাম।

শুনিলাম, এই সকল গুহার ভিতরে অনেক সময়ে চোর ডাকাত আসিয়া লুকাইয়া থাকে। পুলিশ, আসিয়া, অনেকবার অনেক লোককে এখান হইতে ধরিয়া লইয়া গিয়াছে।

তাহার পর, আমরা খণ্ডগিরিতে উঠিতে লাগিলাম। উদর্গিরি অপেকা, খণ্ডগিরিতে উঠিতে, বেশী কষ্ট। পাধর কাটিরা দিঁড়ি করিয়া দেওয়া হইরাছে। দেখিলাম, দোপান শুলির কোনোটি এক সুট ও কোনোটি বা আদকুট চওড়া।

সোপানের পরতিশটি ধাপ উঠিছা আমরা একটি গুলা দেখিতে পাইলাম। সেটি শ্বার বারো হাত ও চওড়ার প্রার নর হাত। এখন কাটিয়া গিয়াছে। তিনটা নিটাড়র ধাপ দিয়া, ভিতরে বাইতে হয়। ছিতীর গুলাটির নাম, ধানবর। এখানে আগে ধানের ভাগারছিল। গুলাটি উচে প্রার পাচ হাত, গ্বার বারো হাত ও চওড়ার দশহাত, তৃতীর গুলাটির নাম নবমুনি। উচে সাজে পাঁচ হাত, গ্বার সাড়ে নর হাত ও চওড়ার দশহাত, তৃতীর গুলাটির নাম নবমুনি। উচে সাজে পাঁচ হাত, গ্বার সাড়ে নর হাত ও চওড়ার চার হাত। ভিতরে অনেক ভিত্তি বাৈদিত থ্রাস্তর মুট্টি আছে। মুর্ত্তিগুলি সারিবিভক্ত। প্রথম সারিতে সপ্র

वांनित्क, अकृषि हांचे मूर्खि, छानित्क विकृष्ट्रिं, निर्दाशित मकवा मर्ग। পর একটি ধানিমগ্ন বুছমূর্তি। চতুর্থ ভছাটির নাম,—হুৰ্গা গুৰু। নাম ভুনিয়া বিশ্লিত হইলাম। বৌদ্ধগণ এরপ নাম কথনো দেন, নাই। পরে ব্ঝিলাম, বৌদ্ধ প্রাধান্ত অতীত इहेल, यथन मूश बाञ्चण मंक्तित्र भूनकृत्वाधन হইয়াছিল,—সেই সময়ে গুহার প্রাচীরে ফিলু শিলীর হাত পড়িয়াছিল এবং ভাহারই ফলে ভিত্তিতে সিন্দ্রাক্ত সর্বামগলামূর্ত্তি ফুটরা উঠি-রাছে। শুহাটি ছভাগে বিভ্ক্ত। ভিতর ভাগ উচ্চে সাড়ে চার হাত, লম্বার চৌদ হাত ও চওড়ার পাঁচ হাত। বাহির ভাগের উচ্চতা একরপ, কেবঁল লখে বারো হাত ও চওড়ার সাড়ে তিন হাত। গৃহভিত্তিতে উপ-বিষ্ট ও দণ্ডারমান কতকগুলি বৃদ্ধ ও স্ত্রীমূর্ত্তি আছে। তাহার পর, পঞ্চমগুহা;— খণ্ডগিরি ও উদয় গিরির ভিতরে আমার বোধ হয়, এই শুহাটিই সকলের চাইতে স্থন্দর। ইঁহার नाम, সাতবৰরা গুন্দা। এ শুহাটিরও ছুই ভাগ। উচ্চতা, প্রায় পাঁচ হাত। চওড়ায় চার হাত। লখে বারো হাত। ভিতুরে তিনথানি সিংহাদন আছে। তাহার উপরে তিনটি বৃদ্ধমূরি। মূর্ত্তিগুলি বড়ই স্কর এবং গৃহভিত্তিতে ও চমৎকার পালিস করা। বহ বৃত্তমূৰ্ত্তি খোদিত আছে। মতলাকার স্তম্মের উপরে ছাদভার অর্পিক। ওহাটির যারগাই कक्टन, छ ভিক্তি,—স্কল श्रमान्त्रिट—यक् यक् कतिराहर । हेरात উপরে, ছিতলে আর একটি গুরু আছে। কিন্ত मिथात्म केंश योच ना। नीति बहेर्फ, डेशब्बत " C941 ঘরের জানালামাত্র

वक्नि वान छेडिया दिनाम, त्रानानत्वनी gहितिक हिंगेड़ा शिडाटका आमता दानिक मिश्रा रहोकाँ। नि कि किश्री अकि के बर नमकन য়ালা পাইলাম। সেধান হইতে অনেকটা আদিরা একটি স্থানে থামিলাম। তথার একটি ছোট বাপী আছে। তাহার নাম. কেহ वानन, चाकामगना,-- (कर वानन खश्रभना। ্বাপীতে সর্ব্বদাই জল থাকে। চল্লিশ হাত গভীর করিয়া, শৈলাক খোদিত হইয়া, এই বাপী সম্পূর্ণ হইরটিছ ! আর্য্যশিরীর আস্থরিক ুশক্তি শারণকৈরিয়া, আমরা অবাক হইলাম। •এই গিরিপুঠে, বে শক্তি," এমন অভত কাজ করিয়াছে, সে শক্তি ধন্ত ! বাস্তবিক, সেই প্রাচীন বুগে, যথন বর্তমান কালেব মত বিবিধ প্রকার যন্ত্রাদির চলন ছিল না, তখন কঠিন পর্বতাঙ্গ কাটিয়া, এরূপ গভীর জলাশর নির্মাণ করা, কিরূপ কষ্টকর ও বায়দাধা ছিল—তাহা এখন কেবল অনুমান সাধুগণ, আগে **খণ্ডগিরিবাসী** আকাশগলারই অমলজনে তৃষ্ণা নিবারণ করিতেন। অনাদরে, জলে এখন পানা জনিয়াছে । একটু জল তুলিয়া দেখিলাম, তাহা এখনো দিব্য স্বচ্ছ। পান করিবার हेकी हहेन, किन्दु शीखांत खरत शांत्रिमां ना। তৰে ডা৯ রাজেজনান মিত্র, আকাশগদার জল পান করিয়া লিখিয়াছেন, সে জল ভারি . भिष्ठे। "List of ancient Monuments of Bengal" নামক পুত্তকে পড়িরাছিলাম, উদয়গিরির উচ্চ শিখরেও ললিভকুও নামক °আর একটি বাপী আছে i কিন্তু আমরা তাহা तिथि नाष्ट्र। आकानश्रमात्र शाल, श्र नीत्र, धक्रि कामाक्रांटन ननांक्रकनती त्रांकात

দিংহৰার দেখিতে পাইলাম। এই স্থানে বাইবার পথ নাই। রাজা ললাটকেশরীর দেহাবশের এই স্থানে রক্ষিত আছে। স্থানটি বড়ই অন্ধকার। রাজা রাজেজ্বলাল মিত্র বলেন, ইহাও একটি গুহা। কিন্তু আমাদের পথ প্রদর্শক বৃদ্ধ বলিল 'এটি সিংহ্বার'।' কাহার কথা ঠিক ?

তাহার পর ডান দিক ধরিয়া, আতরা উচ্চে উঠিয়া, খণ্ডগিরির শীর্ষদেশে গিয়া উপস্থিত रुरेनाम। प्रिटे हात्नरे, भृत्कीक देवन মন্দিরটি স্থাপিত। ভনিলাম, ইহা পরেশ-নাথের মন্দির। মন্দিরটি, দেখিতে অভি চমৎকার। প্রস্তরনির্মিত ভিত্তি চারহা**ত** চওড়া। ছইটি ষর আছে। দশটি লোপান-শ্রেণীর নাহায্যে ভিতরে যাইতে হয়। ভিতরের ঘরটি চতুকোণ। চারিদিকেই প্রায় চৌদহাত नचा। गृहमस्या এकि तृहर श्रेखरत्रत्रं সিংহাদন আছে। সিংহাসন বা বেদীটি হু'থাকে বিভক্ত। তাহার উপরে ছোট বড়ু, ত্বনর পালিস করা পরেশনাপের মূর্তি। তুই দিকের জানালায়, পাঁচটি ছিক্ত। বাহিরের ঘর বা দালানটি লম্বে প্রায় চৌন্দ হাত এবং চওড়া সাত হাত। সমগ্র মন্দিরটির উচ্চতা মাপিতে পারি নাই,—ভবে কুড়ি বাইশ হাঁতের কম হইবে না। বোলটি মণ্ডলাকার থাক পরে পরে উঠিয়া,—স্চাগ্রভাবে গবুজটি সমাপ্ত হইরাছে। মন্দিরের পিছনে দেবসভা नात्म এकि वोद्धटें आ आरही। মহিমার, এখন উহার নাম "একার গাদি" হইরাছে। প্রধান মন্দিরের দক্ষিণ পারে। वकि एक्षिणे देवन मनित। কুফ প্রস্তর্গর চিত ক্রমার্জিত উলন নিনের

সূর্তি। জাহার পর, অনস্ত ও তিত্ততি প্রকৃতি
নিজির নানের বিভিন্ন ভহা। অনত ভন্দার
ক্রনানি নাক বীর্ষ বর। বরের সমূধে একটি
নারাকা আছে। বরের বারের উপরে কারুকার্য্য
আছে। ভিতরে, বৃদ্ধদেবের ভর্মচুর্ব মূর্ত্তি।

' শ্বহা-দৰ্শন সমাপ্ত হইল। ু শিধরম্ভ জৈন দেবায়তনের চন্ত্রের গিরা বসিরা এই আকাশ-अनका, পডিলাব। निकाना, नमीक्षना नीनात्रमा श्रुक्तित र्वोदन-नौनां (पश्चित्रा, मुद्ध इट्टेनाम। पूर्व ভূবনেশরের বিরাট শিধর-চক্র ভাত্ম-প্রভাতে অলিভেছিল। নীল-ক্ষলনিলীয় আকাশের মুল্লাচলে রবি রক্তথাথি মুদিরা ভূবিরা जू ब निष्ठ, पृष्टिमीया ভরিরা (भटनन । স্থামলিতা সীভামাভা,—বক্ষে ভটনী-রজভ-त्रिया-त्रमा रुतिरश्चाम शास्त्रज्ञी गरेता, एक्डार्य ·**অহরের** অনাহত নিণীমার প্রতি নিণিমেব-व्यव्य ठारिशाहित्यन। চারিধিক **মুক্তজনতা**র डेक्टब्रांग, এথানে शानगर्ध नोब्रद प्याहेश जनस्थात्रगात्र काट्ट, শজিরাছে। কেবল, মাঝে মাঝে, কোন ভূণ-ভর্মিতা ভূমি হইতে রাথানের বেণু-ৰাজনার ভান, অলস-বায়ুভালে ভাসিখ। আনিতেছে। এবং অতমু-ক্ষ-মালপ্র মুখুর বিবাদ-বেহাগ ভাহার সহিত করুণ-জুর बीविश विष्ठहा विषक्विश पश हेहा.--भागीत्य कारात्र इन्त, भनत्क छारात्र त्थात्रणा, ব্যানে ভাষার পরিণতি। জগতে, নকনের কোন বীৰা পাছে, বাহাতে ভাৰাৰ বাগিনীৰ बृङ्गांड प्रमम्भागम वाजियां मा फेर्टर ? यत्नव ভিতৰ হইতভ, কে বের শথগভীর করে नारिश देखेन :--

"श्यात स्तितक्षम कृति, मुख्य कृत्रहाय। कृषि क्रम**ड,** नर शम्**ड कर्न** क्राबाद শশুগিরির ঐতিহাসিক তথা বড়াবেসী भाउरा याव ना। जाः ब्रांट्स्ट्रमान विक মহাত্রা প্রিজেণ্, তাঃ शकीय, डानिंद ফারগুদান ও কনিংহাম প্রভৃতি, স্থবিখাত প্রত্তত্ত্বিদ্যাণ, খণ্ডসিরির ইতিহাস সংক্রানের জন্ত প্রাণপাত পরিশ্রম ও বছ করিরাছেন। करन, बांश मरगृशेख हरेबारक, এडधन পণ্ডিতের মিলিত চেষ্টার নিৰটে, ভাহা সামান্ত মাত্র। পরস্ক, তাহাও মতবৈধের ঘাতীত নর। ভারতীয় পৌরাণিক প্রস্থান, হিন্দু-কীর্তির বিজয়-ঘোষণায় শতমুধ। কিন্তু বৌদ্ধকারি-বর্ণনাকালে তাহারা মুক। অভএব এখনে প্রাচীন পুস্তক হইতে, কোনোক্রণ সাহায্য

তবে হ' একখানি প্রাচীন পুরকে বঙ্গিরি বা বর্ণকূটান্তির নামনাত্র পাওয়া বার i বধা একার-চক্রিকার,—

পাওয়া বার না।

"ৰণাচলং সৰাসাদ্য ৰভাত্তে কুণ্ডলেখন:। আসাদ্য ৰান্নাহী দেবী বহিন্তেখনাবৰি॥" অভয় :

"অন্ত ক্ষেত্ৰত বংগাণং ক্ৰিয়তে বান্ধ্ৰীন হি। তংগৰ্কং নাম্বতি বৰ্ণভূটাকৈ বৃদ্ধিন ঃ বৰ্ণকুটেছণি বংগাণঃ কৰ্ম্মণা বন্মা সিরা। -তংকালয়েমহাগাপং ক্ষেত্ৰত্বৈৰ প্ৰদক্ষিণ্।

পত্যিরির গুরাহাপত্যের আনর্প ও নির্মাণ-প্রধান কেবিরাও, ভালনির্পরের জনেকটা, স্বিধা হং। এবং গুরাফিজির বছস্থলে শিলালিপিও জোমিত আহে। ভারাই কাল-নির্পরের প্রধান সহার। কিছে, বি স্কল, শিলানিপিও, ভালতাভারে কর্মাও হইরা, হানে, ভারা এই শশ্রী ৭ং প্রিন্দেশের মত বহদনী প্রস্তুত্তবিদ্ধ তাত্তা হইতে কোনো জাতরা তথা আবিদার করিতে সক্ষ হব নাই।

সিংছলের Dathadhatawanso নামক পৰিত্র প্রকেক উলিখিত হইরাছে:— ৪৩ খৃঃ পূর্বে, বৃব্বের নির্বাণের পর, তাঁহার জনৈক শিল্প, পৰিত্র দত্ত লাইরা, প্রীতে আগমন করেন। ভাহার পর,—উড়িয়াপ্রদেশে বৌদ্ধর্ম প্রচারিক্ত হয়। এবং পরবর্ত্তী দশ শতাব্দকাল, উৎকলপ্রদেশে, বৌদ্ধর্মের অসামান্ত প্রাধান্ত হাপিত হুর।

বৌদ্ধ প্রাধান্তকালে নানাদেশীর রাজন্তবর্গ,
বুদ্দত প্রচারের জন্ত চারিদিকে ধর্ম প্রচারক
প্রেরণ করিতেন। তাঁহারা নগরে নগরে,
গ্রামে গ্রামে, ভিক্ষুরত অবলম্বনপূর্বক ধর্মপ্রচার করিরা বেড়াইতেন। সেই বৌদ্ধসম্প্রদারের প্রধান উপনিবেশ ছিল,—
ধণ্ডগিরি।

প্রকৃতির শিক্ষা, বড় শিক্ষা। বে মাত্রব হইতে চার, প্রকৃতির শিক্ষাকে, দে অবহেলা করিতে পারে না। ভাই প্রকৃতির প্রদারিত ক্রোড়েই প্রমনির্বাণশ্বাা বিসর্পিত। দেই জন্তই বৌদ্ধবিত্বন্দ, ধণ্ডগিরিকেই আপুনাদের যোগনিবাদে পরিণত করিবার জন্ত আগ্রহান্তিত হইলেন।

 কিন্তু, পাহাড়ের উপরে বাদ করিবার উপয়ক হান কোথার ? হভাবনির্মিত গুরা থাকিতে পারে, কিন্তু জল পাওয়া বার কিরপে ? জল হয়ত' পাওয়া গেল,—কিন্তু মাথা রাথিবার ঠাই পাওয়া লাম হইয়া উঠিল। ভগ্ল, মনিক্রিয়ার ক্ষেত্রমুখে গুরা-ক্ষোলনের পরাবর্শ উঠিল। কৈছ তাহা বারসাধা।
ভিথারি মান্তবের অত টাকা নাই। তখন,
ধর্মপ্রাণ রাজা আদিরা সাহায্য স্বীকার
করিলেন। এইক্সপে, ধণ্ডগিরির বৌদ্ধকীর্ত্তির প্রতিষ্ঠা।

প্রাচীন ভারতীয়ের বাসস্থান দেখিবার স্থোগ, কালের মহিমার চুল্ভ হইরা উঠিগাছে। তাহার শেষচিক্ত পর্যান্ত বিলুপ্ত হইয়া গিয়াছে। কেবল, খণ্ডগিরি প্রভৃতি, ত্র'একটি স্থানে, তাহার, নিদর্শন পাওয়া যায়। **এই यে निमर्गन,—हेश अनुश्च इहेड, यान** ভারতের শিরিগণ সংশীরমোহে অভিভৃত হইতেন.—বদি সে ক্ষেত্রে তাঁহারা অচিরকাল-ম্বায়ী ইষ্টক বা প্রস্তমন্ত্রপ গঠন করিয়া আপনাদের সামরিক স্থবিধা করিয়া লইতেন। ফলে, হু'দিনে তাহা ধ্বংসক্বলগত হইত। কিন্তু তাঁহারা ভিন্ন পদ্ধা অবলম্বন করিয়া-ছिলেন। এই ভিন্ন পন্থামুসরণের কারণ,-ধর্মের অনম্ভানুগামিতা। ভারতীর হঁপতিগণ, বহু স্থলেই, স্থচির-অটুট গিরি-বর্ম্বের আশ্রের আপনাদের কারুকলাপুকে ধ্বংনের কলাল ইইতে রক্ষা করিয়াছিলেন। নতুবা, গ্রীদের প্রাচীন দেবদেবীর মন্দিরের মত, ভারতীয় স্থাপত্য আৰু ইতিহাসের পত্রই অলক্ষত করিত। ইহার মূলে, কেবল সংসারীর সৌন্দর্যালাসা থাকিলে, আজ আমরা থগুরিরি দেখিবার সৌভাগ্য লাভ করিতে পারিতাম না। যোগীর প্রাণের স্পন্র প্রকৃতির খণ্ড পিরি যোগীর জন্মই নির্বাচিত।

থওগিরির গুহা-শির, আমাদের চক্ষুর সম্মুখে, বৌদ্ধব্দের ত্রিবিধ চিত্র প্রসারিত করিয়া • দিয়াছে। ° প্রথম, ুবোক্স-মুন্

(Ascetic age) ভাৰার পরিচর, ক্রভন रमञ्जीन स्मिथितन, কহাত্তগিতে। ভাহা बानव रांख उरकोर्न छहात भतिवार्क, बनहात्रो व्यक्त गर्छ विना मत्न रहा वांखितक, শগুসিরির এক একটি গুহা এমনি স্বর-পরিসর,—বে তাহা **अक्ड**न माश्रु (यव **উপবেশন** স্থান-কল্পেও একান্ত অপ্রচুর। ইংার কারণ কি ? বিনি বৈরাগা-মজের আবাস প্রচারক,—তাহার বৰূপকণ্ডভ্ৰ কোমল শ্বার নর। তাঁহার মাধা রাধিবার अकडू डीहे स्टेल्स यदबंह । जाहे, नर्स अथरम বে সকল গুহা নির্মিত হইরাছিল,—ভাহা सागमाध्यत अग्रहे कत्रिछ। त्रहे कात्रल, কুত্ৰগুহাগুলিতে গৌন্দৰ্য্যজ্ঞানস্চক কোনোক্ৰণ এই नारे। নির্মাণপদ্ধতি কাককাৰ্য্য हरेए बार्बा बाना यात्र, डेक नमरव, खेरकन अलाम, तोषशामीत প্রেদার অধিক হয় নাই। ধর্মের প্রসার যদি অধিক रहेज,—छारी रहेल, अठावत्कव मःशांव সামান্ত থাকিত না, স্বয়সংখ্যক প্রচারকো-প্রোপী কুদ্রারতনের গুলাকোনিত হইত না। পরস্ক, প্রহাঞ্জির পরিসর বহুসংখ্যক ব্যক্তির অক্সবৈতিত হইত।

ষিতীর, প্রচারপ্রধান যুগ। (ceremonial age) ঐ বুলে, বৌদ্ধর্ম্ম ক্রমণ দেশ বিদেশে প্রচারিত হইরাছিল। প্রচারকের সংখ্যাও বাজিরা বিরাছিল। তাহার পরিচর, তত্ত-শোজিক জাণেশাকৃত স্থানর গুহাওলিতে। প্রচারজ্বনা এই স্থানিসর গুহা সমূলাবের মধ্যে এক্টেম সমবেত হইতেন। এবং পর-শারের কহিত গুর্মবির্বক আলোচনা ও স্থানিস্কান ও প্রাম্থি আলোচনা বিত্ত

অবসরাভিবাহন 'করিজেনা কি বুণা, ভহাবারী বৌদ্ধভিত্তপ কেবল নিজ্ঞ-সাধনার কাল যাপন করিজেন না। বিবিধ বিরুত্ত আলোচনার দরকার, স্থতরাং বোগসাধনার নিমিত্ত যে হান প্রচ্ন, ক্লবিশ্রালাপের পক্ষে ভাহা সামান্ত। অভ্যান গুরুত্ব বাড়িল। লোকজন আসিবেন, শিল্পকর্মপুত্ত সামান্ত হান আর যথেষ্ট নর,—ভক্ত হইল। ভাহাতে কারুকার্যা খোদিত হইল।

कृ ठीय, वर्षविनान वृक्ष। (Fashionable age) अ वृत्र शर्यंत्र व्यक्त वानगारी থেয়ালের ললিতলাভ্রশীলার চটুলভাই অধিক দেখা যায়। ধর্ম, তখন আর পুরোহিতের মন্ত্র-বচনের অধীন নয়,—বে তখন আর ভূষার-শীত্র পাধরের উপরে, আপনার বিভানশ্যা রচনা করিতে চায় না, তখন সে রাজ্ঞীপুট হইয়া, পালকের উপাধানে মাথা রাণিয়া আরামে ওইরা থাকিতে চার! যে সংগার-বিমুধ অন্তরতম ভাব, এতদিন ভোরের . সিশ্বলাবণ্যরাভিমার উবার এবং एक निर्मात्र नीनांबनत्रमा अन्छनए শশিতারকাদীপালী मर्णटन, গ্ৰন্থী রউদাত্ত **छक्रनशांत्र वक्रभूषे (छक्रभूक्षक छेव्ह**निज हरेश कुमानत्म विनीन इहेश शहेड, व्याक छोड़ी বিচিত্ৰকলগীলাক্ম রাজ-মহিমার নৰ্ত্কীৰ নৃপুৰ্ণিঞ্জিৰ কল-ভালে মন্দিরার (बार्ण व्याच श्रकाम क्रिका छारात भित्रित्र) दांगी बका, बांगेब आगाब प्रामुख खरा-विविश्वारम्ब नामकारी,-क्छ पात्रभारमञ्जूष्ठिक मेकात्र पृष्ठ केउ. रेक्ट्रब युव, अन्तु क्यानीत्र अनुष्ठ काम विनाग, २७ मध्योगस्थक, देस्तु निर्धान, तप्रांगवात,

मन्त्रद्वानः वननः शोक्काः वाष्ट्रदा (कार्याः প্রেমের ছবি, কোণাও কামের ছবি, ক্রোথাও রণের ছবি, কোথাও উলঙ্গা কাৰিনী, কামোন্তৰ পুৰুষ, অপাক-বিকেপ, চটুল হাজ, রঙ্গ, পরিহাস, থেলাগুলা, শ্বরলীলা! ধর্ম ধধন আচার ও বিলাসের श्रक्षां मिका अवाद् ঢালিয়া গা क्षरवद्र आशीर रथन तम अवत्हला कदिन, ঐহিকতার নাগপালে, যথন সে অশিব পিনাক নিনাদ করিশু তথন আর তাহার দে শাখত নিৰ্মালা কোথায় ? দেখিতে দেখিতে, স্ৰ্য্যো-मस क्रिका- अठिम -- उरकन श्रेट तोक धर्ष विषाय श्रद्ध कतिन, -- नववरन वलोशान ত্ৰহ্মণাশক্তি আৰার ভ্রমার প্রবান করিয়া আগিয়া উঠিন, বুদ্ধের গৈরিক পতাকা কোথায় উড়িয়া গেল,—কৌধায় রহিল অবেদ-গীতিকা. क्यांचा बहिन चहिरना धर्म, काथात्र त्रिन ভিক্ৰত, সন্নাসগৰ্ণ গিরি-গর্ভে থাকিয়া रान क्वन वोद्धवित उथान, अनात वदः পতনের স্থায়ী ইতিহাস।

•ইহাই খণ্ডগিরির প্রকৃত ইতিহাস। সাল বা তারিবের তালিকা, ইতিহাস নর, তাহা মুগ্ধ পাঠককে বুন পাড়াইবার রূপার কাটি! •কিছ তাহা নহিলে আজকাল চলে না, অভএব নীচে প্রস্কৃতস্ববিদ্গণের স্বস্থ সংগৃহীত কতি-• পর্তথা প্রদান করিয়া, আজ বিদায় প্রহণ করিব। ডাঃ হাণ্টারের মতে, খণ্ডগিরির বৌদ্ধ ন্থাটি, খ্রঃ পূর্বা ২০৯ শত অব্দে প্রতিষ্ঠিত ইইরাছিল। (Statistical Account of Bengal:: Vol XIX, P, 73.)

ি কার্ত্তননও এ মতাবল্ধী। কিন্ত ডাঃ নালেজ্যাল বিক্ল ভিন্ন মতাপুসারী। তিনি বিবিধ প্রমাণপ্রয়োগে দেখাইরাছেন, যে বঙ্গিরির গুহা-শিল্প আরো অধিক্কালের প্রাচীন। তিনি বলেন

"গৃঃ পূর্বে চারি শত বংসরের মধ্যকালে হত্তিগুফা। ক্ষোদিত হইয়াছিল।" (Antiquities of Orissa. Vol II. p. p. 40) তিনি আবো বলেন:—

"গুহার ভিতরে, গিরি-গাত্রে পালিভাষায় লিখিত যে শিলালিপি পাওয়া যায়, কালনির্মাধনে সকল সন্দেহ, ত'হারাই নিরাকরণ করিয়া দেয়। তাহা হইতেই আমরা জানিতে পারি, যে গুহাগুলি, খৃ: পূর্ব ছই শত বংসরেয়ও আগে কোদিত হইয়াছিল।" বৈকুণ্ঠপুরের দক্ষিণদিকৈ, পালিভাষার যে শিলালিপি পাওয়া গিয়াছে, স্থপ্রসিদ্ধ প্রিন্-সেপ সাধেব তাহার অমুবাদ করিয়াছেন:—

"Excavation of the ragas of Kalinga, enjoying the favour of the Archantas, Buddhist saints....."(তাহার পরের ভাষা একাস্ত অবেশব্য)

জানা গিগাছে, আইর নামুক কলিঙ্গাধি পতি বঙাগিরির অনেক গুহা কোদন করিয়া দিয়াছিলেন। সম্ভবত, উক্ত শিলালিপির কলিঙ্গরাজগণের মধ্যা, তিনিও অন্ততম।

আগেই বলিগছি, থণ্ডগিরির শিথরে, যে কৈন-মন্দিরটি বছদ্র হইতে শেষ্টা বার, তাহা আধুনিক-মৃগের। ডাঃ রাজেক্রলালের কাল-নিরুপণ ধরিরা হিসাব করিলে, বলিতে-হর, উক্ত মন্দিরটি ১১০ বংসরের কিছু অধিক বা অর সময়ে নির্মিত হইয়াছিল। উহার নির্মাণ কন্তা, ছইজন, জৈন বাংসারী। ভাহারা পুরীতেই বাস করিতেন। কিন্ত, এই অর-কালের ভিতরেই মন্দিরে 'ফাট' ধরিয়াছে। আর এক শতাকীর মধ্যেই, সম্ভবত, উহা ভূমিসাৎ হইবে। कार्विति स्वेक्ष्णकं त्यांचकेषि नवा करे का केश्रा प्रशास त्योज्ञा यह कर्ण का वेतिक सर केश्रा त्रिक्शीयरक त्योककीर्ष क्या स्व त्यव ह बाद त्योकशंगकाश्यक त्यांच Dagaba का स्थ क्षर क्षर्यकं

(Trees & serpent worship)
কিছু জা: বাবেজগান নিজ, হয়ত প্রমাণ নহ-বোনে, এই আগতি খণ্ডন করিবাছেন।

ক্ষৈত্ৰ কৰিব হইতে সামান্ত দুরে, পাহাড়ের সমতল আংশে, আকাশগন্ধা হইতে কৈন-মন্ধিকে বাইবার পথে আমরা একটা হুবুহৎ চক্ষ দেখিতে পাইবাছিলাম। চক্রটি প্রন্তর রুচিত। সিরিপৃষ্টসঞ্চিত মৃত্তিকা-ন্তরে ভাহার আর্থাংশ আরত। কারগুসান সাহেব, কেন সেটি দেখিতে পান নাই, ভাহা বলিতে পারি না। কারপু, একটু মনোবোগ দিয়া দেখিলেই চক্রটি বেশ দেখা বার। তবে, ফারগুসান সাহেব বধন্ কওগিরি দর্শনে গিয়াছিলেন, সন্তবতঃ, চক্রটি তথন মৃত্তিকাগুপ্ত ছিল। ভাঃ রাজেজ্ঞলাল মিত্র, বা হাণ্টাবের প্রত্বেও ইহার কোন উল্লেখ দেখিলাম না।

গণেশুশুকার উপরকার বারান্থার কভকগুলি গরচিত্র ছিল। হাণ্টারের 'উড়িব্যার' উক্ত ক্ষোদিত চিত্রগুলিকে জীবন-বুগুসুলক বলা হইরাছে। আমরা সেই চিত্রসমন্তির বিবরণের মর্গ্রোছার করিরা দিলাম।

প্রথম সুজে, একটা তরত্বে এক ব্যক্তি পারিত। প্রতাদ, তারার সম্পর্কিটি উপজ্ঞা। পতির লাজর উপরে, কাহার বজিব হাতবানি হাপিত। বিতীর ক্তে, উক্ত রম্পীর কোব্যাচক আমিতেবেন। সভবভঃ কিনি প্রকাশ হাতব্যা। কুডার স্ক্রে, র্ড। প্রেট্ডিক

THE AREA STORES गाय, ततन्त्रका सहिक परि Pre, valles siegare well with वन मजना स्टेशाता नक्त हैंक अक्षेत्र नामा शांकित **उन्ह**त शांनिया नेपानित कार्यक्र शांकित केगरत, किन गांकि गाँगित बोर्ड्स । शिहरत चन्नवनगरी पक्ररेग्डमं चन्नमं भेरेंबा ड्रॉडिंग्डर वानग्ज, रश्र्वान गरेश यशविकाय पूर्व क्षत्रिकारन একৰৰ অনুসৰাকাৰী হাতিয় পুৰ-কাছে আনিয়া পভিয়াহে। হাতির পিত্নদিকে বে লোকট বনিয়া হিলেন, ভিনি কাজের বত একবানি ছোট ভর্বার শইয়া নিক্টছ বিপক্ষের শির, দেই হইতে একেবারে বিচ্ছিল্ল করিরা বিস্তাহেন। বর্চ দুখে, আৰাসে প্ৰত্যাপৰন। শৃতিটি বুক্তমান্ত হইয়া, বিদর্শিভগুতে যদিরা পড়িতেছে। আবোহীরা সকলেই অবতরণ করিরা, একপাশে দীড়াইরা আছেন। আর একদিকে সেই কুলভাগিনী यहिला है है। छोटेश। उंशित बामुनाविष्ठ क्लिमादबर केल्टर वृक्षकृष्ठि कि এको। बिनिय चाहा। किन्नु छाहात अक वक मूक, -रिश् रमनभूख । छै।होड बूद विवाद-समान पर्नाहेडा আসিয়াছে। যেন তিনি শহুত পাপাতৃঠানের জন্ত হৃদরে কটের আখাত পাইয়াছেব। সপ্তম দৃশ্রে, পারিবারিক জীবন-চিত্র। মহিলাটি, ভাঁহার বামগত बाधगुरात्व विकायरम् बका कविया नाष्ट्रादेश चार्टन। **जामहाएक, अकृष्टि महात यक विश्वनिय। कांशक निर्दि** मुक्ते. छेशुक वरक व्यक्तेयन, क्रि त्वहेरन कीर्निन-कृष्ठित এक बक्त बन्छ । भूबंदार्की विश्वतालाय, बहिलावित . भूत अद्वादा विक्रम्यान हिन्, अयादा कोनिनमाज দেখা বিরাক্ত। পাশে রাজপুত্র। ভারার বার্থিনতে ध्यूक ;-- अवर फानशास्त्र, किवि बहिनाव कर्डियावन कतिया आह्मत । यहकडे, यह विनातम नात आकार्तिक वन नाट्छ प्रावस्थाव पूर्व चाक स्वक-वानाव द्वार मित्रारक। रक्षामम्बद्धिक, रमके व्यानक्षीकि कृष्टिता **छेत्रिशास्त्र अक्षेत्र केन्य्रासीय पुरक्त बाह्यके वाह्यकेश** THE WHITEL FOR A etake :

्तर क्षित्रकोति की सम्बद्धार किंद्रकी किंद्रकी

• ক্লারনের সর্বস্থিন, নিবিত্ব কাননে, মেবমন্ত্রী সাধার-মত্বে এবং ছরারোছ গিরিগর্ডে,
বহুণত শুলা ক্লোদিত আছে। তাহার কতক
আবিক্ষত হইন্টছে এবং কতক এবনো তিমির
তলে শুরু। আবিক্ষত শুহাগুলি, বগুগিরির
শুহালির অপেকা অত্রেকাংশে উংক্ষর। বোধ
হর, বগুগিরির প্রাচীনতাই তাহার অপক্রইতার
কারণ। বগুগিরিতেও, অপেকাক্ষত পরবর্তী
যুগে বে সকল শুহা কোদিত হইরাছে, তাহা
প্রথম বুসের অপেকা শিরোৎকর্বরমা। কোন

दराय कावित इत्या निव, गवनकी इतिरायन कारना इत नाहै। काहात काविन, वाहित हुनिह निवस्तान वेस्वपनिमकित अस्तिकांत किंद्र

শির্মান বহদর্শনগঞ্জিত অভিন্নতার উর্ত্ত হর না। পর যুগের শির্মিণ, অতীত যুগের জ্ঞানের অধিকারী ত হন-ই পরস্ক চিরাচরিত জাগতিক ক্রমোন্নতি-করে তাহাদের সৌন্দর্যা-ভিরাক্তি অধিকতর ফুট হইরা উঠে। থণ্ডু-গিরিতে শিরের পেইরপ ক্রমবিকাশ স্পষ্ট দেখা যায়। এই জন্তই, খণ্ডগিরির গৌরব। প্রাচীনতাই তাহাকে মহিমার গরীয়ান করি-য়াছে। ধর্মের ধারাবাহিক ইতিহাসই তাহাকে প্রকৃতত্বিদের নিকটে মৃল্যবান ক্রিয়া তুলি-য়াছে। ফ্রশের দেখিতে চাও ত, ইলোরা দেখ, কারলী দেখ। আর শিরের ক্রমিক স্তর দেখিতে চাও ত, খণ্ডগিরিতে বাও।

विरुप्तक्रमात्र तात्र।

অগ্নিপরীক।।

অন্তি পরীক্ষা সংক্রান্ত অলোকিক বৃত্যন্ত অগতের প্রাচীন ইতিহাদের সর্ব্ধতেই বহল পরিবাবে পরিদৃষ্ট হর। আবাদের ভারতীর পোরাণিক গ্রম্বনেত্র জানকীর অন্তিপরীক্ষা, বেহলার অন্তিপরীক্ষা প্রভৃতির 'বৈরপ বর্ণনা আছে, প্রাচীন গ্রীস্, রোম, বেবিলন প্রভৃতির পুরাতন ইতিবৃত্তেও এ সম্বন্ধে তক্রণ বহঁ আসুর্ব্য বিষয়ণ বেধা বার।

ইলানীংও কোন কোন মহাত্মা এই অলোকিক যাপার প্রদর্শন ক্রিয়া সেই পৌরাধিক বৃত্তাভ্যের শতাতা সবজে সাজ্য প্রদান করেন। সম্প্রতি চাকাতে শীয়ক্ষ ভর্মী কাল্প চুক্রমন্ত্রী মহাশ্র ইহা প্রদর্শন করিয়াহেন।

प्रक अन्य देशक कृषिक देन्द्रिक्रिकनम् आकर्प देशव प्रक व्यवनी देशक क्षेत्र, गाविरद्वेष्ट्रे व्यपूर वह ইউরোপীরান্ এবং এতদেশীর বহতর শিক্ষিত ও সম্রান্ত লোক প্রদর্শনীতে উপস্থিত ছিলেন। এই অভূত ব্যাপারে ইংরালমগুলীর মনেও কিবুপ বিশ্বর উৎপাদন করিয়াছিল, তাহা নিয়লিবিত মন্তব্য হু'টী পাঠ করিলে, বুঝিতে পারা বায়।

I went to see Srijukta Tarani Kanta Chakravarty giving an exhibition of Jogi. He walked over burning wood and through flames in a marvellous manner. 17, 4, 09. (Sd). J. W. Nelson (I. C. S.)

Dacea.

I went to see Srijukta Tarini Kanta Chakravarty in Dacca and can certify that he walked over burning wood in a way that is likely to astonish any and all speciators. 17. 4. 09. (Sd). S. K. Sawday. (I. C. S..) Chittagong.

বঁহার পর গড , আবাঢ় বাবেও এই ব্যাপারের প্রাটিকর হর। ভাষাও চাকাতেই হছরাছিল। উকিল ইন্ট্রটিউশনের প্রদর্শনী আমি বরং প্রত্যক্ষ করি বাই। কিন্তু আবাঢ় বাবের বটনা, আগা গোড়া সমৃতই আবার বচকে দেখা। সকলের অবগতির মন্ত প্রধাবে লে অলোকিক স্তান্তের সার সকলন করিরা হিলাব।

১৯শে আৰাড় প্ৰাতে শুনিতে পাইলাৰ--"দক্ষিণ-বৈশন্তিতে ঠাকুর ভর্মীকার্ডের আগ্রবে আর , অগ্নিপরীকা হইবে। ঠাকুর-মহাশন অলভ অগ্নিকৃতে व्यादम कविटनन ।" मरनावछा , अनिज्ञा वछ को छहन रहेन। शेषुत्र कानैकारकत नानाधानात चरतीविक শক্তির কথা, বছ লোকের মূবেই গুনিরাছি! চক্ষে क्षमक शिव नारे। चाव पत्र धरे गांगात अठाक क्रिक्रा, व्यक्तकः अ विवस्त्रीय नवरक तक् कर्नत विवास ভঞ্জের সংক্রম করিয়া অপরাক্তে কয়েকজন বন্ধু সজে করিয়া বৈশক্তি অভিযুগে রওবা হইলাম ! ংগতিকটে বিয়া (म वि. - ठाविमिक লোকাকীৰ। পথের বধ্যে এত লোকের সবাবেশ হইয়াছে বে ঐ কুত্র পথ দিয়া চলাচল व्यानक टाहोत ग्र वां अध्यत मत्रका পর্যান্ত উপস্থিত হউলে, সেভিগ্যাক্রমে আমাদের পরিচিত ছাত্র বহাপরের একলন শিব্যের হতিত সাঞ্চাৎ হইল। তিনি অতি কটে আবাদিপকে লইল। " बाजनबाजल बारन कहिरतन।

তবৰও কাৰ্য্য আরম্ভ হর নাই। ঠাকুর বহাণর আন্ত-বের অভাতরে আহেন। শিব্যের: উল্লোগ করিতেহেন। অথবতঃ আছৰ করে। আট হাত নীর্বেও আট হাত আছে, আর্থ্য আটি বিচিন্ত ংগতীর একটা কৃত থবন করা হইল। ভারার উপরে ২০ বন কাঠ সালাইরা, চতুনিবুল আরি নারোগ করিবেন। আতন অনিরা টুনিনে, নারাতে বুক্তর স্বৰুল বিকে স্বানাংশে অগ্নি কাৰ্চ নাড়িয়া চাড়িয়া নিচে আবিবেশ । আৰু প্ৰতী
পৰে কাৰ্চভান অৰ্থেক পুৰিবাণ কৰু হইছা, সুংগ্ৰহ
সকলাংশে সমভাবে ৰাউ দাউ কৰিয়া অনিচুত "
লাগিল। আভংগৰ তেনে তথন ও হানে ভিচান
ৰাম হইয়া উঠিল। নয়, দশ হাত দূৰে বে আব্রা
দাঁড়াইয়াহিলান, গ্রুবে আম্বিলিক্ত অহিব ক্ষিয়া
ভূলিল।

এই সময় ঠাকুর বহাপর সেবাবে আগমন করিলেন। তাঁহার নয় পদ, পরিবাবে গরনের বল্ল, গাতে গরনের উভরীর। তিনি ক্ততীরে অগ্নি-অভিমুখে কিরণ্ডশ দভামরান থাকিয়া, কি এক ময় পাঠ করিতে করিতে অলম্ভ ক্তমধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। অগ্নিশিখাতে ভাঁহার কটাবেশ পর্যায় ভ্রিয়া পেল। এই অনুসাঁকিক দৃক্তে হর্ণক মাত্রেই বিস্তরে আগ্রহারা হইয়া সকলে হরিকানি করিতে লাগিলেন।

ঠাকুর বহাপর দক্ষিণ হইতে উভবে, উত্তর হইতে , দক্ষিণে, আর পশ্চিব হইতে পৃর্বে, পূর্বে হইতে পশ্চিমে, চারিবার ক্তববো পরিত্রবণ করিয়া ভীরে অবভরণ করিলেন। ভার পর শিব্যেরাও তাঁহার পদধ্লি এহণাভর, একে একে অগ্নিক্ও পার হইরা সেলেন।

ঘটনা পুৰই আক্ৰিয়ালক, কিন্ত মনে বনে
একচুত্ সন্দেহ হইল—"ইহারা বোৰহর পরীরে ও
বল্লে অরিপ্রতিলেশক কোন বন্ধ নাথিয়া সইপাছেন।"
কিঞ্জানে ইয়া নিশ্চিত আনিতে পারিব,—এই
চিন্তা করিতেতি, এমন সমর ঠাকুর মহাপর বর্ণক,
মধ্যে কাহারও যনি এই প্রিত্ত অরিতে অবগাহন
করিতে ইন্দ্রা খানিক, অনে পার্ক্তা পরিত্যান করিয়া
আগ্রম করন।" আনি, আমার এক বন্ধ ও আরও
চইজন কর্পক কিরবদ্ধ অরমর মইলে, ভিনি সমূর্বে
আসিয়া হয়খারা আনানের ক্রেয়াকের লাক্ষ্যক শর্মনি
ক্রিনের। ভারার শক্ষাক ব্রুষ্টির ক্রেন্ট্রার আপার্মন্তক
বন্ধ একবারে ব্রুষ্ট্রান্ট্রের র স্থানাক্ষ্যক
বন্ধ একবারে ব্রুষ্ট্রান্ট্রের র স্থানাক্ষ্যক
আনির্যার আন্তর্গার ক্রিয়া আন্তর্গার প্রাণ্টির আন্তর্গার ব্যক্তির আন্তর্গার আর্থির ব্যক্তির আন্তর্গার আর্থির ব্যক্তির আন্তর্গার আর্থির আর্থি

মধ্যে অৰতরণ করিরী ধীরে ধীরে ২াও বার কুও পরিভ্রমণ করিলাম। আক্চর্য্য ব্যাপার। অগ্রির যেৰ অগ্নিজই নাই। দুৰ । ইতৈ যে আগুণের তে**র অ**সহ বোধ হইতেছিল, সেই কুণ্ডমণ্যে গায় লাগিতেছে অথচ তাপ এখন অগ্নিশিখা অমুভব হয় না। তবে কি অগ্নির দাহিকাশক্তি এঁকেবারেই নট হইয়া গিয়াছে ৷ আমার বন্ধ এ বিষয়েও একটুকু পরীকা করিলেন। তাঁহার পকেটে কয়েকৰত কাগৰ ছিল। একৰও কাগৰ অগ্নিহুও ' মধ্যে নিক্ষিপ্ত ইইবামাত্র, দেখিতে দেখিতে তাহা মুহূর্ত্মধ্যে ভক্ষদাৎ হইয়া গেল। তখন সকল বিষয়েই আমরা হনে প্রাণে একেবারে নিঃসন্দেহ হইয়া কুণ্ড হুইতে অবতরণ করিলাম।

এখানে হয়ত অনেকের মুনেই এই প্রশ্ন উদয় হইতে পারে যে "এই অসম্ভব ব্যাপার কি প্রকারে স্ম্পাদন হয় **! এজ**লিত অগ্নি, কোন বস্ত তাহাতে দেওয়া মাত্র ভস্মীভূত হয়। অথচ মত্ব্য তাহাতে প্রবেশ ক্রিয়া কি প্রকারেই বা হুখনীট্রল পর্য অনুভব করে?"

ইহার উত্তর বড় কঠিন। কারণ,—অভ বিজ্ঞান ছারা এই ব্যাপার বুঝিবার কোন উপায় নাই। এই পার্থিৰ অগতে বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ায়,—অগ্নি, ৰিছাৎ, প্ৰভৃতি হারা যে বহু অসাধারণ কার্যা সম্পাদন হইতেছে, তাহার কারণ ও কৌশল যেমন স্ত্রণী অশিক্ষিতগণের বৃদ্ধি বিচারের অভীত, অধ্যাত্মব**ল ুসম্পন্ন মহাপুরু**বেনা ইচ্ছা শক্তি প্রভাবে ৰড় ও অলড় উভয় ৰগ.তর উপর অলৌকিক প্রভূত করিয়া যে নানাথকার অঘটন সংঘটন করেন, তাহাও তেমনই জড়ক্জিনোপাসকগণের মনোবুদ্ধির সম্পূর্ণ অগমা।

वफ़ दिनी पिरनत कथा नय़, लखन ও চिकाशी নগরীতে ডি, ডি, হোম নামক এক মহাত্মা করেকবার বে অগ্নি পরীক্ষা প্রদর্শন করেন, তাহাতে রসায়নবিদ্ বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতগণের মধ্যে অনেকেই দর্শকরূপে উপস্থিত ছিলেন। বিশুর গবেষণা করিয়াও এ পর্যান্ত তাঁহারা ইহার কোন সন্তোধন্দক কারণ নির্ম করিতে সমর্থ হ'ন নাই।

প্রসিদ্ধ বিজ্ঞানবিদ্ ডক্টর ওয়ালেস্ এ সম্বন্ধে বে মন্তব্য প্রকাশ করিয়াছেন, আমরা এন্থলে তাহা উদ্ভ করিলাম,—These phenomena have now happened scores of times in the presence of scores of witnesses. They are facts of the reality of which there can be no doubt, and they are altogether inexplicable by the known laws of Physiology and heat.

ঠাকুর তরণীকান্ত সাহিত্য সমাজেও সুপরিচিত: প্রবাদী, নব্যভারত প্রভৃতির লক্ষ্রভিষ্ঠ , ফ্লেখক। আশা করি,—তিনি এসম্বন্ধে ভারতীতে খীয় অভিপার স্বিভার ব্যক্ত ক্রিয়া স্কলের কৌভূহল পরিভ্গু कदिर्वन ।

প্রীপ্রাণকুমার ঘোষ, এম . এ।

े कार्डिक। ماددر

পাণিনি-প্রতার।

(ভারতী, ১৩১০ অগ্রহায়ণ-সংখ্যায় প্রকাশিতের পর)

বিজ্ঞান, দৰ্শনশাস্ত্ৰও তেমনি একটা মনো-বিজ্ঞান 🕻 ইহারা উভয়েই যে গুণীর গবে-ৰণার ক্ষেত্র, ভাহাতে এখন আর কাহারো মনে সন্দেহ নাই। এই উভয় বিজ্ঞানই হিন্দুর

আয়ুর্বেদ বেমন হিন্দুদের একটা পদার্থ স্বতঃপরিচিত। উহাদের তত্ব, অত্রেষ সরিয়া হিন্দুরা যত সহজে বাহির করিতে পারিবে এমন আর কেহ পারিবে না। শ্রদ্ধের ডাঞ্চার জে, সি, বহু এবং পি, সি রায় উহাদের সুইত শ্বতঃ জানেন বলিয়াই,•তাঁহারা উহাদের ত্ব

আনারাসে বাহির করিতেছেন। আনাদের আর্কেদিক এবং দার্শনিক আলোচনা করা বেন, আনাদের মায়ের কোলে বসিয়া উপকথা শ্রবণ করা মাত্র। এদেশীয় গবেষণাকারী কর্তৃক হিন্দু রসায়ন শাস্ত্র এবং হিন্দু-দর্শনশাস্ত্র মধিত হইলে, তথার সহকেই রক্ত মিলিবে। কারণ এই ডুবুরি এই সমুদ্রে ডুব দিতেই স্বভাব-সমর্থ। সংস্কৃত দর্শন শাস্তাম্বি মন্থন করিয়া, জন্মান্ পণ্ডিত মগুলীই বহু রক্তলাভ করিয়াছেন সংস্কৃতমাতৃক বাজালীয় পক্ষে আরো অধিক রক্তলাভ করাই স্বাভাবিক।

কিছ শাস্ত্ৰবাবে একটা জুজুর ভর রহি-রাছে ৷ যাত্রা করিরা বাহির হইবামাত্রই এই পাছ বাবে জ্জুর ভর বিনা বল প্রবোগেই পাঠ-কের হাত পা যেন পেটের মধ্যে প্রবেশ कृत्त । शहे कृक्ती व्यामात्मत्र मः कृत वाकित्र ।। বর্ত্তমান ক্ষেত্রভামরা এই অ-বিছারই তব-व्यात्नां कित्र । धरे व्य-विद्या वर्ष्ट्र विषम । বাতকরের হত্তে পড়িরা সে নানা আকার ধারণ कविशारक,-- ध्वरः कथरना मृद्यतीध, कथरना সারস্বত, কথনো স্থপন্ন, কথনো চন্দ্রিকা, क्यता निकास कोम्सी, कथाना वा त्रव्यमाना-রূপ ধারণ করিয়া পথিককে ভূতের ভর দেখাই-তেছে। যে পৃথিক নিতান্ত সংসাহসী, তিনি বিশক্ষণ দেখিতে পান বে, ইহারা আসল-बिन्ति नरह, नकत् 🗟 इंश माळ। देखांकद्रश ষাত্ৰাবগৰ নিজ নিজ কৌশলে পাণিনি ব্যাক-·রণকেই এক্লপ ছার্মীমর করিরা তুলিরাছেন : আর পাণিনি বাকরণ একেবারে ঢাকা পড়ি-হাঁছছ এবং বদদেশীর পতিতদের মনে এক माकात पेकिश्वाद द्व, शाविन काव-

রণ বড়ই কঠিন। ুখুৰ্মান মাহ্ম্ম সভাগ
করা যার, সভাগ মাহ্ম্ম খুমের ভাণ করিলে,
তাহাকে সভাগ করা কিন্তু স্থকটিন ব্যাপার। "
যে শিক্ষিত ব্যক্তি পরের কথার কর্ণপান্ত করিবে
না বলিয়া সহল্ল করিয়া রহিয়াছে, তাহার
মনের মধ্যে একটা অভিনব ভাব প্রবেশ করান
তঃসাধ্য। তথাপি, আমরা পাণিমির সহজ্ঞ
স্তারচনা প্রণালী আলোচনা করিয়া এতদ্র
বিমুগ্ধ হইয়াছি যে উহার প্রচার না করিয়া
থাকা আমাদের পক্ষে একরপ অসম্ভব।

কোন কোন লোকের ব্যাকরণ পড়িতে প্রধান আপত্তি এই বে,ব্যাকরণে রসিকতা নাই। কিন্তু আদি-রস, হাস্ত-রস, করণ-রস প্রভৃতি ত্লভ সামান্ত রুসই যদি, একমাত্র রুস হর, এবং বিজ্ঞানে যে অন্তুত রস আছে, তাহা যদি কোন ব্রসিক স্বীকার করিতে না চাছেন ভবে বলিভে হইবে যে, ভিনি পূর্ণমাত্রায় রুসিক হইতে পারেন নাই। ব্যাকরণ কেবল দাহিত্য निकात माहायाकाती अपन नरह, উहात निजय थक**ी** स्पृश्नीय-त्रमञ् त्रहिषाद्य । विख्वान भार्क त्य आस्मान डेश्टांश करा यात्र, শন্ধ-শাস্ত্ৰ পাঠেও দেই আমোদ লাভ করা যায়। এক সংস্কৃত ভাষা হইতে কিন্ধপে ভারতীয় নানা ভারার উৎপত্তি ও বীবৃদ্ধি হইরাছে চিম্তা क्रिल क्षम यानत्म याभु छ रत्र। यात्र येनि रू विद्यान-चरुनेगत, कराशि अपन (वीन উপায় আবিষ্কৃত হয় বে, সংস্কৃত বাকিবণ পড়িলে সংস্কৃত-মূলক সকল-ভাষাই ন্যাধিক वृत्रिटक भाता शहेरव करव त्रिका कम बानत्मन विश्व क्ट्रेंटिन ना। मनक्द्रांग ७. श्वत्रकानित्र কারধানার ডাক্লারগণ অত্যন্ত অত্তরস পাইয়া थारकन ।

ব্যাকরণ পাঠের লারো একটা উপাদেরতা বহিনাছে। বদই কাব্যের আত্মা বটে, তাহাতে कारता गत्यह नारे। किख, कावा-मार्ट কোন হাকর, কোন আকর, বা কোন চতুরকর শন্দটী থাটিবে. কেবল ব্যাকরণ শাস্ত্রই তাহা ্অবাধে বলিয়া দিতৈ পারে। যদি মমুধ্য-দেহের ফ্লোন হাড় ভাঙ্গিয়া যায়, তবে কোন আগত্তক হাড় খানি আনিয়া জোড়া দিলে. দেহের পূর্বতা রক্ষা পাইবে, তাহা যেমন শরীর বিজ্ঞান-পাঠেই জানা যায়: কোন বাক্যকে সর্বাঙ্গপুন্দর করিবার জন্ত, পরিবর্তিত পরি-বৰ্দ্ধিত করিতে হইলে, কোন শক্ষী ছারা বাকোর ঐ পূর্ণতা দ্বান্ধিত হইবে, ভাহাও তেমন ব্যাকরণ-শাস্ত ছারাই অনায়াদে বলিতে পারা যায়।-কারণ, সকল শব্দই শব্দ-শান্তের অধীন, এবং ব্যাকরণ ও শব্দ-শাস্ত্র এই হ'রের मधा कान । প्राचान । भाषात्र, हेश । অবখ্য-স্বীকার্য্য যে, বাক্যের রদ বিরদ বিচারে অলবার শাল্লেরই অধিকার-তাহাতে ব্যাক-রণের কোনও অধিকার নাই। আশ্চর্য্যের विषय এই या, भक-विकारन মূল-তত্ত্ব ছয়টী, শরীর বিজ্ঞানেও মূল তত্ত্ ছয়টি गांज। ° रामन, श्रीनिर्दाहर हर्ग्यभारत कवित व्यष्टि स्मन ও मञ्जा क्रम हक्षी भनार्थ व्याहर, তজপ বাকিরণ শাস্ত্রেও নাম, ধাতু, প্রভায়, লিপাত, আগম ও আদেশ-রূপ ছয়টা মাত্র পদার্থ রহিরাছে। আবার, চর্ম মাংস রক্ত প্রভৃতি মিলিত করিয়া কোনও শরীরতত্ত্বিৎ প্রাণি-নিশ্বাণ করিতে প্রদাসী হইলে, যেমন তিনি পণ্ড-শ্রম ও হাক্তাম্পদ হয়েন, তজ্ঞপ কোৰ ব্যাকরণ অধীতী ব্যাকরণ-মাত্র বলে কাব্য-নিৰ্দাণ করিতে প্রবৃত্ত হইলে, তিনিও

একটা নীরস শব্দাবলী রচনা করিবেন মাত্র,
—তাহাতে তাঁহার প্রাণ প্রতিষ্ঠার কোন
অধিকার থাকিবে না।

দেখা যাউক, এইরূপ অত্যাবশ্রকীয় ও প্রাণায়াম শন্ত-শান্তের অমুশীলন-নিমিক আমাদের দেশে কিরাপ বাবস্থা রহিয়াছে। আমাদের দেশীয় টোলে, শিশু-দিগকে সূত্র ও বুত্তির সংক্ষিপ্ত প্রাচীন- ভাষা অভ্যাস করিজে দেওয়া হয়। যাহাদের প্রচলিত-ভাষায় জ্ঞান নাই, তাহাদিগকে অ-প্রচলিত-ভাষা শেখান হয়, যাহাদের শব্দার্থের জ্ঞান নাই, তাহাদিগকে मर्काट्य वाक्तर्वत मिस्र वा वर्ग-विहादत প্রবিষ্ট করান হয়। ছাত্র জীবনের প্রথম ছয় সাত বংসর এইরূপ মুখস্থ বিস্থায় (Cram. ming) চলিয়া যায়। অপ্রযুক্ত বিট্-কাল সন্ধির ও সমস্ত-যঙ্গু-নিজন্ত-প্রভৃতি দোতালা তেতালা চৌতালা ধাতুর লুঙের কারধানাতেই ছাত্রের এই জ্ঞান-পিপাসার সময়টা কাটিয়া যায়। আর, গর্কিত ব্যাকরণ অধীতিগণ স্ত্রদারা পদ নির্মাণ করিতে গিয়া, কিছুত किमाकात शन-जकन रुष्टि कतिया शांदकन। কার্যা কালে দেখা ফায় যে, তাঁহারা কেহ কেছ একখানি পত্র লিখিতেই বর্ণাশুদ্ধি করিয়া কেলেন: আর, ধরা পড়িয়া মনে করেন "সারারাত সাপ্ পিটালেম্, দূর যা, ভোরে প্রচলিত যাবতীয় ভাষার মধ্যে সংস্কৃত-ভাষা একটা অ•সামাস্ত পূর্ণতা-প্রাপ্ত ভাষা। দুশে সংস্কৃত ব্যাকরণেরও অস্ত নাই, তথাপি সংস্কৃত-শিধিবার কথার সর্ব্ব-সাধারণের শরীর শিহরিয়া উঠে কেন ? আমরা অতান্ত পরিতপ্ত হদরে, প্রত্যৈক,

निकिड वाकित निकर्छेहैं धहे अने डेथानिड कत्रिनाम। जामारमञ्ज मृत् विद्यान এই यु, এই প্রশ্নোন্তরে তাঁহারা দেখিতে পাইবেন যে, আমাদের দেশে বর্তমান সময়ে, ব্যাকরণ শিক্ষার যে পদ্ধতি প্রবর্ত্তিত রহিয়াছে তাহা अस्त्र नर्छ। शृत्व वाक्त्रन निविद्य भरत ভাষা-শিখিতে আরম্ভ করা এই প্রণানীটা নিতান্ত অসমত। এই প্রণালীব পরিবর্তন হওয়া, একণে একান্ত আবশ্রক বলিয়া বোধ इहेट्डिइ। माहिङा পড़ाর मঙ্গে मঙ্গেই ব্যাকরণ পড়া উচিত। বঙ্গ-ভাষা কর্তৃক বছ गःऋछ भक् व्यविकन् शतिशृही छ हहेबाटह । তজ্ঞাই অন্তান্ত প্রাক্ত ভাষা হইতে বন্ধ-ভাষা একটা অপূর্ব পদার্থ হইয়া দাঁড়াইয়াছে। স্তরাং বঙ্গীর যুবকের কাছে, সরল সংস্কৃত ভাষা একেবারে গ্রীক্ বলিয়া কিছুতেই প্রভীয়-মান হইতে পারে না। এবং আমরা অকুঠ হৃদত্তে বদিতে পারি বে, যাহারা সাহিত্য-धौराक वर्गक बर्गक महिथा हाट्य डाइराम ब সাহিত্য সন্দীপনের (elucidation) জন্তে चहांशांत्रीरे धक्यां मरशेविंद, (reference book)। অষ্টাধ্যান্বীতে প্রকৃতি প্র নায়ের বিশাল विशास अकत्र त्रहिशाटक, धवः वर्गविहादत्रत প্রকর্ম সর্ব-শেষে সন্নিবেশিত হইয়াছে। যেন প্রকৃতি প্রভার বিভাগ করিয়া লুইলে, বর্ণাগ্র ও বর্ণ-বিকার আপনা আপনিই ধরা পড়িবে। ছংখের বিষয় এই যে, পাণিনির এইরূপ স্বক্ত স্তা সলিলে স্পষ্ট প্রতীয়মান প্র-তর্-ভালকেও টাঞ্চার টীক্রা ওল্ল টাকাকারগণ আবিল করিয়া রাধিরাছেন-বেন, পাণিনির স্ত্তলি এতই কৃতিৰ যে, চীকার সাহাব্য ভির कार्रीमर्गत व्यर्थकरे रहेरक भारत ना।

व्यामात्तव तर्म व्यव्याच्या व्यापा व्यापादव ব্যাকরণ প্রারম্ভেই সন্ধি শিখিতে হর। স্থির हाजात উপাদেরতা अपिरान्ध, आवाध निल-দিগকে এক্লপ অর্থ হীন বর্ণজালে নিক্ষেপ করা উচিত নহে। यে वानक 'मन' वर्ष बात्न ना." 'শন্ত' অর্থও জানে না, তাহাকে শেখান হয়. যে, 'সন-শস্তুর' সন্ধিতে তিনটী রূপ হয়; मध-्रष्टुः, मञ्च्यः मঞ-्रष्टुः। शूः-कार्किन, শব্দের সন্ধিতে ছইটী রূপ হয়; পুং-স্থোকিল পুঁজোকিল 'নুনং পাহি'র পাঁচটী রূপ হয়; 'সংস্কৃত্তিৰ প্ৰকৃত আটটি ক্লপ ছয় ইত্যাদি। কিছ, জিজাসা করি, কোন অধ্যাপক মহাশয় সংস্কৃত্তির এই অষ্টোত্রর শত নাম একএকটি করিয়া ছাত্রদিগকে সম্পূর্ণরূপে শিক্ষা দিয়া থাকেন ? আর শিকা দিলেই বা ভাহাতে ঐহিক পারত্রিক কি ফলের আশা করা যায় ? चहाशाको किंद्र कान शामहे वालन नाहे ता. এই অষ্টোত্তর শত নাম পাঠনা করিলেই ব্যাকরণ পাঠ্কের এই চণ্ডা পাঠ অভদ হইবে। এদিকে, এইরূপ সন্ধির চেহারা দেখিয়াই শিশুরা ব্যাকরণ ক্ষেত্র হইতে প্লায়ন করিতে ইচ্ছা করে।

পাণিনি-ব্যাকরণ বলিতেই, বহুদৈশে অনেকে দিছান্ত-কৌমুনী বুঝিরা থাঁকেন। আছা, দেখা যাউক, উহাদের কে কিরূপ। অপ্রায়ীর সমগ্র প্রথম অধ্যার ব্যাপিয়া উহার সংল্লা-পবিভাবাগুলি (Definitions, axioma and postulates) রহিরাছে,—ফিছান্ত-কৌমুনীর সংজ্ঞা-পরিভাবা প্রকরণ ৪০।৫০টি মাত্র স্থতে সাল করিরা অভ্যান্ত সংজ্ঞা-পরিভাবা-স্ত্র-গুলিকে, ভট্টোন্সি স্থানে কানে (কিরংপ্রদরে) লিকিপ্ত করিরাছেন। গুলিতে ক্ল এই হইরাছে বে, ভট্টোন্সিকে

'हेटकावन् व्यक्ति' स्व-কেবল-মাত্র লারা **'অধাপাসা' শব্দের**্দুস**ভি না** ব্ঝাইয়া আট্টি স্তৰালা উহা পাধিতে হইয়াছে। আর অবোধ-ছেলের এইরূপ বর্ণ বিচারের আঁটা-আঁটি দেখিয়া ঠাকুরমা নিশ্চয়ই মনে भरन विनिष्ठिष्ट्रम ; ैयात यात वर्सन ठिमि সার, অর্থের জ্ঞান নাই বর্ণের বিচার; इंडांपि। ভটোबिनीक्चंड एवं अनानीटक তাঁহার দিছাত কৌমুদীখানি লিখিয়াছেন, তাহাতে তিনি ব্যাপক-স্ত্তগুলির রকাকরিতে পারেন নাই, এবং শুর্বর্থসম্পন্ন অধিকার " হত্ত গুলিকেও বিশদরপে ব্যাখ্যা না করিয়া, প্রসঙ্গামুরোধে অন্ত-স্তের সঙ্গেই তাহাদের ব্যাখ্যা করিয়াছেন; আর বহুস্ত্তের উত্থাপন কেবল আপত্তিচ্ছলে করিয়া আপত্তি ঞ্ডন করিয়াছেন মাত্র; সে সমুদায় *ত্*ত্তেও দৃষ্টান্ত দেন নাই। ইহাতে বুঝা যায় যে, জিগীযু পণ্ডিছের মৃত, বাকেরণ-শান্ত্রীর আপত্তি ভঞ্চন করা ভট্টো**ল্লির একটি প্রধান লক্ষ্য ছিল। ন**তুবা কোন কোন খতের প্রকৃত ব্যাখ্যা না করিয়া কোন্ আপত্তিতে তাহাদের উত্থাপন হইতে পারে ভাহাই মাত্র তিনি দেখাইবেন কেন ? বহু কঠিনী স্ত্ৰের ব্যাখ্যা-স্থলেও তিনি "স্পষ্টম্" এইকথাটীমাত্র বলিয়া গিয়াছেন; এবং অনেকস্থলে একএকটা স্ত্তের দৃষ্টাস্ত এক-একটা মাত্র পদ-বারা নির্বাহ করিয়াছেন; বেমন "পরোকে লিট্" সত্তের উদাহরণ "বভূব" — কিন্তু বাক্য-স্থলভ সংযোগ বিপ্রয়োগ শাহচর্যাদি-ধারা স্ত্রার্থ বুঝাইবার কোন বাব-খাই করেন নাই। আর সে সমরে ভারতে মুডাবজের প্রাহ**র্জাব ছিল** না, এবং মুথে ম্থেই সমগ্ৰ বিশাল সুংস্কৃত শান্তগুলি অধীত

হইত, সেই সময়ে সংক্ষিপ্ত স্থ সংক্ষিপ্ত বৃত্তি ও সংক্ষিপ্ত উদাহরণ, নিতান্তই উপযোগী এবং প্রয়োজনীয় ছিল বটে; কিন্তু আজকাল ততদ্র সংক্ষেপের কোনও আবশুকতা দৃষ্ট হয় না।

वामात्मत्र त्नत्न, व्यष्टीशात्री ও मिन्नास (कोम्नो अखिन वााकत्रण विनन्ना माधात्रत्वत्र নিকট পরিচিত। বাস্তবিক, সিদ্ধান্ত কৌমূদী यहांधात्रोत এक है। जिकामाज। यहांधात्री ख मिक्कास को पूनी जूनना कतिरन, इंहा म्लाइंड লক্ষিত হইবে যে, সিদ্ধান্ত-কৌমুদীকে পাণিনি-वाकित्रण ना वनारे छेठिछ। मिकाख-८कोम्नो-**ৰারা ভ**ট্টোজির নৈপুণা যতদ্র প্রমাণিত নিদ্ধান্ত-কোমুণী পাণিনি- ইইমাছে, পাণিনির রচনা · কৌশল ততদ্র সপ্রমাণ ব্যাকরণ নহে। হয় নাই। কারণ উহাতে পাণিনির শন্দ-বিশ্লেষণ প্রণালী অমুস্ত হয় नार, উहा नम-निर्माग-अनानौट निथिত रहे-য়াছে। পাণিনির স্ত্রগুলিকে, কোন্ সঙ্কেতে সাজাইলে, উহারা কলাপ-মুগ্ধবোধাদির **স্**ত্রের মত বদিতে পারে, সিদ্ধাস্ত-কৌমুদী তাহারই একটী অপুর্ব্ব দৃষ্টাম্ব হল। মৃতরা দি**দ্ধার**-कोम्नो ভটোজিরই कोर्खिख्छ, পাণিনির নহে। াণিনীর ষ্টাধাায়ীতে সর্বসমেত ৩৯৮৩ অথবা প্রায় চারি হাজার স্ত্র वशेषायो । আছে। এই পুস্তকথানি ^{*}আটটী অধ্যায়ে বিভক্ত বলিয়া, ইহাকে অষ্টাধাায়ী কহে। ইহার প্রত্যেক অধ্যায় আবার চারি অংশে বিভক্ত। প্রত্যেক আ কে এক একটি পাদ কংই। অষ্টাগ্যায়ীর প্রথম অধ্যান্তে সংজ্ঞা-পরিভাষা, দিভীয় অধ্যান্তে কারক-সমাস, তৃতীয় অধ্যায়ে ধাতু-প্রত্যয় (তিঙ্ও ক্বং), চতুর্থ-পঞ্মে তদ্ধিত, 'এবং

के मार्टन केटन अर्रनिकाय वर्षिक क्रमाहिको श्रक्ती क्ष्म यात्र त्य, महीशाभी मात्रे मंसाद्य বিভক্ত ভূইলেও, ডাহা পাঁচটিবাল তাপক निवास विकास हरेबाट्ट। उपरात, भावाब, निर्मान काश-धकर्न. (क्षांक्रिमीक वा) नाम-शक्त्रम, निर्शाज-প্রকরণ ও আগম-আদেশ প্রকরণ প্রভতি বিরাজ করিতেছে। পাচ-ছবটী-মাত্র-প্রকরণ ठाति शकात श्व गाणिता प्रश्तिरह, हेश रहेट नार्ठक अञ्चनाम क्रियन-अक अवती ध्यक्रम क्षत्र विद्युत्त। धहे द्राल, हेशांव वरन बाबा डेडिड त, अक विवर अनान इरेडी द्रव रहेराहे छाहारक अवती क्षकत्रन वरम। अक शाम क्रेंटिक अञ्चल्लाम (शार्टमान्डे (वा চালান দিভে হইলে, কৌশলী ব্যবসাধিগণ, বেষন বড় পোর্টমান্টের ভিতরে अवाबोदिक ७ मधानीत किउटत हार्वेरिक भृतियां • तन. धरः এমতাবস্থার देशाहेंबान्डिहारक ७ ह्यांहे शाहिबान्हे हारक मिषिरमंदे देवर्गन मध्य शावियाके होत नादेन (শরিমাণ) খারণা করা বার, তেমনি পাণিনির শুভ্ৰপ্তলি এমনি ভাবে, রচিত বে, কোন एखन পূর্ববর্তী ও পরবর্তী হতটোকে দেখিলেই शिरे देखन गावि श्रदन करा यात्र। कातन. ষষ্টাৰ্যায়ীতে বৃহৎপ্ৰকরণের ক্রোড়ে তদপেকা কুত্ৰ-প্ৰাকরণ, ভাষার নধ্যে ভৰপেকা কুত্ৰ-' व्यक्तम्, छोरात्र मश्या उत्तर्भका कृष्य व्यक्तम काशिय जारम, धक धक्छ निष्ठ-श्रकत्र कृत-प्रका-प्रकार (३०४ वर् महित्यांक बहिमारक । बारे वानानीरे नानित्र द्वार अभिनेत्राची वार्च पर्छ। mifferen effentage "geneg mydt ver

एक बांका दकाम 'कार्डन, केंक् बांक्टिन, वृत्तिए बहेरन रह, के केंब्र-मक्की आवकी आवजन-वहेरू गर, **छरा वर्तवास अक्षात**्यक्ताह केहिनिड रहेशाष्ट्र, ध्वरः वर्षमान-श्रावत मान ८व छेरात অবৰ বহিষাছে তাহা 'প্ৰ-শক্তি-মহিমাৰারা ম্পট্ট বুঝা বাইডেছে, স্বভরাং বর্জনান হত্তে উरात भूनक्कि निर्धादाक्त। बरेक्न, १९६० পুরণ ভারে সক্ষিত হত্ত-প্রবাহ হইতে হত্ত-খলিকে তুলিয়া গইয়া, ভটোজি ভাছাদিগকে मुश्चरवाद्यत होट छानिया. • निकाल-कोमनी রচনা করিরাছেন, এবং এভাবে ছিল্লসূল স্ত্র-গুলির সুলর্ভান্ত অগুড়াা ভিনি ঠাহার বুড়িতে স্থাপিত করিরাছেন। কাবেই, বুভির সাহায্য ভিন্ন সিভাত-কৌমুদীর স্ত্রগুলিকে প্রার तुका बाद ना। धरे कहरे (बाध इत् বিভাসাগর মহাশহ কলিকাভা-সংস্কৃত কলেজের वाक्त्रन-नाठाविनीत्र मध्य निकास-कोत्रनीर ह इया-यान प्रत नाहे। वीकारमञ्ज मरन विचान বে, বুড়ির সাহাব্য ভিন্ন অপ্তাধ্যারী হজেরও কোন অর্থপ্রছ হয় না. উছোয়া স্কাঞে भागिनित **टार्थम ज्यान अवर भंदन ज्ञा**ना व्यथात्र शक्ति (विदियम, देहाई व्याधानित्यत বিনীত অনুরোধ! অবঞ্চ কালিকাতে হত-श्रीत बहायाती-क्रमरे अमूत त्रापा स्रेतारक। কিছ, উহাতে প্ৰজ্যেকস্থলের অব্যবহিত্ব পরেই हांशंत गांवा दश्वत स्कृतादकः विनित्री উহাতেও প্রভাগর পরকার সময় বিশ্বরূপে गक्कि इहेरक्टइ मा। अमन कि नानिमीन कहाशाही हर, कनिवंहमोह अवही कृतिका-तरन भाग अहिबादक, क्रांनिकागडिएकत नर् ভাষাও **याशान-स्थान क्रिया**। का क्रियां।

দীতাগড়ে বন্দ্ৰোজন

বনভোজন। (চিত্ৰ ব্যাখ্যা)

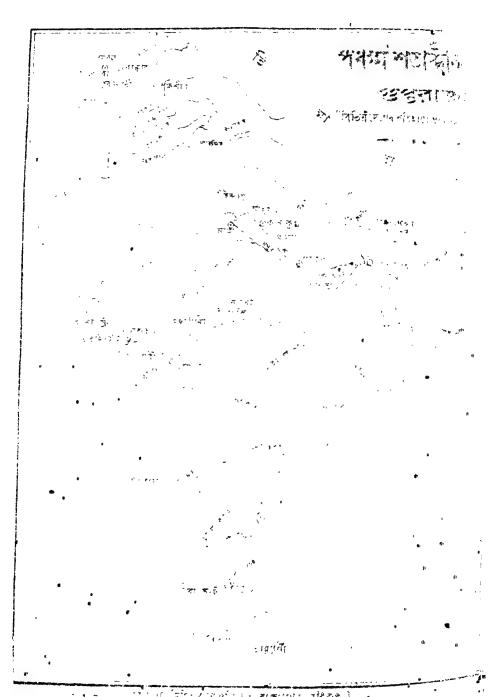
নৃতৰ রেওলেশন অফুসারে আজকাল যুত্তভালি ছাত্রনিবাস-কলেজ (Residential College) স্থাপিত হইয়াছে তন্মধ্যে হাজারী-ৰাগের দেউ কলম্পকে, (St Columba's College) বোধ হয় সর্বাঞ্জে স্থান দেওয়া যাইতে পারে। কলেজটী ডবলিন ইউনিভার-সিটি মিশন পরিচালকগণকর্ত্তক চালিত এবং মার্মান. কেরির সময় হইতে খৃষ্টীয়ধর্ম-বাজকগণ বতগুলি স্থকার্য্য করিয়াছেন তন্মধ্যে ইহা একটি। বস্তুত:, এই প্রদেশে এই অগম্য কোল, মুণ্ডা, প্রভৃতি জাত্বিদেবিত হলে, উচ্চ-শিক্ষার ব্যবস্থা করিয়া ধর্মধাজকগণ প্রভৃত উপকার সাধিত করিতেছেন। ছাত্রনিবাস নির্মানুসারে কলেজের ছইজন অধাক্ষ রেভারেও টমসন ও রেভারেও মরে কলেজে ছাত্রদিগের সহিত থাকেন। কলেজ এবং ছাত্রনিবাস একই বাড়ীতে ৷ অক্সান্ত অধ্যাপকগণ কলেজের নিকটবর্ত্তী কলেজের বাড়ীতে থাকেন। অনেক অর্থব্যয়ে গথিক শিল্পীমুষালী এই মনোরম সৌধ নির্দ্ধাণ করা হইরাছে। চতুদ্ধিকে পর্বতমালা— ছাত্তেব উপর হইতে দুখাবলী প্রক্নতই মনোহর। অতি প্রাকালে আমাদের দেশে বেমন শিক্ষক শু ছাত্তের মধুমর সন্মিলন দেখা ঘাইভ—একত্র ° বাদ, একত্ত পাঠ, একত্ত আহার-এখানৈ रिष्ठे पृष्ठ रिषा यहिष्ड है। अक्षां निकत्त শিশ্ববাংসল্য ও ছাত্রদের ওক্তক্তির অভাব ध्यात चारती नाहे। आत हिन्तू, मूननमान, विरात्री ७ युडीम हिरापत्र अमन শমাবেশ বোধ হয় আয় কুত্রাপি মাই।

গত বড় দিনের বন্ধে কলেজের অন্ন ৬০টী ছাত্র লইরা আমরা বন ভোজনের জন্ত প্রায় ৭ মাইল দূরবর্তী সীতাগড় পর্বতে যাত্রা করি। আমরা অর্থে রদায়নের অধ্যাপক শীযুক্ত শরচক্র ভট্টাচার্য্য, উদ্ভিদ বিভার অধ্যাপক শ্রীযুক্ত শ্রীশচক্র সিংহ ও আমি। এ বৃহৎ ব্যাপারের সম্পূর্ণ ব্যয়ভার বন্ধুবর শ্রীশচন্দ্রই বহন করিয়াছিলেন। অতি প্রত্যুবে একখানি পুদপুদে করিয়া ভূত্য ও পাচকবর্গ, ৩।৪টী হর্কগদেহ ছাত্রের সহিত অভিযানোপযোগী রদদ লইয়া রওনা হইন। পরে বেলা ৮॥। টার সময় দৈগুদলসহ আমরা যাতা করিলাম। কিছুক্ষণ পরে অহ্য একটা পুসপুদে করিয়া আরও করেকটা ছাত্র, এবং তৃতীর পুদপুদে রসায়নাধ্যপক শরংবাবু তাঁহার পুত্র ও ক্ঞা সমভিব্যাহারে যাত্রা করিলেন। পুসপ্থস মমুষ্যচালিত ঠেলা গাড়ী। হাজারীবাগ রোড টেমন হইতে সহর ৪১ মাইল-এই মাইল পুদপুদেই আদিতে হয়। পুদপুদ্ অথবা পুষ্পরথ অতি উপাদেষ দ্রব্য। যিনি পুসপুসে চড়িয়াছেন কুলিদিগের রণনিনার শ্রাবণ मक्ष मक्ष করিয়াছেন ভিনিই জানেন যে গাত্রবেদনা কিছু অধিক দিন স্থায়ী এবং ফাণে ভালী লাগার সম্ভাবনাও বেশী। সীতাগড পৌছিলাম তথন বেলা श्राप्त्र वादबाछ।। পৌছিৰামাত্ৰই রসদী সৈভগণ আমাদের সুচি ও তরকারী সহ জলযোগের ব্যবস্থা করিল क्रमांश नमांभनास्सरे <u> শীতাগড়</u> व्यक्षिकाद्य उर्शन स्ट्रेन।

धीनवाव वहानीत्र व्यक्तात्र। তাহার সৌন্দর্যাপিপাস্থ প্রাণ তরুগতাদির অক্সমিম প্ৰেম্ভৰ গ্ৰেষণামন্ত। তিনি তাই লোকালয়-হীন বিজন ভক্তপথ বিরাজিত অত্রনেহী পর্বতে অকুত্রিষ ছাত্রপ্রেষ প্রকাশের স্থান মনোনীত कतिवाहित्तन । वनशमत्नव नमव मोकातिवी त्व সক্য ভক্তব্য কিংবা পুষ্পৰালিনীলভা পূৰ্বে **(मरबन नार्टे छाहारमत्र कथा रवसन ओहामहक्रारक** জিজাসা করিয়াছিলেন, শ্রীশবাবুর ছাত্রবৃন্দও "পুশ্বশ্বরীতে ভরা त्रभगेतान সেইরূপ পাদপান আনিয়া বিল্লেষণ বছবিধান করিরা নইতে লাগিলেন। একাধারে শিক্ষা ও আনন্দ চলিতে লাগিল। তঃধ কেবল পর্বতে ৰা তাহার সামুদেশে "বিচিত্র বালুকাজলা হংস সারস-সুধরিতা নদী" ছিল না; তবে কলেজ হটতে দীতাগড ঘাইবার পথে কুদ্র পার্মত্য নৰী একটা আছে। যেখানে রসদের গাড়ী আটকিয়া পড়ায় সেই বালুকৰ্দমপ্ৰোথিত মমুব্যগাড়ীর চক্র উদ্ধারকরে হরিপদ নামক তৃতীয় বার্ষিক শ্রেণীর ছাত্রটির বোধ কর কর্ণের ভূগর্ভগ্রাসিত রথচক্র উদ্বারের স্থায় কট্ট পাইতে হইয়াছিল এবং অৰ্জুনক্সপ পুসপুসারোহী করেকটা ছাত্রবৃন্দের বিদ্রাপ বাণাহত - চইয়া হরিপদ ভারাদিগকে পুসপুস-অথবা পুস্রপ ১ রিভ্যাগ করাইরা পদত্রকে বাইতে वांशा कतिशक्ति। औ নিশানের বাম্বিকে অর্থপায়িত ব্যক্তিটিই সেই হরিপদ। সে নিন ইনিই উৎসবের কর্তা পাৰে (Master of the ceremonies) ব্যৱত হট্যা '৪৯' সমিভিন্ন Royal Physician श्रेशा इंदेशा **क्रिल्म**ा ९० क्रावंत्र विवत्रश দারতীর পাঠকপণ্ডক অন্ত সমরে জানাইব।

তবে বলিয়া রাখি কে শ্রহাশেল ভূতপূর্ক বিচারপতি সারলাবার্ ও আমাদের বহুমাল ইনশেক্টার ভাঃ রার উক্ত সমিতির সদ্ভ; কলেজের প্রিজিপাল ঐ সমিতির মন্ত্রী। পুসপুসারোহী মাজেই এই সমিতির সদভ পদে বৃত হইতে পারেন। সমিতির প্রধান এবং-প্রথম নিরম এই যে ইহার কোন নিরম নাই। পুর্কেই বলিয়াছি, ছাত্রবুল সীতাগড় অমিকারে তৎপর হইরা সেনাপতিদের কর্তৃত্ব পরিত্যাগ করিয়াছিল। কিছুক্ষণ পরেই বিজরোলাসে রণজারী সৈক্তগণের জরোহকুল ধ্বনিতে বনভূমি ও পর্কতকলার মুখরিত হইরা উঠিল।

শীতাগড় পর্বত নেহাৎ ছোট নর। কুল হইলে গু.তাহার জাতিগত উচ্চতা কে অস্বীকার করিবে ? এই পর্বাত হিমানরের বজাতীয় ? সভাৰর ব্যক্তির ভাৰবের মত, দরিদ্রের উচ্চতা অপরিধ্যর। আশার মত ইহার ভবে কুমার-সম্ভবের প্রথম मर्श कालिनाम বর্ণনা করিয়াছেন. যেক প हिमानास्य छाछि इटेनिश हेशांत शोतरवत তেমন কিছু নাই। ইহাতে ক্রিকুভবিদীরক (क्नजी नाहे, विलामविख्यविवना किन्नजी नाहे ইহার মরিগৃহছারে জলদ বিলম্বিত হয় কিনা কানি না—তবে ইহার উচ্চশিধর ধাতুর পর্যাত इहेर' यकानम्बा त्र आनवन करत वटके आहे ধেই সমূহ লাসুগ বিকেপছেলে চামর বাজনও করিয়া থাকে। আর আছে বাহা তাহা कानिनारमद वर्गनाव नाहै। छाहा है दारकद ডিনামাইট বারা প্রস্তুত পথ, ভর্কের আশ্রম ' স্থল এবং নিক্টৰতী পিল্লাপোলের প্রতি गक्क मृष्टि बृङ्क्छि स्वक्छ ।



The story of the state of the state of the state of

ভতি মহান আদর্শের সমুখে অহতার আত্মাভিমান বিদ্রিত হুর, নিজের ক্ষুত্র অহুভূত হয় তাই আমাদের সীতাগড়ের সাতু-দেশে মনে হইল, যে আমরা অতিকৃদ্র হইরাও মুহত্বের প্লাঘা করি। "তৎকালোদিত এই ভাব সকলের মধ্যে গুরুশিষ্য সম্বন্ধের অন্তর্নিহিত সঙ্গোচ ভাবকে কিয়ৎকালের জন্ত বিলুপ্ত করিয়াছিল। যাহা হউক ভোজনের প্রাক্কাল পর্যান্ত যথেষ্ট পরিভ্রমণে বিপুল ক্ষাৰ্জন করিয়া শিশ্রগঞ্চ করিচোষ্য লেহ্লপের ভোল্য ত্ৰব্য সকল এমন প্ৰচুৰ পরিমাণে আহার করিয়াছিল যে মিষ্টার বলালুপ পর্বতবিহারী বক্তজীবগণ গন্ধাকৃতি হইরা ভোজনত্বলে বুথা পরিভ্রমণান্তর অবশেষে চিরাভ্যন্ত বনজাত থাতে দ্দর পুরণ করিভেই বাধ্য হইল। চিত্রে ঐ যে लोर कठार पिथरउट्टन डेश पोर्खनारात्री, পাটার উপাদের অন্থি ও কলিজা, মৃত্তিকাপাত্রে আমির আবদর রহমানের দেশাস্তর্গত

আলুবোধারা ও কিনুমিনের চাটনী, স্বর্হংডেকচিগুলিতে রণজিং সিংহের লীলাহুল পঞ্চনদের চাউলের পোলাও, এবং অমাংসভোজী
ব্যক্তিগণের জন্ম ঝুড়ীতে "লুচী কচুরি মতিচুর
শোভিতং জিলেপী সন্দেশ গলা প্রভৃতি দানারূপ
সোপকরণীয় দ্রবাদি বিরাজিতং! ভোজন
ব্যাপারকালীন "অধ্যাপক শ্রীশচন্দ্রের দ্বরে"
বনভূমি ও পর্বতক-দর মুথরিত হইতে
লাগিল। এই বিরাট ভোজনাস্তে ছাত্রপরিবৃত
শ্রীশবাব্র ফ'টোগ্রাফ লওয়া হইল। ছাত্র ও
অধ্যাপকে এমন প্রেমমন্ব সন্মিলন প্রকৃতই
স্বৃতিপট ব্যতিরিক্ত পটাস্করে আলিবিত
ছইবার বিষয়।

তারপর ধীরে ধীরে প্রত্যাগমন। সেই স্থরম্য মানাম্ম "চিত্রকুট", ও ননন্দ হৃষ্টো মৃগপক্ষিজুটাং বনভূমি পরিত্যাগ করিয়া গৃহে ফিরিভে সন্ধ্যা উত্তীর্ণ হইল।

হাজারিবাগ কলেজ ২৪ জাহয়ারী।

পঞ্চম শতাব্দীর ভারত ও ফাহিয়ান।

আমরা পূর্বপ্রথমে ফাহিয়ানের পুত্তক
কু-কো-কি হইতে ভারতের তৎকালীন চিত্র
দ্বোইবার চেষ্টা করিরাছি। বক্ষামান প্রবন্ধে
আমরা, ফাহিয়ানের জ্রমণের আরও কিছু
বিভাৱ পাঠকবর্গের সমীপে উপস্থিত করিব।

ফাহিরান তাঁহার পুস্তকে বরাবর তৃতীয় পুরুষই ব্যবহার করিরাছেন। তিনি লিখিরা-ছেন থৈ, তদীর দেশে ধর্মগ্রন্থ এবং ধর্মোপ-দেশের স্বর্মতা দেখিরা করেকজন সহযোগীর সহিত তিনি ধর্মশান্তের আদিস্থান ভারতবর্ষাভি- মুখে রওয়ানা হন। তথন তিবেত ঝেছধর্মপ্রধান ছিল না। দেইজয়, তিনি আরও
পিশ্চিমাঞ্চল হইরা থোটানে পৌছেন।
এইস্থানে তাঁহারা এক অভিনব উৎসবে যোগ
দেন। তথন রাজপথ সকল পরিষ্কৃত ক বয়া ধূলি
নিবারণ করে জল দেওয়ৢ হইরাছিল। পল্লবাদি
ও নিশানসহ রাজপথ স্সজ্জিত এবং প্রত্যেক
ছারের সম্মুখে মূল্যবান যবনিকা রক্ষিত
হইরাছিল। সিংহলারের উপরে এক ক্ষুজ ,
মিশিরের রাজা, রাণী এবং কতক্পালি স্ক্ষর

बीलांक डेलविंड इरेबाहिलन। ত্ত্ৰসন্দিত ब्राय कविशा वयन अिवाशिन निःस्वात स्ट्रेट একশভ হস্ত দূরে আসিয়া পৌছিল তথন মালা প্রতিমা গুলির অভার্থনার করা গাত্রোখান করিলেন। তিনি তাঁহার শিরস্থাণ অপসারিত ক্রিয়া নুতন বস্ত্র পরিধান করিয়া লগ্নপদে অধান অতিমূর্ত্তির সমূবে সাষ্টাক প্রণিপাত क्रिश 77 8 গৰুক্তবাছাৱা বিশেষক্রপে चर्कना कतित्वन। সিংহ্রারাভাস্তর দিয়া यथन मूर्खिकान याहेर्ड नागिन उपन नाबीगन এত পুশারৃষ্টি করিলেন যে প্রতিমা পরিপূর্ণ-রথ গুলি কুলমর হটরা গেল। ফাহিয়ান এবং তাঁহার বন্ধুগণকে একটা বিহারে (বৌদ্ধ-মঠ) বাসস্থান নির্দেশ করিয়া দেওয়া হইল। উক্ত মঠাধিবাসী সকল যতিই একত আহার করিতেন। আহারাদির সময় ভোজন পাতাদি হইতে বাহাতে কোনরূপ শব্দ না হয় ভাহার বিশেষ ব্যবস্থা ছিল এবং আহুতরের সময় কেইট কোনমুপ বাক্যালাপ করিতেন না। এই নগরের মন্দিরাদি অতাম্ভ ঐপর্যাশালী। একটি মন্দির নিন্মাণ কলিত ৮৪ বংসর শাগিরাছিল। যে রাজা মন্দির নির্মাণ আরস্ত করেন তাঁহার পৌত্র ইহা শেষ করেন। এই মন্দিরের প্রতিমূর্ত্তি সকল স্কুবর্ণ ও রৌপ্য-নির্মিত এবং বহু মৃশ্যবান প্রস্তর-সমন্বিত-গৰাকভাল অৰ্ণমভিক এবং চৌকাটভাল স্থৰ্থে নিৰ্মিত।

কাহিরান বধন ক্ষাড়কে ছিলেন তথন বৈছিদিগের পঞ্চৰ বাৎসরিক সভার অধিবেশন হয় এবং সকল দেশ হইতেই বৌদ্ধ যতিগণ স্থান্ত হইরা এই সভার বোগদান করিয়া-ছিলেন। বুনিবার স্থানটী অতি স্কার্ত্রণে

मिक्कि कन्ना हरेनाहिल अवर लिखादन युह्रपृत्र (त्रथम बार्ग হুশোভিত ভ পর্যাসনযুক্ত এক প্রতিনিধিগণের বদিবার স্থাপিত ছিল। এই সৰ কাৰ্য্য সাধারণতঃ ধন্ত अञ्चित मन्त्र हरें वर धक्मान वा इहेमान कि जिनमात्र भर्गास्टर धरे मस्त्रिशियमन इक्कें। डें ९ नवानि (भव इहेबा शिल, ब्राब्स, मञ्जी अवः অভান্ত প্রধান ব্যক্তিগণ তাঁহাদের অখু, শাল এবং अञ्चान भूगावान व विष्कृ ज्वाहे शांक्क **(कन, नमछ** समर्गानशतक विख्यन পরে হথোপযুক্ত মূল্য দিয়া পুনরার তাঁহাদের নিকট চইতে সেগুলি ক্রম করিয়া নইতেন। ফাহিয়ান লিখিয়াছেন মানটী এত শীতল যে শক্তাদি অতি কুৱে পরিপত্ত হয় ৷ কিছ' প্ৰমণগণ বীতিমত বিদার না পাইলে ঋতু পরিবর্তন হর না-এই বিশ্বাসে বতদিন শক্ত সংগ্ৰহ না হইত ভভদিন রাজা ইহাদের বিদার দিতেন না। এই স্থানের বৌদ্ধ সন্ন্যাসিগণ উপাসনার সময় প্রার্থনাচক্র (Praying wheels) ব্যবহার ক বিভেন।

ক্তাক প্রদেশে ভিন্ন ভিন্ন ভাবা প্রচলিত
কিন্ধ ধর্মগ্রন্থ মাত্রই সংস্কৃতে লিখিত হইত।
এই ভাবা প্রত্যেক মঠে পঠিত ও অধীত
ইইতঃ বৈদেশিকগণ বিশেষ সমাদরের সহিত
এই সকল মঠে গৃঠীত হইতেন এবং তিন দিন
পর্যান্ত মঠাধাক্ষরণ বিশেষ সমাদরে অভিথির
পরিচর্যাা করিলা পরে বিদার দিভেন। বুজের
শ্বতিসংক্রান্ত সমস্য তলে কাহিয়ান ক্রমণ
করেন। প্রাঞ্চলে (মগ্রেখ) আসিরা তিনি
শাক্যসিংক্রের ভিক্ষাপাত্র দেখিতে গান।

বৃথিরু রাজা এই ভিকাপাত চুরী করিতে অভিনাৰী হইয়া ইহাকে স্থানচ্যত করিতে °পাৰেন নাই। <mark>পরে একটা হন্তার</mark> উপর ইহা উঠাইয়া দেন, কিন্তু মাহতের সহস্র চেষ্টাতেও হত্তী স্থান ত্যাগ করিল না। রাজা তথন ভিক্ষাপাত্রটি রথে করিরা নিজ রাজ্ধানীতে লইবার আদেশ দিলেন কিন্তু রাজার হুর্ভাগা কি সৌভাগ্যবশতঃ রথও বস্তান পরিত্যাগ করিল না। রাজা এই অদ্ভুত ব্যাপার দেখিয়া সেই স্থানে এক মঠ নিৰ্মাণ করিয়া নিজে সন্ন্যাসী হইলেন। এই স্থানে সাভশত সাধুপুরুষ বাস করিতেন। প্রত্যহ দ্বিপ্রহরের কিছু পূর্বের ইহারা খেতবন্ত্র পরিধান করিয়া ভিক্ষাপাত্রকে পূলা করিতেন, এবং ইহার সমুখে গন্ধজ্বাাদি রাখিতেন। পরে সন্ধ্যাসমাগমে ইহাকে স্বস্তানে রাথিয়া मिट्डन ।

অত্তর একটি নগরে ফাহিয়ান বৃদ্ধের করেটার কথা উল্লেখ করিবাছেন। যে মন্দিরে এই মৃল্যবান স্থরণচিষ্ঠ থাকিত, তথার রাজাব আট জন মন্ত্রী প্রহরীরূপে মন্দির রক্ষা করিতেন এবং প্রতাহ প্রত্যেকেই ইহার ধারদেশে নিজ্ঞ নিজ সই মোহর করিতেন। প্রতাহ প্রাত্তে এই করোটা সিংহাসনের উপর স্থাপিত হুইত এবং স্পারিবদ রাজা এখানে আসিয়া পূল্প ও গদ্ধুজ্বাধারা পূজা করিতেন। প্রহারে হস্তীরা ওওে করিয়া জল নইরা মন্দিরের কার্য্যে সাহাব্য কবিত। নার্যরাজ্যে একটা ক্ষুদ্র স্পতিল—তাহার

কর্ণমূল খেত। ইহাকে প্রত্যহ আহারাদি দানে রীতিমত পূজা করা হইত। ইহারই সন্নিকটে একটি অভ্ত কুঞ্জ ছিল। প্ৰবাদ এই বে পাঁচ শত অন্ধ মনুষ্য পুৰ্বে এই স্থানে বাস করিত। বুদ্ধদেবের প্রার্থনায় একদিন ইহারা দৃষ্টিশক্তি লাভ করে। প্রত্যেকে প্রত্যেকের ষষ্টি মৃত্তিকায় প্রোথিত করিয়া নিকটবর্ত্তী মন্দিরের দিকে চাহিয়া প্রণত মন্তক হইবার পর ফিরিরা দেখে যে যষ্টিগুলি বুকে পরিণ্ড হইয়াছে। মধাহ ভোজনের পর ভক্তগণ এই বনে সমবেত হইয়া উপাসনাদি করিতেন। মগধে পৌছিয়া কাঁহিয়ান দেখিতে পান যে বৌদ্ধর্মকে সকলেই অত্যন্ত ভক্তির চক্ষে দেখেন। রাজা এবং জমিদারবর্গ যতিগণকে ভূমি, বাটী, উত্থান, পশু প্রভৃতি যথেষ্ট দান করেন। যতিগণ তাঁহাদের নিজ নিজ ধর্ম-কর্মে এবং অধ্যয়নেই ব্যাপ্ত থাকিতেন। বিস্থানরগুলি দেখিতে অত্যস্ত স্থানর এবং পৃথিবীর সর্বস্থান হইতে এথানে সকলে অধায়নার্থ আগমন করে। পুরেণহিতদিগকে দেখিলে অন্ত লোক দ্রে থাকুক, রাজা পর্যান্ত নিজ শিরস্তাণ উল্মোচন করিয়া সম্মান্ প্রদর্শন করেন এবং নিজ হত্তে শ্রমণদিগকে ভোঙ্গন দেশের লোক চিত্র ও ভাস্কর অত্যন্ত পারদর্শী। উৎসবকালে ব্যায়াম ও নাট্যাভিনয় হইত। একটা স্থান্তে নিম্নলিখিত খোদিত াপি দেখিতে পান "রাজা অশোক পৃথিবীর সকল সাধু হাক্তিকেই প্রচুর অর্থ দেন। তিন বার তিনি পৃথিবীর মূল্য দান করেন *।"

^{*} এ শ্ৰকার দানের কৃষা আমাদের দেশে জনেক পাওরা বার। সাধাস্থাপতীতে বেখা বার বে বিক্ষাদিত্য এক লক্ষ্মা দান করিয়াছিলেন।

काहिबान मगर्य थाकिबा ग्रकांगर्स्ड त्नोका চড়িরা তমলুক হইরা লহার যান। লফার তখন বৌদ্ধ ধর্মের যথেষ্ট আদর সম্বেও সে শ্বানে প্ৰতিমূৰ্ত্তিপুৰাও প্ৰচলিত শঙ্কার বৃদ্ধদেবের দস্তোৎসব হইত 🕇 । উৎসবের দশ দিন পূর্বে তত্ততা রাজা স্কর হতী মনোনীত করিলে, পুরোহিত 'রাজবেশ পরিধান করিয়া তুদ্দুভি ধ্বনি गरकारत वृक्षामरवत्र এरेक्सम खभागा कीर्जन করিতেন —"তিনি তাহার পত্নীকে ত্যাগ করিয়া ছিলেন; তিনি অপরকে দান করিবার অন্ত নিজের চকু উৎপাটিত করিবা ছিলেন; কপোতকে রকা করিবার ভক্ত নিজ শরীর रुटेंट बारम मान कतिया हिटमन ; कुधार्ख ব্যাত্রকে নিজ পরীর দান এবং নিজের শরীরের অন্তি পর্যান্ত পশুপকীর হিতার্থ বাহ কুরিরা ছিলেন। এমনি করিরা তিনি বুছ **ब्रेबाह्यिन।" मर्ग मिन পরে দস্ত**ীকে स्टिन्टेनीएड वहन कतिया नड्या हम जवः ঐ সময়ে পথের চতুর্দিকে বুদ্ধের নানা প্রকার

অবতারের মূর্জি স্থাপিত হয়। এই সমস্ত অবতারের মধ্যে "বিহাং", "হন্তীরাজ", "অত্যাশ্চর্যা ঘোটক" প্রস্তৃতিই দেখিতে স্বন্ধর। মেহেনটলী পৌছিলে নানাক্রপ অন্ত্রান্ নবাই দিন দম্ভ পূজা হয়।

পঞ্চম শতাকীর প্রথমভাগে যথন ফাহিয়ান এ দেশে আইদেন তথন গুপ্ত ৰংশীৰোঁৱা উত্তর ভারতের রাজা ছিলেন। मानिह त्व..... এইরূপ চিহ্নিত হান শুপ্ত রাজগণের অধিকারে हिन। डाँशानत त्राक्षाव मौमा माधात्रगढः পশ্চিমে চম্বল এবং যমুনা পর্যাস্ত বিস্তৃত ছিল I‡ উত্তরে হিমাচল এবং দক্ষিণে নর্ম্মণা সীমাস্ত , প্রদেশ রক্ষা করি'ত। এত্যাতীত আগাম, রাজপুতানা, মালবদেশ ভাঁহাদের অধীনতা স্বীকার করিত। গান্ধার ও কাবুলের নরপতি-গণের সহিত ইহাদের স্থাতাবন্ধন ছিল। এমন কি অক্সাস্ তীরবর্তী রাজগণও তাঁহা-দের বন্ধু বলিয়া স্বীকার করিয়া গৌরবান্থিত दांध कतिएका।

व्यवालक श्रीराशीसनाथ ममानाव।

সাময়িক দংগ্রহ।

হাইকোটে হতা। ।— শামরা আলা করিতে-হিলাম—বঙ্গদেশে হত্যা বুবি বন্ধ হইল। কিন্তু গভীর পরিতাপের বিষশ ধে আবার গত ২৪পে আক্সারী তারিবে ডেপ্টা সপারিকেডেট বাঁ বাগাহর সামধন আনক্ষে একটা বিংশববীর মুবক পিতালখারা নিশ্যে ভাবে হত্যা করিচাতে। মৃত সামধন আলম ১৯০৮ সনের বে মাদ হইতে অনামধ্যাত আলিপুরের নামার মাসলার তদির করিরা আসিত্তছিলেন। বৈদক্ষির শুনানী হইবার পর বা বাহাছের ব্যন আইকোটের দি"ড়ি দিলা নামিবার উদ্যোগ করিতে-" ছিলেন তথনই এই হত্যাকাও হইরাছে,। হত্যাকারী করেক স্থিতি প্রেই বরা পড়িরাছে।

^{ू ।} वर्षवादवक्ष मिरदरण अहे छेरनव नम्लानिक हम ।

[্]ৰী বাগ অণ্যদে হাজারীবাদ কলেজের অধ্য থাবিক শ্রেণীয় জানার হাত্র শ্রীবাদ বিনচ্ছ্যণ বজুষদারের ক্রিকট আমি তিনীৰ কৃতজ্ঞ।

হত্যাকারীর নাধ নীরেক্রনাথ দত্তওও, ইহার বাড়ী বিক্রমপুরে। বীরেক্র অলপাইগুড়ির স্কুলে কিছুদিন অধ্যয়ন করিয়া, তাহার মজেইলাতা ধীরেক্রনাথের নিকট কলিকাতায় বাদ করিতেছিল। আর্তের প্রতি প্রত্ন বীরেক্রের একটা মহৎ গুণ ছিল। আনিনা কোন প্রতিহিংসা সাধনে সংস্কুল আলমকে হত্যা করি-য়াছে। সামস্থল তাহার কর্ত্ব্য কার্য্য সাধন করিতে-ছিলেন মাত্র।

গত সংখ্যার ভারতীতে বলিরাছি, আমরা
বে সার্বব্রনীন উন্নতির অক্স বন্ধপরিকর তাহা বোমায়
বা পিন্তলে সাধিত হইবার নহে, তাহা কৃষিশিল্পের
উন্নতির উপরেস্ট নির্ভির করে। স্থাবল্যন শিক্ষা
করা সকলেরই উচিত কিন্তু এরূপ কার্য্য স্থাবল্যন নহে, ইহা লৃশংত্র অত্যাচার; কাপুরুবতা।
ইহাতে কখনই কল্যাণ্যাধন হইতে পারে না—ইহাতে
আবাদের অধ্যোগতিই অব্দ্রস্তাবী। কি করিয়া
এ কথা তাহাদিগকে ব্রাইব আনি না। এ সম্বন্ধে
বেক্সলি ও অমুভবাজার প্রকা বাহা বলিয়াছেন—
নিরে উদ্ধৃত করিলাম।

ৰেকলি—"বে সকল অবক্সচরিত্র ব্যক্তি এই সকল
অত্যাচার ও হত্যা করিতেছে, তাহাদের কর্পের ফলে
দেশের বে কতদ্র অকল্যাণ সাধিত হইতেছে, তাহা
তাহারা কিছুই বুঝে না।"

শ্বিকা—"এই তীবণ হত্যা হইতে আমরা ব্বিতে গারিতেছি যে গৈশাচিক বড়বছাগণ দেশের শান্তিহল করিতে বছাপরিকর। হার ! কি প্রকারে তাহাদিগকে বুঝাইব যে তাহাদিগের এ পেশাচিক কর্মের ফলে দেশে যে ত্রংপ্রোভ বহিতেছে, তাহার আঘাত সহ্ত জরা দেশবাসীর সাধাতীত।" তগবান তাহাদিগকে ওত্যক্তি প্রদান করন ইহাই আমাদিধের একান্ত প্রার্থনা।

ক নির পথাজ্ঞার পর বীরেন্ত কচুরী রসগোলা সন্দেশ এভুতি ধাইবার ইচ্ছা প্রকাশ করে।

শিরবৃত্তি—আমরা শুনিরা বিশেব সত্তই হইলাম বে প্রবংশিক প্রত্যেক বিভাগ হইতে শির শিক্ষার লক্ত বৃত্তি দিয়া ভারভবর্ষীর ছাত্রদিগকে ইউরোগে থেরণপ্রবিবন। বৃত্তিভূক্ ছাত্রের নির্বাচন গবর্গনেণ্টই

धवः विश्वविधित विवद्यक्ति भन्नीकांत्र উপর নির্ব্বাচন নির্ভব্ন করিবে। ১। ইংলগু অংথবা ইউরোপের যে দেশে ছাত্রটা প্রেরিত হইবে সেই দেশের ভাষা ছাত্রটী আনে কিনা? ২। গ্রণ্মেণ্ট-নিৰ্দিষ্ট শিক্ষায় এবং শিক্সকাৰ্য্যে প্ৰাৰ্থিগণের সহামুভূতি আছে কিনা এবং দেশে ফিরিয়া তাঁহারা ঐ गमच कार्या निश्व थाकिरवन किना। **७। निर्दा**ष्ठि **ইইবার পূর্বের তাঁহারা ভারতবর্ষে যতটুকু শিল্প শিক্ষা** সম্ভব তাহাতে শিক্ষিত হইয়াছেন কিনা ইত্যাদি। এই কার্য্যের জক্ত গ্রপ্রেণ্ট আমাদের ধ্যাবাদ ভাজন সন্দেহ নাই। ৰখন ডিউক অব আরগাইল (Duke of Argyll) সেক্রেটারী অব ট্রেট ছিলেন তখন এই প্রকার বৃত্তি প্রধা প্রচলন করা হয় : কিছ ছঃখের বিষয় কিছুদিন পরেই এ বৃত্তি আবার বন্ধ হইয়া যায়। আশা :করি এবার বৃত্তিগুলি চির্ছায়ী इरेरव। रक्रापन इरेरा रव हाजी वृद्धि भारेरवन তাঁহাকে তপ্তশিল শিকা করিতে হইবে। আমরা আরও সুখী ছইলাম যে গ্রুথিয়েণ্টের মতে সাধারণতঃ বুত্তিভূক ছাত্রের প্রথমে তাঁহার ফদেশের শ্রেষ্ঠ শিল্পবিদ্যা শিক্ষা করা আবতাক। অতএঁৰ আশাক্রি বঙ্গীয় জাভীয় শিক্ষাপরিষ্ৎ সংক্রান্ত এবং বেজল টেকনিকাল ইন্ষ্টিটিউটের শিল্প বিভাগে শিক্ষিত वाकिमिरगद्रमावीहे गर्स्टर्गिक मर्व्वार्थ थाश क्रिट्रिन ।

হিন্দ্বিবাহ সংস্কারসমিতি। শীযুক্ত রার
নরেন্দ্রনাথ দেন বাহাত্ত্র মহাশয়ের সভাপতিত্বে এবং
অনেকগুলি শিক্ষিত ও গণ্যমান্য ব্যক্তির উপস্থিতিতে
গত ২১শে তিসেম্বর উক্ত সভা ছাপিত হইরাছে।
বালক বালিকাদিগের বিবাহের বয়স বাড়ান এবং
বালিকাগণের শিক্ষা পরিসর বৃদ্ধি ব্যবহাই এই সভার ই
উদ্দেশ্য। এই সভা আইত হইবার পূর্বের মাননীর
বিচারপতি শ্রীযুক্ত আগুতোব মুখোপাধ্যাম মহাশর
ও শ্রেছাম্পদ শ্রীযুক্ত নরেন্দ্রনাথ দেন মহাশয় প্রার
ছই শত শিক্ষিত্ত ব্যক্তির নিকট তাঁহাদের অভিনত
প্রকাশের অক্ত অম্পুরোধ পত্র প্রেরণ করিয়াছিলেন।
ফ্রেরে বিষয় অনেক্টে এই সমীচীন প্রভাব অম্পুনাদিত
করিয়া পাঠাইয়াছিলেনু।

ক্ষাবিদার হব আবালর কেবর পকে কভত্র ক্ষিত্রিক বির্দিশিক ভালিকা ভারার সুপাই ক্ষাব

नवर्भ कांवकरार्यव क्या वाक्षित्रा क्या वक्षारान्य क्यारे यक्षन ।

•-3	800	
3-4	496	
Q-6	644	
v-1	3946	
*B-€	****	
e->+	989+8	
>>6	10,000	
\$6-2.	388,613	

অর্থাৎ এক বজদেশেই আড়াই নক্ষেত্রত উর্দ্ধ সংখ্যক বালিকাগণ এক বংসহছইতে বিশ বংসর বরসে নিল্ল পিডামান্তাও সমাক্ষেত্র-অবিন্যুকারিতার কলবরপ অকালে বৈধবাদশা প্রাপ্ত হইলাছে। অবচ আমরা বছপরিকর হইলেই এই চুবনীর প্রথা সমূলে উৎপাটিত করা বার। আমরা দেখিরা অতার পরিভুট ইলাম বে প্রছাশেদ বিচারপতি মহালর এ কার্য্যে অপ্রসর হইছাছেন। সমাল সংস্কার বিবরে তিনি অনেক ক্ষেত্রেই অপ্রশী। বিশেষতঃ তিনি বিশ্ববিদ্যালয়ের Vice-chancellor—আমাদের দৃঢ়বিদাস তাঁহা সৃদ্ধান্ত অবল্যন করিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রতৃক্ষ নিল্ল নিল্ল পরিবারে প্রান্যুবিবাহস্রোতের স্তিধ্যেক মহাশন্ত এই সভার সেক্রেটারী।

ইংলপ্তের মন্ত্রীসভাব সভ্য নির্কাচন ব্যর।
বিলাভের পালাবেটে উর প্রান্থ এবং রক্ষণীলদলের প্রং প্রং সভ্য শিকাচন চলিতেছে। এই
অভার নির্কাচকে কি প্রকার বহু আগরা ভাহার
একটি ভালিকা বিরে প্রবাব ক্রিলাব।

সাধারণ নির্মাচনে অনেত সময় ১০০০,০০০ পর্যান্ত অর্থাৎ এককোটা জিল লক্ষ টাকা বায় হয়। ইহা ছাড়া ভাটবাভাগণ এবং নির্মাচনপ্রান্ত্রীগণের নিজ নিজ

ৰাম ৰক্ষয় কোন এক অভিন্ন কোৰক খনিয়াছেন त बारहेव डेनव नवब क्लांडी डेका बार्स वहे प्रमान राज्य बाहिक रम्भू रहा। अ०० पृहीस मुख्य निक्रांक्त गांशांक मा दह तारे बच मानिक्षेत (Planter) विशद जिन दर्को होका (मध्य) रहेशहिन। छारा नहित्न छैाराता तन्ति।तक छेन्छ পালট না করিয়া ছাড়িতেব না। একবার নাত क्रम এक शिनि धन्छ न्डन निक्रांठन वस हत। ১৮০০ সালে গমের মূলা এত চড়িরা বার যে कवनवाळ छे९छडे वज्रना निवारे क्रिंग श्रास्त्र हरेटव वा এहेळ्ल এक चारेन विविद्ध रहा এहे चारेटनत नाम इब (बाडेम् (बड् चाहेन १ । किंक हेहारड মন্ত্ৰীদিণের বিরুদ্ধে দেশের লোক এত ভাতত্তিত **হটয়' উঠিল যে ঐ অটুন বাতিল করা** তির जीशास्त्र छेलातास्त्र बहिन ना। छन्न क्यम ७ वर्ड नना छेडरप्रहे करे बारेन बहित कविया मखश्छव सन রাজ-চিকিংসক উইলস্ সাহেৰ বারফং এই আইনপত্র রাজার নিকট প্রেরণ করেন। নাভারতের গাড়ীভাড়া বাৰত ডাঞাৰ ৰাত্ৰ এক গিনি দাবী ক্রায় रमवादकाव या अक शिवि बारबार विस्ताहन स्नित परिका

লিড্ৰ বিশ্ববিদ্যালয়ে ভারতীয় শিল্পবিজ্ঞান সমিতি। গত ১৮ই ভিদেশ্ব লিড্স বিশ্ববিদ্যালয়ের The Indian guild of science and Technology व्यक्तित स्रेगारकः निवासिकात महिछ विकारमत मः द्यांत्र कामारमत राहन हिन विन चांद्र चित्र बहु तहे छेट्य गांधन यानत ्रेशन**ः, क्षेत्रकः, ७ मान्तिकानामी** छात्रशिष्काळश् कड़क अने मिनिय श्राटिका इतेग्राह्य। देशमाँ अवर कर्रेलक केंद्र प्रतिव विश्ववित्रामद्वर छात्रकीय स्वित्र^{वर्ग} वनः **चानक वडु वड विजाछी चन्छानक**वर्गछ এই সভাষ উপব্ৰিত ছিলেন। অভাৰ্থনা স্মিতিক সভাপতি नि: चात्र अन. तमन अव. अ मवानक 'अिंगिनिनि-वर्गत्क मानदा अकार्यमा कतिका आवारमत रेगत्न **এই सकात मन्तित भारक्रक्छा विनरहर**ण वृक्षाहेश সম্পাৰক সিঃ ভাই त्वन अवर बरेस्ड निक

কাত্রী এই আন্দোলনের উৎপত্তি ও উর্থিত বিবৰে
বক্তা করেন। আড্সু বিশ্ববিদ্যালরের শিল্প বিভাপার সভাপতি অধ্যাপক সিধেন সাহের এই সভার
সভাপতির আসনে বরিত হইরা আমাদের দেশের
শিল্পের উর্ভি বে একান্ত প্রোন্ধনীর তাহা
বিশ্বরূপে ব্রাইরা দেব। ভিনি বলেন "বদেশের
শিল্পোর্ভিক কল্প আন্দোল দলে দলে যে সকল
ভারতীয় মুবক পাশ্চাত্য দেশের বিভিন্ন শিকারলে
বিজ্ঞান শিকার কল্প সম্বেভ ক্রিন্তির কিটানিগের
বিভিন্ন চেটাকে সম্বভ করিনার অক্সই এই স্মিতির
উৎপত্তি।" আম্বা ভ্রম্বানের নিকট কার্মনোবাক্যে
এই স্মিতির শুভ উদ্দেশ্যের সাফ্সা প্রার্থনা করি।

নোগল চিত্ৰনীতি—"সম্ৰাভ Nineteenth Century" নামক সংবাদ-পত্তে ক্লিকাতা চিত্ৰ विशानरमत्र अधाक कृतिखकत विः भागि बाडेन চিত্ৰনীভি (Moghul School painting) সম্বন্ধে একটা প্ৰবন্ধ লিবিয়াছেন। এই থবছে তিনি এই চিত্রশিক্ষের আরম্ভ ও শেবের একটা ইভিহাস লিখিয়াছেন। ব্ৰাউন বলিয়াছেন "অনেকেরই মতে, হয় পারক্ত, নয় চীন হইতে ভারতবর্ষের শিল্পবিদ্যা স্থুহের উৎপত্তি। अपना मृत्रवयान वा आवन्द्रतनीय ठिजकत्वव निक्ठे ভারতীরেরা শিল্পবিকা করিরাছে। অনেকে বলেন, চিত্রশিক্স পারত্তে উত্ত এবং মুসলমান অভিযানের সময় ভারতে আনীত। কতক পরিমাণে এই উক্তি সতা। কিন্তু এ প্ৰকাৰ উক্তিভে ৰোৰ হয় যে পূর্বে ভারতে চিত্রশিল ছিল না। श्रुष्ठ , शैक मूनलयान अधिवादन वह शूर्व ভারতীয় চিত্র শিক্ষের নমুলা পাওরা যায়। বৌদ্ধ • ধর্মের প্রাত্মভাবের সময় ইছার যথেষ্ট বিস্তান দেখা বার এবং ভৎকালীন চিত্রশিল্পকে বৌদ্ধ শিল্প (Buddhist School) বলা হয়। অৰম্ভা চিত্ৰ দেখিলে ইহা স্পষ্টই প্রতীয়মান হয় যে তথনও চিত্রশিল্পে ভারতব্বীরেরা অনেক দুর অগ্রসর ररेवाहितन।"

-অমাণ্ডরণ ইহাও বলা বাইতে পারে বে তবন

আসিরার বৌদ্ধর্মাবলনী সকল দেশই ভারতব্যীর कर्ड् क विजित्र तुष्कत कोयनी-गहेनावलीत विज नम्द्रत ৰক্ত আকাজন। প্ৰকাশ করিত। ধৃষ্টায় পঞ্চম শতাদীতে ভারতবর্বে চিত্রশিল্পের উৎকর্ষ চিত্রশিল ভবায় লইয়া বাইবার চেট্টা করিয়াছিল। অলস্তা চিত্রাবলীর সহিত চীনের অনেক চিত্ৰের গভীর সাদৃষ্ঠ দেখা ৰায়। ভারণরও আবরা দেখিতে পাই যে বৈদেশিক মুসলমান চিত্রকরগণ 🗣 হিন্দু চিত্রকরগণ এক সঙ্গে চিত্রশিল্পে নিযুক্ত। এই বৈদে-শিক্পণ সিরাজ তাবিজ প্রভৃতি নগরী হইতে মুসলমান আক্রমণকারিগণের ধহিত এই দেশে আসেন। হিন্দুগণ মুসলমান প্রচলিত চিত্রশিল্প শিক্ষা করেন। আকবরের রাজ্বের সময় মুদলমান রক্তেজ ফুপ্রতিটিত হয় এবং আকবর দেশীল শিল্পের উন্নতির জক্ত বিশেষ চেষ্টা করেন। তন্মধ্যে চিত্রশিল্পের প্রতিই তিনি অধিক্তর মনোযোগা ছিলেন এবং তাঁহারই উদ্যুষে মোগল চিত্ৰনীতিৰ প্ৰতিষ্ঠা হয়। সাহাজাহানের সময়ই ইহা উন্নতিমার্গে আরোহণ করিয়াছিল এবং মুদলমান রাজ্বের অপমানের সহিত ইহারও দীপ্তি নির্বাণিত इইয়া পিয়াছিল। দিল্লিডে যেমন এখনও সেই পুরাকালের বাদশাহদিগের বংশধর আছেন, হন্তীদস্তোপরি চিত্রেও সেইরূপ সেই চিত্রশিরের অবশেষ আছে। কিছু উভয় কেতেই আয়াদের সেই পূর্বা পৌরব ও তৎসহ শেষ অবনতি মাত্রই দেখাইরা দের।

थै(याः

জীবনের চতুর্দ্দশটি ভ্ল।—লওন বিচারালয়ের বিচারপতি রেণ্ট্ল (Rentoul) সাহেব এক বজ্তা উপলক্ষে নিম্নলিখিত জীবনের চতুর্দ্দশটি মহালমের উল্লেখ করেন।

- (১) নিজের ধারণাস্যায়ী স্থায় অস্তা ৄআদর্শ স্থির করিয়া, সকলেই সেই আদর্শের সমর্থন করিবে এইরপ আলা করা।
- (২)নিজের আনন্দের মাতার হিসাবে অজ্ঞের আনন্দ মাতার হিগাব করা।
- (৩) জগতে সকলেই একমত হইবে এরাণ । আশা করা।

- ं (क) बानक ७ जूनाव गटुरा निरुप्त निर्मय निर्मय अन्य अधिकातात जाना कवा।
- (e) সফলের খভাগকে এক রক্স করিয়া গঠিত। করিবার চেটা করা।
- (৩) সাবাস্ত বিবরে আপনার পরাজর খীকার না করা।
- (१) নিজেদের কর্ম পরিপুর্ণ নির্ফোব বেখিবার টুচ্ছা।
- (৮) বাহা সংশোধিত করিবার উপার নাই সেই বিবর সইয়া আগনাকে ও অগরকে বিরক্ত করা।
- (৯) সক্ষম খনে হংগ বাঃ অবংশতন দেখিলে দুর ক্ষিবার চেঠা বা করা।
- ে (১০) অপরের হুর্বসভাকে কমা করিবার অবস্থি।
- (১১) নিজে বাহা করিতে পারি না ভাহাই অসতব বলিয়া ববে করা।
- (১২) আমাদের সীবাবছ বব বাহা বাহবা করিছে সক্ষম কেবল ভাহাই সভ্য মলিরা বিখাস করা।
- ে (১৩). এরপভাবে জীবন অভিবাহিত করা বেন জীবনের অভি বৃহর্ত, কাল ও বিন অনস্ককাল ছারী মুইবে ঃ
- (১৯) **ভণ্ড ভণ্ডলিকে উ**পেকা করিয়া বাহিরের **ভণের হিসাবে লোকের মূল্য নিত্**পণ করা।

ভাষার বজ্তার উপবা 'বরণ তিনি নির্নিবিত বটনাঞ্জির' উরেশ করেন। এক সমরে এক বর্দ বাজক একটা বিবাহোগ্যতা কুমারীকে বলিরাছিলেন— 'বিবাহ করাটা বড়ই ছক্তহ যাগার।' কুমারী উত্তর করিল 'হাঁ সভ্যা, কিন্তু বিবাহ বা করাটা আরও অধিক' ছক্তহ যাগার।"

একলৰ তোটনাৰী তোটদাতার নিকট উপছিত বইপে, ভোটনালা বলিখা উউলেন "বাবি বরং মুম্ভানকে ভোট বিব, ডিড আপবাকে দিব বা।" ভোট প্ৰাৰ্থ উভবে যদিনেৰ—"ভা আগৰান ভিনি বৰি ভোট কইবাৰ জুলু উপছিত বা হন, ভাহা বইলে আবাকে দিবেৰ ভ !"

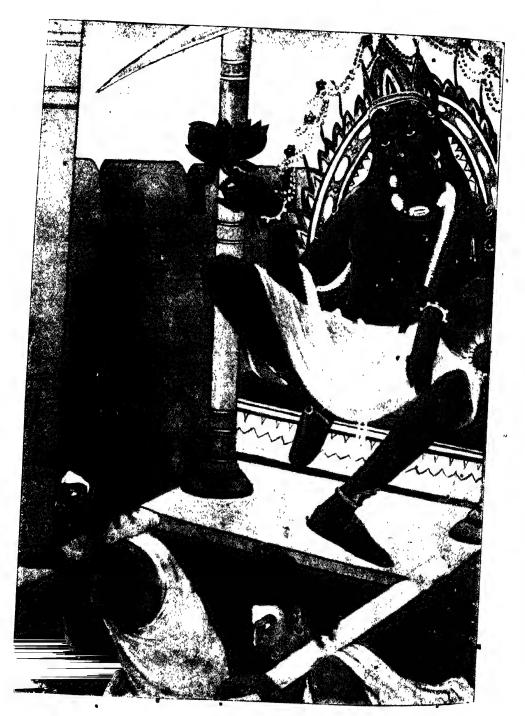
এক ক্লাবে করেকটি বন্ধু অধিক রাত্রি পর্যন্ত্র্
আনন্দ করিতেছিলেন, এবন সুবরে বাররক্ষক আসিরা
সন্তাদ দিল "বাহিরে একটি বহিলা আসিরা ভাঁহার
আমীর সন্থান লইতেছে, ভাঁহার নাকি শীত্রই বাটা
কিরিবার কথা ছিল।" এই কথা শুনিবামাত্র সকলেই
আসন ভ্যাপ করিরা উটিয়া বলিলেন "সভাপতি
বহাপর বহি অফুষতি করেন ভ এক বিনিটের অফ্র
আবি একবার বাহিরে বাই।"

এক গৃহত্বের পদ্ধী লোকানের হিসাবের নথা 'ঐ'
অক্সফ্রীর কোন অর্থ আহিছার করিছে না পারার
উাহার বাবী তৎক্ষণাৎ গৈই লোক।লে যাইয়া ভাহার
অর্থ জিজ্ঞানা করেন। গৃহত্ব কিরিয়া ভিনি গদ্ধীকে
বলিলের ও অক্ষর্টীর অর্থ আবি একটি আন্ত নির্কোধ
এবং ভূমিও 'ঐ'।

মনুবা বেহের জান্তা — জার্নিক জনেক বৈজ্ঞানিকের বতে সক্ষা বেহ হইছে সানাপ্রকার আনোকরারি নির্গত হর। আব্যান্তিক অবহা অনুসারে সেই আলোকরারির বর্ণ ও উন্ধানতার বিভিন্নতা কেবা বার। আজকান পাল্ডাত্যদেশে অনেকে এই আন্তার কটোপ্রাক পর্যান্ত ভূলিভেছেন। উহারা ইহাও আবিকার করিতেছেন বে একজনের সেহ হইছে নিংস্তে এই আলোকরান্তি অপন লেহের নানাবিব রোগ অপনোদনে সক্ষম, রোগীর আলে হন্ত বুলাইজেই সেই আলোক রাম্ব ভাহার নেংহ প্রাবিত্ত ইইরা তাহাকে শ্রন্থ করে। এ আরি-জিলা ভারতের পক্ষে নৃত্যন নহে। ভারতের ববি ভগবানক এই অজ্ঞান্ত প্রতিত্ত ববি ভগবানক এই অজ্ঞান্ত প্রতিত্ত ববি ভগবানক ভগ্নেই ভারতবানী আন্তানে পতি হুটাগ্যবন্দ্রা ভগ্নেই ভারতবানী আন্তানে পতি হুটাগ্যবন্দ্রা ভগ্নেই ভারতবানী আন্তানে পতি

AT:

[•] क्लिकाको, २० वर्षकालिय क्रीहे, काविक ध्यान बैद्दिहत्त्व नाहा पाता प्रतिक क ०३, एक वालिशक धार हरेए० • बैनकीनव्य भूरवानाशाह पाता सकानिक ।



রাজা নহয়ের পতন জুবেকুন্থ প্রেপাধার অভিত চিত্রত

ভারতী।

৩০শ বর্ষ]

रेठव, ১৩১৬

[১২শ সংখ্যা।

ঊষা।

প্রকৃতির কাব্যকুঞ্জে কুম্মচারিণী—
অনবন্ত লন্ধীরূপে অরি উধারাণি—
তুমি দেখা দিরাছিলে প্রথম প্রভাতে
সক্তরাত: দিন্য বেশে; স্বর্ণাত্র হাতে
সাজারে শুজার অর্থা। শিশিরাক্ত জলে
ধরণীর তপ্ত বক্ষ সিক্ত করি দিয়া—
মাতৃত্তক্ত ম্থা সম। পাঝী জাগি উঠি
গাহিল বিভূর নাম। পরিমল মাথি

মিশ্ব বায় বিশ্বজনে দিল নব প্রাণ।
তপোবনে বজারিল পুণ্য বেদ গান
অধিবালকের কঠে। অরি আদি মাতা—
বিশ্বজগতের তুমি প্রথম বন্দিতা!
যুগযুগাস্তর হতে চির-মৌন-মুখে—
সম-অচঞ্চলা রহ শোক হ:থ স্থা।
তবু তব দরশনে—পরশনে তব
মানবের মনে জাগে শাস্তি অভিনব!
প্রীইন্দিরা দেবী।

পোষ্যপুত্র। (পূর্বাহরতি)

(<>)

"কুতন গিরি ? তিনি আবার কে ? আমি তো নিজেকেই বাড়ির একমেবাবিতীরং বলেই জানি'।

"ন্তন গিরি—অর্থাৎ কিনা কর্ত্তার বড় বঙ্ বিনোদবাব্র স্ত্রী। তাঁকে কেমন দেখলে ? নেহাৎই নাকি হাবাতে ঘরের মেরে?" আবার তার মা নাকি খুব জাহাঁবাজ মেরে মাছর? বৌ বলছিল এরি মধ্যে যেন সব তারি চিরকালের অধিকার করা বর বাড়ি এমনি করে চারিদিকে বেড়াছে। কে জানে তোমাদের সভে কেমন বনিবনাও হবে, টবে? হৈলোঁট ক্রি বিবা ইালের সভন, দেশলে মারা হর। বড় ,গিরি লোক কেমন ?"
"বিনো-দার স্ত্রী!" শ্যাশারিত হেমেক্র.চমকিরা
উঠিরা বদিল, বিশ্বরে ছই চকু বিশ্বরিত
করিরা বদিল"এ আবার কি আঠি করা হচ্চে ?
এসব ভামাসা বে শুনলেও আতত্ক হর!"

উপেনও বিশ্বিত হইণ "তামাসা। তুমি কি নিজের বাড়ির কিছুই পপর রাথোনা নাকি? এতো বড় কাঞ্টার কোন সংবাদই পাওনাই? অথচ পাড়ার পাড়ার আজকাল তো এই কথা নিমেই তুম্ল আন্দোলন চলছে, এর মাঝথানে ভোমার এত, সাবের থিরেটার কোথার চাপা পঞ্চে গিরেছে। কিন্তু হেমা! মতি বিবির গলাটি কি মিটি! মন যেন কেড়ে নেয় ।" আহা প্রাণ দিরে সই প্রাণের ছবি বত্নে এঁকেছ"কি স্বন্ধর গাইলে!"

হেমের মাধার ভিতরে তথন অভিনরের দৃশুপটটার উপর একথানা তাঁত্র ইর্বার ডুপদীন্ পড়িরা গিরাছে, দে উপেনের শেষ কথাগুলার পূর্বের মত তদাদ হইরা উঠিল না। অধৈর্য্য হরে বলিল "বিনো-দার আবার জ্রী পুত্র কোথা থেকে এসে উপন্থিত হলোঁ! তোমার এদব ইেরালার ছন্দ আমি কিছুই বুবতে পারছি না একটু ম্পাষ্ট করে বলো দেখি বাতে বোধগম্য হর।"

"এর চেরে আবার স্পরীস্পৃষ্টি কি আছে ? বিলোদবাব বৃন্ধাবনে এক অনাথা বালিকাকে বিরে করেছিলেন, সে এতো কাল পরে তার বস্তুরের সন্ধান পেয়ে ছেলেও মা সঙ্গে করে এসে উপস্থিত হরেছে এতে অস্পৃষ্ট কোন-ধানটার বাই করটো ?"

হেমেক্রের নিজাটা তাহার মুণিতপ্রার চোধ
ছইটাকে ছাঁড়িরা ুকাঝার চলিরা গেল
তাহা সে,জানিতেও পারিল না; আজিকার
মউই গেল কি কতদিনের জন্ত গেল, তাহাহ
বা কে বলিতে পারে! এমন সমর বাহিরে চটি
জ্তার শব্দ শুনিতে পাওয়া গেল, বারের
বাহিরে দাঁড়াইয়া বোগেশ ডাকিয়া বলিল
"কি. হে ভিতবে খেতে পারি? জেগে না
মুমিরে?"

হেষেক্স উত্তর দিবার পূর্বেই উপেন ভাড়াভাড়ি বলিয়া উঠিল "বন্ধদের জন্ত হার অবারিত। ভূমি বস্কুন্দে আগতে পারো।" বোগেশ প্রবেশ ক্রিয়া হেষেক্সের হঠাৎ গাড়ীর্ঘ্যের কোন কাষণ না পাইরা প্রাপ্রপূর্ণ দৃষ্টিতে উপেনের দিক্লে চাহিলা।

"যোগেশ! তুমি বিনোদবাব্র ছেলেঁটিকেঁ দেখলে ? হেমবাব্ এখনও দেখেননি⊸ তিনি—

একটা কেদারা হেমেক্সের সোফাটার
নিকট টানিয়া আনিতে আনিতে মৃত হাসিয়া
বোগেশ বলিল "বিনোদবাব্র ছেলে কি কার
ছেলে তা জানে কে? কর্তা বেমন ক্লেপে
উঠেছেন তাতে তুমি আয়িও য়দি বিনোদ
নাম নিয়ে দাঁড়াই তাহলেও হয়তে। তিনি তা
বিশাস করে কাছে টেনে নেন।"

উপেন ও ছেমেক্স উভয়েই যোগেশের কথার সহসা চমকিরা উঠিল। উপেন বলিল "কি বলো বোগেশ। কর্তা মশাই নাকি বিশেষ প্রমাণ প্রয়োগ না মিরে বউ ঘরে এনে-ছেন ? হেমের ভোঠাইমার আংটি ও ফ'টো ওঁদের কাছে পাওয়া গিয়েছে।

বোগেশ অবিখাদের মৃত্ হালি হালিল,

"মন্ত প্রমাণ! ও বিনোদের স্ত্রী কি না তা
আমি বগতে পারি না সেটা বরং হলেও হতে
পারে; কিন্তু ও ছেলে যে বিনোদ্রাব্র নয়
তা আমি হলফ করে বলতে রাজি আছি।
ও ছেলে সে চলে বাবার পরে হন! ছেলের
মা ভাল মেরে হলে বিনোদ্রাব্ ক্থনো শুধু
ভধু স্ত্রী ত্যাগ করে চলে বার ? সে তেমনি
পার্থ ছিল কিনা!

"আহা বোগেশ। তুমি ভূলে যাচোঁ নাকি বে, সে তার বাগকে ছেড়ে চলে গ্যাছে। বাপের চেহে স্ত্রী কি বড় হলো। হ বি পিতৃ, স্বেহ ত্যাগ করতে পারে সে এটা পারবে না ?" ভূলিনি হে ভূলিনি। কিছু তোষার এ আর্থ- यिके है। य किंक श्रीतिमाद मजन प्रविक्त श्रीतिम

यथारनरे कन इति रहाकि। तम छात्र करशन-'थानुस्त्री नांशी टांबटक धंबटवरे। विटनांनवावू ব্রাপের উপর রাগ করে গিয়েছেন তবে আর ক তিনি জীও তাাগ করেছেন। হা হা হা !" হেমেন্দ্রের মুখটা অসাধারণ বিবর্ণ হইয়া আদিরাছিল, সে তাহার কম্পিত বক্ষে হস্ত বদ্ধ করিয়া স্থির কর্ণে যোগেশের কথার প্রত্যেক বর্ণ টি পর্যাম্ভ যেন পেটুকের মতন গিলিতেছিল। মাত্র কুপরামশুটি যেমন মন:সংযোগপূর্বক ভনিতে পারে স্থপরামর্শ টি তেমন পারে না। অতুল ঐখর্য্য অপুর্যাপ্ত সন্মান, ক্লেহ বদ্ধ দেবা কিছুরি হেমেন্দ্রের অভাব ছিল না। **শংসার এখন তাহার নেত্রে অপূর্ক তু**খজাল রচনা করিতেছিল; সহসা বিনা মেঘে একি বজ্ৰপাত! ভোক্ষিতাবলৈ বেমন রাজ-প্রাসাদ অরণ্যে আবার অরণ্য রাজপ্রাসাদে পরিণত হয় হেমেন্দ্রের তাহাই ঘটিল। গ্রীব হেম তাহার পরিদ্র গৃহে তাহার ক্ষুদ্র পাঠাগারে মলিন জার্ণ পুস্তক রাশি বেষ্টিত হইয়া কঠোর অধ্যয়নে জীবনের উচ্চাক জুকা ডুবাইয়া দিয়া নিজেকে এপ্র্যামগ্রী ৰূগং হইতে পূথক করিয়া রাথিয়াছিল। দেত युष्प ९ थरे रेख्यभूतोत रेख्य भन कथाना কামনাঞ্জ করে নাই। সে তো অতি শৈশবে , উপরে সেই যুগেরই একখানি মাত্র পাতা, ব্যতীত আর কথনো এই লক্ষীপুর প্রাসাদে , পদাপঁণও করে নাই। তবে কেন তাহাকে তাহার অভ্যন্থ পথ হইতে টানিয়া আনিয়া इमिटनत बन्न अंश्रदिगत मर्द्साक भारत चारताहन করাইয়া দিয়া আবার মুহুর্ত্তে এই গভীর অন্করার निकित्ता निक्मि। ध स मात्रवा तसनीत जालोकिक जांशा विश्वांव कारिनी!

তখন সন্ধ্যা অভিবাহিত হইয়াছে, বাড়ী ভিতর ধাইবে বলিয়া সে বন্ধবান্ধবকে বিদার দিল। ঘরে আলোকাধারে উজ্জ্বল আলো জ্বলিতেছিল, টানাপাথা চলিতেছিল, কুন্ত ত্রিপদীর উপরস্থ রৌপ্য আধার হইতে তাজা ফুলের গন্ধ আদিতেছিল। মর্মার টেবিলের পাশে সবৃজ ভেলভেট মণ্ডিত মেহাগ্লিচেয়ারে বসিয়া চিস্তাহীন হেমেক্স আৰু আকাশ পাতাৰ ভাবিয়া পাইতেছিল না। দেওঁয়ালগিরির আলো দর্পণে দর্পণে নিপতিত ঘর আলোকময় করিয়া তুলিয়াছে, গালিচাবৃত ক কভূমে বহুমূল্য *বিলাতি ফ্যাসানের কোচ কেনারা, ব**হু মূ**ল্য রেশমঝালর-যুক্ত অদৃত্য আবরণে আবৃত হইয়া গৃহের শোভা বর্দ্ধন করিতেছিল। বাতাসে দ্বারের মূল্যবান স্থচিত্রিত পর্দা কাঁপিতেছে ছলিতেছে; সমস্তই (यन जानक्षम् ।

ट्ट्रिंड धक्रवात (महे नव हाहिन्ना स्मिथन। এই স্থের মাঝধান হইতে নামিয়া ভাহাকে আবার কোথায় দাঁড়াইতে হইবে। কল্পনা-নেত্রে একবার সেই গোমর মৃত্তিকা লিপ্ত কুল অঙ্গন, চুনবালি থদিয়া পড়া কুত্র কুত্র षात जानागा विभिष्ठे त्रहे अर्क अक्षकात शृह-থানি উদিত হইল। পুরাকালীন তক্তপোষের এবং তাহারি উপর চারিদিকে পুত্তকরাশি ছড়াইয়া বসিয়া কঠোর অধ্যয়ন ডান অস্ত্রথ कनक हिन नां। किंदु এथन ? -(श्राम यानक *** ভাষকান্ত** পৌরকে ভাবিল। পাইয়াছেন বলিয়া তাহাকে একেবারে বঞ্চিত क्तिर्वन ना, यथानर्कात्वत 'मालक' शहेशा रायात त्म ठाविवदुमनं कांग्रेश तम्यानकान দাবীদাওরা শেব হইলেও দরাদাক্ষিণাের এখনও কিছুমাঞ অভাব ঘটিবে না ইহা সে বুঝিল। বিশেষতঃ যভোটা হেমেক্সের জন্ত না হউক, শান্তির জন্ত অবশ্রুই তিনি একটা কিছু উপার ক্রিবেনই। হেমের ললাট কুঞ্চিত হইরা আসিল, দরা! বে বাড়িতে সে প্রভূছিল সেধানেই কিনা সে একজন প্রতিপাল্য হইরা থাকিবে?

হেমেক্স গভীর একটা নিখাস সহকারে
ভাবিল "আছো যোগেল তো মড় মল কথাও
বলে নাই ? শ্বামাকান্ত নিরুদ্ধিই পুত্রের নামে
ভানশৃত্র হইরা যান, তাঁহাকে প্রভারণাঁ করা
কিছুই কঠিন কার্য্য নহে। কিছু তাই বলিয়া
কোথা হইতে কে আসিয়া বলিল আমি বিনোদের ক্রী অমনি ভাহাকে অতুল ঐথর্য ধরিয়া
দিয়া নিজে পথে গিয়া দাড়াইব ! ভাহা
হইতেই পারে না ! হেমেক্স আর ভাবিতে
না পারিয়া শান্তির উদ্দেশ্রে গমন করিল।

সুধের সময় বাহাকে ভ্লিয়াছিল—ছ: ধের
সময় তাহাকে মনে পড়িয়া গেল। শান্তি
সামীর এই অস্বাভাবিক গন্তীর বিষশ্বভাব
কেথিয়া আকুল আগ্রহে জিজ্ঞানা করিল—
"কি হয়েছে ? রাত জেগে অস্থধ করেনি ত ?"
শান্তির এই ঔৎস্কাপূর্ণ প্রশ্ন সহনা অপ্রয়োজনেও হেমেন্দ্রনাথের বক্ষে আঘাত করিল। ব্
হেমেন্দ্র আজ নতন করিয়া অস্থভব করিল
এই উদ্বিয় হৃদয়থানিই এখন কেবল তাহায়
নিজের ! এপানে ইলা ভিন্ন আর কোন
কিছুতেই তাহায় আপনার বলিবার অধিকার
নাই ! একটা দীর্ঘনিশাস কেলিয়া সে শয়ায়
বিনিক "অস্থধ হয়নি শান্তি, ঈশর আমাদের
উপর নিয়ম হবেছেন তাই ভার্মছি ।"

"ঈবর, আমাদের উপর যতো সদর এমন দরা তার অর লোকেই পেরেছে। তোমার কপালটা গরম হরে উঠেছে! কাল প্রাক্ত্র" ঘুম না হওয়াতে বোধহয় শরীরটা ভাল নাই। আজ আর বাইরে বেওনা, আজ রাতটা ভাল ঘুম হলেই সব সেরে যাবে এখন।"

হেমেক্স ঈবৎ বিশ্বিত হইরা শান্তির
প্রশান্ত মুখের দিকে চাহিরা দেখিল। সে কি
বুঝিতে পারে নাই? এ ঘটনার তাহার
মনে কি একটা আঁচড়ও লাগে নাই অথবা
সে তাহার সহিত ছলনা করিতেছে? আবার
একটা নিখাস পরিত্যাগ করিরা বলিল,
"আর ঘুমিরেছি শান্তি, ঘুমের দফা আজ থেকে
শেষ। ভনছি কে একটা মাগি নাকি
বিন্দার স্ত্রী সেজে—"

শান্তির সমত মুথধানা- বোর রক্তবর্ণ হইরা উঠিগ, সে চমকিরা উঠিরা লজ্জার ক্ষোভে মর্ম্বের ভিতর মরিরা গিরা ধিকারের সহিত বলিরা উঠিল "কি বলছো? তিনি যে অমু'র মা, তিনি বে আমাদের দিদি, ভোমার বড় ভাইরের স্ত্রী।"

"তিনি বে কে তার এখন ঠিকানা কি ?
বিন্দা এমন লোকই ছিল না—বে বেখান
দেখান থেকে একটা কুড়ুনে মেরে বিরে
কর্মে! তার তেজ গর্মা, মর্যাদাভিমান
দ্যে জানে সে একথা কখনই বিখাস করবে
না। বাবা এখন তার নামে পাগণ, সেইজভ ।
তার নাম করে বে বা বলে তাতেই বিখাস
করে বসেন। তা বলে আমি কিন্তু সহজে ।
ছাড়বো না, আমি এর বিশেষরূপে তালতার
করবো। নিশ্চরই । বিন্দা কোনপ্রকারে
ঐ হীন ত্রীগোকটার ক্রিছে পত্তে মুড্রাকালে

ওদের আশ্রম নিমেছিরেন, সে তাঁর সেই আংটির জোরে জাল ওয়ারিব সেকে এসেছে। আদি আমার অবশ্র প্রাপ্য সম্পত্তি অমনি ছাড়ছি না—"

শান্তির কম্পিত সধর ভেদ করিয়া একটা অফুটধবনি বাহির হইয়া পড়িল। "কি সর্ব্ধনাশ!" ফুটস্ত গোলাপ যেন মৃহুর্ত্তে খেতপল্লে পরিবর্ত্তিত হইয়া পেল। ভীতা শাস্তি একধানা কেদারার উপর বিসয়া পড়িয়া আর্ত্তকঠে বলিয়া উঠিল "এমন কথা তুলে দিদিকে তুমি অপমান করোনা, না, না এমন কাজ করোনা, তাঁর কাছে তাহলে আমি আর মুধ দেখাতে পীরবো না।"

শান্তি তুমি ভারী নির্বোধ! এই রাজএখর্য্য পরিত্যাগ করে তুমি কি আমায়
সেই বাসড়ার জন্সলে আবার কিরে যেতে
বলো? তুমি কি চাও আমি সব ছেড়ে
দিরে "ভামপানন্দ" স্বামীর মতন সংসার ত্যাগ
করে যাই বা দোরে দোরে ভিক্ষা করে
বেড়াই? ভোমার কি, তোমার বাপ আছে
সেখানে গিয়ে দিব্য আরামে বসে থাকবে
তুমি বলবে না কেন?"

শান্তির রক্তহীন মুখ বিবর্ণতর হইরা গেল,
"স্নামি কি ভাই বল্লুম ? কেন আমরা
এখানে থেমন আছি তেমনি থাকবো, ভাতে
কেউ ভো আমাদের বাধা দিতে চার না ?
অম্লা ছেলেমাছ্য তুমি ভার কাকা, ভাকে
তুমি যত্ন করে পালন করো। এ বাড়িতে
আমাদের সেই পূর্বের মতন সবই আছে,
কেবল-বেশির মধ্যে আর একটা কর্ব্য।"—

"কর্ত্তব্য নিয়ে ভূমি বলে থাকো, আমার আরু কর্তব্যের শেক্চার গুনিরে কাজ নাই, আমার কর্ত্তব্য আমার কর্ত্তে দাও! আমিতো তোমার মতন কেপিনি, তাই ওই জালিরাৎ স্ত্রীলোকের তাঁবেলার হয়ে থাকবো। তা আমি কিছুতেই থাকছি না, আমি হয় এম্পার, নয় ওম্পার একটা কিছু চাই তা ছুমি জেনে রাখো। দয়ার প্রত্যাশী এ চৌধুরী বংশের রক্ত নিয়ে এপর্যান্ত কেউ হয়ন।"

শান্তির সমস্ত শরীরের রক্ত্যেন গ্রম জলের মতন টগবগ্ করিয়া তাহার বুকের মধ্যে এক মুহুর্ত্তে ফ্টিয়া উথলাইয়া উঠিতে গেল, সে হইহাত দিয়া স্বামীর কণ্ঠ বেষ্টন করিয়া ধরিয়া তাহার বক্ষের উপর লুটাইয়া পড়িয়া ক্লশ্বাসে সকাতরে কহিল "আমি কথনো তোমায় কোন অনুরোধ করিনি আজ একাম্ভ অমুনয় করছি আমার কথা রাথো। সভীসাধ্বীকে অপমান করোনা, করলে ভগবান কথনই আমাদের ক্ষমা করবেন না। আমাদের প্রতি তিনি অনেক দয়া দেখিয়েছেন, অংমাদেরও তাঁর সেই অসীম পরার জন্ম তার কাছে ক্বতজ্ঞ থাকা উচিত, আমরা বদি म अमूना नान वृथा नर्ल नेडे करत किन, তাহলে আর এর পরে দে দয়া পাবো কেন ? व्यामात्र मिन्छि त्रार्था, निनित्र मरनु क्रितांध করোনা, অমৃল্যটাকে ক্ষেত্ করো, তিনিও • আমাদের প্রতি যেমন দয়া করছেন, তেমনিই কর্বেন।"

(२२)

সকালবেলা পুকুর ঘাটে নাসন মাজিতে
মাজিতে হরিদাসী বিমলিকে সংখাধন করিয়া
চূপিচূপি জিজ্ঞাসা করিল "কিলো নৃতন মনীব
কেমন মাছব ? তুই, তো দশ দিন নিয়ে,
বর করে এলি।" "

বিমনাদানী কর্ত্তীর কাপড়থানা কলে প্রসারিত করিরা দিরা একটু চাপা স্থরে এদিক ওদিক চাহিরা উত্তর করিল "মন্দ্র কি, আমাদের এথানেও যাস জল, সেখানেও বাসজল, গতর থাটাবো থাবো তার আবার ভালমন্দ, এই যে বলে, অন্ধ্র জাগোরে, না কিবে রাভির কিবে দিন"!

"তবে বে তারিণী বলে, মাঠাকুরণের মতন নাকি মিশুনে মিগুনে নন ? বাবাঃ মা-টি যে সরদারনি। উনি বদি এ ভিটের চুকে বনেন তাহলেই লক্ষ্মীপুরের হাড়ের লক্ষ্মী ছাড়াবেন! কি সিরেপনা বাবা পেরথম থেকেই!"

বিমলা একটু বেশি সাবধানী! সে আবার একবার সেই আমর্কের ছায়াঢাকা সরল রেথাৰিত হুদূর পথপ্রাস্ত পর্যাস্ত চাহিয়া (मिन)। हात्रिभार्ड्द्र छान व्याम, ७ वाकावी শেবুর ছারার স্থির বাটের দিকে চকিওদৃষ্টি কিরাইল, দেখিল উত্তর পাড়ে কেবল কলমী मला निकार वार्त बाद्य करें। विवाशी वक ছাড়া আর কেহ নাই, বকটি চোধ বুলিয়া পরমার্থ চিস্তা করিতেছে বি মংস্ত চিস্তা করি-ছেছে, তাহাবুঝিবার 'যো' নাই। তখন আখন্ত হইয়া গুলার কাংস্ত বিনিন্দিত শ্বর মৃহতর করিয়া বলিল "তা কিছু মিথো বলেনি বোন. নৃতন গিন্ধির ভারি (भशक। মনিয়ির সঙ্গে কথাব ঠাই কন না! আহা মা আমাদের যেমন মাটির মাগুষ তেমন কি ग्वाहे रूख श्रीत्र-नाः अमन आत आहि! তা দেখ আমাদের পোড়া অদেটে আবার कि घरते। छ्यूनि वृद्वहि—वनि নিভা ভালপেচাই বা ভাকে কেন।" বিমলার কোন ভটিল বহুতের আভাব

পাওরা গেল! হরিলাসাঁ বস্নো ঘর্ষণে বিরত হইরা বিশ্বর পূর্ণ চােৃুখ তুলিরা গালিনীর দিকে তাকাইল "কিলা বিন্দি! বাাপার থানা কি ?" তারিণী বলছিল বড় গিলির মা নাকি মাঠাকুকণকে হাট চক্ষে দেখতে পারে না, হাালা সত্যি ? এসেই নাকি , বলেছিল বাড়ি ঘর সব তো আমার মেরের, ওরা এখন থেকে কোথার থাকবে ?"

বিমলাস্ক্র কাচা কাপড় খানা নিক্লড়াইতে নিক্লড়াইতে পূর্ববং সাব্ধানতা অবলঘন
পূর্বক কহিলেন "আর ব্যাপার!, ব্যাপার
আনেক দূরই গড়িষেছে। এঁদের তো এই '
কাও ওদিকের ধপর লোননি কিছু? কাল
রাত্তিরে থিরাটার মিরাটার ফেলে ছোট বাব্
নাকি কর্তা বাব্র সঙ্গে মহা ঝগড়া করেছেন।
নবনে বলছিল বাব্ নাকি বেশি কিছুই
বলেননি,ছোট বাব্ই মুখ চোখ রাক্লিয়ে তাঁকে
খ্ব কড়া কড়া কথা বলেছেন; ব্ড়মান্ত্র নাকি
মনের ছাধে কাঁদ্তে লেগেছিল।

শ্রোত্রী উথলিত আগ্রহে নিক্ক খাসে প্রশ্ন করিরা উঠিল "বলিস কিলো ! এমন আক্ষিয় কথা তো কথনো শুনিনি ! তা পরে হলো কি ? শুমা যার শিল তারি নোড়া তারি ভাঙ্গি দাতের গোড়া এবে তাই !"

"কেন্সানে বোন আর তো কিছু ওনিন্। তা আমরা আদার বাাপারী আমাদের কাহা-ক্লের পপরে কাল কি বোন, চুপ কে খেনত আসছে; কে গো দিদি ঠাকরণ! আজ বে আপনার এগতে এজো বেলা হলোঁ?" সিছেবরী ঠাকুলানী দোকা পোড়া টেপা অধ্বে . গৌলভের বৃহ হানি হাসিরা গাল বার্জনী হতে ঘটের পৈঠার নিজাইয়া আগত ভাদিতে ভালিতে ৰলিলেন, "কাল 'নাটক' দেখে
বুমতে তো পাইনি আলিুস্যিতে শরীর যেন মাট মাট করতে লেগেছে। শিবি কোথা গেল গা ? উঠেছে ?"

"কোনবৃগে। বৃতন মা মঠিক্রণের সঙ্গে বৃঝি পুজো করতে গ্যাছে তা দিদি ঠাক্রণ। গুটি যা'মেতে খুব মিল হমেচে বাবু,—আজ কালকের যেমন সব হরেছে তেমন নর।"

কথাটা সিদ্ধেশ্বরী ঠাকুরাণীর খুবই মনঃপুত হইল না, তিনি, ঈবং মুখ বাকাইয়া শ্লেষের শ্বরে কহিলের অমন বোকা 'বা' পেলে স্বারি মিল থাকে; পোড়া স্ক্রেরে চারকালই নিজের ভাল বুঝলেনা।"

ক্রমে ক্রমে মাসিমা পিসিমা মামিমা খুড়িমাতে পুথুরবাট পরিপূর্ণ হইয়া উঠিল, থিয়েটার হেমেক্স ও শিবানীর আলোচনার তাহাদের প্রাভাতিক মিটিংটি মন্দ চলিল না।

সিদ্ধেরী নিজের ভবিষ্য-দর্শন জ্ঞানের অন্ত শক্তির সম্বন্ধ বিশ্বয়্বকর গর হইতে আরম্ভ করিয়া নিক্দিট জামাতার জন্ত মধ্যে মধ্যে শোক প্রকাশ এবং তাহার মূর্যতার জন্ত আক্ষেপ্ত করিতে লাগিলেন। বিনোদের আত্মীয়াগণ অর্থিতার পরিমাণে তাঁহার কণার য়ায় দিয়া যাইতে লাগিলেন। কেবল শান্তির বিক্দেশকান কথা আগিলে কেহ বা নীরবে কিহ বা পাটাক্ষরে তাহার পক্ষ অবলন্ধন করিলেন।

সেদ্নকার সকাল বেলাটা শাস্তির পক্ষে বড় মধুর হইরা আইলে নাই, গতরাত্তে হেমেন্দ্র তাহার সহস্র অন্থনর ঠেলিরা তাহার অজ্ঞ অশ্রমল উপেক্ষা করিয়া ভাষাকান্তের সহিত অন্থক বিবাদ করিয়াছে। সে তাহার সহ- চেরে আপনার ধন অমৃল্যকে জাল বলিয়া তাঁহাকে ভয়ানক আহত করিয়াছে, সে শজ্জার বেন মরিয়া গিয়াছিল। সারারাত সে তাহার নির্জন শয়ন গৃহে নিরালোক ককে একা বিছানায় পড়িয়া ক্রমাগত এ পাল ওপাল করিয়াছে একবারটিও বিছানা ছাড়িয়া উঠে নাই অথবা ঘুমাইতে পারে নাই। সে সংসারের কর্ত্তী, আজ তাহার বাড়ি নিমন্ত্রিতে পূর্ণ, আজ তাহার কতো কাজ কতো দায়িত্ব কিছু কিছুতেই সে তাহার সংযত জনম থানিকে কোন প্রকার সাস্তনা দিয়া অপরাধের গণ্ডী হইতে চরণ ছড়াইয়া লইতে পারিতৈছিল না, স্বামীর অপরাধের সেওতো অংশভাগিনী ! থিয়ে-টারের কনসার্টে তাললয়সমন্বিত মধুর স্বরলহরী कक मार्सा स्त्रनिष्ठ श्रेटिका, बृष्टिशीना জ্যোৎসারাত্রির নির্মাণ শোভাটুকু মৃক্তঞানালার মধ্য দিয়া প্রকৃতি তাহার চোথের সমুধে ধরিয়া রাথিয়াছিলেন, কিন্তু শান্তির মনে প্রাংগ যেন সে সব কিছুই পৌছিডেছিল না। সকালে উঠিয়া সে কেমন করিয়া জ্যাঠা মশায়ের কাছে মুখ দেখাইবে ? শিবানীর চোবের উপর চোথ রাধিবে কেমন করিয়া ? এমন কি অমৃকে আদর করিবার অধিকার তত্ত্ব যেন তাহার ফুরাইয়া গিরাছে। ভারের বেলা স্বপ্নৰ তন্ত্ৰার মধ্য হইতে জাগিয়া উঠিয়া শুনিতে পাইল তাহার ঘরের ক্ষৰারে আৰাত করিয়া অমূল্য ভাকিতেছে "ব:কিমা ?" "কি মাণিক!" বলিয়া তাড়াড়াড়ি সে উঠিয়া পড়িল, ছার খুলিতেই নগ্ননায় স্বৰ্যকাৰি শিও ভাষার লাফু জড়াইরা ধরিল, সভলাপুত্র পাধীটির কলকাকদীর স্বরে কহিল জানি "शाहरत अस्ति ।".

শান্তির প্রথম সংগাচ এমনি করিরা
কাটিরা বোল, সে সানন্দে শিশুকে বুকে
চাপিরা ধরিরা ক্বভক্ত চিত্তে তাহার
ললাটে গণ্ডে প্নঃপ্নঃ চুমন করিতে করিতে
মরে প্রবেশ্ করিরা বেন শান্তি অস্ভব করিতে
নারিদ্ধা ক্রণেরে জিক্তাসা করিল "অম্
তুই বে এতে। ভোরে উঠেছিস ? ভোর মা
কৈথার ?"

অমূল্য তাহার কচি কচি হাত এথানিতে কাকিমার কণ্ঠ বেষ্টন করিরা ধরিয়া সশব্দে তাহার চুখন প্রতিদান করিয়া কহিল "রা থলে আছে আমি বাজনা দেঁকো, রাভিরে বাজনা বাজ্চিল।"

"সে বাজনা বে চলে গেছে ধন! আছো
আমি ভোমাকে একটা ভাল বাজনা দিই আর,
এই নে একটা বালী! অমু চল ভোর মার
কাছে বাই।" শাস্তি বাই বলিরাও সহজে বাইতে
পারিল না। এতক্ষণে হর তো শিবানী সব
কথা শুনিসাছে। 'সংসারে শুভার্থী লোক
দিগের কল্যাণে এসকল সংবাদ প্রচার হইতে
বড় অধিক সমর লাগে না। এমন সমর শিবানী
আসিরা ভাকিল "শাস্তি এখনও উঠিস্ নি
নাকি-?

শাবি ঠিকই আঁচিরাছিল, হেমেক্সের কীর্ত্তি
শিবানীর কাণে রাত্রেই উঠিরাছিল। খণ্ডরের
সহিত হেমেক্সর বচসা শুনিরা শিবানী বিমলাকে জিজ্ঞাসা করিল—"কি হরেছে?"
"হবে আবার ,কি, আমাদের বোকাবাব্রক
দেখে হিংসের' জলে উঠেছেন, এই কথা
নিব্লুর কর্তাবাব্র সজে নাকি ক্লক্ষেত্তর হরে
পেল, নিব্লুনে বলছিল তিনি নাকি বলেছেন
পুনি আমাদের দাদাবাব্র ইব্লি নও—"শিবানী

गरमा **जार्डजा**रक **राज्ञा** विम "विमना शास्त्रा भारित कोशोत ?"

বিম্লি আক্ষা হইরা গেল, ব্রিল

ক্ষি জানি বড়মা, মাঠাক্রণ বোধহর কর্তাবাবুর খবে কি ছোটবানুর খরে কোণার
আছেন। তা হাঁাগা ভূমি বে বড়, থিরেটার
দেখতে গেলে না ? পাড়ার মেরের।
ভোমার স্বাই খুঁলতে লেগেচেন বে।"
শিবানী বলিল, "বলো আমার অস্থ
করেছে।"

"ওমা সেকি গো! মাঠাক্রণ গেলেন না ভূমিও যাবে না, লোকে বলবে কি ? তা ভূমিই এখন হলে বাড়ির গিলি ভূমি 'লোক-লৌকতা না রাখলে, চলবে কেন ?"

শিবানী ত্বনিংপদে উঠিয়া তাড়াতাড়ি বলিল "আছে। আমি যাচ্চি পুমি বাও। তাহার চোও ছইটা ঈবং উজ্জল হইয়া উঠিল।" সে এবাড়ির গৃহিণী! কেমন করিয়া? কেহ কি তাহাকে সে অধিকার দিতে ডাকিয়া আনিয়াছিল? এ অধিকার তাহাকে বে দিতে পারিত সে ত তাহাকে দূরেই ফেলিয়া রাবিয়াছিল! সে এবাড়ির কে?

ভার হইতে না হইতে শিবানী আর
থাকিতে না পারিরা শান্তির গৃহবারে আসিয়া
দাঁড়াইল, শিবানীকে দেখিরা শান্তি তাহার
গ্রীর শহটাবস্থা হইতে মুক্তি পাইয়া
বেন বাঁচিল, তাড়াতাড়ি কাছে আসিয়া
সাহলালে বলিয়া উঠিল "কে দিলি ৷ এলো
ভাই আমরা এই তোমার কাছেই যাচ্ছিলুম ৷"
আসনগ্রহণ করিয়া লিবানী বলিল "অম্টা

স্মতালতেই পালিরে এসেছে, কিছুতেই ওকে স্মতালতেই গালিরে এসেছে, কিছুতেই ওকে সানাতে পরবদনা ব্যুব্দ দেবাস্থের থেরা
দালানে বিসিরা দালা গাঁথিতেছিল। শান্তির
নিপুণ হল্ডে ইহারি যথে ছইগাছা গোড়ে
কৈয়ারি হইরা গিরাছে, কিন্ত শিবানী এপর্যান্ত
"একগাছি ভিন্ন গাঁথিরা উঠিতে পারে নাই।
তথনো দেবাস্থ্যে লোক সমাগ্য হর নাই।
দেবস্থক আন্ধাণ্ডর পূজার আরোজন করিরা
দিতেছিল, আর একজন বিধবা আন্থার।
অদ্রে বিসরা নৈবেল্ড প্রন্ত করিতেছিলেন।

মনের উপরকার বেদনার ভারটা অরে অরে কোন সমরে বে নামিরা গিরাছে ভারা সে জানিতেও পারে নাই। কিছুক্ষণ পরে কার্য্য হইতে চোথ ভূপিরা সে শিবানীর দিকে চাহিল, "ও দিদি! তোমার এখনও সেই বালাটা শেব হরনি ?

শিবানী অপ্রতিক্রতাবে ঈবৎ হাসিব অধান ভাই বড্ড কুঁড়ে, তোর তিন গাছা হয়ে গেণ ? •

শান্তি সমাপ্ত মালাগাছার মুখে এছি বিরা
অবশিষ্ট স্থতাটুকু কাঁচির সাহায্যে কাটিরা
ফেলিরা ভাষা অন্ত মালাওলির পার্যে তাত্রপাত্রে সাজাইরা রাখিতে রাখিতে কহিল,
"কিন্ত দেরি হইলে কি হর, আমার মালার
চেরে তোমার গাঁথনি অনেক পরিকার হরেছে।
তুমি বিনা স্থতার মালা গাঁথতে জানো ?"

ই চের মুথে পুষ্প প্রবেশ করাইরা । গু^{নইনিকে} চোধ রাথিরা শিবানী উত্তর করিল ''কিস্ক বড্ড দেরি হর।"

্তা হইনই ৰা, এসো রাধাকুকের অন্ত ড্জনে চুগাছি কুক্কলির মালা গাঁথি, আহা গোদিন এদি গেঁথে দিতুম, কেমন স্কর দেখাতো । সামার বাজবাজেধরীর ক্রম পদ্মপাপড়ি দিয়ে একগাছি নৃতন রক্ষ করে মালা গাঁথতে হবে, এই বড় লাল গোলাপটি ভার মধ্যে দিবার জন্ত থাক।"

শিবানী কহিল "পলফুল কোৰার পাৰি ?"
শাস্তি থিল থিল করিয়া হাসিয়া উঠিল
"তুমি বৃথি কিছুই দেখোনা! থিড়কির পুর্বুরে
উত্তর দিকটার অনেক পল কুটে আছে
দাঁড়োও মালাগাছটা শেষ করে তুলে
আনা যাবে।"

"ওমা এরি মধ্যে ভোর প্রায় অর্দ্ধেকটা হরে এলো বে! শাস্তি আমি ভাই বড় অকর্মা! আমার ভূই একটু কাজের লোক করেনে না ভাই।"

তাই তো! আমি বেন বজ্ঞই কৰা। প্ৰান্ধ বলতেন আমার কাজ তাড়াতাড়ির জন্ত বেশ পরিকার হর না, কিছ তোমার সকল কাজই আমার চেরে কেমন পরিকার।" "ভারী পরিকার, আমি আনিই বা কি প্রকাল রাত্রে আমার দৈ বইধানা শেষ হরে গেছে, আর একধানা কিছু দিস্, রাত্রেতো সব দিন ঘুম হর না।" শাস্তি বলিরা উঠিল "এর মধ্যে শেষ হরে গাছে পূ ভবে নাকি তুমি ভাল পছতে জান না? জাছো 'জনাধবদ্ব,' তোমার কেমন লাগলো বলো?

• निवानी जेव९ वार्थित निवास स्कृतिन "तम नागतना माखि। कित्रगमाम, तक इःथी, इःथीत मत्न इःरथंत्र कथांहे त्वाम नार्ग। किख म्बिंग स्वन कि तक्ष संभित्रस्थ, छान त्वासा योजना।

"শেষটাতে ছিন্দু গৃহত্বের জানিবার উপযোগী অনেক ভাল কথা আছে। কর্ত্তবা-নিষ্ঠা ও অদেশহিতৈফিতার মধ্যে আমাদের সংসার কৈবন করে গঠিত হতে পারে ব বইখানি ভারি একথানি ক্ষর চিত্র।" এবনি করিরা ক্লথের বে ভারি মেবথানা শান্তির অমান পুশকোরকের মত ক্ত বুক খানাকে ঢাকিরা রাখিরাছিল, সেথানাকে দ্রে সরাইরা দিরা আনন্দের রিও আলোটুকু ভাহার ভরুণ জ্বরপ্রাত্তে ছড়াইরা পড়িল।

মালা গাঁথা হইলে শান্তি পদ্ম ও শিবানী
টগর ফুল তুলিতে গৈল। কিছ টগরগুলা
লইরাই শিবানী ফিরিরা আসিতে পারিল
না। কারণ পঞ্চর্থী অবাগুলা বিবাহের
কনের বতন বেঁ লাল চেলিতে মুখ
ঢাকিরা বসিরা আছে, গুগুলি তুলিরা
বিধি প্রামা বারের কালো পা হুটিতে
আঞ্লি প্রধান করা বার, তাহা হইলেই
ভাহাদের পূপা নীবনটা সকল হইরা বার!

শান্তি প্ৰকরিষ্টতে পদ্ম তুলিতে গিরা সর্প বংশিতের ভার সংগা বিবর্ণমূখে বসিরা পড়িল, বসেই সৃষ্টর্ভে সমর্ভ পৃথিবীটা যেন তাহার চক্ষের সন্মুখে অপূর্ক তালে নৃত্য করিয়া উঠিল।

শিবানী কিরিরা আসিরা দৈবিল একটা বাভাবীলেবুর গাছে পৃঠ রক্ষা করিরা চুপ করিরা শাভি বাড়াইরা আছে কুল ভূলিবার কোন চেঠা বা উৎসাহই নাই। সে ক্ষাৰ

বিশ্বিত ভাবে অঞ্চন্ত ইংবা সামিরা বিজ্ঞানা করিল ফুল ভুল্ভে গেলিনা, বে ? ভরি পর তাহার বিবর্ণ ঝুবের দিকে ভাকাইরাই ,সভগ্রে क्रीवेन "कि स्टब्स् क्नक्षना स्कृतिका वित्रा मध्यद ভাহাকে ছই হাত দিয়া বুকে টানিয়া লইখ "नासि नासि कि इरना ?" "विनि" वनिमा কুত্র শিওর মত ব্যাকুলভাবে শান্তি ভাহার बुरकत मरना मुख नुकारेन, छारात्र काराधत कन चात्र मुकारमा त्रश्मिमा। भिरामी किছू मा वृतिराज हेश ता वृतिन त्यम कतिवाहे हाक, ৰাণিকা শান্তি মনে কোন শুক্লতর আঘাত পাইরাছে, আর পে আঘাতের কারণ হরতো সে নিজেই। কাতর হইরা হুই হতে ভাহার **गूर्थाना जूनिया धतिया किळा**णा कतिन "रकन কাঁগছিল বোল !" অঞ্চলিক মুখধানা লুকা-ইয়া কেলিবার চেষ্টা করিয়া সে হাসিয়া विन "कांप्रिन पिपि, धारा वाजि वाहे"। "भागा গাঁথবিনি শাভি ভোর রাজরাজেখরীকে মানা পরাবিনা 📍 বৃষ্টির পরেই গাছপালার উপরে ব্ৰবিদ্বশ্বি যেমন কিক্মিক করিয়া অলিয়া উঠে অমনিতর একটা করণ হাসোর আভাবে শান্তির অঞ্চিহ্নিত গওমর ঈরৎ রঞ্জিত হইরা डेडिन, त्न कहिन "ना पिषि।"

পরিচয় ।

বে সূহর্ষে ভোষা সাথে হ'ল পরিচয় ক্লিয়ুগরিচিঞ্চলে ছাইলে ক্ষয় ; বৰ্ম ন্তন্বেশে বাড়াইলে আদি চিন্নপুরাজন বৃদ্ধি উটিল বিভাদি, ৮ শিক্ষাকন বাদ, বি,এ



শাসুত মণিতাত পাঞ্চ গাসাবে

উদীয়মান লেখক।

(<)

শীযুক্ত মণিলাল গলোপাধ্যায়।

बह्नकारमञ्ज मरबारे छन्त्रंगति व्यत्नक्षम अह আকাশ করিয়া মণিবাবু সাহিত্যিকগণের বিশায় উত্তেক করিয়াছেক। বলা বাহলা, দেগুলি 'ভেজান' নর। লাগবৈই ভাহার "ভুতুড়ে কাও" বলসাহিত্যে একটা ঢাঞ্চা উপস্থিত করিরাছিল। ভাহাতে আর-কিছু ধাকুক স্বার ন।ই থাকুক, একটা নুতন তত্ত্বের चालाहनात अध्यानि त्वन मुब्दबाहक रहेग्राहित।

তারপর, তাঁহার "মাপানী কার্স"। বাল ক্বালিকা -গণের অন্ত উদিষ্ট হইলেও, এই গ্রন্থ রচনায় তিনি বথেষ্ট কৃতিত্বের পরিচয় দিয়াছেন। সাহিত্যে হিসাবে 'লাণানী ফাতুদের' একটা মূল্য আছে। লাণানের विषय आंगबा अल्लाक्ट किছू-ना-किছू आनित्वअ, লাপানী সাহিত্যের বিষয় আবরা অলই লানি। লাপানী সাহিত্যে তাহাদের জাতীয় বিশেবছের চিক্তলি नक्किए इस । स्नानान क्लान्त्र देननर्गिक थावाव, द्योक ধর্ম জাপানী-চরিত্রে একটা অতি সৃক্ষ, অপাষ্ট ছারাপাত করিয়াছে। সে ছারাটা "লগৎ নবর" ও नद्रकाटक विचान।

ৰাণানী সাহিতো, ৰাণানী শিলে একটা অস্পষ্টতা আছে, অথচ তাহার অর্থ, তাহার মোর সহজে জনর व्यक्तित्र क्रिया काल :- बाब अवनि अक्षा लावरे তাহার বৈচিত্রা সম্পাধন করিয়াছে। নরওরের कारित्रम, रेननवसूत्र সমুদ্রভীরবাসীগণের পৌরাণিক গলগুলি 🖈 saga) বেমন একটা রহস্ত ছায়াচ্ছন • বিশেবত এই বে, এছগুলির মুক্তন-পরিপাটি, নয়নাভি-তেমনি অগ্নাৎপাত ভূমিকম্প সংযুক্ত জাপানী গুল ভত্তিতে একটা অস্ত অব্যক্তভাব পরিফুট।

ৰণিবাবুনেই হকুৰার ভাবটকে বরিয়া বাংলা ভাবার ष्ट्रांशत चाष्टांव निवादंवत । काशत बार्गानी कायून প্ৰচিত্ৰে সৌৰ্ব্যপানী: সরস বাক্তলিতে সনোরম अन् ग्रेंडक काराव शार्डकशाद्विकांत्रलंब क्राव्याही।

ভারপর, তাঁহার "ভারতীয় বিদ্ববী" বাংলা সাহিতো अक न्छन बिनित्र। धेर हिनाद्व न्छन दि अक्रभ मक्नन (ठड़े। देशहे थथम। ध विवस्त छिनि वर्षा পটুতা, অসুসন্ধিৎদা, এবং গ্ৰেষণার পরিচয় দিয়াছেন। বৈদিককাল হইতে গতশভাকী পৰ্যন্ত ইতিহাস আলো-চনা করিয়া ভাষা হইতে ভারতমহিলার জ্ঞানগরিমার ইতিহাস সকলন করা বড় কম কুভিখের পরিচারক नटर। 'जीमिका' व न्डन याणात नटर, छारा এ গ্রন্থে সহজেই প্রতিপাদন হয়।

তারপর,তাঁহার প্রকাশিত রচনাবলীর মধ্যে সর্কো-ত্তম পুত্তক তাহার "কলকখা"। বলসাহিত্যে ইহা मम्पूर्ग नुखन। कल्लकथात गलश्चित जांगानीत्मत चि সুগাও কবিষময় ভাষেত্র সহিত বাঙালীকে খনিষ্ঠভাষে এই এখন পরিচিত করিয়া দিল। ইহার সুকুমার সৌৰ্যাটুকু এত মধুর তাহাতে এমূন এক্টা কোমলতা আছে যে ভাহাকে কেবলি কদৰ দিয়া উপ-ভোগ করিতে হয়। তাঁহার "কল্পণা", বঙ্গাহিত্যে চিয়কাল আদৃত হইবে, একথা অসংহাতে বলিভে পারি। ভাঁহার 'বৈরাগ্য' প্রাণের রঙ্' প্রভৃতি গ**র** গুলি অস্পইতার ছায়াপাতে কত করুণ।

সম্প্ৰতি মণিবাবু 'কাদঘরী' ও 'বেতাল গুণৰিংশভিম' সচিত্র সংস্করণ প্রকাশ করিয়া অক্তত্রিম সাহিত্যাসুরাগের পরিচয় দিরাছেন। তাঁহার প্রকাশিত প্রস্তুতির একটা त्राय कांशव दें। वाहे विक्रिया । এ हिमारवं जिनि अकठे। कछाव (बाठन कविशाहन।

আশাক্রি মণিবাবু চির্দিন ুরান্ত সাহিত্যসেবা ৰারা বাতৃভাবাকে খ্রীনম্পারা করিবেন। ভাষার , (मधनी धनत रहेक।

পাণিনি-প্রচার। (कांडमের অছর্ডি)

একমাত্র বিষ্ণু বেমন একাকী সমগ্র বিশ্ব-क्यांक वाशिश द्रश्यिक. বৰ্ণমালার দি-চন্দ্রারিংশটি বর্ণপ্র তেমনি সমগ্র বাতার শব্দ শাল্ল ব্যাপিয়া আছে। এই বর্ণগুলিই বাবতীয় শব্দের বাঞ্ক। স্নতহাং শব্দ-শান্তের হেরতা-উপাদেরতা এই বর্ণ-মালা সালানোর উপর একার নির্ভর করিতেছে। তাই, সর্বাগ্রে পাৰিনি বৰ্ণমালা সাজাইয়াছেন। আশ্চর্য্যের বিষয় এই বে, বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চ উপাধিধারী क्टेनक चार्युनिक श्वकात शांगिनित धरे वर्ग-মালা সাজানকে ক্রজিমতা দোষপূর্ণ বলিয়া निर्फम कतिया, जिनि निर्फरे गश्कर्व আগরনে প্রবৃত্ত হইরাছেন। উচ্চ-শিক্ষিত लारकबरे विम अक्षण दक्षमून कू-वाद्रणा थारक, ভবে মৰিকিভেরা দূরেই থাকুক! পকাৰরে व्यवान चारह त्, वर्गानात अहे क्रमी गानिन সাকাৎ মহাদেবের নিকট হইতে লাভ করিরা-दिराम, एक्क हे डेशिनगरक मार्ट्यंत एख वल। जाबालब विट्यम्माब, मार्ट्सराकित्र নাথে কোনও বাকিবণের বিশ্বমানতা স্বীকার क्तिएं ब्हेरन, डेक मार्चन्र-श्वश्रानिकहे আপাতত: মাহেশ-বাকিরণ বলা উচিত। · वर्गमानात्र उक्तम यथा, कहे छे(१)। स » (क्) এ ७ (६)। थे छे (ह)। इस वस (ह)। न (4.)। क्य स्वन (म्)। सक (क्)। यक्ष(य)। व्यवश्रुष्ठत (म्)। यक्ष र्वं हर्षे छ (व्)। क न (व्)। भव म (व्)। इ (व्)। क्विंगे आलाहना , क्तिल तथा बाहेरव दव, अथरम मून च-मिळ

चत्र, भरत मिल-चत्र, भरत मिल ७१-चत्र, পরে সন্ধিত্ত বৃদ্ধি-শ্বর, পরে অর্দ্ধ-শ্বর, পরে ৰগীৰ পঞ্চম বৰ্ণ, পৰে চতুৰ্থ বৰ্ণ, পৰে ভূতীৰ পরে বিভীয়, পরে প্রথম, ও পর্থে উন্মবর্ণ সাজান রহিয়াছে, ওছ তাহাও নহে; পূর্বাপর বৰ্ণগুলি এমন কৌশলে সন্নিবেশিত হইয়াছে. (व, वतरे रुडेक आंत्र वाक्षनरे रुडेक,—वर्ग-नथी (ছाउँ इंडेक, जात वज्रे इंडेक, এक-জাতীয় বর্ণ ই এক স্থানে সন্নিবিট্ট রহিয়াছে। হাম-ধ্রুর বর্ণ-মান্তে প্রকৃতি-দেবী বেমন সম্বাডীর সমস্ত বর্ণগুলিকে একই স্থানে রাধিয়াছেন, এই অকর-নালাতেও তজ্ঞপ সন্ধাতীর-বর্ণ একই স্থানে সুসন্ধিত রহিরাছে। উপৰ্যক্ত চভুদিশটা স্ত্ৰের হলম-চিহুবুক্ত অন্তা वाश्रन-वर्षश्रम अञ्चवक-माख,—উश्रात शोलिक বর্ণ নতে,--সম্রাতীয়-বর্ণগুলির নামকরণের मोक्यार्थ डेशानिशत्क ऋत्व स्नान मिश्रा करेवारक् बाख। नाबकत्रावत्र श्रुक्तत्र माद्र उ ब्रहिबाट्ड,-वर्था, व्य हटेट व्यावस्त्र कंत्रिबा, न नवां उत्य करत्रकी वर्ग चार्छ, छांशांमिश्तर সাধারণ নাম অণ্। ('আদিরভ্যেন সহেতা')। এই क्रम, व्यष्ट्र विताल मकन चत्रक वृक्षाहर्व, क्रम् विशास वर्षत्र भक्षम-वर्गक्रिकारक, स्व 'बिनात हरूर्थ-वर्शकीतक, अन ৰলিলে তৃতীয় বৰ্ণভলিকে, ধরু বলিলে **७ व्यथमदर्ग श्रीतरक, भन्न मनितन भवनत्**क ध्वर इन विगाम नम्य असन वर्गासु, ध्वरः वान बनिया जम्मम वर्गनामाक वृत्राहित्। चछ-काछीय विनम्न इकात अकवात शुली

व्याः मन्-काफीत बिक्कां, वक्तांत शरत गृशीक इरेबा**ट्ड** का खाद्यांकनैयमंखः, अन्यक ग-कातरक छ स्रेगांत खर्ग कता रहेतारक । कृत ক্ষা কোনও প্রকৃত বর্ণের সবে তৎপরবর্তী ৰৈ কোন অকারাদি অমুবন্ধ-বর্ণকে বোগ করিয়া, এক এক জাতীয় বর্ণের এক একটা ন্থী গাখা হইরাছে। বেমন এচু নামক নথীতে এ ও ঐ ও বর্ণভাল আছে, এও নামক নথীতে একার-ওকার আছে। मकन भूगवर्णन महिल्हे उरल्पत्रवर्जी এक क्रकी अञ्चरक श्यांग क्रिया, अगःशा वर्ग-नशीत কিন্তু শব্দ-শান্তে আবিষ্কার করা বার বটে এতভালো নথীর কোন্ও প্রয়োজন নাই। मज-भारत 88ी नबीरे थात्रायनीय, जारे আর সকলগুলিকে ভাগি করা হইরাছে। এইরপ নথী-নির্শ্বাধ-প্রধানীর খঞ্চ নাম সন্দংশ ক্রার। উপর্যুপরি^{*} সজ্জী-কৃত পদাপুত্রর ছই-প্রান্তের ছইটা পদ্মপত্রের মধ্য-দাঁড়াশীৰারা খুত হইলে. ষেমন সব পত্ৰগুলিই वर्गनथी-निर्माण-প্ৰশালী ভ ভদ্ৰপ वटि । কোথায়. উক্ত প্রণালীকে অ-পৌরুষেয়ই বলিতে প্রবৃত্তি হয়, আর **°ক্রোথার আমাদে**র নৃতন-স্ত্রকার উशांक "कृष्विय" बनिएड ७ कृष्ठि राम्न नारे। শাণিনি ব্যাকরণ বহুকেত্রের অনেকেরই এইরূপ শ্রমবিলাস ! ভবে এইমাত্র বলা ঘাইভে পারে বে পাণিনি-বাকরণধারা তিন হাজার বংসল † পূৰ্বে রচিত হইরাছিল বলিয়া, উহাতে বর্ত্তমানে অপ্রচলিত অনেক শব্দ পাওয়া যায় ‡ আর উহাতে বৈদিক ও স্বর-স্ত্র শ্রুত রহিয়াছে। धक्छके वक्रामरण शांगिनित्र हन नाहे। (व 'কলাপ' ও 'মুগ্ধবোধে'র গুণে, বঙ্গদেশীয় বার আনা পণ্ডিত মুগ্ধ হইরা রহিরাছে, তং সম্বন্ধেও এন্থলে ২৷:টা কথা বলা অপ্রাসন্ধিক হইবে না। অষ্টাধ্যারীতে 'কলাপিন'-শব্দের(১) প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া যায় বটে, তাহা ৰশিষা কলাপ-ব্যাকরণ অষ্টাধ্যায়ীর পূর্কাবর্তী এরপ সিদ্ধান্ত করা যার না। প্রথমতঃ কলাপ প্রথমাবস্থাতে বৈদিক ও শ্বর প্রক্রিরা ছিলনা। ওনিরাছি, মহামহোপাধ্যার পুৰ্যাপাদ ৬ চন্দ্ৰভাৱ তকালকার মহাশয়, কলাপের এই অভাব মোচন করিয়াছেন। যে ব্যাকরণে বেদ ও স্বরপ্রক্রিয়া নাই, দেই বেদ-বিস্থাসুশীলন-কাল स्पृतवर्की, देशहे अस्मान हर्ते। विजीविकः, ক্লাপ-ব্যাকরণে পঞ্চাক্তারের যেরপ প্রভাব ভাহাতে বোধ হয় নুৱ্য-ভাষের রাজছের পূর্বে উহার প্রাণ-প্রতিষ্ঠা হয় নাই। , যাহা হউক, क्वार्लित खन्न करत्रकी निक्य गःछा • আছে। তন্তির, কলাপের অনেক সংজ্ঞাই

হ কারে। ছিরু উপাল্ডোহরম্, আটি হল্যুপি বাহতা। অর্হেণাহর্কদ্ইত্যার, বরং সিক্ষণেতিবিয়তি।

[্]ৰ বেৰন ভোজনাৰ্থে 'প্ৰভাৰসাৰ' ১।৪ ২২, উৎসাহাৰ্থে 'ক্ৰমণ' ৩।১)১৪, নিশাৰ্থে 'ক্ৰেণ' ১।১)২৬, ত্ৰাহনাৰ্থে 'প্ৰ' ৪।৩।১২২, পৌন:প্ভাৰ্থে (ও অভিনন্নাৰ্থে) সম্ভিহার, ক্ৰয় অৰ্থে 'অধিকরণ' নেনাৰ্থে 'ধ্ৰিবর' প্ৰশংসাৰ্থে 'প্ৰা' ডক্ষ্যাৰ্থে ভক্ষাই উচ্চাহি ।

^{/ *(}১) ব্যোহৰৰ্ণকাং 'নাৰী' (২) ৰাজু-বিভক্তি-বৰ্জন্ অৰ্থণনিজন্' (০) পঞ্চালোঁ 'ঘুট' (৪) 'ধুট' ৱাঞ্চন্ অনভয়াংস্থনাসিক্ষ্ (এবাঁল বৰ্ণ)

गानिम-मण्ड ७ वर्ष रहि। মনীবিগণ 'मुष्टवार' वाकित्र भटकत हुई त्रक्त कर्ष कतियाँ परिकत। अपम क्लांग ७ मुक्रदांव व वाकित्रवाता मृत्यत्र रवांग जरम ভাহাকে **म्यद**वाश ৰিতীয়, কে ব্যাক্ষণের 'বোধ' (অর্থাৎ জান) বড়ই মুখ অর্থাৎ মনোহর তাহাকেও মুগ্ ह्वीय करह। त्यथा वांडेक्, ध नाम कछमूत्र गार्थक। व्यहे वाकित्रशंत विल्विष वहे त्व, वस्त्रणारे देशंत्र मध्याश्रीण এकाकत ७ ন পাণিনীর সংস্কার অংশ নির্দ্মিত। বেষন ইছাতে সবর্ণকে র্, গুণকে গু,ু বৃদ্ধিকে ব্রি, উপদর্গকে গি, ধাড়ুকে ধু, বিভক্তিকে জি. এককে कं, बिरक ब, बहरक रव, भगरक प. निभाजरक नि; প্রতারকে তা, অকুস্বারকে মু, বিদর্গকে नि, व्यथमारक औ, विजोबारक बी, जुजीबारक बी, हडूबींटक हो, शक्योटक नी, वहीटल दी, गर्धमीरक थी, ममुद्धिरक दि, विकरक इ. সর্বনামকে প্রে, অব্যরকে ব্যু, সংযুক্ত বর্ণকে उ, नमीरक मी, छद्भिक्टरक छ, आञ्चरनशमरक म, भरदेचभन्दक भ, निकटक (नाम) नि, नाम-बाकूरक नि-धू, बन्धरक ह, वहबोहिरक ह, कर्मवातराक व, जरभूकवाक व, विश्वाक भ, ध्वरः अवस्त्रीভावरक व वना इटेबारह । এই-ব্ৰুপে পাণিনীর-শব্দ-শাল্লে ব্যবহাত শ্বতঃসংক্ষিপ্ত নাম-ভলিকে আরও সংক্ষিপ্ত করিরা, মুগ্ধবোধ चकीय एखश्रीतिक मुश्यु कविवाद विशक्त ক্ষবিবা। করিয়া দিরাছেন। কিন্তু, সাধারণের নিকটে এই প্রভাগর রুধ টরে টকার মত নির-र्थन कान रहेश थाटन। धनः धरेक्रन मःकात्र হড়া-ছড়িতে, পণ্ডিত প্রেষ্ঠ বোপদেব মুগ্ধবোধ -ব্যাকরণকৈ মুধ্বোধ - করিতে পারিরাছেন

किना, जारा मत्यर । वतः मृद्धावार व्यापकात णानिनि-वाकितगरे मत्नारत अवर मूक्यानत्तव त्वांधवनक । अवर हेश वना बाहरिक शास्त्र (व वर्जमान वाकित्रण दानित्र मध्या भागिनिह नर्साराका थाठीन, विकानगूर्व ७ महस्र । विश्वे भववर्षी बाक्बन-कात-भंग बाक्बन-भावत्कः আরও সরল করিতে গিরা, অকুটিল পাণিনীর भारतत याका जानन जानन निर्मुण ह्काहेँगा, रेवळानिक भागिनीय माजरक है जिक्सा किन्ता ছেন। টাকার টাকা, ভস্ত টাকা লেখকগণের छ कथारे नारे। जारात्व, वाशात्रान्त्र मत्न একটা অন্ধ বিশাস জন্মিয়াছে বে; অন্তান্ত ব্যাকরণই বধন এড্ কঠিন, তখন অপরিচিত 🖟 পাণিনি-ঝাকরণ নিশ্চয়ই তভোধিক কঠিন। षाधूनिक वाकित्रम श्रीमार्छ देविषक छ चत्र शक्तित्रां धात्रहे मृहे हत्र ना। উহাদের পাঠ-ঘারা বাঙ্গালীদিগকে একদিকে বেদ-বহিত্তি অভাদিকে সংস্কৃতের বে খুড়ন্ত প্রগাড় উচ্চারণ হইতে সংয়ত ভাহা ভাষাকে अनृत्व निकिश्व कतिबाह, धवः পশ্চিমাঞ্লের সংস্কৃতভাষা আধুনিক ব্যাকরণগুলি বঙ্গাঞ্লের সংস্কৃত-व्यमहोद्रशेन ও विष ভাষীদের ভাষাুর টবরপা বহিভূ'ত। समाहेशाइ। (कर (कर বলিয়া পাকেন, "এখন বৃদ্ধ বয়সে উদাত, অমুদান্ত স্বরিত স্বরের উচ্চারণ অগ্রে নিফ্লে শিখিয়া, পরে ছাত্রদিগকে শিকা দিব, ভাহা ष्माइ, बाहा वनिव, छाहाहै 'छ

किन्द्र विष (कर्

नांवेक श्रीनात्क वांकानी-दिवादन केळात्रन कृत्तन,

उद्ध कि डेश आतो देशाओं नांदे गड़ा

हरेरर १ खाता अधनिखरे रखेक, आहे

স্কেপিররের

অপ্রচলিভই হউক •বে ভাবার বে-উচ্চারণ, তাহাশঠিক রাখিতেই হইবৈ।

্ৰতাবহাৰ, ক্লাপি-সমগ্ৰ-ভারত ব্যাপিয়া প্রচলিত হইবার বিদ্যাত্রও একই ভাষা আশা থাকিলে পাণিনি-প্রচার ু এক মাত্র সংস্কৃতভাষা, আৰ্খক। वा मःइंड मृनक हिन्ति ৰাৱাই সে আশা वां वक्र छात्रां श्राप्तन সফল হইতে পারে; তেমন, কেবল পাণিনির जहाशासी बातारे সমগ্র ভারতের একই বাকেরণ প্রচলিত হইবার আশা ফলবতী **इ**हेवांक्र अख्य । এবং যাঁহারা व्यवाद्य গা ঢাनিয়া না क्या, সিজাস্তকৌমূলী ও व्यद्रीशात्रीत्र क्रम नित्रत्भक्तात्व পर्यादनाहना করিয়াছেন, তাঁহারা মুক্তকঠেই স্বীকার করিবেন বে, অধ্যাপক ও ছাত্রে যতদ্র তকাৎ অভীধ্যায়ী ও সিদ্ধান্ত-কৌমুদীতেও ততত্বে তফাং। অষ্টাধ্যায়ী বরঞ শিক্ষকের সাহায্য ব্যতিরেকে পড়িতে পারা যার, কিন্তু, নিদ্ধা**ন্ত**কৌমুদী পড়িতে শিক্ষকের সাহা**র্**য অত্যা বখক। স্তরাং বঙ্গদেশে রাশীকৃত ব্যাকরণ-धर्षत मृगोकृठ, धरे পानिन-वाक्तरावत ব্ল-প্রচার হওয়া অতাত বাহনীয় বনিয়া (वाथ क्य । বাঁহাদের মনে অন্ধ-বিশ্বাস °এই যে, পাণিনি-ব্যাকরণ অন্তান্ত ব্যাকরণ ৵অপেকা কঠিন, তাঁহারা একবার স্থুল সূল বাপক-স্ত্রপ্তলি পড়িলেই তাঁহাদের চকু-कर्णत्र विवान चूहित्व, आत्र, वथन ু বিভাগমের উর্দ্ধতন পরীক্ষাতেই সিদ্ধান্তকৌমুদী পাঠ্যস্কপ নির্বাচিত হইয়াছে. ছাঁত্রদিগকে স্থল-কলেকের ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীতে বংসুর বৎসর ভিন্ন ভিন্ন ব্যাকরণ পড়িতে

ও মুধস্থ করিতে না দিরা, সর্বাত্ত একই পাণিনি-ব্যাকরণ পাঠ্য করা উচিত।

একটা একটা করিরা, প্রত্যেকটা প্রচলিত শব্দকে ব্যাকরণ স্ত্রেম্বারা সাধিরা দেওরা কাত্যারন-প্রমূপ পরবর্ত্তী গাণিনি ব্যাকরণের উদ্দেশ্য। থাকিতে পারে: প্রসিদ্ধি

আছে, তজ্জ্মই কাজ্যারন পাণিনির ১৫০০ স্ত্ৰের আলম্বনে আরো ৪০০০ বার্ত্তিক সূত্র রচনা করিয়াছেন। কিন্তু, মহর্ষি পাণিনির त उत्मध बार्फा किन ना। करत्रकीशाक ব্যাপক-স্ত্রবারা ভূত-ভবিবাৎ-বর্তমান সমস্ত বাষ্ম শান্তের আবিষ্ঠাৰ বিবৃত করাই তাঁহার প্রধান উদ্দেশ্ত ছিল। পাঠক! ওই দেখ, অনস্ত শন্ত-শাস্ত্ৰ-বারিধি-বক্ষে একথানি অভ্যাচ গিরিশৃঙ্গে, অষ্টাধারীরূপ একথাকি ঝাঁকি-জান্ হত্তে করিয়া, পাণিনিমূনি সমগ্র সমুদ্র আচ্চাদন করিয়া সেই জাল নিকিপ্ত করিয়াছেন। তাহাতে সুমগ্র-সাগর একজালে चाक्हामिछ इहेन वर्षे। किंख, वर् वर्ष बान-हिज-बाता क्ज क्ज, व्यथठ अद्यासनीय, भन्गोन श्रीन वाहित कहेत्रा ভাল ভাল, देशक हरेगा আৰু কৌশলী তংক্ষণাৎ এক একটা করিয়া নিম্ন অভিদেশ निरवधानि एखवाबा मिहे काँ क वक्क कतिराना। ञ्च बता याहेट भारत ख, भागिनीक শব্দ-শাস্ত্রের এইরূপ বিজ্ঞান-প্রাণভার প্রতি লক্ষ্য না করিয়া, এবং স্থীক-ভরে-ভীত হইরাই কাত্যার্ন-প্রমুধ বৈরাকরণ-গণ নিশুরোজনে কতকগুলি বার্তিকাদিপুত্রের অবতারণা করিরাছেন। বে-সমুদর-শব্দ রক্ষা ক্রিবার মানসে, ইংরা এসক্ল

করিরাছেন, এতটুকু অপুণাবনা করিলে বেধা বাইবে বে, সে সমুদ্রর স্বরং পাণিনি স্তেবারাই রক্তিত হইরা রহিরাছে। সন্দেহ নিবারণের ক্ষম, পাণিনি নিকেই বছল'-শব্দের পুনঃ পুনঃ প্রায়ে করিরাছেন। প্রাচীনেরাও বলিরাছেন;—

श्व अवहि छৎनर्काः बम्बुरको वक्तवार्कित्न । श्वाः बानि विद्यार्थानाः, नर्काः श्रःव श्राविष्ठित् ॥ व्यवार,, वृक्तिरे वन, स्रावः वार्किकरे वन,

श्रुत्वरे উरायत वर्ष निविष्ठ त्रश्तिहाइ: -শুত্রই সকল অর্থের মূল, সকলই স্থরে প্রতিষ্ঠিত অধিকৰ, অভাত বাাকরণে रुदेशांटक । व नमुमन कथा ग्रैकारड উन्निथिड स्टेनाइ, शांगिन त्र प्रयुक्तस्य बृत्यहे दान विवाहन ; ডজ্জাই পাৰিনীয় হুত্ৰ-সংখ্যা এত অধিক। ৰে পাণিনি ব্যাকরণ একটা মহা-প্রাণ কামধেয়, বে পাণিনি ব্যাকরণের হত্ত-ভরিবারা **७७:७विश्व€-वर्त्त**यान नमक भक्त जनाशात्र र्वाहन करा बाहरड शास, तारे कवस की वस विकान-मठा विकान-मच्छ चहाथाही इहेट চাত হইরা আক্ষাল বঙ্গলে কেবল কুল-करनक ७८हान-भांका बाकदन-वानिएक शांविक ! বে-ভাষা ও -বে-ব্যাকরণ এতদুর সহজ এবং रांश मन्नक्छन-क्रांग वृवादेश विवाद सर्छ छ, মুশ্ববোধ-কলাপ-সারস্বভ-স্থপন্ন-প্রভৃতি বিশ ব্যাকরণ আবিষ্ণু হইল টাকার विका एक विकास व्यवज्ञातमा हरेगा अने ভাষার ও সেই ব্যাকরণের প্রকৃষ অভাণি খুচিল না কেন'? আ্মানের মতে, সূত্র न्छन कांच्यन क्छांबारे रेशव बर्डा शारी : निकात निका एक निका त्मवक्त्रन्दकरे देशव देवनिवर विष्ठ स्टेटन। छीहाबाहे अपन

কিছু করিবাছেন বাহানত সরল-পাণিনিও পরল-রূপে প্রতীবনান হইডেছে। নীতৃবা সেই অবোধাা, তবে সংসার এত হাকাকার্মর কেন ? নিশ্চরই পণ্ডিত্যান্ত ব্যাকরণ কর্জারী

নেই রাব, সেই
অবোধ্যা ভথাপি
সংসার হাহাকারবর
কেন গ

আপন-আপন ব্যাকরণে আপন-আপন ব্যাকরণে ব্যাকরণ ব্য

नीठ-मरवत्र शुक्रक निविद्या, এই नर्सनामी घठे। देशास्त्र । বিভাগাগর মহশিবের উপক্র-मिका ७ वाक्त्रन-कोम्बोत्र ममूनाई कृत-পাঠা ব্যাক্রণ লিপ্লিবাভি, বর্তমান বুগের বাাকরপকারগণ **बहुम्म** चनिडे-माधन করিডেছেন ও क्षिर्यम मृत्यह माहे। नजूबा बाबारे ७ बाबानतो चकल बाक्तरनव নাৰে এত ভয় হয় না, আর বসদেশে এত ভর হইতেছে কেন ? কারণ সেই-সেই অঞ্লে, **अक्टाबर्शिक्ट भागिन-गाक्त्रवह अक्टि** ब्राक्ष कतिरहरू, छाहा इहेरन, बक्रामान তাঁহারই শাসন প্রবৃত্তিত কওবা থাকিতে কোতোরালের त्राका সহল্ৰ-দ্বশ্বি ক্ৰাড়িয়া, (माराहे ना. (कन १ जाववा जडकात-शारकारहे রাভা থাকিতে जिल्ला, बील-लिबाल महर्ग-কেটেডারালের लाशरे दक्त १ পর হইব কেন ?

কাগলপত্তের জন্নতা নিবছনই হউক, আর পাভিত্যপ্রকাশের জন্তেই হউক, বিশাল-সংস্কৃত-জগতে সন্ধির বড়ই বাড়াবাড়ি ছিল। সৌভাগাক্রমে, আলকাল লোক্টের সেই নেশাটা ছুটিরা বাইতেছে। বাকো বে স্থানটির ক্রত-উচ্চারণ করিতে হর,

बाक्त्रैत्व बर्गा इहेवा পড়ে। ('ভাষার अबित हान क्लाबात ! वर्गवित्रव' नीर्वक व्यवक वारित कि वर्ष ! (न्थ।) चानाक मित्र -এই আদি কারণটীর কথা ভূলিরা গিরা, ধ্য-স্থানে সদ্ধি না করিলেও চলিতে পারে, দে-ছানেওঁ সৃদ্ধি করিরা, বিষম বিজাট घठाहेबा थारकन। आत त्कर त्कर, वांत्का अङ्डभूर्का**ष्ट्रा**नत आविकात कतिवा शारकन ; यथा-

मर्क्क प्रतिष्ठ्ये, अवाम् आहत अन्-उखमम्। ুজ-হাৰ্যাত্তীদ্ অন্-অৰ্থাদ্, অক্ষয়তাচ্চ সৰ্কদা। এই শ্লোকটীকে পড়িক্ক থাকেন যে,— नर्काक्रदायु विरेशव, क्या माह ब्रष्ट्रकम्। व्यहाद्याचा नन्द्रचा, नक्त्रचा क नर्द्रमा ॥?

এছানে, আমরা ডডনংএর গর্টী না বলিয়া পারিলাম না। কোনও ছেলে প্রথম কলিকণভার গালা, রান্তার পার্থবর্তী কোন मिश्रांत अकि <u> সাইন্বোর্ড</u> দেখিয়া, পড়িতে লাগিল "হরেক রক্ষা জিওবা क्रामत्रका त्रशांना फफनर।" ("हरतक क्रकम राष्ट्रि ও वाक्रम्ब कांब-দ্বি ও ভড়বুংএর बाना ७७नः")। এইরূপ 78 1 'সিদ্ধি: সাধ্যে সভাস্

অন্তকে' 'সিদ্ধি সাধ্যে সভামৰা' করিয়া অনৈকেই পাঠ ক্রিয়া থাকেন। কলাপ-ुराखत्री**णेत 'राक्षनम् ज्य-ज**तर शतर दर्गर নরেং' এই স্তাটীয় অকাতে প্রচণ্ডতা এতই व्यक्षिक । किंब छहा मन्त्रुर्व च-नाभिनीय । এরপ-পাঠে হোধ-সৌক্ষাও নাই, আবৃত্তি সৌক্ষাও নাই, ডৰাপি গভাহগডিক ভাবে অনেকেই **আপোরার্জনেও**

मंग्रह ।

দেই ছালেই আপলা আপনি হুই বর্ণের সন্ধি অনেকে, 'আপো জনমুণা চন:'কে 'আপোজন "মুর্খে না বুঝিতে গারে, মুখাচনঃ' করিয়া পড়িরা পণ্ডিতের লাগে थोरकन। अक्रभ, 'मछा-थन्स ।" ঞাভীদ্ধাৎ তপদো'কে 'সতাঞ্চাডী দ্বাত্রপদে' পড়িয়া वादकन। একদিকে লখা-লখা সমাস-বিভাসে, অপর-দিকে এরপ দন্ধিতে, সংস্কৃতভাষা এমন হইশ্ল দাঁড়াইতেছে যে, "মূর্থে না বুলিতে" পারে, পণ্ডিতের লাগে ধন।"

> এইরূপ অস্বাভাবিক শক্ত-ষোজনা ভেদ করাইবার জন্তেই আধুনিক ব্যাকরণ লেথকগণ স্ব-খ-রচিত ব্যাকরণের শ্ল-শাল্লে কোন व्यशाग्र ध्रथय-शान मर्सार्थ সন্ধির অধ্যায় পাইবার উপযুক্ত। স্বিবেশিত ক্রিয়াছেন। সেই স্রোতের বশবর্তী হইরা ভটোঞ্চিও সিদ্ধান্তকৌ মুদীতে সন্ধির স্ত্রগুলিকে পূর্বেই স্থান দিয়াছেন। পাণিনি এই প্রণালীর শিরে পদাঘাত করিয়া অকীয় শব্দ-বিজ্ঞান-অষ্টাধ্যায়ীতে, সন্ধিকে আগম-আদদেশের মধ্যে श्रान विद्याद्या ব্যাকরণের বস্তুত:. मञ्ज्यांकारत विमालहे বিষয় গুলি এক ঠিক্ হয়। তনাধ্যে, কোন্ বিষয়টী অগ্রে, এবং কোন্ বিষয়টা পশ্চাৎ পড়িতে হইবে, তাহা পাঠকদের ভিন্ন ভিন্ন কচির উপরে নির্ভর করিবে। উত্তরবঙ্গে, বে সমুদর টোলের ছাত্র অষ্টাধ্যায়ী পড়িতে আরম্ভ করেন তাঁহারা স্কাত্রে স্প্র-অধ্যারের প্ৰথম-স্ত্ৰ 'যুবোরণাকে' হইতে ভারত করিয়া थात्कत। आवात्, वांदर्ग विकक्ति-शैन भन-প্রবেগ এক-দম নিবিদ্ধ। স্তরাং স্বস্ত ও দিওক প্রকরণই সর্বাবো পঠিত হওর। উচিও। এমতাবহাল, ব্যাকররে শিশুর অবশু-জাতব্য

এত গুলি মনোহর বস্ত থাকিতে, কেবল সন্ধির
প্র লইরা মাথা চুশাঁচুলি করা আনে
রুক্তিযুক্ত নহে। বে ছেলে স্থা-শন্দ কি ভাহা জানে না; উপাত্ত শন্দ কি, ভাহাও জনেনা; ভাহাকে সন্ধিল স্বদ্ধাুপাস্য শন্দী গেলান কতদ্ব শ্রেরঃ ভাহা চিন্তনীর বিষর বটে। ভার উপরে আবার জৈলম্ম আপত্তি প্র চাপাইরা দিলে আরও স্থান্য?

কি কৌশলে, পাণিনি-মুনি হাজার চারি প্ৰাৰায় লৌকিক ও বৈদিক সমগ্ৰ সংস্কৃত-পাহিত্য-জগৎকে সাধিয়া নংক্ত-নাহিত্য তাঁহার কোন रेजिरात च्य-पूत्र। **७**८० मुद्ध इहेब्राहे वा আচীনগণ ৰাৰ্ত্তিক স্ত্ৰগুলিকেও পাণিনি-ক্তের ভালপালা রূপে গণ্য করিয়াছেন, কোন খুণেই বা পাণিনির এক একটা ব্যাপক স্ত্ৰকে পাণিনিসেৰীয়া একএকটা চিস্তা-মণি ৰশিতেও কুটিড হৈৰে না—সে বিষয় আলোচনা করিতে হইলে আমাদিগকে শংশ্বত-সাহিত্যের স্কর্গে উপস্থিত হইতে হয়। সংস্কৃত-সাহিত্যের ইতিহাসে স্তাযুগ নামে একটা যুগ ছিল। সেই সম্বে, সংস্কৃত-পঠন-পাঠন-কারি-গ্রু আজকালকার ছাপান পুস্তক পাইতেন না। मुजाय(इत्र धीरमन मृत्त्रत्र कथा ; ছाञ्चगन्तक मूर्य मृत्यहे সমস্পাল অভাস করিতে হইত; কথনো কৰনো বা ভাত্তগণ সংখ্যতব্য শান্ত লিখিয়া निविद्या गरेएज । 'अशांशक माक्डरनक् ৰণেন "প্ৰীস্ ও রোমদেশীর সাহিত্য একত্তিত ক্লিলে, ভাহার সমষ্টি সংস্কৃত শাল্প রাশির नमाम स्टेंद"। धमलाक्दाम, विभाग विभाग

এক এক শাস্ত্ৰ শিক্ষা ক্ষিতি ছাত্ৰদিগকৈ স্থৃতি-শক্তির উপরে অতাত্ত নির্ভর করিতে ইইত। बाभावन महस्र नरिश छाहे, अवाशकन्त অধ্যেতৃগণের স্বৃতি-স্বিধার জন্তে স্বস্কৃধি-কৃত শাল্পের তম্বগুলিকে সংক্ষিপ্ত-সূত্রদারা वैधिया, मिश्राश-कर्ज्क शांत्रण कताहरछन्। স্তরাং হত্তপ্তলের আর্থিক উৎকর্ষ ব্যতিরেকে বিলক্ষণ মৌধিক উৎকর্ষণ্ড ছিল। সুত্রশুলিকে र ভাবে রচনা করিলে मूज। উहाता स्वह हट्टेंद, ध्वर ছাতেরা অনায়াসে মুখন্থ ক্ষিতে পারিবে, স্ত্র-কারগণের তৎপ্রতি বিশুক্ষণ দৃষ্টি ছিল। কথিত. আছে, কোনও থেত্ৰকে একটি অৰ্দ্ধনাতা পরিমাণে সংক্ষিপ্ত করিতে পারিলে, বৈরাকরণ গণ প্রত্যোৎসব জ্ঞান করিতেন। (অর্থমাত্রা-नाचरवन भूर्जारमवःभक्तरस रेवज्ञाकव्रशाः।) কারণ, স্ত্রের ধর্মতা-দীর্ঘতাবারা উহার দোষ-গুণের বিচার হটত। সুত্রকারগণ সুত্রগুণিকে ব্যাকরণ-ছই করিয়াও স্থাচা ও স্প্রাব্য कतिरा का कि करबन नारे। भागिन चम्म्रे ব্যাকরণের মেরুদগুস্থানীয় লিল-বচনের প্রতি অবাধে অবজ্ঞা প্রদর্শন করিয়া, পুতা রচনা করিয়াছেন। বথা (১) 'যুবোরণীকৌ'-স্তে সমাহারে পুংলিকভা। (২) গাণ্ডালগাংস্ত্রে विवहत्न अक्वहन आसार। (७) अन्यामा-मिशायाकाविन्राज वहवहन यान वकवहन প্ররোগ ইত্যাদি। ("স্ত্রে লিল-বচনস্ অত্ত্রম্")। সংস্কৃতভাষার বিভক্তি-হীন শব্দ প্ররোগ করা নিবিত্ব ইহা একটি বুল কথা। ক্তি অসংখ্য-স্থলে পাণিনী-স্ত্ৰে বিভক্তিইন শ্ৰ ৰেখিতে পাওয়া বার। 'হনক্ত চ' বৃদ্ধাথোনিন্ধী' 'बाका क ह' 'बा ह' 'हें छाति। (य गक्र

मांच हाजपत तुरुनाएं गक्ति रहेरा তংক্রাৎ চপেটাবাত পড়িয়া থাকে, পাণিনীয় ব্যাকরণের ভাষাতেই মে সমুদর দোবের অন্ত প্ৰা ছৰ্ট ইহাতে পাঠক হঃথিত হইবেন ু মা। সৌত্রজগতে এ সকল দোষ দোষই নহে। আর "নিরছুশা: কবয়:"—অর্থাৎ পণ্ডিত-মাতক বাদকরণ-অন্ধুশের ভয়ে ভীত হয়েন না। डाहारमत्र ভाषा ভौषण धनिवात त्वरंग मोिएया চলিবেই চলিবে। ব্যাকরণ তাহার পদাঙ্ক অমুসরণ করিয়া এবং তাঁহার গতিবিধি নিরী-কণ • করিয়া, •ভাষা কোন্ দিক্ হইতে व्यामिएटस्ट, दकाथाव हिन्या वाहरव, छाहाहे মাত্র বলিয়া দিতেছে বুআর, যে সংস্কৃত-জগতে ইতিহাস গ্রন্থলিও পঞ্চে হইয়াছে, সেই সাহিত্য-লগতে ব্যাকরণের হুত্র গুলিও অন্তভঃ সুস্রাব্য হইবে ইহা আশ্চর্য্যের বিষয় নছে। পাশ্চাত্য-বৈজ্ঞানি-কেরাপ্ত এই মাননিক (Mnemonic) স্ত্রের উপাদেরতা অঙ্গীকার করিয়া, রামধন্তুবের সাতটি রঙ্কে ভিব্জিয়র (Vibgyr) বলিয়া থাকেন, যেন ঐ রঙ্-মালার রঙ্গুলির পৌর্বাপর্ব্যেরও অকুগ্ল-শ্বৃতি থাকে। রদিক পড়ুয়াগ**ণ -পাণিনী ক্তের** মধ্য হইডে व्यां महर्या-त्रमञ्ज वाहित्र कतिश्वा शास्त्रमः। • यथा, गरिय गार्य यूवक-वृत्मत मर्था व्यक्ष इहेन (य, 'এক কালোতে' 'স্ত্ৰী পুং বচ্চ' 'বৃদ্ধো যুনা' 'সৰ্বাস্ত দে' পাণিনীর এই চারিটি স্ত্রকে একই स्मारकत हाति-भारतत व्यथ्य वनाहेता, अकृष ক্বিতা রচনা করিতে হইবে। আর, অমনি গোক রচিত হইল যে,

> 'একো গোত্তে' স'ভবতি পুমান্ , যঃ কুটুখান্ বিভর্তি,

'ত্রী পুংবচ্চ' প্রচরতি যদা,

তচ্চ গেহং প্রণষ্টম্।
 'বুদ্ধো যুনা' সহ পরিচয়াৎ,

ত্যজ্ঞাতে কামিনীভি:

'দৰ্বস্ত দ্বে' স্থমতি-কুমতী,

সম্পদ্-আপন্তি-হেতৃ। অর্থাৎ, যে ব্যক্তি কুটুম্ব-বর্গকে ভরণ-পোষণ করিয়া থাকেন, বংশের মধ্যে কেবল তিনিই পুরুষ-পদ বাচা; যে ঘরে জ্রালোক পুরুষের আচরণ করিতেছে, সেই যংকে বিনষ্টপ্রায় জানিবে; * যুবকের সঙ্গে পরিচয় হইলে, কামিনীগণ বুদ্ধকে পরিত্যাগ করিয়া থাকে; আর প্রত্যেক ব্যক্তিরই দম্পদ্ বিপদের মূলে হইটি ভাষ্যা আছে—স্থমতি ও কুমতি। আবার, আমার জানৈক বন্ধু, তাঁহার ব্যাকরণ-স্ত্র-শিক্ষণ-প্রণালীর কথা এইরূপ বলিয়াছেন —ক্লাসে তাঁহার অধ্যাপক পড়াইয়াছেন 'চিণ্ তে পদ:' 'চিণ্ ভাব-কর্মণো:' তিনি মনে করিয়াছেন "পদ চিন্তে, ভাব-কর্ম্ব্ব অগ্রে) চিন"। আর মাহেশবের বর্ণমালাকে একদমে উচ্চারণ করিলে, ঠিক্ যেন ঢাকের ধানই इहेब्रा थाटक। यथा 'काहे छेन्, स > क्, धांधह, के छेर, इम्रवबर्ट, लग्, कामखन नम्, संख्क्, ঘটধষ্, অবে গভ দশ্, থফছঠথ চটতব্রকপর্, শ্বসর্, হল্।

গৃহ্-স্ত্র শ্রৌত-স্তাদির সম-সাময়িক স্ত্রে যে অপূর্ব রস নিহিত রহিয়াছে, আধু-নিক ব্যাকরণের স্ত্রে সেই রসু । পাইয়াই ধ্যন শ্রিকত সমাজ আজ্ স্ত্রের লক্ষণ।
কাল বিশুদ্ধ পাণিনীর

দিকেই অগ্রসর হইতেছে। স্বতরাং পাণি-নীর-স্ত্রের বোধ-দ্যৌক্যার্থ, সৌত্র-সাহিত্য-

সংক্রান্ত একটু আলোচনা করা এছলে नमोहोन बनिहां বোধ हटेड्डिह । एख धनित সাধারণ ও বিশেষ লক্ষণ আছে। সাধারণ यथा-- १ झा कत्रम् অস্নিগ্নং, সারবদ্ বিখতোধুৰম্। অন্তোভন্ অনবভঞ্ সূত্ৰং र्बिदमा विदः। (>) रुबश्री रज्ञाकात्र स्टेर्व, অর্থাৎ প্রত্যেক স্ত্রকেই ষ্ণাসম্ভব কম-সক্ষরে গাঁথিতে হইবে। বেমন পাণিনীস্ত্রে किन्-किन्-एक कि, विष्-निक्ष्क नि, नम-नकान्नरक् न, यन्नवर्गरक व्यव् हे-डे वर्गरक (সন্ধি করিয়া) যু, এবং আত্মানপদকে তঙ্ বলা হইয়াছে। ফলতঃ স্ত্রগুলি নিরর্থক-বর্ণ-**मृत्र रहेबाटइ। (२) मृज् छान ज**नसिद्धार्थ हरेरव, वर्षाए कान छ श्रुत कान वार्थवाहक-**नम पाकिष्ठ भातिर्य ना (यमन, क्रहेडेन्।** 48 81 ঐওচ ইত্যাদি- খ্ৰে **चरक्र-कर्ड**रा मृद्धि कड़ा हड़ नाहे;--এছলে গন্ধি করিলে, হত্তভাল ञ्चरवाधा र अम म्दन थाक्क, यत्रवर्गक्रित्र क्रश किनिया डिठार कहेकत रहेड। मक्ति वाचुन् नव्ह हिनाहेवात ब्राप्त, 'আন্দ্ৰন্-বিশ্বজন'-সংগ্ৰ ক্ষৰশ্ৰ-কৰ্ত্বৰ নকার-লোপও করা হয় নাই। কোন কোন স্থলে, পूर्य-भक्र वत्रवर्ष वत्रदक भूषंक् मधाहेवात कत्म, डेल्टइत्र मत्या अक्टी 'मकात्र' आमा হইয়াছে যেমন 'ৰলোরপ'। (৩) স্ত্র-গুলি শারবান্ অর্থাণ স্থারাম্নোদিত হওর। চাই। ववा, (ववानिक्टिः एकः ७ हारमश्वत छमः 'मीद्याबरम, क्रियारटमठ, रव। **डा**र्या क्रीवश्वदव बिव् । ইত্যাভিধানিকা:।) খ্র-রচনা প্রণালী প্রসিদ্ধ স্তারের অমুকুল ना स्टेरन, एखार्थंत मध्य छेननिक स्त्र ना।

त्वर (कर वरमन (व, 'क्रुब्रक्षम म-कारबाकन হওয়া চাই,' ইহাই 'সায়বন্তা **শব্দের কা**র্য। (৪) হত্ৰ-শুলি বিশতো-মুখ হওয়া উচিত। অধিকার হত্ত্র, বিধি-হত্ত্র নিরম-হত্ত্র প্রাভৃতি नाना कालीत श्रुद्धत्र मरश्र, यथन य कालीते -एक बाता, वर्गनीत वर्ष व्यक्त वृक्षान बात्र, उथन দে জাতীয় হত্ত করাই উচিত। ("সামবেদে গীতালাপ পুরণাক্ষরের নাম ভোভ।) (e) বৈ. অর্থ যুক্তি বলে অনাদাসেই লাভ করা যায়, সেই অৰ্থ প্ৰকাশ কৰিবার জন্তে কোনও मंत्र-প্रযোগ করিবার প্রয়োজন নাই। খ্যমন বছস্থলে, যোগ-বিভাগ ও জ্ঞাপক বার্রাই অর্থ-বোধ হইয়া থাকে। (৬) স্বত্তলি অনবত্ত निर्द्धाय इंडबा ठाँहै। यथा, विशिष्ट দৰি ভিনাৰো, শুক্ৰব্যাহত এব চ, পুনক্ক ननार्थक नश्चरनायाः धाकीखिंजाः। व्यकात्रत् প্ৰের মধ্যে বিসন্ধি-পদ রাধা, পরম্পর অসংক অর্থের প্রয়োগ করা, বিনা-প্রয়োজনে অরাকর मय ছाড़िया वह-चत्र नय-धारतांग कता, वृक्ति-গভ্য অর্থ-প্রকাশের কল্পে অধিক শব্দ প্রয়োগ করা, পুনক্তি-পরিহার না করা—এই পাঁচ वकरमव मार्थ नर्सथा नविश्वार्थ। वना वीहना त्य श्राम (क वन विवठन-वादाहें विश्व छेङ হইতে পারে, সে হলে অকারণ দিশন थारबांश क्यां अ (माबावर ।

প্রস্তুলির বিশেষ লক্ষণ এই
গৈকো চ পরিভাষা চ বিধিণিরম এব চ চ
প্রভিষেধাহিদিকারশ্ব বড়বিধং প্রতাক্ষণম্ ।
সংক্ষা পরিভাষাদি ভেদে, প্রত্ত ছম প্রকার।
(>) বে প্রত্তে কোনও পাত্রীর নাজের অর্থ
বিদরা দের ভাহাকে সংক্রা-প্রত্ত বলে। বেম্বন
কর্ত্তা, কর্ম্ম প্রকৃতি নারের সংক্রা-প্রত্ত বতর।

কৰা ইভাবি। (१) देकान কোন ছলে হত-কার, অঞ্চ বিশেষ প্রণাশীতে স্ব্রের ব্যাথ্যা ক্রিতে ইচ্ছা করেন, বিশ্বতি বারণের জন্তে বে সকল হত্তে হত্তকার সেই বিশেষ প্রমাণ, ্ৰবলিয়া দেন, সে সমুদর স্তুকে পরিভাষা-স্তু फार । रामन, भानिन श्रावत भक्षी-वर्श ७ সপ্রমী বিউক্তির অর্থ ও ককার-টকার-মকার লোপী আগমের অর্থ, তিনি স্বরংই বলিয়া দিয়াছেন ।* কেহ কেছ এই পরিভাষা সঙ্কেতকে মনিয়মে নিয়মকারিণী বলিয়া (৩) বে সমুদল্প স্তুত্তে কোন না-জানা বিষয় कानाहेशी (मत्र, (महे नकन अक्कांठ-क्कांशक-• স্ত্ৰকে বিধি-স্ত্ৰ বলৈ ৢ বেমন, 'এরচ্' 'কর্মণ্যণ্'। ইকারাস্ত ধাতুর পরে কর্ত্বাচ্যে অচ্-প্রত্যর হর, কর্ম কারকপূর্মকধাতুর পর অণ্প্ৰত্যর হয় ইত্যাদি। (৪) যে স্ত্ৰহারা সাধারণ অর্থে বাবহার্যা কোনও বিধিকে কেবন বিশেষ অর্থেই সংযত করা সেই শুত্রকে নিরম শুত্র করে। শব্দে হাতীকে ৰুঝায় বলিয়া, খতন্ত্ৰ হুত্ৰহারা হন্তিন্ শব্দে (অন্তার্থীয়) ইন প্রতারেরও वित्नैय व्यर्थ (मञ्जा इहेग । এইक्रभ 'माकिन' भरम मान्नाम जहारक वृक्षात्र वनित्रा, उज्ज्ञा । পৃথক্-স্ত্র করিতে হইল। 'হস্তাজ্জাতৌ' বাক্ষাদ্রাইরিচ সংজ্ঞায়াম্'। (৫) কোনও বিধানের নিষেধ-জ্ঞাপক স্ত্রকে প্রতিবেধ-ব্এ (৬) কোনও প্রকরণ আরম্ভক ব্রকে অধিকার সূত্র করে। এবং অধিকারের অন্ত নাম

প্রবর্ত্তন, অমুবৃত্তি, অমুর বা প্রকরণ। অধিকার স্ত্রও চারি প্রকার। 🗘) এক স্ত্রন্থ শব্দের ক্রমা-গত বহুস্ত্রের সহিত অর্য়ের নাম গলা-স্রোতঃ অমুর্ভি, বা অমুর্ভি ধারা। (২) গোলুর পালস্থ গোরু-গুলি যেমন পরম্পরকে বাধাদিয়া ঠেলিয়া চলে, ভজ্ৰপ যে স্থলে বিতীয় স্ত্ৰটা প্রথমটাকে, তৃতীয় স্ত্রটা দিতীয় টাকে, চতুর্থ স্ত্রটা ভূতীরটাকে ইত্যাদি ক্রমে পর-স্ত্র পূর্ব স্ত্রকে বাধা দিয়া থাকে, সেই অহুবৃত্তির নাম গবাং-যুথ অমুবৃত্তি (৩) যে স্থলে প্রথম-স্ত্রস্থ কোনও পদ দ্বিতীয়-স্ত্রের সহিত সম্বন্ধ না হইয়া, মণ্ডুক-প্লুতি বা ব্যাঙের লাফের মত তৃতীয়, চতুর্থ বা পঞ্চমাদি স্থতের সহিত সম্বদ্ধ হয়, সেই অমুবৃত্তির নাম মণ্ডুক প্লুতি অমুবৃত্তি আর (৪) দিংহ যেমন হাঁটিয়া সম্মুথেরদিকে চাহে, এবং মধ্যে মধ্যে পশ্চাদ্-দিকেও তাকায় ভজ্ঞপ একস্ত্রন্থ পদ তৎ-পূর্মবর্ত্তী ও তৎ পরবর্ত্তী এই উভয়দিকের স্ত্রের সহিত সম্বদ্ধ হইলে তাহাকে সিংহাব-লোকিত অমুবৃত্তি কহে।

(গঙ্গাস্লোতো গবাং যুথো, মণ্ড ক প্লুতিরেব চ। निः हावत्नाकि उटेन्छव , अधिकां ब्रम्छ पूर्विधः ।)

কেহ কেহ স্ত্রগুলিকে, ষ্চু-বিধ না वित्रा, অष्टेविध वित्रा थात्कन। उउँशिक्त মতে, অতিদেশ ও জ্ঞাপক নামে আরও ছই প্রকার স্ত্র আছে। যে স্ত্রে কোনও বিষয়ের † বিবরণ স্পষ্ট না বলিয়া, এই विषय 🕽 अमूक-क्रेश এই প্রকার बना २४, त्मई

^{*} ভসাদ্ ইত্যুত্তবভা 'ললোহস্তান্ত' 'ভসিনিভি নিৰ্দিষ্টে পূৰ্বন্ত'

व्यामारको छ-किछो; 'बिस् वछाश्चारनातः।

^{† (}কোনও কার্যোর, কোনও শাল্পের, কোনও নিমিডের, কোনও নামের, বা কোনও রূপের)

^{1॰} कारी जाल, क्वल, बाब वा क्रम)

एवटक किस्तर्थ-एव करहा थारक वर्षाक करण वर्षा कार्या करहा नाम किस्तर्थ : * (analogy) द्यमन, गाहि विक्रक्ति कार्या करण्डा मण स्टेर्स्स, 'गाहिं। नेष्-वर'। कात द्य कर्मान एव्यत कर्य स्टेर्फ्ड क्लान क्षत्रका निश्च-छन् नाम कर्या वात्र, द्रमें क्रांस्स क्रांस क

বলা বাহন্য বে, এছপুন্ধনে সেই অবান্তর তব বিষ্ণুত করিবার অতে আর • বাতর ইত্র করা হর না। • কিছু অভিবেশ-স্বভাল, বিধি-স্ত্রের, এবং জ্ঞাপক স্বভাল পরিভাষা-স্ত্রের অন্তর্ভুক্ত বলিরা, উহাদিগকে পৃথক্ — শ্রেণীভুক্ত বলিরা নির্দেশ করা অনাবশ্রক। শ্রীদেবেজ্রকুমার বন্দ্যোপাধ্যার বিদ্যারশ্ব, এম্-এ, ঢাকা কলেজের সংস্কৃতাধ্যাপক।

স্বৰ্গীয়া প্ৰিয়তমা দেবী।

()

গন্ধীর তেরী শব্দে সহসা খুলিল বর্গ-বর্গ-বার,
ভরিল শৃত্ত পুণ্য জালোকে সিম্ববিষল ক্ষ্যাধার।
বলকিল বত চক্ততারকা গ্রহ উপগ্রহ ভাষামান,
হাক্ত পুরিত আত্তে গ্রহুতি ভাজিল পূর্ব-সজ্জা রান।
মক্ষণবন, নক্ষন বন-পদ্ধ ছড়ারে পগনমর,
বিলি কাপারে উচ্চ-জিদিব-হর্ম্য-শিখরে পভাকাচর।
গাহিল জিঘললনাবুক্ত,—বিপুল-পুণক-পুরিত-প্রাণ—
আবাহন-কীতি প্রীতি-বিজড়িতা সপ্তমে তুলি ললিত তান।
বাহিরিক্ত সবে, করেতে অর্থা, অঙ্গে পৃত মোহন সাজ,
ত্রিতে ভাদের প্রিরতমা বেনী শাপমুক্তা বর্গে আছা।
অতুলিত-বিভা-মঞ্জিত-মুখী, মহত্যী-মাধুরী-মহিমা-যুতা,
ধেধা দিল এক দিব্য মুর্ভি, গৌমাা, বেমতি জলাধ-ক্ষতা।
সম্ভাবি ভারে লরে পেল সবে, গারিক্ষাত মালা পরা'রে গলে,
তিনিবের জ্যোতি মিশিল জিলবে, স্থৃতি রাখি ভার পৃথিবীতলে।

()

বচ্ছ-সলিল-শীকর-সিক্ত স্থীরণ-সম শান্তিকরী নির্ম্মণ-মডো-নীলিমার ভার আবিদতা-হীনা প্রকৃতি ধরি,

अक्कार कर्वरता वर्ज्यक्रुमवात्वर् कर्वञ् । वर्ष्ट्राष्ट्रिकेटक त्ववः व्यक्तिकवा मञ्ज्याक वृ



ক্ষেত্ৰ-প্ৰীতি-প্ৰেম-ভক্তি-কন্মণা-অমির উৎস হানর ল'রে, नुक-भवरात्रा कात्रकात्र भाषा, এग्राह्म बीन मत्रकानस्य একটা খনগ জ্যোতির কণিকা; ধরার কলুব-কালিমা-ছারা, নিভাইল ভারে, না লভিতে তার শান্ত-উত্তল পূর্ণ কারা। क्ल-भावाबादव विष-निष्ठव कृष्टि अश्विष्ठ दाखि मिन । नित्यव मासार्य कछ भठ शंव रहेर्टाह श्रन: अशोब-नीन। কিছ ভার মাৰে শেখেছিত্ব বারে, প্রভাতকিরণে কনক্ষয়.---**हिन्द-मद्दम-नन्मन** ; द्रिश्च गर्वा अर्थे का वा विकास का ৰাৰ আমরা, মকলমর ধাতার নিগৃঢ় বিধান স্ক ना बुचि छोडादा निमा निवछ, वनि "चकक्रन, कठिन, क्रक"। शिक्छ धन निरहर्मन छिनि, त्म छ नरह होते त्यारमत विख চিন্ত্র-প্রথ-থাবে গিরেছে সে, তবে তার তরে কেন কাতর চিত্ত ? वीषम्बन्दर कोताया।

গত ১০ই ডিলেখন•রাত্রি আড়াই বটকার সময় अकृषि श्रम्म कृत्रम नहना वृत्रकृति स्टेमारः। शियुक्त एवरी छन्दिः वर्ष बाज कोरिक किरनन । वरे पत्रकारमञ्ज बर्या विनि छै।हात्र महिन्छ जामान ক্রিয়াছেন, একবার জাতার সহিত বাঁহার পরিচয় रहेबारक, जिनिहे विवस्तान नवन शहब अवा प्यरपूर्व रारशीत वृक्ष क्रेमांटकन ।

रानिकानु कीयरव देविज्ञानती घटेनांवनी बादक না, কিন্তু নিয়তবার জীবনীতে এখন অনেক জিনিস निविनात चारक नाका नाताकत वृद्धे कत ना । प्रथानिक उक्तमात्रव माहिकीवरान वावाछ्यना, तारे विवचन . नववडी वाष्ट्रिक बानमरिवीमानव दःवहर्मनाव क्या पर्गात त्रांपछण् माहिकी बहालटबढ शृख विष्ण भवरक्षात নাহিকী নহাপরের বিভীয়া কলা ঝিরভনা ১২১৭ সালের ^३रे पाचिन बन्नश्रहन **एइन । (बाई) फ**निनी वानात्रमा भूरभक्त विकल्पाटक स्टब्स्स्या व्हेरकहे वह स्वाहेक। हा वनीविशव द्वा बावकम् बाव्य भवानातर्व वातिकवित वरन छेन्द्रवस्क कृतिक, खबेन वर्क क्रवरकात रुष रहेच-- अकतिरक चीस्त्रत वक्तान, वस्तिरक वाशान्त मनीन बीबानंत क्षेत्र, अकेतिक नवानन,

मछनिएक थोत्रछ। এकनिएक পृत्विकनिष्ठ निविज-इंड भूभा, जांत्र अकतिरक कि मुक्तत प्रके कृत्य-स्मातक। वालिकाइहित्क त्व लिचिक, ताहे काल বাসিত, সেই কোলে করিত।

रेनभरन गत्र छानदारम ना. अपन बानक वा वानिकात कथा थात्र छना वात्र ना। थित्रछवां श्रम শুনিতে বড় ভালবাসিত। পিতার নিকট, বাভার निक्के, बाखामरीत निक्के बनित्रा नंस धनिछ। यथन **प्टारंपक कारिनी बना ६२७, जबनि बानिकांक छरकत** क्षम बहु बहु कहिबा পড़िछ। मीठाँ, नाविजी, ভনিতে ভনিতে কাঁদিয়া আকুল হইত। আবার বধন ° ভাঁহাদের সোভাগ্যের প্রসম্ম আসিড, ভখন কি অভুন্নমূৰে, কি আগ্ৰহে সমগ্ৰ হদর দিব; বসিয়া ধাৰণ ক্ষিত-বেদ সীভা, ব্যবুদ্ধী এত্তি ভাষার নিভাছ चांगवात वन ।

बीनकृत्वी विविद्य शिव्रक्षमा काशायत कृत्वत्याहरन ব্যাকুল হইভ। নিজের সামাত পভিতে বভটুক্ পাৰিক ভাৰাদের উপ্তপার করিত। বালিকার মেই-

পূৰ্ব কৰ্মৰ পৰিভ্গ হইয়া কিণাৰিপণ হাত ভূমির। আবীৰ্কাণ কৰিতে কৰিতে চলিয়া বাইত।

ক্লিকাড়া হেরিস্ম রোড নামক অপত রাম্পথের পাৰ্থেই বিষ্ঠমার পিত্রালয়। রাজ্পণ বাহিয়া ৰত লোক দিবারাত্রি গ্রনাগ্রন করিত—প্ৰিক পথ দিয়া আপন মনে গান করিতে করিতে চলিয়া ৰাইভ—প্ৰিয়তনা অতি নিবিইচিতে সেই সঙ্গীত প্ৰবৰ कतिक। कथनत जाननात मनुब कर्छ वे सूरतत পাবৃত্তি করিত। পিতা বৃকিতে পারিয়া হারমোনিয়ায্ শিশ্বাৰো প্ৰভৃতি কিনিয়া দিলেন, আর সঙ্গীত-পারদর্শী এক ব্যক্তির হল্ডে উভয়কভার সঙ্গাতশিক্ষার ভার অর্পণ করিবেন। প্রকৃতি এক্এক জনকে अक्र विवास चछावछ:रे भात्रमणी कवित्रा मिन। वित्रक्या चारेननव मशीकांच्यानिनी, अकरन क्षतियां পাইরা স্থীভবিদ্যার অসুশীলন করিতে পার্ড इहेरनन । देशव बर्श अक्ट्रे व्यवकातिक अहे हिन বে, বন্ধসন্থীত এবং কার্ডন ব্যস্তাত ব্যিপ্তসার আর কিছুই ভাল লাগিত লা। উপাদনার আরভে ৰখন গ্ৰিয়ত্যা चाराष्ट्रव করিয়া **७**१वान्टक ভাষার সহারতা ভিকা করিয়া স্থাত করিতেন, ষনে হইত এ আবাহন তাঁহার চরণতলে পৌহিয়াছে। क्छिनिन छेन।मना-मन्दर्भ छै।शाह मधूह महीछ अवन ক্ষিবাৰ সৌভাগ্য আমার হইয়াছে—সে বৃদ্ধার বেন कर्ष अवन्छ वाक्षिक्षकः नक्षीत (अहे नायनी---এই সাধনার বোধহয় প্রিরঠনা সিদ্ধিলাভ করিয়া-हिर्मन, छारे 'ठाराज विज मनीछ

"ভোৱাৰ এই তবে বৰ কৰ্ম ববে

শুখাপন হবে হে;

তহে রাজরাজ একাকী নীরবে

দাঁড়াং তোবার সমূবে।"

কাৰণ করিয়া ভগবান তাঁহাকে আপনার বীচরণজ্ঞারাতলে সাইয়া গোলেন।

্লোকের গহিত ব্যবহারে প্রির্ভষা অসুকরনীর। কাহারভ[া] প্রাণে বাধা লাগিতে পারে, এযন কথা কৈনি বেন জানিতেন না। এবন স্নেরপূর্ণ কথর, এমুন পবিত্র ভাব, এমুধ সধুস্থতাবর সর্বল সহজ ব্যবহার এখনকার দিনে ব্রিক) ভানিলে বিস্থান কর পূর্ব হল-প্রিক্তনা উপহাস করিছে আনিডেন বা। সহজ কথা এভটুজু বীকাইরা বলিলে সরল-ব্যবহা বালিকা আন ব্রিডে পারিভেন বা। সভাই এলুগে এখন সরলভা বিরল।

বিধ্যাকথাকে শিল্পতনা বড় তল্প করিছেন। কেই বিধ্যাকথা বলিলে বেন তাঁহার আলা উপছিত হইত। বিধ্যাকারীকে 'নিধ্যাকথা আর বলিব না' বীকার করাইলা তবে তিনি নিল্লভ হইতেন।

এইরণে কীবনের ভিত্তি গঠিত হইরাছিল।
কিছুদিন বেশুন কুলে পাঠ করিরা প্রিরভনা ভূল
পরিত্যাগ করিলেন। ১৯০০ সন্থের অক্টোবর নাসে
বরাহনগর বিবাসী ভাজার জীবুজ মতিলাল মুখোগাখার
রার বাহাছর মহাপরের বিজীন পুত্র জীবুজ সত্যেল শ নাথ মুখোগাখারের গৃহিত তাঁহার বিবাহ হয়।
প্রিরত্বার ব্যবহারে বভরালরের সকলেই প্রীত
হইলেন। তাঁহার বভর ঘাতড়ী ভাহাকে আপনাদের
কক্তা অপেকাও অধিক আদর্ত স্থেহ করিভেন।
লোককে প্রভাতিক আদর্তন্ত করাই প্রিরত্নার
নৈস্থিক ভণ ছিল।

শ্বনিন হইল থিকতনা খানীর সহিত "ক্রীক্রো"
নামক হানে অবস্থান করিভেছিলেন। আনো প
ছাল্ল। রচনিত্রী জীবুকা কামিনী রাম লিখিলাছেন
"ঠাহাকে দেখিলে খাছোর প্রতিমুর্ক্তি বলিলা মনে
হইক।" বাভবিক খাছপেপুর্বি দেছের বে সৌন্দর্যা
ভাহা প্রিয়তবাতে বথেট ছিল। এই কেন্তে পত ১০ই
ভিনেম্বর প্রতুষে কি কালবাাধি প্রবেশ করিল,
২০ খটা না বাইভেই রাত্রি আড়াই বট্টকার সমন
প্রাণশানী প্রিয়তবার দেহশঞ্জর ভর করিলা কেন্তুর
অভাত দেশে উড়িয়া পেল। আনক্রপ্রভা খর্ণকৃতিকা
ভ্রত্তেলে পড়িয়া রহিল।

পঞ্চল বাস বরক একট ছক্ষণোবা নিওকে অক্স ছাবসাগরে ভাষাইরা ব্যিত্তবা চলিয়া গৈছেল ব বাহার পেন ভাষাইই ক্ষেত্রত পেল। ভাষাতে পৃথিবীর কিছু হইল বাঃ ভাষার ভেষ্যি উবালোকের সহিত বিহলকটে জাগরিত ইইলা প্রভাত বেবা দিন,

আবার পারাহিক বিশ্ববৈ ক্ল ক্টিল, বারু বহিল, বেলা বাড়িল; গোকজন ক্রিকেন্তাভিম্বে থাবিভ হইল। বাহার পেল সে ভয়প্র'ণে ক্ষবপ্রভিষা ভিতাভক্ষে পরিণত করিয়া আসিল। স্মাননে ববন বেই দেবি-প্রভিষার মুখাবরণ উল্লোচিভ হইল বিকট দাহছল বেন আলোকময় হইয়া পেল। দর্শকগণ অঞ্জেকতঠে কৃষিল "আহা, কার এবন সর্বনাশ হইয়া পেল। কার ময় অজ্ঞকার করিয়া আসিলি য়া?" ক্রমে সব ফুরাইয়া পেল।

বেন হঠাৎ একটা বড় উঠিয়া প্রিয়ত্যাকে উড়াইরা

লইলা পেল। যাহার কর্ম সমাপন হইলা পিয়াছে, ভাহাকে বাইতে হইবে। প্রিয়ত্যা কর্ম সমাপন করিলা, রাজরাজের চরণতলে দাঁড়াইব বলিয়া বে আকাজনা পোবণ করিয়া আসিতেছিলেন, সে আকাজনা তাঁহার পূর্ণ হইল্লাছে। ভগবান তাঁহার আত্মাকে আপনার অমৃত্যময় ক্রোড়ে হান প্রবান করুন, তাহার শোকসন্তপ্ত আজীর-সজনবর্গের প্রাণে শান্তিবর্গন করুন, আর তাঁহার প্রাণের প্রতাটিকে বছমুখের অধিকারী করিয়া দীর্ঘঞ্জীবন দান করুন এই প্রার্থনা।

শীসতুলচন্দ্র ঘটক বি, এ।

विश्वमशी।

তৰ ছবিধাৰি ৱেধেছে আজিকে

নিখিল বিশ্ব ঢাকি;

যত দেখি ভত ভোমাহেই দেখি---

• किंदूरै ब्रह्मा वाकी।

ৰত না পদ্মীতি ইটিজেক বিভি

উঠিতেহে নিতি নিতি, বত তারা হাসে সন্ধা আকাপে,

থাণে ভাসে যত স্বৃতি,

সৰ সাৰ্থক সৰ সুন্দঃ

তোমারে হুদরে রাখি

মধুর মলর বার পরাণ পরশি আব আব ভাবে

ভেদে ভেদে চলে বাগ, শানে, দে বহিয়া ভোষারি হয়ভি, গাহে সে ডোমারি গীভি, ভগো প্রাণময়ী প্রীতি। তব স্বর সনে স্বর মিলাইয়া—

দুরে ফুকারিছে পাথী।

দুর নীল নভ চুমি'

স্বমা কৃটারে আঁচল লুটারে

রয়েছ দাঁড়ারে ভূমি !

পুলকের মেলা আবিষল কৈলা

कोरत बद्धा यक चरहना,

স্বারে নিয়াছ আপন করিয়া স্বার মরমে থাকি 1

যেদিকেই চাহি তোমার বিকাশে

मुक्क क्षत्र, जाँवि !

শ্ৰীঅমরেন্দ্রনাথ সিংহ।

কোচিন্-চীন।

>• हे क्टिक्ताती।

থাত:কাল আ•টার সমর, আমরা টুাভান ছাড়িরা জু-নাকের (Tou-Nac) অভিমুখে বাত্রা করিলাম। "নোরা"র প্রকা-রুম, কভকগুলি "মোই", আমাদের আগে- আগে চলিরাছে; তাঁহাদের মঁথা কেই .বা ক্রাটারী দিরা আমাদের পথ-রোধী কাঁটা গাছ, , ও ডালপালা কাটিরা ফেলিতেছে; ক্রেই বা তাহাদের পৃষ্ঠস্থ ব্রীর মধ্যে আমাদের থাডাল সামগ্রী লইরা বাইতেছে; কতক্ত্বলি

আনানবাদী কুলি আমাদের বোজ্কাবৃজ্বি
বহন করিতেছে; উহাদের মধ্যে ছইজন
পথের মাঝে পীড়িত হইরা পড়িল; মাটতে
পড়িরা আর্ত্তনাদ করিতে লাগিল; রক্ষীদৈনিকেরা ছইচার ঘা বেত লাগাইল; পরে
ঐথানেই উহাদিগকে ফেলিরা চলিয়া গেল।
এই সমরে ১২ জন বন্দ্ধারী আ্যানামবাদী
দৈনিক, এবং ভাহার পর পাঁচজন যুরোপীর
আসিয়া উপস্থিত হইল:—ট্রামি ও ট্রাভানের
কুইজন দৈতের উপনারক, একজন ডাল্চিনি
ব্যবদারী, আমার বন্ধু ও আমি—এই পাঁচজন।
সব লেবে আমাদের অ্যানামবাদী ভূতাবর্গ
এবং তিনটা বোড়া। বেধানে সমভূমি
সেই সব স্থান ছাড়া আমরা আর ঘোড়ার
চড়িরা বাইতে পারিলাম না।

তুনাক্ এই ছই স্থানের মধ্য দিয়া একটা সক স্থাঁড়ি পথ পাহাড়ের উপর দিয়া চলিরাছে—একবার উঠিতেছে, একবার নামিতেছে; পাহাড়গুলা হঠাৎ একএক জারগার খাড়া হর্তরা উঠিরাছে। কতক শুলা পাথর, কত্তকগা শৈলখণ্ড, বড় বড় গাড়ের শিক্ড—এই সমস্ত সিঁড়ির ধাপের কাজ করিতেছে। কোখাণ্ড বা পথের উপর প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড গাছের ছাঁড়ি পড়িরা আছে—ভাহার উপর দিয়া আমাদের বাইতে হইতেছে। ঘোড়ার, চড়িরা গাঁটু জলে তিন চারিটা নদী পার হুইতে হুইল।

আ • টা হইতে ১১টা পর্যান্ত আমরা চলিলাম; চাটুলি দিয়া ভাত থাইলাম, ভাহার পর ১টা হইতে ০০। • টা পর্যান্ত আবার চলিলাম। আভান ও তু-নাক্— এই ছুই স্থানের মধ্যে, পর-পর চারিটা গিরিয়ানার উপর আরোহণ "করিডে 'হইল। পরে, প্রার ১২০০ metre পরিমাণ গিরি কন্দর অভিক্রম করিবার জক্ত অভি করে উপরে, উঠিতে হইল; অবশেবে, সেই প্রাম Tou
Nac এ আবার অবভরণ করিলাম।' তু-নাক
১০০০ metre (metre = এক গজের কিছু
বেশী) উচ্চে অবস্থিত।

ঐ গিরি-কন্দর হইতে চ্মংকরি দৃশ্ত দেখা গেল—বেন একটা গিরিমালার চক্র; একটার পর একটা এইরপ ৫,৬টা গিরিমালার চূড়া উপযুগির সৃনু'শুভ—এবং পরস্পরের নিষ্ঠিত জড়াজড়ি করিরা রহিয়াছে। ১৮০০ metre পরিমাণ একটা গিরি-কন্দর দেখা গেল—সেই গিরি-কন্দর বরাবর লারোস (Laos) পর্যান্ত গিরাছে। ছুর্ভাগ্যক্রনে কোরাসা হওরার, এই বিস্তীর্ণ প্রথের খুঁটনাটগুলা, আমাদের দৃষ্টিগোচর হইল না।

চারিটার সমর আমরা ভূ-নাকে আসিরা
পৌছিলাম। আমাদের অধিকাংশ লোকের
পাছোট ছোট জোঁকের কামড়ে রক্তারিক ইইরাছে; সমস্ত পথটার জোঁকে কিল্বিল্ করিতেতে; জোঁকের কামড়ে আমার ভূতোর পা একেবারে ক্ষতবিক্ষত; সে বলিল ১০০ টাকা দিলেও সে আর আমাদের সংশ কোধাও যাত্রা করিবে না।

মোইরা আমাণের প্রতি সদর হইরা,
তাহাদের প্রাম হইতে কির্দ্ধের, নাশ্ ও,
তালপাতা দিরা আমাদের কর একটা বুটীন নিশ্মণ করিরাছে। মাটি হইতে এক metre
উত্তে, বাশের প্রকটা মাচা উঠাইরাছে;
ক্ষণে গা ঢাকিরা, ছই রাখি আমরা সেই মাচার উপর নিদ্রা গৈলাম। এই উচ্চ হানে দিনের বেলা একটু ঠাতা এবং রাজে ধুব শীত।

এইখানে পৌছিয়াই, রক্ষি-দৈনিকেরা দিল আরম্ভ করিয়া দিল। বাশ কাটিয়া আমাদের অক্ত একটা খাবার ঘর প্রস্তুত করিল—তাহাতে কাঠের টেবিল ও কাঠের বেঞ্চি আছে; তার পর, তাড়াতাড়ি তাদের নিজের অক্ত, আমাদের ভূতা ও কুলিদের জন্ত, রদ্ধনের অক্ত, ঘোড়াদের অক্ত, কতকগুল ঘর উঠাইল। মৃহুর্ত্তের মধ্যে, যেন একটা নাম বদাইয়া দিল। এই বিস্থাণি পার্বাতীয়

আমরা দেখানে পৌছিয়াই বাহির-হউতে সেই গ্রামটি দেখিতে গেলাম। গ্রামের চারি-দিকে একটা পরিখা, তাহাতে বিব-মাখানো ছুঁচাল কাঠখণ্ড সকল বসান আছে; আর একটা মাটির দেয়াল, তাহার উপর কতকগুলা গোঁজ পোঁতা; পরিধার উপর একটা গাছের ভ ড়ি ফেশিয়া রাখা হইয়াছে; দেই ভাড়টা দেতৃর কাজ করে, ভাহার উপর দিয়া প্রবেশ-বারে যাওয়া যার। এই গ্রামে প্রায় শ খানেক পূ^{ৰ্বর্ম} পুরুষের বাস। এখানে স্ভাত্ত আছিম ধরণের, চুনকাম-করা ৩-টা আবাস-গৃহ আছে শএই গৃহপ্তলা, কতকপ্তলি পোঁটার উপর স্থাপিত। নীচে,—মহিষ, শৃকর, ম্গী ^{এবং উ}পরে মাত্র **পাকে। গৃ**ছের ছালে, বিগমে কতকগুলি পুরুষ, পরে কতকগুলি মনী প্রি বিশ্ব ভরে ভরে আদিল। অভীব মী চূহলদহকারে তাহারা पूत्र इहेट्ड गिर्मित्राटक द्विटिंड नातिन। त्रमवीता, ত্ৰ শিশুদিগকে ভাষাদের কাপড়ে ঢাকিয়া,

পৃষ্ঠের উপর শইয়া, গ্রামের ভিতর দিরা গমনাগমন করে।

শাধা-জাতির সদার এথানে আসিরা রক্ষিত-সৈনিকদিগের নিকট প্রকাশ করিল,— এই সময়ে বিদেশীদের এই গ্রামে আসা নিষেধ; কেননা এখন একটা উৎসবের আফোজন হইতেছে। আমরা যাহাতে গ্রামে প্রবেশ করিতে না পারি এই জন্ত বোধ হর একটা কার্রনিক হেতু নির্দ্দেশ করিল। কিন্তু আমাদের বোড়াদের জন্ত কিছু ধান্ত পাঠাইতে সম্মত হইল।

(याहेप्तत याथा याहाता (वनी माहनी, তাহারা ১০)তৃহলের বশবতী হইয়া ক্রমশ আমাদের ছাউনীর দিকে অগ্রসর হইন। তাহারা প্রায় নগ্রকার; তাহাদের দেহের স্নার গঠন দেখিয়া আমরা তারিফ্করিতে লাগিলাম। তাহাদের দেহ, সূলধরণের বিবিধ অনহারে আছেয়; - কণ্ঠমালা, কাণ বালা, চুলে কাটা। অধিকাংশ লোকের হাতে বল্নম—কাহাবও হাতে বক্ৰ ধহু। আমরা তাহাদিগকে শিইতার সহিত অভার্থনা করিলাম। এইরূপে শীঘ্রই আমাদের প্রতি তাহাদের সহায়ভৃতি আকৃষ্ট হইল। অনুমাদের সাজসজ্জা ও পরিচ্ছদ দেখিয়া ভাহাদের খুব धारमान इहेन। विरम्बटः आमारित स्वर-যড়ি দেখিয়া ভাহাদের খুব বিশায় অন্মিল; এই পদার্থের অংশগুলা আংনি-আপুনি हिलाएट हिंग का नि है हो व मार्थ कि धक्छ। রহসামর জীব আছে !!…

এই বুনোদিগের জন্ত কোন উপটোকন আনি নাই বলিলা আমাদের বড় আপ্শোস্ হইল। 'কিছ আমাদের মধ্যে একজনের মাধার বেশ একটা উপায় আদিয়া
কুটিল। তাহার মনে পর্ড়িল, এখনও আমাদের কডকগুলা থালি চাট্নির বোতল আছে।
মোইদিগকে সেই সব বোতল আমরা দিশাম।
ভাহারা পাইয়া ভারী খুগী হইল। এই সকল
বোতল ভাহাদের নিকট বহুমূল্য হল ভ জিনিস।
কোন কোন লার্ডিন-মাছের টিন-বাস্কের মধ্যে
মধ্যাকৃতি এক প্রকার ছোট ছোট বাতব
চামচ ছিল; সেই চামচ্গুলা উহাদিগকে
দেগুরায় উহাদের বড়ই আনন্দ হইল। উহারা
ভাহাদের চুলে গুঁজিয়া রাধিল। ভাহাদের
নিকট ইহা একটা অপূর্ক্র অলকার,—আধুনিক
ধরণের, দব্যতম ফ্যাসানের নৃতন শিল্পনামগ্রী।…

সারাহে. ভোজনের সময়ে ও ভোজনের পরে, আমাদের সেই সম্বোগঠিত ভোজন-কক্ষে অনেককণ ধরিয়া মোইদের সমুদ্ধে কথাবার্ত্তা এই বয়স্থাতি এতটা ্ধরণের বে উহাদের মধ্যে এখনও জ্বা বিনিময় वाठनिछ।-छेशात्र कार्छत वन्त काानाम-বাদীবিগকে ভালচিনি বের। সমস্ত कर्ष (शृद्धवारे करतः; शूक्रस्थता, नीकात করিয়া, বল্লম-হস্তে ইতন্তত বিচরণ করিয়া कांगरकन करवा मान ठाडेनरे डेशामन कान विटनव निर्मं, প্রধান আহার। সমস্ত গ্রামের লোকে মিলিয়া বনে আগুন धताहुँबा एवं : वहिंद्राण कृषि পরিষ্কৃত इटेला भन्न, উहाता छ। हाटि नान हाछेरनत रोज दशन वह शानत क्ल. नमछ शास्त्र সাধারণ সম্পত্তি বলিয়া গণ্য হয়। কিন্ত বৌধ হয়, ডালচিনির গাছগুলা কডকগুলি বিলেৰ ব্যক্তির কিংকা কভকগুলি বিলেৰ পরিবারের নিজস্ব সম্পর্তি। বোইনিগের ছই
প্রকার দেবতা;—এক, গৃহ-দেবতা—আর
এক, ক্ষেত্র-দেবতা। কোন কোন উৎসুবে,
এই সকল দেবতার উদ্দেশে, উহারা মহিষ
বলি দের।

>> र्फब्क्यात्री।

আজ প্রাতে কোরাসা ও বৃষ্টি। বংশমঞ্চের উপর, পাশাপাশি আমরা সকলে কম্বল
মৃড়ি দিরা ওইয়া আছি। তাল পাতার-ছাওয়া
ঘরেব চাল হইতে ফোঁটা ফোঁটা জল আমাদের কম্বলের উপর পড়িতেছে।

চাট্নীর বেভিল-রূপ ছল্ভ উপহার পাইরা মোইরা আমাদের খুব বলীভূত হইরাছে। প্রথমে উহারা একটা ছোট প্রোর আমাদের নিকট পাঠাইল; আমাদের পাচকেরা উহাকে মারিয়া, ও রন্ধন করিয়া, দিনের ও রাত্রির ভোলনের সময়, নানা-আকারে আমাদের সময়বে আনিরা ধরিল:— "ফিলে," কট্লেট, বৃহৎ,-সসেজ্ ও পৃডিং। পাউকটির অভাবে উহারা চাউলের এক প্রকার পিঠা বানাইয়া দিল।

আৰু নোইরা আমাদিগকে ভাহাদের-প্রামে
লইরা যাইবে। যাহাদিগকে আমরা মংগাকৃতি চামচ দিলাছিলাম ভাহারা কর্তবাবোধে
আমাদের লরীর-রকী হইরা আমাদের
সঙ্গে বাইবে। বিশেষত একটি খাদা
নাক্ হোট ছেলে আমাদিগকে কিছুতেই
ছাড়িবে না। আমি ও আমার বন্ধু, ুক্তন ভ্রাণানী ক্ষণীকে পূর্বে আমিভাম—একতক্টা,
ভাহারই মত দেখিতে। সেই আপানিনীর
নাম—সাকু-সাক্। আম্বা এই নামে বাণ্ক-

চিকে ভাকিতে শাগিলাম। সেও আমাদের ভাকে উত্তর দিতে লাগিল।

🔹 ু গ্রামের চন্তরে, পূর্ণবয়ই লোক ও বালকেরা व्यामानिशस्य चित्रिया माक्षारेन। আমাদের ুম্থ নিরীক্ষণ করিতে লাগিল। আমাদের পরিচ্ছদ টিপিয়া-টিপিয়া দেখিতে লাগিল। त्रभृगीता गृह्बत উপর হইতে আমাদিগকে অবলোকন করিতে লাগিল। উহাদের মধ্যে কেহ কেহ ফাঁপা বংশথতের ভিতর অল ভরিবার ছলে, চব্বরের উপর नित्रा आवांत्वत काटक माहम कतिया आमिन। একটি নগ্নপ্রায় স্থন্দুরী বালিকা—চমৎকার গঠন-কাথের উপর বিদ্বা চুল এলাইরা পড়িয়াছে-পীনোরত করিন वाह्वत वनत-छात्राकास-छेरम इहेट कन আনিবার ছলে, •হই তিনবার আমাদের নিকট দিয়া বাভারাত করিল। আমাদিগকে तिथाँ ७° निरस्त क्रम तिथान-इत्रेड हेहाई তাহার একমাত্র উদ্বেশ্র ছিল। একজন মোই, তাহার কুটীর-গৃহে ঘাইবার জক্ত আমাদিগকে নিমুত্রণ করিল। একটা বৃহৎ আগুন জালাইয়া তাহারু চারি ধারে,ভাহার স্ত্রী ও ভাহার ভিনটি বিও সন্তান উভু হইরা বসিরা আছে। আমরাও ুতাহাদের মত উভু হইরা বদিলাম। আমাদের অমুরেন্ধক্রমে, গৃহস্বামী ও আর একজন, মোই—ঢোলক ও "বোডং" নামক এক অকার ভূমী বালাইতে লাগিল। সেই বাছ-ষত্র হইতে উহারা এক বেরেও অভিমধুর ্ৰুপ্ৰ নকৰ বাহিৰ করিতে লাগিল।

বৈ মনরে আদরা এই মনোহর দৃশ্রটি উপ-ভোগ করিছে ছিলাব—সেই সমর, ডালচিনি ব্যবসায়ী, একটা গাছের সওলা করিছে ছিলেন; মোইরা ছইটা মহিব ও দশটা ঢাকের বদলে গাছটা দিভে চাহিতেছে। ডালচিনি ব্যবসারী ইহাতে ইভস্তত করিতেছেন।

चारांत्र अमिरक, वास्मत्र अधानत्र महिछ, আভানের রক্ষি-দৈভদলের, একটা কাজের বন্দোৰত সহদে কথাবাৰ্তা চলিতেছে-আভান হইতে তু-নাক্ পর্যান্ত এখন যে পথটা আছে তাহা অত্যন্ত থারাপ; তাহার খানে একটা ভাল রাতা তাহার লোকজনের ছারা করাইয়া দিলে, ভাষাকে মহিষ, ঢাক, মুক্তার হার প্রভৃতি উপহার দেওরা হইবে। সেই রাম্ভাটা, পরবন্তী গ্রাস, মাং-তা পর্যান্ত লইরা ষাইতে হইবে। তখন সেথানে দৈনিক্দিগের একটা নৃতন আডা স্থাপিত হইবে। গ্রামের প্রধান, এই সকল উপহারের লোভ সম্বরণ-করিতে পারিল না। "বে মহিবটা আমাকে निर्द (नहां कड डेह्!—এडहां डेह्! এई বলিরা মহিবের পরিমাণটা হণ্ডের বারা ইঙ্গিত করিল। ... আহা ,বেচারা মোই। এখন উহারা পূর্ণ স্বাধীনতা সম্ভোগ করিতেছে। তাহাদের বারা রাস্তা যথনুই প্রস্তুত হইবে, তথনি সেথানে কভকগুলা সৈনিক স্থাপিত हरेरव, छाहारमंत्र निकरे **इ**हेर्ड আদার করা হইবে; বিনা ক্ষতিপুরণে, ভালচিনির গাছগুলার স্বন্ধবিকার উহাদিগকে ছां प्रिया निटं इहेर्द ; हब्र डेहां निगरक জোর করিয়া কালে খাটান হলবে; এইরূপে বাহার নাম সভ্যতা সেই সূত্যতা 'উহাদের मर्था व्यक्तिक इस्ट्रिय। उँशास्त्र महन्षाः উহাদের বাধীনতা, উহাদের স্থপক্ষেতা, वित्रकारनत्र सञ्च अवर्शित स्टेरिय।

ুকাল প্রত্যুবে ভটার সময় এখান হইছে

चावता हाफिर--- छाटे चाल नकान-नकान শরন করিতে হইবে। রাতি ৮॥• টার সমর আমরা সকলে ওইরা নিজার উল্থোগ করি-ভেছি-এমন সময়ে হঠাৎ মশাল হাতে কতক-খলা মোই আমাদের ভালপাভার কুটারে প্রবেশ ক্রিল। পাহারার বৈনিক একে বারে লাফাইরা উঠিল; বিখাসবাতকতা হইল না कि ?... बक्ठा रेनम जाक्रमण ना कि ?... ना, ভাহার ঠিফু বিপরীত। স্বাশর মোইরা जामात्मत्र विशास উপनक्त्र এकটा ভোজ দিবে ~ ভাই নিমন্ত্ৰণ করিতে আসিয়ার্ছে। তথন আমরা শ্যা হইতে উঠিয়া, আমাদের কথ-লাদি সেইখানে রাখিয়া, মশালের আলোকে ভাহাদের সঙ্গে চলিলাম। তাহারা গ্রামের नाशात्र पछार्थना भागात्र आमानिशत्क नहेत्रा (भग।

অপূর্ব দৃষ্ঠ:—একটা লাতির বর,—ধ্যাছয়, সেই বরের মধ্যে তিনটা, আঙন জালতেছে; সেই অলিপিথার মান্তবের কতর গুলা
পাঁজরা পোড়ান হইতেছে। একটা অত্ত
পাত্রে আমাদিগকে এক প্রকার চাউলের হুরা
পান করিতে দিল—শিষ্টতার নির্মাহ্মগারে
এই হুরা উহারা অগ্রেই পান, করিয়াছে।
ভাহার পর উহারা ঢোল বাজাইতে লাগিল।
আমরা এই হুরামন্ত বুনোদিগের নোংরা হত্ত
মর্ফন করিরা উহাদের নিকট হইতে বিদার
লইলাম। এই অপূর্ব্ব দৃষ্ট দর্শনে আমাদের
নিত্রমুগ্ধ হইল এবং এই সকল বুনোদিগের
সমল ও অকপট বন্ধুক্ষ লাভ করিরা আমাদের
ক্রম্ব আর্ম্র হইল।

ত্ৰীজ্যোতিরিজনাথ ঠাকুর।

দশপদী কবিতা।

(कन ?

ক্ষে নাচে ভালুক ? কেন লাখার বাং ?

আহ লারা ওড়ে ?

রাজা কেন বলে লোকে ক্ষরতাহীন

কেন বুৱা ওল্ল সভ্য কলগ নিবে চুল

কালো করে রাবে ?

বিউনিসিগাল—উড়ে কেন নিভ্য নিভ্য

লাকো কীজে ভোর না হ'ঠে কেন ঠাতা

বেজুর রস চাবে ?

কেন টাঙার ববারি লোক ? চুক্তে বধন

রশাই আর্সে চোক্তের

ভূত পালার বে জাতির ভাবে তারো

কেন তারিক্ করে লোকে?

টাবের সাথে র'তে কেন বার্ড পেঁচা

চাষ্চিকেরা থাকে ?

থাবের পভীর পাগলানি নে ; কিযা

একটা বেলিক্ডার বেপে

এ স্ব কৰ্ম কলে; এবং ভাষা হ'জা
ুন্দ প্ৰী(৩) দেৱৰ!

কবিতাগুচ্ছ।

(क (वनी युनात ?

জাগে পিছে ছ্টি ব্যুব্ধ কে বেণী সুন্দর ।
কার প্রেম বস রবি বিবে মনোহর ।
জাগে উবা নিজ মনে হেসে চলে বার,
ভূলে ও ভোষার পানে ফিরিরা না চার।
চলে সে চপলাবালা চাকিতে চাহিরা—
জাগাল্যে বিহল কুল, বারু ছুটাইরা।
ফোটা কুল হেলু পড়ে সুবে বার চুম্,
নাডারু মুশুণগণে ভালি বিরে বুম।

পতিব্ৰভা সন্ধ্যা সভী ৰলিৰ বদনা,
মুৰে বিশ্ব হাসি লয়ে চাপিয়া বেদনা—
সীমন্তে সিন্দ্ৰ ঢালি অনুবাগ ভবে
আন্তাবন তব পাছে ঘূরে ঘূরে মরে !
ভূলি ফোটা বঁটুই বেল গাঁথি লয়ে হার;
ভোষার চরণ ভলে ধরে উপহার ।
একবার চার ফিরে—হের প্রভাকর ।
উবারাণী সন্ধ্যাসভা কে বেশী সুন্দর ?
ত্রীষভীক্রনাথ চটোপোধ্যার ।

বাট্নাবাঁটা।

আন্তাটানা, পল্লৰত পা ছখানি ৰাখি;
বাট্নাবাটে পল্লিৰালা—ডাগর ছটি আঁথি।
টাপারকলি আঁও লগুলি নোড়ার পরে পুরে,
লিলের বুকে পড়ছে বুঁকে নাখা ক্ষে ক্ষের।
খোঁলার ভরা ৰাল্লাখন, নিবে সেছে আখা;
টোক ছল্ ছল্, গগুলুটি রক্ত যেন নাখা।
আঁও,টা খোলা আসনপরে, 'ইউদি' ছগে কানে;
বাট্না বেংজ বক্তৰালা, আঁও,ল দিয়ে টানে।
চাওনা রেখে ৰাট্নাবাটা—বড় খবের মেরে,
উত্ন যে আই নিবে গেল কেব্লে না ক চেবে?

ভেল হলুদে বিশিরে রাধি থোকা তোরার পিছু,
শিষ্ট হয়ে বস্লো এসে, বৃঞ্জে না ত কিছু।
কঠ হ'তে রক্ষা কবজ টেনে টেনে খুলে,
কড়া ভরা হবের উপর দিচেই দেখ-তৃফে।
কোমল করে বেড়ি ধরা,—ভ্বনবোহন সাজ।
কে অতিধি, লো রবণি কেলা প্লাবে আজ।

বর্ষপরে স্বামী এসে জন্ন দিবেন মুখে, ত রান্না ভোষার সুধা হ'ক জানীব করি সুদ্রব। শ্রীজগৎপ্রসন্ন রার।

कात्रा-मूकि।

কোনে, রাধিবে নোরে

কুর্ম তব পুঁর বরে ?—

এবে তব বুবা আকিকন।

ক্রীণ-কারা আেতবনী পারে কি হে, স্থান বিতে

সর্জের অগাধ সলিলে ?

সুবাপার সাও বিস্কোন।

জাপে সৰে,—ছিল দিন, ;
বহিতাস নিশিদিন

ৰগ্ন তব এেম-ৰদিবার;
ক্ষুত্তৰ কারা-বাবে রাখিতে আনার নদী;

কারিতে, গো, নরনে নরনে।
ধ্রেছিত্ব নিমর্গ ডোবার।

একদিন, অবশেবে,
কৈ বেন বঁড়োল এসে
কারা-যার করিয়া বোচন ।—
ইন্ধিতিল বারবার বানিরে আসিতে হরা;
আসিলাম বাহিরে চলিরা।
ডুমি হিলে সুবৃধি-মগন।

কারার বাহিরে এসে,
হৈরিসু বা', বোহিল সে ।
হেরিসাম বিরাট তুবন !—
অসীম সৌন্দর্যারাশি ছড়ারে রয়েছে, মরি,
জলে, স্থলে, গগনের পটে ।
হেনিসাম আলোক নৃতন।

নেহারিস্থ সে আলোক,—
অসীন ব্রহ্মাও-বৃক্
নৃত্ব সূত্র সহর তুলিয়া,
বহিতেহে সুধা-নদী ! নব নব কত ভৃত্ত
বিবোহিল জনম্-নম্ন !
দিস্থ প্রাণ অসীনে চালিয়া

मनीय '७' हेक् परव ' क्यान वैश्वित द्वारव

অসভৰ। নাহি সভাৰনা।
ভবে কেন মিছে মোরে ডাকিডেছ নারে বাছে
কটাকেডে বিখলি বানিয়া।
ছাড়, ছাড় বাডুল কল্প।।

ভাষি' তৰ ক্ষ কারা (হরেছিড় পথবারা,)

আসিরাছি মৃক্ত সধীরণে ;
পেরেছি অমৃত-বাদ ৷ আর কি এ বিভা কেরে ৷
প্রবোজনে ভোষাত্র বিশাকে ৷
বুধা আশা ৷ ছাড় গো, লদনে !

কত আশা সমু**জনী** উল্লিয়া হাদিহন, নাচিতেছে সারি-সারি-সারি। হেরিতেছি, নভোগার **জন্ত অক**রে দেখা,—

> "ৰীবিৰয়, গুড ভবিবাং।" আৰু আমি ৰগতে স্বানি। শ্ৰীবিভূতিভূবণ মজুমদার।

পূজনীয়া।

হে দৈবি । বরাজি । তব পবিঅব্রতি বেহুরেরে আমি, সব হই বিশারণ ; বেন পো ভারতী রাণী দেবা দিলা মোরে কপন নাঝারে হাতে বীণা সুশোভন । ভোলার নধুর ক্ঠ গীতকানি সন পুলে পো অবণে ববে, আমার তথন— মনে হয়, তব সম বৈলয়কথাৰে আহে কিনা আহে হেন ব্যাপরতন । ভগো দেবি ।—পড়ি ববে বচনা ভোনাৰ— কলান-কুলুবরাজি করি পো চয়ন বিচিত্র ত্রিবিব-বিবা উল্পানে ভোকার, বনে হয় বেবিভেছি লাগিয়া বপন। কবিভা,—লেখনী—ভব লীবন সবল। বিছ্বী রম্বনীয়ারে রমন্ত্রীর মনি, উলার ক্ষমর তব, অতীব কোমল—পর হুংব হেরি বার গলিরে আগনি। ভূমি গো সাহিত্য-কবে হইরে সার্থি—বনোলিপ্ত ভূমবীন সাহিত্যিকগুব, ভূজার বত হাও পথ মেবাইরা, প্রপ্তি আনত পিরে ভোষার চরণে।

প্রজাসভকুষার হালদরি।

মুক্তির সংবাদ।

মুদ্র সিদ্ধুর বার্ডা করিরা বহন
অধীর আনন্দ ভরে' দক্ষিণ পবন
প্রবেশ লভিল কক্ষে উরাস চঞ্চল;
পুথি, পত্র, বেশবাস কুন্তল, অঞ্চন,
আন্দোলিভ, উচ্ছসিভ, বিক্ষিপ্ত বাাকুল
চারিদ্ধিক শার্শে ভার; অপার অকুল

ভাষর-উজ্জল-জল ক্ষুরিত অধীর
তরক বিক্ষোত মত্ত, মৃক্ত তরণীর
পূর্ণ পালে, লীকান্ত্যে গমন সত্তর
দেখা দিল থেক পরে। পাবাণের তার
সকীর্ণ আবদ্ধ গৃহ, রুদ্ধ অন্ধতম
মূহর্তে মিলাল মানা মরীচিকাসম।
শ্রীপ্রেমন্থা দেবী।

वमुख्य।

इकिश्व चाक थूनि' वमरखन वाग्र 🗸 ৰঙিল ভুবনে, মূলবিল গাছে গাছে পুষ্প খত খত मित्र हृष्ट्या । 🤊 আত্র-মৃত্লের গল্পে প্রিল অবনী, यशालम ब्रमाटरत्य कॅलिल धमनी ; নীরব নিলিপ্ত শাস্ত্র স্বপ্রসন্ন নীল আকাপের কোলে, আনবেগ-বিহবল হর্ষে তরজিত ধরা শিশু সম দোলে। চারিদিকে প্রবাহি**ত বদ-বন্ত ধারা** তারি মাঝে আমি ওপো হয়ে পেকু হারা; ুগৃঢ় আকৰ্ষণে এক জজাত বেদনা স্বিপুল বলে---্বাহির করিরা দিল একাকী আমারে व महोमकल। কণ্টৰ কৰ্মৰ পূৰ্ণ চঞ্চল সরসে ফুট পদ্মসৰ , कैशित मानमी मूर्डि क्षिता डेडिन खनवर्ड सम्। ভাগরি ভ্রমন ভান দ্রেভে সহসা পেরেছি শুনিতে, करिह निरम अनि अधूनशी कनपत्र বাপাভরা চিভে।

অকে থেন লাগে; জাগে পুলক সরস! বায়ু-বহা পুষ্পাগন্ধে দেহের সৌরভ শিহরে পরাণে, আক জিকত মুগুরিত সে দেহেরে কোথা রাবিরা গোপনে। জ্যোৎস্নামাঝে চল চল ফুল্ল তমুখানি কোপায় মিলাঙ্গে গেছে মোহিয়া পরাশি। গগৰের নীলে আর কনক,সন্ধ্যার, অরুণ কিরুণে, খুঁজিয়া আকুল তারে সম্প্রত্বে ! সহসা বসন্ত মারে আসিল নামিয়া वानन वाव व ডুবিল নিমেৰে হায় :> অক অক্ষকারে বিশ চরাচর। প্রবাদী পাখীরা ষ্ড আকুল প্রাণে প্রবাসের মোহ তাজি' ধায় নীড় পানে ; ষাঠ হতে গাভী নিয়ে রাখালের শিশু (शार्ट यात्र किरब : ভয় ভীত সচকিত প্রান্ত পথিকের আর্দ্র নভোনীরে। পরিত্যক্ত গৃহপানে ছুটিয়ু তথন যেন চমকিয়া, ৰাছিরে ধুঁজিত্ম বারে দেবি আছে মোর यदार क्रिया.।

শ্ৰীস্থ্যঞ্জন রার :

ষষ্ঠ শতাব্দীর ভারত।

আমরা গভ মাঘের "ভারতী"তে চীন-পর্যাটক দিগের মধ্যে হৈসক এবং সক-ইয়ান नायक इटे ब्यानत + नार्यादत्वथ कतिवाहि। সম্ইয়ান (বা সাংইয়ান) ওয়েনইপ্রদেশের লোইয়াং নগরীর উত্তর-পূর্ব্ব কোণে বাস कित्रिट्टन्। हेनि छिक् देशकात्र (वा देश्याःत महिल व्यमिक উट्टे वर्रमंत्र विश्वा (Dowager Empress) Till পুস্তকাদি সংগ্রহের জন্ত ৫১৮ ভারতবর্ষে প্রেরিত হন। আমরা পুর্কেই ৰণিয়াছি যে, ইহাদের বৃত্তান্ত সংক্ষিপ্ত এবং ফাহিয়ান বা ছইয়েনদাংবের ক্রার दिनी मूत भर्या हैन । करतन नाहे वा है शामत ত্রমণ বৃত্তান্ত দেরপ দারগর্ভও নহে। ততাপি গ্রন্থার ব্যাপারে ইহারাও অনেক পরিমাণে স্কলকাম হইয়াছিলেন এবং ইহারা ছুই জনে মহাযান 'সংক্রান্ত একশত সভর থানি পুস্তক সংগ্রহ করিয়া ছিলেন।

চীনের রাজধানী হইতে বহির্গত হইয়া
পারস্ত এবং অভাভ দেশ শ্রমণ করিয়া ইহারা
উচাং (উদয়ানা) দেশে আগমন করেন।
"এই দেশের উত্তরে সাংশিং পর্বত এবং
দক্ষিণেই ভারতবর্ষ। লোক সংখ্যা ও উৎপর্মদ্রব্য যথেষ্ট। এই প্রদেশের ভ্রমির উর্বরতাশক্তি অত্যধিক এবং জলবায় অত্যন্ত
স্বাস্থ্যকর। "এই স্বলোই বোধিসম্ব ব্যাপ্তীর
ক্রিবারণের জন্ত নির্দ্ধ দেহ তাহাকে সমর্পণ
করিষাছিলেন, এখনও এইক্লপ জনশ্রতি
শোনা বাছ। রাজা নিরামিবাশী। প্রধান

প্রধান উপবাদের দিন তিনি ঢকা, দৃষ্ট্, বুংনীণ ও অন্তান্ত নানা প্ৰকার বান্তাদিসহ প্ৰাতে व्कापिक उडेशामना দ্বিপ্রহর অতীত হইলে ডিনি রাজকীয় কার্বো মনোনিবেশ करत्रन । হত্যাপরাধে व्यथत्रां धे एक নিহত ক রা আহার্য্য সহ ভাহাকে পৰ্বতে নিৰ্কাদিত করা হয়। মহুয়োপ্যোগী খাছাদ্ৰব্য শস্তাদি এবং নানা প্রকার স্থমিষ্ট ফল এখানে যথেষ্ট। সন্ধ্যাকানীন পুৰা ও আর্তির ঘণ্টা-. নিনাদ অনেক দূর এইতে শোনা বার। নানা 🖏 প্রকার পূপে পৃথিবী সমাচ্ছন্ন এবং বুদ্ধদেবকে পূজা করিবার জন্ত পুরোছিত এবং সাধারণ লোকেও তাহা আহরণ করেন।"

সাংইয়ান তাঁহার স্থপারিশ পত্রাদি এতদেশীয় রাজাকে প্রদান করিলে, রাজাঁ পরম
সমাদরে উঁহাদের অভ্যর্থনা করেন। চীনের
রাণী বৃদ্ধদেবের পূজা করেন জানিতে পারিয়াই,
রাজা পূর্ব্বাস্ত এবং যুক্তকরে, ভক্তির সহিত
মন্তক অবনত করিলেন। তৎপর, পরিভাষী
হারা রাজা পর্যাটকবিগকে জিল্পাঁনা করিজন
যে "সম্মানীয় অভিথিগণ কি স্থ্যদেবের
উত্থানের দেশ হইতে আসিতেছেন ?" সাংইয়ান উত্তর করিলেন যে তাঁহাদের দেশের
পূর্ব্ব দিকে মহাসাগর। এই মহাসাগর ইইতে.
ভগবানের ইচ্ছামুসারে স্থাদেব উদয়াচল ও
অস্তাচল গমনাগমন করেন। রেজা পুলর
জিল্পাক ভিলেন যে তাঁহাদের দেলা সায়
ব্যক্তি আছেন, কি না ? তত্ত্বেরে সাংইয়ান

^{*} লিপিকীরশ্রনাণ বশত: মাথ-প্রবন্ধে উক্ত প্রস্থকারীদিগের সময় পঞ্চনশভাকী লিকিত হইরাছিল।

অনেক সাধু ব্যক্তির কল্পা উল্লেখ করিরা পরে भन्नीत त्रत्मन (त्रोभा-धाठीन, ख्वर्ग-धानान এবং তথায় যে সকল ঋষি বাস করেন টোহাদের কথা এবং প্রাসক্তমে ভবিশ্বং-বক্তা চিকিৎসক হোয়াটো) (कांग्रान्दना, যাত্তকর • ছোলের কথা রাজাকে কবিলেন। " রাজা এই সমস্ত বাাপার শুনিয়া বিশেষ আহলাদিত হট্যা वितिता य "बांखविक हे यनि के त्मरन এই সমস্ঘটনা ঘটে, তাহা হইলে উহাই अकृ उ. त्रक्त . तम वा वा वा वा वा की वा एक 'পরজন্ম ঐ দেশে আমার জন্ম হয় এজন্ত প্রার্থনা করিব।"

পর্যাটকগণ তংপর বৃদ্ধদেব ও দৈভাের সংগ্রামন্থলে উপনীত হইলেন। প্রবাদ এই यथन वृद्धानव এই উँठाः आमान श्राह्मकार्गा আইদেন তথন ঐ দেশীয় এক দৈতারাজকে তিনি তদীয় ধর্মে দীক্ষিত করিতে চাহিলে দৈত্যরা**ন্ধ** এক প্রচণ্ড বাটকা ও বৃষ্টি দারা বৃদ্ধদেবকে আক্রমণ করেন। বৃষ্টি থামিয়া গেৰে বৃদ্ধদেৰ এক প্ৰস্তৱ খণ্ডের উপর পূর্ব্বাস্ত **२**रेश • छेशृत्यमनशृद्धक आर्छ वनन ७क ক্রিয়াছিলেন। সাংইয়ান তাঁহার,পুন্তকে লিখিয়াছেন বে "বদিও বছবংসর অতীত হটুরা গিরাছে তথাপি তাঁহার বক্সের রেখা **এখনুও পরিকাররূপে দেখা যার।** কি[°]নেই বন্দ্রের স্ত্রে পর্যান্ত পরিশক্ষিত হয়। ইহার পশ্চিমে এক বৃহৎ পৃষ্করিণীতে নাগ-রাজ বার্গ করেন। নাগরাজ ইচ্ছামত যথন তথন অলৌকিক আ দার ধারণ করেন। ঐ দেশের রাজা নাগরাজকে সম্ভট করিবার জন্ত বর্ণ এবং सिन्युकानि के श्रक्तिगीए नित्कन करतम।"

তিনি আরও বুলেন, "এই দেশের ৮০ লি উত্তরে পর্বতোপরি বৃদ্ধদেবের পাছকা-চিহ্ন এখনও দেখিতে পাওয়া যায়। এই পাছকা-চিচ্ছের আবরণের জন্ত এথানে একটা মন্দির নির্মিত হইয়াছে। এই পাছকার দৈর্ঘ্য বিস্তার পরিমাণ করা হক্ত কেননা কোন সময় ইহার रिन्धा, क्लान ममग्र हेशंत्र निकृठि अधिक हन्। ইহার অতি নিকটেই একটী ঝরণা। এই ঝরণার বুদ্ধ একদিন তাঁহার দক্তকাষ্ঠ নিক্ষেপ করেন। নিক্ষিপ্ত হইরামাত্রই ইহা বুক্ষে পরিণত হয় 🖈 নিকটেই একটা মন্দির। ু তথায় স্কুবর্ণ নি**র্শ্বিত** মহ্যাকার ৬·টী মূর্ত্তি আছে। দেশবাসী কঠোর নিয়মাবলী পালন করেন এবং ভিক্গণ বিশেষ ভক্তিমান।" "এই মন্দি-বের ১০০ শত লি দক্ষিণে,বুরুদেব যেথানে নিজ দেহের চর্ম্ম এবং অন্থি লইয়া লিখনপত্র এবং লেখনী প্রস্তুত করেন দেইখানে রাজ্য অশেংক একটী মন্দির নির্মাণ করিয়াছেন। অন্থি ভঙ্গকালে তংগহ নির্গত মজ্জার চিক্ বর্ত্তমানেও পর্বতোপরি স্পষ্টরূপে দেখিতে পাওয়া বার।

"পাঁচশত লি দক্ষিণপশ্চিমে দেন;সি পর্বত। এই স্থানের জল অতাত্ত স্থাত এবং ফলাদি অতাস্ত হুমিষ্ট। পর্বাত উপত্যকা উষ্ণ এবং वृक्क । लडा खना मि इबि दर्ग न मान समि है স্বশোভিত থাকে। নিকটেই এক পর্বত-কলরে বৃদ্ধদেব বাস করিয়াছিলেন। অংশাক এই স্থানে এক মনিশ্ন নিশ্বাণ করিয়াছেন। এक नि निकर्त वृद्धत भगमाना বর্ত্তমান আছে। এই পর্বতে এক প্রকাপ্ত মন্দিরে ছইশৃত যতি বায় করেন। পঁর্যাটকগণ পরে গান্ধারে আইদে।

সাংইয়ান বলিয়াছেন "এই স্থানের লোকেরা সকলেই বান্ধণ কিন্তু সকলেই বৃদ্ধকে অভ্যন্ত সকলেই বৃদ্ধকে অভ্যন্ত সক্ষানের চক্ষে দেখেন। রাজা অভ্যন্ত নিষ্ঠুরপ্রকৃতি এবং প্রতিহিংসাপরায়ণ এবং যুদ্ধপ্রিয় সাভশত যুদ্ধ-হত্তী উাহার অধীনে। প্রভ্যেক হত্তী দশজন স্থাজিত সৈম্ভ বহন করে। এই সমস্ত সৈম্ভগণ তরবারি ও বল্লম লইয়া যুদ্ধ করে। হত্তীদের ৩৩ওও তরবারি থাকে, আবশ্রক হইলে ইহারাও তরবারি ব্যবহার ক্রিতে পারে। রাজা নিজ সৈম্ভসহ সকল সময়েই সীমান্তপ্রদেশে অভিবাহিত করেন সেই জন্ত প্রজাপ্ত স্থাধে নাই।"

পশ্চিমাভিম্থে পাঁচদিন যাইরা যে স্থলে
সামান্ত এক মহুয়ের জন্য বৃদ্ধদেব নিজ মন্তক
অর্পণ করিতে প্রস্তুত হইরাছিলেন অনণকারিগণ সেই স্থলে উপনীত হইলেন। তথা
হইতে তাঁহারা সিণ্টু (সিন্ধু) নদ অভিক্রেম
করিলেন। "এই নদীতে বৃদ্ধ মকর মংস্তের
রূপ ধারণ-কদেন এবং পরে নিজ মাংস
(মৎস্য-মাংস) ছারা ছাদশ বৎসর পৃথিবীর
লোকের উদর প্রন্থ করান। এখনও
পর্বতোপরি মৎস্তের আঁইস দেখিতে
পাওয়া যার।"

তৎপর তাঁহারা টোমাকু নগরী পৌছেন।

"নগর স্থাক্ষিত এবং জলের ফোরারা অনেক
দেখিতে পাওরা থার স্বিএই মৃশ্যবান
প্রস্তানিক চি এক ম্বিরে স্বর্ণ ও ম্ব্যবান প্রস্তানি
বিভিত্ত জনেক শুলি প্রস্তর্গ দেবমূর্ত্তি পূঞ্জিত।"

পশ্চিমাভিষ্ণী इहेर्स এकतिरमद পথ অভিক্রম করিলে বৃদ্ধ বে ছলে নিজ চকু উৎপাটিত করিয়া দানশীলভার দেশাইয়াছিলেন তথার তাঁহারা উপনীত হন ! পরে, সিন্ধুনদ অতিক্রম করিরা গান্ধার রাজ-ধানীতে পৌছিয়া তত্ত্তা মন্দির দর্শন করেন। তিনি বলেন বুদ্ধদেব শিশ্বসহ এই দেশে ভভাগমন করিয়া এইরূপ ভবিষয়বাণী করিয়া-ছিলেন যে তাঁহার নির্বাণের তিন্শত বংগর পরে তথায় কনিক নামে কোনু নরপতি এক মন্দির প্রস্তুত করিবেন। কনিক বখন রাজা ছিলেন, তথন একদিন, বহিৰ্গমনের দেখিলেন যে চারিটা বালক গোময় হারা এক বৃদ্ধ মন্দির নির্মাণ করিতেছেন। ছই হস্ত পরিমিত এই মন্দির-নির্মাণকার্য্যে ব্যাপৃত বালকগণ কনিক্ষকে দর্শনমাত্র অদুশ্র হইলেন। অদুত্ত হইবার পূর্বে একজন দেববালক কনিকের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া এক গাণা পাঠ করিয়া গেলেন। তাহা ভনিয়া কনিক এই স্থলে এক স্থান্তর মন্দির নির্মাণ করেন। এই মন্দির কাঠনির্মিত এবং ত্রেরাদশ তা্না। मर्स्सामति अकृषे लोश-खखा । लामस मुन्तिवृष्टि এখনও বর্ত্তমান আছে। কনিকের মন্দ্রিক व्यत्नक मनिमानिका बाह्य अवः ठाति सन दिन् ॰ जिवाबाज এই মণিমাণিকা बन्धा करत।" * ् "निक्टिरे धकी श्राप्त मिन्त्र आहि। ইহা স্পৰ্শ করিলে কে দৌভাগাশালী তাঁহা কেননা সোভাগ্যবান পরীকা করা যার। मिक्त मार्ग कतिसार हेरान

শুসাংইরানের লিখিত বতে, যদি বৃদ্দেবের মৃত্যুর তারিও আমরা ৪৮৭ পূর্ব খুটার বরি তাহা ইইলে ফানিকের রাজধ্বের সময় (१৮৮-৩০০) ১৮৭ পূর্বা খুটার বা নিকটবর্তী সময়ই পড়ে। প্রাণিত ইতিহাসি^{র্ক} নিঃ তিমানেট মিথ কনিজুর্কে ১২০ খুটাকে রাজা করিয়াছেব এবং তিনি বিভীয় ক্যান্ত্রবাইনেদেব ^{প্রেই}

প্রথ-ঘ্টাগুলি আপিনিই নিনানিত হইতে থাকে।" বলা বাহলা ব্রুমণকারী সাংইরান ইরা সামান্য মাত্র স্পর্শ করাতেই ঘটাগুলি মতাত্ত থানিত হইতে লাগিল।

পরে বৃদ্ধ বেস্থানে শিবিরাজরপে একটা পারাবত • উদ্ধার করিরাছিলেন তাঁহারা তথার গমন করেন এই স্থানে প্রাকালে - রাজা শিবির একটা প্রস্তরনির্মিত শস্তগৃহ ছিল। "দৈবত্রিপাকে ইহা জন্মান্ত হইয়া যায়। কিছু দ্বাবশিষ্ট্ শস্তকণা এখনও বিস্তমান। এবং ইহার একটা মাত্র গ্রহণ করিলেও আর অরের সন্তাবনা থাকে না।"

ইহার পরে, ইহারা কিকলেম মন্দিরে যান। "তথার বৃদ্ধের পরিধান বস্ত্র ত্রেরাদশ ভাগে ছিরাবস্থার আছে। বৃদ্ধদেবের পাত্কার ভার ইহারও পরিমাণ করা বায় না কেননা কোন সমর বা ইহা দৈর্ঘ্যে বেশি হয় কোন সমর আবার বিস্তৃতিতে বাড়িয়া যার। এইধানে বৃদ্ধের দম্ভ আছে এবং ইহার নিকটে বৃদ্ধের ছারা দেখা বার।"—

व्यामन्ना शृद्धिहै विनन्नाहि व नाःहेनान अ হৈশালের ভ্রমণ-বুতান্ত অতান্ত সংক্ষিপ্ত এবং তহারা আমরা ভারতের তদানীস্তন অবস্থার প্রকৃত তথ্য সম্যক অবগত হইতে পারি না। কিছ তত্তাপি এই ছই ভ্ৰমণকারীর ভ্ৰমণ-বৃত্তান্ত হইতে ইহা স্থাপতি হাদরক্ষম হয় বে, প্রত্যেক স্থলেই খাদ্যাদির কোনই অভাব ছিল না, বৌদ্ধধর্ম তখনও প্রাধান্ত বিস্তার করিতে-ছিল এবং সর্ব্বত্রই বৌদ্ধ মন্দির বিরাজিত ছিল। माःहेब्रानं यथन अप्लाल आहेरमन उथन শুপ্তবংশীর কোন্ নরপতি সিংহাসনে ছিলেন তাহা লানা হন্দর। বি৮৫ বৃষ্টান্দ হইতে eoe बृष्टीत्मन्न माधा नन्निमारुखा वनामिछा, এবং কুমারগুপ্ত রাজা ছিলেন। পূৰ্ব্বপুৰুষগণ যে সমুদায় উপাধি ধারণ করিয়াছিলেন, সেগুলি ইহারাও ব্যবহার कविष्ठन किंद्र वज्रठः देशामत् त्राञ्च काश्विात्वत्र ज्ञनकानीन अध्वाज्ञात्वत्र पूर्व-मौमावद्यमाजहे हिन।

विषानीव्यनाथ नमानात।

জিজ্ঞাসা।

টাদের স্বমা রাশি, বদত্তের কুল বাদ, অলির পঞ্চম ভাল; শিশুর অধ্য হাদ। প্রেমের অতুল রূপ সবাতেই দেই জন; তবুও শুবায় লোকে দে কোবায়—দে কেমন।

শ্ৰীদেহেৰুনাথ মাইতী।

নিবাসনাধিরোহণ করেন—এই বন্ধ প্রকাশ করিয়াছেন। ভত্তরে প্রবাজনামা ভাও স্থকার নহোদর নিবিষ্ঠাছেন "The great difference in the legends and emblems on the coins of Kanishka and Kadphises prevents the supposition that the former was the immediate successor of the latter. Kanishka and his successors appear to me to have formed a distinct family from that of the two Kadphises." বাহা, ইউক, এপ্রবাজ ইয়া বিচার

সহযাত্রিণী।

(ফরাসী গল অবলম্বনে)

সংবাদপত্তে ষেদিন সিরির সহিত আমার বিবাহ-বার্দ্ধা ঘোষিত হইল, সেদিন আমার বন্ধ্বাদ্ধবের মধ্যে একটা হলস্থল বাধিরা গেল। আমার বিবাহ! যে চিরকাল বিবাহিত জীবনকে একটা হর্ম্বিষহ ভার বলিরা তর্ক করিরা আসিরাছে, তাহার বিবাহ? স্মাবার, বিবাহ কাহার সহিত? না, নিতাম্ব আত্মপরারণা এক নারী, যাহার সহিত কাহারে কথনো বনিবনাও নাই, তাহার সহিত হলস্থল বাধিবার কথাই বটে!

বন্ধু সিসিল আসিয়া কছিল, "ব্যাপারটা কি, বল দেখি ? প্রেমের ফাঁদে ছজন ধরা পড়লে কেমন করে ?" আমি কহিলাম, "ট্রেণে!"

সিসিল কহিল, "ট্রেণে? অমন বিশ্রী জারগা—নাঁকে চোৰে করলার শুড়া অনর্গল প্রবেশ করছে—একটা কর্কশ ঘটঘট ট্রেণের শক্ষ—না আছে গাঁধীঃ গুান, না আছে গাছের ছায়া—প্রাণ্টা পরিত্রাহি ডাক ছাড়ে! সেহানটা প্রেমের পক্ষেউপযুক্ত হরে উঠল ?"

সিসিল হাসিতে গাগিল।

আমি কহিলাম, "প্রেমের পক্ষে সব '
চেরে ক্ষার স্থান মুলি কোথাও থাকে, তবে

এ টেণে! কেন কোথাও নাই—বাহিরে
কর্মজাতের বিপুল গর্জন, ভিতরে ছটা প্রাণী
—এমন ক্ষোগ, এমন অবসর, কি নিতান্ত
লোভনীর নর!" কবিছটা আমাকে মোটেই
কুপ্ল ক্ষিত্ত না—কিছু ইদানীং, কথাওলা
ক্ষেন সাদাসিধাংগাছের হুইত না!

मिनिन कहिन, "वााभात्रभाना थूटनहें ⊾ वन ना।"

একটা দিগার ধরাইরা, দিদিল চেঁয়ারধানি টানিয়া আমার পাশে ঘেঁদিরা বৃদিল।

আমি কহিলাম, "এমন বিশেব কিছু
বলিবার নাই! তবু শোন," আমি বলিতে
আরম্ভ করিলাম,—"এই ফেলিনের ঘটনা!
ফেব্রুয়ারি মাসের কথা! 'নাইসে' মেলা
দেখিবার জন্ত বেলা ৮০৫৫ মিনিটের ট্রেণে '
উঠিলাম—রাত্রের ট্রেণ আমি মোটে পছল
করি না। স্থির করিলাম, প্রথম রাত্রেই
ট্রেণ মার্মেল পৌছিলে নামিয়া রাত্রিটার
মত সেধানে ওয়েটিং রুমে বিশ্রাম করিব—
পরনিন, সকালের ট্রেণ ধরিয়া, বেলা তুইটা
নাগাদ নাইসে পৌছাইব।

টেশনে সে কি ভিড় । টেশনমান্তারের অহ্থাহে একথানি কামরা বেশ দথল করিরা ছিলাম। সে কামরার সঙ্গীর মধ্যে কেবল লখা কোট-পরা, আর একটি ভুত্রক্রোকা। তিন চারিটা টেশনের পরই তিনি নামিবেন, তর্থনী সম্পূর্ণ কামরাথানি একলা আমারি অধিকামে আসিবে। একলা। আঃ, কেবল এটো চড়িবার সমরই এই স্বার্থপর নিঃসঙ্গ ভারুটা, এত আরামের, এত আকাক্ষার।

ছইট। ঘণ্টা পজিয়াছে—টেণ এখনি ছাজিবে—এমন সময় আমাদের কট্নবায় সন্মুখে রীভিমত গোলমাল বাধিয়া গেল!

धकाँ कीलाक-शतिकात कर्छ छोजः चरत किरकरक्-"ना, मंश्रातः ना-संगात বুমোবার অন্ত বতী কুমিরা চাইই'— টেশন-মাটার তাঁহাকে বুঝাইতেছে—"এখানে সে কুমিরা দেওরা বাইতে পারে না—এখন সকাল ৮॥•টা! সন্ধার সমর সে কামরা মিলিবে!"

"কোথায় মিলিবে ? আমাকে কতদ্র থেতে হবে" ইত্যাদি মৃহভংসনায় স্ত্রীলোকটি ষ্টেলনমাষ্টারকে বিব্রত করিয়া তুলিল।

এমন সমর তৃতীর ঘণ্টা পজিল। স্ত্রীলোকৃটি প্রচুর লগেজ লইরা কামরার প্রবেশ করিল। প্রবেশ করিরাই কহিল, "এ কি, কামরায় হজন লোক!"

ষ্টেশনমাষ্টার বিরক্তির সহিত কহিল, "তা বলে, আপনার জভ একথানা গাড়ী ত ছাড়িয়া দিতে পারি না।"

"বেশ—টেলিগ্রাম করো—যেন ঘুমোবার গাড়ী পরের টেশনে পাই !"

ট্রেণ ছাড়িয়া দিল।

ন্ত্রীলোকটির সহিত পাঁচ ছরটা ব্যাগ এবং শীতের কাপড়চোপড় প্রভৃতি অসংখ্য !

তথন শীত প্রচণ্ড! কুয়াসার সারাদিন
স্থাকে ঢাকিরা রাখিয়াছে! কামরার
সাশি, বন্ধ-ভাহারি ভিতর দিরা ফড়দ্ব
উদ্ধো যার, কেবল কুরাসা-কুরাসা! যেন
বাহিরটা আগাগোড়া জ্মাট বর্কে ঢাকা!

জীলোকটি দেখিতে বেশ! এই রাগ-রাগ ভাবে মুখথানিকে বেন আরো স্থলর করিরা তুলিয়াছে!

সঙ্গীট খুবই গন্তীর প্রকৃতির লোক—
থবরের কাগজের মধ্যে এমনি নিবিইচিত বে,
অগত্তর আর কোন্দিকে দেখিবার তাঁহার
ভাবসর ছিল না।

'छेथन (वर्गा नारेफ अभावता ! 'नारवाहि'!

'লারোচি !' টেশনের পোর্টার হাঁকিয়া গেল ! আমাদের গন্ধীর সঙ্গীট কাগজের তাড়া প্রভৃতি লইয়া নামিয়া গেলেন ! 'টেশন মাষ্টার' 'ইনস্পেক্টর' প্রভৃতি শব্দে স্থানটা কিয়ৎক্ষণ মুখরিত করিয়া স্ত্রীলোকটি আবার স্থির হইয়া বসিল; গাড়ীও ছাড়িয়া দিল।

রাগে, ছঃখে, অপমানে ত্রীলোকটি কামরার এক কোণে বসিয়া রহিল ! আমি
নিতান্ত নির্নজ্যের মত কাগজ রাখিয়া দিয়া
তাহার প্রতি কোতৃহল দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতে
ছিলাম। কি স্ত্রে আলাপ করা বায়, ইহাই
আমার একমাত্র ভাবনা। "জানলাটা খুলিয়া
দিব ?" "শীতটা প্রচত্ত"এ সব মামুলি ভূমিকাও
নিতান্ত অসকত! জানলা ত বন্ধ আছেই,
এই শীতে খুলিবার কথা তোলাই নির্মাদ্ধিতার
চিক্ত! নিস্তন্ধতা অসম্ভ হইয়া উঠিল! একটা
নূতন বক্ষে আলাপের স্ত্রপাত্র করিতে
হইবে! কিন্তু কি ক্থা কহিব !
কি

ভাবিয়া উপায় স্থির করিতে পারিতেছি না, এমন সময় ট্রেণ টোনারে আসিয়া পৌছিল। পোর্টার হাঁকিল, "টোনার, এখানে পাঁচিশ মিনিট ট্রেণ থামিবে!"

আমার সহ্যাত্রিণী ধীরে ধীরে বাগ নামাইয়া, লগেজ প্রভৃতি গণিয়া লইয়া প্লাট-ফর্মোনামিল। তথুন বেলা প্রায় তিন্টা! কুধায় আমি অস্থির হইয়' পড়িয়াছিলাম। আমার সহ্যাত্রিণী ধানিক দ্র জ্ঞাসর হইতেই, আমিও ভোজনালয় উদ্দেশ্যে তাহার অসুসর্গ করিলাম।

টেবিলে রীভিমত ভিড়!় নানারঙের পোলাকে, নানারপ মূর্তি হাসি-গর-গুজবের সহিত ভোজনে ব্যস্ত! এ সকলের প্রতি আষার গক্ষ্য ছিল না—পাশের খরে -ভোজন-রতা সহবাত্তিশীর প্রতিই আমার আগাগোড়া লক্ষ্য ছিল!

ভোজনাদি শেষ করিরা আমি প্লাটফর্শ্বে
আমার কামরার সক্ষণে আসিরা সিগারেট
ধরাইলাম। পটিশ মিনিটও শেষ হইরা আসিক্রছে! বাজীরা দলে দলে আসিরা আপনআপন কামরা অধিকার করিতেছে! আমিও
আসিরা বসিলাম! সহসা দেখিলাম, আমার
সহবাত্তিশীট ওধারের প্লাটফর্শ্বে বুক্টলে
বহি কিনিতে বাস্তঃ!

আমি শক্তি হইলাম ৷ ট্ৰেণ ত এখনি প্লাটফর্ম হইতে এ সময়টুকুর 'মধ্যে আসিয়া পড়া অসম্ভব ! বেচারীর ব্যাগ, গরম কাপড় প্রভৃতি এখানে পঢ়িয়া, টেণ ছাড়িয়া দিলে, সারারাত্তি এই শীতে কি অসহ কট হইবে! গার্ডের বাঁশী ৰাজিল-ভার উপার নাই ত! ভাড়াতাড়ি, ব্যাগ, গর্ম কাপড় প্রভৃতি श्लाडिक्ट्यंत्र विटकः हु इता निनाम। নিকটে अक्ठा कृति पांफारेशाहिन, छाराक कश्निम, বিনিস"। গাড়ী চালতে "মেমসাহেবের লীপিল-আমি প্রাণপণ বলে তাহার লগেজ शाहिकत्र हृष्टि नागिनाम।

' "একি, একি, মশার !" পশ্চাতে ফিরিরা দেখি, আমার সহযাজিশী !

উঃ, আমি জি তুল ক্ষিয়াছি! বুক্টলের শ্রীলোকটিকে আমার সংবাতিশী বলিয়া মনে ক্ষিয়াছিলাম। কি বিপদ!

অন্তলাকটি কহিল, "আমার ব্যাগ ? বংগল ? কে চুরি করিলু ?" খ্রীলোকটি আমার প্রতি চাহিল। 'কি লে তীব্র, উগ্র দৃষ্টি! জীবনে আমি তাহা ভূলিব না। '

আমি কহিলাম, আমার পর বাধিরা বাইতেছিল—"ভূল করিরা আমি প্লাটকর্ম্বে কেলিরা দিরাছি।"

"ভুল ৷ আমার লগেল ?"

শ্রী, ভরত্ব ভূল করিরাছি! কিন্ত্র
আঘার উদ্দেশ্র মন্দ ছিল না। আমি ভাবিরাছিলাম—আপনি বৃঝি টেপ ধরিতে পারিলেন
না—এই প্রচণ্ড শীতে আপনার কট হইবে
ভাবিরা আমি আপনার জিনিসপুত্র প্লাটফর্ম্মে
একটা কুলির জিম্মার সূর ছুড়িয়া দিয়াছি!
পরের টেশনে টেলিগ্রাম করিয়া দিব। কোন
ভাবনা নাই, আমি নিজে টোনারে ফিরিয়া
আপনার লগেজ লইরা আসিব! আপনার
পোবাকের মত পোবাক পবা, এমনি স্ন্ত্রনী
আর একটি স্ত্রীলোককে দেখিরা, আমি ভূল
করিয়া ফেলিয়াছি। ক্ষমা করিবেন! এক
নিশ্বাসে কথাগুলি বলিয়া গেলাম।

ক্রীলোকটি কহিল, "বেশ করিরাছেন, মশার,--এখন আমার উপার? এই প্রচ্প শীতে আমার একধানাও গ্রম কাপড় নাই!"

কথাটা ভাবিবার বিষয় ! আমি কহিলাদ্রু "আমার আলটার—বদি কিছু মনে না করেন —আমি গুলিয়া দিতেছি, আর আমান এই রপুথানা বেশ গ্রম; বোধ হয়, কোন কটি ইইবেনা !"

' "ধক্তবাদ! কোন দরকার নাই, মণার।" ত্রীলোকটি এক কোনে ব্যিষ্য সহিলা/

উ:, স্নামার মনের অবস্থা, তথন ! আমার মনে হইতেছিল, ট্রেপ হইতে লাকাইরা গড়ি ১ এমন বিপাধেও মান্তব গড়ে!

चाचि कहिलाम, " "वित किছू मत्न ना করেন ভ আমার রগধানা"। "কোন দরকার নাই ; আমি ভ আপনাকে, কিছু বলি নাই মশ্রি । আঃ, কি জালা সে স্বরে! আমি গুড়াইয়া উঠিলাম! কহিলাম, "আপনি যদি ্ৰিই রগ ও আলষ্টার না লন্ত' আমি এখনি ট্রেণ হইতে লাফাইরা পড়িব।" कार्भतात मत्रको चुनिया माङाहेनाम ।

স্তাই হয়ত পড়িতাম আমার মাথার মধ্যে তথন আগুণ জলিতেছিল। আমার জান ছिन ना-द्योद्याकि आमात्र हाउ धतिन; রগ ও অলেষ্টারু গ্রহণ করিল। আঃ, আমি ্যেন কভকটা আশ্বন্ত ছইলাম !

बोलाकृष्टि कहिन, "आश्रनात त नीउ লাগছে"।

चानि कहिनान, "किছू न!!" भीउ धूरहे প্রচণ্ড বটে! কিন্তু আমার পাপের ইহাই উপবৃদ্দ প্ৰায়শ্চিত!

তার পর নানা কথাবার্তা। ভালো মনে নাই, কারণ তখন আমার অসহা শীত লাগিতে-ছিল! কিন্তু আমি প্ৰাণ দিতে উন্নত ছিলাম, এ শীতও আৰু আমার পক্ষে কত তুচ্ছে!

রাত্রি শাড়ে সাতটা—ডিজনে পৌছাই-লাম। টোনারে টেলিগ্রাম ক্রিয়া দিলাম! শীতে অমিয়া বাইবার উপক্রম !

রাত্রি সাড়ে আটটার মেকান! শ্রীলোকটি শরন-কামরার কথা ভূলিরা গিরাছে !

রাত্রি পাড়ে ন'টায় 'ভালে'; স্ত্রীলোকটির কথা অস্পষ্ট ভনিতে পাইতেছিলাম। আমার হাতে পায়ে কোন সাড় ছিল না ৷ নাক জালা করিতেছিল মাথা ঘুরিতেছিল! : তারপর কিছু মনে পড়েনা।

যথন চোধ চাহিলাম, তথন দেখি সজ্জিত ককে শুইয়া আছি ! পাশে, আমার সহ্যাত্রিণী। আমি কহিলাম, "আপনি ? আপনার লগেঞ ? সে কহিল, "আমার জিনিষপত্র পাইয়াছি-আপনি নিশ্চিম্ত হোন্ এমনি করিয়া কি আত্মহত্যা করিতে হয় ?"

সে বরে কি আখাস! কি করুণা! স্বর্গের বীণা যেন আমার কর্ণে ধ্বনিত হইয়া উঠিল।

আমার অজ্ঞান অবস্থায় স্ত্রীলোকটি আমাকে মার্শেলে ভাহার আত্মীয়ের বাটি লইয়া আসিয়াছে! পর্দিন আমি নাইসে গেলাম। আমার সহযাত্রিণী সিরি এবার ও আমার স্বিনী। আর বেশী কি বলিব । এক সপ্তাহ পরেই আমাদিগের বিবাহ!"

निमिन यामात्र शिक्ष ठां भए। देश कहिन, "मावाम।"

वित्रोत्रोक्त्याहन मृत्यां शामा ।

কাশীতে এক সপ্তাহ।

र्थक मृखार हिनाव।

्रविष्टानी টোলার বাহিরে এবন এত পরিবর্তন ও বড়

ব্রিণ ব্যার পরে গভ আবণ বাসে কাশীভে সিরা কাশী নর। পূর্বে দশাব্যেই থাটের অর্থবাইল দূরবর্তী এক মাঠের কুত্র কুত্র ক্ষেত্রাধিকারীগণ প্রাভঃকালে निस्त्र , क्य উরতি চুইয়াছে বে বনে হয় বে এ কাশী আর বেন সে পিয়া এখন প্রাতঃকৃতা সম্পন্ন করিবার অভ

বছ বিনর শ্বকারে আবজুণ করিত। এখন সেই মার্চ
প্রবার অট্টালিকানর হইরাছে। গলার উপরে সেতু
নির্দ্ধিত হইরাছে, সর্বার জলের কল হইরাছে, পথ
সকল প্রসারিত হইরাছে, নানাছানে ভাকবর হইরাছে,
বালারগুলি পাকা হইরাছে। বালালীটোলা বিভার
লাভ করিরা কেদার ঘাটেরও বাহিবে গিরাছে।
আনেক বালালী বড় বড় বাড়ী করিরাছেন। বালালীর
সংখ্যা শুনিলান ছই লক্ষেরগু অবিক! বজনেশ ভির
ভারতবর্ধের অক্ত কোন প্রদেশের লোকই এত অবিক
সংখ্যার কাশীতে বাস করেন না। মরাঠার সংখ্যা
প্রার্হ পাঁচ সহত্র, পঞ্জাবীর সংখ্যাও তাহাই। বালালীর
অ্বিকাংশই এখানে মরিরা সংগাও লাভ করিবেন এই
আশার আসিরাছেন।

আৰি অপরাহে কাশতে পৌছিলাম। তখন পুৰ वृत्रि स्टेल्डिन ; (लें)हिवारे लेबिनाय व बायाव नूर्य পরিচিত লোকদের মধ্যে কে কে এখনও কাশীতে । আছেন ভাহার অসুসন্ধান করিব। অনেক অসুসন্ধানের शत्र कविद्राय वैषुक जेवत्रवस ७४ महानदात्र माकार পাইরা ভাঁহার কাছে জানিলাম বে আমার পূর্বপরিচিত ল্মেকেরা পার সকলেই ফাশীলাভ করিয়াছেন। তথাশি আর একবার কাঁকিনার ৰাড়ীতে গেলাৰ; এই খানেই আমি পুর্বেণ ওিড বাদ্যবেদর তর্করত্বের সহিত একত্ত বাদ করিতাম। ভিনি এবন রক্ষপুরে,—ভাহার দহিত দেখা হইল না; ডাঁছার পিতৃস্বদাকে দেখিতে পাইলাম : তাঁহার বয়স এবন ৮৫ হইবেণ তিনি আমাকে চিনিতে शाबित्वन ना-किन्न यात्रि छोहादक हिनिनाम। खाँहात छगःक्रिष्ठे नद्वीत अधनन्याक्यात्वरे बलशेन श्रेष्ट्राह्य। আমরা যথন কাশীতে অধারন করিতাম তখন তিনি বেরূপে চাতৃষ্টির ব্রস্ত করিছেন সেরূপ কঠোরব্রস্ত আর কেহ করিয়াছেন ব্লিয়া শুনি নাই। সেই চারি-সাস প্রভাহ ভিনি কাশীর সর্বাত্ত প্রবাদে ত্রন্থ করি-ছেন। সন্ধান পূৰ্বে ক্রিয়া আসিয়া একটা বিবংগত 'এবং এক সিকি পরিষিভ মুত আহার করিছেন: এ**কাৰখী**ৰ দিন ভাষাও থাইতেন না। এই আহারে अवर द्वारे पश्चित कित व कित्राप ठावियात्मव परवश्च बैंकिश बरियान देशहें कान्क्या। छिनि त्य वर-

সংবের কেবল চারি নামই এইরুপ; ডপঃপরার্রণা থাকি তেন তাহা নহে। প্রতি, স্থাহেরই অস্তত তিন্দিন নিরমু উপবাস করিতেন।

ज्यनकात बाद अकेंग्रे गार्द कथा अरे शास वृति-ডেছি। ভাঁহার নাম হরিনারায়ণ যোগ। পণ্ডিত বা শাল্লজ হিলেন না কৃতি সামাল লেখাপ্টী, কানিতেন। তাঁছার মাসিক আর ছিল পাঁচ টাক্ ৰাত্ৰ। কাঁকিনাৰ হাজাৰ কাশীতে যে ছুইটা ৰাড়ী আছে ভাহার ছোট ৰাড়ীয় ভখাৰধান করিভেন বলিয়া রাল সরকার হইতে তিনি এই বৃত্তি পাইতেন। ভাঁহার কাৰ্বাক্ষেত্ৰ অতি সংকীৰ্ণ ছিল। পঞ্চায় প্ৰত্যুহ স্থান করিতে বাইভেন স্বভনাং ঘট হইজেু 'কাঁকিনার্ বাড়ী প্রয়ন্তই তাঁহার কার্যক্ষেত্র ছিল। কেন না বাইক্য ও হাঁপানির অস্ত এবং অর্থাড়ার বশত তিনি অস্ত কোন, शांत वारेट भातिर जन्ता। किस धरे सूख गिर्व े মধোই তাঁহার লোকহিতৈবণা প্রকাশ পাইত। তিনি অধিক জপতপ করিতেন না। স্থানের পর ও সন্ধার नमरत क्टब्रक विनिष्ठे याज बन ७ शान कतिराजन अनर বৰন একাকী থাকিতেন ভখনও নানা লগ ক্য়িতেন। ৰধন নিৰটে লোক থাকিত তথন তাহাদেৱই সংিত আলাপ করিভেন এবং যাহাতে লোকের উপকার হর क्बन त्रहे **डे**नएन्हे पिट्जन। ज्ञान क्रिट्ज शहरात्र স্বয়ে কিছু কড়িও ছুই চারিটা আধ পয়সা সঙ্গে 🔟 नहेदा शहेरछन ७ छाश ऋग अक्स वास्तिमगरक मोन করিতেন। বাড়ীতে প্রত্যাহ বৈকালে সহাভারত পাঠের বন্দোৰত হিল্ ভাহা ভনিভে প্রত্যুহ थात अक्षण्ड नदनाती चामिरुन। শ্বা, আহার্য এমৰ পরিকার পরিচছর রাখিতেলংখে তেমৰ আমি অভ্যৱ বালানীরই দেবিয়াছি।' বালানী-দের বেবানে সেবানে খুপু কেলা চিরকালের অভ্যাস। বলি কেছ ৰাড়ীয় এাজণে খুগু ফেলিভ ভাৰা হইলে » হোব সহাপর "একি করিলেন !" এই বলিয়া তখনই তিনটা পরণা বরচ করিয়া হই ভিন ভিচ্চি কল আন্য-ইরা সমস্ত আ**জৰ পরিভার করাই**তেন[া], দ্রিত विश्वा अवः बृद्धवा छात्रावं निकाते छात्रात्रवं निका वर्ष बारिका क्षि। वश्वरे छारात श्रीकादृष्टि वर्रेक

তাহাদের টাকা তাহাদিগকে প্রতার্পণ করিতেন। কাহাটেও স্মালচ্যত ক্রার প্রভাব হইলে তিনি স্মৰ্যদাই সেই প্ৰস্তাৰের বিরোধী হইতেন-বলিতেন "ত্মি জাৰি কি কখনও কোন বোৰ করি নাই !" একবার একটি লোক ভাঁহাকে সামাক্ত একটি মিধ্যা ¹ কথা ৰলিতে অস্বেধি করিয়াছিল। তিনি বিরস্ত চুট্যা উত্তর দিয়াছিলেন, "কাশীতে আসিয়াছি মরিতে. এখানেও মিলা। বলিব ? ভাষা পারিব না।" একদিন औरहे दिन्तीय अक्ती रिवलात गुजा हम। জাঁচার ভিন্টা স্বলাভীর ছিলেন। কিন্তু ভিন্তানে শ্ব वहन कतियां भिन्किर्निकांत्र लहेगा शास्त्रा विस्मव कडेकव বলিয়া তাঁহারা আর একটা বৈদ্যের সন্ধান করিতে করিতে আমরে নিকটে আসিয়া উপস্থিত চইলেন। ু আমি তাহাদের সহিত যাই 🗯 জন্ত প্রস্তুত হইসাব। এমন সময়ে আমার অভিভাবক স্থানীয় একজন ত্রাহ্মণ ए अकसन देवमा चामिया बिलालन एवं श्रीहरहेत्र देवरमात्रा ভাষাদের সমাজের নঙ্কেন স্বতরাং আমার কোন মডেই এ কার্য্যে যোগ দেওয়া উচিত নতে। ঘোব মহাশর ৰলিলেৰ "ছেলে মাতুৰ ইচ্ছা করিয়া বিপদাপর লোকের উপৰাক করিতে চাৰিতেছে ভাৰাতে দোৰ কি গ যদি कान लाव इव छाहां नजानान कवितारे वाहेता। বাদবেশর পণ্ডিত সহাপরের পিতৃত্বসার কঠোর এতের প্ৰতিবাদ খোৰ মহাশন্ত সৰ্বাদাই কলিতেন, বলিতেন, "মা আপনি এইব্লপে উপবাস করিতে করিতে যদি মরিয়া বান ভাষা হইলে ত আপনার আতাহত্যা করা बहेंद्र्, जाश हरेल छ कानीत्छ महित्नल छेडात **२**हेर्द ना।"

এবার বেদিল কাশীতে পৌছিলান ভাহার প্রদিন অল্পুণির বাড়ীর একটা ব"াড়ের মৃত্যু ছইল। বছবাদ্য বাজাইলা, নিশান উড়াইলা বহাসমালোহে বছলোকে নেই ব"াড়ের শব গলার বিসর্জন করিল। আর্থ্য সমালের একটি ব্বক প্রে এইলপ ব্যাপার বেথেন নাই। তিনি থিমিত হইলা জিজ্ঞানা করিলেন বে, একটা ব"াড়ের জেল এত ঘটা কেনুং উপস্থিত একজন গলীর ভাবে বিনিলেন, "অল্পুণির ব"াড় হিন্দুর মহাপ্রা বনিরাই, ভাহার জল্প এইলপ বহাসবালোহ হইভেছে:"

আর একজন গস্তীরতর ভাবে বলিলেন "আপনি জানেন ন। বে হিন্দুরাঁ বড় ভক্তিমান জাতি। বৃক্ষ তাঁহাদের পুলা, প্রন্তর তাঁহাদের পুলা, মত্ব্যকৃত মৃত্তি তাঁহাদের পুলা। কেবল ঈবরকে পুলা করিতে হয় ইহাই তাঁহারা লানেন না।"

বওদেবের মৃত্যুর প্রদিন বৈকালে শ্রীযুক্ত কীব্রচন্দ্র প্রথ মহালয়ের সহিত বাঙ্গালীটোলার মধ্য দিলা বাইতে ঘাইতে তিনি একটা দশ এগার বংসর বয়ন্দ্র বাঙ্গালী বালককে দেখাইয়া বলিলেন বে, সেই বালকটা সমন্ত বেদ অধ্যয়ন করিয়াছে। বলিতে বলিতে বালকটা সমন্ত বেদ অধ্যয়ন করিয়াছে। বলিতে বলিতে বালকটা আমার অতি নিকটবর্তী হইল আমি তাহার হাত ধরিয়া কেলিলাম। করেকজন লোক হাঁহা করিয়া বলিল "ও ব্রহ্মচারী উহাকে, ছুইবেন না।" আমি বালকটাকে ছাড়িয়া দিলা ছুই একটা প্রশ্ন করিলাম। দেখিলাম সে সংস্কৃত কহিতে পারে না কিন্তু ব্রিতে পারে। পরে প্নরার তাহাকে ধরিয়া সম্প্রহে তাহার তাহার মুধে হাত বুলাইয়া দিলাম। বালকটা সম্ভই ছইয়া চলিরা গেল।

বানন "ছেলে মানুৰ ইচ্ছা করিয়া বিপদাপর লোকের

কারু করিছে চাহিতেছে তাহাতে দোব কি ! বদি

কারু করিছে চাহিতেছে তাহাতে দোব কি ! বদি

কারু করিছে গারে না ইহা ছু:বের বিষয় বটে কিন্তু

ন দোব হয় ভাহা পলামান করিলেই বাইবে।

আশ্রেমির বিষয় নহে। কেননা বালালীরা প্রাহই

নংস্কৃতে কথা করিছে শিলা করেন না। যে বলদেশে

তবাদ ঘোব মহাশয় সর্বাদাই করিতেন, বলিতেন,

এত বড় বড় সংস্কৃতত্ত পণ্ডিত মাহেন এবং লব্ধপ্রতিষ্ঠ

শংস্কৃত গ্রন্থকার আছেন, যে দেশের লোক ইংরেদী

যো যান তাহা হইলে ভ আপনার আগ্রহত্যা করা

ভাষায় বন্ধকা করিয়া সম্পূর্ণরূপে প্রতিপন্ন করিয়াহেন

যে বিদেশীভাষার উপর আধিপত্যবিভার করিবার

ক্ষেত্য উহাদের আছে,—দেই দেশের লোক তাছেলা

এবার বেদিন কাশীতে পৌছিলাম ভাষার প্রদিন

ব্রাহা কেন যে সংস্কৃতের উচ্চারণ করেন না ভাষা

ব্রাহা বিশ্বন উড়াইরা মহাস্বারোহে বহলোকে

ক্ষিত্র পারি না।

একদিন রামকুক্ষিশন আশ্রমে গিরাছিলার।
ইহারাই বাভবিক প্রেনের, কার্য হাভরাং ধর্ম্মির্যা
ক্ষিভেছেন। বেধানে লগ্ন বৃদ্ধুইান অসমর্থ ব্যক্তিকে
ক্ষেত্রিত পান ভাহাকে আশ্রমে লইরা আসেন এবং
উবধ পধ্য কেন। বলি কেহ কুসংস্কার বৃশত আশ্রমে
বাইতে,না চাইং ভাহা হুইলে উহারা সেই রোগ্নী

বেখানে আহে সেখানে পিয়াই ভাষার চিকিৎসা ক্রিয়া থাকেন। অনেক হো দ্বীপুরুষ আশ্রেষ তন্মধ্যে ছুইটা হিন্দুবানী সন্নাদীকে मिविनाम। मूम्बू जनशास बालास পড़िया हिलन বিশবের লোকেরা সংবাদ পাইরা ভাঁছাদিগকে चार्ट्या महेबा शिवा ७ आवा कविवा दीहाहेबाट्टन। সাধারণের সাহাব্যই এই বিশ্বের একমাত্র নির্ভর। बिगत्नद लात्कदा चपूर्ल छात्रः चौकाद कदिता अह ক্ৰদেৰাত্ৰত এহণ কৰিয়াছেন। সহজ সহজ হিন্দু অভি নিয়ত পুণ্য সঞ্চ করিবার জন্ত কাণীতে निया बारकन । छाहाजा वनि अछारकहे এই विभरन লিঞ্চিৎ দান করেন ভাষা ছইলে ওঁংহাদের পুণ্য বে বৰ্জিত হইবে এ কথা কি এখনকার অচলিত **ब्लिय्**र्वावनची ব্যক্তিরাপ্ত বুঝিতে व्यमयर्थ १ चनिक्रीचेकान भूर्स्य अञ्जिक शिस्प्रदर्वत चरहा এরণ ছিল যে ঘাঁহারা নিরবজ্ঞির ধর্মকর্মের জন্ত ভীৰ্ষে বাইতেৰ তাঁহাৱাও কোন সহযাত্ৰীর পীড়া হইলে ভাহার মৃত্যু প্রয়ন্তও অংশকা না করিয়া ভাহাকে জীবিত অবস্থাতেই ব্লাভার কেলিয়া চলিয়া बाइँएवन । वर्डमान हिम्मूप्रदेश करहा कि छन्राभा উল্লভ হয় নাই ? এখনকার হিন্দুরাও বলি ভাবেন ব্েরাষ্ট্রফ বিশন কেবল সকল বর্ণের লোককে এক্তিত ক্রিয়া ও একতা পাওয়াইরা জাতি নারিয়া बर्फनहे कविवाब बच्च भवन्तिराक्षेत्र निर्धामिक श्रयहत्र ভাহা হইলে হিন্দুলাভির ওভ-পরিণামের কি খাশা चाट्ड ?

আর এক সম্প্রদার অস্ত দিক নিয়া হিন্দুসমালের কল্যাণ কার্য্যে ব্যাপৃত আছেন। ইঙারা
নেরানন্দ বানী অভিটাণিত আর্থ্যসমালের লোক। এই
সমালের অনেকেই নিজের সর্কাব সমালে দান করির:ছেন। ইঙারা সকলেই পঞ্চাবের অধিবাসী। এবার
আমি কানীতে বিলা ইঙাদেরই এক জনের বাসার
অভিধি হইরাছিলাম। তিনি কেপবদেব বাস্তী
ক্রিয়ায়। ইডার বরস ত্রিপ ব্রিশ বংসর। ইনি
শুক্রন্ট, সংকৃত, ইংরেজী, পারসী, শুলরাটা, নরাঠি,
উর্জু, বাস্থানা গ্রন্থতি ভাষা আনেন। ভারত্বর্বের

সৰ্বত অৰণ করিয়াছেন। ত্রিকাড়াছ বিধাত ▼বিরাজ ৺ বায়কানাধ সেব মহামহোপাশ্যায়ের निक्रि बन्नप्रम अञ्चल हिक्स्मा बिन्ना भिक्स कृतिहा এখন কানীর দৃশাধ্যেধ খাটে চিকিৎসা ব্যব্যায় कतिता थारकन । अक्थानि छेर्क् छ नवजीवन नारम् একথানি হিন্দী পত্রিকার সম্পাদকতা করেন। এখনও 🤈 व्यविवाहिक। भंबीदा ७ वटन व्यवका वन, कृ हिं छ উৎসাহ। ইহার মুখে গুলিলাম বে কুলীতে আগ্য সমাজের বে শাখা আছে ভাষার পহিত রাজনৈতিক कान मध्यव नाहे—छांशवा बाबनोछिक कान bbis করেন না। ভারতবর্ষের অভিসম্পাত সক্লপ ভাতি-टन ७ उपश्चित केटक्टन के कार्यात करा । वर्डमान बाक्ररेनिक चात्नामनरक फीश्का व स्वरम সময়োচিত নহে বলিয়া মান করেন ভাছা নহে গহিত कार्या विश्वारे विटवतून। कदतन। छीहाता बन्ध-চৰ্যোর শব্দপাতী হইলেও অনেকে বিবাহ দিতে না পারিয়া বেরূপ বিপদ্গত হইরা থাকেন তাহা জানিয়া अक्षी तम गर्भावन कतिहास्त्रम्, अहे परमह बाख्यास्परे যে কোন অনেশের যে কোন মাডির শিক্ষিত কল্যাকে विनाह क्षिएक अञ्चल बाह्यन । এই मानव अरका-**(क्रे डेक्ट वरनीय ७ दिवविमा। मात्र निक्कित , आ**याव এক বছুর ক্তার সহিত আমি এই খলের কোন বাজির বিবাহের প্রস্তাব করিয়াছি। এবনও তং-সম্বন্ধে কথাৰাত্তী চলিতেছে।

পান্ত্রীল ছই বিন আমাকে বলাখমের বাট হইতে
তিন বাইল দূরে নিল বাটাতে আহারের নিন্দ্রণ
কবিরাছিলেন। প্রথম দিন গিরা দেবিলান নিমন্ত্রিতদের মধ্যে হিন্দুখানী, বরাঠি ও গঞ্জানী করেবলন
আকেন। সকলেরই মন্তকে শিবা। গঞ্জানীকেন এবলকন বি এ উপাধিকারী নাম সিজেন্তর। মুহারান্ত্রীরটী
বেনারস হিন্দু কলেকের একটা আক্রণ ছাল। আহার্ব্যি
সমন্ত বছাই নিরামির এবং সাদাসিথে রক্ষের।
উহারা লীবিত বাকিরা কার্ব্য করিবার গুল্লই আহার্থ
করেন কিন্তু কেবল আহার করিবার কল্পই লীবল বার্থ
করেন না ইয়া লাই বেবা পেল। ভোলন হইল
ভিবিলে। আহারে ক্ষিবার প্রেক্তি রাক্ষ্য, ছাল্লটি

বলিলেন "আমি নিজ্যের করিব কোধার ?" তথন
একজন উটিয়া গিলা করেকটা লেব্র পাতা আনিলা
গিলেন। তাহার একটা পাতা টেবিলের উপরে
রাখিয়া সেই পাতার উপরে রাজনী মুবকটা নিবেদিত
পার রাখিলেন। আহারের পূর্বে অগ্নিপাতে প্রজালত
আগ্নিতে সংস্কৃত মন্ত্র পাঠ করিতে করিতে ভ্তাহতি
গিলা হোম,করা হয়। তাহার পর প্রথিনা,—অবশেবে
আহার। বিক্রীয় দিন নিম্তরণে হোমের পর একটা
মহিলা হিন্দী ভাষার প্রথিনা করিলেন।

দ্যানন্দ খামীর উত্ত বীজোৎপদ্ম বৃক্ষ যে এত শীঘ বর্তবান সমৃদ্ধ আকার ধারণ করিবে ভাষা ভিনিও ভাবিয়া ছিলেন কি না সন্দেহ। আমি পূর্বে কাণাতে अवद्यानकारत अध्यम वर्गत आह्न अछारहे देवकारन ' छांश्व निकटि बाहेग्रा हुई जिन घंछा बाकिया छांश्व সহিত অক্সাক্ত প্ৰিভদিগের কথোপকণৰ শুৰিভাষ। মুখোচ্চারিত সংস্কৃত পুরমানক অমুভব করিভাম। ममारकत अधिकारन लाकहे डाहारक स्थान नाहे, আমি তাঁহাকে দেবিয়াছি ও তাঁহার সহিত বছবিন আলাপ করির ছি বলিরা আর্থ্য সমাজের অনেকের কাছে আৰি আদর ও সন্ধান পাইয়াছি। তিনি बाडिएडम, शुनवांत्र, आह. छर्पन, दशय, त्रावत অপৌক্রবরতা, রাধারণ মহাভারত ও মমুসংহিতার প্রামাণ্য মানিতেন। কিন্তু তাঁহার আভিভেদ বর্তবান হিন্দুদ্যালের লাভিভেদের স্থায় ছিল লা ৷ তিনি শ্লের অন্ত গ্রহণ করিতেন বা এবং শুলের বাড়িতে ভিক্ষা করিতেও বাইতেন না—কিন্তু বজিতেন বে শ্র বদি নথকেশ কর্তন করিয়া ভাল করিয়া স্থান ক্রিয়া ওছ শরীর ও গুছ বেশ হয় তাহা হইলে সে शाक कतिया मिला बारादिक दकान वाबा स्टेटक ' পারে না। রাজেঞালাল বিত্ত শুফু হইরাও বেদা-ধ্যয়ন করিয়াছেন শুনিয়া **বলিলেন, তবে তি**নি ব্রাহ্মণ ^{ছিইরাছেন। ৫.} বাহ্মণ কুলে ক্যা প্রহণ করিয়া যাগারা · লেখাপ্ডা শেৰে ৰাই বিশেষতঃ বেলাখ্যন করে বাই তাহারীই তাহার বতে पृता। ইহার বতে ঈবর বা गानिरम्७ हरन किय माराजा प्रवर्ण बारन ना

ভাষারাই প্রকৃত নাছিক। প্রাদ্ধ ও ওপণ বিবরে ধরানন্দ থানী বলিতেন বে, মৃতক্রনদিগকে প্রভাৱ একবার মূরণ করিলে আমিও বে একদিন সরিব ভাষা বনে পড়িয়া বনে বৈরাগ্যের উদর হয়। হোম সবজে স্থানী বলিতেন বে, হোমের ধুম মেখে লাগিয়া মেখের জাল বিশোধিত হয়—মৃতহাং সেই জল বৃষ্টি ধারার পতিত ইইয়া প্রভার হিতসাধন করে।

একদিন এ ঃটা সৌৰিন বিদ্যাৰ্থী স্বাধীর সহিত ভর্ক করিতে গিয়াছিল। ভাহার একটা কথা ওনিসা चामी वनितन 'এकथा कारना (वर्ष नाहे'।' विमार्थी বলিল "আপনি কি সমস্ত বেদ পডিয়াছেন বে এমন कथा बनिएउट्डन ?" बाबी बनिएनन एवं "हाति दवन अ চারি উপবেদ সমস্তই পড়িরছি।" বিদ্যাধী বলিল "এখন कर्यनरे रहेएउ পाद्र ना। दिल अवस এकसा বেদেই আছে। যদি বেদ অনস্ত হয় তাহা হইলে আপনি সমস্ত বেদ পড়িলেন কিরুপে ?" विमान "विक्षि ए एक (वनाः स्मानवसः भूकृताः" ত এৰ অন্তা:। যে বেদকে অন্ত বলা হইয়াছে **डार। भूखक (वन न(र)। भूखक (वन वनि क्रमख** হইত তাহা হইলে মুম্বু তিন তিন বংগরে এক এক বেদ পড়িতে হইবে এক্লপ নির্দেশ করিতেন না।" মতুসংহিতা সকলে খামী বলিতেৰ বৈ ভাহাতে পঁচিশ্টী স্নোৰ প্ৰক্ৰিপ্ত আছে। মহাভাৱত সম্বৰ্কে স্বামী একদিন এক আশুৰ্য্য কথা ৰলিলেন। কালিদাস মাকি একস্থানে লিখিছাঁছেন বে তিনি যথন বালক ছিলেৰ তথৰ মহাভাৱতে চতুৰিংশভি 'সহল্ৰ মাত্ৰ লোক ছিল-তিনি বৃদ্ধ হইয়া দেখিতেছেন বে এখন তাহতে ত্রিশ সহত্র শ্লোক আছে-সহাভারত বদি बहेक्राण विश्व करणवत्र इत्र छाहा हहेरण कारण, ভাহা এক উটের বোঝা হইবে।

খানী হাত পরিহাসে নিপুণ ছিলেন। একনিব উহিংকে একজন বিজ্ঞানা করিলেন "ব্যাসকাশীতে বরিলে কি বাভবিক গর্নত হয়।" খানী উত্তর করিলেন "গর্নতা বদন্তি।" খার একজন বলিলেন কাশীতে বরিলে শিবত লাভ হয়। খানী বুলিলেন শবত বে বাভ হয় যে বিখরে কোন সন্দেহ বাই।

বালালীয়া বানীয় সহিত সালাৎ করিতে সিয়া
বলেশ প্রচলিত অভিবানন করিওেন। কিন্ত হিন্দুহানী
রাজন পণ্ডিত বঁহোরা বাইতেন তাঁহারা সকলেই
বানীনে সাঠালে প্রণান করিওেন। তাঁহারা
অনেকেই বানীর মন্তকে পুশাঞ্জলি বিভেন। আমি
একদিন বানীকে বিজ্ঞাসা করিলান "বাণনি ঈশর
পূলা প্রচার করিতে আসিরা নবপুলার অসুমোদন
করেন কেন?" বানী হাসিয়া বলিলেন "গাখাণ
পূলা করিয়াই ভরতথতের এত মুর্দ্দলা হইয়াছে—
পাবাণ পূলা করিয়া লোকের বৃদ্ধি পাবাণের নত
হইয়া সিয়াছে। তাহারা বদি আনার মত একজন
মুদ্দিনানু ব্যক্তির পূলা করে তাহা হইলে ভারাদের
বৃদ্ধিও বসুবে,য় নত হইবে।"(বরানক বানী ভারতবর্ষকে
ভরতবন্ত বলিতেন।)

বালানীদিগকে স্থানী বৃদ্ধিনান বলিয়া প্রাণংসা ক্ষিতেন। একদিন মহর্তি দেবেজনাথের সহিত এক তণোজনে ওাঁহার সাক্ষাংবাত্র হইগ্রাছিল কিছ আলাপ হর নাই। ক্লিকাতার আদিয়া কেশ্বচল্র প্রভৃতির সহিত আলাপ হইগ্রাছিল। কেশ্বচল্র সেনকে

তিৰি কেশ্বদেৰ চন্দ্ৰ বলিছেক^{া কৈ}ক্ষান্ত ক্ষেত্ৰ **এই अध्यक्ष डेलिय पानी विनासन** "मुद्र वीद्याश्खि।" **ৰহাপুক্ৰ** हिर्लन। **পণ্ডিডকে** তিনি "মহাধুর্তোহভি" ৰার একজন ৰাজানী পণ্ডিত সমূত্ৰে विगालन "किक्षिमी न स्नानाडि।" পতিতেরা সংক্রতে কথা কহিতে পারের না ইহাতে चामीत विचान स्टेबाहिन वि "बक्रांत्रान नशक्रण विमानाः প্ৰচাৰ এৰ নাজি।" বাসালীয়া ব**ক্তা** শুনিতে গুনিতে হাভঠালি দিয়া থাকেন তাহ। দেখিগা কানীতে পিরা স্বামীজ একদিন বলিয়াহিলেন "বসীয়া ৰদা প্ৰসন্না ভৰত্তি তদা হতৈঃ পট্পট্ •ইচ্যাকারং स्वितः क्रविष्ठ।" এकष्ट्रि अकलन विनातन त्य बाजानीया भग्नारक भक्त बरमना साबी बनिरमन "बजोग्रा बकावल सक्तर कुर्वाख ।"

দরানন্দ সর্বতী সথকে আরও অনেক কথ বলিবার আহে। কিন্ত প্রবন্ধ দীর্থ হইরা পড়িল, এছ'ছ আন এইবানেই উপসংহার করিলাব।

वीवोदबन्दत एम।

স্বাধীন ত্রিপুরায় রাজ্যাভিষেক।

ত্তিপুরার নৃতন রাজপ্রাসাদটি কলিকাতার গভর্গনেন্ট হাউসের অপ্তকরণেই গঠিত। মাঝে গল্প, উচ্চ চুড়ার ছাই পার্থে স্থান্দর থিলান করা বারান্দা ভাহার মধ্যক্ষণে স্থান্দির থান্দের উপর গাল্পটি প্রকাণ প্রকাণ ক্ষান্দির প্রকাশ হার্থের প্রাস্থানির ক্ষান্দ্র হার্থির ক্ষান্দ্র সারি সারি অভি স্থানার হার্থির বিশাল সিঁড্রি উঠিয়াছে। সমস্ত বাড়িটি শুরুবর্ণ ইনামেলের পেন্টে, রক্ষিত; ভাহার রক্ষত আভা প্র্যালোকে ও চল্লোদরে বছর স্থান বেঁথার। সম্প্রের কুইটি প্রান্ত

জনে সেই ্ক্রুবি প্রতিবিশ্বিত হইরা সে দৃখ্য বড়ই মনোহারী করিরা তুলে।

এই ইইটি ব্রদের আয়তন প্রায় ৬ মার্হল হইবে। চারিদিকের মহিমামর দৃশ্য, ইহার প্রশন্ত জলে অতিফলিত হইরা—উপরেম' আকাল ও খেত অট্টালিকা ও কুলময় উল্পীন দৃশ্যকে আয়েও উজ্জলতর দেখার। সামনে উপর্যুপরি অনেক্তলি ভোরণের নীচে দিয়া ধারে বাবে সারি সারি গাছবিশিই প্রশন্ত বাজ্ঞপথ সহরের ভিতর দিয়া চলিয়া গিয়াছে। সব রাজা পারীনগরের মত্ সোলা সোজা;

ভাষতি মানের জনিপওওলি দ্ব দ্যান ন দর্শ ভাবে বিষ্ণা প্রাচন রাজ্যে এট দ্বল মূভন ভাবের দ্যাল চেন চিন্নাট ্রা কালোকের মধ্য স্থিকন।

一点一种种种人一种产品的生产的特殊力量 化成化 化乳腺性 化二氯甲基甲酚二氯甲醛 天主义 血性惊厥 出水 作制 计模型 化多烷 ्राक्षः प्राप्ताः स्थान्यः काल्यः अवस्य अवस्य वृत्यं विकर् राज अन्तर । इत् रश्वासाधीन क्षा संक्रम । १४० in the said on the things ा १ । ६ श्रे**ला**चन क्षेत्र (नालाच व्यक्ति) ा गणका न द्वसी १९५५ - ५८ 一个工作的种类 "唯有"的 中国的人们 े दें वा कि सुराय तमने नेत्र विकास मेर व १ क **ाव**ा कर का पास स्थान है कि स्थान के किस की 人名伊尔 化水流 解解医 被说是一样形式 িভিত্ত আৰুত্ত ভাতিত জীৱবোধ মহান িত্র ইতিয়া প্রাণিধ্য বিভালনা -^{पर कारहरा} संजीतनोत -मूच हरून े १ १ अस् । — कोशांत विष्टामको असाम Time with west ("Tayobio") ^{१९} । १८वर अध्यान, अहीरमधी (भोमसी-कर्न । जन्दान दमोन्द्रा धडे इडेविंग व्यवस्

অনাত্র অক্ষয় নৈপ্রিক্তি আক্ষরত এটা ছবিটকে জন্মত ভাবে নেতাত আছে।

াধিবাৰ মানেই কুকটো প্ৰান ১৬৬ इस्पर माधियां कार्यक । इस अवना सुप्रक · 1967年16年 中 Well 中 智術養 用中性 中 - 地震电 (村) 新日 对有下面 医断 (40) 产 (4)期待1期 अन्तरवर्णन करा कार्य । अन्तर्भ पूर्विष्ट्रकः 医硫酸二 化二氯甲酚 医克斯特氏 电影 经现代帐户 The control of the state of the control of the state of t "香秋",《农业》,《农业集》(1)。 《# 医海绵素 不 铁 医二氧化二烷类碱钾医氯甲醛 大的大大的 经收益 医外侧 医腹腔 网络马马斯曼 海山(大大) 水粉 化二二甲甲基二二二二甲基 山縣鄉(北 "才你,你靠你有什么啊!"我想到一点,"才好我,我们是我有 the growth that they # ANTE STORY مهموات ماله وأراديم the state of the state of the state of 一种地 地 人名 "安天人" " 地 一个中间指挥 化 ·我们就是一个位置的"这个"的"一个"。 想到 三重 化合物法 医内壳 经投价 鲱火虾 覆 网络遗孀人 矿氢石 军制工工人 野 中众一致 際政 美国并列 人名英格兰人姓氏伊德特的变体 ভাৰ সংক্ষাণ্ড ২ জনিয়ুকুকুৰ, স**ল্জাক** रत्य प्रकेषि अस्तार्य प्रवेश सामित भारत सामित्र COUNTRY OF A MUNICIPAL OF COMPLETE न्तरभाव हरू । यह रहा छव मिल्यम विकर्त अन्य कार्यन्ति अन्यानिक वर्षान निर्माण । इत्ते वस । ्रष्ट्र द अवस् इ.श. इस्राय्य भोन्नवस्य व्यक्तिम करिश प्रदेशिमत रेग्स छ दक्षिम कलाएं विविधासि अभागा गणालि एमस আয়ৰ প্ৰদাৰ দেশাইতেছিল। ভাতি মনোধন

काककार्याकती वाटबन दवजा निम्ना को नृष्टि (पत्रा) स्थाप्टन पर्नकष्ठि छेळ निःशंतन ও আনে পানে গণামান্ত কর্মচারী ও পার্শচরদের দাড়াইবার স্থান। আর शांदा निमश्चिष्ठ वाकित्यत्र न्यामन निर्काविष्ठ। विज्ञ डॉव्डि डेव्ह माना उक्रमंत्र श्वजा উড়াইয়া বিভিন্ন রাজ্যের সমূদ্ধি দেখাইতেছিল। সিংহ আঁকা ব্রিটিশের ধ্বজা, টাদ ও তারা-षांका जिल्हात ध्वता नानानानि विहास क्तिरङ्क्षि। अहे श्वारमहें दोख्या जिस्स्कृत • क्लिन जार्यासन—वाक्ष्मभक्त जारन बारमाई टेगबिटकत्र (भारतक भतिया **कर्ष**5ांद्रीया **ठांतिबिटक चूबिटजिल्ला। मन्त बादजिल** मानिक व्यवधाती व्यवदोरमत्र हात्रां পরিলক্ষিত। .२ दान मटलक्षत्र धारे छेरमर मन्नात्र बरेगा।

হই দিন পূর্বে ছোটগাট বাহাছৰ
"হোর" সাহেব উচ্চ কণ্ডারীবের সংশ্ "আগড়ভলা" টেসনে আদিরা গাড়িতেই সারা-ভোজন ও রাত্রিয়াপনান্তে পর্বিন প্রাত্তে ৮টার সময় ত্রিপ্র। রাজ্যের রাজ্যানী আগড়তগান প্রবেশ করেন। ঠিক ঘট রাজ্যের সীমানার একটি স্থান্ত ভোরণ গাঁণা ও পথের থারে ধারে কুলের মাণা, ধ্রজা-পতাকা ও ঘট সারি এ দেশী সিপাহি শোভা পাইতেছিল। জয় দুরোদুরে দুওায়নান আজাগণের জরোলাসের ও আনন্দ কোলাহণের মধ্য দিরা মোটর পাড়ি জড়িরা লাট বাহালের নির্দারিক্ত আনান্তে গোলার।

বে হানট গ্রহাত। একট কুর নহাত্র বাবে। শভাতে উচ্চ পাহাত, চাত্রবিকে মানারণ কুলের বাবান ও ভুডাত নিম্মিত বাহেবদের তারু। হানট অতি মনোহন। এ বোল্যালের নিবে
পুরিস কর্মচানীরা চারিবিকে রতকে
পাহারা দিতেছিল। উৎসবের জন্ত সমস্ত
নগর অতি হাজারতাবে স্থিতিও। রাজার
রাজার ভোরণ, হই ধারে গঙালাভার ও
ধ্বজা প্রাকার স্ক্রা; রাজ্যাটির সন্মুবনেশ
স্প্রিপকা হস্তিজ্ত।

ফনভাব স্বধি নাই কত দেশ দেশান্তর হইতে গোক আসিয়াছে। সকলেরই মুখ আনল ও ওড ইচ্ছা পূর্ব। তাহারা নির্ণিমেধ নয়নে—অনুই পূর্ব সে মহোপের—কাসার দিয়া নাড়াইরা দেখিতেছে। নগরটিও তান নানাক্রপ দোকান প্রাচিত ভানা স্থানের নানা ভাবে নাচগানের আভাগ তৈহারী হইরাছিল। নর্ভতী গান্ধকী হাত্রা পিরেটার গার্কাস ও অহাত্র নানা ভাষাগার স্থাবের ।

রাজ্যারোগণের ভত্বিনে প্রাক্তর্যাণ করিছেন লাক ঘণ্টা তুরী ভেরী গুলুড়ি প্রভৃতি নানারূপ মধন বাছা বছ বাজিছা উঠিল। নানা প্রকারের মধন গাঁডির আর অভাব ছিল না। প্রাতে আট্টার সমরে সভাগ ভার পূর্ক করিছেই সকল নিমন্ত্রিক দ কির্দ্দ লয়বারে আপিয়া নিজ নিজ হান দখল করিয়া বিশিলেন। চারিদিকে চেরার। বাহিরে অবশ্র পোক সংখ্যা। ভিড় ঠেলিয়া আসিবাব ছো নাই। স্বাই রাজ্যাভিনেক দেখিতে পাগল। ঠেলাঠেলির স্থর প্রক্রীয়া ভাইাদের উপর বারুণ বেজাখাত করিতে লাগিল। সেইটিই বড়ই কঠের হুল।

পুর্বেই বলিয়াছি ক্রাপ্তণের মধানের চল্লাজণের জনার লিফানন স্থাণিত ভার **ठाविनाटन क्यां**गाबीक्षत नेक्षित्रेयात शान । निक्छेंहे गाँउ वाहाकुरत्रव वनिवात छेळ कांक्रीयम । आर्मिशास्य श्रामाञ्च पर्वकतृत्मत्र ব্রিবার আগ্রন। আর চভুর্দিকে লোকের जनका। अक आरुष लारवात्र वार्ष्यात्रीशन अन शांत्र नवा बांगरालाधारो महामट्याशाधार **ও পুরোচিতগণ এবং ধারে ধারে সেদেশী** थकाकृष्टि व्यथह विशेष्ठ दमक देमछनन माफारेश। ভাহারা দেখিতে অনেকটা গুরুষা গৈল বা काशानी रिम्छित्र मछ; मुक्कारण शर् ७ পাহাতে চড়িতে কিপ্রণদ। কত বিভিন্ন **ट्रिट्यंत्र बोज्रदाक्**डां अ आमिश्राहित्यन ; यथा मिन्द्र, कृष्टीन, निकिम निर्मालय निराधिक নানা দেশের নানা প্রকারের हेलानि । লোক ও তাদের পোষাক দেখিলে—বিশারের कात भीमा बादक ना। कात्र पूरद रमहे খেতপ্রস্তর নির্মিত রাজপ্রাগাণ্টির জানালার भवता दिशा अवःभूत्रवानिनी वन्तिनीदित দেখিবার স্থান নিরূপিত ছিল। স্থালোকে তথন চারিদিব হাসিতেছিল।

এমন সময় বাজনা বাজিয়া উঠিল। गर्यादग्रह এই मिरकरे चामिरक्रह सानिश मकन मनक मांकि मांशिहेश मारे मिटक मिथिए লাগিলেন। জনতা আরও অসংযত কোলাহলমর হইরা উঠিল। আরও বন খন বেকাখাতও চলিতে লাগিল। এই সময়ে প্রথমে রাজপথে আঠারটি ছাতির সারি **(मथा (अम। वर्गशिक्ति व्यावद्रार्श काशास्त्र** काशंबंध काशंबंध में। इ গাত্ৰ ঢাকা। ख माथाउ সুসন্ধিত। উপরে **ৰাহ্**ড কোনৰ বড়লোক উপবিষ্ট। হাতিয় गार्यात करे मुक्कि वज्हे श्रामाक्त्य।

পরে গাড়ি করিয়াও वामित्म ।

गाउँवाहाइत बाजवाणित नामदन व्यवज्ञन कविश बाबारक मध्य गरेवा मखरणः व्यायम कवित्वन। तम मगवकात त्यावमान । त्यांतमा উত্তেজনা নেখে কে ৷ চারিদিকে শহা হৃদ্ভি वाकिया छेठिन। वाति शूर्त इहेट छ आध्रम গাঁতি গাহিতেছিল। কিন্তু সর্বাপেক। স্থব্দর । क्षमध्यारी रहेग्राहिल-शृतनागातम् अस्टबन्न একাত্তিক আগ্রহপূর্ণ ছলুধ্বনি। চিক্ ফেলা पिरे तास थानातित सानाता खनि इहेटक (नहें° মধুর তলুংবনি এখনও যেন আমার কাশে বাজিতেছে।

পৰে লাট বাহাত্ৰৰ ক্ষগ্ৰদৰ হইৰা মহা-द्रावान विविन्तास्त्र (यनार उ अञ्चलशह अञ्चल ३०५ हाका छेलछोकन পাটলেন। তার পর বক্তা করিয়া মহা-রাজের হাত ধরিরা ৭ বার দিংহাদন মুঝাইরা यहाबाद्यक मिरशानरन वनारेबा निरमन। এই সময় আবৃত্তি তুম্ল কোলাহল। সাতবার এইরূপ প্রবৃদ্ধিণ, ধান দুর্বাদানে चानोक्तात्त्व मठ, এकति त्ननी खर्था।

আবার তুমুল কোলাহল व्यानम स्त्रति. माँकपः हो उ इनुस्त्रति वाकिता डिजिन। जाहा अभित्म अन निश्विमा डिट्ठा ময়র সিংহাসনের ভচারিদিকে নানারূপ অন্ত भक्क ও निमान गरेका कर्माठाबीशन **नै।**जारेका ছিলেন, সে ব্লব আসবাৰ গুলি অভি পুৱা-কালিক ও বিশ্বয়কর; দেখিতে কোনটি হাতের মত কোনটি বা চামের মত ইডাাদি।

देशात भटतहे भूटबाहिज्यात कालिकान कान, जानिन। अहे नवादबादक बद्ध

ভীকাৰের বৈদ গামু ও আনির্মাচন ওলির क्षक व गांडीय जानाबनक क्षत्रश्रादी इत मार्वे । क्षेत्रांदश्य मन्नगवाति निकटन महाबाटजव मिक् नागिया रशन। छोहाता श्राबात मात्रधान नहरंख कि इाफिएक ठान। भरत परम परंग श्रमाश्रक व्यक्षा क्योतात ७ क्याधिकातीता क्रा*प्रमर्ग*त हिंग(नन । जान्डयां এই. अभिकारमहे मृतनगःन ज्याधिकात्री। ভালুকদার কি প্রভা তাঁহাদের তিনজন मूननमान ও এक इन हिन्तुः एरव मुमलमारम हेरदाक काकरच रवमन (बनारदनि (वंकी इंडेडार्ड अ मप लिए अ किहुडे नाहे, (दम महाव। छात्मद्र भूरन कानन धरद्र না। ভুড়কাক্ষাও অন্তর ভরা।

(महे मिन मुख्यांत्र महत्वांत्र '७ लड मिन बाककोड (डाक (State dinner) नमाधा इडेब्रा (शतन गांके वांसामृत ও अधिकारन हेरबाज पाकिथि होनद्या श्रातन। शहेरात शृत्ती खेदमरबन्न मिर्न संरक गाउँ बाहाइन ७ अक्राय. हेश्बाक ७ स्मामश अकल्य "व्यातम मार्काम" প্ত মিনার্ভা থিয়েটার দেখিতে পিরাছিলেন। माबादन वर्षकतुः सर्वे (म नथ निदा बाजाबारकः स्टूब हिन न।। वाशवात यां ना कानिया वा अकास को कृष्ण भववन 'हरेबा ८५ পথে চলিয়াছিল ভাষাদের কত নির্বাতনা সহিতে "बहेबाटक् । काटन्क काट्नर्र वर्तक (नरिक्षां ब कार्किव अध्कारक मृत्य मात्र कांगडकरमब छेलक देनबाधा । । छाएना ममान हिमाटन बारे भीनावित् क्यान तारी ভঙ্গিক ভালিমার কথা।

উৎসৰ ,সংক্ৰান্ত আরও ছ-একটি বিনয় কানা করিবা আবদেবৰ উপসংহাম করিব। ক্ষেত্ৰ ভাষণ অপরাধে দক্তিত করেকজন বন্ধী ছাজা দে বেশের জেল্থানরে আর সকল করেনাকেই এই উৎসবে খালাস কেওলা হইরাছিল। করেনাকের মধ্যে ১৪ জানা মুগনমান ও যে স্ব অপরধে ভাছানিনকৈ দক্তিত দেখিলাম সেগুলি স্বই আনি মূশংস ভক্তব প্রায়। একজন সাঁলা খাইত বলিয়া ভার হঠাৎ অস্থামীভাবে পালামাই আমিত। সাঁলার এ লোব চিরকালই আছে। সে সেই অবস্থায় আপনার ভিন্টি ছেলেকে হত্যা করিয়াছে ও পরে জ্ঞান ইইলে এখন একান্ত সপ্তপ্ত। ভাছাড়া ইয়াকের মধ্যে ভিন্টি গেক্তা বসন পরা বুবা সন্ন্যাসীকের আবন্ধ দেখিলাম। "এনাকিই" সন্দেহ করিয়া ভালের প্রেফভার করা হইরাছে।

এইবাৰ উৎসবের ।দনের সন্ধার আলো ও আত্সবাজিক কথা বলি। তথার এমন ভারবা ছিল না বৈ হান সারি সারি আলোকে না আলোকিত ক্টরাছিল। বিশাল রাজ-প্রাসাদের প্রভিরেখার নানা বর্ণের আলো চূড়া অংথি সাজান। সামনের রাজাগুলি ইলেকটিক আলোকে ও চীনে কঠনে ভরা। কুট থারের হুদ চূচুদ্দিকে আলোকিত কটরা স্কল গানের আলোক সজ্জা আপনার অংক প্রাভিবিভিত করিয়া মাটির নীচে ছিতীয় বহজ দেখাইকেছিল। আমি সেদিন গভীর রাত্রে একা এক প্রাক্তে দিল্লাইয়া সেই মহিস্তামর ক্ত্রাজি

धाकृत शांकिक क्षेत्रबोना रा प्रवास लाधवर्षका क्षेत्रबा कृतिन, प्रवरी हुन्नि, बाकारन तक क्षेत्र क्षांकृत केतिन, धातारह আইনাকের নালাং রকের কুল কল কৃটিল।
কাষানের মন্ত অবভেদী নিনাকে বোনাওলি
আকৃতেন উঠিয়া নানা রঙ্গের ভারকা স্কন
করিয়া আকাশপৃষ্ঠে ফাটিতে লাগিল।
পিন্টিরার কালে কার প্রতি আলোকরেখাটি
থানিকক্ল শৃত্তে বিরাজিত থাকিয়া ভবে
পড়ে। শৃত্তে চিল ছুড়িয়া এইরূপ উন্তে হইয়া
আগুন শইয়া খেলা কার থানে না। স্বাই
ভবে রক্ত পাছে জন্ম আগুন মাথার পড়ে
অবচ স্বাই পেথিতেও মহা উংকুক। অনেক
ছুর্থইনাও ইইল। হাসপাতালে পর দিন বিরা
দেখি তিন জন লোক ঐ আন্মান্তে পুড়িয়া
বিরাছে। ত্রিপুরায় অধিকাংশই চলো ঘর
সহজেই আগুন লাগে সেরূপ হানে এরূপ
হাউই ছোঁছা আন্মান বড়ই ভ্রাব্ছ।

এইবার बाद का शास्त्र व था। (क ভাগ্রেদেশ বিদেশ কটতে কত সুধাপ আনিলা মনা ছিল। ঢাকাৰ এক একৰ ক্ষীৰ দেখিলাম সেত্ৰণ কথন ও एकथि मारे। বড় বড় মালদা করিয়া ভাগা ব্ঞিড়; खेनरतत वरगढि तक्षे नक रुग्धा वार्छ—राव ভেলায় পাঙলা ক্ষীর। এই আবর্ষের দঞ্গ धरे की व नांकि > > र नित्न ७ शह ना। पाहां वा निष्य वाहेशास्त्र केशिया 464 श्वमिनाम (व देश अंडि स्वाइ '9 बांडरन (कान अ अध्य हद नां। आभात देखा हिन থানিকটী সভে করিয়া কলিকাতার আনিয়া অমুথীকণ ৰত্ত্বের দ্বারা পরীক্ষা করি ভাহাতে कान छ क्रल कोहे। इ चाह्य किना । किन् **छाहा बर्टिया छित्रैन जा। वशार्थ है यकि अज्ञ**न फ़ार्य कीय बाथा हत्य छोश हहेता छो ক্লিভাতা সহবের লাকণ হথের অভাব

আনেকটা এইরূপ কীরের আমনানী বারা পূরণ হইতে পারে। Swiss Milke অনেকটা এই বিনিষ। আমাদের হাতে শত উপায় থাকিলেও আমরা তাহার স্বাবহার ক্রিতে জানি না।

নিমন্ত্র পাওয়াইবার সময় যেরাপ থাওয়ান আমার প্রশন্ত বলিয়া মনে ১ইতে লাগিল তা এই! সকল জনতার ছানে গুকনা গুকনা জিনিব খাওয়ানত নিরাপ্ কার্ণ ভাছাতে শাল জাবাৰ বা ভাদেৰ বিষ্ণুষ্টি ভত সহজে * পড়ে না। আর খাঁচা নলান জিনিষ অপেক। লোকেও তথে। অনেক প্রভাৱ সহিত থার। অল জিনিষ থেমন পরিতৃত্তিকর রাশিকৃত জিনিধে তাহা হয় না। তাহা ছাড়া ইছা কত অপ্রত নিবারক। এখনকার বাবস্তায় स्मारकत भारकत कोष जाना सरवात मरधा ভারা ভূট আন্যু মাত্র থায়। আংনাদের এমন প্রীর ও ছড়িক পীড়িত দেশে কি ওরাপ क्ष भारत वाल मार्थ ? कड लाक कामारमञ् জানিত ও অজানিত ভাবে না শাইয়া মরে। 'ভাহাদের কাড়ে ওই গ্রাসগুলি কভই ছুপ্রাপা। মাছ প্রভৃতি যে গ্রু সামগ্রী সংখায় অণ্চ অনেক দিন থাকে না দেগুলি প্ৰিয়া াইরা কভই অনিষ্ট করিতে পারে। সে সকল দ্রা আহার করিলেও যেমন রোগ হব – তার হুর্গদ্ধেও তেমনি থোগ আদে। অমন জনভার স্থানে দে দব দ্রব্য না সানাই ভাল। জীবন্ত পাঁঠাগুলি গলার রজ্জুবন্ধ হইয়া অতিনিষ্ঠুব ভাবে টানিয়া হাঁচড়াইয়া वधास्त्रात्न नीड इटेटिकिन। डाटमद करून (जानन वफ्रें क्टेक्द्र। अयन चान्यत्मत निरन निम्नद्भावेत आगिक अमन करे त्रवमा कमे १

विन्यात सम्माजर्गत संग्रा पछि इस्ता विवादन गर कालित कक कानामा भागाता हाने। चामि वनिष्ठे काडिट्डन टार्थाव डेट्स्प्रे कमानकत्र वित्वहना कति, छथानि म्बर्भित वर्त्तमाम **चवन्दात्र** नामभोजात्नत व्यक्ति (मर्टनेत्र (मारकत अहा जानित्व रहेरन माजि-विष्ठांत सका अवांस व्यादशकः। ध्रणात्न व्याद একটি বে মহতা ব্যবস্থা দেখিলাম সেটি মার (काथां कवन श सिव नाहे। লোকের অসুধ হইয়া হাসপাতালে আসিলে চুই এক জন আশ্বীৰও তার সেধার জন্ত তথার ধাকিতে পায়। ভাহাদের থাকিবার খান ও चाहात दोक नदकाह (दन । कामावा द्योदग আক্ৰাৰ অথচ অনহায় এমন 'গোক इरेल श्रमाडाल विक्रातिक कड उदि भाम (संबंध क्या देश्याक इहेछित अक्षि नावकात मारे ;-- इहेरन अभि इत्र वला राहला।

ু এখানে আর একটি নৃত্ন কীর্ত্তি— একটি বালিকা বিভাগর ছাপন। ইংার বাড়া সমাজের ছিড়ব ও অন্তান ইচসংসারে আর কোণাও নাই। সকল তীর্থনশন ও দেবমন্দির প্রতিষ্ঠার ফল এই এক মহালতে শাওরা হাছ। ইন্কাল ও প্রকাশ উভয় কালেই সুধ সংশাদ একত্র আন্দে।

এইবার ছোটগাট বারাগর ও মহারামের নকুতার সক্ষে হ একটি কবা মার্মিক আমি বিদয়ে বারণ করিব।

क्षेत्रीकारोत्र र्यकृतात् क्षेत्र क्यांक्रि केरसरे त्यांगा—

্ত্রি বিশ্ববার সংক্রেরারাজ্য ভারবার অনেকবির ভারতে। ভিত্তবির বুইতে একুলর ইংরাক "নেসিকেট

এবানে পাছেব। শুর্কে শ্রুটি রাজ্যাক্তিক কর্মেটর সাহেব উপস্থিত পাক্তিকেন। শ্রুমন্তর উত্তরাধিকার হার পানি চিরকাল্যের পঞ্জান্তর করিবার বানসে নিজে খানিয়া রাজ্যাক্তিবক করিবারি

- ২। পুরাত্তৰ নহারালা রাজ্যের অনেক উর্তি করিলাহিলেন—উাহার ১২ বংসবের রাজ্যকালে ছুই লক্ষ হইতে এগার লক্ষ্যকা আর উাজ্যে তিনি হাগণাভান ও রাজকুমার কলেজ ছাগণা করেন।
- ০। আমানের পরশারের এই বুজা পড়া চাই বে, ব্রিটিশ গভর্গবেটের মত লইবাই উন্ধর্মবিজ্ঞারী নিযুক্ত হইবে। কোনও নিকটভন আত্মীর থা রাজা বার নাম ক্রিযেন অথবা পুর্বাপুদ্ধ হইকে উত্তু জনন ধে কোনও লোক উন্ধ্রাকোর কাইকারী হইতে পারিবেন।

वहातात्वव वक्डा ।-

- ১। আময়া সর্কার ছালতক থাকিব ভারতে।
 সেই অবছাতেই সর্কারেশকা কুশন।
- ৩: আমি অভি আর্বয়নে গুরুতার গাইবারি আমানে উপনেশ দানে বাধিত করিবেন ।

स्वर्धन नवस्था ए हे ताला साम करिया ए हेर्मबाहि द्विशा हिटन किरियाहि। सामात महन अवहे एउ हेन्द्रा स्वरुद्ध सानियाहि छोड़ों और हन, कार्युनिक स्वरुद्ध सानियाहि छोड़ों और हन, कार्युनिक स्वरुद्ध न्याहित्व स्वरुद्ध निवर्धन सार्युन हमेर्डेड्ड् स्वरुद्ध स्वरुद्ध साह्यात्र कुमन छ स्वरुद्ध स्वरुद्ध स्वरुद्ध साह्यात्र कुमन छ

THE WEST SERVICES THE SERVICES

আৰম্ভা বড় তিরও হইবে দেশের ওড়দিন। কাজ। আশা করি আমাদের ভক্তণ মহারাজ कार्ड निक्रेनकी हरेरन। ध मठा कवाइरक স্কল কাদির পকেই সমান। এই সভা উপলব্ধি করা লোকপালক রাজার

ভিক্টোরিয়া বালিকাবিছালরের ভিত্তি স্থাপনের महिल हिन्नमां धक्यां मित्र त्राभिद्वनः। विहेम्माध्य महिक।

চিত্ৰব্যাখ্যা।

রাজা নত্য श्टबक्रमाथं शत्काशाशाह কৰ্ত্বক অন্ধিত চিত্ৰের প্রতিনিপি।

बादा नक्ष जिल्लाम सब कविश हेनामीरक गाँउ कतिरात कन महागरको कर्ग याजा करबन । केंद्रांत्र कारमरण ब्रह्म कवि कीश्रंद वय आकाम भारत वहन कहिया गहेश वाहराज-ছিলেন, হঠাং নত্যের পা অগন্<u>ডা ঋষির</u> মাৰার ঠেকে, ভাষতে ঋষি প্রবর ক্রম হইয়া महर्गटक माल (मन। ८मई भारत नहर्वत्र भडन इर्।

চয়ন।

উল্লাপাত।

भूत्राकारम सनगरायन छेदाभाष्ट्रक "सर्ग हरेरक প্ৰস্তৰ পতৰ' ৰলিয়া কল্পনা ক্ষিতেম। रेपछा निक श्रावरपात्र शृत्की अहेत्राण श्रावत गठन या विराग्य खना-ভক্তির স্থিত পরিলক্ষিত হুইও ভারার বংগর প্রমাণ भाउड़ा यात्र। आमहा आब करमक्त्री बुढोल छेदान अबिया.

औद्वेशक मचकीय यशका श्रृक्टक (Book of joshua) আৰলা বেশিতে পাই বে, আমোলিতের পাঁচল রাজা বশুরার নিকট সুত্র পরাজিত বইয়। नवार्यन्त्र बहात जनवान आकान बहेटल अहर रहर बास्त्रबंध निक्त बादा हैक लीडमनकहे निरंख क्राह्म : औद्रीह वर्ष भूखरक कामता जांबत करहरू ছাল এইরূপ প্রস্তুর গতন দেখিতে পাই-এই সকল वावर्ष केया राजीक बाप किन्नरे नरह।

ইফিসান নগরীর কুমানিক প্রতিমা ভারনাও বুব मच्च अक्षी क्रेका-शास्त्र । औरहेत सरमात ३०० वरमन शुर्व्य छात्रनात्र टिन्स्व छन्तीकृष्ठ इब এवर देशात्र गंत-परमा इष्टे मुख्य प्रस्थित निर्देश कारी कारक स्व । क्षत्रात कहे त्य, कहे बालिस विकास क्षिएक २२० वर्गा मात्रिवादित । देशव देवरी शावित्व पूर्वे, यह

ছুইশত ফুট এবং মার্কেল প্রভারে নির্মিত ইহার অভ্যেক্টা অস্তের ব্যাস । ফুট করিয়া ছিল। আই भाइत मुजवली अञ्जतभनि स्ट्राफ अहं नमण भाषत গড়াইয়া গড়াইয়া মন্দির নির্মাণ স্থান নীত হটগাহিল।

মক্রার যে ক্লপ্রণিত্র কঞ্চরর্গের প্রক্রেরণানি দেখিতে शांखदा यात्र लाजाद मुख्य कावाम करे दय क्रेश्वद यंत्रन আদমকে কাহিইতে দুৱীকৃত করিয়া দেন তথন অঞ্চান্ত মুলাবান প্রস্তুত্র এবালিও আদম তে ইবের সহিত थ्यदिक स्त्र। सलझा बत्तव ममग्र देश भूनव्यात कर्म লইয়া যাওয়া হয় ও পরে শ্রুরি মৃত গেরিয়েল আরা-ছামকে ইয়া প্রত্যর্পণ করেন। লোগ বিশ্বাস এইয়াপ বে ইহা পূৰ্বে বেডবর্ণের ছিল কিন্তু পরে পাণীদিগের हचरन कृक्षवर्ग इहेब्राट्य। कार्क्कविवन सम्मवानीयने · करें क्षाचत्र वन पूर्वक डासामत्र क्षाण महेवा यात्र कर व्यानक श्रामाक्षम मायक वाविश्म वश्मत्र देश श्राकार्यन करद माहै। शाद यथमें छ।हाड़ा (ेवन क्षण छाहु-হের নিকট থাকা সম্বেও যাত্রীগণ মরুতেই বাভায়াত करतन, छनन छेहां विज्ञारेबा निन । - किरशमा नगबीत राष्ट्रपटक्क थावीन अशास नाम नामां देशदक क्यांमांड eter vonit fechen menn :

দ্বীয় নগৰিছে একটা এইরপ প্রস্তর ছিল। আকাপ বইকে শন্তিক বইনাছিল বলিগাঁইবাকে নকলে অত্যক্ত অজি করিত এবং এই প্রস্তরই নগরীকে কলের করিয়া নাবিবাছিল। বস্তুতঃ এই বিবাস এও দৃটী চুড বিল যে টুর যুক্তকালীন ওলেশাস ও ডাইওমি'ডস ইবা ব্যান করেন। এটাসে এরপ আরও অলেক প্রস্তুত্ব করেন। এটাসে এরপ আরও অলেক প্রস্তুত্ব করেন। এটাসে এরপ আরও অলেক প্রস্তুত্ব করেন। গ্রহণাঞ্জর পূর্বে আকাশ বইডে প্রত্যক্ষ প্রস্তুত্ব প্রচলিত ছিল।

া কিনিনিয়ানগৰ প্ৰতিবাৰ পাৰিবৰ্কে উকালাত প্ৰস্তৱসমূহ বলিৱে বলা ক্ষিয়া পূৰা কাৰত অনেকেত মতে কিনিলিয়া দেশভোতি পাধ্যানৰ মান্তে বে কোণ কৃতি (conical সমূহ ছিল উংগ উকাৰ ভাত কাৰ কিছুই নতে।

আদিনা মাইনরের অন্তর্গত জিল্পির। প্রচেশন এইরপ একটা প্রভার পুলিত হবঁও। জীতের আদের ২০৪ বংসর পূব্য রাজা আটালানে শেংবাণা করুক আছিত্ত ইইরাইহাতে রোমে বাইনা মান। ভিনন কাশিলেন, এ প্রভার হোমে নীক্ত হইলে যক্ত বিদ ইয়া হোমে বাকিনে হতদিন লোমের দৌকানা প্রা অন্তর্মিত ইইমেনা।

" • বুধঞ্জ ।

स्तित्व हो ज्यान कर जसर पूरे जारत व्यक्तिक स्तित्वका ज्यानका (God of day) जमर मानाश (God of thicase) । स्वयंक्र जीएक्स रेशास्त्र पूर्वी विकासका मिराइल क्षित्वका है। রোদক্ষণ বিবোধ বিজ্ঞতি । বিশেষ পারক্ষী ছিলেন না। বাঝি খবর দিনিরো বলিনা বিলানের বে বুগমণ,—জিনাস (,তক্স) ও মার্গ (মুদ্ধ দেবকা মঙ্গস) এই ফুই প্রচের মধ্যে পরিনাবণ করে।

চান দেশীয় জ্যোতিবীগণ ১১৮ প্রীষ্টান্থে এই প্রক্রের প্রব্যবন্ধন লিপিবছ করিয়াছেল। ইন্সিন্সিয়ানগণ এই প্রহকে পেট ও হোরদে নামে অভিহিত করিতেন, আরবাধনে বুন ওতারেল নামে পুলিক হউতেয়। আনিরিয়ান এবং বেটিলোন দেশীর প্রক্তর লিপিছে দেখিতে পাওয়া বার যে ইনি নেবো নামে ক্ষতি। ইবার প্রীর নাম অর্থাৎ এবং ভিনাস প্রশালবাচা ও এটির ক্ষণ্ডের সাই ছবল্ড বংসর প্রক্তিও বুধার্থের উল্লেখ্য হার। স্থানিছ টলেয়ার আছমান্যের মান্ত্রা) নামক পুলাপ প্রীর জলোর ২৬৫ বংশ্র

भिनादृष्टि ७ हेर्गान (मनीय

কুস°কার।

ইটালৈ দেশে তথাৰ গই যে পাণীর শালির হার্মাই ক্ষানার বিলার্স্তি পৃথিবীতে শ্রেরণ করেন। ক্ষাপত ছই বংগর শিলার্স্তি হারা কর্মন এই রওনাং ট্যাকার্পলের লোকের ক্ষর নিখান ক্ষানার হ বংগর এশিকার্যানে নেনাক্রের নিংসং বছ রাখাই উক্ত মুখ্টনার ক্ষারণ। আর বন্ধ কারে মে নানা ক্ষানার ক্ষর হার্মানার ক্ষর কারে। ক্ষানার বন্ধ কারে বিলার ক্ষরাক্ষর ক্ষর্য ক্ষরাক্ষর ক্যাবন্ধ ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্য ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্যাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্ষর ক্ষরাক্য

অনেক স্থা শিলাবৃত্তি সরকালের কার্য প্রতিয়োগের জিন্ত হুংটা উপায় অবল্যক করা হয়। কাল অবসা ধন ৯ নির্বিত ক্রুপে কলপাইরের মুদ্রী ভাল বিদ্ধা করিব। ভূতিতে গ্রেপিক করা হব। ভারাবের বিশাস বই থাক্তিয়া মুক্তে করা বের মধ্যে না ক্রিয়ে ক্রেয়া ক্রনায়ক য়ব বাঃ।

শেক্ষালিক কৰন পৰা কাটা শেব হটব। বাব ভাৰ ক্ষমনাৰ ক্ষিত্ৰকৰী বাংকিলাফ কইয়া ক্ৰ নৰে হণে প্ৰত কৰে। প্ৰাৰ এই নামৰ ক্ৰ'ন বল নিবাহণেট ক্ৰ'ত শোলাক্ষাৰ ক্ষম ব্যৱস্থিত ক্ষ'। ক্ষাধি বাব মটপ্ত:

काराष्ट्रित अक सार्का जेंगी कारत बन्नारे ও सम्राज ' नुरंक्तत ^{क्ष}डेलंड देशियां बाया, इस । अस्वितानीत्त्रत বিশাস্থে একুণ করিলে শিলাবৃষ্টিতে কোন কভি क्रिंडि गारत मा। अत्नक नमत्र त्यथ तिश्तिह ্নিজিয়ে ঘটা ধানিত হইয়া উঠে। শুধু গিজ্ঞায় रम् अ व्याप्तरत बाक्किन वर्णे। बाह्य ममस्य ममसार नियानिक इंटेर्ड बाटक। यनि इंश्टंड (यम मृत्री इंड ना इस लाश दर्शन गुक्यामी निक वस्तुदक ৰাৰ্ডকাৰত পুরিয়া তাহা মেখের দিকে লক্ষ্য ক্রিয়া ছাড়েন। छांशामित विचाम त्य देश एक स्मा निक्त वरे षुरीकुछ स्टेंदि । शृश्यामी यथन এই वस्तृ । आहताह वाश्यादि नियुक्त चाँदकन उथन खीरमाकश्य कर्रावाय-ट्याभी अञ्चामित बाता मतकात cof शार्ठव हिनाट কুশ নিশ্বাণ করেন। পরে 'ধ্যানেও' হঠয়া ঈশ্বরের আৰ্থনা কৰেন। কোন কোন সময় অভিমূ ইওলিব সন্মুৰে প্ৰজালত ৰৰ্জিকা স্থাপিত কৰিয়া ধন্মবাঞ্চত डेक आर्थनात्र (यानवान करवन)

কোন কোন সমন াটিছ ছোট বালক বা বালিক।
একহতে ক্রান ও জনত হতে জুল ঘটা লইনা বাটির
চতুর্দিকে ভ্রমণ করে সজে সঙ্গে বাটিছ জন্ত সকলেও
যোগ দেন। পেরুগিয়া প্রদেশে একটি শিল প্রথমে
শিশুকে ধাইতে দেওবা হর। যদি বহাতেও শিলাবৃষ্টি
না থামে ভাগা ছবলৈ যে লৌর শৃহালে কড়াই কুলাইরা
নাথা হয় উহা বাটার বহিছেশে নিজ্ঞিও হইয়া থাকে।

প্রতিমার অভিশাপ।

অনেকে মনে করেন আমাদের দেশের কোনেই কুসংস্কারের বন্ধীভূঙ কিন্তু নির্মানিকিত বৃত্তান্ত হইছে দেবা যায় কুসংস্কার বন্ধান্ত কেবন আমালেকই একটেটিয়া সম্পত্তি নহে। সম্প্রতি বিশাতের কোন ধর্মবাজ্ঞক, সংবাদপত্তে আনাইয়াছেন যে ছই সহত্র বংগরের প্রাক্তন কভকভালি হিন্দুর্যাভ্যয় ভাষার নিকট আছে বুবং ভাষার বিশাস যে, এই প্রতিযাঞ্জন প্রাক্তন কভালি হত্তা ভাষার বিশাস যে, এই প্রতিযাঞ্জন প্রাক্তন কভালি ভাষা সমিতি চেটা ক্রিকেট্রের কল্প একটা ভাষা সমিতি চেটা ক্রিকেট্রের কল্প একটা ভাষা সমিতি চেটা ক্রিকেট্রের বালক মহালয় বলিভেছেন যে একলি

উত্তর ভারতের বে মন্দির হইতে এগুলি লাবীত হইরাছিল, সেই স্থানে ইহা পাঠাইতে পারিলে ভিনি নিশ্চিত ১ইতে পারেন।

এই ধর্মবাজক ভারতবর্বে ছিলেন এবং ইহার-পিতা

যধন দৈল দলে কাজ করিতেন তখন তিনি কোন

যুদ্ধান্তে লুটের অংশস্করণ এইগুলি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন!

ধর্মবাজক মহাশয়ের পূর্বের বিখাস ছিল বে এগুলি

তাহার পিতা ক্রছা করিয়াছিলেন কিন্তু পরে তিনি

অবগত হয়েন যে এগুলি লুটেরই অংশমাতা। বিলাতে

বিটিশ মিউলিয়ামের কর্তৃপক্ষপণ উহার একটার

নুগান্তরপ ছাদশ সহস্র মূলা। নিতে প্রস্তুত

হিলেন। এই প্রকার অবেও কয়েকটা প্রতিমা •

ছিল। ধর্মবাজক মহাশ্র বলিতেছেন;—

"এই প্রতিমা আমাদের যে কোন আত্মীয়কে দেওয়া ংটবাছে তাহারই সমূহ কৃতি **হট্যাছে। আমার** िंछ। এই अভिमातन सम्बन्ध व्यानक कट्टेरखान করিয়াছেন ; তিনি মৃত্যুকালে অামাকে দিয়া বান কিন্তু আমার অধিকারে আসা অৰ্ধি আমি নানাপ্ৰকার বিপ্র ভোগ করিছেছি। प्रभ बरमब भूटकी, खाजाब क्यांडा वयन लिखहाहै महरत हिलान, उथन बक्छन हिन्दू ठाँहारक बहे अस्त्रिश्वकार क्या बिकामा करता वर्ग दि नृषी डाहारक वरन (४, এই অভিমাঞ্জি প্রভার্পণ না করিলে অশেষ বিশ্ব জোগ ক্রিতে হইবে তলন আমার ভাতা শতাস্থ र्शित्रप्राहित्तन। त्मरे हिन्दुं कादा दान व मन বংসর পরে প্রতিয়াগুলি কাহার নিকট থাকিবে क्रिक नारे। क्रिक नम बरमब আমার ভাতা ভারতবর্ষ হইতে একখানি পতা পান ভাষাতে এই মাত্র লেখা ছিল যে "দেবভাদিপের माख्य कथा पात्र कता" किंक (महे मगाप्रहे अवर (महे ভাকেই তিনি সংবাদ পান বে তাঁহার পত্নী **শুরুতর** পীডায় কাডর। আমার লাঙার বিখান বে প্রতিমান स्त्रियात मारवाम ना मिश्रात अस् कार्य कार्य वाजि। इया आमि अ मर किहुई विवान कति नो किस गतिबाहक गरूरलवरे गावना त्य अक्षतिः व्यक्तार्ने ना कविद्या अवन नारे।

া সভবতা অভিমানতি লৈদদের এবং বৃটের করের কার পাত বংগত পৃথাতি নির্মিত। এগুলি ইইকে একড এবং ইতাবের গালে সানাকার খোরিওকৃতি। অভ্যাকট বৈধ্যে প্রায় ছুই হল প্রিনিত।"

হালির ধ্মকেতু

স্থানির ধ্যকেতৃ গইরা সভালগতে ছলস্থা পড়ি-রাছে। এই ধ্যকেতৃ ৭০ বংগর পরে পরে গেল কেনা বের। ইতিপুর্বে নির্লিখিত স্বরে ইহার আগ্যবন লিপিবছ আছে।

म्टडेंब सद्यव १७१ सम भृत्म, यश्व हीन्द्रश्य हिरक्षताः मबाहे हिरमन लबन धरे बुबाक्यु पृष्टिनात्रः व्हेशक्ति। भूनकार ५३० भूका व हैएक ठोनरमन ৰাগীপৰ ইহাকে বেবিতে পায় ভারতবর্গে তথৰ हाथक क पर्की **क्टिन**न षरमाहरू हिनि बोस्टक्षां रहका विनास ভবৰ তৃতীয় টলেবি চালা ছিলেন এবং অধৰ भूमिकशुक्त अरे ममाबरे शर्रिवाहिक। मक्तरकः >७० भूक्षंत्र है। स्म क्षात्रित पुत्रककु भूनक्शंव पृत्रिताहत दह । ৮९ मूर्वन होएक यदन द्वारम पाविषम । नमाव विवाह इलिएकश्विक खबनन हेश वृत्ते बहेब्राव्य । जुनीब्डीक् 35--- अर भटम भूनहाद हेका (मना (मन, दहाम **फ** हीनामीत भूषाक देशा है.तब गांवता याता ६६ बहेर्ट्स बाबार हेराटक ध्वांनरक नावक यात्र। हीम अञ्चलक्षण देशंब दुकाक मिणियक कविशास्त्र । ३०३ १ १ ४ होटक छारित गुम्पक्त निवडन माहेगावितः ৰাখক জানিত্ব চীনত্ৰছে পাকলা বাত। ১৯৯, ৩৭৬ 865, 660, 601, 658, 160, 549, 338, 398 MER इश्रदक तावा यात्र । >००० वृहेशक-व्यवीय त्यंत्राह देशारक व्यवकारक्त्र साथ वर्षान क्रिके केरेकियान शासन्तरण नक्षासः नक्षतं द्रवदेशतः देशनक्षातीनन Butthe gufuttu men : " Are, 2204, 2444, 24+5, 34196 (\$866, 344), 3644 3642 444 8942 4 BROW क्षा क्षेत्रकार । व्याप प्रत्यकार स्थाप स्वित्रानिक-"AT "Glavious of what area weather, --CVA At "when it was movementy every

morning to ask what he, victory there was, for fear of missing one." This was will awaisals wife or a new trice coul fixifier; games are seen of attrice wit wints the coul freezes!

পালিয়ামেণ্টে বেতনভূক স্ভা।

— अत्यापकरे बादवा द्व भागियात्वरके मधायात्वरे व्यक्तिक विश्व गर्छ च कथकविरगत्र यस्त्र ७७ सन् বেডনতুক সভা আছেন। ই হারা বাৎস্ত্রিক এতুনে দশলক বুলারও অধিক বেতন পান। এই সভা-निरमंद्र गर्या करवक्षम (क्यांच्येत कादी करवत । ই হাদের অভোকের বেতন বাংলার ক বিল मन्द्रमुक्ता चरण है होता वाक्तियात **कक्र** राष्ट्रिक गान। क्राक्यन महकाही क्यांने ब्याहन--हे वारमक दमह दमह २२ बोलांब दमह ३० बालांब मुका रक्टन कड़ण शारेडा बारकम। विनि कथक गणा कार्याविवस्य क्रिशाविक क्रिका क्रिका महीक्षण महान बुधाइक व्यक्ति, व्यक्त अक्ती कर्वहाडी Sergeant of Aims) आध महामन मनता बनर हेशा मरकारी पापन महता बुक्षा, नुस्कावाक नक्षम महत्त क्वः गर्छ गणाय क्यायमध्य त्यक्षानी व्याप्त त्यावृत भगण मुखा नावेश बादकन। विमि यक्त छाकातक (speaker ভিনি কৰণ সভাব বুৰপত্ৰ ; ডিৰি পঁচান্তৰ হালাণটাক: व्यवक्त, व्यक्तक क्वाहारीयन (वरूण জীংৰান্ত ভাল প্ৰান্ত ৰূপতে নিযুক্ত ইনি নেরূপ मरश्म । अप्ति निर्मात्रसम् मनश्च रकाम मनचारक अप्रेण विकास क्या क्या निकारक विकार वार्थ । किंकु मुक्केन वंत्रधन्तः। अवस्थानन अवस्थान स्टेरन, कर्ज मुकाब क्यांन टक्यांने एकाश्यांन प्रदेश न्टिनरम क्रमन महाका विदय क्यांचा विदयन करान। गणक समिक्षक अहे नेशन वृद्धिक कत्रियान अधान श्लाषा मन्दन Butter " Terr-us Cas कविद्रवालेका दकानकन लिकियाँ का बरेका निकार विवस्तिकं मानका दनव स्वर्थ निन्छात्र वहार्गत कर गाउ THE REST WHEN

(আনা সেটা) টেবিনুক্ত, উপর স্থাপিক হয়। পর বিষয় শিক্ষার ও অক্তাক প্রদানস্থাপ সমবেত হইনা লুউলের বিকট উপস্থিত হইলে উল্লেখ্যে রাজার সম্মতি লোপন করা হয়। সম্মতি আগন সমাপন হইলে শিলার উপস্থিত করিয়া বিবাদন করেন যে, কম্পাপন

বনি কোন কম করেন ভবে নে কন্ত বেল কেন্দ্ৰ যাত্ৰ কাৰাকেই দোৰা কুৱা হয়। সভা-চ্যান্তভাৱ নংহাদন্ত এই সকল বিৰয়ে সম্মতি আগন করিলে শিকার মহাশার ও অক্টান্ত সদস্তগণ প্রভ্যাবর্তন করেন। এ প্রতি ছুই বার মাত্র শিকার নির্বাচনে মহডেদ হুইরাছিল।

वर्ध-विमाश।

মহাসমূদ্রের খনন্ত ভরবের প্রান্ধ কানীয় কালের
এক একটি ববোর্নি আসিরা আসাদাদের এই কুর
লাবন-ভীরে অবিরামই আঘাত করিয়া ফিরিভেছে।
এই ফুর্ড্রের সোতে সম্মানক আঘাতে আমাদের কোবাক
কালিভেছে, কোখাও গড়িভেছে, কোবাও উটিভেছে,
কোথাও পড়িভেছে। কি সমূদ-প্রোত, কি কাল
প্রোত, এ বিশ্ব স্পত্তীর ধর্মই এব। একক ও বিভিন্ন
ভাবে দেখিলে ভাকদের, হরপের, আঘাতের আর
অন্ধ নাই। কিন্ত ভবালি এই সমূদ্রেমবা পৃথিবী
চিন্নিনিই বনরাজিলীলা, তির্দ্রিনই ফুন্মর ও
ক্ষমর। স্পত্তীপ্রোভের ধর্মই এই সে ভাকদের
অন্ধরালে গঠনে লিপ্ত, হরপের সঙ্গে প্রেক্তর আক্রান্ত

বিগত থার বর্ষের ভরকটি শুরাপের কিছু
ভালিতে, কিছু হরণ করিতে, কিছু আঘাত দিতে
ফটি করে নাই। সে যারা ভালিরাছে তাহা কতনিনে
আবার গড়িয়া তুলিবে তাহা আলি না, সে যারা
কাড়িয়া লইরাছে কতদিনে আবার ভাহা শলরিয়া
শাইব ভাহা বলিতে পারি না, সে বে আঘাতক্ষত
স্টি কলিয়াছে কতনিনে বে ভাহা মিলাইবে ভাহা
কলনা করা কৃতিন। আল সে আমাদের দরিজের
"ই, লেশের গৌরব কতকভালি প্রেট পুরুষকে হরণ
করিরাছে। কর্মবীর বংলশপ্রেমিক রনেশচল্ল, বাগ্রী
বংশেনেবক লালুবোহন, স্পতিত্ব লাল্পনেরী চল্লকার ও
এবং ওছতেতা ইলাভিনেবক বর্ষানন্দ মহাভারতীকে
আল আব্রা হারাইরাছি। আরও ক্লেটি বড় কৃত্

আমানিপকে ত্যাণ করিয়া গিয়াছেন। আল বলের '
সমিতিকাইন ভারতখণ বচাব, নেশবাদীর খনেশের
কর্মে সম্বন্ধ হর্বার, সভা সমিতি কাহ্বান ব্রিবার
ক্রিকার টুকু প্রান্ত বর্দি, আরু হাজেপত উচ্চ মনভার অপরাধে আমাদের কর্মিটার কর্ম অবদর,
সংবাদ পত্র সন্তন্ধ, আরীয় সাধনা প্রতিহত, আল
আনর্শের বিবানে আমাদের সংস্থাতিশ বিচ্ছিল,
স্থাতি , বাকে আমাদের ক্র্মনীর্গণ বিচ্ছিল,
সাংবাদ হিন্দু বুসল্মান বিভক্ত। আল ক্রিনাপরারণ
রাজভানের রত্তাকে হিন্দুর হস্ত ক্র্মিত ব্রেশীর
অবোধ অভাচারে প্রেশ বীভিতঃ।

ইহা অংশকা হুর্দ গা আর বি ছইকে শারে। কিন্তু
ব্যক্তাল আঘাত ও আক্ষোণ মধ্যেও বিশ্বতার
আনন্দ আখানের ছ ঠাব নাই। মালির শাসন সংকার
আফ কর্মে পরি ৩—শত দে বঞাট সংগও তাহা বে
আমানিসকে রাঞ্চশক্তির সহিত্র সহযোগিতায় কতকটা
অগ্রসক করিয়াত, দে বিবরে সংক্ষিত নাই।

শাসন ও বিচারের বিশুক্ চাই ব্রিটিশ চারিরের থেবার্থ সৌরব। অপকাশাত ক্রার্থরের রালাও প্রজার গ্রেমা প্রবিদ্যান বিশ্বনার ব্যবহাপকসভার প্রথম অবিশ্বনার রাজারিতিন্ত সন্তরণ করি বিক্টো ভারতবাসীর বর্তবান চিত্তচাকস্যের প্রতি বেরুপ সহাক্ত্তি প্রকাশ করিয়'ছেন ও দেশের শাসনবিধিকে ভারতের বর্তবান অবহার অন্তর্ধাশ করি ।র জন্ত বেরুপ আন্তরিক ব্যর্থতা ঘেবাইরাছেন, ভাহাচারা অভীতের অনেক নিঠুরজাঘাত্র-বেদনা ভূর কইবে সন্দেহ নাই। সেদিন ক্রিভালার বাশিক্যসমিতির প্রথিবেশনে আন্তর্ধান, প্রথাবান্ধানী বিভালগতি, আক্রিকা সাহেব বে উনার

वेक्ष्मंतिक विकास स्विक्षात्वन, कारां क्ष्मात्वन स्वक्षात्व अस्य मह स्वाता गर्णातिक कवित्राद्ध । अस्य सामझ व्यक्षिकिकिक स्वित्राद्ध वित्राद्ध गाति गर्मात स्वक्ष्म विकास यहि देशह सीकि कार्यन व्यवस्थ क्ष्म विकास यहि व्यवस्थ कार्य स्वर्धक स्वाता व्यवस्थ कार्य स्वर्धक महत्व व्यवस्थ कार्य स्वर्धक स्वत्य व्यवस्थ कार्य स्वर्धक गुरुष्ट्य स्वर्धक स्वर्यक स्वर्धक स्वर्धक स्वर्धक स्वर्धक स्वर्यक स्वर्धक स्वर्यक स

বেশবের উজি উজ্ ত করিরা তিনি বলিরাকেব
"প্রজাসাধারণের প্রতি সন্থাবহার কর, তাহালিগকে
জালবাসিকৈ শিক্ষা কর এবং ভাহালিগকে তাহানিচার
বান কর। কার্যাকালে কোনও ফলাপেক্ষী হইও না—
বাতি কি লাজের প্রতি ত্বপাস করিও না
জ্ঞানোক্রিগের প্রতি তোবারিগের উল্লভ যা কর্টোর
হুল্লা, কর্ত্বয় নহে। শক্তিতে ভোমরা ভাহানিগের
জ্ঞানে কর্ত্বয় নহে। শক্তিতে ভোমরা ভাহানিগের
জ্ঞানে করিত বিশেব বিভিন্ন নও। সর্ক্রয় এই কথাটি
বনে রাখিও বে শক্তির প্রথমতের বন সেইবানেই
বাকে, বেগানে আম্রা ভাহাকে ভত্রভাবে বানহার
করিতে জানি। সাধুতাই বিচারপতির সর্ক্রপ্রনান গুণ
জ্ঞাবং নির্দোধ অপক্ষপাত বিচারনীতিই দেশের
জ্যোক্যে বাগ্য করিবার ও রাজপঞ্জির সহিত গ্রেহর্তনে
স্ক্রিবার সর্ক্রপ্রধান বন্ধন।"

এরণ কৰা আমতা, ক্ষেত্রক দিন প্রনি নাই। ইয়া আমাদের সন্মুখ ব আপেকা ইংরাজোটিত বা্তা আর কি ছইতে গাবে। দীড়াইরা আল প্রা মহামতি জেকিল, বছদিন এই প্রধান বিচারাগনে বলিয়াই চিনিতেছি পাকিল ওাহার আজীয় পৌরব রক্ষা ক্রিয়া খেলের প্রহণ ক্রিয়া ও লীক নাগন-ভিজিতে সুবুট কর্ল ইয়াই আবাহিগের প্রার্থনা। প্রস্তু বিদায় বিলাব ঃ

বিষেশের বিশে হৈলিয়েও আনরা আনক আভানেরই সংখান পারী। নুধর্মীবরের লোহন পার্লে কাল কেনেও আবালহুক্তবিভা নুরাবিত । বেশের মুখকসণ পথ ও পাংগের সংগ্রেহর লভ পূলিবরি চতুর্নিকে আতানগনে বিবিট । আল আবাদের কাল্যুর্নিক চতুর্নিকে আতানগনে বিবিট । আল আবাদের কাল্যুর্নিক ভালার চল্যুর্নিক পারাদের কাল্যুর্নিক ভালার বিদ্যানিক বিহুর্নান আবাদ ক্রীর্নেক আল্যান্র বাসোপ্রাম্যুর্নিক বিহুর্নান আবাদের বাসোপ্রাম্যুর্নিক বিহুর্নান আবাদের বাসোপ্রাম্যুর্নিক বিহুর্নিক আল্যান্র বাসোপ্রাম্যুর্নিক বিহুর্নিক বাস্থ্যান্র বাসোপ্রাম্যুর্নিক বাস্থ্যান্ত বাস্থ্যান্র আবাদ্যান্র বাসোপ্রাম্যুর্নিক বাস্থ্যান্ত বাস্থানিক ক্রান্ত্রান্র আবাদ্যান্র বাস্থ্যান্র বাস্থান্ত বাস্থ্যান্ত প্রাম্যুর্নিক বাস্থ্যান্ত আবাদ্যান্ত প্রাম্যুর্নিক বাস্থান্ত আবাদ্যান্ত প্রাম্যুর্নিক বাস্থ্যান্ত ।

একদিকে বেষৰ কোনা-আঘাক আগবাদিকে তেমবি
আনল আবাস। স্ক্রীর বিকে বেবিলে, অন্তরের
দিকে দেখিলে এই সকল ছুঃসহ বেদনা ও নিচ্'র
আবাতকে বিঘাতার আলীকাঁদি ও বম্পীর বলিয়াই
মনে হর! বিধারেশুন্তী বর্ব এতবিল আনাদের
বাহ্নিক লক ক্ষর মুখ্য, লত ঘাতপ্রতিষাতের দান ক্ষতির সহিত জড়িত ছিল। আল বিদায়েন দিনে নে
ভাহার বাহিবের সমস্ত ক্ষসিত কটোর আববব তালি
ক্ষিয়া, আগনার অন্তরের তম্ব ক্ষমর পবিত্র বৃত্তিকে
আনাদের সম্ভব প্রকাশ পাইল। বিজেনের তারে
দ্বিভাইরা আল ভাহাকে বিশেব বন, বিধাতার দান
বলিয়াই চিলিজেছি। আল নতলিরে ভাহার সমস্ত বান
প্রকাশ ক্ষরিয়া এ জীবনভার হইতে ভাহাকে তির্যাদিনর
স্ক্রের ক্ষরিয়া এ জীবনভার হইতে ভাহাকে তির্যাদিনর
স্ক্রের বিশেষ বিলার ব্

क्षम अप्राचिन

कास्त्राह्म चहेनिनि । अंकेन गरिएनव त्यार आहेब । -विनिधा । (मा व्या ना I

कि एक एक

जाहात इतन हरेंदर 11 -शा -1 जी। जी वधा ना I, • वस कि एक इह

क्षांस्थान कार्य-गडीका कारक कारक ५०३ दिन केनीन हैनाविकास क्षांतर क्षांनी हत्र कार्यन प्रत्य क्षेट्र, ००२न दिन ।

्रक्तिकार्ताः २० वर्गकारिकः केष्ठः काविक स्वापः विविधकः नामां नामा-मुक्तिक के ३०, वक गाविकः देशाव देशाव

विमादन नेकारीय त्या	ভাগে ধরালী	-পাৰি হা		સ્ય
े है अवार्जन माठक		1 •4•*	***	. 53
्नेवकीय रम केनडेव		***	44.	٠٠ ٤٠
চিত্ৰ-পরিচয়		গ্রাসাদ .	ł	ÿ
চশৃতি ভাষা	***	শ্রনাদ শ্রীমণিশাল সম্বোপধ্যার		89, 21
চিঞাবলী	***	শ্ৰীমতী সমলা দেখী বি-এ	• * •	હશ્
চৈত্তৰ চুটুকি (গ্ৰহ)				⊕ ‡ે
क्ष्मकाला (कारिनी)	***	প্ৰীক্ষৰনীজনাথ ঠাঞুৰ দি, আই শ্ৰীমণিলাল গলোপাধাৰ		b.
ANKIAI (AIIAMI)	•••	त्याचानकाचा श्रीकाचावाव	300, 21	
ছবির সাঞ্জ্যজা		Service and the service and th	86%, c	•
•	•••	শ্রীশরচন্দ্র ঘোষাগ এম-এ, বি-	যোৱা	er.
অপাশ্বর (সচিত্র)	***	শ্ৰীমতী সরণা দেবী বি-এ	***	21
ৰাফরানিখান (কবিতা)	• •	শ্রীসভোজনাথ দণ্ড	. , .	tob
ট্যালিদম্যান (পর)	**	শ্ৰমতী স্বৰ্কুমারী পেবা	***	,
खाकातित सङ्माती (शद्य)	•••	ज्येनत्रकत्व (शंवान ध्य-७, नि-।	ব্ৰ	
स्थन ७ व्यान	***	জর রবান্দ্রনাথ ঠাকুর	• • •	
দিদিনার শক্তি (গল)	*** *	निभनिकाः शटकार्थाधाः	***	ų į
इंडे महत (शब)	•••	শ্রীমণিশাল গলোপাধ্যার	**	\$ 4
নৰ বাৰ্ষিকী (কবিতা)	***	मैक्टो खिक्सनं दनवी वि-ध	***	•
নৰ পত্ৰিক্ৰ ভাৰতী	•••	हे यानर्भाव छर्कतन्त्र	• •	2 ps.
निक्न (कविछा)	•••	क्षेक्कवानिधान व्यक्तालाधाः	***	*5
নিক্তর (কবিডা)	* * *	श्रीभंडी जिस्सा (मर्वी वि ज	***	54
ন্যজহান (সচিতা)	***	ही । या भाव रेमर वस रि- श्रम	***	* 1
শক্তের পাপড়ি—				1 #
অভিনয় সমালোচনা	** *	4+1	***	j
खेरमात्र द्यांचा वृत्नाव पा		***	***	
কাব্যের অবস্থা পরিবর্তন			***	
कारा ७ इमीडि	••			
विकेशनाथा निर्विण्यान				

Sussephology C. Fage 18	* v. 49,*			1000
			, 1	201
			**	202
्राचना कि	** ·			844
नुवादमाठमा (८४वनामयध	****** \	•••		04
नुस्ताकरकत देश्वेक	414)	•••	•••	- Ok
गरिक्थ नमारगाहमा	**	•		২৬৯
লামনপ্র ও প্রার্থের পর	4.	क्षिमंठी अन्नमा (भवी वि-क	***	d'so
হেশ্বর ক্রেম (কবিতা)		ভর রবীজনাথ ঠাকুর	***	4 75
	**	क्षित्रकी श्रिप्रयमा (प र्व) वि-व	***	:5%
ারিচ্ছদ-পরিচারিকা (গল) এ	•	শ্রীক্ষোতিরিক্সনাথ ঠাকুর		519
ाशक्ष-भाष्ठात्रका (शक्) व विभिक्षन	٠,	टीक्षत्रपानम् वास	•••	295
্থায়	**	चीमठी शिश्चमा (मबी वि, ध	*10	٥٠١
প্রণাম (কবিতা)	•	শ্রীনভ্যেমনাথ দত্ত	•••	9
প্রধান (কাবভা)	4.1	व्यातम् । व्यातमात्रीक्रासाधनं मुस्मापाद्यात्रः ।	1-c6 8 1	66
প্রাণশক্তির বিকাশ	• •	শ্রীশীতশচন্ত্র চক্রবর্তী এম-এ	• • • •	৩৪৭
বুরাতন কথা	• •	धीयडी महाकक्षाती हानी	•••	२०२
नुष्णाक्षशि •		শ্রীহিন্দের্জনাথ ঠাকুর	***	8
বুলাজাণ বৃদ্ধিচন্দ্রের লিপি-বীতি বনাম	THE SEC	শ্রীবিভারতক্র মন্ত্রমদার বি-এশ		be
	नपूज नवा	क्रिश्रांक्य करियाशांत्र	•••	244
ৰ্ছিম-প্ৰণৰ •	••	ভাক্তার উপেক্সনাথ চৌধুরী পি,		829
वक्क्सान यूद्ध निश्च तिन्।		क्षेत्रवनीत्रमाथ ठाकुत्र मि, काहे, व		998
[4584'	••	श्रीक्षिक्षाह्य मृत्याभाषात्र वि		કર &
বিশ্ব-সভার ছবি (নাটকা).	••	विक्रात्मक्ताताम राजही वन, व		9.9
বৈক্ষানিক প্রতিভা	· ♣ ♥) ₍₄ ,,,	खी शका नम निरंशांशी धम-ध : पि.		229
ভাৰতের কৃষকাথা	•••	এলোতিরিজনাথ ঠাকুর	, ,	بور د چ
ভারতের কভাত গণ	• • •	নহামহোপাধাার ত্রীরুক্ত সভীশচর	4	
stag.	4.5	द्याजावनीत्मनाथ ठाकूत नि, भारे,		20
Sin afa	••	क्षेत्रजी निकातिगी (सर्वे)	****	20
जामकी ५ शतको नन्नामिका		खीकनवत्र दान		. 50
enito-tra	•••	व्यक्तिक्षकृतात्र शांत्र	Take 1	254
BURN ELECTA (MEG)	3,	क्रिमिनाम गरमानिसाम		049
.•	**	withing that had now in a state of the state of the	N ,	1

Take '	,	CONT	1	444
व्यवस्था (कविका)	k#+	व्यवहासाम वाष्ट्री वि क	***	700
मान कांगाजी-		সম্পাদকীয়	4	, 3.e.E./
चार्टन यांशांत्रिय	··· (B)	***	a⊈ia o o	- ***** /
वित्र विक्रमाध	***	•	h	¢>.
কবিভাৰ প্ৰাণ	•••	844	***	81-0
ছোট গল্প	***	***		848
নাত্ৰী-সন্মান		***	***	848
निष् सरा	••	•••	***	065
শাঠে। শ্বন্তভা	4.0%	•	***	t is a
खावा विज्ञान	,	••	***	حواد
द्वाहेन्छ वार्न	•••	•11	••	৫৮৩
সাত কথা		* *		458
সাহিতোর ভা্যা ও চ	मिंडि कथा		444	359
সাহিত্য ও ভাষা-সম	grt			42.
হাসির গান	***		411	đeb
মাতালের মাতলামি		चैर्यानान जल्लानामात्र	***	164
শভ্ভাৰা কি শেৱী ভাৰা	,	শ্ৰীনবকুমার কবিবস্থ	**	816
मिणन कथा (महिन्त)	***	वीमकी निश्चेल्याहिमी नामा	144	: 84
ৰ্ভান্ত (ক্ৰিকা)	•••	टीमटी करूक शा (पना	***	328
त्याका कथा	••	विमाननान गटकानामाप	•	874
হা শাৰু হ	••	वाब मारक्य मारमण्डल राम वि-	4	400
मुक् कामरण	·	श्रीवाडी जिल्ला , मरी वि-ध	***	. 400
शंका (क विका)	**	जार वरीक्रनाव अकृत	***	4.
ৰাশচু চাৰন (কাবতা)	•••	• जीन-कृमान कवित्रकृ	***	7>+
दर्ब कि विश्वन का के के विश्वन विश्वन	· · · · · ·	the classes ale	440	- 445
जिक्क र	***	वीमका दिनिया (एवी दहांबुवान	fq.a	945
ৰক্ষাৰ বিকাশ	***	विभागमा स्वापनी कान्य	4	45.5
ल्या त कथा ्र	P \$1.	Bicecom grafe nin	***	
निका हुक्तु (कविश्वा)	••	किंगकी वागवनकी देवती	1 444 .	
नियो तीक्ष (महिना)	•••	विव्यवस्थाः		
निवार पश्चिम (सहित)	ations the	BOCKER ON THE		(Sto

	*	(শ্ৰথক		পূঠা
गुन्द्रथं । नद्या (किंग्रे)	•••	श्रीमठी श्रिवचना (नवी वि, ध	e ka	
पर जबाद	***	बीजनम		103
শাম্মিক ভারতের নৈতিক	সভাতা	শ্রীলোতিরিজনাথ ঠাকুর	***	905
াশে।	*** "	শ্রীসভারত শ্রা প্রভৃতি	১৯৬, ৫২০,	
भरष्टेत्र निरुष्तमन (कविछ।)		এ৮৬, ৪৮৭	,२४२
वंशांस (शहा)	***	क्षीरपेक्षमाथ (मन १९४-७)	•••	ಾಂ
ইভািক মৃত	***	वीभोतीक्रायांश्य मृत्यांशायां वि	া , প্রেল	৬ ১
Withia famels		রায় সাহেব দীনেশচন্দ্র মেন বি-এ	9 • ·	>8•
Times (Same	¢ + 4	শ্ৰীশীতগচন চক্ৰবৰ্ত্তী এম-এ	***	39%
Z	•••	প্ৰীনিভূতিভ্ৰণ ভট্ট বি-এল	83, 369,	
, •		<u> </u>	৩৯৯, ৫২৩,	७७३
The first control of the second	•••	वीत्मदन्त्रमाथ त्मम दमः व	>55,	990
७ इड ७ (मनी (पड़ी).	•••	जी नमग्रहक मञ्जूमनाव नि- वन	***	848

চিত্ৰ-সূচী

	981	िव	श्र कें।
व देव-		डेंड कोर्ग ,	663
লীয়ক স্বানীজনাথ সাকুব আহন	> >>	ालगाउ (अमा	# 1 A
গ হা	১ু ৭১	डीयुक मुठ्यहत्त (म अक्रिक	৬৭১
न तमनी-मृद्धि ः ०	6, 529	কণ এই নাগ্ৰিকগ্ৰ	892
7		SIC이바 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	
भिकी समझनी (भनी बाइक	446	শ্ৰীষ্ক অবনীক্রনাথ ঠাকুর অক্ষিত	379
डा देवरदम्ब भरत राख्ने क्रिकार	বিশেষ	চতু-শাঠা	
पद्माया (वस्तर्व)	>68	শ্রীযুত গগনেরনাথ ঠাকুর অক্তিত	083
	290	जगळ गायुर	308
अन्या वहर्त)		ওলপ্রপাত	÷50
श्कु समनाम रच अविटः	\$	कन्दक (२०११)	,
•	6 42 p	শ্রীফুক বিপিনচন্দ্র দে শান্ধত	423

				,	71
164		र्गुकी ।	किंग	*	- 78 1 \$
CHIEN CHINA	4		मुश्रं कृता (सङ्दर्ग)	*** } *	****
विवृक्त भवतीसभाष	शक्त सक्ति	23	মুগথ (বছৰণ) প্ৰাচান বি	da stru	8# [[]
विश्वक्रमान शहर	444	4<6	তোজনি জেনগে 🗼 🦏	***	465
. विकट	***	>45	तबोद्धनान ठे।क्त	e	.> 5¢
मीभ-मिथा (वस्तवर्ष)	†		दर्शनात्र सञ्चा		*90
बिवृक कि डीक्स मान	वस्यमान वाचि	5 44.	Cकोकसूम	7	040
क्षस्य (वस्तर्ग)	**		निर्वेशः छगा। -		
टीमुक विभिन्नक्स द	परिष	895	श्रीयुक्त झर्रानंत्रक निःव	期間 5	ל לעל
क्षांत्र वर्षत् शक्तमारहेन	मध्या	45	बैंक (काइनी)		*
ज्ञामसम—			क्रियुक्त कावनीत्समाथ क्र	क्षित्र महिन	B
विषक गरवस्ता व	* ব- স্বাহিত	155	(भव व्याक्तरनव भगवि	***	298
1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-	• • •	* **	লৈশছৰ্গ	**	9>"
36)	* *	394	? ~সহ স্তা	454	26.
रायन	***	599	সরুশ বেনী	>	08, 5%
'क्रम्द्रिका व	•	. 594	34 53-		
ভাৰনা	**	4 94	क्षेत्रक अक् नहस (१ १	a[# B	224
क्रानाटम वी र प्र		498	चर्क्षात्री (नना	>	55, 255
arfe	***	¢ 55	মেৰাগতি ৰে		33,6
「去茶水 ECM	***	#14	(F-6 G-4)		56 +
मा १८७ मिन	***	394	দেশ্ট শিখের	***	P14
शहम हेटब्र	••	693	5 m 60, 50,	***	2 8
माहेरकन विकास न का		236	विषयां (वनी	***	. :
मिक्राटवा	*		A		